ੴ

श्री दसम ग्रंथ साहिब जी

Sri Dasam Granth Sahib Ji

Compiled by Guru Gobind Singh Ji — Patshahi 10

Completed at Anandpur Sahib · circa 1698 CE

21 Major Sections · Braj, Punjabi, Sanskrit, Persian

This edition prepared for scholarly and devotional use.

Script: Devanagari · Language: Braj Bhasha, Punjabi, Sanskrit, Persian
Source: Sri Dasam Granth Sahib Ji, structured digital edition

Table of Contents

01. JAAP SAHIB 5

Divine praise — 199 names of Waheguru · By Guru Gobind Singh Ji

02. AKAL USTAT 24

In Praise of the Timeless One · By Guru Gobind Singh Ji

03. BACHITRA NATAK 49

Wondrous Drama — Autobiographical composition

04. CHANDI CHARITAR UKTI BILAS 95

Deeds of Chandi — Poetic narration

05. CHANDI CHARITAR II 117

Deeds of Chandi — Second composition

06. CHANDI DI VAAR 144

Ballad of Chandi · In the Vaar tradition

07. GIAN PRABODH 154

Awakening of Knowledge · By Guru Gobind Singh Ji

08. CHAUBIS AVTAR 186

Twenty-Four Incarnations of Vishnu

09. BRAHM AVTAR — RUDRA AVTAR 209

Incarnations of Brahma and Rudra

10. KRISHNA AVTAR 230

Life and deeds of Sri Krishna — Major section

11. KRISHNA CHARITAR (CONTINUED) 313

Extended narration — Krishan Charitar Pakhyan

12. SHABAD HAZARE PATSHAHI 10 549

A Collection of Shabads

13. SWAYYEY — TV PRASAD SAVAIYE 604

Swayyey verses — Divine praise

14. RUDRA AVTAR (SECOND SECTION) 638

Further Rudra incarnation narrative

15. SHABAD PATSHAHI 10 686

Compositions attributed to Patshahi 10

16. KHALSA MAHIMA 725

Glorification of the Khalsa

17. SHASTAR NAM MALA 730

Garland of Weapon Names

18. CHARITAR PAKHYAN (TRIYA CHARITAR) 823

Tales of Women — Moral narratives · 404 Charitars

19. ZAFARNAMA 1534

Letter of Victory — Persian letter to Emperor Aurangzeb

20. HIKAYATS 1541

Persian tales / parables

21. ASTOTAR SRI BHAGAUTI JI KA 1591

108 Names of Bhagauti — Closing hymn

SECTION 01: JAAP SAHIB

Divine praise — 199 names of Waheguru · By Guru Gobind Singh Ji — Patshahi 10

ੴसतिगुर प्रसादि ॥

जापु ॥

स्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकति किह ॥
अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिजै ॥
कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै ॥
त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत ॥
तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले ॥
नमसत्वं क्रिपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥
नमसतं अनूपे ॥२॥
नमसतं अभेखे ॥
नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए ॥
नमसतं अजाए ॥३॥
नमसतं अगंजे ॥
नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥
नमसतं अठामे ॥४॥
नमसतं अकरमं ॥
नमसतं अधरमं ॥
नमसतं अनामं ॥
नमसतं अधामं ॥५॥
नमसतं अजीते ॥
नमसतं अभीते ॥
नमसतं अबाहे ॥
नमसतं अढाहे ॥६॥
नमसतं अनीले ॥
नमसतं अनादे ॥
नमसतं अछेदे ॥
नमसतं अगाधे ॥७॥
नमसतं अगंजे ॥
नमसतं अभंजे ॥
नमसतं उदारे ॥
नमसतं अपारे ॥८॥
नमसतं सु एकै ॥
नमसतं अनेकै ॥
नमसतं अभूते ॥

नमसतं अजूपे ॥९ ॥
नमसतं न्रिकरमे ॥
नमसतं न्रिभरमे ॥
नमसतं न्रिदेसे ॥
नमसतं न्रिभेसे ॥१० ॥
नमसतं न्रिनामे ॥
नमसतं न्रिकामे ॥
नमसतं न्रिधाते ॥
नमसतं न्रिघाते ॥११ ॥
नमसतं न्रिधूते ॥
नमसतं अभूते ॥
नमसतं अलोके ॥
नमसतं असोके ॥१२ ॥
नमसतं न्रितापे ॥
नमसतं अथापे ॥
नमसतं त्रिमाने ॥
नमसतं निधाने ॥१३ ॥
नमसतं अगाहे ॥
नमसतं अबाहे ॥
नमसतं त्रिबरगे ॥
नमसतं असरगे ॥१४ ॥
नमसतं प्रभोगे ॥
नमसतं सुजोगे ॥
नमसतं अरंगे ॥
नमसतं अभंगे ॥१५ ॥
नमसतं अगंमे ॥
नमसतसतु रंमे ॥
नमसतं जलासरे ॥
नमसतं निरासरे ॥१६ ॥
नमसतं अजाते ॥
नमसतं अपाते ॥
नमसतं अमजबे ॥
नमसतसतु अजबे ॥१७ ॥
अदेसं अदेसे ॥
नमसतं अभेसे ॥
नमसतं न्रिधामे ॥
नमसतं न्रिबामे ॥१८ ॥
नमो सरब काले ॥
नमो सरब दिआले ॥
नमो सरब रूपे ॥
नमो सरब भूपे ॥१९ ॥
नमो सरब खापे ॥
नमो सरब थापे ॥
नमो सरब काले ॥
नमो सरब पाले ॥२० ॥
नमसतसतु देवै ॥
नमसतं अभेवै ॥
नमसतं अजनमे ॥
नमसतं सुबनमे ॥२१ ॥
नमो सरब गउने ॥

नमो सरब भउने ॥
नमो सरब रंगे ॥
नमो सरब भंगे ॥२२॥
नमो काल काले ॥
नमसतसतु दिआले ॥
नमसतं अबरने ॥
नमसतं अमरने ॥२३॥
नमसतं जरारं ॥
नमसतं क्रितारं ॥
नमो सरब धंधे ॥
नमोसत अबंधे ॥२४॥
नमसतं न्रिसाके ॥
नमसतं न्रिबाके ॥
नमसतं रहीमे ॥
नमसतं करीमे ॥२५॥
नमसतं अनंते ॥
नमसतं महंते ॥
नमसतसतु रागे ॥
नमसतं सुहागे ॥२६॥
नमो सरब सोखं ॥
नमो सरब पोखं ॥
नमो सरब करता ॥
नमो सरब हरता ॥२७॥
नमो जोग जोगे ॥
नमो भोग भोगे ॥
नमो सरब दिआले ॥
नमो सरब पाले ॥२८॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥
अनूप हैं ॥
अजू हैं ॥
अभू हैं ॥२९॥
अलेख हैं ॥
अभेख हैं ॥
अनाम हैं ॥
अकाम हैं ॥३०॥
अधे हैं ॥
अभे हैं ॥
अजीत हैं ॥
अभीत हैं ॥३१॥
त्रिमान हैं ॥
निधान हैं ॥
त्रिबरग हैं ॥
असरग हैं ॥३२॥
अनील हैं ॥
अनादि हैं ॥
अजे हैं ॥
अजादि हैं ॥३३॥
अजनम हैं ॥

अबरन हैं ॥
अभूत हैं ॥
अभरन हैं ॥३४॥
अगंज हैं ॥
अभंज हैं ॥
अझूझ हैं ॥
अझंझ हैं ॥३५॥
अमीक हैं ॥
रफ़ीक हैं ॥
अधंध हैं ॥
अबंध हैं ॥३६॥
न्रिबूझ हैं ॥
असूझ हैं ॥
अकाल हैं ॥
अजाल हैं ॥३७॥
अलाह हैं ॥
अजाह हैं ॥
अनंत हैं ॥
महंत हैं ॥३८॥
अलीक हैं ॥
न्रिस्रीक हैं ॥
न्रिलंभ हैं ॥
असंभ हैं ॥३९॥
अगंम हैं ॥
अजंम हैं ॥
अभूत हैं ॥
अछूत हैं ॥४०॥
अलोक हैं ॥
असोक हैं ॥
अकरम हैं ॥
अभरम हैं ॥४१॥
अजीत हैं ॥
अभीत हैं ॥
अबाह हैं ॥
अगाह हैं ॥४२॥
अमान हैं ॥
निधान हैं ॥
अनेक हैं ॥
फिरि एक हैं ॥४३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥
समसती निधाने ॥
नमो देव देवे ॥
अभेखी अभेवे ॥४४॥
नमो काल काले ॥
नमो सरब पाले ॥
नमो सरब गउणे ॥
नमो सरब भउणे ॥४५॥
अनंगी अनाथे ॥

न्रिसंगी प्रमाथे ॥
नमो भान भाने ॥
नमो मान माने ॥४६ ॥
नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो भान भाने ॥
नमो गीत गीते ॥
नमो तान ताने ॥४७ ॥
नमो न्रित न्रिते ॥
नमो नाद नादे ॥
नमो पान पाने ॥
नमो बाद बादे ॥४८ ॥
अनंगी अनामे ॥
समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥
समसती बिभूते ॥४९ ॥
कलंकं बिना नेकलंकी सरूपे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥५० ॥
नमो जोग जोगेस्वरं परम सिद्धे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम ब्रिधे ॥५१ ॥
नमो ससत्र पाणे ॥
नमो असत्र माणे ॥
नमो परम गिआता ॥
नमो लोक माता ॥५२ ॥
अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते ॥
नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ॥५३ ॥
नमो नित नाराइणे क्रूर करमे ॥
नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४ ॥
नमो रोग हरता ॥
नमो राग रूपे ॥
नमो साह साहं ॥
नमो भूप भूपे ॥५५ ॥
नमो दान दाने ॥
नमो मान माने ॥
नमो रोग रोगे ॥
नमसतं सनाने ॥५६ ॥
नमो मंत्र मंत्रं ॥
नमो जंत्र जंत्रं ॥
नमो इसट इसटे ॥
नमो तंत्र तंत्रं ॥५७ ॥
सदा सचदानंद सरबं प्रणासी ॥
अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥५८ ॥
सदा सिधदा बुधदा ब्रिध करता ॥
अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ॥५९ ॥
परं परम परमेस्वरं प्रोछ पालं ॥
सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ॥६० ॥
अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥
समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥६१ ॥
तेरा जोरु ॥

चाचरी छंद ॥

जले हैं ॥
थले हैं ॥
अभीत हैं ॥
अभे हैं ॥६२॥
प्रभू हैं ॥
अजू हैं ॥
अदेस हैं ॥
अभेस हैं ॥६३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥
अनंदी सरूपे ॥
नमो सरब माने ॥
समसती निधाने ॥६४॥
नमसत्वं न्रिनाथे ॥
नमसत्वं प्रमाथे ॥
नमसत्वं अगंजे ॥
नमसत्वं अभंजे ॥६५॥
नमसत्वं अकाले ॥
नमसत्वं अपाले ॥
नमो सरब देसे ॥
नमो सरब भेसे ॥६६॥
नमो राज राजे ॥
नमो साज साजे ॥
नमो शाह शाहे ॥
नमो माह माहे ॥६७॥
नमो गीत गीते ॥
नमो प्रीत प्रीते ॥
नमो रोख रोखे ॥
नमो सोख सोखे ॥६८॥
नमो सरब रोगे ॥
नमो सरब भोगे ॥
नमो सरब जीतं ॥
नमो सरब भीतं ॥६९॥
नमो सरब गिआनं ॥
नमो परम तानं ॥
नमो सरब मंत्रं ॥
नमो सरब जंत्रं ॥७०॥
नमो सरब द्रिसं ॥
नमो सरब क्रिसं ॥
नमो सरब रंगे ॥
त्रिभंगी अनंगे ॥७१॥
नमो जीव जीवं ॥
नमो बीज बीजे ॥
अखिजे अभिजे ॥
समसतं प्रसिजे ॥७२॥
क्रिपालं सरूपे ॥
कुकरमं प्रणासी ॥
सदा सरबदा रिधि सिधं निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अंम्रित करमे ॥
अंब्रित धरमे ॥
अखल जोगे ॥
अचल भोगे ॥७४ ॥
अचल राजे ॥
अटल साजे ॥
अखल धरमं ॥
अलक्ख करमं ॥७५ ॥
सरबं दाता ॥
सरबं गिआता ॥
सरबं भाने ॥
सरबं माने ॥७६ ॥
सरबं प्राणं ॥
सरबं त्राणं ॥
सरबं भुगता ॥
सरबं जुगता ॥७७ ॥
सरबं देवं ॥
सरबं भेवं ॥
सरबं काले ॥
सरबं पाले ॥७८ ॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख अपार ॥
सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥
सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल ॥
जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप रिसाल ॥७९ ॥
नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥
आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥
देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग ॥
जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥८० ॥
नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥
सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥
एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥
खेल खेलि अखेल खेलन अंत को फिरि एक ॥८१ ॥
देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब ॥
रूप रंग न जाति पाति सु जानई किंह जेब ॥
तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन ॥
चक्र बक्र फिरै चतुर चक मानही पुर तीन ॥८२ ॥
लोक चउदह के बिखै जग जापही जिंह जाप ॥
आदि देव अनादि मूरति थापिओ सबै जिंह थापि ॥
परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार ॥
सरब बिस्व रचिओ सुयंभव गड़न भंजनहार ॥८३ ॥
काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥
धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस ॥
अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥
गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम ॥८४ ॥
आप रूप अमीक अनउसतति एक पुरख अवधूत ॥
गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥

अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥
सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥८५॥
सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥
सरब सासत्र न जानही जिंह रूप रंगु अरु रेख ॥
परम बेद पुराण जाकहि नेति भाखत नित ॥
कोटि सिंम्रित पुरान सासत्र न आवई वहु चित ॥८६॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥
महिमा अपार ॥
आसन अभंग ॥
उपमा अनंग ॥८७॥
अनभउ प्रकास ॥
निस दिन अनास ॥
आजान बाहु ॥
साहान साहु ॥८८॥
राजान राज ॥
भानान भान ॥
देवान देव ॥
उपमा महान ॥८९॥
इंद्रान इंद्र ॥
बालान बाल ॥
रंकान रंक ॥
कालान काल ॥९०॥
अनभूत अंग ॥
आभा अभंग ॥
गति मिति अपार ॥
गुन गन उदार ॥९१॥
मुनि गन प्रनाम ॥
निरभै न्रिकाम ॥
अति दुति प्रचंड ॥
मिति गति अखंड ॥९२॥
आलिस्य करम ॥
आद्रिस्य धरम ॥
सरबा भरणाढय ॥
अनडंड बाढय ॥९३॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥
मुकंदे ॥
उदारे ॥
अपारे ॥९४॥
हरीअं ॥
करीअं ॥
न्रिनामे ॥
अकामे ॥९५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चत्रु चक्र करता ॥

चत्रु चक्र हरता ॥
चत्रु चक्र दाने ॥
चत्रु चक्र जाने ॥९६॥
चतुर चक्र वरती ॥
चतुर चक्र भरती ॥
चतुर चक्र पाले ॥
चतुर चक्र काले ॥९७॥
चतुर चक्र पासे ॥
चतुर चक्र वासे ॥
चतुर चक्र मान्यै ॥
चत्रु चक्र दान्यै ॥९८॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥
न मित्रै ॥
न भरमं ॥
न भित्रै ॥९९॥
न करमं ॥
न काए ॥
अजनमं ॥
अजाए ॥१००॥
न चित्रै ॥
न मित्रै ॥
परे हैं ॥
पवित्रै ॥१०१॥
प्रिथीसै ॥
अदीसै ॥
अद्रिसै ॥
अक्रिसै ॥१०२॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज देसै ॥
कि आभिज भेसै ॥
कि आगंज करमै ॥
कि आभंज भरमै ॥१०३॥
कि आभिज लोकै ॥
कि आदित सोकै ॥
कि अवधूत बरनै ॥
कि बिभूत करनै ॥१०४॥
कि राजं प्रभा हैं ॥
कि धरमं धुजा हैं ॥
कि आसोक बरनै ॥
कि सरबा अभरनै ॥१०५॥
कि जगतं क्रिती हैं ॥
कि छत्रं छत्री हैं ॥
कि ब्रहमं सरूपै ॥
कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥
कि आदि अदेव हैं ॥
कि आपि अभेव हैं ॥

कि चित्रं बिहीनै ॥
कि एकै अधीनै ॥१०७॥
कि रोज़ी रज़ाकै ॥
रहीमै रिहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥
कि गैबुल ग़ैब हैं ॥१०८॥
कि अफवुल गुनाह हैं ॥
कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥
कि रोज़ी दिहंद हैं ॥१०९॥
कि राज़क रहीम हैं ॥
कि करमं करीम हैं ॥
कि सरबं कली हैं ॥
कि सरबं दली हैं ॥११०॥
कि सरबत्र मानियै ॥
कि सरबत्र दानियै ॥
कि सरबत्र गउनै ॥
कि सरबत्र भउनै ॥१११॥
कि सरबत्र देसै ॥
कि सरबत्र भेसै ॥
कि सरबत्र राजै ॥
कि सरबत्र साजै ॥११२॥
कि सरबत्र दीनै ॥
कि सरबत्र लीनै ॥
कि सरबत्र जाहो ॥
कि सरबत्र भाहो ॥११३॥
कि सरबत्र देसै ॥
कि सरबत्र भेसै ॥
कि सरबत्र कालै ॥
कि सरबत्र पालै ॥११४॥
कि सरबत्र हंता ॥
कि सरबत्र गंता ॥
कि सरबत्र भेखी ॥
कि सरबत्र पेखी ॥११५॥
कि सरबत्र काजै ॥
कि सरबत्र राजै ॥
कि सरबत्र सोखै ॥
कि सरबत्र पोखै ॥११६॥
कि सरबत्र त्राणै ॥
कि सरबत्र प्राणै ॥
कि सरबत्र देसै ॥
कि सरबत्र भेसै ॥११७॥
कि सरबत्र मानियैं ॥
सदैवं प्रधानियैं ॥
कि सरबत्र जापियै ॥
कि सरबत्र थापियै ॥११८॥
कि सरबत्र भानै ॥
कि सरबत्र मानै ॥
कि सरबत्र इंद्रै ॥
कि सरबत्र चंद्रै ॥११९॥

कि सरबं कलीमै ॥
कि परमं फ़हीमै ॥
कि आकल अलामै ॥
कि साहिब कलामै ॥१२०॥
कि हुसनल वजू हैं ॥
तमामुल रुजू हैं ॥
हमेसुल सलामैं ॥
सलीखत मुदामैं ॥१२१॥
ग़नीमुल शिकसतै ॥
ग़रीबुल परसतै ॥
बिलंदुल मकानैं ॥
ज़मीनल ज़मानैं ॥१२२॥
तमीज़ुल तमामैं ॥
रुजूअल निधानैं ॥
हरीफुल अजीमैं ॥
रज़ाइक यकीनैं ॥१२३॥
अनेकुल तरंग हैं ॥
अभेद हैं अभंग हैं ॥
अज़ीज़ुल निवाज़ हैं ॥
ग़नीमुल क़िराज हैं ॥१२४॥
निरुकत सरूप हैं ॥
त्रिमुकति बिभूति हैं ॥
प्रभुगति प्रभा हैं ॥
सु जुगति सुधा हैं ॥१२५॥
सदैवं सरूप हैं ॥
अभेदी अनूप हैं ॥
समसतोपराज हैं ॥
सदा सरब साज हैं ॥१२६॥
समसतुल सलाम हैं ॥
सदैवल अकाम हैं ॥
न्रिबाध सरूप हैं ॥
अगाध हैं अनूप हैं ॥१२७॥
ओअं आदि रूपे ॥
अनादि सरूपे ॥
अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकामे ॥१२८॥
त्रिबरगं त्रिबाधे ॥
अगंजे अगाधे ॥
सुभं सरब भागे ॥
सु सरबा अनुरागे ॥१२९॥
त्रिभुगत सरूप हैं ॥
अछिज हैं अछूत हैं ॥
कि नरकं प्रणास हैं ॥
प्रिथीउल प्रवास हैं ॥१३०॥
निरुकति प्रभा हैं ॥
सदैवं सदा हैं ॥
बिभुगति सरूप हैं ॥
प्रजुगति अनूप हैं ॥१३१॥
निरुकति सदा हैं ॥
बिभुगति प्रभा हैं ॥

अनउकति सरूप हैं ॥
प्रजुगति अनूप हैं ॥१३२॥

चाचरी छंद ॥

अभंग हैं ॥
अनंग हैं ॥
अभेख हैं ॥
अलेख हैं ॥१३३॥
अभरम हैं ॥
अकरम हैं ॥
अनादि हैं ॥
जुगादि हैं ॥१३४॥
अजै हैं ॥
अबै हैं ॥
अभूत हैं ॥
अधूत हैं ॥१३५॥
अनास हैं ॥
उदास हैं ॥
अधंध हैं ॥
अबंध हैं ॥१३६॥
अभगत हैं ॥
बिरकत हैं ॥
अनास हैं ॥
प्रकास हैं ॥१३७॥
निचिंत हैं ॥
सुनिंत हैं ॥
अलिक्ख हैं ॥
अदिक्ख हैं ॥१३८॥
अलेख हैं ॥
अभेख हैं ॥
अढाह हैं ॥
अगाह हैं ॥१३९॥
असंभ हैं ॥
अगंभ हैं ॥
अनील हैं ॥
अनादि हैं ॥१४०॥
अनित हैं ॥
सु नित हैं ॥
अजात हैं ॥
अजादि हैं ॥१४१॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥
सरबं गंता ॥
सरबं खिआता ॥
सरबं गिआता ॥१४२॥
सरबं हरता ॥
सरबं करता ॥
सरबं प्राणं ॥

सरबं त्राणं ॥१४३॥
सरबं करमं ॥
सरबं धरमं ॥
सरबं जुगता ॥
सरबं मुकता ॥१४४॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥
सदैवं प्रकासे ॥
अनंगं सरूपे ॥
अभंगं बिभूते ॥१४५॥
प्रमाथं प्रमाथे ॥
सदा सरब साथे ॥
अगाध सरूपे ॥
न्रिबाध बिभूते ॥१४६॥
अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकामे ॥
न्रिभंगी सरूपे ॥
सरबंगी अनूपे ॥१४७॥
न पोत्रै न पुत्रै ॥
न सत्रै न मित्रै ॥
न तातै न मातै ॥
न जातै न पातै ॥१४८॥
न्रिसाकं सरीक हैं ॥
अमितो अमीक हैं ॥
सदैवं प्रभा हैं ॥
अजै हैं अजा हैं ॥१४९॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर हैं ॥
कि हाज़र हज़ूर हैं ॥
हमेसुल सलाम हैं ॥
समसतुल कलाम हैं ॥१५०॥
कि साहिब दिमाग़ हैं ॥
कि हुसनल चराग़ हैं ॥
कि कामल करीम हैं ॥
कि राज़क रहीम हैं ॥१५१॥
कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥
कि राज़क रहिंद हैं ॥
करीमुल कमाल हैं ॥
कि हुसनल जमाल हैं ॥१५२॥
ग़नीमुल क़िराज हैं ॥
ग़रीबुल निवाज़ हैं ॥
हरीफ़ुल शिकंन हैं ॥
हिरासुल फिकंन हैं ॥१५३॥
कलंकं प्रणास हैं ॥
समसतुल निवास हैं ॥
अगंजुल गनीम हैं ॥
रजाइक रहीम हैं ॥१५४॥

समसतुल जुबां हैं ॥
कि साहिब किरां हैं ॥
कि नरकं प्रणास हैं ॥
बहिसतुल निवास हैं ॥१५५॥
कि सरबुल गवंन हैं ॥
हमेसुल रवंन हैं ॥
तमामुल तमीज हैं ॥
समसतुल अजीज हैं ॥१५६॥
परं परम ईस हैं ॥
समसतुल अदीस हैं ॥
अदेसुल अलेख हैं ॥
हमेसुल अभेख हैं ॥१५७॥
ज़मीनुल ज़मा हैं ॥
अमीकुल इमा हैं ॥
करीमुल कमाल हैं ॥
कि जुरअति जमाल हैं ॥१५८॥
कि अचलं प्रकास हैं ॥
कि अमितो सुबास हैं ॥
कि अजब सरूप हैं ॥
कि अमितो बिभूत हैं ॥१५९॥
कि अमितो पसा हैं ॥
कि आतम प्रभा हैं ॥
कि अचलं अनंग हैं ॥
कि अमितो अभंग हैं ॥१६०॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥
गुनि गन मुदाम ॥
अरि बर अगंज ॥
हरि नर प्रभंज ॥१६१॥
अनगन प्रनाम ॥
मुनि मनि सलाम ॥
हरि नर अखंड ॥
बर नर अमंड ॥१६२॥
अनभव अनास ॥
मुनि मनि प्रकास ॥
गुनि गन प्रनाम ॥
जल थल मुदाम ॥१६३॥
अनछिज अंग ॥
आसन अभंग ॥
उपमा अपार ॥
गति मिति उदार ॥१६४॥
जल थल अमंड ॥
दिस विस अभंड ॥
जल थल महंत ॥
दिस विस बिअंत ॥१६५॥
अनभव अनास ॥
ध्रित धर धुरास ॥
आजान बाहु ॥
एकै सदाहु ॥१६६॥

ओअंकार आदि ॥
कथनी अनादि ॥
खल खंड खिआल ॥
गुर बर अकाल ॥१६७॥
घर घरि प्रनाम ॥
चित चरन नाम ॥
अनछिज गात ॥
आजिज न बात ॥१६८॥
अनझंझ गात ॥
अनरंज बात ॥
अनटुट भंडार ॥
अनठट अपार ॥१६९॥
आडीठ धरम ॥
अति ढीठ करम ॥
अणब्रण अनंत ॥
दाता महंत ॥१७०॥

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥
अरि घालय हैं ॥
खल खंडन हैं ॥
महि मंडन हैं ॥१७१॥
जगतेस्वर हैं ॥
परमेस्वर हैं ॥
कलि कारण हैं ॥
सरब उबारण हैं ॥१७२॥
ध्रित के ध्रण हैं ॥
जग के क्रण हैं ॥
मन मानिय हैं ॥
जग जानिय हैं ॥१७३॥
सरबं भर हैं ॥
सरबं कर हैं ॥
सरब पासिय हैं ॥
सरब नासिय हैं ॥१७४॥
करुणाकर हैं ॥
बिस्वंभर हैं ॥
सरबेस्वर हैं ॥
जगतेस्वर हैं ॥१७५॥
ब्रहमंडस हैं ॥
खल खंडस हैं ॥
पर ते पर हैं ॥
करुणाकर हैं ॥१७६॥
अजपा जप हैं ॥
अथपा थप हैं ॥
अक्रिता क्रित हैं ॥
अंम्रिता म्रित हैं ॥१७७॥
अम्रिता म्रित हैं ॥
करणा क्रित हैं ॥
अक्रिता क्रित हैं ॥
धरणी ध्रित हैं ॥१७८॥

अमितेस्वर हैं ॥
परमेस्वर हैं ॥
अक्रिता क्रित हैं ॥
अम्रिता म्रित हैं ॥१७९॥
अजबा क्रित हैं ॥
अम्रिता अम्रित हैं ॥
नर नाइक हैं ॥
खल घाइक हैं ॥१८०॥
बिस्वंभर हैं ॥
करुणालय हैं ॥
न्रिप नाइक हैं ॥
सरब पाइक हैं ॥१८१॥
भव भंजन हैं ॥
अरि गंजन हैं ॥
रिपु तापन हैं ॥
जपु जापन हैं ॥१८२॥
अकलं क्रित हैं ॥
सरबा क्रित हैं ॥
करता कर हैं ॥
हरता हरि हैं ॥१८३॥
परमातम हैं ॥
सरबातम हैं ॥
आतम बस हैं ॥
जस के जस हैं ॥१८४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥
नमो राजसं तामसं सांत रूपे ॥
नमो परम ततं अततं सरूपे ॥
नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥
नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने ॥१८६॥
नमो जुध जुधे नमो गिआन गिआने ॥
नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥
नमो कलह करता नमो सांत रूपे ॥
नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥
कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥
नमो आस आसे नमो बांक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥
अलै ॥
अभै ॥
अबै ॥१८९॥
अभू ॥

अजू ॥
अनास ॥
अकास ॥१९०॥
अगंज ॥
अभंज ॥
अलक्ख ॥
अभक्ख ॥१९१॥
अकाल ॥
दिआल ॥
अलेख ॥
अभेख ॥१९२॥
अनाम ॥
अकाम ॥
अगाह ॥
अढाह ॥१९३॥
अनाथे ॥
प्रमाथे ॥
अजोनी ॥
अमोनी ॥१९४॥
न रागे ॥
न रंगे ॥
न रूपे ॥
न रेखे ॥१९५॥
अकरमं ॥
अभरमं ॥
अगंजे ॥
अलेखे ॥१९६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रनामे समसतुल प्रणासे ॥
अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥
न्रिकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥
कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१९७॥
सदा सचिदानंद सत्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥
अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥
हरीअं करीअं करीमलु रहीमे ॥१९८॥
चत्र चक्र वरती चत्र चक्र भुगते ॥
सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥
दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥
सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

SECTION 02: AKAL USTAT

In Praise of the Timeless One · By Guru Gobind Singh Ji

੧ੴसतिगुर प्रसादि ॥

अकाल उसतत ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

उतार खासे दसखत का ॥ पातिसाही १० ॥

अकाल पुरख की रछ्या हमनै ॥
सरब लोह दी रछिआ हमनै ॥
सरब काल जी दी रछिआ हमनै ॥
सरब लोह जी दी सदा रछिआ हमनै ॥

आगै लिखारी के दसतखत ॥ त्व प्रसादि चउपई ॥

प्रणवो आदि एकंकारा ॥
जल थल महीअल कीओ पसारा ॥
आदि पुरख अबिगत अबिनासी ॥
लोक चतुर दस जोति प्रकासी ॥१॥
हसत कीट के बीच समाना ॥
राव रंक जिह इक सर जाना ॥
अद्वै अलख पुरख अबिगामी ॥
सभ घट घट के अंतरजामी ॥२॥
अलख रूप अछै अनभेखा ॥
राग रंग जिह रूप न रेखा ॥
बरन चिहन सभहूं ते निआरा ॥
आद पुरख अद्वै अबिकारा ॥३॥
बरन चिहन जिह जात न पाता ॥
सत्र मित्र जिह तात न माता ॥
सभ ते दूरि सभन ते नेरा ॥
जल थल महीअल जाहि बसेरा ॥४॥
अनहद रूप अनाहद बानी ॥
चरन सरन जिह बसत भवानी ॥
ब्रहमा बिसन अंतु नही पाइओ ॥
नेत नेत मुखचार बताइओ ॥५॥
कोटि इंद्र उपइंद्र बनाए ॥
ब्रहमा रुद्र उपाइ खपाए ॥
लोक चत्र दस खेल रचाइओ ॥
बहुर आप ही बीच मिलाइओ ॥६॥
दानव देव फनिंद अपारा ॥
गंध्रब जच्छ रचै सुभ चारा ॥
भूत भविक्ख भवान कहानी ॥
घट घट के पट पट की जानी ॥७॥
तात मात जिह जात न पाता ॥
एक रंग काहू नही राता ॥
सरब जोत के बीच समाना ॥
सभहूं सरब ठौर पहिचाना ॥८॥
काल रहत अन काल सरूपा ॥
अलख पुरख अबगत अवधूता ॥
जात पात जिह चिहन न बरना ॥

अबगत देव अछै अन भरमा ॥९ ॥
सभ को काल सभन को करता ॥
रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित जिह इक छिन धिआइओ ॥
काल फास के बीच न आइओ ॥१० ॥

त्व प्रसादि ॥ कबित ॥

कतहूं सुचेत हुइ कै चेतना को चार कीओ कतहूं अचिंत हुइ कै सोवत अचेत हो ॥
कतहूं भिखारी हुइ कै मांगत फिरत भीख कहूं महा दान हुइ कै मांगिओ धन देत हो ॥
कहूं महां राजन को दीजत अनंत दान कहूं महां राजन ते छीन छित लेत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥१ ॥११ ॥
कहूं जच्छ गंध्रब उरग कहूं बिदिआधर कहूं भए किंनर पिसाच कहूं प्रेत हो ॥
कहूं हुइ कै हिंदूआ गाइत्री को गुपत जपिओ कहूं हुइ कै तुरका पुकारे बांग देत हो ॥
कहूं कोक काब हुइ कै पुरान को पड़त मत कतहूं कुरान को निदान जान लेत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥२ ॥१२ ॥
कहूं देवतान के दिवान मै बिराजमान कहूं दानवान को गुमान मत देत हो ॥
कहूं इंद्र राजा को मिलत इंद्र पदवी सी कहूं इंद्र पदवी छिपाइ छीन लेत हो ॥
कतहूं बिचार अबिचार को बिचारत हो कहूं निज नार पर नार के निकेत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥३ ॥१३ ॥
कहूं ससत्रधारी कहूं बिदिआ के बिचारी कहूं मारत अहारी कहूं नार के निकेत हो ॥
कहूं देवबानी कहूं सारदा भवानी कहूं मंगला म्रिड़ानी कहूं सिआम कहूं सेत हो ॥
कहूं धरम धामी कहूं सरब ठउर गामी कहूं जती कहूं कामी कहूं देत कहूं लेत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥४ ॥१४ ॥
कहूं जटाधारी कहूं कंठी धरे ब्रहमचारी कहूं जोग साधी कहूं साधना करत हो ॥
कहूं कान फारे कहूं डंडी हुइ पधारे कहूं फूक फूक पावन कउ प्रिथी पै धरत हो ॥
कतहूं सिपाही हुइ कै साधत सिलाहन कौ कहूं छत्री हुइ कै अर मारत मरत हो ॥
कहूं भूम भार कौ उतारत हो महाराज कहूं भव भूतन की भावना भरत हो ॥५ ॥१५ ॥
कहूं गीत नाद के निदान कौ बतावत हो कहूं न्रितकारी चित्रकारी के निधान हो ॥
कतहूं पयूख हुइ कै पीवत पिवावत हो कतहूं मयूख ऊख कहूं मद पान हो ॥
कहूं महा सूर हुइ कै मारत मवासन कौ कहूं महादेव देवतान के समान हो ॥
कहूं महादीन कहूं द्रब के अधीन कहूं बिदिआ मै प्रबीन कहूं भूम कहूं भान हो ॥६ ॥१६ ॥
कहूं अकलंक कहूं मारत मयंक कहूं पूरन प्रजंक कहूं सुधता की सार हो ॥
कहूं देव धरम कहूं साधना के हरम कहूं कुतसत कुकरम कहूं धरम के प्रकार हो ॥
कहूं पउन अहारी कहूं बिदिआ के बीचारी कहूं जोगी जती ब्रहमचारी नर कहूं नार हो ॥
कहूं छत्रधारी कहूं छाला धरे छैल भारी कहूं छकवारी कहूं छल के प्रकार हो ॥७ ॥१७ ॥
कहूं गीत के गवया कहूं बेन के बजया कहूं न्रित के नचया कहूं नर को अकार हो ॥
कहूं बेद बानी कहूं कोक की कहानी कहूं राजा कहूं रानी कहूं नार के प्रकार हो ॥
कहूं बेन के बजया कहूं धेन के चरया कहूं लाखन लवया कहूं सुंदर कुमार हो ॥
सुधता की सान हो कि संतन के प्रान हो कि दाता महा दान हो कि न्रिदोखी निरंकार हो ॥८ ॥१८ ॥
निरजुर निरूप हो कि सुंदर सरूप हो कि भूपन के भूप हो कि दाता महा दान हो ॥
प्रान के बचया दूध पूत के दिवया रोग सोग के मिटया किधौ मानी महा मान हो ॥
बिदिआ के बिचार हो कि अद्वै अवतार हो कि सिद्धता की सूरति हो कि सुधता की सान हो ॥
जोबन के जाल हो कि काल हूं के काल हो कि सत्रन के सूल हो कि मित्रन के प्रान हो ॥९ ॥१९ ॥
कहूं ब्रहम बाद कहूं बिदिआ को बिखाद कहूं नाद को ननाद कहूं पूरन भगत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं बिदिआ की प्रतीत कहूं नीत अउ अनीत कहूं जुआला सी जगत हो ॥
पूरन प्रताप कहूं इकाती को जाप कहूं ताप को अताप कहूं जोग ते डिगत हो ॥
कहूं बर देत कहूं छल सिउ छिनाइ लेत सरब काल सरब ठउर एक से लगत हो ॥१० ॥२० ॥

त्व प्रसादि ॥ सवये ॥

स्रावग सुद्ध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥
सूर सुरारदन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥

सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के ॥
स्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥२१॥
माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥
कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ॥
एते भए तु कहा भए भूपति अंत को नांगे ही पांइ पधारे ॥२॥२२॥
जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ॥
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे ॥
भूत भविक्ख भवान के भूपत कउनु गनै नहीं जात बिचारे ॥
स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ॥३॥२३॥
तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥
बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै ॥
पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजार क देखै ॥
स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥४॥२४॥
सुध सिपाह दुरंत दुबाह सु साज सनाह दुरजान दलैंगे ॥
भारी गुमान भरे मन मैं कर परबत पंख हले न हलैंगे ॥
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलैंगे ॥
स्री पति स्री भगवान क्रिपा बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ॥५॥२५॥
बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछया ॥
तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलया ॥
गाढ़े गढ़ान को तोड़नहार सु बातन हीं चक चार लवया ॥
साहिबु स्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवया ॥६॥२६॥
दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥
पुंन प्रतापन बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥
साध समूह प्रसंन फिरैं जग सत्र सभै अविलोक चपैंगे ॥७॥२७॥
मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥
कोटि इसनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥
ब्रहम महेसर बिसन सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ॥
जे नर स्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥२८॥
कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सों बैठ कै ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइओ ॥९॥२९॥
काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंगु गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥३०॥

त्व प्रसादि ॥ तोमर छंद ॥

हरि जनम मरन बिहीन ॥
दस चार चार प्रबीन ॥
अकलंक रूप अपार ॥
अनछिज तेज उदार ॥१॥३१॥
अनभिज रूप दुरंत ॥
सभ जगत भगत महंत ॥
जस तिलक भूभ्रित भानु ॥
दस चार चार निधान ॥२॥३२॥
अकलंक रूप अपार ॥
सभ लोक सोक बिदार ॥

कल काल करम बिहीन ॥
सभ करम धरम प्रबीन ॥३॥३३॥
अनखंड अतुल प्रताप ॥
सभ थापिओ जिह थाप ॥
अनखेद भेद अछेद ॥
मुखचार गावत बेद ॥४॥३४॥
जिह नेत निगम कहंत ॥
मुखचार बकत बिअंत ॥
अनभिज अतुल प्रताप ॥
अनखंड अमित अथाप ॥५॥३५॥
जिह कीन जगत पसार ॥
रचिओ बिचार बिचार ॥
अनंत रूप अखंड ॥
अतुल प्रताप प्रचंड ॥६॥३६॥
जिह अंड ते ब्रहमंड ॥
कीने सु चौदह खंड ॥
सभ कीन जगत पसार ॥
अबियकत रूप उदार ॥७॥३७॥
जिह कोटि इंद्र न्रिपार ॥
कई ब्रहम बिसन बिचार ॥
कई राम क्रिसन रसूल ॥
बिनु भगत को न कबूल ॥८॥३८॥
कई सिंध बिंध नगिंद्र ॥
कई मच्छ कच्छ फनिंद्र ॥
कई देव आदि कुमार ॥
कई क्रिसन बिसन अवतार ॥९॥३९॥
कई इंद्र बार बुहार ॥
कई बेद अउ मुखचार ॥
कई रुद्र छुद्र सरूप ॥
कई राम क्रिसन अनूप ॥१०॥४०॥
कई कोक काबि भणंत ॥
कई बेद भेद कहंत ॥
कई सासत्र सिंम्रिति बखान ॥
कहूं कथत ही सु पुरान ॥११॥४१॥
कई अगन होत्र करंत ॥
कई उरध ताप दुरंत ॥
कई उरध बाहु संनिआस ॥
कहूं जोग भेस उदास ॥१२॥४२॥
कहूं निवली करम करंत ॥
कहूं पउन अहार दुरंत ॥
कहूं तीरथ दान अपार ॥
कहूं जग करम उदार ॥१३॥४३॥
कहूं अगन होत्र अनूप ॥
कहूं निआइ राज बिभूत ॥
कहूं सासत्र सिंम्रिति रीत ॥
कहूं बेद सिउ बिप्रीत ॥१४॥४४॥
कई देस देस फिरंत ॥
कई एक ठौर इसथंत ॥
कहूं करत जल महि जाप ॥
कहूं सहत तन पर ताप ॥१५॥४५॥

कहूं बास बनहि करंत ॥
कहूं ताप तनहि सहंत ॥
कहूं ग्रिहसत धरम अपार ॥
कहूं राज रीत उदार ॥१६ ॥४६ ॥
कहूं रोग रहत अभरम ॥
कहूं करम करत अकरम ॥
कहूं सेख ब्रहम सरूप ॥
कहूं नीत राज अनूप ॥१७ ॥४७ ॥
कहूं रोग सोग बिहीन ॥
कहूं एक भगत अधीन ॥
कहूं रंक राज कुमार ॥
कहूं बेद बिआस अवतार ॥१८ ॥४८ ॥
कई ब्रहम बेद रटंत ॥
कई सेख नाम उचरंत ॥
बैराग कहूं सनिआस ॥
कहूं फिरत रूप उदास ॥१९ ॥४९ ॥
सभ करम फोकट जान ॥
सभ धरम निहफल मान ॥
बिन एक नाम अधार ॥
सभ करम भरम बिचार ॥२० ॥५० ॥

त्व प्रसादि ॥ लघु निराज छंद ॥

जले हरी ॥
थले हरी ॥
उरे हरी ॥
बने हरी ॥१ ॥५१ ॥
गिरे हरी ॥
गुफे हरी ॥
छिते हरी ॥
नभे हरी ॥२ ॥५२ ॥
ईहां हरी ॥
ऊहां हरी ॥
जिमी हरी ॥
जमा हरी ॥३ ॥५३ ॥
अलेख हरी ॥
अभेख हरी ॥
अदोख हरी ॥
अद्वैख हरी ॥४ ॥५४ ॥
अकाल हरी ॥
अपाल हरी ॥
अछेद हरी ॥
अभेद हरी ॥५ ॥५५ ॥
अजंत्र हरी ॥
अमंत्र हरी ॥
सु तेज हरी ॥
अतंत्र हरी ॥६ ॥५६ ॥
अजात हरी ॥
अपात हरी ॥
अमित्र हरी ॥
अमात हरी ॥७ ॥५७ ॥

अरोग हरी ॥
असोग हरी ॥
अभरम हरी ॥
अकरम हरी ॥८॥५८॥
अजै हरी ॥
अभै हरी ॥
अभेद हरी ॥
अछेद हरी ॥९॥५९॥
अखंड हरी ॥
अभंड हरी ॥
अडंड हरी ॥
प्रचंड हरी ॥१०॥६०॥
अतेव हरी ॥
अभेव हरी ॥
अजेव हरी ॥
अछेव हरी ॥११॥६१॥
भजो हरी ॥
थपो हरी ॥
तपो हरी ॥
जपो हरी ॥१२॥६२॥
जलस तुहीं ॥
थलस तुहीं ॥
नदिस तुहीं ॥
नदस तुहीं ॥१३॥६३॥
ब्रिछस तुहीं ॥
पतस तुहीं ॥
छितस तुहीं ॥
उरधस तुहीं ॥१४॥६४॥
भजस तुअं ॥
भजस तुअं ॥
रटस तुअं ॥
ठटस तुअं ॥१५॥६५॥
जिमी तुहीं ॥
जमा तुहीं ॥
मकी तुहीं ॥
मका तुहीं ॥१६॥६६॥
अभू तुहीं ॥
अभै तुहीं ॥
अछू तुहीं ॥
अछै तुहीं ॥१७॥६७॥
जतस तुहीं ॥
ब्रतस तुहीं ॥
गतस तुहीं ॥
मतस तुहीं ॥१८॥६८॥
तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥१९॥६९॥
तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥

तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥२०॥७०॥

त्व प्रसादि ॥ कबितु ॥

खूक मलहारी गज गदाहा बिभूतधारी गिदूआ मसान बास करिओ ई करत हैं ॥
घुघू मटबासी लगे डोलत उदासी म्रिग तरवर सदीव मोन साधे ई मरत हैं ॥
बिंद के सधया ताहि हीज की बडया देत बंदरा सदीव पाइ नागे ई फिरत हैं ॥
अंगना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन एक गिआन के बिहीन छीन कैसे कै तरत हैं ॥१॥७१॥
भूत बनचारी छित छउना सभै दूधाधारी पउन के अहारी सु भुजंग जानीअतु हैं ॥
त्रिण के भछया धन लोभ के तजया ते तो गऊअन के जया ब्रिखभया मानीअतु हैं ॥
नभ के उडया ताहि पंछी की बडया देत बगुला बिड़ाल ब्रिक धिआनी ठानीअतु हैं ॥
जेतो बडे गिआनी तिनो जानी पै बखानी नाहि ऐसे न प्रपंच मनि भूलि आनीअतु हैं ॥२॥७२॥
भूम के बसया ताहि भूचरी कै जया कहै नभ के उडया सो चिरया कै बखानीऐ ॥
फल के भछया ताहि बांदरी के जया कहै आदिस फिरया ते तो भूत कै पछानीऐ ॥
जल के तरया को गंगेरी सी कहत जग आग के भछया सो चकोर सम मानीऐ ॥
सूरज सिवया ताहि कौल की बडाई देत चंद्रमा सिवया कौ कवी कै पहिचानीऐ ॥३॥७३॥
नाराइण कच्छ मच्छ तिंदूआ कहत सभ कउल नाभ कउल जिह ताल मैं रहतु हैं ॥
गोपी नाथ गूजर गुपाल सभै धेनचारी रिखीकेस नाम कै महंत लहीअतु हैं ॥
माधव भवर औ अटेरू को कन्हया नाम कंस के बधया जमदूत कहीअतु हैं ॥
मूढ रूढ पीटत न गूढता को भेद पावै पूजत न ताहि जा के राखे रहीअतु हैं ॥४॥७४॥
बिस्वपाल जगत काल दीन दिआल बैरी साल सदा प्रतपाल जम जाल ते रहत हैं ॥
जोगी जटाधारी सती साचे बडे ब्रहमचारी धिआन काज भूख पिआस देह पै सहत हैं ॥
निउली करम जल होम पावक पवन होम अधो मुख एक पाइ ठाढे न बहत हैं ॥
मानव फनिंद देव दानव न पावै भेद बेद औ कतेब नेत नेत कै कहत हैं ॥५॥७५॥
नाचत फिरत मोर बादर करत घोर दामनी अनेक भाउ करिओ ई करत है ॥
चंद्रमा ते सीतल न सूरज के तपत तेज इंद्र सो न राजा भव भूम को भरत है ॥
सिव से तपसी आदि ब्रहमा से न बेदचारी सनत कुमार सी तपसिआ न अनत है ॥
गिआन के बिहीन काल फास के अधीन सदा जुगन की चउकरी फिराए ई फिरत है ॥६॥७६॥
एक सिव भए एक गए एक फेर भए रामचंद्र क्रिसन के अवतार भी अनेक हैं ॥
ब्रहमा अरु बिसन केते बेद औ पुरान केते सिंम्रिति समूहन कै हुइ हुइ बितए हैं ॥
मोनदी मदार केते असुनी कुमार केते अंसा अवतार केते काल बस भए हैं ॥
पीर औ पिकांबर केते गने न परत एते भूम ही ते हुइ कै फेरि भूमि ही मिलए हैं ॥७॥७७॥
जोगी जती ब्रहमचारी बडे बडे छत्रधारी छत्र ही की छाइआ कई कोस लौ चलत हैं ॥
बडे बडे राजन के दाबति फिरति देस बडे बडे राजन के द्रप को दलतु हैं ॥
मान से महीप औ दिलीप कैसे छत्रधारी बडो अभिमान भुज दंड को करत हैं ॥
दारा से दिलीसर द्रुजोधन से मानधारी भोग भोग भूमि अंत भूमि मै मिलत हैं ॥८॥७८॥
सिजदे करे अनेक तोपची कपट भेस पोसती अनेक दा निवावत है सीस कौ ॥
कहा भइओ मल जौ पै काढत अनेक डंड सो तौ न डंडौत असटांग अथतीस कौ ॥
कहा भइओ रोगी जौ पै डारिओ रहिओ उरध मुख मन ते न मूंड निहराइओ आदि ईस कौ ॥
कामना अधीन सदा दामना प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे पावै जगदीस कौ ॥९॥७९॥
सीस पटकत जा के कान मै खजूरा धसै मूंड छटकत मित्र पुत्र हूं के सोक सौ ॥
आक को चरया फल फूल को भछया सदा बन कौ भ्रमया और दूसरो न बोक सौ ॥
कहा भयो भेड जउ घसत सीस ब्रिछन सों माटी को भछया बोल पूछ लीजै जोक सौ ॥
कामना अधीन काम क्रोध मैं प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे भेटै परलोक सौ ॥१०॥८०॥
नाचिओ ई करत मोर दादर करत सोर सदा घनघोर घन करिओ ई करत हैं ॥
एक पाइ ठाढे सदा बन मै रहत ब्रिछ फूक फूक पाव भूम स्रावग धरत हैं ॥
पाहन अनेक जुग एक ठउर बासु करै काग अउर चील देस देस बिचरत हैं ॥
गिआन के बिहीन महा दान मै न हूजै लीन भावना यकीन दीन कैसे कै तरत हैं ॥११॥८१॥
जैसे एक स्वांगी कहूं जोगीआ बैरागी बनै कबहूं सनिआस भेस बन कै दिखावई ॥
कहूं पउनहारी कहूं बैठे लाइ तारी कहूं लोभ की खुमारी सौं अनेक गुन गावई ॥

कहूं ब्रहमचारी कहूं हाथ पै लगावै बारी कहूं डंड धारी हुइ कै लोगन भ्रमावई ॥
कामना अधीन परिओ नाचत है नाचन सों गिआन के बिहीन कैसे ब्रहम लोक पावई ॥१२॥८२॥
पंच बार गीदर पुकारे परे सीतकाल कुंचर औ गदहा अनेकदा प्रकार हीं ॥
कहा भयो जो पै कलवत्र लीओ कांसी बीच चीर चीर चोरटा कुठारन सों मार ही ॥
कहा भयो फांसी डारि बूडिओ जड़ गंग धारि डारि डारि फांस ठग मारि मारि डार हीं ॥
डूबे नरक धार मूढ़ गिआन के बिना बिचार भावना बिहीन कैसे गिआन को बिचार हीं ॥१३॥८३॥
ताप के सहे ते जो पै पाईऐ अताप नाथ तापना अनेक तन घाइल सहत हैं ॥
जाप के कीए ते जो पै पायत अजाप देव पूदना सदीव तुहीं तुहीं उचरत हैं ॥
नभ के उडे ते जो पै नाराइण पाईयत अनल अकास पंछी डोलबो करत हैं ॥
आग मै जरे ते गति रांड की परत कर पताल के बासी किउ भुजंग न तरत हैं ॥१४॥८४॥
कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥१५॥८५॥
देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥१६॥८६॥
जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥
केते कच्छ मच्छ केते उन कउ करत भच्छ केते अच्छ वच्छ हुइ सपच्छ उड जाहिंगे ॥
केते नभ बीच अच्छ पच्छ कउ करैंगे भच्छ केतक प्रतछ हुइ पचाइ खाइ जाहिंगे ॥
जल कहा थल कहा गगन के गउन कहा काल के बनाइ सबै काल ही चबाहिंगे ॥
तेज जिउ अतेज मै अतेज जैसे तेज लीन ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१८॥८८॥
कूकत फिरत केते रोवत मरत केते जल मैं डुबत केते आग मैं जरत हैं ॥
केते गंग बासी केते मदीना मका निवासी केतक उदासी के भ्रमाए ई फिरत हैं ॥
करवत सहत केते भूमि मै गडत केते सूआ पै चढ़त केते दुख कउ भरत हैं ॥
गैन मैं उडत केते जल मैं रहत केते गिआन के बिहीन जक जारे ई मरत हैं ॥१९॥८९॥
सोध हारे देवता बिरोध हारे दानो बडे बोध हारे बोधक प्रबोध हारे जापसी ॥
घस हारे चंदन लगाइ हारे चोआ चारु पूज हारे पाहन चढाइ हारे लापसी ॥
गाह हारे गोरन मनाइ हारे मढ़ी मट लीप हारे भीतन लगाइ हारे छापसी ॥
गाइ हारे गंध्रब बजाए हारे किंनर सभ पच हारे पंडत तपंत हारे तापसी ॥२०॥९०॥

त्व प्रसादि ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥

न रागं न रंगं न रूपं न रेखं ॥
न मोहं न क्रोहं न द्रोहं न द्वैखं ॥
न करमं न भरमं न जनमं न जातं ॥
न मित्रं न सत्रं न पितं ॥ न मातं ॥१॥९१॥
न नेहं न गेहं न कामं न धामं ॥
न पुत्रं न मित्रं न सत्रं न भामं ॥
अलेखं अभेखं अजोनी सरूपं ॥
सदा सिद्ध दा बुध दा ब्रिद्ध रूपं ॥२॥९२॥
नहीं जान जाई कछू रूप रेखं ॥
कहा बासु ता को फिरै कउन भेखं ॥
कहा नाम ता कै कहा कै कहावै ॥
कहा कै बखानो कहे मो न आवै ॥३॥९३॥
न रोगं न सोगं न मोहं न मातं ॥
न करमं न भरमं न जनमं न जातं ॥

अद्वैखं अभेखं अजोनी सरूपे ॥
नमो एक रूपे नमो एक रूपे ॥४॥९४॥
परेअं परा परम प्रगिआ प्रकासी ॥
अछेदं अछै आदि अद्वै अबिनासी ॥
न जातं न पातं न रूपं न रंगे ॥
नमो आदि अभंगे नमो आदि अभंगे ॥५॥९५॥
किते क्रिसन से कीट कोटै उपाए ॥
उसारे गढ़े फेर मेटे बनाए ॥
अगाधे अभै आदि अद्वै अबिनासी ॥
परेअं परा परम पूरन प्रकासी ॥६॥९६॥
न आधं न बिआधं अगाधं सरूपे ॥
अखंडित प्रताप आदि अछै बिभूते ॥
न जनमं न मरनं न बरनं न बिआधे ॥
अखंडे प्रचंडे अदंडे असाधे ॥७॥९७॥
न नेहं न गेहं सनेहं सनाथे ॥
उदंडे अमंडे प्रचंडे प्रमाथे ॥
न जाते न पाते न सत्रे न मित्रे ॥
सु भूते भविक्खे भवाने अचित्रे ॥८॥९८॥
न रायं न रंकं न रूपं न रेखं ॥
न लोभं न चोभं अभूतं अभेखं ॥
न सत्रं न मित्रं न नेहं न गेहं ॥
सदैवं सदा सरब सरबत्र सनेहं ॥९॥९९॥
न कामं न क्रोधं न लोभं न मोहं ॥
अजोनी अछै आदि अद्वै अजोहं ॥
न जनमं न मरनं न बरनं न बिआधं ॥
न रोगं न सोगं अभै निरबिखाधं ॥१०॥१००॥
अछेदं अभेदं अकरमं अकालं ॥
अखंडं अभंडं प्रचंडं अपालं ॥
न तातं न मातं न जातं न भाइअं ॥
न नेहं न गेहं न करमं न काइअं ॥११॥१०१॥
न रूपं न भूपं न कायं न करमं ॥
न त्रासं न प्रासं न भेदं न भरमं ॥
सदैवं सदा सिद्ध ब्रिद्धं सरूपे ॥
नमो एक रूपे नमो एक रूपे ॥१२॥१०२॥
निरुकतं प्रभा आदि अनुकतं प्रतापे ॥
अजुगतं अछै आदि अविकतं अथापे ॥
बिभुगतं अछै आदि अच्छै सरूपे ॥
नमो एक रूपे नमो एक रूपे ॥१३॥१०३॥
न नेहं न गेहं न सोकं न साकं ॥
परेअं पवित्रं पुनीतं अताकं ॥
न जातं न पातं न मित्रं न मंत्रे ॥
नमो एक तंत्रे नमो एक तंत्रे ॥१४॥१०४॥
न धरमं न भरमं न सरमं न साके ॥
न बरमं न चरमं न करमं न बाके ॥
न सत्रं न मित्रं न पुत्रं सरूपे ॥
नमो आदि रूपे नमो आदि रूपे ॥१५॥१०५॥
कहूं कंज के मंज के भरम भूले ॥
कहूं रंक के राज के धरम अलूले ॥
कहूं देस के भेस के धरम धामे ॥
कहूं राज के साज के बाज तामे ॥१६॥१०६॥

कहूं अछ्र के पछ्र के सिद्ध साधे ॥
कहूं सिद्ध के बुद्धि के ब्रिध लाधे ॥
कहूं अंग के रंग के संगि देखे ॥
कहूं जंग के रंग के रंग पेखे ॥१७॥१०७॥
कहूं धरम के करम के हरम जाने ॥
कहूं धरम के करम के भरम माने ॥
कहूं चार चेसटा कहूं चित्र रूपं ॥
कहूं परम प्रगया कहूं सरब भूपं ॥१८॥१०८॥
कहूं नेह ग्रेहं कहूं देह दोखं ॥
कहूं औखदी रोग के सोक सोखं ॥
कहूं देव बिद्या कहूं दैत बानी ॥
कहूं जच्छ गंधरब किंनर कहानी ॥१९॥१०९॥
कहूं राजसी सातकी तामसी हो ॥
कहूं जोग बिद्या धरे तापसी हो ॥
कहूं रोग रहिता कहूं जोग जुगतं ॥
कहूं भूमि की भुगत मै भरम भुगतं ॥२०॥११०॥
कहूं देव कंनिआ कहूं दानवी हो ॥
कहूं जच्छ बिद्या धरे मानवी हो ॥
कहूं राजसी हो कहूं राज कंनिआ ॥
कहूं स्रिसटि की प्रिसट की रिसट पंनिआ ॥२१॥१११॥
कहूं बेद बिदिआ कहूं बिओम बानी ॥
कहूं कोक की काबि कथै कहानी ॥
कहूं अद्र सारं कहूं भद्र रूपं ॥
कहूं मद्र बानी कहूं छिद्र सरूपं ॥२२॥११२॥
कहूं बेद बिदिआ कहूं काब रूपं ॥
कहूं चेसटा चारि चित्रं सरूपं ॥
कहूं परम पुरान को पार पावै ॥
कहूं बैठ कुरान के गीत गावै ॥२३॥११३॥
कहूं सुद्ध सेखं कहूं ब्रहम धरमं ॥
कहूं ब्रिध अवसथा कहूं बाल करमं ॥
कहूं जुआ सरूपं जरा रहत देहं ॥
कहूं नेह देहं कहूं तिआग ग्रेहं ॥२४॥११४॥
कहूं जोग भोगं कहूं रोग रागं ॥
कहूं रोग रहिता कहूं भोग तिआगं ॥
कहूं राज साजं कहूं राज रीतं ॥
कहूं पूरन प्रगिआ कहूं परम प्रीतं ॥२५॥११५॥
कहूं आरबी तोरकी पारसी हो ॥
कहूं पहिलवी पशतवी संसक्रिती हो ॥
कहूं देस भाख्या कहूं देव बानी ॥
कहूं राज बिदिआ कहूं राजधानी ॥२६॥११६॥
कहूं मंत्र बिदिआ कहूं तंत्र सारं ॥
कहूं जंत्र रीतं कहूं ससत्र धारं ॥
कहूं होम पूजा कहूं देव अरचा ॥
कहूं पिंगुला चारणी गीत चरचा ॥२७॥११७॥
कहूं बीन बिदिआ कहूं गान गीतं ॥
कहूं मलेछ भाखिआ कहूं बेद रीतं ॥
कहूं न्रित बिदिआ कहूं नाग बानी ॥
कहूं गारड़ू गूढ़ कथैं कहानी ॥२८॥११८॥
कहूं अच्छरा पच्छरा मच्छरा हो ॥
कहूं बीर बिदिआ अभूतं प्रभा हो ॥

कहूं छैल छाला धरे छत्रधारी ॥
कहूं राज साजं धिराजाधिकारी ॥२९॥११९॥
नमो नाथ पूरे सदा सिद्ध दाता ॥
अछेदी अछै आदि अद्वै बिधाता ॥
न त्रसतं न ग्रसतं समसतं सरूपे ॥
नमसतं नमसतं तुअसतं अभूते ॥३०॥१२०॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छंद ॥

अब्यकत तेज अनभउ प्रकास ॥
अच्छै सरूप अद्वै अनास ॥
अनतुट तेज अनखुट भंडार ॥
दाता दुरंत सरबं प्रकार ॥१॥१२१॥
अनभूत तेज अनछिज गात ॥
करता सदीव हरता सनात ॥
आसन अडोल अनभूत करम ॥
दाता दइआल अनभूत धरम ॥२॥१२२॥
जिह सत्र मित्र नहि जनम जात ॥
जिह पुत्र भ्रात नहीं मित्र मात ॥
जिह करम भरम नहीं धरम धिआन ॥
जिह नेह गेह नहीं बिओत बान ॥३॥१२३॥
जिह जाति पाति नहीं सत्र मित्र ॥
जिह नेह गेह नहीं चिहन चित्र ॥
जिह रंग रूप नहीं राग रेख ॥
जिह जनम जाति नहीं भरम भेख ॥४॥१२४॥
जिह करम भरम नही जात पात ॥
नही नेह गेह नही पित्र मात ॥
जिह नाम थाम नही बरग बिआध ॥
जिह रोग सोग नही सत्र साध ॥५॥१२५॥
जिह त्रास वास नही देह नास ॥
जिह आदि अंत नहीं रूप रासि ॥
जिह रोग सोग नही जोग जुगति ॥
जिह त्रास आस नही भूमि भुगति ॥६॥१२६॥
जिह काल बिआल कटिओ न अंग ॥
अच्छै सरूप अखै अभंग ॥
जिह नेत नेत उचरंत बेद ॥
जिह अलख रूप कथत कतेब ॥७॥१२७॥
जिह अलख रूप आसन अडोल ॥
जिह अमित तेज अछै अतोल ॥
जिह धिआन काज मुनि जन अनंत ॥
कई कलप जोग साधत दुरंत ॥८॥१२८॥
तन सीत घाम बरखा सहंत ॥
कई कलप एक आसन बितंत ॥
कई जतन जोग बिदिआ बिचारि ॥
साधंत तदपि पावत न पार ॥९॥१२९॥
कई उरध बाह देसन भ्रमंत ॥
कई उरध मध पावक झुलंत ॥
कई सिंम्रित सासत्र उचरंत बेद ॥
कई कोक काबि कथत कतेब ॥१०॥१३०॥
कई अगन होत्र कई पउन अहार ॥
कई करत कोट म्रित को अहार ॥

कई करत साक पै पत्र भच्छ ॥
नही तदपि देव होवत प्रतछ ॥११॥१३१॥
कई गीत गान गंधरब रीत ॥
कई बेद सासत्र बिदिआ प्रतीत ॥
कहूं बेद रीति जग आदि करम ॥
कहूं अगन होत्र कहूं तीरथ धरम ॥१२॥१३२॥
कई देस देस भाखा रटंत ॥
कई देस देस बिदिआ पढ़ंत ॥
कई करत भांत भांतन बिचार ॥
नही नैकु तासु पायत न पार ॥१३॥१३३॥
कई तीरथ तीरथ भरमत सु भरम ॥
कई अगन होत्र कई देव करम ॥
कई करत बीर बिदिआ बिचार ॥
नहीं तदप तासु पायत न पार ॥१४॥१३४॥
कहूं राज रीत कहूं जोग धरम ॥
कई सिंम्रिति सासत्र उचरत सु करम ॥
निउली आदि करम कहूं हसत दान ॥
कहूं अस्वमेध मख को बखान ॥१५॥१३५॥
कहूं करत ब्रहम बिदिआ बिचार ॥
कहूं जोग रीत कहूं ब्रिद्ध चार ॥
कहूं करत जच्छ गंध्रब गान ॥
कहूं धूप दीप कहूं अरघ दान ॥१६॥१३६॥
कहूं पित्र करम कहूं बेद रीत ॥
कहूं न्रित नाच कहूं गान गीत ॥
कहूं करत सासत्र सिंम्रित उचार ॥
कई भजत एक पग निराधार ॥१७॥१३७॥
कई नेह देह कई गेह वास ॥
कई भ्रमत देस देसन उदास ॥
कई जल निवास कई अगनि ताप ॥
कई जपत उरध लटकंत जाप ॥१८॥१३८॥
कई करत जोग कलपं प्रजंत ॥
नही तदपि तास पायत न अंत ॥
कई करत कोट बिदिआ बिचार ॥
नही तदपि दिसटि देखे मुरार ॥१९॥१३९॥
बिन भगति सकति नही परत पान ॥
बहु करत होम अरु जग दान ॥
बिनु एक नामु इक चित लीन ॥
फोकटो सरब धरमा बिहीन ॥२०॥१४०॥

त्व प्रसादि ॥ तोटक छंद ॥

जय जंपत जुगण जूह जुअं ॥
भै कंपहि मेरु पयाल भुअं ॥
तप तापस सरब जले रु थलं ॥
धंनि उचरत इंद्र कुबेर बलं ॥१॥१४१॥
अनखेद सरूप अभेद अभिअं ॥
अनखंड अभूत अछेद अछिअं ॥
अनकाल अपाल दइआल सुअं ॥
जिह ठटीअं मेर आकास भुअं ॥२॥१४२॥
अनखंड अमंड प्रचंड नरं ॥
जिह रचीअं देव अदेव बरं ॥

सभ कीनी दीन जमीनु जमां ॥
जिह रचीअं सरब मकीनु मकां ॥३ ॥१४३ ॥
जिह राग न रूप न रेख रुखं ॥
जिह ताप न स्राप न सोक सुखं ॥
जिह रोग न सोग न भोग भुयं ॥
जिह खेद न भेद न छेद छयं ॥४ ॥१४४ ॥
जिह जाति न पाति न मात पितं ॥
जिह रचीअं छत्री छत्र छितं ॥
जिह राग न रेख न रोग भणं ॥
जिह द्वैख न दाग न दोख गणं ॥५ ॥१४५ ॥
जिह अंडहि ते ब्रहिमंड रचिओ ॥
दिस चार करी नव खंड सचिओ ॥
रज तामस तेज अतेज कीओ ॥
अनभउ पद आप प्रचंड लीओ ॥६ ॥१४६ ॥
स्रिअ सिंधुर बिंध नगिंध नगं ॥
स्रिअ जच्छ गंधरब फणिंद भुजं ॥
रच देव अदेव अभेव नरं ॥
नरपाल न्रिपाल कराल त्रिगं ॥७ ॥१४७ ॥
कई कीट पतंग भुजंग नरं ॥
रचि अंडज सेतज उतभुजं ॥
कीए देव अदेव सराध पितं ॥
अनखंड प्रताप प्रचंड गतं ॥८ ॥१४८ ॥
प्रभ जाति न पाति न जोति जुतं ॥
जिह तात न मात न भ्रात सुतं ॥
जिह रोग न सोग न भोग भुअं ॥
जिह जंपहि किंनर जच्छ जुअं ॥९ ॥१४९ ॥
नर नारि निपुंसक जाहि कीए ॥
गण किंनर जच्छ भुजंग दीए ॥
गजि बाजि रथादिक पांति गणं ॥
भव भूत भविक्ख भवान तुअं ॥१० ॥१५० ॥
जिह अंडज सेतज जेररजं ॥
रचि भूम अकास पताल जलं ॥
रचि पावक पउण प्रचंड बली ॥
बन जासु कीओ फल फूल कली ॥११ ॥१५१ ॥
भूअ मेर अकास निवास छितं ॥
रचि रोज इकादस चंद्र ब्रितं ॥
दुति चंद दिनी सहि दीप दई ॥
जिह पावक पौन प्रचंड मई ॥१२ ॥१५२ ॥
जिह खंड अखंड प्रचंड कीए ॥
जिह छत्र उपाइ छिपाइ दीए ॥
जिह लोक चतुर दस चार रचे ॥
गण गंध्रब देव अदेव सचे ॥१३ ॥१५३ ॥
अनधूत अभूत अछूत मतं ॥
अनगाध अब्याध अनादि गतं ॥
अनखेद अभेद अछेद नरं ॥
जिह चार चत्र दिस चक्र फिरं ॥१४ ॥१५४ ॥
जिह राग न रंग न रेख रुगं ॥
जिह सोग न भोग न जोग जुगं ॥
भूअ भंजन गंजन आदि सिरं ॥
जिह बंदत देव अदेव नरं ॥१५ ॥१५५ ॥

गण किंनर जच्छ भुजंग रचे ॥
मणि माणिक मोती लाल सुचे ॥
अनभंज प्रभा अनगंज ब्रितं ॥
जिह पार न पावत पूर मतं ॥१६ ॥१५६ ॥
अनखंड सरूप अडंड प्रभा ॥
जै जंपत बेद पुरान सभा ॥
जिह बेद कतेब अनंत कहै ॥
जिह भूत अभूत न भेद लहै ॥१७ ॥१५७ ॥
जिह बेद पुरान कतेब जपै ॥
सुतसिंधु अधो मुख ताप तपै ॥
कई कलपन लौ तप ताप करै ॥
नही नैकु क्रिपा निधि पान परै ॥१८ ॥१५८ ॥
जिह फोकट धरम सभै तजि है ॥
इक चित क्रिपा निधि को जपि हैं ॥
तेऊ या भव सागर को तर हैं ॥
भव भूल न देहि पुनर धर हैं ॥१९ ॥१५९ ॥
इक नाम बिना नही कोट ब्रती ॥
इम बेद उचारत सारसुती ॥
जोऊ वा रस के चसके रस हैं ॥
तेऊ भूल न काल फंधा फसि हैं ॥२० ॥१६० ॥

त्व प्रसादि ॥ नराज छंद ॥

अगंज आदि देव हैं अभंज भंज जानीऐं ॥
अभूत भूत हैं सदा अगंज गंज मानीऐं ॥
अदेव देव हैं सदा अभेव भेव नाथ हैं ॥
समसत सिद्ध ब्रिधि दा सदीव सरब साथ हैं ॥१ ॥१६१ ॥
अनाथ नाथ नाथ हैं अभंज भंज हैं सदा ॥
अगंज गंज गंज हैं सदीव सिद्ध ब्रिधि दा ॥
अनूप रूप सरूप हैं अछिज तेज मानीऐं ॥
सदीव सिद्ध बुधि दा प्रताप पत्र जानीऐं ॥२ ॥१६२ ॥
न राग रंग रूप हैं न रोग राग रेख हैं ॥
अदोख अदाग अदग हैं अभूत अभ्रम अभेख हैं ॥
न तात मात जात हैं न पाति चिहन बरन हैं ॥
अदेख असेख अभेख हैं सदीव बिसु भरन हैं ॥३ ॥१६३ ॥
बिस्वंभर बिसुनाथ हैं बिसेख बिस्व भरन हैं ॥
जिमी जमान के बिखै सदीव करम भरम हैं ॥
अद्वैख हैं अभेख हैं अलेख नाथ जानीऐं ॥
सदीव सरब ठउर मै बिसेख आन मानीऐं ॥४ ॥१६४ ॥
न जंत्र मै न तंत्र मै न मंत्र बसि आवई ॥
पुरान औ कुरान नेति नेति कै बतावई ॥
न करम मै न धरम मै न भरम मै बताईऐ ॥
अगंज आदि देव है कहो सु कैस पाईऐ ॥५ ॥१६५ ॥
जिमी जमान के बिखै समसति एक जोति है ॥
न घाटि है न बाढि है न घाटि बाढि होत है ॥
न हान है न बान है समान रूप जानीऐ ॥
मकीन औ मकान अप्रमान तेज मानीऐ ॥६ ॥१६६ ॥
न देह है न गेह है न जाति है न पाति है ॥
न मंत्र है न मित्र है न तात है न मात है ॥
न अंग है न रंग है न संग साथ नेह है ॥
न दोख है न दाग है न द्वैख है न देह है ॥७ ॥१६७ ॥

न सिंघ है न स्यार है न राउ है न रंक है ॥
न मान है न मउत है न साक है न संक है ॥
न जच्छ है न गंध्रब है न नरु है न नार है ॥
न चोर है न साहु है न साह को कुमार है ॥८॥१६८॥
न नेह है न गेह है न देह को बनाउ है ॥
न छल है न छिद्र है न छल को मिलाउ है ॥
न तंत्र है न मंत्र है न जंत्र को सरूप है ॥
न राग है न रंग है न रेख है न रूप है ॥९॥१६९॥
न जंत्र है न मंत्र है न तंत्र को बनाउ है ॥
न छल है न छिद्र है न छाइआ को मिलाउ है ॥
न राग है न रंग है न रूप है न रेख है ॥
न करम है न धरम है अजनम है अभेख है ॥१०॥१७०॥
न तात है न मात है अख्याल अखंड रूप है ॥
अछेद है अभेद है न रंक है न भूप है ॥
परे है पवित्र है पुनीत है पुरान है ॥
अगंज है अभंज है करीम है कुरान है ॥११॥१७१॥
अकाल है अपाल है खिआल है अखंड है ॥
न रोग है न सोग है न भेद है न भंड है ॥
न अंग है न रंग है न संग है न साथ है ॥
प्रिआ है पवित्र है पुनीत है प्रमाथ है ॥१२॥१७२॥
न सीत है न सोक है न घ्राम है न घाम है ॥
न लोभ है न मोह है न क्रोध है न काम है ॥
न देव है न दैत है न नर को सरूप है ॥
न छल है न छिद्र है न छिद्र की बिभूति है ॥१३॥१७३॥
न काम है न क्रोध है न लोभ है न मोह है ॥
न द्वैख है न भेख है न दुई है न द्रोह है ॥
न काल है न बाल है सदीव दिआल रूप है ॥
अगंज है अभंज है अभरम है अभूत है ॥१४॥१७४॥
अछेद छेद है सदा अगंज गंज गंज है ॥
अभूत भेख है बली अरूप राग रंग है ॥
न द्वैख है न भेख है न काम क्रोध करम है ॥
न जात है न पात है न चित्र चिहन बरन है ॥१५॥१७५॥
बिअंत है अनंत है अनंत तेज जानीऐ ॥
अभूम अभिज है सदा अछिज तेज मानीऐ ॥
न आध है न बिआध है अगाध रूप लेखीऐ ॥
अदोख है अदाग है अछै प्रताप पेखीऐ ॥१६॥१७६॥
न करम है न भरम है न धरम को प्रभाउ है ॥
न जंत्र है न तंत्र है न मंत्र को रलाउ है ॥
न छल है न छिद्र है न छिद्र के सरूप है ॥
अभंग है अनंग है अगंज सी बिभूत है ॥१७॥१७७॥
न काम है न क्रोध है न लोभ मोह कार है ॥
न आध है न गाध है न बिआध को बिचार है ॥
न रंग राग रूप है न रूप रेख रार है ॥
न हाउ है न भाउ है न दाउ को प्रकार है ॥१८॥१७८॥
गजाधपी नराधपी करंत सेव है सदा ॥
सितसुती तपसपती बनसपती जपस सदा ॥
अगसत आदि जे बडे तपसपती बिसेखीऐ ॥
बिअंत बिअंत बिअंत को करंत पाठ पेखीऐ ॥१९॥१७९॥
अगाध आदि देवकी अनाद बात मानीऐ ॥
न जात पात मंत्र मित्र सत्र सनेह जानीऐ ॥

सदीव सरब लोक को क्रिपाल खिआल मै रहै ॥
तुरंत द्रोह देह के अनंत भांति सो दहै ॥२० ॥१८० ॥

त्व प्रसादि ॥ रूआल छंद ॥

रूप राग न रेख रंग न जनम मरन बिहीन ॥
आदि नाथ अगाध पुरख सु धरम करम प्रबीन ॥
जंत्र मंत्र न तंत्र जा को आदि पुरख अपार ॥
हसत कीट बिखै बसै सभ ठउर मै निरधार ॥१ ॥१८१ ॥
जाति पाति न तात जा को मंत्र मात न मित्र ॥
सरब ठउर बिखै रमिओ जिह चक्र चिहन न चित्र ॥
आदि देव उदार मूरति अगाध नाथ अनंत ॥
आदि अंति न जानीऐ अबिखाद देव दुरंत ॥२ ॥१८२ ॥
देव भेव न जानही जिह मरम बेद कतेब ॥
सनक औ सनकेस नंदन पावही न हसेब ॥
जच्छ किंनर मच्छ मानस मुरग उरग अपार ॥
नेति नेति पुकार ही सिव सक्र औ मुखचार ॥३ ॥१८३ ॥
सरब सपत पतार के तर जाप ही जिह जाप ॥
आदि देव अगाधि तेज अनाद मूरति अताप ॥
जंत्र मंत्र न आवई कर तंत्र मंत्र न कीन ॥
सरब ठउर रहिओ बिराज धिराज राज प्रबीन ॥४ ॥१८४ ॥
जच्छ गंध्रब देव दानो न ब्रहम छत्रीअन माहि ॥
बैसनं के बिखै बिराजै सूद्र भी वह नाहि ॥
गूड़ गउड न भील भीकर ब्रहम सेख सरूप ॥
राति दिवस न मद्ध उरध न भूम अकास अनूप ॥५ ॥१८५ ॥
जाति जनम न काल करम न धरम करम बिहीन ॥
तीरथ जात्र न देव पूजा गोर के न अधीन ॥
सरब सपत पतार के तर जानीऐ जिह जोत ॥
सेस नाम सहंस्र फन नहि नेत पूरन होत ॥६ ॥१८६ ॥
सोधि सोधि हटे सभै सुर बिरोध दानव सरब ॥
गाइ गाइ हटे गंध्रब गवाइ किंनर गरब ॥
पढ़त पढ़त थके महा कबि गढ़त गाढ़ अनंत ॥
हारि हारि कहिओ सभू मिलि नाम नाम दुरंत ॥७ ॥१८७ ॥
बेद भेद न पाइओ लखिओ न सेब कतेब ॥
देव दानो मूड़ मानो जच्छ न जानै जेब ॥
भूत भब भवान भूपत आदि नाथ अनाथ ॥
अगनि बाइ जले थले महि सरब ठउर निवास ॥८ ॥१८८ ॥
देह गेह न नेह सनेह अबेह नाथ अजीत ॥
सरब गंजन सरब भंजन सरब ते अनभीत ॥
सरब करता सरब हरता सरब द्याल अद्वेख ॥
चक्र चिहन न बरन जा को जाति पाति न भेख ॥९ ॥१८९ ॥
रूप रेख न रंग जा को राग रूप न रंग ॥
सरब लाइक सरब घाइक सरब ते अनभंग ॥
सरब दाता सरब ग्याता सरब को प्रतिपाल ॥
दीन बंधु दयाल सुआमी आदि देव अपाल ॥१० ॥१९० ॥
दीन बंधु प्रबीन स्री पति सरब को करतार ॥
बरन चिहन न चक्र जा को चक्र चिहन अकार ॥
जाति पाति न गोत्र गाथा रूप रेख न बरन ॥
सरब दाता सरब गयाता सरब भूअ को भरन ॥११ ॥१९१ ॥
दुसट गंजन सत्र भंजन परम पुरख प्रमाथ ॥
दुसट हरता स्रिसट करता जगत मै जिह गाथ ॥

भूत भवि भविक्ख भवान प्रमान देव अगंज ॥
आदि अंत अनादि स्री पति परम पुरख अभंज ॥१२ ॥१९२ ॥
धरम के अनकरम जेतक कीन तउन पसार ॥
देव अदेव गंध्रब किंनर मच्छ कच्छ अपार ॥
भूम अकास जले थले महि मानीऐ जिह नाम ॥
दुसट हरता पुसट करता स्रिसटि हरता काम ॥१३ ॥१९३ ॥
दुसट हरना स्रिसट करना दिआल लाल गोबिंद ॥
मित्र पालक सत्र घालक दीन द्याल मुकंद ॥
अघौ दंडण दुसट खंडण काल हूं के काल ॥
दुसट हरणं पुसट करणं सरब के प्रतिपाल ॥१४ ॥१९४ ॥
सरब करता सरब हरता सरब ते अनकाम ॥
सरब खंडण सरब दंडण सरब के निज भाम ॥
सरब भुगता सरब जुगता सरब करम प्रबीन ॥
सरब खंडण सरब दंडण सरब करम अधीन ॥१५ ॥१९५ ॥
सरब सिंम्रितन सरब सासत्रन सरब बेद बिचार ॥
दुसट हरता बिस्व भरता आदि रूप अपार ॥
दुसट दंडण पुसट खंडण आदि देव अखंड ॥
भूम अकास जले थले महि जपत जाप अमंड ॥१६ ॥१९६ ॥
स्रिसटाचार बिचार जेते जानीऐ सबचार ॥
आदि देव अपार स्री पति दुसट पुसट प्रहार ॥
अंन दाता गिआन गिआता सरब मान महिंद्र ॥
बेद बिआस करे कई दिन कोटि इंद्र उपिंद्र ॥१७ ॥१९७ ॥
जनम जाता करम गिआता धरम चार बिचार ॥
बेद भेव न पावई सिव रुद्र और मुखचार ॥
कोटि इंद्र उपिंद्र बिआस सनक सनत कुमार ॥
गाइ गाइ थके सभै गुन चक्रत भे मुखचार ॥१८ ॥१९८ ॥
आदि अंत न मध जा को भूत भब भवान ॥
सति दुआपर त्रितीआ कलिजुग चत्र काल प्रधान ॥
धिआइ धिआइ थके महा मुनि गाइ गंध्रब अपार ॥
हारि हारि थके सभै नहीं पाईऐ तिह पार ॥१९ ॥१९९ ॥
नारद आदिक बेद बिआसक मुनि महान अनंत ॥
धिआइ धिआइ थके सभै कर कोटि कसट दुरंत ॥
गाइ गाइ थके गंध्रब नाच अपच्छर अपार ॥
सोधि सोधि थके महा सुर पाइओ नहि पार ॥२० ॥२०० ॥

त्व प्रसादि ॥ दोहरा ॥

एक समै स्री आतमा उचरिओ मति सिउ बैन ॥
सब प्रताप जगदीस को कहो सकल बिधि तैन ॥१ ॥२०१ ॥
को आतमा सरूप है कहा स्रिसटि को बिचार ॥
कउन धरम को करम है कहो सकल बिसथार ॥२ ॥२०२ ॥

दोहरा ॥ कह जीतब कह मरन है कवन सुरग कह नरक ॥

को सुघड़ा को मूड़ता कहा तरक अवतरक ॥३ ॥२०३ ॥

दोहरा ॥ को निंदा जस है कवन कवन पाप कह धरम ॥

कवन जोग को भोग है कवन करम अपकरम ॥४ ॥२०४ ॥

दोहरा ॥ कहो सु स्रम का सो कहै दम को कहा कहंत ॥

को सूरा दाता कवन कहो तंत को मंत ॥५ ॥२०५ ॥

दोहरा ॥ कहा रंक राजा कवन हरख सोग है कवन ॥

को रोगी रागी कवन कहो तत मुहि तवन ॥६ ॥२०६ ॥

दोहरा ॥ कवन रिसट को पुसट है कहा स्रिसट को चार ॥

कवन स्रिसट को भ्रिसट है कहो सकल बिसथार ॥७ ॥२०७ ॥

दोहरा ॥ कहा भरम को करम है कहा भरम को नास ॥

कहा चितन की चेसटा कहा अचेत प्रकास ॥८ ॥२०८ ॥

दोहरा ॥ कहा नेम संजम कहा कहा गिआन अगिआन ॥

को रोगी सोगी कवन कहा धरम की हान ॥९ ॥२०९ ॥

दोहरा ॥ को सूरा सुंदर कवन कहा जोग को सार ॥

को दाता गिआनी कवन कहो बिचार अबिचार ॥१० ॥२१० ॥

त्व प्रसादि ॥ दीरघ त्रिभंगी छंद ॥

दुरजन दल दंडण असुर बिहंडण दुसट निकंदणि आदि ब्रिते ॥
चछ्रासुर मारणि पतित उधारणि नरक निवारणि गूढ़ गते ॥
अछै अखंडे तेज प्रचंडे खंड उदंडे अलख मते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदन छत्र छिते ॥१ ॥२११ ॥
आसुरि बिहंडणि दुसट निकंदणि पुसट उदंडणि रूप अते ॥
चंडासुर चंडणि मुंड बिहंडणि धूम्र बिधुंसणि महिख मते ॥
दानवीं प्रहारणि नरक निवारणि अधिम उधारणि उरध अधे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदन आदि ब्रिते ॥२ ॥२१२ ॥
डावरू डवंकै बबर बवंकै भुजा फरंकै तेज बरं ॥
लंकुड़ीआ फाधै आयुध बांधै सैन बिमरदन काल असुरं ॥
असटायुध चमकै भूखण दमकै अतिसित झमकै फुंक फणं ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदन दैत जिणं ॥३ ॥२१३ ॥
चंडासुर चंडण मुंड बिमुंडण खंड अखंडण खून खिते ॥
दामनी दमंकणि धुजा फरंकणि फणी फुंकारणि जोध जिते ॥
सर धार बिबरखणि दुसट प्रकरखणि पुसट प्रहरखणि दुशट मथे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन भूम अकास तल उरध अधे ॥४ ॥२१४ ॥
दामनी प्रहासनि सु छबि निवासनि स्रिसटि प्रकासनि गूढ़ गते ॥
रकतासुर आचन जुध प्रमाचन न्रिदै नराचन धरम ब्रिते ॥
स्रोणंत अचिंती अनल बिवंती जोग जयंती खड़ग धरे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन पाप बिनासन धरम करे ॥५ ॥२१५ ॥
अघ ओघ निवारणि दुसट प्रजारणि स्रिसटि उबारणि सुध मते ॥
फणीअर फुंकारणि बाघ बुकारणि ससत्र प्रहारणि साध मते ॥
सैहथी सनाहनि असट प्रबाहनि बोल निबाहनि तेज अतुलं ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास पताल जलं ॥६ ॥२१६ ॥
चाचर चमकारन चिछुर हारन धूम धुकारन द्रप मथे ॥
दाढ़ी प्रदंते जोग जयंते मनुज मथंते गूढ़ कथे ॥
करम प्रणासणि चंद प्रकासणि सूरज प्रतेजणि असट भुजे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन भरम बिनासन धरम धुजे ॥७ ॥२१७ ॥
घुंघरू घमंकणि ससत्र झमंकणि फणीअर फुंकारणि धरम धुजे ॥
अस टाट प्रहासन स्रिसटि निवासन दुसट प्रनासन चक्र गते ॥

केसरी प्रवाहे सुध सनाहे अगम अथाहे एक ब्रिते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि कुमारि अगाध ब्रिते ॥८॥२१८॥
सुर नर मुनि बंदन दुसटि निकंदनि भ्रिसटि बिनासन भ्रित मथे ॥
कावरू कुमारे अधम उधारे नरक निवारे आदि कथे ॥
किंकणी प्रसोहणि सुर नर मोहणि सिंघारोहणि बितल तले ॥
जै जै होसी सभ ठौर निवासन बाइ पताल अकास अनले ॥९॥२१९॥
संकटी निवारनि अधम उधारनि तेज प्रकरखणि तुंद तबे ॥
दुख दोख दहंती ज्वाल जयंती आदि अनादि अगाधि अछे ॥
सुधता समरपणि तरक बितरकणि तपत प्रतापणि जपत जिवे ॥
जै जै होसी ससत्र प्रकरखणि आदि अनील अगाध अभे ॥१०॥२२०॥
चंचला चखंगी अलक भुजंगी तुंद तुरंगणि तिच्छ सरे ॥
कर कसा कुठारे नरक निवारे अधम उधारे तूर भुजे ॥
दामनी दमंके केहर लंके आदि अतंके क्रूर कथे ॥
जै जै होसी रकतासुर खंडणि सुंभ चक्रतनि सुंभ मथे ॥११॥२२१॥
बारज बिलोचनि ब्रितन बिमोचनि सोच बिसोचनि कउच कसे ॥
दामनी प्रहासे सुक सर नासे स ुब्रित सुबासे दुसट ग्रसे ॥
चंचला प्रअंगी बेद प्रसंगी तेज तुरंगी खंड असुरं ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाध उरधं ॥१२॥२२२॥
घंटका बिराजै रुण झुण बाजै भ्रम भै भाजै सुनत सुरं ॥
कोकल सुन लाजै किलबिख भाजै सुख उपराजै मध उरं ॥
दुरजन दल दझै मन तन रिझै सभै न भजै रोह रणं ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन चंड चक्रतन आदि गुरं ॥१३॥२२३॥
चाचरी प्रजोधन दुसट बिरोधन रोस अरोधन क्रूर ब्रिते ॥
धूम्राछ बिधुंसन प्रलै प्रजुंसन जग बिधुंसन सुध मते ॥
जालपा जयंती सत्र मथंती दुसट प्रदाहन गाढ़ मते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अगाधि गते ॥१४॥२२४॥
खत्रीआणि खतंगी अभै अभंगी आदि अनंगी अगाधि गते ॥
ब्रिड़लाछ बिहंडणि चच्छर दंडणि तेज प्रचंडणि आदि ब्रिते ॥
सुर नर प्रतिपारणि पतित उधारणि दुसट निवारणि दोख हरे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदनि बिस्व बिधुंसनि स्रिसटि करे ॥१५॥२२५॥
दामनी प्रकासे उनतन नासे जोति प्रकासे अतुल बले ॥
दानवी प्रकरखणि सर वर वरखणि दुसट प्रधरखणि बितल तले ॥
असटाइध बाहणि बोल निबाहणि संत पनाहणि गूढ़ गते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदनि आदि अनादि अगाधि ब्रिते ॥१६॥२२६॥
दुख दोख प्रभछणि सेवक रच्छणि संत प्रतछणि सुद्ध सरे ॥
सारंग सनाहे दुसट प्रदाहे अरि दल गाहे दोख हरे ॥
गंजन गुमाने अतुल प्रवाने संत जमाने आदि अंते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन साध प्रदच्छण दुसट हंते ॥१७॥२२७॥
कारण करीली गरब गहीली जोति जतीली तुंद मते ॥
असटाइध चमकणि ससत्र झमकणि दामनि दमकणि आदि ब्रिते ॥
डुकडुकी दमंकै बाघ बबंकै भुजा फरंकै सुध गते ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अनादि मते ॥१८॥२२८॥
चच्छरासुर मारणि नरक निवारणि पतित उधारणि एक भटे ॥
पापान बिहंडणि दुसट प्रचंडणि खंड अखंडणि काल कटे ॥
चंद्रानन चारै नरक निवारै पतित उधारै मुंड मथे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन धूम्र बिधुंसनि आदि कथे ॥१९॥२२९॥
रकतासुर मरदन चंड चकरदन दानव अरदन बिड़ाल बधे ॥
सर धार बिबरखण दुरजन धरखण अतुल अमरखण धरम धुजे ॥
धूम्राछ बिधुंसनि स्रोणत चुंसन सुंभ नपात निसुंभ मथे ॥
जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनील अगाध कथे ॥२०॥२३०॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छंद ॥

तुम कहो देव सरबं बिचार ॥
जिम कीओ आपि करते पसार ॥
जदपि अभूत अनभै अनंत ॥
तउ कहो जथा मत त्रैण तंत ॥१॥२३१॥
करता करीम कादर क्रिपाल ॥
अद्वै अभूत अनभै दिआल ॥
दाता दुरंत दुख दोख रहत ॥
जिह नेति नेति सभ बेद कहत ॥२॥२३२॥
कई ऊच नीच कीनो बनाउ ॥
सभ वार पार जा को प्रभाउ ॥
सभ जीव जंत जानंत जाहि ॥
मन मूड़ किउ न सेवंत ताहि ॥३॥२३३॥
कई मूढ़ पात्र पूजा करंत ॥
कई सिद्ध साधु सूरज सिवंत ॥
कई पलट सूरज सिजदा कराइ ॥
प्रभ एक रूप द्वै कै लखाइ ॥४॥२३४॥
अनछिज तेज अनभै प्रकास ॥
दाता दुरंत अद्वै अनास ॥
सभ रोग सोग ते रहत रूप ॥
अनभै अकाल अछै सरूप ॥५॥२३५॥
करुणा निधान कामल क्रिपाल ॥
दूख दोख हरत दाता दिआल ॥
अंजन बिहीन अनभंज नाथ ॥
जल थल प्रभाउ सरबत्र साथ ॥६॥२३६॥
जिह जात पात नही भेद भरम ॥
जिह रंग रूप नही एक धरम ॥
जिह सत्रु मित्र दोऊ एक सार ॥
अच्छै सरूप अबिचल अपार ॥७॥२३७॥
जानी न जाइ जिह रूप रेख ॥
कहि बासु तासु कहि कउनु भेख ॥
कहि नाम तास है कवन जात ॥
जिह सत्रु मित्र नही पुत्र भ्रात ॥८॥२३८॥
करुणा निधान कारण सरूप ॥
जिह चक्र चिहन नही रंग रूप ॥
जिह खेद भेद नही करम काल ॥
सभ जीव जंत की करत पाल ॥९॥२३९॥
उरधं बिरहत सुधं सरूप ॥
बुधं अपाल जुधं अनूप ॥
जिह रूप रेख नही रंग राग ॥
अनछिज तेज अनभिज अदाग ॥१०॥२४०॥
जल थल महीप बन तन दुरंत ॥
जिह नेति नेति निस दिन उचरंत ॥
पाइओ न जाइ जिह पैर पार ॥
दीनान दोख दहिता उदार ॥११॥२४१॥
कई कोट इंद्र जिह पानिहार ॥
कई कोटि रुद्र जुगीआ दुआर ॥
कई बेद बिआस ब्रहमा अनंत ॥
जिह नेत नेत निस दिन उचरंत ॥१२॥२४२॥

त्व प्रसादि ॥ स्वये ॥

दीनन की प्रतिपाल करै नित संत उबारि गनीमन गारै ॥
पच्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥
पोखत है जल मै थल मै पल मै कलि के नहीं करम बिचारै ॥
दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है परु देत न हारै ॥१॥२४३॥
दाहत है दुख दोखन कौ दल दुजन के पल मै दल डारै ॥
खंड अखंड प्रचंड पहारन पूरन प्रेम की प्रीत संभारै ॥
पार न पाइ सकै पदमा पति बेद कतेब अभेद उचारै ॥
रोजी ही राज बिलोकत राजक रोख रूहान की रोजी न टारै ॥२॥२४४॥
कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविक्ख भवान बनाए ॥
देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ॥
बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्री पदमा पति पाए ॥३॥२४५॥
आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत भविक्ख भवान अभै है ॥
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥
दीन दइआल दइआ कर स्री पति सुंदर स्री पदमा पति एहै ॥४॥२४६॥
काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ॥
काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर स्री पदमा पति लैहै ॥५॥२४७॥
रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांति बचावै ॥
सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तन एकु न लागन पावै ॥
राखत है अपनो करु दै कर पाप संबूह न भेटन पावै ॥
और की बात कहा कह तो सौं सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥६॥२४८॥
जच्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही करि धिआवैं ॥
भूमि अकास पताल रसातल जच्छ भुजंग सभै सिर निआवैं ॥
पाइ सकै नहीं पार प्रभा हू को नेत ही नेतह बेद बतावैं ॥
खोज थके सभ ही खुजीआ सुर हार परे हरि हाथ न आवै ॥७॥२४९॥
नारद से चतुरानन से रुमना रिख से सभ हूं मिलि गाइओ ॥
बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हार परे हरि हाथि न आइओ ॥
पाइ सकै नही पार उमापति सिद्ध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥
धिआन धरो तिह को मन मैं जिह को अमितोजि सभै जगु छाइओ ॥८॥२५०॥
बेद पुरान कतेब कुरान अभेद न्रिपान सभै पच हारे ॥
भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ॥
राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संगि तिहारे ॥
आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिन ही कुल तारे ॥९॥२५१॥
तीरथ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ॥
देस फिरिओ कर भेस तपोधन केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥
आसन कोट करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ॥
दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ॥१०॥२५२॥

त्व प्रसादि ॥ कबित ॥

अत्र के चलया छित छत्र के धरया छत्र धारीओ के छलया महा सत्रन के साल हैं ॥
दान के दिवया महा मान के बढया अवसान के दिवया हैं कटया जम जाल हैं ॥
जुद्ध के जितया औ बिरुध के मिटया महां बुधि के दिवया महां मानहूं के मान हैं ॥
गिआन हूं के गिआता महां बुद्धिता के दाता देव काल हूं के काल महा काल हूं के काल हैं ॥१॥२५३॥
पूरबी न पार पावैं हिंगुला हिमालै धिआवैं गोर गरदेजी गुन गावैं तेरे नाम हैं ॥
जोगी जोग साधै पउन साधना कितेक बाधै आरब के आरबी अराधैं तेरे नाम हैं ॥
फरा के फिरंगी मानैं कंधारी कुरेसी जानैं पछम के पच्छमी पछानैं निज काम हैं ॥

मरहटा मघेले तेरी मन सों तपसिआ करै द्रिड़वै तिलंगी पहचाने धरम धाम हैं ॥२ ॥२५४ ॥
बंग के बंगाली फिरहंग के फिरंगावाली दिली के दिलवाली तेरी आगिआ मै चलत हैं ॥
रोह के रुहेले माघ देस के मघेले बीर बंगसी बुंदेले पाप पुंज को मलत हैं ॥
गोखा गुन गावै चीन मचीन के सीस न्यावै तिबती धिआइ दोख देह को दलत हैं ॥
जिनै तोहि धिआइओ तिनै पूरन प्रताप पाइओ सरब धन धाम फल फूल सों फलत हैं ॥३ ॥२५५ ॥
देव देवतान कौ सुरेस दानवान कौ महेस गंग धान कौ अभेस कहीअतु हैं ॥
रंग मै रंगीन राग रूप मैं प्रबीन और काहू पै न दीन साध अधीन कहीअतु हैं ॥
पाईऐ न पार तेज पुंज मैं अपार सरब बिदिआ के उदार हैं अपार कहीअतु हैं ॥
हाथी की पुकार पल पाछै पहुचत ताहि चीटी की चिंघार पहिले ही सुनीअतु हैं ॥४ ॥२५६ ॥
केते इंद्र दुआर केते ब्रहमा मुख चार केते क्रिसन अवतार केते राम कहीअतु हैं ॥
केते ससि रासी केते सूरज प्रकासी केते मुंडीआ उदासी जोग दुआर कहीअतु हैं ॥
केते महादीन केते बिआस से प्रबीन केते कुमेर कुलीन केते जछ कहीअतु हैं ॥
करत हैं बिचार पै न पूरन को पावै पार ताही ते अपार निराधार लहीअतु हैं ॥५ ॥२५७ ॥
पूरन अवतार निराधार है न पारावार पाईऐ न पार पै अपार कै बखानीऐ ॥
अद्वै अबिनासी परम पूरन प्रकासी महा रूप हूं के रासी हैं अनासी कै कै मानीऐ ॥
जंत्र हूं न जात जा की बाप हूं न माइ ता की पूरन प्रभा की सु छटा कै अनुमानीऐ ॥
तेज हूं को तंत्र हैं कि राजसी को जंत्र हैं कि मोहनी को मंत्र हैं निजंत्र कै कै जानीऐ ॥६ ॥२५८ ॥
तेज हूं को तरु हैं कि राजसी को सरु हैं कि सुधता को घरु हैं कि सिद्धता की सारु हैं ॥
कामना की खान हैं कि साधना की सान हैं बिरकतता की बान हैं कि बुद्धि को उदार हैं ॥
सुंदर सरूप हैं कि भूपन को भूप हैं कि रूप हूं को रूप हैं कुमति को प्रहारु हैं ॥
दीनन को दाता हैं गनीमन को गारक हैं साधन को रच्छक है गुनन को पहारु हैं ॥७ ॥२५९ ॥
सिद्ध को सरूप हैं कि बुधि को बिभूति हैं कि क्रुध को अभूत हैं कि अच्छै अबिनासी हैं ॥
काम को कुनिंदा हैं कि खूबी को दिहंदा हैं गनीम गरिंदा हैं कि तेज को प्रकासी हैं ॥
काल हूं को काल हैं कि सत्रन को साल हैं कि मित्रन को पोखत हैं कि ब्रिधता को बासी हैं ॥
जोग हूं को जंत्र हैं कि तेज हूं को तंत्र हैं कि मोहनी को मंत्र हैं कि पूरन प्रकासी हैं ॥८ ॥२६० ॥
रूप को निवास हैं कि बुद्धि को प्रकास हैं कि सिद्धता को बास हैं कि बुद्धि हूं को घरु हैं ॥
देवन को देव हैं निरंजन अभेव हैं अदेवन को देव हैं कि सुद्धता को सरु हैं ॥
जान को बचया हैं इमान को दिवया हैं जम जाल को कटया हैं कि कामना को करु हैं ॥
तेज को प्रचंड हैं अखंडण को खंड हैं महीपन को मंड हैं कि इसत्री हैं न नरु हैं ॥९ ॥२६१ ॥
बिस्व को भरन हैं कि अपदा को हरन हैं कि सुख को करन हैं कि तेज को प्रकाश हैं ॥
पाईऐ न पार पारावार हूं को पार जां को कीजत बिचार सुबिचार को निवास हैं ॥
हिंगुला हिमालै गावै हबसी हलबी धिआवै पूरबी न पार पावै आसा ते अनास हैं ॥
देवन को देव महादेव हूं के देव हैं निरंजन अभेव नाथ अद्वै अबिनास हैं ॥१० ॥२६२ ॥
अंजन बिहीन हैं निरंजन प्रबीन हैं कि सेवक अधीन है कटया जम जाल के ॥
देवन के देव महादेव हूं के देवनाथ भूम के भुजया है मुहया महा बाल के ॥
राजन के राजा महा साज हूं के साजा महा जोग हूं के जोग हैं धरया द्रुम छाल के ॥
कामना के करु हैं कुबिद्धिता को हरु हैं कि सिद्धता के साथी हैं कि काल हैं कुचाल के ॥११ ॥२६३ ॥
छीर कैसी छीरावध छाछ कैसी छत्रानेर छपाकर कैसी छबि कालइंद्री के कूल कै ॥
हंसनी सी सीहारूम हीरा सी हुसैनाबाद गंगा कैसी धार चली सातो सिंध रूल कै ॥
पारा सी पलाऊगढ रूपा कैसी रामपुर सोरा सी सुरंगाबाद नीकै रही झूल कै ॥
चंपा सी चंदेरी कोट चांदनी सी चांदागढ़ कीरति तिहारी रही मालती सी फूल कै ॥१२ ॥२६४ ॥
फटक सी कैलास कमांऊगढ़ कांसीपुर सीसा सी सुरंगाबादि नीकै सोहीअतु है ॥
हिमा सी हिमालैहर हार सी हलबा नेर हंस कैसी हाजीपुर देखे मोहीअतु है ॥
चंदन सी चंपावती चंद्रमा सी चंद्रागिर चांदनी सी चांदगढ़ जौन जोहीअतु है ॥
गंगा सम गंगधार बकान सी बलिंदावाद कीरति तिहारी की उजीआरी सोहीअतु है ॥१३ ॥२६५ ॥
फरा सी फिरंगी फरासीस के दुरंगी मकरान के म्रिदंगी तेरे गीत गाईअतु है ॥
भखरी कंधारी गोर गखरी गरदेजा चारी पउन के अहारी तेरो नामु धिआईअतु है ॥
पूरब पलाऊं काम रूप औ कमाऊं सरब ठउर मै बिराजै जहां जहां जाईअतु है ॥
पूरन प्रतापी जंत्र मंत्र ते अतापी नाथ कीरति तिहारी को न पार पाईअतु है ॥१४ ॥२६६ ॥

अद्वै अनास आसन अडोल ॥
अद्वै अनंत उपमा अतोल ॥
अछै सरूप अब्यकत नाथ ॥
आजान बाहु सरबा प्रमाथ ॥१॥२६७॥
जह तह महीप बन तिन प्रफुल ॥
सोभा बसंत जह तह प्रडुल ॥
बन तन दुरंत खग म्रिग महान ॥
जह तह प्रफुल सुंदर सुजान ॥२॥२६८॥
फुलतं प्रफुल लहि लहित मौर ॥
सिर ढुरहि जान मन मथहि चौर ॥
कुदरत कमाल राज़क रहीम ॥
करुणा निधान कामल करीम ॥३॥२६९॥
जंह तंह बिलोक तंह तंह प्रसोह ॥
आजानु बाहु अमितोज मोह ॥
रोसं बिरहत करणा निधान ॥
जंह तंह प्रफुल सुंदर सुजान ॥४॥२७०॥
बन तिन महीप जल थल महान ॥
जंह तंह प्रसोह करुणा निधान ॥
जगमगत तेज पूरन प्रताप ॥
अंबर जिमीन जिह जपत जाप ॥५॥२७१॥
सातो अकास सातो पतार ॥
बिथरिओ अदिसट जिह करम जारि ॥ उसतत संपूरणं ॥

SECTION 03: BACHITRA NATAK

Wondrous Drama — Autobiographical composition · By Guru Gobind Singh Ji

ੴसतिगुर प्रसादि ॥

अथ बचित्र नाटक ग्रंथ लिख्यते ॥

स्री मुखबाक पातशाही १० ॥

त्व प्रसादि ॥ दोहरा ॥

नमसकार स्री खड़ग को करों सु हितु चितु लाइ ॥
पूरन करों गिरंथ इहु तुम मुहि करहु सहाइ ॥१॥
स्री काल जी की उसतति ॥

त्रिभंगी छंद ॥

खग खंड बिहंडं खल दल खंडं अति रण मंडं बर बंडं ॥
भुज दंड अखंडं तेज प्रचंडं जोति अमंडं भान प्रभं ॥
सुख संता करणं दुरमति दरणं किलबिख हरणं असि सरणं ॥
जै जै जग कारण स्रिसटि उबारण मम प्रतिपारण जै तेगं ॥२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सदा एक जोत्यं अजूनी सरूपं ॥
महा देव देवं महा भूप भूपं ॥
निरंकार नित्यं निरूपं न्रिबाणं ॥
कलं कारणेयं नमो खड़ग पाणं ॥३॥
निरंकार न्रिबिकार नित्यं निरालं ॥
न ब्रिधं बिसेखं न तरुनं न बालं ॥
न रंकं न रायं न रूपं न रेखं ॥
न रंगं न रागं अपारं अभेखं ॥४॥
न रूपं न रेखं न रंगं न रागं ॥
न नामं न ठामं महा जोति जागं ॥
न द्वैखं न भेखं निरंकार नित्यं ॥
महा जोग जोगं सु परमं पवित्यं ॥५॥
अजेयं अभेयं अनामं अठामं ॥
महा जोग जोगं महा काम कामं ॥
अलेखं अभेखं अनीलं अनादं ॥
परेयं पवित्रं सदा न्रिबिखादं ॥६॥
सु आदं अनादं अनीलं अनंतं ॥
अद्वैखं अभेखं महेसं महंतं ॥
न रोखं न सोखं न द्रोहं न मोहं ॥
न कामं न क्रोधं अजोनी अजोहं ॥७॥
परेअं पवित्रं पुनीतं पुराणं ॥
अजेअं अभेअं भविख्यं भवाणं ॥
न रोगं न सोगं सु नित्यं नवीनं ॥
अजायं सहायं परमं प्रबीनं ॥८॥
सु भूतं भविख्यं भवानं भवेयं ॥
नमो न्रिबिकारं नमो न्रिजुरेअं ॥
नमो देव देवं नमो राज राजं ॥

निरालंब नित्यं सु राजा धिराजं ॥९ ॥
अलेखं अभेखं अभूतं अद्वैखं ॥
न रागं न रंगं न रूपं न रेखं ॥
महा देव देवं महा जोग जोगं ॥
महा काम कामं महा भोग भोगं ॥१० ॥
कहूं राजसं तामसं सातकेअं ॥
कहूं नार को रूप धारे नरेअं ॥
कहूं देवीअं देवतं दईत रूपं ॥
कहूं रूपं अनेक धारे अनूपं ॥११ ॥
कहूं फूल ह्वै कै भले राज फूले ॥
कहूं भवर ह्वै कै भली भांति भूले ॥
कहूं पउन ह्वै कै बहे बेगि ऐसे ॥
कहे मो न आवे कथों ताहि कैसे ॥१२ ॥
कहूं नाद ह्वै कै भली भांति बाजे ॥
कहूं पारधी ह्वै कै धरे बान राजे ॥
कहूं म्रिग ह्वै कै भली भांति मोहे ॥
कहूं कामुकी जिउ धरे रूप सोहे ॥१३ ॥
नहीं जानि जाई कछू रूप रेखं ॥
कहां बास ता को फिरै कउन भेखं ॥
कहा नाम ता को कहा कै कहावै ॥
कहा मै बखानो कहे मो न आवै ॥१४ ॥
न ता को कोई तात मातं न भायं ॥
न पुत्रं न पौत्रं न दाया न दायं ॥
न नेहं न गेहं न सैनं न साथं ॥
महा राज राजं महा नाथ नाथं ॥१५ ॥
परमं पुरानं पवित्रं परेयं ॥
अनादं अनीलं असंभं अजेयं ॥
अभेदं अछेदं पवित्रं प्रमाथं ॥
महा दीन दीनं महा नाथ नाथं ॥१६ ॥
अदागं अदगं अलेखं अभेखं ॥
अनंतं अनीलं अरूपं अद्वैखं ॥
महा तेज तेजं महा ज्वाल ज्वालं ॥
महा मंत्र मंत्रं महा काल कालं ॥१७ ॥
करं बाम चापियं क्रिपाणं करालं ॥
महा तेज तेजं बिराजै बिसालं ॥
महा दाढ़ दाढ़ं सु सोहं अपारं ॥
जिनै चरबीयं जीव जग्यं हजारं ॥१८ ॥
डमाडम डउरू सिता सेत छत्रं ॥
हाहा हूहू हासं झमाझम अत्रं ॥
महा घोर सबदं बजे संख ऐसे ॥
प्रलै काल के काल की ज्वाल जैसे ॥१९ ॥

रसावल छंद ॥

घणं घंट बाजं ॥
धुणं मेघ लाजं ॥
भयो सद एवं ॥
हड़िओ नीरधेवं ॥२० ॥
घुरं घुंघरेयं ॥
धुणं नेवरेयं ॥
महा नाद नादं ॥

सुरं निरबिखादं ॥२१॥
सिरं माल राजं ॥
लखे रुद्र लाजं ॥
सुभं चार चित्रं ॥
परमं पवित्रं ॥२२॥
महा गरज गरजं ॥
सुनै दूत लरजं ॥
स्रवं स्रोण सोहं ॥
महा मान मोहं ॥२३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

स्रिजे सेतजं जेरजं उतभुजेवं ॥
रचे अंडजं खंड ब्रहमंड एवं ॥
दिसा बिदिसायं जिमी आसमाणं ॥
चतुर बेद कथिअं कुराणं पुराणं ॥२४॥
रचे रैण दिवसं थपे सूर चंदं ॥
ठटे दईव दानो रचे बीर ब्रिंदं ॥
करी लोह कलमं लिखिओ लेख माथं ॥
सबै जेर कीने बली काल हाथं ॥२५॥
कई मेट डारे उसारे बनाए ॥
उपारे गड़े फेर मेटे उपाए ॥
क्रिया काल जू की किनू न पछानी ॥
घनियो पै बिहैहै घनियो पै बिहानी ॥२६॥
किते क्रिसन से कीट कोटै बनाए ॥
किते राम से मेटि डारे उपाए ॥
महादीन केते प्रिथी मांझ हूए ॥
समै आपनी आपनी अंत मूए ॥२७॥
जिते अउलीआ अंबीआ होइ बीते ॥
तितिओ काल जीता न ते काल जीते ॥
जिते राम से क्रिसन हुइ बिसन आए ॥
तितिओ काल खापिओ न ते काल घाए ॥२८॥
जिते इंद्र से चंद्र से होत आए ॥
तितिओ काल खापा न ते काल घाए ॥
जिते औलीआ अंबीआ गौस ह्वैहैं ॥
सभै काल के अंत दाड़ा तलै हैं ॥२९॥
जिते मानधातादि राजा सुहाए ॥
सभै बांध कै काल जेलै चलाए ॥
जिनै नाम ता को उचारो उबारे ॥
बिना साम ता की लखे कोट मारे ॥३०॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चमकहि क्रिपाणं ॥
अभूतं भयाणं ॥
धुनं नेवराणं ॥
घुरं घुंघराणं ॥३१॥
चतुर बांह चारं ॥
निजूटं सुधारं ॥
गदा पास सोहं ॥
जमं मान मोहं ॥३२॥

सुभं जीभ जुआलं ॥
सु दाढ़ा करालं ॥
बजी बंब संखं ॥
उठे नादं बंखं ॥३३॥
सुभं रूप सिआमं ॥
महा सोभ धामं ॥
छबे चारु चित्रं ॥
परेअं पवित्रं ॥३४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सिरं सेत छत्रं सु सुभ्रं बिराजं ॥
लखे छैल छाया करे तेज लाजं ॥
बिसाललाल नैनं महाराज सोहं ॥
ढिगं अंसुमालं हसं कोट क्रोहं ॥३५॥
कहूं रूप धारे महाराज सोहं ॥
कहूं देव कंनिआन के मान मोहं ॥
कहूं बीर ह्वै कै धरे बान पानं ॥
कहूं भूप ह्वै कै बजाए निसानं ॥३६॥

रसावल छंद ॥

धनुर बान धारे ॥
छके छैल भारे ॥
लए खग ऐसे ॥
महां बीर जैसे ॥३७॥
जुरे जंग जोरं ॥
करे जुध घोरं ॥
क्रिपा निधि दिआलं ॥
सदायं क्रिपालं ॥३८॥
सदा एक रूपं ॥
सभै लोक भूपं ॥
अजेअं अजायं ॥
सरणिअं सहायं ॥३९॥
तपै खग पानं ॥
महां लोक दानं ॥
भविखिअं भवेअं ॥
नमो निरजुरेअं ॥४०॥
मधो मान मुंडं ॥
सुभं रुंड झुंडं ॥
सिरं सेत छत्रं ॥
लसं हाथ अत्रं ॥४१॥
सुणे नाद भारी ॥
त्रसे छत्रधारी ॥
दिसा बसत्र राजं ॥
सुणे दोख भाजं ॥४२॥
सुणे गद सदं ॥
अनंतं बिहदं ॥
घटा जाणु सिआमं ॥
दुतं अभिरामं ॥४३॥
चतुर बाहु चारं ॥

करीटं सु धारं ॥
गदा संख चक्रं ॥
दिपै क्रूर बक्रं ॥४४॥

नराज छंद ॥

अनूप रूप राजिअं ॥
निहार कामु लाजिअं ॥
अलोक लोक सोभिअं ॥
बिलोक लोक लोभिअं ॥४५॥
चमक चंद्र सीसियं ॥
रहियो लजाइ ईसयं ॥
सु सोभ नाग भूखणं ॥
अनेक दुसट दूखणं ॥४६॥
क्रिपाण पाण धारीअं ॥
करोर पाप टारीअं ॥
गदा ग्रिसट पाणियं ॥
कमाण बाण ताणिअं ॥४७॥
सबद संख बजिअं ॥
घणंकि घुंघर गजिअं ॥
सरनि नाथ तोरीअं ॥
उबार लाज मोरीअं ॥४८॥
अनेक रूप सोहीअं ॥
बिसेख देव मोहीअं ॥
अदेव देव देवलं ॥
क्रिपा निधान केवलं ॥४९॥
सु आदि अंत एकिअं ॥
धरे सु रूप अनेकिअं ॥
क्रिपाण पाण राजई ॥
बिलोक पाप भाजई ॥५०॥
अलंक्रितं सु देहयं ॥
तनो मनो कि मोहयं ॥
कमाण बाण धारही ॥
अनेक सत्रु टारही ॥५१॥
घमकि घुंघरं सुरं ॥
नवं निनाद नूपरं ॥
प्रज्वाल बिजुलं ज्वलं ॥
पवित्र परम निरमलं ॥५२॥

तोटक छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नव नेवर नाद सुरं न्रिमलं ॥
मुख बिजुल ज्वाल घणं प्रजुलं ॥
मदरा कर मत महा भभकं ॥
बन मै मनो बाघ बचा बबकं ॥५३॥
भव भूत भविक्ख भवान भवं ॥
कल कारण उबारण एक तुवं ॥
सभ ठौर निरंतर नित नयं ॥
म्रिदु मंगल रूप तुयं सु भयं ॥५४॥
दिड़ दाढ़ कराल द्वै सेत उधं ॥
जिह भाजत दुसट बिलोक जुधं ॥

मद मत क्रिपाण कराल धरं ॥
जय सद सुरासुरयं उचरं ॥५५॥
नव किंकण नेवर नाद हूअं ॥
चल चाल सभाचल कंप भूअं ॥
घण घुंघर घंटण घोर सुरं ॥
चर चार चराचरयं हुहरं ॥५६॥
चल चौदहूं चक्रन चक्र फिरं ॥
बढवं घटवं हरीअं सुभरं ॥
जग जीव जिते जलयं थलयं ॥
अस को जु तवाइसुअं मलयं ॥५७॥
घट भादव मास की जाण सुभं ॥
तन सावरे रावरेअं हुलसं ॥
रद पंगत दामनीअं दमकं ॥
घट घुंघर घंट सुरं घमकं ॥५८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

घटा सावणं जाण सिआमं सुहायं ॥
मणी नील नगयं लखं सीस न्यायं ॥
महा सुंद्र सिआमं महां अभिरामं ॥
महां रूप रूपं महां काम कामं ॥५९॥
फिरै चक्र चउदहूं पुरीअं मधिआणं ॥
इसो कौन बीयं फिरै आइसाणं ॥
कहो कुंट कौने बिखै भाज बाचे ॥
सभं सीस के संग स्री काल नाचै ॥६०॥
करे कोट कोऊ धरै कोटि ओटं ॥
बचैगो न किउहूं करै काल चोटं ॥
लिखं जंत्र केते पढ़ं मंत्र कोटं ॥
बिना सरन तां की नहीं और ओटं ॥६१॥
लिखं जंत्र थाके पढ़ं मंत्र हारे ॥
करे काल ते अंत लै कै बिचारे ॥
कितिओ तंत्र साधे जु जनमं बिताइओ ॥
भए फोकटं काज एकै न आइओ ॥६२॥
किते नास मूंदे भए ब्रहमचारी ॥
किते कंठ कंठी जटा सीस धारी ॥
किते चीर कानं जुगीसं कहायं ॥
सभे फोकटं धरम कामं न आयं ॥६३॥
मधु कीटभं राछसेसं बलीअं ॥
समे आपनी काल तेऊ दलीअं ॥
भए सुंभ नैसुंभ स्रोणंत बीजं ॥
तेऊ काल कीने पुरेजं पुरेजं ॥६४॥
बली प्रिथीअं मानधाता महीपं ॥
जिनै रथ चक्र कीए सात दीपं ॥
भुजं भीम भरथं जगं जीति डंडचं ॥
तिनै अंत के अंत कौ काल खंडचं ॥६५॥
जिनै दीप दीपं दुहाई फिराई ॥
भुजा दंड दै छोणि छत्रं छिनाई ॥
करे जग कोटं जसं अनेक लीते ॥
वहै बीर बंके बली काल जीते ॥६६॥
कई कोट लीने जिनै दुरग ढाहे ॥
किते सूरबीरान के सैन गाहे ॥

कई जंग कीने सु साके पवारे ॥
वहै दीन देखे गिरे काल मारे ॥६७॥
जिनै पातसाही करी कोटि जुग्यं ॥
रसं आन रसं भली भांति भुग्यं ॥
वहै अंत को पाव नागे पधारे ॥
गिरे दीन देखे हठी काल मारे ॥६८॥
जिनै खंडीअं दंड धारं अपारं ॥
करे चंद्रमा सूर चेरे दुआरं ॥
जिनै इंद्र से जीत कै छोड डारे ॥
वहै दीन देखे गिरे काल मारे ॥६९॥

रसावल छंद ॥

जिते राम हूए ॥
सभै अंत मूए ॥
जिते क्रिसन ह्वैहैं ॥
सभै अंत जैहैं ॥७०॥
जिते देव होसी ॥
सभै अंत जासी ॥
जिते बोध ह्वैहैं ॥
सभै अंति छैहैं ॥७१॥
जिते देव रायं ॥
सभै अंत जायं ॥
जिते दईत एसं ॥
तितिओ काल लेसं ॥७२॥
नरसिंघावतारं ॥
वहै काल मारं ॥
बडो डंड धारी ॥
हणिओ काल भारी ॥७३॥
दिजं बावनेयं ॥
हणिओ काल तेयं ॥
महा मच्छ मुंडं ॥
फधिओ काल झुंडं ॥७४॥
जिते होइ बीते ॥
तिते काल जीते ॥
जिते सरनि जैहैं ॥
तितिओ राख लैहैं ॥७५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

बिना सरनि ताकी न अउरै उपायं ॥
कहा देव दईतं कहा रंक रायं ॥
कहा पातसाहं कहा उमरायं ॥
बिना सरन ता की न कोटै उपायं ॥७६॥
जिते जीव जंतं सु दुनीअं उपायं ॥
सभै अंत कालं बली काल घायं ॥
बिना सरन ता की नही और ओटं ॥
लिखे जंत्र केते पढ़े मंत्र कोटं ॥७७॥

नराज छंद ॥

जितेकि राज रंकयं ॥

हने सु काल बंकयं ॥
जितेकि लोक पालयं ॥
निदान काल दालयं ॥७८॥
क्रिपाण पाण जे जपै ॥
अनंत थाट ते थापै ॥
जितेक काल ध्याइ है ॥
जगत जीत जाइ है ॥७९॥
बचित्र चारु चित्रयं ॥
परमयं पवित्रयं ॥
अलोक रूप राजियं ॥
सुणे सु पाप भाजियं ॥८०॥
बिसाल लाल लोचनं ॥
बिअंत पाप मोचनं ॥
चमक चंद्र चारीअं ॥
अघी अनेक तारीअं ॥८१॥

रसावल छंद ॥

जिते लोक पालं ॥
तिते जेर कालं ॥
जिते सूर चंद्रं ॥
कहा इंद्र बिंद्रं ॥८२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

फिरै चौदहूं लोकयं काल चक्रं ॥
सभै नाथ नाथे भ्रमं भउंह बक्रं ॥
कहा राम क्रिसनं कहा चंद सूरं ॥
सभै हाथ बाधे खरे काल हजूरं ॥८३॥
सवैया ॥
काल ही पाइ भयो भगवान सु जागत या जग जा की कला है ॥
काल ही पाइ भयो ब्रहमा सिव काल ही पाइ भयो जुगीआ है ॥
काल ही पाइ सुरासुर गंध्रब जच्छ भुजंग दिसा बिदिसा है ॥
और सुकाल सभै बस काल के एक ही काल अकाल सदा है ॥८४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो देव देवं नमो खड़गधारं ॥
सदा एक रूपं सदा निरबिकारं ॥
नमो राजसं सातकं तामसेअं ॥
नमो निरबिकारं नमो निरजुरेअं ॥८५॥

रसावल छंद ॥

नमो बाण पाणं ॥
नमो निरभयाणं ॥
नमो देव देवं ॥
भवाणं भवेअं ॥८६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो खग खंडं क्रिपाणं कटारं ॥
सदा एक रूपं सदा निरबिकारं ॥

नमो बाण पाणं नमो दंड धारियं ॥
जिनै चौदहूं लोक जोतं बिथारियं ॥८७॥
नमसकारयं मोर तीरं तुफंगं ॥
नमो खग अदगं अभेयं अभंगं ॥
गदायं ग्रिसटं नमो सैहथीअं ॥
जिनै तुलीयं बीर बीयो न बीयं ॥८८॥

रसावल छंद ॥

नमो चक्र पाणं ॥
अभूतं भयाणं ॥
नमो उग्र दाड़ं ॥
महा ग्रिसट गाड़ं ॥८९॥
नमो तीर तोपं ॥
जिनै सत्रु घोपं ॥
नमो धोप पटं ॥
जिनै दुसट दटं ॥९०॥
जिते ससत्र नामं ॥
नमसकार तामं ॥
जिते असत्र भेयं ॥
नमसकार तेयं ॥९१॥
सवैया ॥
मेरु करो त्रिण ते मुहि जाहि गरीब निवाज न दूसर तो सो ॥
भूल छिमो हमरी प्रभ आपन भूलनहार कहूं कोऊ मो सो ॥
सेव करी तुमरी तिन के सभ ही ग्रिह देखीअत द्रब भरो सो ॥
या कल मैं सभ काल क्रिपान के भारी भुजान को भारी भरोसो ॥९२॥
सुंभ निसुंभ से कोट निसाचर जाहि छिनेक बिखै हन डारे ॥
धूमरलोचन चंड औ मुंड से माहख से पल बीच निवारे ॥
चामर से रण चिच्छुर से रकतिच्छुर से झट दै झझकारे ॥
ऐसो सु साहिब पाइ कहा परवाह रही इह दास तिहारे ॥९३॥
मुंडहु से मधु कीटभ से मुर से अघ से जिनि कोटि दले है ॥
ओट करी कबहूं न जिनै रण चोट परी पग द्वै न टले हैं ॥
सिंधु बिखै जे न बूडे निसाचर पावक बाण बहे न जले हैं ॥
ते असि तोर बिलोक अलोक सु लाज को छाडि कै भाजि चले हैं ॥९४॥
रावण से महरावण से घटकानहु से पल बीच पछारे ॥
बारिदनाद अकंपन से जग जंग जुरे जिन सिउ जम हारे ॥
कुंभ अकुंभ से जीत सभै जग सात हूं सिंध हथीआर पखारे ॥
जे जे हुते अकटे बिकटे सु कटे करि काल क्रिपान के मारे ॥९५॥
जो कहूं काल ते भाज के बाचीअत तो किह कुंट कहो भजि जईऐ ॥
आगे हूं काल धरे असि गाजत छाजत है जिह ते नसि अईऐ ॥
ऐसो न कै गयो कोई सु दाव रे जाहि उपाव सो घाव बचईऐ ॥
जा ते न छुटीऐ मुड़ कहूं हसि ता की न किउ सरणागति जईयै ॥९६॥
क्रिसन औ बिसन जपे तुहि कोटिक राम रहीम भली बिधि धिआयो ॥
ब्रहम जपिओ अरु संभु थपिओ तिह ते तुहि को किनहूं न बचायो ॥
कोट करी तपसा दिन कोटिक काहू न कौडी को काम कढायो ॥
कामकु मंत्र कसीरे के काम न काल को घाउ किनहूं न बचायो ॥९७॥
काहे को कूर करै तपसा इन की कोऊ कौडी के काम न ऐहै ॥
तोहि बचाइ सकै कहु कैसे कै आपन घाव बचाइ न ऐहै ॥
कोप कराल की पावक कुंड मै आप टंगिओ तिम तोहि टंगैहै ॥
चेत रे चेत अजो जीअ मैं जड़ काल क्रिपा बिनु काम न ऐहै ॥९८॥
ताहि पछानत है न महा पसु जा को प्रतापु तिहं पुर माही ॥

पूजत है परमेसर कै जिह के परसै परलोक पराही ॥
पाप करो परमारथ कै जिह पापन ते अति पाप लजाई ॥
पाइ परो परमेसर के जड़ पाहन मैं परमेसर नाही ॥९९ ॥
मोन भजे नही मान तजे नही भेख सजे नही मूंड मुंडाए ॥
कंठ न कंठी कठोर धरे नही सीस जटान के जूट सुहाए ॥
साचु कहों सुन लै चित दै बिनु दीन दिआल की साम सिधाए ॥
प्रीति करे प्रभु पायत है क्रिपाल न भीजत लांड कटाए ॥१०० ॥
कागद दीप सभै करि कै अरु सात समुंद्रन की मसु कै हों ॥
काट बनासपती सगरी लिखबे हूं के लेखन काजि बनै हों ॥
सारसुती बकता करि कै जुगि कोटि गनेस कै हाथि लिखै हों ॥
काल क्रिपान बिना बिनती न तऊ तुम कौ प्रभु नैक रिझै हों ॥१०१ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे स्री काल जी की उसतति प्रिथम धिआए संपूरन सुभ मसतु ॥१॥अफजू॥*

कवि बंस वरणन ॥

चौपई ॥

तुमरी महिमा अपर अपारा ॥
जा का लहिओ न किनहूं पारा ॥
देव देव राजन के राजा ॥
दीन दइआल गरीब निवाजा ॥१ ॥

दोहरा ॥

मूक उचरै सासत्र खट पिंगु गिरन चड़ि जाइ ॥
अंध लखै बधरो सुनै जौ काल क्रिपा कराइ ॥२ ॥

चौपई ॥

कहा बुधि प्रभ तुच्छ हमारी ॥
बरन सकै महिमा जु तिहारी ॥
हम न सकत कर सिफत तुमारी ॥
आप लेहु तुम कथा सुधारी ॥३ ॥
कहा लगै इह कीट बखानै ॥
महिमा तोर तुही प्रभ जानै ॥
पिता जनम जिम पूत न पावै ॥
कहा तवन का भेद बतावै ॥४ ॥
तुमरी प्रभा तुमै बनि आई ॥
अउरन ते नही जात बताई ॥
तुमरी क्रिपा तुम हूं प्रभ जानो ॥
ऊच नीच कस सकत बखानो ॥५ ॥
सेसनाग सिर सहस बनाई ॥
द्वै सहंस रसनाहु सुहाई ॥
रटत अब लगे नाम अपारा ॥
तुमरो तऊ न पावत पारा ॥६ ॥
तुमरी क्रिआ कहां कोऊ कहै ॥
समझत बात उरझ मति रहै ॥
सूछम रूप न बरना जाई ॥
बिरध सरूपहि कहो बनाई ॥७ ॥
तुमरी प्रेम भगति जब गहिहौ ॥

छोर कथा सभ ही तब कहिहौ ॥
अब मै कहो सु अपनी कथा ॥
सोढी बंस उपजिया जथा ॥८॥

दोहरा ॥

प्रिथम कथा संछेप ते कहो सु हितु चितु लाइ ॥
बहुर बडो बिसथार कै कहिहौ सभो सुनाइ ॥९॥

चौपई ॥

प्रिथम काल जब करा पसारा ॥
ओअंकार ते स्रिसट उपारा ॥
कालसैण प्रिथमै भइओ भूपा ॥
अधिक अतुल बलि रूप अनूपा ॥१०॥
कालकेत दूसर भूअ भयो ॥
क्रूर बरस तीसर जग ठयो ॥
कालधुज चतुरथ न्रिप सोहै ॥
जिह ते भइओ जगत सभ को है ॥११॥
सहसराछ जा के सुभ सोहैं ॥
सहस पाद जा के तन मो हैं ॥
सेखनाग पर सोइबो करै ॥
जग तहि सेखसाइ उचरै ॥१२॥
एक स्रवण ते मैल निकारा ॥
ता ते मधु कीटभ तन धारा ॥
दुतीय कान ते मैलु निकारी ॥
ता ते भई स्रिसटि इह सारी ॥१३॥
तिन को काल बहुर बध करा ॥
तिन को मेद समुंद मो परा ॥
चिकन तास जल पर तिर रही ॥
मेधा नाम तबहि ते कही ॥१४॥
साध करम जे पुरख कमावै ॥
नाम देवता जगत कहावै ॥
कुक्रित करम जे जग मै करहीं ॥
नाम असुर तिन को सभ धरहीं ॥१५॥
बहु बिथार कहा लगै बखानीअत ॥
ग्रंथ बढन ते अति डरु मानीअत ॥
तिन ते होत बहुत न्रिप आए ॥
दच्छ प्रजापति जिन उपजाए ॥१६॥
दस सहंस्र तिहि ग्रिह भई कंनिआ ॥
जिह समान कह लगै न अंनिआ ॥
काल क्रिआ ऐसी तह भई ॥
ते सभ बिआहि नरेसन दई ॥१७॥

दोहरा ॥

बनता कदरू दिति अदिति ए रिख बरी बनाइ ॥
नाग नागरिपु देव सभ दईत लए उपजाइ ॥१८॥

चौपई ॥

ता ते सूरज रूप को धरा ॥

जा ते बंस प्रचुर रवि करा ॥
जो तिन के कहि नाम सुनाऊ ॥
कथा बढन ते अधिक डराऊ ॥१९ ॥
तिन के बंस बिखै रघु भयो ॥
रघुबंसहि जिह जगहि चलयो ॥
ता ते पुत्र होत भयो अज बर ॥
महा रथी अर महा धनुर धर ॥२० ॥
जब तिन भेस जोग को लयो ॥
राज पाट दसरथ को दयो ॥
होत भयो वह महा धनुर धर ॥
तीन त्रिआन बरा जिह रुचि कर ॥२१ ॥
प्रिथम जयो तिह राम कुमारा ॥
भरथ लच्छमन सत्रबिदारा ॥
बहुत काल तिन राज कमायो ॥
काल पाइ सुरपुरहि सिधायो ॥२२ ॥
सीअ सुत बहुर भए दुइ राजा ॥
राज पाट उनही कउ छाजा ॥
मद्र देस एस्वरजा बरी जब ॥
भांति भांति के जग कीए तब ॥२३ ॥
तही तिनै बाधे दुइ पुरवा ॥
एक कसूर दुतीय लहुरवा ॥
अधिक पुरी ते दोऊ बिराजी ॥
निरख लंक अमरावति लाजी ॥२४ ॥
बहुत काल तिन राजु कमायो ॥
जाल काल ते अंत फसायो ॥
तिन के पुत्र पौत्र जे वए ॥
राज करत इह जग को भए ॥२५ ॥
कहा लगे ते बरन सुनाऊं ॥
तिन के नाम न संख्या पाऊं ॥
होत चहूं जुग मैं जे आए ॥
तिन के नाम न जात गनाए ॥२६ ॥
जौ अब तउ किरपा बल पाऊं ॥
नाम जथा मति भाख सुनाऊं ॥
कालकेतु अर कालराइ भन ॥
जिन ते भए पुत्र घर अनगन ॥२७ ॥
कालकेत भयो बली अपारा ॥
कालराइ जिनि नगर निकारा ॥
भाज सनौढ देस ते गए ॥
तही भूपजा बिआहत भए ॥२८ ॥
तिह ते पुत्र भयो जो धामा ॥
सोढीराइ धरा तिहि नामा ॥
वंस सनौढ ता दिन ते थीआ ॥
परम पवित्र पुरख जू कीआ ॥२९ ॥
तां ते पुत्र पौत्र होइ आए ॥
ते सोढी सभ जगत कहाए ॥
जग मै अधिक सु भए प्रसिद्धा ॥
दिन दिन तिन के धन की ब्रिद्धा ॥३० ॥
राज करत भए बिबिध प्रकारा ॥
देस देस के जीत न्रिपारा ॥
जहां तहां तिह धरम चलायो ॥

अत्र पत्र कह सीस ढुरायो ॥३१॥
राजसूअ बहु बारन कीए ॥
जीत जीत देसेस्वर लीए ॥
बाजमेध बहु बारन करे ॥
सकल कलूख निज कुल के हरे ॥३२॥
बहुत बंस मै बढो बिखाधा ॥
मेट न सका कोऊ तिह साधा ॥
बिचरे बीर बनैत अखंडल ॥
गहि गहि चले भिरन रन मंडल ॥३३॥
धन अर भूमि पुरातन बैरा ॥
जिन का मूआ करत जग घेरा ॥
मोह बाद अहंकार पसारा ॥
काम क्रोध जीता जग सारा ॥३४॥

दोहरा ॥

धंनि धंनि धन को भाखीऐ जा का जगतु गुलामु ॥
सभ निरखत या कौ फिरै सभ चल करत सलाम ॥३५॥

चौपई ॥

काल न कोऊ करन सुमारा ॥
बैर बाद अहंकार पसारा ॥
लोभ मूल इहि जग को हूआ ॥
जा सो चाहत सभै को मूआ ॥३६॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे सुभ बंस बरननं नाम दुतीआ धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥2॥अफजू॥137॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

रचा बैर बादं बिधाते अपारं ॥
जिसै साध साकिओ न कोऊ सुधारं ॥
बली कामरायं महा लोभ मोहं ॥
गयो कउन बीरं सु या ते अलोहं ॥१॥
तहां बीर बंके बकै आप मद्धं ॥
उठे ससत्र लै लै मचा जुद्ध सुधं ॥
कहूं खपरी खोल खंडे अपारं ॥
नचे बीर बैताल डउरू डकारं ॥२॥
कहूं ईस सीसं पुऐ रुंड मालं ॥
कहूं डाक डउरू कहूं कंबितालं ॥
चवी चावडीअं किलंकार कंकं ॥
गुथी लुथ जुथे बहे बीर बंकं ॥३॥
परी कुट कुटं रुले तच्छ मुछं ॥
रहे हाथ डारे उभै उरध मुछं ॥
कहूं खोपरी खोल खिंगं खतंगं ॥
कहूं खत्रीयं खग खेतं निखंगं ॥४॥
चवी चांवडी डाकनी डाक मारे ॥
कहूं भैरवी भूत भैरों बकारे ॥
कहूं बीर बैताल बंके बिहारं ॥
कहूं भूत प्रेतं हसै मासहारं ॥५॥

रसावल छंद ॥

महां बीर गजे ॥
सुणै मेघ लजे ॥
झंडा गड गाढे ॥
मंडे रोस बाढे ॥६॥
क्रिपाणं कटारं ॥
भिरे रोस धारं ॥
महां बीर बंकं ॥
भिरे भूम हंकं ॥७॥
मचे सूर ससत्रं ॥
उठी झार असत्रं ॥
क्रिपाणं कटारं ॥
परी लोह मारं ॥८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

हलबी जुनबी सरोही दुधारी ॥
बही कोप काती क्रिपाणं कटारी ॥
कहूं सैहथीअं कहूं सुद्ध सेलं ॥
कहूं सेल सांगं भई रेल पेलं ॥९॥

नराज छंद ॥

सरोख सुर साजिअं ॥
बिसार संक बाजिअं ॥
निसंक ससत्र मारही ॥
उतार अंग डारही ॥१०॥
कछू न कान राखहीं ॥
सु मार मार भाखहीं ॥
सु हांक हाठ रेलयं ॥
अनंत ससत्र झेलयं ॥११॥
हजार हूर अंबरं ॥
बिरुध कै स्वयंबरं ॥
करूर भांत डोलही ॥
सु मार मार बोलही ॥१२॥
कहूं कि अंग कटीअं ॥
कहूं सुरोह पटीअं ॥
कहूं सु मास मुच्छीअं ॥
गिरे सु तच्छ मुच्छीअं ॥१३॥
ढमक ढोल ढालयं ॥
हरोल हाल चालयं ॥
झटाक झट बाहीअं ॥
सु बीर सैन गाहीअं ॥१४॥
निवं निसाण बाजिअं ॥
सु बीर धीर गाजिअं ॥
क्रिपान बाण बाहही ॥
अजात अंग लाहही ॥१५॥
बिरुद्ध क्रुद्ध राजियं ॥
न चार पैर भाजियं ॥
संभार ससत्र गाजही ॥
सु नाद मेघ लाजही ॥१६॥

हलंक हाक मारही ॥
सरक ससत्र झारही ॥
भिरे बिसारि सोकियं ॥
सिधार देव लोकियं ॥१७॥
रिसे बिरुद्ध बीरयं ॥
सु मारि झारि तीरयं ॥
सबद संख बजियं ॥
सु बीर धीर सजियं ॥१८॥

रसावल छंद ॥

तुरी संख बाजे ॥
महा बीर साजे ॥
नचे तुंद ताजी ॥
मचे सूर गाजी ॥१९॥
झिमी तेज तेगं ॥
मनो बिज बेगं ॥
उठै नद नादं ॥
धुनं न्रिबिखादं ॥२०॥
तुटै खग खोलं ॥
मुखं मार बोलं ॥
धका धीक धकं ॥
गिरे हक बकं ॥२१॥
दलं दीह गाहं ॥
अधो अंग लाहं ॥
प्रयोघं परहारं ॥
बकै मार मारं ॥२२॥
नदी रकत पूरं ॥
फिरी गैण हूरं ॥
गजै गैण काली ॥
हसी खपराली ॥२३॥
महा सूर सोहं ॥
मंडे लोह क्रोहं ॥
महां गरब गजियं ॥
धुनं मेघ लजियं ॥२४॥
छके लोह छकं ॥
मुखं मार बकं ॥
मुखं मुछ बंकं ॥
भिरे छाड संकं ॥२५॥
हकं हाक बाजी ॥
घिरी सैण साजी ॥
चिरे चार ढूके ॥
मुखं मार कूके ॥२६॥
रुके सूर सांगं ॥
मनो सिंध गंगं ॥
ढहे नाल ढकं ॥
क्रिपाणं कड़कं ॥२७॥
हकं हाक बाजी ॥
नचे तुंद ताजी ॥
रसं रुद्र पागे ॥
भिरे रोस जागे ॥२८॥

गिरे सुद्ध सेलं ॥
भई रेल पेलं ॥
पलंहार नचे ॥
रणं बीर मचे ॥२९ ॥
हसे मासहारी ॥
नचे भूत भारी ॥
महा ढीठ ढूके ॥
मुखं मार कूके ॥३० ॥
गजै गैण देवी ॥
महा अंस भेवी ॥
भले भूत नाचं ॥
रसं रुद्र राचं ॥३१ ॥
भिरै बैर रुझै ॥
महा जोध जुझै ॥
झंडा गड गाढे ॥
बजे बैर बाढे ॥३२ ॥
गजं गाह बाधे ॥
धनुर बाण साधे ॥
बहे आप मद्धं ॥
गिरे अद्ध अद्धं ॥३३ ॥
गजं बाज जुझे ॥
बली बैर रुझे ॥
न्रिभै ससत्र बाहैं ॥
उभै जीत चाहैं ॥३४ ॥
गजे आनि गाजी ॥
नचे तुंद ताजी ॥
हकं हाक बजी ॥
फिरै सैन भजी ॥३५ ॥
मदं मत माते ॥
रसं रुद्र राते ॥
गजं जूह साजे ॥
भिरे रोस बाजे ॥३६ ॥
झमी तेज तेगं ॥
घणं बिज बेगं ॥
बहै बार बैरी ॥
जलं जयो गंगैरी ॥३७ ॥
अपो आप बाहं ॥
उभै जीत चाहं ॥
रसं रुद्र राते ॥
महां मत माते ॥३८ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

मचे बीर बीरं अभूतं भयाणं ॥
बजी भेर भुंकार धुके निसाणं ॥
नवं नद नीसाण गजे गहीरं ॥
फिरै रुंड मुंडं तनं तच्छ तीरं ॥३९ ॥
बहे खग खेतं खिआलं खतंगं ॥
रुले तच्छ मुच्छं महा जोध जंगं ॥
बंधे बीर बाना बडे ऐठि वारे ॥
घुमै लोह घुटं मनो मतवारे ॥४० ॥

उठी कूह जूहं समर सार बजियं ॥
किधो अंत के काल को मेघ गजियं ॥
भई तीर भीरं कमाणं कड़कियं ॥
बजे लोह क्रोहं महां जंग मचियं ॥४१॥
बिरचे महां जंग जोधा जुआणं ॥
खुले खग खत्री अभूतं भयाणं ॥
बली जुझ रुझै रसं रुद्र रते ॥
मिले हथ बक्खं महा तेज तते ॥४२॥
झमी तेज तेगं सु रोसं प्रहारं ॥
रुले रुंड मुंडं उठीं ससत्र झारं ॥
बबकंत बीरं भभकंत घायं ॥
मनो जुद्ध इंद्रं जुटिओ ब्रितरायं ॥४३॥
महां जुद्ध मचियं महां सूर गाजे ॥
आपो आप मैं ससत्र सों ससत्र बाजे ॥
उठे झार सांगं मचे लोह क्रोहं ॥
मनो खेल बासंत माहंत सोहं ॥४४॥

रसावल छंद ॥

जिते बैर रुझं ॥
तिते अंत जुझं ॥
जिते खेति भाजे ॥
तिते अंत लाजे ॥४५॥
तुटे देह बरमं ॥
छुटी हाथ चरमं ॥
कहूं खेत खोलं ॥
गिरे सूर टोलं ॥४६॥
कहूं मुच्छ मुखं ॥
कहूं ससत्र सक्खं ॥
कहूं खोल खगं ॥
कहूं परम पगं ॥४७॥
गहे मुच्छ बंकी ॥
मंडे आन हंकी ॥
ढका ढुक ढालं ॥
उठे हाल चालं ॥४८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

खुले खग खूनी महां बीर खेतं ॥
नचे बीर बैतालयं भूत प्रेतं ॥
बजे डंग डउरू उठे नाद संखं ॥
मनो मल जुटे महां हथ बंखं ॥४९॥

छपै छंद ॥

जिन सूरन संग्राम सबल सामुहि ह्वै मंडिओ ॥
तिन सुभटन ते एक काल कोऊ जीअत न छडिओ ॥
सब खत्री खग खंड खेत भू मंडप आहुटे ॥
सार धार धर धूम मुकत बंधन ते छुटे ॥
ह्वै टूक टूक जुझै सबै पाव न पाछै डारीअं ॥
जैकार अपार सुधार हुअं बासिव लोक सिधारीअं ॥५०॥

चौपई ॥

इह बिधि मचा घोर संग्रामा ॥
सिधए सूर सूरि के धामा ॥
कहा लगै वह कथों लराई ॥
आपन प्रभा न बरनी जाई ॥५१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

लवी सरब जीते कुसी सरब हारे ॥
बचे जे बली प्रान लै के सिधारे ॥
चतुर बेद पठियं कीयो कासि बासं ॥
घने बरख कीने तहां ही निवासं ॥५२॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे लवी कुशी जुद्ध बरननं नाम त्रितीआ धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥3॥अफजू॥189॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जिनै बेद पठिओ सु बेदी कहाए ॥
तिनै धरम के करम नीके चलाए ॥
पठे कागदं मद्र राजा सुधारं ॥
आपो आप मो बैर भावं बिसारं ॥१॥
न्रिपं मुकलिअं दूत सो कासि आयं ॥
सबै बेदियं भेद भाखे सुनायं ॥
सबै बेद पाठी चले मद्र देसं ॥
प्रणामं कीयो आन कै कै नरेसं ॥२॥
धुनं बेद की भूप तां ते कराई ॥
सबै पास बैठे सभा बीच भाई ॥
पढ़े साम बेदं जुजर बेद कथं ॥
रिगं बेद पठियं करे भाव हथं ॥३॥

रसावल छंद ॥

अथर बेद पठियं ॥
सुणे पाप नठियं ॥
रहा रीझ राजा ॥
दीया सरब साजा ॥४॥
लयो बनबासं ॥
महां पाप नासं ॥
रिखं भेस कीयं ॥
तिसै राज दीयं ॥५॥
रहे होरि लोगं ॥
तजे सरब सोगं ॥
धनं धाम तिआगे ॥
प्रभं प्रेम पागे ॥६॥
अड़िल ॥
बेदी भए प्रसंन राज कह पाइ कै ॥
देत भयो बरदान हीऐ हुलसाइ कै ॥
जब नानक कलि मै हम आन कहाइहैं ॥
हो जगत पूज करि तोहि परम पद पाइहैं ॥७॥

दोहरा ॥

लवी राज दे बन गए बेदीअन कीनो राज ॥
भांति भांति तिनि भोगीयं भूअ का सकल समाज ॥८॥

चौपई ॥

त्रितीअ बेद सुनबो तुम कीआ ॥
चतुर बेद सुनि भूअ को दीआ ॥
तीन जनम हमहूं जब धरिहैं ॥
चउथे जनम गुरू तुहि करिहैं ॥९॥
उत राजा काननहि सिधायो ॥
इत इन राज करत सुख पायो ॥
कहा लगे करि कथा सुनाऊं ॥
ग्रंथ बढन ते अधिक डराऊं ॥१०॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बेद पाठ भेट राज चतुरथ धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥4॥अफजू॥199॥*

नराज छंद ॥

बहुर बिखाद बाधियं ॥
किनी न ताहि साधियं ॥
करंम काल यौं भई ॥
सु भूमि बंस ते गई ॥१॥

दोहरा ॥

बिप्र करत भए सूद्र ब्रिति छत्री बैसन करम ॥
बैस करत भए छत्रि ब्रिति सूद्र सु दिज को धरम ॥२॥

चौपई ॥

बीस गाव तिन के रहि गए ॥
जिन मो करत क्रिसानी भए ॥
बहुत काल इह भांति बितायो ॥
जनम समै नानक को आयो ॥३॥

दोहरा ॥

तिन बेदीअन की कुल बिखै प्रगटे नानक राइ ॥
सभ सिक्खन को सुख दए जह तह भए सहाइ ॥4॥

चौपई ॥

तिन इह कल मो धरमु चलायो ॥
सभ साधन को राहु बतायो ॥
जो तां के मारग महि आए ॥
ते कबहूं नहि पाप संताए ॥५॥
जे जे पंथ तवन के परे ॥
पाप ताप तिन के प्रभ हरे ॥
दूख भूख कबहूं न संताए ॥
जाल काल के बीच न आए ॥६॥

नानक अंगद को बपु धरा ॥
धरम प्रचुर इह जग मो करा ॥
अमरदास पुनि नामु कहायो ॥
जन दीपक ते दीप जगायो ॥७॥
जब बरदान समै वहु आवा ॥
रामदास तब गुरू कहावा ॥
तिह बरदान पुरातन दीआ ॥
अमरदास सुरपुरि मगु लीआ ॥८॥
स्री नानक अंगदि करि माना ॥
अमरदास अंगद पहिचाना ॥
अमरदास रामदास कहायो ॥
साधनि लखा मूढ़ नहि पायो ॥९॥
भिंन भिंन सभहूं कर जाना ॥
एक रूप किनहूं पहिचाना ॥
जिन जाना तिन ही सिध पाई ॥
बिन समझे सिध हाथि न आई ॥१०॥
रामदास हरि सो मिल गए ॥
गुरता देत अरजनहि भए ॥
जब अरजन प्रभु लोक सिधाए ॥
हरिगोबिंद तिह ठां ठहिराए ॥११॥
हरिगोबिंद प्रभ लोक सिधारे ॥
हरीराइ तिह ठां बैठारे ॥
हरीक्रिसन तिन के सुत वए ॥
तिन ते तेग बहादर भए ॥१२॥
तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ परु सी न उचरी ॥१३॥
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥
नाटक चेटक कीए कुकाजा ॥
प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥१४॥

दोहरा ॥

ठीकर फोरि दिलीस सिरि प्रभ पुरि कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे पातशाही बरननं नाम पंचमो धिआइ समापत मसत सुभ मसतु ॥5॥अफजू॥215॥*

चौपई ॥

अब मै अपनी कथा बखानो ॥
तप साधत जिह बिधि मुहि आनो ॥
हेम कुंट परबत है जहां ॥
सपत स्रिंग सोभित है तहां ॥१॥
सपत स्रिंग तिह नामु कहावा ॥
पंडु राज जह जोगु कमावा ॥

तह हम अधिक तपसिआ साधी ॥
महाकाल कालिका अराधी ॥२॥
इह बिधि करत तपसिआ भयो ॥
द्वै ते एक रूप ह्वै गयो ॥
तात मात मुर अलख अराधा ॥
बहु बिधि जोग साधना साधा ॥३॥
तिन जो करी अलख की सेवा ॥
ता ते भए प्रसंन गुरदेवा ॥
तिन प्रभ जब आइस मुहि दीआ ॥
तब हम जनम कलू महि लीआ ॥४॥
चित न भयो हमरो आवन कह ॥
चुभी रही स्रुति प्रभु चरनन मह ॥
जिउ तिउ प्रभ हम को समझायो ॥
इम कहि कै इह लोकि पठायो ॥५॥
अकाल पुरख बाच इस कीट प्रति ॥

चौपई ॥

जब पहिले हम स्रिसटि बनाई ॥
दईत रचे दुसट दुखदाई ॥
ते भुज बल बवरे ह्वै गए ॥
पूजत परम पुरख रहि गए ॥६॥
ते हम तमकि तनक मो खापे ॥
तिन की ठउर देवता थापे ॥
ते भी बलि पूजा उरझाए ॥
आपन ही परमेसर कहाए ॥७॥
महादेव अचुत कहायो ॥
बिसन आप ही को ठहिरायो ॥
ब्रहमा आप पारब्रहम बखाना ॥
प्रभ को प्रभू न किनहूं जाना ॥८॥
तब साखी प्रभ असट बनाए ॥
साख नमित देबे ठहिराए ॥
ते कहै करो हमारी पूजा ॥
हम बिन अवरु न ठाकुरु दूजा ॥९॥
परम तत को जिन न पछाना ॥
तिन करि ईसर तिन कहु माना ॥
केते सूर चंद कहु मानै ॥
अगनि होत्र कई पवन प्रमानै ॥१०॥
किनहूं प्रभु पाहन पहिचाना ॥
न्हात किते जल करत बिधाना ॥
केतिक करम करत डरपाना ॥
धरम राज को धरम पछाना ॥११॥
जो प्रभ साख नमित ठहिराए ॥
ते हिआं आइ प्रभू कहवाए ॥
ता की बात बिसर जाती भी ॥
अपनी अपनी परत सोभ भी ॥१२॥
जब प्रभ को न तिनै पहिचाना ॥
तब हरि इन मनुछन ठहिराना ॥
ते भी बसि ममता हुइ गए ॥
परमेसर पाहन ठहिरए ॥१३॥
तब हरि सिद्ध साध ठहिराए ॥

तिन भी परम पुरख नही पाए ॥
जे कोई होत भयो जगि सिआना ॥
तिन तिन अपनो पंथु चलाना ॥१४॥
परम पुरख किनहूं नह पायो ॥
बैर बाद अहंकार बढायो ॥
पेड पात आपन ते जलै ॥
प्रभ कै पंथ न कोऊ चलै ॥१५॥
जिनि जिनि तनिक सिद्ध को पायो ॥
तिन तिन अपना राहु चलायो ॥
परमेसर न किनहूं पहिचाना ॥
मम उचारते भयो दिवाना ॥१६॥
परम तत किनहूं न पछाना ॥
आप आप भीतरि उरझाना ॥
तब जे जे रिखराज बनाए ॥
तिन आपन पुन सिंम्रित चलाए ॥१७॥
जे सिंम्रितन के भए अनुरागी ॥
तिनि तिनि क्रिआ ब्रहम की तिआगी ॥
जिन मन हरि चरनन ठहिरायो ॥
सो सिंम्रितन के राह न आयो ॥१८॥
ब्रहमा चार ही बेद बनाए ॥
सरब लोक तिह करम चलाए ॥
जिन की लिव हरि चरनन लागी ॥
ते बेदन ते भए तिआगी ॥१९॥
जिन मत बेद कतेबन तिआगी ॥
पारब्रहम के भे अनुरागी ॥
तिन के गूड़ मत जे चलही ॥
भांति अनेक दुखन सो दलही ॥२०॥
जे जे सहित जातन संदेहि ॥
प्रभ के संगि न छोडत नेह ॥
ते ते परम पुरी कह जाही ॥
तिन हरि सिउ अंतरु कछु नाहीं ॥२१॥
जे जे जीय जातन ते डरै ॥
परम पुरख तजि तिन मग परै ॥
ते ते नरक कुंड मो परही ॥
बार बार जग मो बपु धरही ॥२२॥
तब हरि बहुरि दत उपजाइओ ॥
तिन भी अपना पंथु चलाइओ ॥
कर मो नख सिर जटां सवारी ॥
प्रभ की क्रिआ न कछू बिचारी ॥२३॥
पुनि हरि गोरख कौ उपराजा ॥
सिक्ख करे तिनहूं बड राजा ॥
स्रवन फारि मुद्रा दुऐ डारी ॥
हरि की प्रति रीति न बिचारी ॥२४॥
पुनि हरि रामानंद को करा ॥
भेस बैरागी को जिन धरा ॥
कंठी कंठि काठ की डारी ॥
प्रभ की क्रिआ न कछू बिचारी ॥२५॥
जे प्रभु परम पुरख उपजाए ॥
तिन तिन अपने राह चलाए ॥
महादीन तब प्रभ उपराजा ॥

अरब देस को कीनो राजा ॥२६ ॥
तिन भी एकु पंथु उपराजा ॥
लिंग बिना कीने सभ राजा ॥
सभ ते अपना नामु जपायो ॥
सति नामु काहूं न द्रिड़ायो ॥२७ ॥
सभ अपनी अपनी उरझाना ॥
पारब्रहम काहू न पछाना ॥
तप साधत हरि मोहि बुलायो ॥
इम कहि कै इह लोक पठायो ॥२८ ॥
अकाल पुरख बाच ॥

चौपई ॥

मै अपना सुत तोहि निवाजा ॥
पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ॥
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ॥
कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥२९ ॥
कबिबाच ॥ दोहरा ॥
ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर निआइ ॥
पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ ॥30॥

चौपई ॥

इह कारनि प्रभ मोहि पठायो ॥
तब मै जगत जनम धरि आयो ॥
जिम तिन कही तिनै तिम कहिहों ॥
अउर किसू ते बैर न गहिहों ॥३१ ॥
जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानो ॥३२ ॥
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥
जो प्रभ जगति कहा सो कहिहों ॥
म्रित लोक ते मोन न रहिहों ॥३३ ॥

नराज छंद ॥

कहिओ प्रभू सु भाखि हों ॥
किसू न कान राखि हों ॥
किसू न भेख भीज हों ॥
अलेख बीज बीज हों ॥३४ ॥
पखाण पूज हों नहीं ॥
न भेख भीज हो कहीं ॥
अनंत नामु गाइ हों ॥
परम पुरख पाइ हों ॥३५ ॥
जटा न सीस धारिहों ॥
न मुंद्रका सुधारिहों ॥
न कानि काहूं की धरो ॥
कहिओ प्रभू सु मै करों ॥३६ ॥
भजों सु एक नामयं ॥

जु काम सरब ठामयं ॥
न जाप आन को जपो ॥
न अउर थापना थपो ॥३७॥
बिअंति नाम धिआइ हों ॥
परम जोति पाइ हों ॥
न धिआन आन को धरों ॥
न नाम आन उचरों ॥३८॥
तवक नाम रतियं ॥
न आन मान मतियं ॥
परम धिआन धारीयं ॥
अनंत पाप टारीयं ॥३९॥
तुमेव रूप राचियं ॥
न आन दान माचियं ॥
तवक नाम उचारियं ॥
अनंत दूख टारीयं ॥४०॥

चौपई ॥

जिन जिन नाम तिहारो धिआइआ ॥
दूख पाप तिह निकट न आइआ ॥
जे जे अउर धिआन को धरहीं ॥
बहिस बहिस बादन ते मरहीं ॥४१॥
हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥४२॥
याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥
जे जे भए पहिल अवतारा ॥
आपु आपु तिन जापु उचारा ॥
प्रभ दोखी कोई न बिदारा ॥
धरम करन को राहु न डारा ॥४४॥
जे जे गउस अंबीआ भए ॥
मै मै करत जगत ते गए ॥
महापुरख काहू न पछाना ॥
करम धरम को कछू न जाना ॥४५॥
अवरन की आसा किछु नाही ॥
एकै आस धरो मन माही ॥
आन आस उपजत किछु नाही ॥
वा की आस धरों मन माही ॥४६॥

दोहरा ॥

कोई पढ़त कुरान को कोई पढ़त पुरान ॥
काल न सकत बचाइ कै फोकट धरम निदान ॥४७॥

चौपई ॥

कई कोटि मिलि पढ़त कुराना ॥
बाचत किते पुरान अजाना ॥

अंत काल कोई काम न आवा ॥
दाव काल काहू न बचावा ॥४८॥
किउ न जपो ता को तुम भाई ॥
अंत काल जो होइ सहाई ॥
फोकट धरम लखो कर भरमा ॥
इन ते सरत न कोई करमा ॥४९॥
इह कारन प्रभु हमै बनायो ॥
भेदु भाखि इहु लोक पठायो ॥
जो तिन कहा सु सभन उचरों ॥
डिंभ विंभ कछु नैक न करों ॥५०॥

रसावल छंद ॥

न जटा मूंड धारों ॥
न मुंद्रका सवारों ॥
जपो तास नामं ॥
सरै सरब कामं ॥५१॥
न नैनं मिचाऊं ॥
न डिंभं दिखाऊं ॥
न कुकरमं कमाऊं ॥
न भेखी कहाऊं ॥५२॥

चौपई ॥

जे जे भेख सु तन मैं धारै ॥
ते प्रभु जन कछु कै न बिचारै ॥
समझ लेहु सभ जन मन माही ॥
डिंभन मै परमेसुर नाही ॥५३॥
जे जे करम करि डिंभ दिखाहीं ॥
तिन पर लोगन मो गति नाहीं ॥
जीवत चलत जगत के काजा ॥
स्वांग देखि करि पूजत राजा ॥५४॥
सुआंगन मै परमेसुर नाही ॥
खोज फिरै सभ ही को काही ॥
अपनो मनु कर मो जिह आना ॥
पारब्रहम को तिनी पछाना ॥५५॥

दोहरा ॥

भेख दिखाइ जगत को लोगन को बसि कीन ॥
अंति काल काती कटिओ बासु नरक मो लीन ॥५६॥

चौपई ॥

जे जे जग को डिंभ दिखावै ॥
लोगन मूंड अधिक सुखु पावै ॥
नासां मूंद करे प्रणामं ॥
फोकट धरम न कउडी कामं ॥५७॥
फोकट धरम जिते जग करहीं ॥
नरक कुंड भीतर ते परहीं ॥
हाथ हलाए सुरग न जाहू ॥
जो मनु जीत सका नहीं काहू ॥५८॥

कबिबाच ॥ दोहरा ॥

जो निज प्रभ मो सो कहा सो कहिहों जग माहि ॥
जो तिह प्रभ को धिआइ है अंत सुरग को जाहि ॥५९॥

दोहरा ॥

हरि हरि जन दुइ एक है बिब बिचार कछु नाहि ॥
जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि ॥६०॥

चौपई ॥

जे जे बादि करत हंकारा ॥
तिन ते भिंन रहत करतारा ॥
बेद कतेब बिखै हरि नाहीं ॥
जान लेहु हरिजन मन माहीं ॥६१॥
आंख मूंदि कोऊ डिंभ दिखावै ॥
आंधर की पदवी कहि पावै ॥
आंखि मीच मग सूझ न जाई ॥
ताहि अनंत मिलै किम भाई ॥६२॥
बहु बिसथार कह लउ कोई कहै ॥
समझत बाति थकत हुऐ रहै ॥
रसना धरै कई जो कोटा ॥
तदपि गनत तिह परत सु तोटा ॥६३॥

दोहरा ॥

जब आइसु प्रभ को भयो जनमु धरा जग आइ ॥
अब मै कथा संछेप ते सबहूं कहत सुनाइ ॥६४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे मम आगिआ काल जग प्रवेस करन नाम खसटमो धिआइ समापत सतु सुभ मसतु ॥6॥अफजू॥279॥*

अथ कबि जनम कथनं ॥

चौपई ॥

मुर पित पूरब कीयसि पयाना ॥
भांति भांति के तीरथि नाना ॥
जब ही जात त्रिबेणी भए ॥
पुंन दान दिन करत बितए ॥१॥
तही प्रकास हमारा भयो ॥
पटना सहर बिखै भव लयो ॥
मद्र देस हम को ले आए ॥
भांति भांति दाईअनि दुलराए ॥२॥
कीनी अनिक भांति तन रच्छा ॥
दीनी भांति भांति की सिच्छा ॥
जब हम धरम करम मो आए ॥
देव लोक तब पिता सिधाए ॥३॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कबि जनम कथनं नाम सपतमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥7॥अफजू॥282॥*

अथ राज साज कथनं ॥

चौपई ॥

राज साज हम पर जब आयो ॥
जथा सकत तब धरम चलायो ॥
भांति भांति बन खेल सिकारा ॥
मारे रीछ रोझ झंखारा ॥१॥
देस चाल हम ते पुनि भई ॥
सहर पांवटा की सुधि लई ॥
कालिंद्री तटि करे बिलासा ॥
अनिक भांत के पेख तमासा ॥२॥
तह के सिंघ घने चुनि मारे ॥
रोझ रीछ बहु भांति बिदारे ॥
फतेसाह कोपा तबि राजा ॥
लोह परा हम सो बिनु काजा ॥३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तहां साह स्रीसाह संग्राम कोपे ॥
पंचो बीर बंके प्रिथी पाइ रोपे ॥
हठी जीतमलं सु गाजी गुलाबं ॥
रणं देखीऐ रंग रूपं सहाबं ॥४॥
हठियो माहरीचंदयं गंगरामं ॥
जिनै कितयं जितीयं फौज तामं ॥
कुपे लालचंदं कीए लाल रूपं ॥
जिनै गजीयं गरब सिंघं अनूपं ॥५॥
कुपियो माहरू काहरू रूप धारे ॥
जिनै खान खावीनियं खेत मारे ॥
कुपिओ देवतेसं दयाराम जुद्धं ॥
कीयो द्रोण की जिउ महा जुध सुधं ॥६॥
क्रिपाल कोपीयं कुतको संभारी ॥
हठी खानहयात के सीस झारी ॥
उठी छिच्छ इच्छं कढा मेझ जोरं ॥
मनो माखनं मटकी कान्ह फोरं ॥७॥
तहा नंदचंदं कीयो कोपु भारो ॥
लगाई बरच्छी क्रिपाणं संभारो ॥
तुटी तेग त्रिक्खी कढे जमदढं ॥
हठी राखयं लज बंसं सनढं ॥८॥
तहां मातलेयं क्रिपालं क्रुधं ॥
छकिओ छोभ छत्री करयो जुध सुधं ॥
सहे देह आपं महां बीर बाणं ॥
करो खान बानीन खाली पलाणं ॥९॥
हठियो साहबंचंद खेतं खत्रियाणं ॥
हने खान खूनी खुरासान भानं ॥
तहां बीर बंके भली भांति मारे ॥
बचे प्रान लै के सिपाही सिधारे ॥१०॥
तहां साह संग्राम कीने अखारे ॥
घने खेत मो खान खूनी लतारे ॥
न्रिपं गोपलायं खरो खेत गाजै ॥

म्रिगा झुंड मद्धियं मनो सिंघ राजै ॥११॥
तहां एक बीरं हरी चंद कोप्यो ॥
भली भांति सो खेत मो पाव रोप्यो ॥
महा क्रोध कै तीर तीखे प्रहारे ॥
लगै जौन के ताहि पारै पधारे ॥१२॥

रसावल छंद ॥

हरीचंद क्रुद्धं ॥
हने सूर सुद्धं ॥
भले बाण बाहे ॥
बडे सैन गाहे ॥१३॥
रसं रुद्र राचे ॥
महा लोह माचे ॥
हने ससत्र धारी ॥
लिटे भूप भारी ॥१४॥
तबै जीतमलं ॥
हरीचंद भलं ॥
ह्रिदै ऐंच मारिओ ॥
सु खेतं उतारिओ ॥१५॥
लगे बीर बाणं ॥
रिसियो तेजि माणं ॥
समुह बाज डारे ॥
सुवरगं सिधारे ॥१६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

खुलै खान खूनी खुरासान खगं ॥
परी ससत्र धारं उठी झाल अगं ॥
भई तीर भीरं कमाणं कड़के ॥
गिरे बाज ताजी लगे धीर धके ॥१७॥
बजी भेरि भुंकार धुके नगारे ॥
दुहूं ओर ते बीर बंके बकारे ॥
करे बाहु आघात ससत्रं प्रहारं ॥
डकी डाकणी चांवडी चीतकारं ॥१८॥

दोहरा ॥

कहा लगे बरनन करों मचियो जुधु अपार ॥
जे लुझे जुझे सबै भजे सूर हजार ॥१९॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भजियो साह पहाड़ताजी त्रिपायं ॥
चलियो बीरीया तीरीया न चलायं ॥
जसो डढवालं मधुकर सु साहं ॥
भजे संगि लै के सु सारी सिपाहं ॥२०॥
चक्रित चोपियो चंद गाजी चंदेलं ॥
हठी हरीचंदं गहे हाथ सेलं ॥
करिओ सुआमि धरमं महा रोस रुझियं ॥
गिरिओ टूक टूक ह्वै इसो सूर जुझियं ॥२१॥
तहा खान नैजाबतो आन कै कै ॥

हनिओ साह संग्राम कौ ससत्र लै कै ॥
किते खान बानीन हूं असत्र झारे ॥
सही साह संग्राम सुरगं सिधारे ॥२२॥

दोहरा ॥

मारि नजाबत खान को संगो जुझै जुझार ॥
हा हा इह लोकै भइओ सुरग लोक जैकार ॥२३॥

भुजंग छंद ॥

लखे साह संग्राम जुझे जुझारं ॥
तवं कीट बाणं कमाणं संभारं ॥
हनियो एक खानं खिआलं खतंगं ॥
डसियो सत्रु को जानु स्यामं भुजंगं ॥२४॥
गिरियो भूम सो बाण दूजो संभारयो ॥
मुखं भीखनं खान के तानि मारयो ॥
भजियो खान खूनी रहियो खेत ताजी ॥
तजे प्राण तीजे लगे बाण बाजी ॥२५॥
छुटी मूरछना हरीचंदं संभारे ॥
गहे बाण कामान भे ऐंच मारे ॥
लगे अंग जा के रहे न संभारं ॥
तनं तिआग ते देवलोकं पधारं ॥२६॥
दुयं बान खैंचे इकं बार मारे ॥
बली बीर बाजीन ताजी बिदारे ॥
जिसै बान लागै रहै न संभारं ॥
तनं बेधि कै ताहि पारं सिधारं ॥२७॥
सबै स्वामि धरमं सु बीरं संभारे ॥
डकी डाकणी भूत प्रेतं बकारे ॥
हसे बीर बैताल औ सुद्ध सिद्धं ॥
चवी चावडीयं उडी ग्रिद्ध ब्रिद्धं ॥२८॥
हरीचंद कोपे कमाणं संभारं ॥
प्रथम बाजीयं ताण बाणं प्रहारं ॥
दुतीय ताक कै तीर मो कौ चलायं ॥
रखिओ दईव मै कानि छ्वै कै सिधायं ॥२९॥
त्रितीय बाण मारियो सु पेटी मझारं ॥
बिधिअं चिलकतं दुआल पारं पधारं ॥
चुभी चिंच चरमं कछू घाइ न आयं ॥
कलं केवलं जान दासं बचायं ॥३०॥

रसावल छंद ॥

जबै बाण लाग्यो ॥
तबै रोस जाग्यो ॥
करं लै कमाणं ॥
हनं बाण ताणं ॥३१॥
सबै बीर धाए ॥
सरोघं चलाए ॥
तबै ताकि बाणं ॥
हन्यो एक जुआणं ॥३२॥
हरीचंद मारे ॥
सु जोधा लतारे ॥

सु कारोड़रायं ॥
वहै काल घायं ॥३३॥
रणं तिआगि भागे ॥
सबै त्रास पागे ॥
भई जीत मेरी ॥
क्रिपा काल केरी ॥३४॥
रणं जीति आए ॥
जयं गीत गाए ॥
धनं धार बरखे ॥
सबै सूर हरखे ॥३५॥

दोहरा ॥

जुध जीत आए जबै टिकै न तिन पुर पांव ॥
काहलूर मै बांधियो आन आनंदपुर गांव ॥३६॥
जे जे नर तह न भिरे दीने नगर निकार ॥
जे तिह ठउर भले भिरे तिनै करी प्रतिपार ॥३७॥

चौपई ॥

बहुत दिवस इह भांति बिताए ॥
संत उबार दुसट सभ घाए ॥
टांग टांग करि हने निदाना ॥
कूकर जिमि तिन तजे पराना ॥३८॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे भंगाणी जुद्ध बरननं नाम असटमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥8॥अफजू॥320॥

अथ नदउण का जुद्ध बरननं ॥

चौपई ॥

बहुत काल इह भांति बितायो ॥
मीआं खान जंमू कह आयो ॥
अलफ खान नादौण पठावा ॥
भीमचंद तन बैर बढावा ॥१॥
जुद्ध काज न्रिप हमै बुलायो ॥
आपि तवन की ओर सिधायो ॥
तिन कठ गड़ नवरस पर बांधयो ॥
तीर तुफंग नरेसन साधयो ॥२॥

भुजंग छंद ॥

तहा राज सिंघं बली भीमचंदं ॥
चड़िओ राम सिंघं महा तेज वंदं ॥
सुखं देव गाजी जसारोट राजं ॥
चड़े क्रुद्ध कीने करे सरब काजं ॥३॥
प्रिथीचंद चढिओ डढे डढवारं ॥
चले सिद्ध हुऐ कार राजं सुधारं ॥
करी ढूक ढोअं किरपालचंदं ॥
हटाए सबै मारि कै बीर ब्रिंदं ॥४॥

दुतीय ढोअ ढूके वहै मारि उतारी ॥
खरे दांत पीसै छुभै छत्रधारी ॥
उतै वै खरे बीर बंबै बजावैं ॥
तरे भूप ठांढे बडो सोकु पावैं ॥५ ॥
तबै भीमचंदं कीयो कोप आपं ॥
हनूमान के मंत्र को मुख जापं ॥
सबै बीर बोलै हमै भी बुलायं ॥
तबै ढोअ कै कै सु नीकै सिधायं ॥६ ॥
सबै कोप कै कै महा बीर ढूकै ॥
चले बारिबे बार को जिउ भभूकै ॥
तहा बिझुड़िआलं हठिओ बीर दिआलं ॥
उठिओ सैन लै संगि सारी क्रिपालं ॥७ ॥

मधुभार छंद ॥

कुपिओ क्रिपाल ॥
नचे मराल ॥
बजे बजंत ॥
क्रूरं अनंत ॥८ ॥
जझंत जुआण ॥
बाहै क्रिपाण ॥
जीअ धार क्रोध ॥
छडे सरोघ ॥९ ॥
लुझै निदान ॥
तजंत प्राण ॥
गिर परत भूमि ॥
जणु मेघ झूम ॥१० ॥

रसावल छंद ॥

क्रिपाल कोपियं ॥
हठी पाव रोपियं ॥
सरोघं चलाए ॥
बडे बीर घाए ॥११ ॥
हणे छत्रधारी ॥
लिटे भूप भारी ॥
महां नाद बाजे ॥
भले सूर गाजे ॥१२ ॥
क्रिपालं क्रुधं ॥
कीयो जुद्ध सुद्धं ॥
महां बीर गजे ॥
महां सार बजे ॥१३ ॥
करियो जुध चंडं ॥
सुणियो नाव खंडं ॥
चलियो ससत्र बाही ॥
रजौतीं निबाही ॥१४ ॥

दोहरा ॥

कोप भरे राजा सबै कीनो जुद्ध उपाइ ॥
सैन कटोचन की तबै घेर लई अरराइ ॥१५ ॥

भुजंग छंद ॥

चले नांगलू पांगलू वेदड़ोलं ॥
जसवारे गुलेरे चले बांध टोलं ॥
तहां एक बाजिओ महां बीर दिआलं ॥
रखी लाज जौने सभै बिझड़वालं ॥१६ ॥
तवं कीट तौ लौ तुफंगं संभारो ॥
ह्रिदै एक रावंत के तकि मारो ॥
गिरिओ झूम भूमै करियो जुध सुद्धं ॥
तऊ मारि बोलियो महा मानि क्रुद्धं ॥१७ ॥
तजियो तुपकं बान पानं संभारे ॥
चतुर बानयं लै सु सबियं प्रहारे ॥
त्रियो बान लै बाम पानं चलाए ॥
लगे या लगे ना कछू जानि पाए ॥१८ ॥
सु तउ लउ दईव जुध कीनो उझारं ॥
तिनै खेद कै बारि के बीच डारं ॥
परी मार बुंगं छुटी बाण गोली ॥
मनो सूर बैठे भली खेल होली ॥१९ ॥
गिरे बीर भूमं सरं सांग पेलं ॥
रंगे स्रोण बसत्रं मनो फाग खेलं ॥
लीयो जीति बैरी कीआ आनि डेरं ॥
तेऊ जाइ पारं रहे बारि केरं ॥२० ॥
भई रात्रि गुबार के अरध जामं ॥
तबै छोरिगे बार देवै दमामं ॥
सबै रात्रि बीती उदिओ दिउसराणं ॥
चले बीर चालाक खगं खिलाणं ॥२१ ॥
भजिओ अलफ खानं न खाना संभारिओ ॥
भजे अउर बीरं न धीरं बिचारिओ ॥
नदी पै दिनं असट कीने मुकामं ॥
भली भांति देखे सबै राज धामं ॥२२ ॥

चौपई ॥

इत हम होइ बिदा घर आए ॥
सुलह नमित वै उतहि सिधाए ॥
संधि इनै उन कै संगि कई ॥
हेत कथा पूरन इत भई ॥२३ ॥

दोहरा ॥

आलसून कह मारि कै इह दिसि कीओ पियान ॥
भाति अनेकन के करे पुर अनंद सुख आन ॥२४ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे नदौन जुद्ध बरननं नाम नौमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥9॥अफजू॥344॥*

चौपई ॥

बहुत बरख इह भांति बिताए ॥
चुनि चुनि चोर सबै गहि घाए ॥
केतक भाजि सहिर ते गए ॥
भूख मरत फिरि आवत भए ॥१ ॥

तब लौ खान दिलावर आए ॥
पूत आपन हम ओर पठाए ॥
द्वैक घरी बीती निसि जबै ॥
चड़त करी खानन मिलि तबै ॥२॥
जब दल पार नदी के आयो ॥
आन आलमै हमै जगायो ॥
सोरु परा सभ ही नर जागे ॥
गहि गहि ससत्र बीर रिस पागे ॥३॥
छूटन लगी तुफ़ंगैं तब ही ॥
गहि गहि ससत्र रिसाने सब ही ॥
क्रूर भांति तिन करी पुकारा ॥
सोरु सुना सरता कै पारा ॥४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

बजी भेर भुंकार धुंके नगारे ॥
महां बीर बानैत बंके बकारे ॥
भए बाहु आघात नचे मरालं ॥
क्रिपा सिंध काली गरजी करालं ॥५॥
नदीयं लखियो काल रातं समानं ॥
करे सूरमा सीत पिंगं प्रमानं ॥
इते बीर गजे भए नाद भारे ॥
भजे खान खूनी बिना ससत्र झारे ॥६॥

नराज छंद ॥

निलज खान भजिओ ॥
किनी न ससत्र सजिओ ॥
सु तिआग खेत कौ चले ॥
सु बीर बीरहा भले ॥७॥
चले तुरे तुराइ कै ॥
सकै न ससत्र उठाइ कै ॥
न लै हथिआर गजहीं ॥
निहारि नारि लजहीं ॥८॥

दोहरा ॥

बरवा गाउं उजार कै करे मुकाम भलान ॥
प्रभ बल हमै न छुइ सकै भाजत भए निदान ॥९॥
तब बल ईहा न पर सकै बरवा हना रिसाइ ॥
सालिन रस जिम बानीयो रोरन खात बनाइ ॥१०॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे खानजादे को आगमन त्रासित उठ जैबो बरननं नाम दसमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥10॥अफजू॥354॥*

हुसैनी जुद्ध कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

गयो खानजादा पिता पास भजं ॥
सकै ज्वाबु दै न हने सूर लजं ॥
तहा ठोक बाहां हुसैनी गरजियं ॥
सूर लै कै सिला साज सजियं ॥१॥

करियो जोर सैनं हुसैनी पयानं ॥
प्रथम कूटि कै लूट लीने अवानं ॥
पुनर डढवालं कीयो जीति जेरं ॥
करे बंदि कै राज पुत्रान चेरं ॥२॥
पुनरि दूनि को लूट लीनो सुधारं ॥
कोई सामुहे ह्वै सकियो न गवारं ॥
लीयो छीन अंनं दलं बांटि दीयं ॥
महा मूड़ियं कुतसतं काज कीयं ॥३॥

दोहरा ॥

कितक दिवस बीतत भए करत उसै उतपात ॥
गुआलेरीअन की परत भी आन मिलन की बात ॥४॥
जौ दिन दुइक न वे मिलत तब आवत अरराइ ॥
कालि तिनू के घर बिखै डारी कलह बनाइ ॥५॥

चौपई ॥

गुआलेरीआ मिलन कहु आए ॥
राम सिंघ भी संगि सिधाए ॥
चतरथ आन मिलत भए जामं ॥
फूटि गई लखि नजरि गुलामं ॥६॥

दोहरा ॥

जैसे रवि के तेज ते रेत अधिक तपताइ ॥
रवि बलि छुद्र न जानई आपन ही गरबाइ ॥७॥

चौपई ॥

तैसे ही फूल गुलाम जात भयो ॥
तिनै न द्रिसट तरे आनत भयो ॥
कहलूरीआ कटोच संगि लहि ॥
जाना आन न मो सर महि महि ॥८॥
तिन जो धन आनो सो साथा ॥
ते दे रहे हुसैनी हाथा ॥
देत लेत आपन कुरराने ॥
ते धनि लै निजि धाम सिधाने ॥९॥
चेरो तबै तेज तन तयो ॥
भला बुरा कछु लखत न भयो ॥
छंद बंद नह नैकु बिचारा ॥
जात भयो दे तबहि नगारा ॥१०॥
दाव घाव तिन नैकु न करा ॥
सिंघहि घेरि ससा कहु डरा ॥
पंद्रह पहिर गिरद तिन कीयो ॥
खान पान तिन जान न दीयो ॥११॥
खान पान बिन सूरि रिसाए ॥
साम करन हित दूत पठाए ॥
दास निरख संगि सैन पठानी ॥
फूलि गयो तिन की नहीं मानी ॥१२॥
दस सहंस्र अब ही कै दैहू ॥
ना तर मीच मूंड पर लैहू ॥

सिंघ संगतीआ तहा पठाए ॥
गोपालै सु धरमु दे लिआए ॥१३॥
तिन कै संगि न उन की बनी ॥
तब क्रिपाल चित मो इह गनी ॥
ऐसि घाति फिर हाथ न ऐहै ॥
सबहूं फेर समो छलि जैहै ॥१४॥
गोपालै सु अबै गहि लीजै ॥
कैद कीजीऐ कै बध कीजै ॥
तनक भनक जब तिन सुन पाई ॥
निज दल जात भयो भटराई ॥१५॥

मधुभार छंद ॥

जब गयो गुपाल ॥
कुपियो क्रिपाल ॥
हिंमत हुसैन ॥
जुंमै लुझैन ॥१६॥
करि के गुमान ॥
जुंमै जुआन ॥
बजे तबल ॥
दुंदभि दबल ॥१७॥
बजे निसाण ॥
नचे किकाण ॥
बाहै तड़ाक ॥
उठै कड़ाक ॥१८॥
बजे निसंग ॥
गजे निहंग ॥
छुटै क्रिपान ॥
लिटै जुआन ॥१९॥
तुपक तड़ाक ॥
कैबर कड़ाक ॥
सैहथी सड़ाक ॥
छौही छड़ाक ॥२०॥
गजे सु बीर ॥
बजे गहीर ॥
बिचरे निहंग ॥
जैसे पलंग ॥२१॥
हुंके किकाण ॥
धुंके निसाण ॥
बाहै तड़ाक ॥
झलै झड़ाक ॥२२॥
जुझे निहंग ॥
लिटे मलंग ॥
खुल्हे किसार ॥
जनु जटाधार ॥२३॥
सजे रजिंद्र ॥
गजे गजिंद्र ॥
उतरे खान ॥
लै लै कमान ॥२४॥

त्रिभंगी छंद ॥

कुपियो क्रिपालं सजि मरालं बाह बिसालं धरि ढालं ॥
धाए सभ सूरं रूप करूरं चमकत नूरं मुख लालं ॥
लै लै सु क्रिपानं बाण कमाणं सजे जुआनं तन ततं ॥
रणि रंग कलोलं मारही बोलं जन गज डोलं बन मतं ॥२५॥

भुयंग छंद ॥

तबै कोपीयं कांगड़ेसं कटोचं ॥
मुखं रकत नैनं तजे सरब सोचं ॥
उते उठीयं खान खेतं खतंगं ॥
मनो बिहचरै मास हेतं पिलंगं ॥२६॥
बजी भेर भुंकार तीरं तड़के ॥
मिले हथि बक्खं क्रिपाणं कड़के ॥
बजे जंग नीसाण कथे कथीरं ॥
फिरै रुंड मुंडं तनं तच्छ तीरं ॥२७॥
उठै टोप टूकं गुरजै प्रहारे ॥
रुले लुथ जुथं गिरे बीर मारे ॥
परै कतीयं घात निरघात बीरं ॥
फिरै रंुड मुंडं तनं तच्छ तीरं ॥२८॥
बही बाहु आघात निरघात बाणं ॥
उठे नद नादं कड़के क्रिपाणं ॥
छके छोभ छत्र तजै बाण राजी ॥
बहे जाहि खाली फिरै छूछ ताजी ॥२९॥
जुटे आप मै बीर बीरं जुझारे ॥
मनो गज जुटे दंतारे दंतारे ॥
किधो सिंघ सो सारदूलं अरुझे ॥
तिसी भांति किरपाल गोपाल जुझे ॥३०॥
हरी सिंघ धायो तहां एक बीरं ॥
सहे देह आपं भली भांति तीरं ॥
महां कोप कै बीर ब्रिंदं संघारे ॥
बडो जुध कै देव लोकं पधारे ॥३१॥
हठियो हिंमतं किंमतं लै क्रिपानं ॥
लए गुरज चलं सु जलालखानं ॥
हठे सूरमा मत जोधा जुझारं ॥
परी कुट कुटं उठी ससत्र झारं ॥३२॥

रसावल छंद ॥

जसंवाल धाए ॥
तुरंगं नचाए ॥
लयो घेर हुसैनी ॥
हनियो सांग पैनी ॥३३॥
तिनू बाण बाहे ॥
बडे सैन गाहे ॥
जिसै अंगि लागियो ॥
तिसै प्राण तयागयो ॥३४॥
जबै घाव लागयो ॥
तबै कोप जागयो ॥
संभारी कमाणं ॥
हणे बीर बाणं ॥३५॥
चहूं ओर ढूके ॥

मुखं मार कूके ॥
त्रिभै ससत्र बाहैं ॥
दोऊ जीत चाहैं ॥३६॥
रिसे खानजादे ॥
महा मद मादे ॥
महा बाण बरखे ॥
सभै सूर हरखे ॥३७॥
करै बाण अरचा ॥
धनुर बेद चरचा ॥
सु सागं सम्हालं ॥
करै तउन ठामं ॥३८॥
बली बीर रुझे ॥
समूह ससत्र जुझे ॥
लगै धीर धके ॥
क्रिपाणं झनके ॥३९॥
कड़कै कमाणं ॥
झणकै क्रिपाणं ॥
कड़ंकार छुटै ॥
झणंकार उठै ॥४०॥
हठी ससत्र झारै ॥
न संका बिचारै ॥
करै तीर मारं ॥
फिरै लोह धारं ॥४१॥
नदी स्रौण पूरं ॥
फिरै गैण हूरं ॥
उभे खेत पालं ॥
बके बिकरालं ॥४२॥

पाधड़ी छंद ॥

तह हड़ हड़ाइ हसे मसाण ॥
लिटे गजिंद्र छुटे किकाण ॥
जुटे सु बीर तह कड़क जंग ॥
छुटी क्रिपाण वुठे खतंग ॥४३॥
डाकनि डहिक चावडि चिकार ॥
काकं कहकि बजे दुधार ॥
खोलं खड़कि तुपकि तड़ाकि ॥
सैथं सड़क धकं धहाकि ॥४४॥

भुजंग छंद ॥

तहा आप कीनो हुसैनी उतारं ॥
सभू हाथ बाणं कमाणं संभारं ॥
रुपे खानि खूनी करै लाग जुधं ॥
मुखं रकत नैणं भरे सूर क्रुद्धं ॥४५॥
जगियो जंग जालम सु जोधं जुझारं ॥
बहे बाण बांके बरच्छी दुधारं ॥
मिले बीर बीरं महां धीर बंके ॥
धका धकि सैथं क्रिपानं झनंके ॥४६॥
भए ढोल ढंकार नादं नफीरं ॥
उठै बाहु आघात गजै सु बीरं ॥

नवं नद नीसान बजे अपारं ॥
रुले तच्छ मुच्छं उठी ससत्र झारं ॥४७॥
टका टुक टोपं ढका ढुक ढालं ॥
महां बीर बानैत बंके बिक्रालं ॥
नचे बीर बैतालयं भूत प्रेतं ॥
नची डाकिणी जोगणी उरध हेतं ॥४८॥
छुटी जोग तारी महां रुद्र जागे ॥
डगियो धिआन ब्रहमं सभै सिद्ध भागे ॥
हसे किंनरं जच्छ बिदिआ धरेयं ॥
नची अच्छरा पच्छरा चारणेयं ॥४९॥
परिओ घोर जुधं सु सैना परानी ॥
तहां खां हुसैनी मंडिओ बीर बानी ॥
उतै बीर धाए सु बीरं जस्वारं ॥
सबै बिउत डारे बगा से अस्वारं ॥५०॥
तहां खां हुसैनी रहिओ एक ठाढं ॥
मनो जुध खंभं रणं भूम गाडं ॥
जिसै कोप कै कै हठी बाण मारिओ ॥
तिसै छेद कै पैल पारे पधारिओ ॥५१॥
सहे बाण सूरं सभै आण ढूकै ॥
चहूं ओर तै मार ही मार कूकै ॥
भली भांति सो असत्र अउ ससत्र झारे ॥
गिरे भिसत को खां हुसैनी सिधारे ॥५२॥

दोहरा ॥

जबै हुसैनी जूझिओ भयो सूर मन रोसु ॥
भाजि चले अवरे सभै उठिओ कटोचन जोसु ॥५३॥

चौपई ॥

कोपि कटोचि सबै मिलि धाए ॥
हिंमति किंमति सहित रिसाए ॥
हरी सिंघ तब कीया उठाना ॥
चुनि चुनि हने पखरीया जुआना ॥५४॥

नराज छंद ॥

तबै कटोच कोपीअं ॥
संभार पाव रोपीअं ॥
सरक ससत्र झारही ॥
सु मारि मारि उचारही ॥५५॥
चंदेल चौपीयं तबै ॥
रिसात धात भे सबै ॥
जिते गए सु मारीयं ॥
बचे तिते सिधारीयं ॥५६॥

दोहरा ॥

सात सवारन कै सहित जूझे संगत राइ ॥
दरसो सुनि जूझै तिनै बहुत जुझत भयो आइ ॥५७॥
हिंमत हूं उतरियो तहा बीर खेत मंझार ॥
केतन के तनि घाइ सहि केतनि कै तनि झार ॥५८॥

बाज तहां जूझत भयो हिंमत गयो पराइ ॥
लोथ क्रिपालहि की नमित कोपि परे अरराइ ॥५९ ॥

रसावल छंद ॥

बली बैर रुझे ॥
समुहि सार जुझे ॥
क्रिपा राम गाजी ॥
लरिओ सैन भाजी ॥६० ॥
महा सैन गाहैं ॥
न्रिभै ससत्र बाहैं ॥
घनियो काल कै कै ॥
चलै जस लै कै ॥६१ ॥
बजे संख नादं ॥
सुरं निरबिखादं ॥
बजे डौर डढं ॥
हठे ससत्र कढं ॥६२ ॥
परी भीर भारी ॥
जुझै छत्र धारी ॥
मुखं मुछ बंकं ॥
मंडे बीर हंकं ॥६३ ॥
मुखं मारि बोलैं ॥
रणं भूमि डोलैं ॥
हथिआरं संभारैं ॥
उभै बाज डारैं ॥६४ ॥

दोहरा ॥

रण जुझत किरपाल के नाचत भयो गुपाल ॥
सैन सभै सिरदार दै भाजत भई बिहाल ॥६५ ॥
खान हुसैन क्रिपाल के हिंमत रण जूझंत ॥
भाजि चले जोधा सबै जिम दे मुकट महंत ॥६६ ॥

चौपई ॥

इह बिध सतुर सबै चुनि मारे ॥
गिरे आपने सूर संभारे ॥
तह घाइल हिमंत कह लहा ॥
राम सिंघ गोपाल सिउं कहा ॥६७ ॥
जिन हिंमत अस कलह बढायो ॥
घाइल आज हाथ वह आयो ॥
जब गुपाल ऐसे सुनि पावा ॥
मारि दीओ जीअत न उठावा ॥६८ ॥
जीत भई रन भयो उजारा ॥
सिम्रित करि सभ घरो सिधारा ॥
राखि लीयो हम को जगराई ॥
लोह घटा अनतै बरसाई ॥६९ ॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे हुसैनी बध क्रिपाल हिंमत संगतीआ बध बरननं नाम गिआरमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥11॥अफजू॥423॥*

चौपई ॥

जुद्ध भयो इह भांति अपारा ॥
तुरकन को मारिओ सिरदारा ॥
रिस तन खान दिलावर तए ॥
इतै सऊर पठावत भए ॥१॥
उतै पठिओ उन सिंघ जुझारा ॥
तिह भलान ते खेद निकारा ॥
इति गज सिंघ पंमा दल जोरा ॥
धाइ परे तिन ऊपर भोरा ॥२॥
उतै जुझार सिंघ भयो आडा ॥
जिम रन खंभ भूमि रनि गाडा ॥
गाडा चले न हाडा चलि है ॥
सामुहि सेल समर मो झलि है ॥३॥
बाट चढै दल दोऊ जुझारा ॥
उतै चंदेल इतै जसवारा ॥
मंडिओ बीर खेत मो जुधा ॥
उपजिउ समरसूर मन क्रुधा ॥४॥
कोप भरे दोऊ दिस भट भारे ॥
इतै चंदेल उतै जसवारे ॥
ढोल नगारे बजे अपारा ॥
भीम रूप भैरो भभकारा ॥५॥

रसावल छंद ॥

धुणं ढोल बजे ॥
महां सूर गजे ॥
करे ससत्र घावं ॥
चढे चित चावं ॥६॥
न्रिभै बाज डारै ॥
परघै प्रहारै ॥
करे तेग घायं ॥
चढे चित चायं ॥७॥
बकै मार मारं ॥
न संका बिचारं ॥
रुलै तच्छ मुछं ॥
करै सुरग इच्छं ॥८॥

दोहरा ॥

नैक न रन ते मुरि चलैं करै निडर ह्वै घाइ ॥
गिर गिर परै पवंग ते बरें बरंगन जाइ ॥९॥

चौपई ॥

इह बिधि होत भयो संग्रामा ॥
जूझे चंद नराइन नामा ॥
तब जुझार एकल ही धयो ॥
बीरन घेर दसो दिस लयो ॥१०॥

दोहरा ॥

धसियो कटक मै झटक दै कछू न संक बिचार ॥
गाहत भयो सुभटन बडे बाहति भयो हथिआर ॥११॥

चौपई ॥

इह बिधि घणे घरन को गारा ॥
भांति भांति के करि हथीयारा ॥
चुनि चुनि बीर पखरीआ मारे ॥
अंति देव पुर आप पधारे ॥१२॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे जुझार सिंघ जुध बरननं नाम द्वादसमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥12॥अफजू॥435॥*

सहजादे को आगमन मद्र देस ॥

चौपई ॥

इह बिधि सो बध भयो जुझारा ॥
आन बसे तब धाम लुझारा ॥
तब अउरंग मन माहि रिसावा ॥
मद्र देस को पूत पठावा ॥१॥
तिह आवत सभ लोक डराने ॥
बडे बडे गिर हेर लुकाने ॥
हमहूं लोगन अधिक डरायो ॥
काल करम को मरम न पायो ॥२॥
कितक लोक तजि संगि सिधारे ॥
जाइ बसे गिरवर जहि भारे ॥
चित मूजीयन को अधिक डराना ॥
तिनै उबार न अपना जाना ॥३॥
तब अउरंग जीअ मांझ रिसाए ॥
एक अहदीआ ईहां पठाए ॥
हम ते भाजि बिमुख जे गए ॥
तिन के धाम गिरावत भए ॥४॥
जे अपने गुर ते मुख फिरहैं ॥
ईहां ऊहां तिन के ग्रिह गिरिहैं ॥
इहां उपहास न सुर पुर बासा ॥
सभ बातन ते रहै निरासा ॥५॥
दूख भूख तिन को रहै लागी ॥
संत सेव ते जो है तिआगी ॥
जगत बिखै कोई काम न सरहीं ॥
अंतहि कुंड नरक की परहीं ॥६॥
तिन को सदा जगत उपहासा ॥
अंतहि कुंड नरक की बासा ॥
गुर पग ते जे बेमुख सिधारे ॥
ईहां ऊहा तिन के मुख कारे ॥७॥
पुत्र पउत्र तिन के नहीं फरैं ॥
दुख दै मात पिता को मरैं ॥
गुर दोखी सग की म्रितु पावै ॥
नरक कुंड डारे पछुतावै ॥८॥
बाबे के बाबर के दोऊ ॥
आप करे परमेसर सोऊ ॥
दीन साह इन को पहिचानो ॥
दुनी पति उन कौ अनुमानो ॥९॥
जो बाबे को दाम न दैहैं ॥

तिन ते गहि बाबर के लैहैं ॥
दै दै तिन कौ बडी सजाइ ॥
पुनि लैहैं ग्रिह लूट बनाइ ॥१०॥
जब ह्वैहैं बेमुख बिना धन ॥
तब चड़िहैं सिखन कह मांगन ॥
जे जे सिख तिनै धन दैहैं ॥
लूट मलेछ तिनू कौ लैहैं ॥११॥
जब हुइ है तिन दरब बिनासा ॥
तब धरिहै निज गुर की आसा ॥
जब ते गुर दरसन को ऐहैं ॥
तब तिन को गुर मुख न लगैहैं ॥१२॥
बिदा बिना जैहैं तब धामं ॥
सरिहै कोई न तिन को कामं ॥
गुर दर ढोई न प्रभ पुर वासा ॥
दुहूं ठउर ते रहे निरासा ॥१३॥
जे जे गुर चरनन रत ह्वैहैं ॥
तिन को कसट न देखन पैहैं ॥
रिध सिध तिन के ग्रिह माहीं ॥
पाप ताप छ्वै सकै न छाहीं ॥१४॥
तिह मलेछ छ्वैहै नहीं छाहां ॥
असट सिध ह्वै है घरि माहां ॥
हास करत जो उदम उठैहैं ॥
नवो निधि तिन के घरि ऐहैं ॥१५॥
मिरजा बेग हुतो तिह नामं ॥
जिन ढाहे बेमुखन के धामं ॥
सभ सनमुख गुर आप बचाए ॥
तिन के बार न बांकन पाए ॥१६॥
उत अउरंग जीअ अधिक रिसायो ॥
चार अहदीयन अउर पठायो ॥
जे बेमुख तां ते बचि आए ॥
तिन के ग्रिह पुनि इनै गिराए ॥१७॥
जे तजि भजे हुते गुर आना ॥
तिन पुनि गुरू अहदीअहि जाना ॥
मूत्र डार तिन सीस मुंडाए ॥
पाहुरि जानि ग्रिहहि लै आए ॥१८॥
जे जे भाज हुते बिनु आइसु ॥
कहो अहदीअहि किनै बताइसु ॥
मूंड मूंडि करि सहिर फिराए ॥
कार भेट जनु लैन सिधाए ॥१९॥
पाछे लागि लरिकवा चले ॥
जानुक सिक्ख सखा हैं भले ॥
छिके तोबरा बदन चड़ाए ॥
जनु ग्रिह खान मलीदा आए ॥२०॥
मसतक सुभे पनहीयन घाइ ॥
जनु करि टीका दए बनाइ ॥
सीस ईट के घाइ करेही ॥
जनु तिनु भेट पुरातन देही ॥२१॥

दोहरा ॥

कबहूं रण जूझिओ नही कछु दै जसु नहि लीन ॥

गांव बसत जानियो नही जम सो किन कहि दीन ॥२२॥

चौपई ॥

इह बिधि तिनो भयो उपहासा ॥
सभ संतन मिलि लखिओ तमासा ॥
संतन कसट न देखन पायो ॥
आप हाथ दै नाथ बचायो ॥२३॥
चारणी ॥ दोहरा ॥
जिस नो साजन राखसी दुसमन कवन बिचार ॥
छ्वै न सकै तिह छाहि कौ निहफल जाइ गवार ॥२४॥
जो साधू सरणी परे तिन के कवन बिचार ॥
दंत जीभ जिम राखि है दुसट अरिसट संघार ॥२५॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे शाहज़ादे व अहिदीआ गमन बरननं नाम त्रौदसमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥13॥अफजू॥460॥*

चौपई ॥

सरब काल सभ साध उबारे ॥
दुखु दै कै दोखी सभ मारे ॥
अदभुति गति भगतन दिखराई ॥
सभ संकट ते लए बचाई ॥१॥
सभ संकट ते संत बचाए ॥
सभ कंटक कंटक जिम घाए ॥
दास जान मुहि करी सहाइ ॥
आप हाथु दै लयो बचाइ ॥२॥
अब जो जो मैं लखे तमासा ॥
सो सो करो तुमै अरदासा ॥
जो प्रभ किरपा कटाछ दिखैहै ॥
सो तव दास उचारत जैहै ॥३॥
जिह जिह बिध मै लखे तमासा ॥
चाहत तिन को कीयो प्रकासा ॥
जो जो जनम पूरबले हेरे ॥
कहिहो सु प्रभु पराक्रम तेरे ॥४॥
सरब काल है पिता अपारा ॥
देबि कालिका मात हमारा ॥
मनूआ गुर मुरि मनसा माई ॥
जिनि मो को सुभ क्रिआ पढ़ाई ॥५॥
जब मनसा मन मया बिचारी ॥
गुरु मनूआ कह कहियो सुधारी ॥
जे जे चरित पुरातन लहे ॥
ते ते अब चहीअत है कहे ॥६॥
सरब काल करणा तब भरे ॥
सेवक जानि दया रस ढरे ॥
जो जो जनम पुरबलो भयो ॥
सो सो सभ सिमरण कर दयो ॥७॥
मो कौ इती हुती कह सुद्धं ॥
जस प्रभ दई क्रिपा करि बुद्धं ॥
सरब काल तब भए दइआला ॥
लोह रछ हम को सब काला ॥८॥

सरब काल रच्छा सब काल ॥
लोह रच्छ सरबदा बिसाल ॥
ढीठ भयो तव क्रिपा लखाई ॥
ऐंडो फिरे सभन भयो राई ॥९॥
जिह जिह बिध जनमन सुधि आई ॥
तिम तिम कहे गिरंथ बनाई ॥
प्रथमे सतिजुग जिह बिधि लहा ॥
प्रथमे देबि चरित्र को कहा ॥१०॥
पहिले चंडी चरित्र बनायो ॥
नख सिख ते क्रम भाख सुनायो ॥
छोर कथा तब प्रथम सुनाई ॥
अब चाहत फिरि करों बडाई ॥११॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे सरब काल की बेनती बरननं नाम चौदसमो धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥14॥अफजू॥471॥*

SECTION 04: CHANDI CHARITAR UKTI BILAS

Deeds of Chandi — Poetic narration · By Guru Gobind Singh Ji

चंडी चरित्र ॥

ੴवाहिगुरू जी की फतह ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ चंडी चरित्र उकति बिलास लिख्यते ॥

पातिसाही १० ॥

स्वैया ॥
आदि अपार अलेख अनंत अकाल अभेख अलक्ख अनासा ॥
कै सिव सकत दए स्रुति चार रजो तम सत तिहू पुर बासा ॥
दिउस निसा ससि सूर कै दीप सु स्रिसटि रची पंच तत प्रकासा ॥
बैर बढाइ लराइ सुरासुर आपहि देखत बैठ तमासा ॥१॥

दोहरा ॥

क्रिपा सिंध तुमरी क्रिपा जो कछु मो परि होइ ॥
रचो चंडका की कथा बाणी सुभ सभ होइ ॥२॥
जोत जगमगै जगति मै चंड चमुंड प्रचंड ॥
भुज दंडन दंडनि असुर मंडन भुइ नव खंड ॥३॥
स्वैया ॥
तारन लोक उधारन भूमहि दैत संघारन चंड तुही है ॥
कारन ईस कला कमला हरि अद्रसुता जह देखे उही है ॥
तामसता ममता नमता कविता कवि के मन मद्धि गुही है ॥
कीनो है कंचन लोह जगत्र मै पारस मूरत जाइ छुही है ॥४॥

दोहरा ॥

प्रमुद करन सभ भै हरन नाम चंडका जास ॥
रचो चरित्र बचित्र तुअ करो सबुद्धि प्रकास ॥५॥
पुनहा ॥
आइस अब जो होइ ग्रंथ तउ मै रचौ ॥
रतन प्रमुद कर बचन चीन ता मै गचौ ॥
भाखा सुभ सभ करहों धरिहों क्रित मै ॥
अदभुत कथा अपार समझ करि चित मै ॥६॥
स्वैया ॥
त्रास कुटंब के हुइ कै उदास अवास को तिआगि बसिओ बनराई ॥
नाम सुरथ मुनीसर बेख समेत समाद समाध लगाई ॥
चंड अखंड खंडे कर कोप भई सुर रच्छन को समुहाई ॥
बूझहु जाइ तिनै तुम साध अगाधि कथा किह भांति सुनाई ॥७॥

तोटक छंद ॥

मुनीसुरो वाच ॥
हरि सोइ रहै सज सैन तहा ॥
जल जाल कराल बिसाल जहा ॥
भयो नाभ सरोज ते बिसु करता ॥
स्रुत मैल ते दैत रचे जुगता ॥८॥
मधिकैटभ नाम धरे तिन के ॥

अति दीरघ देह भए जिन के ॥
तिन देख लुकेस डरिओ हीअ मै ॥
जगमात को धिआनु धरयो जीअ मै ॥९ ॥

दोहरा ॥

छुटी चंड जागे ब्रहम करिओ जुद्ध को साज ॥
दैत सभै घटि जाहि जिउ बढै देवतन राज ॥१० ॥
स्वैया ॥
जुद्ध करिओ तिन सों भगवंत न मार सकै अति दैत बली है ॥
साल भए तिन पंच हजार दुहूं लरते नहि बांह टली है ॥
दैतन रीझ कहिओ बर मांग कहिओ हरि सीसन देह भली है ॥
धारि उरू परि चक्र सों काट कै जोति लै आपनै अंग मली है ॥११ ॥
सोरठा ॥
देवन थापिओ राज मधुकैटभ को मारि कै ॥
दीनो सकल समाज बैकुंठ गामी हरि भए ॥१२ ॥
इति स्री मारकंडे पुराने चंडी चरित्र उकति बिलास मधकैटभ बधहि प्रथम धिआइ ॥१ ॥
पुनहा ॥
बहुरि भइओ महखासुर तिन तो किआ कीआ ॥
भुजा जोर करि जुद्ध जीत सभ जगु लीआ ॥
सुर समूह संघारे रणहि पचार कै ॥
टूक टूक कर डारे आयुध धार कै ॥१३ ॥
स्वैया ॥
जुध करयो महिखासुर दानव मारि सभै सुर सैन गिराइओ ॥
कै कै दु टूक दए अर खेत महां बर बंड महा रन पाइओ ॥
स्रउणत रंग सनिओ निसरिओ जसु इआ छबि को मन मै इह आइओ ॥
मारि कै छत्रनि कुंड कै छेत्र मै मानहु पैठि कै राम जू न्हाइओ ॥१४ ॥
स्वैया ॥ लै महखासुर असत्र सु ससत्र सभै कलवत्र जिउ चीर कै डारे ॥
लुथ पै लुथ रही गुथ जुथ गिरे गिर से रथ सेंधव भारे ॥
गूद सने सित लोहू मै लाल कराल परे रन मै गज कारे ॥
जिउ दरजी जम म्रित के सीत मै बागे अनेक कता करि डारे ॥१५ ॥
स्वैया ॥ लै सुर संग सबै सुरपाल सु कोप के सत्र की सैन पै धाए ॥
दै मुख ढार लीए करवार हकार पचार प्रहार लगाए ॥
स्रउन मै देत सुरंग भए कवि ने मन भाउ इहै छबि पाए ॥
राम मनो रन जीत कै भालक दै सिरपाउ सभै पहराए ॥१६ ॥
घाइल घूमत है रन मै इक लोटत है धरनी बिललाते ॥
दउरत बीच कबंध फिरै जिह देखत काइर हैं डरपाते ॥
इयो महिखासुर जुद्ध कीयो तब जंबुक गिरझ भए रंग राते ॥
स्रौन प्रवाह मै पाइ पसार के सोए हैं सूर मनो मद माते ॥१७ ॥
स्वैया ॥ जुद्ध कीओ महखासुर दानव देखत भान चलै नहीं पंथा ॥
स्रौन समूह चलिओ लखि कै चतुरानन भूलि गए सभ ग्रंथा ॥
मास निहार कै ग्रिझ रड़ैं चटसार पड़ैं जिमु बारक संथा ॥
सारसुती तट लै भट लोथ स्रिंगाल कि सिद्ध बनावत कंथा ॥१८ ॥

दोहरा ॥

अगनत मारे गनै को भजै जु सुर करि त्रास ॥
धारि धिआन मन सिवा को तकी पुरी कैलास ॥१९ ॥
देवन के धन धाम सभ दैतन लीओ छिनाइ ॥
दए काढ सुर धाम ते बसे सिव पुरी जाइ ॥२० ॥
कितकि दिवस बीते तहां नावन निकसी देव ॥

बिध पूरब सभ देवतन करी देव की सेव ॥२१॥
रेखता ॥
करी है हकीकत मलूम खुद देवी सेती लीआ महखासुर हमारा छीन धाम है ॥
कीजै सोई बात मात तुम कउ सुहात सभ सेवक कदीम तक आए तेरी साम है ॥
दीजै बाज देस हमै मेटीऐ कलेस लेस कीजीऐ अभेस उनै बडो यह काम है ॥
कूकर को मारत न कोऊ नाम लै कै ताहि मारत है ता को लै कै खावंद को नाम है ॥२२॥

दोहरा ॥

सुनत बचन ए चंडका मन मैं उठी रिसाइ ॥
सभ दैतन को छै करउ बसउ सिवपुरी जाइ ॥२३॥
दैतन के बध को जबै चंडी कीओ प्रकास ॥
सिंघ संख अउ असत्र सभ ससत्र आइगे पास ॥२४॥
दैत संघारन के नमित काल जनमु इह लीन ॥
सिंघ चंड बाहन भइओ सत्रन कउ दुखु दीन ॥२५॥
स्वैया ॥
दारुन दीरघु दिगज से बलि सिंघहि के बल सिंघ धरे है ॥
रोम मनो सर कालहि के जन पाहन पीत पै ब्रिछ हरे है ॥
मेर के मधि मनो जमना लरि केतकी पुंज पै भ्रिंग ढरे है ॥
मानो महा प्रिथ लै के कमान सु भूधर भूम ते निआरे करे है ॥२६॥

दोहरा ॥

घंटा गदा त्रिसूल असि संख सरासन बान ॥
चक्र बक्र कर मै लीए जनु ग्रीखम रितु भानु ॥२७॥
चंड कोप करि चंडिक ा ए आयुध करि लीन ॥
निकटि बिकटि पुर दैत के घंटा की धुनि कीन ॥२८॥
सुनि घंटा केहरि सबदि असुरन असि रन लीन ॥
चड़े कोप कै जूथ हुइ जतन जुध को कीन ॥२९॥
पैतालीस पदम असुर सज्यो कटक चतुरंगि ॥
कछु बाए कछु दाहनै कछु भट न्रिप के संगि ॥३०॥
भए इकठे दल पदम दस पंद्रह अरु बीस ॥
पंद्रह कीने दाहने दस बाए संगि बीस ॥३१॥
स्वैया ॥
दउर सबै इक बार ही दैत सु आए है चंड के सामुहे कारे ॥
लै करि बान कमानन तानि घने अरु कोप सो सिंघ प्रहारे ॥
चंड संभारि तबै करवार हकार कै सत्र समूह निवारे ॥
खाडव जारन को अगनी तिह पारथ नै जनु मेघ बिडारे ॥३२॥

दोहरा ॥

दैत कोप इक सामुहे गइओ तुरंगम डारि ॥
सनमुख देवी के भइओ सलभ दीप अनुहार ॥३३॥
स्वैया ॥
बीर बली सिरदार दैईत सु क्रोध कै मियान ते खगु निकारिओ ॥
एक दइओ तनि चंड प्रचंड कै दूसर केहरि के सिर झारिओ ॥
चंड संभारि तबै बलु धारि लइओ गहि नारि धरा पर मारिओ ॥
जिउ धुबीआ सरता तटि जाइ के लै पट को पट साथ पछारिओ ॥३४॥

दोहरा ॥

देवी मारिओ दैत इउ लरिओ जु सनमुख आइ ॥

पुनि सत्रनि की सैन मै धसी सु संख बजाइ ॥३५॥
स्वैया ॥
लै करि चंडि कुवंड प्रचंड महा बरबंड तबै इह कीनो ॥
एक ही बार निहारि हकारि सुधारि बिदार सभै दल दीनो ॥
दैत घने रन माहि हने लखि स्रोन सने कवि इउ मनु चीनो ॥
जिउ खगराज बडो अहिराज समाज के काटि कता करि लीनो ॥३६॥

दोहरा ॥

देवी मारे दैत बहु प्रबल निबल से कीन ॥
ससत्र धारि करि करन मै चमूं चाल करि दीन ॥३७॥
भजी चमूं महखासुरी तकी सरनि निज ईस ॥
धाइ जाइ तिन इउ कहिओ हनिओ पदम भट बीस ॥३८॥
सुनि महखासुर मूड़ मति मन मै उठिओ रिसाइ ॥
आगिआ दीनी सैन को घेरो देवी जाइ ॥३९॥
स्वैया ॥
बात सुनी प्रभ की सभ सैनहि सूर मिले इकु मंत्र करिओ है ॥
जाइ परे चहूं ओर ते धाइ कै ठाट इहै मन मधि करिओ है ॥
मार ही मार पुकार परे असि लै करि मै दलु इउ बिहरिओ है ॥
घेरि लई चहूं ओर ते चंडि सु चंद मनो परवेख परिओ है ॥४०॥
देखि चमूं महखासुर की करि चंड कुवंड प्रचंड धरिओ है ॥
दछन बाम चलाइ घने सर कोप भयानक जुधु करिओ है ॥
भंजन भे अरि के तन ते छुट स्रउन समूह धरानि परिओ है ॥
आठवो सिंधु पचायो हुतो मनो या रन मै बिधि ने उगरिओ है ॥४१॥

दोहरा ॥

कोप भई अरि दल बिखै चंडी चक्र संभारि ॥
एक मारि कै द्वै कीए द्वै ते कीने चार ॥४२॥
स्वैया ॥
इह भाति को जुधु करिओ सुनि कै कवलास मै धिआन छुटिओ हरि का ॥
पुनि चंड संभार उभार गदा धुनि संख बजाइ करिओ खरका ॥
सिर सत्रनि के पर चक्र परिओ छुटि ऐसे बहिओ करि के बर का ॥
जनु खेल को सरता तटि जाइ चलावत है छिछली लरका ॥४३॥

दोहरा ॥

देख चमूं महिखासुरी देवी बलहि संभारि ॥
कछु सिंघहि कछु चक्र सो डारे सभै संघारि ॥४४॥
इक भाजे न्रिप पै गए कहिओ हती सभ सैन ॥
इउ सुनि कै कोपिओ असुर चड़ि आइओ रन ऐन ॥४५॥
स्वैया ॥
जूझ परी सभ सैन लखी जब तौ महखासुर खग संभारिओ ॥
चंडि प्रचंड के सामुहि जाइ भइआनक भालक जिउ भभकारिओ ॥
मुगदरु लै अपने करि चंडि सु कै बरि ता तन ऊपरि डारिओ ॥
जिउ हनूमान उखारि पहार को रावन के उर भीतर मारिओ ॥४६॥
फेर सरासन को गहि कै करि बीर हने तिन पानि न मंगे ॥
घाइल घूम परे रन माहि कराहत है गिर से गज लंगे ॥
सूरन के तन कउचन साथि परे धरि भाउ उठे तह चंगे ॥
जानो दवा बन माझ लगे तह कीटन भछ कौ दउरे भुजंगे ॥४७॥
कोप भरी रनि चंडि प्रचंड सु प्रेर के सिंघ धसी रन मै ॥
करवार लै लाल कीए अरि खेति लगी बड़वानल जिउ बन मै ॥

तब घेरि लई चहूं ओर ते दैतन इउ उपमा उपजी मन मै ॥
मनु ते तनु तेजु चलिओ जग मात को दामनि जान चले घन मै ॥४८॥
फूट गई धुजनी सगरी असि चंड प्रचंड जबै करि लीनो ॥
दैत मरै नहि बेख करै बहुतउ बरबंड महाबल कीनो ॥
चक्र चलाइ दइओ करि ते सिर सत्र को मार जुदा कर दीनो ॥
स्रउनत धार चली नभ को जनु सूर को राम जलाजल दीनो ॥४९॥
सब सूर संघार दए तिह खेति महा बरबंड पराक्रम कै ॥
तह स्रउनत सिंधु भइओ धरनी परि पुंज गिरे असि कै धम कै ॥
जग मात प्रताप हने सुर ताप सु दानव सैन गई जम कै ॥
बहुरो अरि सिंधुर के दल पैठ कै दामिनि जिउ दुरगा दमकै ॥५०॥

दोहरा ॥

जब महखासुर मारिओ सब दैतन को राज ॥
तब काइर भाजे सबै छाडिओ सकल समाज ॥५१॥

कबितु ॥

महाबीर कहरी दुपहरी को भानु मानो देवन के काज देवी डारिओ दैत मारि कै ॥
अउर दलु भाजिओ जैसे पउन हूं ते भाजे मेघ इंद्र दीनो राज बलु आपनो सो धारि कै ॥
देस देस के नरेस डारै है सुरेस पाइ कीनो अभखेक सुर मंडल बिचारि कै ॥
ईहा भई गुपति प्रगटि जाइ तहा भई जहा बैठे हरि हरिअंबरि को डारि कै ॥५२॥

◀ *इति स्री मारकंडे पुराने स्री चंडी चरित्र उकति बिलास महखासुर बधहि नाम दुतीआ धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥2॥*

दोहरा ॥

लोप चंडका होइ गई सुरपति कौ दे राज ॥
दानव मारि अभेख करि कीने संतन काज ॥५३॥
स्वैया ॥
या ते प्रसंन भए है महा मुन देवन के तप मै सुख पावै ॥
जग्य करै इक बेद ररै भव ताप हरै मिलि धिआनहि लावै ॥
झालर ताल म्रिदंग उपंग रबाब लीए सुर साज मिलावै ॥
किंनर गंध्रब गान करै गनि जछ अपछर निरत दिखावै ॥५४॥
संखन की धुन घंटनि की करि फूलन की बरखा बरखावै ॥
आरती कोटि करै सुर सुंदरि पेख पुरंदर के बलि जावै ॥
दानत दछन दै कै प्रदछन भाल मै कुंकम अछत लावै ॥
होत कुलाहल देवपुरी मिल देवन के कुलि मंगल गावै ॥५५॥

दोहरा ॥

ऐसे चंड प्रताप ते देवन बढिओ प्रताप ॥
तीन लोक जै जै करै ररै नामु सति जाप ॥५६॥
इसी भाति सो देवतन राज कीयो सुख मानि ॥
बहुर सुंभ नैसुंभ दुइ दैत बडे बलिवान ॥५७॥
इंद्र लोक के राज हित चड़ि धाए न्रिप सुंभ ॥
सैना चतुरंगनि रची पाइक रथ है कुंभ ॥५८॥
स्वैया ॥
बाजत डंक पुरी धुन कानि सु संकि पुरंदर मूंदत पउरै ॥
सूर मै नाहि रही दुति देखि के जुध को दैत भए इक ठउरै ॥
काप समुंद्र उठे सिगरे बहु भार भई धरनी गति अउरै ॥

मेरु हलिओ दहलिओ सुर लोक जबै दल सुंभ निसुंभ के दउरै ॥५९ ॥

दोहरा ॥

देव सभै मिलि के तबै गए सक्र पहि धाइ ॥
कहिओ दैत आए प्रबल कीजै कहा उपाइ ॥६० ॥
सुनि कोपिओ सुरपाल तब कीनो जुध उपाइ ॥
सेख देव गन जे हुते ते सभ लीए बुलाइ ॥६१ ॥
स्वैया ॥
भूमि को भार उतारन को जगदीस बिचार कै जुधु ठटा ॥
गरजै मदमत करी बदरा बग पंति लसै जन दंत गटा ॥
पहरै तनत्रान फिरै तह बीर लीए बरछी करि बिजु छटा ॥
दल दैतन को अरि देवन पै उमडिओ मानो घोर घमंड घटा ॥६२ ॥

दोहरा ॥

सगल दैत इकठे भए करियो जुध को साज ॥
अमरपुरी महि जाइ कै घेरि लीओ सुर राज ॥६३ ॥
स्वैया ॥
खोलि कै दुआरा किवार सभै निकसी असुरारि की सैन चली ॥
रन मै तब आनि इकत्र भए लखि सत्रु की पत्रि जिउ सैन हली ॥
द्रुम दीरघ जिउ गज बाज हले रथ पाइक जिउ फल फूल कली ॥
दल सुंभ को मेघ बिडारन को निकसिउ मघवा मानो पउन बली ॥६४ ॥
इह कोप पुरंदर देव चड़े उत जुध को सुंभ चड़े रन मै ॥
कर बान कमान क्रिपान गदा पहिरे तन त्रान तबै तन मै ॥
तब मार मची दुहूं ओरन ते न रहिओ भ्रम सूरन के मन मै ॥
बहु जंबुक ग्रिझ चलै सुनि कै अति मोद बढिओ सिव के गन मै ॥६५ ॥
राज पुरंदर कोप कीओ इति जुध को दैत जुरे उत कैसे ॥
सिआम घटा घुमरी घनघोर कै घेरि लीओ हरि को रवि तैसे ॥
सक्र कमान के बान लगे सर फोक लसै अरि के उरि ऐसे ॥
मानो पहार करार मै चोंच पसारि रहे सिसु सारक जैसे ॥६६ ॥
बान लगे लख सुंभ दईत धसे रन लै करवारन को ॥
रंगभूमि मै सत्रु गिराइ दए बहु स्रउन बहिओ असुरान को ॥
प्रगटे गन जंबुक ग्रिझ पिसाच सु यौ रन भाति पुकारन को ॥
सु मनो भट सारसुती तटि नात है पूरब पाप उतारन को ॥६७ ॥
जुध निसुंभ भइआन रचिओ अस आगे न दानव काहू करिओ है ॥
लोथन ऊपरि लोथ परी तह गीध स्रिगालनि मासु चरिओ है ॥
गूद बहै सिर केसन ते सित पुंज प्रवाह धरानि परिओ है ॥
मानहु जटाधर की जट ते जनु रोस कै गंग को नीर ढरिओ है ॥६८ ॥
बार सिवार भए तिह ठउर सु फेन जिउ छत्र फिरे तरता ॥
कर अंगुलका सफरी तलफै भुज काटि भुजंग करे करता ॥
हय नक्र धुजा द्रुम स्रउणत नीर मै चक्र जिउ चक्र फिरै गरता ॥
तब सुंभ निसुंभ दुहूं मिलि दानव मार करी रन मै सरता ॥६९ ॥

दोहरा ॥

सुर हारै जीतै असुर लीनो सकल समाज ॥
दीनो इंद्र भजाइ कै महा प्रबल दल साजि ॥७० ॥
स्वैया ॥
छीन भंडार लइओ है कुबेर ते सेस हूं ते मनि माल छुडाई ॥
जीत लुकेस दिनेस निसेस गनेस जलेस दीओ है भजाई ॥
लोक कीए तिन तीनहु आपने दैत पठे तह दै ठकुराई ॥

जाइ बसे सुर धाम तेऊ तिन सुंभ निसुंभ की फेरी दुहाई ॥७१॥

दोहरा ॥

खेत जीत दैतन लीओ गए देवते भाज ॥
इहै बिचारिओ मन बिखै लेहु सिवा ते राज ॥७२॥
स्वैया ॥
देव सुरेस दिनेस निसेस महेस पुरी महि जाइ बसे है ॥
भेस बुरे तहा जाइ दुरे सिर केस जुरे रन ते जु त्रसे है ॥
हाल बिहाल महा बिकराल संभाल नही जनु काल ग्रसे है ॥
बार ही बार पुकार करी अति आरतवंत दरीनि धसे है ॥७३॥
कान सुनी धुनि देवन की सभ दानव मारन को प्रन कीनो ॥
हुइ कै प्रतछ महा बर चंडि सु क्रुध ह्वै जुध बिखै मन दीनो ॥
भाल को फोर कै काली भई लखि ता छबि को कबि को मन भीनो ॥
दैत समूहि बिनासन को जम राज ते म्रित मनो भव लीनो ॥७४॥
पान क्रिपान धरे बलवान सु कोप कै बिजुल जिउ गरजी है ॥
मेरु समेत हले गरूए गिर सेस के सीस धरा लरजी है ॥
ब्रहम धनेस दिनेस डरिओ सुन कै हरि की छतीआ तरजी है ॥
चंड प्रचंड अखंड लीए करि कालिका काल ही जिउ अरजी है ॥७५॥

दोहरा ॥

निरख चंडका तास को तबै बचन इह कीन ॥
हे पुत्री तूं कालिका होहु जु मुझ मै लीन ॥७६॥
सुनत बचन यह चंडि को ता महि गई समाइ ॥
जिउ गंगा की धार मै जमुना पैठी धाइ ॥७७॥
स्वैया ॥
बैठ तबै गिरिजा अरु देवन बुधि इहै मन मधि बिचारी ॥
जुध कीए बिनु फेर फिरै नहि भूमि सभै अपनी अवधारी ॥
इंद्र कहिओ अब ढील बने नहि मात सुनो यह बात हमारी ॥
दैतन के बध काज चली रणि चंड प्रचंड भुजंगनि कारी ॥७८॥
कंचन से तन खंजन से द्रिग कंजन की सुखमा सकुची है ॥
लै करतार सुधा कर मै मध मूरति सी अंग अंग रची है ॥
आनन की सर को ससि नाहिन अउर कछू उपमा न बची है ॥
स्रिंग सुमेर के चंडि बिराजत मानो सिंघासन बैठी सची है ॥७९॥

दोहरा ॥

ऐसे स्रिंग सुमेर के सोभत चंडि प्रचंड ॥
चंद्रहास करि बर धरे जन जम लीने दंड ॥८०॥
किसी काज को दैत इक आइओ है तिह ठाइ ॥
निरख रूप बरु चंडि को गिरिओ मूरछा खाहि ॥८१॥
उठि संभारि कर जोर कै कही चंड सो बात ॥
न्रिपति सुंभ को भात हौ कह्यो बचन सुकचात ॥८२॥
तीन लोक जिनि बसि कीए अति बल भुजा अखंड ॥
ऐसो भूपति सुंभ है ताहि बरे बरि चंड ॥८३॥
सुनि राकस की बात को देवी उतर दीन ॥
जुध करै बिनु नहि बरो सुनहु दैत मतहीन ॥८४॥
इह सुनि दानव चपल गति गइओ सुंभ के पास ॥
परि पाइन कर जोर कै करी एक अरदास ॥८५॥
अउर रतन न्रिप धाम तुअ त्रीआ रतन ते हीन ॥
बधू एक बन मै बसै तिह तुम बरो प्रबीन ॥८६॥

सोरठा ॥

सुनी मनोहरि बात न्रिप बूझिओ पुनि ताहि को ॥
मो सो कहियै भ्रात बरनन ताहि सरीर को ॥८७॥

स्वैया ॥

हरि सो मुख है हरिती दुख है अलिकै हर हार प्रभा हरिनी है ॥
लोचन है हरि से सरसे हरि से भरुटे हरि सी बरुनी है ॥
केहरि सो करिहा चलबो हरि पै हरि की हरिनी तरनी है ॥
है कर मै हरि पै हरि सो हरि रूप कीए हर की धरनी है ॥८८॥

कबितु ॥

मीन मुरझाने कंज खंजन खिसाने अलि फिरत दिवाने बनि डोलै जित तित ही ॥
कीर अउ कपोत बिंब कोकिला कलापी बनि लूटे फूटे फिरै मनि चैन हूं न कित ही ॥
दारिम दरक गइओ पेखि दसननि पाति रूप ही की क्राति जगि फैल रही सित ही ॥
ऐसी गुन सागर उजागर सु नागरि है लीनो मन मेरो हरि नैन कोरि चित ही ॥८९॥

दोहरा ॥

बात दैत की सुंभ सुनि बोलिओ कछु मुसकात ॥
चतुर दूत कोऊ भेजीए लखि आवै तिह घात ॥९०॥
बहुरि कही उन दैत अब कीजै एक बिचार ॥
जो लाइक भट सैन मै भेजहु दै अधिकार ॥९१॥

स्वैया ॥

बैठो हुतो न्रिप मधि सभा उठि कै करि जोरि कहिओ मम जाऊ ॥
बातन ते रिझवाइ मिलाइ हो नातुरि केसन ते गहि लिआऊ ॥
क्रुध्र करे तब जुधु करे रणि स्रउणत की सरतान बहाऊ ॥
लोचन धूम कहै बल आपनो स्वासन साथ पहार उडाऊ ॥९२॥

दोहरा ॥

उठे बीर को देख कै सुंभ कही तुम जाहु ॥
रीझै आवै आनीओ खीझे जुध कराहु ॥९३॥
तहा धूम्र लोचन चले चतुरंगन दलु साजि ॥
गिर घेरिओ घन घटा जिउ गरज गरज गजराज ॥९४॥
धूम्र नैन गिर राज तटि ऊचे कही पुकारि ॥
कै बरु सुंभ न्रिपाल को कै लर चंडि संभारि ॥९५॥
रिपु के बचन सुंनत ही सिंघ भई असवार ॥
गिर ते उतरी बेग दै करि आयुध सभ धारि ॥९६॥

स्वैया ॥

कोप कै चंड प्रचंड चड़ी इत क्रुधु कै धूम्र चड़ै उत सैनी ॥
बान क्रिपानन मार मची तब देवी लई बरछी करि पैनी ॥
दउर दई अरि के मुखि मै कटि ओठ दए जिमु लोह कौ छैनी ॥
दात गंगा जमुना तन सिआम सो लोहू बहिओ तिन माहि त्रिबैनी ॥९७॥
घाउ लगै रिस कै द्रिग धूम्र सु कै बलि आपनो खगु संभारिओ ॥
बीस पचीसकु वार करे तिन केहरि को पगु नैकु न हारिओ ॥
धाइ गदा गहि फोरि कै फउज को घाउ सिवा सिरि दैत के मारिओ ॥
स्रिंग धराधर ऊपर को जनु कोप पुरंद्र नै बज्र प्रहारिओ ॥९८॥
लोचन धूम उठै किलकार लए संग दैतन के कुरमा ॥
गहि पानि क्रिपान अचानक तानि लगाई है केहरि के उर मा ॥
हरि चंडि लइओ बरि कै कर ते अरु मूंड कटिओ असुरं पुर मा ॥
मानो आंधी बहे धरनी पर छूटी खजूर ते टूट परिओ खुरमा ॥९९॥

दोहरा ॥

धूम्र नैन जब मारिओ देवी इह परकार ॥
असुर सैन बिनु चैन हुइ कीनो हाहाकार ॥१००॥

◀ इति स्री मारकंडे पुराणे चंडी चरित्र उकति बिलास धूम्र नैन बधहि नाम त्रितीआ धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥3॥

स्वैया ॥
सोरु सुनिओ जब दैतन को तब चंडि प्रचंड तची अखीआं ॥
हर धिआन छुटिओ मुनि को सुनि कै धुनि टूटि खगेस गई पखीआं ॥
द्रिग जुआल बढी बड़वानल जिउ कवि ने उपमा तिह की लखीआं ॥
सभु छार भइओ दलु दानव को जिमु घूमि हलाहल की मखीआं ॥१०१॥

दोहरा ॥

अउर सकल सैना जरी बचिओ सु एकै प्रेतु ॥
चंडि बचाइओ जानि कै अउरन मारन हेतु ॥१०२॥
भाजि निसाचर मंद मति कही सुंभ पहि जाइ ॥
धूम्र नैन सैना सहित डारिओ चंडि खपाइ ॥१०३॥
सकल कटे भट कटक के पाइक रथ है कुंभ ॥
यौ सुनि बचन अचरज ह्वै कोप कीओ न्रिप सुंभ ॥१०४॥
चंड मुंड द्वै दैत तब लीने सुंभि हकारि ॥
चलि आए न्रिप सभा महि करि लीने असि ढार ॥१०५॥
अभबंदन दोनो कीओ बैठाए न्रिप तीरि ॥
पान दए मुख ते कहिओ तुम दोनो मम बीर ॥१०६॥
निज कट को फैंटा दइओ अरु जमधर करवार ॥
लिआवहु चंडी बाध कै नातर डारो मार ॥१०७॥
स्वैया ॥
कोप चड़े रनि चंड अउ मुंड सु लै चतुरंगन सैन भली ॥
तब सेस के सीस धरा लरजी जनु मधि तरंगनि नाव हली ॥
खुर बाजन धूर उडी नभि को कवि के मन ते उपमा न टली ॥
भव भार अपार निवारन को धरनी मनो ब्रहम के लोक चली ॥१०८॥

दोहरा ॥

चंड मुंड दैतन दुहूं सबन प्रबल दलु लीन ॥
निकटि जाइ गिर घेरि कै महा कुलाहल कीन ॥१०९॥
स्वैया ॥
जब कान सुनी धुनि दैतन की तब कोपु कीओ गिरजा मन मै ॥
चड़ि सिंघ सु संख बजाइ चली सभि आयुध धार तबै तन मै ॥
गिर ते उतरी दल बैरन कै पर यौ उपमा उपजी मन मै ॥
नभ ते बहरी लखि छूट परी जनु कूक कुलंगन के गन मै ॥११०॥
चंड कुवंड ते बान छुटे इक ते दस सउ ते सहंस तह बाढे ॥
लछकु हुइ करि जाइ लगे तन दैतन माझ रहे गडि गाढे ॥
को कवि ताहि सराह करै अतिसै उपमा जु भई बिनु काढे ॥
फागुनि पउन के गउन भए जनु पातु बिहीन रहे तरु ठाढे ॥१११॥
मुंड लई करवार हकार कै केहरि के अंग अंग प्रहारे ॥
फिर दई तन दउर के गउरि को घाइल कै निकसी अंग धारे ॥
स्रउन भरी थहरै करि दैत के को उपमा कवि अउर बिचारे ॥
पान गुमान सो खाइ अघाइ मनो जमु आपुनी जीभ निहारे ॥११२॥
घाउ कै दैत चलिओ जब ही तब देवी निखंग ते बान सु काढे ॥

कान प्रमान लउ खैच कमान चलावत एक अनेक हुइ बाढे ॥
मुंड लै ढाल दई मुख ओटि धसे तिह मधि रहे गडि गाढे ॥
मानहु कूरम पीठ पै नीठ भए सहस फनि के फन ठाढे ॥११३॥
सिंघहि प्रेर कै आगै भई करि मै असि लै बर चंड संभारिओ ॥
मारि के धूरि कीए चकचूर गिरे अरि पूर महा रन पारिओ ॥
फेरि के घेरि लइओ रन माहि सु मुंड को मुंड जुदा करि मारिओ ॥
ऐसे परिओ धरि ऊपर जाइ जिउ बेलहि ते कदूआ कटि डारिओ ॥११४॥
सिंघ चड़ी मुख संख बजावत जिउ घन मै तड़ता दुति मंडी ॥
चक्र चलाइ गिराइ दइओ अरि भाजत दैत बडे बरबंडी ॥
भूत पिसाचनि मास अहार करै किलकार खिलार के झंडी ॥
मुंड को मुंड उतार दइओ अब चंड को हाथ लगावत चंडी ॥११५॥
मुंड महा रन मधि हनिओ फिर कै बर चंडि तबै इह कीनो ॥
मारि बिदार दई सभ सैण सु चंडिका चंड सो आहव कीनो ॥
लै बरछी कर मै अरि को सिर कै बरु मारि जुदा करि दीनो ॥
लै के महेस त्रिसूल गनेस को रुंड कीओ जनु मुंड बिहीनो ॥११६॥
इति स्री मारकंडे पुराने स्री चंडी चरित्र चंडमुंड बधहि चत्रथ धयाइ ॥४॥
सोरठा ॥
घाइल घूमत कोटि जाइ पुकारे सुंभ पै ॥
मारे देवी घोटि सुभट कटक के बिकट अति ॥११७॥

दोहरा ॥

राज गात के बाति इह कही जु ताही ठउर ॥
मरिहो जीअति न छाडि हो कहिओ सति नहि अउर ॥११८॥
तुंड सुंभ के चंडिका चढि बोली इह भाइ ॥
मानो आपनी म्रित को लीनो असुर बुलाइ ॥११९॥
सुंभ निसुंभ सु दुहूं मिल बैठि मंत्र तब कीन ॥
सैना सकल बुलाइ कै सुभट बीर चुन लीन ॥१२०॥
रकतबीज को भेजीए मंत्रन कही बिचार ॥
पाथर जिउ गिरि डार के चंडहि हनै हकारि ॥१२१॥
सोरठा ॥
भेजो कोऊ दूत ग्रह ते लिआवै ताहि को ॥
जीतिओ जिनि पुरहूत भुजबलि जा के अमित है ॥१२२॥

दोहरा ॥

स्रोणत बिंद पै दैत इकु गइओ करी अरदासि ॥
राज बुलावत सभा मै बेग चलो तिह पासि ॥१२३॥
रकत बीज न्रिप सुंभ को कीनो आनि प्रनाम ॥
असुर सभा मधि भाउ करि कहिओ करहु मम काम ॥१२४॥
स्वैया ॥
स्रउणत बिंद को सुंभ निसुंभ बुलाइ बैठाइ कै आदरु कीनो ॥
दै सिरताज बडे गजराज सु बाज दए रिझवाइ कै लीनो ॥
पान लै दैत कही इह चंड को रुंड करो अब मुंड बिहीनो ॥
ऐसे कहिओ तिन मधि सभा न्रिप रीझ कै मेघ अडंबर दीनो ॥१२५॥
स्रोणत बिंद को सुंभ निसुंभ कहिओ तुम जाहु महा दलु लै कै ॥
छार करो गरूए गिर राजहि चंडि पचारि हनो बलु कै कै ॥
कानन मै न्रिप की सुनी बात रिसात चलिओ चड़ि उपर गै कै ॥
मानो प्रतछ होइ अंतिक दंति को लै कै चलिओ रनि हेत जु छै कै ॥१२६॥
बीज रकत्र सु बंब बजाइ कै आगै कीए गज बाज रथईआ ॥
एक ते एक महा बलि दानव मेर को पाइन साथ मथईआ ॥

देखि तिने सुभ अंग सु दीरघ कउच सजे कटि बाधि भथईआ ॥
लीने कमानन बान क्रिपान समान कै साथ लए जो सथईआ ॥१२७॥

दोहरा ॥

रकत बीज दल साज कै उतरे तटि गिरि राज ॥
स्रवणि कुलाहल सुनि सिवा करिओ जुध को साज ॥१२८॥
सोरठा ॥
हुइ सिंघहि असवार गाज गाज कै चंडिका ॥
चली प्रबल असि धारि रकति बीज के बध नमित ॥१२९॥
स्वैया ॥
आवत देख के चंडि प्रचंड को स्रोणतबिंद महा हरखिओ है ॥
आगे ह्वै सत्रु धसै रन मधि सु क्रुध के जुधहि को सरखिओ है ॥
लै उमडिओ दलु बादलु सो कवि नै जसु इआ छबि को परखिओ है ॥
तीर चलै इम बीरन के बहु मेघ मनो बलु कै बरखिओ है ॥१३०॥
बीरन के कर ते छुटि तीर सरीरन चीर के पारि पराने ॥
तोर सरासन फोर कै कउचन मीनन के रिपु जिउ थहराने ॥
घाउ लगे तन चंडि अनेक सु स्रउण चलिओ बहि कै सरताने ॥
मानहु फारि पहार हूं को सुत तछक के निकसे कर बाने ॥१३१॥
बीरन के कर ते छुटि तीर सु चंडिका सिंघन जिउ भभकारी ॥
लै करि बान कमान क्रिपान गदा गहि चक्र छुरी अउ कटारी ॥
काट कै दामन छेद कै भेद कै सिंधुर की करी भिंन अंबारी ॥
मानहु आग लगाइ हनू गड़ लंक अवास की डारी अटारी ॥१३२॥
तोर कै मोर कै दैतन के मुख घोर के चंडि महा असि लीनो ॥
जोर कै कोर कै ठोर कै बीर सु राछस को हति कै तिह दीनो ॥
खोर कै तोर कै बोर कै दानव लै तिन के करे हाड चबीनो ॥
स्रउण को पान करिओ जिउ दवा हरि सागर को जल जिउ रिखि पीनो ॥१३३॥
चंडि प्रचंड कुवंड करं गहि जुध करिओ न गने भट आने ॥
मारि दई सभ दैत चमूं तिह स्रउणत जंबुक ग्रिझ अघाने ॥
भाल भइआनक देखि भवानी को दानव इउ रन छाडि पराने ॥
पउन के गउन के तेज प्रताप ते पीपर के जिउ पात उडाने ॥१३४॥
आहव मै खिझ कै बर चंड करं धर कै हरि पै अरि मारे ॥
एकन तीरन चक्र गदा हति एकन के तन केहरि फारे ॥
है दल गै दल पैदल घाइ कै मार रथी बिरथी कर डारे ॥
सिंधुर ऐसे परे तिह ठउर जिउ भूम मै झूमि गिरे गिर भारे ॥१३५॥

दोहरा ॥

रकत बीज की चमूं सभ भागी करि तिह त्रास ॥
कहिओ दैत पुनि घेर कै करो चंडि को नास ॥१३६॥
स्वैया ॥
कानन मै सुनि कै इह बात सु बीर फिरे कर मै असि लै लै ॥
चंडि प्रचंड सो जुधु करिओ बलि कै अत ही मन क्रुधत ह्वै कै ॥
घाउ लगै तिन के तन मै इम स्रउण गिरिओ धरनी परु चुऐ कै ॥
आग लगे जिमु कानन मै तन तिउ रही बानन की धुनि ह्वै कै ॥१३७॥
आइस पाइ कै दानव को दल चंडि के सामुहे आइ अरिओ है ॥
ढार अउ साग क्रिपाननि लै कर मै बर बीरन जुध करिओ है ॥
फेर फिरे नहि आहव ते मन महि तिह धीरज गाढो धरिओ है ॥
रोक लई चहूं ओर ते चंडि सु भान मनो परबेख परिओ है ॥१३८॥
कोप कै चंडि प्रचंड कुवंड महा बल कै बलवंड संभारिओ ॥
दामिनि जिउ घन से दल पैठि कै कै पुरजे पुरजे दलु मारिओ ॥

बाननि साथ बिदार दए अरि ता छबि को कबि भाउ बिचारिओ ॥
सूरज की किरने सरमासहि रेन अनेक तहा करि डारिओ ॥१३९॥
चंडि चमूं बहु दैतन की हति फेरि प्रचंड कुवंड संभारिओ ॥
बानन सो दल फोर दइओ बल कै बर सिंघ महा भभकारिओ ॥
मार दए सिरदार बडे धरि स्रउण बहाइ बडो रन पारिओ ॥
एक के सीस दइओ धनु यौ जनु कोप कै गाज ने मंडप मारिओ ॥१४०॥

दोहरा ॥

चंडि चमूं सभ दैत की ऐसे दई संघारि ॥
पउन पूत जिउ लंक को डारिओ बाग उखारि ॥१४१॥
स्वैया ॥
गाज कै चंडि महाबलि मेघ सी बूंदन जिउ अरि पै सर डारे ॥
दामिनि सो खग लै करि मै बहु बीर अधं धर कै धरि मारे ॥
घाइल घूम परे तिह इउ उपमा मन मै कवि यौ अनुसारे ॥
स्रउन प्रवाह मनो सरता तिह मधि धसी करि लोथ करारे ॥१४२॥
ऐसे परे धरनी पर बीर सु कै कै दुखंड जु चंडिहि डारे ॥
लोथन उपर लोथ गिरी बहि स्रउण चलिओ जनु कोट पनारे ॥
लै करि बियाल सो बियाल बजावत सो उपमा कवि यौ मनि धारे ॥
मानो महा प्रलए बहे पउन सो आपसि मै भिर है गिरि भारे ॥१४३॥
लै कर मै असि दारुन काम करे रन मै अरि सो अरिणी है ॥
सूर हने बलि कै बलुवान सु स्रउन चलिओ बहि बैतरनी है ॥
बाह कटी अध बीच ते सुंड सी सो उपमा कवि ने बरनी है ॥
आपसि मै लर कै सु मनो गिरि ते गिरी सरप की दुइ घरनी है ॥१४४॥

दोहरा ॥

सकल प्रबल दल दैत को चंडी दइओ भजाइ ॥
पाप ताप हरि जाप ते जैसे जात पराइ ॥१४५॥
स्वैया ॥
भानु ते जिउ तम पउन ते जिउ घनु मोर ते जिउ फनि तिउ सुकचाने ॥
सूर ते कातुरु कूर ते चातुरु सिंघ ते सातुर एणि डराने ॥
सूम ते जिउ जसु बिओग ते जिउ रसु पूत कपूत ते जिउ बंसु हाने ॥
धरम जिउ क्रुध ते भरम सुबुध ते चंड के जुध ते दैत पराने ॥१४६॥
फेर फिरै सभ जुध के कारन लै करवान क्रुध हुइ धाए ॥
एक लै बान कमानन तान कै तूरन तेज तुरंग तुराए ॥
धूरि उडी खुर पूरन ते पथ ऊरध हुइ रवि मंडल छाए ॥
मानहु फेर रचे बिधि लोक धरा खट आठ अकास बनाए ॥१४७॥
चंड प्रचंड कुवंड लै बाननि दैतन के तन तूलि जिउ तूंबे ॥
मार गइंद दए करवार लै दानव मान गइओ उड पूंबे ॥
बीरन के सिर की सित पाग चली बहि स्रोनत ऊपर खूंबे ॥
मानहु सारसुती के प्रवाह मै सूरन के जस कै उठे बूंबे ॥१४८॥
देतन साथ गदा गहि हाथि सु क्रुध ह्वै जुधु निसंग करिओ है ॥
पानि क्रिपान लए बलवान सु मार तबै दल छार करिओ है ॥
पाग समेत गिरिओ सिर एक को भाउ इहे कबि ता को धरिओ है ॥
पूरनि पुंन पए नभ ते सु मनो भुअ टूट नछत्र परिओ है ॥१४९॥
बारिद बारन जिउ निरवारि महा बल धारि तबे इह कीआ ॥
पानि लै बान कमान को तानि संघार सनेह ते स्रउनत पीआ ॥
एक गए कुमलाइ पराइ कै एकन को धरकिओ तनि हीआ ॥
चंड के बान किधो कर भानहि देखि कै दैत गई दुति दीआ ॥१५०॥
लै कर मै असि कोप भई अति धार महा बल को रन पारिओ ॥

दउर कै ठउर हते बहु दानव एक गइंद्र बडो रनि मारिओ ॥
कउतकि ता छबि को रन पेखि तबै कबि इउ मन मधि बिचारिओ ॥
सागर बाधन के समए नल मानो पहार उखार के डारिओ ॥१५१॥

दोहरा ॥

मार जबै सैना लई तबै दैत इह कीन ॥
ससत्र धार करि चंडि के बधिबे को मन दीन ॥१५२॥
स्वैया ॥
बाहनि सिंघ भइआनक रूप लखिओ सभ दैत महा डर पाइओ ॥
संख लीए करि चक्र अउ बक्र सरासन पत्र बचित्र बनाइओ ॥
धाइ भुजा बल आपन ह्वै हम सो तिन यौ अति जुधु मचाइओ ॥
क्रोध कै स्रउणत बिंद कहै रनि इआही ते चंडिका नाम कहाइओ ॥१५३॥
मारि लइओ दलि अउर भजिओ तब कोप के आपन ही सु भिरिओ है ॥
चंडि प्रचंडि सो जुधु करिओ असि हाथि छुटिओ मन नाहि गिरिओ है ॥
लै के कुवंड करं बल धार कै स्रोन समूह मै ऐसे तरिओ है ॥
देव अदेव समुंद्र मथिओ मानो मेर को मधि धरिओ सु फिरिओ है ॥१५४॥
क्रुध कै जुध के दैत बली नद स्रोन को तैर के पार पधारिओ ॥
लै करवार अउ ढार संभार कै सिंघ को दउर कै जाइ हकारिओ ॥
आवत पेख कै चंडि कुवंड ते बान लगिओ तन मूरछ पारिओ ॥
राम के भ्रातन जिउ हनूमान को सैल समेत धरा पर डारिओ ॥१५५॥
फेर उठिओ करि लै करवार को चंड प्रचंड सिउ जुध करिओ है ॥
घाइल कै तन केहर ते बहि स्रउन समूह धरानि परिओ है ॥
सो उपमा कबि ने बरनी मन की हरनी तिह नाउ धरिओ है ॥
गेरू नगं पर कै बरखा धरनी परि मानहु रंग ढरिओ है ॥१५६॥
स्रोणत बिंदु सो चंडि प्रचंड सु जुध करिओ रन मध रुहेली ॥
पै दल मै दल मीज दइओ तिल ते जिमु तेल निकारत तेली ॥
स्रोउण परिओ धरनी पर च्वै रंगरेज की रेनी जिउ फूट कै फैली ॥
घाउ लसै तन दैत के यौ जनु दीपक मधि फनूस की थैली ॥१५७॥
स्रउणत बिंद को स्रउण परिओ धरि स्रउनत बिंद अनेक भए है ॥
चंडि प्रचंड कुवंडि संभारि के बानन साथि संघार दए है ॥
स्रउन समूह समाइ गए बहुरो सु भए हति फेरि लए है ॥
बारिद धार परै धरनी मानो बिंबर ह्वै मिट कै जु गए है ॥१५८॥
जेतक स्रउन की बूंद गिरै रनि तेतक स्रउनत बिंद ह्वै आई ॥
मार ही मार पुकारि हकार कै चंडि प्रचंडि के सामुहि धाई ॥
पेखि कै कौतुक ता छिन मै कवि ने मन मै उपमा ठहराई ॥
मानहु सीस महल के बीच सु मूरति एक अनेक की झाई ॥१५९॥
स्रउनत बिंद अनेक उठे रनि क्रुध कै जुध को फेर जुटै है ॥
चंडि प्रचंडि कमान ते बान सु भानु की अंस समान छुटै है ॥
मारि बिदार दए सु भए फिरि लै मुंगरा जिमु धान कुटै है ॥
चंड दए सिर खंड जुदे करि बिलन ते जन बिल तुटै है ॥१६०॥
स्रउनत बिंद अनेक भए असि लै करि चंडि सु ऐसे उठे है ॥
बूंदन ते उठि कै बहु दानव बानन बारिद जानु वुठे है ॥
फेरि कुवंडि प्रचंडि संभार कै बान प्रहार संघार सुटे है ॥
ऐसे उठे फिरि स्रउन ते दैत सु मानहु सीत ते रोम उठे है ॥१६१॥
स्रउनत बिंद भए इकठे बर चंडि प्रचंड के घेरि लइओ है ॥
चंडि अउ सिंघ दुहूं मिल कै सब दैतन को दल मार दइओ है ॥
फेरि उठे धुनि के करि कै सुनि कै मुनि को छुटि धिआनु गइओ है ॥
भूल गए सुर के असवान गुमान न स्रउनत बिंद गइओ है ॥१६२॥

दोहरा ॥

रकतबीज सो चंडिका इउ कीनो बर जुधु ॥
अगनत भए दानव तबै कछु न बसाइओ क्रुध ॥१६३॥
स्वैया ॥
पेखि दसो दिस ते बहु दानव चंडि प्रचंड तची अखीआ ॥
तब लै के क्रिपान जु काट दए अरि फूल गुलाब की जिउ पखीआ ॥
स्रउन की छीट परी तन चंडि के सो उपमा कवि ने लखीआ ॥
जनु कंचन मंदिर मै जरीआ जरि लाल मनी जु बना रखीआ ॥१६४॥
क्रुध कै जुध करिओ बहु चंडि ने एतो करिओ मधु सो अबिनासी ॥
दैतन के बध कारन को निज भाल ते जुआल की लाट निकासी ॥
काली प्रतछ भई तिह ते रनि फैल रही भय भीरु प्रभा सी ॥
मानहु स्रिंग सुमेर को फोरि कै धार परी धरि पै जमुना सी ॥१६५॥
मेरु हलिओ दहलिओ सुरलोकु दसो दिस भूधर भाजत भारी ॥
चालि परिओ तिह चउदहि लोक मै ब्रहम भइओ मन मै भ्रम भारी ॥
धिआन रहिओ न जटी सु फटी धरि यौ बलि कै रन मै किलकारी ॥
दैतन के बधि कारन को करि काल सी काली क्रिपान संभारी ॥१६६॥

दोहरा ॥

चंडी काली दुहूं मिलि कीनो इहै बिचार ॥
हउ हनि हो तू स्रउन पी अरि दलि डारहि मारि ॥१६७॥
स्वैया ॥
काली अउ केहरि संगि लै चंडि सु घेरे सबै बन जैसे दवा पै ॥
चंडि के बानन तेज प्रभाव ते दैत जरै जैसे ईट अवा पै ॥
कालिका स्रउन पीओ तिन को कवि ने मन मै लीयो भाउ भवा पै ॥
मानहु सिंधु के नीर सबै मिलि धाइ कै जाइ परो है तवा पै ॥१६८॥
चंडि हने अरु कालिका कोप कै स्रउनत बिंदन सो इह कीनो ॥
खग संभार हकार तबै किलकार बिदार सभै दलु दीनो ॥
आमिख स्रोन अचिओ बहु कालिका ता छबि मै कवि इउ मनि चीनो ॥
मानो छुधातरु हुइ कै मनुछ सु सालन लासहि सो बहु पीनो ॥१६९॥
जुध रकत्र बीज करियो धरनी पर सो सुर देखत सारे ॥
जेतक स्रौन की बूंद गिरै उठि तेतक रूप अनेकहि धारे ॥
जुगनि आनि फिरी चहूं ओर ते सीस जटा करि खपर भारे ॥
स्रोनत बूंद परै अचवै सभ खग लै चंड प्रचंड संघारे ॥१७०॥
काली अउ चंडि कुवंड संभार कै दैत सो जुध निसंग सजिओ है ॥
मार महा रन मध भई पहरेक लउ सार सो सार बजिओ है ॥
स्रउनत बिंद गिरिओ धरनी पर इउ असि सो अरि सीस भजिओ है ॥
मानो अतीत करियो चित के धनवंत सभै निज माल तजिओ है ॥१७१॥
सोरठा ॥
चंडी दइओ बिदार स्रउन पान काली करिओ ॥
छिन मै डारिओ मार स्रउनत बिंद दानव महा ॥१७२॥

◀ *इति स्री मारकंडे पुराने स्री चंडी चरित्र उकति बिलास रकत बीज बधहि नाम पंचमो धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥5॥*

स्वैया ॥
तुछ बचे भज कै रन तिआग कै सुंभ निसुंभ पै जाइ पुकारे ॥
स्रउनत बीज हनिओ दुह ने मिलि अउर महा भट मार बिदारे ॥
इउ सुनि कै उनि के मुख ते तब बोलि उठिओ करि खग संभारे ॥
इउ हनि हो बर चंडि प्रचंडि अजा बन मै जिम सिंघ पछारे ॥१७३॥

दोहरा ॥

सकल कटक के भटन को दइओ जुध को साज ॥
ससत्र पहर कै इउ कहिओ हनिहो चंडहि आज ॥१७४॥
स्वैया ॥
कोप कै सुंभ निसुंभ चढे धुनि दुंदभि की दसहूं दिस धाई ॥
पाइक अग्र भए मधि बाज रथी रथ साज कै पाति बनाई ॥
माते मतंग के पुंजन ऊपरि सुंदर तुंग धुजा फहराई ॥
सक्र सो जुध के हेत मनो धरि छाडि सपछ उडे गिरराई ॥१७५॥

दोहरा ॥

सुंभ निसुंभ बनाइ दलु घेरि लइओ गिरराज ॥
कवच अंग कसि कोप करि उठे सिंघ जिउ गाज ॥१७६॥
स्वैया ॥
सुंभ निसुंभ सु बीर बली मनि कोप भरे रन भूमहि आए ॥
देखन मै सुभ अंग उतंग तुरा करि तेज धरा पर धाए ॥
धूर उडी तब ता छिन मै तिह के कनका पग सो लपटाए ॥
ठउर अडीठ के जै करबे कहि तेजि मनो मन सीखन आए ॥१७७॥

दोहरा ॥

चंडि कालिका स्रवन मै तनिक भनक सुनि लीन ॥
उतरि स्रिंग गिर राज ते महा कुलाहलि कीन ॥१७८॥
स्वैया ॥
आवत देखि कै चंड प्रचंडि को कोप करिओ मन मै अति दानो ॥
नास करो इह को छिन मै करि बान संभार बडो धनु तानो ॥
काली के बक्र बिलोकन ते सु उठिओ मन मै भ्रम जिउ जम जानो ॥
बान समूह चलाइ दए किलकार उठिओ जु प्रलै घन मानो ॥१७९॥
बैरन के घन से दल पैठि लइओ करि मै धनु साइकु ऐसे ॥
सिआम पहार से दैत हने तम जैसे हरे रवि की किरनै से ॥
भाज गई धुजनी डरि कै कबि कोऊ कहै तिह की छबि कैसे ॥
भीम को स्रउन भरिओ मुख देखि कै छाडि चले रन कउरउ जैसे ॥१८०॥

कबितु ॥

आगिआ पाइ सुंभ की सु महाबीर धीर जोधे आए चंडि उपर सु क्रोध कै बनी ठनी ॥
चंडिका लै बान अउ कमान काली किरपान छिन मधि कै कै बल सुंभ की हनी अनी ॥
डरत जि खेत महा प्रेत कीने बानन सो बिचल बिथर ऐसे भाजगी अनी किनी ॥
जैसे बारूथल मै सबूह बहे पउन हूं के धूर उडि चले हुइ के कोटिक कनी कनी ॥१८१॥
स्वैया ॥
खग लै काली अउ चंडी कुवंडि बिलोक कै दानव इउ दबटे है ॥
केतक चाब गई मुखि कालिका केतिन के सिर चंडि कटे है ॥
स्रउनत सिंधु भइओ धर मै रन छाड गए इक दैत फटे है ॥
सुंभ पै जाइ कही तिन इउ बहु बीर महा तिह ठउर लटे है ॥१८२॥

दोहरा ॥

देखि भइआनक जुध को कीनो बिसनु बिचार ॥
सकति सहाइत के नमित भेजी रनहि मंझार ॥१८३॥
स्वैया ॥
आइस पाइ सभै सकती चलि कै तहा चंडि प्रचंड पै आई ॥
देवी कहिओ तिन को कर आदरु आई भले जनु बोलि पठाई ॥
ता छबि की उपमा अति ही कवि ने अपने मन मै लखि पाई ॥

मानहु सावन मास नदी चलि कै जल रासि मै आनि समाई ॥१८४॥
देखि महा दल देवन को बर बीर सु सामुहे जुध को धाए ॥
बाननि साथि हने बलु कै रन मै बहु आवत बीर गिराए ॥
दाड़न साथि चबाइ गई कलि अउर गहे चहूं ओरि बगाए ॥
रावन सो रिस कै रन मै पति भालक जिउ गिरराज चलाए ॥१८५॥
फेर लै पानि क्रिपान संभार कै दैतन सो बहु जुध करिओ है ॥
मार बिदार संघार दए बहु भूमि परे भट स्रउन झरिओ है ॥
गूद बहिओ अरि सीसन ते कवि ने तिह को इह भाउ धरिओ है ॥
मानो पहार के स्रिंगहु ते धरनी पर आनि तुसार परिओ है ॥१८६॥

दोहरा ॥

भाग गई धुजनी सभै रहिओ न कछू उपाउ ॥
सुंभ निसुंभहि सो कहिओ दल लै तुम हूं जाउ ॥१८७॥
स्वैया ॥
मान कै सुंभ को बोल निसुंभु चलिओ दल साजि महा बलि ऐसे ॥
भारथ जिउ रन मै रिसि पारथि क्रुध कै जुध करिओ करनै से ॥
चंडि के बान लगे बहु दैत कउ फोरि कै पार भए तन कैसे ॥
सावन मास क्रिसान के खेति उगे मनो धान के अंकुर जैसे ॥१८८॥
बानन साथ गिराइ दए बहुरो असि लै करि इउ रन कीनो ॥
मारि बिदारि दई धुजनी सभ दानव को बलु हुइ गइओ छीनो ॥
स्रउन समूहि परिओ तिह ठउर तहा कवि ने जसु इउ मन चीनो ॥
सात हूं सागर को रचि कै बिधि आठवो सिंधु करिओ है नवीनो ॥१८९॥
लै कर मै असि चंडि प्रचंड सु क्रुध भई रन मध लरी है ॥
फोर दई चतुरंग चमूं बलु कै बहु कालिका मारि धरी है ॥
रूप दिखाइ भइआनक इउ असुरंपति भ्रात की क्राति हरी है ॥
स्रउन सो लाल भई धरनी सु मनो अंग सूही की सारी करी है ॥१९०॥
दैत संभारि सभै अपनो बलि चंडि सो जुध को फेरि अरे है ॥
आयुध धारि लरै रन इउ जनु दीपक मधि पतंग परे है ॥
चंड प्रचंड कुवंड संभारि सभै रन मधि दु टूक करे है ॥
मानो महा बन मै बर ब्रिछन काटि कै बाढी जुदे कै धरे है ॥१९१॥
मार लइओ दलु अउर भजिओ मन मै तब कोप निसुंभ करिओ है ॥
चंडि के सामुहे आनि अरिओ अति जुधु करिओ पगु नाहि टरिओ है ॥
चंडि के बान लगिओ मुख दैत के स्रउन समूह धरानि परिओ है ॥
मानहु राहु ग्रसिओ नभि भानु सु स्रउनत को अति बउन करिओ है ॥१९२॥
साग संभारि करं बलु धार कै चंडि दई रिपु भाल मै ऐसे ॥
जोर कै फोर गई सिर त्रान को पार भई पट फारि अनैसे ॥
स्रउन की धार चली पथ ऊरध सो उपमा सु भई कहु कैसे ॥
मानो महेस के तीसरे नैन की जोत उदोत भई खुल तैसे ॥१९३॥
दैत निकास कै साग वहै बलि कै तब चंडि प्रचंड के दीनी ॥
जाइ लगी तिह के मुख मै बहि स्रउन परिओ अति ही छबि कीनी ॥
इउ उपमा उपजी मन मै कबि ने इह भाति सोई कहि दीनी ॥
मानहु सिंगल दीप की नारि गरे मै तंबोर की पीक नवीनी ॥१९४॥
जुधु निसुंभ करिओ अति ही जसु इआ छबि को कबि को बरनै ॥
नहि भीखम द्रोणि क्रिपा अरु द्रोणज भीम न अरजन अउ करनै ॥
बहु दानव के तन स्रउन की धार छुटी सु लगे सर के फरनै ॥
जनु राति कै दूरि बिभास दसो दिस फैलि चली रवि की किरनै ॥१९५॥
चंडि लै चक्र धसी रन मै रिसि क्रुध कीओ बहु दानव मारे ॥
फेरि गदा गहि कै लहि कै चहि कै रिपु सैन हती ललकारे ॥
लै कर खग अदग महा सिर दैतन के बहु भू पर झारे ॥
राम के जुध समे हनूमानि जुआन मनो गरूए गिर डारे ॥१९६॥

दानव एक बडो बलवान क्रिपान लै पानि हकार कै धाइओ ॥
काढ कै खग सु चंडिका मिआन ते ता तन बीच भले बरि लाइओ ॥
टूट परिओ सिर वा धरि ते जसु इआ छबि को कवि के मनि आइओ ॥
ऊच धराधर ऊपर ते गिरिओ काक कराल भुजंगम खाइओ ॥१९७॥
बीर निसुंभ को दैत बली इक प्रेरि तुरंग गइओ रनि सामुहि ॥
देखत धीरज नाहि रहै अबि को समरथ है बिक्रम जा महि ॥
चंडि लै पानि क्रिपान हने अरि फेरि दई सिर दानव ता महि ॥
मुंडहि तुंडहि रुंडहि चीरि पलान किकान धसी बसुधा महि ॥१९८॥
इउ जब दैत हतिओ बर चंडि सु अउर चलिओ रन मधि पचारे ॥
केहरि के समुहाइ रिसाइ कै धाइ कै घाइ दु तीनक झारे ॥
चंडि लई करवार संभार हकार कै सीस दई बलु धारे ॥
जाइ परिओ सिर दूर पराइ जिउ टूटत अंबु बयार के मारे ॥१९९॥
जानि निदान को जुधु बनिओ रनि दैत सबूह सबै उठि धाए ॥
सार सो सार की मार मची तब काइर छाड कै खेत पराए ॥
चंडि के खग गदा लगि दानव रंचक रंचक हुइ तन आए ॥
मूंगर लाइ हलाइ मनो तरु काछी ने पेड ते तूत गिराए ॥२००॥
पेखि चमूं बहु दैतन की पुनि चंडिका आपने ससत्र संभारे ॥
बीरन के तन चीरि पचीर से दैत हकार पछारि संघारे ॥
घाउ लगे तिन को रन भूमि मै टूट परे धर ते सिर निआरे ॥
जुध समै सुत भान मनो ससि के सभ टूक जुदे कर डारे ॥२०१॥
चंडि प्रचंड तबै बल धारि संभारि लई करवार करी करि ॥
कोप दईअ निसुंभ के सीसि बही इह भात रही तरवा तरि ॥
कउन सराहि करै कहि ता छिन सो बिब होइ परै धरनी पर ॥
मानहु सार की तार लै हाथि चलाई है साबुन को सबुनीगर ॥२०२॥

◀ *इति स्री मारकंडे पुराने चंडी चरित्र उकति बिलास निसुंभ बधहि खसटमो धिआइ समापतम ॥6॥*

दोहरा ॥

जब निसुंभ रनि मारिओ देवी इह परकार ॥
भाजि दैत इक सुंभ पै गइओ तुरंगम डारि ॥२०३॥
आनि सुंभ पै तिन कही सकल जुध की बात ॥
तब भाजे दानव सभै मारि लइओ तुअ भ्रात ॥२०४॥
स्वैया ॥
सुंभ निसुंभ हनिओ सुनि कै बर बीरन के चिति छोभ समाइओ ॥
साजि चड़िओ गज बाज समाज कै दानव पुंज लीए रन आइओ ॥
भूमि भइआनक लोथ परी लखि स्रउन समूह महा बिसमाइओ ॥
मानहु सारसुती उमडी जलु सागर के मिलिबे कहु धाइओ ॥२०५॥
चंड प्रचंडि सु केहरि कालिका अउ सकती मिलि जुध करिओ है ॥
दानव सैन हती इनहूं सभ इउ कहि कै मनि कोप भरिओ है ॥
बंधु कबंध परिओ अवलोक कै सोक कै पाइ न आगै धरिओ है ॥
धाइ सकिओ न भइओ भइ भीतह चीतह मानहु लंगु परिओ है ॥२०६॥
फेरि कहिओ दल को जब सुंभ सु मानि चले तब दैत घने ॥
गजराज सु बाजन के असवार रथी रथु पाइक कउन गनै ॥
तहा घेर लई चहूं ओर ते चंडि महा तन के तन दीह बनै ॥
मनो भानु को छाइ लइओ उमडै घन घोर घमंड घटानि सनै ॥२०७॥

दोहरा ॥

चहूं ओरि घेरो परिओ तबै चंड इह कीन ॥

काली सो हसि तिन कही नैन सैन करि दीन ॥२०८॥

कबितु ॥

केते मारि डारे अउ केतक चबाइ डारे केतक बगाइ डारे काली कोप तब ही ॥
बाज गज भारे ते तो नखन सो फारि डारे ऐसे रन भैकर न भइओ आगै कब ही ॥
भागे बहु बीर काहूं सुध न रही सरीर हाल चाल परी मरे आपस मै दब ही ॥
पेखि सुर राइ मनि हरख बढाइ सुर पुंजन बुलाइ करै जैजैकार सब ही ॥२०९॥
क्रोधमान भइओ कहिओ राजा सभ दैतन को ऐसो जुधु कीनो काली डारियो बीर मार कै ॥
बल को संभारि करि लीनी करवार ढार पैठो रन मधि मारु मारु इउ उचार कै ॥
साथ भए सुंभ के सु महा बीर धीर जोधे लीने हथिआर आप आपने संभार कै ॥
ऐसे चले दानो रवि मंडल छपानो मानो सलभ उडानो पुंज पंखन सु धार कै ॥२१०॥
स्वैया ॥
दानव सैन लखै बलवान सु बाहनि चंडि प्रचंड भ्रमानो ॥
चक्र अलात की बात बघूरन छत्र नही सम अउ खरसानो ॥
तारनि माहि सु ऐसो फिरिओ जन भउर नही सरताहि बखानो ॥
अउर नही उपमा उपजै सु दुहूं रुख केहरि के मुख मानो ॥२११॥
जुधु महा असुरंगनि साथि भइओ तब चंडि प्रचंडहि भारी ॥
सैन अपार हकारि सुधारि बिदारि संघारि दई रनि कारी ॥
खेत भइओ तहा चार सउ कोस लउ सो उपमा कवि देखि बिचारी ॥
पूरन एक घरी न परी जि गिरे धरि पै थर जिउ पतझारी ॥२१२॥
मारि चमूं चतुरंग लई तब लीनो है सुंभ चमुंड को आगा ॥
चाल परिओ अवनी सिगरी हर जू हरि आसन ते उठि भागा ॥
सूख गइओ त्रस कै हरि हारि सु संकति अंक महा भइओ जागा ॥
लाग रहिओ लपटाइ गरे मधि मानहु मुंड की माल को तागा ॥२१३॥
चंडि के सामुहि आइ कै सुंभ कहिओ मुखि सो इह मै सभ जानी ॥
काली समेत सभै सकती मिलि दीनो खपाइ सभै दलु बानी ॥
चंडि कहिओ मुख ते उन को तेऊ ता छिन गउर के मधि समानी ॥
जिउ सरता के प्रवाह के बीच मिले बरखा बहु बूंदन पानी ॥२१४॥
कै बलि चंडि महा रन मधि सु लै जमदाड़ की ता परि लाई ॥
बैठ गई अरि के उर मै तिह स्रउनत जुगनि पूरि अघाई ॥
दीरघ जुध बिलोक कै बुधि कवीस्वर के मन मै इह आई ॥
लोथ पै लोथ गई पर इउ सु मनो सुर लोग की सीढी बनाई ॥२१५॥
सुंभ चमूं संग चंडिका क्रुध कै जुध अनेकनि वारि मचिओ है ॥
जंबुक जुगनि ग्रिझ मजूर रकत्र की कीच मै ईस नचिओ है ॥
लुथ पै लुथ सु भीतै भई सित गूद अउ मेद लै ताहि गचिओ है ॥
भउन रंगीन बनाइ मनो करिमाविसु चित्र बचित्र रचिओ है ॥२१६॥
स्वैया ॥
दुंद सु जुध भइओ रन मै उत सुंभ इतै बर चंडि संभारी ॥
घाइ अनेक भए दुहूं कै तनि पउरख गयो सभ दैत को हारी ॥
हीन भई बल ते भुज कापत सो उपमा कवि ऐसि बिचारी ॥
मानहु गारड़ू के बल ते लई पंच मुखी जुग सापनि कारी ॥२१७॥
कोप भई बर चंडि महा बहु जुधु करिओ रन मै बल धारी ॥
लै कै क्रिपान महा बलवान पचार कै सुंभ के ऊपर झारी ॥
सार सो सार की सार बजी झनकार उठी तिह ते चिनगारी ॥
मानहु भादव मास की रैनि लसै पटबीजन की चमकारी ॥२१८॥
घाइन ते बहु स्रउन परिओ बल छीन भइओ न्रिप सुंभ को कैसे ॥
जोति घटी मुख की तन की मनो पूरन ते परिवा ससि जैसे ॥
चंडि लइओ करि सुंभ उठाइ कहिओ कवि ने मुखि ते जसु ऐसे ॥
रछक गोधन के हित कान्रह उठाइ लइओ गिरि गोधनु जैसे ॥२१९॥

दोहरा ॥

कर ते गिरि धरनी परिओ धरि ते गइओ अकासि ॥
सुंभ संघारन के नमित गई चंडि तिह पास ॥२२०॥
स्वैया ॥
बीच तबै नभ मंडल चंडिका जुध करिओ जिम आगे न होऊ ॥
सूरज चंदु निछत्र सचीपति अउर सभै सुर पेखत सोऊ ॥
खैच कै मूंड दई करवार की एक को मारि कीए तब दोऊ ॥
सुंभ दु टूक ह्वै भूमि परिओ तन जिउ कलवत्र सो चीरत कोऊ ॥२२१॥

दोहरा ॥

सुंभ मार कै चंडिका उठी सु संख बजाइ ॥
तब धुनि घंटा की करी महा मोद मनि पाइ ॥२२२॥
दैत राज छिन मै हनिओ देवी इह परकार ॥
असट करन महि ससत्र गहि सैना दई संघार ॥२२३॥
स्वैया ॥
चंडि के कोप न ओप रही रन मै असि धारि भई समुहाई ॥
मारि बिदारि संघारि दए तब भूप बिना करै कउन लराई ॥
काप उठे अरि त्रास हीए धरि छाडि दई सभ पउरखताई ॥
दैत चलै तजि खेत इउ जैसे बडे गुन लोभ ते जात पराही ॥२२४॥

◄ *इति स्री मारकंडे पुराणे चंडी चरित्रे सुंभ बधहि नाम सपतमो धिआय संपूरनं ॥7॥*

स्वैया ॥
भाजि गइओ मघवा जिन के डर ब्रहम ते आदि सभै भै भीते ॥
तेई वै दैत पराइ गए रनि हार निहार भए बलु रीते ॥
जंबुक ग्रिझ निरास भए बन बास गए जुग जामन बीते ॥
संत सहाइ सदा जग माइ सु सुंभ निसुंभ बडे अरि जीते ॥२२५॥
देव सभै मिलि कै इक ठउर सु अछत कुंकम चंदन लीनो ॥
तछन लछन दै कै प्रदछन टीका सु चंडि के भाल मै दीनो ॥
ता छबि को उपज्यो तह भाव इहै कवि ने मन मै लखि लीनो ॥
मानहु चंद कै मंडल मै सुभ मंगल आनि प्रवेसहि कीनो ॥२२६॥

कबितु ॥

मिलि के सु देवन बडाई करी कालिका की एहो जग मात तै तो कटिओ बडो पापु है ॥
दैतन के मार राज दीनो तै सुरेस हूं को बडो जसु लीने जगि तेरो ई प्रतापु है ॥
देत है असीस दिज राज रिखि बारि बारि तहा ही पड़िओ है ब्रहम कउच हूं को जाप है ॥
ऐसे जसु पूर रहिओ चंडिका को तीन लोकि जैसे धार सागर मै गंगा जी को आपु है ॥२२७॥
स्वैया ॥
देहि असीस सभै सुर नारि सुधारि कै आरती दीप जगाइओ ॥
फूल सुगंध सुअछत दछन जछन जीत को गीत सु गाइओ ॥
धूप जगाइ कै संख बजाइ कै सीस निवाइ कै बैन सुनाइओ ॥
हे जग माइ सदा सुख दाइ तै सुंभ को घाइ बडो जसु पाइओ ॥२२८॥
सक्रहि साजि समाज दै चंड सु मोद महा मन माहि रई है ॥
सूर ससी नभि थाप कै तेजु दे आप तहा ते सु लोप भई है ॥
बीच अकास प्रकास बढिओ तिह की उपमा मन ते न गई है ॥
धूरि कै पूर मलीन हुतो रवि मानहु चंडिका ओप दई है ॥२२९॥

कबितु ॥

प्रथम मधु कैट मद मथन महिखासुरै मान मरदन करन तरुनि बर बंडका ॥
धूम्र द्रिग धरनधरि धूरि धानी करन चंड अरु मुंड के मुंड खंड खंडका ॥
रकत बीरज हरन रकत भच्छन करन दरन अनसुंभ रनि रार रिस मंडका ॥
संभ बलु धार संघार करवार करि सकल खलु असुर दलु जैत जै चंडिका ॥२३०॥
स्वैया ॥
देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरो ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करो ॥
अरु सिख हौ आपने ही मन को इह लालच हउ गुन तउ उचरो ॥
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरो ॥२३१॥
चंडि चरित्र कवितन मै बरनिओ सभ ही रस रुद्रमई है ॥
एक ते एक रसाल भइओ नख ते सिख लउ उपमा सु नई है ॥
कउतक हेतु करी कवि ने सतिसय की कथा इह पूरी भई है ॥
जाहि नमित पड़ै सुनि है नर सो निसचै करि ताहि दई है ॥२३२॥

दोहरा ॥

ग्रंथ सति सइआ को करिओ जा सम अवरु न कोइ ॥
जिह नमित कवि ने कहिओ सु देह चंडिका सोइ ॥२३३॥

◄ इति स्री मारकंडे पुराने स्री चंडी चरित्रे उकति बिलास देव सुरेस सहित जैकार सबद करा असटमो धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥8॥

SECTION 05: CHANDI CHARITAR II

Deeds of Chandi — Second composition · By Guru Gobind Singh Ji

ੴवाहिगुरू जी की फतह ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ चंडी चरित्र लिख्यते ॥

नराज छंद ॥

महिख दईत सूरयं ॥
बढियो सो लोह पूरयं ॥
सु देव राज जीतयं ॥
त्रिलोक राज कीतयं ॥१॥
भजे सु देवता तबै ॥
इकत्र होइ कै सबै ॥
महेसुराचलं बसे ॥
बिसेख चित मो त्रसे ॥२॥
जुगेस भेस धार कै ॥
भजे हथियार डार कै ॥
पुकार आरतं चलै ॥
बिसूर सूरमा भले ॥३॥
बरख किते तहा रहे ॥
सु दुख देह मो सहे ॥
जगत्र माति धिआइयं ॥
सु जैत पत्र पाइयं ॥४॥
प्रसंन देवता भए ॥
चरंन पूजबे धए ॥
सनंमुखान ठढीयं ॥
प्रणाम पाठ पढीयं ॥५॥

रसावल छंद ॥

तबै देव धाए ॥
सभो सीस निआए ॥
सुमन धार बरखे ॥
सबै साध हरखे ॥६॥
करी देबि अरचा ॥
ब्रहम बेद चरचा ॥
जबै पाइ लागे ॥
तबै सोग भागे ॥७॥
बिनंती सुनाई ॥
भवानी रिझाई ॥
सबै ससत्र धारी ॥
करी सिंघ सुआरी ॥८॥
करे घंट नादं ॥
धुनं निरबिखादं ॥
सुनो दईत राजं ॥
सजियो जुध साजं ॥९॥
चड़ियो राछ्सेसं ॥
रचे चार अनेसं ॥

बली चामरेवं ॥
हठी चिछुरेवं ॥१०॥
बिड़ालछ बीरं ॥
चड़े बीर धीरं ॥
बड़े इखु धारी ॥
घटा जान कारी ॥११॥

दोहरा ॥

बाणि जिते राछसनि मिलि छाडत भए अपार ॥
फूलमाल हुऐ मात उरि सोभे सभे सुधार ॥१२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जिते दानवौ बान पानी चलाए ॥
तिते देवता आपि काटे बचाए ॥
किते ढाल ढाहे किते पास पेले ॥
भरे बसत्र लोहू जनो फाग खेलै ॥१३॥
दुगा हूं कीयं खेत धुंके नगारे ॥
करं पटिसं परिघ पासी संभारे ॥
तहा गोफनै गुरज गोले संभारै ॥
हठी मार ही मार कै कै पुकारै ॥१४॥
तबे असट हाथं हथियारं संभारे ॥
सिरं दानवेंद्रान के ताकि झारे ॥
बबकियो बली सिंघ जुधं मझारं ॥
करे खंड खंडं सु जोधा अपारं ॥१५॥

तोटक छंद ॥

तब दानव रोस भरे सब ही ॥
जग मात के बाण लगै जब ही ॥
बिबिधायुध लै सु बली हरखे ॥
घन बूंदन जियो बिसखं बरखे ॥१६॥
जनु घोर कै सिआम घटा घुमडी ॥
असुरेस अनीकनि त्रयो उमिडी ॥
जग मात बिरूथनि मो धसि कै ॥
धनु साइक हाथ गहियो हसि कै ॥१७॥
रण कुंजर पुंज गिराइ दीए ॥
इक खंड अखंड दुखंड कीए ॥
सिर एकनि चोट निफोट बही ॥
तरवार हुऐ तरवार रही ॥१८॥
तन झझर हुऐ रण भूमि गिरे ॥
इक भाज चले फिर कै न फिरे ॥
इकि हाथ हथिआर लै आनि बहे ॥
लरि कै मरि कै गिरि खेति रहे ॥१९॥

नराज छंद ॥

तहा सु दैत राजयं ॥
सजे सो सरब साजयं ॥
तुरंग आप बाहीयं ॥
बधं सु मात चाहीयं ॥२०॥

तबै द्रुगा बकारि कै ॥
कमाण बाण धारि कै ॥
सु घाव चामरं कीयो ॥
उतार हसति ते दीयो ॥२१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तबै बीर कोपं बिड़ालाछ नामं ॥
सजे ससत्र देहं चलो जुध धामं ॥
सिरं सिंघ के आनि घायं प्रहारं ॥
बली सिंघ सो हाथ सो मारि डारं ॥२२॥
बिड़ालाछ मारे सु पिंगाछ धाए ॥
द्रुगा सामुहे बोल बाके सुनाए ॥
करी अभ्रि ज्यो गरज कै बाण बरखं ॥
महा सूर बीरं भरे जुध हरखं ॥२३॥
तबै देवीअं पाणि बाणं संभारं ॥
हनियो दुसट के घाइ सीसं मझारं ॥
गिरियो झूमि भूमं गए प्राण छुटं ॥
मनो मेर को सातवौ स्रिंग टुटं ॥२४॥
गिरै बीर पिंगाछ देबी संघारे ॥
चले अउरु बीरं हथिआरं उघारे ॥
तबै रोसि देबियं सरोघं चलाए ॥
बिना प्रान के जुध मधं गिराए ॥२५॥

चौपई ॥

जे जे सत्रु सामुहे आए ॥
सबै देवता मारि गिराए ॥
सैना सकल जबै हनि डारी ॥
आसुरेस कोपा अहंकारी ॥२६॥
आप जुध तब कीआ भवानी ॥
चुनि चुनि हनै पखरीआ बानी ॥
क्रोध जुआल मसतक ते बिगसी ॥
ता ते आप कालिका निकसी ॥२७॥

मधुभार छंद ॥

मुखि बमत जुआल ॥
निकसी कपालि ॥
मारे गजेस ॥
छुटे हैएस ॥२८॥
छुटंत बाण ॥
झमकत क्रिपाण ॥
सागं प्रहार ॥
खेलत धमार ॥२९॥
बाहै निसंग ॥
उठे झड़ंग ॥
तुपक तड़ाक ॥
उठत कड़ाक ॥३०॥
बरकंत माइ ॥
भभकंत घाइ ॥
जुझे जुआण ॥

नचे किकाण ॥३१॥

रूआमल छंद ॥

धाईयो असुरोंद्र तहि निज कोप ओप बढाइ ॥
संग लै चतुरंग सैना सुध ससत्र नचाइ ॥
देबि ससत्र लगै गिरै रणि रुझि जुझि जुआण ॥
पीलराज फिरे कहूं रण सुछ छुछ किकाण ॥३२॥
चीर चामर पुंज कुंजर बाज राज अनेक ॥
ससत्र असत्र सुभे कहूं सरदार सुआर अनेक ॥
तेगु तीर तुफंग तबर कुहुक बान अनंत ॥
बेधि बेधि गिरै बरछिन सूर सोभावंत ॥३३॥
ग्रिध ब्रिध उडे तहा फिकरंत सुआन स्रिंगाल ॥
मत दंति सपछ पबै कंक बंक रसाल ॥
छुद्र मीन छुरुद्रका अरु चरम कछप अनंत ॥
नक्र बक्र सु बरम सोभित स्रोण नीर दुरंत ॥३४॥
नव सूर नवका से रथी अतिरथी जानु जहाज ॥
लादि लादि मनो चले धन धीर बीर सलाज ॥
मोलु बीच फिरै चुकात दलाल खेत खतंग ॥
गाहि गाहि फिरे फवजनि झारि दिरब निखंग ॥३५॥
अंग भंग गिरे कहूं बहुरंग रंगित बसत्र ॥
चरम बरम सुभं कहूं रणं ससत्र रु असत्र ॥
मुंड तुंड धुजा पताका टूक टाक अरेक ॥
जूझ जूझ परे सबै अरि बाचियो नही एक ॥३६॥
कोप कै महिखेस दानो धाईयो तिह काल ॥
असत्र ससत्र संभार सूरो रूप कै बिकराल ॥
काल पाणि क्रिपाण लै तिह मारियो ततकाल ॥
जोति जोति बिखै मिली तज ब्रहमरंध्रि उताल ॥३७॥

दोहरा ॥

महिखासुर कह मार करि प्रफुलत भी जग माइ ॥
ता दिन ते महिखे बलै देत जगत सुख पाइ ॥३८॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे महिखासुर बधह प्रथम धिआइ संपूरनंम सतु सुभम सतु ॥1॥*

अथ धूमनैन जुध कथन ॥

कुलक छंद ॥

देव सु तब गाजीय ॥
अनहद बाजीय ॥
भई बधाई ॥
सभ सुखदाई ॥१॥३९॥
दुंदभ बाजे ॥
सभ सुर गाजे ॥
करत बडाई ॥
सुमन ब्रखाई ॥२॥४०॥
कीनी बहु अरचा ॥
जस धुनि चरचा ॥

पाइन लागे ॥
सभ दुख भागे ॥३॥४१॥
गाए जै करखा ॥
पुहपनि बरखा ॥
सीस निवाए ॥
सभ सुख पाए ॥४॥४२॥

दोहरा ॥

लोप चंडिका जू भई दै देवन को राजु ॥
बहुर सुंभ नैसुंभ दुऐ दैत बड़े सिरताज ॥५॥४३॥

चौपई ॥

सुंभ निसुंभ चड़े लै कै दल ॥
अरि अनेक जीते जिन जलि थलि ॥
देव राज को राज छिनावा ॥
सेसि मुकट मनि भेट पठावा ॥६॥४४॥
छीन लयो अलकेस भंडारा ॥
देस देस के जीति न्रिपारा ॥
जहा तहा कर दैत पठाए ॥
देस बिदेस जीते फिर आए ॥७॥४५॥

दोहरा ॥

देव सबै त्रासति भए मन मो कीयो बिचार ॥
सरन भवानी की सबै भाजि परे निरधार ॥८॥४६॥

नराज छंद ॥

सु त्रास देव भाजीअं ॥
बसेख लाज लाजीअं ॥
बिसिख कारमं कसे ॥
सु देवि लोक मो बसे ॥९॥४७॥
तबै प्रकोप देबि हुऐ ॥
चली सु ससत्र असत्र लै ॥
सु मुद पानि पान कै ॥
गजी क्रिपान पानि लै ॥१०॥४८॥

रसावल छंद ॥

सुनी देव बानी ॥
चड़ी सिंघ रानी ॥
सुभं ससत्र धारे ॥
सभे पाप टारे ॥११॥४९॥
करो नद नादं ॥
महा मद मादं ॥
भयो संख सोरं ॥
सुणियो चार ओरं ॥१२॥५०॥
उते दैत धाए ॥
बडी सैन लिआए ॥
मुखं रकत नैणं ॥
बके बंक बैणं ॥१३॥५१॥

चवं चार ढूके ॥
मुखं मारु कूके ॥
लए बाण पाणं ॥
सु कातीं क्रिपाणं ॥१४॥५२॥
मंडे मध जंगं ॥
प्रहारं खतंगं ॥
करउती कटारं ॥
उठी ससत्र झारं ॥१५॥५३॥
महा बीर ढाए ॥
सरोघं चलाए ॥
करै बारि बैरी ॥
फिरे ज्यो गंगैरी ॥१६॥५४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

उधित सटायं उतै सिंघ धायो ॥
इते संख लै हाथि देवी बजायो ॥
पुरी चउदहूंयं रहियो नाद पूरं ॥
चमकियो मुखं जुध के मधि नूरं ॥१७॥५५॥
तबै धूम्र नैणं मचियो ससत्र धारी ॥
लए संग जोधा बडे बीर भारी ॥
लयो बेड़ि पबं कीयो नाद उचं ॥
सुणे गरभणीआनि के गरभ मुचं ॥१८॥५६॥
सुणियो नाद स्रवणं कीयो देवि कोपं ॥
सजे चरम बरमं धरे सीसि टोपं ॥
भई सिंघ सुआरं कीयो नाद उचं ॥
सुने दीह दानवान के मान मुचं ॥१९॥५७॥
महा कोपि देवी धसी सैन मधं ॥
करे बीर बंके तहा अधु अधं ॥
जिसै धाइ कै सूल सैथी प्रहारियो ॥
तिने फेरि पाणं न बाणं संभारियो ॥२०॥५८॥

रसावल छंद ॥

जिसै बाण मार्यो ॥
तिसै मारि डार्यो ॥
जितै सिंघ धायो ॥
तितै सैन घायो ॥२१॥५९॥
जितै घाइ डाले ॥
तितै घारि घाले ॥
समुहि सत्रु आयो ॥
सु जाने न पायो ॥२२॥६०॥
जिते जुझ रुझे ॥
तिते अंत जुझे ॥
जिनै ससत्र घाले ॥
तिते मार डाले ॥२३॥६१॥
तबै मात काली ॥
तपी तेज जुवाली ॥
जिसै घाव डारियो ॥
सु सुरगं सिधारियो ॥२४॥६२॥
घरी अध मधं ॥

हनियो सैन सुधं ॥
हनियो धूम्र नैणं ॥
सुनियो देव गैणं ॥२५ ॥६३ ॥

दोहरा ॥

भजी बिरूथनि दानवी गई भूप के पास ॥
धूम्रनैण काली हनियो भजीयो सैन निरास ॥२६ ॥६४ ॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्र धूम्रनैन बधत दुतीआ धिआइ संपूरनम सतु सुभम सतु ॥2॥

अथ चंड मुंड जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

इह बिध दैत संघार कर धवला चली अवास ॥
जो यह कथा पड़ै सुनै रिधि सिधि ग्रिहि तास ॥१ ॥६५ ॥

चौपई ॥

धूम्रनैण जब सुणे संघारे ॥
चंड मुंड तब भूपि हकारे ॥
बहु बिधि कर पठए सनमाना ॥
है गै पति दीए रथ नाना ॥२ ॥६६ ॥
प्रिथम निरखि देबीअहि जे आए ॥
ते धवला गिरि ओरि पठाए ॥
तिन की तनिक भनक सुनि पाई ॥
निसिरी ससत्र असत्र लै माई ॥३ ॥६७ ॥

रूआल छंद ॥

साजि साजि चले तहा रणि राछसोंद्र अनेक ॥
अरध मुंडित मुंडितेक जटा धरे सु अरेक ॥
कोपि ओपं दै सबै करि ससत्र असत्र नचाइ ॥
धाइ धाइ करै प्रहारन तिछ तेग कंपाइ ॥४ ॥६८ ॥
ससत्र असत्र लगे जिते सब फूल माल हुऐ गए ॥
कोप ओप बिलोकि अतिभुत दानवं बिसमै भए ॥
दउर दउर अनेक आयुध फेरि फेरि प्रहारही ॥
जूझि जूझि गिरै अरेक सु मार मार पुकारही ॥५ ॥६९ ॥
रेलि रेलि चले हएांद्रन पेलि पेलि गजोंद्र ॥
झेलि झेलि अनंत आयुध हेलि हेलि रिपोंद्र ॥
गाहि गाहि फिरे फवजन बाहि बाहि खतंग ॥
अंग भंग गिरे कहूं रणि रंग सूर उतंग ॥६ ॥७० ॥
झारि झारि फिरे सरोतम डारि झारि क्रिपान ॥
सैल से रणि पुंज कुंजर सूर सीस बखान ॥
बक्र नक्र भुजा सु सोभित चक्र से रथ चक्र ॥
केस पासि सिबाल सोहत असथ चूर सरक्र ॥७ ॥७१ ॥
सजि सजि चले हथिआरन गजि गजि गजोंद्र ॥
बजि बजि सबज बाजन भजि भजि हएांद्र ॥
मार मार पुकार कै हथीआर हाथि संभार ॥

धाइ धाइ परे निसाच बाइ संख अपार ॥८॥७२॥
संख गोयमं गजीयं अरु सजीयं रिपुराज ॥
भाजि भाजि चले किते तजि लाज बीर निलाज ॥
भीम भेरी भुंकीअं अरु धुंकीअं सु निसाण ॥
गाहि गाहि फिरे फवजन बाहि बाहि गदाण ॥९॥७३॥
बीर कंगने बंधहीं अरु अछरै सिर तेलु ॥
बीर बीनि बरे बरंगन डारि डारि फुलेल ॥
घालि घालि बिवान लेगी फेरि फेरि सु बीर ॥
कूदि कूदि परे तहा ते झागि झागि सु तीर ॥१०॥७४॥
हाकि हाकि लरे तहा रणि रीझि रीझि भटोंद्र ॥
जीति जीति लयो जिनै कई बार इंद्र उपोंद्र ॥
काटि काटि दए कपाली बाटि बाटि दिसान ॥
डाटि डाटि करि दलं सुर पगु पब पिसान ॥११॥७५॥
धाइ धाइ संघारीअं रिपु राज बाज अनंत ॥
स्रोण की सरता उठी रण मधि रूप दुरंत ॥
बाण अउर कमाण सैहथी सूल तिछु कुठार ॥
चंड मुंड हणे दोऊ करि कोप कालि क्रवार ॥१२॥७६॥

दोहरा ॥

चंड मुंड मारे दोऊ काली कोपि क्रवारि ॥
अउर जिती सैना हुती छिन मो दई संघार ॥१३॥७७॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे चंड मुंड बधह त्रितयो धिआइ संपूरनम सतु सुभम सत ॥3॥*

अथ रकत बीरज जुध कथनं ॥

सोरठा ॥
सुनी भूप इम गाथ चंड मुंड काली हने ॥
बैठ भ्रात सो भ्रात मंत्र करत इह बिधि भए ॥१॥७८॥

चौपई ॥

रकतबीज तप भूपि बुलायो ॥
अमित दरबु दे तहा पठायो ॥
बहु बिधि दई बिरूथन संगा ॥
है गै रथ पैदल चतुरंगा ॥२॥७९॥
रकतबीज दै चलियो नगारा ॥
देव लोग लउ सुनी पुकारा ॥
कंपी भूमि गगन थहराना ॥
देवन जुति दिवराज डराना ॥३॥८०॥
धवला गिरि के जब तट आइ ॥
दुंदभि ढोल म्रिदंग बजाए ॥
जब ही सुना कुलाहल काना ॥
उतरी ससत्र असत्र लै नाना ॥४॥८१॥
छहबर लाइ बरखीयं बाणं ॥
बाज राज अरु गिरे किकाणं ॥
ढहि ढहि परे सुभट सिरदारा ॥
जनु कर कटै बिरछ संग आरा ॥५॥८२॥
जे जे सत्र सामुहे भए ॥

बहुर जीअत ग्रिह के नही गए ॥
जिह पर परत भई तरवारा ॥
इकि इकि ते भए दो दो चारा ॥६॥८३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

झिमी तेज तेगं सुरोसं प्रहारं ॥
खिमी दामिनी जाण भादो मझारं ॥
उदे नद नादं कड़के कमाणं ॥
मचियो लोह क्रोहं अभूतं भयाणं ॥७॥८४॥
बजे भेरि भेरी जुझारे झणंके ॥
परी कुट कुटं लगे धीर धके ॥
चवी चावडीयं नफीरं रणंकं ॥
मनो बिचरं बाघ बंके बबकं ॥८॥८५॥
उते कोपीयं स्रोणबिंदं सु बीरं ॥
प्रहारे भली भाति सो आनि तीरं ॥
उते दउर देवी करियो खग पातं ॥
गरियो मूरछा हुऐ भयो जानु घातं ॥९॥८६॥
छुटी मूरछनायं महाबीर गजियो ॥
घरी चार लउ सार सो सार बजियो ॥
लगे बाण स्रोणं गिरियो भूमि जुधे ॥
उठे बीर तेते कीए नाद क्रुधं ॥१०॥८७॥
उठे बीर जेते तिते काल कूटे ॥
परे चरम बरमं कहूं गात टूटे ॥
जिती भूमि मधं परी स्रोण धारं ॥
जगे सूर तेते कीए मार मारं ॥११॥८८॥
परी कुट कुटं रुले तछ मुछं ॥
कहूं मुंड तुंडं कहूं मासु मुछं ॥
भयो चार सै कोस लउ बीर खेतं ॥
बिदारे परे बीर ब्रिंद्रं बिचेतं ॥१२॥८९॥

रसावल छंद ॥

चहूं ओर ढूके ॥
मुखं मारु कूके ॥
झंडा गड गाढे ॥
मचे रोस बाढे ॥१३॥९०॥
भरे बीर हरखं ॥
करी बाण बरखं ॥
चवं चार ढुके ॥
पछे आहु रुके ॥१४॥९१॥
परी ससत्र झारं ॥
चली स्रोण धारं ॥
उठे बीर मानी ॥
धरे बान हानी ॥१५॥९२॥
महा रोसि गजे ॥
तुरी नाद बजे ॥
भए रोस भारी ॥
मचे छत्रधारी ॥१६॥९३॥
हकं हाक बजी ॥
फिरै सैण भजी ॥

परियो लोह क्रोहं ॥
छके सूर सोहं ॥१७॥९४॥
गिरे अंग भंगं ॥
दवं जानु दंगं ॥
कड़ंकार छुटे ॥
झणंकार उठे ॥१८॥९५॥
कटा कट बाहे ॥
उभै जीत चाहै ॥
महा मद माते ॥
तपे तेज ताते ॥१९॥९६॥
रसं रुद्र राचे ॥
उभै जुध माचे ॥
करै बाण अरचा ॥
धनुर बेद चरचा ॥२०॥९७॥
मचे बीर बीरं ॥
उठी झार तीरं ॥
गलो गड फौरै ॥
नही नैन मोरै ॥२१॥९८॥
समुह ससत्र बरखे ॥
महिखुआसु करखे ॥
करै तीर मारं ॥
बहै लोह धारं ॥२२॥९९॥
नदी स्रोण पूरं ॥
फिरी गैण हूरं ॥
गजै गैणि काली ॥
हसी खपराली ॥२३॥१००॥
कहूं बाज मारे ॥
कहूं सूर भारे ॥
कहूं चरम टूटै ॥
फिरे गज फूटै ॥२४॥१०१॥
कहूं बरम बेधे ॥
कहूं चरम छेदे ॥
कहूं पील परमं ॥
कटे बाज बरमं ॥२५॥१०२॥
बली बैर रुझे ॥
समुहि सार जुझे ॥
लखे बीर खेतं ॥
नचे भूत प्रेतं ॥२६॥१०३॥
नचे मासहारी ॥
हसे ब्रयोमचारी ॥
किलक कार कंकं ॥
मचे बीर बंकं ॥२७॥१०४॥
छुभे छत्रधारी ॥
महिखुआस चारी ॥
उठे छिछ इछं ॥
चले तीर तिछं ॥२८॥१०५॥
गणं गाध्रबेयं ॥
चरं चारणेसं ॥
हसे सिध सिधं ॥
मचे बीर क्रुधं ॥२९॥१०६॥

डका डक डाकै ॥
हका हक हाकै ॥
भका भुंक भेरी ॥
डमक डाक डेरी ॥३०॥१०७॥
महा बीर गाजे ॥
नवं नाद बाजे ॥
धरा गोम गजे ॥
दुगा दैत बजे ॥३१॥१०८॥

बिजै छंद

जेतक बाण चले अरि ओर ते फूल की माल हुऐ कंठि बिराजे ॥
दानव पुंगव पेखि अचंभव छोडि भजे रण एक न गाजे ॥
कुंजर पुंज गिरे तिह ठउर भरे सभ स्रोणत पै गन ताजे ॥
जानुक नीरध मधि छपे भ्रमि भूधर के भय ते नग भाजे ॥३२॥१०९॥

मनोहर छंद

स्री जगमात कमान लै हाथि प्रमाथनि संख प्रज्ञयो जब जुधं ॥
गातह सैण संघारत सूर बबकति सिंघ भ्रम्यो रणि क्रुधं ॥
कउचहि भेदि अभेदित अंग सुरंग उतंग सो सोभित सुधं ॥
मानो बिसाल बड़वानल जुआल समुद्र के मधि बिराजत उधं ॥३३॥११०॥
पूर रही भवि भूर धनुर धुनि धूर उडी नभ मंडल छायो ॥
नूर भरे मुख मारि गिरे रणि हूरन हेरि हीयो हुलसायो ॥
पूरण रोस भरे अरि तूरण पूरि परे रण भूमि सुहायो ॥
चूर भए अरि रूरे गिरे भट चूरण जानुक बैद बनायो ॥३४॥१११॥

संगीत भुजंग प्रयात छंद

कागड़दं काती कटारी कड़ाकं ॥
तागड़दं तीरं तुपकं तड़ाकं ॥
झागड़दं नागड़दं बागड़दं बाजे ॥
गागड़दं गाजी महा गज गाजे ॥३५॥११२॥
सागड़दं सूरं कागड़दं कोपं ॥
पागड़दं परमं रणं पाव रोपं ॥
सागड़दं ससत्रं झागड़दं झारै ॥
बागड़दं बीरं डागड़दं डकारे ॥३६॥११३॥
चागड़दं चउपे बागड़दं बीरं ॥
मागड़दं मारे तनं तिछ तीरं ॥
गागड़दं गजे सु बजे गहीरै ॥
कागड़ं कवीयान कथै कथीरै ॥३७॥११४॥
दागड़दं दानो भागड़दं भाजे ॥
गागड़दं गाजी जागड़दं गाजे ॥
छागड़दं छउही छुरे प्रेछड़ाके ॥
तागड़दं तीरं तुपकं तड़ाके ॥३८॥११५॥
गागड़दं गोमाय गजे गहीरं ॥
सागड़दं संखं नागड़दं नफीरं ॥
बागड़दं बाजे बजे बीर खेतं ॥
नागड़दं नाचे सु भूतं परेतं ॥३९॥११६॥
तागड़दं तीरं बागड़दं बाणं ॥
कागड़दं काती कटारी क्रिपाणं ॥
नागड़दं नादं बागड़दं बाजे ॥

सागड़दं सूरं रागड़दं राजे ॥४०॥११७॥
सागड़दं संखं नागड़दं नफीरं ॥
गागड़दं गोमाय गजे गहीरं ॥
नागड़दं नगारे बागड़दं बाजे ॥
जागड़दं जोधा गागड़दं गाजे ॥४१॥११८॥

नराज छंद ॥

जितेकु रूप धारीयं ॥
तितेकु देबि मारीयं ॥
जितेके रूप धारही ॥
तितिओ द्रुगा संघारही ॥४२॥११९॥
जितेकु ससत्र वा झरे ॥
प्रवाह स्रोन के परे ॥
जितीकि बिंदका गिरै ॥
सु पान कालिका करै ॥४३॥१२०॥

रसावल छंद ॥

हूओ स्रोण हीनं ॥
भयो अंग छीनं ॥
गिरियो अंति झूमं ॥
मनो मेघ भूमं ॥४४॥१२१॥
सबे देव हरखे ॥
सुमन धार बरखे ॥
रकत बिंद मारे ॥
सबै संत उबारे ॥४५॥१२२॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे रकत बीरज बधह चतुरथ धिआय संपूरनम सतु सुभम सतु ॥4॥*

अथ निसुंभ जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

सुंभ निसुंभ सुणियो जबै रकतबीरज को नास ॥
आप चड़त भै जोरि दल सजे परसु अरु पासि ॥१॥१२३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चड़े सुंभ नैसुंभ सूरा अपारं ॥
उठे नद नादं सु धउसा धुकारं ॥
भई असट सै कोस लउ छत्र छायं ॥
भजे चंद सूरं डरियो देव रायं ॥२॥१२४॥
भका भुंक भेरी ढका ढुंक ढोलं ॥
फटी नख सिंघं मुखं डढ कोलं ॥
डमा डंमि डउरू डका डुंक डंकं ॥
रड़े ग्रिध ब्रिधं किलकार कंकं ॥३॥१२५॥
खुरं खेह उठी रहियो गैन पूरं ॥
दले सिंधु बिधं भए पब चूरं ॥
सुणो सोर काली गहै ससत्र पाणं ॥

किलकार जेमी हने जंग जुआणं ॥४ ॥१२६ ॥

रसावल छंद ॥

गजे बीर गाजी ॥
तुरे तुंद ताजी ॥
महिखुआस करखे ॥
सरं धार बरखे ॥५ ॥१२७ ॥
इते सिंघ गजियो ॥
महा संख बजियो ॥
रहियो नाद पूरं ॥
छुही गैणि धूरं ॥६ ॥१२८ ॥
सबै ससत्र साजे ॥
घणं जेम गाजे ॥
चले तेज तै कै ॥
अनंत ससत्र लै कै ॥७ ॥१२९ ॥
चहूं ओर ढूके ॥
मुखं मार कूके ॥
अनंत ससत्र बजे ॥
महा बीर गजे ॥८ ॥१३० ॥
मुखं नैण रकतं ॥
धरे पाणि सकतं ॥
कीए क्रोध उठे ॥
सरं ब्रिसटि बुठे ॥९ ॥१३१ ॥
किते दुसट कूटे ॥
अनंतासत्र छूटे ॥
करी बाण बरखं ॥
भरी देबि हरखं ॥१० ॥१३२ ॥

बेली बिंद्रम छंद ॥

कह कह सु कूकत कंकीयं ॥
बहि बहत बीर सु बंकीयं ॥
लह लहत बाणि क्रिपाणयं ॥
गह गहत प्रेत मसाणयं ॥११ ॥१३३ ॥
डह डहत डवर डमंकयं ॥
लह लहत तेग त्रमंकयं ॥
ध्रम ध्रमत साग धमंकयं ॥
बबकंत बीर सु बंकयं ॥१२ ॥१३४ ॥
छुटकंत बाण कमाणयं ॥
हररंत खेत खत्राणयं ॥
डहकंत डामर डंकणी ॥
कह कहक कूकत जुगणी ॥१३ ॥१३५ ॥
उफटंत स्रोणत छिछयं ॥
बरखंत साइक तिछयं ॥
बबकंत बीर अनेकयं ॥
फिकरंत सिआर बसेखयं ॥१४ ॥१३६ ॥
हरखंत स्रोणति रंगणी ॥
बिहरंत देबि अभंगणी ॥
बबकंत केहर डोलही ॥
रणि अभंग कलोलही ॥१५ ॥१३७ ॥

ढम ढमत ढोल ढमकयं ॥
धम धमत साग धमकयं ॥
बह बहत क्रुध क्रिपाणयं ॥
जुझैत जोध जुआणयं ॥१६॥१३८॥

दोहरा ॥

भजी चमूं सब दानवी सुंभ निरख निज नैण ॥
निकट बिकट भट जे हुते तिन प्रति बुलियो बैण ॥१७॥१३९॥

नराज छंद ॥

निसुंभ सुंभ कोप कै ॥
पठियो सु पाव रोप कै ॥
कहियो कि सीघ्र जाईयो ॥
दुगाहि बाध ल्याईयो ॥१८॥१४०॥
चड़्यो सु सैण सजि कै ॥
सकोप सूर गजि कै ॥
उठै बजंत्र बाजि कै ॥
चलियो सुरेसु भाजि कै ॥१९॥१४१॥
अनंत सूर संगि लै ॥
चलियो सु दुंदभीन दै ॥
हकारि सूरमा भरे ॥
बिलोकि देवता डरे ॥२०॥१४२॥

मधुभार छंद ॥

कंपियो सुरेस ॥
बुलियो महेस ॥
किनो बिचार ॥
पुछे जुझार ॥२१॥१४३॥
कीजै सु मित्र ॥
कउने चरित्र ॥
जाते सु माइ ॥
जीतै बनाइ ॥२२॥१४४॥
सकतै निकार ॥
भेजो अपार ॥
सत्रन जाइ ॥
हनि है रिसाइ ॥२३॥१४५॥
सोई काम कीन ॥
देवन प्रबीन ॥
सकतै निकारि ॥
भेजी अपार ॥२४॥१४६॥

ब्रिध नराज छंद ॥

चली सकति सीघ्र स्री क्रिपाणि पाणि धार कै ॥
उठे सु ग्रिध ब्रिध डउर डाकणी डकार कै ॥
हसे सु रंग कंक बंकयं कबंध अंध उठही ॥
बिसेख देवता रु बीर बाण धार बुठही ॥२५॥१४७॥

रसावल छंद ॥

सबै सकति ऐ कै ॥
चली सीस निऐ कै ॥
महा असत्र धारे ॥
महा बीर मारे ॥२६॥१४८॥
मुखं रकत नैणं ॥
बकै बंक बैणं ॥
धरे असत्र पाणं ॥
कटारी क्रिपाणं ॥२७॥१४९॥
उतै दैत गाजे ॥
तुरी नाद बाजे ॥
धारे चार चरमं ॥
स्रजे क्रूर बरमं ॥२८॥१५०॥
चहूं ओर गरजे ॥
सबै देव लरजे ॥
छुटे तिछ तीरं ॥
कटे चउर चीरं ॥२९॥१५१॥
रुसं रुद्र रते ॥
महा तेज तते ॥
करी बाण बरखं ॥
भरी देबि हरखं ॥३०॥१५२॥
इते देबि मारै ॥
उतै सिंघु फारै ॥
गणं गूड़ गरजै ॥
सबै दैत लरजे ॥३१॥१५३॥
भई बाण बरखा ॥
गए जीति करखा ॥
सबै दुसट मारे ॥
मईया संत उबारे ॥३२॥१५४॥
निसुंभं संघारियो ॥
दलं दैत मारियो ॥
सबै दुसट भाजे ॥
इतै सिंघ गाजे ॥३३॥१५५॥
भई पुहप बरखा ॥
गाए जीत करखा ॥
जयं संत जंपे ॥
त्रसे दैत कंपे ॥३४॥१५६॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे निसुंभ बधह पंचमो धिआइ संपूरनम सतु सुभम सतु ॥5॥

अथ सुंभ जुध कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

लघुं भ्रात जुझियो सुनियो सुंभ रायं ॥
सजै ससत्र असत्रं चड़ियो चउप चायं ॥
भयो नाद उचं रहियो पूर गैणं ॥
त्रसं देवता दैत कंपियो त्रिनैणं ॥१॥१५७॥
डरियो चार बकत्रं टरियो देव राजं ॥
डिगे पब सरबं स्रजे सुभ साजं ॥

परे हूह दै कै भरे लोह क्रोहं ॥
मनो मेर को सातवो स्रिंग सोहं ॥२॥१५८॥
सजियो सैन सुभं कीयो नाद उचं ॥
सुणै गरभणीआन के गरभ मुचं ॥
परियो लोह क्रोहं उठी ससत्र झारं ॥
चवी चावडी डाकणीयं डकारं ॥३॥१५९॥
बहे ससत्र असत्रं कटे चरम बरमं ॥
भले कै निबाहियो भटं सुआमि धरमं ॥
उठी कूह जूहं गिरे चउर चीरं ॥
रुले तछ मुछं परी गछ तीरं ॥४॥१६०॥
गिरे अंकुसं बारुणं बीर खेतं ॥
नचे कंध हीणं कबंधं अचेतं ॥
उडै ग्रिध ब्रिधं रड़ै कंक बंकं ॥
भका भुंक भेरी डाह डूह डंकं ॥५॥१६१॥
टका टुक टोपं ढका ढुक ढालं ॥
तछा मुछ तेगं बके बिकरालं ॥
हला चाल बीरं धमा धंमि सागं ॥
परी हाल हूलं सुणियो लोग नागं ॥६॥१६२॥
डकी डागणी जोगणीयं बितालं ॥
नचे कंध हीणं कबंधं कपालं ॥
हसे देव सरबं रिस्रयो दानवेसं ॥
किधो अगनि जुआलं भयो आप भेसं ॥७॥१६३॥

दोहरा ॥

सुंभासुर जेतिकु असुर पठए कोपु बढाइ ॥
ते देबी सोखत करे बूंद तवा की निआइ ॥८॥१६४॥

नराज छंद ॥

सु बीर सैण सजि कै ॥
चड़ियो सु कोप गजि कै ॥
चलियो सु ससत्र धार कै ॥
पुकार मारु मार कै ॥९॥१६५॥

संगीत मधुभार छंद ॥

कागड़दं कड़ाक ॥
तागड़दं तड़ाक ॥
सागड़दं सु बीर ॥
गागड़दं गहीर ॥१०॥१६६॥
नागड़दं निसाण ॥
जागड़दं जुआण ॥
नागड़दी निहंग ॥
पागड़दी पलंग ॥११॥१६७॥
तागड़दी तमकि ॥
लागड़दी लहकि ॥
कागड़दं क्रिपाण ॥
बाहै जुआण ॥१२॥१६८॥
खागड़दी खतंग ॥
नागड़दी निहंग ॥
छागड़दी छुटंत ॥

आगड़दी उडंत ॥१३ ॥१६९ ॥
पागड़दी पवंग ॥
सागड़दी सुभंग ॥
जागड़दी जुआण ॥
झागड़दी जुझाणि ॥१४ ॥१७० ॥
झागड़दी झड़ंग ॥
कागड़दी कड़ंग ॥
तागड़दी तड़ाक ॥
चागड़दी चटाक ॥१५ ॥१७१ ॥
घागड़दी घबाक ॥
भागड़दी भभाक ॥
कागड़दं कपालि ॥
नची बिक्राल ॥१६ ॥१७२ ॥

नराज छंद ॥

अनंत दुसट मारीयं ॥
बिअंत सोक टारीयं ॥
कमंध अंध उठीयं ॥
बिसेख बाण बुठीयं ॥१७ ॥१७३ ॥
कड़का करमुकं उधं ॥
सड़ाक सैहथी जुधं ॥
बिअंत बाणि बरखयं ॥
बिसेख बीर परखयं ॥१८ ॥१७४ ॥

संगीत नराज छंद ॥

कड़ा कड़ी क्रिपाणयं ॥
जटा जुटी जुआणयं ॥
सुबीर जागड़दं जगे ॥
लड़ाक लागड़दं पगे ॥१९ ॥१७५ ॥

रसावल छंद ॥

झमी तेग झटं ॥
छुरी छिप्र छुटं ॥
गुरं गुरज गटं ॥
पलंगं पिसटं ॥२० ॥१७६ ॥
किते स्रोण चटं ॥
किते सीस फुटं ॥
कहूं हूह छुटं ॥
कहूं बीर उठं ॥२१ ॥१७७ ॥
कहूं धूरि लुटं ॥
किते मार रटं ॥
भणै जस भटं ॥
किते पेट फटं ॥२२ ॥१७८ ॥
भजे छत्रि थटं ॥
किते खून खटं ॥
किते दुसट दटं ॥
फिरे ज्यो हरटं ॥२३ ॥१७९ ॥
सजे सूर सारे ॥
महिखुआस धारे ॥

लए खगआरे ॥
महा रोह वारे ॥२४॥१८०॥
सही रूप कारे ॥
मनो सिंधु खारे ॥
कई बार गारे ॥
सु मारं उचारे ॥२५॥१८१॥
भवानी पछारे ॥
जवा जेमि जारे ॥
बडेई लुझारे ॥
हुते जे हीए वारे ॥२६॥१८२॥
इकं बार टारे ॥
ठमं ठोकि ठारे ॥
बली मार डारे ॥
ढमके ढढारे ॥२७॥१८३॥
बहे बाणणिआरे ॥
कितै तीर तारे ॥
लखे हाथ बारे ॥
दिवाने दिदारे ॥२८॥१८४॥
हणे भूमि पारे ॥
किते सिंघ फारे ॥
किते आपु बारे ॥
जिते दैत भारे ॥२९॥१८५॥
तिते अंत हारे ॥
बडेई अड़िआरे ॥
खरेई बरिआरे ॥
करूरं करारे ॥३०॥१८६॥
लपके ललाहे ॥
अरीले अरिआरे ॥
हणे काल कारे ॥
भजे रोह वारे ॥३१॥१८७॥

दोहरा ॥

इह बिधि दुसट प्रजार कै ससत्र असत्र करि लीन ॥
बाण बूंद प्रिथमै बरख सिंघ नाद पुनि कीन ॥३२॥१८८॥

रसावल छंद ॥

सुणियो सुंभ रायं ॥
चड़ियो चउप चायं ॥
सजे ससत्र पाणं ॥
चड़े जंगि जुआणं ॥३३॥१८९॥
लगै ढोल ढंके ॥
कमाणं कड़ंके ॥
भए नद नादं ॥
धुणं निरबिखादं ॥३४॥१९०॥
चमकी क्रिपाणं ॥
हठे तेज माणं ॥
महाबीर हुंके ॥
सु नीसाण द्रुंके ॥३५॥१९१॥
चहूं ओर गरजे ॥

सबे देव लरजे ॥
सरं धार बरखे ॥
मईया पाण परखे ॥३६॥१९२॥

चौपई ॥

जे लए ससत्र सामुहे धए ॥
तिते निधन कहुं प्रापति भए ॥
झमकत भई असन की धारा ॥
भभके रुंड मुंड बिकरारा ॥३७॥१९३॥

दोहरा ॥

है गै रथ पैदल कटे बचियो न जीवत कोइ ॥
तब आपे निकसियो न्रिपति सुंभ करै सो होइ ॥३८॥१९४॥

चौपई ॥

सिव दूती इति द्रुगा बुलाई ॥
कान लागि नीकै समुझाई ॥
सिव को भेज दीजीऐ तहा ॥
दैत राज इसथित है जहा ॥३९॥१९५॥
सिव दूती जब इम सुन पावा ॥
सिवहिं दूत करि उतै पठावा ॥
सिव दूती ता ते भयो नामा ॥
जानत सकल पुरख अरु बामा ॥४०॥१९६॥
सिव कही दैत राज सुनि बाता ॥
इह बिधि कहियो तुमहु जगमाता ॥
देवन के दै कै ठकुराई ॥
कै माडहु हम संग लराई ॥४१॥१९७॥
दैत राज इह बात न मानी ॥
आप चले जूझन अभिमानी ॥
गरजत कालि काल ज्यो जहा ॥
प्रापति भयो असुर पति तहा ॥४२॥१९८॥
चमकी तहा असन की धारा ॥
नाचे भूत प्रेत बैतारा ॥
फरके अंध कबंध अचेता ॥
भिभरे भईरव भीम अनेका ॥४३॥१९९॥
तुरही ढोल नगारे बाजे ॥
भाति भाति जोधा रणि गाजै ॥
ढडि डफ डमरु डुगडुगी घनी ॥
नाइ नफीरी जात न गनी ॥४४॥२००॥

मधुभार छंद ॥

हुंके किकाण ॥
धुंके निसाण ॥
सजे सु बीर ॥
गजे गहीर ॥४५॥२०१॥
झुके निझक ॥
बजे उबक ॥
सजे सुबाह ॥

अछै उछाह ॥४६॥२०२॥
कटे किकाण ॥
फुटै चवाण ॥
सूलं सड़ाक ॥
उठे कड़ाक ॥४७॥२०३॥
गजे जुआण ॥
बजे निसाणि ॥
सजे रजोंद्र ॥
गजे गजोंद्र ॥४८॥२०४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

फिरे बाजीयं ताजीयं इत उतं ॥
गजे बारणं दारुणं राज पुत्रं ॥
बजे संख भेरी उठै संख नादं ॥
रणंके नफीरी धुण निरबिखादं ॥४९॥२०५॥
कड़के क्रिपाणं सड़कार सेलं ॥
उठी कूह जूहं भई रेल पेलं ॥
रुले तछ मुछं गिरे चउर चीरं ॥
कहूं हथ मथं कहूं बरम बीरं ॥५०॥२०६॥

रसावल छंद ॥

बली बैर रुझे ॥
समूह सार जुझे ॥
संभारे हथीयारं ॥
बकै मारु मारं ॥५१॥२०७॥
सबै ससत्र सजे ॥
महाबीर गजे ॥
सरं ओघ छुटे ॥
कड़कारु उठे ॥५२॥२०८॥
बजै बाद्रितेअं ॥
हसै गाध्रबेअं ॥
झंडा गड जुटे ॥
सरं संज फुटे ॥५३॥२०९॥
चहूं ओर उठे ॥
सरं ब्रिसट बुठे ॥
करोधी करालं ॥
बकै बिकरालं ॥५४॥२१०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

किते कुठीअं बुठीअं ब्रिसट बाणं ॥
रणं डुलीयं बाज खाली पलाणं ॥
जुझे जोधियं बीर देवं अदेवं ॥
सभे ससत्र साजा मनो सातनेवं ॥५५॥२११॥
गजे गजीयं सरब सजे पवंगं ॥
जुधं जुटीयं जोध छुटे खतंगं ॥
तड़के तबलं झड़ंके क्रिपाणं ॥
सड़कार सेलं रणंके निसाणं ॥५६॥२१२॥
ढमा ढम ढोलं ढला ढुक ढालं ॥
गहा जूह गजे हयं हलचालं ॥

सटा सट सैलं खहा खूनि खगं ॥
तुटे चरम बरमं उठे नाल अगं ॥५७॥२१३॥
उठे अगि नालं खहे खोल खगं ॥
निसा मावसी जाणु मासाण जगं ॥
डकी डाकणी डामरू डउर डकं ॥
नचे बीर बैताल भूतं भभकं ॥५८॥२१४॥

बेली बिद्रम छंद ॥

सरब ससत्रु आवत भे जिते ॥
सभ काटि दीन द्रुगा तिते ॥
अरि अउर जेतिकु डारीअं ॥
तेउ काटि भूमि उतारीअं ॥५९॥२१५॥
सर आप काली छंडीअं ॥
सरबासत्र सत्र बिहंडीअं ॥
ससत्र हीन जबै निहारियो ॥
जै सबद देवन उचारियो ॥६०॥२१६॥
नभि मधि बाजन बाजही ॥
अविलोकि देवा गाजही ॥
लखि देव बारं बारही ॥
जै सबद सरब पुकारही ॥६१॥२१७॥
रणि कोपि काल करालीयं ॥
खट अंग पाणि उछालीयं ॥
सिरि सुंभ हथ दुछंडीयं ॥
इक चोटि दुसट बिहंडीयं ॥६२॥२१८॥

दोहरा ॥

जिम सुंभासुर को हना अधिक कोप कै कालि ॥
त्रयो साधन के सत्रु सभ चाबत जाह कराल ॥६३॥२१९॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे सुंभ बधह खसटमो धिआय संपूरनम सतु सुभम सतु ॥6॥*

अथ जैकार सबद कथनं ॥

बेली बिद्रम छंद ॥

जै सबद देव पुकार ही ॥
सब फूलि फूलन डार ही ॥
घनसार कुंकम लिआइ कै ॥
टीका दीय हरखाइ कै ॥१॥२२०॥

चौपई ॥

उसतति सब हूं करी अपारा ॥
ब्रहम कवच को जाप उचारा ॥
संत संबूह प्रफुलत भए ॥
दुसट अरिसट नास हुऐ गए ॥२॥२२१॥
साधन को सुख बढे अनेका ॥
दानव दुसट न बाचा एका ॥

संत सहाइ सदा जग माई ॥
जह तह साधन होइ सहाई ॥३॥२२२॥
देवी जू की उसतति ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो जोग ज्वालं धरीयं जुआलं ॥
नमो सुंभ हंती नमो करूर कालं ॥
नमो स्रोण बीरजारदनी धूम्र हंती ॥
नमो कालिका रूप जुआला जयंती ॥४॥२२३॥
नमो अंबिका जंभहा जोति रूपा ॥
नमो चंड मुंडारदनी भूपि भूपा ॥
नमो चामरं चीरणी चित्र रूपं ॥
नमो परम प्रगिया बिराजै अनूपं ॥५॥२२४॥
नमो परम रूपा नमो क्रूर करमा ॥
नमो राजसा सातका परम बरमा ॥
नमो महिख दईत को अंत करणी ॥
नमो तोखणी सोखणी सरब इरणी ॥६॥२२५॥
बिड़ालाछ हंती करूराछ घाया ॥
दिजगि दयारदनीअं नमो जोग माया ॥
नमो भईरवी भारगवीअं भवानी ॥
नमो जोग ज्वालं धरी सरब मानी ॥७॥२२६॥
अधी उरधवी आप रूपा अपारी ॥
रमा रसटरी काम रूपा कुमारी ॥
भवी भावनी भईरवी भीम रूपा ॥
नमो हिंगुला पिंगुलायं अनूपा ॥८॥२२७॥
नमो जुधनी क्रुधनी क्रूर करमा ॥
महा बुधिनी सिधिनी सुध करमा ॥
परी पदमिनी पारबती परम रूपा ॥
सिवी बासवी ब्राहमी रिध कूपा ॥९॥२२८॥
मिड़ा मारजनी सूरतवी मोह करता ॥
परा पसटणी पारबती दुसट हरता ॥
नमो हिंगुला पिंगुला तोतलायं ॥
नमो कारतिक्रयानी सिवा सीतलायं ॥१०॥२२९॥
भवी भारगवीयं नमो ससत्र पाणं ॥
नमो असत्र धरता नमो तेज माणं ॥
जया अजया चरमणी चावडायं ॥
क्रिपा कालिकायं नयं निति निआयं ॥११॥२३०॥
नमो चापणी चरमणी खड़ग पाणं ॥
गदा पाणिणी चक्रणी चित्र माणं ॥
नमो सूलणी सहथी पाणि माता ॥
नमो गिआन बिगिआन की गिआन गिआता ॥१२॥२३१॥
नमो पोखणी सोखणीअं म्रिड़ाली ॥
नमो दुसट दोखारदनी रूप काली ॥
नमो जोग जुआला नमो कारतिक्रयानी ॥
नमो अंबिका तोतला स्री भवानी ॥१३॥२३२॥
नमो दोख दाही नमो दुख्य हरता ॥
नमो ससत्रणी असत्रणी करम करता ॥
नमो रिसटणी पुसटणी परम जुआला ॥
नमो तारुणीअं नमो ब्रिध बाला ॥१४॥२३३॥
नमो सिंघ बाही नमोदाड़ गाड़ं ॥

नमो खग दगं झमा झम बाड़ं ॥
नमो रूड़ि गूड़ं नमो सरब बिआपी ॥
नमो नित नाराइणी दुसट खापी ॥१५ ॥२३४ ॥
नमो रिधि रूपं नमो सिध करणी ॥
नमो पोखणी सोखणी सरब भरणी ॥
नमो आरजनी मारजनी काल रात्री ॥
नमो जोग ज्वालं धरी सरब दात्री ॥१६ ॥२३५ ॥
नमो परम परमेस्वरी धरम करणी ॥
नई नित नाराइणी दुसट दरणी ॥
छला आछला ईसुरी जोग जुआली ॥
नमो बरमणी चरमणी क्रूर काली ॥१७ ॥२३६ ॥
नमो रेचका पूरका प्रात संधिआ ॥
जिनै मोह कै चउदहूं लोग बंधिआ ॥
नमो अंजनी गंजनी सरब असत्रा ॥
नमो धारणी बारणी सरब ससत्रा ॥१८ ॥२३७ ॥
नमो अंजनी गंजनी दुसट गरबा ॥
नमो तोखणी पोखणी संत सरबा ॥
नमो सकतणी सूलणी खड़ग पाणी ॥
नमो तारणी कारणीअं क्रिपाणी ॥१९ ॥२३८ ॥
नमो रूप काली कपाली अनंदी ॥
नमो चंद्रणी भानुवीअं गुबिंदी ॥
नमो छैल रूपा नमो दुसट दरणी ॥
नमो कारणी तारणी स्रिसट भरणी ॥२० ॥२३९ ॥
नमो हरखणी बरखणी ससत्र धारा ॥
नमो तारणी कारणीयं अपारा ॥
नमो जोगणी भोगणी प्रम प्रगिया ॥
नमो देव दईतयाइणी देवि दुरगिया ॥२१ ॥२४० ॥
नमो घोरि रूपा नमो चारु नैणा ॥
नमो सूलणी सैथणी बक्र बैणा ॥
नमो ब्रिध बुधं करी जोग जुआला ॥
नमो चंड मुंडी म्रिड़ा क्रूर काला ॥२२ ॥२४१ ॥
नमो दुसट पुसटारदनी छेम करणी ॥
नमो दाड़ गाड़ा धरी दुख्य हरणी ॥
नमो सासत्र बेता नमो ससत्र गामी ॥
नमो जछ बिदिआ धरी पूरण कामी ॥२३ ॥२४२ ॥
रिपं तापणी जापणी सरब लोगा ॥
थपे खापणी थापणी सरब सोगा ॥
नमो लंकुड़ेसी नमो सकति पाणी ॥
नमो कालिका खड़ग पाणी क्रिपाणी ॥२४ ॥२४३ ॥
नमो लंकुड़ैसा नमो नाग्र कोटी ॥
नमो काम रूपा कमिछिआ करोटी ॥
नमो काल रात्री कपरदी कलिआणी ॥
महा रिधणी सिध दाती क्रिपाणी ॥२५ ॥२४४ ॥
नमो चतुर बाही नमो असट बाहा ॥
नमो पोखणी सरब आलम पनाहा ॥
नमो अंबिका जंभहा कारतक्रयानी ॥
म्रिड़ाली कपरदी नमो स्री भवानी ॥२६ ॥२४५ ॥
नमो देव अरद्रयारदनी दुसट हंती ॥
सिता असिता राज क्राती अनंती ॥
जुआला जयंती अलासी अनंदी ॥

नमो पारब्रहमी हरी सी मुकंदी ॥२७॥२४६॥

जयंती नमो मंगला कालकायं ॥
कपाली नमो भद्रकाली सिवायं ॥
दुगायं छिमायं नमो धात्रीएयं ॥
सुआहा सुधायं नमो सीतलेयं ॥२८॥२४७॥

नमो चरबणी सरब धरमं धुजायं ॥
नमो हिंगुला पिंगुला अंबिकायं ॥
नमो दीरघ दाड़ा नमो सिआम बरणी ॥
नमो अंजनी गंजनी दैत दरणी ॥२९॥२४८॥

नमो अरध चंद्राइणी चंद्रचूड़ं ॥
नमो इंद्र ऊरधा नमो दाड़ गूड़ं ॥
ससं सेखरी चंद्रभाला भवानी ॥
भवी भैहरी भूतराटी क्रिपानी ॥३०॥२४९॥

कली कारणी करम करता कमछ्या ॥
परी पदमिनी पूरणी सरब इछ्या ॥
जया जोगणी जग करता जयंती ॥
सुभा सुआमणी स्रिसटजा सत्रूहंती ॥३१॥२५०॥

पवित्री पुनीता पुराणी परेयं ॥
प्रभी पूरणी पारब्रहमी अजैयं ॥
अरूपं अनूपं अनामं अठामं ॥
अभीअं अजीतं महा धरम धामं ॥३२॥२५१॥

अछेदं अभेदं अकरमं सु धरमं ॥
नमो बाण पाणी धरे चरम बरमं ॥
अजेयं अभेयं निरंकार नित्रयं ॥
निरूपं निरबाणं नमित्रयं अक्रित्रयं ॥३३॥२५२॥

गुरी गउरजा कामगामी गुपाली ॥
बली बीरणी बावना जग्रया जुआली ॥
नमो सत्रु चरबाइणी गरब हरणी ॥
नमो तोखणी सोखणी सरब भरणी ॥३४॥२५३॥

पिलंगी पवंगी नमो चरचितंगी ॥
नमो भावनी भूत हंता भड़िंगी ॥
नमो भीमि सरूपा नमो लोक माता ॥
भवी भावनी भविख्यात बिधाता ॥३५॥२५४॥

प्रभी पूरणी परम रूपं पवित्री ॥
परी पोखणी पारब्रहमी गइत्री ॥
जटी जुआल परचंड मुंडी चमुंडी ॥
बरंदाइणी दुसट खंडी अखंडी ॥३६॥२५५॥

सबै संत उबारी बरं ब्रयूह दाता ॥
नमो तारणी कारणी लोक माता ॥
नमसत्यं नमसत्यं नमसत्यं भवानी ॥
सदा राख लै मुहि क्रिपा कै क्रिपानी ॥३७॥२५६॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे देवी जू की उसतत बरननं नाम सपतमो धिआय संपूरनम सतु सुभम सतु ॥7॥

SECTION 05a: CHANDI CHARITAR — USTAT SECTION

Praise of Chandi

अथ चंडी चरित्र उसतत बरननं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भरै जोगणी पत्र चउसठ चारं ॥
चली ठाम ठामं डकारं डकारं ॥
भरे नेह गेहं गए कंक बंकं ॥
रुले सूरबीरं अहाड़ं न्रिसंकं ॥१॥२५७॥
चले नारदउ हाथि बीना सुहाए ॥
बने बारदी डंक डउरू बजाए ॥
गिरे बाजि गाजी गजी बीर खेतं ॥
रुले तछ मुछं नचे भूत प्रेतं ॥२॥२५८॥
नचे बीर बैताल अधं कमधं ॥
बधे बध गोपा गुलित्राण बधं ॥
भए साधु संबूह भीतं अभीते ॥
नमो लोक माता भले सत्रु जीते ॥३॥२५९॥
पड़े मूड़ या को धनं धाम बाढे ॥
सुनै सूम सोफी लरै जुध गाढै ॥
जगै रैणि जोगी जपै जाप या को ॥
धरै परम जोगं लहै सिधता को ॥४॥२६०॥
पड़ै याहि बिद्यारथी बिद्या हेतं ॥
लहै सरब सासत्रान को मद चेतं ॥
जपै जोग संन्यास बैराग कोई ॥
तिसै सरब पुंन्रयान को पुंनि होई ॥५॥२६१॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को नित उठि धिऐहै संत ॥
अंत लहैगे मुकति फलु पावहिगे भगवंत ॥६॥२६२॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे चंडी चरित्र उसतति बरननं नाम असटमो धिआय संपूरनम सतु सुभम सतु ॥8॥*

SECTION 06: CHANDI DI VAAR

Ballad of Chandi · In the Vaar tradition · By Guru Gobind Singh Ji

चंडी दी वार ॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतह ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

वार स्री भगउती जी की ॥

पातिसाही १० ॥

पउड़ी ॥
प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥
फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ॥
अरजन हरिगोबिंद नो सिमरौ स्री हरिराइ ॥
स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिसु डिठे सभि दुखि जाइ ॥
तेग बहादर सिमरिऐ घरि नउ निधि आवै धाइ ॥
सभ थाईं होइ सहाइ ॥1॥
खंडा प्रिथमै साज कै जिन सभ सैसारु उपाइआ ॥
ब्रहमा बिसनु महेस साजि कुदरति दा खेलु रचाइ बणाइआ ॥
सिंधु परबत मेदनी बिनु थंम्हा गगनि रहाइआ ॥
सिरजे दानो देवते तिन अंदरि बादु रचाइआ ॥
तै ही दुरगा साजि कै दैता दा नासु कराइआ ॥
तैथों ही बलु राम लै नाल बाणा दहसिरु घाइआ ॥
तैथों ही बलु क्रिसन लै कंसु केसी पकड़ि गिराइआ ॥
बडे बडे मुनि देवते कई जुग तिनी तनु ताइआ ॥
किनी तेरा अंतु न पाइआ ॥२॥
साधू सतजुगु बीतिआ अध सीली त्रेता आइआ ॥
नची कल सरोसरी कल नारद डउरू वाइआ ॥
अभिमानु उतारन देवतिआं महिखासुर सुंभ उपाइआ ॥
जीति लए तिनि देवते तिह लोकी राजु कमाइआ ॥
वडा बीर अखाइ कै सिर उपर छत्र फिराइआ ॥
दिता इंदुर निकाल कै तिन गिरि कैलासु तकाइआ ॥
डरि कै हथो दानवी दिल अंदरि त्रासु वधाइआ ॥
पास दुरगा दे इंदुर आइआ ॥३॥
इक दिहाड़े नावण आई दुरगसाह ॥
इंद्र बिरथा सुणाई अपणे हाल दी ॥
छीन लई ठकुराई साते दानवी ॥
लोकी तिही फिराई दोही आपणी ॥
बैठे वाइ वधाई ते अमरावती ॥
दिते देव भजाई सभना राकसां ॥
किनै न जिता जाई महखे दैत नूं ॥
तेरी साम तकाई देवी दुरगसाह ॥४॥
दुरगा बैण सुणंदी हसी हड़हड़ाइ ॥
ओही सीहु मंगाइआ राखस भक्खणा ॥
चिंता करहु न काई देवा नूं आखिआ ॥
रोह होई महा माई राकसि मारणे ॥५॥

दोहरा ॥

राकसि आए रोहले खेति भिड़न के चाइ ॥
लशकनि तेगां बरछीआं सूरजु नदरि न पाइ ॥६॥

पउड़ी ॥
दुहां कंधारा मुहि जुड़े ढोल संख नगारे बजे ॥
राकसि आए रोहले तरवारी बखतर सजे ॥
जुटे सउहे जुध नं ु इक जात न जाणन भजे ॥
खेत अंदरि जोधे गजे ॥७॥
जंग मुसाफा बजिआ रणि घुरे नगारे चावले ॥
झूलण नेजे बैरका नीसाण लसनि लसावले ॥
ढोल नगारे पउण दे ऊंघन जाणु जटावले ॥
दुरगा दानो डहे रण नाद वजन खेतु भीहावले ॥
बीर परोते बरछीइं े जण डाल चमुटे आवले ॥
इक वढे तेगी तड़फीअन मद पीते लोटनि बावले ॥
इक चुण चुण झाड़उ कढीअन रेत विचो सुइना डावले ॥
गदा त्रिसूलां बरछीआं तीर वगन खरे उतावले ॥
जण डसे भुजंगम सावले ॥ मर जावनि बीर रुहावले ॥८॥
देखण चंड प्रचंड नं ू रण घुरे नगारे ॥
धाए राकसि रोहले चउगिरदे भारे ॥
हथीं तेगां पकड़ि कै रण भिड़े करारे ॥
कदे न नठे जुध ते जोधे जुझारे ॥
दिल विच रोह बढाइ कै मारि मारि पुकारे ॥
मारे चंड प्रचंड नै बीर खेत उतारे ॥
मारे जापन बिजुली सिरभारि मुनारे ॥९॥
चोट पई दमामे दलां मुकाबला ॥
देवी दसत नचाई सीहण सारदी ॥
पेटि मलंदे लाई महखे दैत नं ू ॥
गुरदे आंदा खाई नाले रुकड़े ॥
जेही दिल विच आई कही सुणाइ कै ॥
चोटी जाण दिखाई तारे धूमकेत ॥१०॥
चोटां पवन नगारे अणीआं जटीआं ॥
धूह लईआं तरवारी देवां दानवी ॥
वाहन वारो वारी सूरे संघरे ॥
वगै रतु झुलारी जिउ गेरू बाबत्रा ॥
देखन बैठ अटारी नारी राकसां ॥
पाई धूम सवारी दुरगा दानवी ॥११॥
लक्ख नगारे वजन आम्हो साम्हणे ॥
राकस रणो न भजन रोहे रोहले ॥
सीहां वांगू गजण सभे सूरमे ॥
तणि तणि कैबर छडन दुरगा सामणे ॥१२॥
घुरे नगारे दोहरे रण संगलीआले ॥
धूड़ि लपेटे धूहरे सिरदार जटाले ॥
उखलीआं नासा जिना मुहि जापन आले ॥
धाए देवी साहमणे बीर मुछलीआले ॥
सुरपत जेहे लड़ हटे बीर टले न टाले ॥
गजे दुरगा घेरि कै जणु घणीअरु काले ॥१३॥
चोट पई खरचामी दलां मुकाबला ॥
घेर लई वरिआमी दुरगा आइ कै ॥
राखस वडे अलामी भज न जाणदे ॥
अंत होए सुरगामी मारे देवता ॥१४॥
अगणत घुरे नगारे दलां भिड़ंदिआं ॥
पाए महखल भारे देवा दानवां ॥
वाहन फट करारे राकसि रोहले ॥

जापण तेगी आरे मिआनो धूहीआं ॥
जोधे वडे मुनारे जापन खेत विचि ॥
देवी आप सवारे पब जवेहणे ॥
कदे न आखन हारे धावन साहमणे ॥
दुरगा सभ संघारे राखसि खड़ग लै ॥१५॥
उमल लथे जोधे मारू बजिआ ॥
बदल जिउ महिखासुर रण विचि गजिआ ॥
इंद्र जेहा जोधा मैथउ भजिआ ॥
कउण विचारी दुरगा जिन रणु सजिआ ॥१६॥
वजे ढोल नगारे दलां मुकाबला ॥
तीर फिरै रैबारे आम्हो साम्हणे ॥
अगणत बीर संघारे लगदी कैबरी ॥
डिगे जाणि मुनारे मारै बिजु दे ॥
खुली वाली दैत अहाड़े सभे सूरमे ॥
सुते जाणि जटारे भंगा खाइ कै ॥१७॥
दुहां कंधारां मुहि जुड़े नालि धउसा भारी ॥
कड़क उठिआ फउज ते वडा अहंकारी ॥
लै कै चलिआ सूरमे नालि वडे हजारी ॥
मिआनो खंडा धूहिआ महिखासुर भारी ॥
उमल लथे सूरमे मार मची करारी ॥
जापे चले रत दे सलले जटधारी ॥१८॥
सट पई जमधाणी दलां मुकाबला ॥
धूहि लई क्रिपाणी दुरगा मिआन ते ॥
चंडी राकसि खाणी वाही दैत नूं ॥
कोपर चूर चवाणी लथी करग लै ॥
पाखर तुरा पलाणी रड़की धरत जाइ ॥
लैदी अघा सिधाणी सिंगां धउल दिआं ॥
कूरम सिर लहिलाणी दुसमन मारि कै ॥
वढे गन तिखाणी मूए खेत विच ॥
रण विच घती घाणी लोहू मिझ दी ॥
चारे जुग कहाणी चलग तेग दी ॥
बिधण खेत विहाणी महखे दैत नूं ॥१९॥
इती महखासुर दैत मारे दुरगा आइआ ॥
चउदह लोकां राणी सिंघु नचाइआ ॥
मारे बीर जटाणी दल विचि अगले ॥
मंगन नाही पाणी दली हंकार कै ॥
जण करी समाइ पठाणी सुणि कै रागु नूं ॥
रतू दे हड़वाणी चले बीर खेत ॥
पीता फुल इआणी घुमन सूरमे ॥२०॥
होई अलोप भवानी देवां नूं राजु दे ॥
ईसर दी बरदानी होई जितु दिन ॥
सुंभ निसुंभ गुमानी जनमे सूरमे ॥
इंद्र दी रजधानी तकी जितणी ॥२१॥
इंद्रपुरी ते धावणा वड जोधी मता पकाइआ ॥
संज पटेला पाखरा भेड़ संदा साजु बणाइआ ॥
जंमे कटक अछूहणी असमानु गरदी छाइआ ॥
रोह सुंभ निसुंभ सिधाइआ ॥२२॥
सुंभ निसुंभ अलाइआ वड जोधी संघरु वाए ॥
रोह दिखाली दितीआ वरिआमी तुरे नचाए ॥
घुरे दमामे दोहरे जम बाहण जिउ अरड़ाए ॥

देउ दानो लुझण आए ॥२३॥
दानो देउ अनागी संघरु रचिआ ॥
फुल खिड़े जण बागीं बाणे जोधिआं ॥
भूतां इलां कागीं गोसत भखिआ ॥
हुंमड़ धुंमड़ जागी घती सूरिआं ॥२४॥
सट पई नगारे दलां मुकाबला ॥
दिते देउ भजाई मिलि कै राकसीं ॥
लोकी तिही फिराई दोही आपणी ॥
दुरगा दी साम तकाई देवां डरदिआं ॥
आंदी चंडि चड़ाई उते राकसां ॥२५॥
आई फेर भवानी खबरी पाईआं ॥
दैत वडे अभिमानी होए एकठे ॥
लोचन धूम गुमानी राइ बुलाइआ ॥
जग विच वडा दानो आप कहाइआ ॥
सट पई खरचामी दुरगा लिआवणी ॥२६॥
कड़क उठी रण चंडी फउजां देख कै ॥
धूहि मिआनो खंडा होई साहमणे ॥
सभे बीर संघारे धूमरनैण दे ॥
जण लै कटे आरे दरखत बाढीआं ॥२७॥
चोबीं धउंस बजाई दलां मुकाबला ॥
रोह भवानी आई उते राकसां ॥
खबै दसत नचाई सीहण सार दी ॥
बहुतिआं दे तन लाई कीती रंगुली ॥
भाईआं मारन भाई दुरगा जाणि कै ॥
रोह होइ चलाई राकसि राइ नूं ॥
जम पुर दीआ पठाई लोचन धूम नूं ॥
जापे दिती साई मारण सुंभ दी ॥२८॥
भंने दैत पुकारे राजे सुंभ थै ॥
लोचनधूम संघारे सणे सिपाहीआं ॥
चुणि चुणि जोधे मारे अंदर खेत दै ॥
जापन अंबरि तारे डिगनि सूरमे ॥
गिरे परबत भारे मारे बिजु दै ॥
दैतां दे दल हारे दहसत खाइ कै ॥
बचे सु मारे मारे रहदे राइ थै ॥२९॥
रोह होइ बुलाए राकसि राइ ने ॥
बैठे मता पकाए दुरगा लिआवणी ॥
चंड अर मुंड पठाए बहुता कटकु दै ॥
जापे छपर छाए बणीआ केजमा ॥
जेते राइ बुलाइ चले जुद्ध नो ॥
जण जम पुर पकड़ चलाए सभे मारने ॥३०॥
ढोल नगारे वाए दलां मुकाबला ॥
रोह रुहेले आए उते राकसां ॥
सभनी तुरे नचाए बरछे पकड़ि कै ॥
बहुते मार गिराए अंदरि खेत दै ॥
तीरी छहबर लाई बुठी देवता ॥३१॥
भेरी संख वजाए संघरि रचिआ ॥
तणि तणि तीर चलाए दुरगा धनख लै ॥
जिनी दसत उठाए रहे न जीवदे ॥
चंड अर मुंड खपाए दोनो देवता ॥३२॥
सुंभ निसुंभ रिसाए मारे दैत सुण ॥

जोधे सभ बुलाए आपणे मजलसी ॥
जिनी देउ भजाए इंद्र जेवहे ॥
तेई मार गिराए पल विच देवता ॥
ओनी दसती दसत वजाए तिना चित करि ॥
फिर स्रणवत बीज चलाए बीड़े राइ दे ॥
संज पटोला पाए चिलकत टोपीआं ॥
लुझण नो अरड़ाए राकस रोहले ॥
कदे न किने हटाए जुध मचाइ कै ॥
मिल तेई दानो आए हुण संघरि देखणा ॥३३॥
दैती डंड उभारी नेड़ै आइ कै ॥
सिंघ करी असवारी दुरगा सोर सुण ॥
खबे दसत उभारी गदा फिराइ कै ॥
सैना सभ संघारी स्रणवत बीज दी ॥
जण मद खाइ मदारी घूमन सूरमे ॥
अगणत पाउ पसारी रुले अहाड़ विचि ॥
जापे खेड खिडारी सुते फाग नं ॥३४॥
स्रणवत बीज हकारे रहिंदे सूरमे ॥
जोधे जेड मुनारे दिसण खेत विचि ॥
सभनी दसत उभारे तेगां धूहि कै ॥
मारो मार पुकारे आए साहमणे ॥
संजाते ठणिकारे तेगीं उभरे ॥
घाड़ घड़नि ठठिआरे जाणि बणाइ कै ॥३५॥
सट पई जमधाणी दलां मुकाबला ॥
घूमर बरग सताणी दल विचि घतिओ ॥
सणे तुरा पलाणी डिगण सूरमे ॥
उठि उठि मंगणि पाणी घाइल घूमदे ॥
एवडु मारि विहाणी उपर राकसां ॥
बिजल जिउ झरलाणी उठी देवता ॥३६॥
चोबी धउस उभारी दलां मुकाबला ॥
सभो सैना मारी पल विचि दानवी ॥
दुरगा दानो मारे रोह बढाइ कै ॥
सिर विच तेग वगाई स्रणवत बीज दे ॥३७॥
अगणत दानो भारे होए लोहूआ ॥
जोधे जेड मुनारे अंदरि खेत दै ॥
दुरगा नो ललकारे आए साहमणे ॥
दुरगा सभ संघारे राकस आंवदे ॥
रतू दे परनाले तिन ते भुइ पए ॥
उठे कारणिआरे राकस हड़हड़ाइ ॥३८॥
धगा संगलीआली संघर वाइआ ॥
बरछी बुंबलीआली सूरे संघरे ॥
भेड़ि मचिआ बीराली दुरगा दानवीं ॥
मार मची मुहराली अंदरि खेत दै ॥
जण नट लथे छाली ढोलि बजाइ कै ॥
लोहू फाथी जाली लोथी जमधड़ी ॥
घण विचि जिउ छंछाली तेगां हसीआं ॥
घुंमरिआर सिआली बणीआं केजमां ॥३९॥
धगा सूली बजाईआं दलां मुकाबला ॥
धूहि मिआनो लईआं जुआनी सूरमी ॥
स्रणवत बीज बधाईआं अगणत सूरतां ॥
दुरगा सउहें आईआं रोह बढाइ कै ॥

सभनी आण वगाईआं तेगां धूहि कै ॥
दुरगा सभ बचाईआं ढाल संभाल कै ॥
देवी आप चलाईआं तकि तकि दानवी ॥
लोहू नालि डुबाईआं तेगां नंगीआं ॥
सारसुती जनु नाईआं मिल कै देवीआं ॥
सभे मार गिराईआं अंदरि खेत दै ॥
तिदूं फेरि सवाईआं होईआं सूरतां ॥४०॥
सूरी संघरि रचिआ ढोल संख नगारे वाइ कै ॥
चंड चितारी कालका मनि बाहला रोस बढाइ कै ॥
निकली मथा फोड़ि कै जन फते नीसाण बजाइ कै ॥
जाग सु जंमी जुध नो जरवाणा जणु मरड़ाइ कै ॥
दल विचि घेरा घतिआ जण सींह तुरिआ गणिणाइ कै ॥
आप विसूला होइआ तिहु लोकां ते खुनसाइ कै ॥
रोह सिधाइआं चक्र पान कर निंदा खड़ग उठाइ कै ॥
अगै राकस बैठे रोहले तीरी तेगी छहबर लाइ कै ॥
पकड़ पछाड़े राकसां दल दैतां अंदरि जाइ कै ॥
बहु केसी पकड़ि पछाड़िअनि तिन अंदरि धूम रचाइ कै ॥
बडे बडे चुण सूरमे गहि कोटी दए चलाइ कै ॥
रण काली गुसा खाइ कै ॥४१॥
दुहा कंधारा मिुह जुड़े अणीआरा चोईआं ॥
धूहि किरपाणां तिक्खीआ नाल लोहू धोईआं ॥
हूरां स्रणवत बीज नं◌ू घति घिर खलोईआं ॥
लाड़ा वेखणि लाड़ीआं चउगिरदै होईआं ॥४२॥
चोबी धउसी पाईआं दलां मुकाबला ॥
दसती धूह नचाईआं तेगां तिखीआं ॥
सूरिआं दे तन लाईआं गोशत गिद्धीआं ॥
बिद्धण राती आईआं मरदां घोड़िआं ॥
जोगणीआं मिलि धाईआं लोहू भक्खणा ॥
फउजां मारि हटाईअथ देवां दानवां ॥
भजदी कथा सुणाईआं राजे सुंभ थै ॥
भुईं न पउणै पाईआं बूंदा रकत दीआं ॥
काली खेत खपाईआं सभै सूरतां ॥
बहुती सिरी विहाईआं घड़ीआं काल कीआ ॥
जाणि न जाए माईआं जूझे सूरमे ॥४३॥
सुंभ सुणी करहाली स्रणवत बीज दी ॥
रण विचि किनै न झाली दुरगा आंवदी ॥
बहुते बीर जटाली उठे आखि कै ॥
चोटा पान तबाली जासन जुद्ध नं◌ू ॥
थरि थरि प्रिथमी चाली दलां चड़ंदिआं ॥
नाउ जिवे है हाली सहु दरीआउ विचि ॥
धूड़ि उताहां घाली छड़ी तुरंगमां ॥
जाणि पुकारू चाली धरती इंद्र थै ॥४४॥
आहरि मिलिआ आहरीआं सैण सूरिआं साजी ॥
चले सउहे दुरगसाह जण काबै हाजी ॥
तीरी तेगी जमधड़ी रणि वंडी भाजी ॥
इक घाइल घुमनि सूरमे जणु मकतब काजी ॥
इक बीर परोते बरछीए जिउ झुक पउन निवाजी ॥
इक दुरगा सउहे खुनस कै खुणसाइन ताजी ॥
इक धावन दुरगा साम्हणे जिउ भुखिआए पाजी ॥
कदे न रजे जुझ ते रजि होए राजी ॥४५॥

बजे संगलीआले संघर डोहरे ॥
डहे जु खेत जटाले हाठां जोड़ि कै ॥
नेजे बंबलीआले दिसन ओरड़े ॥
चले जाण जटाले नावण गंग नूं ॥४६॥
दुरगा अतै दानवी सूल होईआं कंगा ॥
वाछड़ घती सूरिआं विच खेत खतंगां ॥
धूहि क्रिपाणा तिक्खीआं बढ लाहनि अंगां ॥
पहला दलां मिलंदिआं भेड़ु पाइआ निहंगां ॥४७॥
ओरड़ फउजां आईआं बीर चड़े कंधारी ॥
सड़क मिआनो कढीआं तिक्खीआ तरवारी ॥
कड़क उठे रण मचिआ वडे हंकारी ॥
सिर धड़ बाहां गन ले फुल जेहै बाड़ी ॥
जापे कटे बाढीआं रुख चंदनि आरी ॥४८॥
दुहा कंधारा मुहि जुड़े जा सट पई खरवार कउ ॥
तक तक कैबरि दुरगसाह तक मारे भले जुझार कउ ॥
पैदल मारे हाथीआं संगि रथ गिरे असवार कउ ॥
सोहन संजा बागड़ा जणु लगे फुल अनार कउ ॥
गुसे आई कालका हथि सजे लै तलवार कउ ॥
एदू पारउ ओत पार हरनाकसि कई हजार कउ ॥
जिण इका रही कंधार कउ ॥
सद रहमत तेरे वार कउ ॥४९॥
दुहा कंधारा मुहि जुड़े सट पई जमधाण कउ ॥
तद खिंग नसुंभ नचाइआ डालि उपरि बरगसताण कउ ॥
फड़ी बिलंद मंगाइउसु फरमाइस करि मुलतान कउ ॥
गुसे आई साहमणे रण अंदरि घतण घाण कउ ॥
अगै तेग वगाई दुरगसाह बढ सुंभन बही पलाण कउ ॥
रड़की जाइ कै धरत कउ बढ पाखर बढ किकाण कउ ॥
बीर पलाणो डिगिआ करि सिजदा सुंभ सुजाण कउ ॥
साबास सलोणे खान कउ ॥
सद साबास तेरे ताण कउ ॥
तारीफां पान चबान कउ ॥
सद रहमत कैफां खाण कउ ॥
सद रहमत तुरे नचाण कउ ॥५०॥
दुरगा अतै दानवी गह संघरि कथे ॥
ओरड़ उठे सूरमे आ डाहे मथे ॥
कट तुफंगी कैबरी दल गाहि निकथे ॥
देखणि जंग फरेशते असमानो लथे ॥५१॥
दुहा कंधारां मुह जुड़े दल घुरे नगारे ॥
ओरड़ आए सूरमे सिरदार अणिआरे ॥
लै के तेगां बरछीआं हथिआर उभारे ॥
टोप पटेला पाखरां गलि संज सवारे ॥
लै के बरछी दुरगसाह बहु दानव मारे ॥
चड़े रथी गज घोड़िई मार भुइ ते डारे ॥
जाण हलवाई सीख नाल विंन्ह वड़े उतारे ॥५२॥
दुहां कंधारां मुहि जुड़े नाल धउसा भारी ॥
लई भगउती दुरगसाह वर जागन भारी ॥
लाई राजे सुंभ नो रतु पीऐ पिआरी ॥
सुंभ पलाणो डिगिआ उपमा बीचारी ॥
डुब रतु नालहु निकली बरछी दुधारी ॥
जाण रजादी उतरी पैन सूही सारी ॥५३॥

दुरगा अतै दानवी भेड़ पइआ सबाहीं ॥
ससत्र पजूते दुरगसाह गह सभनीं बाहीं ॥
सुंभ निसुंभ संघारिआ वथ जे है साहीं ॥
फउजां राकसिआरीआं वेख रोवनि धाहीं ॥
मुहि कड़ूचे घाह दे छड घोड़े राहीं ॥
भजदे होइ मारीअन मुड़ झाकन नाहीं ॥५४॥
सुंभ निसुंभ पठाइआ जम दे धाम नो ॥
इंद्र सद बुलाइआ राज अभिशेखनो ॥
सिर पर छत्र फिराइआ राजे इंद्र दै ॥
चउदह लोकां छाइआ जसु जगमात दा ॥
दुरगा पाठ बणाइआ सभे पउड़ीआं ॥
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ ॥५५॥

◀ *इति स्री दुरगा की वार समापतं सतु सुभम सतु ॥*

SECTION 07: GIAN PRABODH

Awakening of Knowledge · By Guru Gobind Singh Ji

गिआन प्रबोध ॥

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ गिआन प्रबोध ग्रंथ लिख्यते ॥

पातिसाही १० ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

नमो नाथ पूरे सदा सिध करमं ॥
अछेदी अभेदी सदा एक धरमं ॥
कलंकं बिना निहकलंकी सरूपे ॥
अछेदं अभेदं अखेदं अनूपे ॥१॥
नमो लोक लोकेस्वरं लोक नाथे ॥
सदैवं सदा सरब साथं अनाथे ॥
नोम एक रूपं अनेकं सरूपे ॥
सदा सरब साहं सदा सरब भूपे ॥२॥
अछेदं अभेदं अनामं अठामं ॥
सदा सरबदा सिधदा बुधि धामं ॥
अजंत्रं अमंत्रं अकंत्रं अभरंमं ॥
अखेदं अभेदं अछेदं अकरमं ॥३॥
अगाधे अबाधे अगंतं अनंतं ॥
अलेखं अभेखं अभूतं अगंतं ॥
न रंगं न रूपं न जातं न पातं ॥
न सत्रो न मित्रो न पुत्रो न मातं ॥४॥
अभूतं अभंगं अभिखं भवानं ॥
परेयं पुनीतं पवित्रं प्रधानं ॥
अगंजे अभंजे अकामं अकरमं ॥
अनंते बिअंते अभूमे अभरमं ॥५॥
नही जान जाई कछू रूप रेखं ॥
कहा बासु ता को फिरै कउन भेखं ॥
कहा नाम ता को कहा कै कहावै ॥
कहा मै बखानो कहै मै न आवै ॥६॥
अजोनी अजै परम रूपी प्रधानै ॥
अछेदी अभेदी अरूपी महानै ॥
असाधे अगाधे अगंजुल गनीमे ॥
अरंजुल अराधे रहाकुल रहीमे ॥७॥
सदा सरबदा सिधदा बुधि दाता ॥
नमो लोक लोकेस्वरं लोक ग्याता ॥
अछेदी अभै आदि रूपं अनंतं ॥
अछेदी अछै आदि अद्वै दुरंतं ॥८॥

नराज छंद ॥

अनंत आदि देव है ॥
बिअंत भरम भेव है ॥

अगाधि बिआधि नास है ॥
सदैव सरब पास है ॥१॥९॥
बचित्र चित्र चाप है ॥
अखंड दुसट खाप है ॥
अभेद आदि काल है ॥
सदैव सरब पाल है ॥२॥१०॥
अखंड चंड रूप है ॥
प्रचंड सरब स्रूप है ॥
काल हूं के काल है ॥
सदैव रछपाल है ॥३॥११॥
क्रिपाल दिआल रूप है ॥
सदैव सरब भूप है ॥
अनंत सरब आस है ॥
परेव परम पास है ॥४॥१२॥
अद्रिसट अंत्र धिआन है ॥
सदैव सरब मान है ॥
क्रिपाल काल हीन है ॥
सदैव साध अधीन है ॥५॥१३॥
भजस तुयं ॥
भजस तुयं ॥ रहाउ ॥
अगाधि बिआधि नासनं ॥
परेयं परम उपासनं ॥
त्रिकाल लोक मान है ॥
सदैव पुरख परधान है ॥६॥१४॥
तथस तुयं ॥
तथस तुयं ॥ रहाउ ॥
क्रिपाल दिआल करम है ॥
अगंज भंज भरम है ॥
त्रिकाल लोक पाल है ॥
सदैव सरब दिआल है ॥७॥१५॥
जपस तुयं ॥
जपस तुयं ॥ रहाउ ॥
महान मोन मान है ॥
परेव परम प्रधान है ॥
पुरान प्रेत नासनं ॥
सदैव सरब पासनं ॥८॥१६॥
प्रचंड अखंड मंडली ॥
उदंड राज सु थली ॥
जगंत जोति जुआलका ॥
जलंत दीप मालका ॥९॥१७॥
क्रिपाल दिआल लोचनं ॥
मंचक बाण मोचनं ॥
सिरं करीट धारीयं ॥
दिनेस क्रित हारीयं ॥१०॥१८॥
बिसाल लाल लोचनं ॥
मनोज मान मोचनं ॥
सुभंत सीस सु प्रभा ॥
चक्रत चारु चंद्रका ॥११॥१९॥
जगंत जोत जुआलका ॥
छकंत राज सु प्रभा ॥

जगंत जोति जैतसी ॥
बदंत क्रित ईसुरी ॥१२॥२०॥

त्रिभंगी छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

अनकाद सरूपं अमित बिभूतं अचल सरूपं बिसु करणं ॥
जग जोति प्रकासं आदि अनासं अमित अगासं सरब भरणं ॥
अनगंज अकालं बिसु प्रतिपालं दीन दिआलं सुभ करणं ॥
आनंद सरूपं अनहद रूपं अमित बिभूतं तव सरणं ॥१॥२१॥
बिस्वंभर भरणं जगत प्रकरणं अधरण धरणं सिसट करं ॥
आनंद सरूपी अनहद रूपी अमित बिभूती तेज बरं ॥
अनखंड प्रतापं सभ जग थापं अलख अतापं बिसु करं ॥
अद्वै अबिनासी तेज प्रकासी सरब उदासी एक हरं ॥२॥२२॥
अनखंड अमंडं तेज प्रचंडं जोति उदंडं अमित मतं ॥
अनभै अनगाधं अलख अबाधं बिसु प्रसाधं अमित गतं ॥
आनंद सरूपी अनहद रूपी अचल बिभूती भव तरणं ॥
अनगाधि अबाधं जगत प्रसाधं सरब अराधं तव सरणं ॥३॥२३॥
अकलंक अबाधं बिसु प्रसाधं जगत अराधं भव नासं ॥
बिस्वंभर भरणं किलविख हरणं पतत उधरणं सभ साथं ॥
अनाथन नाथे अक्रित अगाथे अमित अनाथे दुख हरणं ॥
अगंज अबिनासी जोति प्रकासी जगत प्रणासी तुय सरणं ॥४॥२४॥
कलस ॥
अमित तेज जग जोति प्रकासी ॥
आदि अछेद अभै अबिनासी ॥
परम तत परमारथ प्रकासी ॥
आदि सरूप अखंड उदासी ॥५॥२५॥

त्रिभंगी छंद ॥

अखंड उदासी परम प्रकासी आदि अनासी बिस्व करं ॥
जगतावल करता जगत प्रहरता सभ जग भरता सिध भरं ॥
अछै अबिनासी तेज प्रकासी रूप सु रासी सरब छितं ॥
आनंद सरूपी अनहद रूपी अलख बिभूती अमित गतं ॥६॥२६॥
कलस ॥
आदि अभै अनगाधि सरूपं ॥
राग रंगि जिह रेख न रूपं ॥
रंक भयो रावत कहूं भूपं ॥
कहूं समुंद्र सरता कहूं कूपं ॥७॥२७॥

त्रिभंगी छंद ॥

सरता कहूं कूपं समुद सरूपं अलख बिभूतं अमित गतं ॥
अद्वै अबिनासी परम प्रकासी तेज सुरासी अक्रित क्रितं ॥
जिह रूप न रेखं अलख अभेखं अमित अद्वैखं सरब मई ॥
सभ किलविख हरणं पतित उधरणं असरणि सरणं एक दई ॥८॥२८॥
कलस ॥
आजानु बाहु सारंग कर धरणं ॥
अमित जोति जग जोत प्रकरणं ॥
खड़ग पाण खल दल बल हरणं ॥
महाबाहु बिस्वंभर भरणं ॥९॥२९॥

त्रिभंगी छंद ॥

खल दल बल हरणं दुसट बिदरणं असरण सरणं अमित गतं ॥
चंचल चख चारण मछ बिडारण पाप प्रहारण अमित मतं ॥
आजान सु बाहं साहन साहं महिमा माहं सरब मई ॥
जल थल बन रहिता बन त्रिनि कहिता खल दलि दहिता सु नरि सही ॥१० ॥३० ॥
कलस ॥
अति बलिसट दल दुसट निकंदन ॥
अमित प्रताप सगल जग बंदन ॥
सोहत चारु चित्र कर चंदन ॥
पाप प्रहारण दुसट दल दंडन ॥११ ॥३१ ॥

छपै छंद ॥

बेद भेद नही लखै ब्रहम ब्रहमा नही बुझै ॥
बिआस परासुर सुक सनादि सिव अंतु न सुझै ॥
सनति कुआर सनकादि सरब जउ समा न पावहि ॥
लख लखमी लख बिसन किसन कई नेत बतावहि ॥
असंभ रूप अनभै प्रभा अति बलिसट जलि थलि करण ॥
अचुत अनंत अद्वै अमित नाथ निरंजन तव सरण ॥१ ॥३२ ॥
अचुत अभै अभेद अमित आखंड अतुल बल ॥
अटल अनंत अनादि अखै अखंड प्रबल दल ॥
अमित अमित अनतोल अभू अनभेद अभंजन ॥
अनबिकार आतम सरूप सुर नर मुन रंजन ॥
अबिकार रूप अनभै सदा मुन जन गन बंदत चरन ॥
भव भरन करन दुख दोख हरन अति प्रताप भ्रम भै हरन ॥२ ॥३३ ॥

छपै छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

मुख मंडल पर लसत जोति उदोत अमित गति ॥
जटत जोत जगमगत लजत लख कोटि निखति पति ॥
चक्रवरती चक्रवै चक्रत चउचक्र करि धरि ॥
पदम नाथ पदमाछ नवल नाराइण नरिहरि ॥
कालख बिहंडण किलविख हरण सुर नर मुन बंदत चरण ॥
खंडण अखंड मंडण अभै नमो नाथ भउ भै हरण ॥३ ॥३४ ॥

छपै छंद ॥

नमो नाथ न्रिदाइक नमो निम रूप निरंजन ॥
अगंजाण अगंजण अभंज अनभेद अभंजन ॥
अछै अखै अबिकार अभै अनभिज अभेदन ॥
अखैदान खेदन अखिज अनछिद्र अछेदन ॥
आजान बाहु सारंगधर खड़गपाण दुरजन दलण ॥
नर वर नरेस नाइक न्रिपणि नमो नवल जल थल रवणि ॥४ ॥३५ ॥
दीन दयाल दुख हरण दुरमत हंता दुख खंडण ॥
महा मोन मन हरन मदन मूरत महि मंडन ॥
अमित तेज अबिकार अखै आभंज अमित बल ॥
निरभंज निरभउ निरवैर निरजुर न्रिप जल थल ॥
अछै सरूप अछू अछित अछै अछान अछर ॥
अद्वै सरूप अद्विय अमर अभिबंदत सुर नर असुर ॥५ ॥३६ ॥
कुल कलंक करि हीन क्रिपा सागर करुणा कर ॥
करण कारण समरथ क्रिपा की सूरत क्रित धर ॥
काल करम कर हीन क्रिआ जिह कोइ न बुझै ॥

कहा कहै कहि करै कहा कालन कै सुझै ॥
कंजलक नैन कंबू ग्रीवहि कटि केहर कुंजर गवन ॥
कदली कुरंक करपूर गत बिन अकाल दुजो कवन ॥६॥३७॥
अलख रूप अलेख अबै अनभूत अभंजन ॥
आदि पुरख अबिकार अजै अनगाध अगंजन ॥
निरबिकार निरजुर सरूप निर द्वैख निरंजन ॥
अभंजान भंजन अनभेद अनभूत अभंजन ॥
साहान साह सुंदर सुमत बड सरूप बडवै बखत ॥
कोटकि प्रताप भूअ भान जिम तपत तेज इसथित तखत ॥७॥३८॥

छपै छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

चक्रत चार चक्रवै चक्रत चउकुंट चवगन ॥
कोट सूर सम तेज तेज नहीं दून चवगन ॥
कोट चंद चक परै तुल नहीं तेज बिचारत ॥
बिआस परासर ब्रहम भेद नहि बेद उचारत ॥
साहान साह साहिब सुघरि अति प्रताप सुंदर सबल ॥
राजान राज साहिब सबल अमित तेज अछै अछल ॥८॥३९॥

कबितु ॥ त्वप्रसादि ॥

गहिओ जो न जाइ सो अगाह कै कै गाईअतु छेदिओ जो न जाइ सो अछेद कै पछानीऐ ॥
गंजिओ जो न जाइ सो अगंज कै कै जानीअतु भंजिओ जो न जाइ सो अभंज कै कै मानीऐ ॥
साधिओ जो न जाइ सो असाधि कै कै साध कर छलिओ जो न जाइ सो अछल कै प्रमानीऐ ॥
मंत्र मै न आवै सो अमंत्र कै कै मानु मन जंत्र मै न आवै सो अजंत्र कै कै जानीऐ ॥१॥४०॥
जात मै न आवै सो अजात कै कै जान जीअ पात मै न आवै सो अपात कै बुलाईऐ ॥
भेद मै न आवै सो अभेद कै कै भाखीअतु छेद्यो जो न जाइ सो अछेद कै सुनाईऐ ॥
खंडिओ जो न जाइ सो अखंड जू को खिआलु कीजै खिआल मै न आवै गमु ता को सदा खाईऐ ॥
जंत्र मै न आवै अजंत्र कै कै जापीअतु धिआन मै न आवै ता को धिआनु कीजै धिआईऐ ॥२॥४१॥
छत्रधारी छत्रीपति छैल रूप छितनाथ छौणी कर छाइआ बर छत्रीपत गाईऐ ॥
बिस्व नाथ बिस्वंभर बेदनाथ बालाकर बाजीगरि बानधारी बंध न बताईऐ ॥
निउली करम दूधाधारी बिदिआधर ब्रहमचारी धिआन को लगावै नैक धिआन हूं न पाईऐ ॥
राजन के राजा महाराजन के महाराजा ऐसो राज छोडि अउर दूजा कउन धिआईऐ ॥३॥४२॥
जुध के जितईआ रंग भूम के भवईआ भार भूम के मिटईआ नाथ तीन लोक गाईऐ ॥
काहू के तनईआ है न मईआ जा के भईआ कोऊ छउनी हू के छईआ छोड का सिउ प्रीत लाईऐ ॥
साधना सधईआ धूल धानी के धुजईआ धोम धार के धरईआ धिआन ता को सदा लाईऐ ॥
आउ के बढईआ एक नाम के जपईआ अउर काम के करईआ छोड अउर कउन धिआईऐ ॥४॥४३॥
काम को कुनिंदा खैर खूबी को दिहंदा गज गाजी को गजिंदा सो कुनिंदा कै बताईऐ ॥
चाम के चलिंदा घाउ घाम ते बचिंदा छत्र छैनी के छलिंदा सो दिहंदा कै मनाईऐ ॥
जर के दिहंदा जान मान को जनिंदा जोत जेब को गजिंदा जान मान जान गाईऐ ॥
दोख के दलिंदा दीन दानस दिहंदा दोख दुरजन दलिंदा धिआइ दूजो कउन धिआईऐ ॥५॥४४॥
सालिस सहिंदा सिधताई को सधिंदा अंग अंग मै अविंदा एकु एको नाथ जानीऐ ॥
कालख कटिंदा खुरासान को खुनिंदा ग्रब गाफल गिलिंदा गोल गंजख बखानीऐ ॥
गालब गरंदा जीत तेज के दिहंदा चित्र चाप के चलिंदा छोड अउर कउन आनीऐ ॥
सतता दिहंदा सतताई को सुखिंदा करम काम को कुनिंदा छोड दूजा कउन मानीऐ ॥६॥४५॥
जोत को जगिंदा जंगे जाफरी दिहंदा मित्र मारी के मलिंदा पै कुनिंदा कै बखानीऐ ॥
पालक पुनिंदा परम पारसी प्रगिंदा रंग राग के सुनिंदा पै अनंदा तेज मानीऐ ॥
जाप के जपिंदा खैर खूबी के दहिंदा खून माफ को कुनिंदा है अभिज रूप ठानीऐ ॥
आरजा दहिंदा रंग राग को बिढंदा दुसट द्रोह के दलिंदा छोड दूजो कौन मानीऐ ॥७॥४६॥
आतमा प्रधान जाह सिधता सरूप ताह बुधता बिभूत जाह सिधता सुभाउ है ॥
राग भी न रंग ताहि रूप भी न रेख जाहि अंग भी सुरंग ताह रंग के सुभाउ है ॥

चित्र सो बचित्र है परमता पवित्र है सु मित्र हूं के मित्र है बिभूत को उपाउ है ॥
देवन के देव है कि साहन के साह है कि राजन को राजु है कि रावन को राउ है ॥८॥४७॥

बहिर तवील छंद ॥ पसचमी ॥ त्वप्रसादि ॥

कि अगंजस ॥
कि अभंजस ॥
कि अरूपस ॥
कि अरंजस ॥१॥४८॥
कि अछेदस ॥
कि अभेदस ॥
कि अनामस ॥
कि अकामस ॥२॥४९॥
कि अभेखस ॥
कि अलेखस ॥
कि अनादस ॥
कि अगाधस ॥३॥५०॥
कि अरूपस ॥
कि अभूतस ॥
कि अदागस ॥
कि अरागस ॥४॥५१॥
कि अभेदस ॥
कि अछेदस ॥
कि अछादस ॥
कि अगाधस ॥५॥५२॥
कि अगंजस ॥
कि अभंजस ॥
कि अभेदस ॥
कि अछेदस ॥६॥५३॥
कि असेअस ॥
कि अधेअस ॥
कि अगंजस ॥
कि इकंजस ॥७॥५४॥
कि उकारस ॥
कि निकारस ॥
कि अखंजस ॥
कि अभंजस ॥८॥५५॥
कि अघातस ॥
कि अकिआतस ॥
कि अचलस ॥
कि अछलस ॥९॥५६॥
कि अजातस ॥
कि अझातस ॥
कि अछलस ॥
कि अटलस ॥१०॥५७॥
अटाटसच ॥
अडाटसच ॥
अडंगसच ॥
अणंगसच ॥११॥५८॥
अतानसच ॥
अथानसच ॥

अदंगसच ॥
अनंगसच ॥१२॥५९॥
अपारसच ॥
अठारसच ॥
अबेअसतु ॥
अभेअसत ॥१३॥६०॥
अमानसच ॥
अहानसच ॥
अड़ंगसच ॥
अत्रंगसच ॥१४॥६१॥
अरामसच ॥
अलामसच ॥
अजोधसच ॥
अवोजसच ॥१५॥६२॥
असेअसतु ॥
अभेअसतु ॥
आअंगसतु ॥
इअंगसतु ॥१६॥६३॥
उकारसतु ॥
अकारसतु ॥
अखंडसतु ॥
अडंगसतु ॥१७॥६४॥
कि अतापहि ॥
कि अथापहि ॥
कि अंदगहि ॥
कि अनंगहि ॥१८॥६५॥
कि अतापहि ॥
कि अथापहि ॥
कि अनीलहि ॥
कि सुनीलहि ॥१९॥६६॥

अरध नराज छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

सजस तुयं ॥
धजस तुयं ॥
अलस तुयं ॥
इकस तुयं ॥१॥६७॥
जलस तुयं ॥
थलस तुयं ॥
पुरस तुयं ॥
बनस तुयं ॥२॥६८॥
गुरस तुयं ॥
गुफस तुयं ॥
निरस तुयं ॥
निदस तुयं ॥३॥६९॥
रवस तुयं ॥
ससस तुयं ॥
रजस तुयं ॥
तमस तुयं ॥४॥७०॥
धनस तुयं ॥
मनस तुयं ॥

ब्रिछस तुयं ॥
बनस तुयं ॥५ ॥७१ ॥
मतस तुयं ॥
गतस तुयं ॥
ब्रतस तुयं ॥
चितस तुयं ॥६ ॥७२ ॥
पितस तुयं ॥
सुतस तुयं ॥
मतस तुयं ॥
गतस तुयं ॥७ ॥७३ ॥
नरस तुयं ॥
त्रियस तुयं ॥
पितस तुयं ॥
ब्रिदस तुयं ॥८ ॥७४ ॥
हरस तुयं ॥
करस तुयं ॥
छलस तुयं ॥
बलस तुयं ॥९ ॥७५ ॥
उडस तुयं ॥
पुडस तुयं ॥
गडस तुयं ॥
दधस तुयं ॥१० ॥७६ ॥
रवस तुयं ॥
छपस तुयं ॥
गरबस तुयं ॥
दिरबस तुयं ॥११ ॥७७ ॥
जैअस तुयं ॥
खैअस तुयं ॥
पैअस तुयं ॥
त्रैअस तुयं ॥१२ ॥७८ ॥

निराज छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

चकंत चार चंद्रका ॥
सुभंत राज सु प्रभा ॥
दवंत दुसट मंडली ॥
सुभंत राज सु थली ॥१ ॥७९ ॥
चलंत चंड मंडका ॥
अखंड खंड दुपला ॥
खिवंत बिजु ज्वालका ॥
अनंत गदि बिदसा ॥२ ॥८० ॥
लसंत भाव उजलं ॥
दलंत दुख दु दलं ॥
पवंग पात सोहीयं ॥
समुंद्र बाज लोहीयं ॥३ ॥८१ ॥
निनंद गेद ब्रिदयं ॥
अखेद नाद दुधरं ॥
अठट बट बटकं ॥
अघट अनट सुखलं ॥४ ॥८२ ॥
अखुट तुट द्रिबकं ॥
अजुट छुट सुछकं ॥

अघुट तुट आसनं ॥
अलेख अभेख अनासनं ॥५ ॥८३ ॥
सुभंत दंत पदुकं ॥
जलंत साम सु घटं ॥
सुभंत छुद्र घंटका ॥
जलंत भार कछटा ॥६ ॥८४ ॥
सिरीसु सीस सुभीयं ॥
घटाक बान उभीयं ॥
सुभंत सीस सिधरं ॥
जलंत सिधरी नरं ॥७ ॥८५ ॥
चलंत दंत पतकं ॥
भजंत देखि दुदलं ॥
तजंत ससत्र असत्रकं ॥
चलंत चक्र चउदिसं ॥८ ॥८६ ॥
अगंम तेज सोभीयं ॥
रिखीस ईस लोभीयं ॥
अनेक बार धिआवही ॥
न तत्र पार पावही ॥९ ॥८७ ॥
अधो सु धूम धूमही ॥
अघूर नेत्र घूमही ॥
सु पंच अगन साधीयं ॥
न ताम पार लाधीयं ॥१० ॥८८ ॥
निवल आदि करमणं ॥
अनंत दान धरमणं ॥
अनंत तीरथ बासनं ॥
न एक नाम के समं ॥११ ॥८९ ॥
अनंत जग्य करमणं ॥
गजादि आदि धरमणं ॥
अनेक देस भरमणं ॥
न एक नाम के समं ॥१२ ॥९० ॥
इकंत कुंट बासनं ॥
भ्रमंत कोटकं बनं ॥
उचाटनाद करमणं ॥
अनेक उदास भरमणं ॥१३ ॥९१ ॥
अनेक भेख आसनं ॥
करोर कोटकं ब्रतं ॥
दिसा दिसा भ्रमेसनं ॥
अनेक भेख पेखनं ॥१४ ॥९२ ॥
करोर कोट दानकं ॥
अनेक जग्य क्रतबियं ॥
सन्यास आदि धरमणं ॥
उदास नाम करमणं ॥१५ ॥९३ ॥
अनेक पाठ पाठनं ॥
अनंत ठाट ठाटनं ॥
न एक नाम के समं ॥
समसत स्रिसट के भ्रमं ॥१६ ॥९४ ॥
जगादि आदि धरमणं ॥
बैराग आदि करमणं ॥
दयादि आदि कामणं ॥
अनाद संजमं ब्रिदं ॥१७ ॥९५ ॥

अनेक देस भरमणं ॥
अनेक दान संजमं ॥
अनेक गीत गिआननं ॥
अनंत गिआन धिआननं ॥१८॥९६॥
अनंत गिआन सुतमं ॥
अनेक क्रित सु ब्रितं ॥
बिआस नारद आदकं ॥
सु ब्रहमु मरम नहि लहं ॥१९॥९७॥
करोर जंत्र मंत्रणं ॥
अनंत तंत्रणं बणं ॥
बसेख ब्यास नासनं ॥
अनंत न्यास प्रासनं ॥२०॥९८॥
जपंत देव दैतनं ॥
थपंत जछ गंध्रबं ॥
बदंत बिदणोधरं ॥
गणंत सेस उरगणं ॥२१॥९९॥
जपंत पारवारयं ॥
समुंद्र सपत धारयं ॥
जणंत चार चक्रणं ॥
ध्रमंत चक्र बक्रणं ॥२२॥१००॥
जपंत पंनगं नकं ॥
बरं नरं बनसपतं ॥
अकास उरबीअं जलं ॥
जपंत जीव जल थलं ॥२३॥१०१॥
सो कोट चक्र बकत्रणं ॥
बदंत बेद चत्रकं ॥
असंभ असंभ मानीऐ ॥
करोर बिसन ठानीऐ ॥२४॥१०२॥
अनंत सुरसुती सती ॥
बदंत क्रित ईसुरी ॥
अनंत अनंत भाखीऐ ॥
अनंत अंत लाखीऐ ॥२५॥१०३॥

ब्रिध नराज छंद ॥

अनादि अगाधि बिआधि आदि अनादि को मनाईऐ ॥
अगंज अभंज अरंज अगंज गंज कउ धिआईऐ ॥
अलेख अभेख अद्वैख अरेख असेख को पछानीऐ ॥
न भूल जंत्र तंत्र मंत्र भरम भेख ठानीऐ ॥१॥१०४॥
क्रिपाल लाल अकाल अपाल दइआल को उचारीऐ ॥
अधरम करम धरम भरम करम मै बिचारीऐ ॥
अनंत दान धिआन गिआन धिआनवान पेखीऐ ॥
अधरम करम के बिना सु धरम करम लेखीऐ ॥२॥१०५॥
ब्रतादि दान संजमादि तीरथ देव करमणं ॥
है आदि कुंजमेद राजसू बिना न भरमणं ॥
निवल आदि करम भेख अनेक भेख मानीऐ ॥
अदेख भेख के बिना सु करम भरम जानीऐ ॥३॥१०६॥
अजात पात अमात तात अजात सिध है सदा ॥
असत्र मित्र पुत्र पउत्र जत्र तत्र सरबदा ॥
अखंड मंड चंड उदंड अखंड खंड भाखीऐ ॥
न रूप रंग रेख अलेख भेख मै न राखीऐ ॥४॥१०७॥

अनंत तीरथ आदि आसनादि नारद आसनं ॥
बैराग अउ संनिआस अउ अनादि जोग प्रासनं ॥
अनादि तीरथ संजमादि बरत नेम पेखीऐ ॥
अनादि अगाधि के बिना समसत भरम लेखीऐ ॥५ ॥१०८ ॥

रसावल छंद ॥

दइआदि आदि धरमं ॥
संनिआस आदि करमं ॥
गजादि आदि दानं ॥
हयादि आदि थानं ॥१ ॥१०९ ॥
सुवरन आदि दानं ॥
समुंद्र आदि इसनानं ॥
बिसुवादि आदि भरमं ॥
बिरकतादि आदि करमं ॥२ ॥११० ॥
निवल आदि करणं ॥
सु नील आदि बरणं ॥
अनील आदि धिआनं ॥
जपत तत प्रधानं ॥३ ॥१११ ॥
अमितकादि भगतं ॥
अविकतादि ब्रकतं ॥
प्रछसतुवा प्रजापं ॥
प्रभगता अथापं ॥४ ॥११२ ॥
सु भगतादि करणं ॥
अजगतुआ प्रहरणं ॥
बिरकतुआ प्रकासं ॥
अविगतुआ प्रणासं ॥५ ॥११३ ॥
समसतुआ प्रधानं ॥
धुजसतुआ धरानं ॥
अविकतुआ अभंगं ॥
इकसतुआ अनंगं ॥६ ॥११४ ॥
उअसतुआ अकारं ॥
क्रिपसतुआ क्रिपारं ॥
खितसतुआ अखंडं ॥
गतसतुआ अगंडं ॥७ ॥११५ ॥
घरसतुआ घरानं ॥
ङिअसतुआ ङिहालं ॥
चितसतुआ अतापं ॥
छितसतुआ अछापं ॥८ ॥११६ ॥
जितसतुआ अजापं ॥
झिकसतुआ अझापं ॥
इकसतुआ अनेकं ॥
टुटसतुआ अटेटं ॥९ ॥११७ ॥
ठटसतुआ अठाटं ॥
डटसतुआ अडाटं ॥
ढटसतुआ अढापं ॥
णकसतुआ अणापं ॥१० ॥११८ ॥
तपसतुआ अतापं ॥
थपसतुआ अथापं ॥
दलसतुआदि दोखं ॥
नहिसतुआ अनोखं ॥११ ॥११९ ॥

अपकतुआ अपानं ॥
फलकतुआ फलानं ॥
बदकतुआ बिसेखं ॥
भजसतुआ अभेखं ॥१२ ॥१२० ॥
मतसतुआ फलानं ॥
हरिकतुआ हिरदानं ॥
अड़कतुआ अड़ंगं ॥
त्रिकसतुआ त्रिभंगं ॥१३ ॥१२१ ॥
रंगसतुआ अरंगं ॥
लवसतुआ अलंगं ॥
यकसतुआ यकापं ॥
इकसतुआ इकापं ॥१४ ॥१२२ ॥
वदिसतुआ वरदानं ॥
यकसतुआ इकानं ॥
लवसतुआ अलेखं ॥
ररिसतुआ अरेखं ॥१५ ॥१२३ ॥
त्रिअसतुआ त्रिभंगे ॥
हरिसतुआ हरंगे ॥
महिसतुआ महेसं ॥
भजसतुआ अभेसं ॥१६ ॥१२४ ॥
बरसतुआ बरानं ॥
पलसतुआ फलानं ॥
नरसतुआ नरेसं ॥
दलसतुसा दलेसं ॥१७ ॥१२५ ॥

पाधड़ी छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

दिन अजब एक आतमा राम ॥
अनभउ सरूप अनहद अकाम ॥
अनछिज तेज आजान बाहु ॥
राजान राज साहान साहु ॥१ ॥१२६ ॥
उचरिओ आतमा परमातमा संग ॥
उतभुज सरूप अबिगत अभंग ॥
इह कउन आहि आतमा सरूप ॥
जिह अमित तेजि अतिभुति बिभूति ॥२ ॥१२७ ॥
परातमा बाच ॥
यहि ब्रहम आहि आतमा राम ॥
जिह अमित तेजि अबिगत अकाम ॥
जिह भेद भरम नही करम काल ॥
जिह सत्र मित्र सरबा दिआल ॥३ ॥१२८ ॥
डोबियो न डुबै सोखियो न जाइ ॥
कटियो न कटै न बारियो बराइ ॥
छिजै न नैक सत ससत्र पात ॥
जिह सत्र मित्र नही जात पात ॥४ ॥१२९ ॥
सत्र सहंस सति सति प्रघाइ ॥
छिजै न नैक खंडिओ न जाइ ॥
नही जरै नैक पावक मंझार ॥
बोरै न सिंध सोखै न ब्रयार ॥५ ॥१३० ॥
इक कर्यो प्रसन आतमा देव ॥
अनभंग रूप अनिभउ अभेव ॥
यहि चतुर वरग संसार दान ॥

किहु चतुर वरग किजै वखिआन ॥६ ॥१३१ ॥
इक राजु धरम इक दान धरम ॥
इक भोग धरम इक मोछ करम ॥
इक चतुर वरग सभ जग भणंत ॥
से आतमाह परातमा पुछंत ॥७ ॥१३२ ॥
इक राज धरम इक धरम दान ॥
इक भोग धरम इक मोछवान ॥
तुम कहो चत्र चत्रै बिचार ॥
जे त्रिकाल भए जुग अपार ॥८ ॥१३३ ॥
बरनंन करो तुम प्रिथम दान ॥
जिम दान धरम किने न्रिपान ॥
सतिजुग करम सुर दान दंत ॥
भूमादि दान कीने अकंथ ॥९ ॥१३४ ॥
त्रै जुग महीप बरने न जात ॥
गाथा अनंत उपमा अगात ॥
जो कीए जगत मै जग धरम ॥
बरने न जाहि ते अमित करम ॥१० ॥१३५ ॥
कलजुग ते आदि जो भए महीप ॥
इहि भरथ खंडि महि जंबू दीप ॥
त्व बल प्रताप बरणौ सु त्रैण ॥
राजा युधिसट्र भू भरथ एण ॥११ ॥१३६ ॥
खंडे अखंड जिह चतुर खंड ॥
कैरौ कुरखेत्र मारे प्रचंड ॥
जिह चतुर कुंड जितियो दुबार ॥
अरजन भीमादि भ्राता जुझार ॥१२ ॥१३७ ॥
अरजन पठियो उतर दिसान ॥
भीमहि कराइ पूरब पयान ॥
सहिदेव पठियो दछण सुदेस ॥
नुकलहि पठाइ पछम प्रवेस ॥१३ ॥१३८ ॥
मंडे महीप खंडियो खत्राण ॥
जिते अजीत मंडे महान ॥
खंडियो सु उत्र खुरासान देस ॥
दछन पूरब जीते नरेस ॥१४ ॥१३९ ॥
खग खंड खंड जीते महीप ॥
बजियो निसान इह जंबूदीप ॥
इक ठउर कीए सब देस राउ ॥
मख राजसूअ को कीओ चाउ ॥१५ ॥१४० ॥
सब देस देस पठे सु पत्र ॥
जित जित गुनाढ कीए इकत्र ॥
मख राजसूअ को कीयो अरंभ ॥
न्रिप बहुत बुलाइ जिते असंभ ॥१६ ॥१४१ ॥

रूआल छंद ॥

कोटि कोटि बुलाइ रितज कोटि ब्रहम बुलाइ ॥
कोटि कोटि बनाइ बिंजन भोगीअहि बहु भाइ ॥
जत्र तत्र समग्रका कहूं लाग है न्रिपराइ ॥
राजसूइ करहि लगे सभ धरम को चित चाइ ॥१ ॥१४२ ॥
एक एक सुवरन को दिज एक दीजै भार ॥
एक सउ गज एक सउ रथि दुइ सहंस्र तुखार ॥
सहंस चतुर सुवरन सिंगी महिख दान अपार ॥

एक एकहि दीजीऐ सुन राज राज अउतार ॥२ ॥१४३ ॥
सुवरन दान सु दान रुकम दान सु ताम्र दान अनंत ॥
अंन दान अनंत दीजत देख दीन दुरंत ॥
बसत्र दान पटंब्र दान सु ससत्र दान दिजंत ॥
भूप भिछक हुइ गए सब देस देस दुरंत ॥३ ॥१४४ ॥
चत्र कोस बनाहि कुंडक सहस्र लाइ परनार ॥
सहंस्र होम करै लगै दिज बेद बिआस अउतार ॥
हसत सुंड प्रमान ग्रित की परत धार अपार ॥
होत भसम अनेक बिंजन लपट झपट कराल ॥४ ॥१४५ ॥
म्रितका सभ तीरथ की सभ तीरथ को लै बार ॥
कासटका सभ देस की सभ देस की जिउनार ॥
भात भातन के महा रस होमीऐ तिह माहि ॥
देख चक्रत रहै दिजंबर रीझ ही नर नाह ॥५ ॥१४६ ॥
भात भात अनेक बिजंन होमीऐ तिह आन ॥
चतुर बेद पड़ै चत्र सभ बिप ब्यास समान ॥
भात भात अनेक भूपत देत दान अनंत ॥
भूम भूर उठी जयत धुन जत्र तत्र दुरंत ॥६ ॥१४७ ॥
जीत जीत मवास आसन अरब खरब छिनाइ ॥
आनि आनि दीए दिजानन जग मै कुर राइ ॥
भात भात अनेक धूप सु धूपीऐ तिह आन ॥
भात भात उठी जय धुनि जत्र तत्र दिसान ॥७ ॥१४८ ॥
जरासंधह मार कै पुनि कैरवा हथि पाइ ॥
राजसूइ कीओ बडो मखि किसन के मति भाइ ॥
राजसूइ सु कै किते दिन जीत सत्रु अनंत ॥
बाजमेध अरंभ कीनो बेद ब्यास मतंत ॥८ ॥१४९ ॥

◀ *प्रिथम जग समापतिह ॥*

स्री बरण बधह ॥
चंद्र बरणे सुकरनि सियाम सुवरन पूछ समान ॥
रतन तुंग उतंग बाजत उच स्रवाह समान ॥
निरत करत चलै धरा परि काम रूप प्रभाइ ॥
देखि देखि छकै सभै न्रिप रीझि इउ न्रिपराइ ॥९ ॥१५० ॥
बीण बेण म्रिदंग बाजत बासुरी सुरनाइ ॥
मुरज तूर मुचंग मंदल चंग बंग सनाइ ॥
ढोल ढोलक खंजका डफ झाझ कोट बजंत ॥
जंग घुंघरू टलका उपजंत राग अनंत ॥१० ॥१५१ ॥
अमित सबद बजंत्र भेरि हरंत बाज अपार ॥
जात जउन दिसान के पछ लाग ही सिरदार ॥
जउन बाध तुरंग जूझत जीतीऐ करि जुध ॥
आन जौन मिलै बचै नहि मारीऐ करि क्रुध ॥११ ॥१५२ ॥
हैय फेर चार दिसान मै सभ जीत कै छितपाल ॥
बाजमेध करियो सपूरन अमित जग रिसाल ॥
भात भात अनेक दान सु दीजीअहि दिजराज ॥
भात भात पटंबरादिक बाजियो गजराज ॥१२ ॥१५३ ॥
अनेक दान दीए दिजानन अमित दरब अपार ॥
हीर चीर पटंबरादि सुवरन के बहु भार ॥
दुसट पुसट त्रसे सबै थरहरिओ सुनि गिरराइ ॥
काटि काटि न दै द्विजै न्रिप बाट बाट लुटाइ ॥१३ ॥१५४ ॥
फेर कै सभ देस मै हय मारिओ मख जाइ ॥

काटि कै तिह को तबै पल कै करै चतु भाइ ॥
एक बिप्रन एक छत्रन एक इसत्रिन दीन ॥
चत्र अंस बचियो जु ता ते होम मै वहि कीन ॥१४ ॥१५५ ॥
पंच सै बरख प्रमान सु राज कै इह दीप ॥
अंत जाइ गिरे रसातल पंड पुत्र महीप ॥
भूम भरत भए परीछत परम रूप महान ॥
अमित रूप उदार दान अछिज तेज निधान ॥१५ ॥१५६ ॥

◀ स्री गिआन प्रबोध पोथी दुतीआ जग समापतं ॥

अथ राजा प्रीछत को राज कथनं ॥

रुआल छंद ॥

एक दिवस परीछतहि मिलि कीयो मंत्र महान ॥
गजामेध सु जग को किउ कीजीऐ सवधान ॥
बोलि बोलि सु मित्र मंत्रन मंत्र कीओ बिचार ॥
सेत दंत मंगाइ कै बहु जुगत सौ अबिचार ॥१ ॥१५७ ॥
जग मंडल को रचियो तहि कोट असट प्रमान ॥
असट सहंस्र बुलाइ रितुजु असट लछ दिजान ॥
भात भात बनाइ कै तहा असट सहंस्र प्रनार ॥
हसत सुंड प्रमान ता महि होमीऐ घ्रित धार ॥२ ॥१५८ ॥
देस देस बुलाइ कै बहु भात भात न्रिपाल ॥
भात भातन के दीए बहु दान मान रसाल ॥
हीर चीर पटंबरादिक बाज अउ गजराज ॥
साज साज सबै दीए बहु राज कौ न्रिपराज ॥३ ॥१५९ ॥
ऐसि भाति कीओ तहा बहु बरख लउ तिह राज ॥
करन देव प्रमान लउ अर जीत कै बहु साज ॥
एक दिवस चड़िओ न्रिप बर सैल काज अखेट ॥
देख म्रिग भइओ तहा मुनराज सिउ भई भेट ॥४ ॥१६० ॥
पैड याहि गयो नही म्रिग रे रखीसर बोल ॥
उत्र भूपहि न दीओ मुनि आखि भी इक खोल ॥
म्रितक सरप निहार कै जिह अग्र ताह उठाइ ॥
तउन के गर डार कै न्रिप जात भयो न्रिपराइ ॥५ ॥१६१ ॥
आख उघार लखै कहा मुन सरप देख डरान ॥
क्रोध करत भयो तहा दिज रकत नेत्र चुचान ॥
जउन मो गरि डारि गिओ तिह काटि है अहिराइ ॥
सपत दिवसन मै मरै यहि सति स्राप सदाइ ॥६ ॥१६२ ॥
स्राप को सुनि कै डरियो न्रिप मंद्र एक उसार ॥
मधि गंग रचियो धउलहरि छुइ सकै न बिआर ॥
सरप की तह गंमता को काटि है तिह जाइ ॥
काल पाइ कट्यो तबै तहि आन कै अहिराइ ॥७ ॥१६३ ॥
साठ बरख प्रमान लउ दुइ मास यौ दिन चार ॥
जोति जोति बिखै रली न्रिप राज की करतार ॥
भूम भरथ भए तबै जनमेज राज महान ॥
सूरबीर हठी तपी दस चार चार निधान ॥८ ॥१६४ ॥

◀ *इति राजा प्रीछत समापतं भए राजा जनमेजा राज पावत भए ॥*

रूआल छंद ॥

राज को ग्रिह पाइ कै जनमेज राज महान ॥
सूरबीर हठी तपी दस चार चार निधान ॥
पितर के बध कोप ते सब बिप्र लीन बुलाइ ॥
सरप मेध करियो लगे मख धरम के चित चाइ ॥१॥१६५॥
एक कोस प्रमान लउ मख कुंड कीन बनाइ ॥
मंत्र सकत करनै लगे तहि होम बिप्र बनाइ ॥
आन आन गिरै लगे तहि सरप कोट अपार ॥
जत्र तत्र उठी जैत धुन भूम भूर उदार ॥२॥१६६॥
हसत एक दू हसत तीन चउ हसत पंच प्रमान ॥
बीस हाथ इकीस हाथ पचीस हाथ समान ॥
तीस हाथ बतीस हाथ छतीस हाथ गिराहि ॥
आन आन गिरै तहा सभ भसम भूत होइ जाइ ॥३॥१६७॥
एक सौ हसत प्रमान दो सौ हसत प्रमान ॥
तीन सौ हसत प्रमान चत्र सै सु समान ॥
पाच सै खट सै लगे तहि बीच आन गिरंत ॥
सहंस हसत प्रमान लउ सभ होम होत अनंत ॥४॥१६८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

रचियो सरप मेधं बडो जग राजं ॥
करै बिप होमै सरै सरब काजं ॥
दहे सरब सरपं अनंतं प्रकारं ॥
भुजै भोग अनंतं जुगै राज दुआरं ॥१॥१६९॥
किते असट हसतं सतं प्राइ नारं ॥
किते दुआदिसे हसत लौ परम भारं ॥
किते द्वै सहंस्र किते जोजनेकं ॥
गिरे होम कुंडं अपारं अचेतं ॥२॥१७०॥
किते जोजने दुइ किते तीन जोजन ॥
किते चार जोजन दहे भूम भोगन ॥
किते मुसट अंगुसट ग्रिसटं प्रमानं ॥
किते डेढु गिसटे अंगुसटं अरधानं ॥३॥१७१॥
किते चार जोजन लउ चार कोसं ॥
छुऐ घ्रित जैसे करै अगन होमं ॥
फणं फटकै फेणका फंतकारं ॥
छुटै लपट ज्वाला बसै बिखधारं ॥४॥१७२॥
किते सपत जोजन लौ कोस असटं ॥
किते असट जोजन महा परम पुसटं ॥
भयो घोर बधं जरे कोट नागं ॥
भज्यो तछकं भछकं जेम कागं ॥५॥१७३॥
कुलं कोट होमै बिखै वहिण कुंडं ॥
बचे बाध डारे घने कुंड झुंडं ॥
भज्यो नाग राजं तक्रयो इंद्र लोकं ॥
जर्यो बैद मंत्रं भर्यो सक्र सोकं ॥६॥१७४॥
बध्यो मंत्र जंत्रं गिर्यो भूम मधं ॥
अड़िओ आसतीकं महा बिप्र सिधं ॥
भिड़्यो भेड़ भूपं झिणग्यो झेड़ झाड़ं ॥
महा क्रोध उठ्यो तणी तोड़ ताड़ं ॥७॥१७५॥
तज्यो स्रप मेधं भज्यो एक नाथं ॥

क्रिपा मंत्र सूझै सबै स्रिसट साजं ॥
सुनहु राज सरदूल बिद्या निधानं ॥
तपै तेज सावंत जुआला समानं ॥८॥१७६॥
महीं माह रूपं तपै तेज भानं ॥
दसं चार चउदाह बिदिआ निधानं ॥
सुनहु राज सासत्रग सारंग पानं ॥
तजहु सरप मेधं दिजै मोहि दानं ॥९॥१७७॥
तजहु जो न सरपं जरो अगन आपं ॥
करो दगध तो कौ दिवौ ऐस स्रापं ॥
हण्यो पेट मधं छुरी जमदाड़ं ॥
लगे पाप तो को सुनहु राज गाड़ं ॥१०॥१७८॥
सुने बिप बोलं उठियो आप राजं ॥
तजियो सरप मेधं पिता बैर काजं ॥
बुल्यो ब्यास पासं करियो मंत्र चारं ॥
महा बेद बिआकरण बिदिआ बिचारं ॥११॥१७९॥
सुनी पुत्रका दुइ ग्रिहं कासि राजं ॥
महा सुंदरी रूप सोभा समाजं ॥
जिणिउ जाइ ता को हणो दुसट पुसटं ॥
करियो धिआन ताने लदे भार उसटं ॥१२॥१८०॥
चली सैन सूकर पराची दिसानं ॥
चड़े बीर धीरं हठे ससत्र पानं ॥
दुरियो जाइ दुरग सु बाराणसीसं ॥
घेर्यो जाइ फउजं भजिओ एक ईसं ॥१३॥१८१॥
मचियो जुध सुधं बहे ससत्र घातं ॥
गिरे अधु वधं सनधं बिपातं ॥
गिरे हीर चीरं सु बीरं रजाणं ॥
कटै अधु अधं छुटे रुद्र ध्यानं ॥१४॥१८२॥
गिरे खेत्र खत्राण खत्री खत्राणं ॥
बजी भेर भुंकार दुकिआ निसाणं ॥
करे पैजवारं प्रचारै सु बीरं ॥
फिरे रुंड मुंडं तणं तछ तीरं ॥१५॥१८३॥
बिभे दंत वरमं प्रछेदै तनानं ॥
करे मरदनं अरदनं मरदमानं ॥
कटे चरम बरमं छुटे चउर चारं ॥
गिरे बीर धीरं छुटे ससत्र धारं ॥१६॥१८४॥
जिग्रयो कासकीसं हण्यो सरब सैनं ॥
बरी पुत्रका ताह कंप्यो त्रिनैनं ॥
भइओ मेल गेलं मिले राज राजं ॥
भई मित्र चारं सरे सरब काजं ॥१७॥१८५॥
मिली राज दाजं सु दासी अनूपं ॥
महा बिद्यवंती अपारं सरूपं ॥
मिले हीर चीरं किते सिआउ करनं ॥
मिले मत दंती किते सेत बरनं ॥१८॥१८६॥
कर्यो ब्याह राजा भइओ सु प्रसंनं ॥
भली भात पोखे दिजं सरब अंनं ॥
करे भाति भातं महा गज दानं ॥
भए दोइ पुत्रं महा रूप मानं ॥१९॥१८७॥
लखी रूपवंती महाराज दासी ॥
मनो चीर कै चार चंद्रा निकासी ॥
लहै चंचला चार बिदिआ लता सी ॥

किधौ कंजकी माझ सोभा प्रकासी ॥२० ॥१८८ ॥
किधौ फूल माला लखै चंद्रमा सी ॥
किधौ पदमनी मै बनी मालती सी ॥
किधौ पुहप धंनिआ फुली राइबेलं ॥
तजै अंग ते बासु चंपा फुलेलं ॥२१ ॥१८९ ॥
किधौ देव कंनिआ प्रिथी लोक डोलै ॥
किधौ जछनी किन्रनी सिउ कलोलै ॥
किधौ रुद्र बीजं फिरै मधि बालं ॥
किधौ पत्र पानं नचै कउल नालं ॥२२ ॥१९० ॥
किधौ रागमाला रची रंग रूपं ॥
किधौ इसत्रि राजा रची भूप भूपं ॥
किधौ नाग कंनिआ किधौ बासवी है ॥
किधौ संखनी चित्रनी पदमनी है ॥२३ ॥१९१ ॥
लसै चित्र रूपं बचित्रं अपारं ॥
महा रूपवंती महा जोबनारं ॥
महा गिआनवंती सु बिगिआन करमं ॥
पड़े कंठि बिदिआ सु बिदिआदि धरमं ॥२४ ॥१९२ ॥
लखी राज कंनिआन ते रूपवंती ॥
लसै जोत ज्वाला अपारं अनंती ॥
लख्यो ताहि जनमेजए आप राजं ॥
करे परम भोगं दीए सरब साजं ॥२५ ॥१९३ ॥
बढिओ नेहु ता सो तजी राज कंनिआ ॥
हुती सिसट की दिसट महि पुसट धंनिआ ॥
भइओ एक पुत्रं महा ससत्र धारी ॥
दसं चार चउदाह बिदिआ बिचारी ॥२६ ॥१९४ ॥
धरिओ असमेधं प्रिथम पुत्र नामं ॥
भइओ असमेधान दूजो प्रधानं ॥
अजै सिंघ राख्यो रजी पुत्र सूरं ॥
महा जंग जोधा महा जस पूरं ॥२७ ॥१९५ ॥
भइओ तन दुरुसतं बलिसटं महानं ॥
महाजंग जोधा सु ससत्रं प्रधानं ॥
हणै दुसट पुसटं महा ससत्र धारं ॥
बडे सत्र जीते जिवे रावणारं ॥२८ ॥१९६ ॥
चड़िओ एक दिवसं अखेटं नरेसं ॥
लखे म्रिग धायो गयो अउर देसं ॥
स्रमिओ परम बाटं तकियो एक तालं ॥
तहा दउर कै पीन पानं उतालं ॥२९ ॥१९७ ॥
करिओ राज सैनं कढिओ बार बाजं ॥
तकी बाजनी रूप राजं समाजं ॥
लग्यो आन ता को रह्यो ताहि गरभं ॥
भइओ सियाम करणं सु बाजी अदरबं ॥३० ॥१९८ ॥
करियो बाज मेधं बडो जग राजा ॥
जिणे सरब भूपं सरे सरब काजा ॥
गड्यो जग थंभं करियो होम कुंडं ॥
भली भात पोखे बली बिप्र झुंडं ॥३१ ॥१९९ ॥
दए कोट दानं पके परम पाकं ॥
कलू मधि कीनो बडो धरम साकं ॥
लगी देखने आप जिउ राज बाला ॥
महा रूपवंती महा जुआल आला ॥३२ ॥२०० ॥
उडयो पउन के बेग सियो अग्र पत्रं ॥

हसे देख नगनं त्रीयं बिप्र छत्रं ॥
भइओ कोप राजा गहे बिप्र सरबं ॥
दहे खीर खंडं बडे परम गरबं ॥३३॥२०१॥
प्रिथम बाधि कै सरब मूंडे मुंडाए ॥
पुनर एड्रूआ सीस ता के टिकाए ॥
पुनर तपत कै खीर के मधि डारिओ ॥
इमं सरब बिप्रान कउ जारि मारिओ ॥३४॥२०२॥
किते बाधि कै बिप्र बाचे दिवारं ॥
किते बाध फासी दीए बिप्र भारं ॥
किते बारि बोरे किते अगनि जारे ॥
किते अधि चीरे किते बाध फारे ॥३५॥२०३॥
लगियो दोख भूपं बढियो कुसट देही ॥
सभे बिप्र बोले करियो राज नेही ॥
कहो कउन सो बैठि कीजै बिचारं ॥
दहै देह दोखं मिटै पाप भारं ॥३६॥२०४॥
बोले राज दुआरं सबै बिप्र आए ॥
बडे बिआस ते आदि लै के बुलाए ॥
देखै लाग सासत्रं बोले बिप्र सरबं ॥
करियो बिप्रमेधं बढिओ भूप गरबं ॥३७॥२०५॥
सुनहु राज सरदूल बिदिआ निधानं ॥
करियो बिप्र मेधं सु जगं प्रमानं ॥
भइओ अकसमंत्रं कहिओ नाहि कउनै ॥
करी जउन होती भई बात तउनै ॥३८॥२०६॥
सुनहु बिआस ते परब असटं दसानं ॥
दहै देह ते कुसट सरबं न्रिपानं ॥
बोलै बिप्र बिआसं सुनै लाग परबं ॥
परियो भूप पाइन तजे सरब गरबं ॥३९॥२०७॥
सुनहु राज सरदूल बिदिआ निधानं ॥
हूओ भरथ के बंस मै रघुरानं ॥
भइओ तउन के बंस मै राम राजा ॥
दीजै छत्र दानं निधानं बिराजा ॥४०॥२०८॥
भइओ तउन की जद मै जदु राजं ॥
दसं चार चौदह सु बिदिआ समाजं ॥
भइओ तउन के बंस मै संतनेअं ॥
भए ताहि के कउरओ पाडवेअं ॥४१॥२०९॥
भए तउन के बंस मै ध्रितरासटरं ॥
महा जुध जोधा प्रबोधा महा सुत्रं ॥
भए तउन के कउरवं क्रूर करमं ॥
कीओ छत्रणं जैन कुल छैण करमं ॥४२॥२१०॥
कीओ भीखमे अग्र सैना समाजं ॥
भइओ क्रुध जुधं समुह पंडु राजं ॥
तहा गरजियो अरजनं परम बीरं ॥
धनुर बेद गिआता तजे परम तीरं ॥४३॥२११॥
तजी बीर बाना वरी बीर खेतं ॥
हणिओ भीखमं सभै सैना समेतं ॥
दई बाण सिजा गरे भीखमैणं ॥
जयं पत्र पाइओ सुखं पाडवेणं ॥४४॥२१२॥
भए द्रोण सैनापती सैनपालं ॥
भइओ घोर जुधं तहा तउन कालं ॥
हणिओ ध्रिसट दोनं तजे द्रोण प्राणं ॥

करिओ जुध ते देवलोकं पिआणं ॥४५॥२१३॥
भए करण सैनापती छत्रपालं ॥
मच्यो जुध क्रुधं महा बिकरालं ॥
हणिओ ताहि पंथं सदं सीसु कपिओ ॥
गिरिओ तउण युधिसटरं राजु थपिओ ॥४६॥२१४॥
भए सैणपालं बली सूल सल्लयं ॥
भली भाति कुटिओ बली पंच दल्लयं ॥
पुनर हसत युधिसटरं सकत बेधं ॥
गिरियो जुध भूपं बली भूप बेधं ॥४७॥२१५॥

चौपई ॥

सल राजा जउनै दिन जूझा ॥
कउरउ हार तवन ते सूझा ॥
जूझत सल भइओ असतामा ॥
कूटिओ कोट कटकु इक जामा ॥१॥२१६॥
ध्रिसट दोनु मारिओ अतिरथी ॥
पाडव सैन भले करि मथी ॥
पाडव के पाचो सुत मारे ॥
दुआपुर मै बड कीन अखारे ॥२॥२१७॥
कउरउ राज कीओ तब जुधा ॥
भीम संगि हुइ कै अति क्रुधा ॥
जुध करत कबहू नही हारा ॥
काल बली तिह आन संघारा ॥३॥२१८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तहा भीम कुरराज सिउ जुध मचिओ ॥
छुटी ब्रहम तारी महा रुद्र नचिओ ॥
उठै सबद निरघात आघात बीरं ॥
भए रुंड मुंडं तणं तछ तीरं ॥१॥२१९॥
गिरे बीर एकं अनेकं प्रकारं ॥
गिरे अध अधं छुधं ससत्र धारं ॥
कटे कउरवं दुर सिंदूर खेतं ॥
नचे गिध आवध सावंत खेतं ॥२॥२२०॥
बली मंडलाकार जूझै बिराजै ॥
हसै गरज ठोकै भुजा हर दु गाजै ॥
दिखावे बली मंडलाकार थानै ॥
उभारै भुजा अउ फटाकै गजानै ॥३॥२२१॥
सुभे सवरन के पत्र बाधे गजा मै ॥
भई अगनि सोभा लखी कै धुजा मै ॥
भिड़ा मै भ्रमै मंडलाकार बाहै ॥
अपो आप सै नेकि घाइं सराहै ॥४॥२२२॥
तहा भीम भारी भुजा ससत्र बाहै ॥
भली भाति कै कै भले सैन गाहै ॥
उतै कउरपालं धरै छत्र धरमं ॥
करै चित पावित्र बाचित्र करमं ॥५॥२२३॥
सभै बाजुवंदं छकै भूपनाणं ॥
लसै मुतका चार दुमलिअं हाणं ॥
दोऊ मीर धीरं दोऊ परम ओजं ॥
दोऊ मानधाता महीपं कि भोजं ॥६॥२२४॥

दोऊ बीर बाना बधै अध अधं ॥
दोऊ ससत्र धारी महा जुध क्रुधं ॥
दोऊ क्रूर करमं दोऊ जान बाहं ॥
दोऊ हदि हिंदून साहान साहं ॥७ ॥२२५ ॥
दोऊ ससत्र धारं दोऊ परम दानं ॥
दोऊ ढाल ढीचाल हिंदू हिंदानं ॥
दोऊ ससत्र वरती दोऊ छत्र धारी ॥
दोऊ परम जोधा महा जुधकारी ॥८ ॥२२६ ॥
दोऊ खंड खंडी दोऊ मंड मंडं ॥
दोऊ जोध जैतवारु जोधा प्रचंडं ॥
दोऊ बीर बानी दोऊ बाह साहं ॥
दोऊ सूर सैनं दोऊ सूर माहं ॥९ ॥२२७ ॥
दोऊ चक्रवरती दोऊ ससत्र बेता ॥
दोऊ जंग जोधी दोऊ जंग जेता ॥
दोऊ चित्र जोती दोऊ चित्र चापं ॥
दोऊ चित्र वरमा दोऊ दुसट तापं ॥१० ॥२२८ ॥
दोऊ खंड खंडी दोऊ मंड मंडं ॥
दोऊ चित्र जोती सु जोधा प्रचंडं ॥
दोऊ मत बारुंन बिक्रम समानं ॥
दोऊ ससत्र बेता दोऊ ससत्र पानं ॥११ ॥२२९ ॥
दोऊ परम जोधे दोऊ क्रुधवानं ॥
दोऊ ससत्र बेता दोऊ रूप खानं ॥
दोऊ छत्रपालं दोऊ छत्र धरमं ॥
दोऊ जुध जोधा दोऊ क्रूर करमं ॥१२ ॥२३० ॥
दोऊ मंडलाकार जूझे बिराजै ॥
हथै हर दु ठोकै भुजा पाइ गाजै ॥
दोऊ खत्रहाणं दोऊ खत्र खंडं ॥
दोऊ खग पाणं दोऊ छेत्र मंडं ॥१३ ॥२३१ ॥
दोऊ चित्रजोती दोऊ चार बिचारं ॥
दोऊ मंडलाकार खंडा अबारं ॥
दोऊ खग खूनी दोऊ खत्रहाणं ॥
दोऊ खत्रखेता दोऊ छत्रपाणं ॥१४ ॥२३२ ॥
दोऊ बीर बिब आसत धारे निहारे ॥
रहे ब्योम मै भूप गउनै हकारे ॥
हका हक लागी धनं धंन जंप्रयो ॥
चक्रयो जछ राजं प्रिथी लोक कंप्यो ॥१५ ॥२३३ ॥
हनिओ राज दुरजोधनं जुध भूमं ॥
भजे सभै जोधा चली धाम धूमं ॥
करियो राज निहकंटकं कउरपालं ॥
पुनर जाइ कै मझि सिझै हिवालं ॥१६ ॥२३४ ॥
तहा एक गंध्रब सिउ जुध मच्यो ॥
तहा भूरपालं धूरा रंगु रच्यो ॥
तहा सत्रु के भीम हसती चलाए ॥
फिरे मधि गैणं अजउ लउ न आए ॥१७ ॥२३५ ॥
सुनै बैन कउ भूप इउ ऐठ नाकं ॥
करियो हास मंदै बुल्यो एम बाकं ॥
रहियो नाक मै कुसट छत्री सवानं ॥
भई तउन ही रोग ते भूप हानं ॥१८ ॥२३६ ॥

चौपई ॥

इम चउरासी बरख प्रमानं ॥
सपत माह चउबीस दिनानं ॥
राज कीओ जनमेजा राजा ॥
काल नीसानु बहुरि सिरि गाजा ॥१९ ॥२३७ ॥

◀ *इति जनमेजा समापत भइआ ॥*

चौपई ॥

असुमेध अरु असमेदहारा ॥
महा सूर सतवान अपारा ॥
महा बीर बरिआर धनुख धर ॥
गावत कीरत देस सभ घर घर ॥१ ॥२३८ ॥
महा बीर अरु महा धनुख धर ॥
कापत तीन लोक जा के डर ॥
बड महीप अरु अखंड प्रतापा ॥
अमित तेज जापत जग जापा ॥२ ॥२३९ ॥
अजै सिंघ उत सूर महाना ॥
बड महीप दस चार निधाना ॥
अनबिकार अनतोल अतुल बल ॥
अर अनेक जीते जिन दलमल ॥३ ॥२४० ॥
जिन जीते संग्राम अनेका ॥
ससत्र असत्र धरि छाडन एका ॥
महा सूर गुनवान महाना ॥
मानत लोक सगल जिह आना ॥४ ॥२४१ ॥
मरन काल जनमेजे राजा ॥
मंत्र कीओ मंत्रीन समाजा ॥
राज तिलक भूपत अभखेखा ॥
निरखत भए न्रिपत की रेखा ॥५ ॥२४२ ॥
इन महि राज कवन कउ दीजै ॥
कउन न्रिपत सुत कउ न्रिपु कीजै ॥
रजीआ पूत न राज की जोगा ॥
याहि के जोग न राज के भोगा ॥६ ॥२४३ ॥
अस्वमेद कहु दीनो राजा ॥
जै पति भाख्यो सकल समाजा ॥
जनमेजा की सुगति कराई ॥
अस्वमेद कै वजी वधाई ॥७ ॥२४४ ॥
दूसर भाइ हुतो जो एका ॥
रतन दीए तिह दरब अनेका ॥
मंत्री कै अपना ठहराइओ ॥
दूसर ठउर तिसहि बैठाइओ ॥८ ॥२४५ ॥
तीसर जो रजीआ सुत रहा ॥
सैनपाल ता को पुन कहा ॥
बखसी करि ताकौ ठहराइओ ॥
सब दल को तिह कामु चलाइओ ॥९ ॥२४६ ॥
राजु पाइ सभहू सुख पाइओ ॥
भूपत कउ नाचब सुख आइओ ॥
तेरह सै चौसठ मरदंगा ॥
बाजत है कई कोट उपंगा ॥१० ॥२४७ ॥

दूसर भाइ भए मद अंधा ॥
देखत नाचत लाइ सुगंधा ॥
राज साज दुहहूं ते भूला ॥
वाही कै जाइ छत्र सिर झूला ॥११॥२४८॥
करत करत बहु दिन अस राजा ॥
उन दुहूं भूलिओ राज समाजा ॥
मद करि अंध भए दोऊ भ्राता ॥
राज करन की बिसरी बाता ॥१२॥२४९॥

दोहरा ॥

जिह चाहे ता को हने जो बाछै सो लेइ ॥
जिह राखै सोई रहै जिह जानै तिह देइ ॥१३॥२५०॥

चौपई ॥

ऐसी भात कीनो इह जब ही ॥
प्रजा लोक सभ बस भए तब ही ॥
अउ बसि होइ गए नेब खवासा ॥
जो राखत थे न्रिप की आसा ॥१॥२५१॥
एक दिवस तिहूं भ्रात सुजाना ॥
मंडस चौपर खेल खिलाना ॥
दाउ समै कछु रिसक बिचारिओ ॥
अजै सुनत इह भात उचारिओ ॥२॥२५२॥

दोहरा ॥

कहा करै दा कह परै कह यह बाधै सूत ॥
कहा सत्रु या ते मरै जो रजीआ का पूत ॥३॥२५३॥

चौपई ॥

यहै आज हम खेल बिचारी ॥
सो भाखत है प्रगट पुकारी ॥
एकहि रतन राज धनु लीना ॥
दुतीऐ अस्व उसट गज लीना ॥१॥२५४॥
कुअरै बाट सैन सभ लीआ ॥
तीनहु बाट तीन कर कीआ ॥
पासा ढार धरै कस दावा ॥
कहा खेल धौ करै करावा ॥२॥२५५॥
चउपर खेल परी तिह माहा ॥
देखत ऊच नीच नर नाहा ॥
ज्वाला रूप सुपरधा बाढी ॥
भूपन फिरत संघारत काढी ॥३॥२५६॥
तिन कै बीच परी अस खेला ॥
कटन सु हित भइउ मिटन दुहेला ॥
प्रिथमै रतन द्रिब बहु लायो ॥
बसत्र बाज गज बहुत हरायो ॥४॥२५७॥
दुहूंअन बीच सुपरधा बाढा ॥
दुह दिस उठे सुभट अस काढा ॥
चमकहि कहूं असन की धारा ॥
बिछ गई लोथ अनेक अपारा ॥५॥२५८॥

जुगन दैत फिरहि हरिखाने ॥
गीध सिवा बोलहि अभिमाने ॥
भूत प्रेत नाचहि अरु गावहि ॥
कहूं कहूं सबद बैताल सुनावहि ॥६ ॥२५९ ॥
चमकत कहूं खगन की धारा ॥
बिथ गए रुंड भसुंड अपारा ॥
चिंसत कहूं गिरे गज माते ॥
सोवत कहूं सुभट रण ताते ॥७ ॥२६० ॥
हिंसत कहूं गिरे है घाए ॥
सोवत क्रूर सलोक पठाए ॥
कटि गए कहूं कउच अरु चरमा ॥
कटि गए गज बाजन के बरमा ॥८ ॥२६१ ॥
जुगन देत कहूं किलकारी ॥
नाचत भूत बजावत तारी ॥
बावन बीर फिरै चहूं ओरा ॥
बाजत मारू राग सिदउरा ॥९ ॥२६२ ॥
रण अस काल जलध जिम गाजा ॥
भूत पिसाच भीर भै भाजा ॥
रण मारू इह दिस ते बाज्यो ॥
काइरु हुतो सो भी नहि भाज्यो ॥१० ॥२६३ ॥
रहि गई सूरन खग की टेका ॥
कटि गए सुंड भसुंड अनेका ॥
नाचत जोगन कहूं बितारा ॥
धावत भूत प्रेत बिकरारा ॥११ ॥२६४ ॥
धावत अध कमध अनेका ॥
मंडि रहे रावत गडि टेका ॥
अनहद राग अनाहद बाजा ॥
काइरु हुता वहै नही भाजा ॥१२ ॥२६५ ॥
मंदर तूर करूर करोरा ॥
गाज सरावत राग संदोरा ॥
झमकसि दामन जिम करवारा ॥
बरसत बानन मेघ अपारा ॥१३ ॥२६६ ॥
घूमहि घाइल लोह चुचाते ॥
खेल बसंत मनो मद माते ॥
गिर गए कहूं जिरह अरु जुआना ॥
गरजन गिध पुकारत सुआना ॥१४ ॥२६७ ॥
उन दल दुहूं भाइन को भाजा ॥
ठाढ न सकियो रंकु अरु राजा ॥
तकिओ ओडछा देसु बिचछन ॥
राजा न्रिपति तिलक सुभ लछन ॥१५ ॥२६८ ॥
मद करि मत भए जे राजा ॥
तिन के गए ऐस ही काजा ॥
छीन छान छित छत्र फिरायो ॥
महाराज आपही कहायो ॥१६ ॥२६९ ॥
आगे चले अस्वमेध हारा ॥
धवहि पाछे फउज अपारा ॥
गे जहि न्रिपत तिलक महाराजा ॥
राज पाट वाहू कउ छाजा ॥१७ ॥२७० ॥
तहा इक आहि सनउढी ब्रहमन ॥
पंडत बडे महा बड गुन जन ॥

भूपहि को गुर सभहु की पूजा ॥
तिह बिनु अवरु न मानहि दूजा ॥१८॥२७१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

कहूं ब्रहम बानी करहि बेद चरचा ॥
कहूं बिप्र बैठे करहि ब्रहम अरचा ॥
तहा बिप्र सनौढ ते एक लछन ॥
करै बकल बसत्रं फिरै बाइ भछन ॥१॥२७२॥
कहूं बेद सियामं सुरं साथ गावै ॥
कहूं जुजर बेदं पड़े मान पावै ॥
कहूं रिगं बाचै महा अरथ बेदं ॥
कहूं ब्रहम सिछा कहूं बिसन भेदं ॥२॥२७३॥
कहूं असट द्वै अवतार कथै कथाणं ॥
दसं चार चउदाह बिदिआ निधानं ॥
तहा पंडतं बिप्र परमं प्रबीनं ॥
रहे एक आसं निरासं बिहीनं ॥३॥२७४॥
कहूं कोकसारं पड़ै नीत धरमं ॥
कहूं न्याइ सासत्र पड़ै छत्र करमं ॥
कहूं ब्रहम बिदिआ पड़ै ब्योम बानी ॥
कहूं प्रेम सिउ पाठि पठिऐ पिड़ानी ॥४॥२७५॥
कहूं प्राक्रितं नाग भाखा उचारहि ॥
कहूं सहसक्रित ब्योम बानी बिचारहि ॥
कहूं सासत्र संगीत मै गीत गावै ॥
कहूं जछ गंध्रब बिदिआ बतावै ॥५॥२७६॥
कहूं निआइ मीमासका तरक सासत्रं ॥
कहूं अगनि बाणी पड़ै ब्रहम असत्रं ॥
कहूं बेद पातंजलै सेख कानं ॥
पड़ै चक्र चवदाह बिदिआ निधानं ॥६॥२७७॥
कहूं भाख बाचै कहूं कोमदीअं ॥
कहूं सिधका चंद्रका सारसुतीयं ॥
कहूं ब्याकरण बैसिकालाप कथे ॥
कहूं प्राक्रिआ कासका सरब मथे ॥७॥२७८॥
कहूं बैठ मानोरमा ग्रंथ बाचै ॥
कहूं गाइ संगीत मै गीत नाचे ॥
कहूं ससत्र की सरब बिदिआ बिचारै ॥
कहूं असत्र बिदिआ बाचै सोक टारै ॥८॥२७९॥
कहू गदा को जुध कै कै दिखावै ॥
कहूं खड़ग बिदिआ जुझै मान पावै ॥
कहूं बाक बिदिआहि छोरं प्रबानं ॥
कहूं जलतुरं बाक बिदिआ बखानं ॥९॥२८०॥
कहूं बैठ के गारड़ी ग्रंथ बाचै ॥
कहूं साभवी रास भाखा सु राचै ॥
कहूं जामनी तोरकी बीर बिदिआ ॥
कहूं पारसी कौच बिदिआ अभिदिआ ॥१०॥२८१॥
कहूं ससत्र की घाउ बिदिआ बतैगो ॥
कहूं असत्र को पातका पै चलैगो ॥
कहूं चरम की चार बिदिआ बतावै ॥
कहूं ब्रहम बिदिआ करै दरब पावै ॥११॥२८२॥
कहूं न्रित बिदिआ कहूं नाद भेदं ॥
कहूं परम पौरान कथै कतेबं ॥

सभै अछ्र बिदिआ सभै देस बानी ॥
सभै देस पूजा समसतो प्रधानी ॥१२॥२८३॥
कहं सिंघनी दूध बछ्हे चुंघावै ॥
कहूं सिंघ लै संग गऊआ चरावै ॥
फिरै सरप न्रिक्रुध तौनि सथलानं ॥
कहूं सासत्री सत्र कथै कथानं ॥१३॥२८४॥
तथा सत्र मित्रं तथा मित्र सत्रं ॥
जथा एक छ्त्री तथा परम छ्त्रं ॥
तहा गयो अजै सिंघ सूरा सुक्रुधं ॥
हनियो असमेधं करिओ परम जुधं ॥१४॥२८५॥
रजीआ पुत्र दिखियो डरे दोइ भ्रातं ॥
गही सरण बिप्रं बुलियो एव बातं ॥
गुवा हेम सरबं मिले प्रान दानं ॥
सरनं सरनं सरनं गुरानं ॥१५॥२८६॥

चौपई ॥

तब भूपत तह दूत पठाए ॥
त्रिपत सकल दिज कीए रिझाए ॥
असमेध अरु असुमेद हारा ॥
भाज परे घर ताक तिहारा ॥१॥२८७॥
कै दिज बाध देहु दुऐ मोहू ॥
नातर धरो दुजनवा तोहू ॥
करिओ न पूजा देउ न दाना ॥
तो को दुख देवो दिज नाना ॥२॥२८८॥
कहा म्रितक दुइ कंठ लगाए ॥
देहु हमै तुम कहा लजाए ॥
जउ दुऐ ए तुम देहु न मोहू ॥
तउ हम सिख न होइ है तोहू ॥३॥२८९॥
तब दिज प्रात कीओ इसनाना ॥
देव पित्र तोखे बिध नाना ॥
चंदन कुंकम खोर लगाए ॥
चल कर राज सभा मै आए ॥४॥२९०॥
दिजो बाच ॥
हमरी वै न परै दुऐ डीठा ॥
हमरी आइ परै नही पीठा ॥
झूठ कहियो जिन तोहि सुनाई ॥
महाराज राजन के राई ॥१॥२९१॥
महाराज राजन के राजा ॥
नाइक अखल धरण सिर ताजा ॥
हम बैठे तुम देहु असीसा ॥
तुम राजा राजन के ईसा ॥२॥२९२॥
राजा बाच ॥
भला चहो आपन जो सबही ॥
वै दुइ बाध देहु मुहि अबही ॥
सबही करो अगन का भूजा ॥
तुमरी करउ पिता जिउ पूजा ॥३॥२९३॥
जो न परै वै भाज तिहारे ॥
कहे लगो तुम आज हमारे ॥
हम तुम को ब्रिंजनाद बनावै ॥
हम तुम वै तीनो मिल खावै ॥४॥२९४॥

दिज सुन बात चले सभ धामा ॥
पूछे भ्रात सुपूत पितामा ॥
बाध देहु तउ छूटे धरमा ॥
भोज भुजे तउ छूटे करमा ॥५ ॥२९५ ॥
यहि रजीआ का पुत महाबल ॥
जिन जीते छत्री गन दलमल ॥
छत्रापन आपन बल लीना ॥
इन को काढि धरन ते दीना ॥६ ॥२९६ ॥

तोटक छंद ॥

इम बात जबै न्रिप ते सुनियं ॥
ग्रह बैठ सबै दिज मंत्र कीयं ॥
अज सैन अजै भट दास सुतं ॥
अत दुहकर कुतसित क्रूर मतं ॥७ ॥२९७ ॥
मिल खाइ तउ खोवै जनम जगं ॥
नहि खात तु जात है काल मगं ॥
मिल मित्र सु कीजै कउन मतं ॥
जिह भात रहे जग आज पतं ॥८ ॥२९८ ॥
सुन राजन राज महान मतं ॥
अनभीत अजीत समसत छितं ॥
अनगाह अथाह अनंत दलं ॥
अनभंग अगंज महा प्रबलं ॥९ ॥२९९ ॥
इह ठउर न छत्री एक नरं ॥
सुन साचु महा न्रिपराज बरं ॥
कहिकै दिज सउ उठि जात भए ॥
वेह आनि जसूस बताइ दए ॥१० ॥३०० ॥
तहा सिंघ अजै मनि रोस बढी ॥
करि कोप चमूं चतुरंग चढी ॥
तह जाइ परी जह खत्र बरं ॥
बहु कूदि परे दिज साम घरं ॥११ ॥३०१ ॥
दिज मंडल बैठि बिचारु कीयो ॥
सब ही दिज मंडल गोद लीयो ॥
कहु कउन सु बैठि बिचार करै ॥
न्रिप साथ रहै नहीं एऊ मरै ॥१२ ॥३०२ ॥
इह भाति कही तिह ताहि सभै ॥
तुम तोर जनेवन देहु अबै ॥
जोऊ मानि कहियो सोई लेत भए ॥
तेऊ बैस हुइ बाणज करत भए ॥१३ ॥३०३ ॥
जिह तोर जनेऊ न कीन हठं ॥
तिन सिउ उन भोजु कीओ इकठं ॥
फिर जाइ जसूसहि ऐस कहिओ ॥
इन मै उन मै इक भेदु रहिओ ॥१४ ॥३०४ ॥
पुनि बोलि उठियो न्रिप सरब दिजं ॥
नहि छत्रतु देहु सुताहि तुअं ॥
मरिगे सुनि बात मनो सब ही ॥
उठि कै ग्रिहि जात भए तब ही ॥१५ ॥३०५ ॥
सभ बैठि बिचारन मंत्र लगे ॥
सभ सोक के सागर बीच डुबे ॥
वहि बाध बहिठ अति तेऊ हठं ॥
हम ए दोऊ भ्रात चलै इकठं ॥१६ ॥३०६ ॥

हठ कीन दिजै तिन लीन सुता ॥
अति रूप महा छबि परम प्रभा ॥
त्रियो पेट सनौढ ते पूत भए ॥
वहि जाति सनौढ कहात भए ॥१७॥३०७॥
सुत अउरन के उह ठा जु अहै ॥
उत छत्रीअ जाति अनेक भए ॥
न्रिप के संगि जो मिलि जातु भए ॥
नर सो रजपूत कहात भए ॥१८॥३०८॥
तिन जीत बिजै कहु राउ चड़्यो ॥
अति तेजु प्रचंड प्रतापु बढ्यो ॥
जोऊ आनि मिले अरु साक दए ॥
नर ते रजपूत कहात भए ॥१९॥३०९॥
जिन साक दए नहि रारि बढी ॥
तिन की इन लै जड़ मूल कढी ॥
दल ते बल ते धन टूटि गए ॥
वहि लागत बानज करम भए ॥२०॥३१०॥
जोऊ आनि मिले नहि जोरि लरे ॥
वहि बाध महागनि होम करे ॥
अनगंध जरे महा कुंड अनलं ॥
भइओ छत्रीअ मेधु महा प्रबलं ॥२१॥३११॥

◀ *इति अजै सिंघ का राज संपूरन भइआ ॥*

जगराज ॥ तोमर छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

बिआसी बरख परमान ॥
दिन दोइ मास असटान ॥
बहु राजु भाग कमाइ ॥
पुनि न्रिप को न्रिपराइ ॥१॥३१२॥
सुन राज राज महान ॥
दस चारि चारि निधान ॥
दस दोइ दुआदस मंत ॥
धरनी धरान महंति ॥२॥३१३॥
पुनि भयो उदोत न्रिपाल ॥
रस रति रूप रसाल ॥
अति भान तेज प्रचंड ॥
अनखंड तेज प्रचंड ॥३॥३१४॥
तिनि बोलि बिप्र महान ॥
पसु मेध जग रचान ॥
दिज प्राग जोत बुलाइ ॥
अपि कामरूप कहाइ ॥४॥३१५॥
दिज कामरूप अनेक ॥
न्रिप बोलि लीन बिसेख ॥
सभ जीअ जग अपार ॥
मख होम कीन अबिचार ॥५॥३१६॥
पसु एक पै दस बार ॥
पड़ि बेद मंत्र अबिचार ॥
अबि मधि होम कराइ ॥
धनु भूप ते बहु पाइ ॥६॥३१७॥

पसु मेघ जग कराइ ॥
बहु भात राजु सुहाइ ॥
बरख असीह असट प्रमान ॥
दुइ मास राजु कमान ॥७॥३१८॥
पुन कठन काल करवाल ॥
जग जारीआ जिह जुवाल ॥
वहि खंडीआ अनखंड ॥
अनखंड राज प्रचंड ॥८॥३१९॥

◀ इति पंचमो राज समापतम सतु सुभम सतु ॥

तोमर छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

पुन भए मुनी छित राइ ॥
इह लोक केहरि राइ ॥
अरि जीति जीति अखंड ॥
महि कीन राजु प्रचंड ॥१॥३२०॥
अरि घाइ घाइ अनेक ॥
रिपु छाडीयो नहीं एक ॥
अनखंड राजु कमाइ ॥
छित छीन छत्र फिराइ ॥२॥३२१॥
अनखंड रूप अपार ॥
अनमंड राज जुझार ॥
अबिकार रूप प्रचंड ॥
अनखंड राज अमंड ॥३॥३२२॥
बहु जीति जीति न्रिपाल ॥
बहु छाडि कै सर जाल ॥
अरि मारि मारि अनंत ॥
छित कीन राज दुरंत ॥४॥३२३॥
बहु राज भाग कमाइ ॥
इम बोलीओ न्रिपराइ ॥
इक कीजीऐ मखसाल ॥
दिज बोलि लेहु उताल ॥५॥३२४॥
दिज बोलि लीन अनेक ॥
ग्रिह छाडीओ नही एक ॥
मिलि मंत्र कीन बिचार ॥
मति मित्र मंत्र उचार ॥६॥३२५॥
तब बोलिओ न्रिप राइ ॥
करि जग को चित चाइ ॥
किव कीजीऐ मखसाल ॥
कहु मंत्र मित्र उताल ॥७॥३२६॥
तब मंत्र मित्रन कीन ॥
न्रिप संग यउ कहि दीन ॥
सुनि राज राज उदार ॥
दस चारि चारि अपार ॥८॥३२७॥
सतिजुग मै सुनि राइ ॥
मख कीन चंड बनाइ ॥
अरि मार कै महिखेस ॥
बहु तोख कीन पसेस ॥९॥३२८॥

महिखेस कउ रण घाइ ॥
सिरि इंद्र छत्र फिराइ ॥
करि तोख जोगनि सरब ॥
करि दूर दानव गरब ॥१० ॥३२९ ॥
महिखेस कउ रणि जीति ॥
दिज देव कीन अभीत ॥
त्रिदसेस लीन बुलाइ ॥
छित छीन छत्र फिराइ ॥११ ॥३३० ॥
मुखचार लीन बुलाइ ॥
चित चउप सिउ जग माइ ॥
करि जग को आरंभ ॥
अनखंड तेज प्रचंड ॥१२ ॥३३१ ॥
तब बोलीयो मुख चार ॥
सुनि चंडि चंड जुहार ॥
जिम होइ आइस मोहि ॥
तिम भाखऊ मत तोहि ॥१३ ॥३३२ ॥
जग जीअ जंत अपार ॥
निज लीन देव हकार ॥
अरि काटि कै पल खंड ॥
पड़ि बेद मंत्र उदंड ॥१४ ॥३३३ ॥

रूआल छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

बोलि बिपन मंत्र मित्रन जग कीन अपार ॥
इंद्र अउर उपिंद्र लै कै बोलि कै मुख चार ॥
कउन भातन कीजीऐ अब जग को आरंभ ॥
आज मोहि उचारीऐ सुनि मित्र मंत्र असंभ ॥१ ॥३३४ ॥
मास के पल काटि कै पड़ि बेद मंत्र अपार ॥
अगनि भीतर होमीऐ सुनि राज राज अबिचार ॥
छेदि चिछुर बिड़ारासुर धूलि करणि खपाइ ॥
मार दानव कउ करिओ मख दैत मेध बनाइ ॥२ ॥३३५ ॥
तैस ही मख कीजीऐ सुनि राज राज प्रचंड ॥
जीति दानव देस के बलवान पुरख अखंड ॥
तैस ही मख मार कै सिरि इंद्र छत्र फिराइ ॥
जैस सुर सुखु पाइओ तिव संत होहु सहाइ ॥३ ॥३३६ ॥

◀ *गिआन प्रबोध संपूरन ॥*

चौबीस अवतार ॥

SECTION 08: CHAUBIS AVTAR

Twenty-Four Incarnations of Vishnu · By Guru Gobind Singh Ji

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ चउबीस अउतार कथनं ॥

पातिसाही १० ॥

त्वप्रसादि ॥ चौपई ॥
अब चउबीस उचरौ अवतारा ॥
जिह बिधि तिन का लखा अखारा ॥
सुनीअहु संत सबै चित लाई ॥
बरनत स्याम जथामति भाई ॥१॥
जब जब होति अरिसटि अपारा ॥
तब तब देह धरत अवतारा ॥
काल सबन को पेखि तमासा ॥
अंतहकाल करत है नासा ॥२॥
काल सभन का करत पसारा ॥
अंत कालि सोई खापनिहारा ॥
आपन रूप अनंतन धरही ॥
आपहि मधि लीन पुनि करही ॥३॥
इन महि स्रिसटि सु दस अवतारा ॥
जिन महि रमिआ रामु हमारा ॥
अनत चतुरदस गनि अवतारु ॥
कहो जु तिन तिन कीए अखारु ॥४॥
काल आपनो नाम छपाई ॥
अवरन के सिरि दे बुरिआई ॥
आपन रहत निरालम जग ते ॥
जान लए जा नामै तब ते ॥५॥
आप रचे आपे कल घाए ॥
अवरन के दे मूंडि हताए ॥
आप निरालम रहा न पाया ॥
ता ते नाम बिअंत कहाया ॥६॥
जो चउबीस अवतार कहाए ॥
तिन भी तुम प्रभ तनिक न पाए ॥
सभ ही जग भरमे भवरायं ॥
ता ते नाम बिअंत कहायं ॥७॥
सभ ही छलत न आप छलाया ॥
ता ते छलीआ आप कहाया ॥
संतन दुखी निरखि अकुलावै ॥
दीन बंधु ता ते कहलावै ॥८॥
अंति करत सभ जग को काला ॥
नामु काल ता ते जग डाला ॥
समै संत पर होत सहाई ॥
ता ते संख्या संत सुनाई ॥९॥
निरखि दीन पर होत दिआरा ॥
दीन बंधु हम तबै बिचारा ॥

संतन पर करुणा रसु ढरई ॥
करुणानिधि जग तबै उचरई ॥१०॥
संकट हरत साधवन सदा ॥
संकट हरन नामु भयो तदा ॥
दुख दाहत संतन के आयो ॥
दुखदाहन प्रभ तदिन कहायो ॥११॥
रहा अनंत अंत नहीं पायो ॥
या ते नामु बिअंत कहायो ॥
जग मो रूप सभन कै धरता ॥
या ते नामु बखनीयत करता ॥१२॥
किनहूं कहूं न ताहि लखायो ॥
इह करि नाम अलख कहायो ॥
जोनि जगत मै कबहूं न आया ॥
या ते सभो अजोन बताया ॥१३॥
ब्रहमादिक सब ही पचि हारे ॥
बिसन महेसवर कउन बिचारे ॥
चंद सूर जिनि करे बिचारा ॥
ता ते जनीयत है करतारा ॥१४॥
सदा अभेख अभेखी रहई ॥
ता ते जगत अभेखी कहई ॥
अलख रूप किनहूं नहि जाना ॥
तिह कर जात अलेख बखाना ॥१५॥
रूप अनूप सरूप अपारा ॥
भेख अभेख सभन ते निआरा ॥
दाइक सभो अजाची सभ ते ॥
जान लयो करता हम तब ते ॥१६॥
लगन सगन ते रहत निरालम ॥
है यह कथा जगत मै मालम ॥
जंत्र मंत्र तंत्र न रिझाया ॥
भेख करत किनहूं नहि पाया ॥१७॥
जग आपन आपन उरझाना ॥
पारब्रहम काहूं न पछाना ॥
इक मड़ीअन कबरन वे जाहीं ॥
दुहूंअन मै परमेसर नाही ॥१८॥
ए दोऊ मोह बाद मो पचे ॥
तिन ते नाथ निराले बचे ॥
जा ते छूटि गयो भ्रम उर का ॥
तिह आगै हिंदू किआ तुरका ॥१९॥
इक तसबी इक माला धरही ॥
एक कुरान पुरान उचरही ॥
करत बिरुध गए मरि मूड़ा ॥
प्रभ को रंगु न लागा गूड़ा ॥२०॥
जो जो रंग एक के राचे ॥
ते ते लोक लाज तजि नाचे ॥
आदि पुरख जिनि एकु पछाना ॥
दुतीआ भाव न मन महि आना ॥२१॥
जो जो भाव दुतिय महि राचे ॥
ते ते मीत मिलन ते बाचे ॥
एक पुरख जिनि नैकु पछाना ॥
तिन ही परम तत कह जाना ॥२२॥

जोगी संनिआसी है जेते ॥
मुंडीआ मुसलमान गन केते ॥
भेख धरे लूटत संसारा ॥
छपत साधु जिह नामु आधारा ॥२३॥
पेट हेतु नर डिंभु दिखाही ॥
डिंभ करे बिनु पईयत नाहीं ॥
जिन नर एक पुरख कह धिआयो ॥
तिन करि डिंभ न किसी दिखायो ॥२४॥
डिंभ करे बिनु हाथि न आवै ॥
कोऊ न काहूं सीस निवावै ॥
जो इहु पेट न काहूं होता ॥
राव रंक काहूं को कहता ॥२५॥
जिन प्रभु एक वहै ठहरायो ॥
तिन कर डिंभ न किसू दिखायो ॥
सीस दीयो उन सिरर न दीना ॥
रंच समान देह करि चीना ॥२६॥
कान छेद जोगी कहवायो ॥
अति प्रपंच कर बनहि सिधायो ॥
एक नामु को ततु न लयो ॥
बन को भयो न ग्रिह को भयो ॥२७॥
कहा लगै कबि कथै बिचारा ॥
रसना एक न पइयत पारा ॥
जिहबा कोटि कोटि कोऊ धरै ॥
गुण समुंद्र त्व पार न परै ॥२८॥
प्रथम काल सभ जग को ताता ॥
ता ते भयो तेज बिख्याता ॥
सोई भवानी नामु कहाई ॥
जिनि सिगरी यह स्रिसटि उपाई ॥२९॥
प्रिथमे ओअंकार तिनि कहा ॥
सो धुनि पूर जगत मो रहा ॥
ता ते जगत भयो बिसथारा ॥
पुरखु प्रक्रिति जब दुहू बिचारा ॥३०॥
जगत भयो ता ते सभ जनीयत ॥
चार खानि करि प्रगट बखनीयत ॥
सकति इती नही बरन सुनाऊ ॥
भिंन भिंन करि नाम बताउ ॥३१॥
बली अबली दोऊ उपजाए ॥
ऊच नीच करि भिंन दिखाए ॥
बपु धरि काल बली बलवाना ॥
आपहि रूप धरत भयो नाना ॥३२॥
भिंन भिंन जिमु देह धराए ॥
तिमु तिमु कर अवतार कहाए ॥
परम रूप जो एक कहायो ॥
अंति सभो तिह मधि मिलायो ॥३३॥
जितिक जगति कै जीव बखानो ॥
एक जोति सभ ही महि जानो ॥
काल रूप भगवान भनैबो ॥
ता महि लीन जगति सभ ह्वैबो ॥३४॥
जो किछु दिसटि अगोचर आवत ॥
ता कहु मन माया ठहरावत ॥

एकहि आप सभन मो बिआपा ॥
सभ कोई भिंन भिंन कर थापा ॥३५॥
सभ ही महि रम रहियो अलेखा ॥
मागत भिंन भिंन ते लेखा ॥
जिन नर एक वहै ठहरायो ॥
तिन ही परम ततु कहु पायो ॥३६॥
एकह रूप अनूप सरूपा ॥
रंक भयो राव कहूं भूपा ॥
भिंन भिंन सभहन उरझायो ॥
सभ ते जुदो न किनहुं पायो ॥३७॥
भिंन भिंन सभहूं उपजायो ॥
भिंन भिंन करि तिनो खपायो ॥
आप किसू को दोस न लीना ॥
अउरन सिर बुरिआई दीना ॥३८॥

अथ प्रथम मछ अवतार कथनं ॥

चौपई ॥

संखासुर दानव पुनि भयो ॥
बहु बिधि कै जग को दुख दयो ॥
मछ अवतार आपि पुनि धरा ॥
आपन जापु आप मो करा ॥३९॥
प्रिथमै तुछ मीन बपु धरा ॥
पैठि समुंद्र झकझोरन करा ॥
पुनि पुनि करत भयो बिसथारा ॥
संखासुरि तब कोप बिचारा ॥४०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तबै कोप गरजियो बली संख बीरं ॥
धरे ससत्र असत्रं सजे लोह चीरं ॥
चतुर बेद पातं कीयो सिंधु मधं ॥
त्रस्रयो असट नैणं करियो जापु सुधं ॥४१॥
तबै संभरे दीन हेतं दिआलं ॥
धरे लोह कोहं क्रिपा कै क्रिपालं ॥
महा असत्र पातं करे ससत्र घातं ॥
टरे देव सरबं गिरे लोक सातं ॥४२॥
भए अत्र घातं गिरे चउर चीरं ॥
रुले तछ मुछं उठे तिछ तीरं ॥
गिरे सुंड मुंडं रणं भीम रूपं ॥
मनो खेल पउढे हठी फागु जूपं ॥४३॥
बहे खगयं खेत खिंगं सु धीरं ॥
सुभै ससत्र संजान सो सूरबीरं ॥
गिरे गउरि गाजी खुले हथ बथं ॥
नचियो रुद्र रुद्रं नचे मछ मथं ॥४४॥

रसावल छंद ॥

महा बीर गजे ॥
सुभं ससत्र सजे ॥

बधे गज गाहं ॥
सु हूरं उछाहं ॥४५॥
ढला ढुक ढालं ॥
झमी तेग कालं ॥
कटा काट बाहै ॥
उभै जीत चाहै ॥४६॥
मुखं मुछ बंकी ॥
तमं तेग अतंकी ॥
फिरै गउर गाजी ॥
नचै तुंद ताजी ॥४७॥

भुजंग छंद ॥

भरियो रोस संखासुरं देख सैणं ॥
तपे बीर बकत्रं कीए रकत नैणं ॥
भुजा ठोक भूपं करियो नाद उचं ॥
सुणे गरभणीआन के गरभ मुचं ॥४८॥
लगे ठाम ठामं दमामं दमंके ॥
खुले खेत मो खग खूनी खिमंके ॥
भए क्रूर भातं कमाणं कड़के ॥
नचे बीर बैताल भूतं भुड़के ॥४९॥
गिरियो आयुधं सायुधं बीर खेतं ॥
नचे कंधहीणं कमधं अचेतं ॥
खुले खग खूनी खिआलं खतंगं ॥
भजे कातरं सूर बजे निहंगं ॥५०॥
कटे चरम बरमं गिरियो सत्र ससत्रं ॥
भकै भै भरे भूत भूमं न्रिसत्रं ॥
रणं रंग रते सभी रंग भूमं ॥
गिरे जुध मधं बली झूमि झूमं ॥५१॥
भयो दुंद जुधं रणं संख मछं ॥
मनो दो गिरं जुध जुटे सपछं ॥
कटे मास टुकं भखे गिधि ब्रिधं ॥
हसै जोगणी चउसठा सूर सुधं ॥५२॥
कीयो उधार बेदं हते संखबीरं ॥
तज्यो मछ रूपं सज्यो सुंद्र चीरं ॥
सबै देव थापे कीयो दुसट नासं ॥
टरे सरब दानो भरे जीव त्रासं ॥५३॥

त्रिभंगी छंद ॥

संखासुर मारे बेद उधारे सत्र संघारे जसु लीनो ॥
देवे सु बुलायो राज बिठायो छत्र फिरायो सुख दीनो ॥
कोटं बजे बाजे अमरेसुर गाजे सुभ घरि साजे सोक हरे ॥
दै कोटक दछना क्रोर प्रदछना आनि सु मछ के पाइ परे ॥५४॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे मछ प्रथम अवतार संखासुर बधह समापतम सतु सुभम सतु ॥1॥*

अथ कछ अवतार कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

किती काल बीतयो करियो देव राजं ॥
भरे राज धामं सुभं सरब साजं ॥
गजं बाज बीणं बिना रतन भूपं ॥
करियो बिसन बीचार चितं अनूपं ॥१॥
सबै देव एकत्र कीने पुरिंद्रं ॥
ससं सूरजं आदि लै कै उपिंद्रं ॥
हुते दईत जे लोक मध्रयं हंकारी ॥
भए एकठे भ्राति भावं बिचारी ॥२॥
बद्यो अरधु अरधं दुहूं बाटि लीबो ॥
सबो बात मानी यहे काम कीबो ॥
करो मथनी कूट मंद्राचलेयं ॥
तक्रयो छीर सामुंद्र देअं अदेयं ॥३॥
करी मथका बासकं सिंध मधं ॥
मथै लाग दोऊ भए अधु अधं ॥
सिरं दैत लागे गही पुछ देवं ॥
मथ्रयो छीर सिंधं मनो माटकेवं ॥४॥
इसो कउण बीयो धरे भारु पबं ॥
उठे काप बीरं दित्रयादित्रय सबं ॥
तबै आप ही बिसन मंत्रं बिचारियो ॥
तरे परबतं कछपं रूप धारियो ॥५॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कछु दुतीआ अउतार बरननं संपूरनम सतु सुभम सतु ॥2॥

अथ छीर समुंद्र मथन चउदह रतन कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

तोटक छंद ॥

मिलि देव अदेवन सिंधु मथियो ॥
कबि स्याम कवितन मधि कथियो ॥
तब रतन चतुरदस यो निकसे ॥
असिता निसि मो ससि से बिगसे ॥१॥
अमरातक सीस की ओर हूअं ॥
मिलि पूछ गही दिसि देव दूअं ॥
रतनं निकसे बिगसे ससि से ॥
जनु घूटन लेत अमी रस के ॥२॥
निकस्रयो धनु साइक सुध सितं ॥
मद पान कढयो घट मद्रय मतं ॥
गज बाज सुधा लछमी निकसी ॥
घन मो मनो बिंदुलता बिगसी ॥३॥
कलपा द्रुम माहुर अउ रंभा ॥
जिह मोहि रहै लखि इंद्र सभा ॥
मनि कौसतुभ चंद सु रूप सुभं ॥
जिह भजत दैत बिलोक जुधं ॥४॥
निकसी गवराज सु धेनु भली ॥
जिह छीनि लयो सहसासत्र बली ॥
गनि रतन गनउ उप रतन अबै ॥

तुम संत सुनो चित लाइ सबै ॥५ ॥
गनि जोक हरीतकी ओर मधं ॥
जन पंच सु नामय संख सुभं ॥
ससि बेल बिजिया अरु चक्र गदा ॥
जुवराज बिराजत पानि सदा ॥६ ॥
धनु सारंग नंदग खग भणं ॥
जिन खंडि करे गन दईत रणं ॥
सिव सूल बड़वानल कपिल मुनं ॥
ति धनंतर चउदसवो रतनं ॥७ ॥
गनि रतन उपरतन औ धात गनो ॥
कहि धात सबै उपधात भनो ॥
सब नाम जथामति स्याम धरो ॥
घट जान कवी जिनि निंद करो ॥८ ॥
प्रिथमो गनि लोह सिका स्वरनं ॥
चतुरथ भन धात सितं रुकमं ॥
बहुरो कथि ताबर कली पितरं ॥
कथि असटम जिसतु है धात धरं ॥९ ॥
उपधात कथनं ॥

तोटक छंद ॥

सुरमं सिंगरफ हरताल गणं ॥
चतुरथ तिह सिंबलखार भणं ॥
म्रित संख मनासिल अभ्रकयं ॥
भनि असटम लोण रसं लवणं ॥१० ॥

दोहरा ॥

धातु उपधात जथा सकति सोहूं कही बनाइ ॥
खानन महि भी होत है कोई कहूं कमाइ ॥११ ॥

चौपई ॥

रतन उपरतन निकासे तबही ॥
धात उपधात दिरब मो सब ही ॥
तिह तब ही बिसनहि हिर लयो ॥
अवरनि बाट अवर नहि दयो ॥१२ ॥
सारंग सर असि चक्र गदा लीअ ॥
पाचामर लै नाद अधिक कीअ ॥
सूल पिनाक बिसह करि लीना ॥
सो लै महादेव कउ दीना ॥१३ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

दीयो इंद्र ऐरावतं बाज सूरं ॥
उठे दीह दानो जुधं लोह पूरं ॥
अनी दानवी देखि उठी अपारं ॥
तबै बिसन जू चिति कीनी बिचारं ॥१४ ॥

अथ नर नाराइण अवतार कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नरं अउर नाराइणं रूप धारी ॥
भयो सामुहे ससत्र असत्रं संभारी ॥
भटं ऐठि फैंटे भुजं ठोकि भूपं ॥
बजे सूल सेलं भए आप रूपं ॥१५॥
परियो आप मो लोह क्रोहं अपारं ॥
धरियो ऐस कै बिसनु त्रितीआवतारं ॥
नरं एकु नाराइणं दुऐ सरूपं ॥
दिपै जोति सउदर जु धारे अनूपं ॥१६॥
उठै टूक कोपं गुरजं प्रहारे ॥
जुटे जंग को जंग जोधा जुझारे ॥
उडी धूरि पूरं छुही ऐन गैनं ॥
डिगे देवता दैत कंपियो त्रिनैनं ॥१७॥
गिरे बीर एकं अनेकं प्रकारं ॥
सुभै जंग मो जंग जोधा जुझारं ॥
परीं तछ मुछं सभै अंग भंगं ॥
मनो पान कै भंग पौढे मलंगं ॥१८॥
दिसा मउ न आई अनी दैत राजं ॥
भजै सरब देवं तजे सरब साजं ॥
गिरे संज पुंज सिरं बाहु बीरं ॥
सुभै बान जिउ चेति पुहपं करीरं ॥१९॥
जबै जंग हारियो कीयो बिसन मंत्रं ॥
भयो अंत्रध्यानं करियो जानु तंतं ॥
महा मोहनी रूप धारियो अनूपं ॥
छके देखि दोऊ दितियादिति भूपं ॥२०॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे नर नाराइण अवतार चतुरथ संपूरनं ॥4॥*

अथ महा मोहनी अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

महा मोहनी रूप धारियो अपारं ॥
रहे मोहि कै दिति आदितिया कुमारं ॥
छके प्रेम जोगं रहे रीझ सरबं ॥
तजै ससत्र असत्रं दीयो छोर गरबं ॥१॥
फंधे प्रेम फाधं भयो कोप हीणं ॥
लगै नैन बैनं धयो पानि पीणं ॥
गिरे झूंमि भूमं छुटे जान प्राणं ॥
सभै चेत हीणं लगे जान बाणं ॥२॥
लखे चेतहीणं भए सूर सरबं ॥
छुटे ससत्र असत्रं सभै अरब खरबं ॥
भयो प्रेम जोगं लगे नैन ऐसे ॥
मनो फाधि फाधे म्रिगीराज जैसे ॥३॥
जिनै रतन बाटे तुमऊ ताहि जानो ॥
कथा ब्रिध ते बात थोरी बखानो ॥
सबै पाति पातं बहिठै सु बीरं ॥
कटं पेच छोरे तजे तेग तीरं ॥४॥

चौपई ॥

सभ जग को जु धनंतरि दीआ ॥
कलप ब्रिछु लछमी करि लीआ ॥
सिव माहुर रंभा सभ लोकन ॥
सुख करता हरता सभ सोकन ॥५ ॥

दोहरा ॥

ससि क्रिस के करबे नमित मनि लछमी करि लीन ॥
उरि राखी तिह ते चमक प्रगट दिखाई दीन ॥६ ॥
गाइ रिखीसन कउ दई कह लउ करो बिचार ॥
सासत्र सोध कबीअन मुखन लीजहु पूछि सुधार ॥७ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

रहे रीझ ऐसे सबै देव दानं ॥
म्रिगी राज जैसे सुने नाद कानं ॥
बटे रतन सरबं गई छूट रारं ॥
धरियो ऐस स्री बिसनु पंचम वतारं ॥८ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे महामोहनी पंचमो अवतार समापतम सतु सुभम सतु ॥5॥*

अथ बैराह अवतार कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

दयो बाट मदियं अमदियं भगवानं ॥
गए ठाम ठामं सबै देव दानं ॥
पुनर द्रोह बढियो सु आपं मझारं ॥
भजे देवता दईत जिते जुझारं ॥१ ॥
हिरिन्नयो हिरिनाछसं दोइ बीरं ॥
सबै लोग कै जीत लीने गहीरं ॥
जलं बा थलेयं कीयो राज सरबं ॥
भुजा देखि भारी बढियो ताहि गरबं ॥२ ॥
चहै जुध मो सो करे आनि कोऊ ॥
बली होए वा सो भिरे आनि सोऊ ॥
चड़ियो मेर स्रिंग पगं गुसट संगं ॥
हरे बेद भूमं कीए सरब भंगं ॥३ ॥
धसी भूमि बेदं रही हुऐ पतारं ॥
धरियो बिसन तउ दाड़ गाड़ावतारं ॥
धसयो नीर मधं कीयो ऊच नादं ॥
रही धूरि पूरं धुनं निरबखादं ॥४ ॥
बजे डाक डउरू दोऊ बीर जागे ॥
सुणे नादि बंके महा भीर भागे ॥
झमी तेग तेजं सरोसं प्रहारं ॥
खिवी दामिनी जाणु भादो मझारं ॥५ ॥
मुखं मुछ बंकी बकै सूर बीरं ॥
तड़ंकार तेगं सड़ंकार तीरं ॥
धमकार सागं खड़कार खगं ॥

टुटे टूक टोपं उठे नाल अगं ॥६॥
उठे नद नादं ढमकार ढोलं ॥
ढलंकार ढालं मुखं मार बोलं ॥
खहे खग खूनी खुले बीर खेतं ॥
नचे कंधि हीणं कमधं न्रिचेतं ॥७॥
भरे जोगणी पत्र चउसठ चारी ॥
नची खोलि सीसं बकी बिकरारी ॥
हसै भूत प्रेतं महा बिकरालं ॥
बजे डाक डउरू करूरं करालं ॥८॥
प्रहारंत मुसटं करै पाव घातं ॥
मनो सिंघ सिंघं डहे गज मातं ॥
छुटी ईस ताड़ी डगियो ब्रहम धिआनं ॥
भज्यो चंद्रमा काप भानं मध्यानं ॥९॥
जले बा थलेयं थलं तथ नीरं ॥
किधो संधियं बाण रघु इंद्र बीरं ॥
करै दैत आघात मुसटं प्रहारं ॥
मनो चोट बाहै घरियारी घरियारं ॥१०॥
बजे डंग बंके सु क्रूरं करारे ॥
मनो गज जुटे दंतारे दंतारे ॥
ढमंकार ढोलं रणंके नफीरं ॥
सड़कार सागं तड़कार तीरं ॥११॥
दिनं असट जुधं भयो असट रैणं ॥
डगी भूमि सरबं उठियो काप गैणं ॥
रणं रंग रते सभै रंग भूमं ॥
हण्यो बिसन सत्रं गिरियो अंति झूमं ॥१२॥
धरे दाड़ अग्रं चतुर बेद तबं ॥
हठी दुसटि जिते भजे दैत सबं ॥
दई ब्रहम आगिआ धुनं बेद कीयं ॥
सबै संतनं तान को सुख दीयं ॥१३॥
धरियो खसटमं बिसन ऐसावतारं ॥
सबै दुसट जितै कीयो बेद उधारं ॥
थटियो धरम राजं जिते देव सरबं ॥
उतारियो भली भात सो ताहि गरबं ॥१४॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बैराह खसटम अवतार समापतम सतु सुभम सतु ॥6॥

अथ नरसिंघ अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

पाधरी छंद ॥

इह भाति कीयो दिवराज राज ॥
भंडार भरे सुभ सरब साज ॥
जब देवतान बढियो गरूर ॥
बलवंत दैत उठे करूर ॥१॥
लिनो छिनाइ दिवराज राज ॥
बाजित्र नेक उठे सु बाजि ॥
इह भाति जगति दोही फिराइ ॥
जलं बा थलेअं हिरिनाछ राइ ॥२॥

इक द्योस गयो निज नारि तीर ॥
सजि सुध साज निज अंगि बीर ॥
किह भाति स्वत्रिय मो भयो निरुकत ॥
तब भयो दुसट को बीरज मुकत ॥३॥
प्रहलाद भगत लीनो वतार ॥
सब करनि काज संतन उधार ॥
चटसार पड़नि सउप्यो न्रिपालि ॥
पटीयहि कहियो लिखि दै गुपाल ॥४॥

तोटक छंद ॥

इकि दिवस गयो चटसारि न्रिपं ॥
चिति चौक रहियो सुभि देखि सुतं ॥
जो पड़ियो दिज ते सुन ताहि रड़ो ॥
निरभै सिसु नामु गुपाल पड़ो ॥५॥
सुनि नामु गुपाल रिस्रयो असुरं ॥
बिनु मोहि सु कउणु भजो दुसरं ॥
जीय माहि धरो सिसु याहि हनो ॥
जड़ किउ भगवान को नाम भनो ॥६॥
जल अउर थलं इक बीर मनं ॥
इह काहि गुपाल को नामु भनं ॥
तब ही तिह बाधत थंम भए ॥
सुनि स्रवनन दानव बैन धए ॥७॥
गहि मूड़ चले सिसु मारन को ॥
निकस्रयो ब गुपाल उबारन को ॥
चकचउध रहे जन देखि सबै ॥
निकस्रयो हरि फारि किवार जबै ॥८॥
लखि देव दिवार सबै थहरे ॥
अविलोकि चराचर हूंहि हिरे ॥
गरजे नरसिंघ नरात करं ॥
द्रिग रत कीए मुख स्रोण भरं ॥९॥
लखि दानव भाज चले सब ही ॥
गरजियो नरसिंघ रणं जब ही ॥
इक भूपति ठाढि रहियो रण मै ॥
गहि हाथि गदा निरभै मन मै ॥१०॥
लरजे सब सूर न्रिपं गरजे ॥
समुहात भए भट केहरि के ॥
जु गए समुहे छित तै पटके ॥
रणि भै रणधीर बटा नट के ॥११॥
बबके रणधीर सु बीर घणे ॥
रहिगे मनो किंसक स्रोण सणे ॥
उमगे चहूं ओरन ते रिपु यौ ॥
बरसाति बहारन अभ्रन जियो ॥१२॥
बरखै सर सुध सिला सितियं ॥
उमडे बरबीर दसो दिसियं ॥
चमकंत क्रिपाण सु बाण जुधं ॥
फहरंत धुजा जनु बीर क्रुधं ॥१३॥
हहरंत हठी बरखंत सरं ॥
जनु सावन मेघ बुठियो दुसरं ॥
फरहंत धुजा हहरंत हयं ॥
उपजियो जीअ दानव राइ भयं ॥१४॥

हिहनात हयं गरजंत गजं ॥
भट बाह कटी जनु इंद्र धुजं ॥
तरफंत भटं गरजं गजं ॥
सुन कै धुनि सावण मेघ लजं ॥१५॥
बिचल्रयो पग द्वैकु फिरियो पुनि जियो ॥
करि पुंछ लगे अहि क्रुधत जियो ॥
रणरंग समै मुख यो चमक्यो ॥
लखि सूर सरोरहु सो दमक्रयो ॥१६॥
रण रंग तुरंगन ऐस भयो ॥
सिव धिआन छुट्र्यो ब्रहमंड गिरियो ॥
सर सेल सिला सित ऐस बहे ॥
नभ अउर धरा दोऊ पूरि रहे ॥१७॥
गण गंध्रब देखि दोऊ हरखे ॥
पुहपावलि देव सभै बरखे ॥
मिल गे भट आप बिखै दोऊ यो ॥
सिस खेलत रैणि हुड़हुड जियो ॥१८॥

बेली ब्रिंदम छंद ॥

रणधीर बीर सु गजही ॥
लखि देव अदेव सु लजही ॥
इक सूर घाइल घूंमही ॥
जनु धूमि अधोमुख धूमही ॥१९॥
भट एक अनेक प्रकार ही ॥
जुझे अजुझ जुझार ही ॥
फहरंत बैरक बाणयं ॥
थहरंत जोध किकाणयं ॥२०॥

तोमर छंद ॥

हिरणात कोट किकान ॥
बरखंत सेल जुआन ॥
छुटकंत साइक सुध ॥
मचियो अनूपम जुध ॥२१॥
भट एक अनेक प्रकार ॥
जुझे अनंत स्वार ॥
बाहै क्रिपाण निसंग ॥
मचियो अपूरब जंग ॥२२॥

दोधक छंद ॥

बाहि क्रिपाण सु बाण भट गण ॥
अंति गिरै पुनि जूझि महा रणि ॥
घाइ लगै इम घाइल झूलै ॥
फागुनि अंति बसंत से फूलै ॥२३॥
बाहि कटी भट एकन ऐसी ॥
सुंड मनो गज राजन जैसी ॥
सोहत एक अनेक प्रकारं ॥
फूल खिले जनु मधि फुलवारं ॥२४॥
स्रोण रंगे अरि एक अनेकं ॥
फूल रहे जनु किंसक नेकं ॥
धावत घाव क्रिपाण प्रहारं ॥

जानु कि कोप प्रतछ दिखारं ॥२५॥

तोटक छंद ॥

जूझि गिरे अरि एक अनेकं ॥
घाइ लगे बिसंभार बिसेखं ॥
काटि गिरे भट एकहि वारं ॥
साबुन जानु गई बहि तारं ॥२६॥
पूर परे भए चूर सिपाही ॥
सुआमि के काज की लाज निबाही ॥
बाहि क्रिपाणन बाण सु बीरं ॥
अंति भजे भय मानि अधीरं ॥२७॥

चौपई ॥

त्यागि चलै रण को सब बीरा ॥
लाज बिसर गई भए अधीरा ॥
हिरिनाछस तब आपु रिसाना ॥
बाधि चल्यो रण को करि गाना ॥२८॥
भरियो रोस नरसिंघ सरूपं ॥
आवत देखि समुहे रणि भूपं ॥
निज घावन को रोस न माना ॥
निरखि सेवकहि दुखी रिसाना ॥२९॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

कंपाई सटा सिंघ गरज्यो क्रूरं ॥
उड्यो हेरि बीरान के मुखि नूरं ॥
उठ्यो नाद बंके छुही गैणि रजं ॥
हसे देव सरबं भए दैत लजं ॥३०॥
मच्यं दुंद जुधं मचे दुइ जुआणं ॥
तड़ंकार तेगं कड़के कमाणं ॥
भिरियो कोप कै दानवं सुलतानं ॥
हड़ं स्रोण चले मधं मुलताणं ॥३१॥
कड़कार तेगं तड़कार तीरं ॥
भए टूक टूकं रणं बीर धीरं ॥
बजे संख भूरं सु ढोलं ढमंके ॥
रड़ं कंक बंके डहै बीर बंके ॥३२॥
भजे बाजि गाजी सिपाही अनेकं ॥
रहे ठाढि भूपाल आगे न एकं ॥
फिरियो सिंघ सूरं सु क्रूरं करालं ॥
कंपाई सटा पूछ फेरी बिसालं ॥३३॥

दोहरा ॥

गरजत रणि नरसिंघ के भजे सूर अनेक ॥
एक टिकियो हिरिनाछ तह अवर न जोधा एकु ॥३४॥

चौपई ॥

मुसट जुध जुटे भट दोऊ ॥
तीसर ताहि न पेखीअत कोऊ ॥
भए दुहुन के राते नैणा ॥

देखत देव तमासे गैणा ॥३५॥
असट दिवस असटे निसि जुधा ॥
कीनो दुहूं भटन मिलि क्रुधा ॥
बहुरो असुर किछु कु मुरझाना ॥
गिरियो भूमि जनु ब्रिछ पुराना ॥३६॥
सीचि बारि पुनि ताहि जगायो ॥
जगो मूरछना पुनि जीय आयो ॥
बहुरो भिरे सूर दोई क्रुधा ॥
मंडियो बहुरि आप महि जुधा ॥३७॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

हला चाल कै कै पुनर बीर ढूके ॥
मचियो जुध जियो करन संगं घडूके ॥
नखं पात दोऊ करे दैत घातं ॥
मनो गज जुटे बनं मसति मातं ॥३८॥
पुनर नरसिंघं धरा ताहि मारियो ॥
पुरानो पलासी मनो बाइ डारियो ॥
हन्यो देखि दुसटं भई पुहप बरखं ॥
कीए देवतियो आन कै जीत करखं ॥३९॥

पाधरी छंद ॥

कीनो नरसिंघ दुसटं संघार ॥
धरियो सु बिसन सपतम वतार ॥
लिनो सु भगत अपनो छिनाइ ॥
सब सिसटि धरम करमन चलाइ ॥४०॥
प्रहलाद करियो न्रिप छत्र फेरि ॥
दीनो संघार सब इम अंधेर ॥
सब दुसट अरिसट दिने खपाइ ॥
पुनि लई जोति जोतहि मिलाइ ॥४१॥
सभ दुसट मारि कीने अभेख ॥
पुन मिल्यो जाइ भीतर अलेख ॥
कबि जथामति कथ्यो बिचारु ॥
इम धरियो बिसनु सपतम वतार ॥४२॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे नरसिंघ सपतमो अवतार समातम सतु सुभम सतु ॥७॥

अथ बावन अवतार बरनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भए दिवस केतै नरसिंघावतारं ॥
पुनर भूमि मो पापा बाढचो अपारं ॥
करे लाग जगं पुनर दैत दानं ॥
बलि राज की देहि बढियो गुमानं ॥१॥
न पावै बलं देवता जग बासं ॥
भई इंद्र की राजधानी बिनासं ॥
करी जोग अराधना सरब देवं ॥
प्रसंनं भए काल पुरखं अभेवं ॥२॥
दीयो आइसं कालपुरखं अपारं ॥

धरो बावना बिसनु असटम वतारं ॥
लई बिसनु आगिआ चलियो धाइ ऐसे ॥
लहियो दारदी भूप भंडार जैसे ॥३॥

नराज छंद ॥

सरूप छोट धारि कै ॥
चलियो तहा बिचारि कै ॥
सभा नरेस जान्यो ॥
तही सु पाव ठान्नयो ॥४॥
सु बेद चार उचार कै ॥
सुण्यो न्रिपं सुधार कै ॥
बुलाइ बिपु को लयो ॥
मलयागर मूड़का दयो ॥५॥
पदारघ दीप दान दै ॥
प्रदछना अनेक कै ॥
करोरि दछना दई ॥
न हाथि बिप नै लई ॥६॥
कहियो न मोर काज है ॥
मिथ्या इह तोर साज है ॥
अढाइ पाव भूमि दै ॥
बसेख पूर कीरति लै ॥७॥

चौपई ॥

जब दिज ऐस बखानी बानी ॥
भूपति सहत न जान्यो रानी ॥
पैर अढाइ भूंमि दे कही ॥
द्रिड़ करि बात दिजोतम गही ॥८॥
दिजबर सुक्र हुतो न्रिप तीरा ॥
जान गयो सभ भेदु वजीरा ॥
जियो जियो देन प्रिथवी न्रिप कहै ॥
तिमु तिमु नाहि पुरोहित गहै ॥९॥
जब न्रिप देन धरा मनु कीना ॥
तब ही उतर सुक्र इम दीना ॥
लघु दिज याहि न भूप पछानो ॥
बिसनु अवतार इसी करि मानो ॥१०॥
सुनत बचन दानव सभ हसे ॥
उचरत सुक्र कहा घरि बसे ॥
ससिक समान न दिज महि मासा ॥
कस करहै इह जग बिनासा ॥११॥

दोहरा ॥

सुक्रोबाच ॥
जिम चिनगारी अगनि की गिरत सघन बन माहि ॥
अधिक तनिक ते होत है तिम दिजबर नर नाहि ॥१२॥

चौपई ॥

हसि भूपति इह बात बखानी ॥
सुनहो सुक्र तुम बात न जानी ॥

फुनि इह समो सभो छल जै है ॥
हरि सो फेरि न भिछक ऐ है ॥१३॥
मन महि बात इहै ठहराई ॥
मन मो धरी न किसू बताई ॥
भ्रित ते माग कमंडल एसा ॥
लग्यो दान तिह देन नरेसा ॥१४॥
सुक्र बात मन मो पहिचानी ॥
भेद न लहत भूप अगिआनी ॥
धारि मकरि के जार सरूपा ॥
पैठियो मध कमंडल भूपा ॥१५॥
न्रिप बर पानि सुराही लई ॥
दान समै दिजबर की भई ॥
दान हेत जब हाथ चलायो ॥
निकस नीर करि ताहि न आयो ॥१६॥

तोमर छंद ॥

चमक्यो तबै दिजराज ॥
करीऐ न्रिपेसु इलाज ॥
तिनका मिलै इह बीचि ॥
इक चछ हुऐ है नीच ॥१७॥
तिनुका न्रिपत करि लीन ॥
भीतर कमंडल दीन ॥
सुक्र आखि लगीआ जाइ ॥
इक चछ भयो दिज राइ ॥१८॥
नेत्र ते जु गिरियो नीर ॥
सोई लीयो करि दिज बीर ॥
करि नीर चुवन न दीन ॥
इम सुआमि कारज कीन ॥१९॥

चौपई ॥

चछ नीर कर भीतर परा ॥
वहै संकलप दिजह करि धरा ॥
ऐस तबै निज देह बढायो ॥
लोक छेदि परलोकि सिधायो ॥२०॥
निरख लोग अदभुत बिसमए ॥
दानव पेखि मूरछन भए ॥
पाव पतार छुयो सिर कासा ॥
चक्रित भए लखि लोक तमासा ॥२१॥
एकै पाव पतारहि छूआ ॥
दूसर पाव गगन लउ हूआ ॥
भिदियो अंड ब्रहमंड अपारा ॥
तिह ते गिरी गंग की धारा ॥२२॥
इह बिधि भूप अचंभव लहा ॥
मन क्रम बचन चक्रित हुऐ रहा ॥
सु कुछ भयो जोऊ सुक्रि उचारा ॥
सोई अखीयन हम आज निहारा ॥२३॥
अरधि देहि अपनो मिनि दीना ॥
इह बिधि कै भूपति जसु लीना ॥
जब लउ गंग जमुन को नीरा ॥

तब लउ चली कथा जगि धीरा ॥२४ ॥
बिसन प्रसंनि प्रतछ हुऐ कहा ॥
चोबदारु दुआरे हुऐ रहा ॥
कहियो चले तब लगै कहानी ॥
जब लग गंग जमुन को पानी ॥२५ ॥

दोहरा ॥

जह साधन संकट परै तह तह भए सहाइ ॥

दुआरपाल हुऐ दरि बसे भगत हेत हरिराइ ॥२६ ॥

चौपई ॥

असटम अवतार बिसन अस धरा ॥
साधन सबै क्रितारथ करा ॥
अब नवमो बरनो अवतारा ॥
सुनहु संत चित लाइ सु धारा ॥२७ ॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बावन असटमो अवतार बलि छलन समापतम सतु सुभम सतु ॥8॥

अथ परसराम अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

पुनि केतिक दिन भए बितीता ॥
छत्रनि सकल धरा कहु जीता ॥
अधिक जगत महि ऊच जनायो ॥
बासव बलि कहूं लैन न पायो ॥१ ॥
बिआकुल सकल देवता भए ॥
मिलि करि सभु बासव पै गए ॥
छत्री रूप धरे सभु असुरन ॥
आवत कहा भूप तुमरे मनि ॥२ ॥
सब देवन मिलि करियो बिचारा ॥
छीरसमुद्र कहु चले सुधारा ॥
काल पुरखु की करी बडाई ॥
इम आगिआ तह तै तिनि आई ॥३ ॥
दिज जमदगनि जगत मो सोहत ॥
नित उठि करत अघन ओघन हत ॥
तह तुम धरो बिसन अवतारा ॥
हनहु सक्र के सत्र सुधारा ॥४ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जयो जामदगनं दिजं आवतारी ॥
भयो रेणुका ते कवाची कुठारी ॥
धरियो छत्रीया पात को काल रूपं ॥
हन्यो जाइ जउनै सहंसासत्र भूपं ॥५ ॥
कहा गंम एती कथा सरब भाखउ ॥
कथा ब्रिध ते थोरीऐ बात राखउ ॥

भरे गरब छत्री नरेसं अपारं ॥
तिनै नास को पाणि धारियो कुठारं ॥६ ॥
हुती नंदनी सिंध जा की सुपुत्री ॥
तिसै माग हारियो सहंसासत्र छत्री ॥
लीयो छीन गायं हतियो राम तातं ॥
तिसी बैर कीने सबै भूप पातं ॥७ ॥
गई बाल ता ते लीयो सोध ता को ॥
हनियो तात मेरो कहो नामु वा को ॥
सहंसासत्र भूपं सुणियो स्रउण नामं ॥
गहे ससत्र असत्रं चलियो तउन ठामं ॥८ ॥
कहो राज मेरो हनियो तात कैसे ॥
अबै जुध जीतो हनो तोहि तैसे ॥
कहा मूड़ बैठो सु असत्रं संभारो ॥
चलो भाज ना तो सबै ससत्र डारो ॥९ ॥
सुणे बोल बंके भरियो भूप कोपं ॥
उठियो राज सरदूल लै पाणि धोपं ॥
हठियो खेति खूनी दिजं खेत्र हायो ॥
चहे आज ही जुध मो सो मचायो ॥१० ॥
धए सूर सरबं सुने बैन राजं ॥
चड़ियो क्रुध जुधं स्रजे सरब साजं ॥
गदा सैहथी सूल सेलं संभारी ॥
चले जुध काजं बडे छत्रधारी ॥११ ॥

नराज छंद ॥

क्रिपाण पाण धारि कै ॥
चले बली पुकारि कै ॥
सु मारि मारि भाखही ॥
सरोघ स्रोण चाखही ॥१२ ॥
संजोइ सैहथीन लै ॥
चड़े सु बीर रोस कै ॥
चटाक चाबकं उठे ॥
सहंस्र साइकं बुठै ॥१३ ॥

रसावल छंद ॥

भए एक ठउरे ॥
सबै सूर दउरे ॥
लयो घेरि रामं ॥
घटा सूर स्यामं ॥१४ ॥
कमाणं कड़ंके ॥
भए नाद बंके ॥
घटा जाणि सिआहं ॥
चड़िओ तिउ सिपाहं ॥१५ ॥
भए नाद बंके ॥
सु सेलं धमंके ॥
गजा जूह गजे ॥
सुभं संज सजे ॥१६ ॥
चहूं ओर ढूके ॥
गजं जूह झूके ॥
सरं ब्रयूह छूटे ॥

रिपं सीस फूटे ॥१७॥
उठे नाद भारी ॥
रिसे छत्रधारी ॥
घिरियो राम सैनं ॥
सिवं जेम मैनं ॥१८॥
रणं रंग रते ॥
त्रसे तेज तते ॥
उठी सैण धूरं ॥
रहियो गैण पूरं ॥१९॥
घणे ढोल बजे ॥
महा बीर गजे ॥
मनो सिंघ छुटे ॥
हिमं बीर जुटे ॥२०॥
करै मारि मारं ॥
बकै बिकरारं ॥
गिरै अंग भंगं ॥
दवं जान दंगं ॥२१॥
गए छूट असत्रं ॥
भजै ह्वै न्रिअसत्रं ॥
खिलै सार बाजी ॥
तुरे तुंद ताजी ॥२२॥
भुजा ठोकि बीरं ॥
करे घाइ तीरं ॥
नेजे गड गाढे ॥
मचे बैर बाढे ॥२३॥
घणै घाइ पेले ॥
मनो फाग खेले ॥
करी बाण बरखा ॥
भए जीत करखा ॥२४॥
गिरे अंत घूमं ॥
मनो ब्रिछ झूमं ॥
टूटे ससत्र असत्रं ॥
भजे हुऐ निर असत्रं ॥२५॥
जिते सत्रु आए ॥
तिते राम घाए ॥
चले भाजि सरबं ॥
भयो दूर गरबं ॥२६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

महा ससत्र धारे चलियो आप भूपं ॥
लए सरब सैना कीए आप रूपं ॥
अनंत असत्र छोरे भयो जुधु मानं ॥
प्रभा काल मानो सभै रसमि भानं ॥२७॥
भुजा ठोकि भूपं कीयो जुध ऐसे ॥
मनो बीर ब्रितरासुरे इंद्र जैसे ॥
सबै काट रामं कीयो बाहि हीनं ॥
हती सरब सैना भयो गरब छीनं ॥२८॥
गहियो राम पाणं कुठारं करालं ॥
कटी सुंड सी राजि बाहं बिसालं ॥
भए अंग भंगं करं काल हीणं ॥

गयो गरब सरबं भई सैण छीणं ॥२९॥
रहियो अंत खेतं अचेतं नरेसं ॥
बचे बीर जेते गए भाज देसं ॥
लई छीन छउनी करै छत्रि घातं ॥
चिरंकाल पूजा करी लोक मातं ॥३०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

लई छीन छउनी करै बिप भूपं ॥
हरी फेरि छत्रिन दिजं जीति जूपं ॥
दिजं आरतं तीर रामं पुकारं ॥
चलियो रोस स्री राम लीने कुठारं ॥३१॥
सुन्यो सरब भूपं हठी राम आए ॥
सभं जुधु को ससत्र असत्रं बनाए ॥
चड़े चउप कै कै कीए जुध ऐसे ॥
मनो राम सो रावणं लंक जैसे ॥३२॥
लगे ससत्रं असत्रं लखे राम अंगं ॥
गहे बाण पाणं कीए सत्र भंगं ॥
भुजा हीण एकं सिरं हीण केते ॥
सबै मार डारे गए बीर जेते ॥३३॥
करी छत्रहीण छितं कीस बारं ॥
हणे ऐस ही भूप सरबं सुधारं ॥
कथा सरब जउ छोर ते लै सुनाउ ॥
ह्रिदै ग्रंथ के बाढबे ते डराउ ॥३४॥

चौपई ॥

करि जग मो इह भाति अखारा ॥
नवम वतार बिसन इम धारा ॥
अब बरनो दसमो अवतारा ॥
संत जना का प्रान अधारा ॥३५॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके नवमो अवतार परसराम समापतम सतु सुभम सतु ॥9॥*

अथ ब्रहमा अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

अब उचरो मै कथा चिरानी ॥
जिम उपज्यो ब्रहमा सुर गिआनी ॥
चतुरानन अघ ओघन हरता ॥
उपज्यो सकल स्रिसटि को करता ॥१॥
जब जब बेद नास होइ जाही ॥
तब तब पुनि ब्रहमा प्रगटाही ॥
ता ते बिसन ब्रहम बपु धरा ॥
चतुरानन कर जगत उचरा ॥२॥
जब ही बिसन ब्रहम बपु धरा ॥
तब सब बेद प्रचुर जगि करा ॥
सासत्र सिंम्रित सकल बनाए ॥

जीव जगत के पंथि लगाए ॥३॥
जे जे हुते अघन के करता ॥
ते ते भए पाप ते हरता ॥
पाप करमु कह प्रगटि दिखाए ॥
धरम करम सब जीव चलाए ॥४॥
इह बिधि भयो ब्रहम अवतारा ॥
सब पापन को मेटनहारा ॥
प्रजा लोकु सब पंथ चलाए ॥
पाप करम ते सबै हटाए ॥५॥

दोहरा ॥

इह बिधि प्रजा पवित्र कर धरियो ब्रहम अवतार ॥
धरम करम लागे सबै पाप करम कह डारि ॥६॥

चौपई ॥

दसम अवतार बिसन को ब्रहमा ॥
धरियो जगति भीतरि सुभ करमा ॥
ब्रहम बिसन महि भेदु न लहीऐ ॥
सासत्र सिंम्रिति भीतर इम कहीऐ ॥७॥

◄ इति स्री बचित्र नाटके ब्रहमा दसमो अवतार समापतम सतु सुभम सतु ॥10॥

SECTION 09: BRAHM AVTAR — RUDRA AVTAR

Incarnations of Brahma and Rudra

अथ रुद्र अवतार बरननं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

तोटक छंद ॥

सब ही जन धरम के करम लगे ॥
तजि जोग की रीति की प्रीति भगे ॥
जब धरम चले तब जीउ बढे ॥
जनु कोटि सरूप के ब्रहमु गढे ॥१॥
जग जीवन भार भरी धरणी ॥
दुख आकुल जात नही बरणी ॥
धर रूप गऊ दध सिंध गई ॥
जगनाइक पै दुखु रोत भई ॥२॥
हसि काल प्रसंन भए तब ही ॥
दुख स्रउनन भूमि सुनियो जब ही ॥
ढिग बिसनु बुलाइ लयो अपने ॥
इह भाति कहियो तिह को सुपने ॥३॥
सु कहियो तुम रुद्र सरूप धरो ॥
जग जीवन को चलि नास करो ॥
तब ही तिह रुद्र सरूप धरियो ॥
जग जंत संघार के जोग करियो ॥४॥
कहि हों सिव जैसक जुध कीए ॥
सुख संतन को जिह भाति दीए ॥
गनियो जिह भाति बरी गिरजा ॥
जगजीत सुयंबर मो सु प्रभा ॥५॥
जिम अंधक सो हरि जुधु करियो ॥
जिह भाति मनोज को मान हरियो ॥
दल दैत दले कर कोप जिमं ॥
कहिहो सब छोरि प्रसंग तिमं ॥६॥

पाधरी छंद ॥

जब होत धरन भाराकरात ॥
तब परत नाहि तिह ह्रिदै साति ॥
तब दध समुंद्रि करई पुकार ॥
तब धरत बिसन रुद्रावतार ॥७॥
तब करत सकल दानव संघार ॥
करि दनुज प्रलव संतन उधार ॥
इह भाति सकल करि दुसट नास ॥
पुनि करति ह्रिदै भगवान बास ॥८॥

तोटक छंद ॥

त्रिपुरै इक दैत बढियो त्रिपुरं ॥
जिह तेज तपै रवि जिउ त्रिपुरं ॥

बरदाइ महासुर ऐस भयो ॥
जिनि लोक चतुरदस जीत लयो ॥९॥
जोऊ एक ही बाण हणे त्रिपुरं ॥
सोऊ नास करै तिह दैत दुरं ॥
अस को प्रगटियो कबि ताहि गनै ॥
इक बाण ही सो पुर तीन हनै ॥१०॥
सिव धाइ चलियो तिह मारन को ॥
जग के सब जीव उधारन को ॥
करि कोपि तजियो सित सुध सरं ॥
इक बार ही नास कीयो त्रिपुरं ॥११॥
लखि कउतुक साध सबै हरखे ॥
सुमनं बरखा नभ ते बरखे ॥
धुनि पूर रही जय सद हूअं ॥
गिरि हेम हलाचल कंप भूअं ॥१२॥
दिन केतक बीत गए जब ही ॥
असुरंधक बीर बीयो तब ही ॥
तब बैलि चड़ियो गहि सूल सिवं ॥
सुर चउकि चले हरि कोप किवं ॥१३॥
गण गंध्रब जछ सबै उरगं ॥
बरदान दयो सिव को दुरगं ॥
हनिहो निरखंत मुरारि सुरं ॥
त्रिपुरारि हनियो जिम कै त्रिपुरं ॥१४॥
उह ओरि चड़े दल लै दुजनं ॥
इह ओर रिस्रयो गहि सूल सिवं ॥
रण रंग रंगे रणधीर रणं ॥
जन सोभत पावक जुआल बणं ॥१५॥
दनु देव दोऊ रण रंग रचे ॥
गहि ससत्र सबै रस रुद्र मचे ॥
सर छाडत बीर दोऊ हरखै ॥
जनु अंति प्रलै घन सै बरखै ॥१६॥

रुआमल छंद ॥

घाइ खाइ भजे सुरारदन कोपु ओप मिटाइ ॥
अंधि कंधि फिरियो तबै जय दुंदभीन बजाइ ॥
सूल सैहथि परिघ पटसि बाण ओघ प्रहार ॥
पेलि पेलि गिरे सु बीरन खेल जानु धमार ॥१७॥
सेल रेल भई तहा अरु तेग तीर प्रहार ॥
गाहि गाहि फिरे फवजन बाहि बाहि हथियार ॥
अंग भंग परे कहूं सरबंग स्रोनत पूर ॥
एक एक बरी अनेकन हेरि हेरि सु हूर ॥१८॥
चउर चीर रथी रथोतम बाज राज अनंत ॥
स्रोण की सरता उठी सु बिअंत रूप दुरंत ॥
साज बाज कटे कहूं गज राज ताज अनेक ॥
उसटि पुसटि गिरे कहूं रिपु बाचीयं नही एकु ॥१९॥
छाडि छाडि चले तहा न्रिप साज बाज अनंत ॥
गाज गाज हने सदा सिव सूरबीर दुरंत ॥
भाज भाज चले हठी हथिआर हाथि बिसारि ॥
बाण पाण कमाण छाडि सु चरम बरम बिसारि ॥२०॥

नराज छंद ॥

जिते कु सूर धाईयं ॥
तितेकु रुद्र घाईयं ॥
जिते कु अउर धावही ॥
तितियो महेस घावही ॥२१॥
कबंध अंध उठही ॥
बसेख बाण बुठही ॥
पिनाक पाणि ते हणे ॥
अनंत सूरमा बणे ॥२२॥

रसावल छंद ॥

सिलह संजि सजे ॥
चहूं ओरि गजे ॥
महा बीर बंके ॥
मिटै नाहि डंके ॥२३॥
बजे घोरि बाजं ॥
सजे सूर साजं ॥
घणं जेम गजे ॥
महिखुआस सजे ॥२४॥
महिखुआस धारी ॥
चले बियोमचारी ॥
सुभं सूर हरखे ॥
सरं धार बरखे ॥२५॥
धरे बाण पाणं ॥
चड़े तेज माणं ॥
कटा कटि बाहै ॥
अधो अंग लाहै ॥२६॥
रिसे रोसि रुद्रं ॥
चलै भाज छुद्रं ॥
महा बीर गजे ॥
सिलह संजि सजे ॥२७॥
लए सकति पाणं ॥
चड़े तेज माणं ॥
गणं गाड़ गाजे ॥
रणं रुद्र राजे ॥२८॥
भभंकंत घायं ॥
लरे चउप चायं ॥
डकी डाकणीयं ॥
रड़ै काकणीयं ॥२९॥
भयं रोस रुद्रं ॥
हणै दैत छुद्रं ॥
कटे अधु अधं ॥
भई सैण बधं ॥३०॥
रिसियो सूल पाणं ॥
हणै दैत भाणं ॥
सरं ओघ छुटे ॥
घणं जेम टुटे ॥३१॥
रणं रुद्र गजे ॥
तबै दैत भजे ॥
तजै ससत्र सरबं ॥

मिटिओ देह गरबं ॥३२॥

चौपई ॥

धायो तबै अंधक बलवाना ॥
संग लै सैन दानवी नाना ॥
अमित बाण नंदी कहु मारे ॥
बेधि अंग कह पार पधारे ॥३३॥
जब ही बाण लगे बाहण तनि ॥
रोस जगियो तब ही सिव के मनि ॥
अधिक रोस करि बिसख चलाए ॥
भूमि अकासि छिनक महि छाए ॥३४॥
बाणावली रुद्र जब साजी ॥
तब ही सैण दानवी भाजी ॥
तब अंधक सिव सामुहु धायो ॥
दुंद जुधु रण मधि मचायो ॥३५॥
अड़िल ॥
बीस बाण तिन सिवहि प्रहारे कोप करि ॥
लगे रुद्र के गात गए ओह घानि कर ॥
गहि पिनाक कह पाणि पिनाकी धाइओ ॥
हो तुमुल जुधु दुहूंअन रण मधि मचाइओ ॥३६॥
ताड़ि सत्रु कह बहुरि पिनाकी कोपु हुऐ ॥
हणै दुसट कहु बाण निखंग ते काढ दुऐ ॥
गिरियो भूमि भीतरि सिरि सत्रु प्रहारियो ॥
हो जनकु गाज करि कोप बुरज कहु मारियो ॥३७॥

तोटक छंद ॥

घटि एक बिखै रिपु चेत भयो ॥
धनु बाण बली पुनि पाणि लयो ॥
करि कोप कवंड करे करखयं ॥
सर धार बली घन जियो बरखयो ॥३८॥
करि कोप बली बरखयो बिसखं ॥
इह ओर लगै निसरे दुसरं ॥
तब कोप करं सिव सूल लीयो ॥
अरि को सिरु काटि दुखंड कीयो ॥३९॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके पिनाकि प्रबंधहि अंधक बधहि रुद्रोसतति धयाइ समापतम सतु सुभम सतु ॥10॥*

अथ गउर बधह कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

तोटक छंद ॥

सुर राज प्रसंनि भए तब ही ॥
अरि अंधक नास सुनियो जब ही ॥
इम कै दिन केतक बीत गए ॥
सिव धामि सतक्रित जात भए ॥१॥
तब रुद्र भयानक रूप धरियो ॥
हरि हेरि हरं हथियार हरियो ॥

तब ही सिव कोप अखंड कीयो ॥
इक जनम अंगार अपार लीयो ॥२॥
तिह तेज जरे जग जीव सबै ॥
तिह डार दयो मधि सिंधु तबै ॥
सोऊ डार दयो सिंधु महि न गयो ॥
तिह आनि जलंधर रूप लयो ॥३॥

चौपई ॥

इह बिधि भयो असुर बलवाना ॥
लयो कुबेर को लूट खजाना ॥
पकर समस ते ब्रहमु रुवायो ॥
इंद्र जीति सिर छत्र ढुरायो ॥४॥
जीति देवता पाइ लगाए ॥
रुद्र बिसनु निज पुरी बसाए ॥
चउदह रतन आनि राखे ग्रिह ॥
जहा तहा बैठाए नव ग्रह ॥५॥

दोहरा ॥

जीति बसाए निज पुरी असुर सकल असुरार ॥
पूजा करी महेस की गिरि कैलास मधार ॥६॥

चौपई ॥

ध्रयान बिधान करे बहु भाता ॥
सेवा करी अधिक दिन राता ॥
ऐस भाति तिह काल बितायो ॥
अब प्रसंगि सिव ऊपर आयो ॥७॥
भूतराट को निरखि अतुल बल ॥
कापत भए अनिक अरि जल थल ॥
दछ प्रजापति होत न्रिपत बर ॥
दस सहंस्र दुहिता ता के घर ॥८॥
तिन इक बार सुयंबर कीया ॥
दस सहंस्र दुहिताइस दीया ॥
जो बरु रुचे बरहु अब सोई ॥
ऊच नीच राजा होइ कोई ॥९॥
जो जो जिसै रुचा तिनि बरा ॥
सब प्रसंग नही जात उचरा ॥
जो बिरतात कहि छोरि सुनाऊ ॥
कथा ब्रिधि ते अधिक डराऊ ॥१०॥
चार सुता कसप कह दीनी ॥
केतक ब्याह चंद्रमा लीनी ॥
केतक गई अउर देसन महि ॥
बरियो गउरजा एक रुद्र कहि ॥११॥
जब ही ब्याह रुद्र ग्रिहि आनी ॥
चली जग की बहुरि कहानी ॥
सब दुहिता तिह बोलि पठाई ॥
लीनो संगि भतारन आई ॥१२॥
जे जे हुते देस परदेसा ॥
जात भए ससुरारि नरेसा ॥
निरखि रुद्र को अउर प्रकारा ॥

किनहूं न भूपति ताहि चितारा ॥१३॥
नहन गउरजा दछ बुलाई ॥
सुनि नारद ते ह्रिदै रिसाई ॥
बिन बोले पित के ग्रिह गई ॥
अनिक प्रकार तेज तन तई ॥१४॥
जग कुंड महि परी उछर करि ॥
सत प्रतापि पावक भई सीतरि ॥
जोग अगनि कहु बहुरि प्रकासा ॥
ता तन कीयो प्रान को नासा ॥१५॥
आइ नारद इम सिवहि जताई ॥
कहा बैठि हो भाग चड़ाई ॥
छूटियो धिआन कोपु जीय जागा ॥
गहि त्रिसूल तह को उठ भागा ॥१६॥
जब ही जात भयो तिह थलै ॥
लयो उठाइ सूल करि बलै ॥
भाति भाति तिन करे प्रहारा ॥
सकल बिधुंस जग कर डारा ॥१७॥
भाति भाति तन भूप संघारे ॥
इक इक ते कर दुइ दुइ डारे ॥
जा कहु पहुंचि त्रिसूल प्रहारा ॥
ता कहु मार ठउर ही डारा ॥१८॥
जग कुंड निरखत भयो जब ही ॥
जूट जटान उखारस तब ही ॥
बीरभद्र तब कीआ प्रकासा ॥
उपजत करो नरेसन नासा ॥१९॥
केतक करे खंड न्रिपति बर ॥
केतक पठै दए जम के घरि ॥
केतक गिरे धरणि बिकरारा ॥
जनु सरता के गिरे करारा ॥२०॥
तब लउ सिवह चेतना आई ॥
गहि पिनाक कहु परो रिसाई ॥
जा कै ताणि बाण तन मारा ॥
प्रान तजे तिन पानि नुचारा ॥२१॥
डमा डम डउरू बहु बाजे ॥
भूत प्रेत दसऊ दिसि गाजै ॥
झिम झिम करत असिन की धारा ॥
नाचे रुंड मुंड बिकरारा ॥२२॥
बजे ढोल सनाइ नगारे ॥
जुटै जंग को जोध जुझारे ॥
खहि खहि मरे अपर रिस बढे ॥
बहुरि न देखीयत ताजीअन चढे ॥२३॥
जा पर मुसट त्रिसूल प्रहारा ॥
ताकहु ठउर मार ही डारा ॥
ऐसो भयो बीर घमसाना ॥
भक भकाइ तह जगे मसाना ॥२४॥

दोहरा ॥

तीर तबर बरछी बिछूअ बरसे बिसख अनेक ॥
सब सूरा जूझत भए साबत बचा न एक ॥२५॥

चौपई ॥

कटि कटि मरे नरेस दुखंडा ॥
बाइ हने गिरि गे जनु झंडा ॥
सूल संभारि रुद्र जब परियो ॥
चित्र बचित्र अयोधन करियो ॥२६॥
भाज भाज तब चले नरेसा ॥
जग बिसार संभारियो देसा ॥
जब रण रुद्र रुद्र हुऐ धाए ॥
भाजत भूप न बाचन पाए ॥२७॥
तब सब भरे तेज तनु राजा ॥
बाजन लगे अनंतन बाजा ॥
मचियो बहुरि घोरि संग्रामा ॥
जम को भरा छिनक महि धामा ॥२८॥
भूपत फिरे जुध के कारन ॥
लै लै बाणि पाणि हथीयारन ॥
धाइ धाइ अरि करत प्रहारा ॥
जन कर चोट परत घरीयारा ॥२९॥
खंड खंड रणि गिरे अखंडा ॥
कापियो खंड नवे ब्रहमंडा ॥
छाडि छाडि असि गिरे नरेसा ॥
मचियो जुधु सुयंबर जैसा ॥३०॥

नराज छंद ॥

अरुझे किकाणी ॥
धरे ससत्र पाणी ॥
परी मार बाणी ॥
कड़के कमाणी ॥३१॥
झड़के क्रिपाणी ॥
धरे धूल धाणी ॥
चड़े बान साणी ॥
रटै एक पाणी ॥३२॥
चवी चावडाणी ॥
जुटे हाणु हाणी ॥
हसी देव राणी ॥
झमके क्रिपाणी ॥३३॥

ब्रिध नराज छंद ॥

सु मारु मार सूरमा पुकार मार के चले ॥
अनंत रुद्र के गणो बिअंत बीरहा दले ॥
घमंड घोर सावणी अघोर जिउ घटा उठी ॥
अनंत बूंद बाण धार सुध क्रुध कै बुठी ॥३४॥

नराज छंद ॥

बिअंत सूर धावही ॥
सु मारु मारु घावही ॥
अघाइ घाइ उठ ही ॥
अनेक बाण बुठही ॥३५॥
अनंत असत्र सज कै ॥

चलै सु बीर गज कै ॥
निरभै हथियार झार ही ॥
सु मारु मार उचारही ॥३६॥
घमंड घोर जिउ घटा ॥
चले बनाहि तिउ थटा ॥
सु ससत्र सूर सोभही ॥
सुता सुरान लोभही ॥३७॥
सु बीर बीन कै बरै ॥
सुरेस लोगि बिचरै ॥
सु त्रास भूप जे भजे ॥
सु देव पुत्रका तजे ॥३८॥

ब्रिध नराज छंद ॥

सु ससत्र असत्र सज कै परे हुकार कै हठी ॥
बिलोकि रुद्र रुद्र को बनाइ सैण एकठी ॥
अनंत घोर सावणी दुरंत जियो उठी घटा ॥
सु सोभ सूरमा नचै सु छीनि छत्र की छटा ॥३९॥
कंपाइ खग पाण मो त्रपाइ तार्जीयन तहा ॥
जुआन आन के परे सु रुद्र ठाढिबो जहा ॥
बिअंत बाण सैहथी प्रहार आन के करै ॥
धकेलि रेलि लै चलै पछेल पाव न टरै ॥४०॥
सड़क सूल सैहथी तड़क तेग तीरयं ॥
बबक बाघ जियो बली भभक घाइ बीरयं ॥
अघाइ घाइ के गिरे पछेल पाव न टरे ॥
सु बीन बीन अछरै प्रबीन दीन हुऐ बरे ॥४१॥

चौपई ॥

इह बिधि जूझि गिरियो सभ साथा ॥
रहि गयो दछ अकेल अनाथा ॥
बचे बीर ते बहुरि बुलाइसु ॥
पहरि कवच दुंदभी बजाइसु ॥४२॥
आपन चला जुध कहु राजा ॥
जोर करोर अयोधन साजा ॥
छूटत बाण कमाण अपारा ॥
जनु दिन ते हुऐ गयो अंधारा ॥४३॥
भूत परेत मसाण हकारे ॥
दुहूं ओर डउरू डमकारे ॥
महा घोर मचियो संग्रामा ॥
जैसक लंकि रावण अरु रामा ॥४४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भयो रुद्र कोपं धरियो सूल पाणं ॥
करे सूरमा सरब खाली पलाणं ॥
उते एक दछं इतै रुद्र एकं ॥
करियो कोप कै जुध भातं अनेकं ॥४५॥
गिरियो जानु कूटसथली ब्रिछ मूलं ॥
गिरियो दछ तैसे कटियो सीस सूलं ॥
परियो राज राजं भयो देह घातं ॥
हनियो जान बज्रं भयो पब पातं ॥४६॥

गयो गरब सरबं भजो सूरबीरं ॥
चलियो भाज अंतहपुर हुऐ अधीरं ॥
गरे डार अंचर परै रुद्र पायो ॥
अहो रुद्र कीजै क्रिपा कै सहायं ॥४७॥

चौपई ॥

हम तुमरो हरि ओज न जाना ॥
तुम हो महा तपी बलवाना ॥
सुनत बचन भए रुद्र क्रिपाला ॥
अजा सीस न्रिप जोरि उताला ॥४८॥
रुद्र काल को धरा धिआना ॥
बहुरि जीयाइ नरेस उठाना ॥
राज सुता पति सकल जीयाए ॥
कउतक निरखि संत त्रिपताए ॥४९॥
नारि हीन सिव काम खिझायो ॥
ता ते सुंभ घनो दुखु पायो ॥
अधिक कोप कै काम जरायस ॥
बितन नाम तिह तदिन कहायस ॥५०॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे रुद्र प्रबंध दछ बधही रुद्र महातमे गउर बधह गिआरवो अवतार संपूरणम सतु सुभम सतु ॥११॥

अथ जलंधर अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

वहु जो जरी रुद्र की दारा ॥
तिनि हिम गिरि ग्रिहि लिय अवतारा ॥
छुटी बालता जब सुधि आई ॥
बहुरो मिली नाथ कहु जाई ॥१॥
जिह बिधि मिली राम सो सीता ॥
जैसक चतुर बेद तन गीता ॥
जैसे मिलत सिंध तन गंगा ॥
तियो मिलि गई रुद्र कै संगा ॥२॥
जब तिह ब्याहि रुद्र घरि आना ॥
निरखि जलंधर ताहि लुभाना ॥
दूत एक तह दीय पठाई ॥
लिआउ रुद्र ते नारि छिनाई ॥३॥

दोहरा ॥

जलंधुर बाच ॥
कै सिव नारि सीगार कै मम ग्रिह देह पठाइ ॥
नातर सूल संभार के संगि लरहु मुरि आइ ॥४॥

चौपई ॥

कथा भई इह दिस इह भाता ॥
अब कहो बिसन त्रीया की बाता ॥
ब्रिंदारिक दिन एक पकाए ॥
दैत सभा ते बिसनु बुलाए ॥५॥

आइ गयो तह नारद रिखि बर ॥
बिसन नारि के धामि छुधातुर ॥
बैगन निरखि अधिक ललचायो ॥
माग रहियो पर हाथि न आयो ॥६॥
नाथ हेतु मै भोज पकायो ॥
मनुछ पठै कर बिसनु बुलायो ॥
नारद खाइ जूठ होइ जै है ॥
पीअ कोपित हमरे पर हुऐ है ॥७॥
नारद बाच ॥
माग थकियो मुनि भोज न दीआ ॥
अधिक रोसु मुनि बरि तब कीआ ॥
ब्रिंदा नाम राछसी बपु धरि ॥
त्रीआ हुऐ बसो जलंधर के घरि ॥८॥
दे कर स्राप जात भयो रिखि बर ॥
आवत भयो बिसन ता के घरि ॥
सुनत स्राप अति ही दुख पायो ॥
बिहस बचन त्रीय संगि सुनायो ॥९॥

दोहरा ॥

त्रीय की छाया लै तबै ब्रिदा रची बनाइ ॥
धूम्रकेस दानव सदनि जनम धरत भई जाइ ॥१०॥

चौपई ॥

जैसक रहत कमल जल भीतर ॥
पुनि न्रिप बसी जलंधर के घरि ॥
तिह निमित जलंधर अवतारा ॥
धर है रूप अनूप मुरारा ॥११॥
कथा ऐस इह दिस मो भई ॥
अब चलि बात रुद्र पर गई ॥
मागी नारि न दीनी रुद्रा ॥
ता ते कोप असुर पति छुद्रा ॥१२॥
बजे ढोल नफीरि नगारे ॥
दुहूं दिसा डमरू डमकारे ॥
माचत भयो लोह बिकरारा ॥
झमकत खग अदग अपारा ॥१३॥
गिरि गिरि परत सुभट रण माही ॥
धुक धुक उठत मसाण तहाही ॥
गजी रथी बाजी पैदल रणि ॥
जूझि गिरे रण की छिति अनगण ॥१४॥

तोटक छंद ॥

बिरचे रणबीर सुधीर क्रुधं ॥
मचियो तिह दारुण भूमि जुधं ॥
हहरंत हयं गरजंत गजं ॥
सुणि कै धुनि सावण मेघ लजं ॥१५॥
बरखै रणि बाण कमाण खगं ॥
तह घोर भयानक जुध जगं ॥
गिर जात भटं हहरंत हठी ॥
उमगी रिपु सैन कीए इकठी ॥१६॥

चहूं ओर घिरियो सर सोधि सिवं ॥
करि कोप घनो असुरार इवं ॥
दुहूं ओरन ते इम बाण बहे ॥
नभ अउर धरा दोऊ छाइ रहे ॥१७॥
गिरगे तह टोपन टूक घने ॥
रहगे जनु किंसक स्रोण सने ॥
रण हेरि अगंम अनूप हरं ॥
जीय मो इह भाति बिचार करं ॥१८॥
जीय मो सिव देखि रहा चक कै ॥
दल दैतन मधि परा हक कै ॥
रणि सूल संभारि प्रहार करं ॥
सुण के धुनि देव अदेव डरं ॥१९॥
जीय मो सिव ध्यान धरा जब ही ॥
कलि काल प्रसंनि भए तब ही ॥
कहियो बिसन जलंधर रूप धरो ॥
पुनि जाइ रिपेस को नास करो ॥२०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

दई काल आगिआ धरियो बिसन रूपं ॥
सजे साज सरबं बनियो जान भूपं ॥
करियो नाथ यो आप नारं उधारं ॥
त्रिया राज ब्रिंदा सती सत टारं ॥२१॥
तजियो देहि दैतं भई बिसनु नारं ॥
धरियो दुआदसमो बिसनु दईतावतारं ॥
पुनर जुधु सजियो गहे ससत्र पाणं ॥
गिरे भूमि मो सूर सोभे बिमाणं ॥२२॥
मिटियो सति नारं कटियो सैन सरबं ॥
मिटियो भूप जालंधरं देह गरबं ॥
पुनर जुध सजियो हठे तेज हीणं ॥
भजे छाड कै संग साथी अधीणं ॥२३॥

चौपई ॥

दुहूं जुधु कीना रण माही ॥
तीसर अवरु तहा को नाही ॥
केतक मास मचियो तह जुधा ॥
जालंधर हुऐ सिव पुर क्रुधा ॥२४॥
तब सिव धिआन सकति कौ धरा ॥
ता ते सकति क्रिपा कर करा ॥
ता ते भयो रुद्र बलवाना ॥
मंडियो जुधु बहुरि बिधि नाना ॥२५॥
उत हरि लयो नारि रिप सत हरि ॥
इत सिव भयो तेज देबी करि ॥
छिन मो कीयो असुर को नासा ॥
निरखि रीझ भट रहे तमासा ॥२६॥
जलंधरी ता दिन ते नामा ॥
जपहु चंडिका को सब जामा ॥
ता ते होत पवित्र सरीरा ॥
जिम न्हाए जल गंग गहीरा ॥२७॥
ता ते कही न रुद्र कहानी ॥

ग्रंथ बढन की चिंत पछानी ॥
ता ते कथा थोरि ही भासी ॥
निरखि भूलि कबि करो न हासी ॥२८॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे जलंधर अवतार बार्हवा समापतम सतु सुभम सतु ॥12॥

अथ बिसनु अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

अब मै गनो बिसनु अवतारा ॥
जैसिक धरियो सरूप मुरारा ॥
बिआकुल होत धरनि जब भारा ॥
काल पुरखु पहि करत पुकारा ॥१॥
असुर देवतन देति भजाई ॥
छीन लेत भूअ की ठकुराई ॥
करत पुकार धरणि भरि भारा ॥
काल पुरख तब होत क्रिपारा ॥२॥

दोहरा ॥

सब देवन को अंस लै ततु आपन ठहराइ ॥
बिसनु रूप धार तत दिन ग्रिहि अदित कै आइ ॥३॥

चौपई ॥

आन हरत प्रिथवी को भारा ॥
बहु बिधि असुरन करत संघारा ॥
भूमि भार हरि सुर पुरि जाई ॥
काल पुरख मो रहत समाई ॥४॥
सकल कथा जउ छोरि सुनाऊ ॥
बिसन प्रबंध कहत स्रम पाऊ ॥
ता ते थोरीऐ कथा प्रकासी ॥
रोग सोग ते राखु अबिनासी ॥५॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे तेर्हवा बिसनु अवतार समापतम सतु सुभम सत ॥13॥

अथ मधु कैटब बधन कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

दोहरा ॥

काल पुरख की देहि मो कोटिक बिसन महेस ॥
कोटि इंद्र ब्रहमा किते रवि ससि क्रोरि जलेस ॥१॥

चौपई ॥

स्रमित बिसनु तह रहत समाई ॥

सिंधु बिंधु जह गनियो न जाई ॥
सेसनागि से कोटिक तहा ॥
सोवत सैन सरप की जहा ॥२॥
सहंस्र सीस तब धर तन जंगा ॥
सहंस्र पाव कर सहंस अभंगा ॥
सहंसराछ सोभत है ता के ॥
लछमी पाव पलोसत वा के ॥३॥

दोहरा ॥

मधु कीटभ के बध नमित जा दिन जगत मुरारि ॥
सु कबि स्याम ता को कहै चौदसवो अवतार ॥४॥

चौपई ॥

स्रवण मैल ते असुर प्रकासत ॥
चंद सूर जनु दुतीय प्रभासत ॥
माया तजत बिसनु कहु तब ही ॥
करत उपाधि असुर मिलि जब ही ॥५॥
तिन सो करत बिसनु घमसाना ॥
बरख हजार पंच परमाना ॥
काल पुरख तब होत सहाई ॥
दुहूंअनि हनत क्रोध उपजाई ॥६॥

दोहरा ॥

धारत है ऐसो बिसनु चौदसवो अवतार ॥
संत संबूहनि सुख नमित दानव दुहूं संघार ॥७॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे मधु कैटभ बधह चतरदसवो अवतार बिसनु समातम सतु सुभम सतु ॥१४॥

अथ अरिहंत देव अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

जब जब दानव करत पासारा ॥
तब तब बिसनु करत संघारा ॥
सकल असुर इकठे तहा भए ॥
सुर अरि गुरु मंदरि चलि गए ॥१॥
सबहूं मिलि अस करियो बिचारा ॥
दईतन करत घात असुरारा ॥
ता ते ऐस करौ किछु घाता ॥
जा ते बने हमारी बाता ॥२॥
दईत गुरू इम बचन बखाना ॥
तुम दानवो न भेद पछाना ॥
वे मिलि जग करत बहु भाता ॥
कुसल होत ता ते दिन राता ॥३॥
तुम हूं करो जग आरंभन ॥
बिजै होइ तुमरी ता ते रण ॥
जग अरंभ्य दानवन करा ॥
बचन सुनत सुरपुरि थरहरा ॥४॥

बिसनु बोल करि करो बिचारा ॥
अब कछु करो मंत्र असुरारा ॥
बिसनु नवीन कहियो बपु धरिहो ॥
जग बिघन असुरन को करिहो ॥५॥
बिसनु अधिक कीनो इसनाना ॥
दीने अमित दिजन कहु दाना ॥
मन मो कवला स्रिजो ग्याना ॥
काल पुरख को धर्यो ध्याना ॥६॥
काल पुरख तब भए दइआला ॥
दास जान कह बचन रिसाला ॥
धरु अरहंत देव को रूपा ॥
नास करो असुरन के भूपा ॥७॥
बिसनु देव आगिआ जब पाई ॥
काल पुरख की करी बडाई ॥
भू अरहंत देव बनि आयो ॥
आनि अउर ही पंथ चलायो ॥८॥
जब असुरन को भयो गुरु आई ॥
बहुत भाति निज मतहि चलाई ॥
स्रावग मत उपराजन कीआ ॥
संत सबूहन को सुख दीआ ॥९॥
सबहूं हाथि मोचना दीए ॥
सिखा हीण दानव बहु कीए ॥
सिखा हीण कोई मंत्र न फुरै ॥
जो कोई जपै उलट तिह परै ॥१०॥
बहुरि जग को करब मिटायो ॥
जीअ हिंसा ते सबहूं हटायो ॥
बिनु हिंसा कीअ जग न होई ॥
ता ते जग करे न कोई ॥११॥
या ते भयो जगन को नासा ॥
जो जीय हनै होइ उपहासा ॥
जीअ मरे बिनु जग न होई ॥
जग करै पावै नहीं कोई ॥१२॥
इह बिधि दीयो सभन उपदेसा ॥
जग सकै को कर न नरेसा ॥
अपंथ पंथ सभ लोगन लाया ॥
धरम करम कोऊ करन न पाया ॥१३॥

दोहरा ॥

अंनि अंनि ते होतु जियो घासि घासि ते होइ ॥
तैसे मनुछ मनुछ ते अवरु न करता कोइ ॥१४॥

चौपई ॥

ऐस गिआन सबहून द्रिड़ायो ॥
धरम करम कोऊ करन न पायो ॥
इह ब्रित बीच सभो चित दीना ॥
असुर बंस ता ते भयो छीना ॥१५॥
न्रहावन दैत न पावै कोई ॥
बिनु इसनान पवित्र न होई ॥
बिनु पवित्र कोई फुरे न मंत्रा ॥

निफल भए ता ते सभ जंत्रा ॥१६ ॥
दस सहंस्र बरख कीअ राजा ॥
सभ जग मो मत ऐसु पराजा ॥
धरम करम सब ही मिटि गयो ॥
ता ते छीन असुर कुल भयो ॥१७ ॥
देव राइ जीअ मो भलु माना ॥
बडा करमु अब बिसनु कराना ॥
आनंद बढा सोक मिट गयो ॥
घरि घरि सबहूं बधावा भयो ॥१८ ॥

दोहरा ॥

बिसन ऐस उपदेस दै सब हूं धरम छुटाइ ॥
अमरावति सुर नगर मो बहुरि बिराजियो जाइ ॥१९ ॥
स्रावगेस को रूप धरि दैत कुपंथ सब डारि ॥
पंद्रवों अवतार इम धारत भयो मुरारि ॥२० ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे अरहंत पद्रसवों अवतार समापतम सतु सुभम सतु ॥15॥*

अथ मनु राजा अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

स्रावग मत सब ही जन लागे ॥
धरम करम सब ही तजि भागे ॥
त्याग दई सबहूं हरि सेवा ॥
कोइ न मानत भे गुर देवा ॥१ ॥
साध असाध सबै हुऐ गए ॥
धरम करम सब हूं तजि दए ॥
काल पुरख आग्या तब दीनी ॥
बिसनु चंद सोई बिधि कीनी ॥२ ॥
मनु ह्वै राज वतार अवतरा ॥
मनु सिमिरितहि प्रचुर जगि करा ॥
सकल कुपंथी पंथि चलाए ॥
पाप करम ते लोग हटाए ॥३ ॥
राज अवतार भयो मनु राजा ॥
सरब ही सिरजे धरम के साजा ॥
पाप करा ता को गहि मारा ॥
सकल प्रजा कहु मारगि डारा ॥४ ॥
पाप करा जा ही तह मारस ॥
सकल प्रजा कहु धरम सिखारस ॥
नाम दान सबहून सिखारा ॥
स्रावग पंथ दूर करि डारा ॥५ ॥
जे जे भाजि दूर कहु गए ॥
स्रावग धरमि सोऊ रहि गए ॥
अउर प्रजा सब मारगि लाई ॥
कुपंथ पंथ ते सुपंथ चलाई ॥६ ॥
राज अवतार भयो मनु राजा ॥

करम धरम जग मो भलु साजा ॥
सकल कुपंथी पंथ चलाए ॥
पाप करम ते धरम लगाए ॥७॥

दोहरा ॥

पंथ कुपंथी सब लगे स्रावग मत भयो दूर ॥
मनु राजा को जगत मो रहियो सुजसु भरपूर ॥८॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे मनु राजा अवतार सोल्हवा समापतम सतु सुभम सतु ॥16॥

अथ धनंतर बैद अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

सभ धनवंत भए जग लोगा ॥
एक न रहा तिनो तन सोगा ॥
भाति भाति भच्छत पकवाना ॥
उपजत रोग देह तिन नाना ॥१॥
रोगाकुल सभ ही भए लोगा ॥
उपजा अधिक प्रजा को सोगा ॥
परम पुरख की करी बडाई ॥
क्रिपा करी तिन पर हरि राई ॥२॥
बिसन चंद को कहा बुलाई ॥
धर अवतार धनंतर जाई ॥
आयुरबेद को करो प्रकासा ॥
रोग प्रजा को करियहु नासा ॥३॥

दोहरा ॥

ता ते देव इकत्र हुऐ मथयो समुंद्रहि जाइ ॥
रोग बिनासन प्रजा हित कढयो धनंतर राइ ॥४॥

चौपई ॥

आयुरबेद तिन कीयो प्रकासा ॥
जग के रोग करे सब नासा ॥
बईद सासत्र कहु प्रगट दिखावा ॥
भिंन भिंन अउखधी बतावा ॥५॥

दोहरा ॥

रोग रहत कर अउखधी सभ ही करियो जहान ॥
काल पाइ तच्छक हनियो सुर पुर कीयो पयान ॥६॥
इति स्री बचित्र नाटके धनंत्र अवतार सतारवा ॥१७॥ सुभम सत ॥

अथ सूरज अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

चौपई ॥

बहुरि बढे दिति पुत्र अतुलि बलि ॥
अरि अनेक जीते जिन जलि थलि ॥
काल पुरख की आगया पाई ॥
रवि अवतार धरियो हरि राई ॥१॥
जे जे होत असुर बलवाना ॥
रवि मारत तिन को बिधि नाना ॥
अंधकार धरनी ते हरे ॥
प्रजा काज ग्रिह के उठि परे ॥२॥

नराज छंद ॥

बिसारि आलसं सभै प्रभात लोग जागहीं ॥
अनंत जाप को जपैं बिअंत धयान पागहीं ॥
दुरंत करम को करैं अथाप थाप थापहीं ॥
गाइत्री संधियान कै अजाप जाप जापही ॥३॥
सु देव करम आदि लै प्रभात जाग कै करैं ॥
सु जग धूप दीप होम बेद बियाकरन ररैं ॥
सु पित्र करम हैं जिते सो ब्रितब्रित को करैं ॥
जु सासत्र सिम्रिति उचरंत सु धरम धयान को धरैं ॥४॥

अरध निराज छंद ॥

सु धूंम धूंम ही ॥
करंत सैन भूंम ही ॥
बिअंत धयान धयावहीं ॥
दुरंत ठउर पावहीं ॥५॥
अनंत मंत्र उचरैं ॥
सु जोग जापना करैं ॥
न्रिबान पुरख धयावहीं ॥
बिमान अंति पावहीं ॥६॥

दोहरा ॥

बहुत काल इम बीतयो करत धरमु अरु दान ॥
बहुरि असुरि बढियो प्रबल दीरघु काइ दतु मान ॥७॥

चौपई ॥

बाण प्रजंत बढत नितप्रति तन ॥
निस दिन घात करत दिज देवन ॥
दीरघु काइऐ सो रिपु भयो ॥
रवि रथ हटक चलन ते गयो ॥८॥
अड़िल ॥
हटक चलत रथु भयो भान कोपियो तबै ॥
असत्र ससत्र लै चलियो संग लै दल सभै ॥
मंडयो बिबिध प्रकार तहा रण जाइ कै ॥
हो निरख देव अरु दैत रहे उरझाइ कै ॥९॥
गहि गहि पाण क्रिपाण दुबहीया रण भिरे ॥
टूक टूक हुऐ गिरे न पग पाछे फिरे ॥
अंगनि सोभे घाइ प्रभा अति ही बढे ॥

हो बसत्र मनो छिटकाइ जनेती से चढे ॥१०॥

अनुभव छंद ॥

अनहद बजे ॥
धुण घण लजे ॥
घण हण घोरं ॥
जण बण मोरं ॥११॥

मधुर धुनि छंद ॥

ढल हल ढालं ॥
जिम गुल लालं ॥
खड़ भड़ बीरं ॥
तड़ सड़ तीरं ॥१२॥
रुण झुण बाजे ॥
जण घण गाजे ॥
ढंमक ढोलं ॥
खड़ रड़ खोलं ॥१३॥
थर हर कंपै ॥
हरि हरि जंपै ॥
रण रंग रते ॥
जण गण मते ॥१४॥
थरकत सूरं ॥
निरखत हूरं ॥
सरबर छुटे ॥
कट भट लुटे ॥१५॥
चमकत बाणं ॥
फुरह निसाणं ॥
चट पट जूटे ॥
अर उर फूटे ॥१६॥
नर बर गजे ॥
सर बर सजे ॥
सिलह संजोयं ॥
सुर पुर पोयं ॥१७॥
सरबर छूटे ॥
अर उर फूटे ॥
चट पट चरमं ॥
फट फुट बरमं ॥१८॥

नराज छंद ॥

दिनेस बाण पाण लै रिपेस ताक धाईयं ॥
अनंत जुद्ध क्रुद्ध सुद्ध भूम मै मचाईयं ॥
कितेक भाज चालीयं सुरेस लोग को गए ॥
निसंत जीत जीत कै अनंत सूरमा लए ॥१९॥
समट सेल सामुहे सरक सूर झाड़हीं ॥
बबक बाघ जयों बली हलक हाक मारहीं ॥
अभंग अंग भंग ह्वै उतंग जंग मो गिरे ॥
सुरंग सूरमा सभै निसंग जान कै अरै ॥२०॥

अरध नराज छंद ॥

नवं निसाण बाजीयं ॥
घटा घमंड लाजीयं ॥
तबल तुंदरं बजे ॥
सुणंत सूरमा गजे ॥२१॥
सु जूझि जूझि कै परैं ॥
सुरेस लोग बिचरैं ॥
चड़ै बिवान सोभही ॥
अदेव देव लोभही ॥२२॥

बेली बिंद्रम छंद ॥

डह डह सु डामर डंकणी ॥
कह कह सु कूकत जोगणी ॥
झम झमक साग झमकीयं ॥
रण गाज बाज उथकीयं ॥२३॥
ढम ढमक ढोल ढमकीयं ॥
झल झलक तेग झलकीयं ॥
जट छोर रुद्र तह नचीयं ॥
बिक्रार मार तह मचीयं ॥२४॥

तोटक छंद ॥

उथके रण बीरण बाज बरं ॥
झमकी घण बिजु क्रिपाण करं ॥
लहके रण धीरण बाण उरं ॥
रंग स्रोणत रत कढे दुसरं ॥२५॥
फहरंत धुजा थहरंत भटं ॥
निरखंत लजी छबि सयाम घटं ॥
चमकंत सु बाण क्रिपाण रणं ॥
जिम कउंधित सावण बिजु घणं ॥२६॥

दोहरा ॥

कथा ब्रिध ते मै डरो कहा करो बखयान ॥
निसाहंत असुरेस सो सर ते भयो निदान ॥२७॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके सूरज अवतार असट दसमो अवतार समापत ॥18॥*

अथ चंद्र अवतार कथनं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

दोधक छंद ॥

फेरि गनो निसराज बिचारा ॥
जैस धरयो अवतार मुरारा ॥
बात पुरातन भाख सुनाऊां ॥
जा ते कब कुल सरब रिझाऊां ॥१॥
दोधक ॥
नैक क्रिसा कहु ठउर न होई ॥
भूखन लोग मरै सभ कोई ॥

अंधि निसा दिन भानु जरावै ॥
ता ते क्रिस कहूं होन न पावै ॥२॥
लोग सभै इह ते अकुलाने ॥
भाजि चले जिम पात पुराने ॥
भात ही भात करे हरि सेवा ॥
ता ते प्रसंन भए गुरदेवा ॥३॥
नारि न सेव करैं निज नाथं ॥
लीने ही रोसु फिरैं जीअ साथं ॥
कामनि कामु कहूं न संतावै ॥
काम बिना कोऊ कामु न भावै ॥४॥

तोमर छंद ॥

पूजे न को त्रीया नाथ ॥
ऐंठी फिरै जीअ साथ ॥
दुखु वै न तिन कहु काम ॥
ता ते न बिनवत बाम ॥५॥
कर है न पति की सेव ॥
पूजै न गुर गुरदेव ॥
धर हैं न हरि को धयान ॥
करि हैं न नित इसनान ॥६॥
तब काल पुरख बुलाइ ॥
बिसनै कहयो समझाइ ॥
ससि को धरिहु अवतार ॥
नही आन बात बिचार ॥७॥
तब बिसन सीस निवाइ ॥
करि जोरि कही बनाइ ॥
धरिहों दिनात वतार ॥
जित होइ जगत कुमार ॥८॥
तब महा तेज मुरार ॥
धरियो सु चंद्र अवतार ॥
तन कै मदन को बान ॥
मारियो त्रीयन कह तान ॥९॥
ता ते भई त्रीय दीन ॥
सभ गरब हुऐ गयो छीन ॥
लागी करन पति सेव ॥
या ते प्रसंनि भए देव ॥१०॥
बहु क्रिसा लागी होन ॥
लख चंद्रमा की जौन ॥
सभ भए सिध बिचार ॥
इम भयो चंद्र अवतार ॥११॥

चौपई ॥

इम हरि धरा चंद्र अवतारा ॥
बढियो गरब लहि रूप अपारा ॥
आन किसू कहु चित न लिआयो ॥
ता ते ताहि कलंक लगायो ॥१२॥
भजत भयो अंबर की दारा ॥
ता ते कीय मुन रोस अपारा ॥
किसनारजुन म्रिग चरम चलायो ॥

तिह करि ताहि कलंक लगायो ॥१३॥
स्राप लगयो ता को मुनि संदा ॥
घटत बढत ता दिन ते चंदा ॥
लजित अधिक हिरदे मो भयो ॥
गरब अखरब दूर हुऐ गयो ॥१४॥
तपसा करी बहुरु तिह काला ॥
काल पुरख पुन भयो दिआला ॥
छई रोग तिह सकल बिनासा ॥
भयो सूर ते ऊच निवासा ॥१५॥
इति चंद्र अवतार उनीसवों ॥१९॥ सुभम सतु ॥

SECTION 10: KRISHNA AVTAR (KRISHNA CHARITAR)

Life and deeds of Sri Krishna — Major section

ੴवाहिगुरू जी की फतह ॥

अथ बीसवा राम अवतार कथनं ॥

चौपई ॥

अब मै कहो राम अवतारा ॥
जैस जगत मो करा पसारा ॥
बहुतु काल बीतत भयो जबै ॥
असुरन बंस प्रगट भयो तबै ॥१॥
असुर लगे बहु करै बिखाधा ॥
किनहूं न तिनै तनक मै साधा ॥
सकल देव इकठे तब भए ॥
छीर समुंद्र जह थो तिह गए ॥२॥
बहु चिर बसत भए तिह ठामा ॥
बिसन सहित ब्रहमा जिह नामा ॥
बार बार ही दुखत पुकारत ॥
कान परी कल के धुनि आरत ॥३॥

तोटक छंद ॥

बिसनादक देव लेख बिमनं ॥
म्रिद हास करी कर काल धुनं ॥
अवतार धरो रघुनाथ हरं ॥
चिर राज करो सुख सो अवधं ॥४॥
बिसनेस धुणं सुण ब्रहम मुखं ॥
अब सुद्ध चली रघुबंस कथं ॥
जु पै छोर कथा कवि याह रढै ॥
इन बातन को इक ग्रंथ बढै ॥५॥
तिह ते कही थोरीऐ बीन कथा ॥
बलि त्वै उपजी बुध मद्धि जथा ॥
जह भूलि भई हम ते लहीयो ॥
सु कबो तह अच्छ्र बना कहीयो ॥६॥
रघु राज भयो रघु बंस मणं ॥
जिह राज करयो पुर अउध घणं ॥
सोऊ काल जिणयो न्रिपराज जबं ॥
भूअ राज करयो अज राज तबं ॥७॥
अज राज हणयो जब काल बली ॥
सु न्रिपत कथा दसरथ चली ॥
चिर राज करो सुख सों अवधं ॥
म्रिग मार बिहार बणं सु प्रभं ॥८॥
जग धरम कथा प्रचुरी तब ते ॥
सुमित्रेस महीप भयो जब ते ॥
दिन रैण बनैसन बीच फिरै ॥
म्रिग राज करी म्रिग नेत हरै ॥९॥
इह भाति कथा उह ठौर भई ॥
अब राम जया पर बात गई ॥
कुहड़ाम जहा सुनीऐ सहरं ॥

तह कौसल राज न्रिपेस बरं ॥१०॥
उपजी तह धाम सुता कुसलं ॥
जिह जीत लई ससि अंग कलं ॥
जब ही सुधि पाइ सुयंब्र करिओ ॥
अवधेस नरेसहि चीन बरिओ ॥११॥
पुनि सैन समित्र नरेस बरं ॥
जिह जुध लयो मद्र देस हरं ॥
सुमित्रा तिह धाम भई दुहिता ॥
जिह जीत लई सस सूर प्रभा ॥१२॥
सोऊ बारि सबुद्ध भई जब ही ॥
अवधेसह चीन बरिओ तब ही ॥
गन याह भयो कसटुआर न्रिपं ॥
जिह केकई धाम सु तासु प्रभं ॥१३॥
इन ते ग्रह मो सुत जउन थीओ ॥
तब बैठ नरेस बिचार कीओ ॥
तब केकई नार बिचार करी ॥
जिह ते ससि सूरज सोभ धरी ॥१४॥
तिह बयाहत माग लए दु बरं ॥
जिह ते अवधेस के प्राण हरं ॥
समझी न नरेसर बात हीए ॥
तब ही तह को बर दोइ दीए ॥१५॥
पुन देव अदेवन जुद्ध परो ॥
जह जुद्ध घणो न्रिप आप करो ॥
हत सारथी सयंदन नार हकियो ॥
यह कौतक देख नरेस चकियो ॥१६॥
पुन रीझ दए दोऊ तीअ बरं ॥
चित मो सु बिचार कछू न करं ॥
कही नाटक मद्ध चरित्र कथा ॥
जय दीन सुरेस नरेस जथा ॥१७॥
अरि जीति अनेक अनेक बिधं ॥
सभ काज नरेस्वर कीन सिधं ॥
दिन रैण बिहारत मद्धि बणं ॥
जल लैन दिजाइ तहा स्रवणं ॥१८॥
पित मात तजे दोऊ अंध भूयं ॥
गहि पात्र चलियो जलु लैन सुयं ॥
मुनि नो दित काल सिधार तहा ॥
न्रिप बैठ पतऊवन बाध जहा ॥१९॥
भभकंत घटं अति नादि हुअं ॥
धुनि कान परी अज राज सुअं ॥
गहि पाण सु बाणहि तान धनं ॥
म्रिग जाण दिजं सर सुद्ध हनं ॥२०॥
गिर गयो सु लगे सर सुद्ध मुनं ॥
निसरी मुख ते हहकार धुनं ॥
म्रिगनात कहा न्रिप जाइ लहै ॥
दिज देख दोऊ कर दात गहै ॥२१॥
सरवण बाचि ॥
कछु प्रान रहे तिह मद्ध तनं ॥
निकरंत कहा जीअ बिप्र न्रिपं ॥
मुर तात रु मात न्रिचच्छ परे ॥
तिह पान पिआइ न्रिपाध मरे ॥२२॥

पाधड़ी छंद ॥

बिन चच्छ भूप दोऊ तात मात ॥
तिन देह पान तुह कहौं बात ॥
मम कथा न तिन कहीयो प्रबीन ॥
सुनि मरयो पुत्र तेऊ होहि छीन ॥२३॥
इह भात जबै दिज कहै बैन ॥
जल सुनत भूप चुऐ चले नैन ॥
ध्रिग मोह जिन सु कीनो कुकरम ॥
हति भयो राज अरु गयो धरम ॥२४॥
जब लयो भूप तिह सर निकार ॥
तब तजे प्राण मुन बर उदार ॥
पुन भयो राव मन मै उदास ॥
ग्रिह पलट जान की तजी आस ॥२५॥
जीअ ठटी कि धारो जोग भेस ॥
कहूं बसौ जाइ बनि तिआगि देस ॥
किह काज मोर यह राज साज ॥
दिज मारि कीयो जिन अस कुकाज ॥२६॥
इह भात कही पुनि न्रिप प्रबीन ॥
सभ जगति काल करमै अधीन ॥
अब करो कछू ऐसो उपाइ ॥
जा ते सु बचै तिह तात माइ ॥२७॥
भरि लयो कुंभ सिर पै उठाइ ॥
तह गयो जहा दिज तात माइ ॥
जब गयो निकट तिन के सु धार ॥
तब लखी दुहूं तिह पाव चार ॥२८॥
दिज बाच राजा सों ॥

पाधड़ी छंद ॥

कह कहो पुत्र लागी अवार ॥
सुनि रहिओ मोन भूपत उदार ॥
फिरि कहयो काहि बोलत न पूत ॥
चुप रहे राज लहि कै कसूत ॥२९॥
न्रिप दीओ पान तिह पान जाइ ॥
चकि रहे अंध तिह कर छुहाइ ॥
कर कोप कहियो तू आहि कोइ ॥
इम सुनत सबद न्रिप दयो रोइ ॥३०॥
राजा बाच दिज सों ॥

पाधड़ी छंद ॥

हउ पुत्र घात तव ब्रहमणेस ॥
जिह हनियो स्रवण तव सुत सुदेस ॥
मै परयो सरण दसरथ राइ ॥
चाहो सु करो मोहि बिप आइ ॥३१॥
राखै तु राखु मारै तु मारु ॥
मै परो सरण तुमरै दुआरि ॥
तब कही किनो दसरथ राइ ॥
बहु कासट अगन द्वै देइ मंगाइ ॥३२॥
तब लीयो अधिक कासट मंगाइ ॥

चड़ बैठे तहा सल्रह्ह कउ बनाइ ॥
चहूं ओर दई जुआला जगाइ ॥
दिज जान गई पावक सिराइ ॥३३॥
तब जोग अगनि तन ते उप्राज ॥
दुहूं मरन जरन को सजियो साज ॥
ते भसम भए तिह बीच आप ॥
तिह कोप दुहूं न्रिप दीयो स्राप ॥३४॥
दिज बाच राजा सों ॥

पाधड़ी छंद ॥

जिम तजे प्राण हम सुति बिछोहि ॥
तिम लगो स्राप सुन भूप तोहि ॥
इम भाख जरयो दिज सहित नारि ॥
तज देह कीयो सुरपुर बिहार ॥३५॥
राजा बाच ॥

पाधड़ी छंद ॥

तब चही भूप हउं जरों आज ॥
कै अतिथि होऊं तज राज साज ॥
कै ग्रहि जै कै करहों उचार ॥
मै दिज आयो निज कर संघार ॥३६॥
देव बानी बाच ॥

पाधड़ी छंद ॥

तब भई देव बानी बनाइ ॥
जिन करो दुक्ख दसरथ राइ ॥
तव धाम होहिगे पुत्र बिसन ॥
सभ काज आज सिध भए जिसन ॥३७॥
ह्वै है सु नाम रामावतार ॥
कर है सु सकल जग को उधार ॥
कर है सु तनक मै दुसट नास ॥
इह भात कीरत कर है प्रकास ॥३८॥

नराज छंद ॥

नचिंत भूप चिंत धाम राम राइ आइ हैं ॥
दुरंत दुसट जीत कै सु जैत पत्र पाइ हैं ॥
अखरब गरब जे भरे सु सरब गरब घाल हैं ॥
फिराइ छत्र सीस पै छतीस छोण पाल हैं ॥३९॥
अखंड खंड खंड कै अडंड डंड दंड हैं ॥
अजीत जीत जीत कै बिसेख राज मंड हैं ॥
कलंक दूर कै सभै निसंक लंक घाइ हैं ॥
सु जीत बाह बीस गरब ईस को मिटाइ हैं ॥४०॥
सिधार भूप धाम को इतो न सोक को धरो ॥
बुलाइ बिप छोण के अरंभ जग को करो ॥
सुणंत बैण राव राजधानीऐ सिधारीअं ॥
बुलाइ कै बसिसट राजसूइ को सुधारीअं ॥४१॥
अनेक देस देस के नरेस बोल कै लए ॥
दिजेस बेस बेस के छितेस धाम आ गए ॥

अनेक भात मान कै दिवान बोल कै लए ॥
सु जग राजसूइ को अरंभ ता दिना भए ॥४२॥
सु पादि अरघ आसनं अनेक धूप दीप कै ॥
पखारि पाइ ब्रहमणं प्रदच्छणा बिसेख दै ॥
करोर कोर दच्छना दिजेक एक कउ दई ॥
सु जग राजसूइ की अरंभ ता दिना भई ॥४३॥
नटेस देस देस के अनेक गीत गावही ॥
अनंत दान मान लै बिसेख सोभ पावही ॥
प्रसंनि लोग जे भए सु जात कउन ते कहे ॥
बिमान आसमान के पछान मोन हुऐ रहे ॥४४॥
हुती जिती अपच्छरा चली सुवरग छोर कै ॥
बिसेख हाइ भाइ कै नचंत अंग मोर कै ॥
बिअंत भूप रीझहीं अनंत दान पावहीं ॥
बिलोकि अच्छरान को अपच्छरा लजावहीं ॥४५॥
अनंत दान मान दै बुलाइ सूरमा लए ॥
दुरंत सैन संग दै दसो दिसा पठै दए ॥
नरेस देस देस के न्रिपेस पाइ पारीअं ॥
महेस जीत कै सभै सु छत्रपत्र ढारीअं ॥४६॥

रूआमल छंद ॥

जीत जीत न्रिपं नरेसुर सत्र मित्र बुलाइ ॥
बिप्र आदि बिसिसट ते लै कै सभै रिखराइ ॥
क्रुद्ध जुद्ध करे घने अवगाहि गाहि सुदेस ॥
आन आन अवधेस के पग लागीअं अवनेस ॥४७॥
भाति भातिन दै लए सनमान आन न्रिपाल ॥
अरब खरबन दरब दै गज राज बाज बिसाल ॥
हीर चीरन को सकै गन जटत जीन जराइ ॥
भाउ भूखन को कहै बिध ते न जात बताइ ॥४८॥
पसम बसत्र पटंबरादिक दीए भूपन भूप ॥
रूप अरूप सरूप सोभित कउन इंद्र करूपु ॥
दुसट पुसट त्रसै सभै थरहरयो सुनि गिरराइ ॥
काटि काटिन दै मुझै न्रिप बाटि बाटि लुटाइ ॥४९॥
बेद धुनि करि कै सभै दिज कीअस जग अरंभ ॥
भाति भाति बुलाइ होमत रित जान असंभ ॥
अधिक मुनिबर जउ कीयो बिध पूरब होम बनाइ ॥
जग कुंडहु ते उठे तब जग पुरख अकुलाइ ॥५०॥
खीर पात्र कढाइ लै करि दीन न्रिप के आन ॥
भूप पाइ प्रसंनि भयो जिमु दारदी लै दान ॥
चत्र भाग करयो तिसै निज पान लै न्रिपराइ ॥
एक एक दयो दुहू त्रीअ एक को दुइ भाइ ॥५१॥
गरभवंत भई त्रियो त्रिय छीर को करि पान ॥
ताहि राखत भी भलो दस दोइ मास प्रमान ॥
मास त्रिउदसमो चढयो तब संतन हेत उधार ॥
रावणारि प्रगट भए जग आन राम अवतार ॥५२॥
भरथ लछमन सत्रुघन पुनि भए तीन कुमार ॥
भाति भातिन बाजीयं न्रिप राज बाजन दुआर ॥
पाइ लाग बुलाइ बिपन दीन दान दुरंति ॥
सत्रु नासत होहिगे सुख पाइ हैं सभ संत ॥५३॥
लाल जाल प्रवेसट रिखबर बाज राज समाज ॥
भाति भातिन देत भयो दिज पतन को न्रिपराज ॥

देस अउर बिदेस भीतर ठउर ठउर महंत ॥
नाच नाच उठे सभै जनु आज लाग बसंत ॥५४॥
किंकणीन के जाल भूखति बाज अउ गजराज ॥
साज साज दए दिजेसन आज कउसल राज ॥
रंक राज भए घने तह रंक राजन जैस ॥
राम जनमत भयो उतसव अउध पुर मै ऐस ॥५५॥
दुंदभ अउर म्रिदंग तूर तुरंग तान अनेक ॥
बीन बीन बजंत छीन प्रबीन बीन बिसेख ॥
झाझ बार तरंग तुरही भेरनादि नियान ॥
मोहि मोहि गिरे धरा पर सरब बयोम बिवान ॥५६॥
जत्र तत्र बिदेस देसन होत मंगलचार ॥
बैठि बैठि करै लगे सब बिप्र बेद बिचार ॥
धूप दीप महीप ग्रेह सनेह देत बनाइ ॥
फूलि फूलि फिरै सभै गण देव देवन राइ ॥५७॥
आज काज भए सबै इह भाति बोलत बैन ॥
भूंम भूर उठी जयत धुन बाज बाजत गैन ॥
ऐन ऐन धुजा बधी सभ बाट बंदनवार ॥
लीप लीप धरे मलयागर हाट पाट बजार ॥५८॥
साजि साजि तुरंग कंचन देत दीनन दान ॥
मसत हसति दए अनेकन इंद्र दुरद समान ॥
किंकणी के जाल भूखत दए सयंदन सुद्ध ॥
गाइनन के पुर मनो इह भाति आवत बुद्ध ॥५९॥
बाज साज दए इते जिह पाईऐ नही पार ॥
दयोस दयोस बढै लगयो रनधीर रामवतार ॥
ससत्र सासत्रन की सभै बिध दीन ताहि सुधार ॥
असट दयोसन मो गए लै सरब रामकुमार ॥६०॥
बान पान कमान लै बिहरंत सरजू तीर ॥
पीत पीत पिछोर कारन धीर चारहुं बीर ॥
बेख बेख न्रिपान के बिहरंत बालक संग ॥
भाति भातन के धरे तन चीर रंग तरंग ॥६१॥
ऐसि बात भई इतै उह ओर बिस्वामित्र ॥
जग को सु करियो अरंभन तोखनारथ पित्र ॥
होम की लै बासना उठ धात दैत दुरंत ॥
लूट खात सबै समगरी मार कूटि महंत ॥६२॥
लूट खातह विखय जे तिन पै कछू न बसाइ ॥
ताक अउधह आइयो तब रोस कै मुनि राइ ॥
आइ भूपत कउ कहा सुत देहु मो कउ राम ॥
नात्र तो कउ भसम करि हउ आज ही इह ठाम ॥६३॥
कोप देखि मुनीस कउ न्रिप पूत ता संग दीन ॥
जग मंडल कउ चलयो लै ताहि संगि प्रबीन ॥
एक मारग दूर है इक नीअर है सुनि राम ॥
राह मारत राछसी जिह तारका गनि नाम ॥६४॥
जउन मारग तीर है तिह राह चालहु आज ॥
चित चिंत न कीजीऐ दिव देव के हैं काज ॥
बाटि चापै जात हैं तब लउ निसाचर आन ॥
जाहुगे कत राम कहि मगि रोकियो तजि कान ॥६५॥
देखि राम निसाचरी गहि लीन बान कमान ॥
भाल मध प्रहारियो सुर तानि कान प्रमान ॥
बान लागत ही गिरी बिसंभारु देहि बिसाल ॥
हाथि स्री रघुनाथ के भयो पापनी को काल ॥६६॥

ऐस ताहि संघार कै कर जग मंडल मंड ॥
आइगे तब लउ निसाचर दीह देह प्रचंड ॥
भाजि भाजि चले सभै रिख ठाढ भे हठि राम ॥
जुद्ध क्रुद्ध करियो तिहूं तिह ठउर सोरह जाम ॥६७॥
मार मार पुकार दानव ससत्र असत्र संभारि ॥
बान पान कमान कउ धरि तबर तिच्छ कुठारि ॥
घोरि घोरि दसो दिसा नहि सूरबीर प्रमाथ ॥
आइ कै जूझे सबै रण राम एकल साथ ॥६८॥

रसावल छंद ॥

रणं पेखि रामं ॥
धुजं धरम धामं ॥
चहूं ओर ढूके ॥
मुखं मार कूके ॥६९॥
बजे घोर बाजे ॥
धुणं मेघ लाजे ॥
झंडा गड गाड़े ॥
मंडे बैर बाड़े ॥७०॥
कड़के कमाणं ॥
झड़के क्रिपाणं ॥
ढला ढुक ढालै ॥
चली पीत पालै ॥७१॥
रणं रंग रते ॥
मनो मल मते ॥
सरं धार बरखे ॥
महिखुआस करखै ॥७२॥
करी बान बरखा ॥
सुणे जीत करखा ॥
सुबाहं मरीचं ॥
चले बाछ मीचं ॥७३॥
इकै बार टूटे ॥
मनो बाज छूटे ॥
लयो घोरि रामं ॥
ससं जेम कामं ॥७४॥
घिरयो दैत सैणं ॥
जिमं रुद्र मैणं ॥
रुके राम जंगं ॥
मनो सिंध गंगं ॥७५॥
रणं राम बजे ॥
धुणं मेघ लजे ॥
रुले तच्छ मुच्छं ॥
गिरे सूर स्वच्छं ॥७६॥
चलै ऐंठ मुच्छैं ॥
कहा राम पुच्छैं ॥
अबै हाथि लागे ॥
कहा जाहु भागै ॥७७॥
रिपं पेख रामं ॥
हठियो धरम धामं ॥
करै नैण रातं ॥
धनुर बेद गयातं ॥७८॥

धनं उग्र करखियो ॥
सरंधार बरखियो ॥
हणी सत्र सैणं ॥
हसे देव गैणं ॥७९॥
भजी सरब सैणं ॥
लखी म्रीच नैणं ॥
फिरियो रोस प्रेरियो ॥
मनो साप छेड़यो ॥८०॥
हणियो राम बाणं ॥
करियो सिंध पयाणं ॥
तजियो राज देसं ॥
लियो जोग भेसं ॥८१॥
सु बसत्रं उतारे ॥
भगवे बसत्र धारे ॥
बसयो लंक बागं ॥
पुनर द्रोह तिआगं ॥८२॥
सरोसं सुबाहं ॥
चड़यो लै सिपाहं ॥
ठटयो आण जुधं ॥
भयो नाद उद्धं ॥८३॥
सुभं सैण साजी ॥
तुरे तुंद ताजी ॥
गजा जूह गजे ॥
धुणं मेघ लजे ॥८४॥
ढका ढुक ढालं ॥
सुभी पीत लालं ॥
गहे ससत्र उठे ॥
सरंधार बुठे ॥८५॥
बहै अगन असत्रं ॥
छुटे सरब ससत्रं ॥
रंगे स्रोण ऐसे ॥
चड़े बयाह जैसे ॥८६॥
घणै घाइ घूमे ॥
मदी जैस झूमे ॥
गहे बीर ऐसे ॥
फुलै फूल जैसे ॥८७॥
हठियो दानवेसं ॥
भयो आप भेसं ॥
बजे घोर बाजे ॥
धुणं अभ्र लाजे ॥८८॥
रथी नाग कूटे ॥
फिरैं बाज छूटै ॥
भयो जुद्ध भारी ॥
छुटी रुद्र तारी ॥८९॥
बजे घंट भेरी ॥
डहे डाम डेरी ॥
रणंके निसाणं ॥
कणंछे किकाणं ॥९०॥
धहा धूह धोपं ॥
टका टूक टोपं ॥

कटे चरम बरमं ॥
पलियो छत्र धरमं ॥९१॥
भयो दुंद जुद्धं ॥
भरयो राम क्रुद्धं ॥
कटी दुसट बाहं ॥
संघारयो सुबाहं ॥९२॥
त्रसै दैत भाजे ॥
रणं राम गाजे ॥
भुअं भार उतारियो ॥
रिखीसं उबारियो ॥९३॥
सभै साध हरखे ॥
भए जीत करखे ॥
करै देव अरचा ॥
ररै बेद चरचा ॥९४॥
भयो जग पूरं ॥
गए पाप दूरं ॥
सुरं सरब हरखे ॥
धनंधार बरखे ॥९५॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे रामावतारे कथा सुबाह मरीच बधह जगय संपूरन करनं समापतम ॥*

अथ सीता सुयंबर कथनं ॥

रसावल छंद ॥

रचयो सुयंबर सीता ॥
महा सुद्ध गीता ॥
बिधं चार बैणी ॥
म्रिगी राज नैणी ॥९६॥
सुणयो मोननेसं ॥
चतुर चार देसं ॥
लयो संग रामं ॥
चलयो धरम धामं ॥९७॥
सुनो राम पिआरे ॥
चलो साथ हमारे ॥
सीआ सुयंबर कीनो ॥
न्रिपं बोल लीनो ॥९८॥
तहा प्रात जईऐ ॥
सीआ जीत लईऐ ॥
कही मान मेरी ॥
बनी बात तेरी ॥९९॥
बली पान बाके ॥
निपातो पिनाके ॥
सीआ जीत आनो ॥
हनो सरब दानो ॥१००॥
चले राम संगं ॥
सुहाए निखंगं ॥
भए जाइ ठाढे ॥
महा मोद बाढे ॥१०१॥

पुरं नार देखै ॥
सही काम लेखै ॥
रिपं सत्रु जानै ॥
सिधं साध मानै ॥१०२॥
सिसं बाल रूपं ॥
लहयो भूप भूपं ॥
तपयो पउन हारी ॥
भरं ससत्र धारी ॥१०३॥
निसा चंद जानयो ॥
दिनं भान मानयो ॥
गणं रुद्र रेखयो ॥
सुरं इंद्र देखयो ॥१०४॥
स्रुतं ब्रहम जानयो ॥
दिजं बयास मानयो ॥
हरी बिसन लेखे ॥
सीआ राम देखे ॥१०५॥
सीआ पेख रामं ॥
बिधी बाण कामं ॥
गिरी झूमि भूमं ॥
मदी जाणु घूमं ॥१०६॥
उठी चेत ऐसे ॥
महाबीर जैसे ॥
रही नैन जोरी ॥
ससं जिउ चकोरी ॥१०७॥
रहे मोह दोनो ॥
टरे नाहि कोनो ॥
रहे ठाढ ऐसे ॥
रणं बीर जैसे ॥१०८॥
पठे कोट दूतं ॥
चले पउन पूतं ॥
कुवंडान डारे ॥
नरेसो दिखारे ॥१०९॥
लयो राम पानं ॥
भरयो बीर मानं ॥
हसयो ऐच लीनो ॥
उभै टूक कीनो ॥११०॥
सभै देव हरखे ॥
घनं पुहप बरखे ॥
लजाने नरेसं ॥
चले आप देसं ॥१११॥
तबै राज कंनिआ ॥
तिहूं लोक धंनिआ ॥
धरे फूल माला ॥
बरियो राम बाला ॥११२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

किधौ देव कंनिआ किधौ बासवी है ॥
किधौ जच्छनी किंन्रनी नागनी है ॥
किधौ गंध्रबी दैत जा देवता सी ॥
किधौ सूरजा सुध सोधी सुधा सी ॥११३॥

किधौ जच्छ बिदिआ धरी गंध्रबी है ॥
किधौ रागनी भाग पूरे रची है ॥
किधौ सुवरन की चित्र की पुत्रका है ॥
किधौ काम की कामनी की प्रभा है ॥११४ ॥
किधौ चित्र की पुत्रका सी बनी है ॥
किधौ संखनी चित्रनी पदमनी है ॥
किधौ राग पूरे भरी राग माला ॥
बरी राम तैसी सीआ आज बाला ॥११५ ॥
छके प्रेम दोनो लगे नैन ऐसे ॥
मनो फाध फाधै म्रिगीराज जैसे ॥
बिधुं बाक बैणी कटं देस छीणं ॥
रंगे रंग रामं सुनैणं प्रबीणं ॥११६ ॥
जिणी राम सीता सुणी स्रउण रामं ॥
गहे ससत्र असत्रं रिसयो तउन जामं ॥
कहा जात भाखियो रहो राम ठाढे ॥
लखो आज कैसे भए बीर गाढे ॥११७ ॥
भाखा पिंगल दी ॥

सुंदरी छंद ॥

भट हुंके धुंके बंकारे ॥
रण बजे गजे नगारे ॥
रण हुल कलोलं हुलालं ॥
ढल हलं ढलं उच्छालं ॥११८ ॥
रण उठे कुठे मुच्छाले ॥
सर छुटे जुटे भीहाले ॥
रतु डिगे भिगे जोधाणं ॥
कणणंछे कच्छे किकाणं ॥११९ ॥
भीखणीयं भेरी भुंकारं ॥
झल लंके खंडे दुद्धारं ॥
जुद्धं जुझारं बुबाड़े ॥
रुलीए पखरीए आहाड़े ॥१२० ॥
बके बबाड़े बंकारं ॥
नचे पक्खरीए जुझारं ॥
बजे संगलीए भीहाले ॥
रण रते मते मुच्छाले ॥१२१ ॥
उछलीए कच्छी कच्छाले ॥
उडे जणु पबं पच्छाले ॥
जुटे भट छुटे मुच्छाले ॥
रुलीए आहाड़ं पखराले ॥१२२ ॥
बजे संधूरं नगारे ॥
कच्छे कच्छीले लुझारे ॥
गण हूरं पूरं गैणायं ॥
अंजनयं अंजे नैणायं ॥१२३ ॥
रण णके नादं नाफीरं ॥
बबाड़े बीरं हाबीरं ॥
उघे जणु नेजे जटाले ॥
छुटे सिल सितियं मुच्छाले ॥१२४ ॥
भट डिगे घायं अघायं ॥
तन सुभे अद्धे अद्धायं ॥
दल गजे बजे नीसाणं ॥

चंचलीए ताजी चीहाणं ॥१२५ ॥
चव दिसयं चिंकी चावंडै ॥
खंडे खंडे कै आखंडै ॥
रण डंके गिद्धं उद्धाणं ॥
जै जंपै सिंधं सुद्धाणं ॥१२६ ॥
फुले जणु किंसक बासंतं ॥
रण रते सूरा सामंतं ॥
डिगे रण सुंडी सुंडाणं ॥
धर भूरं पूरं मुंडाणं ॥१२७ ॥

मधुर धुनि छंद ॥

तर भर रामं ॥
परहर कामं ॥
धर बर धीरं ॥
परहरि तीरं ॥१२८ ॥
दर बर गयानं ॥
पर हरि धयानं ॥
थरहर कंपै ॥
हरि हरि जंपै ॥१२९ ॥
क्रोधं गलितं ॥
बोधं दलितं ॥
कर सर सरता ॥
धरमर हरता ॥१३० ॥
सरबर पाणं ॥
धर कर माणं ॥
अर उर साली ॥
धर उरि माली ॥१३१ ॥
कर बर कोपं ॥
थरहर धोपं ॥
गर बर करणं ॥
घर बर हरणं ॥१३२ ॥
छर हर अंगं ॥
चर खर संगं ॥
जर बर जामं ॥
झर हर रामं ॥१३३ ॥
टर धरि जायं ॥
ठर हरि पायं ॥
ढर हर ढालं ॥
थरहर कालं ॥१३४ ॥
अर बर दरणं ॥
नर बर हरणं ॥
धर बर धीरं ॥
फर हर तीरं ॥१३५ ॥
बर नर दरणं ॥
भर हर करणं ॥
हर हर रड़ता ॥
बर हर गड़ता ॥१३६ ॥
सरबर हरता ॥
चरमरि धरता ॥
बरमरि पाणं ॥

करबर जाणं ॥१३७॥
हरबरि हारं ॥
कर बर बारं ॥
गडबड रामं ॥
गड़बड़ धामं ॥१३८॥

चरपट छीगा के आदि क्रित छंद ॥

खग खयाता ॥
गयान गयाता ॥
चित्र बरमा ॥
चार चरमा ॥१३९॥
सासत्रं गयाता ॥
ससत्रं खयाता ॥
चित्रं जोधी ॥
जुद्धं क्रोधी ॥१४०॥
बीरं बरणं ॥
भीरं भरणं ॥
सत्रं हरता ॥
अत्रं धरता ॥१४१॥
बरमं बेधी ॥
चरमं छेदी ॥
छत्रं हंता ॥
अत्रं गंता ॥१४२॥
जुधं धामी ॥
बुधं गामी ॥
ससत्रं खयाता ॥
असत्रं गयाता ॥१४३॥
जुद्धा माली ॥
कीरत साली ॥
धरमं धामं ॥
रूपं रामं ॥१४४॥
धीरं धरता ॥
बीरं हरता ॥
जुद्धं जेता ॥
ससत्रं नेता ॥१४५॥
दुरदं गामी ॥
धरमं धामी ॥
जोगं ज्वाली ॥
जोतं माली ॥१४६॥
परसुराम बाच ॥
स्वैया ॥
तूणि कसे कट चाप धरे कर कोप कही दिज राम अहो ॥
ग्रह तोरि सरासन संकर को सीअ जात हरे तुम कउन कहो ॥
बिन साच कहे नेहीं प्रान बचे जिनि कंठ कुठार की धार सहो ॥
घर जाहु चले तज राम रणं जिनि जूझि मरो पल ठाढ रहो ॥१४७॥
स्वैया ॥
जानत हो अविलोक मुझै हठि एक बली नही ठाढ रहैंगे ॥
ताति गहयो जिन को त्रिण दातन तेन कहा रण आज गहैंगे ॥
बंब बजे रण खंड गडे गहि हाथ हथिआर कहूं उमहैंगे ॥
भूम अकास पताल दुरैबे कउ राम कहो कहा ठाम लहैंगे ॥१४८॥

कबि बाच ॥
यौ जब बैन सुने अरि के तब स्री रघुबीर बली बलकाने ॥
सात समुंद्रन लौ गरवे गिर भूमि अकास दोऊ थहराने ॥
जच्छ भुजंग दिसा बिदिसान के दानव देव दुहूं डर माने ॥
स्री रघुनाथ कमान ले हाथ कहो रिस कै किह पै सर ताने ॥१४९॥
परसु राम बाच राम सो ॥
जेतक बैन कहे सु कहे जु पै फेरि कहे तु पै जीत न जैहो ॥
हाथि हथिआर गहे सु गहे जु पै फेरि गहे तु पै फेरि न लैहो ॥
राम रिसै रण मै रघुबीर कहो भजि कै कत प्रान बचैहो ॥
तोर सरासन संकर को हरि सीअ चले घरि जान न पैहो ॥१५०॥
राम बाच परसुराम सो ॥
स्वैया ॥
बोल कहे सु सहे दिस जू जु पै फेरि कहे ते पै प्रान ख्वैहो ॥
बोलत ऐंठ कहा सठ जिउ सभ दात तुराइ अबै घरि जैहो ॥
धीर तबै लहिहै तुम कउ जद भीर परी इक तीर चलैहो ॥
बात संभार कहो मुखि ते इन बातन को अब ही फलि पैहो ॥१५१॥
परसु राम बाच ॥
स्वैया ॥
तउ तुम साच लखो मन मै प्रभ जउ तुम राम वतार कहाओ ॥
रुद्र कुवंड बिहंडीय जिउ करि तिउ अपनो बल मोहि दिखाओ ॥
तउ ही गदा कर सारंग चक्र लता भ्रिगा की उर मद्ध सुहाओ ॥
मेरो उतार कुवंड महाबल मोहू कउ आज चड़ाइ दिखाओ ॥१५२॥
कबि बाच ॥
स्वैया ॥
स्री रघुबीर सिरोमन सूर कुवंड लयो कर मै हसि कै ॥
लीअ चाप चटाक चड़ाइ बली खट टूक करयो छिन मै कसि कै ॥
नभ की गति ताहि हती सर सो अध बीच ही बात रही बसि कै ॥
न बसात कछू नट के बट जयों भव पास निसंगि रहै फसि कै ॥१५३॥
इति स्री राम जुद्ध जयत ॥२॥

अथ अउध प्रवेस कथनं ॥

स्वैया ॥
भेट भुजा भरि अंकि भले भरि नैन दोऊ निरखे रघुराई ॥
गुंजत भ्रिंग कपोलन ऊपर नाग लवंग रहे लिव लाई ॥
कंज कुरंग कला निध केहरि कोकिल हेर हीए हहराई ॥
बाल लखैं छबि खाट परैं नहि बाट चलै निरखे अधिकाई ॥१५४॥
सीअ रही मुरछाइ मनै रनि राम कहा मन बात धरैंगे ॥
तोरि सरासनि संकर को जिम मोहि बरिओ तिम अउर बरैंगे ॥
दूसर बयाह बधू अब ही मन ते मुहि नाथ बिसार डरैंगे ॥
देखत हौ निज भाग भले बिध आज कहा इह ठौर करैंगे ॥१५५॥
तउ ही लउ राम जिते दिज कउ अपने दल आइ बजाइ बधाई ॥
भगुल लोक फिरै सभ ही रण मो लखि राघव की अधकाई ॥
सीअ रही रन राम जिते अवधेसर बात जबै सुनि पाई ॥
फूलि ग्यो अति ही मन मै धन के घन की बरखा बरखाई ॥१५६॥
बंदनवार बधी सभ ही दर चंदन सौ छिरके ग्रह सारे ॥
केसर डारि बरातन पै सभ ही जन हुइ पुरहूत पधारे ॥
बाजत ताल मुचंग पखावज नाचत कोटनि कोटि अखारे ॥
आनि मिले सभ ही अगूआ सुत कउ पितु लै पुर अउध सिधारे ॥१५७॥

चौपई ॥

सभहू मिलि गिल कीयो उछाहा ॥
पूत तिहूं कउ रचयो बियाहा ॥
राम सीआ बर कै घरि आए ॥
देस बिदेसन होत बधाए ॥१५८॥
जह तह होत उछाह अपारू ॥
तिहूं सुतन को बयाह बिचारू ॥
बाजत ताल म्रिदंग अपारं ॥
नाचत कोटन कोट अखारं ॥१५९॥
बनि बनि बीर पखरीआ चले ॥
जोबनवंत सिपाही भले ॥
भए जाइ इसथत न्रिप दर पर ॥
महारथी अरु महा धनुरधर ॥१६०॥
बाजत जंग मुचंग अपारं ॥
ढोल म्रिदंग सुरंग सुधारं ॥
गावत गीत चंचला नारी ॥
नैन नचाइ बजावत तारी ॥१६१॥
भिच्छकन हवस न धन की रही ॥
दान स्वरन सरता हुइ बही ॥
एक बात मागन कउ आवै ॥
बीसक बात घरै लै जावै ॥१६२॥
बनि बनि चलत भए रघुनंदन ॥
फूले पुहप बसंत जानु बन ॥
सोभत केसर अंगि डरायो ॥
आनंद हीए उछर जन आयो ॥१६३॥
साजत भए अमित चतुरंगा ॥
उमड चलत जिह बिधि करि गंगा ॥
भल भल कुअर चड़े सज सैना ॥
कोटक चड़े सूर जनु गैना ॥१६४॥
भरथ सहित सोभत सभ भ्राता ॥
कहि न परत मुख ते कछु बाता ॥
मातन मन सुंदर सुत मोहैं ॥
जनु दित ग्रह रवि सस दोऊ सोहैं ॥१६५॥
इह बिध कै सज सुद्ध बराता ॥
कछु न परत कहि तिन की बाता ॥
बाढत कहत ग्रंथ बातन कर ॥
बिदा होन सिस चले तात घर ॥१६६॥
आइ पिता कहु कीन प्रनामा ॥
जोरि पान ठाढे बनि धामा ॥
निरखि पुत्र आनंद मन भरे ॥
दान बहुत बिपन कह करे ॥१६७॥
तात मात लै कंठि लगाए ॥
जन दुइ रतन निरधनी पाए ॥
बिदा माग जब गए राम घर ॥
सीस रहे धरि चरन कमल पर ॥१६८॥

कबित ॥

राम बिदा करे सिर चूमयो पान पीठ धरे आनंद सो भरे लै तंबोर आगे धरे हैं ॥
दुंदभी बजाइ तीनो भाई यौ चलत भए मानो सूर चंद कोटि आन अवतरे हैं ॥
केसर सो भीजे पट सोभा देत ऐसी भात मानो रूप राग के सुहाग भाग भरे हैं ॥

राजा अवधेस के कुमार ऐसे सोभा देत कामजू ने कोटिक कलियोरा कैधौ करे हैं ॥१६९ ॥

कबित ॥

अउध ते निसर चले लीने संगि सूर भले रन ते न टले पले सोभा हूं के धाम के ॥
सुंदर कुमार उर हार सोभत अपार तीनो लोग मद्ध की मुहया सभ बाम के ॥
दुरजन दलया तीनो लोक के जितया तीनो राम जू के भया हैं चहया हर नाम के ॥
बुद्ध के उदार हैं सिंगार अवतार दान सील के पहार कै कुमार बने काम के ॥१७० ॥
अस्व बरननं ॥

कबितु ॥

नागरा के नैन हैं कि चातरा के बैन हैं बघूला मानो गैन कैसे तैसे थहरत हैं ॥
न्रितका के पाउ हैं कि जूप कैसे दाउ हैं कि छल को दिखाउ कोऊ तैसे बिहरत हैं ॥
हाके बाज बीर हैं तुफंग कैसे तीर हैं कि अंजनी के धीर हैं कि धुजा से फहरत हैं ॥
लहरैं अनंग की तरंग जैसे गंग की अनंग कैसे अंग जयों न कहूं ठहरत हैं ॥१७१ ॥
निसा निसनाथि जानै दिन दिनपति मानै भिच्छकन दाता कै प्रमाने महा दान हैं ॥
अउखधी के रोगन अनंत रूप जोगन समीप कै बियोगन महेस महा मान हैं ॥
सत्रै खग खयाता सिस रूपन के माता महा गयानी गयान गयाता कै बिधाता कै समान हैं ॥
गनन गनेस मानै सुरन सुरेस जानै जैसे पेखै तैसे ई लखे बिराजमान हैं ॥१७२ ॥
सुधा सौ सुधारे रूप सोभत उजियारे किधौ साचे बीच ढारे महा सोभा कै सुधार कै ॥
किधौ महा मोहनी के मोहबे नमित बीर बिधना बनाए महा बिध सो बिचार कै ॥
किधौ देव दैतन बिबाद छाड बडे चिर मथ कै समुंद्र छीर लीने है निकार कै ॥
किधौ बिस्वनाथ जू बनाए निज पेखबे कउ अउर न सकत ऐसी सूरतै सुधार कै ॥१७३ ॥
सीम तजि आपनी बिराने देस लाघ लाघ राजा मिथलेस के पहूचे देस आन कै ॥
तुरही अनंत बाजै दुंदभी अपार गाजै भाति भाति बाजन बजाए जोर जान कै ॥
आगै आनि तीनै न्रिप कंठ लाइ लीने रीत रूड़ सभै कीने बैठे बेद कै बिधान कै ॥
बरिखयो धन की धार पाइयत न पारावार भिच्छक भए न्रिपार ऐसे पाइ दान कै ॥१७४ ॥
बाने फहराने घहराने दुंदभ अरराने जनक पुरी कौ नीअराने बीर जाइ कै ॥
कहूं चउर ढारै कहूं चारण उचारै कहूं भाट जु पुकारै छंद सुंदर बनाइ कै ॥
कहूं बीन बाजै कोऊ बासुरी म्रिदंग साजै देखे काम लाजै रहे भिच्छक अघाइ कै ॥
रंक ते सु राजा भए आसिख असेख दए मागत न भए फेर ऐसो दान पाइ कै ॥१७५ ॥
आन कै जनक लीनो कंठ सो लगाइ तिहूं आदर दुरंत कै अनंत भाति लए हैं ॥
बेद के बिधान कै कै बयास ते बधाई बेद एक एक बिप्र कउ बिसेख स्वरन दए हैं ॥
राजकुआर सभै पहिराइ सिरपाइन ते मोतीमान करके बरख मेघ गए हैं ॥
दंती स्वेत दीने केते सिंधली तुरे नवीने राजा के कुमार तीनो बयाह कै पठए हैं ॥१७६ ॥

दोधक छंद ॥

बियाह सुता न्रिप की न्रिपबालं ॥
माग बिदा मुखि लीन उतालं ॥
साजन बाज चले गज संजुत ॥
एसनएस नरेसन के जुत ॥१७७ ॥
दाज सुमार सकै कर कउनै ॥
बीन सकै बिधना नही तउनै ॥
बेसन बेसन बाज महा मत ॥
भेसन भेस चले गज गजत ॥१७८ ॥
बाजत नाद नफीरन के गन ॥
गाजत सूर प्रमाथ महा मन ॥
अउध पुरी नीअरान रही जब ॥
प्रापत भए रघुनंद तही तब ॥१७९ ॥
मातन वारि पीयो जल पानं ॥

देख नरेस रहे छबि मानं ॥
भूप बिलोकत लाइ लए उर ॥
नाचत गावत गीत भए पुरि ॥१८०॥
भूपज बयाह जबै ग्रह आए ॥
बाजत भाति अनेक बधाए ॥
तात बसिसट सुमित्र बुलाए ॥
अउर अनेक तहा रिखि आए ॥१८१॥
घोर उठी घहराइ घटा तब ॥
चारो दिस दिग दाह लखियो सभ ॥
मंत्री मित्र सभै अकुलाने ॥
भूपति सो इह भात बखाने ॥१८२॥
होत उतपात बडे सुण राजन ॥
मंत्र करो रिख जोर समाजन ॥
बोलहु बिप बिलंब न कीजै ॥
है क्रित जग अरंभन कीजै ॥१८३॥
आइस राज दयो ततकालह ॥
मंत्र सु मित्रह बुद्ध बिसालह ॥
है क्रित जग अरंभन कीजै ॥
आइस बेग नरेस करीजै ॥१८४॥
बोलि बडे रिख लीन महा दिज ॥
है तिन बोल लयो जुत रितज ॥
पावक कुंड खुदियो तिह अउसर ॥
गाडिय खंभ तहा धरमं धर ॥१८५॥
छोरि लयो हयसारह ते हय ॥
असित करन प्रभासत केकय ॥
देसन देस नरेस दए संगि ॥
सुंदर सूर सुरंग सुभै अंग ॥१८६॥

समानका छंद ॥

नरेस संगि कै दए ॥
प्रबीन बीन कै लए ॥
सनद्धबद्ध हुइ चले ॥
सु बीर बीर हा भले ॥१८७॥
बिदेस देस गाह कै ॥
अदाह ठउर दाह कै ॥
फिराइ बाज राज कउ ॥
सुधार राज काज कउ ॥१८८॥
नरेस पाइ लागीयं ॥
दुरंत दोख भागीयं ॥
सु पूर जग को करयो ॥
नरेस त्रास कउ हरियो ॥१८९॥
अनंत दान पाइ कै ॥
चले दिजं अघाइ कै ॥
दुरंत आसिखैं रड़ैं ॥
रिचा सु बेद की पड़ैं ॥१९०॥
नरेस देस देस के ॥
सुभंत बेस बेस के ॥
बिसेख सूर सोभहीं ॥
सुसील नारि लोभहीं ॥१९१॥
बजंत्र कोट बाजहीं ॥

सनाइ भेर साजहीं ॥
बनाइ देवता धरैं ॥
समान जाइ पा परैं ॥१९२॥
करै डंडउत पा परैं ॥
बिसेख भावना धरैं ॥
सु मंत्र जंत्र जापीऐ ॥
दुरंत थाप थापीऐ ॥१९३॥
नचात चारु मंगना ॥
सु जान देव अंगना ॥
कमी न कउन काज की ॥
प्रभाव रामराज की ॥१९४॥

सारसुती छंद ॥

देस देसन की क्रिआ सिखवंत हैं दिज एक ॥
बान अउर कमान की बिध देत आनि अनेक ॥
भात भातन सों पड़ावत बार नारि सिंगार ॥
कोक काबय पड़ै कहूं बयाकरन बेद बिचार ॥१९५॥
राम परम पवित्र है रघुबंस के अवतार ॥
दुसट दैतन के संघारक संत प्रान अधार ॥
देसि देसि नरेस जीत असेस कीन गुलाम ॥
जत्र तत्र धुजा बधी जै पत्र की सभ धाम ॥१९६॥
बाटि तीन दिसा तिहूं सुत राजधानी राम ॥
बोल राज बसिसट कीन बिचार केतक जाम ॥
साज राघव राज के घट पूरि राखसि एक ॥
आंब्र मउलन दीसु उदकं अउर पुहप अनेक ॥१९७॥
थार चार अपार कुंकम चंदनादि अनंत ॥
राज साज धरे सभै तह आन आन दुरंत ॥
मंथरा इक गाध्रबी ब्रहमा पठी तिह काल ॥
बाज साज सणै चड़ी सभ सुभ्र धउल उताल ॥१९८॥
बेण बीण म्रदंग बाद सुणे रही चक बाल ॥
रामराज उठी जयत धुनि भूमि भूर बिसाल ॥
जात ही संगि केकई इह भाति बोली बाति ॥
हाथ बात छुटी चली बर माग हैं किह राति ॥१९९॥
केकई इम जउ सुनी भई दुक्खता सरबंग ॥
झूम भूम गिरी म्रिगी जिम लाग बण सुरंग ॥
जात ही अवधेस कउ इह भाति बोली बैन ॥
दीजीए बर भूप मो कउ जो कहे दुइ दैन ॥२००॥
राम को बन दीजीऐ मम पूत कउ निज राज ॥
राज साज सु संपदा दोऊ चउर छत्र समाज ॥
देस अउरि बिदेस की ठकुराइ दै सभ मोहि ॥
सत सील सती जत ब्रत तउ पछानो तोहि ॥२०१॥
पापनी बन राम को पै हैं कहा जस काढ ॥
भसम आनन ते गई कहि कै सके असि बाढ ॥
कोप भूप कुअंड लै तुहि काटीऐ इह काल ॥
नास तोरन कीजीऐ तक छाडीऐ तुहि बाल ॥२०२॥

नग सरूपी छंद ॥

नर देव देव राम है ॥
अभेव धरम धाम है ॥

अबुद्ध नारि तै मनै ॥
बिसुद्ध बात को भनै ॥२०३॥
अगाधि देव अनंत है ॥
अभूत सोभवंत है ॥
क्रिपाल करम कारणं ॥
बिहाल दिआल तारणं ॥२०४॥
अनेक संत तारणं ॥
अदेव देव कारणं ॥
सुरेस भाइ रूपणं ॥
समिद्ध्र सिद्ध कूपणं ॥२०५॥
बरं नरेस दीजीऐ ॥
कहे सु पूर कीजीऐ ॥
न संक राज धारीऐ ॥
न बोल बोल हारीऐ ॥२०६॥

नग सरूपी अद्धा छंद ॥

न लाजीऐ ॥
न भाजीऐ ॥
रघुएस को ॥
बनेस को ॥२०७॥
बिदा करो ॥
धरा हरो ॥
न भाजीऐ ॥
बिराजीऐ ॥२०८॥
बसिसट को ॥
दिजिसट को ॥
बुलाईऐ ॥
पठाईऐ ॥२०९॥
नरेस जी ॥
उसेस ली ॥
घुमे घिरे ॥
धरा गिरे ॥२१०॥
सुचेत भे ॥
अचेत ते ॥
उसास लै ॥
उदास ह्वै ॥२११॥

उगाध छंद ॥

सबार नैणं ॥
उदास बैणं ॥
कहियो कुनारी ॥
कुब्रित कारी ॥२१२॥
कलंक रूपा ॥
कुविरत कूपा ॥
निलज नैणी ॥
कुबाक बैणी ॥२१३॥
कलंक करणी ॥
सम्रिद्ध हरणी ॥
अक्रित करमा ॥

निलज धरमा ॥२१४ ॥
अलज धामं ॥
निलज बामं ॥
असोभ करणी ॥
ससोभ हरणी ॥२१५ ॥
निलज नारी ॥
कुकरम कारी ॥
अधरम रूपा ॥
अकज कूपा ॥२१६ ॥
पहपिटआरी ॥
कुकरम कारी ॥
मरै न मरणी ॥
अकाज करणी ॥२१७ ॥
केकई बाच ॥
नरेस मानो ॥
कहयो पछानो ॥
बदयो सु देहू ॥
बरं दु मोहू ॥२१८ ॥
चितार लीजै ॥
कहयो सु दीजै ॥
न धरम हारो ॥
न भरम टारो ॥२१९ ॥
बुलै बसिसटै ॥
अपूरब इसटै ॥
कही सीएसै ॥
निकार देसै ॥२२० ॥
बिलम न कीजै ॥
सु मान लीजै ॥
रिखेस रामं ॥
निकार धामं ॥२२१ ॥
रहे न इआनी ॥
भई दिवानी ॥
चुपै न बउरी ॥
बकैत डउरी ॥२२२ ॥
भ्रिगंस रूपा ॥
निखेध कूपा ॥
द्रुबाक बैणी ॥
नरेस छैणी ॥२२३ ॥
निकार रामं ॥
अधार धामं ॥
हतयो निजेसं ॥
कुकरम भेसं ॥२२४ ॥

उगाथा छंद ॥

अजित जिते अबाह बाहे ॥
अखंड खंडे अदाह दाहे ॥
अभंड भंडे अडंग डंगे ॥
अमुंन मुंने अभंग भंगे ॥२२५ ॥
अकरम करमं अलक्ख लक्खे ॥
अडंड डंडे अभक्ख भक्खे ॥

अथाह थाहे अदाह दाहे ॥
अभंग भंगे अबाह बाहे ॥२२६॥
अभिज भिजे अजाल जाले ॥
अखाप खापे अचाल चाले ॥
अभिंन भिंने अडंड डाडे ॥
अकित किते अमुंड माडे ॥२२७॥
अछिद छिदे अदग दागे ॥
अचोर चोरे अठग ठागे ॥
अभिद भिदे अफोड़ फोड़े ॥
अकज कजे अजोड़ जोड़े ॥२२८॥
अदग दगे अमोड़ मोड़े ॥
अखिच खिचे अजोड़ जोड़े ॥
अकढ कढे असाध साधे ॥
अफट फटे अफाध फाधे ॥२२९॥
अधंध धंधे अकज कजे ॥
अभिंन भिंने अभज भजे ॥
अछेड़ छेड़े अलद्ध लद्धे ॥
अजित जिते अबद्ध बद्धे ॥२३०॥
अचीर चीर अतोड़ ताड़े ॥
अठट ठटे अपाड़ पाड़े ॥
अधक धके अपंग पंगे ॥
अजुद्ध जुद्धे अजंग जंगे ॥२३१॥
अकुट कुटे अघुट घाए ॥
अचूर चूरे अदाव दाए ॥
अभीर भीरे अभंग भंगे ॥
अटुक टुके अकंग कंगे ॥२३२॥
अखिद खेदे अढाह ढाहे ॥
अगंज गंजे अबाह बाहे ॥
अमुंन मुंने अहेह हेहे ॥
विरचंन नारी त सुक्ख केहे ॥२३३॥

दोहरा ॥

इह बिधि केकई हठ गहयो बर मागन न्रिप तीर ॥
अति आतर किआ कहि सकै बिधयो काम के तीर ॥२३४॥

दोहरा ॥

बहु बिधि पर पाइन रहे मोरे बचन अनेक ॥
गहिअउ हठि अबला रही मानयो बचन न एक ॥२३५॥
बर दयो मै छोरे नही तैं करि कोटि उपाइ ॥
घर मो सुत कउ दीजीऐ बनबासै रघुराइ ॥२३६॥
भूप धरनि बिन बुद्धि गिरयो सुनत बचन त्रिय कान ॥
जिम म्रिगेस बन के बिखै बधयो बध करि बान ॥२३७॥
तरफरात प्रिथवी परयो सुनि बन राम उचार ॥
पलक प्रान तयागे तजत मद्धि सफरि सर बार ॥२३८॥
राम नाम स्रवनन सुणयो उठि थिर भयो सुचेत ॥
जनु रण सुभट गिरयो उठयो गहि अस निडर सुचेत ॥२३९॥
प्रान पतन न्रिप बर सहो धरम न छोरा जाइ ॥
दैन कहे जो बर हुते तन जुत दए उठाइ ॥२४०॥
केकई बाच न्रिपो बाच ॥

बसिसट सों ॥

दोहरा ॥

राम पयानो बन करै भरथ करै ठकुराइ ॥
बरख चतर दस के बिते फिरि राजा रघुराइ ॥२४१॥
कही बसिसट सुधार करि स्री रघुबर सो जाइ ॥
बरख चतुरदस भरथ न्रिप पुनि न्रिप स्री रघुराइ ॥२४२॥
सुनि बसिसट को बच स्रवण रघुपति फिरे ससोग ॥
उत दसरथ तन को तजयो स्री रघुबीर बियोग ॥२४३॥
सोरठा ॥
ग्रहि आवत रघुराइ सभु धन दीयो लुटाइ कै ॥
कटि तरकसी सुहाइ बोलत भे सीअ सो बचन ॥२४४॥
सुनि सीअ सुजस सुजान रहौ कौसलिआ तीर तुम ॥
राज करउ फिरि आन तोहि सहित बनबास बसि ॥२४५॥
सीता बाच राम सों ॥
सोरठा ॥
मै न तजो पीअ संगि कैसोई दुख जीअ पै परो ॥
तनक न मोरउ अंगि अंगि ते होइ अनंग किन ॥२४६॥
राम बाच सीता प्रति ॥

मनोहर छंद ॥

जउ न रहउ ससुरार क्रिसोदर जाहि पिता ग्रिह तोहि पठै दिउ ॥
नैक से भानन ते हम कउ जोई ठाट कहो सोई गाठ गिठै दिउ ॥
जे किछु चाह करो धन की टुक मोह कहो सभ तोहि उठै दिउ ॥
केतक अउध को राज सलोचन रंक को लंक निसंक लुटै दिउ ॥२४७॥
घोर सीआ बन तूं सु कुमार कहो हम सों कस तै निबहै है ॥
गुंजत सिंघ डकारत कोल भयानक भील लखै भ्रम ऐहै ॥
सुंकत साप बकारत बाघ भकारत भूत महा दुख पैहै ॥
तूं सु कुमार रची करतार बिचार चले तुहि किउं बनि ऐहै ॥२४८॥
सीता बाच राम सों ॥

मनोहर छंद ॥

सूल सहों तन सूक रहों पर सी न कहों सिर सूल सहोंगी ॥
बाघ बुकार फनीन फुकार सु सीस गिरो पर सी न कहोंगी ॥
बास कहा बनबास भलो नही पास तजो पीय पाइ गहोंगी ॥
हास कहा इह उदास समै ग्रिह आस रहो पर मै न रहोंगी ॥२४९॥
राम बाच सीता प्रति ॥
रास कहो तुहि बास करो ग्रिह सासु की सेव भली बिधि कीजै ॥
काल ही बास बनै म्रिग लोचनि राज करों तुम सो सुन लीजै ॥
जौ न लगै जीय अउध सुभाननि जाहि पिता ग्रिह साच भनीजै ॥
तात की बात गडी जीय जात सिधात बनै मुहि आइस दीजै ॥२५०॥
लछमण बाच ॥
बात इतै इहु भात भई सुनि आइगे भ्रात सरासन लीने ॥
कउन कुपूत भयो कुल मै जिन रामहि बास बनै कहु दीने ॥
काम के बान बधियो बस कामनि कूर कुचाल महा मति हीने ॥
राड कुभाड के हाथ बिकियो कपि नाचत नाच छरी जिम चीने ॥२५१॥
काम को डंड लीए कर केकई बानर जिउ न्रिप नाच नचावै ॥
ऐठन ऐठ अमैठ लीए ढिग बैठ सूआ जिम पाठ पड़ावै ॥
सउतन सीस ह्वै ईसक ईस प्रिथीस जिउ चाम के दाम चलावै ॥

कूर कुजात कुपंथ दुरानन लोग गए परलोक गवावै ॥२५२॥
लोग कुटेव लगे उन की प्रभ पाव तजे मुहि कयो बन ऐहै ॥
जउ हट बैठ रहो घरि मो जस कयो चलिहै रघुबंस लजैहै ॥
काल ही काल उचारत काल गयो इह काल सभो छल जैहै ॥
धाम रहो नही साच कहों इह घात गई फिर हाथि न ऐहै ॥२५३॥
चाप धरै कर चार कु तीर तुनीर कसे दोऊ बीर सुहाए ॥
आवध राज त्रीया जिह सोभत होन बिदा तिह तीर सिधाए ॥
पाइ परे भर नैन रहे भर मात भली बिध कंठ लगाए ॥
बोले ते पूत न आवत धामि बुलाइ लिउ आपन ते किमु आए ॥२५४॥
राम बाच माता प्रति ॥
तात दयो बनबास हमै तुम देह रजाइ अबै तह जाऊ ॥
कंटक कान बेहड़ गाहि त्रियोदस बरख बिते फिर आऊ ॥
जीत रहे तु मिलो फिरि मात मरे गए भूलि परी बखसाऊ ॥
भूपह कै अरिणी बर ते बस के बल मो फिरि राज कमाऊ ॥२५५॥
माता बाच राम सों ॥

मनोहर छंद ॥

मात सुनी इह बात जबै तब रोवत ही सुत के उर लागी ॥
हा रघुबीर सिरोमण राम चले बन कउ मुहि कउ कत तिआगी ॥
नीर बिना जिम मीन दसा तिम भूख पिआस गई सभ भागी ॥
झूम झराक झरी झट बाल बिसाल दवा उन की उर लागी ॥२५६॥
जीवत पूत तवानन पेख सीआ तुमरी दुत देख अघाती ॥
चीन सुमित्रज की छब को सभ सोक बिसार हीए हरखाती ॥
केकई आदिक सउतन कउ लखि भउह चड़ाइ सदा गरबाती ॥
ताकहु तात अनाथ जिउ आज चले बन को तजि कै बिललाती ॥२५७॥
होर रहे जन कोर कई मिलि जोर रहे कर एक न मानी ॥
लच्छन मात के धाम बिदा कहु जात भए जीअ मो इह ठानी ॥
सो सुनि बात पपात धरा पर घात भली इह बात बखानी ॥
जानुक सेल सुमार लगे छित सोवत सूर वडे अभिमानी ॥२५८॥
कउन कुजात कुकाज कीयो जिन राघव को इह भात बखानयो ॥
लोक अलोक गवाइ दुरानन भूप संघार तहा सुख मानयो ॥
भरम गयो उड करम करयो घट धरम को तिआगि अधरम प्रमानयो ॥
नाक कटी निरलाज निसाचर नाह निपातत नेहु न मानयो ॥२५९॥
सुमित्रा बाच ॥
दास को भाव धरे रहीयो सुत मात सरूप सीआ पहिचानो ॥
तात की तुलि सीआपति कउ करि कै इह बात सही करि मानो ॥
जेतक कानन के दुख है सभ सो सुख कै तन पै अनमानो ॥
राम के पाइ गहे रहीयो बन कै घर को घर कै बनु जानो ॥२६०॥
राजीव लोचन राम कुमार चले बन कउ संगि भ्राति सुहायो ॥
देव अदेव निछत्र सचीपत चउके चके मन मोद बढायो ॥
आनन बिंब परयो बसुधा पर फैलि रहियो फिरि हाथि न आयो ॥
बीच अकास निवास कीयो तिन ताही ते नाम मयंक कहायो ॥२६१॥

दोहरा ॥

पित आगिआ ते बन चले तजि ग्रहि राम कुमार ॥
संग सीआ म्रिग लोचनी जा की प्रभा अपार ॥२६२॥
इति स्री राम बनबास दीबो ॥

अथ बनबास कथनं ॥

सीता अनुमान बाच ॥

बिजै छंद ॥

चंद की अंस चकोरन कै करि मोरन बिदुलता अनमानी ॥
मत गइंदन इंद्र बधू भुनसार छटा रवि की जीअ जानी ॥
देवन दोखन की हरता अर देवन काल क्रिया कर मानी ॥
देसन सिंध दिसेसन ब्रिंध जोगेसन गंग कै रंग पछानी ॥२६३॥

दोहरा ॥

उत रघुबर बन को चले सीअ सहित तजि ग्रेह ॥
इतै दसा जिह बिधि भई सकल साध सुनि लेह ॥२६४॥
माता बाच ॥

कबित ॥

सभै सुख लै के गए गाड़ो दुख देत भए राजा दसरथ जू कउ कै कै आज पात हो ॥
अज हूं न छीजै बात मान लीजै राज कीजै कहो काज कउन कौ हमारे स्रोण नात हो ॥
राजसी के धारौ साज साधन कै कीजै काज कहो रघुराज आज काहे कउ सिधात हो ॥
तापसी के भेस कीने जानकी कौ संग लीने मेरे बनबासी मो उदासी दीए जात हो ॥२६५॥
कारे कारे करि बेस राजा जू कौ छोरि देस तापसी को कै भेस साथि ही सिधारि हौ ॥
कुल हूं की कान छोरों राजसी के साज तोरों संगि ते न मोरों मुख ऐसो कै बिचारि हौ ॥
मुंद्रा कान धारौ सारे मुख पै बिभूति डारौं हठि को न हारौं पूत राज साज जारि हौं ॥
जुगीआ को कीनो बेस कउसल के छोर देस राजा रामचंद जू के संगि ही सिधारि हौं ॥२६६॥

अपूरब छंद ॥

कानने गे राम ॥
धरम करमं धाम ॥
लच्छनै लै संगि ॥
जानकी सुभंगि ॥२६७॥
तात तिआगे प्रान ॥
उतरे बयोमान ॥
बिचरे बिचार ॥
मंत्रीयं अपार ॥२६८॥
बैठयो बसिसटि ॥
सरब बिप इसट ॥
मुकलियो कागद ॥
पठए मागध ॥२६९॥
संकड़ेसा वंत ॥
मतए मतंत ॥
मुकले के दूत ॥
पउन के से पूत ॥२७०॥
असटन दयंलाख ॥
दूत गे चरबाख ॥
भरत आगे जहा ॥
जात भे ते तहा ॥२७१॥
उचरे संदेस ॥
ऊरध गे अउधेस ॥
पत्र बाचे भले ॥
लाग संगं चले ॥२७२॥

कोप जीयं जगयो ॥
धरम भरमं भगयो ॥
कासमीरं तजयो ॥
राम रामं भजयो ॥२७३॥
पुजए अवद्ध ॥
सूरमा सनद्ध ॥
हेरिओ अउधेस ॥
म्रितकं के भेस ॥२७४॥
भरथ बाच केकई सों ॥
लखयो कसूत ॥
बुलयो सपूत ॥
ध्रिग मईया तोहि ॥
लजि लाईया मोहि ॥२७५॥
का करयो कुकाज ॥
कयो जीऐ निलाज ॥
मोहि जैबे तही ॥
राम है गे जही ॥२७६॥

कुसम बचित्र छंद ॥

तिन बनबासी रघुबर जानै ॥
दुख सुख सम कर सुख दुख मानै ॥
बलकल धर कर अब बन जैहैं ॥
रघुपत संग हम बन फल खैहैं ॥२७७॥
इम कहा बचना घर बर छोरे ॥
बलकल धरि तन भूखन तोरे ॥
अवधिस जारे अवधहि छाडयो ॥
रघुपति पग तर कर घर माडियो ॥२७८॥
लखि जल थल कह तजि कुल धाए ॥
मनु मन संगि लै तिह ठा आए ॥
लखि बल रामं खल दल भीरं ॥
गहि धन पाणं सित धर तीरं ॥२७९॥
गहि धनु रामं सर बर पूरं ॥
अरबर थहरे खल दल सूरं ॥
नर बर हरखे घर घर अमरं ॥
अमररि धरके लहि करि समरं ॥२८०॥
तब चित अपने भरथर जानी ॥
रन रंग राते रघुबर मानी ॥
दल बल तजि करि इकले निसरे ॥
रघुबर निरखे सभ दुख बिसरे ॥२८१॥
द्रिग जब निरखे भट मण रामं ॥
सिर धर टेकयं तज कर कामं ॥
इम गति लखि कर रघुपति जानी ॥
भरथर आए तजि रजधानी ॥२८२॥
रिपहा निरखे भरथर जाने ॥
अवधिस मूए तिन मान माने ॥
रघुबर लछमन परहर बानं ॥
गिर तर आए तज अभिमानं ॥२८३॥
दल बल तजि करि मिलि गल रोए ॥
दुख कसि बिधि दीआ सुख सभ खोए ॥
अब घर चलीए रघुबर मेरे ॥

तजि हठि लागे सभ पग तेरे ॥२८४॥
राम बाच भरथ सों ॥

कंठ अभूखन छंद ॥

भरथ कुमार न अउहठ कीजै ॥
जाह घरै न हमै दुख दीजै ॥
राज कहयो जु हमै हम मानी ॥
त्रियोदस बरख बसै बन धानी ॥२८५॥
त्रियोदस बरख बितै फिरि ऐहैं ॥
राज संघासन छत्र सुहैहैं ॥
जाहु घरै सिख मान हमारी ॥
रोवत तोरि उतै महतारी ॥२८६॥
भरथ बाच राम प्रति ॥

कंठ अभूखन छंद ॥

जाउ कहा पग भेट कहउ तुह ॥
लाज न लागत राम कहो मुह ॥
मै अति दीन मलीन बिना गत ॥
राख लै राज बिखै चरनाम्रित ॥२८७॥
चच्छ बिहीन सुपछ जिमं कर ॥
तिउ प्रभ तीर गिरयो पग भरथर ॥
अंक रहे गह राम तिसै तब ॥
रोइ मिले लछनादि भया सभ ॥२८८॥
पानि पीआइ जगाइ सु बीरह ॥
फेरि कहयो हस स्री रघुबीरह ॥
त्रियोदस बरख गए फिरि ऐहै ॥
जाहु हमै कछु काज किवैहै ॥२८९॥
चीन गए चतुरा चित मो सभ ॥
स्री रघुबीर कही अस कै जब ॥
मात समोध सु पावरि लीनी ॥
अउर बसे पुर अउध न चीनी ॥२९०॥
सीस जटान को जूट धरे बर ॥
राज समाज दीयो पऊवा पर ॥
राज करे दिनु होत उजिआरै ॥
रैनि भए रघुराज संभारै ॥२९१॥
जजर भयो झुर झंझर जिउ तन ॥
राखत स्री रघुराज बिखै मन ॥
बैरिन के रन बिंद निकंदत ॥
भाखत कंठि अभूखन छंदत ॥२९२॥

झूला छंद ॥

इतै राम राजं ॥
करै देव काजं ॥
धरो बान पानं ॥
भरै बीर मानं ॥२९३॥
जहा साल भारे ॥
द्रुमं ताल नयारे ॥
छुए सुरग लोकं ॥
हरै जात सोकं ॥२९४॥

तहा राम पैठे ॥
महाबीर ऐठे ॥
लीए संगि सीता ॥
महा सुभ्र गीता ॥२९५॥
बिधुं बाक बैणी ॥
म्रिगी राज नैणी ॥
कटं छीन दे सी ॥
परी पदमनी सी ॥२९६॥

झूलना छंद ॥

चड़ै पान बानी धरे सान मानो चच्छा बान सोहै दोऊ राम रानी ॥
फिरै खिआल सो एक हवाल सेती छुटे इंद्र सेती मनो इंद्र धानी ॥
मनो नाग बाके लजी आब फाकै रंगे रंग सुहाब सौ राम बारे ॥
म्रिगा देखि मोहे लखे मीन रोहे जिनै नैक चीने तिनो प्रान वारे ॥२९७॥
सुने कूक के कोकला कोप कीने मुखं देख कै चंद दारेर खाई ॥
लखे नैन बाके मनै मीन मोहै लखे जात के सूर की जोति छाई ॥
मनो फूल फूले लगे नैन झूले लखे लोग भूले बने जोर ऐसे ॥
लखे नैन थारे बिधे राम पिआरे रंगे रंग साराब सुहाब जैसे ॥२९८॥
रंगे रंग राते मयं मत माते मकबूलि गुलाब के फूल सोहैं ॥
नरगस ने देख कै नाक ऐंठा म्रिगीराज के देखतैं मान मोहैं ॥
सबो रोज सराब ने सोर लाइआ प्रजा आम जाहान के पेख वारे ॥
भवा तान कमान की भात पिआरीनि कमान ही नैन के बान मारे ॥२९९॥

कबित ॥

ऊचे द्रुम साल जहा लाबे बट ताल तहा ऐसी ठउर तप कउ पधारै ऐसो कउन है ॥
जा की छब देख दुत खाडव की फीकी लागै आभा तकी नंदन बिलोक भजे मौन है ॥
तारन की कहा नैक नभ न निहरायो जाइ सूरज की जोत तहा चंद्रकी न जउन है ॥
देव न निहारयो कोऊ दैत न बिहारयो तहा पंछी की न गंम जहा चीटी को न गउन है ॥३००॥

अपूरब छंद ॥

लखीए अलक्ख ॥
तकीए सुभच्छ ॥
धायो बिराध ॥
बंकड़यो बिबाद ॥३०१॥
लखीअं अवद्ध ॥
संबहयो सनद्ध ॥
संमले हथिआर ॥
उरड़े लुझार ॥३०२॥
चिकड़ी चावंड ॥
संमुहे सावंत ॥
सजीए सुबाह ॥
अच्छरो उछाह ॥३०३॥
पक्खरे पवंग ॥
मोहले मतंग ॥
चावडी चिंकार ॥
उझरे लुझार ॥३०४॥
सिंधरे संधूर ॥
बजए तंदूर ॥
सजीए सुबाह ॥

अच्छरो उछाह ॥३०५॥
बिझुड़े उझाड़ ॥
संमले सुमार ॥
हाहले हंकार ॥
अंकड़े अंगार ॥३०६॥
संमले लुझार ॥
छुटके बिसियार ॥
हाहलेहं बीर ॥
संघरे सु बीर ॥३०७॥

अनूप नराज छंद ॥

गजं गजे हयं हले हला हली हलो हलं ॥
बबज सिंधरे सुरं छुटंत बाण केवलं ॥
पपक पक्खरे तुरे भभक्ख घाइ निरमलं ॥
पलुथ लुथ बिथरी अमथ जुथ उथलं ॥३०८॥
अजुथ लुथ बिथरी मिलंत हथ बक्खयं ॥
अघुम घाइ घुम ए बबक बीर दुद्धरं ॥
किलं करंत खपरी पिपंत स्रोण पाणयं ॥
हहक भैरवं स्रुतं उठंत जुद्ध ज्वालयं ॥३०९॥
फिकंत फिंकती फिरं रड़ंत गिद्ध ब्रिद्धणं ॥
डहक डामरी उठं बकार बीर बैतलं ॥
खहत खग खत्रीयं खिमंत धार उजलं ॥
घणंक जाण सावलं लसंत बेग बिजुलं ॥३१०॥
पिपंत स्रोण खपरी भखंत मास चावडं ॥
हकार वीर संभिड़ै लुझार धार दुद्धरं ॥
पुकार मार कै परे सहंत अंग भारयं ॥
बिहार देव मंडलं कटंत खग धारयं ॥३११॥
प्रचार वार पैज कै खुमारि घाइ घूमही ॥
तपी मनो अधो मुखं सु धूम आग धूम ही ॥
तुटंत अंग भंगयं बहंत असत्र धारयं ॥
उठंत छिच्छ इच्छयं पिपंत मास हारयं ॥३१२॥
अघोर घाइ अघए कटे परे सु प्रासनं ॥
घुमंत जाण रावलं लगे सु सिद्ध आसणं ॥
परंत अंग भंग हुइ बकंत मार मारयं ॥
बदंत जाण बंदीयं सुक्रित क्रित अपारयं ॥३१३॥
बजंत ताल तंबूरं बिसेख बीन बेणयं ॥
म्रिदंग झालना फिरं सनाइ भेर भै करं ॥
उठंत नादि निरमलं तुटंत ताल तथियं ॥
बदंत कित बंदीअं कबिंद्र काबय कथियं ॥३१४॥
ढलंत ढाल मालयं खहंत खग खेतयं ॥
चलंत बाण तीछुणं अनंत अंत कंकयं ॥
सिमटि साग सुंकड़ं सटक सूल सेलयं ॥
रुलंत रुंड मुंडयं झलंत झाल अझलं ॥३१५॥
बचित्र चित्रतं सरं बहंत दारुणं रणं ॥
ढलंत ढाल अढलं ढुलंत चारु चामरं ॥
दलंत निरदलो दलं पपात भूतलं दितं ॥
उठंत गदि सदयं निनदि नदि दुभरं ॥३१६॥
भरंत पत्र चउसठी किलंक खेचरी करं ॥
फिरंत हूर पूरयं बरंत दुद्धरं नरं ॥
सनद्ध बद्ध गोधयं सु सोभ अंगुलं त्रिणं ॥

डकंत डाकणी भ्रमं भखंत आमिखं रणं ॥३१७॥
किलंक देवीयं करंड हक डामरू सुरं ॥
कड़क कतीयं उठं परंत धूर पक्खरं ॥
बबजि सिंधरे सुरं न्रिघात सूल सैहथीयं ॥
भभजि कातरो रणं निलज भज भू भरं ॥३१८॥
सु ससत्र असत्र संनिधं जुझंत जोधणो जुद्धं ॥
अरुझ पंक लजणं करंत द्रोह केवलं ॥
परंत अंग भंग हुऐ उठंत मास करदमं ॥
खिलंत जाणु कदवं सु मझ कान्रह गोपिकं ॥३१९॥
डहक डउर डाकणं झलंत झाल रोसुरं ॥
निनद नाद नाफिरं बजंत भेरि भीखणं ॥
घुरंत घोर दुंदभी करंत कानरे सुरं ॥
करंत झाझरो झड़ं बजंत बासुरी बरं ॥३२०॥
नचंत बाज तीछणं चलंत चाचरी क्रितं ॥
लिखंत लीक उरबीअं सुभंत कुंडली करं ॥
उडंत धूर भूरियं खुरीन निरदली नभं ॥
परंत भूर भउरणं सु भउर ठउर जिउ जलं ॥३२१॥
भजंत धीर बीरणं चलंत मान प्रान लै ॥
दलंत पंत दंतीयं भजंत हार मान कै ॥
मिलंत दात घास लै ररच्छ सबद उचरं ॥
बिराध दानवं जुझयो सु हथि राम निरमलं ॥३२२॥
इति स्री बचित्र नाटके रामवतार कथा बिराध दानव बधह ॥

अथ बन मो प्रवेस कथनं ॥

दोहरा ॥

इह बिधि मार बिराध कउ बन मे धसे निसंग ॥
सु कबि सयाम इह बिधि कहियो रघुबर जुद्ध प्रसंग ॥३२३॥

सुखदा छंद ॥

रिख अगसत धाम ॥
गए राज राम ॥
धुज धरम धाम ॥
सीआ सहित बाम ॥३२४॥
लखि राम बीर ॥
रिख दीन तीर ॥
रिप सरब चीर ॥
हरि सरब पीर ॥३२५॥
रिखि बिदा कीन ॥
आसिखा दीन ॥
दुत राम चीन ॥
मुनि मन प्रबीन ॥३२६॥
प्रभ भ्रात संगि ॥
सीअ संग सुरंग ॥
तजि चिंत अंग ॥
धस बन निसंग ॥३२७॥
धरि बान पान ॥
कटि कसि क्रिपान ॥

भुज बर अजान ॥
चल तीरथ नान ॥३२८॥
गोदावरि तीर ॥
गए सहित बीर ॥
तज राम चीर ॥
कीअ सुच सरीर ॥३२९॥
लखि राम रूप ॥
अतिभुत अनूप ॥
जह हुती सूप ॥
तह गए भूप ॥३३०॥
कही ताहि धाति ॥
सुनि सूप बाति ॥
दुऐ अतिथ नात ॥
लहि अनूप गात ॥३३१॥

सुंदरी छंद ॥

सूपनखा इह भाति सुनी जब ॥
धाइ चली अबिलंब त्रिया तब ॥
काम सरूप कलेवर जानै ॥
रूप अनूप तिहूं पुर मानै ॥३३२॥
धाइ कहयो रघुराइ भए तिह ॥
जैस त्रिलाज कहै न कोऊ किह ॥
हउ अटकी तुमरी छबि के बर ॥
रंग रंगी रंगए द्रिग दूपर ॥३३३॥
राम बाच ॥

सुंदरी छंद ॥

जाह तहा जह भ्राति हमारे ॥
वै रिझहै लख नैन तिहारे ॥
संग सीआ अविलोक क्रिसोदर ॥
कैसे कै राख सको तुम कउ घरि ॥३३४॥
मात पिता कह मोह तजयो मन ॥
संग फिरी हमरे बन ही बन ॥
ताहि तजौ कस कै सुनि सुंदर ॥
जाहु तहा जहा भ्रात क्रिसोदरि ॥३३५॥
जात भई सुन बैन त्रिया तह ॥
बैठ हुते रणधीर जती जह ॥
सो न बरै अति रोस भरी तब ॥
नाक कटाइ गई ग्रिह को सभ ॥३३६॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके राम अवतार कथा सूपनखा को नाक काटबो धयाइ समापतम सतु सुभम सतु ॥5॥*

अथ खरदूखन दईत जुद्ध कथनं ॥

सुंदरी छंद ॥

रावन तीर रुरोत भई जब ॥
रोस भरे दनु बंस बली सभ ॥

लंकस धीर बजीर बुलाए ॥
दूखन औ खर दईत पठाए ॥३३७॥
साज सनाह सुबाह दुरं गत ॥
बाजत बाज चले गज गजत ॥
मार ही मार दसो दिस कूके ॥
सावन की घट जयों घुर ढूके ॥३३८॥
गजत है रणबीर महा मन ॥
तजत हैं नही भूमि अयोधन ॥
छाजत है चख स्रोणत सो सर ॥
नादि करैं किलकार भयंकर ॥३३९॥

तारका छंद ॥

रनि राज कुमार बिरचहिगे ॥
सर सेल सरासन नचहिगे ॥
सु बिरुद्ध अवद्धि सु गाजहिगे ॥
रण रंगहि राम बिराजहिगे ॥३४०॥
सर ओघ प्रओघ प्रहारैगे ॥
रणि रंग अभीत बिहारैगे ॥
सर सूल सनाहरि छुटहिगे ॥
दित पुत्र परा पर लुटहिगे ॥३४१॥
सर संक असंकत बाहहिगे ॥
बिनु भीत भया दल दाहहिगे ॥
छिति लुथ बिलुथ बिथारहिगे ॥
तरु सणै समूल उपारहिगे ॥३४२॥
नव नाद नफीरन बाजत भे ॥
गल गजि हठी रण रंग फिरे ॥
लगि बान सनाह दुसार कढे ॥
सूअ तच्छक के जनु रूप मढे ॥३४३॥
बिनु संक सनाहरि झारत है ॥
रणबीर नवीर प्रचारत है ॥
सर सुद्ध सिला सित छोरत है ॥
जीअ रोस हलाहल घोरत है ॥३४४॥
रन धीर अयोधनु लुझत हैं ॥
रद पीस भलो कर जुझत हैं ॥
रण देव अदेव निहारत हैं ॥
जय सद निनदि पुकारत हैं ॥३४५॥
गण गिद्धण ब्रिद्ध रड़ंत नभं ॥
किलकंत सु डाकण उच सुरं ॥
भ्रम छाड भकारत भूत भूअं ॥
रण रंग बिहारत भ्रात दूअं ॥३४६॥
खरदूखण मार बिहाइ दए ॥
जय सद निनद बिहद भए ॥
सुर फूलन की बरखा बरखे ॥
रण धीर अधीर दोऊ परखे ॥३४७॥

◄ इति स्री बचित्र नाटके राम अवतार कथा खर दूखण दईत बधह धिआइ समापतम सतु ॥6॥

अथ सीता हरन कथनं ॥

मनोहर छंद ॥

रावण नीच मरीच हूं के ग्रिह बीच गए बद्ध बीर सुनैहै ॥
बीसहूं बाहि हथिआर गहे रिस मार मनै दस सीस धुनै है ॥
नाक कटयो जिन सूपनखा कहतउ तिह को दुख दोख लगै है ॥
रावल को बनु कै पल मो छल कै तिह की घरनी धरि लयै है ॥३४८॥
मरीच बाच ॥

मनोहर छंद ॥

नाथ अनाथ सनाथ कीयो करि कै अति मोर क्रिपा कह आए ॥
भउन भंडार अटी बिकटी प्रभ आज सभै घर बार सुहाए ॥
द्वै करि जोर करउ बिनती सुनि कै न्रिपनाथ बुरो मत मानो ॥
स्री रघुबीर सही अवतार तिनै तुम मानस कै न पछानो ॥२४९॥
रोस भरयो सभ अंग जरयो मुख रत करयो जुग नैन तचाए ॥
तै न लगै हमरे सठ बोलन मानस दुऐ अवतार गनाए ॥
मात की एक ही बात कहे तजि तात घ्रिणा बनबास निकारे ॥
ते दोऊ दीन अधीन जुगीया कस कै भिरहैं संग आन हमारे ॥३५०॥
जउ नही जात तहा कह तै सठि तोर जटान को जूट पटै हौ ॥
कंचन कोट के ऊपर ते डर तोहि नदीसर बीच डुबै हौ ॥
चित चिरात बसात कछू न रिसात चलयो मुन घात पछानी ॥
रावन नीच की मीच अधोगत राघव पान पुरी सुरि मानी ॥३५१॥
कंचन को हरना बन के रघुबीर बली जह थो तह आयो ॥
रावन ह्वै उत के जुगीआ सीअ लैन चलयो जनु मीच चलायो ॥
सीअ बिलोक कुरंक प्रभा कह मोहि रही प्रभ तीर उचारी ॥
आन दिजै हम कउ म्रिग वासुन स्री अवधेस मुकंद मुरारी ॥३५२॥
राम बाच ॥
सीअ म्रिगा कहूं कंचन को नहि कान सुनयो बिधि नै न बनायो ॥
बीस बिसवे छल दानव को बन मै जिह आन तुमै डहकायो ॥
पिआरी को आइस मेट सकै न बिलोक सीआ कहु आतुर भारी ॥
बाध निखंग चले कटि सौ कहि भ्रात ईहा करिजै रखवारी ॥३५३॥
ओट थकयो करि कोटि निसाचर स्री रघुबीर निदान संघारयो ॥
हे लहु बीर उबार लै मोकह यौ कहि कै पुनि राम पुकारयो ॥
जानकी बोल कुबोल सुनयो तब ही तिह ओर सुमित्र पठायो ॥
रेख कमान की काढ महाबल जात भए इत रावन आयो ॥३५४॥
भेख अलेख उचार कै रावण जात भए सीअ के ढिग यौ ॥
अविलोक धनी धनवान बडो तिह जाइ मिलै मग मो ठग जयो ॥
कछु देहु भिछा म्रिग नैन हमै इह रेख मिटाइ हमै अब ही ॥
बिनु रेख भई अविलोक लई हरि सीअ उडयो नभि कउ तब ही ॥३५५॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक राम वतार कथा सीता हरन धिआइ समापतम ॥*

अथ सीता खोजबो कथनं ॥

तोटक छंद ॥

रघुनाथ हरी सीअ हेर मनं ॥
गहि बान सिला सित सजि धनं ॥
चहूं ओर सुधार निहार फिरे ॥

छित ऊपर स्री रघुराज गिरे ॥३५६॥
लघु बीर उठाइ सु अंक भरे ॥
मुख पोछ तबै बचना उचरे ॥
कस अधीर परे प्रभ धीर धरो ॥
सीअ जाइ कहा तिह सोध करो ॥३५७॥
उठ ठाढि भए फिरि भूम गिरे ॥
पहरेकक लउ फिर प्रान फिरे ॥
तन चेत सुचेत उठे हरि यौं ॥
रण मंडल मद्धि गिरयो भट जयों ॥३५८॥
छहूं ओर पुकार बकार थके ॥
लघु भ्रात बहु भाति झथे ॥
उठ कै पुन प्रात इसनान गए ॥
जल जंत सभै जरि छारि भए ॥३५९॥
बिरही जिह ओर सु दिसट धरै ॥
फल फूल पलास अकास जरै ॥
कर सौ धर जउन छुअंत भई ॥
कच बासन जयों पक फूट गई ॥३६०॥
जिह भूम थली पर राम फिरे ॥
दव जयों जल पात पलास गिरे ॥
टुट आसू आरण नैन झरी ॥
मनो तात तवा पर बूंद परी ॥३६१॥
तन राघव भेट समीर जरी ॥
तज धीर सरोवर साझ दुरी ॥
नहि तत्र थली सत पत्र रहे ॥
जल जंत परत्रिन पत्र दहे ॥३६२॥
इत ढूंढ बने रघुनाथ फिरे ॥
उत रावन आन जटायु घिरे ॥
रण छोर हठी पग दुऐ न भजयो ॥
उड पच्छ गए पै न पच्छ तजयो ॥३६३॥

गीता मालती छंद ॥

पछराज रावन मारि कै रघुराज सीतहि लै गयो ॥
नभि ओर खोर निहार कै सु जटाउ सीअ संदेस दयो ॥
तब जान राम गए बली सीअ सत रावन ही हरी ॥
हनवंत मारग मो मिले तब मित्रता ता सों करी ॥३६४॥
तिन आन स्री रघुराज के कपिराज पाइन डारयो ॥
तिन बैठ गैठ इकैठ ह्वै इह भाति मंत्र बिचारयो ॥
कपि बीर धीर सधीर के भट मंत्र बीर बिचार कै ॥
अपनाइ सुग्रिव कउ चलु कपिराज बाल संघार कै ॥३६५॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बाल बधह धिआइ समापतम ॥8॥*

अथ हनूमान सोध को पठैबो ॥

गीता मालती छंद ॥

दल बाट चार दिसा पठयो हनवंत लंक पठै दए ॥
लै मुद्रका लख बारिधै जह सी हुती तह जात भे ॥

पुर जारि अच्छ कुमार छै बन टारि कै फिर आइयो ॥
क्रित चार जो अमरारि को सभ राम तीर जताइयो ॥३६६ ॥
दल जोर कोर करोर लै बड घोर तोर सभै चले ॥
रामचंद्र सुग्रीव लछमन अउर सूर भले भले ॥
जामवंत सुखैन नील हणवंत अंगद केसरी ॥
कपि पूत जूथ पजूथ लै उमडे चहूं दिस कै झरी ॥३६७ ॥
पाटि बारिध राज कउ करि बाटि लाघ गए जबै ॥
दूत दईतन के हुते तब दउर रावन पै गए ॥
रन साज बाज सभै करो इक बेनती मन मानीऐ ॥
गड़ लंक बंक संभारीऐ रघुबीर आगम जानीऐ ॥३६८ ॥
धूम्र अच्छ सु जाबमाल बुलाइ वीर पठै दए ॥
सोर कोर क्रोर कै जहा राम थे तहा जात भे ॥
रोस कै हनवंत था पग रोप पाव प्रहारीयं ॥
जूझि भूमि गिरयो बली सुर लोक माझि बिहारीयं ॥३६९ ॥
जाबमाल भिरे कछू पुन मारि ऐसे ई कै लए ॥
भाज कीन प्रवेस लंक संदेस रावन सो दए ॥
धूमराछ सु जाबमाल दुहहूं राघव जू हरिओ ॥
है कछू प्रभु के हीए सुभ मंत्र आवत सो करो ॥३७० ॥
पेख तीर अकंपनै दल संगि दै सु पठै दयो ॥
भाति भाति बजे बजंत्र निनद सद पुरी भयो ॥
सुर राइ आदि प्रहसत ते इह भाति मंत्र बिचारियो ॥
सीअ दे मिलो रघुराज को कस रोस राव संभारियो ॥३७१ ॥

छपय छंद ॥

झल हलंत तरवार बजत बाजंत्र महा धुन ॥
खड़ हड़ंत खह खोल धयान तजि परत चवध मुन ॥
इक इक लै चलै इक तन इक अरुझै ॥
अंध धुंध पर गई हथि अर मुक्ख न सुझै ॥
सुमुहे सूर सावंत सभ फउज राज अंगद समर ॥
जै सद निनद बिहद हूअ धनु जंपत सुरपुर अमर ॥३७२ ॥
इत अंगद युवराज दुतीअ दिस बीर अकंपन ॥
करत ब्रिसट सर धार तजत नही नैक अयोधन ॥
हथ बथ मिल गई लुथ बिथरी अहाड़ं ॥
घुमे घाइ अघाइ बीर बंकड़े बबाड़ं ॥
पिक्खत बैठ बिबाण बर धंन धंन जंपत अमर ॥
भव भूत भविक्खय भवान मो अब लग लखयो न अस समर ॥३७३ ॥
कहूं मुंड पिखीअह कहूं भक रुंड परे धर ॥
कितही जाघ तरफंत कहूं उछरंत सु छब कर ॥
भरत पत्र खेचरं कहूं चावंड चिकारैं ॥
किलकत कतह मसान कहूं भैरव भभकारैं ॥
इह भाति बिजै कपि की भई हणयो असुर रावण तणा ॥
भै दग अदग भगे हठी गहि गहि कर दातन त्रिणा ॥३७४ ॥
उतै दूत रावणै जाइ हत बीर सुणायो ॥
इत कपिपत अरु राम दूत अंगदहि पठायो ॥
कही कथ तिह सथ गथ करि तथ सुनायो ॥
मिलहु देहु जानकी काल नातर तुहि आयो ॥
पग भेट चलत भयो बाल सुत प्रिसट पान रघुबर धरे ॥
भर अंक पुलकत न सपजियो भात अनिक आसिख करे ॥३७५ ॥
प्रति उतर संबाद ॥

छपै छंद ॥

देह सीआ दसकंध छाहि नही देखन पैहो ॥
लंक छीन लीजीऐ लंक लखि जीत न जैहो ॥
क्रुद्ध बिखै जिन घोरु पिख कस जुद्धु मचै है ॥
राम सहित कपि कटक आज म्रिग सयार खवै है ॥
जिन कर सु गरबु सुण मूड़ मत गरब गवाइ घनेर घर ॥
बस करे सरब घर गरब हम ए किन महि द्वै दीन नर ॥३७६॥
रावन बाच अंगद सो ॥

छपै छंद ॥

अगन पाक कह करै पवन मुर बार बुहारै ॥
चवर चंद्रमा धरै सूर छत्रहि सिर ढारै ॥
मद लछमी पिआवंत बेद मुख ब्रहमु उचारत ॥
बरन बार नित भरे और कुलुदेव जुहारत ॥
निज कहति सु बल दानव प्रबल देत धनुदि जछ मोहि कर ॥
वे जुद्ध जीत ते जाहिगे कहा दोइ ते दीन नर ॥३७७॥
कहि हारयो कपि कोटि दईत पति एक न मानी ॥
उठत पाव रुपियो सभा मधि सो अभिमानी ॥
थके सकल असुरार पाव किनहूं न उचकयो ॥
गिरे धरन मुरछाइ बिमन दानव दल थकयो ॥
लै चलयो बभीछन भ्रात तिह बाल पुत्र धूसर बरन ॥
भट हटक बिकट तिह ना सके चलि आयो जित राम रन ॥३७८॥
कहि बुलयो लंकेस ताहि प्रभ राजीव लोचन ॥
कुटल अलक मुख छके सकल संतन दुख मोचन ॥
कुपै सरब कपिराज बिजै पहली रण चक्खी ॥
फिरै लंक गड़ि घेरि दिसा दच्छणी परक्खी ॥
प्रभ करै बभीछन लंकपति सुणी बाति रावण घरणि ॥
सुद्धि सत तबि बिसरत भई गिरी धरण पर हुऐ बिमण ॥३७९॥
मदोदरी बाच ॥

उटंङण छंद ॥

सूरबीरा सजे घोर बाजे बजे भाज कंता सुणे राम आए ॥
बाल मारयो बली सिंध पाटयो जिनै ताहि सौ बैरि कैसे रचाए ॥
बयाध जीतयो जिनै जंभ मारयो उनै राम अउतार सोई सुहाए ॥
दे मिलो जानकी बात है सिआन की चाम के दाम काहे चलाए ॥३८०॥
रावण बाच ॥
बयूह सैना सजो घोर बाजे बजो कोटि जोधा गजो आन नेरे ॥
साज संजोअ संबूह सैना सभै आज मारो तरै द्रिसटि तेरे ॥
इंद्र जीतो करो जच्छ रीतो धनं नारि सीता बरं जीत जुद्धै ॥
सुरग पाताल आकास जुआला जरै बाचि है राम का मोर क्रुद्धै ॥३८१॥
मदोदरी बाच ॥
तारका जात ही घात कीनी जिनै अउर सुबाह मारीच मारे ॥
बयाध बद्धयो खरंदूखणं खेत थै एक ही बाण सों बाल मारे ॥
धुम्र अच्छाद अउ जाबुमाली बली प्राण हीणं करयो जुद्ध जै कै ॥
मारिहैं तोहि यौ सयार के सिंघ जयो लेहिगे लंक को डंक दै कै ॥३८२॥
रावण बाच ॥
चउर चंद्रं करं छत्र सूरं धरं बेद ब्रहमा ररं दुआर मेरे ॥
पाक पावक करं नीर बरणं भरं जच्छ बिदिआधरं कीन चेरे ॥

अरब खरबं पुरं चरब सरबं करे देखु कैसे करौ बीर खेतं ॥
चिंक है चावडा फिंक है फिकरी नाच है बीर बैताल प्रेतं ॥३८३॥
मदोदरी बाच ॥
तास नेजे ढुलै घोर बाजे बजै राम लीने दलै आन ढूके ॥
बानरी पूत चिंकार अपारं करं मार मारं चहूं ओर कूके ॥
भीम भेरी बजै जंग जोधा गजै बान चापै चलै नाहि जउ लौ ॥
बात को मानीऐ घातु पहिचानीऐ रावरी देह की सात तउ लौ ॥३८४॥
घाट घाटै रुकौ बाट बाटै तुपो ऐंठ बैठे कहा राम आए ॥
खोर हराम हरीफ की आंख तै चाम के जात कैसे चलाए ॥
होइगो खुआर बिसीआर खाना तुरा बानरी पूत जउ लौ न गजि है ॥
लंक को छाडि कै कोटि के फाध कै आसुरी पूत लै घासि भजि है ॥३८५॥
रावण बाच ॥
बावरी राड किआ भाडि बातै बकै रंक से राम का छोड रासा ॥
काढहो बासि दै बान बाजीगरी देखिहो आज ता को तमासा ॥
बीस बाहे धरं सीस दसयं सिरं सैण संबूह है संगि मेरे ॥
भाज जै है कहा बाटि पैहैं ऊहा मारिहौ बाज जैसे बटेरे ॥३८६॥
एक एकं हिरैं झूम झूमं मरैं आपु आपं गिरैं हाकु मारे ॥
लाग जैहउ तहा भाज जैहै जहा फूल जैहै कहा तै उबारे ॥
साज बाजे सभै आज लैहउं तिनै राज कैसो करै काज मो सो ॥
बानरं छै करो राम लच्छै हरो जीत हौ होड तउ तान तो सो ॥३८७॥
कोटि बातै गुनी एक कै ना सुनी कोपि मुंडी धुनी पुत पठै ॥
एक नारात देवात दूजो बली भूम कंपी रणंबीर उठै ॥
सार भारं परे धार धारं बजी क्रोह कै लोह की छिट छुटैं ॥
रुंड धुकधुक परै घाइ भकभक करै बिथरी जुथ सो लुथ लुटैं ॥३८८॥
पत्र जुगण भरै सद देवी करै नद भैरो ररै गीत गावै ॥
भूत औ प्रेत बैताल बीरं बली मास अहार तारी बजावै ॥
जच्छ गंध्रब अउ सरब बिदिआधरं मद्धि आकास भयो सद देवं ॥
लुथ बिदुथरी हूह कूहं भरी मचीयं जुद्ध अनूप अतेवं ॥३८९॥

संगीत छपै छंद ॥

कागड़दी कुपयो कपि कटक बागड़दी बाजन रण बजिय ॥
तागड़दी तेग झलहली गागड़दी जोधा गल गजिय ॥
सागड़दी सूर संमुहे नागड़दी नारद मुनि नचयो ॥
बागड़दी बीर बैताल आगड़दी आरण रंग रचयो ॥
संसागड़दी सुभट नचे समर फागड़दी फुंक फणीअर करैं ॥
संसागड़दी समटै सुंकड़ै फणपति फणि फिरि फिरि धरैं ॥३९०॥
फागड़दी फुंक फिंकरी रागड़दी रण गिद्ध रड़कै ॥
लागड़दी लुथ बिथुरी भागड़दी भट घाइ भभकै ॥
बागड़दी बरक्खत बाण झागड़दी झलमलत क्रिपाणं ॥
गागड़दी गज संजरै कागड़दी कच्छे किंकाणं ॥
बंबागड़दी बहत बीरन सिरन तागड़दी तमकि तेगं कड़ीअ ॥
झंझागड़दी झड़क दै झड़ समै झलमल झुकि बिजुल झड़ीअ ॥३९१॥
नागड़दी नारातक गिरत दागड़दी देवातक धायो ॥
जागड़दी जुद्ध करि तुमल सागड़दी सुरलोक सिधायो ॥
दागड़दी देव रहसंत आगड़दी आसुरण रण सोगं ॥
सागड़दी सिद्ध सर संत नागड़दी नाचत तजि जोगं ॥
खंखागड़दी खयाह भए प्रापति खल पागड़दी पुहप डारत अमर ॥
जंजागड़दी सकल जै जै जपै सागड़दी सुरपुरहि नार नर ॥३९२॥
रागड़दी रावणहि सुनयो सागड़दी दोऊ सुत रण जुझे ॥
बागड़दी बीर बहु गिरे आगड़दी आहवहि अरुझे ॥

लागड़दी लुथ बिथुरी चागड़दी चावंड चिंकारं ॥
नागड़दी नद भए गद कागड़दी काली किलकारं ॥
भंभागड़दी भयंकर जुद्ध भयो जागड़दी जूह जुगण जुरीअ ॥
कंकागड़दी किलकत कुहर कर पागड़दी पत्र स्रोणत भरीअ ॥३९३॥

◀ *इति देवातक नरातक बधहि धिआइ समापतम सतु ॥9॥*

अथ प्रहसत जुद्ध कथनं ॥

संगीत छपै छंद ॥

पागड़दी प्रहसत पठियो दागड़दी दैकै दल अनगन ॥
कागड़दी कंप भूअ उठी बागड़दी बाजीय खुरीअन तन ॥
नागड़दी नील तिह झिणयो भागड़दी गहि भूमि पछाड़ीअ ॥
सागड़दी समर हहकार दागड़दी दानव दल भारीअ ॥
घंघागड़दी घाइ भकभक करत रागड़दी रुहिर रण रंग बहि ॥
जंजागड़दी जुयह जुगण जपै कागड़दी काक कर करककह ॥३९४॥
फागड़दी प्रहसत जुझंत लागड़दी लै चलयो अप दल ॥
भागड़दी भूमि भड़हड़ी कागड़दी कंपी दोई जल थल ॥
नागड़दी नाद निह नद भागड़दी रण भेरि भयंकर ॥
सागड़दी साग झलहलत चागड़दी चमकंत चलत सर ॥
खंखागड़दी खेति खड़ग खिमकत खहत चागड़दी चटक चिनगैं कढै ॥
ठंठागड़दी ठाट ठट कर मनो ठागड़दी ठणक ठठिअर गढै ॥३९५॥
ढागड़दी ढाल उछलहि बागड़दी रण बीर बबकहि ॥
आगड़दी इक लै चलैं इक कहु इक उचकहि ॥
तागड़दी ताल तंबूरं बागड़दी रण बीन सु बजै ॥
सागड़दी संख के सबद गागड़दी गैवर गल गजै ॥
धंधागड़दी धरणि धड़ धुकि परत चागड़दी चकत चित महि अमर ॥
पंपागड़दी पुहप बरखा करत जागड़दी जच्छ गंध्रब बर ॥३९६॥
झागड़दी झुझ भट गिरैं मागड़दी मुख मार उचारै ॥
सागड़दी संज पंजरे घागड़दी घणीअर जणु कारै ॥
तागड़दी तीर बरखंत गागड़दी गहि गदा गरिसटं ॥
मागड़दी मंत्र मुख जपै आगड़दी अच्छर बर इसटं ॥
संसागड़दी सदा सिव सिमर कर जागड़दी जूझ जोधा मरत ॥
संसागड़दी सुभट सनमुख गिरत आगड़दी अपच्छरन कह बरत ॥३९७॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

इतै उचरे राम लंकेस बैणं ॥
उतै देव देखै चड़े रथ गैणं ॥
कहो एक एकं अनेकं प्रकारं ॥
मिले जुद्ध जेते समंतं लुझारं ॥३९८॥
बभीछण बाच राम सो ॥
धुनं मंडलाकार जा को बिराजै ॥
सिरं जैत पत्रं सितं छत्र छाजै ॥
रथं बिसटतं बयाघ्र चरमं अभीतं ॥
तिसै नाथ जानो हठी इंद्र जीतं ॥३९९॥
नहै पिंग बाजी रथं जेन सोभैं ॥
महा काइ पेखे सभै देव छोभैं ॥

हरे सरब गरबं धनं पाल देवं ॥
महाकाइ नामा महाबीर जेवं ॥४००॥
लगे मयूर बरणं रथं जेन बाजी ॥
बकै मार मारं तजै बाण राजी ॥
महा जुद्ध को कर महोदर बखानो ॥
तिसै जुद्ध करता बडो राम जानो ॥४०१॥
लगे मुखकं बरण बाजी रथेसं ॥
हसै पउन के गउन को चार देसं ॥
धरे बाण पाणं किधो काल रूपं ॥
तिसै राम जानो सही दईत भूपं ॥४०२॥
फिरै मोर पुच्छं ढुरै चउर चारं ॥
रड़ै कित बंदी अनंतं अपारं ॥
रथं सुवरण की किंकणी चार सोहै ॥
लखे देव कंनिआ महा तेज मोहै ॥४०३॥
छकै मद्ध जा की धुजा सारदूलं ॥
इहै दईत राजं दुरं द्रोह मूलं ॥
लसै क्रीट सीसं कसै चंद्र भा को ॥
रमा नाथ चीनो दसं ग्रीव ता को ॥४०४॥
दुहूं ओर बजे बजंत्रं अपारं ॥
मचे सूरबीरं महा ससत्र धारं ॥
करै अत्र पातं निपातंत सूरं ॥
उठे मद्ध जुद्धं कमद्धं करूरं ॥४०५॥
गिरै रुंड मुंडं भसुंडं अपारं ॥
रुले अंग भंगं समंतं लुझारं ॥
परी कूह जूहं उठे गद सदं ॥
जके सूरबीरं छके जाण मदं ॥४०६॥
गिरे झूम भूमं अघूमेति घायं ॥
उठे गद सदं चड़े चउप चायं ॥
जुझै बीर एकं अनेकं प्रकारं ॥
कटे अंग जंगं रटैं मार मारं ॥४०७॥
छुटैं बाण पाणं उठैं गद सदं ॥
रुले झूम भूमं सु बीरं बिहदं ॥
नचे जंग रंगं ततथई ततथियं ॥
छुटै बान राजी फिरै छूछ हथियं ॥४०८॥
गिरे अंकुसं बारणं बीर खेतं ॥
नचे कंध हीणं कबंधं अचेतं ॥
भरैं खेचरी पत्र चउसठ चारी ॥
चले सरब आनंदि हुऐ मासहारी ॥४०९॥
गिरे बंकुड़े बीर बाजी सुदेसं ॥
परे पीलवानं छुटे चार केसं ॥
करै पैज वारं प्रचारंत बीरं ॥
उठै स्रोणधारं अपारं हमीरं ॥४१०॥
छुटैं चारि चित्रं बचित्रंत बाणं ॥
चले बैठ कै सूरबीरं बिमाणं ॥
गिरे बारुणं बिथरी लुथ जुथं ॥
खुले सुरग दुआरं गए बीर अछुथं ॥४११॥

दोहरा ॥

इह बिधि हत सैना भई रावण राम बिरुद्ध ॥
लंक बंक प्रापत भयो दससिर महा सक्रुद्ध ॥४१२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तबै मुकले दूत लंकेस अपं ॥
मनं बच करमं सिवं जाप जपं ॥
सभै मंत्र हीणं समै अंत कालं ॥
भजो एक चितं सु कालं क्रिपालं ॥४१३॥
रथी पाइकं दंत पंती अनंतं ॥
चले पक्खरे बाज राजं सु भंतं ॥
धसे नासका स्रोण मझं सु बीरं ॥
बजे कान्रहरे डंक डउरू नफीरं ॥४१४॥
बजै लाग बादं निनादंति वीरं ॥
उठै गद सदं निनदं नफीरं ॥
भए आकुलं बिआकलं छोरि भागिअं ॥
बली कुंभकानं तऊ नाहि जागिअं ॥४१५॥
चले छाडि कै आस पासं निरासं ॥
भए भ्रात के जागबे ते उदासं ॥
तबै देवकंनिआ करियो गीत गानं ॥
उठयो देव दोखी गदा लीस पानं ॥४१६॥
करो लंक देसं प्रवेसंति सूरं ॥
बली बीस बाहं महा ससत्र पूरं ॥
कारै लाग मंत्रं कुमंत्रं बिचारं ॥
इतै उचरे बैन भ्रातं लुझारं ॥४१७॥
जलं गागरी सपत साहंस्र पूरं ॥
मुखं पुच्छ लयो कुंभकानं करूरं ॥
कीयो मासहारं महा मदय पानं ॥
उठयो लै गदा को भरयो वीर मानं ॥४१८॥
भजी बानरी पेख सैना अपारं ॥
त्रसे जूथ पै जूथ जोधा जुझारं ॥
उठै गद सदं निनदंति वीरं ॥
फिरै रुंड मुंडं तनं तच्छ तीरं ॥४१९॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

गिरै मुंड तुंडं भसुंडं गजानं ॥
फिरै रुंड मुंडं सु झुंडं निसानं ॥
रड़ै कंक बंकं ससंकंत जोधं ॥
उठी कूह जूहं मिले सैण क्रोधं ॥४२०॥
झिमी तेग तेजं सरोसं प्रहारं ॥
खिमी दामनी जाणु भादो मझारं ॥
हसे कंक बंकं कसे सूरवीरं ॥
ढली ढाल मालं सुभे तच्छ तीरं ॥४२१॥

बिराज छंद ॥

हक देबी करं ॥
सद भैरो ररं ॥
चावडी चिंकरं ॥
डाकणी डिंकरं ॥४२२॥
पत्र जुगण भरं ॥
लुथ बिथुथरं ॥
संमुहे संघरं ॥

हूह कूहं भरं ॥४२३॥
अच्छरी उछरं ॥
सिंधुरै सिंधरं ॥
मार मारुचरं ॥
बज गजे सुरं ॥४२४॥
उझरे लुझरं ॥
झुमरे जुझरं ॥
बजीयं डंमरं ॥
तालणो तुंबरं ॥४२५॥

रसावल छंद ॥

परी मार मारं ॥
मंडे ससत्र धारं ॥
रटै मार मारं ॥
तुटै खग धारं ॥४२६॥
उठै छिच्छ अपारं ॥
बहै स्रोण धारं ॥
हसै मासहारं ॥
पीऐ स्रोण सयारं ॥४२७॥
गिरे चउर चारं ॥
भजे एक हारं ॥
रटै एक मारं ॥
गिरे सूर सुआरं ॥४२८॥
चले एक सुआरं ॥
परे एक बारं ॥
बडो जुद्ध पारं ॥
निकारे हथयारं ॥४२९॥
करै एक वारं ॥
लसै खग धारं ॥
उठै अंगिआरं ॥
लखै बयोम चारं ॥४३०॥
सु पैजं पचारं ॥
मंडे असत्र धारं ॥
करों मार मारं ॥
इके कंप चारं ॥४३१॥
महा बीर जुटैं ॥
सरं संज फुटैं ॥
तड़ंकार छुटैं ॥
झड़ंकार उठैं ॥४३२॥
सरंधार बुठैं ॥
जुगं जुद्ध जुठैं ॥
रणं रोसु रुठैं ॥
इकं एक कुठैं ॥४३३॥
ढली ढाल उठैं ॥
अरं फउज फुटैं ॥
कि नेजे पलटै ॥
चमतकार उठै ॥४३४॥
किते भूमि लुठैं ॥
गिरे एक उठैं ॥
रणं फेरि जुटैं ॥

बहे तेग तुटैं ॥४३५ ॥
मचे वीर वीरं ॥
धरे वीर चीरं ॥
करै ससत्र पातं ॥
उठै असत्र घातं ॥४३६ ॥
इतैं बान राजं ॥
उतै कुंभ काजं ॥
करयो साल पातं ॥
गिरयो वीर भ्रातं ॥४३७ ॥
दोऊ जाघ फूटी ॥
रतं धार छूटी ॥
गिरे राम देखे ॥
बडे दुसट लेखे ॥४३८ ॥
करी बाण बरखं ॥
भरयो सैन हरखं ॥
हणे बाण ताणं ॥
झिणयो कुंभकाणं ॥४३९ ॥
भए देव हरखं ॥
करी पुहप बरखं ॥
सुणयो लंक नाथं ॥
हणे भूम माथं ॥४४० ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके रामवतार कुंभकरन बधहि धयाइ समापतम सतु ॥*

अथ त्रिमुंड जुद्ध कथनं ॥

रसावल छंद ॥

पठयो तीन मुंडं ॥
चलयो सैन झुंडं ॥
क्रिती चित्र जोधी ॥
मंडे परम क्रोधी ॥४४१ ॥
बकैं मार मारं ॥
तजै बाण धारं ॥
हनूमंत कोपे ॥
रणं पाइ रोपे ॥४४२ ॥
असं छीन लीनो ॥
तिसी कंठि दीनो ॥
हनयो खसट नैणं ॥
हसे देव गैणं ॥४४३ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक रामवतार त्रिमुंड बधह धयाइ समापतम सतु ॥*

अथ महोदर मंत्री जुद्ध कथनं ॥

रसावल छंद ॥

सुणयो लंक नाथं ॥
धुणे सरब माथं ॥
करयो मद पाणं ॥
भरे बीर माणं ॥४४४॥
महिखुआस करखैं ॥
सरंधार बरखैं ॥
महोद्रादि वीरं ॥
हठे खग धीरं ॥४४५॥

मोहणी छंद ॥

ढल हल सुढली ढोलाणं ॥
रण रंग अभंग कलोलाणं ॥
भरणंक सु नदं नाफीरं ॥
बरणंकसु बजे मजीरं ॥४४६॥
भरणंकसु भेरी घोराणं ॥
जणु सावण भादो मोराणं ॥
उच्छलीए प्रखरे पावंगं ॥
मचे जुझारे जोधंगं ॥४४७॥
सिंधुरीए सुंडी दंताले ॥
नचे पक्खरीए मुच्छाले ॥
ओरड़ीए सरबं सैणायं ॥
देखंत सु देवं गैणायं ॥४४८॥
झलै अवझड़ीयं उझाड़ं ॥
रण उठै बैहैं बबाड़ं ॥
घै घुमे घायं अघायं ॥
भूअ डिगे अद्धो अद्धायं ॥४४९॥
रिस मंडै छंडै अउ छंडै ॥
हठि हसै कसै को अंडै ॥
रिस बाहैं गाहैं जोधाणं ॥
रण होहैं जोहैं क्रोधाणं ॥४५०॥
रण गजै सजै ससत्राणं ॥
धनु करखैं बरखैं असत्राणं ॥
दल गाहै बाहै हथियारं ॥
रण रुझै लुंझै लुझारं ॥४५१॥
भट भेदे छेदे बरमायं ॥
भूअ डिगे चउरं चरमायं ॥
उघे जण नेजे मतवाले ॥
चले जयों रावल जटाले ॥४५२॥
हठे तरवरीए हंकारं ॥
मंचे पक्खरीए सूरारं ॥
अकुड़ियं वीरं ऐठाले ॥
तन सोहे पत्री पत्राले ॥४५३॥

नव नामक छंद ॥

तरभर पर सर ॥
निरखत सुर नर ॥
हर पुर पुर सुर ॥
निरखत बर नर ॥४५४॥
बरखत सर बर ॥

करखत धनु करि ॥
परहर पुर कर ॥
निरखत बर नर ॥४५५॥
सर बर धर कर ॥
परहर पुर सर ॥
परखत उर नर ॥
निसरत उर धर ॥४५६॥
उझरत जुझ कर ॥
बिझुरत जुझ नर ॥
हरखत मसहर ॥
बरखत सित सर ॥४५७॥
झुर झर कर कर ॥
डरि डरि धर हर ॥
हर बर धर कर ॥
बिहरत उठ नर ॥४५८॥
उचरत जस नर ॥
बिचरत धसि नर ॥
थरकत नर हर ॥
बरखत भुअ पर ॥४५९॥

तिलकड़ीआ छंद ॥

चटाक चोटै ॥
अटाक ओटै ॥
झड़ाक झाड़ै ॥
तड़ाक ताड़ै ॥४६०॥
फिरंत हूरं ॥
बरंत सूरं ॥
रणंत जोहं ॥
उठंत क्रोहं ॥४६१॥
भरंत पत्रं ॥
तुटंत अत्रं ॥
झड़ंत अगनं ॥
जलंत जगनं ॥४६२॥
तुटंत खोलं ॥
जुटंत टोलं ॥
खिमंत खगं ॥
उठंत अगं ॥४६३॥
चलंत बाणं ॥
रुकं दिसाणं ॥
पपात ससत्रं ॥
अघात असत्रं ॥४६४॥
खहंत खत्री ॥
भिरंत अत्री ॥
बुठंत बाणं ॥
खिवै क्रिपाणं ॥४६५॥

दोहरा ॥

लुथ जुथ बिथुर रही रावण राम बिरुद्ध ॥
हतयो महोदर देख कर हरि अरि फिरयो सु क्रुद्ध ॥४६६॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके रामवतार महोदर मंत्री बधहि धिआइ समापतम सतु ॥*

अथ इंद्रजीत जुद्ध कथनं ॥

सिरखिंडी छंद ॥

जुटे वीर जुझारे धगा वजीआं ॥
बजे नाद करारे दला मुसाहदा ॥
लुझे कारणयारे संघर सूरमे ॥
वुठे जाणु डरारे घणीअर कैबरी ॥४६७॥
वजे संगलीआले हाठा जुटीआं ॥
खेत बहे मुच्छाले कहर ततारचे ॥
डिगे वीर जुझारे हूंगा फुटीआं ॥
बके जाण मतवाले भंगा खाइ कै ॥४६८॥
ओरड़ए हंकारी धगा वाइ कै ॥
वाहि फिरे तरवारी सूरे सूरिआं ॥
वगै रतु झुलारी झाड़ी कैबरी ॥
पाई धूंम लुझारी रावण राम दी ॥४६९॥
चोबी धउस वजाई संघुर मचिआ ॥
बाहि फिरै वैराई तुरे ततारचे ॥
हूरा चित वधाई अंबर पूरिआ ॥
जोधिया देखण ताई हूले होईआं ॥४७०॥

पाधड़ी छंद ॥

इंद्रार वीर कुपयो कराल ॥
मुकतंत बाण गहि धनु बिसाल ॥
थरकंत लुथ फरकंत बाह ॥
जुझंत सूर अच्छरै उछाह ॥४७१॥
चमकंत चक्र सरखंत सेल ॥
जुमे जटाल जण गंग मेल ॥
संघरे सूर आघाइ घाइ ॥
बरखंत बाण चड़ चउप चाइ ॥४७२॥
समुले सूर आरुहे जंग ॥
बरखंत बाण बिख धर सुरंग ॥
नभि ह्वै अलोप सर बरख धार ॥
सभ ऊच नीच किंने सुमार ॥४७३॥
सभ ससत्र असत्र बिदिआ प्रबीन ॥
सर धार बरख सरदार चीन ॥
रघुराज आदि मोहे सु बीर ॥
दल सहित भूम डिगे अधीर ॥४७४॥
तब कही दूत रावणहि जाइ ॥
कपि कटक आजु जीतयो बनाइ ॥
सीअ भजहु आजु हुऐ कै निचीत ॥
संघरे राम रण इंद्रजीत ॥४७५॥
तब कहे बैण त्रिजटी बुलाइ ॥
रण म्रितक राम सीतहि दिखाइ ॥
लै गई नाथ जहि गिरे खेत ॥
म्रिग मार सिंघ जयो सुपत अचेत ॥४७६॥

सीअ निरख नाथ मन महि रिसान ॥
दस अउर चार बिदिआ निधान ॥
पड़ नाग मंत्र संघरी पास ॥
पति भ्रात जयाइ चित भयो हुलास ॥४७७॥
सीअ गई जगे अंगराइ राम ॥
दल सहित भ्रात जुत धरम धाम ॥
बजे सु नादि गजे सु बीर ॥
सजे हथियार भजे अधीर ॥४७८॥
संमुले सूर सर बरख जुद्ध ॥
हन साल ताल बिक्राल क्रुद्ध ॥
तजि जुद्ध सुद्ध सुर मेघ धरण ॥
थल गयो नकुंभला होम करण ॥४७९॥
लघ बीर तीर लंकेस आन ॥
इम कहै बैण तज भ्रात कान ॥
आइ है सत्रु इह घात हाथ ॥
इंद्रार बीर अरबर प्रमाथ ॥४८०॥
निज मास काट कर करत होम ॥
थरहरत भूंमि अर चकत बयोम ॥
तह गयो राम भ्राता निसंगि ॥
कर धरे धनुख कट कसि निखंग ॥४८१॥
चिंती सु चित देवी प्रचंड ॥
अर हणयो बाण कीनो दुखंड ॥
रिप फिरे मार दुंदभ बजाइ ॥
उत भजे दईत दलपति जुझाइ ॥४८२॥

◀ *इति इंद्रजीत बधहि धिआइ समापतम सतु ॥*

अथ अतकाइ दईत जुद्ध कथनं ॥

संगीत पधिसटका छंद ॥

कागड़दंग कोप कै दईत राज ॥
जागड़दंग जुद्ध को सजयो साज ॥
बागड़दंग बीर बुले अनंत ॥
रागड़दंग रोस रोहे दुरंत ॥४८३॥
पागड़दंग परम बाजी बुलंत ॥
चागड़दंग चत्र नट जयों कुदंत ॥
कागड़दंग क्रूर कढे हथिआर ॥
आगड़दंग आन बजे जुझार ॥४८४॥
रागड़दंग राम सैना सु क्रुद्ध ॥
जागड़दंग ज्वान जुझंत जुद्ध ॥
नागड़दंग निसाण नव सैन साज ॥
मागड़दंग मूड़ मकराछ गाज ॥४८५॥
आगड़दंग एक अतकाइ वीर ॥
रागड़दंग रोस कीने गहीर ॥
आगड़दंग एक हुके अनेक ॥
सागड़दंग सिंध बेला बिबेक ॥४८६॥
तागड़दंग तीर छुटै अपार ॥
बागड़दंग बूंद बन दल अनुचार ॥

आगड़दंग अरब टीडी प्रमान ॥
चागड़दंग चार चीटी समान ॥४८७॥
बागड़दंग बीर बाहुड़े नेख ॥
जागड़दंग जुद्ध अतकाइ देख ॥
दागड़दंग देव जै जै कहंत ॥
भागड़दंग भूप धन धन भनंत ॥४८८॥
कागड़दंग कहक काली कराल ॥
जागड़दंग जूह जुगण बिसाल ॥
भागड़दंग भूत भैरो अनंत ॥
सागड़दंग स्रोण पाणं करंत ॥४८९॥
डागड़दंग डउर डाकण डहक ॥
कागड़दंग क्रूर काकं कहक ॥
चागड़दंग चत्र चावडी चिकार ॥
भागड़दंग भूत डारत धमार ॥४९०॥

होहा छंद ॥

टुटे परे ॥
नवे मुरे ॥
असं धरे ॥
रिसं भरे ॥४९१॥
छुटे सरं ॥
चकियो हरं ॥
रुकी दिसं ॥
चपे किसं ॥४९२॥
छुटं सरं ॥
रिसं भरं ॥
गिरै भटं ॥
जिमं अटं ॥४९३॥
घुमे घयं ॥
भरे भयं ॥
चपे चले ॥
भटं भले ॥४९४॥
रटैं हरं ॥
रिसं जरं ॥
रुपै रणं ॥
घुमे ब्रणं ॥४९५॥
गिरैं धरं ॥
हुलैं नरं ॥
सरं तछे ॥
कछं कछे ॥४९६॥
घुमे ब्रणं ॥
भ्रमे रणं ॥
लजं फसे ॥
कटं कसे ॥४९७॥
धुके धकं ॥
टुके टकं ॥
छुटे सरं ॥
रुके दिसं ॥४९८॥

छपै छंद ॥

इक इक आरुहे इक इकन कह तकै ॥
इक इक लै चलै इक कह इक उचकै ॥
इक इक सर बरख इक धन करख रोस भर ॥
इक इक तरफंत इक भव सिंध गए तरि ॥
रणि इक इक सावंत भिड़ैं इक इक हुऐ बिझड़े ॥
नर इक अनिक ससत्रण भिड़े इक इक अवझड़ झड़े ॥४९९॥
इक जूझ भट गिरैं इक बबकंत मद्ध रण ॥
इक देवपुर बसै इक भज चलत खाइ ब्रण ॥
इक जुझ उझड़े इक मुकतंत बान कसि ॥
इक अनिक ब्रण झलैं इक मुकतंत बान कसि ॥
रण भूंम घूम सावंत मंडै दीरघु काइ लछमण प्रबल ॥
थिर रहे ब्रिछ उपवन किधो उतर दिस दुऐ अचल ॥५००॥

अजबा छंद ॥

जुटे बीरं ॥
छुटे तीरं ॥
ढुकी ढालं ॥
क्रोहे कालं ॥५०१॥
ढंके ढोलं ॥
बंके बोलं ॥
कच्छे ससत्रं ॥
अच्छे असत्रं ॥५०२॥
क्रोधं गलितं ॥
बोधं दलितं ॥
गजै वीरं ॥
तजै तीरं ॥५०३॥
रते नैणं ॥
मते बैणं ॥
लुझै सूरं ॥
सुझै हूरं ॥५०४॥
लगैं तीरं ॥
भगैं वीरं ॥
रोसं रुझै ॥
असत्रं जुझै ॥५०५॥
झुमे सूरं ॥
घुमे हूरं ॥
चकैं चारं ॥
बकैं मारं ॥५०६॥
भिदे बरमं ॥
छिदे चरमं ॥
तुटै खगं ॥
उठै अंगं ॥५०७॥
नचे ताजी ॥
गजे गाजी ॥
डिगे वीरं ॥
तजे तीरं ॥५०८॥
झुमों सूरं ॥
घुमी हूरं ॥
कच्छे बाणं ॥

मते माणं ॥५०९ ॥

पाधरी छंद ॥

तह भयो घोर आहव अपार ॥
रण भूंमि झूमि जुझे जुझार ॥
इत राम भ्रात अतकाइ उत ॥
रिस जुझ उझरे राज पुत ॥५१० ॥
तब राम भ्रात अति कीन रोस ॥
जिम परत अगन घ्रित करत जोस ॥
गहि बाण पाण तजे अनंत ॥
जिम जेठ सूर किरणै दुरंत ॥५११ ॥
ब्रण आप मद्ध बाहत अनेक ॥
बरणै न जाहि कहि एक एक ॥
उझरे वीर जुझण जुझार ॥
जै सबद देव भाखत पुकार ॥५१२ ॥
रिपु करयो ससत्र असत्रं बिहीन ॥
बहु ससत्र सासत्र बिदिआ प्रबीन ॥
हय मुकट सूत बिनु भयो गवार ॥
कछु चपे चोर जिम बल संभार ॥५१३ ॥
रिपु हणे बाण बज्रव घात ॥
सम चले काल की जुआल तात ॥
तब कुपयो वीर अतकाइ ऐस ॥
जन प्रलै काल को मेघ जैस ॥५१४ ॥
इम करन लाग लपटैं लबार ॥
जिम जुबण हीण लपटाइ नार ॥
जिम दंत रहत गह स्वान ससक ॥
जिम गए बैस बल बीरज रसक ॥५१५ ॥
जिम दरब हीण कछु करि बपार ॥
जण ससत्र हीण रुझयो जुझार ॥
जिम रूप हीण बेसया प्रभाव ॥
जण बाज हीण रथ को चलाव ॥५१६ ॥
तब तमक तेग लछमण उदार ॥
तह हणयो सीस किनो दुफार ॥
तब गिरयो बीर अतिकाइ एक ॥
लख ताहि सूर भजे अनेक ॥५१७ ॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके रामवतार अतकाइ बधहि धिआइ समापतम सतु ॥14॥*

अथ मकराछ जुद्ध कथनं ॥

पाधरी छंद ॥

तब रुकयो सैन मकराछ आन ॥
कह जाहु राम नही पैहो जान ॥
जिन हतयो तात रण मो अखंड ॥
सो लरो आन मो सों प्रचंड ॥५१८ ॥
इम सुणि कुबैण रामावतार ॥
गहि ससत्र असत्र कोपयो जुझार ॥

बहु ताण बाण तिह हणे अंग ॥
मकराछ मारि डारयो निसंग ॥५१९ ॥
जब हते बीर अर हणी सैन ॥
तब भजौ सूर हुऐ कर निचैन ॥
तब कुंभ और अनकुंभ आन ॥
दल रुकयो राम को तयाग कान ॥५२० ॥
इति मराछ बधह ॥

अजबा छंद ॥

त्रपे ताजी ॥
गजे गाजी ॥
सजे ससत्रं ॥
कच्छे असत्रं ॥५२१ ॥
तुटे त्राणं ॥
छुटे बाणं ॥
रुपे बीरं ॥
बुठे तीरं ॥५२२ ॥
घुमे घायं ॥
जुमे चायं ॥
रजे रोसं ॥
तजे होसं ॥५२३ ॥
कजे संजं ॥
पूरे पंजं ॥
जुझे खेतं ॥
डिगे चेतं ॥५२४ ॥
घेरी लंकं ॥
बीरं बंकं ॥
भजी सैणं ॥
लजी नैणं ॥५२५ ॥
डिगे सूरं ॥
भिगे नूरं ॥
बयाहैं हूरं ॥
कामं पूरं ॥५२६ ॥

◄ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार मकराछ कुंभ अनकुंभ बधहि धयाइ समापतम सतु ॥

अथ रावन जुद्ध कथनं ॥

होहा छंद ॥

सुणयो इसं ॥
जिणयो किसं ॥
चपयो चितं ॥
बुलयो बितं ॥५२७ ॥
घिरियो गड़ं ॥
रिसं बड़ं ॥
भजी त्रियं ॥
भ्रमी भयं ॥५२८ ॥

भ्रमी तबै ॥
भजी सभै ॥
त्रियं इसं ॥
गह्यो किसं ॥५२९॥
करैं हहं ॥
अहो दयं ॥
करो गई ॥
छमो भई ॥५३०॥
सुणी स्रुतं ॥
धुणं उतं ॥
उठयो हठी ॥
जिमं भठी ॥५३१॥
कछयो नरं ॥
तजे सरं ॥
हणे किसं ॥
रुकी दिसं ॥५३२॥

त्रिणणिण छंद ॥

त्रिणणिण तीरं ॥
ब्रिणणिण बीरं ॥
ढ्रणणण ढालं ॥
ज्रणणण ज्वालं ॥५३३॥
ख्रणणण खोलं ॥
ब्रणणण बोलं ॥
रणणण रोसं ॥
ज्रणणण जोसं ॥५३४॥
ब्रणणण बाजी ॥
त्रिणणण ताजी ॥
ज्रणणण जूझे ॥
ल्रणणण लूझे ॥५३५॥
हरणण हाथी ॥
सरणण साथी ॥
भरणण भाजे ॥
लरणण लाजे ॥५३६॥
चरणण चरमं ॥
बरणण बरमं ॥
करणण काटे ॥
बरणण बाटे ॥५३७॥
मरणण मारे ॥
तरणण तारे ॥
जरणण जीता ॥
सरणण सीता ॥५३८॥
गरणण गैणं ॥
अरणण ऐणं ॥
हरणण हूरं ॥
परणण पूरं ॥५३९॥
बरणण बाजे ॥
गरणण गाजे ॥
सरणण सुझे ॥
जरणण जुझे ॥५४०॥

त्रिगता छंद ॥

तत तीरं ॥
बब बीरं ॥
ढल ढालं ॥
जज जुआलं ॥५४१॥
तज ताजी ॥
गग गाजी ॥
मम मारे ॥
तत तारे ॥५४२॥
जज जीते ॥
लल लीते ॥
तत तोरे ॥
छच्छ छोरे ॥५४३॥
रर राजं ॥
गग गाजं ॥
धद्ध धायं ॥
चच चायं ॥५४४॥
डड डिगे ॥
भभ भिगे ॥
सस स्रोणं ॥
तत तोणं ॥५४५॥
सस साधैं ॥
बब बाधैं ॥
अअ अंगं ॥
जज जंगं ॥५४६॥
कक क्रोधं ॥
जज जोधं ॥
घघ घाए ॥
धद्ध धाए ॥५४७॥
हह हूरं ॥
पप पूरं ॥
गग गैणं ॥
अअ ऐणं ॥५४८॥
बब बाणं ॥
तत ताणं ॥
छच्छ छौरैं ॥
जज जौरैं ॥५४९॥
बब बाजे ॥
गग गाजे ॥
भभ भूमं ॥
झझ झूमं ॥५५०॥

अनाद छंद ॥

चले बाण रुके गैण ॥
मते सूर रते नैण ॥
ढके ढोल ढुकी ढाल ॥
छुटै बान उठै ज्वाल ॥५५१॥
भिगे स्रोण डिगे सूर ॥

झुमे भूम घुमी हूर ॥
बजे संख सदं गद ॥
तालं संख भेरी नद ॥५५२॥
तुटे त्रण फुटे अंग ॥
जुझे वीर रुझे जंग ॥
मचे सूर नची हूर ॥
मती धुम भूमी पूर ॥५५३॥
उठे अद्ध बद्ध कमद्ध ॥
पक्खर राग खोल सनद्ध ॥
छके छोभ छुटे केस ॥
संघर सूर सिंघन भेस ॥५५४॥
टुटर टीक टुटे टोप ॥
भगे भूप भंनी धोप ॥
घुमे घाइ झूमी भूम ॥
अउझड़ झाड़ धूमं धूम ॥५५५॥
बजे नाद बाद अपार ॥
सजे सूर वीर जुझार ॥
जुझे टूक टूक ह्वै खेत ॥
मते मद जाण अचेत ॥५५६॥
छुटे ससत्र असत्र अनंत ॥
रंगे रंग भूम दुरंत ॥
खुले अंध धुंध हथिआर ॥
बके सूर वीर बिकार ॥५५७॥
बिथुरी लुथ जुथ अनेक ॥
मचे कोटि भगे एक ॥
हसे भूत प्रेत मसाण ॥
लुझे जुझ रुझ क्रिपाण ॥५५८॥

बहड़ा छंद ॥

अधिक रोस कर राज पखरीआ धावही ॥
राम राम बिनु संक पुकारत आवही ॥
रुझ जुझ झड़ पड़त भयानक भूम पर ॥
रामचंद्र के हाथ गए भवसिंध तर ॥५५९॥
सिमट साग संग्रहै समुह हुऐ जूझही ॥
टूक टूक हुऐ गिरत न घर कह बूझही ॥
खंड खंड हुऐ गिरत खंड धन खंड रन ॥
तनक तनक लग जाहि असन की धार तन ॥५६०॥

संगीत बहड़ा छंद ॥

सागड़दी साग संग्रहै तागड़दी रण तुरी नचावहि ॥
झागड़दी झूम गिर भूमि सागड़दी सुरपुरहि सिधावहि ॥
आगड़दी अंग हुऐ भंग आगड़दी आहव महि डिगही ॥
हो बागड़दी वीर बिकार सागड़दी स्रोणत तन भिगही ॥५६१॥
रागड़दी रोस रिप राज लागड़दी लछमण पै धायो ॥
कागड़दी क्रोध तन कुड़यो पागड़दी हुऐ पवन सिधायो ॥
आगड़दी अनुज उर तात घागड़दी गहि घाइ प्रहारयो ॥
झागड़दी झूमि भूअ गिरयो सागड़दी सुत बैर उतारयो ॥५६२॥
चागड़दी चिंक चावडी डागड़दी डाकण डकारी ॥
भागड़दी भूत भर हरे रागड़दी रण रोस प्रजारी ॥

मागड़दी मूरछा भयो लागड़दी लछमण रण जुझयो ॥
जागड़दी जाण जुझि गयो रागड़दी रघुपत इम बुझयो ॥५६३॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार लछमन मूरछना भवेत धिआइ समापतम सतु ॥

संगीत बहड़ा छंद ॥

कागड़दी कटक कपि भजयो लागड़दी लछमण जुझयो जब ॥
रागड़दी राम रिस भरयो सागड़दी गहि असत्र ससत्र सभ ॥
धागड़दी धउल धड़ हड़यो कागड़दी कोड़ंभ कड़कयो ॥
भागड़दी भूंमि भड़हड़ी पागड़दी जन पलै पलटयो ॥५६४॥

अरध नराज छंद ॥

कढी सु तेग दुद्धरं ॥
अनूप रूप सुभरं ॥
भकार भेर भै करं ॥
बकार बंदणो बरं ॥५६५॥
बचित्र चित्रतं सरं ॥
तजंत तीखणो नरं ॥
परंत जूझतं भटं ॥
जणंकि सावणं घटं ॥५६६॥
घुमंत अघ ओघयं ॥
बदंत बकत्र तेजयं ॥
चलंत तयागते तनं ॥
भणंत देवता धनं ॥५६७॥
छुटंत तीर तीखणं ॥
बजंत भेर भीखणं ॥
उठंत गद सदणं ॥
मसत जाण मदणं ॥५६८॥
करंत चाचरो चरं ॥
नचंत निरतणो हरं ॥
पुअंत पारबती सिरं ॥
हसंत प्रेतणी फिरं ॥५६९॥

अनूप निराज छंद ॥

डकंत डाकणी डुलं ॥
भ्रमंत बाज कुंडलं ॥
रड़ंत बंदिणो क्रितं ॥
बदंत मागयो जयं ॥५७०॥
ढलंत ढाल उढलं ॥
खिमंत तेग निरमलं ॥
चलंत राजवं सरं ॥
पपात उरवीअं नरं ॥५७१॥
भजंत आसुरी सुतं ॥
किलंक बानरी पुतं ॥
बजंत तीर तुपकं ॥
उठंत दारुणो सुरं ॥५७२॥
भभक भूत भै करं ॥

चचक चउदणो चकं ॥
ततक्ख पक्खरं तुरे ॥
बजे निनद सिंधुरे ॥५७३॥
उठंत भै करी सरं ॥
मचंत जोधणे जुधं ॥
खिमंत उजलीअसं ॥
बबरख तीखणो सरं ॥५७४॥

संगीत भुजंग प्रयात छंद ॥

जागड़दंग जुझयो भागड़दंग भ्रातं ॥
रागड़दंग रामं तागड़दंग तातं ॥
बागड़दंग बाणं छागड़दंग छोरे ॥
आगड़दंग आकास ते जान ओरे ॥५७५॥
बागड़दंग बाजी रथी बाण काटे ॥
गागड़दंग गाजी गजी वीर डाटे ॥
मागड़दंग मारे सागड़दंग सूरं ॥
बागड़दंग बयाहैं हागड़दंग हूरं ॥५७६॥
जागड़दंग जीता खागड़दंग खेतं ॥
भागड़दंग भागे कागड़दंग केतं ॥
सागड़दंग सूरानु जुंआन पेखा ॥
पागड़दंग प्रानान ते प्रान लेखा ॥५७७॥
चागड़दंग चिंतं पागड़दंग प्राजी ॥
सागड़दंग सैना लागड़दंग लाजी ॥
सागड़दंग सुग्रीव ते आदि लै कै ॥
कागड़दंग कोपे तागड़दंग तै कै ॥५७८॥
हागड़दंग हनू कागड़दंग कोपा ॥
बागड़दंग बीरा नमो पाव रोपा ॥
सागड़दंग सूरं हागड़दंग हारे ॥
तागड़दंग तै कै हनू तउ पुकारे ॥५७९॥
सागड़दंग सुनहो रागड़दंग रामं ॥
दागड़दंग दीजे पागड़दंग पानं ॥
पागड़दंग पीठं ठागड़दंग ठोको ॥
हरो आज पानं सुरं मोह लोको ॥५८०॥
आगड़दंग ऐसे कहयो अउ उडानो ॥
गागड़दंग गैनं मिलयो मद्ध मानो ॥
रागड़दंग रामं आगड़दंग आसं ॥
बागड़दंग बैठे नागड़दंग निरासं ॥५८१॥
आगड़दंग आगे कागड़दंग कोऊ ॥
मागड़दंग मारे सागड़दंग सोऊ ॥
नागड़दंग नाकी तागड़दंग तालं ॥
मागड़दंग मारे बागड़दंग बिसालं ॥५८२॥
आगड़दंग एकं दागड़दंग दानो ॥
चागड़दंग चीरा दागड़दंग दुरानो ॥
दागड़दंग दोखी बागड़दंग बूटी ॥
आगड़दंग है एक ते एक जूटी ॥५८३॥
चागड़दंग चउका हागड़दंग हनवंता ॥
जागड़दंग जोधा महा तेज मंता ॥
आगड़दंग उखारा पागड़दंग पहारं ॥
आगड़दंग लै अउखधी को सिधारं ॥५८४॥
आगड़दंग आए जहा राम खेतं ॥

बागड़दंग बीरं जहा ते अचेतं ॥
बागड़दंग बिसलया मागड़दंग मुक्खं ॥
डागड़दंग डारी सागड़दंग सुक्खं ॥५८५॥
जागड़दंग जागे सागड़दंग सूरं ॥
घागड़दंग घुमी हागड़दंग हूरं ॥
छागड़दंग छूटे नागड़दंग नादं ॥
बागड़दंग बाजे नागड़दंग नादं ॥५८६॥
तागड़दंग तीरं छागड़दंग छूटे ॥
गागड़दंग गाजी जागड़दंग जुटे ॥
खागड़दंग खेतं सागड़दंग सोए ॥
पागड़दंग ते पाक साहीद होए ॥५८७॥
कलस ॥
मचे सूरबीर बिक्रारं ॥
नचे भूत प्रेत बैतारं ॥
झमझम लसत कोटि करवारं ॥
झलहलंत उजल असि धारं ॥५८८॥

त्रिभंगी छंद ॥

उजल अस धारं लसत अपारं करण लुझारं छबि धारं ॥
सोभित जिमु आरं अत छबि धारं सु बध सुधारं अर गारं ॥
जैपत्रं दाती मदिणं माती स्रोणं राती जै करणं ॥
दुजन दल हंती अछल जयंती किलविख हंती भै हरणं ॥५८९॥
कलस ॥
भरहरंत भजत रण सूरं ॥
थरहर करत लोह तन पूरं ॥
तड़भड़ बजैं तबल अरु तूरं ॥
घुमी पेख सुभट रन हूरं ॥५९०॥

त्रिभंगी छंद ॥

घुंमी रण हूरं नभ झड़ पूरं लख लख सूरं मन मोही ॥
आरुण तन बाणं छब अप्रमाणं अतिदुत खाणं तन सोही ॥
काछनी सुरंगं छबि अंग अंगं लजत अनंगं लख रूपं ॥
साइक द्रिग हरणी कुमत प्रजरणी बरबर बरणी बुध कूपं ॥५९१॥
कलस ॥
कमल बदन साइक म्रिग नैणी ॥
रूप रास सुंदर पिक बैणी ॥
म्रिगपत कट छाजत गज गैणी ॥
नैन कटाछ मनहि हर लैणी ॥५९२॥

त्रिभंगी छंद ॥

सुंदर म्रिग नैणी सुर पिक बैणी चित हर लैणी गज गैणं ॥
माधुर बिधि बदनी सुबुद्धिन सदनी कुमतिन कदनी छबि मैणं ॥
अंगका सुरंगी नटवर रंगी झाझ उतंगी पग धारं ॥
बेसर गजरारं पहूच अपारं कचि घुंघरारं आहारं ॥५९३॥
कलस ॥
चिबक चार सुंदर छबि धारं ॥
ठउर ठउर मुकतन के हारं ॥
कर कंगन पहुची उजिआरं ॥
निरख मदन दुत होत सु मारं ॥५९४॥

त्रिभंगी छंद ॥

सोभित छबि धारं कच घुंघरारं रसन रसारं उजिआरं ॥
पहुंची गजरारं सुबिध सुधारं मुकत निहारं उर धारं ॥
सोहत चख चारं रंग रंगारं बिबिध प्रकारं अति आंजे ॥
बिख धर म्रिग जैसे जल जन वैसे ससीअर जैसे सर माजे ॥५९५ ॥
कलस ॥
भयो मूड़ रावण रण क्रुद्धं ॥
मचिओ आन तुमल जब जुद्धं ॥
जूझे सकल सूरमा सुद्धं ॥
अर दल मद्धि सबद कर उद्धं ॥५९६ ॥

त्रिभंगी छंद ॥

धायो कर क्रुद्धं सुभट बिरुद्धं गलित सुबुद्धं गहि बाणं ॥
कीनो रण सुद्धं नचत कबुद्धं अत धुन उद्धं धनु ताणं ॥
धाए रजवारे दुद्धर हकारे सु ब्रण प्रहारे कर कोपं ॥
घाइन तन रजे दु पग न भजे जनु हर गजे पग रोपं ॥५९७ ॥
कलस ॥
अधिक रोस सावत रन जूटे ॥
बखतर टोप जिरै सभ फूटे ॥
निसर चले साइक जन छूटे ॥
जनिक सिचान मास लख टूटे ॥४९८ ॥

त्रिभंगी छंद ॥

साइक जणु छूटे तिम अरि जूटे बखतर फूटे जेब जिरे ॥
मसहर भुखिआए तिमु अरि धाए ससत्र नचाइन फेरि फिरें ॥
सनमुखि रण गाजैं किमहूं न भाजैं लख सुर लाजैं रण रंगं ॥
जै जै धुन करही पुहपन डरही सु बिधि उचरही जै जंगं ॥५९९ ॥
कलस ॥
मुख तंबोर अरु रंग सुरंगं ॥
निडर भ्रमंत भूंमि उह जंगं ॥
लिपत मलै घनसार सुरंगं ॥
रूप भान गतिवान उतंगं ॥६०० ॥

त्रिभंगी छंद ॥

तन सुभत सुरंगं छबि अंग अंगं लजत अनंगं लख नैणं ॥
सोभित कचकारे अत घुंघरारे रसन रसारे म्रिद बैणं ॥
मुखि छकत सुबासं दिनस प्रकासं जनु सस भासं तस सोभं ॥
रीझत चख चारं सुरपुर पयारं देव दिवारं लखि लोभं ॥६०१ ॥
कलस ॥
चंद्रहास एकं कर धारी ॥
दुतीआ धोपु गहि त्रिती कटारी ॥
चत्रथ हाथ सैहथी उजिआरी ॥
गोफन गुरज करत चमकारी ॥६०२ ॥

त्रिभंगी छंद ॥

सतए अस भारी गदहि उभारी त्रिसूल सुधारी छुरकारी ॥
जंबूवा अर बानं सु कसि कमानं चरम अप्रमानं धर भारी ॥

पंद्रए गलोलं पास अमोलं परस अडोलं हथि नालं ॥
बिछूआ पहरायं पटा भ्रमायं जिम जम धायं बिकरालं ॥६०३॥
कलस ॥
सिव सिव सिव मुख एक उचारं ॥
दुतीअ प्रभा जानकी निहारं ॥
त्रितीअ झुंड सभ सुभट पचारं ॥
चत्रथ करत मार ही मारं ॥६०४॥

त्रिभंगी छंद ॥

पचए हनवंतं लख दुत मंतं सु बल दुरंतं तजि कलिणं ॥
छठए लखि भ्रातं तकत पपातं लगत न घातं जीअ जलिणं ॥
सतए लखि रघुपति कप दल अधपति सुभट बिकट मत जुत भ्रातं ॥
अठिओ सिरि ढोरैं नवमि निहोरैं दसयन बोरैं रिस रातं ॥६०५॥

चौबोला छंद ॥

धाए महा बीर साधे सितं तीर काछे रणं चीर बाना सुहाए ॥
रवा करद मरकब यलो तेज इम सभ चूं तुंद अजद होओ मिआ जंगाहे ॥
भिड़े आइ ईहा बुले बैण कीहा करां घाइ जीहा भिड़े भेड़ भजे ॥
पीयो पोसताने भछो राबड़ीने कहा छैअणी रोधणीने निहारैं ॥६०६॥
गाजे महा सूर घुमी रणं हूर भरमी नभं पूर बेखं अनूपं ॥
वले वल साई जीवी जुगा ताई तैंडे घोली जाई अलावीत ऐसे ॥
लगो लार थाने बरो राज माने कहो अउर काने हठी छाड थेसो ॥
बरो आन मो को भजो आन तो को चलो देव लोको तजो बेग लंका ॥६०७॥
स्वैया ॥
अनंततुका ॥
रोस भरयो तज होस निसाचर स्री रघुराज को घाइ प्रहारे ॥
जोस बडो कर कउसलिसं अध बीच ही ते सर काट उतारे ॥
फेर बडो कर रोस दिवारदन धाइ परैं कपि पुंज संघारै ॥
पटस लोह हथी पर संगड़ीए जंबुवे जमदाड़ चलावै ॥६०८॥
चौबोला स्वैया ॥
स्री रघुराज सरासन लै रिस ठाट घनी रन बान प्रहारे ॥
बीरन मार दुसार गए सर अंबर ते बरसे जन ओरे ॥
बाज गजी रथ साज गिरे धर पत्र अनेक सु कउन गनावै ॥
फागन पउन प्रचंड बहे बन पत्रन ते जन पत्र उडाने ॥६०९॥

स्वैया छंद ॥

रोस भरयो रन मौ रघुनाथ सु रावन को बहु बान प्रहारे ॥
स्रोणन नैक लगयो तिन के तन फोर जिरै तन पार पधारे ॥
बाज गजी रथ राज रथी रण भूमि गिरे इह भाति संघारे ॥
जानो बसंत के अंत समै कदली दल पउन प्रचंड उखारे ॥६१०॥
धाइ परे कर कोप बनेचर है तिन के जीअ रोस जगयो ॥
किलकार पुकार परे चहूं घारण छाडि हठी नहि एक भगयो ॥
गहि बान कमान गदा बरछी उत ते दल रावन को उमगयो ॥
भट जूझि अरुझि गिरे धरणी दिजराज भ्रमयो सिव धयान डिगयो ॥६११॥
जूझि अरुझि गिरे भटवा तन घाइन घाइ घने भिभराने ॥
जंबुक गिद्ध पिसाच निसाचर फूल फिरे रन मौ रहसाने ॥
काप उठी सु दिसा बिदिसा दिगपालन फेर प्रलै अनुमाने ॥
भूमि अकास उदास भए गन देव अदेव भ्रमे भहराने ॥६१२॥
रावन रोस भरयो रन मो रिस सौ सर ओघ प्रओघ प्रहारे ॥

भूमि अकास दिसा बिदिसा सभ ओर रुके नहि जात निहारे ॥
स्री रघुराज सरासन लै छिन मौ छुभ कै सर पुंज निवारे ॥
जानक भान उदै निस कउ लखि कै सभ ही तप तेज पधारे ॥६१३॥
रोस भरे रन मो रघुनाथ कमान लै बान अनेक चलाए ॥
बाज गजी गजराज घने रथ राज बने करि रोस उडाए ॥
जे दुख देह कटे सीअ के हित ते रन आज प्रतक्ख दिखाए ॥
राजीव लोचन राम कुमार घनो रन घाल घनो घर घाए ॥६१४॥
रावन रोस भरयो गरजयो रन मो लहि कै सभ सैन भजानयो ॥
आप ही हाक हथियार हठी गहि स्री रघुनंदन सो रण ठानयो ॥
चाबक मार कुदाइ तुरंगन जाइ परयो कछु त्रास न मानयो ॥
बानन ते बिधु बाहन ते मन मारत को रथ छोरि सिधानयो ॥६१५॥
स्री रघुनंदन की भुज के जब छोर सरासन बान उडाने ॥
भूंमि अकास पतार चहूं चक पूर रहे नहीं जात पछाने ॥
तोर सनाह सुबाहन के तन आह करी नही पार पराने ॥
छोद करोटन ओटन कोट अटानमो जानकी बान पछाने ॥६१६॥
स्री असुरारदन के कर को जिन एक ही बान बिखै तन चाखयो ॥
भाज सरयो न भिरयो हठ कै भट एक ही घाइ धरा पर राखयो ॥
छेद सनाह सुबाहन को सर ओटन कोट करोटन नाखयो ॥
सुआर जुझार अपार हठी रन हार गिरे धर हाइ न भाखयो ॥६१७॥
आन अरे सु मरे सभ ही भट जीत बचे रन छाडि पराने ॥
देव अदेवन के जितीया रन कोट हते कर एक न जाने ॥
स्री रघुराज प्राक्रम को लख तेज संबूह सभै भहराने ॥
ओटन कूद करोटन फाध सु लंकहि छाडि बिलंक सिधाने ॥६१८॥
रावन रोस भरयो रन मो गहि बीस हूं बाहि हथयार प्रहारे ॥
भूंमि अकास दिसा बिदिसा चकि चार रुके नही जात निहारे ॥
फोकन तै फल तै मद्ध तै अध तै बध कै रण मंडल डारे ॥
छंत्र धुजा बर बाज रथी रथ काटि सभै रघुराज उतारे ॥६१९॥
रावन चउप चलयो चप कै निज बाज बिहीन जबै रथ जानयो ॥
ढाल त्रिसूल गदा बरछी गहि स्री रघुनंदन सो रन ठानयो ॥
धाइ परयो ललकार हठी कप पुंजन को कछु त्रास न मानयो ॥
अंगद आदि हनवंत ते लै भट कोट हुते कर एक न जानयो ॥६२०॥
रावन को रघुराज जबै रण मंडल आवत मद्धि निहारयो ॥
बीस सिला सित साइक लै करि कोपु बडो उर मद्ध प्रहारयो ॥
भेद चले मरम सथल को सर स्रोण नदी सर बीच पखारयो ॥
आगे ही रेंग चलयो हठि कै भट धाम को भूल न नाम उचारयो ॥६२१॥
रोस भरयो रन मौ रघुनाथ सु पान के बीच सरासन लै कै ॥
पाचक पाइ हटाइ दयो तिह बीसहूं बाहि बिना ओह कै कै ॥
दै दस बान बिमान दसो सिर काट दए सिव लोक पठै कै ॥
स्री रघुराज बरयो सीअ को बहुरो जनु जुद्ध सुयंबर जै कै ॥६२२॥

◄ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार दस सिर बधह धिआइ समापतम सतु ॥

अथ मदोदरी समोध बभीछन को लंक राज दीबो ॥

सीता मिलबो कथनं ॥

स्वैया छंद ॥

इंद्र डराकुल थो जिह के डर सूरज चंद्र हुतो भय भीतो ॥
लूट लयो धन जउन धनेस को ब्रहम हुतो चित मोननि चीतो ॥

इंद्र से भूप अनेक लरै इन सौ फिरि कै ग्रह जात न जीतो ॥
सो रन आज भलैं रघुराज सु जुद्ध सुयंबर कै सीअ जीतो ॥६२३॥

अलका छंद ॥

चटपट सैणं खटपट भाजे ॥
झटपट जुझयो लख रण राजे ॥
सटपट भाजे अटपट सूरं ॥
झटपट बिसरी घट पट हूरं ॥६२४॥
चटपट पैठे खटपट लंकं ॥
रण तज सूरं सर धर बंकं ॥
झलहल बारं नरबर नैणं ॥
धकि धकि उचरे भकि भकि बैणं ॥६२५॥
नर बर रामं बरनर मारो ॥
झटपट बाहं कटि कटि डारो ॥
तब सभ भाजे रख रख प्राणं ॥
खटपट मारे झटपट बाणं ॥६२६॥
चटपट रानी सटपट धाई ॥
रटपट रोवत अटपट आई ॥
चटपट लागी अटपट पायं ॥
नरबर निरखे रघुबर रायं ॥६२७॥
चटपट लोटैं अटपट धरणी ॥
कसि कसि रोवैं बरनर बरणी ॥
पटपट डारैं अटपट केसं ॥
बट हरि कूकैं नट वर भेसं ॥६२८॥
चटपट चीरं अटपट पारैं ॥
धर कर धूमं सरबर डारैं ॥
सटपट लोटैं खटपट भूमं ॥
झटपट झूरैं घरहर घूमं ॥६२९॥

रसावल छंद ॥

जबै राम देखै ॥
महा रूप लेखै ॥
रही नयाइ सीसं ॥
सभै नार ईसं ॥६३०॥
लखैं रूप मोही ॥
फिरी राम देही ॥
दई ताहि लंका ॥
जिमं राज टंका ॥६३१॥
क्रिपा द्रिसट भीने ॥
तरे नेत्र कीने ॥
झरै बार ऐसे ॥
महा मेघ जैसे ॥६३२॥
छकी पेख नारी ॥
सरं काम मारी ॥
बिधी रूप रामं ॥
महा धरम धामं ॥६३३॥
तजी नाथ प्रीतं ॥
चुभे राम चीतं ॥
रही जोर नैणं ॥

कहैं मद बैणं ॥६३४॥
सीआ नाथ नीके ॥
हरैं हार जीके ॥
लए जात चितं ॥
मनो चोर बितं ॥६३५॥
सभै पाइ लागो ॥
पतं द्रोह तयागो ॥
लगी धाइ पायं ॥
सभै नारि आयं ॥६३६॥
महा रूप जाने ॥
चितं चोर माने ॥
चुभे चित्र ऐसे ॥
सितं साइ कैसे ॥६३७॥
लगो हेम रूपं ॥
सभै भूप भूपं ॥
रंगे रंग नैणं ॥
छके देव गैणं ॥६३८॥
जिनै एक बारं ॥
लखे रावणारं ॥
रही मोहत ह्वै कै ॥
लुभी देख कै कै ॥६३९॥
छकी रूप रामं ॥
गए भूल धामं ॥
करयो राम बोधं ॥
महा जुद्ध जोधं ॥६४०॥
राम बाच मदोदरी प्रति ॥

रसावल छंद ॥

सुनो राज नारी ॥
कहा भूल हमारी ॥
चितं चित कीजै ॥
पुनर दोस दीजै ॥६४१॥
मिलै मोहि सीता ॥
चलै धरम गीता ॥
पठयो पउन पूतं ॥
हुतो अग्र दूतं ॥६४२॥
चलयो धाइ कै कै ॥
सीआ सोध लै कै ॥
हुती बाग माही ॥
तरे ब्रिछ छाही ॥६४३॥
परयो जाइ पायं ॥
सुनो सीअ मायं ॥
रिपं राम मारे ॥
खरे तोहि दुआरे ॥६४४॥
चलो बेग सीता ॥
जहा राम जीता ॥
सभै सत्रु मारे ॥
भूअं भार उतारे ॥६४५॥
चली मोद कै कै ॥
हनू संग लै कै ॥

सीआ राम देखे ॥
उही रूप लेखे ॥६४६॥
लगी आन पायं ॥
लखी राम रायं ॥
कहयो कउल नैनी ॥
बिधुं बाक बैनी ॥६४७॥
धसो अग मद्धं ॥
तबै होइ सुद्धं ॥
लई मान सीसं ॥
रचयो पावकीसं ॥६४८॥
गई पैठ ऐसे ॥
घनं बिज जैसे ॥
स्रुतं जेम गीता ॥
मिली तेम सीता ॥६४९॥
धसी जाइ कै कै ॥
कढी कुंदन ह्वै कै ॥
गरै राम लाई ॥
कबं क्रित गाई ॥६५०॥
सभो साध मानी ॥
तिहू लोग जानी ॥
बजे जीत बाजे ॥
तबै राम गाजे ॥६५१॥
लई जीत सीता ॥
महा सुभ्र गीता ॥
सभै देव हरखे ॥
नभं पुहप बरखे ॥६५२॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार बभीछन को लंका को राज दीबो मदोदरी समोध कीबो सीता मिलबो धयाइ समापतं ॥18॥

अथ अउधपुरी को चलबो कथनं ॥

रसावल छंद ॥

तबै पुहपु पै कै ॥
चड़े जुद्ध जै कै ॥
सभै सूर गाजै ॥
जयं गीत बाजे ॥६५३॥
चले मोद ह्वै कै ॥
कपी बाहन लै कै ॥
पुरी अउध पेखी ॥
स्रुतं सुरग लेखी ॥६५४॥

मकरा छंद ॥

सीअ लै सीएस आए ॥
मंगल सु चार गाए ॥
आनंद हीए बढाए ॥
सहरो अवध जहा रे ॥६५५॥
धाई लुगाई आवै ॥

भीरो न बार पावै ॥
आकल खरे उघावै ॥
भाखैं ढोलन कहा रे ॥६५६ ॥
जुलफै अनूप जा की ॥
नागन कि सिआह बाकी ॥
अधभुत अदाइ ता की ॥
ऐसो ढोलन कहा है ॥६५७ ॥
सरवोस ही चमनरा ॥
पर चुसत जा वतनरा ॥
जिन दिल हरा हमारा ॥
वह मन हरन कहा है ॥६५८ ॥
चित को चुराइ लीना ॥
जालम फिराक दीना ॥
जिन दिल हरा हमारा ॥
वह गुल चिहर कहा है ॥६५९ ॥
कोऊ बताइ दै रे ॥
चाहो सु आन लै रे ॥
जिन दिल हरा हमारा ॥
वह मन हरन कहा है ॥६६० ॥
माते मनो अमल के ॥
हरीआ कि जा वतन के ॥
आलम कुसाइ खूबी ॥
वह गुल चिहर कहा है ॥६६१ ॥
जालम अदाइ लीए ॥
खंजन खिसान कीए ॥
जिन दिल हरा हमारा ॥
वह महबदन कहा है ॥६६२ ॥
जालम अदाए लीने ॥
जानुक सराब पीने ॥
रुखसर जहान ताबा ॥
वह गुलबदन कहा है ॥६६३ ॥
जालम जमाल खूबी ॥
रोसन दिमाग अखसर ॥
पुर चुसत जा जिगर रा ॥
वह गुल चिहर कहा है ॥६६४ ॥
बालम बिदेस आए ॥
जीते जुआन जालम ॥
कामल कमाल सूरत ॥
वर गुल चिहर कहा है ॥६६५ ॥
रोसन जहान खूबी ॥
जाहर कलीम हफत जि ॥
आलम खुसाइ जलवा ॥
वह गुल चिहर कहा है ॥६६६ ॥
जीते बजंग जालम ॥
कीन खतंग पररा ॥
पुहपक बिबान बैठे ॥
सीता रवन कहा है ॥६६७ ॥
मादर खुसाल खातर ॥
कीने हजार छावर ॥
मातुर सिता बधाई ॥

वह गुल चिहर कहा है ॥६६८॥

◀ *इति स्री राम अवतार सीता अयुधिआ आगम नाम धिआइ समापतं ॥*

अथ माता मिलणं ॥

रसावल छंद ॥

सुने राम आए ॥
सभै लोग धाए ॥
लगे आन पायं ॥
मिले राम रायं ॥६६९॥
कोऊ चउर ढारैं ॥
कोऊ पान खुआरैं ॥
परे मात पायं ॥
लए कंठ लायं ॥६७०॥
मिलै कंठ रोवैं ॥
मनो सोक धोवैं ॥
करैं बीर बातैं ॥
सुने सरब मातैं ॥६७१॥
मिलै लच्छ मातं ॥
परे पाइ भ्रातं ॥
करियो दान एतो ॥
गनै कउन केतो ॥६७२॥
मिले भरथ मातं ॥
कही सरब बातं ॥
धनं मात तो को ॥
अरिणी कीन मो को ॥६७३॥
कहा दोस तेरै ॥
लिखी लेख मेरै ॥
हुनी हो सु होई ॥
कहै कउन कोई ॥६७४॥
करो बोध मातं ॥
मिलयो फेरि भ्रातं ॥
सुनयो भरथ धाए ॥
पगं सीस लाए ॥६७५॥
भरे राम अंकं ॥
मिटी सरब संकं ॥
मिलयं सत्र हंता ॥
सरं सासत्र गंता ॥६७६॥
जटं धूर झारी ॥
पगं राम रारी ॥
करी राज अरचा ॥
दिजं बेद चरचा ॥६७७॥
करैं गीत गानं ॥
भरे वीर मानं ॥
दीयं राम राजं ॥
सरे सरब काजं ॥६७८॥
बुलै बिप लीने ॥

सुतोचार कीने ॥
भए राम राजा ॥
बजे जीत बाजा ॥६७९॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चहूं चक के छत्रधारी बुलाए ॥
धरे अत्र नीके पुरी अउध आए ॥
गहे राम पायं परम प्रीत कै कै ॥
मिले चत्र देसी बडी भेट दै कै ॥६८०॥
दए चीन माचीन चीनंत देसं ॥
महा सुंद्री चेरका चार केसं ॥
मनं मानकं हीर चीरं अनेकं ॥
कीए खेज पईयै कहूं एक एकं ॥६८१॥
मनं मुतीयं मानकं बाज राजं ॥
दए दंतपंती सजे सरब साजं ॥
रथं बेसटं हीर चीरं अनंतं ॥
मनं मानकं बद्ध रद्धं दुरंतं ॥६८२॥
किते स्वेत ऐरावतं तुलि दंती ॥
दए मुतयं साज सजे सुपंती ॥
किते बाज राजं जरी जीन संगं ॥
नचै नट मानो मचे जंग रंगं ॥६८३॥
किते पक्खरे पील राजा प्रमाणं ॥
दए बाज राजी सिराजी न्रिपाणं ॥
दई रकत नीलं मणी रंग रंगं ॥
लखयो राम को अत्र धारी अभंगं ॥६८४॥
किते पसम पाटंबरं स्वरण बरणं ॥
मिले भेट लै भाति भातं अभरणं ॥
किते परम पाटंबरं भान तेजं ॥
दए सीअ धामं सभो भोज भोजं ॥६८५॥
किते भूखणं भान तेजं अनंतं ॥
पठे जानकी भेट दै दै दुरंतं ॥
घने राम मातान की भेट भेजे ॥
हरे चित के जाहि हेरे कलेजे ॥६८६॥
घमं चक्र चक्रं फिरी राम दोही ॥
मनो बयोत बागो तिमं सीअ सोही ॥
पठै छत्र दै दै छितं छोण धारी ॥
हरे सरब गरबं करे पुरब भारी ॥६८७॥
कटयो काल एवं भए राम राजं ॥
फिरी आन रामं सिरं सरब राजं ॥
फिरियो जैत पत्रं सिरं सेत छत्रं ॥
करे राज आगिआ धरै बीर अत्रं ॥६८८॥
दयो एक एकं अनेकं प्रकारं ॥
लखे सरब लोकं सही रावणारं ॥
सही बिसन देवारदन द्रोह हरता ॥
चहूं चक जानयो सीआ नाथ भरता ॥६८९॥
सही बिसन अउतार कै ताहि जानयो ॥
सभो लोक खयाता बिधाता पछानयो ॥
फिरी चार चक्रं चतुर चक्र धारं ॥
भयो चक्रवरती भूअं रावणारं ॥६९०॥
लखयो परम जोगिंद्रणो जोग रूपं ॥

महादेव देवं लखयो भूप भूपं ॥
महा सत्र सत्रं महा साध साधं ॥
महा रूप रूपं लखयो बयाध बाधं ॥६९१॥
त्रीयं देव तुलं नरं नार नाहं ॥
महा जोध जोधं महा बाह बाहं ॥
सुतं बेद करता गणं रुद्र रूपं ॥
महा जोग जोगं महा भूप भूपं ॥६९२॥
परं पारगंता सिवं सिद्ध रूपं ॥
बुधं बुद्धि दाता रिधं रिद्ध कूपं ॥
जहा भाव कै जेण जैसो बिचारे ॥
तिसी रूप सौ तउन तैसे निहारे ॥६९३॥
सभो ससत्रधारी लहे ससत्र गंता ॥
दुरे देव द्रोही लखे प्राण हंता ॥
जिसी भाव सो जउन जैसे बिचारे ॥
तिसी रंग कै काछ काछे निहारे ॥६९४॥

अनंत तुका भुजंग प्रयात छंद ॥

कितो काल बीतिओ भयो राम राजं ॥
सभै सत्र जीते महा जुद्ध माली ॥
फिरयो चक्र चारो दिसा मद्ध रामं ॥
भयो नाम ता ते महा चक्रवरती ॥६९५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सभै बिप आगसत ते आदि लै कै ॥
भ्रिगं अंगुरा बिआस ते लै बिसिसटं ॥
बिस्वामित्र अउ बालमीकं सु अत्रं ॥
दुरबासा सभै कसप ते आद लै कै ॥६९६॥
जभै राम देखै सभै बिप आए ॥
परयो धाइ पायं सीआ नाथ जगतं ॥
दयो आसनं अरघु पाद रघु तेणं ॥
दई आसिखं मौननेसं प्रसिंनयं ॥६९७॥
भई रिख रामं बडी गिआन चरचा ॥
कहो सरब जौपै बढै एक ग्रंथा ॥
बिदा बिप्र कीने घनी दच्छना दै ॥
चले देस देसं महा चित हरखं ॥६९८॥
इही बीच आयो म्रितं सून बिपं ॥
जीऐ बाल आजै नही तोहि स्रापं ॥
सभै राम जानी चितं ताहि बाता ॥
दिसं बारणी ते बिबाणं हकारयो ॥६९९॥
हुतो एक सूद्रं दिसा उत्र मद्धं ॥
झुलै कूप मद्धं परयो औध मुक्खं ॥
महा उग्र ते जाप पसयात उग्रं ॥
हनयो ताहि रामं असं आप हथं ॥७००॥
जीयो ब्रहम पुत्रं हरयो ब्रहम सोगं ॥
बढी कीरत रामं चतुर कुंट मद्धं ॥
करयो दस सहंस्र लउ राज अउधं ॥
फिरी चक्र चारो बिखै राम दोही ॥७०१॥
जिणे देस देसं नरेसं त रामं ॥
महा जुद्ध जेता तिहूं लोक जानयो ॥

दयो मंत्री अत्रं महाभ्रात भरथं ॥
कीयो सैन नाथं सुमित्रा कुमारं ॥७०२॥

मितगत छंद ॥

सुमति महा रिख रघुबर ॥
दुंदभ बाजति दर दर ॥
जग कीअस धुन घर घर ॥
पूर रही धुन सुरपुर ॥७०३॥
सुढर महा रघुनंदन ॥
जगपत मुन गन बंदन ॥
धरधर लौ नर चीने ॥
सुख दै दुख बिन कीने ॥७०४॥
अर हर नर कर जाने ॥
दुख हर सुख कर माने ॥
पुर धर नर बरसे है ॥
रूप अनूप अभै है ॥७०५॥

अनका छंद ॥

प्रभू है ॥
अजू है ॥
अजै है ॥
अभै है ॥७०६॥
अजा है ॥
अता है ॥
अलै है ॥
अजै है ॥७०७॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

बुलयो चत्र भ्रातं सुमित्रा कुमारं ॥
करयो माथुरेसं तिसे रावणारं ॥
तहा एक दईतं लवं उग्र तेजं ॥
दयो ताहि अपं सिवं सूल भेजं ॥७०८॥
पठयो तीर मंत्रं दीयो एक रामं ॥
महा जुद्ध माली महा धरम धामं ॥
सिवं सूल हीणं जवै सत्र जानयो ॥
तबै संगि ता कै महा जुद्ध ठानयो ॥७०९॥
लयो मंत्र तीरं चलयो निआइ सीसं ॥
त्रिपुर जुद्ध जेता चलयो जाण ईसं ॥
लखयो सूल हीणं रिपं जउण कालं ॥
तबै कोप मंडयो रणं बिकरालं ॥७१०॥
भजै घाइ खायं अगायंत सूरं ॥
हसे कंक बंकं घुमी गैण हूरं ॥
उठे टोप टुकं कमाणं प्रहारे ॥
रणं रोस रजे महा छत्र धारे ॥७११॥
फिरयो अप दईतं महा रोस कै कै ॥
हणे राम भ्रातं वहै बाण लै कै ॥
रिपं नास हेतं दीयो राम अपं ॥
हणियो ताहि सीसं द्रुगा जाप जपं ॥७१२॥
गिरयो झूम भूमं अघूमयो अरि घायं ॥

हणयो सत्र हंता तिसै चउप चायं ॥
गणं देव हरखे प्रबरखंत फूलं ॥
हतयो दैत द्रोही मिटयो सरब सूलं ॥७१३॥
लवं नासुरैयं लवं कीन नासं ॥
सभै संत हरखे रिपं भे उदासं ॥
भजै प्रान लै लै तजयो नगर बासं ॥
करयो माथुरेसं पुरीवा नवासं ॥७१४॥
भयो माथुरेसं लवंनास्र हंता ॥
सभै ससत्र गामी सुभं ससत्र गंता ॥
भए दुसट दूरं करूरं सु ठामं ॥
करयो राज तैसो जिमं अउध रामं ॥७१५॥
करियो दुसट नासं पपातंत सूरं ॥
उठी जै धुनं पुर रही लोग पूरं ॥
गई पार सिंधं सु बिंधं प्रहारं ॥
सुनियो चक्र चारं लवं लावणारं ॥७१६॥

अथ सीता को बनबास दीबो ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भई एम तउनै इतै रावणारं ॥
कही जानकी सो सुकथं सुधारं ॥
रचे एक बागं अभिरामं सु सोभं ॥
लखे नंदनं जउन की क्रात छोभं ॥७१७॥
सुनी एम बानी सीआ धरम धामं ॥
रचियो एक बागं महा अभरामं ॥
मणी भूखितं हीर चीरं अनंतं ॥
लखे इंद्र पथं लजे स्रोभ वंतं ॥७१८॥
मणी माल बज्रं ससोभाइ मानं ॥
सभै देव देवं दुती सुरग जानं ॥
गए राम ता मो सीआ संग लीने ॥
किती कोट सुंदरी सभै संगि कीने ॥७१९॥
रचयो एक मंद्रं महा सुभ्र ठामं ॥
करयो राम सैनं तहा धरम धामं ॥
करी केल खेलं सु बेलं सु भोगं ॥
हुतो जउन कालं समै जैस जोगं ॥७२०॥
रहयो सीअ गरभं सुनयो सरब बामं ॥
कहे एम सीता पुनर बैन रामं ॥
फिरयो बाग बागं बिदा नाथ दीजै ॥
सुनो प्रान पिआरे इहै काज कीजै ॥७२१॥
दीयौ राम संगं सुमित्रा कुमारं ॥
दई जानकी संग ता के सुधारं ॥
जहा घोर सालं तमालं बिक्रालं ॥
तहा सीअ को छोर आइयो उतालं ॥७२२॥
बनं निरजनं देख कै कै अपारं ॥
बनंबास जानयो दयो रावणारं ॥
रुरोदं सुर उचं पपातंत प्रानं ॥
रणं जेम वीरं लगे मरम बानं ॥७२३॥
सुनी बालमीकं स्रुतं दीन बानी ॥
चलयो कउक चितं तजी मोन धानी ॥

सीआ संगि लीने गयो धाम आपं ॥
मनो बच करमं दुरगा जाप जापं ॥७२४॥
भयो एक पुत्रं तहा जानकी तै ॥
मनो राम कीनो दुती राम ते लै ॥
वहै चार चिहनं वहै उग्र तेजं ॥
मनो अप अंसं दुती काढि भेजं ॥७२५॥
दीयो एक पालं सु बालं रिखीसं ॥
लसै चंद्र रूपं किधो दयोस ईसं ॥
गयो एक दिवसं रिखी संधियानं ॥
लयो बाल संगं गई सीअ नानं ॥७२६॥
रही जात सीता महा मोन जागे ॥
बिना बाल पालं लखयो सोकु पागे ॥
कुसा हाथ लै कै रचयो एक बालं ॥
तिसी रूप रंगं अनूपं उतालं ॥७२७॥
फिरी नाइ सीता कहा आन देखयो ॥
उही रूप बालं सुपालं बसेखयो ॥
क्रिपा मोन राजं घनी जान कीनो ॥
दुती पुत्र ता ते क्रिपा जान दीनो ॥७२८॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटके रामवतार दुइ पुत्र उतपंने धयाइ धयाइ समापतं ॥21॥*

अथ जग्यग्रयारंभ कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

उतै बाल पालै इतै अउध राजं ॥
बुले बिप जगयं तजयो एक बाजं ॥
रिपं नास हंता दयो संग ता कै ॥
बडी फउज लीने चलयो संग वा कै ॥७२९॥
फिरयो देस देसं नरेसाण बाजं ॥
किनी नाहि बाधयो मिले आन राजं ॥
महा उग्र धनिया बडी फउज लै कै ॥
परे आन पायं बडी भेट दै कै ॥७३०॥
दिसा चार जीती फिरयो फेरि बाजी ॥
गयो बालमीकं रिखिसथान ताजी ॥
जबै भाल पत्रं लवं छोर बाचयो ॥
बडो उग्रधंनया रसं रुद्र राचयो ॥७३१॥
ब्रिछं बाज बाधयो लखयो ससत्र धारी ॥
बडो नाद कै सरब सैना पुकारी ॥
कहा जात रे बाल लीने तुरंगं ॥
तजो नाहि या को सजो आन जंगं ॥७३२॥
सुणयो नाम जुद्धं जबै स्रउण सूरं ॥
महा ससत्र सउडी महा लोह पूरं ॥
हठे बीर हाठै सभै ससत्र लै कै ॥
परयो मद्धि सैणं बडो नादि कै कै ॥७३३॥
भली भात मारै पचारे सु सूरं ॥
गिरे जुद्ध जोधा रही धूर पूरं ॥
उठी ससत्र झारं अपारंत वीरं ॥
भ्रमे रुंड मुंड तनं तच्छ तीरं ॥७३४॥

गिरे लुथ पथं सु जुथत बाजी ॥
भ्रमै छूछ हाथी बिना सुआर ताजी ॥
गिरे ससत्र हीणं बिअसत्रंत सूरं ॥
हसे भूत प्रेतं भ्रमीं गैण हूरं ॥७३५॥
घणं घोर नीसाण बजे अपारं ॥
खहे वीर धीरं उठी ससत्र झारं ॥
छले चार चित्रं बचित्रंत बाणं ॥
रणं रोस रजे महा तेजवाणं ॥७३६॥

चाचरी छंद ॥

उठाई ॥
दिखाई ॥
नचाई ॥
चलाई ॥७३७॥
भ्रमाई ॥
दिखाई ॥
कंपाई ॥
चखाई ॥७३८॥
कटारी ॥
अपारी ॥
प्रहारी ॥
सुनारी ॥७३९॥
पचारी ॥
प्रहारी ॥
हकारी ॥
कटारी ॥७४०॥
उठाए ॥
गिराए ॥
भगाए ॥
दिखाए ॥७४१॥
चलाए ॥
पचाए ॥
त्रसाए ॥
चुटआए ॥७४२॥

◄ *इति लव बाधवो सत्रुघण बधहि समापत ॥*

अथ लछमन जुध कथनं ॥

अणका छंद ॥

जब सर लागे ॥
तब सभ भागे ॥
दलपति मारे ॥
भट भटकारे ॥७४३॥
हय तज भागे ॥
रघुबर आगे ॥
बहु बिध रोवैं ॥

समुहि न जोवैं ॥७४४॥
लव अर मारे ॥
तव दल हारे ॥
द्वै सिस जीते ॥
नह भय भीते ॥७४५॥
लछमन भेजा ॥
बहु दल लेजा ॥
जिन सिस मारू ॥
मोहि दिखारू ॥७४६॥
सुण लहु भ्रातं ॥
रघुबर बातं ॥
सजि दल चलयो ॥
जल थल हलयो ॥७४७॥
उठ दल धूरं ॥
नभ झड़ पूरं ॥
चहू दिस ढूके ॥
हरि हरि कूके ॥७४८॥
बरखत बाणं ॥
थिरकत जुआणं ॥
लह लह धुजणं ॥
खहखह भुजणं ॥७४९॥
हसि हसि ढूके ॥
कसि कसि कूके ॥
सुण सुण बालं ॥
हठि तज उतालं ॥७५०॥

दोहरा ॥

हम नही तयागत बाज बर सुणि लछमना कुमार ॥
अपनो भर बल जुद्ध कर अब ही संक बिसार ॥७५१॥

अणका छंद ॥

लछमन गजयो ॥
बड धन सजयो ॥
बहु सर छोरे ॥
जणु घण ओरे ॥७५२॥
उत दिव देखैं ॥
धनु धनु लेखैं ॥
इत सर छोरे ॥
मस कण तूटैं ॥७५३॥
भट बर गाजैं ॥
दुंदभ बाजैं ॥
सरबर छोरैं ॥
मुख नह मोरैं ॥७५४॥
लछमन बाच सिस सो ॥

अणका छंद ॥

स्रिण स्रिण लरका ॥
जिन करु करखा ॥
दे मिलि घोरा ॥

तुहि बल थोरा ॥७५५॥
हठ तजि अईऐ ॥
जिन समुहईऐ ॥
मिलि मिलि मो को ॥
डर नहीं तो को ॥७५६॥
सिस नही मानी ॥
अति अभिमानी ॥
गहि धनु गजयो ॥
दु पग न भजयो ॥७५७॥

अजबा छंद ॥

रुद्धे रण भाई ॥
सर झड़ि लाई ॥
बरखे बाणं ॥
परखे जुआणं ॥७५८॥
डिगे रण मद्धं ॥
अद्धो अद्धं ॥
कटे अंगं ॥
रुझै जंगं ॥७५९॥
बाणन झड़ लायो ॥
सरब रसायो ॥
बहु अर मारे ॥
डील डरारे ॥७६०॥
डिगे रण भूमं ॥
नरबर घूमं ॥
रजे रण घायं ॥
चके चायं ॥७६१॥

अपूरब छंद ॥

गणे केते ॥
हणे जेते ॥
कई मारे ॥
किते हारे ॥७६२॥
सभै भाजे ॥
चितं लाजे ॥
भजे भै कै ॥
जीयं लै कै ॥७६३॥
फिरे जेते ॥
हणे केते ॥
किते घाए ॥
किते धाए ॥७६४॥
सिसं जीते ॥
भटं भीते ॥
महा क्रुद्धं ॥
कीयो जुद्धं ॥७६५॥
दोऊ भ्राता ॥
खगं खयाता ॥
महा जोधं ॥
मंडे क्रोधं ॥७६६॥

तजे बाणं ॥
धनं ताणं ॥
मचे बीरं ॥
भजे भीरं ॥७६७॥
कटे अंगं ॥
भजे जंगं ॥
रणं रुझे ॥
नरं जुझे ॥७६८॥
भजी सैनं ॥
बिना चैनं ॥
लछ्न बीरं ॥
फिरयो धीरं ॥७६९॥
इकै बाणं ॥
रिपं ताणं ॥
हणयो भालं ॥
गिरयो तालं ॥७७०॥

◀ *इति लछमन बधहि समापतं ॥*

अथ भरथ जुध कथनं ॥

अड़्हा छंद ॥

भाग गयो दल त्राम कै कै ॥
लछमणं रण भूम दै कै ॥
खले रामचंद हुते जहा ॥
भट भाज भग लगे तहा ॥७७१॥
जब जाइ बात कही उनै ॥
बहु भात सोक दयो तिनै ॥
सुनि बैन मोन रहै बली ॥
जन चित्र पाहन की खली ॥७७२॥
पुन बैठ मंत्र बिचारयो ॥
तुम जाहु भरथ उचारयो ॥
मुन बाल द्वै जिन मारीयो ॥
धरि आन मोहि दिखारीयो ॥७७३॥
सज सैन भरथ चले तहा ॥
रण बाल बीर मंडे जहा ॥
बहु भात बीर संघारही ॥
सर ओघ प्रओघ प्रहारही ॥७७४॥
सुग्रीव और भभीछनं ॥
हनवंत अंगद रीछनं ॥
बहु भाति सैन बनाइ कै ॥
तिन पै चलयो समुहाइ कै ॥७७५॥
रण भूमि भरथ गए जबै ॥
मुन बाल दोइ लखे तबै ॥
दुइ काक पच्छा सोभही ॥
लखि देव दानो लोभही ॥७७६॥
भरथ बाच लव सो ॥

अकड़ा छंद ॥

मुनि बाल छाडहु गरब ॥
मिलि आन मोहू सरब ॥
लै जाहि राघव तीर ॥
तुहि नैक दै कै चीर ॥७७७॥
सुनते भरे सिस मान ॥
कर कोप तान कमान ॥
बहु भाति साइक छोरि ॥
जन अभ्र सावण ओर ॥७७८॥
लागे सु साइक अंग ॥
गिरगे सु बाह उतंग ॥
कहूं अंग भंग सुबाह ॥
कहूं चउर चीर सनाह ॥७७९॥
कहूं चित्र चार कमान ॥
कहूं अंग जोधन बान ॥
कहूं अंग घाइ भभक ॥
कहूं स्रोण सरत छलक ॥७८०॥
कहूं भूत प्रेत भकंत ॥
सु कहूं कमद्ध उठंत ॥
कहूं नाच बीर बैताल ॥
सो बमत डाकणि जुआल ॥७८१॥
रण घाइ घाए वीर ॥
सभ स्रोण भीगे चीर ॥
इक बीर भाजि चलंत ॥
इक आन जुद्ध जुटंत ॥७८२॥
इक ऐंच ऐंच कमान ॥
तक वीर मारत बान ॥
इक भाज भाज मरंत ॥
नही सुरग तउन बसंत ॥७८३॥
गज राज बाज अनेक ॥
जुझे न बाचा एक ॥
तब आन लंका नाथ ॥
जुझयो सिसन के साथ ॥७८४॥

बहोड़ा छंद ॥

लंकेस के उर मो तक बान ॥
मारयो राम सिसत जि कान ॥
तब गिरयो दानव सु भूमि मद्ध ॥
तिह बिसुध जाण नही कीयो बद्ध ॥७८५॥
तब रुकयो तास सुग्रीव आन ॥
कहा जात बाल नही पैस जान ॥
तब हणयो बाण तिह भाल तक ॥
तिह लगयो भाल मो रहयो चक ॥७८६॥
चप चली सैण कपणी सु क्रुद्ध ॥
नल नील हनू अंगद सु जुद्ध ॥
तब तीन तीन लै बाल बान ॥
तिह हणो भाल मो रोस ठान ॥७८७॥
जो गए सूर सो रहे खेत ॥
जो बचे भाज ते हुइ अचेत ॥

तब तकि तकि सिस कसि बाण ॥
दल हतयो राघवी तजि काणि ॥७८८॥

अनूप नराज छंद ॥

सु कोपि देखि कै बलं सु क्रुद्ध राघवी सिसं ॥
बचित्र चित्रत सरं बबरख बरखणो रणं ॥
भभजि आसुरी सुतं उठंत भेकरी धुनं ॥
भ्रमंत कुंडली क्रितं पपीड़ दारणं सरं ॥७८९॥
घुमंत घाइलो घणं ततच्छ बाणणो बरं ॥
भभज कातरो कितं गजंत जोधणो जुद्धं ॥
चलंत तीछणो असं खिमंत धार उजलं ॥
पपात अंगद केसरी हनू व सुग्रिवं बलं ॥७९०॥
गिरंत आमुरं रणं भभरम आसुरी सिसं ॥
तजंत सुआमणो घरं भजंत प्रान ले भटं ॥
उठंत अंध धुंधणो कबंध बंधतं कटं ॥
लगंत बाणाणो बरं गिरंत भूमि अहवयं ॥७९१॥
पपात ब्रिछणं धरं बबेग मार तुजणं ॥
भरंत धूर भूरणं बमंत स्रोणतं मुखं ॥
चिकार चावडी नभं फिकंत फिंकरी फिरं ॥
भकार भूत प्रेतणं डिकार डाकणी डुलं ॥७९२॥
गिरै धरं धुरं धरं धरा धरं धरं जिवं ॥
भभजि स्रउणतं तणै उठंत भै करी धुनं ॥
उठंत गद सदणं ननद निफिरं रणं ॥
बबरख साइकं सितं घुमंत जोधणो ब्रणं ॥७९३॥
भजंत भै धरं भटं बिलोक भरथणो रणं ॥
चलयो चिराइ कै चपी बबरख साइको सितं ॥
सु क्रुद्ध साइकं सिसं बबद्ध भालणो भटं ॥
पपात प्रिथवीयं हठी ममोह आस्र मंगतं ॥७९४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके रामावतारे भरथ बधहि धिआइ समापतं ॥*

अनूप नराज छंद

भभजि भीतणो भटं ततजि भरथणो भूअं ॥
गिरंत लुथतं उठं रुरोद राघवं तटं ॥
जुझे सु भ्रात भरथणो सुणंत जानकी पतं ॥
पपात भूमिणो तलं अपीड़ पीड़तं दुखं ॥७९५॥
ससज जोधणं जुधी सु क्रुद्ध बद्धणो बरं ॥
ततजि जग मंडलं अदंड दंडणो नरं ॥
सु गज बज बाजणो उठंत भै धरी सुरं ॥
सनद्ध बद्ध खै दलं सबद्ध जोधणो बरं ॥७९६॥
चचक चावडी नभं फिकंत फिंकरी धरं ॥
भखंत मास हारणं बमंत ज्वाल दुरगयं ॥
पुअंत पारबती सिरं नचंत ईसणो रणं ॥
भकंत भूत प्रेतणो बकंत बीर बैतलं ॥७९७॥

तिलका छंद ॥

जुटे वीरं ॥

छुटे तीरं ॥
फुटे अंगं ॥
तुटे तंगं ॥७९८॥
भगे वीरं ॥
लगे तीरं ॥
पिक्खे रामं ॥
धरमं धामं ॥७९९॥
जुझे जोधं ॥
मचे क्रोधं ॥
बंधो बालं ॥
बीर उतालं ॥८००॥
ढुके फेर ॥
लिने घेर ॥
वीरैं बाल ॥
जिउ द्वैकाल ॥८०१॥
तजी काण ॥
मारे बाण ॥
डिगे वीर ॥
भगे धीर ॥८०२॥
कटे अंग ॥
डिगे जंग ॥
सुद्धं सूर ॥
भिने नूर ॥८०३॥
लक्खै नाहि ॥
भगे जाहि ॥
तजे राम ॥
धरमं धाम ॥८०४॥
अउरै भेस ॥
खुले केस ॥
ससत्रं छोर ॥
दै दै कोर ॥८०५॥

दोहरा ॥

दुहूं दिसन जोधा हरै परयो जुद्ध दुऐ जाम ॥
जूझ सकल सैना गई रहिगे एकल राम ॥८०६॥
तिहू भ्रात बिनु भै हनयो अर सभ दलहि संघार ॥
लव अरु कुस जूझन निमित लीनो राम हकार ॥८०७॥
सैना सकल जुझाइ कै कति बैठे छप जाइ ॥
अब हम सो तुमहूं लरो सुनि सुनि कउसल राइ ॥८०८॥
निरख बाल निज रूप प्रभ कहे बैन मुसकाइ ॥
कवन तात बालक तुमै कवन तिहारी माइ ॥८०९॥

अकरा छंद ॥

मिथला पुर राजा ॥
जनक सुभाजा ॥
तिह सिस सीता ॥
अति सुभ गीता ॥८१०॥
सो बनि आए ॥
तिह हम जाए ॥

हैं दुइ भाई ॥
सुनि रघुराई ॥८११॥
सुनि सीअ रानी ॥
रघुबर जानी ॥
चित पहिचानी ॥
मुख न बखानी ॥८१२॥
तिह सिस मानयो ॥
अति बल जानयो ॥
हठि रण कीनो ॥
कह नही दीनो ॥८१३॥
कसि सर मारे ॥
सिस नही हारे ॥
बहु बिधि बाणं ॥
अति धनु ताणं ॥८१४॥
अंग अंग बेधे ॥
सभ तन छेदे ॥
सभ दल सूझे ॥
रघुबर जूझे ॥८१५॥
जब प्रभ मारे ॥
सभ दल हारे ॥
बहु बिधि भागे ॥
दुऐ सिस आगे ॥८१६॥
फिरि न निहारैं ॥
प्रभू न चितारैं ॥
ग्रह दिसि लीना ॥
अस रण कीना ॥८१७॥

चौपई ॥

तब दुहूं बाल अयोधन देखा ॥
मनो रुद्र कीड़ा बनि पेखा ॥
काटि धुजन के ब्रिच्छ सवारे ॥
भूखन अंग अनूप उतारे ॥८१८॥
मूरछ भए सभ लए उठई ॥
बाज सहित तह गे जह माई ॥
देखि सीआ पति मुख रो दीना ॥
कहयो पूत बिधवा मुहि कीना ॥८१९॥
इति स्री बचित्र नाटके रामवतार लव बाज बाधवे राम बधह ॥

अथ सीता ने सभ जीवाए कथनं ॥

सीता बाच पुत्रन सो ॥

चौपई ॥

अब मो कउ कासट दे आना ॥
जरउ लागि पहि होऊां मसाना ॥
सुनि मुनि राज बहुत बिधि रोए ॥
इन बालन हमरे सुख खोए ॥८२०॥
जब सीता तन चहा कि काढूं ॥
जोग अगनि उपराज सु छाडूं ॥

तब इम भई गगन ते बानी ॥
कहा भई सीता तै इयानी ॥८२१॥

अरूपा छंद ॥

सुनी बानी ॥
सीआ रानी ॥
लयो आनी ॥
करै पानी ॥८२२॥
सीता बाच मन मै ॥

दोहरा ॥

जउ मन बच करमन सहित राम बिना नही अउर ॥
तउ ए राम सहित जीऐ कहयो सीआ तिह ठउर ॥८२३॥

अरूपा छंद ॥

सभै जागे ॥
भ्रमं भागे ॥
हठं तयागे ॥
पगं लागे ॥८२४॥
सीआ आनी ॥
जगं रानी ॥
धरम धानी ॥
सती मानी ॥८२५॥
मनं भाई ॥
उरं लाई ॥
सती जानी ॥
मनै मानी ॥८२६॥

दोहरा ॥

बहु बिधि सीअहि समोध करि चले अजुधिआ देस ॥
लव कुस दोऊ पुत्रनि सहित स्री रघुबीर नरेस ॥८२७॥

चौपई ॥

बहुतु भाति कर सिसन समोधा ॥
सीय रघुबीर चले पुरि अउधा ॥
अनिक बेख से ससत्र सुहाए ॥
जानत तीन राम बन आए ॥८२८॥
इति स्री बचित्र नाटके रामवतारे तिहू भिरातन सैना सहित जीबो ॥
सीता दुहू पुत्रन सहित पुरी अवध प्रवेस कथनं ॥

चौपई ॥

तिहूं मात कंठन सो लाए ॥
दोऊ पुत्र पाइन लपटाए ॥
बहुर आनि सीता पग परी ॥
मिट गई तहीं दुखन की घरी ॥८२९॥
बाज मेध पूरन कीअ जगा ॥
कउसलेस रघुबीर अभगा ॥

ग्रिह सपूत दो पूत सुहाए ॥
देस बिदेस जीत ग्रह आए ॥८३०॥
जेतिक कहे सु जग बिधाना ॥
बिध पूरब कीने ते नाना ॥
एक घाट सत कीने जगा ॥
चट पट चक्र इंद्र उठि भगा ॥८३१॥
राजसुइ कीने दस बारा ॥
बाज मेधि इकीस प्रकारा ॥
गवालंभ अजमेध अनेका ॥
भूमि मद्ध करम कीए अनेका ॥८३२॥
नागमेध खट जग कराए ॥
जउन करे जनमे जय पाए ॥
अउरै गनत कहा लग जाऊं ॥
ग्रंथ बढन ते हीए डराऊं ॥८३३॥
दस सहंस्र दस बरख प्रमाना ॥
राज करा पुर अउध निधाना ॥
तब लउ काल दसा नीअराई ॥
रघुबर सिरि म्रित डंक बजाई ॥८३४॥
नमसकार तिह बिबिधि प्रकारा ॥
जिन जग जीत करयो बस सारा ॥
सभहन सीस डंक तिह बाजा ॥
जीत न सका रंक अरु राजा ॥८३५॥

दोहरा ॥

जे तिन की सरनी परे कर दै लए बचाइ ॥
जौ नही कोऊ बाचिआ किसन बिसन रघुराइ ॥८३६॥

चौपई छंद ॥

बहु बिधि करो राज को साजा ॥
देस देस के जीते राजा ॥
साम दाम अरु दंड सभेदा ॥
जिह बिधि हुती सासना बेदा ॥८३७॥
बरन बरन अपनी क्रित लाए ॥
चार चार ही बरन चलाए ॥
छत्री करैं बिप्र की सेवा ॥
बैस लखै छत्री कह देवा ॥८३८॥
सूद्र सभन की सेव कमावै ॥
जह कोई कहै तही वह धावै ॥
जैसक हुती बेद सासना ॥
निकसा तैस राम की रसना ॥८३९॥
रावणादि रणि हाक संघारे ॥
भाति भाति सेवक गण तारे ॥
लंका दई टंक जनु दीनो ॥
इह बिधि राज जगत मै कीनो ॥८४०॥

दोहरा छंद ॥

बहु बरखन लउ राम जी राज करा अर टाल ॥
ब्रहमरंध्र कह फोर कै भयो कउसलिआ काल ॥८४१॥

चौपई ॥

जैस म्रितक के हुते प्रकारा ॥
तैसेई करे बेद अनुसारा ॥
राम सपूत जाहिं घर माही ॥
ताकहु तोट कोऊ कह नाही ॥८४२॥
बहु बिधि गति कीनी प्रभ माता ॥
तब लउ भई कैकई साता ॥
ता के मरत सुमित्रा मरी ॥
देखहु काल क्रिआ कस करी ॥८४३॥
एक दिवस जानकि त्रिय सिखा ॥
भीत भए रावण कह लिखा ॥
जब रघुबर तिह आन निहारा ॥
कछुक कोप इम बचन उचारा ॥८४४॥
राम बाच मन मै ॥
या को कछु रावन सो होता ॥
ता ते चित्र चित्रकै देखा ॥
बचन सुनत सीता भई रोखा ॥
प्रभ मुहि अजहूं लगावत दोखा ॥८४५॥

दोहरा ॥

जउ मेरे बच करम करि ह्रिदै बसत रघुराइ ॥
प्रिथी पैंड मुहि दीजीऐ लीजै मोहि मिलाइ ॥८४६॥

चौपई ॥

सुनत बचन धरनी फट गई ॥
लोप सीआ तिह भीतर भई ॥
चक्रत रहे निरख रघुराई ॥
राज करन की आस चुकाई ॥८४७॥

दोहरा ॥

इह जगु धूअरो धउलहरि किह के आयो काम ॥
रघुबर बिनु सीअ ना जीऐ सीअ बिन जीऐ न राम ॥८४८॥

चौपई ॥

दुआरे कहयो बैठ लछमना ॥
पैठ न कोऊ पावै जना ॥
अंतहि पुरहि आप पगु धारा ॥
देहि छोरि म्रित लोक सिधारा ॥८४९॥

दोहरा ॥

इंद्र मती हित अज न्रिपत जिम ग्रिह तज लीअ जोग ॥
तिम रघुबर तन को तजा स्री जानकी बियोग ॥८५०॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक रामवतारे सीता के हेत म्रित लोक से गए धिआइ समापतं ॥*

अथ तीनो भ्राता त्रीअन सहित मरबो कथनं ॥

चौपई ॥

रउर परी सगरे पुर माही ॥
काहूं रही कछू सुध नाही ॥
नर नारी डोलत दुखिआरे ॥
जानुक गिरे जूझि जुझिआरे ॥८५१॥
सगर नगर महि पर गई रउरा ॥
बयाकुल गिरे हसत अरु घोरा ॥
नर नारी मन रहत उदासा ॥
कहा राम कर गए तमासा ॥८५२॥
भरथऊ जोग साधना साजी ॥
जोग अगन तन ते उपराजी ॥
ब्रहमरंध्र झट दै कर फोरा ॥
प्रभ सौ चलत अंग नही मोरा ॥८५३॥
सकल जोग के कीए बिधाना ॥
लछमन तजे तैस ही प्राना ॥
ब्रहमरंध्र लव अरि फुन फूटा ॥
प्रभ चरनन तर प्रान निखूटा ॥८५४॥
लव कुस दोऊ तहा चल गए ॥
रघुबर सीअहि जरावत भए ॥
अर पित भ्रात तिहूं कह दहा ॥
राज छत्र लव के सिर रहा ॥८५५॥
तिहूंअन की इसत्री तिह आई ॥
संगि सती ह्वै सुरग सिधाई ॥
लव सिर धरा राज का साजा ॥
तिहूंअन तिहूं कुंट कीअ राजा ॥८५६॥
उतर देस आपु कुस लीआ ॥
भरथ पुत्र कह पूरब दीआ ॥
दच्छन दीअ लच्छन के बाला ॥
पच्छम सत्रुघन सुत बैठाला ॥८५७॥

दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अटल सभ कोई भाखत नेत ॥
सुरग बास रघुबर करा सगरी पुरी समेत ॥८५८॥

◄ इति राम भिरात त्रीअन सहित सुरग गए अर सगरी पुरी सहित सुरग गए धिआइ समापतम ॥

चौपई ॥

जो इह कथा सुनै अरु गावै ॥
दूख पाप तिह निकटि न आवै ॥
बिसन भगति की ए फल होई ॥
आधि बयाधि छ्वै सकै न कोइ ॥८५९॥
संमत सत्रह सहस पचावन ॥
हाड़ वदी प्रिथमै सुख दावन ॥
त्व प्रसादि करि ग्रंथ सुधारा ॥
भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥८६०॥

दोहरा ॥

नेत्र तुंग के चरन तर सतद्रव तीर तरंग ॥
स्री भगवत पूरन कीयो रघुबर कथा प्रसंग ॥८६१॥
साध असाध जानो नही बाद सुबाद बिबादि ॥
ग्रंथ सकल पूरण कीयो भगवत क्रिपा प्रसादि ॥८६२॥
स्वैया ॥
पाइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नही आनयो ॥
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मानयो ॥
सिंम्रिति सासत्र बेद सभै बहु भेद कहै हम एक न जानयो ॥
स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि मै न कहयो सभ तोहि बखानयो ॥८६३॥

दोहरा ॥

सगल दुआर कउ छाडि कै गहयो तुहारो दुआर ॥
बाहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार ॥८६४॥

◀ *इति स्री रामाइण समापतम सतु सुभम सतु ॥*

क्रिसनावतार ॥

SECTION 11: KRISHNA CHARITAR (CONTINUED)

Extended narration — Krishan Charitar Pakhyan

ੴवाहिगुरू जी की फतिह ॥

स्री अकाल पुरख जी सहाइ ॥

अथ क्रिसनावतार इकीसमो कथनं ॥

चौपई ॥

अब बरणो क्रिसना अवतारू ॥
जैस भाति बपु धरियो मुरारू ॥
परम पाप ते भूमि डरानी ॥
डगमगात बिध तीरि सिधानी ॥१॥
ब्रहमा गयो छीर निधि जहा ॥
काल पुरख इसथित थे तहा ॥
कहियो बिसनु कहु निकटि बुलाई ॥
क्रिसन अवतार धरहु तुम जाई ॥२॥

दोहरा ॥

काल पुरख के बचन ते संतन हेत सहाइ ॥
मथुरा मंडल के बिखै जनमु धरो हरि राइ ॥३॥

चौपई ॥

जे जे क्रिसन चरित्र दिखाए ॥
दसम बीच सभ भाखि सुनाए ॥
ग्यारा सहस बानवे छंदा ॥
कहे दसम पुर बैठि अनंदा ॥४॥

अथ देवी जू की उसतत कथनं ॥

सवैया ॥
होइ क्रिपा तुमरी हम पै तु सभै सगनं गुन ही धरि हों ॥
जीअ धारि बिचार तबै बर बुधि महा अगनं गुन को हरि हों ॥
बिनु चंडि क्रिपा तुमरी कबहूं मुख ते नही अछर हउ करि हों ॥
तुमरो करि नामु किधो तुलहा जिम बाक समुंद्र बिखै तरि हों ॥५॥

दोहरा ॥

रे मन भज तूं सारदा अनगन गुन है जाहि ॥
रचौ ग्रंथ इह भागवत जउ वै क्रिपा कराहि ॥६॥

कबितु ॥

संकट हरन सभ सिधि की करन चंड तारन तरन अरु लोचन बिसाल है ॥
आदि जा कै आहम है अंत को न पारावार सरनि उबारन करन प्रतिपाल है ॥
असुर संघारन अनिक दुख जारन सो पतित उधारन छडाए जम जाल है ॥
देवी बरु लाइक सुबुधि हू की दाइक सु देह बरु पाइक बनावै ग्रंथ हाल है ॥७॥
सवैया ॥
अद्र सुता हूं की जो तनया महिखासुर की मरता फुनि जोऊ ॥
इंद्र को राजहि की दवैया करता बध सुंभ निसुंभहि दोऊ ॥

जो जप कै इह सेव करै बरु को सु लहै मन इछत सोऊ ॥
लोक बिखै उह की समतुल गरीब निवाज न दूसर कोऊ ॥८॥

◀ इति स्री देवी जू की उसतति समापतं ॥

अथ प्रिथमी ब्रहमा पहि पुकारत भई ॥

सवैया ॥
दईतन के भर ते डर ते जु भई प्रिथमी बहु भारहिं भारी ॥
गाइ को रूपु तबै धर कै ब्रहमा रिखि पै चलि जाइ पुकारी ॥
ब्रहम कहियो तुम हूं हम हूं मिलि जाहि तहा जह है ब्रतिधारी ॥
जाइ करै बिनती तिह की रघुनाथ सुनो इह बात हमारी ॥९॥
ब्रहम को अग्र सभै धर कै सु तहा को चले तन के तनीआ ॥
तब जाइ पुकार करी तिह सामुहि रोवत ता मुनि ज्यो हनीआ ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि ने मन भीतर यौ गनीआ ॥
जिम लूटे तै अग्रज चउधरी कै कुटवार पै कूकत है बनीआ ॥१०॥
लै ब्रहमा सुर सैन सभै तह दउरि गए जह सागर भारी ॥
गाइ प्रनाम करो तिन को अपुने लखि बार निवार पखारी ॥
पाइ परे चतुरानन ताहि के देखि बिमान तहा ब्रतिधारी ॥
ब्रहम कहियो ब्रहमा कहु जाहु अवतार लै मै जर दैतन मारी ॥११॥
स्रउनन मै सुनि ब्रहम की बात सबै मन देवन के हरखाने ॥
कै कै प्रनाम चले ग्रिहि आपन लोक सभै अपुने कर माने ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने अपुने मन मै पहिचाने ॥
गोधन भाति गयो सभ लोक मनो सुर जाइ बहोर कै आने ॥१२॥
ब्रहमा बाच ॥

दोहरा ॥

फिरि हरि इह आगिआ दई देवन सकल बुलाइ ॥
जाइ रूप तुम हूं धरो हउ हूं धरि हौ आइ ॥१३॥
बात सुनी जब देवतन कोटि प्रनाम जु कीन ॥
आप समेत सु धामीऐ लीने रूप नवीन ॥१४॥
रूप धरे सभ सुरन यौ भूमि माहि इह भाइ ॥
अब लीला स्री देवकी मुख ते कहो सुनाइ ॥१५॥

◀ इति स्री बिसनु अवतार ह्वैबो बरननं समापतं ॥

अथ देवकी को जनम कथनं ॥

दोहरा ॥

उग्रसैन की कंनिका नाम देवकी तास ॥
सोमवार दिन जठर ते कीनो ताहि प्रकास ॥१६॥

◀ इति देवकी को जनम बरननं प्रिथम धिआइ समापतम ॥

अथ देवकी को बरु ढूंढबो कथनं ॥

दोहरा ॥

जबै भई वहि कंनिका सुंदर बर कै जोगु ॥
राज कही बर के निमित ढूंढहु अपना लोग ॥१७॥
दूत पठे तिन जाइ कै निरख्यो है बसुदेव ॥
मदन बदन सुख को सदनु लखै तत को भेव ॥१८॥

कबितु ॥

दीनो है तिलकु जाइ भालि बसुदेव जू के डारियो नारीएर गोद माहि दै असीस कौ ॥
दीनी है बडाई पै मिठाई हूं ते मीठी सभ जन मनि भाई अउर ईसन के ईस कौ ॥
मन जु पै आई सो तो कहि कै सुनाई ता की सोभा सभ भाई मन मध घरनीस को ॥
सारे जग गाई जिनि सोभा जा की गाई सो तो एक लोक कहा लोक भेदे बीस तीस को ॥१९॥

दोहरा ॥

कंस बासदेवै तबै जोरिओ ब्याह समाज ॥
प्रसंन भए सभ धरनि मै बाजन लागे बाज ॥२०॥

अथ देवकी को ब्याह कथनं ॥

सवैया ॥
आसनि दिजन को धर कै तरि ता को नवाइ लै जाइ बैठायो ॥
कुंकम को घस कै करि पुरोहित बेदन की धुनि सिउ तिह लायो ॥
डारत फूल पंचाम्रिति अछत मंगलचार भइओ मन भायो ॥
भाट कलावंत अउर गुनी सभ लै बखसीस महा जसु गायो ॥२१॥

दोहरा ॥

रीति बरातिन दुलह की बासुदेव सभ कीन ॥
तबै काज चलबे निमित मथुरा मै मनु दीन ॥२२॥
बासदेव को आगमन उग्रसैन सुनि लीन ॥
चमू सबै चतुरंगनी भेजि अगाऊ दीन ॥२३॥
सवैया ॥
आपस मै मिलबे हित कउ दल साज चले धुजनी पति ऐसे ॥
लाल करे पट पै डर केसर रंग भरे प्रतिना पति कैसे ॥
रंचक ता छबि ढूंढि लई कबि नै मन के फुनि भीतर मै से ॥
देखन कउतकि बिआहहि को निकसे इहु कुंकुम आनंद जैसे ॥२४॥

दोहरा ॥

कंस अउर बसुदेव जू आपसि मै मिलि अंग ॥
तबै बहुरि देवन लगे गारी रंगा रंग ॥२५॥
सोरठा ॥
दुंदभि तबै बजाइ आए जो मथुरा निकटि ॥
ता छबि को निरखाइ हरख भइओ हरिखाइ कै ॥२६॥
सवैया ॥
आवत को सुनि कै बसुदेवहि रूप सजे अपुने तनि नारी ॥
गावत गीत बजावत तालि दिवावति आवत नागरि गारी ॥
कोठन पै निरखै चड़ि तासनि ता छबि की उपमा जीअ धारी ॥
बैठि बिवान कुटंब समेत सु देखत देवन की महतारी ॥२७॥

कबितु ॥

बासुदेव आइओ राजै मंडल बनाइओ मनि महा सुख पाइओ ता को आनन निरख कै ॥
सुगंधि लगायो राग गाइनन गायो तिसै बहुत दिवायो बर लिआयो जो परख कै ॥
छाती हाथ लायो सीस निआयो उग्रसैन तबै आदर पठायो पूज मन मै हरख कै ॥
भयो जनु मंगन न भूमि पर बादर सो राजा उग्रसैन गयो कंचन बरख कै ॥२८॥

दोहरा ॥

उग्रसैन तब कंस को लयो हजूरि बुलाइ ॥
कहिओ साथ तुम जाइ कै देहु भंडारु खुलाइ ॥२९॥
अउर समगरी अंन की लै जा ता के पासि ॥
करि प्रनामु ता को तबै इउ करियो अरदासि ॥३०॥
काल रात्र को ब्याह है कंसहि कही सुनाइ ॥
बासुदेव पुरोहित कही भली जु तुमै सुहाइ ॥३१॥
कंस कहिओ करि जोरि तब सबै बात को भेव ॥
साधि साधि पंडित कहियो अस मानी बसुदेव ॥३२॥
सवैया ॥
राति बितीत भई अर प्राति भई फिरि राति तबै चड़ि आए ॥
छाडि दए हथि फूल हजार दो ऊभुच प्रयोधर ऐसि फिराए ॥
अउर हवाई चली नभ को उपमा तिन की कबि स्याम सुनाए ॥
देखहि कउतक देव सबै तिह ते मनो कागद कोटि पठाए ॥३३॥
लै बसुदेव को अग्र पुरोहित कंसहि के चलि धाम गए है ॥
आगे ते नारि भई इक लेहिस गागर पंडित डारि दए है ॥
डारि दए लडूआ गहि झाटनि ता को सोऊ वे तो भछ गए है ॥
जादव बंस दुहूं दिस ते सुनि कै सु अनेकिक हास भए है ॥३४॥

कबितु ॥

गावत बजावत सु गारन दिवाखत आवत सुहावत है मंद मंद गावती ॥
केहरि सी कटि अउ कुरंगन से द्रिग जा के गज कैसी चाल मन भावत सु आवती ॥
मोतिन के चउकि करे लालन के खारे धरे बैठे तबै दोऊ दूलहि दुलही सुहावती ॥
बेदन की धुनि कीनी बहु दछना दिजन दीनी लीनी सात भावरै जो भावते सोभावती ॥३५॥

दोहरा ॥

राति भए बसुदेव जू कीनो तहा बिलास ॥
प्रात भए उठ कै तबै गइओ ससुर के पासि ॥३६॥
सवैया ॥
साज समेत दए गज आयुत सु अउर दए त्रिगुणी रथनारे ॥
लछ भटं दस लछ तुरंगम ऊट अनेक भरे जर भारे ॥
छतीस कोट दए दल पैदल संगि किधो तिन के रखवारे ॥
कंस तबै तिह राखन कउ मनो आप भए रथ के हकवारे ॥३७॥

दोहरा ॥

कंस लवाए जात तिनि सकल प्रबल दल साजि ॥
आगे ते स्रवनन सुनी बिध की असुभ अवाज ॥३८॥
नभि बानी बाच कंस सो ॥

कबितु ॥

दुख को हरिन बिध सिधि के करन रूप मंगल धरन ऐसो कहियो है उचार कै ॥

लीए कहा जात तेरो काल है रे मूड़ मति आठवो गरभ या को तो को डारै मारि है ॥
अचरज मान लीनो मन मै बिचार इह काढ कै क्रिपान डारो इन ही संघारि कै ॥
जाहिंगे छपाइ कै सु जानी कंस मन माहि इहै बात भली डारो जर ही उखारि कै ॥३९॥

दोहरा ॥

कंस दोहूं के बध नमित लीनो खड़ग निकारि ॥
बासुदेव अरु देवकी डरे दोऊ नर नारि ॥४०॥
बासुदेव बाच कंस सो ॥

दोहरा ॥

बासदेव डरु मान कै ता सो कही सुनाइ ॥
जो या ही ते जनम है मारहु ताकहु राइ ॥४१॥
कंस बाच मन मै ॥

दोहरा ॥

पुत्र हेत के भाव सौ मति इह जाइ छपाइ ॥
बंदीखानै देउ इन इहै बिचारी राइ ॥४२॥

अथ देवकी बसुदेव कैद कीबो ॥

सवैया ॥
डारि जंजीर लए तिन पाइन पै फिरि कै मथुरा महि आयो ॥
सो सुनि कै सभ लोग कथा अति नाम बुरो जग मै निकरायो ॥
आनि रखै ग्रिह आपन मै रखवारी को सेवक लोग बैठायो ॥
आनि बडेन की छाडि दई कुल भीतर आपनो राह चलायो ॥४३॥
कबियो बाच दोहरा ॥
कितक दिवस बीते जबै कंस राज उतपात ॥
तबै कथा अउरै चली करम रेख की बात ॥४४॥
प्रथम पुत्र देवकी के जनम कथनं ॥

दोहरा ॥

पुत्र भइओ देवकी कै कीरति मत तिह नामु ॥
बासुदेव लै ताहि कौ गयो कंस कै धाम ॥४५॥
सवैया ॥
लै करि तात को तात चलियो जब ही न्रिप कै दर ऊपर आइओ ॥
जाइ कहियो दरवानन सो तिन बोलि कै भीतर जाइ जनाइओ ॥
कंस करी करुना सिसु देखि कहिओ हम हूं तुम को बखसाइओ ॥
फेर चलिओ ग्रिह को बसुदेव तऊ मन मै कछु न सुखु पाइओ ॥४६॥
बसुदेव बाच मन मै ॥

दोहरा ॥

बासुदेव मन आपने कीनो इहै बिचार ॥
कंस मूड़ दुरमति बडो या कौ डरि है मारि ॥४७॥
नारद रिखि बाच कंस प्रति ॥

दोहरा ॥

तब मुनि आयो कंस ग्रिहि कही बात सुनि राइ ॥

असट लीक कर कै गनी दीनो भेद बताइ ॥४८॥

अथ भ्रितन सौ कंस बाच ॥

सवैया ॥
बात सुनी जब नारद की इह तो न्रिप के मन माहि भई है ॥
मारहु जाइ इसै अब ही करि भ्रितन नैन की सैन दई है ॥
दउरि गए तिह आइसु मान कै बात इहै चलि लोग गई है ॥
पाथर पै हनि कै घन जिउ बपु जीवहि ते करि भिंन लई है ॥४९॥
प्रिथम पुत्र बधहि ॥
सवैया ॥
अउर भयो सुत जो तिह के ग्रिहि तउ न्रिप कंस महा मति हीनो ॥
सेवक भेज दए तिन लिआइ कै पाथर पै हनि कै फुनि दीनो ॥
सोर परियो सब ही पुर मै कबि नै तिह को जसु इउ लखि लीनो ॥
इंद्र मूओ सुनि कै रन मै मिल कै सुर मंडल रोदन कीनो ॥५०॥
अउर भयो सुत जो तिह के ग्रिह नाम धरिओ तिह को तिन हूं जै ॥
मार दयो सुनि कै न्रिप कंस सु पाथर पै हनि डारिओ खूंजै ॥
सीस के बार उखारत देवकी रोदन चोरन तै घरि गूंजै ॥
जिउ रुति अंतु बसंत समै नभि को जिम जात पुकारत कूंजै ॥५१॥

कबितु ॥

चउथो पुत्र भइओ सो भी कंस मार दइओ तिह सोक बड़वा की लाटै मन मै जगत है ॥
परी हैगी दासी महा मोह हूं की फासी बीच गई मिट सोभा पै उदासी ही पगत है ॥
कैधो तुम नाथ ह्वै सनाथ हम हूं पै हूंजै पति की न गति और तन की न गति है ॥
भई उपहासी देह पूतन बिनासी अबिनासी तेरी हासी न हमै गासी सी लगत है ॥५२॥
सवैया ॥
पाचवो पुत्र भयो सुनि कंस सु पाथर सो हनि मारि दयो है ॥
स्वास गयो नभि के मग मै तन ता को किधौ जमुना मै गयो है ॥
सो सुनि कै पुनि स्रोनन देवकी सोक सो सास उसास लयो है ॥
मोह भयो अति ता दिन मै मनो याही ते मोह प्रकास भयो है ॥५३॥
देवकी बेनती बाच ॥

कबितु ॥

पुत्र भइओ छठो बंस सो भी मारि डारिओ कंस देवकी पुकारी नाथ बात सुनि लीजीऐ ॥
कीजीऐ अनाथ न सनाथ मेरे दीनानाथ हमै मार दीजीऐ कि या को मार दीजीऐ ॥
कंस बडो पापी जा को लोभ भयो जापी सोई कीजीऐ हमारी दसा जा ते सुखी जीजीऐ ॥
स्रोनन मै सुनि असवारी गज वारी करो लाईऐ न ढील अब दो मै एक कीजीऐ ॥५४॥
इति छठवों पुत्र बधह ॥

अथ बलभद्र जनम ॥

सवैया ॥
जो बलभद्र भयो गरभातर तौ दुहं बैठि कै मंत्र करिओ है ॥
ता ही ते मंत्र के जोर सो काढि कै रोहिनी के उर बीच धरिओ है ॥
कंस कदाच हने सिसु को तिह ते मन मै बसुदेव डरिओ है ॥
सेख मनो जग देखन को जग भीतर रूप नवीन करिओ है ॥५५॥

दोहरा ॥

क्रिसन क्रिसन करि साध दो बिसनु किसन पति जासु ॥

क्रिसन बिस्व तरबे निमित तन मै करियो प्रकास ॥५६॥

अथ क्रिसन जनम ॥

सवैया ॥
संख गदा करि अउर त्रिसूल धरे तनि कउच बडे बडभागी ॥
नंद गहै करि सारंग सारंग पीत धरै पट पै अनुरागी ॥
सोई हुती जनमिउ इह के ग्रिह कै डरपै मन मै उठि जागी ॥
देवकी पुत्र न जानियो लखिओ हरि कै कै प्रनाम सु पाइन लागी ॥५७॥

दोहरा ॥

लखिओ देवकी हरि मनै लखिओ न करि करि तात ॥
लखिओ जान करि मोहि की तानी तानि कनात ॥५८॥
क्रिसन जनम जब ही भइओ देवन भइओ हुलास ॥
सत्र सबै अब नास होहिं हम को होइ बिलास ॥५९॥
आनंद सो सब देवतन सुमन दीन बरखाइ ॥
सोक हरन दुसटन दलन प्रगटे जग मो आइ ॥६०॥
जै जै कार भयो जबै सुनी देवकी कानि ॥
त्रासति हुइ मन मै कहियो सोर करै को आनि ॥६१॥
बासुदेव अरु देवकी मंत्र करै मन माहि ॥
कंस कसाई जान कै हीऐ अधिक डरपाहि ॥६२॥

◀ *इति क्रिसन जनम बरननं समापतं ॥*

सवैया ॥
मंत्र बिचार करिओ दुहहूं मिलि मारि डरै इह को मति राजा ॥
नंदहि के घरि आइ हउ डारि कै ठाट इही मन मै तिन साजा ॥
कान्रह कहिओ मन मै न डरो तुम जाहु निसंक बजावत बाजा ॥
माया की खैंचि कनात लई धर बालक सऊरभ आपि बिराजा ॥६३॥

दोहरा ॥

क्रिसन जबै तिन ग्रिहि भयो बासुदेव इह कीन ॥
दस हजार गाई भली मनै मनसि करि दीन ॥६४॥
सवैया ॥
छूटि किवार गए घरि के दरि के न्रिप के बर के चलते ॥
हरखे सरखे बसुदेवहि के पग जाइ छुहिओ जमना जल ते ॥
हरि देखन कौ हरि अउ बढ के हरि दउर गए तन के बल ते ॥
काज इही कहि दोऊ गए जु खिझै बहु पापन की मल ते ॥६५॥

दोहरा ॥

क्रिसन जबै चड़ती करी फेरिओ माया जाल ॥
असुर जिते चउकी हुते सोइ गए ततकाल ॥६६॥
सवैया ॥
कंसहि के डर ते बसुदेव सु पाइ जबै जमुना मधि ठानो ॥
मान कै प्रीति पुरातन को जल पाइन भेटन काज उठानो ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने अपने मन मै पहिचानो ॥
कान्रह को जान किधो पति है इह कै जमुना तिह भेटत मानो ॥६७॥

दोहरा ॥

जबै जसोदा सुइ गई माया कीयो प्रकास ॥
डारि क्रिसन तिह पै सुता लीनी है करि तास ॥६८॥
सवैया ॥
माया को लै कर मै बसुदेव सु सीघ्र चलियो अपुने ग्रिह माही ॥
सोइ गए पर दुआर सबै घर बाहरि भीतरि की सुधि नाही ॥
देवकी तीर गयो जब ही सभ ते मिलगे पट आपसि माही ॥
बालि उठी जब रोदन कै जग कै सुधि जाइ करी नर नाही ॥६९॥
रोइ उठी वह बालि जबै तब स्रोनन मै सुनि ली धुनि होरै ॥
धाइ गए न्रिप कंसह के घरि जाइ कहियो जनमियो रिपु तोरै ॥
लै के क्रिपान गयो तिह के चलि जाइ गही कर तै करि जोरै ॥
देखहु बात महा जड़ की अब आदिक के बिख चाबत भोरै ॥७०॥
लाइ रही उर सो तिह को मुख ते कहियो बात सुनो मतवारे ॥
पुत्र हने मम पावक से छठ ही तुम पाथर पै हनि डारे ॥
छीन कै कंस कहियो मुख ते इह भी पटके इह कै अब नारे ॥
दामिनी ह्वै लहकी नभ मै जब राख लई वह राखनहारे ॥७१॥

कबितु ॥

कै कै क्रोध मनि करि ब्योत वा के मारबे की चाकरन कहिओ मार डारो न्रिप बात है ॥
कर मो उठाइ कै बनाइ भारे पाथर पै राज काज राखबे को कछु नही पात है ॥
आपनो सो बल करि राखै इह भली भात स्वछंद बंद कै कै छूट इह जात है ॥
माया को बढाइ कै सु सभन सुनाइ कै सु ऐसे उडी बारा जैसे पारा उडि जात है ॥७२॥
सवैया ॥
आठ भुजा करि कै अपनी सभनो कर मै बर आयुध लीने ॥
जवाल निकास कही मुख ते रिपु अउर भयो तुमरो मति हीने ॥
दामिनि सी लहकै नभि मै डर कै फटगे तिह सत्रन सीने ॥
मार डरै इह हूं हम हूं सभ त्रास मनै अति दैतन कीने ॥७३॥

अथ देवकी बसुदेव छोरबो ॥

सवैया ॥
बात सुनी इह की जु स्रोनन निंदत देवन को घरि आयो ॥
झूठ हने हम पै भगनी सुत जाइ कै पाइन सीस निवायो ॥
ग्यान कथा कर कै अति ही बहु देवकी औ बसुदेव रिझायो ॥
ह्वै कै प्रसंनि बुलाइ लुहार को लोह अउ मोह को फाध कटायो ॥७४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे देवकी बसुदेव को छोरबो बरननं समापतं ॥*

कंस मंत्रीन सो बिचार करत भया ॥

दोहरा ॥

मंत्री सकल बुलाइ के कीनो कंस बिचार ॥
बालक जो मम देस मै सो सभ डारो मार ॥७५॥
सवैया ॥
भागवत की यह सुध कथा बहु बात भरे भली भाति उचारी ॥
बाकी कहो फुनि अउर कथा को सुभ रूप धरियो ब्रिज मधि मुरारी ॥
देव सभै हरखे सुनि भूमहि अउर मनै हरखै नर नारी ॥
मंगल होहि घरा घर मै उतरियो अवतारन को अवतारी ॥७६॥
जाग उठी जसुधा जब ही पिखि पुत्रहि देन लगी हुनीआ है ॥
पंडितन को अरु गाइन को बहु दान दीओ सभ ही गुनीआ है ॥

पुत्र भयो सुनि कै ब्रिजभामिन ओढ कै लाल चली चुनीआ है ॥
जिउ मिल कै घन के दिन मै उड कै सु चली जु मनो मुनीआ है ॥७७॥
नंद बाच कंस प्रति ॥

दोहरा ॥

नंद महर लै भेट कौ गयो कंस के पासि ॥
पुत्र भयो हमरे ग्रिहै जाइ कही अरदासि ॥७८॥
बसुदेव बाच नंद सो ॥

दोहरा ॥

नंद चलिओ ग्रिह को जबै सुनी बात बसुदेव ॥
भै ह्वै है तुम को बडो सुनो गोप पति भेव ॥७९॥
कंस बाच बकी सो ॥
सवैया ॥
कंस कहै बकी बात सुनो इह आज करो तुम काज हमारो ॥
बारक जे जनमे इह देस मै ताहि कौ जाइ कै सीघ्र संघारो ॥
काल वहै हमरो कहीऐ तिह त्रास डरियो हीअरा मम भारो ॥
हाल बिहाल भयो तिह काल मनो तन मै जु डसिओ अहि कारो ॥८०॥
पूतना बाच कंस प्रति ॥

दोहरा ॥

इह सुनि कै तब पूतना कही कंस सो बात ॥
बरमा जाए सब हनो मिटे तिहारो तात ॥८१॥
सवैया ॥
सीस निवाइ उठी तब बोलि सु घोलि मिठा लपटौ थन मै ॥
बाल जु पान करे तजे प्रानन ताहि मसान करों छिन मै ॥
बुधि तान सुजान कहियो सति मान सु आइ हौं टोर कै ता हनि मै ॥
निरभउ न्रिप राज करो नगरी सगरी जिन सोच करो मन मै ॥८२॥
कबियो बाच दोहरा ॥
अति पापन जगंनाथ पर बीड़ा लीयो उठाइ ॥
कपट रूप सोरह सजे गोकुल पहुंची जाइ ॥८३॥
सवैया ॥
काजर नैनि दीए मन मोहत ईगुर की बिंदुरी जु बिराजै ॥
टाड भुजान बन्नही कटि केहिर पाइन नूपर की धुनि बाजै ॥
हार गरे मुकताहल के गई नंद दुआरहि कंस कै काजै ॥
बास सुबास बसी सभ ही तन आनन मै ससि कोटिक लाजै ॥८४॥
जसुधा बाच पूतना प्रति ॥

दोहरा ॥

बहु आदर करि पूछिओ जसुमति बचन रसाल ॥
आसन पै बैठाइ कै कहिओ बात कहु बाल ॥८५॥
पूतना बाच जसोधा सो ॥

दोहरा ॥

महरि तिहारे सुत सुनिओ जनमिओ रूप अनूप ॥
मो गोदी दै दूध को होवै सभ को भूप ॥८६॥
सवैया ॥
गोद दयो जसुधा तब ता के सु अंत समै तब ही उनि लीनो ॥

भाग बडे दुर बुधनि के भगवानहि कौ जिनि असथन दीनो ॥
छीर रकत्र सु ताही के प्रान सु ऐच लए मुख मो इह कीनो ॥
जिउ गगड़ी तुमरी तन लाइ कै तेल लए तुच छाड कै पीनो ॥८७॥

दोहरा ॥

पाप करिओ बहु पूतना जा सो नरक डराइ ॥
अंति कहियो हरि छाडि दै बसी बिकुंठहि जाइ ॥८८॥
सवैया ॥
देहि छि कोस प्रमान भई पुखरा जिम पेट मुखो नलूआरे ॥
डंड दुकूल भए तिह के जनु बार सिबाल ते सेख पूआरे ॥
सीस सुमेर को स्रिंग भयो तिह आखन मै परगे खड़ूआरे ॥
साह के कोट मै तोप लगी बिब गोलन के ह्वै गलूआरे ॥८९॥

दोहरा ॥

असथन मुख लै क्रिसन तिह ऊपरि सोइ गए ॥
धाइ तबै ब्रिज लोक सभ गोद उठाइ लए ॥९०॥
काटि काटि तन एकठो कीयोब ता को ढेर ॥
दे ईधन चहुं ओर ते बारत लगी न बेर ॥९१॥
सवैया ॥
जब ही नंद आइ है गोकुल मै लई बास सुबास महा बिसमानिओ ॥
लोक सबै ब्रिज को बिरतात कहिओ सुनि कै मन मै डर पानिओ ॥
साच कही बसुदेवहि मो पहि सो परतछि भई हम जानिओ ॥
ता दिन दान अनेक दीयो सभ बिप्रन बेद असीस बखानिओ ॥९२॥

दोहरा ॥

बाल रूप ह्वै उतरिओ दयासिंधु करतार ॥
प्रिथम उधारी पूतना भूमि उतारियो भारु ॥९३॥

◄ *इति स्री दसम सकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे पूतना बधहि धिआइ समापतम सत सुभम सतु ॥*

अथ नाम करण कथनं ॥

दोहरा ॥

बासुदेव गरग को निकटि लै कही जु ताहि सुनाइ ॥
गोकुल नंदहि के भवनि क्रिपा करो तुम जाइ ॥९४॥
उतै तात हमरे तहा नाम करन करि देहु ॥
हम तुम बिनु नही जानही अउर स्रउन सुन लेहु ॥९५॥
सवैया ॥
बेग चलियो दिज गोकुल को बसुदेव महान कही सोई मानी ॥
नंद के धाम गयो तब ही बहु आदर ताहि करियो नंद रानी ॥
नामु सु क्रिसन कहिओ इह को करि मान लई इह बात बखानी ॥
लाइ लगंन नछत्रन सोधि कही समझाइ अकथ कहानी ॥९६॥

दोहरा ॥

क्रिसन नाम ता को धरियो गरगहि मनै बिचारि ॥
सिआम पलोटै पाइ जिह इह सम मनो मुरारि ॥९७॥

सुकल बरन सतिजुगि भए पीत बरन त्रेताइ ॥
पीत बरन पट सिआम तन नर नाहनि के नाहि ॥९८॥
सवैया ॥
अंन्रय दयो गरगै जब नंदहि तउ उठि कै जमुना तटि आयो ॥
न्रहाइ कटै करि कै धुतीआ हरि को अरु देवन भोग लगायो ॥
आइ गए नंद लाल तबै कर सो गहि कै अपुने मुख पायो ॥
चक्रत ह्वै गयो पेखि तबै तिह अंन्रय सभै इन भीटि गवायो ॥९९॥
फेरि बिचार करियो मन मै इह ते नहि बालक पै हरि जी है ॥
मानस पंच भू आतम को मिलि कै तिन सो करता सरजी है ॥
याद करी ममता इह कारन मध को दूर करै करजी है ॥
मूंद लई तिह की मति यौ पट सौ तन ढापत जिउ दरजी है ॥१००॥
नंद कुमार त्रिबार भयो जब तो मनि बामन क्रोध करिओ है ॥
मात खिझी जसुदा हरि को गहि कै उर आपने लाइ धरिओ है ॥
बोल उठे भगवान तबै इह दोस न है मुहि याद करिओ है ॥
पंडित जान लई मन मै उठ कै तिह के तब पाइ परिओ है ॥१०१॥

दोहरा ॥

नंद दान ता कौ दयो कह लउ कहो सुनाइ ॥
गरग आपने घरि चलियो महा प्रमुद मनि पाइ ॥१०२॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे नामकरन बरननं ॥
सवैया ॥
बालक रूप धरे हरि जी पलना पर झूलत है तब कैसे ॥
मात लडावत है तिह कौ औ झुलावत है करि मोहित कैसे ॥
ता छबि की उपमा अति ही कबि स्याम कही मुख ते फुनि ऐसे ॥
भूमि दुखी मन मै अति ही जनु पालत है रिपु दैतन जैसे ॥१०३॥
भूख लगी जब ही हरि को तब पै जसुधा थन कौ तिनि चाहियो ॥
मात उठी न भयो मन क्रुध तबै पग सो महि गोड कै बाहियो ॥
तेल धरिओ अरु घीउ भरिओ छुटि भूमि परियो जसु स्याम सराहियो ॥
होत कुलाहल मध पुरी धरनी को मनो सभ सोक सु लाहियो ॥१०४॥
धाइ गए ब्रिज लोक सबै हरि जी तिन अपने कंठ लगाए ॥
अउर सभै ब्रिज लोक बधू मिलि भातन भातन मंगल गाए ॥
भूमि हली नभ यो इह कउतक बारन भेद यौ भाखि सुनाए ॥
चक्रत बात भए सुनि कै अपने मन मै तिन साच न लाए ॥१०५॥
सवैया ॥
कानहि के सिर साथ छुहाइ कै अउर सभै तिन अंगन को ॥
अरु लोक बुलाइ सबै ब्रिज कै बहु दान दयो तिन मंगन को ॥
अरु दान दयो सभ ही ग्रिह को कर कै पट रंगन रंगन को ॥
इह साज बनाइ दयो तिन को अरु अउर दयो दुख भंगन को ॥१०६॥
कंस बाच त्रिणावरत सो ॥
अड़िल ॥
जबै पूतना हनी सुनी गोकुल बिखै ॥
त्रिणावरत सो कहियो जाहु ता को तिखै ॥
नंद बाल को मारो ऐसे पटकि कै ॥
हो पाथर जाणु चलाईऐ कर सो झटकि कै ॥१०७॥
सवैया ॥
कंसहि कै तसलीम चलियो है त्रिणावरत सीघर दै गोकुल आयो ॥
बउडर को तब रूप धरियो धरनी पर कै बल पउन बहायो ॥
आगम जान कै भारी भयो हरि मारि तबै वह भूमि परायो ॥
पूर भए द्रिग मूंद कै लोकन लै हरि को नभि के मग धायो ॥१०८॥
जउ हरि जी नभि बीच गयो कर तउ अपने बल को तन चटा ॥

रूप भयानक को धरि कै मिलि जुध करियो तब राछस फटा ॥
फेरि संभार दसो नख आपने कै कै तुरा सिर सत्र को कटा ॥
रुंड गिरियो जनु पेडि गिरियो इम मुंड परियो जनु डार ते खटा ॥१०९ ॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे त्रिणावरत बधह समापतम ॥

सवैया ॥
कान्रह बिना जन गोकुल के बहु आजिज होइ इकत्र ढूंडायो ॥
दुआदस कोस पै जाइ परियो हुतो खोजत खोजत पै मिलि पायो ॥
लाइ लीयो हीय सो सभ ही तब ही मिलि कै उन मंगल गायो ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने मुख ते इम भाखि सुनायो ॥११० ॥
दैत को रूप भयानक देख कै गोप सभौ मन मै डरु कीआ ॥
मानस की कह है गनती सुर राजहि को पिखि फाटत हीआ ॥
ऐसो महा बिकराल सरूप तिसै हरि ने छिन मै हनि लीआ ॥
आइ सुनिओ अपुने ग्रिह मै तिह को बिरतात सभै कहि दीआ ॥१११ ॥
दै बहु बिपन को तब दान सु खेलत है सुत सो फुनि माई ॥
अंगुल कै मुख सामुहि होत ही लेत भले हरि जी मुसकाई ॥
आनंद होत महा जसुदा मनि अउर कहा कहो तोहि बडाई ॥
ता छबि की उपमा अति पै कबि के मन मै तन ते अति भाई ॥११२ ॥

अथ सारी बिस्व मुख मो क्रिसन जी जसोधा को दिखाई ॥

सवैया ॥
मोहि बढाइ महा मन मै हरि कौ लगी फेरि खिलावन माई ॥
तउ हरि जी मन मध बिचारि सिताब लई मुखि माहि जंभाई ॥
चक्रत होइ रही जसुधा मन मधि भई तिह के दुचिताई ॥
माइ सु ढापि लई तब ही सभ बिसन मया तिन जो लखि पाई ॥११३ ॥
कान्रह चले घुंटूआ घर भीतर मात करै उपमा तिह चंगी ॥
लालन की मनि लाल किधौ नंद धेन सभै तिह के सभ संगी ॥
लाल भई जसुदा पिखि पुत्रहिं जिउ घनि मै चमकै दुति रंगी ॥
किउ नहि होवै प्रसंन्य सु मात भयो जिन के ग्रिहि तात त्रिभंगी ॥११४ ॥
राहि सिखावन काज गडीहरि गोप मनो मिल कै सु बनायो ॥
कानहि को तिह उपर बिठाइ कै आपने आङन बीच धवायो ॥
फेरि उठाइ लयो जसुदा उर मो गहि कै पय पान करायो ॥
सोइ रहे हरि जी तब ही कबि ने अपुने मन मै सुख पायो ॥११५ ॥

दोहरा ॥

जब ही निंद्रा छुट गई हरी उठे ततकाल ॥
खेल खिलावन सो करियो लोचन जाहि बिसाल ॥११६ ॥
इसी भाति सो क्रिसन जी खेल करे ब्रिज माहि ॥
अब पग चलतियो की कथा कहों सुनो नर नाहि ॥११७ ॥
सवैया ॥
साल बितीत भयो जब ही तब कान्रह भयो बल कै पग मै ॥
जसु मात प्रसंन्य भई मन मै पिखि धावत पुत्रहि को मग मै ॥
बात करी इह गोपिन सो प्रभा फैल रही सु सभै जग मै ॥
जनु सुंदरता अति मानुख को सब धाइ धसी हरि कै नग मै ॥११८ ॥
गोपिन सो मिल कै हरि जी जमुना तटि खेल मचावत है ॥
जिम बोलत है खग बोलत है जिम धावत है तिम धावत है ॥
फिरि बैठि बरेतन मध मनो हरि सो वह ताल बजावत है ॥
कबि स्याम कहै तिन की उपमा सुभ गीत भले मुख गावत है ॥११९ ॥

कुंजन मै जमुना तटि पै मिलि गोपिन सो हरि खेलत है ॥
तरि कै तब ही सिगरी जमुना हटि मधि बरेतन पेलत है ॥
फिरि कूदत है जु मनो नट जिउ जल को हिरदे संगि रेलत है ॥
फिरि ह्वै हुड़आ लरके दुहूं ओर ते आपसि मै सिर मेलत है ॥१२०॥
आइ जबै हरि जी ग्रिहि आपने खाइ कै भोजन खेलन लागे ॥
मात कहै न रहै घरि भीतरि बाहरि को तब ही उठि भागे ॥
स्याम कहै तिन की उपमा ब्रिज के पति बीथिन मै अनुरागे ॥
खेल मचाइ दयो लुक मीचन गोप सभै तिह के रसि पागे ॥१२१॥
खेलत है जमुना तट पै मन आनंद कै हरि बारन सो ॥
चड़ि रूख चलावत सोट किधो सोऊ धाइ कै लिआवै गुआरन को ॥
कबि स्याम लखी तिन की उपमा मनो मधि अनंत अपारन सो ॥
बल जात सबै मुनि देखन कौ करि कै बहु जोग हजारन सो ॥१२२॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे गोपिन सो खेलबो बरननं ॥

अथ माखन चुराइ खैबो कथनं ॥

सवैया ॥
खेलन के मिस पै हरि जी घरि भीतर पैठि कै माखन खावै ॥
नैनन सैन तबै करि कै सभ गोपिन को तब ही सु खुलावै ॥
बाकी बचियो अपने करि लै करि बानर के मुख भीतरि पावै ॥
स्याम कहै तिह की उपमा इह कै बिधि गोपिन कान्रह खिझावै ॥१२३॥
खाइ गयो हरि जी जब माखन तउ गुपीआ सभ जाइ पुकारी ॥
बात सुनो पति की पतनी तुम डार दई दधि की सभ खारी ॥
कानहि के डर ते हम चोर कै राखत है चड़ि ऊच अटारी ॥
ऊखल को धरि कै मनहा पर खात है लंगर दै करि गारी ॥१२४॥
होत नही जिह के घर मै दधि दै करि गारन सोर करै है ॥
जो लरका जनि कै खिझ है जन तो मिलि सोटन साथ मरै है ॥
आइ परै जु त्रीआ तिह पै सिर के तिह बार उखार डरै है ॥
बात सुनो जसुदा सुत की सु बिना उतपात न कान्रह टरै है ॥१२५॥
बात सुनी जब गोपिन की जसुदा तब ही मन माहि खिझी है ॥
आइ गयो हरि जी तब ही पिखि पुत्रहि कौ मन माहि रिझी है ॥
बोल उठे नंद लाल तबै इह गवार खिझावन मोहि गिझी है ॥
मात कहा दधि दोसु लगावत मार बिना इह नाहि सिझी है ॥१२६॥
मात कहियो अपने सुत को कहु किउ करि तोहि खिझावत गोपी ॥
मात सौ बात कही सुत यौ करि सो गहि भागत है मुहि टोपी ॥
डार कै नास बिखै अंगुरी सिरि मारत है मुझ को वह थोपी ॥
नाक घसाइ हसाइ उनै फिरि लेत तबै वह देत है टोपी ॥१२७॥
जसुधा बाच गोपिन सो ॥
सवैया ॥
मात खिझी उन गोपिन को तुम किउ सुत मोहि खिझावत हउ री ॥
बोलत हो अपने मुख ते हमरे धन है दधि दाम सु गउ री ॥
मूड़ अहीर न जानत है बढि बोलत हो सु रहो तुम ठउ री ॥
कानहि साध बिना अपराधहि बोलहिंगी जु भई कछु बउरी ॥१२८॥

दोहरा ॥

बिनती कै जसुदा तबै दोऊ दए मिलाइ ॥
कान्रह बिगारै सेर दधि लेहु मन कु तुम आइ ॥१२९॥
गोपी बाच जसोधा सो ॥

दोहरा ॥

तब गोपी मिलि यो कही मोहन जीवै तोहि ॥
याहि देहि हम खान दधि सभ मनि करै न क्रोहि ॥१३०॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे माखन चुरैबो बरननं ॥

अथ जसुधा को बिसव सारी मुख पसारि दिखैबो ॥

सवैया ॥
गोपी गई अपुने ग्रिह मै तब ते हरि जी इक खेल मचाई ॥
संगि लयो अपुने मुसली धर देखत ता मिटीआ इन खाई ॥
भोजन खानहि को तजि खेलै सु गुवार चले घर को सभ धाई ॥
जाइ हली सु कहिओ जसुधा पहि बात वहै तिन खोलि सुनाई ॥१३१॥
मात गहियो रिस कै सुत को तब लै छिटीआ तन ताहि प्रहारियो ॥
तउ मन मधि डरियो हरि जी जसुधा जसुधा करि कै जु पुकारियो ॥
देखहु आइ सबै मुहि को मुख मात कहियो तब तात पसारियो ॥
स्याम कहै तिन आनन मै सभ ही धर मूरति बिसव दिखारियो ॥१३२॥
सिंधु धराधर अउ धरनी सभ था बलि को पुरि अउ पुरि नागनि ॥
अउर सभै निरखे तिह मै पुर बेद पड़ै ब्रहमा गनिता गनि ॥
रिधि अउ सिधि अउ आपने देख कै जानि अभेव लगी पग लागन ॥
स्याम कहै तिन चच्छन सो सभ देख लयो जु बडी बडिभागनि ॥१३३॥

दोहरा ॥

जेरज सेतज उतभुजा देखे तिन तिह जाइ ॥
पुत्र भाव को दूर करि पाइन लागी धाइ ॥१३४॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे मात जसुदा कउ मुख पसारि बिस्व रूप दिखैबो ॥

अथ तरु तोरि जुमलारजुन तारबो ॥

सवैया ॥
फेरि उठी जसुदा परि पाइन ता की करी बहु भात बडाई ॥
हे जग के पति हे करुना निधि होइ अजान कहिओ मम माई ॥
सारे छिमो हमरो तुम अउगन हुइ मतिमंदि करी जु ढिठाई ॥
मीट लयो मुख तउ हरि जी तिह पै ममता डरि बात छिपाई ॥१३५॥

कबितु ॥

करुना कै जसुधा कहियो है इम गोपिन सो खेलबे के काज तोरि लिआए गोप बन सौ ॥
बारको के कहे करि क्रोध मन आपने मै स्याम को प्रहार तन लागी छूछकन सौ ॥
देखि देखि लासन कौ रोवै सुत रोवै मात कहै कबि स्याम महा मोहि करि मन सौ ॥
राम राम कहि सभो मारबे की कहा चली सामुहे न बोलीऐ री ऐसे साधु जन सौ ॥१३६॥

दोहरा ॥

खीर बिलोवन कौ उठी जसुदा हरि की माइ ॥
मुख ते गावै पूत गुन महिमा कही न जाइ ॥१३७॥
सवैया ॥
एक समै जसुधा संगि गोपिन खीर मथै करि लै कै मधानी ॥
ऊपर को कटि सौ कसि कै पटरो मन मै हरि जोति समानी ॥
घंटका छुद्र कसी तिह ऊपरि स्याम कही तिह की जु कहानी ॥
दान औ प्राक्रम की सुधि कै मुख तै हरि की सुभ गावत बानी ॥१३८॥
खीर भरियो जब ही तिह को कुचि तउ हरि जी तब ही फुनि जागे ॥
पय सु पिआवहु हे जसुदा प्रभु जी इह ही रसि मै अनुरागे ॥

दूध फटियो हुइ बासन ते तब धाइ चली इह रोवन लागे ॥
क्रोध करिओ मन मै ब्रिज के पति पै घरि ते उठि बाहरि भागे ॥१३९॥

दोहरा ॥

क्रोध भरे हरि जी मनै घरि ते बाहरि जाइ ॥
संग सखा लै कपि सभै आए सैन बनाइ ॥१४०॥
पाथर को गहि कै करै दीनो मटु सु भगाइ ॥
खीर दसो दिस बहि चलियो अउ पीनो हरि धाइ ॥१४१॥
सवैया ॥
सैन बनाइ भलो हरि जी जसुदा दधि को मिलि लूटन लाए ॥
हाथन मै गहि कै सभ बासन कै बल को चहूं ओरि बगाए ॥
फूट गए वह फैल परिओ दधि भाव इहै कबि के मनि आए ॥
कंस को मीझ निकारन को अगूआ जनु आगम कान्रह जनाए ॥१४२॥
फोर दए तिन जो सभ बासन क्रोध भरी जसुदा तब धाई ॥
फाधि चड़े कपि रूखन रूखन ग्वारन ग्वारन सैन भगाई ॥
दउरत दउरि तबै हरि जी बसुधा परि आपनी मात हराई ॥
स्याम कहै फिर कै ब्रिज कै पति ऊखल सो फुनि देहि बंधाई ॥१४३॥
दउरि गहे हरि जी जसुदा जब बाधि रही रसीआ नही मावै ॥
कै इकठी ब्रिज की रसीआ सभ जोरि रही कछु थाहि न पावै ॥
फेरि बंधाइ भए ब्रिज के पति ऊखल सो धरि ऊपर धावै ॥
साध उधारन को जुमलारजुन ताहिं निमित किधो वह जावै ॥१४४॥

दोहरा ॥

घीसति घीसति उखलहि कान्रह उधारत साध ॥
निकटि तबै तिन के गए जाननहार अगाध ॥१४५॥
सवैया ॥
ऊखल कान्रह अराइ किधौ बल कै तन को तरु तोर दए है ॥
तउ निकसे तिन ते जुमलारजन कै बिनती सुर लोक गए है ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि के मन मै इह भाति भए है ॥
नागन के पुरि ते मधु के मट कै मति की लजु ऐच लए है ॥१४६॥
कउतक देखि सभै ब्रिज के जन जाइ तबै जसुदा पहि आखी ॥
तोर दए तन को बल कै तर भाति भली हरि की सुभ साखी ॥
ता छबि की उपमा अति ही कबि ने अपुने मुख ते इम भाखी ॥
फेरि कही भहराइ तितै उडे जिउ धर ते उड जात है माखी ॥१४७॥
दूतन के बध को सिव मूरति है निज सो करता सुख दइया ॥
लोगन को बरता हरता दुख है करता मुसलीधर भइया ॥
डार दई ममता हरि जी तब बोल उठी इह है मम जाइया ॥
खेल बनाइ दयो हम को बिधि जो जनम्यो ग्रिहि पूत कनइया ॥१४८॥
इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे क्रिसनावतारे तरु तोर जमलारजन उधारबो बरननं ॥
सवैया ॥
तोरि दए तरु जो तिह ही तब गोपन बूढन मंत्र बिचारो ॥
गोकुल को तजीऐ चलीऐ ब्रिज ह्वै ईहा भाव ते भावन भारो ॥
बात सुनी जसुदा अरु नंदहि ब्योत भलो मन मधि बिचारो ॥
अउर भली इह ते न कछू जिह ते सु बचे सुत स्याम हमारो ॥१४९॥
घासि भलो द्रुम छाह भली जमुना ढिग है नग है तटि जा के ॥
कोटि झरै झरना तिह ते जग मै समतुलि नही कछु ता के ॥
बोलत है पिक कोकिल मोर किधौ घन मै चहुं ओरन वा के ॥
बेग चलो तुम गोकुल को तजि पुंन हजार अबै तुम गा के ॥१५०॥

दोहरा ॥

नंद सभै गोपन सनै बात कही इह ठउर ॥
तजि गोकुल ब्रिज को चले इह ते भली न अउर ॥१५१॥
लटपट बाधे उठि चले आए जब ब्रिजि हीर ॥
देखिओ अपने नैन भरि बहितो जमुना तीर ॥१५२॥
सवैया ॥
आइस पाइ कै नंदहि को सभ गोपन जाइ भले रथ साजे ॥
बैठि सभै तिन पै तिरीआ संगि गावत जात बजावत बाजे ॥
हेम को दानु करै जु दोऊ हरि गोद लए जसुदा इम राजै ॥
कैधउ सैल सुता गिरि भीतर ऊच मनो मनि नील बिराजै ॥१५३॥
गोप गए तजि गोकुल को ब्रिज आपने आपने डेरन आए ॥
डार दई लसीआ अरु अछ्त बाहरि भीतरि धूप जगाए ॥
ता छबि को जसु ऊच महा कबि नै मुख ते इम भाखि सुनाए ॥
राज बिभीछन दै किधौ लंक को राम जी धाम पवित्र कराए ॥१५४॥
कबियो बाच दोहरा ॥
गोप सभै ब्रिज पुर बिखै बैठे हरख बढाइ ॥
अब मै लीला क्रिसन की मुख ते कहो सुनाइ ॥१५५॥
सवैया ॥
सात बितीत भए जब साल लगे तब कान्रह चरावन गऊआ ॥
पात बजावत औ मुरली मिलि गावत गीत सभै लरकऊआ ॥
गोपन लै ग्रिह आवत धावत ताड़त है सभ को मन भऊआ ॥
दूध पिआवत है जसुदा रिझ कै हरि खेल करै जु नचऊआ ॥१५६॥
रूख गए गिर कै धसि कै संगि दैत चलाइ दयो हरि जी जो ॥
फूल गिरे नभ मंडल ते उपमा तिह की कबि नै सु करी जो ॥
धनि ही धनि भयो तिहूं लोकनि भूमि को भारु अबै घट कीजो ॥
स्याम कथा सु कही इस की चित दै कबि पै इह को जु सुनीजो ॥१५७॥
कउतकि देखि सभे ब्रिज बालक डेरन डेरन जाइ कही है ॥
दानो की बात सुनी जसुदा गरि आनंद के मधि बात डही है ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि ने मुख ते सरता जिउ कही है ॥
फैलि परियो सु दसो दिस कौ गनती मन की इह मधि बही है ॥१५८॥

अथ बकी दैत को बध कथनं ॥

सवैया ॥
दैत हन्यो सुन कै न्रिप स्रउननि बात कही बक को सुनि लईयै ॥
होइ तयार अबै तुम तो तजि कै मथुरा ब्रिज मंडलि जईयै ॥
कै तसलीम चलियो तह कौ चबि डारत हो मुसलीधर भईयै ॥
कंस कही हसि कै उहि को सुनि रे उहि को छल सो हनि दईयै ॥१५९॥
प्रात भए बछ्रे संग लै करि बीच गए बन कै गिरधारी ॥
फेरि गए जमुना तटि पै बछ्रे जल सुध अचै नहि खारी ॥
आइ गयो उत दैत बकासुर देखन महिां भयानक भारी ॥
लील लए सभ ह्वै बगुला फिरि छोरि गए हरि जोर गजारी ॥१६०॥

दोहरा ॥

अगनि रूप तब क्रिसन धरि कंठि दयो तिह जाल ॥
गहि सु मुकति ठानत भयो उगल डरियो ततकाल ॥१६१॥
सवैया ॥
चोट करी उन जो इह पै इन ते बल कै उहि चोच गही है ॥
चीर दई बल कै तन को सरता इक स्रउनत साथ बही है ॥

अउर कहा उपमा तिह की सु कही जु कछु मन मधि लही है ॥
जोति रली तिह मै इम जिउ दिन मै दुति दीप समाइ रही है ॥१६२॥

कबितु ॥

जबै दैत आयो महा मुखि चवरायो जब जानि हरि पायो मन कीनो वा के नास को ॥
सिंध सुता पति नै उखार डारी चोच वा की बली मार डारियो महाबली नाम जास को ॥
भूमि गिर परियो ह्वै दुटूक महा मुखि वा को ताकी छबि कहिबे को भयो मन दास को ॥
खेलबे के काज बन बीच गए बालक जिउ लै कै कर मधि चीर डारै लाबे घास को ॥१६३॥
इति बकासुर दैत बधहि ॥
सवैया ॥
संग लए बछुरे अरु गोप सु साझि परी हरि डेरन आए ॥
होइ प्रसंनि महा मन मै मन भावत गीत सभो मिलि गाए ॥
ता छबि को जस उच महा कबि नै मुख ते इह भाति बनाए ॥
देवन देव हन्यो धर पै छलि कै तरि अउरन को जु सुनाए ॥१६४॥
कान्रह जु बाच गोपन प्रति ॥
सवैया ॥
फेरि कही इह गोपन कउ फुनि प्रात भए सभ ही मिलि जावै ॥
अंनु अचौ अपने ग्रिह मो जिनि मधि महाबन के मिलि खावै ॥
बीच तरै हम पै जमुना मन भावत गीत सभै मिलि गावै ॥
नाचहिगे अरु कूदहिगे गहि कै कर मै मुरली सु बजावै ॥१६५॥
मान लयो सभनो वह गोपन प्रात भई जब रैनि बिहानी ॥
कान्रह बजाइ उठिओ मुरली सभ जाग उठे तब गाइ छिरानी ॥
एक बजावत है द्रुम पात किधो उपमा कबि सिआम पिरानी ॥
कउतुक देखि महा इन को पुरहूत बधू सुर लोकि खिसानी ॥१६६॥
गेरी के चित्र लगाइ तनै सिर पंख धरियो भगवान कलापी ॥
लाइ तनै हरि ता मुरली मुखि लोक भयो जिह को सभ जापी ॥
फूल गुछे सिरि खोस लए तरि रूख खरो धरनी जिनि थापी ॥
खेलि दिखावत है जग कौ अरु कोऊ नहीं हुइ आप ही आपी ॥१६७॥
कंस बाच मंत्रीअन सो ॥

दोहरा ॥

जब बक लै हरि जी हनिओ कंस सुन्यो तब स्रउनि ॥
करि इकत्र मंत्रहि कहिओ तहा भेजीए कउन ॥१६८॥
मंत्री बाच कंस प्रति ॥
सवैया ॥
बैठि बिचार करियो न्रिप मंत्रिनि दैत अघासुर को कहु जावै ॥
मारगु रोक रहै तिन को धरि पंनग रूप महा मुख बावै ॥
आइ परै हरि जी जब ही तब ही सभ ग्वार सनै चबि जावै ॥
आइ है खाइ तिनै सुनि कंस कि नातुर आपनो जीउ गवावै ॥१६९॥

अथ अघासुर दैत आगमन ॥

सवैया ॥
जाहि कहियो अघ कंसि गयो तह पंनग रूप महा धरि आयो ॥
भ्रात हन्यो भगनी सुनि कै बध के मनि क्रुध तहा कहु धायो ॥
बैठि रहिओ तिन कै मग मै हरि के बध काज महा मुख बायो ॥
देखत ताहिं सभै ब्रिज बालक खेल कहा मन मै लखि पायो ॥१७०॥
सभ गोपन बाच आपसि मै ॥
सवैया ॥

कोऊ कहै गिरि मधि गुफा इह कोऊ इकत्र कहै अंधिआरो ॥
बालक कोऊ कहै इह राछस कोऊ कहै इह पंनग भारो ॥
जाइ कहै इक नाहि कहै इक बिओत इही मन मै तिन धारो ॥
एक कहै चलो भउ न कछू सु बचाव करे घनस्याम हमारो ॥१७१॥
हेरि हरै तिह मधि धसे मुख न उनि राछस मीच लयो है ॥
स्याम जू आवै जबै मम मीट हो बिओत इही मन मधि कयो है ॥
कान्रह गए तब मीट लयो मुख देवन तो हहकारु भयो है ॥
जीवन मूरि हुती हमरी अब सोऊ अघासुर चाबि गयो है ॥१७२॥
देहि बढाइ बडो हरि जी मुख रोक लयो उह राछस ही को ॥
रोक लए सभ ही करि कै बलु सास बढियो तब ही उह जी को ॥
कान्रह बिदार दयो तिह को सिर प्रान भयो बिनु भ्रात बकी को ॥
गूद परिओ तिह को इम जिउ सवदागर को टूटि गयो मटु घी को ॥१७३॥
राह भयो तब ही निकसे हरि गवार सभै निकसे तिह नारे ॥
देव तबै हरखे मन मै पिखि कान्रह बचिओ हरि पंनग भारे ॥
गावत गीत सबै गण गंध्रब ब्रहम सभो मुख बेद उचारे ॥
आनंद स्याम भयो मन मै नग रछक जीति चले घरि भारे ॥१७४॥
कान्रह कढियो सिरि के मगि ह्वै न कढियो मुख के मगु जोर अड़ी के ॥
स्रउन भरियो इम ठाढि भयो पहरे पट जिउ मुनि स्रिंगमड़ी के ॥
एक कही इह की उपमा फुनि अउ कबि के मन मधि बड़ी के ॥
ढोवत ईट गुआर सनै हरि दउरि चड़े जनु सीस गड़ी के ॥१७५॥
इति अघासुर दैत बधहि ॥

अथ बछुरे गवार ब्रहमा चुरैबो कथनं ॥

सवैया ॥
राछस मारि गए जमुना तटि जाइ सभो मिलि अंन मंगायो ॥
कान्रह प्रवार परिओ मुरली कटि खोस लई मन मै सुख पायो ॥
कै छमका बरखै छटका कर बाम हूं सो सभ हूं वह खायो ॥
मीठ लगे तिह की उपमा कर कै गति कै हरि के मुख पायो ॥१७६॥
कोऊ डरै हरि के मुखि ग्रास ठगाइ कोऊ अपणे मुखि डारे ॥
होइ गए तनमै कछु नामक खेल करो संगि कान्रहर कारे ॥
ता छिन लै बछरे ब्रहमा इकठे करि कै सु कुटी मधि डारे ॥
ढूंढि फिरे न लहे सु करै बछरे अरु ग्वार नए करतारे ॥१७७॥

दोहरा ॥

जबै हरे ब्रहमा इहै तब हरि जी ततकालु ॥
किधो बनाए छिनकु मै बछरे संगि गवाल ॥१७८॥
सवैया ॥
रूप उही पट के रंग है वह रंग वहै सब ही बछरा को ॥
साझि परी सो गए हरि जी ग्रहि कोई लखै इतनो बल का को ॥
मात पिता सु लखे न लखे इक आदि को नामु मनी मन जा को ॥

◀ *बात इही समझी मन मै इह है अब खेल समापति वा को ॥179॥*

चूम लयो जसुदा सुत को सिर कान्रह बजाइ उठे मुरली तो ॥
बाल लखे अपुनो न किनी जन गो दवरी तिह सो हित कीतो ॥
होत कुलाहल पै ब्रिज मै नहि होत इते सु कहूं किम बीतो ॥
गावत गीत सने हरि ग्वारन लेह बलाइ बधु ब्रिज कीतो ॥१८०॥
प्रात भए हरि जी उठ कै बन बीच गए संग लै कर बछे ॥
गावत गीत फिरावत है छटका गहि गवार सभै करि हछे ॥

खेलत खेलत नंद को नंद सु आप ही ते गिरि को उठि गछे ॥
कोऊ कहै इह खेद गहै हम कोऊ कहै इह नाहनि नछे ॥१८१॥
होइ इकत्र सनै हरि ग्वारन लै अपुने संगि पै सभ गाई ॥
देखि तिनै गिरि के सिर ते मन मोहि बढाइ सभै उठि धाई ॥
गोप गए तिन पै चल कै जब जात पिखी तिन नैनन माई ॥
रोह भरे सु खरे न टरे सुत नंदहि के कहु बात सुनाई ॥१८२॥
नंद बाच कान्रह प्रति ॥
सवैया ॥
किउ सुत गऊअन लिआइ इहा इह तै हमरो सभ ही दधि खोयो ॥
चूंघ गए बछरा इन के इह ते हमरे मन मै भ्रम होयो ॥
कान्रह फरेब करियो तिन सो मन मोह महा तिन के जु करोयो ॥
बारि भयो तत क्रोध मनो तिह मै जल सीतल मोह समोयो ॥१८३॥
मोहि बढियो तिन के मन मै नहि छोडि सकै अपने सुत कोऊ ॥
गऊअन छोडि सकै बछरे इतनो मन मोह करै तब सोऊ ॥
पै गरूए ग्रिहि गे संगि लै तिन चउकि हली इहि बात लखोऊ ॥
देव डरी ममता इन पै कि चरित्र किधो हरि को इह होऊ ॥१८४॥
साल बितीत भइओ जब ही हरि जी बन बीच गए दिन कउनै ॥
देखन कउतक कौ चतुरानन सीघ्र भयो तिह को उठि गउनै ॥
ग्वार वहै बछुरे संगि है वह चक्रित जाइ गइओ हुइ तउनै ॥
देखि तिनै डर कै परि पाइन आइ कै आनंद दुंदभि छउनै ॥१८५॥
ब्रहमा बाच कान्रह जू प्रति ॥
सवैया ॥
हे करुणा निधि हे जग के पति अचुत हे बिनती सुन लीजै ॥
चूक भई हम ते तुमरी तिह ते अपराध छिमापन कीजै ॥
कान्रह कही इह बात छिमी हम न बिख अंम्रित छाडि कै पीजै ॥
लिआउ कहिओन लिआइ हों जाह सिताब अईयो नही ढील करीजै ॥१८६॥
लै बछरै ब्रहमा तब ही छिन मै चल कै हरि जी पहि आयो ॥
कान्रह मिले जब ही सभ ग्वार तबै मन मै तिन हंर सुख पायो ॥
लोप भयो संगि के बछरे तब भेद किनी लखि जान न पायो ॥
बाल बुझी न किनी उठि बोलि सु लिआउ वहै हम जो मिलि खायो ॥१८७॥
होइ इकत्र किधो ब्रिज बालक अंन अचियो सभनो जु पुरानो ॥
कान्रह कही हम नाग हन्यो हरि को इह खेल किनी नहि जानो ॥
होइ प्रसंन महा मन मै गरड़ाधुज को करि रछक मानो ॥
दान दयो हम को जीअ को इह मात पिता पहि जाइ बखानो ॥१८८॥
इति ब्रहमा बछरे आन पाइ परा ॥

अथ धेनक दैत बध कथनं ॥

सवैया ॥
बारह साल बितीत भए तु लगे तब कान्रह चरावन गाई ॥
सुंदर रूप बनियो इह को कह कै इह ताहि सराहत दाई ॥
ग्वार सनै बन बीच फिरै कबि नै उपमा तिह की लखि पाई ॥
कंसहि के बध के हित को जनु बाल चमूं भगवानि बनाई ॥१८९॥

कबितु ॥

कमल सो आनन कुरंग ता के बाके नैन कटि सम केहरि म्रिनाल बाहै ऐन है ॥
कोकिल सो कंठ कीर नासका धनुख भउ है बानी सुर सर जाहि लागै नहि चैन है ॥
त्रीअनि को मोहति फिरति ग्राम आस पास ब्रिहन के दाहबे को जैसे पति रैन है ॥
पुनि मंदि मति लोक कछु जानत न भेद या को एते पर कहै चरवारो स्याम धेन है ॥१९०॥
गोपी बाच कान्रह जू सो ॥

सवैया ॥
होइ इकत्र बधू ब्रिज की सभ बात कहै मुख ते इह स्यामै ॥
आनन चंद बने म्रिग से द्रिग राति दिना बसतो सु हिया मै ॥
बात नही अरि पै इह की बिरतात लखियो हम जान जीया मै ॥
कै डरपै हर के हरि को छपि मैन रहियो अब लउ तन या मै ॥१९१॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
संग हली हरि जी सभ ग्वार कही सभ तीर सुनो इह भईया ॥
रूप धरो अवतारन को तुम बात इहै गति की सुर गईया ॥
न हमरो अब को इह रूप सबै जग मै किनहूं लख पईया ॥
कान्रह कहियो हम खेल करै जोऊ होइ भलो मन को परचईया ॥१९२॥
ताल भले तिह ठउर बिखै सभ ही जन के मन के सुखदाई ॥
सेत सरोवर है अति ही तिन मै सरमा ससि सी दमकाई ॥
मधि बरेतन की उपमा कबि नै मुख ते इम भाखि सुनाई ॥
लोचन सउ करि कै बसुधा हरि के इह कउतक देखनि आई ॥१९३॥
रूप बिराजत है अति ही जिन को पिख कै मन आनंद बाढे ॥
खेलत कान्रह फिरै तिह जाइ बनै जिह ठउर बडे सर गाढे ॥
गवाल हली हरि के संग राजत देखि दुखी मन को दुख काढे ॥
कउतुक देखि धरा हरखी तिह ते तरु रोम भए तनि ठाढे ॥१९४॥
कान्रह तरै तरु के मुरली सु बजाइ उठियो तन को करि ऐडा ॥
मोह रही जमुना खग अउ हरि जछ सभै अरना अरु गैडा ॥
पंडित मोहि रहे सुन कै अरु मोहि गए सुन कै जन जैडा ॥
बात कही कबि नै मुख ते मुरली इह नाहिन रागन पैडा ॥१९५॥
आनन देखि धरा हरि को अपने मन मै अति ही ललचानी ॥
सुंदर रूप बनियो इह को तिह ते प्रितमा अति ते अति भानी ॥
स्याम कही उपमा तिह की अपुने मन मै फुनि जो पहिचानी ॥
रंगन के पट लै तन पै जु मनो इह की हुइबे पटरानी ॥१९६॥
गोप बाच ॥
सवैया ॥
ग्वार कही बिनती हरि पै इक ताल बडो तिह पै फल हछे ॥
लाइक है तुमरे मुख की करूआ जह दाख दसो दिस गुछे ॥
धेनुक दैत बडो तिह जाइ किधो हनि लोगन के उन रछे ॥
पुत्र मनो मधरोंद प्रभाति तिनै उठि प्रात समै वह भछे ॥१९७॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
जाइ कही तिन को हरि जी जह ताल वहै अरु है फल नीके ॥
बोलि उठिओ मुख ते मुसली सु तो अंम्रित के नहि है फुनि फीके ॥
मार है दैत तहा चल कै जिह ते सुर जाहि नभै दुख जी के ॥
होइ प्रसंनि चले तह को मिलि संख बजाइ सभै मुरली के ॥१९८॥
होइ प्रसंनि तहा हरि जी जु गए मिल कै तट पै सर भारे ॥
कै बल तो मुसली तन को तरु ते फर बूंदन जिउ धरि डारे ॥
धेनक क्रोध महा कर कै दोऊ पाइ ह्रिदे तिह साथ प्रहारे ॥
गोडन ते गहि फैक दयो हरि जिउ सिर ते गहि कूकर मारे ॥१९९॥
क्रोध भई धुजनी तिह की पति जान हतिओ इन ऊपरि आई ॥
गाइ को रूप धरिओ सभ ही तब ही खुर सो धरि धूरि उचाई ॥
कान्रह हली बलि कै तब ही चतुरंग दसो दिस बीच बगाई ॥
लै किरसान मनो तंगुली खल दानन ज्यो नभ बीचि उडाई ॥२००॥
इति स्री दसम सिकंधे पुराणे बचित्र नाटक क्रिसनावतारे धेनक दैत बधहि ॥
सवैया ॥
दैत हन्यो चतुरंग चमूं सुनि देव करै मिलि कान्रह बडाई ॥

भछ सभै फल गवार चले ग्रिहि धूर परी मुख पै छबि छाई ॥
ता छबि की उपमा अति ही कबि ने मुख ते इम भाखि सुणाई ॥
धावत घोरन की पग की रज छाइ लए रवि सी छबि पाई ॥२०१॥
सैन सनै हनि दैत गयो ग्रिहि गोप गए गुपीआ सभ आई ॥
मात प्रसंनि भई मन मै तिह की जु करै बहु भाति बडाई ॥
चावर दूध करियो खाहिबे कहु खाइ बहू तिह देह बधाई ॥
होइ बडी तुमरी चुटीआ इह ते फुनि बात सभै मिलि चाई ॥२०२॥
भोजन कै टिक गे हरि जी पलका पर अउर करै जु कहानी ॥
राज गयो तरनो मगु रैन लहियो सु लगियो वह पीअन पानी ॥
राति परी तब ही भरिभै तिन स्रउन सुनी अपने इह बानी ॥
जाहु कहियो तिन तउ हरि गयो ग्रिह जाइ मिलियो अपनी पटरानी ॥२०३॥
सोइ गए हरि प्रात भए फिरि लै बछरे बन गे गिरधारी ॥
मधि भए रवि के जमुना तटि धाइ गए जह थो सर भारी ॥
गो बछरे अरु गोप सभै गिरगे सभ प्रान डसे जब कारी ॥
धाइ कहियो मुसली प्रभ पै सभ सैन सखा तुमरी हरि मारी ॥२०४॥

दोहरा ॥

क्रिपा द्रिसटि चितवी तिनै जीव उठे ततकाल ॥
गऊ सभै अरु सुत तिनै अउ फुनि सभै गुपाल ॥२०५॥
उठि पाइन लागे तबै करहिं बडाई सोइ ॥
जीअ दान हम को दयो इह ते बडो न कोइ ॥२०६॥

अथ काली नाग नाथबो ॥

दोहरा ॥

गोप जान कै आपने कीने मनै बिचार ॥
दुसट नाग सर मै बसे ता को लेउ निकार ॥२०७॥
सवैया ॥
ऊच कदंमहि को तरु थो तिह पै चड़ि कै हरि कूद परिओ ॥
तिन संक करी मन मै न कछू फुनि धीरज गाढ धरियो न टरिओ ॥
मनुखोसत लौ जल उच भयो निकसियो तब नाग बडो न डरियो ॥
पट पीत धरे तन पै नर देखि महा बलि कै तिन जुध करियो ॥२०८॥
बाध लयो हरि को तन सो कर क्रुध किधो तिह को तन काटे ॥
ढीलो रहियो हुइ पै हरि जी पिखि या रन के हीयरे फुनि फाटे ॥
रोवत आवत है पतनी ब्रिज ठोकत मूंड उखारत झाटे ॥
आइ है मार उसै नही रोवहु नंद इहै कहि कै इन डाटे ॥२०९॥
कान्रहि लपेट बडो वह पंनग फूकत है करि क्रुधहि कैसे ॥
जिउ धन पात्र गए धन ते अति झूरत लेत उसासन तैसे ॥
बोलत जिउ धमीआ हरि मै सुर कै मधि सवास भरे वह ऐसे ॥
भूभर बीच परे जल जिउ तिह ते फुनि होत महा धुनि जैसे ॥२१०॥
चक्रत होइ रहे ब्रिज बालक मार लए हरि जी इह नागै ॥
दछन तीअ भुजा गहि कै इह मति लगै दुख अउ सुख भागै ॥
खोजत खोजत सभै ब्रिज के जन कउतक देखि लयो इह आगै ॥
स्यामहि स्याम बडो अहि काटत जिउ रुच कै नर खावत सागै ॥२११॥
रोवन लाग जबै जसुदा चुप ताहि करावत पै जु अली है ॥
दैत त्रिनाव्रत अउर बकी व बकासुर हने इह कान्रह बली है ॥
आइ है मार अबै इह सापहि बोलि उठिओ इह भात हली है ॥
तोर डरै सभ ही इह के फनि पै करुना निधि जोर छली है ॥२१२॥

कबियो बाच ॥
सवैया ॥
जानि दुखी अपन्नयो जन कौ अपनो तन ता तै छडाइ लयो है ॥
बकत्र बिलोक बडो वह पंनग पै मन भीतर क्रुध भयो है ॥
सउ फन को सु फुलाइ उचाइ कै सामुहि ताहि के धाइ गयो है ॥
कूद कै कान्नह बचाइ कै दावहि उपरि माथ जु ठाढो भयो है ॥२१३॥
कूदत है चड़ि सिर ऊपरि स्रउन संबूह चलै सिर ता ते ॥
प्रान लगे छुटने जब ही छिन मैन गई उड कै मुखरा ते ॥
तउ हरि जी बलि कै तन को सर तीर निकास लयो बहु भाते ॥
जात बडो सर तीर बहियो रसरे बंध खैचत है चहूं घाते ॥२१४॥
काली नाग की त्रियो बाच ॥
सवैया ॥
तउ तिह की त्रिया सभ ही सुत अंजुल जोर कै यौ घिघयावै ॥
रछ करो इह की हरि जी तुम पै बरु दान इहै हम पावै ॥
अंम्रित देत वहै हम लिआवत बिख दई वह ही हम लिआवै ॥
दोस नही हमरे पति को कछु बात कहै अरु सीस झुकावै ॥२१५॥
त्रास बडो अहि के रिपु को करि भागि सरा मधि आइ छपे थे ॥
गरबु बडो हमरे पति मै अब जानि हमै हरि नाहि जपे थे ॥
हे जग के पति हे करुना निधि तै दस रावन सीस कपे थे ॥
मूरख बात जनी न कछू परवार सनै हम इउ ही खपे थे ॥२१६॥
कान्नह बाच काली सो ॥
सवैया ॥
बोलि उठिओ तब इउ हरि जी अब छाडत हउ तुम दछनि जईयो ॥
रंचक न बसीयो सर मै सभ ही सुत लै संग बाटहि पईयो ॥
सीघ्रता ऐसी करो तुम हूं तिरीआ लईयो अरु नामु सु लईयो ॥
छोडि दयो हरि नाग बडो थकि जाइ कै मधि बरेतन पईयो ॥२१७॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
हेरि बडो हरि भै वह पंनग पै अपने ग्रिह को उठि भागा ॥
बारू के मधि गयो पर कै जन सोइ रहियो सुख कै निसि जागा ॥
गरब गयो गिर कै तिह को रन कै हरि के रस सो अनुरागा ॥
लेट रहिओ कर के उपमा इह डारि चले किरसान सुहागा ॥२१८॥
सुधि भई जब ही उह को तब ही उठ कै हरि पाइन लागिओ ॥
पउढि रहिओ थक कै सुनि मो पति पाइ लगिओ जब ही फुनि जागिओ ॥
दी धरि मोरि सु नैकु बिखै तुम कान्नह कही तिह को उठि भागिओ ॥
देखि लता तुम कउ न बधै मम बाहन मो रस मो अनुरागिओ ॥२१९॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे काली नाग निकारबो बरननं ॥

अथ दान दीबो ॥

सवैया ॥
नागि बिदा करि कै गरड़ध्वज आइ मिलिओ अपुने परवारै ॥
धाइ मिलिओ गरे ताहि हली अरु मात मिली तिह दूख निवारै ॥
स्रिंग धरे हरि धेन हजार तबै तिह के सिर ऊपरि वारै ॥
स्याम कहै मन मोह बढाइ बहु पुंन कै बामन को दै डारै ॥२२०॥
लाल मनी अरु नाग बडे नग देत जवाहर तीछन घोरे ॥
पुहकर अउ बिरजे चुनि कै जरबाफ दिवावत है दिज जोरे ॥
मोतिनि हार हीरे अरु मानिक देवत है भरि पानन बोरे ॥
कंचन रोकिन के गहने गड़ि देत कहै सु बचे सुत मोरे ॥२२१॥

अथ दावानल कथनं ॥

सवैया ॥
होइ प्रसंनि सभे ब्रिज के जन रैन परे घर भीतरि सोए ॥
आग लगी सु दिसा बिदिसा मधि जाग तबै तिह ते डरि रोए ॥
रछ्छ करै हमरी हरि जी इह चिति बिचारि तहा कहु होए ॥
द्रिग बात कही करुना निधि मीच लयो इतनै सु तऊ दुख खोए ॥२२२॥
मीच लए द्रिग जउ सभ ही नर पान करियो हरि जी हरिदौ तउ ॥
दोख मिटाइ दयो पुर को सभ ही जन के मन को हनि दयो भउ ॥
चिंत कछू नहि है तिह को जिन को करुनानिधि दूर करै खउ ॥
दूर करी तपता तिह की जनु डार दयो जल को छल कै रउ ॥२२३॥

कबितु ॥

आखै मिटवाइ महा बपु को बढाइ अति सुख मनि पाइ आगि खाइ गयो सावरा ॥
लोकन की रछ्छन के काज करुना के निधि महा छल करि कै बचाइ लयो गावरा ॥
कहै कबि स्याम तिन काम करिओ दुखु करि ता को फुनि फैल रहिओ दसो दिस नावरा ॥
दिसटि बचाइ साथ दातन चबाइ सो तो गयो है पचाइ जैसे खेले साग बावरा ॥२२४॥
इति स्री क्रिसनावतारे दावानल ते बचैबो बरननं ॥

अथ गोपिन सो होली खेलबो ॥

सवैया ॥
माघ बितीत भए रुति फागुन आइ गई सभ खेलत होरी ॥
गावत गीत बजावत ताल कहै मुख ते भरूआ मिलि होरी ॥
डारत है अलिता बनिता छटिका संगि मारत बैसन थोरी ॥
खेलत स्याम धमार अनूप महा मिलि सुंदरि सावल गोरी ॥२२५॥
अंत बसंत भए रुति ग्रीखम आइ गई हर खेल मचाइओ ॥
आवहु मिक दुहूं दिस ते तुम कान्रह भए धनठी सुख पायो ॥
दैत प्रलंब बडो कपटी तब बालक रूप धरियो न जनायो ॥
कंध चड़ाइ हली को उडिओ तिनि मूकन सो धरि मारि गिरायो ॥२२६॥
केसव राम भए धनठी मिक बाल कए तब ही सभ पिआरे ॥
दैत मिकियो सुत नंदहि के संगि खेलि जित्यो मुसली हरि हारे ॥
आव चड़ो न चड़िओ सु कहियो इन पै तिह के बपु को पग धारे ॥
मारि गिराइ दयो धरनी पर बीर बडो उन मूकन मारे ॥२२७॥
इति स्री बचित्र नाटके क्रिसनावतारे प्रलंब दैत बधहि ॥

अथ लुक मीचन खेल कथनं ॥

सवैया ॥
मारि प्रलंब लयो मुसली जब याद करी हरि जी तब गाई ॥
चूमन लाग तबै बछुरा मुख धेन वहै उन की अरु माई ॥
होइ प्रसंन्य तबै करुनानिध तउ लुक मीचन खेल मचाई ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि के मन मै बहु भातिन भाई ॥२२८॥

कबितु ॥

बैठि करि ग्वार आखै मीचै एक ग्वार हूं की छोरि देत ता को सो तो अउरो गहै धाइ कै ॥
आखै मूंदत है तब ओही गोप हूं की फेरि जा के तन को जो छुऐ कर साथ जाइ कै ॥
तह तो छल बल कै पलावै हाथि आवै नही तउ मिटावै आखै आप ही ते सो तो आइ कै ॥
कहै कबि स्याम ता की महिमा न लखी जाइ ऐसी भाति खेलै कान्रह महा सुखु पाइ कै ॥२२९॥
सवैया ॥
अंत भए रुति ग्रीखम की रुति पावस आइ गई सुखदाई ॥

कान्रह फिरै बन बीथिन मै संगि लै बछरे तिन की अरु माई ॥
बैठि तबै फिरि मध गुफा गिरि गावत गीत सभै मनु भाई ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि ने मुख ते इम भाखि सुनाई ॥२३०॥
सोरठि सारंग अउ गुजरी ललता अरु भैरव दीपक गावै ॥
टोडी अउ मेघ मल्रहार अलापत गौड अउ सुध मल्रहार सुनावै ॥
जैतसरी अरु मालसिरी अउ परज सु रागसिरी ठट पावै ॥
स्याम कहै हरि जी रिझ कै मुरली संग कोटक राग बजावै ॥२३१॥

कबितु ॥

ललत धनासरी बजावहि संगि बासुरी किदारा और मालवा बिहागड़ा अउ गूजरी ॥
मारू अउ परज और कानड़ा कलिआन सुभ कुकभ बिलावलु सुनै ते आवै मूजरी ॥
भैरव पलासी भीम दीपक सु गउरी नट ठाढो द्रुम छाइ मै सु गावै कान्रह पूजरी ॥
ता ते ग्रिह तिआगि ता की सुनि धुनि स्रोनन मै म्रिगनैनी फिरत सु बनि बनि ऊजरी ॥२३२॥
सवैया ॥
सीत भई रुति कातिक की मुनि देव चड़िओ जल ह्वै गयो थोरो ॥
कान्रह कनीरे के फूल धरे अरु गावत बेन बजावत भोरो ॥
स्याम किधो उपमा तिह की मन मधि बिचारु कबितु सु जोरो ॥
मैन उठियो जगि कै तिन कै तनि लेत है पेच मनो अहि तोरो ॥२३३॥
गोपी बाच ॥
सवैया ॥
बोलत है मुख ते सभ गवारिन पुंनि करिओ इन हूं अति माई ॥
जग्य करियो कि करियो तप तीरथ गंध्रब ते इन कै सिछ पाई ॥
कै कि पड़ी सितबानहु ते कि किधो चतुराननि आप बनाई ॥
स्याम कहै उपमा तिह की इह ते हरि ओठन साथ लगाई ॥२३४॥
सुत नंद बजावत है मुरली उपमा तिह की कबि स्याम गनो ॥
तिह की धुनि को सुनि मोह रहे मुनि रीझत है सु जनो रु कनो ॥
तन काम भरी गुपीआ सभ ही मुख ते इह भातन जवाब भनो ॥
मुख कान्रह गुलाब को फूल भयो इह नालि गुलाब चुआत मनो ॥२३५॥
मोहि रहे सुनि कै धुनि कौ म्रिग मोहि पसार गे खग पै पखा ॥
नीर बहिओ जमुना उलटो पिखि कै तिह को नर खोल रे चखा ॥
स्याम कहै तिन को सुनि कै बछुरा मुख सो कछु न चुगै कखा ॥
छोडि चली पतनी अपने पति तारक ह्वै जिम डारत लखा ॥२३६॥
कोकिल कीर कुरंगन केहरि मैन रहियो ह्वै कै मतवारो ॥
रीझ रहे सभ ही पुर के जन आनन पै इह तै ससि हारो ॥
अउ इह की मुरली जु बजै तिह ऊपरि राग सभै फुनि वारो ॥
नारद जात थकै इह तै बंसुरी जु बजावत कानर कारो ॥२३७॥
लोचन है म्रिग के कटि केहरि नाक किधो सुक सो तिह को है ॥
ग्रीव कपोत सी है तिह की अधरा पीआ से हरि मूरति जो है ॥
कोकिल अउ पिक से बचनाम्रित स्याम कहै कबि सुंदर सोहै ॥
पै इह ते लज कै अब बोलत मूरति लैन करै खग रोहै ॥२३८॥
फूल गुलाब न लेत है ताब सहाब को आब ह्वै देखि खिसानो ॥
पै कमला दल नरगस को गुल लजत ह्वै फुनि देखत तानो ॥
स्याम किधो अपुने मन मै बरता गनि कै कबिता इह ठानो ॥
देखन को इन के सम पूरब पछ्रम डोलै लहै नहि आनो ॥२३९॥
मंघर मै सभ ही गुपीआ मिलि पूजत चंडि पते हरि काजै ॥
प्रात समे जमुना मधि न्रहावत देखि तिनै जलजं मुख लाजै ॥
गावत गीत बिलावल मै जुरि बाहनि स्याम कथा इह साजै ॥
अंगि अनंग बढिओ तिन के पिख कै जिह लाज को भाजन भाजै ॥२४०॥
गावत गीत बिलावल मै सभ ही मिलि गोपिन उजल कारी ॥
कानर को भरता करबे कहु बाछ्रत है पतली अरु भारी ॥

स्याम करै तिन के मुख कौ पिखि जोति कला ससि की फुनि हारी ॥
न्रहावत है जमुना जल मै जनु फूल रही ग्रिह मै फुलवारी ॥२४१॥
न्रहावत है गुपीआ जल मै तिन के मन मै फुनि हउल न को ॥
गुन गावत ताल बजावत है तिह जाइ किधौ इक ठउलन को ॥
मुखि ते उचरै इह भाति सभै इतनो सुख न हरि धउलन को ॥
कबि स्याम बिराजत है अति सही इक बनिओ सर सुंदर कउलन को ॥२४२॥
गोपी बाच देवी जू सो ॥
सवैया ॥
लै अपुने कर जो मिटीआ तिह थाप कहै मुख ते जु भवानी ॥
पाइ परै तिह के हित सो करि कोटि प्रनामु कहै इह बानी ॥
पूजत है इह ते हम तो तुम देहु वहै जीअ मै हम ठानी ॥
ह्वै हमरो भरता हरि जी मुखि सुंदरि है जिह को ससि सानी ॥२४३॥
भालि लगावत केसर अछत चंदन लावत है सित कै ॥
फुनि डारत फूल उडावत है मखीआ तिह की अति ही हित कै ॥
पट धूप पचाम्रित दछना पान प्रदछना देत महा चित कै ॥
बरबे कहु कान्रह उपाउ करै मित हो सोऊ तात किधौ कित कै ॥२४४॥
गोपी बाच देवी जू सो ॥

कबितु ॥

दैतन संघारनी पतित लोक तारनी सु संकट निवारनी कि ऐसी तूं सकति है ॥
बेदन उधारनी सुरोंद्र राज कारनी पै गउरजा की जागै जोति अउर जान कत है ॥
धूअ मै न धरा मै न धिआन धारी मै पै कछू जैसे तेरे जोति बीच आनन छकति है ॥
दिनस दिनेस मै दिवान मै सुरेस मै सुपत महेस जोति तेरी ऐ जगति है ॥२४५॥
बिनती करत सभ गोपी करि जोरि जोरि सुनि लेहु बिनती हमारी इह चंडिका ॥
सुर तै उबारे कोटि पतित उधारे चंड मुंड मुंड डारे सुंभ निसुंभ की खंडिका ॥
दीजै मागियो दान ह्वै प्रतछ कहै मेरी माई पूजे हम तुमै नाही पुजै सुत गंडका ॥
ह्वै करि प्रसंन्य ता को कहिओ सीघ्र मान दीनो वहै बर दान फुनि रानिन की मंडिका ॥२४६॥
देवी जी बाच गोपिन सो ॥
सवैया ॥
ह्वै भरता अब सो तुमरो हरि दान इहे दुरगा तिन दीना ॥
सो धुनि स्रउनन मै सुन कै तिन कोटि प्रनाम तबै उठि कीना ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने अपने मन मै फुनि चीना ॥
है इन को मनु कानर मै अउ जो पै रस कानर के संगि भीना ॥२४७॥
पाइ परी तिह के तब ही सभ भाति करी बहु ताहि बडाई ॥
है जग की करता हरता दुख है सभ तू गन गंध्रब माई ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि ने मुख ते इम भाखि सुनाई ॥
लाल भई तब ही गुपीआ फुनि बात जबै मन बाछत पाई ॥२४८॥
लै बरदान सभै गुपीआ अति आनंद कै मनि डेरन आई ॥
गावत गीत सभै मिल कै इक ह्वै कै प्रसंन्य सु देत बधाई ॥
पातन साथ खरी तिन की उपमा कबि ने मुख ते इम गाई ॥
मानहु पाइ निसापति को सर मधि खिरी कवीआ धुर ताई ॥२४९॥
प्रात भए जमना जल मै मिलि धाइ गई सभ ही गुपीआ ॥
मिलि गावत गीत चली तिह जा करि आनंद भामिन मै कुपीआ ॥
तब ही फुनि कान्रह चले तिह जा जमुना जल को फुनि जा जु पीआ ॥
सोऊ देखि तबै भगवान कहे नहि बोलहु री करि हो चुपीआ ॥२५०॥

अथ चीर चरन कथनं ॥

सवैया ॥
न्रहावनि लागि जबै गुपीआ तब लै पट कान चरियो तरु ऊपै ॥

तउ मुसकयान लगी मधि आपन कोइ पुकार करे हरि जू पै ॥
चीर हरे हमरे छल सो तुम सो ठग नाहि किधो कोऊ भू पै ॥
हाथन साथ सु सारी हरी द्रिग साथ हरो हमरो तुम रूपै ॥२५१॥
गोपी बाच कान जू सो ॥
सवैया ॥
स्याम कहियो मुख ते गुपीआ इह कान्रह सिखे तुम बात भली है ॥
नंद की ओर पिखो तुम हूं दिखो भ्रात की ओर कि नाम हली है ॥
चीर हरे हमरे छल सो सुनि मारि डरै तुहि कंस बली है ॥
को मर है हम को तुमरो न्रिप तोर डरै जिम कउल कली है ॥२५२॥
कान्रह बाच गोपी सो ॥
सवैया ॥
कान्रह कही तिन को इह बात न दिओ पट हउ निकरियो बिनु तो को ॥
किउ जल बीच रही छप कै तन काहि कटावत हो पहि जोको ॥
नाम बतावत हो न्रिप को तिह को फुनि नाहि कछू डरु मो को ॥
केसन ते गहि कै तप की अगनी मधि ईंधन जिउ उहि झोको ॥२५३॥
रूखि चरे हरि जी रिझ कै मुख ते जब बात कही इह ता सो ॥
तउ रिसि बात कही उन हूं इह जाइ कहै तुहि मात पिता सो ॥
जाइ कहो इह कान्रह कही मन है तुमरो कहबे कहु जा सो ॥
जो सुनि कोऊ कहै हम को इह तो हम हूं समझै फुनि वा सो ॥२५४॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
देउ बिना निकरै नहि चीर कहियो हसि कान्रह सुनो तुम पिआरी ॥
सीत सहो जल मै तुम नाहक बाहरि आवहो गोरी अउ कारी ॥
दे अपुने अगूआ पिछूआ कर बारि तजो पतली अरु भारी ॥
यौ नहि देउ कहिओ हरि जी तसलीम करो कर जोरि हमारी ॥२५५॥
फेरि कही हरि जी तिन सो रिझ कै इह बात सुनो तुम मेरी ॥
जोरि प्रनाम करो हमरो कर लाज की काटि सभै तुम बेरी ॥
बार ही बार कहियो तुम सो मुहि मानहु सीघ्र किधो इह हे री ॥
नातुर जाइ कहो सभ ही पहि सउह लगै फुनि ठाकुर केरी ॥२५६॥
गोपी बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
जो तुम जाइ कहो तिन ही पहि तो हम बात बनावहि ऐसे ॥
चीर हरे हमरे हरि जी दई बारि ते निआरी कढै हम कैसे ॥
भेद कहै सभ ही जसुधा पहि तोहि करै सरमिंदत वैसे ॥
जिउ नर को गहि कै तिरीया हूं सु मारत लातन मूकन जैसे ॥२५७॥
कान्रह बाच ॥

दोहरा ॥

बात कही तब इह हरी काहि बंधावत मोहि ॥
नमसकार जो न करो मोहि दुहाई तोहि ॥२५८॥
गोपी बाच ॥
सवैया ॥
काहि खिझावत हो हम को अरु देत कहा जदुराइ दुहाई ॥
जा बिधि कारन बात बनावत सो बिधि हम हूं लखि पाई ॥
भेद करो हम सो तुम नाहक बात इहै मन मै तुहि आई ॥
सउह लगै हम ठाकुर की जु रहै तुमरी बिनु मात सुनाई ॥२५९॥
कान्रह बाच गुपीआ सो ॥
सवैया ॥
मा सुनि है तब का करि है हमरो सुनि लेहु सभै ब्रिज नारी ॥
बात कही तुम मूड़न की हम जानत है तुम हो सभ बारी ॥

सीखत हो रस रीति अबै इह कान्ह कही तुम हो मुहि पिआरी ॥
खेलन कारन को हम हूं जु हरी छल कै तुम सुंदर सारी ॥२६०॥
गोपी बाच ॥
सवैया ॥
फेरि कही मुख ते इम गोपिन बात इसी मनु ए पट दैहो ॥
सउह करो मुसलीधर की जसुधा नंद की हम को डर कैहो ॥
कान्ह बिचारि पिखो मन मै इन बातन ते तुम न किछु पैहो ॥
देहु कहियो जल मै हम को इह देहि असीस सभै तुहि जैहो ॥२६१॥
गोपी बाच ॥
सवैया ॥
फेरि कही मुख ते मिलि गोपन नेह लगै हरि जी नहि जोरी ॥
नैनन साथ लगै सोऊ नेहु कहै मुख ते इह सावल गोरी ॥
कान्ह कही हसि कै इह बात सुनो रस रीति कहो मम होरी ॥
आखन साथ लगै टकवा फुनि हाथन साथ लगै सुभ सोरी ॥२६२॥
फेरि कही मुखि ते गुपीआ हमरे पट देहु कहियो नंद लाला ॥
फेरि इसनान करै न इहा कहि है हमि लोगन आछन बाला ॥
जोरि प्रनाम करो हम को कर बाहर ह्वै जल ते ततकाला ॥
कान्ह कही हसि कै मुखि तै करि हो नही ढील देउ पट हाला ॥२६३॥

दोहरा ॥

मंत्र सभन मिलि इह करियो जल को तजि सभ नारि ॥
कानर की बिनती करो कीनो इहै बिचार ॥२६४॥
सवैया ॥
दै अगूआ पिछूआ अपुने कर पै सभ ही जल तिआगि खरी है ॥
कान के पाइ परी बहु बारन अउ बिनती बहु भाति करी है ॥
देहु कहियो हमरी सरंहीआ तुम जो करि कै छल साथ हरी है ॥
जे कहि हो मनि है हम सो अति ही सभ सीतहि साथ ठरी है ॥२६५॥
कान्ह बाच ॥
सवैया ॥
कान्ह कही हसि बात तिनै कहि है हम जो तुम सो मन हो ॥
सभ ही मुख चूमन देहु कहियो चुम है हम हूं तुम हूं गनि हो ॥
अरु तोरन देहु कहियो सभ ही कुच नातर हउ तुम को हनि हो ॥
तब ही पट देउ सभै तुमरे इह झूठ नही सति कै जनि हो ॥२६६॥
फेरि कही मुख ते हरि जी सुनि री इक बात कहो संग तेरे ॥
जोरि प्रनाम करो कर सो तुम काम करा उपजी जीअ मेरे ॥
तौ हम बात कही तुम सो जब घात बनी सुभ ठउर अकेरे ॥
दान लहै जीअ को हम हूं हसि कान्ह कही तुमरो तन हेरे ॥२६७॥
कबियो बाच दोहरा ॥
कान्ह जबै गोपी सभै देखियो नैन नचात ॥
ह्वै प्रसंनि कहने लगी सभै सुधा सी बात ॥२६८॥
गोपी बाच कान्ह सो ॥
सवैया ॥
कान्ह बहिक्रम थोरी तुमै खेलहु न अपनो घर काहो ॥
नंद सुनै जसुधा तपतै तिह ते तुम कान्ह भए हरका हो ॥
नेहुं लगै नह जोर भए तुम नेहु लगावत हो बर काहो ॥
लेहु कहा इन बातन ते रस जानत का अजहूं लरका हो ॥२६९॥

कबितु ॥

कमल से आनन कुरंगन से नेत्रन सो तन की प्रभा मै सारे भावन सो भरीआ ॥

राजत है गुपीआ प्रसंन भई ऐसी भाति चंद्रमा चरहै ते जिउ बिराजै सेत हरीआ ॥
रस ही की बातै रस रीति ही के प्रेम हूं मै कहै कबि स्याम साथ कान्रह जू के खरीआ ॥
मदन के हारन बनाइबे के काज मानो हित कै परोवत है मोतिन की लरीआ ॥२७०॥
सवैया ॥
काहे को कान्रह जू काम के बान लगावत हो तन के धनु भउहै ॥
काहे कउ नेहु लगावत हो मुसकावत हो चलि आवत सउहै ॥
काहे कउ पाग धरो तिरछी अरु काहे भरो तिरछी तुम गउहै ॥
काहे रिझावत हौ मन भावत आहि दिववात है हम सउहै ॥२७१॥
बात सुनी हरि की जब स्रउनन रीझ हसी सभ ही ब्रिज बामै ॥
ठाढी भई तरु तीर तबै हरूए हरूए चल कै गज गामै ॥
बेरि बने तिन नेत्रन के जनु मैन बनाइ धरे इह दामै ॥
स्याम रसातुर पेखत यौ जिम टूटत बाज छुधा जुत तामै ॥२७२॥
काम से रूप कलानिधि से मुख कीर से नाक कुरंग से नैनन ॥
कंचन से तन दारिम दात कपोत से कंठ सु कोकिल बैनन ॥
कान्रह लगियो कहने तिन सो हसि कै कबि स्याम सहाइक धैनन ॥
मोहि लयो सभ ही मनु मेरो सु भउह नचाइ तुमै संग सैनन ॥२७३॥
कान्रह बडे रस के हिरीआ सब ही जल बीच अचानक हेरी ॥
सउह तुमै जसुधा कहु बात किसारथ कौ इह जा हम घेरी ॥
देहु कहियो सभ ही हमरे पट होहिं सभै तुमरी हम चेरी ॥
कैसे प्रनाम करै तुम को अति लाज करै हरि जी हम तेरी ॥२७४॥
पाप करियो हरि कै तुमरे पट अउ तरु पै चड़ि सीत सहा है ॥
जो हम प्रेम छके अति ही तुम को हम ढूंढत ढूंढ लहा है ॥
जोर प्रनाम करो हम को कर सउह लगै तुम मेरी हहा है ॥
कान्रह कही हसि बात सुनो सुभ चार भई तु बिचार कहा है ॥२७५॥
संक करो हम ते न कछू अरु लाज कछू जीअ मै नही कीजै ॥
जोरि प्रनाम करो हम को कर दासन की बिनती सुनि लीजै ॥
कान्रह कही हसि कै तिन सो तुमरे म्रिग से द्रिग देखत जीजै ॥
डेरन नाहि कहै तुमरे इह ते तुमरो कछू नाहिन छीजै ॥२७६॥

दोहरा ॥

कान्रह जबै पट न दए तब गोपी सभ हारि ॥
कान्रहि कहै सो कीजीऐ कीनो इहै बिचार ॥२७७॥
सवैया ॥
जोरि प्रनाम करो हरि को कर आपस मै कहि कै मुसकानी ॥
स्याम लगी कहने मुख ते सभ ही गुपीआ मिलि अंम्रित बानी ॥
होहु प्रसंन्य कहियो हम पै करु बात कही तुम सो हम मानी ॥
अंतर नाहि रहियो इह जा अब सोऊ भली तुम जो मनि भानी ॥२७८॥
काम के बान बनी बरछी भरुटे धनु से द्रिग सुंदर तेरे ॥
आनन है ससि सो अलकै हरि मोहि रहै मन रंचक हेरे ॥
तउ तुम साथ करी बिनती जब काम करा उपजी जीअ मेरे ॥
चुंबन देहु कहिओ सभ ही मुख सउह हमै कहि है नहि डेरे ॥२७९॥
होइ प्रसंन्य सभै गुपीआ मिलि मान लई जोऊ कान्रह कही है ॥
जोरि हुलास बढियो जीअ मै गिनती सरिता मग नेह बही है ॥
संक छुटी दुहूं के मन ते हसि कै हरि तो इह बात कही है ॥
बात सुनो हमरी तुम हूं हम को निधि आनंद आज लही है ॥२८०॥
तउ फिरि बात कही उन हूं सुनि री हरि जू पिखि बात कही ॥
सुनि जोर हुलास बढिओ जीअ मै गिनती सरता मग नेह बही ॥
अब संक छुटी इन कै मन की तब ही हसि कै इह बात कही ॥
अब सति भयो हम कौ दुरगा बरु मात सदा इह सति सही ॥२८१॥
कान्रह तबै कर केल तिनो संगि पै पट दे करि छोर दई है ॥

होइ इकत्र तबै गुपीआ सभ चंडि सराहत धाम गई है ॥
आनंद अति सु बढियो तिन के जीअ सो उपमा कबि चीन लई है ॥
जिउ अति मेघ परै धरि पै धरि ज्यो सबजी सुभ रंग भई है ॥२८२॥
गोपी बाच ॥
अड़िल ॥
धंनि चंडिका मात हमै बरु इह दयो ॥
धंनि दियोस है आज कान्रह हम मित भयो ॥
दुरगा अब इह किरपा हम पर कीजीऐ ॥
हो कानर को बहु दिवस सु देखन दीजीऐ ॥२८३॥
गोपी बाच देवी जू सो ॥
सवैया ॥
चंडि क्रिपा हम पै करीऐ हमरो अति प्रीतम होइ कनईया ॥
पाइ परे हम हूं तुमरे हम कान्रह मिलै मुसलीधर भईया ॥
याही ते दैत संघारन नाम किधो तुमरो सभ ही जुग गईया ॥
तउ हम पाइ परी तुमरे जब ही तुम ते इह पै बर पईया ॥२८४॥

कबितु ॥

दैतन की म्रित साध सेवक की बरता तू कहै कबि स्याम आदि अंत हूं की करता ॥
दीजै बरदान मोहि करत बिनंती तोहि कान्रह बरु दीजै दोख दारद की हरता ॥
तू ही पारबती असट भुजी तुही देवी तुही तुही रूप छुधा तुही पेट हूं की भरता ॥
तुही रूप लाल तुही सेत रूप पीत तुही तुही रूप धरा को है तुही आप करता ॥२८५॥
सवैया ॥
बाहनि सिंघ भुजा असटा जिह चक्र त्रिसूल गदा कर मै ॥
बरछी सर ढाल कमान निखंग धरे कटि जो बर है बरमै ॥
गुपीआ सभ सेव करै तिह की चित दै तिह मै हितु कै हरि मै ॥
पुनि अछत धूप पंचाम्रित दीप जगावत हार डरै गर मै ॥२८६॥

कबितु ॥

तोही को सुनै है जाप तेरो ही जपै है धिआन तेरो ही धरै है न जपै है काहूं आन को ॥
तेरो गुन गै है हम तेरे ही कहै है फूल तोही पै डरै है सभ राखै तेरे मान को ॥
जैसे बरु दीनो हमै होइ कै प्रसंनि पाछै तैसे बर दीजै हमै कान्रह सुर ग्यान को ॥
दीजीऐ बिभूति कै बनासपती दीजै कैधो माला दीजै मोतिन कै मुंद्रा दीजै कान्रह को ॥२८७॥
देवी बाच ॥
सवैया ॥
तो हस बात कही दुरगा हम तो तुम को हरि को बरु दै है ॥
होहु प्रसंनि सभै मन मै तुम सत कहियो नही झूठ कहै है ॥
कानहि को सुख हो तुम को हम सो सुख सो अखीआ भरि लै है ॥
जाहु कहियो सभ ही तुम डेरन काल्रह वहै बरु को तुम पै है ॥२८८॥
कबियो बाच दोहरा ॥
ह्वै प्रसंन्य सभ ब्रिज बधू तिह को सीस निवाइ ॥
परि पाइन करि बेनती चली ग्रिहन कौ धाइ ॥२८९॥
सवैया ॥
आपस मै कर जोरि सभै गुपीआ चलि धाम गई हरखानी ॥
रीझ दयो हम को दुरगा बरु स्याम चली कहती इह बानी ॥
आनंद मत भरी मद सो सभ सुंदर धामन को निजकानी ॥
दान दयो दिजहूं बहुतियो मन इछत है हरि हो हम जानी ॥२९०॥

दोहरा ॥

समै भलै इक घात सिउ ह्वै इकत्र सभ बाल ॥

अंग सभै गिननै लगी करि कै बात रसाल ॥२९१॥
सवैया ॥
कोऊ कहै हरि को मुख सुंदर कोऊ कहै सुभ नाक बनियो है ॥
कोऊ कहै कटि केहरि सी तन कंचन सो रिझि काहू गनियो है ॥
नैन कुरंग से कोऊ गनै जसु ता छबि को कबि स्याम भनियो है ॥
लोगन मै जिम जीव बनियो तिन के तन मै तिम कान्रह मनियो है ॥२९२॥
कान्रह को पेखि कलानिधि सौ मुख रीझ रही सभ ही ब्रिज बारा ॥
मोहि रहे भगवान उते इनहूं दुरगा बरु चेटक डारा ॥
कानि टिकै ग्रिह अउर बिखै तिह को अति ही जसु स्याम उचारा ॥
जीव इकत्र रहै तिन को इम टूट गए जिउ म्रिनाल की तारा ॥२९३॥
नेहु लगियो इन को हरि सौ अरु नेहु लगियो हरि को इन नारे ॥
चैन परै दुह को नहि द्वै पल न्रहावन जावत होत सवारे ॥
स्याम भए भगवान इनै बसि दैतन के जिह ते दल हारे ॥
खेल दिखावत है जग कौ दिन थोरन मै अब कंस पछारे ॥२९४॥
उत जागत स्याम इतै गुपीआ कबि स्याम कहै हित कै संगि ता के ॥
रीझ रही तिह पै सभ ही पिखि नैनन सो फुनि कान्रहर बाके ॥
प्रेम छकी न परै इन को कलि काम बढियो अति ही तन वा के ॥
खेलहि प्रातहि काल भए हम नाहि लखै हम कै जन गा के ॥२९५॥
प्रात भयो चुहलात चिरी जलजात खिरे बन गाइ छिरानी ॥
गोप जगे पति गोप जगियो कबि स्याम जगी अरु गोपनि रानी ॥
जाग उठे तब ही करुनानिधि जागि उठियो मुसलीधर मानी ॥
गोप गए उत न्रहान करै इत कान्रह चले गुपीआ निजकानी ॥२९६॥
बात कहै रस की हस कै नहि अउर कथा रस की कोऊ भाखै ॥
चंचल स्रीपति के अपुने द्रिग मोहि तिनै बतीआ इह आखै ॥
बात न जानत हो रस की रस जानत सो नर जो रस गाखै ॥
प्रीति पड़ै करि प्रीति कड़ै रस रीतिन चीत सुनो सोई चाखै ॥२९७॥
गोपी बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
मीत कहो रस रीति सबै हम प्रीति भई सुनबे बतीआ की ॥
अउर भई तुहि देखनि की तुम प्रीति भई हमरी छतीआ की ॥
रीझि लगी कहने मुख ते हसि सुंदर बात इसी गतीआ की ॥
नेह लगियो हरि सो भई मोछन होति इती गति है सु त्रीआ की ॥२९८॥

◀ इति स्री दसम सकंध बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे चीर हरन धिआइ समापतं ॥

अथ बिपन ग्रिह गोप पठैबो ॥

दोहरा ॥

कै क्रीड़ा इन सो क्रिसन कै जमुना इसनानु ॥
बहुर स्याम बन को गए गऊ सु त्रिनन चरान ॥२९९॥
क्रिसन सराहत तरन को बन मै आगे गए ॥
संग ग्वार जेते हुते ते सभ भूखि भए ॥३००॥
सवैया ॥
पत्र भले तिन के सुभ फूल भले फल है सुभ सोभ सुहाई ॥
भूख लगे घर को उमगे पै बिराजन को सुखदा परछाई ॥
कान्रह तरै तिह के मुरली गहि कै कर मो मुख साथ बजाई ॥
ठाढि रहियो सुनि पउन घरी इक थकत रही जमुना उरझाई ॥३०१॥
मालसिरी अरु जैतसिरी सुभ सारंग बाजत है अरु गउरी ॥

सोरठि सुध मलार बिलावल मीठी है अंम्रित ते नह कउरी ॥
कान्रह बजावत है मुरली सुनि होत सुरी असुरी सभ बउरी ॥
आइ गई ब्रिखभान सुता सुनि पै तरुनी हरनी जिमु दउरी ॥३०२॥
जोरि प्रनाम करियो हरि को कर नाथ सुनो हम भूख लगी है ॥
दूर है सभ गोपिन के घर खेलन की सभ सुध भगी है ॥
डोलत संग लगे तुमरे हम कान्रह तबै सुनि बात पगी है ॥
जाहु कहियो मथरा ग्रिह बिपन सति कहियो नहि बात ठगी है ॥३०३॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
फेरि कही हरि जी सभ गोपन कंस पुरी इह है तह जईऐ ॥
जग को मंडल बिपन को ग्रिह पूछत पूछत ढूंढ सु लईऐ ॥
अंजुल जोरि सभै परि पाइन तउ फिर कै बिनती इह कईऐ ॥
खान के कारन भोजन मागत कान्रह छुधातुर है सु सुनईऐ ॥३०४॥
मान लई जोऊ कान्रह कही परि पाइन सीस निवाइ चले ॥
चलि कै पुर कंस बिखै जो गए ग्रिहि बिपन के सभ गोप भले ॥
करि कोटि प्रनाम करी बिनती फुनि भोजन मागत कान्रह खले ॥
अब देखहु चातुरता इन की धरि बालक मूरति बिप छले ॥३०५॥
बिप्र बाच ॥
सवैया ॥
कोप भरे दिज बोल उठे हम ते तुम भोजन मागन आए ॥
कान्रह बडो सठ अउ मुसली हमहूं तुमहूं सठ से लख पाए ॥
पेट भरै अपनो तब ही जब आनत तंदुल मागि पराए ॥
एते पै खान को मागत है इह यौ कहि कै अति बिप रिसाए ॥३०६॥
बिपन भोजन जउ न दयो तब ही ग्रिह गोप चले सु खिसाने ॥
कंस पुरी तज कै ग्रिह बिपन नाखि चले जमुना निजकाने ॥
बोलि उठियो मुसली क्रिसनं संगि अंन्रय बिना जब आवत जाने ॥
देखहु लैन को आवत थे दिज देन की बेर को दूर पराने ॥३०७॥

कबितु ॥

बडे है कुमती अउ कुजती कूर काइर है बडे है कमूत अउ कुजाति बडे जग मै ॥
बडे चोर चूहरे चपाती लीए तजै प्रान करै अति जारी बटपारी अउर मग मै ॥
बैठे है अजान मानो कहीअत है सयाने कछू जाने न गिआन सउ कुरंग बाधे पग मै ॥
बडे है कुछैल पै कहावत है छैल ऐसे फिरत नगर जैसे फिरै ढोर वग मै ॥३०८॥
मुसली बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
आइसु होइ तउ खैच हला संग मूसल सो मथुरा सभ फाटो ॥
बिपन जाइ कहो पकरो कहो मारि डरो कहो रंचक डाटो ॥
अउर कहो तो उखारि पुरी बलु कै अपुने जमुना महि साटो ॥
संकत हो तुम ते जदुराइ न हउ इकलो अरि को सिर काटो ॥३०९॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
क्रोध छिमापन कै मुसली हरि फेरि कही संग बालक बानी ॥
बिप गुरू सभ ही जग के समझाइ कही इह कान्रह कहानी ॥
आइसु मानि गए फिर कै जु हुती न्रिप कंसहि की रजधानी ॥
खैबे को भोजन मागत कान्रह कहियो नहि बिप मनी अभिमानी ॥३१०॥

कबितु ॥

कान्रह जू के ग्वारन को बिपन दुबार रिसि उतर दयो न कछू खैबे को कछू दयो ॥
तब ही रिसाए गोप आए हरि जू के पास करि कै प्रनाम ऐसे उतर तिनै दयो ॥

मोन साधि बैठि रहै खैबे को न देत कछू तबै फिरि आइ जबै क्रोध मन मै भयो ॥
अति ही छुधातुर भए है हम दीनानाथ कीजीऐ उपाव न तो बल तन को गयो ॥३११॥
सवैया ॥
गरड़ध्वज देखि तिनै छुधवान कहियो मिलि कै इह काम करिउ रे ॥
जाहु कहियो उन की पतनी पहि बिप बडे मति के अति बउरे ॥
जगि करै जिह कारन को अरु होम करै जपु अउ सतु सउ रे ॥
ताही को भेदु न जानत मूड़ कहै मिसटान कै खान को कउरे ॥३१२॥
सभ गोप निवाइ कै सीस चले चल के फिरि बिपन के घरि आए ॥
जाए तबै तिन की पतनी पहि कान्रह तबै छुधवान जताए ॥
तउ सुनि बात सभै पतनी दिज ठाढि भई उठि आनंद पाए ॥
धाइ चली हरि के मिलबे कहु आनंद कै दुख दूरि नसाए ॥३१३॥
बिपन की बरजी न रही त्रिय कान्रहर के मिलबे कहु धाई ॥
एक परी उठि मारग मै इक देह रही जीअ देह पुजाई ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि नै मुख ते इम भाख सुनाई ॥
जोर सिउ ज्यो बहती सरता न रहै हटकी भुस भीत बनाई ॥३१४॥
धाइ सभै हरि के मिलबे कहु बिपन की पतनी बडभागन ॥
चंद्रमुखी म्रिग से द्रिगनी कबि स्याम चली हरि के पग लागन ॥
है सुभ अंग सभे जिन के न सकै जिन की ब्रहमा गनता गन ॥
भउनन ते सभ इउ निकरी जिमु मंत्र पड़्हे निकरै बहु नागन ॥३१५॥

दोहरा ॥

हरि को आनन देख कै भई सभन को चैन ॥
निकट त्रिया को पाइ कै परत चैन पर मैन ॥३१६॥
सवैया ॥
कोमल कंज से फूल रहे द्रिग मोर के पंख सिर ऊपर सोहै ॥
है बरनी सर सी भरुटे धनु आनन पै ससि कोटिक कोहै ॥
मित्र की बात कहा कहीये जिह को पखि कै रिपु को मन मोहै ॥
मानहु लै सिव के रिपु आप दयो बिधना रस याहि निचोहै ॥३१७॥
गवारि के हाथ पै हाथ धरे हरि स्याम कहै तरु के तरि ठाढे ॥
पाट को पाट धरे पीयरो उरि देखि जिसै अति आनंद बाढे ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि जिउ चुनि ली तिस को चुनि काढै ॥
मानहु पावस की रुति मै चपला चमकी घन सावन गाढे ॥३१८॥
लोचन कान्रह निहारि त्रिया दिज रूप कै पान महा मत हूई ॥
होइ गई तन मै ग्रिह की सुधि यौ उडगी जिमु पउन सो रूई ॥
स्याम कहै तिन को बिरहागनि यौ भरकी जिमु तेल सो धूई ॥
जिउ टुकरा पिखि चुंबक डोलत बीच मनो जल लोह की सूई ॥३१९॥
कान्रह के रूप निहारि त्रिया दिज प्रेम बढियो दुख दूर भए है ॥
भीखम मात को ज्यो परसे छिन मै सभ पाप बिलाइ गए है ॥
आनन देखि के स्याम घनो चित बीच बसियो द्रिग मूंद लए है ॥
जिउ धनवान मनो धन को धरि अंदर धाम किवार दए है ॥३२०॥
सुधि भई जब ही तन मै तब कान्रह कही हसि कै ग्रिह जावहु ॥
बिपन बीच कहै रहीयो दिन रैन सभे हमरै गुन गावहु ॥
होइ न त्रास तुमै जम की हित कै हम सो जु धिआन लगावहु ॥
जो तुम बात करो इह ही तब ही सब ही मुकता फलु पावहु ॥३२१॥
दिजन त्रियो बाच ॥
सवैया ॥
पतनी दिज की इह बात कही हम संग न छाडत कान्रह तुमारो ॥
संग फिरै तुमरे दिन रैनि चलै ब्रिज कौ ब्रिज जोऊ सिधारो ॥
लाग रहियो तुम सो हमरो मन जात नही मन धाम हमारो ॥
पूरन जोग को पाइ जुगीस्वर आनत न धन बीच संभारो ॥३२२॥

कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
स्री भगवान तिनै पिखि प्रेम कहियो मुख ते तुम धामि सिधारो ॥
जाइ सभै पति आपन आपन कान्रह कथा कहि ताहि उधारो ॥
पुत्रन पउत्रन पतिन सो इह कै चरचा सभ ही दुखु टारो ॥
गंध मलियागर स्याम को नाम लै रूखन को करि चंदन डारो ॥३२३॥
मान लई पतनी दिज की सम अंम्रित कान्रह कही बतीआ ॥
जितनो हरि या उपदेस करियो तितनो नहि होत कछू जतीआ ॥
चरचा जब जा उन सो इन की तब ही उन की भई या गतीआ ॥
इन स्रयाह भए मुख यौ जुवती मुख लाल भए वह जिउ रतीआ ॥३२४॥
चरचा सुनि बिप जु त्रीअन सो मिल कै सभ ही पछुतावन लागे ॥
बेदन कौ हम कौ सभ कौ ध्रिग गोप गए मंग कै हम आगै ॥
मान समुंद्र मै बूडे हुते हम चूक गयो अउसर तउ हम जागे ॥
पै जिन की इह है पतनी तिह ते फुनि है हम हूं बडभागे ॥३२५॥
मानि सभै दिज आपन को ध्रिग फेरि करी मिलि कान्रह बडाई ॥
लोकन को सभ के पति कान्रह हमै कहि बेदन बात सुनाई ॥
तौ न गए उन के हम पासि डरे जु मरे हम कउ हम राई ॥
सति लखियो तुम कउ भगवान कही हम सत कही न बनाई ॥३२६॥

कबितु ॥

पूतना संघारी त्रिणाव्रत की बिदारी देह दैत अघासुर हूं की सिरी जाहि फारी है ॥
सिला जाहि तारी बक हूं की चोच चीर डारी ऐसे भूमि पारी जैसे आरी चीर डारी है ॥
राम ह्वै कै दैतन की सैना जिन मारी अरु आपनो बिभीछन को दीनी लंका सारी है ॥
ऐसी भाति दिजन की पतनी उधारी अवतार लै के साध जैसे प्रिथमी उधारी है ॥३२७॥
सवैया ॥
बिपन की त्रिय की सुन कै कबि राज कहियो दिज अउर कहीजै ॥
कान्रह कथा अति रोचन जीय बिचार कहो जिह ते फुनि जीजै ॥
तौ हसि बात कही मुसकाइ पहलै न्रिप ताहि प्रनाम जु कीजै ॥
तौ भगवान कथा अति रोचन दै चित पै हम ते सुन लीजै ॥३२८॥
सालन अउ अखनी बिरीआ जुज ताहरी अउर पुलाव घने ॥
नुगदी अरु सेवकीआ चिरवे लडूआ अरु सूत भले जु बने ॥
फुनि खीर दही अरु दूध के साथ बरे बहु अउर न जात गने ॥
इह खाइ चलियो भगवान ग्रिहं कहु स्याम कबीसुर भाव भने ॥३२९॥
गावत गीत चले ग्रिह को गरड़ध्वज जीय मै आनंद पै कै ॥
सोभत स्याम के संगि हली घन स्याम अउ सेत चलियो उनसै कै ॥
कान्रह तबै हसि कै मुरली सु बजाइ उठियो अपने करि लै कै ॥
ठाढ भई जमुना सुनि कै धुनि पउन रहियो सुनि कै उरझै कै ॥३३०॥
रामकली अरु सोरठि सारंग मालसिरी अरु बाजत गउरी ॥
जैतसिरी अरु गौड मलार बिलावल राग बसै सुभ ठउरी ॥
मानस की कह है गनती सुनि होत सुरी असुरी धुनि बउरी ॥
सो सुनि कै धुनि स्रउनन मै तरुनी हरनी जिम आवत दउरी ॥३३१॥

कबितु ॥

बाजत बसंत अरु भैरव हिंडोल राग बाजत है ललता के साथ ह्वै धनासरी ॥
मालवा कल्यान अरु मालकउस मारू राग बन मै बजावै कान्रह मंगल निवासरी ॥
सुरी अरु आसुरी अउ पंनगी जे हुती तहा धुनि के सुनत पै न रही सुधि जासु री ॥
कहै इउ दासरी सु ऐसी बाजी बासुरी सु मेरे जाने या मै सभ राग को निवासु री ॥३३२॥
करुना निधान बेद कहत बखान या की बीच तीन लोक फैल रही है सु बासु री ॥
देवन की कंनिआ ता की सुनि सुनि स्रउनन मै धाई धाई आवै तजि कै सुरग बासु री ॥

ह्वै करि प्रसंन्य रूप राग को निहार कहियो रचियो है बिधाता इह रागन को बासु री ॥
रीझे सभ गन उडगन भे मगन जब बन उपबन मै बजाई कान्रह बासुरी ॥३३३॥
सवैया ॥
कान्रह बजावत है मुरली अति आनंद कै मनि डेरन आए ॥
ताल बजावत कूदत आवत गोप सभो मिलि मंगल गाए ॥
आपन ह्वै धनठी भगवान तिनो पहि ते बहु नाच नचाए ॥
रैन परी तब आपन आपन सोइ रहे ग्रिहि आनंद पाए ॥३३४॥
इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे बिपन की त्रीयन को चित हरि भोजन लेइ उधार करबो बरननं ॥

अथ गोवरधन गिरि कर पर धारबो ॥

दोहरा ॥

इसी भाति सो क्रिसन जी कीने दिवस बितीत ॥
हरि पूजा को दिनु अयो गोप बिचारी चीति ॥३३५॥
सवैया ॥
आयो है इंद्र की पूजा को द्योस सभो मिलि गोपिन बात उचारी ॥
भोजन भाति अनेकन को रु पंचाम्रित की करो जाइ तयारी ॥
नंद कहियो जब गोपिन सो बिधि अउर चिती मन बीच मुरारी ॥
को बपुरा मघवा हमरी सम पूजन जात जहा ब्रिज नारी ॥३३६॥

कबितु ॥

इह बिधि बोलियो कान्रह करुणा निधान तात काहे के नवित को साम्रिगी तै बनाई है ॥
कहियो ऐसे नंद जो त्रिलोकीपति भाखीअत ताही को बनाई हरि कहि कै सुनाई है ॥
काहे के नवित कहियो बारिद त्रिनन काज गऊअन की रछ्छ करी अउ होत आई है ॥
कहियो भगवान एतो लोग है अजान ब्रिज ईसर ते होत नही मघवा ते गाई है ॥३३७॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
है नही मेघु सुरपति हाथि सु तात सुनो अरु लोक सभै रे ॥
भंजन भउ अनभै भगवान सु देत सभै जन को अरु लै रे ॥
किउ मघवा तुम पूजन जात करो तुम सेव हितं चित कै रे ॥
ध्रयान धरो सभ ही मिल कै सभ बातन को तुम को फल दै रे ॥३३८॥
बासव जग्रयन कै बसि मेघ किधो ब्रहमा इह बात उचारै ॥
लोगन के प्रतिपारन को हरि सूरज मै हुइ कै जल डारै ॥
कउतुक देखत जीवन को पिखि कउतुक ह्वै सिव ताहि संघारै ॥
है वह एक किधो सरता सम बाहन के जम बाहे बिथारै ॥३३९॥
पाथर पै जल पै नग पै तर पै धर पै अरु अउर नरी है ॥
देवन पै अरु दैतन पै कबि स्याम कहै अउ मुरारि हरी है ॥
पछ्छन पै म्रिगराजन पै म्रिग के गन पै फुनि होत खरी है ॥
भेद कहियो इह बात सभै इनहूं इह की कहा पूज करी है ॥३४०॥
तब ही हसि कै हरि बात कही नंद पै हमरी बिनती सुनि लईयै ॥
पूजहु बिपन को मुख गऊअन पूजन जा गिरि है तह जईयै ॥
गऊअन को पय पीजत है गिरि के चड़हिऐ मनि आनंद पईयै ॥
दान दए तिन के जसु ह्यां परलोक गए जु दयो सोऊ खईयै ॥३४१॥
तब ही भगवान कही पित सो इक बात सुनो तु कहो मम तो सो ॥
पूजहु जाइ सबै गिरि कौ तुम इंद्र करै कुपि किआ फुनि तो सो ॥
मो सो सुपूत भयो तुमरे ग्रिहि मारि डरो मघवा संगि झोसो ॥
रहसि कही पित पारथ की तजि है इह जा हमरी अन मो सो ॥३४२॥
तात की बात जु नंद सुनी सभ बात भली सिर ऊपर बाधी ॥

बाको की कै मुरवी तन कै धनु तीछन मत महा सर साधी ॥
स्रउनन मै सुनतियो इह बात कबुधि गी छूटि चिरी जिह फाधी ॥
मोहि की बारिद ह्वै करि गिआन निवार दई उमडी जनु आंधी ॥३४३॥
नंद बुलाइ कै गोप लए हरि आइसु मानि सिर ऊपर लीआ ॥
पूजहु गऊअन अउ मुख बिपन भईअन सो इह आइसु कीआ ॥
फेरि कहियो हम तउ कहियो तो सो ग्यान भलो मन मै समझीआ ॥
चित दयो सभनो हम सो तिहु लोगन को पति चितन कीआ ॥३४४॥
गोप चले उठ कै ग्रिह को ब्रिज के पति को फुनि आइसु पाई ॥
अछत धूप पंचाम्रित दीपक पूजन की सभ भाति बनाई ॥
लै कुरबे अपनै सभ संगि चले गिरि कौ सभ ढोल बजाई ॥
नंद चलियो जसुधाऊ चली भगवान चले मुसली संगि भाई ॥३४५॥
नंद चलियो कुरबे संगि लै करि तीर जबै गिरि के चलि आयो ॥
गऊअन घास चराइत सो बहु बिपन खीर आहार खवायो ॥
आप परोसन लाग जदुपति गोप सभै मन मै सुख पायो ॥
बार चड़ाइ लए रथ पै चल कै इह कउतक अउर बनायो ॥३४६॥
कउतक एक बिचार जदुपति सूरति एक धरी गिर बाकी ॥
स्रिंग बनाइ धरी नग कै कबि स्याम कहै जह गम्रय न का की ॥
भोजन पात प्रतछि किधो वह बात लखी न परै कछु वा की ॥
कउतक एक लखै भगवान अउ जो पिखवै अटकै मति ता की ॥३४७॥
तौ भगवान तबै हसि कै सम अंम्रित बात तिनै संगि भाखी ॥
भोजन खात दयो हमरो गिरि लोक सभै पिखवो तुम आखी ॥
होइ रहे बिसमै सभ गोप सुनी हरि के मुख ते जब साखी ॥
गिआन जनावर की लई बाज ह्वै गवारन कान्रह दई जब चाखी ॥३४८॥
अंजुल जोरि सभै ब्रिज के जन कोटि प्रनाम करै हरि आगे ॥
भूल गई सभ को मघवा सुधि कान्रह ही के रस भीतर पागे ॥
सोवत थे जु परे बिख मै सभ ध्यान लगे हरि के जन जागे ॥
अउर गई सुध भूल सभो इक कान्रह ही के रस मै अनुरागे ॥३४९॥
कान्रह कही सभ को हसि के मिलि धामि चलो जोऊ है हरता अघ ॥
नंद चलियो बलभद्र चलियो जसुधा ऊ चली नंद लाल बिनानघ ॥
पूज जबै इनहूं न करी तब ही कुपिओ इन पै धरता प्रघ ॥
बेदन मध कही इनि भीम ते मारि डरियो छल सो पतवा मघ ॥३५०॥
भू सुत सो लर कै जिन हूं नवसात छुडाइ लई बरमंङा ॥
आदि सतजुग के मुर के गड़ तोरि दए सभ जिउ कच बंङा ॥
है करता सभ ही जग को अरु देवन हार इही जुग संङा ॥
लोकन को पति सो मति मंद बिबाद करै मघवा मति लंङा ॥३५१॥
गोपन सो खिझ कै मघवा तजि कै मनि आनंद कोप रचे ॥
संगि मेघन जाइ कही बरखो ब्रिज पै रस बीर ही मध गचे ॥
करीयो बरखा इतनी उन पै जिह ते फुनि गोप न एक बचे ॥
सभ भैनन भ्रातन तातन पऊत्रन तऊअन मारहु साथ चचे ॥३५२॥
आइसु मानि पुरंदर को अपने सभ मेघन काछ सु काछे ॥
धाइ चले ब्रिज के मरबे कहु घेरि दसो दिस ते घन आछे ॥
कोप भरे अरु बारि भरे बधबे कउ चले चरीआ जोऊ बाछे ॥
छिप्र चले करबे न्रिप कारज छोडि चले बनिता सुत पाछे ॥३५३॥
दैत संखासुर के मरबे कहु रूपु धरियो जल मै जिनि मछा ॥
सिंधु मथियो जब ही असुरासुर मेरु तरै भयो कछप हछा ॥
सो अब कान्रह भयो इह ठउरि चरावत है ब्रिज के सभ बछा ॥
खेल दिखावत है जग को इह है करता सभ जीवन रछा ॥३५४॥
आइस मानि सभै मघवा हरि के पुर घेरि घने घन गाजै ॥
दामिनि जिउ गरजै जनु राम के सामुहि रावन दुंदभि बाजै ॥
सो धुनि स्रउनन मै सुनि गोप दसो दिस को डर कै उठि भाजै ॥

आइ परे हरि के सभ पाइन आपन जीव सहाइक काजै ॥३५५॥
मेघन को डर कै हरि सामुहि गोप पुकारत है दुखु माझा ॥
रछ करो हमरी करुनानिधि ब्रिसट भई दिन अउ सत साझा ॥
एक बची न गऊ पुर की मरगी दुधरी बछुरे अरु बाझा ॥
अग्रज स्याम के रोवत इउ जिम हीर बिना पिखए पति राझा ॥३५६॥

कबितु ॥

काली नाथ केसी रिपु कउल नैन कउल नाभि कमला के पति इह बिनती सुनीजीयै ॥
काम रूप कंस के प्रहारी काजकारी प्रभ कामिनी के काम के निवारी काम कीजीयै ॥
कउलासन पति कुंभकान के मरईया कालनेमि के बधईया ऐसी कीजै जा ते जीजीयै ॥
कारमा हरन काज साधन करत तुम क्रिपानिधि दासन अरज सुनि लीजीयै ॥३५७॥
सवैया ॥
बूंदन तीरन सी सभ ही कुप कै ब्रिज के पुर पै जब पईया ॥
सोऊ सही न गई किह पै सभ धामन बेधि धरा लगि गईया ॥
सो पिखि गोपन नैनन सो बिनती हरि के अगूआ पहुचईया ॥
कोप भरियो हम पै मघवा हमरी तुम रछ करो उठि सईया ॥३५८॥
दीसत है न कहूं अरणोदित घेरि दसो दिस ते घन आवै ॥
कोप भरे जनु केहरि गाजत दामिनि दात निकासि डरावै ॥
गोपन जाइ करी बिनती हरि पै सुनीयै हरि जो तुम भावै ॥
सिंघ के देखत सिंघन स्रयार कहै कुप कै जम लोक पठावै ॥३५९॥
कोप भरे हमरे पुर मै बहु मेघन के इह ठाट ठटे ॥
जिह को गज बाहन लोक कहै जिनि पबन के पर कोप कटे ॥
तुम हो करता सभ ही जग के तुम ही सिर रावन काटि सटे ॥
तुम सियो फुनि देखित गोपन को घन घोरि डरावत कोप लटे ॥३६०॥
कान्रह बडो सुनि लोक तुमै फुनि जाम सु जाप करै तुह आठो ॥
नीर हुतासन भूमि धराधर थापि करियो तुम ही प्रभ काठो ॥
बेद दए कर कै तुम ही जग मै छिन तात भयो जब घाठो ॥
सिंधु मथियो तुम ही त्रीय ह्वै करि दीन सुरासुर अम्रित बाटो ॥३६१॥
गोपन फेरि कही मुख ते बिनु तै हमरो कोऊ अउर न आडा ॥
मेघन मारि बिथार डरो कुपि बालक मूरति जिउ तुम गाडा ॥
मेघन को पिखि रूप भयानक बहुतु डरै फुनि जीउ असाडा ॥
कान्रह अबै पुसतीन ह्वै आप उतार डरो सभ गोपन जाडा ॥३६२॥
आइसु पाइ पुरंदर को घनघोर घटा चहूं ओर ते आवै ॥
कै कर क्रुध किधो मन मधि ब्रिज ऊपर आन कै बहु बल पावै ॥
अउ अति ही चपला चमकै बहु बूंदन तीरन सी बरखावै ॥
गोप कहै हम ते भई चूक सु या ते हमै गरजै औ डरावै ॥३६३॥
आज भयो उतपात बडो डरु समानि सभै हरि पास पुकारे ॥
कोप करियो हम पै मघवा तिह ते ब्रिज पै बरखे घन भारे ॥
भछि भखियो इह को तुम हू तिह ते ब्रिज के जन कोपि संघारे ॥
रछक हो सभ ही जग के तुम रछ करो हमरी रखवारे ॥३६४॥
होइ क्रिपाल अबै भगवान क्रिपा करि कै इन को तुम काढो ॥
कोप करियो हम पै मघवा दिन सात इहा बरखियो घन गाढो ॥
भ्रात बली इनि रछन को तब ही करि कोप भयो उठि ठाढो ॥
जीव गयो घट मेघन को सभ गोपन के मन आनंद बाढो ॥३६५॥
गोपन की सुन कै बिनती हरि गोप सभै अपने करि जाणे ॥
मेघन के बधबे कहु कान्रह चलियो उठि कै करता जोऊ ताणे ॥
ता छबि के जस उच महा कबि ने अपने मन मै पहिचाणे ॥
इउ चल गयो जिम सिंघ म्रिगी पिखि आइ है जान किधो मूहि डाणे ॥३६६॥
मेघन के बध काज चलियो भगवान किधो रस भीतर रता ॥
राम भयो जुग तीसर मधि मरियो तिन रावन कै रन अता ॥

अउध के बीच बधू बरबे कहु कोप कै बैल नथे जिह सता ॥
गोपन गोधन रछन काज तुरियो तिह को गज जिउ मद मता ॥३६७॥
करबे कहु रछ सु गोपन की बर पूट लयो नग को पहि हथा ॥
तन को न करियो बल रंचक ताह करियो जु हुतो कर बीच जथा ॥
न चली तिन की किछु गोपन पै कबि स्याम कहै गज जाहि रथा ॥
मुखि न्याइ खिसाइ चलियो ग्रिह पै इह बीच चली जग के सु कथा ॥३६८॥
नंद को नंद बडो सुख कंद रिपु आर सुरंद सबुधि बिसारद ॥
आनन चंद प्रभा कहु मंद कहै कबि स्याम जपै जिह नारद ॥
ता गिरि कोप उठाइ लयो जोऊ साधन को हरता दुख दारद ॥
मेघ परे उपरियो न कछू पछताइ गए ग्रिह को उठि बारद ॥३६९॥
कान्रह उपारि लयो कर मो गिरि एक परी नही बूंद सु पानी ॥
फेरि कही हसि कै मुख ते हरि को मघवा जु भयो मुहि सानी ॥
मारि डरियो मुर मै मधु कीटभ मारियो हमै मघवा पति मानी ॥
गोपन मै भगवान कही सोऊ फैल परी जग बीच कहानी ॥३७०॥
गोपन की करबे कहु रछ सतक्रित पै हरि जी जब कोपे ॥
इउ गिरि के तरि भयो उठि ठाढि मनो रुप कै पग केहरि रोपे ॥
जिउ जुग अंत मै अंतक ह्वै करि जीवन के सभ के उरि घोपे ॥
जिउ जन को मन होत है लोप तिसी बिधि मेघ भए सभ लोपे ॥३७१॥
होइ सतक्रित ऊपर कोप सु राख लई सभ गोप दफा ॥
तिनि मेघ बिदार दए छिन मै जिनि दैत करे सभ एक गफा ॥
करि कउतुक पै रिपु टार दए बिनु ही धरए सर स्याम जफा ॥
सभ गोपन की करबै कहु रछ सु सत्रुन लीन लपेट सफा ॥३७२॥
जु लई सभ मेघ लपेट सफा अरु लीनो है पब उपार जबै ॥
इह रंचक सो इह है गरूओ गिरि चिंत करी मनि बीच सबै ॥
इह दैतन को मरता करता सुख है दिविया जीय दान अबै ॥
इह को तुम ध्यान धरो सभ ही नहि ध्यान धरो तुम अउर कबै ॥३७३॥
सभ मेघ गए घट के जब ही तब ही हरखे फुनि गोप सभै ॥
इह भाति लगे कहने मुख ते भगवान दयो हम दान अभै ॥
मघवा जु करी कुपि दउर हमू पर सो तिह को नही बेर लभै ॥
अब कान्रह प्रताप ते है घट बादर एक न दीसत बीच नभै ॥३७४॥
गोप कहै सभ ही मुख ते इह कान्रह बली बर है बल मै ॥
जिनि कूदि किले सत मोर मरियो जिनि जुध संखासुर सो जल मै ॥
इह है करता सभ ही जग को अरु फैल रहियो जल अउ थल मै ॥
सोऊ आइ प्रतछि भयो ब्रिज मै जोऊ जोग जुतो रहै ओझल मै ॥३७५॥
मोर मरियो जिनि कूद किलै सत संधि जरा जिह सैन मरी ॥
नराकसुर जाहि करियो रकसी बिरथी गज की जिह रछ करी ॥
जिह राखि लई पति पै द्रुपती सिल जा लगतिउ पग पारि परी ॥
अति कोपत मेघन अउ मघवा इह राख लई नंद लालि धरी ॥३७६॥
मघवा जिह फेरि दई प्रतना जिह दैतु मरे इह कान बली ॥
जिह को जन नाम जपै मन मै जिह को फुनि भ्रात है बीर हली ॥
जिह ते सभ गोपन की बिपता हरि के कुप ते छिन माहि टली ॥
तिह को लख कै उपमा भगवान करै जिह की सुत कउल कली ॥३७७॥
कान उपार लयो गरूओ गिरि धामि खिसाइ गयो मघवा ॥
सो उपजियो ब्रिज भूमि बिखै जोऊ तीसर जुग भयो रघुवा ॥
अब कउतुकि लोक दिखावन को जग मै फुनि रूप धरियो लघुवा ॥
थन ऐच हनी छिन मै पुतना हरि नाम के लेत हरे अघवा ॥३७८॥
कान्रह बली प्रगटियो ब्रिज मै जिनि गोपन के दुख काटि सटे ॥
सुख साधन के प्रगटे तब ही दुख दैतन के सुनि नामु घटे ॥
इह है करता सभ ही जग को बलि को अरु इंद्रहि लोक बटे ॥
तिह नाम के लेत किधो मुख ते लट जात सभै तन दोख लटे ॥३७९॥

कान्रह बली प्रगटियो पुतना जिनि मारि डरी न्रिप कंस पठी ॥
इन ही रिपु मारि डरियो सु त्रिनाव्रत पै जनि सो इह थित छठी ॥
सभ जापु जपै इह को मन मै सभ गोप कहै इह अति हठी ॥
अति ही प्रतिना फुनि मेघन की इनहू करि दी छिन माहि मठी ॥३८०॥
गोप कहै इह साधन के दुख दूरि करै मन माहि गडै ॥
इह है बलवान बडो प्रगटियो सोऊ को इह सो छिन आइ अडै ॥
सभ लोक कहै फुनि जापत या कबि स्याम कहै भगवान बडै ॥
तिन मोछ लही छिन मै इह ते जिन के मन मै जररा कु जडै ॥३८१॥
मेघ गए पछुताइ ग्रिहं कहु गोपिन को मन आनंद बाढे ॥
ह्वै इकठे सु चले ग्रिह को सभ आइ भए ग्रिह भीतर ठाढे ॥
आइ लगे कहिने त्रीय सो इन ही छिन मै मघवा कुपि काढे ॥
सति लहियो भगवान हमै इन ही हमरे सभ ही दुख काढे ॥३८२॥
कोप भरे पति लोकह के दल आब रखे ठटि साज अणे ॥
भगवान जू ठाढ भयो करि लै गिरि पै करि कै कुछ हूं न गणे ॥
अति ता छबि के जस उच महा कबि स्याम किधौ इह भाति भणे ॥
जिमु बीर बडो करि सिपर लै कछु कै न गने पुनि तीर घणे ॥३८३॥
गोप कहै इह साधन को दुख दूर करै मन माहि गडै ॥
इह है बलवान बडो प्रगटिओ सोऊ को इह सो छिन आइ अडै ॥
सभ लोग कहै फुनि खापत या कबि स्याम कहै भगवान बडै ॥
तिह मोछ लही छिन मै इह ते जिन के मन मै जररा कु जडै ॥३८४॥
करि कोप निवार दए मघवा दल कान्रह्रह बडे बलबीर ब्रती ॥
जिम कोपि जलंधरि ईसि मरियो जिम चंडि चमुंडहि सैन हती ॥
पछुताइ गयो मघवा ग्रिह को न रही तिह की पति एक रती ॥
इक मेघ बिदार दए हरि जी जिम मोहि निवारत कोपि जती ॥३८५॥
कुप कै तिनि मेघ बिदार दए जिनि राख लयो जल भीतर हाथी ॥
जाहि सिला लगि पाइ तरी जिह राखि लई द्रुपती सु अनाथी ॥
बैर करै जोऊ पै इह सो सभ गोप कहै इह ताहि असाथी ॥
जो हित सो चित कै इह की फुनि सेव करै तिह को इह साथी ॥३८६॥
मेघन को तब ही क्रिसनं दल खातिर ऊपरि न कछू आंदा ॥
कोप करियो अति ही मघवा न चलियो तिह सो कछु ताहि बसादा ॥
जोर चलै किह को तिह सो कहि है सभ ही जिस को जगु बादा ॥
मूंड निवाइ मनै दुख पाइ गयो मघवा उठि धामि खिसादा ॥३८७॥
सक्र गयो पछुताहि ग्रिहं कहु फोर दई जब कान्रहि अनी ॥
बरखा करि कोप करी ब्रिज पै सु कछू हरि कै नहि एक गनी ॥
फुनि ता छबि की अति ही उपमा कबि स्याम किधो इह भाति भनी ॥
पछताइ गयो पति लोकन को जिम लूट लयो अहि सीस मनी ॥३८८॥
जाहि न जानत भेद मुनी मनि भा इह जापन को इह जापी ॥
राज दयो इन ही बलि को इन ही कबि स्याम धरा सभ थापी ॥
मारत है दिन थोरन मै रिपु गोप कहै इह कान्रह्रह प्रतापी ॥
कारन याहि धरी इह मूरति मारन को जग के सभ पापी ॥३८९॥
करि कै जिह सो छल पै चतुरानन चोरि लए सभ गोप दफा ॥
तिन कउतक देखन कारन को फुनि राखि रहिओ वह बीच खफा ॥
कान बिना कुपए उह सो सु करे बिन ही सर दीन जफा ॥
छिन मधि बनाइ लए बछुरे सभ गोपन की उन ही सी सफा ॥३९०॥
कान उपारि धरिओ कर पै गिरि ता तरि गोप निकारि सबै ॥
बकई बक अउर गडासुर त्रिनाव्रत बीर बधे छिन बीच तबै ॥
जिन काली को नाथ लयो छिन भीतर धिआन न छाडहु वाहि कबै ॥
सभ संत सुनी सुभ कान्रह कथा इक अउर कथा सुनि लेहु अबै ॥३९१॥
गोप बाच नंद जू सो ॥
सवैया ॥

नंद के अग्रज कान्रह पराक्रम गोपन जाइ कहियो सु सबै ॥
दैत अघासुर अउर त्रिनाव्रत याहि बधियो उडि बीच नभै ॥
फुनि मारि डरी बकई सभ गोपन दान दयो इह कान्रह अभै ॥
सुनीऐ पति कोटि उपाव करो कोऊ पै इह सो सुत नाहि लभै ॥३९२॥
गोपन की बिनती सुनीऐ पति धिआन धरै इह को रणगामी ॥
धिआन धरै इह को मुनि ईसर धिआन धरै इह काइर कामी ॥
धिआन धरै इह को सु त्रिया सभ धिआन धरै इह देखन बामी ॥
सति लखियो हम कै करता जग सति कहियो मत कै नहि खामी ॥३९३॥
है भगवान बली प्रगटियो सभ गोप कहै पुतना इन मारी ॥
राज बिभीछन याहि दयो इन ही कुपि रावन दैत संघारी ॥
रछ करी प्रलादहि की इन ही हरनाखस की उर फारी ॥
नंद सुनो पति लोकन कै इन ही हमरी अब देह उबारी ॥३९४॥
है सभ लोगन को करता ब्रिज भीतर है करता इह लीला ॥
सिख्यन को बरता हरि है इह साधन को हरता तन हीला ॥
राख लई इन ही सीअ की पति राखि लई त्रिय पारथ सीला ॥
गोप कहै पति सो सुनीऐ इह है क्रिसनं बर बीर हठीला ॥३९५॥
दिन बीत गए चकए गिरि के हरि जी बछरे संग लै बनि जावै ॥
जिउ धर मूरति घासु चुगै भगवान महा मन मै सुख पावै ॥
लै मुरली अपुने कर मै करि भाव घने हित साथ बजावै ॥
मोहि रहै जु सुनै पतनी सुर मोहि रहै धुनि जो सुनि पावै ॥३९६॥
कुप कै जिनि बालि मरिओ छिन मै अरु रावन की जिनि सैन मरी है ॥
जाहि बिभीछन राज दयो छिन मै जिह की तिह लंक करी है ॥
मुर मारि दयो घटिकान करी रिपु जा सीअ की जीय पीर हरी है ॥
सो ब्रिज भूमि बिखै भगवान सु गऊअन कै मिस खेल करी है ॥३९७॥
जाहि सहंस्र फनी तन ऊपरि सोइ करी जल भीतर क्रीड़ा ॥
जाहि बिभीछन राज दयो अरु जाहि दई कुपि रावन पीड़ा ॥
जाहि दयो कर कै जग भीतर जीव चराचर अउ गज कीड़ा ॥
खेलत सो ब्रिज भूमि बिखै जिनि कील सुरासुर बीच झगीड़ा ॥३९८॥
बीर बडे दुरजोधन आदिक जाहि मराइ डरे रनि छत्री ॥
जाहि मरियो सिसुपाल रिसै करि राजन मै क्रिसनं बर अत्री ॥
खेलत है सोऊ गऊअन मै जोऊ है जग को करता बध सत्री ॥
आगि सो धूम्र लपेटत जिउ फुनि गोप कहावत है इह छत्री ॥३९९॥
कर जुध मरे इकले मधु कीटभ राजु सतक्रित को जिह दीआ ॥
कुंभकरन मरियो जिनि है अरु रावन को छिन मै बध कीआ ॥
राजु बिभीछन दे करि आनंद अउधि चलियो संगि लै करि सीआ ॥
पापन के बध कारन सो अवतार बिखै ब्रिज के अब लीआ ॥४००॥
जो उपमा हरि की करी गोपन तउ पति गोपन बात कही है ॥
जो इह को बलु आइ कहियो गरगै हम सो सोऊ बात सही है ॥
पूतु कहियो बसुदेवहि को दिज ताहि मिलियो फुनि मानि इही है ॥
जो इह को फुनि मारन आयो सु ताही की देह गई न रही है ॥४०१॥

अथ इंद्र आइ दरसन कीआ अरु बेनती करत भया ॥

सवैया ॥
दिन एक गए बन को हरि जी मघवा तजि मान हरी पहि आयो ॥
पापन के बखसावन को हरि के तरि पाइन सीस निवायो ॥
अउर करी बिनती हरि की अति ही तिह तो भगवान रिझायो ॥
चूक भई हम ते कहियो सक्र सु कै हरि जी तुम कौ नहि पायो ॥४०२॥
तू जग को करता करुनानिधि तू सभ लोगन को करता है ॥
तू मुर को मरीया रिपु रावन भूरिसिला त्रीया को भरता है ॥

तू सभ देवन को पति है अरु साधन के दुख को हरता है ॥
जो तुमरी कछु भूल करै तिह के फुनि तू तन को मरता है ॥४०३॥
सुनि कान्रह सतक्रित की उपमा तब काम सु धेन गऊ चलि आई ॥
आइ करी उपमा हरि की बहु भातिन सो कबि स्याम बडाई ॥
गावत ही गुन कानर के इक किंकर आइ गई हरि पाई ॥
स्याम करो उपमा कहियो पति सो उपमा बहु भातिन भाई ॥४०४॥
कानर के पग पूजन को सभ देवपुरी तजि कै सुर आए ॥
पाइ परे इक पूजत भे इक नाच उठे इक मंगल गाए ॥
सेव करै हरि की हित कै करि आवत केसर धूप जगाए ॥
दैतन को बध कै भगवान मनो जग मै सुर फेरि बसाए ॥४०५॥

दोहरा ॥

देव सक्र आदिक सभै सभ तजि कै मनि मान ॥
ह्वै इकत्र करनै लगे क्रिसन उसतती बानि ॥४०६॥

कबितु ॥

प्रेम भरे लाज के जहाज दोऊ देखीअत बारि भरे अभ्रन की आभा को धरत है ॥
सील के है सिंधु गुन सागर उजागर के नागर नवल नैन दोखन हरत है ॥
सत्रन संघारी इह कान्रह अवतारी जू के साधन को देह दूख दूर को करत है ॥
मित्र प्रतिपारक ए जग के उधारक है देख कै दुसट जिह जीय ते जरत है ॥४०७॥
सवैया ॥
कान्रह को सीस निवाइ सभै सुर आइसु लै चल धामि गए है ॥
गोबिंद नाम धरियो हरि को इह तै मन आनंद याद भए है ॥
राति परे चलि कै भगवान सु डेरनि आपन बीच अए है ॥
प्राति भए जग के दिखबे कहु कीन सु सुंदर खेल नए है ॥४०८॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे इंद्र भूल बखसावन नाम बरननं धिआइ समापतम ॥*

अथ नंद को बरुन बाध करि लै गए ॥

सवैया ॥
निसि एक द्वादसि के हरि तात चलियो जमुना महि न्रहावन काजै ॥
आहि परिओ जल मै बरुनं गज कोपि गहियो सभ जोरि समाजै ॥
बाध चले संगि लै बरुनं पहि कानर के बिनु ही कुपि गाजै ॥
जाइ कै ठाढि करिओ जब ही पहिचान लयो दरीआवन राजै ॥४०९॥
नंद बिना पुरि सुंन भयो सभ ही मिल कै हरि जी पहि आए ॥
आइ प्रनाम करे पर पाइन नंद त्रियादिक ते घिघिआए ॥
कै बहु भातन सो बिनती करि कै भगवान को आइ रिझाए ॥
मो पति आज गए उठ कै हम ढूंढि रहे कहूंऐ नही पाए ॥४१०॥
कान्रह बाच ॥
स्वैया ॥
तात कहिओ हसि कै जसुधा पहि तात लिआवन कौ हम जै है ॥
सात अकास पताल सु सातहि जाइ जही तह जाही ते लियै है ॥
जौ मर गिओ तउ जा जम के पुरि अयुध लै कुपि भारथ कै है ॥
नंद को आनि मिलाइ हउ हउ किह जाइ रमे तऊ जान न दै है ॥४११॥
गोप प्रनाम गए कर कै ग्रिहि तो हसि कै इम कान्रह कहियो है ॥
गोपन के पति को मिल हों इह झूठ नही फुन सति लहियो है ॥
गोपन के मन को अति ही दुख बात सुने हरि दूरि बहिओ है ॥

छाडि अधीरज दीन सभो फुनि धीरज को मन गाढ गहिओ है ॥४१२॥
प्रात भए हरि जी उठ कै जल बीच धसिओ बरनं पहि आयो ॥
आइ कै ठाढि भयो जब ही नदीआ पति पाइन सो लपटायो ॥
भ्रितन मो अजने तुम तात अनिओ बंध के कहि कै घिघिआयो ॥
कान्रह छिमापन दोख करो इह भेद हमै लख कै नही पायो ॥४१३॥
जिनि राज भभीछन रीझि दयो रिस कै जिनि रावन खेत मरिओ है ॥
जाहि मरिओ मुर नाम अघासुर पै बलि को छल सो जु छलिओ है ॥
जाहि जलंधर की त्रिय को तिह मूरति कै सत जाहि टरियो है ॥
धंन है भाग किधो हमरे तिह को हम पेखबि आजु करिओ है ॥४१४॥

दोहरा ॥

पाइन पर कै बरनि जू दयो नंद कउ साथि ॥
कहियो भाग मुहि धंनि है चलै पुसतकन गाथ ॥४१५॥
सवैया ॥
तात को साथ लयो भगवान चलियो पुर को मनि आनंद भीनो ॥
बाहरि लोक मिले ब्रिज के करि कान्रह प्रणाम प्राक्रम कीनो ॥
पाइ परे हरि के बहु बारन दान घनो दिज लोकन दीनो ॥
आइ मिलाइ दयो ब्रिज को पति सति हमै करता कर दीनो ॥४१६॥
नंद बाच ॥
सवैया ॥
बाहरि आनि कहियो ब्रिज के पति कानर ही जग को करता रे ॥
राज दयो इन रीझि बिभीछनि रावन से रिपु कोटिक मारे ॥
भ्रितन लै बरुणै बंधिओ तिह ते मुहि आनिओ है याही छडा रे ॥
कै जग को करता समझो इह को करि कै समझो नही बारे ॥४१७॥
गोप सभो अपुने मन भीतर जानि हरी इह भेद बिचारिओ ॥
देखहि जाइ बैकुंठ सभै हम पै इह कै इह भाति उचारिओ ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने अपुनै मुख ते इम सारिओ ॥
गिआन ह्वै पारसु गोपन लोह कौ कान्रह सभै करि कंचन डारिओ ॥४१८॥
जान कै अंतरि को लखीआ जब रैनि परी तब ही परि सोए ॥
दूख जिते जु हुते मन मै तितने हरि नामु के लेवत खोए ॥
आइ गयो सुपना सभ को तिह जा पिखए त्रीया नर दोए ॥
जाइ अनूप बिराजत थी तिह जा सम जा फुनि अउर न कोए ॥४१९॥
सभ गोपि बिचारि कहियो मन मै इह बैकुंठ ते ब्रिज मोहि भला है ॥
कान्रह समै लखीऐ न इहा ओहु जा पिखीऐ भगवान खला है ॥
गोरस खात उहा हम ते मंगि जो करता सभ जीव जला है ॥
सो हमरे ग्रिहि छाछहि पीवत जाहि रमी नभ भूमि कला है ॥४२०॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे नंद जू को बरुण पास ते छुडाए लिआइ बैकुंठ दिखाव सभ गोपिन को धिआइ समापतं ॥*

अथ रासि मंडल लिखयते ॥

अथ देवी जू की उसतत कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तूही असत्रणी ससत्रणी आप रूपा ॥
तूही अंबिका जंभ हंती अनूपा ॥
तूही अंबिका सीतला तोतला है ॥

प्रिथवी भूमि अकास तैही कीआ है ॥४२१॥
तुही मुंड मरदी कपरदी भवानी ॥
तुही कालिका जालपा राजधानी ॥
महा जोग माइआ तुही ईसवरी है ॥
तुही तेज अकास थंभो मही है ॥४२२॥
तुही रिसटणी पुसटणी जोग माइआ ॥
तुही मोह सो चउदहूं लोक छाइआ ॥
तुही सुंभ नैसुंभ हंती भवानी ॥
तुही चउदहूं लोक की जोति जानी ॥४२३॥
तुही रिसटणी पुसटणी ससत्रणी है ॥
तुही कसटणी हरतनी असत्रणी है ॥
तुही जोग माइआ तुही बाक बानी ॥
तुही अंबिका जंभहा राजधानी ॥४२४॥
महा जोग माइआ महा राजधानी ॥
भवी भावनी भूत भबिअं भवानी ॥
चरी आचरणी खेचरणी भूपणी है ॥
महा बाहणी आपनी रूपणी है ॥४२५॥
महा भैरवी भूतनेसवरी भवानी ॥
भवी भावनी भबियं काली क्रिपानी ॥
जया आजया हिंगुला पिंगुला है ॥
सिवा सीतला मंगला तोतला है ॥४२६॥
तुही अछरा पछरा बुधि ब्रिधिआ ॥
तुही भैरवी भूपणी सुध सिधिआ ॥
महा बाहणी असत्रणी ससत्र धारी ॥
तुही तीर तरवार काती कटारी ॥४२७॥
तुही राजसी सातकी तामसी है ॥
तुही बालका ब्रिधणी अउ जुआ है ॥
तुही दानवी देवणी जछणी है ॥
तुही किंन्रणी मछणी कछणी है ॥४२८॥
तुही देवते सेसणी दानु वेसा ॥
सरहि ब्रिसटणी है तुही असत्र भेसा ॥
तुही राज राजेसवरी जोग माया ॥
महा मोह सो चउदहूं लोक छाया ॥४२९॥
तुही ब्राहमी बैसनवी स्री भवानी ॥
तुही बासवी ईसवरी कारतिकिआनी ॥
तुही अंबिका दुसटहा मुंडमाली ॥
तुही कसट हंती क्रिपा कै क्रिपानी ॥४३०॥
तुमी बराहणी ह्वै हिरनाछ मारियो ॥
हरंनाकसं सिंघणी ह्वै पछारियो ॥
तुमी बावनी ह्वै तिनो लोग मापे ॥
तुमी देव दानो कीए जछ थापे ॥४३१॥
तुमी राम ह्वै कै दसाग्रीव खंडियो ॥
तुमी क्रिसन ह्वै कंस केसी बिहंडियो ॥
तुमी जालपा है बिड़ालाछ घायो ॥
तुमी सुंभ नैसुंभ दानो खपायो ॥४३२॥

दोहरा ॥

दास जान करि दास परि कीजै क्रिपा अपार ॥
आप हाथ दै राख मुहि मन क्रम बचन बिचारि ॥४३३॥

चौपई ॥

मै न गनेसहि प्रिथम मनाऊ ॥
किसन बिसन कबहूं न धिआऊ ॥
कानि सुने पहिचान न तिन सो ॥
लिव लागी मोरी पग इन सो ॥४३४॥
महाकाल रखवार हमारो ॥
महा लोह मै किंकर थारो ॥
अपुना जानि करो रखवार ॥
बाह गहे की लाज बिचार ॥४३५॥
अपुना जानि मुझै प्रतिपरीऐ ॥
चुनि चुनि सत्र हमारे मरीऐ ॥
देग तेग जग मै दोऊ चलै ॥
राखु आपि मुहि अउर न दलै ॥४३६॥
तुम मम करहु सदा प्रतिपारा ॥
तुम साहिब मै दास तिहारा ॥
जानि आपना मुझै निवाज ॥
आपि करो हमरे सभ काज ॥४३७॥
तुम हो सभ राजन के राजा ॥
आपे आपु गरीब निवाजा ॥
दास जान करि क्रिपा करहु मुहि ॥
हारि परा मै आनि दवारि तुहि ॥४३८॥
अपुना जानि करो प्रतिपारा ॥
तुम साहिबु मै किंकर थारा ॥
दास जानि कै हाथि उबारो ॥
हमरे सभ बैरीअन संघारो ॥४३९॥
प्रथमि धरो भगवत को ध्याना ॥
बहुरि करो कबिता बिधि नाना ॥
क्रिसन जथामति चरित्र उचारो ॥
चूक होइ कबि लेहु सुधारो ॥४४०॥

◀ *इति स्री देवी उसतति समापतं ॥*

अथ रास मंडल ॥

सवैया ॥
जब आई है कातिक की रुति सीतल कान्रह तबै अति ही रसीआ ॥
संगि गोपिन खेल बिचार करिओ जु हुतो भगवान महा जसीआ ॥
अपवित्रन लोगन के जिह के पगि लागत पाप सभै नसीआ ॥
तिह को सुनि त्रीयन के संगि खेल निवारहु काम इहै बसीआ ॥४४१॥
आनन जाहि निसापति सो द्रिग कोमल है कमला दल कैसे ॥
है भरुटे धनु से बरनी सर दूर करै तन के दुखरै से ॥
काम की सान के साथ घसे दुख साधन कटबे कहु तैसे ॥
कउल के पत्र किधो ससि साथ लगे कबि सुंदर स्याम अरै से ॥४४२॥
बधिक है टटीआ बरुनी धर कोरन की दुति साइक साधे ॥
ठाढे है कान्रह किधो बन मै तन पै सिर पै अंबुवा रंग बाधे ॥
चाल चलै हरूए हरूए मनो सीख दई इह बाधक पाधे ॥
अउ सभ ही ठट बधक से मन मोहन जाल पीतंबर काधे ॥४४३॥
सो उठि ठाढि किधो बन मै जुग तीसर मै पति जोऊ सीया ॥
जमुना महि खेल के कारन कौ घसि चंदन भाल मै टीको दीया ॥

भिलरा डरि नैन के सैनन को सभ गोपिन को मन चोरि लीया ॥
कबि स्याम कहै भगवान किधो रस कारन को ठग बेस कीआ ॥४४४॥
द्रिग जाहि म्रिगी पति की सम है मुख जाहि निसापति सी छबि पाई ॥
जाहि कुरंगन के रिपु सी कटि कंचन सी तन नै छबि छाई ॥
पाट बने कदली दल द्वै जंघा पर तीरन सी दुति गाई ॥
अंग प्रतंग सु सुंदर स्याम कछू उपमा कहीऐ नही जाई ॥४४५॥
मुख जाहि निसापति की सम है बन मै तिन गीत रिझियो अरु गायो ॥
ता सुर को धुनि स्रउनन मै ब्रिज हूं की त्रिया सभ ही सुनि पायो ॥
धाइ चली हरि के मिलबे कहु तउ सभ के मन मै जब भायो ॥
कान्रह मनो म्रिगनी जुवती छलबे कहु घंटक हेरि बनायो ॥४४६॥
मुरली मुख कानर के तरूए तरु स्याम कहै बिधि खूब छकी ॥
ब्रिज भामिन आ पहुची दवरी सुधि हिया जु रही न कछू मुख की ॥
मुख को पिखि रूप के बस्रय भई मत ह्वै अति ही कहि कान्रह बकी ॥
इक झूमि परी इक गाइ उठी तन मै इक ह्वै रहिगी सु जकी ॥४४७॥
हरि की सुनि कै सुर स्रउनन मै सभ धाइ चली ब्रिजभूमि सखी ॥
सभ मैन के हाथि गई बध कै सभ सुंदर स्याम की पेखि अखी ॥
निकरी ग्रिह ते म्रिगनी सम मानहु गोपिन ते नहि जाहि रखी ॥
इह भाति हरी पहि आइ गई जनु आइ गई सुधि जानि सखी ॥४४८॥
गई आइ दसो दिस ते गुपीआ सभ ही रस कान्रह के साथ पगी ॥
पिख कै मुखि कान्रह को चंद कला सु चकोरन सी मन मै उमगी ॥
हरि को पुनि सुधि सु आनन पेखि किधौ तिन की ठग डीठ लगी ॥
भगवान प्रसंनि भयो पिख कै कबि स्याम मनो म्रिग देख म्रिगी ॥४४९॥
गोपिन की बरजी न रही सुर कानर की सुनबे कहु त्राघी ॥
नाखि चली अपने ग्रिह इउ जिमु मति जुगीस्वर इंद्रहि लाघी ॥
देखन को मुखि ताहि चली जोऊ काम कला हूं को है फुनि बाघी ॥
डारि चली सिर के पट इउ जनु डारि चली सभ लाज बहाघी ॥४५०॥
कान्रह के पासि गई जब ही तब ही सभ गोपिन लीन सु संङा ॥
चीर परे गिर कै तन भूखन टूट गई तिन हाथन बंङा ॥
कान्रह को रूप निहारि सभै गुपीआ कबि स्याम भई इक रंङा ॥
होइ गई तनमै सभ ही इक रंग मनो सभ छोड कै संङा ॥४५१॥
गोपिन भूलि गई ग्रिह की सुधि कान्रह ही के रस भीतर राची ॥
भउह भरी मधुरी बरनी सभ ही सु ढरी जनु मैन के साची ॥
छोर दए रस अउरन स्वाद भले भगवान ही सो सभ माची ॥
सोभत ता तन मै हरि को मनो कंचन मै चुनीआ चुनि खाची ॥४५२॥
कान्रह को रूप निहारि रही ब्रिज मै जु हुती गुपीआ अति हाछी ॥
राजत जाहि म्रिगी पति नैन बिराजत सुंदर है सम माछी ॥
सोभित है ब्रिज मंडल मै जनु खेलबे काजि नटी इह काछी ॥
देखनि हार किधौ भगवान दिखावत भाव हमै हिया आछी ॥४५३॥
सोहत है सभ गोपिन के कबि स्याम कहै द्रिग अंजन आजे ॥
कउलन की जनु सुधि प्रभा सर सुंदर सान के ऊपरि माजे ॥
बैठि घरी इक मै चतुरानन मैन के तात बने कसि साजे ॥
मोहति है मन जोगन के फुनि जोगन के गन बीच कला जे ॥४५४॥
ठाढि है कान्रह सोऊ महि गोपिन जाहि को अंत मुनी नहि बूझे ॥
कोटि करै उपमा बहु बरखन नैनन सो तउ नैकु न सूझे ॥
ताही के अंति लखैबे के कारन सूर घनै रन भीतर जूझे ॥
सो ब्रिज भूमि बिखै भगवान त्रीआ गन मै रस बैन अरूझे ॥४५५॥
कानर के निकटै जब ही सभ ही गुपीआ मिलि सुंदर गईया ॥
सो हरि मधि ससानन पेखि सभै फुनि कंद्रप बेख बनईआ ॥
लै मुरली अपने करि कान्रह किधौ अति ही हित साथ बजईया ॥
घंटक हेरक जिउ पिख कै म्रिगनी मुहि जात सु है ठहरईया ॥४५६॥

मालसिरी अरु रामकली सुभ सारंग भावन साथ बसावै ॥
जैतसिरी अरु सुध मलार बिलावल की धुनि कूक सुनावै ॥
लै मुरली अपुने करि कान्रह किधौ अति ही हित साथ बजावै ॥
पउन चलै न रहै जमुना थिर मोहि रहै धुनि जो सुनि पावै ॥४५७॥
सुन के मुरली धुनि कानर की सभ गोपिन की सभ सुधि छुटी ॥
सभ छाडि चली अपने ग्रिह कारज कान्रह ही की धुनि साथ जुटी ॥
ठगनी सुर है कबि स्याम कहै इन अंतर की सभ मति लुटी ॥
म्रिगनी सम है चलत यौ इन के मग लाज की बेल तराक तुटी ॥४५८॥
कान्रह को रूप निहार रही त्रिया स्याम कहै कबि होइ इकाठी ॥
जिउ सुर की धुनि कौ सुन कै म्रिगनी चलि आवत जात न नाठी ॥
मैन सो मत ह्वै कूदत कान्रह सु छोरि मनो सभ लाज की गाठी ॥
गोपिन को मनु यौ चुरि गयो जिम खोरर पाथर पै चरनाठी ॥४५९॥
हसि बात करै हरि सो गुपीआ कबि स्याम कहै जिन भाग बडे ॥
मोहि सभै प्रगटियो इन को पिख कै हरि पापन जाल लडे ॥
क्रिसनं तन मधि बधू ब्रिज की मन ह्वै करि आतुर अति गडे ॥
सोऊ सति किधो मन जाहि गडे सु अधंनि जिनो मन है अगडे ॥४६०॥
नैन चुराइ महा सुख पाइ कछू मुसकाइ भयो हरि ठाढो ॥
मोहि रही ब्रिज बाम सभै अति ही तिन कै मनि आनंद बाढो ॥
जा भगवान किधो सीय जीत कै मारि डरियो रिपु रावन गाढो ॥
ता भगवान किधो मुख ते मुकता नुकता सम अंम्रित काढो ॥४६१॥
कान्रह जू बाच गोपी प्रति ॥
सवैया ॥
आजु भयो झड़ है जमुना तटि खेलन की अब घात बणी ॥
तज कै डर खेल करो हम सो कबि स्याम कहियो हसि कान्रह अणी ॥
जो सुंदर है तुम मै सोऊ खेलहु खेलहु नाहि जणी रु कणी ॥
इह भाति कहै हसि कै रस बोल किधो हरता जोऊ मान फणी ॥४६२॥
हसि कै सु कही बतीआ तिन सो कबि स्याम कहै हरि जो रस रातो ॥
नैन म्रिगीपति से तिह के इम चाल चलै जिम गईयर मातो ॥
देखत मूरति कान्रह की गोपिन भूलि गई ग्रिह की सुध सातो ॥
चीर गए उड कै तन कै अरु टूट गयो नैन ते लाज को नातो ॥४६३॥
कुपि कै मधु कैटभ तानि मरे मुरि दैत मरियो अपने जिन हाथा ॥
जाहि बिभीछन राज दयो रिसि रावन काट दए जिह माथा ॥
सो तिह की तिहू लोगन मधि कहै कबि स्याम चले जस गाथा ॥
सो ब्रिज भूमि बिखै रस कै हित खेलत है फुनि गोपिन साथा ॥४६४॥
हसि कै हरि जू ब्रिज मंडल मै संग गोपिन के इक होड बदी ॥
सभ धाइ परै हमहूं तुमहूं इह भाति कहियो मिलि बीच नदी ॥
जब जाइ परे जमुना जल मै संग गोपिन के भगवान जदी ॥
तब लै चुभकी हरि जी त्रिय को सु लयो मुख चूम किधो सो तदी ॥४६५॥
गोपी बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
मिल कै सभ ग्वारिन सुंदर स्याम सो स्याम कही हसि बात प्रबीनन ॥
राजत जाहि म्रिगीपति से द्रिग छाजत चंचलता सम मीनन ॥
कंचन से तन कउल मुखी रस आतुर है कहियो रछक दीनन ॥
नेहु बढाइ महा सुखु पाइ कहियो सिरि निआइ कै भाति अधीनन ॥४६६॥
अति ह्वै रिझवंत कहिओ गुपीआ जुग तीसर मै पति भयो जु कपी ॥
जिनि रावन खेति मरिओ कुप कै जिह रीझि बिभीछन लंक थपी ॥
जिह की जग बीच प्रसिध कला कबि स्याम कहै कछु नाहि छपी ॥
तिह संग करै रस की चरचा जिन हूं तिरीया फुनि चंडि जपी ॥४६७॥
जउ रस बात कही गुपीआ तब ही हरि जवाब दयो तिन साफी ॥
आई हो छोडि सभै पति को तुम होइ तुमै न मरे फुनि माफी ॥

हउ तुम सो नहि हेत करो तुम काहे कउ बाम करो रस लाफी ॥
इउ कहि कै हरि मोन भजी सु बजाइ उठियो मुरली महि काफी ॥४६८॥
कान्रह बाच गोपी सों ॥
सवैया ॥
सभ सुंदर गोपिन सो कबि स्याम दयो हरि कै हरि जवाब जबै ॥
न गई हरि मान कहियो ग्रिह को प्रभ मोहि रही मुखि देख सबै ॥
क्रिसनं करि लै अपने मुरली सु बजाइ उठिओ जुत राग तबै ॥
मनो घाइल गोपिन के ब्रण मै भगवान डरियो जनु लोन अबै ॥४६९॥
जिउ म्रिग बीच म्रिगी पिखीऐ हरि तिउ गन ग्वारिन के मधि सोभै ॥
देखि जिसै रिपु रीझ रहै कबि स्याम नहीं मन भीतर छोभै ॥
देखि जिसै म्रिग धावत आवत चित करै न हमै फुनि को भै ॥
सो बन बीच बिराजत कान्रह जोऊ पिखवै तिह को मनु लोभै ॥४७०॥
गोपी बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
सोऊ ग्वारिन बोलि उठी हरि सो बचना जिन के सम सुध अमी ॥
तिह साथ लगी चरचा करने हरता मन साधन सुधि गमी ॥
तज कै अपुने भरता हमरी मति कान्रह जू ऊपरि तोहि रमी ॥
अति ही तन काम करा उपजी तुम को पिखए नहि जात छमी ॥४७१॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
भगवानि लखी अपुने मन मै इह ग्वारनि मो पिखि मैन भरी ॥
तब ही तजि संक सभै मन की तिन के संगि मानुख केल करी ॥
हरि जी करि खेल किधौ इन सो जनु काम जरी इह कीन जरी ॥
कबि स्याम कहै पिखवो तुम कौतुक कान्रह हरियो कि हरी सु हरी ॥४७२॥
जो जुग तीसर मूरति राम धरी जिह अउर करियो अति सीला ॥
सत्रन को सु संघारि कहै प्रतिपारक साधन को हरि हीला ॥
दवापर मो सोऊ कान्रह भयो मरीया अरि को धरीया पट पीला ॥
सो हरि भूमि बिखै ब्रिज की हसि गोपिन साथ करै रस लीला ॥४७३॥
मालसिरी अरु रामकली सुभ सारंग भावन साथ बजावै ॥
जैतसिरी अरु सुध मल्रहार बिलावल की धुनि कूकि सुनावै ॥
लै मुरली अपुने करि कान्रह किधो अति भावन साथ बजावै ॥
पउन चलै न रहै जमुना थिर मोहि रहै धुनि जो सुनि पावै ॥४७४॥
कान्रह बजावत है सुर सो फुनि गोपिन के मन मै जोऊ भावै ॥
रामकली अरु सुध मल्रहार बिलावल की अति ही ठट पावै ॥
रीझि रहै सु सुरी असुरी म्रिग छाडि म्रिगी बन की चलि आवै ॥
सो मुरली महि स्याम प्रबीन मनो करि रागन रूप दिखावै ॥४७५॥
सुन कै मुरली धुनि कानर की मन मै सभ ग्वारिन रीझि रही है ॥
जो ग्रिह लोगन बात कही तिन हूं फुनि ऊपरि सीस सही है ॥
सामुहि धाइ चली हरि के उपमा तिह की कबि स्याम कही है ॥
मानहु पेखि समसन के मुख धाइ चली मिलि जूथ अही है ॥४७६॥
जिनि रीझि बिभीछन राजु दयो कुप कै दस सीस दई जिनि पीड़ा ॥
मारुत ह्वै दल दैतन को छिन मै घन सो कर दीन उडीड़ा ॥
जाहि मरियो मुर नाम महा सुर आपन ही लंघि मारगु भीड़ा ॥
सो फुनि भूमि बिखै ब्रिज की संगि गोपिन कै सु करै रस क्रीड़ा ॥४७७॥
खेलत कान्रह सोऊ तिन सो जिह की सु करै सभ ही जग जात्रा ॥
सो सभ ही जग को पति है तिन जीवन के बल की पर मात्रा ॥
राम ह्वै रावन सो जिन हूं कुपि जुध करियो करि कै प्रम छात्रा ॥
सो हरि बीच अहीरिन के करिबे कहु कउतुक कीन सु नात्रा ॥४७८॥

दोहरा ॥

जबै क्रिसन संग गोपीअन करी मानुखी बान ॥
सभ गोपी तब यौ लखियो भयो बसय भगवान ॥४७९॥
सवैया ॥
कान्रह तबै संग गोपिन के तब ही फुनि अंत्र धिआन ह्वै गईया ॥
खे कह गयो धरनी धसि गयो किधो मधि रहियो समझियो नही पईया ॥
गोपिन की जब यौ गति भी तब ता छबि को कबि स्याम कहइया ॥
जिउ संग मीनन के लर कै तिन त्याग सभो मनो बारि धरइया ॥४८०॥
गोपिन के तन की छुटगी सुधि डोलत है बन मै जनु बउरी ॥
एक उठै इक झूमि गिरै ब्रिज की महरी इक आवत दउरी ॥
आतुर ह्वै अति ढूंडत है तिन के सिर की गिर गी सु पिछउरी ॥
कान्रह को ध्यान बसियो मन मै सोऊ जान गहै फुनि रूखन कउरी ॥४८१॥
फेरि तजै तिन रूखन को इह भाति कहै नंद लाल कहा रे ॥
चंपक मउलसिरी बट ताल लवंग लता कचनार जहा रे ॥
पै जिह के हम कारन को पगि कंटकका सिरि धूप सहा रे ॥
सो हम कौ तुम देहु बताइ परै तुम पाइन जाव तहा रे ॥४८२॥
बेल बिराजत है जिह जा गुल चंपक का सु प्रभा अति पाई ॥
मौलिसिरी गुल लाल गुलाब धरा तिन फूलन सो छबि छाई ॥
चंपक मउलसिरी बट ताल लवंग लता कचनार सुहाई ॥
बारि झरै झरना गिरि ते कबि स्याम कहै अति ही सुखदाई ॥४८३॥
तिह कानन को हरि के हित ते गुपीआ ब्रिज की इह भाति कहै ॥
बर पीपर हेरि हिया न कहूं जिह के हित सो सिरि धूप सहै ॥
अहो किउ तजि आवत हो भरता बिनु कान्रह पिखे नहि धामि रहै ॥
इक बात करै सुन कै इक बोलब रूखन को हरि जानि गहै ॥४८४॥
कान्रह बियोग को मानि बधू ब्रिज डोलत है बन बीच दिवानी ॥
कूंजन जयो कुरलात फिरै तिह जा जिह जा कछु खान न पानी ॥
एक गिरै मुरझाइ धरा पर एक उठै कहि कै इह बानी ॥
नेहु बढाइ महा हम सो कत जात भयो भगवान गुमानी ॥४८५॥
नैन नचाइ मनो म्रिग से सभ गोपिन को मन चोरि लयो है ॥
ताही कै बीच रहियो गडि कै तिह ते नहि छूटन नैकु भयो है ॥
ताही के हेत फिरै बन मै तजि कै ग्रिह स्वास न एक लयो है ॥
सो बिरथा हम सो बन भ्रात कहो हरि जी किह ओरि गयो है ॥४८६॥
जिन हूं बन बीच मरीच मरियो पुर रावनि सेवक जाहि दहियो है ॥
ताही सो हेत करियो हम हूं बहु लोगन को उपहास सहियो है ॥
वासर से द्रिग सुंदर सो मिलि ग्वारिनिया इह भाति कहियो है ॥
ताही की चोट चटाक लगे हमरो मनूआ म्रिग ठउर रहियो है ॥४८७॥
बेद पड़ै सम को फल हो बहु मंगन को जोऊ दान दिवावै ॥
कीन अकीन लखै फल हो जोऊ आथित लोगन अंन जिवावै ॥
दान लहै हमरे जीअ को इह के सम को न सोऊ फल पावै ॥
जो बन मै हम को जररा इक एक घरी भगवान दिखावै ॥४८८॥
जाहि बिभीछन लंक दई अरु दैतन के कुपि कै गन मारे ॥
पै तिन हूं कबि स्याम कहै सभ साधन राखि असाध संघारे ॥
सो इह जा हम ते छप गयो अति ही कर कै संगि प्रीति हमारे ॥
पाइ परो कहीयो बन भ्रात कहो हरि जी किह ओरि पधारे ॥४८९॥
ग्वारिन खोजि रही बन मै हरि जी बन मै नही खोजत पाए ॥
एक बिचार करियो मन मै फिर कै न गयो कबहूं उह जाए ॥
फेरि फिरी मन मै गिनती करि पारथ सूत की डोर लगाए ॥
यौ उपजी उपमा चकई जनु आवत है कर मै फिरि धाए ॥४९०॥
आइ के ढूंढि रही सोऊ ठउर तहा भगवान न ढूंढड पाए ॥
इउ जु रही सभ ही चकि कै जनु चित्र लिखी प्रितिमा छबि पाए ॥
अउर उपाव करियो पुनि ग्वारिन कान्रह ही भीतरि चित लगाए ॥

गाइ उठी तिह के गुन एक बजाइ उठी इक स्वाग लगाए ॥४९१॥
होत बकी इक होत त्रिणाव्रत एक अघासुर ह्वै करि धावै ॥
होइ हरी तिन मै धसि कै धरनी पर ता कहु मारि गिरावै ॥
कान्रह सो लाग रहियो तिन कौ अत ही मन नैक न छूटन पावै ॥
इउ उपजी उपमा बनीआ जनु सालन के हित रोर बनावै ॥४९२॥
राजा परीछत बाच सुक सो ॥

दोहरा ॥

सुक संग राजे कहु कही जूथ दिजन के नाथ ॥
अगनि भाव किह बिधि कहै क्रिसन भाव के साथ ॥४९३॥
सुक बाच राजा सो ॥
सवैया ॥
राजन पास ब्यास को बाल कथा सु अरौचक भाति सुनावै ॥
ग्वारनीआ बिरहानुल भाव करै बिरहानल को उपजावै ॥
पंच भू आतम लोगन को इह कउतुक कै अति ही डर पावै ॥
कान्रह को ध्यान करे जब ही बिरहानल की लपटान बुझावै ॥४९४॥
ब्रिखभासुर ग्वारनि एक बनै बछुरासुर मूरति एक धरै ॥
इक ह्वै चतुरानन ग्वार हरै इक ह्वै ब्रहमा फिरि पाइ परै ॥
इक ह्वै बगुला भगवान के साथ महा कर कै मनि कोप लरै ॥
इह भाति बधू ब्रिज खेल करै जिह भाति किधो नंद लाल करै ॥४९५॥
कान्रह चरित्र सभै कर कै सभ ग्वारिन फेरि लगी गुन गावन ॥
ताल बजाइ बजा मुरली कबि स्याम कहै अति ही करि भावन ॥
फेरि चितार कहियो हमरे संगि खेल करियो हरि जी इह ठावन ॥
ग्वारिन स्याम की भूल गई सुधि बीच लगी मन के दुख पावन ॥४९६॥
अति होइ गई तन मै हरि साथ सु गोपिन की सभ ही घरनी ॥
तिह रूप निहार कै बसि भई जु हुती अति रूपन की धरनी ॥
इह भाति परी मुरझाइ धरी कबि ने उपमा तिह की बरनी ॥
जिम घंटक हेर मै भूमि के बीच परै गिर बान लगे हरनी ॥४९७॥
बरुनी सर भउहन को धनु कै सु सिंगार के साजन साथ करी ॥
रस को मन मै अति ही करि कोप सु कान्रह के सामुहि जाइ अरी ॥
अति ही करि नेहु को क्रोधु मनै तिह ठउर ते पैग न एक टरी ॥
मनो मैन ही सो अति ही रन कै धरनी पर ग्वारिन जूझि परी ॥४९८॥
तिन ग्वारिन को अति ही पिखि प्रेम तबै प्रगटे भगवान सिताबी ॥
जोति भई धरनी पर इउ रजनी महि छूटत जिउ महताबी ॥
चउक परी तब ही इह इउ जैसे चउक परै तम मै डरि खुआबी ॥
छाडि चलियो तन को मन इउ जिम भाजत है ग्रिह छाडि सराबी ॥४९९॥
ग्वारिन धाइ चली मिलबे कहु जो पिखए भगवान गुमानी ॥
जिउ म्रिगनी म्रिग देखि चलै जु हुती अति रूप बिखै अभिमानी ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि नै मुख ते इह भाति बखानी ॥
जिउ जल चात्रिक बूंद परै जिम कूदि परै मछली पिखि पानी ॥५००॥
राजत है पीअरो पट कंधि बिराजत है म्रिग से द्रिग दोऊ ॥
छाजत है मनि सो उर मै नदीआ पति साथ लीए फुनि जोऊ ॥
कान्रह फिरै तिन गोपिन मै जिह की जग मै सम तुलि न कोऊ ॥
ग्वारिन रीझ रही ब्रिज की सोऊ रीझत है चक देखत सोऊ ॥५०१॥

कबितु ॥

कउल जिउ प्रभात तै बिछुरियो मिली बात तै गुनी जिउ सुर सात तै बचायो चोर गात तै ॥
जैसे धनी धन तै अउ रिनी लोक मनि तै लरईया जैसे रन तै तजईया जिउ नसात तै ॥
जैसे दुखी सूख तै अभूखी जैसे भूख तै सु राजा सत्र आपने को सुने जैसे घात तै ॥

होत है प्रसंन जेते एते एती बातन तै होत है प्रसंन्य गोपी तैसे कान्रह बात तै ॥५०२॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
हसि बात कही संगि गोपिन कान चलो जमुना तटि खेल करै ॥
चिटकारन सो भिर कै तिह जा तुमहूं हूं तरो हमहूं हूं तरै ॥
गुहि कै बन फूलन सुंदर हार सो केल करै तिन डारि गरै ॥
बिरहा छुध को तिह ठउर बिखै हस कै रस कै संगि पेट भरै ॥५०३॥
आइसु मानि तबै हरि को सभ धाइ चली गुपीआ तिह ठउरै ॥
एक चलै मुसकाइ भली बिधि एक चलै हरूए इक दउरै ॥
स्याम कहै उपमा तिह की जल मै जमुना कहु ग्वारिन हउरै ॥
रीझ रहै बन के म्रिग देखि सु अउर पिखै गज गामन सउरै ॥५०४॥
स्याम समेत सभै गुपीआ जमुना जल को तरि पारि परईया ॥
पार भई जब हीं हित सो गिरदा कर कै तिह को तिसटईया ॥
ता छबि की अति ही उपमा कबि नै मुख ते इह भाति सुनईया ॥
कान्रह भयो ससि सुध मनो सम राजत ग्वारिन तीर तरईया ॥५०५॥
बात लगी कहने मुख ते कवि स्याम कहै मिल कै सभ ग्वारिन ॥
चंद्रमुखी म्रिग से द्रिगनी लखीयै तिन भान अनंत अपारनि ॥
कान्रह के साथ करी चरचा मिलि कै ब्रिज की सभ सुंदर बारनि ॥
छोरि दई ग्रिह की सभ लाज जु होइ महा रस की चसकारनि ॥५०६॥
कै रस के हरि कारनु कै करि कसट बडो कोऊ मंतर साधो ॥
कै कोऊ जंत्र बडोई सधियो इन को अपने मन भीतर बाधो ॥
कै केहूं तंत्र के साथ किधो कबि स्याम कहै अति ही करि धाधो ॥
चोरि लयो मनु ग्वारिन को छिन भीतर दीन दयानिधि माधो ॥५०७॥
गोपी वाच ॥
सवैया ॥
कान्रह के ग्वारिन साथ कहियो हम को तजि कै किह ओरि गए थे ॥
प्रीति बढाइ महा हम सो जमुना तटि पै रस केल कए थे ॥
यौ तजि गे जिम राहि मुसाफिर स्याम कहियो तुम नाहि नए थे ॥
फूल खिरे मुख आए कहा अपनी बिरीआ कहूं भउर भए थे ॥५०८॥

अथ चतुर पुरख भेद कथनं ॥

सवैया ॥
नर एक अकीन ही प्रीत करै इक कीन करै इक कीन जु जानै ॥
एक न प्रीति के भेद जनै जोऊ प्रीति करै अरि कै तिह मानै ॥
सो नर मूड़ बिखै कहीयै जगि जो नर रंच न प्रीति पछानै ॥
सो चरचा रस की इह भाति सु ग्वारिनीआ संगि कान्रह बखानै ॥५०९॥
गोपी बाच ॥
सवैया ॥
ग्वारिनीआ इह भाति कहै करि नेह को अंति दगा कोऊ दै है ॥
दो जन छाडि परो हरि गयो जन जो छल सो तिह को हरि लै है ॥
जो बटहा जन धावत है कोऊ जात चलियो पिख कै मधिमै है ॥
पै खिझ कै अति ही गुपीआ इह भाति कहियो तिन की सम ए है ॥५१०॥
जब ही इह ग्वारिन बात कही तब ही तिन के संग कान्रह हसै ॥
जिह नाम के लेत जरा मुख ते तज कै गनका सभ पाप नसे ॥
न जपियो जिह जाप सोऊ उजरे जिह जाप जपियो सोऊ धाम बसे ॥
तिन गोपिन सो इह भाति कहियो हमहूं अति ही रस बीच फसे ॥५११॥
कहि कै इह बात हसे हरि जू उठ कै जमुना जल बीच तरे ॥
छिन एक लगियो न तबै तिह को लखि कै जमुना कह पार परे ॥
लखि कै जल को संग गोपिन के भगवान महा उपहास करे ॥

बहु होरनि तै अरु ब्रयाहनि तै कुरमातन तै अति सोऊ खरे ॥५१२॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
रजनी पर गी तब ही भगवान कहियो हसि कै हम रास करै ॥
ससि राजत है सित गोपिन के मुख सुंदर सेत ही हार डरै ॥
हित सो ब्रिज भूमि बिखै सभ ही रस खेल करै कर डार गरै ॥
तुम को जोऊ सोक बढियो बिछुरे हम सो मिलि कै अब सोक हरै ॥५१३॥
ऐहो त्रीया कहि स्री जदुबीर सभै तुम रास को खेल करो ॥
गहि कै कर सो करु मंडल कै न कछू मन भीतर लाज धरो ॥
हमहूं तुमरे संग रास करै नचि है नचियो नह नैकु डरो ॥
सभ ही मन बीच असोक करो अति ही मन सोकन को सु हरो ॥५१४॥
तिन सो भगवान कही फिर यो सजनी हमरी बिनती सुनि लीजै ॥
आनंद बीच करो मन के जिह ते हमरे तन को मन जीजै ॥
मितवा जिह ते हित मानत है तब ही उठ कै सोऊ कारज कीजै ॥
दै रस को सिरपाव तिसै मन को सभ सोक बिदा करि दीजै ॥५१५॥
हसि कै भगवान कही फिरि यौ रस की बतीया हम ते सुन लईयै ॥
जा के लीए मितवा हित मानत सो सुन कै उठि कारज कईयै ॥
गोपिन साथ क्रिपा करि कै कबि स्याम कहियो मुसलीधर भईयै ॥
जा संग हेत महा करीयै बिनु दामन ता ही के हाथि बिकईयै ॥५१६॥
कानर की सुन कै बतीआ मन मै तिन ग्वारिन धीर गहियो है ॥
दोख जितो मन भीतर थो रस पावक मो त्रिण तुलि दहियो है ॥
रास करियो सभ ही मिलि कै जसुधा सुत को तिन मानि कहियो है ॥
रीझ रही प्रिथमी प्रिथमी गन अउ नभ मंडल रीझ रहियो है ॥५१७॥
गावत एक बजावत ताल सभै ब्रिज नारि महा हित सो ॥
भगवान को मानि कहियो तब ही कबि स्याम कहै अति ही चित सो ॥
इन सीख लई गति गामन ते सुर भामन ते कि किधो कित सो ॥
अब मोहि इहै समझियो सु परै जिह कान्रह सिखे इन हूं तित सो ॥५१८॥
मोर को पंख बिराजत सीस सु राजत कुंडल कानन दोऊ ॥
लाल की माल सु छाजत कंठहि ता उपमा सम है नहि कोऊ ॥
जो रिपु पै मग जात चलियो सुनि कै उपमा चलि देखत ओऊ ॥
अउर की बात कहा कहीयै कबि स्याम सुरादिक रीझत सोऊ ॥५१९॥
गोपिन संग तहा भगवान मनै अति ही हित को कर गावै ॥
रीझ रहै खग ठउर समेत सु या बिधि ग्वारिन कान्रह रिझावै ॥
जा कहु खोजि कई गण गंध्रब किंनर भेद न रंचक पावै ॥
गावत सो हरि जू तिह जा तज कै म्रिगनी चलि कै म्रिग आवै ॥५२०॥
गावत सारंग सुध मलार बिभास बिलावल अउ फुनि गउरी ॥
जा सुर स्रोनन मै सुन कै सुर भामिन धावत डारि पिछउरी ॥
सो सुन कै सभ ग्वारनिया रस कै संग होइ गई जनु बउरी ॥
तिआग कै कानन ता सुन कै म्रिग लै म्रिगनी चलि आवत दउरी ॥५२१॥
एक नचै इक गावत गीत बजावत ताल दिखावत भावन ॥
रास बिखै अति ही रस सो सु रिझावन काज सभै मन भावनि ॥
चादनी सुंदर राति बिखै कबि स्याम कहै सु बिखै रुत सावन ॥
ग्वारनिया तजि कै पुर को मिलि खेलि करै रस नीकनि ठावन ॥५२२॥
सुंदर ठउर बिखै कबि स्याम कहै मिलि ग्वारिन खेल करियो है ॥
मानहु आप ही ते ब्रहमा सुर मंडल सुधि बनाइ धरियो है ॥
जा पिख के खग रीझ रहै म्रिग तिआग तिसै नही चारो चरियो है ॥
अउर की बात कहा कहीये जिह के पिखए भगवान छरियो है ॥५२३॥
इत ते नंदलाल सखा लीए संगि उतै फुनि ग्वारिन जूथ सबै ॥
बहसा बहसी तह होन लगी रस बातन सो कबि स्याम तबै ॥
जिह को ब्रहमा नही अंत लखै नह नारद पावत जाहि छबै ॥

म्रिग जिउ म्रिगनी महि राजत है हरि तिउ गन ग्वारिन बीच फबै ॥५२४॥
नंद लाल लला इत गावत है उत ते सभ ग्वारनिया मिलि गावै ॥
फागुन की रुति ऊपरि आबन मानहु कोकिलका कुकहावै ॥
तीर नदी सोऊ गावत गीत जोऊ उन के मन भीतर भावै ॥
नैन नछत्र पसारि पिखै सुर देव बधू मिलि देखनि आवै ॥५२५॥
मंडल रास बचित्र महा सम जे हरि की भगवान रचियो है ॥
ताही के बीच कहै कबि इउ रस कंचन की समतुलि मचियो है ॥
ता सी बनाइबे को ब्रहमा न बनी करि कै जुग कोटि पचियो है ॥
कंचन के तनि गोपनि को तिह मधि मनी मन तुलि गचियो है ॥५२६॥
जल मै सफरी जिम केल करै तिम ग्वारनिया हरि के संगि डोलै ॥
जिउ जन फाग को खेलत है तिह भाति ही कान्रह के साथ कलोलै ॥
कोकिलका जिम बोलत है तिम गावत ता की बराबर बोलै ॥
स्याम कहै सभ ग्वारनिया इह भातन सो रस कान्रहि निचोलै ॥५२७॥
रस की चरचा तिन सो भगवान करी हित सो न कछू कम कै ॥
इह भाति कहियो कबि स्याम कहै तुमरे माहि खेल बनिओ हम कै ॥
कहि कै इह बात दीयो हसि कै सु प्रभा सुभ दंतन यौ दमकै ॥
जनु दिउस भले रुति सावन की अति अभ्रन मै चपला चमकै ॥५२८॥
ऐहो लला नंद लाल कहै सभ ग्वारनिया अति मैन भरी ॥
हमरे संग आवहु खेल करो न कछू मन भीतर संक करी ॥
नैन नचाइ कछू मुसकाइ कै भउह दुऊ करि टेढि धरी ॥
मन यौ उपजी उपमा रस की मनो कान्रह के कंठहि फासि डरी ॥५२९॥
खेलत ग्वारिन मधि सोऊ कबि स्याम कहै हरि जू छबि वारो ॥
खेलत है सोऊ मैन भरी इन हूं पर मानहु चेटक डारो ॥
तीर नदी ब्रिज भूमि बिखै अति होत है सुंदर भाति अखारो ॥
रीझ रहै प्रिथमी के सभै जन रीझ रहियो सुर मंडल सारो ॥५३०॥
गावत एक नचै इक ग्वारनि तारिन किंकन की धुनि बाजै ॥
जिउ म्रिग राजत बीच म्रिगी हरि तिउ गन ग्वारिन बीच बिराजै ॥
नाचत सोऊ महा हित सो कबि स्याम प्रभा तिन की इम छाजै ॥
गाइब पेखि रिसै गन गंध्रब नाचब देखि बधू सुर लाजै ॥५३१॥
रस कारन को भगवान तहा कबि स्याम कहै रस खेल करियो ॥
मन यौ उपजी उपमा हरि जू इन पै जनु चेटक मंत्र डरियो ॥
पिख कै जिह को सुर अछ्रन के गिरि बीच लजाइ बपै सु धरियो ॥
गुपीआ संगि कान्रह के डोलत है इन को मनूआ जब कान्रह हरियो ॥५३२॥
स्याम कहै सभ ही गुपीआ हरि के संगि डोलत है सभ हूईआ ॥
गावत एक फिरै इक नाचत एक फिरै रस रंग अकूईआ ॥
एक कहै भगवान हरी इक लै हरि नामु परै गिरि भूईआ ॥
यौ उपजी उपमा पिखि चुंमक लागी फिरै तिह के संग सूईआ ॥५३३॥
संग ग्वारिन कान्रह कही हसि कै कबि स्याम कहै अध राति समै ॥
हम हूं तुम हूं तजि कै सभ खेल सभै मिल कै हम धामि रमै ॥
हरि आइसु मानि चली ग्रिह को सभ ग्वारनीया करि दूर गमै ॥
अब जाइ टिकै सभ आसन मै करि कै सभ प्रात की नेह तमै ॥५३४॥
हरि सो अरु गोपिन संगि किधो कबि स्याम कहै अति खेल भयो है ॥
लै हरि जी तिन को संग आपन तिआग कै खेल को धामि अयो है ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने अपुने मनि चीन लयो है ॥
कागजीए रस को अति ही सु मनो गनती करि जोरु दयो है ॥५३५॥

अथ करि पकर खेलबो कथनं ॥

रास मंडल ॥
सवैया ॥

प्रात भए हरि जू तजि कै ग्रिह धाइ गए उठि ठउर कहा को ॥
फूल रहे जिहि फूल भली बिधि तीर बहै जमुना सो तहा को ॥
खेलत है सोऊ भाति भली कबि स्याम कहै कछु त्रास न ता को ॥
संग बजावत है मुरली सोऊ गऊअन के मिस ग्वारनिया को ॥५३६॥
रास कथा कबि स्याम कहै सुन कै ब्रिखभानु सुता सोऊ धाई ॥
जा मुख सुध निसापति सो जिह के तन कंचन सी छबि छाई ॥
जा की प्रभा कबि देत सभै सोऊ ता मै रजै बरनी नहि जाई ॥
स्याम की सोभ सु गोपिन ते सुनि कै तरुनी हरनी जिम धाई ॥५३७॥

कबितु ॥

सेत धरे सारी ब्रिखभानु की कुमारी जस ही की मनो बारी ऐसी रची है न को दई ॥
रंभा उरबसी अउर सची सु मदोदरी पै ऐसी प्रभा का की जग बीच न कछू भई ॥
मोतिन के हार गरे डारि रुचि सो सुधार कान्रह जू पै चली कबि स्याम रस के लई ॥
सेतै साज साजि चली सावरे की प्रीति काज चादनी मै राधा मानो चादनी सी ह्वै गई ॥५३८॥
सवैया ॥
अंजन आडि सु धार भले पट भूखन अंग सु धार चली ॥
जनु दूसर चंद्रकला प्रगटी जनु राजत कंज की सेत कली ॥
हरि के पग भेटन काज चली कबि स्याम कहै संग राधे अली ॥
जनु जोति त्रियन ग्वारिन ते इह चंद की चादनी बाली भली ॥५३९॥
कान्रह सो प्रीति बढी तिह की मन मै अति ही नहि नैकु घटी है ॥
रूप सची अरु पै रति तै मन त्रीयन ते नहि नैकु लटी है ॥
रास मै खेलनि काज चली सजि साजि सभै कबि स्याम नटी है ॥
सुंदर ग्वारिन कै घन मै मनो राधिका चंद्रकला प्रगटी है ॥५४०॥
ब्रहमा पिखि कै जिह रीझ रहिओ जिह को दिख कै सिव ध्यान छुटा है ॥
जा निरखे रति रीझ रही रति के पति को पिखि मान टुटा है ॥
कोकिल कंठ चुराइ लीयो जिनि भावन को सभ भाव लुटा है ॥
ग्वारिन के घन बीच बिराजत राधिका मानहु बिजु छटा है ॥५४१॥
कान्रह के पूजन पाइ चली ब्रिखभानु सुता सभ साज सजै ॥
जिह को पिख कै मनि मोहि रहै कबि स्याम कहै दुति सीस रजै ॥
जिन अंग प्रभा कबि देत सभै सोऊ अंग धरे त्रिय राज छजै ॥
जिह को पिखि कंद्रप रीझ रहै जिह को दिखि चादनी चंद लजै ॥५४२॥
सित सुंदरु साज सभै सजि कै ब्रिखभान सुता इह भाति बनी ॥
मुख राजत सुध निसापति सो जिह मै अति चादनी रूप घनी ॥
रस को करि राधिका कोप चली मनो साज सो साज कै मैन अनी ॥
तिह पेखि भए भगवान खुसी सोऊ त्रीयन ते त्रिय राज गनी ॥५४३॥
राधे बाच गोपिन सो ॥
सवैया ॥
ब्रिखभानु सुता हरि पेखि हसी इह भाति कहियो संग ग्वारिन कै ॥
सम दारिम दात निकास किधो सम चंद मुखी ब्रिज बारन कै ॥
हम अउ हरि जी अति होड परी रस ही के सु बीच महा रन कै ॥
तजि के सभ संकि निसंक भिरो संग ऐसे कहियो हसि ग्वारिन कै ॥५४४॥
हसि बात कही संग गोपिन के कबि स्याम कहै ब्रिखभानु जई ॥
मनो आप ही ते ब्रहमा सु रची रुचि सो इह रूप अनूप मई ॥
हरि को पिखि कै निहुराइ गई उपमा तिह की कबि भाख दई ॥
मनो जोबन भार सहियो न गयो तिह ते ब्रिज भामिनि नीचि भई ॥५४५॥
सभ ही मिलि रास को खेल करै सभ ग्वारनिया अति ही हित ते ॥
ब्रिखभानु सुता सुभ साज सजे सु बिराजत साज सभै सित ते ॥
फुनि ऊच प्रभा अति ही तिन की कबि स्याम बिचार कही चित ते ॥
उत ते घनस्याम बिराजत है हरि राधिका बिदुलता इत ते ॥५४६॥
ब्रिखभानु सुता तहि खेलत रासि सु स्याम कहै सखीया संग लै ॥

उत चंद्र भगा सभ ग्वारिन को तन चंदन के संग लेपहि कै ॥
जिन के म्रिग से द्रिग सुंदर राजत छाजत गामनि पै जिन गै ॥
मनि यौ उपजी उपमा नहि चंद की चादनी जोबन वारन मै ॥५४७॥
चंद्रभगा बाच राधे प्रति ॥
सवैया ॥
बतीया फुनि चंद्रभगा मुख ते इह भाति कही ब्रिखभान सुता सो ॥
आवहु खेल करे हरि सो हम नाहक खेल करो तुम का सो ॥
ता की प्रभा कबि स्याम कहै उपजी है जोऊ अपने मनूआ सो ॥
ग्वारिन जोति तरईयन की छपगी दुति राधिका चंद्रकला सो ॥५४८॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
सुनि चंद्रभगा की सभै बतीया ब्रिखभान सुता तब ऐसे कहियो है ॥
याही के हेत सुनो सजनी हम लोकन को उपहास सहियो है ॥
स्रउनन मै सुनि रास कथा तब ही मन मै हम ध्यान गहियो है ॥
स्याम कहै अखीआ पिख कै हमरे मन को तन मोहि रहियो है ॥५४९॥
तब चंद्रभगा इह भाति कहियो सजनी हमरी बतीआ सुनि लीजै ॥
देखहु स्याम बिराजत है जिह के मुख के पिखए फुनि जीजै ॥
जा के करे मित होइ खुसी सुनीऐ उठ कै सोऊ काज करीजै ॥
ताही ते राधे कहो तुम सो अब चार भई तु बिचार न कीजै ॥५५०॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
कान्रह के भेटन पाइ चली बतीया सुनि चंद्रभगा फुनि कैसे ॥
मानहु नाग सुता इह सुंदरि तिआगि चली ग्रिहि पत्र धरै से ॥
ग्वारनि मंदरि ते निकसी कबि स्याम कहै उपमा तिह ऐसे ॥
मानहु स्याम घनै तजि कै प्रगटी है सोऊ बिजली दुति जैसे ॥५५१॥
रासहि की रचना भगवान कहै कबि स्याम बचित्र करी है ॥
राजत है तरए जमुना अति ही तह चादनी चंद करी है ॥
सेत पटै संग राजत ग्वारिन ता की प्रभा कबि ने सु करी है ॥
मानहु रास बगीचन मै इह फूलन की फुलवारि जरी है ॥५५२॥
चंद्रभगा हूं को मानि कहियो ब्रिखभान सुता हरि पाइन लागी ॥
मैन सी सुंदर मूरति पेखि कै ताही के देखिबे को अनुरागी ॥
सोवत थी जनु लाज की नीद मै लाज की नीद तजी अब जागी ॥
जा को मुनी नहि अंतु लहै इह ताही सो खेल करै बडभागी ॥५५३॥
कान्रह बाच राधा सो ॥

दोहरा ॥

क्रिसन राधिका संग कहियो अति ही बिहसि कै बात ॥
खेलहु गावहु प्रेम सो सुनि सम कंचन गात ॥५५४॥
क्रिसन बात सुनि राधिका अति ही बिहसि कै चीत ॥
रास बिखै गावन लगी ग्वारिन सो मिलि गीत ॥५५५॥
सवैया ॥
चंद्रभगा अरु चंद्रमुखी मिल कै ब्रिखभानु सुता संग गावै ॥
सोरठि सारंग सुध मलार बिलावल भीतर तान बसावै ॥
रीझ रही ब्रिज हूं की त्रीया सोऊ रीझ रहै धुनि जो सुनि पावै ॥
सो सुन कै इन पै हित कै बन तिआगि म्रिगी म्रिग अउ चलि आवै ॥५५६॥
तिन सेंधुर माग दई सिर पै रस सो तिन को अति ही मनु भीनो ॥
बेसर आड सु कंठसिरी अरु मोतिसिरी हूं को साज नवीनो ॥
भूखन अंग सभै सजि सुंदरि आखन भीतर काजर दीनो ॥
ताही सु ते कबि स्याम कहै भगवान को चित चुराइ कै लीनो ॥५५७॥
चंद की चादनी मै कबि स्याम जबै हरि खेलनि रास लगियो है ॥

राधे को आनन सुंदर पेखि कै चाद सो ताही के बीच पगियो है ॥
हरि को तिन चित चुराइ लीयो सु किधो कबि को मन यौ उमगियो है ॥
नैनन को रस दे भिलवा ब्रिखभान ठगी भगवान ठगियो है ॥५५८॥
जिह को पिख कै मुख मैन लजै जिह को दिख कै मुखि चंद्र लजै ॥
कबि स्याम कहे सोऊ खेलत है संग कानर के सुभ साज सजै ॥
सोऊ सूरतिवंत रची ब्रहमा कर कै अति ही रुचि कै न कजै ॥
मनि माल के बीच बिराजत जिउ तिम त्रियन मै त्रिय राज रजै ॥५५९॥
गाइ कै गीत भली बिधि सुंदरि रीझि बजावत भी फिरि तारी ॥
अंजन आड सुधार भले पट साजन को सज कै सु गुवारी ॥
ता छबि की अति ही सु प्रभा कबि नै मुखि ते इह भाति उचारी ॥
मानहु कान्रह ही के रस ते इह फूल रही त्रीय आनंद बारी ॥५६०॥
ता की प्रभा कबि स्याम कहै जोऊ राजत रास बिखै सखीआ है ॥
जा मुख उपमा चंद्र छटा सम छाजत कउलन सी अखीआ है ॥
ता की किधौ अति ही उपमा कबि नै मन भीतर यौ लखीआ है ॥
लोगन के मन की हरता सु मुनीनन के मन की चखीआ है ॥५६१॥
रूप सची इक चंद्रप्रभा इक मैनकला इक मैन की मूरति ॥
बिजुछटा इक दारिम दात बराबर जाही की है न कछू रति ॥
दामिनि अउ म्रिग की म्रिगनी सरमाइ जिसै पिखि होत है चूरति ॥
सोऊ कथा कबि स्याम कहै सभ रीझ रही हरि की पिखि मूरति ॥५६२॥
ब्रिखभानु सुता हसि बात कही तिह के संग जो हरि अति अगाधो ॥
स्याम कहै बतीया हरि को संग ऐसे कही पट को तजि राधो ॥
रास बिखै तुम नाचहु जू तज कै अति ही मन लाज को बाधो ॥
ता मुख की छबि यौ प्रगटी मनो अभ्रन ते निकसियो ससि आधो ॥५६३॥
जिन के सिरि सोंधर माग बिराजत राजत है बिंदूआ जिन पीले ॥
कंचन भा अरु चंद्रप्रभा जिन के तन लीन सभै फुनि लीले ॥
एक धरे सित सुंदर साज धरे इक लाल सजे इक नीले ॥
स्याम कहे सोऊ रीझ रहै पिखि कै द्रिग कंज से कान्रह रसीले ॥५६४॥
सभ ग्वारनिया तह खेलत है सुभ अंगन सुंदर साज कई ॥
सोऊ रास बिखै तह खेलत है हरि सो मन मै अति ही उमई ॥
कबि स्याम कहै तिन की उपमा जु हुती तह ग्वारिन रूप रई ॥
मनो स्यामहि को तन गोरिन पेखि कै स्यामहि सी सभ होइ गई ॥५६५॥
केल कै रास मै रीझ रही कबि स्याम कहै मन आनंद कै कै ॥
चंद्रमुखी तन कंचन भा हसि सुंदर बात कही उमगै कै ॥
पेखत मूरति भी रस के बसि आपन ते बढ वाहि लखै कै ॥
जिउ म्रिगनी म्रिग पेखत तिउ ब्रिखभान सुता भगवान चितै कै ॥५६६॥
ब्रिखभानु सुता पिखि रीझ रही अति सुंदरि सुंदर कान्रह को आनन ॥
राजत तीर नदी जिह के सु बिराजत फूलन के जुत कानन ॥
नैन कै भावन सो हरि को मनु मोहि लइओ रस की अभिमानन ॥
जिउ रस लोगन भउहन लै धनु नैनन सैन सु कंज से बानन ॥५६७॥
कान्रह सो प्रीति बढी तिन की न घटी कछु है बढही सु भई है ॥
डार कै लाज सभै मन की हरि कै संगि खेलन को उमई है ॥
स्याम कहै तिन की उपमा अति ही जु त्रीआ अति रूप रई है ॥
सुंदर कान्रह जू कौ पिखि कै तनमै सभ ग्वारिन होइ गई है ॥५६८॥
नैन म्रिगी तन कंचन के सभ चंद्रमुखी मनो सिंधु रची है ॥
जा सम रूप न राजत है रति रावन त्रीय न अउर सची है ॥
ता महि रीझ महा करतार क्रिपा कटि केहर कै सु गची है ॥
ता संग प्रीति कहै कबि स्याम महा भगवानहि की सु मची है ॥५६९॥
रागन अउर सुभावन की अति गारन की तह माड परी ॥
ब्रिज गीतन की अति हासन सो जह खेलत भी कई एक घरी ॥
गावत एक बजावत ताल कहै इक नाचहु आइ अरी ॥

कबि स्याम कहै तिह ठउर बिखै जिह ठउर बिखै हरि रास करी ॥५७०॥
जदुराइ को आइसु पाइ त्रीया सभ खेलत रास बिखै बिधि आछी ॥
इंद्र सभा जिह सिंधु सुता जिम खेलन के हित काछन काछी ॥
कै इह किंनर की दुहिता किधौ नागन की किधौ है इह ताछी ॥
रास बिखै इम नाचत है जिम केल करै जल भीतर माछी ॥५७१॥
जिह के मुखि देखि छटा सुभ सुंदर मधिम लागत जोति ससी है ॥
भउरन भाइ सो छाजत है मदनै मनो तान कमान कसी है ॥
ताही के आनन सुंदर ते सुर रागह की सभ भाति बसी है ॥
जिउ मधु बीच फसै मखीआ मति लोगन की इह भाति फसी है ॥५७२॥
फिरि सुंदर आनन ते हरि जू बिधि सुंदर सो इक तान बसायो ॥
सोरठि सारंग सुध मलार बिलावल की सुर भीतर गायो ॥
सो अपने सुन स्रउनन मै ब्रिज गवारनीया अति ही सुखु पायो ॥
मोहि रहे बन के खग अउ म्रिग रीझ रहै जिन हूं सुनि पायो ॥५७३॥
तह गावत गीत भलै हरि जू कबि स्याम कहै करि भाव छबै ॥
मुरली जुत ग्वरानि भीतर राजत ज्यो म्रिगनी म्रिग बीच फबै ॥
जिह को सभ लोगन मै जसु गावत छूटत है तिन ते न कबै ॥
तिनि खेलन को मन गोपिन को छिन बीच लीयो फुनि चोर सबै ॥५७४॥
कबि स्याम कहै उपमा तिह की जिन जोबन रूप अनूप गहियो है ॥
जा मुख देखि अनंद बढियो जिह को सुनि स्रउनन सोक दहियो है ॥
आनंद कै ब्रिखभानु सुता हरि के संग ज्वाब सु ऐस कहियो है ॥
ता के सुने त्रीया मोहि रही सुनि कै जिह को हरि रीझ रहियो है ॥५७५॥
ग्वारनीया मिल कै संगि कान्रह कै खेलत है कबि स्याम सबै ॥
न रही तिन को सुधि अंगन की नहि चीरन की तिन को सु तबै ॥
सु गनो कह लउ तिन की उपमा अति ही गन मै मनि ता की छबै ॥
मन भावन गावन की चरचा कछु थोरीयै है सुनि लेहु अबै ॥५७६॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

बात कही तिन सो क्रिसन अति ही बिहसि कै चीति ॥
मीत रसहि की रीति सो कहियो सु गावहु गीत ॥५७७॥
सवैया ॥
बतीआ सुनि कै सभ ग्वारनीया सुभ गावत सुंदर गीत सभै ॥
सिंधु सुता रु घ्रिताची त्रीया इन सी नही नाचत इंद्र सभै ॥
दिवया इन के संगि खेलत है गज को कबि स्याम सु दान अभै ॥
चड़ कै सु बिवानन सुंदर मै सुर देखन आवत तिआग नभै ॥५७८॥
त्रेतहि हो जिनि राम बली जग जीति मरियो सु धरियो अति सीला ॥
गाइ कै गीत भली बिधि सो फुनि ग्वारिन बीच करै रस लीला ॥
राजत है जिह को तन स्याम बिराजत ऊपर को पट पीला ॥
खेलत सो संगि गोपिन कै कबि स्याम कहै जदुराइ हठीला ॥५७९॥
बोलत है जह कोकिलका अरु सोर करै चहूं ओर रटासी ॥
स्याम कहै तिह स्याम की देह रजै अति सुंदर मैन घटा सी ॥
ता पिखि कै मन ग्वारिन ते उपजी अति ही मनो घोर घटा सी ॥
ता महि यौ ब्रिखभान सुता दमकै मनो सुंदर बिजु छटा सी ॥५८०॥
अंजन है जिह आखन मै अरु बेसर को जिह भाव नवीनो ॥
जा मुख की सम चंद प्रभा जसु ता छबि को कबि ने लखि लीनो ॥
साज सभै सज कै सुभ सुंदर भाल बिखै बिंदूआ इक दीनो ॥
देखत ही हरि रीझ रहे मन को सब सोक बिदा कर दीनो ॥५८१॥
ब्रिखभानु सुता संग खेलन की हसि कै हरि सुंदर बात कहै ॥
सुनए जिह के मनि आनंद बाढत जा सुन कै सभ सोक दहै ॥
तिह कउतुक कौ मन गोपिन को कबि सयाम कहै दिखबो ई चहै ॥

नभि मै पिखि कै सुर गंध्रब जाइ चलियो नहि जाइ सु रीझ रहै ॥५८२॥
कबि स्याम कहै तिह की उपमा जिह के फुनि उपर पीत पिछउरी ॥
ताही के आवत है चलि कै ढिग सुंदर गावत सारंग गउरी ॥
सावलीआ हरि कै ढिग आइ रही अति रीझ इकावत दउरी ॥
इउ उपमा उपजी लखि फूल रही लपटाइ मनो त्रीय भउरी ॥५८३॥
स्याम कहै तिह की उपमा जोऊ दैतन को रिपु बीर जसी है ॥
जे तप बीच बडो तपीआ रस बातन मै अति ही जु रसी है ॥
जाही को कंठ कपोत सो है जिह भा मुख की सम जोति ससी है ॥
ता म्रिगनी त्रीय मारन को हरि भउहनि की अरु पंच कसी है ॥५८४॥
फिरि कै हरि ग्वारिन के संग हो फुनि गावत सारंग रामकली है ॥
गावत है मन आनंद कै ब्रिखभानु सुता संगि जूथ अली है ॥
ता संग डोलत है भगवान जोऊ अति सुंदरि राधे भली है ॥
राजत है जिह को ससि सो मुख छाजत भा द्रिग कंज कली है ॥५८५॥
ब्रिखभानु सुता संग बात कही कबि स्याम कहै हरि जू रसवारे ॥
जा मुख की सम चंद प्रभा जिह के म्रिग से द्रिग सुंदर कारे ॥
केहरि सी जिह की कटि है तिन हूं बचना इह भाति उचारे ॥
सो सुनि कै सभ ग्वारनीया मन के सभि सोक बिदा करि डारे ॥५८६॥
हसि कै तिह बात कही रस की सु प्रभा जिन हूं बड़वानल लीली ॥
जो जग बीच रहियो रवि कै नर कै तरु कै गज अउर पपीली ॥
मुख ते तिन सुंदर बात कही संग ग्वारनि के अति सही सु रसीली ॥
ता सुनि कै सभ रीझ रही सुनि रीझ रही ब्रिखभानु छबीली ॥५८७॥
ग्वारनीया सुनि स्रउनन मै बतीआ हरि की अति ही मन भीनो ॥
कंठसिरी अरु बेसरि माग धरै जोऊ सुंदर साज नवीनो ॥
जो अवतारन ते अवतार कहै कबि स्याम जु है सु नगीनो ॥
ताहि किधौ अति ही छल कै सु चुराइ मनो मन गोपिन लीनो ॥५८८॥
कानर सो ब्रिखभानु सुता हसि बात कही संग सुंदर ऐसे ॥
नैन नचाइ महा म्रिग से कबि स्याम कहै अति ही सु रुचै से ॥
ता छबि की अति ही उपमा उपजी कबि के मन ते उमगै से ॥
मानहु आनंद कै अति ही मनो केल करै पति सो रति जैसे ॥५८९॥
ग्वारिन को हरि कंचन से तन मै मनि की मन तुलि खुभा है ॥
खेलत है हरि के संग सो जिन की बरनी नही जात सुभा है ॥
खेलन को भगवान रची रस के हित चित्र बचित्र सभा है ॥
यौ उपजी उपमा तिन मै ब्रिखभानु सुता मनो चंद्र प्रभा है ॥५९०॥
ब्रिखभानु सुता हरि आइस मान कै खेलत भी अति ही स्रम कै ॥
गहि हाथ सो हाथ त्रीया सभ सुंदर नाचत रास बिखै भ्रम कै ॥
तिह की सु कथा मन बीच बिचारि करै कबि स्याम कही क्रम कै ॥
मनो गोपिन के घन सुंदर मै ब्रिज भामिनि दामिनि जिउ दमकै ॥५९१॥

दोहरा ॥

पिखि कै नाचत राधिका क्रिसन मनै सुख पाइ ॥
अति हुलास जुत प्रेम छकि मुरली उठियो बजाइ ॥५९२॥
सवैया ॥
नट नाइक सुद्ध मलार बिलावल ग्वारिन बीच धमारन गावै ॥
सोरठि सारंग रामकली सु बिभास भले हित साथ बसावै ॥
गावहु ह्वै म्रिगनी त्रीय को सु बुलावत है उपमा जीय भावै ॥
मानहु भउहन को कसि कै धनु नैनन के मनो तीर चलावै ॥५९३॥
मेघ मलार अउ देवगंधारि भले गवरी करि कै हित गावै ॥
जैतसिरी अरु मालसिरी नट नाइक सुंदर भाति बसावै ॥
रीझ रही ब्रिज की सभ ग्वारिन रीझ रहै सुर जो सुन पावै ॥
अउर की बात कहा कहीयै तजि इंद्र सभा सभ आसन आवै ॥५९४॥

खेलत रास मै स्याम कहै अति ही रस संग त्रीया मिलि तीनो ॥
चंद्रभगा अरु चंद्रमुखी ब्रिखभान सुता सजि साज नवीनो ॥
अंजन आखन दै बिंदूआ इक भाल मै सोंधुर सुंदर दीनो ॥
यौ उजपी उपमा त्रीय कै सुभ भाग प्रकास अबै मनो कीनो ॥५९५॥
खेलत कान्रह सो चंद्रभगा कबि स्याम कहै रस जो उमहियो है ॥
प्रीति करी अति ही तिह सो बहु लोगन को उपहास सहियो है ॥
मोतिन माल ढरी गर ते कबि ने तिह को जसु ऐसे कहियो है ॥
आनन चंद्र मनो प्रगटे छपि कै अंधिआरु पतारि गयो है ॥५९६॥

दोहरा ॥

ग्वारिन रूप निहार कै इउ उपजयो जीय भाव ॥
राजत ज्यो महि चादनी कंजन सहित तलाव ॥५९७॥
सवैया ॥
लोचन है जिन के सु प्रभाधर आनन है जिन को सम मैना ॥
कै कै कटाछ चुराइ लयो मन पै तिन को जोऊ रछक धैना ॥
केहरि सी जिन की कटि है सु कपोत सो कंठ सु कोकिल बैना ॥
ताहि लयो हरि कै हरि को मन भउह नचाइ नचाइ कै नैना ॥५९८॥
कान्रह बिराजत ग्वारिन मै कबि स्याम कहै जिन को कछु भउ ना ॥
तात की बात को नैकु सुनै जिन के संग भ्रात करियो बनि गउना ॥
ता की लटै लटकै तन मो जोऊ साधन के मनि गिआन दिवउना ॥
संदल पै उपजी उपमा मनो लाग रहे अहि राजन छउना ॥५९९॥
खेलत है सोऊ ग्वारिन मै जोऊ ऊपर पीत धरे उपरउना ॥
जो सिर सत्रन के हरिता जोऊ साधन को वरु दान दिवउना ॥
बीच रहियो जग के रवि कै कबि स्याम कहै जिह को पुनि खउना ॥
राजत यौ अलकै तिन की मनो चंदन लाग रहे अहि छउना ॥६००॥
कीर से नाक कुरंग से नैनन डोलत है सोऊ बीच त्रीया मै ॥
जो मन सत्रन बीच रवियो जो रहियो रवि साधन बीच हीया मै ॥
ता छबि को जसु उच महा इह भातिन सो फुनि उचरीया मै ॥
ता रस की हम बात कही जोऊ रावन सु बसियो है जीआ मै ॥६०१॥
खेलत संग ग्वारिन के कबि स्याम कहै जोऊ कानर काला ॥
राजत है सोई बीच खरो सो बिराजत है गिरदे तिह बाला ॥
फूल रहे जह फूल भली बिधि है अति ही जह चंद उजाला ॥
गोपिन नैनन की सु मनो पहरी भगवान सु कंजन माला ॥६०२॥

दोहरा ॥

बरनन चंद्रभगा कहियो अति निरमल कै बुधि ॥
उपमा ताहि तनउर की सूरज सी है सुधि ॥६०३॥
सवैया ॥
स्याम के जा पिखि स्याम कहै अति लाजहि के फुनि जाल अटे है ॥
जा की प्रभा अति सुंदर पै सुत भावन भाव सु वारि सुटे है ॥
जिह को पिखि कै जन रीझ रहै सु मुनीन के पेखि धिआन छुटे है ॥
राजत राधे अहीरि तनउर के मानहु सूरज से प्रगटे है ॥६०४॥
खेलत है सोऊ ग्वारिन मै जिह को ब्रिज है अति सुंदर डेरा ॥
जाही के नैन कुरंग से है जसुधा जू को बालक नंदहि केरा ॥
ग्वारिन सो तहि घेर लयो कहिबे जसु को उमगियो मन मेरा ॥
मानहु मैन सो खेलन काज करियो मिल कै मनो चादन घेरा ॥६०५॥
ग्वारिन रीझ रही हरि पेखि सभै तजि लाजि सु अउ डर सासो ॥
आई है तिआगि सोऊ ग्रिह पै भरतार कहै न कछू कहि मा सो ॥
डोलत है सोऊ ताल बजाइ कै गावत है करि कै उपहासो ॥

मोहि गिरै धर पै सु त्रीया कबि स्याम कहै चितवै हरि जा सो ॥६०६॥
जो जुग तीसर है करता जोऊ है तन पै धरिया पट पीले ॥
जाहि छलियो बलिराज बली जिनि सत्र हने करि कोप हठीले ॥
ग्वारिन रीझ रही धरनी जु धरे पट पीतन पै सु रंगीले ॥
जिउ म्रिगनी सर लागि गिरै इह तिउ हरि देखत नैन रसीले ॥६०७॥
कानर के संग खेलत सो अति ही सुख को कर कै तन मै ॥
स्याम ही सो अति ही हित कै चित कै नहि बंधन अउ धन मै ॥
धरि रंगनि बसत्र सभै तहि डोलत यौ उपमा उपजी मन मै ॥
जोऊ फूल मुखी तह फूल कै खेलत फूल सी होइ गई बन मै ॥६०८॥
सभ खेलत है मनि आनंद कै भगवान को धारि सबै मन मै ॥
हरि के चितबे की रही सुधि एकन अउर रही न कछू तन मै ॥
नही भूतल मै अरु मातलु मै इनि सो नहि देवन के गन मै ॥
सोऊ रीझ सो स्याम कहै अति ही फुनि डोलत ग्वारिन के गन मै ॥६०९॥
हसि कै भगवान कही बतीया ब्रिखभानु सुता पिखि रूप नवीनो ॥
अंजन आड धरे पुनि बेसर भाव सभै जिनि भावन कीनो ॥
सुंदर सोंधर को जिन लै करि भाल बिखै बिंदूआ इक दीनो ॥
नैन नचाइ मनै सुख पाइ चितै जदुराइ तबै हसि दीनो ॥६१०॥
बीन सी ग्वारिन गावत है सुनबे कहु सुंदर कानर कारे ॥
आनन है जिन को ससि सो सु बिराजत कंजन से द्रिग भारे ॥
झाझन ता की उठी धर पै धुनि ता छबि को कबि स्याम उचारे ॥
ढोलक संगि तंबूरन होइ उठे तह बाजि म्रिदंग नगारे ॥६११॥
खेलत ग्वारिन प्रेम छकी कबि स्याम कहै संग कानर कारे ॥
छाजत जा मुख चंद प्रभा सम राजत कंचन से द्रिग भारे ॥
जा पिखि कंद्रप रीझ रहै पिखिए जिह के म्रिग आदिक हारे ॥
केहरि कोकिल के सभ भाव किधौ इन पै गन ऊपर वारे ॥६१२॥
जाहि बिभीछनि राज दीयो जिन हूं बर रावन सो रिपु साधो ॥
खेलत है सोऊ भूमि बिखै ब्रिज लाज जहाजन को तजि बाधो ॥
जाहि निकास लयो मुरि प्रान सु माप लीयो बलि को तन आधो ॥
स्याम कहै संग ग्वारिन के अति ही रसि कै सोऊ खेलत माधो ॥६१३॥
जो मुर नाम महा रिपु पै कुप कै अति ही डरईया फुनि भीरनि ॥
जो गज संकट को कटीया हरता जोऊ साधन के दुख पीरनि ॥
सो ब्रिज मै जमुना तट पै कबि स्याम कहै हरैया त्रीय चीरनि ॥
ता कर कै रस को चसको इह भाति कहियो गन बीच अहीरनि ॥६१४॥
कान्रह जू बाच ग्वारिन सो ॥
सवैया ॥
केल करो हम संग कहिओ अपने मन मै कछु संक न आनो ॥
झूठ कहियो नहि मानहु री कहियो हमरो तुम साच पछानो ॥
गुआरनीया हरि की सुनि बात गई तजि लाज कबै जसु ठानो ॥
राति बिखै तजि झीलहि को नभ बीच चलियो जिम जात टनानो ॥६१५॥
ब्रिखभानु सुता हरि के हित गावत ग्वारिन के सु किधौ गन मै ॥
इम नाचत है अति प्रेम भरी बिजली जिह भाति घने घन मै ॥
कबि ने उपमा तिह गाइब की सु बिचार कही अपने मन मै ॥
रुति चेत की मै मन आनंद कै कुहकै मनो कोकिलका बन मै ॥६१६॥
हरि के संग खेलत रंग भरी सु त्रीया सजि साज सभै तन मै ॥
अति ही कर कै हित कानर सो कर कै नही बंधन औ धन मै ॥
फुनि ता छबि की अति ही उपमा उपजी कबि स्याम के यौ मन मै ॥
मनो सावन मास के मध बिखै चमकै जिम बिदुलता घन मै ॥६१७॥
स्याम सो सुंदर खेलत है कबि स्याम कहै अति ही रंग राची ॥
रूप सची अरु पै रति की मन मै कर प्रीति सो खेलत साची ॥
रास की खेल तटै जमुना रजनी अरु द्योस बिधरक माची ॥

चंद्रभगा अरु चंद्रमुखी ब्रिखभानु सुता तज लाजहि नाची ॥६१८॥
रास की खेल सु ग्वारनीया अति ही तह सुंदर भाति रची है ॥
लोचन है जिन के म्रिग से जिन के समतुल न रूप सची है ॥
कंचन से जिन को तन है मुख है ससि सो तह राधि गची है ॥
मानो करी करि लै करता सुध सुंदर ते जोऊ बाकी बची है ॥६१९॥
आई है खेलन रास बिखै सज कै सु त्रीया तन सुंदर बाने ॥
पीत रंगे इक रंग कसुंभ के एक हरे इक केसर साने ॥
ता छबि के जसु उच महा कबि ने अपने मन मै पहिचाने ॥
नाचत भूमि गिरी धरनी हरि देख रही नही नैन अघाने ॥६२०॥
तिन को इतनो हित देखत ही अति आनंद सो भगवान हसे है ॥
प्रीति बढी अति ग्वारिन सो अति ही रस के फुनि बीच फसै है ॥
जा तन देखत पुंनि बढै जिह देखत ही सभ पाप नसे है ॥
जिउ ससि अग्र लसै चपला हरि दारम से तिम दात लसे है ॥६२१॥
संग गोपिन बात कही रस की जोऊ कानर है सभ दैत मरईया ॥
साधन को जोऊ है बरता अउ असाधन को जोऊ नास करईया ॥
रास बिखै सोऊ खेलत है जसुधा सुत जो मुसलीधर भईया ॥
नैनन के कर कै सु कटाछ चुराइ मनो मति गोपिन लईया ॥६२२॥
देव गंधारि बिलावल सुध मलार कहै कबि स्याम सुनाई ॥
जैतसिरी गुजरी की भली धुनि रामकली हूं की तान बसाई ॥
सथावर ते सुन कै सुर जी जड़ जंगम ते सुर जा सुन पाई ॥
रास बिखै संगि ग्वारिन के इह भाति सो बंसुरी कान्रह बजाई ॥६२३॥
दीपक अउ नट नाइक राग भली बिधि गउरी की तान बसाई ॥
सोरठि सारंग रामकली सुर जैतसिरी सुभ भाति सुनाई ॥
रीझ रहे प्रिथमी के सभै जन रीझ रहियो सुन के सुर राई ॥
तीर नदी संगि ग्वारिन के मुरली करि आनंद स्याम बजाई ॥६२४॥
जिह के मुख की सम चंद्रप्रभा तन की इह भा मनो कंचन सी है ॥
मानहु लै कर मै करता सु अनूप सी मूरति या की कसी है ॥
चादनी मै गन ग्वारिन के इह ग्वारिन गोपिन ते सु हछी है ॥
बात जु थी मन कानर के ब्रिखभान सुता सोऊ पै लखि ली है ॥६२५॥
कान जू बाच राधे सो ॥

दोहरा ॥

क्रिसन राधिका तन निरखि कही बिहसि कै बात ॥
म्रिग के अरु फुनि मैन के तो मै सभ है गाति ॥६२६॥
सवैया ॥
भाग को भाल हरियो सुनि ग्वारिन छीन लई मुख जोति ससी है ॥
नैन मनो सर तीछन है भ्रिकुटी मनो जानु कमान कसी है ॥
कोकिल बैन कपोति सो कंठ कही हमरे मन जोऊ बसी है ॥
एते पै चोर लयो हमरो चित भामिनि दामिनि भाति लसी है ॥६२७॥
कानर लै ब्रिखभान सुता संगि गीत भली बिधि सुंदर गावै ॥
सारंग देवगंधार बिभास बिलावल भीतर तान बसावै ॥
जो जड़ स्रउनन मै सुन कै धुनि तिआग कै धाम तहा कहु धावै ॥
जो खग जात उडे नभि मै सुनि ठाढ रहै धुनि जो सुनि पावै ॥६२८॥
ग्वारिन संग भले भगवान सो खेलत है अरु नाचत ऐसे ॥
खेलत है मनि आनंद कै न कछू जररा मनि धार कै भै से ॥
गावत सारंग ताल बजावत स्याम कहै अति ही सु रचै से ॥
सावन की रुति मै मनो नाचत मोरिन मै मुरवा नर जैसे ॥६२९॥
नाचत है सोऊ ग्वारिन मै जिह को ससि सो अति सुंदर आनन ॥
खेलत है रजनी सित मै जह राजत थो जमुना जुत कानन ॥
भानु सुता ब्रिख की जह थी सु हुती जह चंद्रभगा अभिमानन ॥

छाजत ता महि यौ हरि जू जिउ बिराजत बीच पंना नग खानन ॥६३०॥
सु संगीत नचै हरि जू तिह ठउर सो स्याम कहै रस के संगि भीनो ॥
खोर दए फुनि केसर की धुतीया कसि कै पट ओढि नवीनो ॥
राधिका चंद्रभगा मुखि चंद लए जह ग्वारिन थी संग तीनो ॥
कान्रह नचाइ कै नैनन को सभ गोपिन को मनुआ हरि लीनो ॥६३१॥
ब्रिखभानु सुता की बराबर मूरति स्याम कहै सु नही ब्रितची है ॥
जा सम है नही काम की त्रीया नही जिस की सम तुलि सची है ॥
मानहु लै ससि को सभ सार प्रभा करतार इही मै गची है ॥
नंद के लाल बिलासन को इह मूरति चित्र बचित्र रची है ॥६३२॥
राधिका चंद्रभगा मुखि चंद्र सु खेलत है मिल खेल सबै ॥
मिलि सुंदर गावत गीत सबै सु बजावत है कर ताल तबै ॥
पिखवै इह को सोऊ मोह रहै सभ देखत है सुर याहि छबै ॥
कबि स्याम कहै मुरलीधर मैन की मूरति गोपिन मधि फबै ॥६३३॥
जिह की सम तुलि न है कमला दुति जा पिखि कै कटि केहर लाजै ॥
कंचन देखि लजै तन को तिह देखत ही मन को दुखु भाजै ॥
जा सम रूप न कोऊ त्रीया कबि स्याम कहै रति की सम राजै ॥
जिउ घन बीच लसै चपला इह तिउ घन ग्वारिन बीच बिराजै ॥६३४॥
खेलत है संग त्रीयन के सजि साज सभै अरु मोतिन माला ॥
प्रीति कै खेलत है तिह सो हरि जू जोऊ है अति ही हित वाला ॥
चंद्रमुखी जह ठाढी हुती जह ठाढी हुती ब्रिखभानु की बाला ॥
चंद्रभगा को महा मुख सुंदर ग्वारिन बीच करियो उजियाला ॥६३५॥
कान्रह को रूप निहार कै सुंदरि मोहि रही त्रीया चंद्र मुखी ॥
तब गाइ उठी कर ताल बजाइ हुती जि किधो अति ही सु सुखी ॥
कर कै अति ही हित नाचत भी करि आनंद न मन बीच झुखी ॥
सभ लालच तिआग दए ग्रिह के इक स्याम के पिआर की है सु भुखी ॥६३६॥

दोहरा ॥

क्रिसन मनै अति रीझ कै मुरली उठियो बजाइ ॥
रीझ रही सभ गोपीया महा प्रमुद मनि पाइ ॥६३७॥
सवैया ॥
रीझ रही ब्रिज की सभ भामिन जउ मुरली नंद लाल बजाई ॥
रीझ रहे बन के खग अउ म्रिग रीझ रहे धुनि जा सुनि पाई ॥
चित्र की होइ गई प्रितमा सभ स्याम की ओरि रही लिव लाई ॥
नीर बहै नही कान्रह त्रीया सुन के तिह पउन रहियो उरझाई ॥६३८॥
पउन रहियो उरझाइ घरी इक नीर नदी को चलै सु कछू ना ॥
जे ब्रिज भामनि आई हुती धरि खासन अंग बिखै अरु झूना ॥
सो सुन कै धुनि बासुरी की तन बीच रही तिन के सुधि हूं ना ॥
ता सुधि गी सुर के सुनि ही रहि गी इह मानहु चित्र नमूना ॥६३९॥
रीझि बजावत है मुरली हरि पै मन मै करि संक कछू ना ॥
जा की सुने धुनि स्रउनन मै कर कै खग आवत है बन सूना ॥
सो सुनि ग्वारिन रीझ रही मन भीतर संक करी कछहूं ना ॥
नैन पसार रही पिख कै जिम घंटक हेर बजे म्रिगि मूना ॥६४०॥
सुर बासुरी की कबि स्याम कहै मुख कानर के अति ही सु रसी है ॥
सोरठि देव गंधारि बिभास बिलावल हूं की सु तान बसी है ॥
कंचन सो जिह को तन है जिह के मुख की सम सोभ ससी है ॥
ता कै बजाइबे कौ सुन कै मति ग्वारिन की तिह बीच फसी है ॥६४१॥
देव गंधारि बिभास बिलावल सारंग की धुनि ता मै बसाई ॥
सोरठि सुध मलार किधौ सुर मालसिरी की महा सुखदाई ॥
मोहि रहे सभ ही सुर अउ नर ग्वारिन रीझ रही सुनि धाई ॥
यौ उपजी सुर चेटक की भगवान मनो धरि फास चलाई ॥६४२॥

आनन है जिह को अति सुंदर कंधि धरे जोऊ है पट पीलो ॥
जाहि मरियो अघ नाम बडो रिपु तात रखियो अहि ते जिन लीलो ॥
असाधन कौ सिर जो कटीया अरु साधन को हरता जोऊ हीलो ॥
चोर लयो सुर सो मन तास बजाइ भली बिधि साथ रसीलो ॥६४३॥
जाहि भभीछन राज दयो अरु रावन जाहि मरियो करि क्रोहै ॥
चक्र के साथ किधो जिनहूं सिसुपाल को सीस कटियो करि छोहै ॥
मैन सु अउ सीय को भरता जिह मूरति की समतुलि न को है ॥
सो करि लै अपुने मुरली अब सुंदर गोपिन के मन मोहै ॥६४४॥
राधिका चंद्रभगा मुखि चंद सु खेलत है मिलि खेल सबै ॥
मिलि सुंदरि गावत गीत भले सु बजावत है करताल तबै ॥
फुनि तिआगि सभै सुर मंडल को सभ कउतुक देखत देव सबै ॥
अब राकस मारन की सु कथा कछु थोरी अहै सुन लेहु अबै ॥६४५॥
नाचत थी जहि ग्वरनीआ जह फूल खिरे अरु भउर गुंजारै ॥
तीर बहै जमुना जह सुंदरि कान्रह हली मिलि गीत उचारै ॥
खेल करै अति ही हित सो न कछू मन भीतर संकहि धारै ॥
रीझि कबित पड़ै रस के बहसै दोऊ आपस मै नही हारै ॥६४६॥

अथ जखछ गोपिन कौ नभ को ले उडा ॥

सवैया ॥
आवत थो इक जखछ बडो इह रास को कउतुक ताहि बिलोकियो ॥
ग्वारिन देख कै मैन बढियो तिह ते तन मै नही रंचक रोकियो ॥
ग्वारिन लै सु चलियो नभि को किनहूं तिह भीतर ते नही टोकियो ॥
जिउ मधि भीतरि लै मुसली हरि केहर ह्वै म्रिग सो रिपु रोकियो ॥६४७॥
जखछ के संगि किधौ मुसली हरि जुध करियो अति कोपु संभारियो ॥
लै तरु बीर दोऊ कर भीतर भीम भए अति ही बल धारियो ॥
दैत पछारि लयो इह भाति कबै जसु ता छबि ऐसि उचारियो ॥
ढोके छुटे ते महा छुधवान किधो चकवा उठि बाजहिं मारियो ॥६४८॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे गोपि छुटाइबो जखछ बधह धिआइ समापतं ॥*

सवैया ॥
मारि कै ताहि किधौ मुसली हरि बंसी बजाई न कै कछु संका ॥
रावन खेत मरियो कुप कै जिनि रीझि बिभीछन दीन सु लंका ॥
जा को लखियो कुबजा बल बाहन जा को लखियो मुर दैत अतंका ॥
रीझि बजाइ उठियो मुरली सोई जीत दीयो जसु को मनो डंका ॥६४९॥
रूखन ते रस चूवन लाग झरै झरना गिरि ते सुखदाई ॥
घास चुगै न म्रिगा बन के खग रीझ रहे धुनि जा सुनि पाई ॥
देव गंधारि बिलावल सारंग की रिझ कै जिह तान बसाई ॥
देव सभै मिलि देखत कउतक जउ मुरली नंद लाल बजाई ॥६५०॥
ठाढ रही जमुना सुनि कै धुनि राग भले सुनबे को चहे है ॥
मोहि रहे बन के गज अउ म्रिग इकठे मिलि आवत सिंघ सहे है ॥
आवत है सुर मंडल के सुर त्यागि सभै सुर ध्यान फहे है ॥
सो सुनि कै बन के खगवा तरु ऊपर पंख पसारि रहे है ॥६५१॥
जोऊ ग्वारिन खेलत है हरि सो अति ही हित कै न कछू धन मै ॥
अति सुंदर पै जिह बीच लसै फुनि कंचन की सु प्रभा तन मै ॥
जोऊ चंद्रमुखी कटि केहरि सी सु बिराजत ग्वारिन के गन मै ॥
सुनि कै मुरली धुनि स्रउनन मै अति रीझि गिरी सु मनो बन मै ॥६५२॥
इह कउतुक कै सु चले ग्रिह को फुनि गावत गीत हली हरि आछे ॥
सुंदर बीच अखारे किधौ कबि स्याम कहै नटूआ जनु काछे ॥

राजत है बलभद्र के नैन यौं मानो ढरे इह मैन के साछे ॥
सुंदर है रति के पति तै अति मानहु डारत मैनहि पाछे ॥६५३॥
बीच मनै सुख पाइ तबै ग्रिह कौ सु चले रिपु कौ हनि दोऊ ॥
चंद्रप्रभा सम जा मुख उपम जा सम उपम है नहि कोऊ ॥
देखत रीझ रहै जिह को रिपु रीझत सो इन देखत सोऊ ॥
मानहु लछमन राम बडे भट मारि चले रिपु को घर ओऊ ॥६५४॥

अथ कुंज गलीन मै खेलबो ॥

सवैया ॥
हरि संगि कहियो इम ग्वारिन के अब कुंज गलीन मै खेल मचईयै ॥
नाचत खेलत भाति भली सु कहियो यौ सुंदर गीत बसईयै ॥
जा के हीए मनु होत खुसी सुनीयै उठि के सोऊ कारज कईयै ॥
तीर नदी हमरी सिख लै सुख आपन दै हम हूं सुख दईयै ॥६५५॥
कान्रह को आइसु मानि त्रीया ब्रिज कुंज गलीन मै खेल मचायो ॥
गाइ उठी सोऊ गीत भली बिधि जो हरि के मन भीतर भायो ॥
देव गंधारि अउ सुध मलार बिखै सोऊ भाखि खिआल बसायो ॥
रीझ रहियो पुरि मंडल अउ सुर मंडल पै जिन हूं सुनि पायो ॥६५६॥
कान्रह कहियो सिर पै धर कै मिलि कुंजन मै सुभ भाति गई है ॥
कंज मुखी तन कंचन से सभ रूप बिखै मनो मैन मई है ॥
खेल बिखै रस की सो त्रीया सभ स्याम के आगे ह्वै ऐसे धई है ॥
यौ कबि स्याम कहै उपमा गज गामनि कामिन रूप भई है ॥६५७॥
कान्रह छुहियो चहै ग्वारिन कौ सोऊ भाग चलै नहीं देत छुहाई ॥
जिउ म्रिगनी अपने पति को रति केल समै नहीं देत मिलाई ॥
कुंजन भीतर तीर नदी ब्रिखभान सुता सु फिरै तह धाई ॥
ठउर तहा कबि स्याम कहै इह भाति सो स्याम जू खेल मचाई ॥६५८॥
राति करी छठ मासन की अति उजल पै सोऊ अरध अंधेरी ॥
ताही समै तिह ठउर बिखै कबि स्याम सभै हरि ग्वारिन घेरी ॥
नैन की कोर कटाछन पेखत झूमि गिरी इक ह्वै गई चेरी ॥
यौ उपजी उपमा जीय मै सर सो म्रिगनी जिम घावत हेरी ॥६५९॥
फेर उठै उठते ही भगै जदुरा कौ न ग्वारिन देत मिलाई ॥
पाछै परै तिन के हरि जू चड़ि कै रस कै हय ऊपर धाई ॥
राधे को नैनन के सर संग बधै मनो भउह कमान चड़ाई ॥
झूमि गिरै धरनी पर सो म्रिगनी म्रिगहा मनो मारि गिराई ॥६६०॥
सुधि लै ब्रिखभानु सुता तब ही हरि अग्रज कुंजन मै उठि भागै ॥
रस सो जदुराइ महा रसीआ तब ही तिह के पिछूआन सो लागै ॥
मोछ लहै नर सो छिन मै हरि के इह कउतुक जो अनुरागै ॥
यौ उपजै उपमा मन मै म्रिगनी जिम घाइल स्वार के आगै ॥६६१॥
अति भागत कुंज गलीन बिखै ब्रिखभानु सुता को गहे हरि ऐसे ॥
कैधौ धवाइ धवाइ महा जमुना तटि हारत मानक जैसे ॥
पै चड़ि कै रस है मन नैनन भउह तनाइ कै मारत लैसे ॥
यौ उपजी उपमा जिम स्वार मनो जित लेत म्रिगी कहु जैसे ॥६६२॥
गहि कै ब्रिखभानु सुता जदुराइ जू बोलत ता संगि अंम्रित बानी ॥
भागत काहे के हेत सुनो हम हूं ते तूं किउ सुनि ग्वारिन रानी ॥
कंजमुखी तन कंचन सो हम ह्वै मन की सभ बात पछानी ॥
स्याम के प्रेम छकी मनि सुंदरि ह्वै बनि खोजत स्याम दिवानी ॥६६३॥
ब्रिखभान सुता पिखि ग्वारिन को निहुराइ कै नीचे रही अखीआ ॥
मनो या म्रिग भा सभ छीन लई कि मनो इह कंजन की पखीआ ॥
सम अंम्रित की हसि कै त्रीया यौ बतीया हरि के संग है अखीआ ॥
हरि छाडि दै मोहि कहियो हम कौ सु निहारत है सभ ही सखीआ ॥६६४॥

सुन कै हरि ग्वारिन की बतीया इह भाति कहियो नही छोरत तो कौ ॥
देखत है तो कहा भयो ग्वारिन पै इन ते कछू संक न मो कौ ॥
अउ हमरी रस खेलन की इह ठउर बिखै की नही सुधि लोको ॥
काहे कउ मो सो बिबाद करै सु डरै इन ते बिन ही सु तू को कौ ॥६६५॥
सुनि कै जदुराइ की बात त्रीया बतीआ हरि के इम संगि उचारी ॥
चादनी राति रही छकि कै दिजीयै हरि होवन रैन अंधयारी ॥
सुन कै हमहूं तुमरी बतीया अपने मन मै इह भाति बिचारी ॥
संक करो नही ग्वारिन की सु मनो तुम लाज बिदा करि डारी ॥६६६॥
भाखत हो बतीया हम सो हसि कै हरि कै अति ही हित भारो ॥
मुसकात है ग्वारिन हेरि उतै पिखि कै हमरो इह कउतुक सारो ॥
छोर दै कान्रह कहियो हम को अपने मन बुधि अकाम की धारो ॥
ताही ते तो संगि मै सो कहो जदुराइ घनी तुम संक बिचारो ॥६६७॥
भूख लगे सुनीऐ सजनी लगरा कहूं छोरत जात बगी को ॥
तात की स्याम सुनी तै कथा बिरही नहि छोरत प्रीति लगी को ॥
छोरत है सु नही कुटवार किधौ गहि कै पुर हूं की ठगी को ॥
ता ते न छोरत हउ तुम कौ कि सुनियो कहूं छोरत सिंघ म्रिगी को ॥६६८॥
कही बतीया इह बाल के संग जु थी अति जोबन के रस भीनी ॥
चंद्रभगा अरु ग्वारिन ते अति रूप के बीच हुती जु नवीनी ॥
जिउ म्रिगराज म्रिगी को गहै कबि नै उपमा बिधि या लखि लीनी ॥
कान्रह तबै करवा गह कै अपने बल संगि सोऊ बसि कीनी ॥६६९॥
करि कै बसि वा संगि ऐसे कही कबि स्याम कहै जदुराइ कहानी ॥
पै रस रीतहि की अति ही जु हुती सम मानहु अंम्रित बानी ॥
तेरो कहा बिगरै ब्रिज नारि कहियो इह भाति स्याम गुमानी ॥
अउर सभै त्रीय चेरिन है ब्रिखभान सुता तिन मै तू रानी ॥६७०॥
जहा चंद की चादनी छाजत है जहा पात चंबेली के सेज डही है ॥
सेत जहा गुल राजत है जिह के जमुना ढिग आइ बही है ॥
ताही समै हरि राधे ग्रसी उपमा तिह की कबि स्याम कही है ॥
सेत त्रीया तन स्याम हरी मनो सोम कला इह राहु गही है ॥६७१॥
तिह को हरि जू फिरि छोरि दयो सोऊ कुंज गली के बिखै बन मै ॥
फिरि ग्वारिन मै सोऊ जाइ मिली अति आनंद कै अपुने तन मै ॥
अति ता छबि की उपमा है कही उपजी जु कोऊ कबि कै मन मै ॥
मनो केहरि ते छुटवाइ मिली म्रिगनी को मनो म्रिगीया बन मै ॥६७२॥
फिरि जाइ कै ग्वारिन मै हरि जू अति ही इक सुंदर खेल मचायो ॥
चंद्रभगा हूं के हाथ पै हाथ धरियो अति सही मन मै सुखु पायो ॥
गावत ग्वारिन है सभ गीत जोऊ उन कै मन भीतर भायो ॥
स्याम कहै मनि आनंद कै मन को फुनि सोक सभै बिसरायो ॥६७३॥
हरि नाचत नाचत ग्वारिन मै हसि चंद्रभगा हूं की ओरि निहारियो ॥
सोऊ हसी इत ते ए हसे जदुरा तिह सो बचना है उचारियो ॥
मेरो महा हित है तुम सो ब्रिखभान सुता इह हेरि बिचारियो ॥
आनि त्रिया संगि हेत करियो हम ऊपर ते हरि चेत बिसारियो ॥६७४॥
हरि राधिका आनन देखत ही अपने मन मै इह भाति उचारियो ॥
स्याम भए बसि अउर त्रिया तिह ते अति पै मनि मान ही धारियो ॥
आनंद थो जितनो मन मै तितनो इह भाखि बिदा करि डारियो ॥
चंद्रभगा मुखि चंद दुतै सभ ग्वारिन ते घट मोहि बिचारियो ॥६७५॥
कहि कै इह भाति सोऊ तब ही अपने मन मै इह बात बिचारी ॥
प्रीत करी हरि आनहि सो तजि खेल सभै उठि धामि सिधारी ॥
ऐस करी गनती मन मै उपमा तिह की कबि स्याम उचारी ॥
त्रीयन बीच चलैगी कथा ब्रिखभानु सुता ब्रिजनाथि बिसारी ॥६७६॥

अथ राधिका को मान कथनं ॥

सवैया ॥
इह भाति चली कहि कै सु त्रिया कबि स्याम कहै सोऊ कुंज गली है ॥
चंदमुखी तन कंचन से सभ ग्वारिन ते जोऊ खूब भली है ॥
मान कीयो निखरी तिन ते म्रिगनी सी मनो सु बिना ही अली है ॥
यौ उपजी उपमा मन मै पति सो रति मानहु रूठि चली है ॥६७७॥
इत ते हरि खेलत रास बिखै ब्रिखभान सुता करि प्रीति निहारी ॥
पेख रहियो न पिखी तिन मै कबि स्याम कहै जु हुती सोऊ पिआरी ॥
चंद्रप्रभा सम जा मुख है तन कंचन सो अति सुंदर नारी ॥
कै ग्रिहि मान कै नीद गई कि कोऊ उनि मान की बात बिचारी ॥६७८॥
कान्रह बाच ॥
सवैया ॥
बिजछटा जिह नाम सखी को है सोऊ सखी जदुराइ बुलाई ॥
अंग प्रभा जिह कंचन सी जिह ते मुख चंद छटा छबि पाई ॥
ता संगि ऐसे कहियो हरि जू सुन तू ब्रिखभान सुता पहि जाई ॥
पाइन पै बिनतीअन कै अति हेत के भाव सो लिआउ मनाई ॥६७९॥
जदुराइ की सुन कै बतीआ ब्रिखभान सुता जोऊ बाल भली है ॥
रूप मनो सम सुंदर मैन के मानहु सुंदरि कंज कली है ॥
ता के मनाइबे काज चली हरि को फुनि आइस पाइ अली है ॥
यो उपजी जीय मै उपमा कर ते चकई मनो छूटि चली है ॥६८०॥
सखी बाच ॥
सवैया ॥
बिज छटा जिह नाम सखी को सोऊ ब्रिखभान सुता पहि आई ॥
आइ कै सुंदर ऐसे कहियो सुन तू री त्रीया ब्रिजनाथि बुलाई ॥
को ब्रिजनाथ कहियो ब्रिज नारि सु को कन्रहईया कहियो कउन कनाई ॥
खेलहु ता ही त्रीया संगि लाल री को जिह के संगि प्रीति लगाई ॥६८१॥
सजनी नंद लाल बुलावत है अपने मन मै हठ रंच न कीजै ॥
आई हो हउ चलि कै तुम पै तिह ते सु कहियो अब मान ही लीजै ॥
बेग चलो जदुराइ के पास कछू तुमरो इह ते नही छीजै ॥
ताही ते बात कहो तुम सो सुख आपन लै सुख अउरन दीजै ॥६८२॥
ता ते करो नही मान सखी उठि बेग चलो सिख मानि हमारी ॥
मुरली जह कान्रह बजावत है बहसै तह ग्वारिन सुंदर गारी ॥
ताही ते तो सो कहो चलीऐ कछु संक करो न मनै ब्रिज नारी ॥
पाइन तोरे परो तजि संक निसंक चलो हरि पासिह हहा री ॥६८३॥
संक कछू न करो मन मै तजि संक निसंक चलो सुनि माननि ॥
तेरे मै प्रीति महा हरि की तिह ते हउ कहो तुहि संग गुमाननि ॥
नैन बने तुमरे सर से सु धरे मनो तीछन मैन की साननि ॥
तो ही सो प्रेम महा हरि को इह बात ही ते कछू हउ हूं अजाननि ॥६८४॥
मुरली जदुबीर बजावत है कबि स्याम कहै अति सुंदर ठउरै ॥
ताही ते तेरे पासि पठी सु कहियो तिह लिआव सु जाइ कै दउरै ॥
नाचत है जह चंद्रभगा अरु गाइ कै ग्वारनि लेत है भउरै ॥
ताही ते बेग चलो सजनी तुमरे बिन ही रस लूटत अउरै ॥६८५॥
ताही ते बाल बलाइ लिउ तेरी मै बेग चलो नंद लाल बुलावै ॥
स्याम बजावत है मुरली जह ग्वारिनीया मिलि मंगल गावै ॥
सोरठि सुध मलार बिलावल स्याम कहै नंद लाल रिझावै ॥
अउर की बात कहा कहीये सुर त्यागि सभै सुर मंडल आवै ॥६८६॥
राधे बाच प्रति उतर ॥
सवैया ॥
मै न चलो सजनी हरि पै जु चलो तब मोहि ब्रिजनाथ दुहाई ॥
मो संग प्रीति तजी जदुनंदन चंद्रभगा संगि प्रीति लगाई ॥
स्याम की प्रीति महा तुम सौ तजि मान हहा री चलो दुचिताई ॥

तेरे बिना नही खेलत है कहियो खेलहु जाहूं सो प्रीति लगाई ॥६८७॥
दूती वाच ॥
सवैया ॥
पाइ परो तुमरे सजनी अति ही मन भीतर मानु न कईयै ॥
स्याम बुलावत है सु जहा उठ कै तिह ठउर बिखै चलि जईयै ॥
नाचत है जिम ग्वारनिआ नचीयै तिम अउ तिह भाति ही गईयै ॥
अउर अनेकिक बात करो पर राधे बलाइ लिउ सउह न खईयै ॥६८८॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
जैहउ न हउ सुन री सजनी तुहि सी हरि ग्वारनि कोटि पठावै ॥
बंसी बजावै तहा तु कहा अरु आप कहा भयो मंगल गावै ॥
मै न चलो तिह ठउर बिखै ब्रहमा हम को कहियो आनि सुनावै ॥
अउर सखी की कहा गनती नहीं जाउ री जउ हरि आपन आवै ॥६८९॥
दूती बाच राधे सो ॥
सवैया ॥
काहे को मान करै सुन ग्वारिन स्याम कहै उठ कै कर सोऊ ॥
जा के कीए हरि होइ खुसी सुनियै बल काज करो अब जोऊ ॥
तउ तुहि बोलि पठावत है जब प्रीति लगी तुम सो तब ओऊ ॥
नातर रास बिखै सुन री तुहि सी नहि ग्वारिन सुंदर कोऊ ॥६९०॥
संग तेरे ही प्रीति घनी हरि की सभ जानत है कछू नाहि नई ॥
जिह की मुख उपम चंद्र प्रभा जिह की तन भा मनो रूपमई ॥
तिह संग को त्यागि सुनो सजनी ग्रिह की उठ कै तुहि बाट लई ॥
ब्रिजनाथ के संग सखी बहु तेरी री तो सी गुवारि भई न भई ॥६९१॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
सुन कै इह ग्वारिन की बतीया ब्रिखभान सुता मनि कोप भई है ॥
कान्रह बिना पठए री त्रीया हमरे उन के उठि बीच पई है ॥
आई मनावन है हम को सु कही बतीया जु नही रुचई है ॥
कोप कै उतर देत भई चल री चल तू किनि बीच दई है ॥६९२॥
दूती बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
कोप कै उतर देत भई इन आइ कहियो फिरि संग सुजानै ॥
बैठ रही हठ मानि त्रीया हउ मनाइ रही जड़ किउ हूं न मानै ॥
साम दीए न मनै नही दंड मनै नही भेद दीए अरु दानै ॥
ऐसी गुवारि सो हेत कहा तुमरी जोऊ प्रीति को रंग न जानै ॥६९३॥
मैनप्रभा बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
मैनप्रभा हरि पास हुती सुन कै बतीया तब बोलि उठी है ॥
लिआइ हो हउ इह भाति कहियो तुम ते हरि जू जोऊ ग्वार रुठी है ॥
कान्रह के पाइन पै तब ही सु लियावन ताही के काज उठी है ॥
सुंदरता मुख ऊपर ते मनो कंज प्रभा सभ वार सुटी है ॥६९४॥
हरि पाइन पै इह भाति कहियो हरि जू उह के ढिग हउ चलि जैहो ॥
जा ही उपाव ते आइ है सुंदरि ताही उपाइ मनाइ लियै हो ॥
पाइन पै बिनतीअन कै रिझवाइ कै सुंदरि ग्वारि मनैहो ॥
आज ही तो ढिग आनि मिलैहो जू ल्याए बिना तुमरी न कहै हो ॥६९५॥
हरि पाइन पै तिह ठउर चली कबि स्याम कहै फुनि मैनप्रभा ॥
जिह के नही तुलि मंदोदरि है जिह तुल त्रीया नही इंद्र सभा ॥
जिह को मुख सुंदर राजत है इह भाति लसै त्रीया वा की अभा ॥
मनो चंद कुरंगन केहर कीर प्रभा को सभो धन याहि लभा ॥६९६॥
प्रतिउतर बाच ॥

सवैया ॥
चलि चंदमुखी हरि के ढिग ते ब्रिखभान सुता पहि पै चलि आई ॥
आइ कै ऐसे कहियो तिह सो बल बेग चलो नंद लाल बुलाई ॥
मै न चलो हरि पास हहा चलु ऐसे कहियो न करो दुचिताई ॥
काहे को बैठ रही इह ठउर मै मोहन को मनो चितु चुराई ॥६९७॥
जाहि घोर घटा घट आए घने चहूं ओरन मै जह मोर पुकारै ॥
नाचत है जह ग्वारनीया तिह पेखि घने बिरही तन वारै ॥
तउन समै जदुराइ सुनो मुरली के बजाइ कै तोहि चितारै ॥
ताही ते बेग चलो सजनी तिह कउतक को हम जाइ निहारै ॥६९८॥
ता ते न मान करो सजनी हरि पास चलो नाहि संक बिचारो ॥
बात धरो रस हूं की मनै अपनै मन मै न कछू हठ धारो ॥
कउतक कान्रह्ह को देखन को तिह को जस पै कबि स्याम उचारो ॥
काहे कउ बैठ रही हठ कै कहियो देखन कउ उमगियो मन सारो ॥६९९॥
हरि पास न मै चलहो सजनी पिखबे कहु कउतुक जीय न मेरो ॥
स्याम रचे संग अउर त्रीया तज कै हम सो फुनि नेह घनेरो ॥
चंद्रभगा हूं के संगि कहियो नहि नारी कहा मुहि नैनन हेरो ॥
ता ते न पास चलो हरि हउ उठि जाहि जोऊ उमगियो मन तेरो ॥७००॥
दूती बाच ॥
सवैया ॥
मै कहा देखन जाउ त्रीया तुहि ल्यावन को जदुराइ पठाई ॥
ताही ते हउ सभ ग्वारनि ते उठ कै तब ही तुमरे पहि आई ॥
तू अभिमान कै बैठ रही नही मानत है कछू सीख पराई ॥
बेग चलो तुहि संग कहो तुमरे मगु हेरत ठाढि कन्रहाई ॥७०१॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
हरि पास न मै चलहो री सखी तु कहा भयो जु तुहि बात बनाई ॥
स्याम न मोरे तू पास पठी इह बातन ते कपटी लखि पाई ॥
भी कपटी तु कहा भयो ग्वारनि तू न लखै कछु पीर पराई ॥
यौ कहि कै सिर न्याइ रही कहि ऐसो न मान पिखियो कहूं माई ॥७०२॥
दूती बाच ॥
सवैया ॥
फिरि ऐसे कहियो चलीये री हहा बल मै हरि के पहि यो कहि आई ॥
होहु न आतुर स्री ब्रिजनाथ हउ ल्यावत हो उहि जाइ मनाई ॥
इत तू करि मान रही सजनी हरि पै तु चलो तजि कै दुचिताई ॥
तो बिनु मो पै न जात गयो कहियो जानत है कछु बात पराई ॥७०३॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
उठ आई हुती तु कहा भयो ग्वारनि आई न पूछि कहियो कछु सोरी ॥
जाहि कहियो फिरि कै हरि पै इह ते कछु लाज न लागत तोरी ॥
मो बतीया जदुराइ जु पै कबि स्याम कहै कहीयो सु अहो री ॥
चंद्रभगा संगि प्रीति करो तुम सो नही प्रीति कहियो प्रभ मोरी ॥७०४॥
सुनि कै इह राधिका की बतीया तब सो उठि ग्वारनि पाइ लागी ॥
प्रीति कहियो हरि की तुम सो हरि चंद्रभगा हूं सो प्रीति तियागी ॥
उन की कबि स्याम सुबुधि कहै तुहि देखन के रस मै अनुरागी ॥
ताही ते बाल बलाइ लिउ तेरी मै बेग चलो हरि पै बडभागी ॥७०५॥
ब्रिजनाथ बुलावत है चलीयै कछु जानत है रस बात इयानी ॥
तोही को स्याम निहारत है तुमरै बिनु री नही पीवत पानी ॥
तू इह भाति कहै मुख ते नही जाऊगी हउ हरि पै इह बानी ॥
ताही ते जानत हो सजनी अब जोबन पाइ भई है दीवानी ॥७०६॥
मान करियो मन बीच त्रीया तजि बैठि रही हित स्याम जू केरो ॥

बैठि रही बक ध्यान धरे सभ जानत प्रीति को भावन नेरो ॥
तो संग तौ मै कहियो सजनी कहबे कहु जो उमगियो मन मेरो ॥
आवत है इम मो मन मै दिन चार को पाहुनो जोबन तेरो ॥७०७॥
ता कै न पास चलै उठ कै कबि स्याम जोऊ सभ लोगन भोगी ॥
ता ते रही हठि बैठ त्रीया उन को कछु जै गो न आपन खोगी ॥
जोबन को जु गुमान करै तिह जोबन की सु दसा इह होगी ॥
तो तजि कै सोऊ यो रमि है जिम कंध पै डार बघंबर जोगी ॥७०८॥
नैन कुरंगन से तुमरे केहरि की कटि री सुन त्वै है ॥
आनन सुंदर है ससि सो जिह की फुनि कंज बराबर क्वै है ॥
बैठ रही हठ बाधि घनो तिह ते कछु आपन ही सुन ख्वै है ॥
ए तन सु तुहि बैर करियो हरि सिउ हठिए तुमरो कहु ह्वै है ॥७०९॥
सुन कै इह ग्वारनि की बतीया ब्रिखभान सुता अति रोस भरी ॥
नैन नचाइ चड़ाइ कै भउहन पै मन मै संग क्रोध जरी ॥
जोऊ आई मनावन ग्वारनि थी तिह सो बतीया इम पै उचरी ॥
सखी काहे कौ हउ हरि पास चलो हरि की कछु मो परवाह परी ॥७१०॥
यौ इह उतर देत भई तब या बिधि सो उनि बात करी है ॥
राधे बलाइ लिउ रोस करो नहि किउ किह कोप के संग भरी है ॥
तू इत मान रही करि कै उत हेरत पै रिपु चंद हरी है ॥
तू न करै परवाह हरी हरि कौ तुमरी परवाह परी है ॥७११॥
यौं कहि बात कही फिरि यौ उठि बेग चलो चलि होहु संजोगी ॥
ताही के नैन लगे इह ठउर जोऊ सभ लोगन को रस भोगी ॥
ता के न पास चलै सजनी उन को कछ जै है न आपन खोगी ॥
तै मुख री बलि देखन को जदुराइ के नैन भए दोऊ बिओगी ॥७१२॥
पेखत है नहीं अउर त्रीया तुमरो ई सुनो बलि पंथ निहारै ॥
तेरे ही ध्यान बिखै अटके तुमरी ही किधौ बलि बात उचारै ॥
झूमि गिरै कबहूं धरनी करि त्वै मधि आपन आप संभारै ॥
तउन समै सखी तोहि चितारि कै स्यामि जू मैन को मान निवारै ॥७१३॥
ता ते न मान करो सजनी उठि बेग चलो कछु संक न आनो ॥
स्याम की बात सुनो हम ते तुमरे चित मै अपनो चित मानो ॥
तेरे ही ध्यान फसे हरि जू कर कै मनि सोक असोक बहानो ॥
मूड़ रही अबला करि मान कछू हरि को नही हेत पछानो ॥७१४॥
ग्वारनि की सुन कै बतीया तब राधिका उतर देत भई ॥
किह हेत कहियो तजि कै हरि पासि मनावन मोहू के काज धई ॥
नहि हउ चलि हो हरि पास कहियो तुमरी धउ कहा गति ह्वै है दई ॥
सखी अउरन नाम सु मूड़ धरै न लखै इह हउहूं कि मूड़ मई ॥७१५॥
सुन कै ब्रिखभान सुता को कहियो इह भाति सो ग्वारनि उतर दीनो ॥
री सुन ग्वारनि मो बतीया तिन हूं सुनि स्रौन सुनैबे कउ कीनो ॥
मोहि कहै मुख ते कि तू मूड़ मै मूड़ तुही मन मै करि चीनो ॥
जै जदुराइ की भेजी अई सुनि तै जदुराइ हूं सो हठ कीनो ॥७१६॥
यौ कहि कै इह भाति कहियो चलीयै उठि कै बलि संक न आनो ॥
तो ही सो हेतु घनो हरि को तिह ते तुमहूं कहियो साच ही जानो ॥
पाइन तोरे परो ललना हठ दूर करो कबहूं फुनि मानो ॥
ता ते निसंक चलो तजि संक किधौ हरि की वह प्रीति पछानो ॥७१७॥
कुंजन मै सखी रास समै हरि केल करे तुम सो बन मै ॥
जितनो उन को हित है तुहि मो तिह ते नही आधिक है उन मै ॥
मुरझाइ गए बिनु तै हरि जू नहि खेलत है फुनि ग्वारिन मै ॥
तिह ते सुन बेग निसंक चलो कर कै सुधि पै बन की मन मै ॥७१८॥
स्याम बुलावत है चलीयै बलि पै मन मै न कछू हठु कीजै ॥
बैठ रही करि मान घनो कछु अउरन हूं को कहियो सुन लीजै ॥
ता ते हउ बात करो तुम सो इह ते न कछू तुमरो कहियो छीजै ॥

नैकु निहार कहियो हम ओरि सभै तज मान अबै हसि दीजै ॥७१९॥
राधे बाच दूती सो ॥
सवैया ॥
मै न हसो हरि पास चलो नही जउ तुहि सी सखी कोटिक आवै ॥
आइ उपाव अनेक करै अरु पाइन ऊपर सीस निआवै ॥
मै कबहू नही जाउ तहा तुह सी कहि कोटिक बात बनावै ॥
अउर की कउन गनै गनती बलि आपन कान्रह्ह जू सीस झुकावै ॥७२०॥
प्रतिउतर बाच ॥
सवैया ॥
जो इन ऐसी कही बतीया तब ही उह ग्वारनि यौ कहियौ हो री ॥
जउ हम बात कही चलीयै तू कहै हम स्याम सो प्रीत ही छोरी ॥
स्याम सो माई कहा कहीयै इह साथ करे हितवा बर जोरी ॥
भेजत है हम को इह पै इह सी तिह के पहि ग्वारनि थोरी ॥७२१॥
भेजत है इह पै हम को इह ग्वारनि रूप को मान करै ॥
इह जानत वै घट है हम ते तिह ते हठ बाधि रही न टरै ॥
कबि स्याम पिखो इह ग्वारनि की मति स्याम के कोप ते पै न डरै ॥
तिह सो बलि जाउ कहा कहीयै तिह ल्यावहु यो मुख ते उचरै ॥७२२॥
स्याम करै सखी अउर सो प्रीति तबै इह ग्वारनि भूल पछानै ॥
वा के कीए बिनु री सजनी सु रही कहि कै सु कहियो नही मानै ॥
या को बिसार डरै मन ते तब ही इह मानहि को फलु जानै ॥
अंत खिसाइ घनी अकुलाइ कहियो तब ही इह मानै तु मानै ॥७२३॥
यो सुन कै ब्रिखभान सुता तिह ग्वारनि को इम उतर दीनो ॥
प्रीत करी हरि चंद्रभगा संग तउ हम हूं अस मान सु कीनो ॥
तउ सजनी कहियो रूठ रही अति क्रोध बढियो हमरे जब जी नो ॥
तेरे कहे बिनु री हरि आगे हूं मो हू सो नेहु बिदा कर दीनो ॥७२४॥
यो कहि ग्वारनि सो बतीया कबि स्याम कहै फिरि ऐसे कहियो है ॥
जाहि री काहे को बैठी है ग्वारनि तेरो कहियो अति ही मै सहियो है ॥
बात कही अति ही रस की तुहि ता को न सो सखी चित चहियो है ॥
ताही ते हउ न चलो सजनी हम सो हरि सो रस कउन रहियो है ॥७२५॥
यौ सुनि उतर देत भई कबि स्याम कहै हरि के हित केरो ॥
कान्रह के भेजे ते या पहि आइ कै कै कै मनावन को अति झेरो ॥
स्याम चकोर मनो त्रन जो सुन री इह भाति कहै मन मेरो ॥
ताही निहारि निहारि सुनो ससि सो मुख देखत ह्वै है री तेरो ॥७२६॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
देखत है तु कहा भयो ग्वारनि मै न कहियो तिह के पहि जैहो ॥
काहे के काज उराहन री सहि हो अपनो पति देखि अघै हो ॥
स्याम रचे संगि अउर त्रीया तिह के पहि जाइ कहा जस पैहो ॥
ता ते पधारहु री सजनी हरि कौ नहि जीवत रूप दिखै हो ॥७२७॥

अथ मैनप्रभा क्रिसन जी पास फिर आई ॥

दूती बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
यौ जब ताहि सुनी बतीया उठ कै सोऊ नंद लला पहि आई ॥
आइ कै ऐसे कहियो हरि पै हरि जू नहि मानत मूड़ मनाई ॥
कै तजि वाहि रचौ इन सो नही आप हूं जाइ कै लिआउ मनाई ॥
यौ सुनि बात चलियो तह को कबि स्याम कहै हरि आप ही धाई ॥७२८॥
अउर न ग्वारिनि कोऊ पठी चलि कै हरि जू तब आप ही आयो ॥
ताही को रूप निहारत ही ब्रिखभान सुता मन मै सुख पायो ॥

पाइ घनो सुख पै मन मै अति ऊपरि मान सो बोल सुनायो ॥
चंद्रभगा हूं सो केल करो इह ठउर कहा तजि लाजहि आयो ॥७२९॥
राधे बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
रासहि किउ तजि चंद्रभगा चलि कै हमरे पहि किउ कहियो आयो ॥
किउ इह ग्वारनि की सिख मान कै आपन ही उठ कै सखी धायो ॥
जानत थी कि बडो ठगु है इह बातन ते अब ही लखि पायो ॥
किउ हमरे पहि आए कहियो हम तो तुम को नही बोलि पठायो ॥७३०॥
कान्रह जू बाच राधे सो ॥
सवैया ॥
यौ सुनि उतर देत भयो नहि री तुहि ग्वारनि बोल पठायो ॥
नैनन के करि भाव घने सर सो हमरो मनूआ म्रिग घायो ॥
ता बिरहागनि सो सुनीयै बलि अंग जरियो सु गयो न बचायो ॥
तेरे बुलायो न आयो हो री तिह ठउर जरे कहु सेकिनि आयो ॥७३१॥
राधे बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
संग फिरी तुमरे हरि खेलत स्याम कहे कबि आनंद भीनी ॥
लोगन को उपहास सहियो तुहि मूरति चीन कै अउर न चीनी ॥
हेत करियो अति ही तुम सो तुम हूं तजि हेत दसा इह कीनी ॥
प्रीति करी संग अउर त्रीया कहि सास लयो अखीया भर लीनी ॥७३२॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
मेरो घनो हित है तुम सो सखी अउर किसी नहि ग्वारनि माही ॥
तेरे खरे तुहि देखत हो बिन त्वै तुहि मूरति की परछाही ॥
यौ कहि कान्रह गही बहीया चलीयै हम सो बन मै सुख पाही ॥
ह हा चलु मेरी सहुं मेरी सहुं मेरी सहुं तेरी सहुं तेरी सहुं नाहीं जू नाही ॥७३३॥
यौ कहि कान्रह गही बिहीया तिहू लोगन को भुगीया रस जो है ॥
केहरि सी जिह की कटि है जिह आनन पै ससि कोटिक को है ॥
ऐसो कहियो चलीयै हमरे संगि जो सभ ग्वारनि को मन मोहै ॥
यौ कहि काहे करो बिनती सुन कै तुहि लाल हीऐ मधि जो है ॥७३४॥
काहे उराहन देत सखी कहियो प्रीत घनी हमरी संग तेरे ॥
नाहक तूं भरमी मन मै कछु बात न चंद्रभगा मनि मेरे ॥
ता ते उठो तजि मान सभै चलि खेलहिं पै जमुना तटि केरे ॥
मानत है नहि बात हठी बिरहातुर है बिरही जन टेरे ॥७३५॥
त्याग कहियो अब मान सखी हम हूं तुम हूं बन बीच पधारै ॥
नाहक ही तू रिसी मन मै नही आन त्रीया मन बात हमारै ॥
ता ते असोक के साथ सुनो बलि तीर नदी सभ सोकहि डारै ॥
या ते न अउर भली कछु है मिलि कै हम मैन को मान निवारै ॥७३६॥
कान्रह रसातर ह्वै अति ही ब्रिखभान सुता ढिग बात उचारी ॥
ताहि मनी हरि बात सोऊ तिन मान की बात बिदा करि डारी ॥
हाथहि सो बहीआ गहि स्याम सु ऐसे कहियो अब खेलहि यारी ॥
कान्रह कहियो तब राधका सो हमरे संग केल करो मोरी पिआरी ॥७३७॥
राधे बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै ब्रिखभान सुता नंद लाल लला कहु उतर दीनो ॥
ताही सो बात करो हरि जू जिह के संग नेहु घनो तुम कीनो ॥
काहे कउ मोरी गही बहीआ सु दुखावत काहे कउ हो मुहि जी नो ॥
यौ कहि बात भरी अखीआ करि कै दुख सास उसास सु लीनो ॥७३८॥
केल करो उठि ग्वारनि सो जिनि संग रचियो मन है सु तुमारो ॥
स्वासन लै अखीआ भर कै ब्रिखभान सुता इह भाति उचारो ॥

संग चलो नहि हउ तुमरे करि आयुध लै कहिओ किउ नही मारो ॥
साच कहो तुम सो बतीया तजि कै हम को जदुबीर पधारो ॥७३९॥
कान्रह जू बाच राधे सो ॥
सवैया ॥
संग चलो हमरे उठ कै सखी मान कछु मन मै नही आनो ॥
आइ हो हउ तजि संकि निसंक कछू तिह ते रस रीति पछानो ॥
मित्र के बेचे किधौ बिकीयै इह स्रउन सुनो सखी प्रीति कहानो ॥
ता ते हउ तेरी करो बिनती कहिबो मुहि मानि सखी अब मानो ॥७४०॥
राधे बाच ॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै हरि की बतीया हरि को तिन या बिधि उतर दीनो ॥
प्रीति रही हम सो तुमरी कहा यौ कहि कै द्रिगि बारि भरीनो ॥
प्रीति करी संग चंद्रभगा अति कोप बढियो तिह ते मुहि जी नो ॥
यौ कहि कै भरि स्वास लयौ कबि स्याम कहै अति ही कपटीनो ॥७४१॥
क्रोध भरी फिरि बोलि उठी ब्रिखभानु सुता मुख सुंदर सिउ ॥
तुम सो हम सो रस कउन रहियो कबि स्याम कहै बिधि को पहि जिउ ॥
हरि यौ कही मो हित है तुहि सो उनि कोपि कहियो हम सो कहु किउ ॥
तुमरे संगि केल करे बन मै सुनीयै बतीया हमरी बलि इउ ॥७४२॥
कान्रह जू बाच राधे सो ॥
सवैया ॥
मोहियो हउ तेरो सखी चलिबो पिखि मोहियो सु हउ द्रिग पेखत तेरे ॥
मोहि रहियो अलकै तुमरी पिखि जात गयो तजि या नही डेरे ॥
मोहि रहियो तुहि अंग निहारत प्रीति बढी तिह ते मन मेरे ॥
मोहि रहियो मुख तेरो निहारत जिउ गन चंद चकोरन हेरे ॥७४३॥
ता ते न मान करो सजनी मुहि संग चलो उठ कै अब ही ॥
हमरी तुम सो सखी प्रीति घनी कुपि बात कहो तजि कै सब ही ॥
तिह ते इह छुद्रन बात की रीति कहियो न अरी तुम को फबही ॥
तिह ते सुन मो बिनती चलीयै इह काज कीए न कछू लभ ही ॥७४४॥
अति ही जब कान्रह करी बिनती तब ही मन रंच त्रीया सोऊ मानी ॥
दूर करी मन की गनती जब ही हरि की तिन प्रीति पछानी ॥
तउ इम उतर देत भई जोऊ सुंदरता महि त्रीयन रानी ॥
त्याग दई दुचितई मन की हरि सो रस बातन सो निज कानी ॥७४५॥
मोहि कहो चलीयै हमरे संग जानत हो रस साथ छरोगे ॥
रास बिखै हम को संग लै सखी जानत ग्वारनि संग अरोगे ॥
हउ नही हारि हउ पै तुम ते तुम ही हम ते हरि हारि परोगे ॥
एक न जानत कुंज गलीन लवाइ कहियो कछु काजु करोगे ॥७४६॥
ब्रिखभान सुता कबि स्याम कहै अति जो हरि के रस भीतर भीनी ॥
री ब्रिजनाथ कहियो हसि कै छबि दातन की अति सुंदर चीनी ॥
ता छबि की अति ही उपमा मन मै जु भई कबि के सोऊ कीनी ॥
जिउ घन बीच लसै चपला तिह को ठग कै ठगनी ठग लीनी ॥७४७॥
ब्रिखभान सुता कबि स्याम कहै अति जो हरि के रस भीतर भीनी ॥
बीच हुलास बढियो मन कै जब कान्रह्रह की बात सभै मनि लीनी ॥
कुंज गलीन मै खेलहिंगे हरि के तिन संग कहियो सोऊ कीनी ॥
यौ हसि बात निसंग कहियो मन की दुचिताई सभ ही तजि दीनी ॥७४८॥
दोऊ जउ हसि बातन संग ढरे तु हुलास बिलास बढे सगरे ॥
हसि कंठ लगाइ लई ललना गहि गाड़े अनंग ते अंक भरे ॥
तरकी है तनी दरकी अंगीआ गर माल ते टूट कै लाल परे ॥
पीय के मिलए त्रीय के हीय ते अंगरा बिरहागनि के निकरे ॥७४९॥
हरि राधिका संगि चले बन लै कबि स्याम कहै मनि आनंद पायो ॥
कुंज गलीन मै केल करे मन को सभ सोक हुतो बिसरायो ॥

ताही कथा कौ किधौ जग मै मन मै सुक आदिक गाइ सुनायो ॥
जोऊ सुनै सोऊ रीझ रहै जिह के सभ ही धरि मै जसु छायो ॥७५०॥
कान्रह जू बाच राधे सो ॥
सवैया ॥
हरि जू इम राधिका संगि कही जमुना मै तरो तुम को गहि है ॥
जल मै हम केल करैगे सुनो रस बात सभै सु तहा कहि है ॥
जिह ओर निहार बधू ब्रिज की ललचाइ मनै पिखिबो चहि है ॥
पहुचैगी नहि तह ग्वारनि ए हम हूं तुम रीझत हारहि है ॥७५१॥
ब्रिखभान सुता हरि के मुख ते जल पैठन की बतीया सुनि पाई ॥
धाइ कै जाइ परी सर मै करि कै अति ही ब्रिजनाथि बडाई ॥
ताही के पाछै ते स्याम परे कबि के मन मै उपमा इह आई ॥
मानहु स्याम जू बाज परियो पिखि कै ब्रिज नारि को जिउ मुरगाई ॥७५२॥
ब्रिजनाथ तबै धसि कै जलि मै ब्रिज नारि सोऊ तब जाइ गही ॥
हरि को तन भेट हुलास बढियो गिनती मन की जल भाति बही ॥
जोऊ आनंद बीच बढियो मन कै कबि तउ मुख ते कथा भाखि कही ॥
पिखियो जिन हूं सोऊ रीझ रहियो पिखि कै जमुना जिह रीझ रही ॥७५३॥
जल ते कढि कै फिरि ग्वारनि सो कबि स्याम कहै फिरि रास मचायो ॥
गावत भी ब्रिखभान सुता अति ही मन भीतर आनंद पायो ॥
ब्रिज नारिन सो मिल कै ब्रिजनाथ जू सारंग मै इक तान बसायो ॥
सो सुन कै म्रिग आवत धावत ग्वारनीआ सुन कै सुखु पायो ॥७५४॥

दोहरा ॥

सत्रह सै पैताल मै कीनी कथा सुधार ॥
चूक होइ जह तह सु कबि लीजहु सकल सुधार ॥७५५॥
बिनति करो दोऊ जोरि करि सुनो जगत के राइ ॥
मो मसतक त्व पग सदा रहै दास के भाइ ॥७५६॥

◀ *इति स्री दसम सिकंधे पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे रास मंडल बरननं धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥*

सुदरसन नाम ब्रहमणु भुजंग जोन ते उधार करन कथनं ॥
सवैया ॥
दिन पूजा को आइ लगियो तिह को जोऊ ग्वारनीया अति कै हित सेवी ॥
जा रिप सुंभ निसुंभ मरियो कबि स्याम कहै जग मात अभेवी ॥
नास भए जग मै जन सो जिनहू मन मै कुप कै नहि सेवी ॥
ताही के हेत चले तजि कै पुरि ग्वारिन गोप सु पूजन देवी ॥७५७॥
आठ भुजा जिह की जगि मालुम सुंभ संघारनि नाम जिसी को ॥
साधन दोखन की हरता कबि स्याम न मानत त्रास किसी को ॥
सात अकास पतालन सातन फैल रहिओ जस नामु इसी को ॥
ताही को पूजन द्योस लगिओ सभ गोप चले हित मानि तिसी को ॥७५८॥

दोहरा ॥

महारुद्र अरु चंडि के चले पूजबे काज ॥
जसुधा त्रीया बलिभद्र अउ संग लीए ब्रिजराज ॥७५९॥
सवैया ॥
पूजन काज चलै तज कै पुर गोप सभै मन मै हरखे ॥
गहि अछत धूप पचाम्रित दीपक सामुहे चंडि सिवै सरखे ॥
अति आनंद प्रापति भे तिन को दुख थे जु जिते सभ ही घरखे ॥
कबि स्याम अहीरन के जु हुते सुभ भाग घरी इह मै परखे ॥७६०॥
एक भुजंगन कान्रह बबा कहु लील लयो तन नैकु न छोरै ॥

स्रयाह मनो अबनूसहि को तरु कोप डसियो अति ही करि जोरै ॥
जिउ पुर के जन लातन मारत जोर करै अति ही झक झोरै ॥
हारि परे सभनो मिलि कै तब कूक करी भगवान की ओरै ॥७६१॥
गोप पुकारत है मिलि कै सभ स्याम कहै मुसलीधर भयै ॥
दोख को हरता करता सुख आवहु टेरत दैत मरयै ॥
मोहि ग्रसियो अहि स्याम बडे हम रोवहि या बधि कारज कयै ॥
रोग भए जिम बैद बुलईअत भीर परे जिम बीर बुलयै ॥७६२॥
सुनि स्रउनन मै हरि बात पिता उह सापहि को तन छेद करिओ है ॥
साप की देह तजी उन हूं इक सुंदर मानुख देह धरिओ है ॥
ता छबि को जस उच महा कबि नै बिधि या मुख ते उचरिओ है ॥
मानहु पुंनि प्रतापन ते ससि छीन लयो रिपु दूर करिओ है ॥७६३॥
बामन होइ गयो सु वहै फुनि नाम सुदरसन है पुनि जा को ॥
कान्रह कही बतीया हसि कै तिह सो कहु रे तै ठउर कहा को ॥
नैन निवाइ मनै सुख पाइ सु जोरि प्रनाम करिओ कर ता को ॥
लोगन कौ बरता हरता दुख स्याम कहै पति जो चहुं घा को ॥७६४॥
दिज बाच ॥
सवैया ॥
अत्रि रिखीसुर के सुत को अति हासि करिओ तिह स्राप दयो है ॥
जाहि कहियो तूअ साप सु हो बचना उनि या बिधि मोहि कहिओ है ॥
ताही के स्राप लगे हमरे तन बामन ते अहि स्याम भयो है ॥
कान्रह तुमै तन छूवत ही तन को सभ पाप पराइ गयो है ॥७६५॥
पूजत ते जग मात सभै जन पूजि सभै तिह डेरन आए ॥
कान्रह पराक्रम को उरि धारि सभो मिलि कै उपमा जस गाए ॥
सोरठि सारंग सुध मलार बिलावल भीतर तान बसाए ॥
रीझि रहे ब्रिज के सु सभै जन रीझि रहे जिन हूं सुनि पाए ॥७६६॥

दोहरा ॥

पूजि चंड को भट बडे घरि आइ मिलि दोइ ॥
अंन खाइ कै मात ते रहे सदन मै सोइ ॥७६७॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे क्रिसनावतारे दिज उधार चंडि पूज धिआइ समापतम ॥*

अथ ब्रिखभासुर दैत बध कथनं ॥

सवैया ॥
भोजन कै जसुधा पहि ते भट राति परे सोऊ सोइ रहे है ॥
प्रात भए बन बीच गए उठ कै जह डोलत सिंघ सहै है ॥
ब्रिखभासुर थो तिह ठउर खरो जिह के दोऊ सींग अकास खहे है ॥
देख कै सो हरि जू कुप कै दुहूं हाथन सो करि जोरु गहे है ॥७६८॥
सींगन ते गहि डार दयो सु अठारह पैग पै जाइ परिओ है ॥
फेरि उठिओ करि कोप मनै हरि के फिरि सामुह जुधु करिओ है ॥
फेर बगाइ दीयो हरि जू कही जाइ गिरिओ सु नही उबरिओ है ॥
मोछ भई तिह की हरि के कर छूवत ही सु लरियो न मरियो है ॥७६९॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे ब्रिखभासुर दैत बधह धयाइ समापतम सत सुभम सत ॥*

अथ केसी दैत बध कथनं ॥

सवैया ॥
जुध बडो कर कै तिह कै संग जउ भगवान बडो अरि मारिओ ॥
नारद तउ मथुरा मै गयो बचना संग कंस के ऐसे उचारिओ ॥
तू भगनीपति नंद सुता हरि त्वै रिपु वा घर भीतर डारिओ ॥
दैत अघासुर अउ बक बीर मरिओ तिन हूं जब पउरख हारिओ ॥७७०॥
कंस बाच प्रति उतर ॥
सवैया ॥
कोप भरियो मन मै मथुरापति चिंत करी इह को अब मरीऐ ॥
इह की सम कारज अउर कछू नहि ता बधि आपन ऊबरीऐ ॥
तब नारद बोलि उठिओ हसि कै सुनीऐ न्रिप कारज या करीऐ ॥
छल सो बल सो कबि स्याम कहै अपने अरि को सिर वा हरीऐ ॥७७१॥
कंस बाच नारद सो ॥
सवैया ॥
तब कंस प्रनाम कही करि कै सुनीऐ रिखि जू तुम सति कही है ॥
वा की ब्रिथा रजनी दिन मै हमरै मन मै बसि कै सु रही है ॥
जाहि मरिओ अघु दैत बली बकु पूतना जा थन जाइ गही है ॥
ता मरीऐ छल कै किधौ संगि कि कै बल कै इह बात सही है ॥७७२॥
कंस बाच केसी सो ॥
सवैया ॥
मुनि तउ मिलि कै न्रिप सो ग्रिह गयो तब कंसि बली इक दैत बुलायो ॥
मारहु जाइ कहिओ जसुधा पुत पै कहि कै इह भाति पठायो ॥
पाछै ते पै भगनी भगनी पति डारि जंजीरन धामि रखायो ॥
संगि चंडूर कहिओ इह भेद तबै कुबिलया गिरि बोलि पठायो ॥७७३॥
कंस बाच अक्रूर सो ॥
सवैया ॥
भाख कही संग भ्रितन सो इक खेलन को रंग भूमि बनईयै ॥
संगि चंडूर कहियो मुसट कै दरवाजे बिखै गज को थिर कईयै ॥
बोलि अक्रूर कही हमरो रथ लै करि नंद पुरी महि जईयै ॥
जग अबै हमरे ग्रिह है इह बातन को कर कै हरि लिअईयै ॥७७४॥
जाहि कहियो अक्रूरहि को ब्रिज के पुरि मै अति कोपहि सिउ ता ॥
जग अबै हमरे ग्रिह है रिझवाइ कै ल्यावहु वा कहि इउ ता ॥
ता छबि को जसु उच महा उपजियो कबि के मन मै बिउता ॥
जिउ बन बीच हरे म्रित के सु पठियो म्रिगवा कहि केहरि निउता ॥७७५॥
कबियो बाच दोहरा ॥
न्रिप भेजियो अक्रूर कहु हरि मारन के घात ॥
अब बध केसी की कथा भई कहो सोई बात ॥७७६॥
सवैया ॥
प्रात चलियो तह को उठि सो रिपु ह्वै हय दीरघ पै तह आयो ॥
देखत जाहि दिनेस डरिओ मघवा जिह पेखत ही डर पायो ॥
ग्वार डरे तिह देखत ही हरि पाइन ऊपर सीस झुकायो ॥
धीर भयो जदुराइ तबै तिह सो कुप कै रन दुंद मचायो ॥७७७॥
कोप भयो रिपु के मन मै तब पाउ की कान्रह को चोट चलाई ॥
दीन न लागन स्याम तनै सु भली बिधि सो जदुराइ बचाई ॥
फेरि गहिओ सोऊ पाइन ते कर मो न रहियो सु दयो है बगाई ॥
जिउ लरका बट फैकत है तिम चार सै पैग परिओ सोऊ जाई ॥७७८॥
फेरि संभारि तबै बल वा रिपु तुंड पसारि हरि ऊपरि धायो ॥
लोचन काढि बडे डरवान किधौ जिन ते नभ लोक डरायो ॥
स्याम दयो तिह के मुख मै कर ता छबि को मन मै जस भायो ॥
कान्रह को है कर काल मनो तन केसी ते प्रान निकासन आयो ॥७७९॥
तिनि बाह कटी हरि दातन सो तिह के सभ दात तबै झर गे ॥

जोऊ आइ मनोरथ कै मन मै सम ओरन की सोऊ है गर गे ॥
तब ही सोऊ जूझि परो छित पै न सोऊ फिर कै अपुने घर गे ॥
अब कानर के कर लागत ही मरि गयो वह पाप सभै हर गे ॥७८०॥
रावन जा बिधि राम मरिओ बिधि जो कर कै नरकासुर मारियो ॥
जिउ प्रहलाद के रछन को हरिनाकस मारि डरिओ न उबारियो ॥
जिउ मधु कैट मरे करि चक्र लै पावक लील लई डरु टारयो ॥
तिउ हरि संतन राखन को करि कै अपनो बल दैत पछारियो ॥७८१॥
मारि बडे रिपु को हरि जू संगि गऊअन लै सु गए बन मै ॥
मन सोक सभै हरि कै सब ही अति कै फुनि आनंद पै तन मै ॥
फुनि ता छबि की अति ही उपमा उपजी कबि स्याम के इउ मन मै ॥
जिम सिंघ बडो म्रिग जानि बधिओ छल सो म्रिगवा के मनो गन मै ॥७८२॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे केसी बधहि धयाइ समापतम सतु सुभम सतु ॥

अथ नारद जू क्रिसन पहि आए ॥

अड़िल ॥
तब नारद चलि गयो निकटि भट क्रिसन के ॥
करी उदर पूरना मनो हित तिसन के ॥
रहिओ मुनी सिर न्याइ स्याम तरि पगन के ॥
हो मनि बिचारि कहियो स्याम महा संगि लगन के ॥७८३॥
मुनि नारद जू बाच कान्रह्ह जू सो ॥
सवैया ॥
अक्रूर के अग्र ही जा हरि सो मुनि पा परि कै इह बात सुनाई ॥
रीझ रहिओ अपुने मन मै सु निहारि कै सुंदर रूप कन्रहाई ॥
बीर बडो रन बीच हनो तुम ऐसे कहियो अति ही छबि पाई ॥
आयो हो हउ सु घने रिप घेरि सिकार की भाति बधो तिन जाई ॥७८४॥
तब हउ उपमा तुमरी करहो कुबलिया गिर को तुम जो मरिहो ॥
मुसटक बल साथ चंडूरहि सो रंगभूमि बिखै बध जउ करिहो ॥
फिरि कंस बडे अपुने रिपु को गहि केस ते प्रानन को हरिहो ॥
रिपु मारि घने बन आसुर को करि काटि सभै धर पै डरिहो ॥७८५॥

दोहरा ॥

इह कहि नारद क्रिसन सो बिदा भयो मन माहि ॥
अब दिन कंसहि के कहियो म्रित के फुनि निजकाहि ॥७८६॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे मुनि नारद जू क्रिसन जू को सभ भेद देइ फिरि बिदिआ भए धयाइ समापतम सतु सुभम सतु ॥

अथ बिस्वासुर दैत जुध ॥

दोहरा ॥

खेलत ग्वारनि सो क्रिसन आदि निरंजन सोइ ॥
ह्वै मेढा तसकर कोऊ कोऊ पहरूआ होइ ॥७८७॥
सवैया ॥
केसव जू संग ग्वारनि के ब्रिज भूमि बिखै सुभ खेल मचायो ॥
ग्वारनि देखि तबै बिस्वासुर ह्वै चुरवा तिन भछनि आयो ॥

ग्वार हरे हरि के बहुते तिह को फिरि कै हरि जू लखि पायो ॥
धाइ कै ताही की ग्रीव गही बल सो धरनी पर मारि गिरायो ॥७८८॥

दोहरा ॥

बिस्वासुर को समार कै करि साधन के काम ॥
हली संग सभ ग्वार लै आए निसि को धामि ॥७८९॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे किसनावतारे बिस्वासुर दैत बधह धयाइ समापतम ॥*

अथ हरि को अक्रूर मथरा को लै जैबो ॥

सवैया ॥
रिपु को हरि मारि गए जब ही अक्रूर किधौ चल कै तहि आयो ॥
स्याम को देखि प्रनाम करिओ अपने मन मै अति ही सुखु पायो ॥
कंस कही सोऊ कै बिनती जदुरा अपुने हित साथ रिझायो ॥
अंकुस सो गज जिउ फिरीयै हरि को तिम बातन ते हिरि लिआयो ॥७९०॥
सुनि कै बतीया तिह की हरि जू पित धामि गए इह बात सुनाई ॥
मोहि अबै अक्रूर कै हाथि बुलाइ पठिओ मथुरा हूं के राई ॥
पेखत ही तिह मूरति नंद कही तुमरे तन है कुसराई ॥
काहे की है कुसरात कहियो इह भाति बुलिओ मुसलीधर भाई ॥७९१॥

अथ मथुरा मै हरि को आगम ॥

सवैया ॥
सुनि कै बतीया संगि ग्वारन लै ब्रिजराज चलियो मथुरा को तबै ॥
बकरे अति लै पुनि छीर घनो धर कै मुसलीधर स्याम अगै ॥
तिह देखत ही सुख होत घनो तन को जिह देखत पाप भगै ॥
मनो ग्वारन को बन सुंदर मै सम केहरि की जदुराइ लगै ॥७९२॥

दोहरा ॥

मथुरा हरि के जान की सुनी जसोधा बात ॥
तबै लगी रोदन करन भूलि गई सुध सात ॥७९३॥
सवैया ॥
रोवन लाग जबै जसुधा अपुने मुखि ते इह भाति सो भाखै ॥
को है हितू हमरो ब्रिज मै चलते हरि को ब्रिज मै फिरि राखै ॥
ऐसो को ढीठ करै जीय मो न्रिप सामुहि जा बतीया इह भाखै ॥
सोक भरी मुरझाइ गिरी धरनी पर सो बतीया नहि भाखै ॥७९४॥
बारह मास रखियो उदरै महि तेरहि मास भए जोऊ जईया ॥
पालि बडो जु करियो तब ही हरि को सुनि मै मुसलीधर भया ॥
ताही के काज किधौ न्रिप वा बसुदेव को कै सुत बोलि पठईया ॥
पै हमरे घट भागन के घरि भीतर पै नही स्याम रहईया ॥७९५॥

अथ ब्रिह नाटक लिखयते ॥

दोहरा ॥

रथ ऊपर महाराज गे रथि चड़ि कै तजि ग्रेह ॥
गोपिन कथा ब्रिलाप की भई संत सुनि लेहु ॥७९६॥

सवैया ॥
जब ही चलिबे की सुनी बतीया तब ग्वारनि नैन ते नीर ढरियो ॥
गिनती तिन के मन बीच भई मन को सभ आनंद दूर करियो ॥
जितनो तिन मै रस जोबन थो दुख की सोई ईधन माहि जरियो ॥
तिन ते नही बोलियो जात कछू मन कान्रह की प्रीति के संग जरियो ॥७९७॥
जा संगि गावत थी मिलि गीत करै मिलि कै जिह संगि अखारे ॥
जा हित लोगन हास सहियो तिह संगि फिरै नहि संक बिचारे ॥
जा हमरो अति ही हित कै लरि आप बली तिनि दैत पछारे ॥
सो तजि कै ब्रिज मंडल कउ सजनी मथुरा हूं की ओरि पधारे ॥७९८॥
जाही के संगि सुनो सजनी हमरो जमना तटि नेहु भयो है ॥
ताही के बीच रहियो गड कै तिह ते नही छूटन नैकु गयो है ॥
ता चलबे की सुनी बतीया अति ही मन भीतर सोक छयो है ॥
सो सुनीयै सजनी हम कउ तजि कै ब्रिज कउ मथरा को गयो है ॥७९९॥
अति ही हित सिउ संग खेलत जा कबि स्याम कहै अति सुंदर कामनि ॥
रास की भीतर यौ लसकै रुति सावन की चमकै जिम दामनि ॥
चंद मुखी तन कंचन से द्रिग कंज प्रभा जु चलै गजि गामनि ॥
त्यागि तिनै मथुरा को चलियो जदुराइ सुनो सजनी अब धामनि ॥८००॥
कंज मुखी तन कंचन से बिरलाप करै हरि सो हित लाई ॥
सोक भयो तिन के मन बीच असोक गयो तिन हूं ते नसाई ॥
भाखत है इह भाति सुनो सजनी हम त्यागि गयो है कन्रहाई ॥
आप गए मथुरा पुर मै जदुराइ न जानत पीर पराई ॥८०१॥
अंग बिखै सज कै भगवे पट हाथन मै चिपीआ हम लै हैं ॥
सीस धरै गी जटा अपुने हरि मूरति भिछ्छ कउ माग अचै हैं ॥
स्याम चलै जिह ठउर बिखै हमहूं तिह ठउर बिखै चलि जै है ॥
त्याग करियो हम धामिन को सभ ही मिल कै हम जोगिन ह्वै है ॥८०२॥
बोलत ग्वारनि आपसि मै सुनीयै सजनी हम काम करैंगी ॥
त्याग कहियो हम धामन कउ चिपीआ गहि सीस जटान धरैंगी ॥
कै बिख खाइ मरैगी कहियो नहि बूड मरै नही जाइ जरैंगी ॥
मान बयोग कहै सभ ग्वारनि कान्रह के साथ ते पै न टरेगी ॥८०३॥
जिन हूं हमरे संगि केल करे बन बीच दए हम कउ सुख भारे ॥
जा हमरे हित हास सहयै हमरे हित कै जिनि दैत पछारे ॥
रास बिखै जिनि ग्वारनि के मन के सभ सोक बिदा करि डारे ॥
सो सुनीयै हमरे हित को तजि कै सु अबै मथुरा को पधारे ॥८०४॥
मुंद्रिकका पहरै हम कानन अंग बिखै भगवे पट कै हैं ॥
हाथन मै चिपीआ धरि कै अपने तन बीच बिभूत लगै हैं ॥
पै कसि कै सिंङीआ कटि मै हरि को संगि गोरख नाथ जगै हैं ॥
ग्वारनीआ इह भाति कहैं तजि कै हम धामन जोगिन ह्वै हैं ॥८०५॥
कै बिख खाइ मरैंगी कहियो अपुने तन को नहि घात करै है ॥
मारि छुरी अपुने तन मै हरि के हम ऊपर पाप चड़ै है ॥
नातुर ब्रहम के जा पुर मै बिरथा इह की सु पुकारि करै है ॥
ग्वारनीया इह भाति कहैं ब्रिज ते हरि को हम जानि न दै है ॥८०६॥
सेली डरैंगी गरै अपुने बटूआ अपुने कटि साथ कसै है ॥
लै करि बीच त्रिसूल किधौ फरूआ तिह सामुहे रूप जगै है ॥
घोट कै ताही के ध्यान की भाग कहै कबि स्याम सु वाही चड़ै है ॥
ग्वारनीया इह भाति कहै न रहै हम धामन जोगिन ह्वै है ॥८०७॥
धूम डरै तिह के ग्रिह सामुहे अउर कछू नहि कारज कै है ॥
ध्यान धरैंगी किधौ तिह कौ तिह ध्यान की भागहि सो मति ह्वै है ॥
लै तिह कै फुनि पाइन धूरि किधौ सु बिभूत की ठउर चड़ै है ॥
कै हित ग्वारनि ऐसो कहैं तजि कै ग्रिह कउ हम जोगिन ह्वै है ॥८०८॥
कै अपुने मन की फुनि माल कहै कबि वाही को नामु जपै है ॥

कै इह भाति की पै तपसा हित सो तिह ते जदुराइ रिझै है ॥
माग सभै तिह ते मिलि कै बरु पाइन पै तहि ते हम लयै है ॥
या ते बिचारि कहै गुपीया तजि कै हम धामन जोगिन ह्वै है ॥८०९ ॥
ठाढी है होइ इकत्र त्रीया जिम घंटक हेर बजै म्रिगाइल ॥
स्याम कहै कबि चित हरै हरि को हरि ऊपरि ह्वै अति माइल ॥
ध्रयान लगै द्रिग मूंद रहै उघरै निकटै तिह जानि उताइल ॥
यौ उपजी उपमा मन मै जिम मीचत आंख उघारत घाइल ॥८१० ॥
कंचन के तन जो सम थी जु हुती सम ग्वारनि चंद करा सी ॥
मैन की मानो साण बनी दोऊ भउह मनो अखीया सम गासी ॥
देखत जा अति ही सुख हो नहि देखत ही तिह होत उदासी ॥
स्याम बिना ससि पै जल की मनो कंज मुखी भई सूकि जरा सी ॥८११ ॥
रथ ऊपरि स्याम चड़ाइ कै सो संगि लै सभ गोप तहा को गए है ॥
ग्वारनीया सु रहीं ग्रिह मै जिन के मन बीच सु सोक भए है ॥
ठाढि उडीकत गोपि जहा तिह ठउर बिखै दोऊ ए सो अए है ॥
सुंदर है ससि से जिन के मुख कंचन से तन रूप छए है ॥८१२ ॥
जब ही अक्रूर के संग किधौ जमुना पै गए ब्रिज लोक सबै ॥
अक्रूर ही चिंत करी मन मै अति पाप करियो हमहूं सु अबै ॥
तब ही तज कै रथ बीच धसियो जल के संधिआ करबे को तबै ॥
इह को मरि है न्रिप कंस बली जु भई इह की अति चिंत जबै ॥८१३ ॥

दोहरा ॥

नात जबै अक्रूर मनि हरि को करियो बिचार ॥
तब तिह को जल मै तबै दरसन दयो मुरारि ॥८१४ ॥
सवैया ॥
मुंड हजार भुजा सहसे दस सेस के आसन पै सु बिराजै ॥
पीत लसै पट चक्र करै जिह के कर भीतर नंदग छाजै ॥
बीच तबै जमुना प्रगटियो फुनि साधहि के हरबे डर काजै ॥
जा को करियो सभ ही जग है जिह देखत ही घट सावन लाजै ॥८१५ ॥
जल ते कढ कै मन मै सुख कै मथुरा को चलियो मन आनंद पाई ॥
धाइ गयो न्रिप के पुर मै हरि मारन की न करी दुचिताई ॥
कान्रह को रूप निहारन को मथुरा की जुरी सभ आनि लुकाई ॥
जा के कछू तन मै दुखु हो हरि देखत ही सोऊ पार पराई ॥८१६ ॥
हरि आगम की सुन कै बतीआ उठ कै मथुरा की सभै त्रीअ धाई ॥
आवत थो रथ बीच चड़ियो चलि कै तिह ठउर बिखै सोऊ आई ॥
मूरति देख कै रीझ रही हरि आनन ओर रही लिव लाई ॥
सोक कथा जितनी मन थी इह ओर निहारि दई बिसराई ॥८१७ ॥
इति स्री दसम सिकंधे पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे कान्रह जू नंद अउ गोपिन सहित मथुरा प्रवेस करणं ॥

अथ कंस बध कथनं ॥

दोहरा ॥

मथुरा पुर की प्रभा कबि मन मै कही बिचारि ॥
सोभा जिह देखत सु कबि करि नहि सकति उचार ॥८१८ ॥
सवैया ॥
जिह की जटित नग भीतर है दमकै दुति मानहु बिजु छटा ॥
जमुना जिह सुंदर तीर बहै सु बिराजत है जिह भाति अटा ॥
ब्रहमा जिह देखत रीझ रहै रिझवै पिखि ता धर सीस जटा ॥
इह भाति प्रभा धरि है पुरि धाम सु बात करै संग मेघ घटा ॥८१९ ॥

हरि आवत थो मग बीच चलियो रिपु को धुबीआ मग एक निहारियो ॥
जउ सु गहे तिह ते पट तउ कुपि कै न्रिप को तिह नाम उचारियो ॥
कान्रह तबै रिस कै मन मै संग अंगुलिका तिह के मुख मारिओ ॥
इउ गिर गयो धरनी पर सो पट जिउ धुबीआ पट संग प्रहारिओ ॥८२०॥

दोहरा ॥

सभ ग्वारनि सो हरि कही रिपु धुबीआ कहु कूटि ॥
बसत्र जिते न्रिप के सकल लेहु सभन को लूटि ॥८२१॥
सोरठा ॥
ब्रिज के ग्वार अजान बसत्र पहिर जानत नही ॥
बाकाता त्रीआ आनि चीर पैन्रहाए तिन तनै ॥८२२॥
राजा प्रीछत बाच सुक सो ॥

दोहरा ॥

दै बरु ता त्रीय को क्रिसन मूंड रहे निहुराइ ॥
तब सुक सो पुछ्यौ न्रिपै कहो हमै किह भाइ ॥८२३॥
सुक बाच राजा सो ॥
सवैया ॥
चतुरभुज को बरु वाहि दयो बरु पाइ सुखी रहु ताहि कहे ॥
हरि बाक के होवत पै तिन हूं अमरा पुर के फल है सु लहे ॥
बहु दै करि लजित होत बडे इम लोक ए नीति बिखै है कहे ॥
हरि जानि कि मै इह थोरो दयो तिह ते मुंडीआ निहुराइ रहे ॥८२४॥

अथ बागवान को उधार ॥

दोहरा ॥

बध कै धोबी कौ क्रिसन करि ता त्रीय को काम ॥
रथ धवाइ तब ही चले न्रिप के सामुहि धाम ॥८२५॥
सवैया ॥
आगे ते स्याम मिलियो बागवान सु हार गरे हरि के तिनि डारियो ॥
पाइ परियो हरि के बहु बारन भोजन धाम लिजाइ जिवारियो ॥
ता को प्रसंनि कै मागत भयो बरु साध की संगति को जीय धारियो ॥
जान लई जीय की घन स्याम तबै बरु वा उह भाति उचारियो ॥८२६॥

दोहरा ॥

बरु जब माली कउ दयो रीझि मनै घन स्याम ॥
फिरि पुर हाटन पै गए करन कूबरी काम ॥८२७॥
इति बागवान को उधार कीआ ॥

अथ कुबजा को उधार करनं ॥

सवैया ॥
हरि आवत अग्र मिली कुबिजा हरि को तिनि सुंदर रूप निहारियो ॥
गंध लए न्रिप लावन को सु लगाऊ हउ या मन बीच बिचारियो ॥
प्रीति लखी हरि संग लगी हमरे तब ही इह भाति उचारियो ॥
ल्यावहु लावहु री हम को कबि नै जसु ता छबि को इम सारियो ॥८२८॥
जदुराइ को आइसु मान त्रीया न्रिप को इह चंदन देह लगायो ॥
स्याम को रूपु निहारत ही कबि स्याम मनै अति ही सुखु पायो ॥

जा को न अंत लखियो ब्रहमा करि कै मनि प्रेम कई दिन गायो ॥
भाग बडो इह मालिन के हरि के तन को जिनि हाथ छुहायो ॥८२९॥
हरि एक धरियो पग पाइन पै अरु हाथ सो हाथ गहियो कुबजा को ॥
सीधी करी कुबरी ते सोऊ इतनो बलु है जग मै कहु का को ॥
जाहि मरियो बक बीर अबै करि है बध सो पति पै मथुरा को ॥
भाग बडे इह के जिह को उपचार करियो हरि बैद ह्वै ता को ॥८३०॥
प्रति उतर बाच ॥
सवैया ॥
प्रभ धामि अबै चलीयै हमरे इह भात कहियो कुबजा हरि सो ॥
अति ही मुखु देख कै रीझ रही सु कहियो न्रिप के बिन ही डर सो ॥
हरि जान्यो कि मो मै रही बस ह्वै इह भाति कहियो तिह सो छर सो ॥
करिहौ तुमरो सु मनोरथ पूरन कंस को कै बध हउ बर सो ॥८३१॥
कुबजा को सुवार कै काज तबै पुनि देखन के रस मै अनुरागियो ॥
धाइ गयो तिह ठउर बिखै धनु सुंदर को सो देखन लागियो ॥
भ्रितन के करते सु मनै हरि के मन मै अति ही कुपि जागियो ॥
गाड़ी कसीस दई धन को द्रिड़ कै जिह ते न्रिप को धनु भागियो ॥८३२॥
गाड़ी कसीस दई कुपि कै रुपि ठाढ भयो तिह ठउर बिखै ॥
बर सिंघ मनो द्रिग काढ कै ठाढो है पेखै जोऊ गिरै भूमि बिखै ॥
देखत ही डरपियो मघवा डरपियो ब्रहमा जोऊ लेख लिखै ॥
धनु के टुकरे संग जोधन मारत स्याम कहै अति ही सु तिखै ॥८३३॥
कबियो बाच दोहरा ॥
धनुख तेज मै बरनिओ क्रिसन कथा के काज ॥
अति ही चूक मो ते भई छिमीयै सो महाराज ॥८३४॥
सवैया ॥
धनु को टुकरा करि लै हरि जी बर बीरन को सोऊ मारन लागियो ॥
धाइ परे न्रिप बीर तबै तिन के मन मै अति ही कुपि जागियो ॥
फेरि लगियो तिन को हरि मारन जुधह के रस मो अनुरागियो ॥
सोर भयो अति ठउर तहा सुन कै जिह को सिव जू उठि भागियो ॥८३५॥

कबितु ॥

तीनो लोक पति अति जुधु करि कोपि भरे तऊने ठउर जहा बरबीर अति स्वै रहे ॥
ऐसे बीर गिरे जैसे बाढी के कटे ते रूख गिरे बिसंभारु असि हाथन नही गहे ॥
अति ही तरंगनी उठी है तहा जोधन तै सीस सम बटे असि नक्र भाति ह्वै बहे ॥
गोरे पै बरद चड़ि आइ थे बरद पति गोरी गउरा गोरे रुद्र राते राते ह्वै रहे ॥८३६॥
क्रोध भरे कान्रह बलभद्र जू नै कीनो रन भाग गए भट न सुभट ठाढ कुइ रहियो ॥
ऐसे झूमि परे बीर मारे धन टूकन के मानो कंस राजा जू को सारो दलु स्वै रहियो ॥
केते उठि भागे केते जुध ही को फेरि लागे सोऊ सम बन हर हरि तातो ह्वै कहियो ॥
गजन के सुंडन ते ऐसे छीटै छूटी जा ते अंबर अनूप लाल छीट छबि ह्वै रहियो ॥८३७॥

दोहरा ॥

क्रिसन हली धनु टूक सो धन दल दयो निघाइ ॥
तिन सुन कै बध स्रउनि न्रिप अउ पुनि दयो पठाइ ॥८३८॥
सवैया ॥
बीच चमूं धसि बीरन की धन टूकन सो बहु बीर संघारे ॥
भागि गए सु बचे तिन ते जोऊ फेरि लरे सोऊ फेरि ही मारे ॥
जूझि परी चतुरंग चमूं तह स्रउनत कै सु चले परनारे ॥
यौ उपजी उपमा जीय मै रन भूमि मनो तन भूखन धारे ॥८३९॥
जुध करियो अति कोप दुहूं रिपु बीर के बीर घने हनि दीने ॥
हानि बिखै जोऊ ज्वान हुते सजि आए हुते जोऊ साज नवीने ॥

सो झटि भूमि गिरे रन की तिह ठउर बिखै अति सुंदर चीने ॥
यौ उपमा उपजी जीय मै रन भूमी को मानहु भूखन दीने ॥८४०॥
धनु टूकन सो रिपु मारि घने चल कै सोऊ नंद बबा पहि आए ॥
आवत ही सभ पाइ लगे अति आनंद सो तिह कंठि लगाए ॥
गे थे कहा पुर देखन को बचना उन पै इह भाति सुनाए ॥
रैन परी ग्रिह सोइ रहे अति ही मन भीतर आनंद पाए ॥८४१॥

दोहरा ॥

सुपन पिखा इक कंस ने अतै भयानक रूप ॥
अति बिआकुल जीय होइ कै भ्रित बुलाए भूपि ॥८४२॥
कंस बाच भ्रितन सो ॥
सवैया ॥
भ्रित बुलाइ कै राजे कही इक खेलन को रंग भूमि बनावहु ॥
गोपन को इकठा रखीए हमरे सब ही दल को सु बुलावहु ॥
कारज सीघ्र करो सु इहै हमरे इक पै गन कउ तिसिटावहु ॥
खेल बिखै तुम मलन ठाढि कै आप सबै कसि कै कटि आवहु ॥८४३॥
भ्रित सभै न्रिप की बतीया सुन कै उठ कै सोऊ कारज कीनो ॥
ठाढि कीयो गज पउर बिखै सु रचियो रंग भूमि को ठउर नवीनो ॥
मल जहा रिपु बीर घने पिखिए रिपु आवत जाहि पसीनो ॥
ऐसी बनाइ कै ठउर सोऊ हरि के ग्रिह मानस भेजि सु दीनो ॥८४४॥
न्रिप सेवक लै इन संग चलियो चलि कै न्रिप कंस के पउर पै आयो ॥
ऐ कै कहियो न्रिप को घरु है तिह ते सभ ग्वारन सीस झुकायो ॥
आगे पिखियो गज मत महा कहियो दूर करो गजवान रिसायो ॥
धाइ परियो हरि ऊपरि यौ मनो पुन के ऊपरि पाप सिधायो ॥८४५॥
कोप भरे गज मत महा भर सुंडि लए भट सुंदर दोऊ ॥
सो तब ही घन सो गरजियो जिह की सम उपम अउर न कोऊ ॥
पेट तरे तिह के पसरे कबि स्याम कहै बधीया अरि जोऊ ॥
यौ उपजी उपमा जीय मै अपने रिपु सो मनो खेलत दोऊ ॥८४६॥
तब कोपु करियो मन मै हरि जू तिह को तब दात उखारि लयो है ॥
एक दई गज सूंड बिखै कुपि दूसर सीस के बीच दयो है ॥
चोट लगी सिर बीच घनी धरनी पर सो मुरझाइ पयो है ॥
सो मरि गयो रिपु के बध को मथुरा हूं को आगम आज भयो है ॥८४७॥

◀ इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे गज बधहि धयाइ समापतम ॥

अथ चंडूर मुसट जुध ॥

सवैया ॥
कंधि धरियो गज दात उखार कै बीच गए रंग भूमि के दोऊ ॥
बीरन बीर बडो ई पिखियो बलवान लखियो इन मलन सोऊ ॥
साधन देखि लखियो करता जग या सम दूसर अउर न कोऊ ॥
तात लखियो कर कै लरका न्रिप कंस लखियो मन मै घरि खोऊ ॥८४८॥
तउ न्रिप बैठि सभा हूं के भीतर मलन सो जदुराइ लरायो ॥
मुसट के साथ लरियो मुसली सु चंडूर सो स्याम जू जुधु मचायो ॥
भूमि परे रन की गिर सो हर जू मन भीतर कोपु बढायो ॥
एक लगी न तहा घटिका धरनी पर ता कहु मारि गिरायो ॥८४९॥

◀ इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे चंडूर मुसट मल बधहि धयाइ समापतम ॥

अथ कंस बध कथनं ॥

सवैया ॥
मारि लए रिपु बीर दोऊ न्रिप तउ मन भीतरि क्रोध भरियो ॥
इन को भट मारहु खेत अबै इह भाति कहियो अरु सोर करियो ॥
जदुराइ भरथू तब पान लगो अपने मन मै नही नैकु डरियो ॥
जोऊ आइ परियो हर पै कुपि कै हरि था पर सो सोऊ मारि डरियो ॥८५०॥
हरि कूदि तबै रंग भूमहि ते न्रिप थो सु जहा तह ही पगु धारियो ॥
कंस लई करि ढालि संभार कै कोप भरियो असि खैच निकारियो ॥
दउरि दई तिह के तन पै हरि फाधि गए अति दाव संभारियो ॥
केसन ते गहि कै रिपु को धरनी पर कै बल ताहिं पछारियो ॥८५१॥
गहि केसन ते पटकियो धर सो गह गोडन ते तब घीस दयो ॥
न्रिप मारि हुलास बढियो जीय मै अति ही पुर भीतर सोर पयो ॥
कबि स्याम प्रताप पिखो हरि को जिनि साधन राख कै सत्र छयो ॥
कटि बंधन तात दए मन के सभ ही जग मै जस वाहि लयो ॥८५२॥
रिपु को बध कै तब ही हरि जू बिसरात के घाट कै ऊपरि आयो ॥
कंस के बीर बली जु हुते तिन देखत स्याम को कोपु बढायो ॥
सो न गयो तिन पास छमियो हरि के संगि आइ कै जुध मचायो ॥
स्याम संभारि तबै बल को तिन को धरनी पर मारि गिरायो ॥८५३॥
गज सो अति ही कुपि जुध करियो तिह ते डरि कै नही पैग टरे ॥
दोऊ मल मरे रंगि भूमि बिखै कबि स्याम तहा पहरे कु लरे ॥
न्रिप राज को मार गए जमुना तटि बीर भिरे सोऊ आनि मरे ॥
रखि साधन सत्र संघार दए नभि ते तिह ऊपरि फूल परे ॥८५४॥

◄ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे न्रिप कंस बधहि धिआइ समापतम ॥*

अथ कंस बधू कान्रह जू पहि आवत भई ॥

सवैया ॥
राज सुता दुखु मानि मनै तजि धामन को हरि जू पहि आई ॥
आइ कै सो घिघिआत भई हरि पै दुख की सभ बात सुनाई ॥
डारि दयो सिर ऊपर को पट पै तिह भीतर छार मिलाई ॥
कंठि लगाइ रही भरता हरि जू तिह देखत ग्रीव निवाई ॥८५५॥
रिपु करम करे तब ही हरि जी फिर कै सोऊ मात पिता पहि आए ॥
तात न मात भए बसि मोह के पुत्र दुहून को सीस निवाए ॥
ब्रहम लखियो तिन को करि कै हरि जी तिन कै मन मोह बढाए ॥
कै बिनती अति भाति के भाव कै बंधन पाइन ते छुटवाए ॥८५६॥
इति स्री दसम सिकंधे पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे कंस के करम करि तात मात को छुरावत भए ॥
कान्रह जू बाच नंद प्रति ॥
सवैया ॥
चलि आइ कै सो फिरि नंद के धामि किधौ तिन सो बिनती अति कीनी ॥
हउ बसुदेवहि को सुत हो इह भाति कहियो तिन मान कै लीनी ॥
जाहु कहियो तुम धामन को बतीया सुनि मोह प्रजा ब्रिज भीनी ॥
नंद कहियो सु कहियो ब्रिज की बिनु कान्रह भई सु पुरी सभ हीनी ॥८५७॥
सीस झुकाइ गयो ब्रिज को अति ही मन भीतर सोक भयो है ॥
जिउ कोऊ तात मरै पछुतात है प्यारो कोऊ मनो भ्रात छयो है ॥
पै जिम राज बडे रिपुराज की पैरन मै पति खोइ गयो है ॥
यौ उपजी उपमा बसुदे ठगि स्याम मनो धन लूटि लयो है ॥८५८॥
नंद बाच पुर जन सो ॥

दोहरा ॥

नंद आइ ब्रिज पुर बिखै कही क्रिसन की बात ॥
सुनत सोक कीनो सबै रोदन कीनो मात ॥८५९॥
जसुधा बाच ॥
सवैया ॥
बचियो जिनि तात बडे अहि ते जिन हूं बक बीर बली हनि दईया ॥
जाहि मरियो अघ नाम महा रिपु पै पिअरवा मुसलीधर भईआ ॥
जो तपस्या करि कै प्रभ ते कबि स्याम कहै परि पाइन लईया ॥
सो पुर बासन छीन लयो हम ते सुनीये सखी पूत कन्नहईआ ॥८६०॥
सभ ग्वारनीआ बिरलापु ॥
सवैया ॥
सुनि कै इह बात सभै मिलि ग्वारनि पै मिलि कै तिन सोक सु कीनो ॥
आनंद दूरि करियो मन ते हरि ध्यान बिखै तिनहूं मन दीनो ॥
धरनी पर सो मुरझाइ गिरी सु परियो तिन के तन ते सु पसीनो ॥
हाहुक लैन लगी सभि ही सु भयो सुख ते तिन को तन हीनो ॥८६१॥
अति आतुर ह्वै हरि प्रीतहि सो कबि स्याम कहै हरि के गुन गावै ॥
सोरठि सुध मलार बिलावल सारंग भीतर तान बसावै ॥
धिआन धरै तिह ते जीय मै तिह ध्यानहि ते अति ही दुखु पावै ॥
यौ मुरझावत है मुख ता ससि जिउ पिखि कंज मनो मुरझावै ॥८६२॥
पुर बासनि संगि रचे हरि जू हमहूं मन ते जदुराइ बिसारी ॥
त्यागि गए हम को इह ठउर हम ऊपर ते अति प्रीति सु टारी ॥
पै कहि कै न कछु पठियो तिह त्रीयन के बसि भै गिरधारी ॥
एक गिरी कहूं ऐसे धरा इक कूकत है सु हहा री हहा री ॥८६३॥
इह भाति सो ग्वारनि बोलत है जीय मै अति मानि उदासी ॥
सोक बढियो तिन के जीय मै हरि डारि गए हित की तिन फासी ॥
अउ रिस मानि कहै मुख ते जदुराइ न मानत लोगन हासी ॥
त्यागि हमै सु गए ब्रिज मै पुर बासिन संगि फसे ब्रिज बासी ॥८६४॥
रोदन कै सभ ग्वारनीया मिलि ऐसे कहियो अति होइ बिचारी ॥
त्यागि ब्रिजै मथुरा मै गए तजि नेह अनेह की बात बिचारी ॥
एक गिरै धरि यौ कहि कै इक ऐसे संभारि कहै ब्रिजनारी ॥
री सजनी सुनीयो बतीया ब्रिज नारि सभै ब्रिजनाथि बिसारी ॥८६५॥
आखनि आगहि ठाढि लगै सखी देत नही कि हेत दिखाई ॥
जा संगि केल करे बन मै तिह ते अति ही जीय मै दुचिताई ॥
हेतु तजियो ब्रिज बासन सो न संदेस पठियो जीय कै सु ढिठाई ॥
ताही की ओरि निहारत है पिखीयै नही स्याम हहा मोरी माई ॥८६६॥
बारहमाह ॥
सवैया ॥
फागुन मै सखी डारि गुलाल सभै हरि सिउ बन बीच रमै ॥
पिचकारन लै करि गावति गीत सभै मिलि ग्वारनि तउन समै ॥
अति सुंदर कुंज गलीन के बीच किधौ मन के करि दूर गमै ॥
अरु त्यागि तमै सभ धामन की इह सुंदरि स्याम की मानि तमै ॥८६७॥
फूलि सी ग्वारनि फूलि रही पट रंगन के फुनि फूल लीए ॥
इक स्याम सीगार सु गावत है पुनि कोकिलका सम होत जीए ॥
रितु नामहि स्याम भयो सजनी तिह ते सभ छाज सु साज दीए ॥
पिखि जा चतुरानन चउकि रहै जिह देखत होत हुलास हीए ॥८६८॥
एक समै रहै किंसुक फूलि सखी तह पउन बहै सुखदाई ॥
भउर गुंजारत है इत ते उत ते मुरली नंद लाल बजाई ॥
रीझि रहियो सुनि कै सुर मंडल ता छबि को बरनियो नही जाई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु अउसर याहि भई दुखदाई ॥८६९॥

जेठ समै सखी तीर नदी हम खेलत चिति हुलास बढाई ॥
चंदन सो तन लीप सभै सु गुलाबहि सो धरनी छिरकाई ॥
लाइ सुगंध भली कपरियो पर ता की प्रभा बरनी नही जाई ॥
तउन समै सुखदाइक थी इह अउसर स्याम बिना दुखदाई ॥८७०॥
पउन प्रचंड चलै जिह अउसर अउर बघूलन धूरि उडाई ॥
धूप लगै जिह मास बुरी सु लगै सुखदाइक सीतल जाई ॥
स्याम के संग सभै हम खेलत सीतल पाटक काबि छटाई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु अउसर याहि भई दुखदाई ॥८७१॥
जोरि घटा घट आए जहा सखी बूंदन मेघ भली छबि पाई ॥
बोलत चात्रिक दादर अउ घन मोरन पै घनघोर लगाई ॥
ताहि समै हम कानर के संगि खेलत थी अति प्रेम बढाई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु अउसर याहि भई दुखदाई ॥८७२॥
मेघ परै कबहूं उघरै सखी छाइ लगै द्रुम की सुखदाई ॥
स्याम के संगि फिरै सजनी रंग फूलन के हम बसत्र बनाई ॥
खेलत क्रीड़ करै रस की इह अउसर कउ बरनियो नही जाई ॥
स्याम सनै सुखदाइक थी रित स्याम बिना अति भी दुखदाई ॥८७३॥
मास असू हम कानर के संगि खेलत चिति हुलास बढाई ॥
कान्रह तहा पुनि गावत थो अति सुंदर रागन तान बसाई ॥
गावत थी हम हूं संग ताही के ता छबि को बरनियो नही जाई ॥
ता संग मै सुखदाइक थी रितु स्याम बिना अब भी दुखदाई ॥८७४॥
कातिक की सखी रासि बिखै रति खेलत थी हरि सो चितु लाई ॥
सेतहि ग्वारनि के पट छाजत सेत नदी तह धार बहाई ॥
भूखन सेतहि गोपनि के अरु मोतिन हार भली छबि पाई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु अउसर याहि भई दुखदाई ॥८७५॥
मघ्र समै सब स्याम के संगि हुइ खेलत थी मनि आनंद पाई ॥
सीत लगै तब दूर करै हम स्याम के अंग सो अंग मिलाई ॥
फूल चंबेली के फूलि रहे जहि नीर घटियो जमना जीअ आई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु अउसर याहि भई दुखदाई ॥८७६॥
बीच सरद रितु के सजनी हम खेलत स्याम सो प्रीति लगाई ॥
आनंद कै अति ही मन मै तज कै सभ ही जीय की दुचिताई ॥
नारि सभै ब्रिज कीन बिखै मन की तजि कै सभ संक कन्रहाई ॥
ता संग सो सुखदाइक थी रितु स्याम बिना अब भी दुखदाई ॥८७७॥
माघ बिखै मिल कै हरि सो हम सो रस रास की खेल मचाई ॥
कान्रह बजावत थो मुरली तिह अउसर को बरनियो नहि जाई ॥
फूलि रहे तहि फूल भले पिखियो जिह रीझि रहै सुरराई ॥
तउन समै सुखदाइक थी रितु स्याम बिना अब भी दुखदाई ॥८७८॥
स्याम चितारि सभै तह ग्वारनि स्याम कहै जु हुती बडभागी ॥
त्याग दई सुधि अउर सभै हरि बातन के रस भीतर पागी ॥
एक गिरी धरि ह्वै बिसुधी इक पै करुना ही बिखै अनुरागी ॥
कै सुधि स्याम के खेलन की मिल कै सभ ग्वारनि रोवन लागी ॥८७९॥
इति गोपीअन को ब्रिलाप पूरनं ॥

अथ कान्रह जू मंत्र गाइत्री सीखन समै ॥

सवैया ॥
उत ते इह ग्वारनि की भी दसा इत कान्रह कथा भई ताहि सुनाऊ ॥
लीप कै भूमहि गोबर सो कबि स्याम कहै सभ पुरोहित गाऊ ॥
कान्रह बैठाइ कै स्याम कहै कबि पै गरगै सु पवित्रहि ठाऊ ॥
मंत्र गाइत्री को ताहि दयो जोऊ है भुगीआ धरनीधर नाऊ ॥८८०॥
डारि जनेऊ सु स्यामि गरै फिर कै तिह मंत्र सु स्रउन मै दीनो ॥

सो सुनि कै हरि पाइ परियो गरगै बहु भातन को धन दीनो ॥
अस बडै गजराज औ उसट दए पट सुंदर साज नवीनो ॥
लाल पने अरु सबज मनी तिह पाइ पुरोहित आनंद कीनो ॥८८१॥
मंत्र पुरोहित दै हरि को धनु लै बहुत मन मै सुखु पायो ॥
तिआगि सबै दुख को तब ही अति ही मन आनंद बीच बढायो ॥
सो धन पाइ तहा ते चलियो चलि कै अपुने ग्रिह भीतर आयो ॥
सो सुनि मित्र प्रसंनि भए ग्रिह ते सभ दारिद दूर परायो ॥८८२॥

◀ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे स्री क्रिसनि जू को गाइत्री मंत्र सिखाइ जग्रयोपवीत गरे डारा धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥*

अथ उग्रसैन को राज दीबो ॥

सवैया ॥
मंत्र पुरोहित ते हरि लै अपुने रिपु को फिरि तात छडायो ॥
छूटत सो हरि रूपु निहार कै आइ कै पाइन सीस झुकायो ॥
राजु कहियो हरि को तुम लेहु जू सो न्रिप कै जदुराइ बैठायो ॥
आनंद भयो जग मै जसु भयो हरि संतन को दुखु दूरि परायो ॥८८३॥
कान्रह जबै रिपु को बध कै रिपु तात को राजु किधो फिरि दीनो ॥
देत उदार सु जिउ दमरी तिह को इम कै फुनि रंच न लीनो ॥
मार कै सत्र अभेख करे सु दीयो सभ संतन के सुख जी नो ॥
असत्रनि की बिधि सीखन को कबि स्याम हली मुसली मन कीनो ॥८८४॥

◀ *इति राजा उग्रसैन को राज दीबो धिआइ संपूरनं ॥*

अथ धनुख बिदिआ सीखन संदीपन पै चले ॥

सवैया ॥
आइस पाइ पिता ते दोऊ धनु सीखन की बिधि काज चले ॥
जिन के मुखि की सम चंद्र प्रभा जोऊ बीरन ते बरबीर भले ॥
गुर पासि संदीपन के तब ही दिन थोरनि मै भए जाइ खले ॥
जिनहूं कुपि कै मुर नाम मरयो जिन हूं छल सो बलि राज छले ॥८८५॥
चउसठ दिवस मै स्याम कहै सभ ही तिह ते बिधि सीख सु लीनी ॥
पैसठवे दिन प्रापत भे गुर सो उठ कै बिनती इह कीनी ॥
तउ गुर पूछि किधौ त्रीय ते सुत हूं की सु बात पै मागि कै लीनी ॥
सो सुनि स्रउनन बीच दुहूं जोऊ वाहि कही तिह को सोई दीनी ॥८८६॥
बीर बडे रथि बैठि दोऊ चलि कै तटि सो नदीआ पति आए ॥
ताही को रूपु निहारत ही बचना तिनि सीस झुकाइ सुनाए ॥
एक बली इह बीच रहै नही जानत है तिन हूं कि चुराए ॥
सो सुनि बीच धसे जल के करि कोप दुहूं मिलि संख बजाए ॥८८७॥
बीच धसे जल के जब ही इक रूप भयानक दैत निहारियो ॥
देखत ही तिह कोप भरे गहि आयुध पानि घनो रन पारियो ॥
जुध भयो दिन बीस तहा तिह को जसु पै कबि स्याम उचारियो ॥
जिउ म्रिगराज मरै म्रिग को तिम सो कुपि कै जदुबीरि पछारियो ॥८८८॥
इति दैत बधह ॥
सवैया ॥
मार कै राकस को तब ही तिह के उर ते हरि संख निकारियो ॥
बेदन की जिह ते धुनि होवत काढि लीयो सोऊ जो रिपु मारियो ॥

तउ हरि जू मन आनंद कै सुत सूरज के पुर मो पग धारियो ॥
सो लख कै हरि पाइ परियो मन को सभ सोक बिदा करि डारियो ॥८८९॥
सूरज के सुत मंडल मै जदु नंदन टेरि कहियो मुख सों ॥
मो गुर को सुत हिया न कहूं इह भाति कहियो सु किधौ जम सों ॥
जम ऐसे कहियो न फिरै जम लोक ते देवन के फुनि आइस सों ॥
तब ही हरि देहु कहियो करि फेरि न पंडत बामन को सुत सों ॥८९०॥
जमु आइस पाइ किधौ हरि ते हरि के सोऊ पाइन आनि लगायो ॥
लै तिन को जदुराइ चलियो अति ही अपने मन मै सुखु पायो ॥
ल्याइ कै ताही कौ पै संग कै गुरु पाइन ऊपर सीस झुकायो ॥
होइ बिदा तब ही गुर ते कबि स्याम कहै अपुने पुरि आयो ॥८९१॥

दोहरा ॥

मिले आइ कै कुटंब के अति ही हरख बढाइ ॥
सुख तिह को प्रापति भयो चितवन गई पराइ ॥८९२॥

◀ *इति ससत्र बिदिआ सीख कै संदीपन को पुत्र आनि दे करि बिदा होइ ग्रिह को आवत भए धिआइ समापतं ॥*

अथ ऊधो ब्रिज भेजा ॥

सवैया ॥
सोवत ही इह चिंत करी ब्रिज बासन सिउ इह कारज कईयै ॥
प्रात भए ते बुलाइ कै ऊधव भेज कहियो तिह ठउरहि दईयै ॥
ग्वारनि जाइ संतोख करै सु संतोख करै हमरी धरम मईयै ॥
या ते न बात भली कछु अउर है मोहि बिबेकहि को झगरईयै ॥८९३॥
प्रात भए ते बुलाइ कै ऊधव पै ब्रिज भूमहि भेज दयो है ॥
सो चलि नंद के धाम गयो बतीया कहि सोक असोक भयो है ॥
नंद कहियो संगि ऊधव के कबहूं हरि जी मुहि चित कयो है ॥
यौ कहि कै सुधि स्यामहि कै धरनी पर सो मुरझाइ पयो है ॥८९४॥
जब नंद परियो गिर भूमि बिखै तब याहि कहियो जदुबीर अए ॥
सुनि कै बतीया उठि ठाढ भयो मन के सभ सोक पराइ गए ॥
उठ कै सुधि सो इह भाति कहियो हम जानत ऊधव पेच कए ॥
तज कै ब्रिज को पुर बीच गए फिरि कै ब्रिज मै नही स्याम अए ॥८९५॥
स्याम गए तजि कै ब्रिज को ब्रिज लोगन को अति ही दुखु दीनो ॥
ऊधव बात सुनो हमरी तिह कै बिनु भयो हमरो पुर हीनो ॥
दै बिधि नै हमरे ग्रिह बालक पाप बिना हम ते फिरि छीनो ॥
यौ कहि सीस झुकाइ रहियो बहु सोक बढियो अति रोदन कीनो ॥८९६॥
कहि कै इह बात परियो धरि पै उठि फेरि कहियो संग ऊधव इउ ॥
तजि कै ब्रिज स्याम गए मथुरा हम संग कहो कब कारनि किउ ॥
तुमरे अब पाइ लगो उठ कै सु भई बिरथा सु कहो सभ जिउ ॥
तिह ते नही लेत कछू सुधि है मुहि पापि पछानि कछू रिस सिउ ॥८९७॥
सुनि कै तिन ऊधव यौ बतीया इह भातनि सिउ तिह उतर दीनो ॥
थो सुत सो बसुदेवहि को तुम ते सभ पै प्रभ जू नही छीनो ॥
सुनि कै पुरि को पति यौ बतीया कबि स्याम उसास कहै तिन लीनो ॥
धीर गयो छुटि रोवत भयो इन हूं तिह देखत रोदन कीनो ॥८९८॥
हठि ऊधव कै इह भाति कहियो पुर के पति सो कछु सोक न कीजै ॥
स्याम कही मुहि जो बतीया तिह की बिरथा सभ ही सुनि लीजै ॥
जा की कथा सुनि होत खुसी मन देखत ही जिस को मुख जीजै ॥
वाहि कहियो नहि चिंत करो न कछू इह ते तुमरो फुनि छीजै ॥८९९॥
सुनि कै इम ऊधव ते बतीया फिरि ऊधव को सोऊ पूछन लागियो ॥

कान्रह कथा सुनि चित के बीच हुलास बढिओ सभ ही दुख भागियो ॥
अउर दई सभ छोरि कथा हरि बात सुनैबे बिखै अनुरागियो ॥
ध्यान लगावत जिउ जुगीया इह तिउ हरि ध्यान के भीतर पागियो ॥९०० ॥
यौ कहि ऊधव जात भयो ब्रिज मै जह ग्वारनि की सुधि पाई ॥
मानहु सोक को धाम हुतो द्रुम ठउर रहे सु तहा मुरझाई ॥
मोन रही ग्रिह बैठि त्रीया मनो यौ उपजी इह ते दुचिताई ॥
स्याम सुने ते प्रसंन्य भई नहि आइ सुने फिरि भी दुखदाई ॥९०१ ॥
ऊधव बाच ॥
सवैया ॥
ऊधव ग्वारनि सो इह भाति कहियो हरि की बतीया सुनि लीजै ॥
मारग जाहि कहियो चलीयै जोऊ काज कहियो सोऊ कारज कीजै ॥
जोगिन फारि सभै पट होवहु यौ तुम सो कहियो सोऊ करीजै ॥
ताही की ओरि रहो लिव लाइ री या ते कछू तुमरो नही खीजै ॥९०२ ॥
ग्वारनि बाच ॥
सवैया ॥
सुनि ऊधव ते बिधि या बतीया तिन ऊधव को इम उतरु दीनो ॥
जा सुनि ब्रयोग हुलास घटै जिह को सुनिए दुख होवत जी नो ॥
त्यागि गए तुम हो हम को हमरो तुमरे रस मै मनु भीनो ॥
यौ कहियो ता संग यौ कहीयो हरि जू तुहि प्रेम बिदा करि दीनो ॥९०३ ॥
फिर कै संगि ऊधव के ब्रिज भामनि स्याम कहै इह भाति उचारियो ॥
त्यागि गए न लई सुधि है रस सो हमरो मनूआ तुम जारियो ॥
इउ कहि कै पुनि ऐसे कहियो तिह को सु किधौ कबि यौ जसु सारियो ॥
ऊधव स्याम सो यौ कहीयो हरि जू तुहि प्रेम बिदा करि डारियो ॥९०४ ॥
फेरि कहियो इम ऊधव सो जब ही सभ ही हरि के रस भीनी ॥
जो तिन सो कहियो ऊधव इउ तिन ऊधव सो बिनती इह कीनी ॥
कंचन सो जिन को तन थो जोऊ हान बिखै हुती ग्वारि नवीनी ॥
ऊधव जू हम को तजि कै तुमरे बिनु स्याम कछू सुधि लीनी ॥९०५ ॥
एक कहै अति आतुर ह्वै इक कोपि कहै जिन ते हित भागियो ॥
ऊधव जू जिह देखन को हमरो मनूआ अति ही अनुरागियो ॥
सो हम को तजि गयो पुर मै पुर बासिन के रस भीतर पागियो ॥
जउ हरि जू ब्रिज नारि तजी ब्रिज नारिन भी ब्रिजनाथ तिआगियो ॥९०६ ॥
एकन यौ कहियो स्याम तजियो इक ऐसे कहै हम काम करैगी ॥
भेख जिते कहियो जोगिन के तितने हम आपने अंगि डरैगी ॥
एक कहै हम जै है तहा इक ऐसे कहै गुनि ही उचरैगी ॥
एक कहै हम खै मरि है बिख इक यौ कहै ध्यान ही बीच मरैगी ॥९०७ ॥
ऊधव बाच गोपिन सो ॥
सवैया ॥
पिखि ग्वारनि की इह भाति दसा बिसमै हुइ ऊधव यौ उचरो ॥
हम जानत है तुमरी हरि सो बलि प्रीति घनी इह काम करो ॥
जोऊ स्याम पठियो तुम पै हम को इह रावल भेखन अंगि धरो ॥
तजि कै ग्रिह के पुनि काज सभै सखी मोरे ही ध्यान के बीच अरो ॥९०८ ॥
गोपिन बाच ऊधव सो ॥
सवैया ॥
एक समै ब्रिज कुंजन मै मुहि कानन स्याम तटंक धराए ॥
कंचन के बहु मोल जरे नग ब्रहम सकै उपमा न गनाए ॥
बज्र लगे जिन बीच छटा चमकै चहूं ओरि धरा छबि पाए ॥
तउन समै हरि वै दए ऊधव दै अब रावल भेख पठाए ॥९०९ ॥
एक कहै हम जोगनि ह्वै है कहै इक स्याम कहियो ही करैगी ॥
डारि बिभूति सभै तन पै बटूआ चिपीआ कर बीच धरैगी ॥
एक कहै हम जाहि तहा इक यौ कहै ग्वारनि खाइ मरैगी ॥

एक कहै बिरहागनि को उपजाइ कै ताही के संग जरैंगी ॥९११० ॥

राधे बाच ऊधव सो ॥

सवैया ॥

प्रेम छकी अपने मुख ते इह भाति कहियो ब्रिखभानु की जाई ॥
स्याम गए मथुरा तजि कै ब्रिज को अब धो हमरी गति काई ॥
देखत ही पुर की त्रीय को सु छके तिन के रस मै जीय आई ॥
कान्रह लयो कुबजा बसि कै टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९११ ॥
सेज बनी संगि फूलन सुंदर चादनी राति भली छबि पाई ॥
सेत बहे जमुना पट है सित मोतिन हार गरै छबि छाई ॥
मैन चड़ियो सर लै बर कै बधबो हम को बिनु जानि कन्नहाई ॥
सोऊ लयो कुबिजा बस कै टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१२ ॥
राति बनी घन की अति सुंदर स्याम सीगार भली छबि पाई ॥
स्याम बहै जमुना तरए इह जा बिनु को नही स्याम सहाई ॥
स्यामहि मैन लगियो दुख देवन ऐसे कहियो ब्रिखभानहि जाई ॥
स्याम लयो कुबिजा बसि कै टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१३ ॥
फूलि रहे सिगरे ब्रिज के तरु फूल लता तिन सो लपटाई ॥
फूलि रहे सरि सारस सुंदर सोभ समूह बढी अधिकाई ॥
चेत चड़ियो सुक सुंदर कोकिलका जुत कंत बिना न सुहाई ॥
दासी के संगि रहियो गहि हो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१४ ॥
बास सुबास अकास मिली अरु बासत भूमि महा छबि पाई ॥
सीतल मंद सुगंधि समीर बहै मकरंद निसंक मिलाई ॥
पैर पराग रही है बैसाख सभै ब्रिज लोगन की दुखदाई ॥
मालिन लैब करो रस को टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१५ ॥
नीर समीर हुतासन के सम अउर अकास धरा तपताई ॥
पंथ न पंथी चलै कोऊओ तरु ताकि तरै तन ताप सिराई ॥
जेठ महा बलवंत भयो अति बिआकुल जीय महा रति पाई ॥
ऐसे सक्यो धसक्यो ससक्यो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१६ ॥
पउन प्रचंड बहै अति तापत चंचल चिति दसो दिस धाई ॥
बैस अवास रहै नर नारि बिहंगम वारि सु छाह तकाई ॥
देखि असाड़ नई रित दादुर मोरन हूं घनघोर लगाई ॥
गाढ परी बिरही जन को टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१७ ॥
ताल भरे जल पूरन सो अरु सिंधु मिली सरिता सभ जाई ॥
तैसे घटानि छटानि मिली अति ही पपीहा पीय टेर लगाई ॥
सावन माहि लगिओ बरसावन भावन नाहि हहा घरि माई ॥
लाग रहियो पुर भामिन सो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१८ ॥
भादव माहि चड़ियो बिनु नाह दसो दिस माहि घटा घरहाई ॥
द्योस निसा नहि जान परै तम बिजु छटा रवि की छबि पाई ॥
मूसलधार छुटै नभि ते अवनी सगरी जल पूरनि छाई ॥
ऐसे समे तजि गयो हम को टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९१९ ॥
मास कुआर चढियो बलु धारि पुकार रही न मिले सुखदाई ॥
सेत घटा अरु राति तटा सर तुंग अटा सिमकै दरसाई ॥
नीर बिहीन फिरै नभि छीन सु देखि अधीन भयो हीयराई ॥
प्रेम तकी तिन सो बिथक्रयो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२० ॥
कातिक मै गुनि दीप प्रकासित तैसे अकास मै उजलताई ॥
जूप जहा तह फैल रहियो सिगरे नर नारिन खेल मचाई ॥
चित्र भए घर आंङन देखि गचे तह के अरु चित भ्रमाई ॥
आयो नही मन भायो तही टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२१ ॥
बारिज फूलि रहे सरि पुंज सुगंध सने सरितान घटाई ॥
कुंजत कंत बिना कुलहंस कलेस बढै सुनि कै तिह माई ॥
बासुर रैनि न चैन कहूं छिन मंघर मासि अयो न कन्नहाई ॥

जात नही तिन सो मसक्रयो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२२॥
भूमि अकास अवास सु बासु उदासि बढी अति सीतलताई ॥
कूल दुकूल ते सूल उठै सभ तेल तमोल लगै दुखदाई ॥
पोख संतोख न होत कछू तन सोखत जिउ कुमदी मुरझाई ॥
लोभि रहियो उन प्रेम गहियो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२३॥
माहि मै नाह नही घरि माहि सु दाह करै रवि जोति दिखाई ॥
जानी न जात बिलातत द्रयोसन रैनि की ब्रिध भई अधिकाई ॥
कोकिल देखि कपोति सिलीमुख कूंजत ए सुनि कै डर पाई ॥
प्रीति की रीति करी उन सो टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२४॥
फागुन फागु बढियो अनुराग सुहागनि भाग सुहाग सुहाई ॥
केसर चीर बनाइ सरीर गुलाब अंबीर गुलाल उडाई ॥
सो छबि मै न लखी जनु द्वादस मास की सोभत आगि जगाई ॥
आस को त्यागि निरास भई टसक्यो न हीयो कसक्यो न कसाई ॥९२५॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे क्रिसनावतारे ब्रिह नाटक बारहमाह संपूरनम सतु ॥

गोपिन बाच आपस मै ॥
सवैया ॥
या ही के संगि सुनो मिल कै हम कुंज गलीन मै खेल मचायो ॥
गावत भयो सोऊ ठउर तहा हम हूं मिल कै तह मंगल गायो ॥
सो ब्रिज त्यागि गयो मथुरा इन ग्वारन ते मनूआ उचटायो ॥
यौ कहि ऊधव सो तिन टेरि हहा हमरे ग्रिहि स्याम न आयो ॥९२६॥
गोपिन बाच ऊधव सो ॥
सवैया ॥
एक समै हम को सुनि ऊधव कुंजन मै फिरै संगि लीये ॥
हरि जू अति ही हित साथ घने हम पै अति ही कहियो प्रेम कीये ॥
तिन के बसि गयो हमरो मन ह्वै अति ही सुखु भयो ब्रिज नारि हीये ॥
अब सो तजि कै मथरा को गयो तिह के बिछुरे फलु कवन जीये ॥९२७॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
ग्वारनि पै जितनी फुनि ऊधव स्याम कहै हरि बात बखानी ॥
ग्यान को उतर देत भई नहि प्रेम चितार सभे उचरानी ॥
जाही के देखत भोजन खात सखी जिह के बिनु पीत न पानी ॥
ग्यान की जो इन बात कही तिन हूं हित सो करि एक न जानी ॥९२८॥
गोपिन बाच ऊधव सो ॥
सवैया ॥
मिल कै तिन ऊधव संगि कहियो हरि सो सुन ऊधव यौ कहीयो ॥
कहि कै करि ऊधव ग्यान जितो पठियो तितनो सभ ही गहीयो ॥
सभ ही इन ग्वारनि पै कबि स्याम कहियो हित आखन सो चहीयो ॥
इन को तुम तिआग गए मथुरा हमरी सुधि लेत सदा रहीयो ॥९२९॥
जब ऊधव सो इह भाति कहियो तब ऊधव को मन प्रेम भरियो है ॥
अउर गई सुधि भूल सभै मन ते सभ ग्यान हुतो सु टरियो है ॥
सो मिलि कै संगि ग्वारनि के अति प्रीति की बात के संगि ढरियो है ॥
ग्यान के डार मनो कपरे हित की सरिता हित महि कूद परियो है ॥९३०॥
यौ कहि संगि गुआरनि के जब ही सभ ग्वारनि को हित चीनो ॥
ऊधव ग्यान दयो तजि कै मन मै जब प्रेम को संग्रह कीनो ॥
होइ गयो तनमै हित सो इह भाति कहियो सु करियो ब्रिज हीनो ॥
त्यागि गए तुम को मथरा तिह ते हरि काम सखी घट कीनो ॥९३१॥
ऊधव बाच गोपिन सो ॥
सवैया ॥

जाइ कै हउ मथरा मै सखी हरि ते तुम लयैबे को दूत पठै हों ॥
बीतत जो तुम पै बिरथा सभ ही जदुराइ के पास कहै हों ॥
कै तुमरी बिनती उह पै बिधि जा रिझ है बिधि ता रिझवै हों ॥
पाइन पै कबि स्याम कहै हरि कौ ब्रिज भीतर फेरि लियै हों ॥९३२॥
यौ जब ऊधव बात कही उठि पाइन लागत भी तब सोऊ ॥
दूख घटिओ तिन के मन ते अति ही मन भीतर आनंद होऊ ॥
कै बिनती संगि ऊधव के कबि स्याम कहै बिधि या उचरोऊ ॥
स्याम सो जाइ कै यौ कहीयो करि कै कहियो प्रीति न त्यागत कोऊ ॥९३३॥
कुंज गलीन मै खेलत ही सभ ही मन ग्वारनि को हरिओ ॥
जिन के हित लोगन हास सहियो जिन के हित सत्रन सो लरिओ ॥
संगि ऊधव के कबि स्याम कहै बिनती करि कै इम उचरिओ ॥
हम त्यागि गए ब्रिज मै मथरा तिह ते तुम काम बुरो करिओ ॥९३४॥
ब्रिज बासन त्यागि गए मथुरा पुर बासिन के रस भीतर पागिओ ॥
प्रेम जितो पर ग्वारनि थो उन संगि रचे इन ते सभ भागिओ ॥
दै तुहि हाथि सुनो बतीया हम जोग के भेख पठावन लागिओ ॥
ता संगि ऊधव यौ कहीयो हरि जू तुम प्रेम सभै अब त्यागिओ ॥९३५॥
ऊधव जो तजि कै ब्रिज को चलि कै जब ही मथुरा पुरि जईयै ॥
पै अपुने चित मै हित कै हम ओर ते स्याम के पाइन पईयै ॥
कै अति ही बिनती तिह पै फिर कै इह भाति सो उतर दईयै ॥
प्रीति निबाहीयै तउ करीयै पर यौ नही काहूं सो प्रीति करईयै ॥९३६॥
ऊधव मो सुन लै बतीया जदुबीर को ध्यान जबै करि हों ॥
बिरहा तब आइ कै मोहि ग्रसै तिह के ग्रसए न जीयो मरि हों ॥
न कछू सुधि मो तन मै रहि है धरनी पर ह्वै बिसुधी झरि हों ॥
तिह ते हम को ब्रिथा कहीऐ किह भाति सो धीरज हउ धरि हों ॥९३७॥
दीन ह्वै ग्वारनि सोऊ कहै कबि स्याम जु थी अति ही अभिमानी ॥
कंचन से तन कंज मुखी जोऊ रूप बिखै रति की फुनि सानी ॥
यौ कहै ब्याकुल ह्वै बतीया कबि ने तिह की उपमा पहिचानी ॥
ऊधव ग्वारनीया सफरी सभ नाम लै स्याम को जीवत पानी ॥९३८॥
आतुर ह्वै ब्रिखभान सुता संगि ऊधव के सु कहियो इम बैना ॥
भूखन भोजन धाम जितो हम के जदुबीर बिना सु रुचै ना ॥
यौं कहि स्याम बियोग बिखै बसि गे कबि ने जस यौ उचरैना ॥
रोवत भी अति ही दुख सो जु हुते मनो बाल के कंजन नैना ॥९३९॥
ब्रिखभान सुता अति प्रेम छकी मन मै जदुबीर को धिआन लगै कै ॥
रोवत भी अति ही दुख सो संग काजर नीर गिरियो ढर कै कै ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि स्याम कहियो मुख ते उमगै कै ॥
चंदहि को जु कलंक हुतो मनो नैननि पैड चल्यो निचुरै कै ॥९४०॥
गहि धीरज ऊधव सो बचना ब्रिखभान सुता इह भाति उचारे ॥
नेहु तजियो ब्रिज बासन सो तिह ते कछू जानत दोख बिचारे ॥
बैठि गए रथ भीतर आप नही इन की सोऊ ओरि निहारे ॥
त्यागि गए ब्रिज को मथुरा हम जानत है घट भाग हमारे ॥९४१॥
जब जैहो कहियो मथुरा कै बिखै हरि पै हमरी बिनती इह कीजो ॥
पाइन को गहि कै रहीयो घटका दस जो मुहि नामहि लीजो ॥
ताही के पाछे ते मो बतीया सुनि लै इह भातहि सो उचरीजो ॥
जानत हो हित त्याग गए कबहूं हमरे हित के संग भीजो ॥९४२॥
ऊधव को ब्रिखभान सुता बचना इह भाति सो उचरियो है ॥
तिआग दई जब अउर कथा मन जउ संगि स्याम के प्रेम भरियो है ॥
ता संग सोऊ कहो बतीया बन मै हमरो जोऊ संगि अरियो है ॥
मै तुमरे संगि मान करियो तुम हूं हमरे संग मान करियो है ॥९४३॥
बन मै हमरो संगि केल करे मन मै अब सो जदुबीर चितारो ॥
मोरे जु संगि कही बतीया हित की सोई अपने चित निहारो ॥

ताही को ध्यान करो किह हेत तजियो ब्रिज औ मथुरा को पधारो ॥
जानत है तुमरो कछु दोस नही कछु है घट भाग हमारो ॥९४४॥
यौ सुनि उतर देत भयो ऊधव प्रीति घनी हरि की संग तेरै ॥
जानत हो अब आवत है उपजै इह चिंत कहियो मन मेरै ॥
किउ मथरा तजि आवत है जु फिरै नहि ग्वारनि के फुनि फेरै ॥
जानत है हमरे घटि भागन आवत है हरि जू फिरि डेरै ॥९४५॥
यौ कहि रोवत भी ललना अपने मन मै अति सोक बढायो ॥
झूमि गिरी प्रिथमी पर सो ह्रिदै आनंद थो तितनो बिसरायो ॥
भूल गई सुधि अउर सबै हरि के मन ध्यान बिखै तिन लायो ॥
यौ कहि ऊधव सो तिनि टेरि हहा हमरे ग्रिहि स्याम न आयो ॥९४६॥
जाही के संगि सुनो मिल कै हम कुंज गलीन मै खेल मचायो ॥
गावत भयो सोऊ ठउर तहा हमहूं मिल कै तह मंगल गायो ॥
सो ब्रिज त्यागि गए मथुरा इन ग्वारनि ते मनूआ उचटायो ॥
यौ कहि ऊधव सो तिन टेरि हहा हमरे ग्रिहि स्याम न आयो ॥९४७॥
ब्रिज त्यागि गयो मथरा को सोऊ मन ते सभ ही ब्रिजनाथि बिसारी ॥
संगि रचे पुर बासिन के कबि स्याम कहै सोऊ जानि पिआरी ॥
ऊधव जू सुनीयै बिरथा तिह ते अति ब्याकुल भी ब्रिज नारी ॥
कंचुरी जिउ अहिराज तजै तिह भाति तजी ब्रिज नार मुरारी ॥९४८॥
ऊधव के फिरि संग कहियो कबि स्याम कहै ब्रिखभान जई है ॥
जा मुख के सम चंद्र प्रभा जु तिहूं पुर मानहु रूपमई है ॥
स्याम गयो तजि कै ब्रिज को तिह ते अति ब्याकुल चित भई है ॥
जा दिन के मथुरा मै गए बिनु त्वै हमरी सुधि हूं न लई है ॥९४९॥
जा दिन के ब्रिज त्यागि गए बिन त्वै कोऊ मानस हूं न पठायो ॥
हेत जितो इन ऊपर थो कबि स्याम कहै तितनो बिसरायो ॥
आप रचे पुर बासिन सो इन को दुखु दै उन को रिझवायो ॥
ता संग जाइ को यौ कहीयो हरि जी तुमरे कहु का जीय आयो ॥९५०॥
त्यागि गए मथुरा ब्रिज कउ चलि कै फिरि आप नही ब्रिज आए ॥
संगि रचे पुरबासिन के कबि स्याम कहै मन आनंद पाए ॥
दै गयो है इन को दुख ऊधव पै मन मै न हुलास बढाए ॥
आप न थे ब्रिज मै उपजे इन सो सु भए छिन बीच पराए ॥९५१॥
त्यागि गए न लई इन की सुधि होत कछू मनि मोह तुहारे ॥
आप रचे पुर बासिन सो इन के सभ प्रेम बिदा करि डारे ॥
ता ते न मान करो फिरि आवहु जीतत भे तुम हूं हम हारे ॥
ता ते तजो मथुरा फिरि आवहु हे सभ गऊअन के रखवारे ॥९५२॥
स्याम चितार कै स्याम कहै मन मै सभ ग्वारनीया दुख पावै ॥
एक परै मुरझाइ धरा इक बियोग भरी गुन बियोग ही गावै ॥
कोऊ कहै जदुरा मुख ते सुनि स्रउनन बात तहा एऊ धावै ॥
जउ पिखवै न तहा तिन को सु कहै हम को हरि हाथि न आवै ॥९५३॥
ग्वारनि ब्याकुल चित भई हरि के नही आवन की सुधि पाई ॥
ब्याकुल होइ गई चित मै ब्रिखभान सुता मन मै मुरझाई ॥
जो बिरथा मन बीच हुती सोऊ ऊधव के तिह पास सुनाई ॥
स्याम न आवत है तिह ते अति ही दुख भयो बरनियो नही जाई ॥९५४॥
ऊधव उतर देत भयो अति बियोग मने अपने सोऊ कै है ॥
ग्वारनि के मन मधि बिखै कबि स्याम कहै जोऊ बात रुचै है ॥
थोरे ही द्रयोसन मै मिलि है जिह के उर मै न कछू भ्रम भै है ॥
जोगिन होइ जपो हरि को मुख मागहुगी तुम सो बरु दै है ॥९५५॥
उन दै इम ऊधव ग्यान चलियो चलि कै जसुधा पति पै सोऊ आयो ॥
आवत ही जसुधा जसुधा पति पाइन ऊपर सीस झुकायो ॥
स्याम ही स्याम सदा कहीयो कहि कै इह मो पहि कान्रह पठायो ॥
यौ कहि कै रथ पै चड़ कै रथ को मथुरा ही की ओरि चलायो ॥९५६॥

ऊधव बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
आइ तबै मथुरा पुर मै बलिराम अउ स्याम के पाइ परियो ॥
कहियो जो तुम मो कहि कै पठियो तिन सो इह भाति ही सो उचरियो ॥
संग नंद के अउ उन ग्वारनि के चरचा करि ग्यान की फेरि फिरियो ॥
तुमरो मुख भानु निहारत ही तम सो दुख थो सभ दूर करियो ॥९५७॥
तुमरे पग भेटि गयो जब ही तब ही फुनि नंद के धामि गयो ॥
तिह को करि कै हरि ग्यान प्रबोध उठियो चलि ग्वारनि पास अयो ॥
तुमरो उन दुख कहियो हम पै सुनि उतर मै इह भाति दयो ॥
बलि स्यामहि स्याम सदा जपीयो सुनि नामहि प्रेम घनो बढयो ॥९५८॥
ऊधव संदेस बाच ॥
सवैया ॥
ग्वारनि मो संग ऐसे कहियो हम ओर ते स्याम के पाइन पईयै ॥
यौ कहीयो पुर बासिन को तजि कै ब्रिज बासिन को सुखु दईयै ॥
जसुधा इह भाति करी बिनती बिनती कहीयो संगि पूत कन्रह्हईयै ॥
ऊधव ता संग यौ कहीयौ बहुरो फिरि आइ कै माखन खईयै ॥९५९॥
अउर कही बिनती तुम पै सु सुनो अरु अउर न बातन डारो ॥
से कहा जसुधा तुम को हम को अति ही ब्रिजनाथ पिआरो ॥
ता ते करो न कछू गनती हमरो सु कहियो तुम प्रेम बिचारो ॥
ताही ते बेग तजो मथुरा उठ कै अब ही ब्रिज पूत पधारो ॥९६०॥
मात करी बिनती तुम पै कबि स्याम कहै जोऊ है ब्रिजरानी ॥
ताही को प्रेम घनो तुम सों हम आपने जी महि प्रीत पछानी ॥
ता ते कहिओ तजि कै मथुरा ब्रिज आवहु या बिधि बात बखानी ॥
इआने हुते तब मानत थे अब सिआने भए तब एक न मानी ॥९६१॥
ताही ते संग कहो तुमरे तजि कै मथुरा ब्रिज को अब अईयै ॥
मान कै सीख कहो हमरी तिह ठउर नही पलवा ठहरईयै ॥
यों कहि ग्वारनीया हम सो सभ ही ब्रिज बासिन को सुख दईयै ॥
सो सुध भूल गई तुम को हमरे जिह अउसर पाइन पईयै ॥९६२॥
ताही ते त्यागि रह्यो मथुरा कबि स्याम कहै ब्रिज मै फिर आवहु ॥
ग्वारनि प्रीत पछान कह्यो तिह ते तिह ठउर न ढील लगावहु ॥
यों कहि पाइन पै हमरे हम संग कह्यो सु तहा तुम जावहु ॥
जाइ कै आवहु यों कहीयो हम को सुख हो तुम हूं सुख पावहु ॥९६३॥
ता ते कहयो तजि कै मथुरा फिर कै ब्रिज बासिन को सुख दीजै ॥
आवहु फेरि कह्यो ब्रिज मै इह काम कीए तुमरो नही छीजै ॥
आइ क्रिपाल दिखावहु रूप कह्यो जिह देखत ही मन जीजै ॥
कुंज गलीन मै फेर कह्यो हमरे अधरानन को रस लीजै ॥९६४॥
स्याम कह्यो संग है तुमरे जु हुती तुम को ब्रिज बीच प्यारी ॥
कान्रह रचे पुर बासिन सों कबहूं न हीए ब्रिज नारि चितारी ॥
पंथ निहारत नैनन की कबि स्याम कहै पुतरी दोऊ हारी ॥
ऊधव स्याम सो यों कहीयो तुमरे बिन भी सभ ग्वारि बिचारी ॥९६५॥
अउर कही तुम सौ हरि जू ब्रिखभान सुता तुम को जोऊ प्यारी ॥
जा दिन ते ब्रिज त्याग गए दिन ता की नहीं हमहू है संभारी ॥
आवहु त्यागि अबै मथुरा तुमरे बिन गी अब होइ बिचारी ॥
मै तुम सिउ हरि मान कर्यो तज आवहु मान अबै हम हारी ॥९६६॥
त्याग गए हम को किह हेत ते बात कछू तुमरी न बिगारी ॥
पाइन मो पर कै सुनीयै प्रभ ए बतीया इह भाति उचारी ॥
आप रचे पुर बासिन सो मन ते सब ही ब्रिजनार बिसारी ॥
मान करियो तुम सो घट काम करियो अब स्याम हहा हम हारी ॥९६७॥
अउर करी तुम सो बिनती सोऊ स्याम कहै चित दै सुनि लीजै ॥
खेलत थी तुम सो बन मै तिह अउसर की कबहूं सुधि कीजै ॥

गावत थी तुम पै मिल कै जिह की सुर ते कछु तान न छीजै ॥
ता को कहियो तिह की सुधि कै बहुरो ब्रिज बासिन को सुख दीजै ॥९६८॥
अउर कही ब्रिखभान सुता हरि जू सोऊ बात अबै सुनि लईयै ॥
यौ कहियो त्याग तुमै मथुरा बहुरो ब्रिज कुंजन भीतर अईयै ॥
जिउ हमरे संगि खेलत थे इह भाति कहियो फिरि खेल मचईयै ॥
चाह घनी तुहि देखन की ग्रिह आइ कहियो हम को सुख दईयै ॥९६९॥
तेरे पिखे बिनु हे हरि जी किही भाति कहियो नही मो मन भीजै ॥
सूकि भई पुतरी सी कहियो कही यौ हरि सो बिनती सुन लीजै ॥
बातन मोहि न होत प्रतीति कहियो घन स्याम पिखेई प्रसीजै ॥
आनन मै सम चंद निहारि चकोर सी ग्वारनि को सुख दीजै ॥९७०॥
ऊधव चंद्रभगा को संदेस बाच ॥
सवैया ॥
यौ तुम सो कहियो चंद्रभगा हरि जू अपनो मुख चंद दिखईयै ॥
ब्याकुल होइ गई बिनु त्वै सु हहा कहियो टेरि हलीधर भईयै ॥
ताही ते आवहु न चिर लावहु मो जीय की जब ही सुन लईयै ॥
हे ब्रिजनाथ कहियो नंद लाल चकोरन ग्वारनि को सुख दईयै ॥९७१॥
हे ब्रिजनाथ कहियो ब्रिज नारि हहा नंद लाल नही चिर कीजै ॥
हे जदुरा अग्रज जसुधा सुत रछुक धेनु कहियो सुन लीजै ॥
साप के नाथ असुर बधीया अरु आवन गोकुल नाथ न छीजै ॥
कंस बिदार अबै करतार चकोरन गारनि को सुख दीजै ॥९७२॥
हे नंद नंद कहियो सुख कंद मुकंद सुनो बतीया गिरधारी ॥
गोकुल नाथ कहो बक के रिपु रूप दिखावहु मोहि मुरारी ॥
स्री ब्रिजनाथ सुनो जसुधा सुत भी बिनु त्वै ब्रिज नारि बिचारी ॥
जानत है हरि जू अपने मन ते सभ ही इह त्रीय बिसारी ॥९७३॥
कंस के मार सुनो करतार बका मुख फार कहियो सुनि लै ॥
सभ दोख निवार सुनो ब्रिजनाथ अबै इन ग्वारनि रूप दिखै ॥
घन स्याम की मूरति पेखे बिना न कछू इन के मन बीच रुचै ॥
तिह ते हरि जू तज कै मथुरा इन कै सभ सोकन को हरि दै ॥९७४॥
बिजुछटा अरु मैनप्रभा संदेस बाच ॥
स्वैया ॥
बिजुछटा अरु मैनप्रभा संग तोहि स्याम कहियो सुनि ऐसे ॥
प्रीति बढाइ इती इन सो अब त्याग गए कहु कारन कैसे ॥
आवहु स्याम न ढील लगावहु खेल करो हम सो फुनि वैसे ॥
मान करै ब्रिखभान सुता पठवो हम को तुम वा बिधि जैसे ॥९७५॥
ऊधव स्याम सो यौ कहियो तुमरो रहिबो जब स्रउन धरैंगी ॥
त्याग तबै अपुने सुख को अति ही मन भीतर सोक करैंगी ॥
जोगिन बसत्रन को धरहै कहियो बिख खाइ कै प्रान परैंगी ॥
ताही ते हे हरि जू तुम सो ब्रिखभान सुता फिरि मान करैंगी ॥९७६॥
यौ तु कही उन हूं तुम को ब्रिखभान सुता जु कहियो सुन लीजै ॥
त्याग गए हम को ब्रिज मै मनूआ तुमरो सु लखो न प्रसीजै ॥
बैठ रहे अब हो मथुरा इह भाति कहियो मनूआ जब खीजै ॥
जिउ हम को तुम पीठ दई तुम को तुमरी मन भावत दीजै ॥९७७॥
अउर कही तुम सो ब्रिजनाथ कही अब ऊधव सो सुन लईयै ॥
आप चलो तु नही कहियो नाथ बुलावन ग्वारनि दूत पठईयै ॥
जो कोऊ दूत पठो न कयो तब तो उठि आपन ही तहि जईयै ॥
नातुर ग्वारनि को द्रिड़ता हूं को स्याम कहै अब दान दिवईयै ॥९७८॥
तेरो ही ध्यान धरै हरि जू अरु तेरो ही लै करि नामु पुकारै ॥
मात पिता की न लाज करै हरि साइत स्याम ही स्याम चितारै ॥
नाम अधार ते जीवत है बिनु नाम कहियो छिन मै कसटारै ॥
या बिधि देख दसा उन की अति बीचि बढियो जीय सोक हमारै ॥९७९॥

मात पितान की संक करै नहि स्याम ही स्याम करै मुख सिउ ॥
भूमि गिरै बिधि जा मतवार परै गिर कै धरि पै सोऊ तिउ ॥
ब्रिज कुंजन ढूंढत है तुम को कबि स्याम कहै धन लोभक जिउ ॥
अब ता ते करो बिनती तुम सो पिख कै तिन को फुनि हउ दुख इउ ॥९८० ॥
आप चलो इह ते न भली जु पै आप चलो नही दूत पठीजै ॥
ता ते करो बिनती तुम सो दुह बातन ते इक बात करीजै ॥
जिउ जल के बिन मीन दसा सु दसा भई ग्वारनि की सुनि लीजै ॥
कै जल होइ उनै मिलीऐ कि उनै द्रिड़ता को कहियो बरु दीजै ॥९८१ ॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
ब्रिज बासिन हाल किधो हरि जू फुनि ऊधव ते सभ ही सुन लीनो ॥
जा की कथा सुन कै चित ते सु हुलास घटै दुख होवत जी नो ॥
स्याम कहियो मुख ते इह भाति किधौ कबि नै सु सोऊ लखि लीनो ॥
ऊधव मै उन ग्वारनि को सु कहियो द्रिड़ता को अबै बरु दीनो ॥९८२ ॥

दोहरा ॥

सत्रह सै चवताल मै सावन सुदि बुधवारि ॥
नगर पावटा मो तुमो रचियो ग्रंथ सुधारि ॥९८३ ॥
खड़ग पानि की क्रिपा ते पोथी रची बिचारि ॥
भूलि होइ जह तह सु कबि पड़िअहु सभै सुधारि ॥९८४ ॥

◀ *इति स्री दसम सिकंधे पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे गोपी ऊधव संबादे बिरह नाटक बरननं नाम धयाइ समापतम सतु सुभम सत ॥*

अथ कुबिजा ग्रिह गवन कथनं ॥

दोहरा ॥

गोपिन को पोखन करियो हरि जू क्रिपा कराइ ॥
अवर खेल खेलन लगे अति ही हरख बढाइ ॥९८५ ॥
सवैया ॥
माधव ऊधव लै अपने संगि एक समै कुबिजा ग्रिह आए ॥
ए सुनि आगे ही आए लए मन भावत देखि सभै सुख पाए ॥
लै हरि के जुग पंकज पाइन सीस ढुलाइ रही लपटाए ॥
ऐसो हुलास बढियो जीय मो जिम चात्रिक मोर घटा घहराए ॥९८६ ॥
ऊच अवास बनियो अति सुभ्रम ईगर रंग के चित्र बनाए ॥
चंदन धूप कदंब कलंबक दीपक दीप तहा दरसाए ॥
लै परजंक तहा अति सुंदर सवछ सु मउर सुगंध बिछाए ॥
दो कर जोरि प्रनाम करियो तब केसव ता पर आनि बैठाए ॥९८७ ॥

दोहरा ॥

रतन खचत पीड़ा बहुर ल्याई भगति जनाइ ॥
ऊधव जी सो यौ कहियो बैठहु या पर आइ ॥९८८ ॥
सवैया ॥
ऊधव जी कुबजा सो कहै निजु प्रीति लखी अति ही तुमरी मै ॥
हउ अति दीन अधीन अनाथ न बैठ सकउ समुहाइ हरी मै ॥
कान्रह प्रताप तबै उठि पीड़े कउ दीन उठाइ के वाही घरी मै ॥
पै इतनो करि कै भूअ बैठि रहियो गहि पाइन नेह छरी मै ॥९८९ ॥
जे पद पंकज सेस महेस सुरेस दिनेस निसेस न पाए ॥

जे पद पंकज बेद पुरान बखानि प्रमान कै ग्यान न गाए ॥
जे पद पंकज सिध समाधि मै साधत है मनि मोन लगाए ॥
जे पद पंकज केसव के अब ऊधव लै कर मै सहराए ॥९९०॥
संत सहारत स्याम के पाइ महा बिगसियो मन भीतर सोऊ ॥
जोगन के जोऊ ध्यान के बीच न आवत है अति ब्याकुल होऊ ॥
जा ब्रहमादिक सेस सुरादिक खोजत अंति न पावत कोऊ ॥
सो पद कंजन की सम तुलि पलोटत ऊधव लै करि दोऊ ॥९९१॥
इत स्याम पलोटत ऊधव पाइ उतै उन मालनि साज कीए ॥
सुभ बज्रन के अरु लाल जवाहर देखि जिसै सुख होत जीए ॥
इतने पहि कान्रह पै आइ गई बिंदुरी कहियो ईगर भालि दीए ॥
तिह रूप निहारि हुलास बढियो कबि स्याम कहै जदुबीर हीए ॥९९२॥
सजि साजन मालनि अंगन मै अति सुंदर सो हरि पास गई ॥
मनो दूसरि चंद्रकला प्रगटी मनो हेरत कै इह रूप मई ॥
हरि जू लखि कै जीय की बिरथा कबि स्याम कहै सोऊ ऐच लई ॥
तिह ऊपरि बैसि असंक भई मन की सभ संक पराइ गई ॥९९३॥
बहीया जब ही गहि स्यामि लई कुबिजा अति ही मन मै सुख पायो ॥
स्याम मिले बहुते दिन मै हम कउ कहि कै इह भाति सुनायो ॥
चंदन जिउ तुहि अंग मलियो तिह ते हम हूं जदुबीर रिझायो ॥
जोऊ मनोरथ थो जीय मै तुमरे मिलए सोऊ मो करि आयो ॥९९४॥

◄ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कुबजा के ग्रिह जा मनोरथ पूरन समापतं ॥

अथ अक्रूर के धाम कान्रह जू आए ॥

सवैया ॥
दै सुख मालनि कउ अति ही अक्रूरहि के फिर धामि पधारियो ॥
आवत सो सुनि पाइ लगियो तिह मधि चलो हरि प्रेम चितारियो ॥
सो गहि स्याम के पाइ रहियो कबि ने मुख ते इह भाति उचारियो ॥
ऊधव सो जदुबीर कहियो इन संतन को अति प्रेम निहारियो ॥९९५॥
ऊधव स्याम कहियो सुन कै अक्रूरहि को अति प्रेम निहारियो ॥
सुधि करी उन की मन मै कुबिजा को कहियो अरु प्रेम चितारियो ॥
सो गनती करि कै मन मै कन्रहीया संगि पै इह भाति उचारियो ॥
हे हरि जू इह के पिखए उन के सभ प्रेम बिदा करि डारियो ॥९९६॥
हरि रूप निहारि मने सुख पाइ कै स्री जदुबीर की सेव सु कीनी ॥
पाइ परो ताहि के बहुरे उठि देवकी लालि परिक्रमा दीनी ॥
भोजन अंन जितो ग्रिह थो सोऊ आनि धरो हित बात लखीनी ॥
थो मन मो सोऊ बाछत इछ वहै जसुधा सुत पूरन कीती ॥९९७॥
पूरन कै मनसा तिह की संगि ऊधव लै फिरि धामि अयो ॥
ग्रिह आइ कै मंगन लोग बुलाइ गवावत भयो तिह राग गयो ॥
तिन ऊपर रीझि कहै कबि स्याम घनो ग्रिह ते कढि दान दयो ॥
मनो ता जस ते म्रित मंडल मै अब के दिन लउ दिन सेत भयो ॥९९८॥
अक्रूर सिआम के धामहि आइ कै स्री जदुबीर के पाइन लागिओ ॥
कंस बिदारि बकी उरि फारि कहियो करतार सराहन लागिओ ॥
अउर गई सुधि भूल सभै हरि की उपमा रस भीतर पागिओ ॥
आनंद बीच बढियो मन के मन को दुख थो जितनो सभ भागिओ ॥९९९॥
देवकी लाल गुपाल अहो नंद लाल दिआल इहै जीय धारिओ ॥
कंस बिदारि बकी उर फारि कहियो करता जदुबीर उचारिओ ॥
हे अघ के रिपु हे रिपु केसी के हे कुपि जाहि त्रिनाव्रति मारिओ ॥
ता अब रूप दिखाइ हमै हमरो सभ पाप बिदा करि डारिओ ॥१०००॥

चोर है साधन के दुख को सुख को बरु दाइक स्याम उचारिओ ॥
है ठग ग्वारनि चीरन को भट है जिनि कंस सो बीर पछारिओ ॥
काइर है बहु पापन ते अरु बैद है जा सभ लोग जीयारिओ ॥
पंडित है कबि स्याम कहै जिनि चारो ई बेदु को भेद सवारिओ ॥१००१॥
यौ कहि कै जदुबीर के सो कबि स्याम कहै उठि पाइ परियो ॥
हरि की बहु बार सराह करी दुख थो जितनो छिन बीच हरियो ॥
अरु ता छबि के जसु उच महा कबि ने बिधि या मुख ते उचरियो ॥
हरि नामु संजोअ कउ पैन्नहि तनै सभ पापन संगि लरियो न टरियो ॥१००२॥
फिरि यौ करि कानर की उपमा हरि जी तुम ही मुर सत्र पछारियो ॥
तै ही मरे त्रिपुरारि कमध सु रावन मारि घनो रन पारियो ॥
लंक दई अरि भ्रातर कउ सीअ को संगि लै फिरि अउधि सिधारियो ॥
तै ही चरित्र कीए सभ ही हम जानत है इह भाति उचारियो ॥१००३॥
हे कमलापति हे गरुड़ध्वज हे जगनाइक कान्नहि कहियो है ॥
हे जदुबीर कहो बतीया सभ ही तुमरी भ्रित लोक भयो है ॥
मेरी हरो ममता हरि जू इह भाति कहियो हरि चीन लयो है ॥
डारि दई ममता तिह पै सोऊ मोनहि धार कै बैठि रहियो है ॥१००४॥
कान्नह जू बाच अक्रूर सो ॥
सवैया ॥
ऐ हो चचा जदुबीर कहियो हम कउ समझे बिनु तै हरि चीनो ॥
ता ते लडावहु मोहि कहियो जिह ते सुख हो अति ही मुहि जी नो ॥
आइस मो बसुदेवह जी अक्रूर बडे लख ऊ कर कीनो ॥
ता ते न मो घनि स्याम लखै इह भाति कहियो हरि जू हसि दीनो ॥१००५॥
सो सुनि बीर प्रसंन भयो मुसलीधर स्याम जू कंठि लगाए ॥
सोक जिते मन भीतर थे हरि को तन भेटि सभै बिसराए ॥
छोट भतीज लखे करि कै करि कै जग के करता नही पाए ॥
या बिधि भी तिह ठउर कथा तिह के कबि स्यामहि मंगल गाए ॥१००६॥

◀ इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे अक्रूर ग्रिह जैबो संपूरनं ॥

अथ अक्रूर को फुफी पास भेजन कथनं ॥

सवैया ॥
स्री जदुबीर कहियो हसि कै बरबीर गजापुर मै चल जइयै ॥
मो पित की भगनी सुत है तिन को अब जाइ कै सोधहि लइयै ॥
अंध तहा न्रिप है मन अंध द्रजोधन भयो बसि ता को लखईयै ॥
पंडु के पुत्रन को तिह ठउर दईयत है सुख कै दुख दईयै ॥१००७॥
यौ सुन कै तिह की बतीया करि कै अक्रूर प्रनाम सिधारियो ॥
पंथ की बात गनउ कहि लउ पग बीच गजापुर के तिनि धारियो ॥
प्रात भए न्रिप बीच सभा कबि स्याम कहै इह भाति उचारियो ॥
भूप कही कहु मो बिरथा जदुबीरहि जा बिधि कंस पछारियो ॥१००८॥
बतीया सुनि उतर देत भयो रिपु सो सभ जा बिधि स्याम लरियो ॥
गज मारि प्रहार कै मलन को दल फार कै कंस सो जाइ अरियो ॥
तब कंस निकार क्रिपान करै अरु ढाल सम्रहार के जुधु करियो ॥
तब ही हरि जू गहि केसन ते पटकिओ धरनी पर मारि डरियो ॥१००९॥
भीखम द्रोण क्रिपारु क्रिपीसुत और दुसासन बीर निहारियो ॥
सूरज को सुत भूरिस्रवा जिन पारथ भ्रात सो बैर उतारियो ॥
राज दुरजोधन मातल सो इह पेखत ही इह भाति उचारियो ॥
स्याम कहा बसुदेव कहा कहि अंगि मिले मन को दुख टारियो ॥१०१०॥
रंचक बैठि सभा न्रिप की उठ कै जदुबीर फुफी पहि आयो ॥

कुंती कउ देखत ही कबि स्याम कहै तिन पाइन सीस झुकायो ॥
पूछत भी कुसलै जदुबीर है जा जसु बीच सभै धरि छायो ॥
नीके है स्याम सनै बसुदेव सु देवकी नीकी सुनी सुखु पायो ॥१०११॥
इतने महि बिदुर आइ गयो सोऊ पारथ माइ कै पाइन लागियो ॥
पूछत भयो जदुबीर सुखी अक्रूर कउ ता रस मो अनुरागियो ॥
अउर गई सुधि भूल सभै कबि स्याम इही रस भीतर पागियो ॥
वाह कहियो सभ ही है सुखी सुन कै बतीया सुख भयो दुख भागियो ॥१०१२॥
कुंती बाच ॥
सवैया ॥
केल करै मथुरा मै सोऊ मन ते कहियो हउ ब्रिजनाथि बिसारी ॥
दुखित भई इन लोगन ते अति ही कहि कै घनि स्याम पुकारी ॥
नाथ मरियो सुत बाल रहे तिह ते अक्रूर भयो दुखु भारी ॥
ता ते हउ पूछत हौं तुम को कबहूं हरि जी सुधि लेत हमारी ॥१०१३॥
दुखित ह्वै अक्रूर के संगि कही बतीया न्रिप अंध रिसै से ॥
देत है दुखु घनो हम कउ कहिओ सुनि मीत स्याम सो ऐसे ॥
पारथ भ्रात रुचे उन को नहि वाहि कहियो कहु सो बिधि कैसे ॥
यौ सुनि उतर देत भई सोऊ आंख के बीच परे त्रिण जैसे ॥१०१४॥
कहि यौ बिनती हमरी हरि सो अति सोक समुंद्र मै बूडि गई हउ ॥
जीवत हो कबि स्याम कहै तुहि आइस पाइ कै नामु कई हउ ॥
मारन मो सुत कौ न्रिप के सुत कोटि उपावन सो कढई हउ ॥
स्याम सो इउ कहीयो बतीया तुमरे बिनु नाथ अनाथ भई हउ ॥१०१५॥
यौ कहि कै तिह सो बतीया अति ही दुख स्वास उसास सु लीनो ॥
जो दुख मोरे रिदे महि थो सोऊ मै तुम पै सभ ही कहि दीनो ॥
सो सुनीऐ हमरी बिरथा कहीयो दुख की जदुबीर हठी नो ॥
हे ब्रिजनाथ अनाथन नाथ सहाइ करो कहि रोदन कीनो ॥१०१६॥
अक्रूर बाच ॥
सवैया ॥
देखि दुखातुर पारथ मात को यौं कहियो त्वै सुत ही न्रिप ह्वै है ॥
स्याम की प्रीति घनी तुम सों तिह ते तुम को अति ही सुख दै है ॥
तेरी ही ओरि ह्वै है सुभ लछन तुइ सुत सत्रन को दुख दै है ॥
राज सभै उह ही लहि है हरि सत्रन को जमलोकि पठै है ॥१०१७॥
यौ सुन कै बतीया तिह की मन मै अक्रूरहि मंत्र बिचारियो ॥
कै कै प्रनाम चलियो तब ही न्रिपु त्वै सुत हो इह भाति उचारियो ॥
का संगि लोगन को हित है इह चिंत करी पुर मै पग धारियो ॥
देखिओ कि प्रीति इनी संग है तिह ते सभ सोक बिदा करि डारियो ॥१०१८॥
अक्रूर बाच ध्रितरासटर सो ॥
सवैया ॥
पुर देखि सभा न्रिप बीच गयो संग जा न्रिप कै इह भाति उचारियो ॥
राजन मोह ते नीति सुनो कहु वाह कहियो इन या बिधि सारियो ॥
प्रीति तुमै सुत आपन सो तुहि पंडु के पुत्रन सो हित टारियो ॥
जानत है ध्रितरासटर तै सभ आपन राज को पैड बिगारियो ॥१०१९॥
जैसे द्रुजोधन पूत ह्वै त्वै इन की सम पुत्रन पंडु लखईऐ ॥
ता ते करो बिनती तुम सों इन ते कछु अंतर राज न कईयै ॥
राखु खुसी इन को उन को जिह ते तुमरो जग मै जसु गईयै ॥
या बिधि सो अक्रूर कहियो न्रिप सो जिह ते अति ही सुख पईयै ॥१०२०॥
यौ सुनि उतर देत भयो न्रिप पै हरि कै संगि दूतह केरे ॥
जेतक बात कही हम सों नही आवत एक कहियो मन मेरे ॥
यौं कहि पंडु के पुत्रन को पिखु मारत है अब साझ सवेरे ॥
आइ है जो जीय सो कर है कछू बचना नहि मानत तेरे ॥१०२१॥
दूत कहियो न्रिप के संग यौ हमरो जु कहियो तुम रंच न मानो ॥

तउ कुपि है जदुबीर मनै तुम को मरि है तिह ते हित ठानो ॥
स्याम के भउह मरोरनि सो हम जानत है तुहि राज बहानो ॥
जो जीय मै जु हुती सु कही तुमरे जीय की सु कहियो तुम जानो ॥१०२२॥
यौ कहि कै बतीया न्रिप सो तजि कै इह ठउर तहा को गयो है ॥
कान्रह जहा बलभद्र बली सभ जादव बंस तहा सु अयो है ॥
स्याम को चंद निहारत ही मुख ता पग पै सिर को झुकियो है ॥
जो बिरथा उह ठउर भई निकटै हरि के कहि भेद दयो है ॥१०२३॥
तुम सो इम पारथ मात कहियो हरि दीनन की बिनती सुनि लै ॥
अति ही दुख पयो हम को इह ठउर बिना तुमरे न सहाइक कुऐ ॥
गज को जिम संकट सीघ्र कटियो तिम मो दुख को कटीऐ हरि ऐ ॥
तिह ते सुनि लै सु कहियो हमरो कबि स्याम कहै हित सो चित दै ॥१०२४॥

◀ *इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे अक्रूर फुफी कुंती पास भेजा समापतम सतु सुभम सत ॥*

अथ उग्रसैन को राज दीबो कथनं ॥

दोहरा ॥

स्री मन मोहन जगत गुर नंद नंदन ब्रिज मूरि ॥
गोपी जन बलभ सदा प्रेम खान भरपूरि ॥१०२५॥

छपै छंद ॥

प्रिथम पूतना हनी बहुरि सकटासुर खंडियो ॥
त्रिणावरत लै उडियो ताहि नभि माहि बिहंडियो ॥
काली दीओ निकारि चोच गहि चीरि बकासुर ॥
नाग रूप मग रोकि रहियो तब हतिओ अघासुर ॥
केसी सु बछ धेनुक हन्यो रंग भूमि गज डारियो ॥
चंडूर मुसट के प्रान हरि कंस केस गहि मारियो ॥१०२६॥
सोरठा ॥
अमर लोक ते फूल बरखे नंद किसोर पै ॥
मिटियो सकल ब्रिज सूल कमल नैन के हेत ते ॥१०२७॥

दोहरा ॥

दुसट अरिसट निवार कै लीनो सकल समाज ॥
मथुरा मंडल को दयो उग्रसैन को राज ॥१०२८॥
इति स्री दसम सिकंधे बचित्र नाटके क्रिसनावतारे राजा उग्रसैन कउ मथरा को राज दीबो ॥

अथ जुध प्रबंध ॥

जरासंधि जुध कथनं ॥
सवैया ॥
इत राज दयो न्रिप कउ जब ही उत कंस बधू पित पास गई ॥
अति दीन सु छीन मलीन महा मन के दुख सो सोई रोत भई ॥
पति भईयन के बधबे की ब्रिथा जु हुती मन मै सोई भाख दई ॥
सुनि कै मुख ते तिह संधि जरा अति कोप कै आख सरोज तई ॥१०२९॥
जरासंधिओ बाच ॥

दोहरा ॥

हरि हलधरहि संघार हो दुहिता प्रति कहि बैन ॥
राजधानी ते निसरियो मंत्रि बुलाए सैन ॥१०३०॥

चौपई ॥

देस देस परधान पठाए ॥
नरपति सब देसन ते ल्याए ॥
आइ न्रिपति को कीन जुहारू ॥
दयो बहुतु धनु तिन उपहारू ॥१०३१॥
जरासंधि बहु सुभट बुलाए ॥
भाति भाति के ससत्र बंधाए ॥
गज बाजन पर पाखर डारी ॥
सिर पर कंचन सिरी सवारी ॥१०३२॥
पाइक रथ बहुते जुरि आए ॥
भूपति आगे सीस निवाए ॥
अपनी अपनी मिसल सभ गए ॥
पाति जोर करि ठाढे भए ॥१०३३॥
सोरठा ॥
यहि सैना चतुरंग जरासंधि न्रिप की बनी ॥
साजियो कवच निखंग धनुख बानु लै रथि चढियो ॥१०३४॥
सवैया ॥
जोरि चमूं सब मंत्र लै तब यौ रन साज समाज बनायो ॥
तेईस छूहन लै दल संगि बजाइ कै बंब तहा कहु धायो ॥
बीर बडे सम रावन के तिन कउ संग लै मरिबे कहु आयो ॥
मानहु काल प्रलै दिन बारिध फैल परियो जलु यौ दलु छायो ॥१०३५॥
नग मानहु नाग बडे तिह मै मछुरी पुनि पैदल की बल जेती ॥
चक्र मनो रथ चक्र बने उपजी कवि कै मन मै कही तेती ॥
है भए बोचन तुलि मनो लहरै बहरै बरछी दुति सेती ॥
सिंधु किधौ दल संधि जरा रहिगी मथुरा जा तिह मध बरेती ॥१०३६॥
जो बल बंड बडे दल मै तिह अग्र कथा महि नाम कहै हउ ॥
जो संगि स्याम लरै रिस कै तिन के जस को मुख ते उचरै हउ ॥
जे बलिभद्र के संगि भिरे तिन कउ कथ कै प्रभ लोक रिझै हउ ॥
त्याग सभै ग्रिह लालच को हरि के हरि के हरि के गुन गै हउ ॥१०३७॥

दोहरा ॥

जदुबीरन सब हूं सुनी दूत कही जब आइ ॥
मिलि सब हूं न्रिप के सदन मंत्र बिचारियो जाइ ॥१०३८॥
सवैया ॥
तेईस छूहन लै दल संगि चढियो हम पै अति ही भरि रोहै ॥
जाइ लरै अरि के समुहे इह लाइक या पुर मै अब को है ॥
जो भजि है डरु मानि घनो रिस कै सब को तब मारत सो है ॥
ता ते निसंक भिरो इन सो जित है तु भलो म्रित ए जसु हो है ॥१०३९॥
तउ जदुबीर कहियो उठि कै रिसि बीच सभा अपुने बल सो ॥
अब को बलवंड बडो हम मै चलि आगे ही जाइ लरै दल सो ॥
अपनो बल धारि संघार कै दानव दूर करै सभ भू तल सो ॥
बहु भूत पिसाचन काकनि डाकनि तोख करै पल मै पल सो ॥१०४०॥
जब या बिधि सो जदुबीर कहियो किनहूं मन मै नही धीर धरियो ॥
हरि देखि तबै मुखि बाइ रहे सभ हूं भजबे कहु चित करियो ॥
जोऊ मान हुतो मनि छत्रिन के सोऊ ओरनि की सम तुल गरियो ॥
कोऊ जाइ न सामुहै सत्रन के न्रिप ने मुख ते बिधि या उचरियो ॥१०४१॥

किनहूं नहि धीरजु बाधि सकियो लरबे ते डरे सभ को मनु भाजियो ॥
भाजन की सब हूं बिध की किनहूं नही कोपि सरासनु साजियो ॥
यौ हरि जू पुनि बोलि उठिओ गज को बधि कै जिम केहरि गाजियो ॥
अउर भली उपमा उपजी धुनि को सुन कै घन सावन लाजियो ॥१०४२॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
राज न चिंत करो मन मै हमहूं दोऊ भ्रात सु जाइ लरैगे ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि कै रन भीतर जुध करैगे ॥
जो हम ऊपरि कोप कै आइ है ताहि के असत्र सिउ प्रान हरैगे ॥
पै उन को मरि है डर है नही आहव ते पग दुइ न टरैगे ॥१०४३॥
इउ कहि कै यौ दोऊ ठाढ भए चल कै निजु मात पिता पहि आए ॥
आवत ही दुहूं हाथन जोरि कै पाइन ऊपर माथ लुडाए ॥
मोहु बढियो बसुदेव अउ देवकी लै अपुने सुत कंठि लगाए ॥
जीतहुगे तुम दैतन सिउ भजि है अरि ज्यो घन बात उडाए ॥१०४४॥
मात पिता कउ प्रनाम दोऊ करि कै तजि धाम सु बाहरि आए ॥
आवत ही सभ आयुध लै पुर बीर जिते सभ ही सु बुलाए ॥
दान घने दिज कउ दए स्याम दुहूं मिलि आनंद चित बढाए ॥
आसिख देत भए दिज इउ ग्रिह आइ हो जीति घने अरि घाए ॥१०४५॥

दोहरा ॥

देखि चमूं सभ जादवी हरि जू अपुने साथ ॥
घन सुर सिउ संग सारथी बोलियो स्री ब्रिजनाथ ॥१०४६॥
कान्रह जू बाच दारुक सो ॥
सवैया ॥
हमरो रथ दारुक तै करि साज भली बिधि सिउ अब ता रन कउ ॥
असि ता महि चक्र गदा धरीयो रिपु की धुजनी सु बिदारन कउ ॥
सब जादव लै अपने संग हउ सु पधारत दैत संघारन कउ ॥
किह हेत चलियो सुन लै हम पै अपुने न्रिप के दुख टारन कउ ॥१०४७॥

दोहरा ॥

यौ कहि कै गोबिंद तबि कट सिउ कसियो निखंग ॥
हल मूसल हलधरि गहियो कछु जादव लै संगि ॥१०४८॥
सवैया ॥
दैतन मारन हेत चले अपुने संग लै सभ ही भट दानी ॥
स्री बलिभद्रहि संग लए जिह के बल की गति स्रीपति जानी ॥
को सम भीखम है इन के अरु को भ्रिगु नंदनु रावनु बानी ॥
सत्रन के बध कारन स्याम चले मुसली धरि जू अभिमानी ॥१०४९॥
बाधि क्रिपान सरासन लै चड़ि सयंदन पै जदुबीर सिधारे ॥
भाखत बैन सुधा मुख ते सु कहा है सभै सुत बंध हमारे ॥
स्री प्रभ पाइन के सब साथ सु यौ कहि कै इक बीर पुकारे ॥
धाइ परे अरि के दल मै बलि सिउ बलिदेव हलायुध धारे ॥१०५०॥
देखत ही अरि की पतना हरि जू मन मो अति कोप भरे ॥
सु धवाइ तहा रथु जाइ परे धुजनी पत ते नही नैकु डरे ॥
सित बानन सो गज बाज हने जोऊ साज जराइन साथ जरे ॥
मनो इंद्र के बज्र लगे टुट कै धरनी गिर स्रिंग सुमेर परे ॥१०५१॥
स्री जदुबीर सरासन ते बहु तीर छुटे छुट कै भट घाए ॥
पैदल मारि रथी बिरथी करि सत्र घने जमलोकि पठाए ॥
भाजि अनेक गए रन ते जोऊ लाज भरे हरि पै पुनि आए ॥
ते ब्रिजनाथ के हाथ लगे ग्रिह कउ फिरि जीवत जान न पाए ॥१०५२॥

कोप भरे रन मै भट यौ चहूं ओरन ते ललकार परे ॥
करि चउप भिरे अपने मन मै नंद नंदन ते न रती कु डरे ॥
तब ही ब्रिजनाथ सरासन लै छिन मै उन के अभिमान हरे ॥
जोऊ आवत भे धन बान धरे हरि जू सिगरे बिनु प्राण करे ॥१०५३॥

कबितु ॥

स्रउनत तरंगनी उठत कोपि बल बीर मारि मारि तीर रिपु खंड कीए रन मै ॥
बाज गज मारे रथी ब्रिथी करि डारे केते पैदल बिदारे सिंघ जैसे म्रिग बन मै ॥
जैसे सिव कोप कै जगत जीव मारि प्रलै तैसे हरि अरि यौ संघारे आई मन मै ॥
एक मारि डारे एक घाइ छिति पारे एक त्रसे एक हारे जा के ताकत न तन मै ॥१०५४॥
सवैया ॥
बहुरो घनि स्याम घन सुर कै बरखियो सर बूंदन जिउ मगवा ॥
चतुरंग चमूं हनि स्रउन बहियो सु भइओ रन ईगर के रंगवा ॥
कहूं मुंड झरे रथ पुंज ढरे गज सुंड परे कहूं है तंगवा ॥
जदुबीर जु कोप कै तीर हने कहूं बीर गिरे सु कहूं अंगवा ॥१०५५॥
बहु जूझि परे छित पै भट यौ अरि कै बर कै हरि सिउ लरि कै ॥
धनु बान क्रिपान गदा गहि पानि गिरे रन बीच इती करि कै ॥
तिह मास गिरास मवास उदास हुइ गीध सु मोन रही धरि कै ॥
सु मनो बुटीआ बर बीरन की न पची उर मै बरि कै फरिकै ॥१०५६॥
असि कोपि हलायुध पानि लीयो सु धसियो दल मै अति रोस भरियो ॥
बहु बीर हने रन भूमि बिखै प्रतनापति ते न रती कु डरियो ॥
गज बाज रथी अरु पति चमूं हनि कै उन बीरन तेज हरियो ॥
जिम तात धरा सुरपति लरियो हरि भ्रात बली इम जुध करियो ॥१०५७॥
जुध जुरे जदुराइ सखा किधो क्रोध भरे दुरजोधन सोहै ॥
भीर परे रनि रावन सो सुत रावन को तिह की सम को है ॥
भीखम सो मरबे कहु है लरिबे कहु राम बली बरि जो है ॥
अंगद है कि हनू जमु है कि भरियो बलिभद्र भयानक रोहै ॥१०५८॥
द्रिड़ कै बलि कोपि हलायुध लै अरि के दल भीतर धाइ गयो ॥
गज बाज रथी बिरथी करि कै बहु पैदल को दलु कोपि छयो ॥
कलि नारद भूत पिसाच घने सिव रीझ रहियो रन देखि नयो ॥
अरि यौ सटके म्रिग के गन ज्यो मुसलीधरि मानहु सिंघ भयो ॥१०५९॥
इक ओरि हलायुध जुध करै इक ओरि गोबिंदह खग संभारियो ॥
बाज रथी गजपति हने अति रोस भरे दल को ललकारियो ॥
बान कमान गदा गहि स्री हरि सैथन सिउ अरि पुंज बिडारियो ॥
मारुत ह्वै घन स्याम किधो उमडियो दल पावस मेघ निवारियो ॥१०६०॥
स्री नंद लाल सदा रिपु घाल कराल बिसाल सबै धनु लीनो ॥
इउ सर जाल चले तिह काल तबै अरि साल रिसै इह कीनो ॥
घाइन संगि गिरी चतुरंग चमूं सभ को तन स्रउनत भीनो ॥
मानहु पंद्रसवो बिध ने सु रचियो रंग आरुन लोक नवीनो ॥१०६१॥
ब्रिजभूखन दूखन दैतन के रिपु साथ रिसै अति मान भरियो ॥
सु धवाइ तहा रथ जाइ परियो लखि दानव सैन न नैकु डरियो ॥
धनु बान संभारि अयोधन मै हरि केहरि की बिधि जिउ बिचरियो ॥
भुज दंड अदंडन खंडन कै रिस कै दल खंडनि खंड करियो ॥१०६२॥
मधुसूदन बीच अयोधन के बहुरो कर मै धनु बान लयो ॥
सु निसंक तबै रन बीच परियो अरि को बर कै हनि सैन दयो ॥
धनु सो जिम तूलि धुनै धुनीया दल त्रयो सित बानन सो धुनियो ॥
बहु स्रउन प्रवाह बहियो रन मै तिह ठा मनो आठवो सिंधु भयो ॥१०६३॥
इत ते हरि की उमडी प्रतना उत ते उमडियो न्रिप लै बल संगा ॥
बान कमान क्रिपान लै पानि भिरे कटि गे भटि अंग प्रतंगा ॥
पति गिरे गजि बाज कहूं कहूं बीर गिरे तिन के कहूं अंगा ॥

ऐसे गए मिलि आपसि मै दल जैसे मिले जमुना अरु गंगा ॥१०६४॥
स्वामि के काज कउ लाज भरे दुहूं ओरन ते भट यौ उमगे है ॥
जुधु करियो रन कोपि दुहूं रस रुद्र ही के पुनि संग पगे है ॥
जूझि परे समुहे लरि कै रन की छित ते नहीं पैग भगे है ॥
उजल गात मै साग लगी मनो चंदन रूख मै नाग लगे है ॥१०६५॥
जुधु करियो रिस आपसि मै दुहूं ओरन ते नहीं कोऊ टरे ॥
बरछी गहि बान कमान गदा असि लै कर मै इह भाति टरे ॥
कोऊ जूझि गिरे कोऊ रीझि भिरे छिति देखि डरे कोऊ धाइ परे ॥
मनि यौ उपजी उपमा रन दीप के ऊपर आइ पतंग जरे ॥१०६६॥
प्रिथमे संगि बान कमान भिरियो बरछी बर लै पुनि भ्रात मुरारी ॥
फेरि लरियो असि लै कर मै धस कै रिपु की बहु सैन संघारी ॥
फेरि गदा गहि कै सु हते बहुरो जु हुते गहि पानि कटारी ॥
ऐचत यौ हल सो दल को जिम खैचत दुइ करि झींवर जारी ॥१०६७॥
जो भट सामुहे आइ अरियो बर कै हरि जू सोऊ मारि गिरायो ॥
लाज भरे जोऊ जोरि भिरे तिन ते कोऊ जीवत जान न पायो ॥
पैठि तबै प्रतना अरि की मधि स्याम घनो पुनि जुधु मचायो ॥
स्री बलबीर सु धीर गहियो रिपु को सब ही दलु मारि भगायो ॥१०६८॥

दोहरा ॥

भगी चमूं चतुरंगनी न्रिपति निहारी नैन ॥
निकटि बिकटि भट जो हुते तिन प्रति बोलियो बैन ॥१०६९॥
न्रिप जरासंधि बाच सैना प्रति ॥
सवैया ॥
जुध करै घनि स्याम जहा तुम हूं दलु लै उन ओरि सिधारो ॥
बान कमान क्रिपान गदा करि लै जदुबीर को देह प्रहारो ॥
जाइ न जीवत जादव को तिन को रन भूमि मै जाइ संघारो ॥
यौ जब बैन कहै न्रिप सैन चली चतुरंग जहा रन भारो ॥१०७०॥
आइस पावत ही न्रिप को घन जिउ उमडे भट ओघ घटा घट ॥
बानन बूंदन जिउ बरखे चपला असि की धुनि होत सटा सट ॥
भूमि परे इक सास भरे इक जूझि मरे रनि अंग कटा कट ॥
घाइल एक परे रन मै मुख मार ही मार पुकारि रटा रट ॥१०७१॥
जदुबीर सरासन लै करि मै रिपु बीर जिते रन माझि संघारे ॥
मति करी बर बाज हने रथ काटि रथी बिरथी करि डारे ॥
घाइल देख कै काइर जे डरु मानि रने छिति त्यागि सिधारे ॥
स्री हरि पुंन के अग्रज मानहु पापन के बहु पुंज पधारे ॥१०७२॥
सीस कटे कितने रन मै मुख ते तेऊ मार ही मार पुकारै ॥
दउरत बीच कबंध फिरै जह स्याम लरै तिह ओरि पधारै ॥
जो भट आइ भिरै इन सो तिन कउ हरि जान कै घाइ प्रहारै ॥
जो गिरि भूमि परै मर कै कर ते करवार न भू पर डारै ॥१०७३॥

कबितु ॥

कोप अति भरे रन भूमि ते न टरे दोऊ रीझि रीझि लरे दल दुंदभी बजाइ कै ॥
देव देखै खरे गन जछ जसु ररे नभ ते पुहप ढरे मेघ बूंदन जिउ आइ कै ॥
केते जूझि मरे केते अपछरन बरे केते गीधनन चरे केते गिरे घाइ खाइ कै ॥
केहरि जिउ अरे केते खेत देखि डरे केते लाज भारि भरे दउरि परे अरिराइ कै ॥१०७४॥
सवैया ॥
भूमि गिरे भट घाइल हुइ उठ कै फिरि जुध के काज पधारे ॥
स्याम कहा दुर कै जु रहे अति कोप भरे इह भाति पुकारे ॥
यौ उन कै मुख ते सुनि बैन भयो हरि सामुहि खग संभारे ॥

दउर कै सीस कटे न हटे रिस कै बलिबीर की ओरि सिधारे ॥१०७५ ॥
मार ही मार पुकार तबै रन मै असि लै ललकार परे ॥
हरि राम को घेरि लयो चहुं ओर तै मलहि की पिर सोभ धरे ॥
धनु बान जबै करि स्याम लयो लखि कातुर खेत हूं ते बिडरे ॥
रंग भूमि को मानो उझार भयो चले कउतुक देखनहार घरे ॥१०७६ ॥
जे भट लै असि हाथन मै अति कोप भरे हरि ऊपर धावै ॥
कउतक सो दिख कै सिव के गन आनंद सो मिलि मंगल गावै ॥
कोऊ कहै हरि जू जित है कोऊ इउ कहि ए जित है बहसावै ॥
रारि करै तब लउ जब लउ उन कउ हरि मारि न भूमि गिरावै ॥१०७७ ॥

कबितु ॥

बडे ई बनैत बीर सबै पखरैत गज दल सो अरैत धाए तुरंगन नचाइ कै ॥
जुध मै अडोल स्वाम कारजी अमोल अति गोल ते निकसि लरे दुंदभि बजाइ कै ॥
सैथन संभार कै निकार कै क्रिपान मार मार ही उचारि ऐसे परे रनि आइ कै ॥
हरि जू सो लरे ते वै ठउर ते न टरे गिर भूमि हूं मै परे उठि अरे घाइ खाइ कै ॥१०७८ ॥
सवैया ॥
कोप भरे अरराइ परे न डरे हरि सिउ हथियार करे है ॥
घाइ भरे बहु स्रउन झरे असि पानि धरे बल कै जु अरे है ॥
मूसल लै बलदेव तबै सबै चावर जिउ रन माहि छरे है ॥
फेरि प्रहार कीयो हल सो मरि भूमि गिरे नहीं सास भरे है ॥१०७९ ॥
स्री जदुबीर के बीर जिते असि हाथन लै अरि ऊपरि धाए ॥
जुध करियो कति कोपु दुहूं दिसि जंबुक जोगिन ग्रिझ अघाए ॥
बीर गिरे दुहूं ओरन के गहि फेट कटारिन सिउ लरि घाए ॥
कउतक देख कै देव कहै धंन वे जननी जिन ए सुत जाए ॥१०८० ॥
अउर जिते बरबीर हुते अति रोस भरे रन भूमहि आए ॥
जादव सैन चली इत ते तिन हूं मिल कै अति जुधु मचाए ॥
बान कमान क्रिपान गदा बरछे बहु आपस बीच चलाए ॥
भेद चमूं जदु बीरन की सभ ही जदुराइ के ऊपर धाए ॥१०८१ ॥
चक्र त्रिसूल गदा गहि बीर करं धर कै असि अउर कटारी ॥
मार ही मार पुकारि परे लरे घाइ करे न टरे बल भारी ॥
स्याम बिदार दई धुजनी तिह की उपमा इह भाति बिचारी ॥
मानहु खेत सरोवर मै धसि कै गजि बारज ब्रयूह बिडारी ॥१०८२ ॥
स्री जदुनाथ के बानन अग्र डरै अरि इउ किहूं धीर धरियो ना ॥
बीर सबै हट के ठटके भटके रन भीतर जुध करियो ना ॥
मूसल अउ हल पानि लयो बलि पेखि भजे दल कोऊ अरियो ना ॥
जिउ म्रिग के गन छाडि चलै बन डीठ परियो म्रिगराज को छउना ॥१०८३ ॥
भागि तबै सभ ही रन ते गिरते परते न्रिप तीर पुकारे ॥
तेरे ही जीवत हे प्रभ जू सिगरे रिस कै बल स्याम संघारे ॥
मारे अनेक न एक बचियो बहु बीर गिरे रन भूमि मझारे ॥
ता ते सुनो बिनती हमरी उन जीत भई तुमरे दल हारे ॥१०८४ ॥
कोप करियो तब संधि जरा अरि मारन कउ बहु बीर बुलाए ॥
आइस पावत ही न्रिप कै मिलि कै हरि के बधबे कहु धाए ॥
बान कमान गदा गहि कै उमडे घन जिउ घन स्याम पै आए ॥
आइ परे हरि ऊपर सो मिलि कै बग मेलि तुरंग उठाए ॥१०८५ ॥
रोस भरे मिलि आनि परे हरि कउ ललकार के जुध मचायो ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि यौ तिन सार सो सार बजायो ॥
घाइल आप भए भट सो अरु ससत्रन सो हरि को तनु घायो ॥
दउर परे हल मूसल लै बलि बैरन को दलु मारि गिरायो ॥१०८६ ॥

दोहरा ॥

जूझ परै जे न्रिप बली हरि सिउ जुधु मचाइ ॥
तिन बीरन के नाम सब सो कबि कहत सुनाइ ॥१०८७॥
सवैया ॥
स्री नर सिंघ बली गज सिंघ चलियो धन सिंघ सरासन लै ॥
हरी सिंघ बडो रन सिंघ नरेस तहा को चलियो दिज को धन दै ॥
जदुबीर सो जाइ कै जुध करियो बहुबीर चमूं सु घनी हनि कै ॥
हरि ऊपरि बान अनेक हने इह भाति कहियो हमरी रनि जै ॥१०८८॥
होइ इकत्र इते न्रिप यौ हरि ऊपर बान चलावन लागे ॥
कोप कै जुध करियो तिन हूं ब्रिजनाइक ते पग दुइ करि आगे ॥
जीव की आस कउ त्यागि तबै सब ही रस रुद्र बिखै अनुरागे ॥
चीर धरे सित आए हुते छिन बीच भए सभ आरुन बागे ॥१०८९॥
जुध करियो तिन बीरन स्याम सो पारथ ज्यो रिस कै करनै से ॥
कोप भरियो बहु सैन हनी बलिभद्र अरियो रन भू मधि ऐसे ॥
बीर फिरै करि सागनि लै तिह घेरि लयो बलदेवहि कैसे ॥
जोरि सो साकरि तोरि घिरियो मद मत करी गढदारन जैसे ॥१०९०॥
रनभूमि मै जुध भयो अति ही ततकाल मरे रिपु आए है जोऊ ॥
जुध करियो घनि स्याम घनो उत कोप भरे मन मै भट ओऊ ॥
स्री नरसिंघ जू बान हन्यो हरि को जिह की सम अउर न कोऊ ॥
यौ उपमा उपजी जीय मै जिव सोवत सिंघ जगावत कोऊ ॥१०९१॥
स्याम के बान लगियो उर मै गड कै सोऊ पंखन लउ सु गयो है ॥
स्रउन के संगि भरियो सर अंग बिलोकि तबै हरि कोप भयो है ॥
ता छबि को जसु उच महा कबि ने कहि कै इह भात दयो है ॥
मानहु तछक को लरिका खगराज लखियो गहि नील लयो है ॥१०९२॥
स्री ब्रिजनाथ सरासन लै रिस कै सरु राजन बीच कसा ॥
गज सिंघ को बान अचान हन्यो गिर भूमि परियो जन साप डसा ॥
हरि सिंघ जु ठाढो हुतो तिह पै सोऊ भाज गयो तिह पेखि दसा ॥
मनो सिंघ को रूप निहारत ही न टिकियो जु चलियो सटकाइ ससा ॥१०९३॥
हरि सिंघ जबै तजि खेत चलियो रन सिंघ उठियो पुनि कोप भरियो ॥
धनु बान संभार कै पानि लयो बहुरो बलि को रनि जुधु करियो ॥
उन हूं पुनि बीच अयोधन के हरि को ललकार कै इउ उचरियो ॥
अब जात कहा थिरु होहु घरी हमरे असि काल के हाथ परियो ॥१०९४॥
इह भाति कहियो रन सिंघ जबै हरि सिंघ तबै सुनि कै मुसकान्रयो ॥
आइ अरियो हरि सिउ धनु लै रन की छित ते नही पैग परान्रयो ॥
कोप कै बात कही जदुबीर सो मै इह लछन ते पहचान्यो ॥
आइ कै जुध कीओ हम सो सु भली बिधि काल के हाथ बिकान्रयो ॥१०९५॥
यौ सुन कै बतीआ तिह की हरि जू धनु लै कर मै मुसक्रयो है ॥
दीरघु गात लखियो तब ही सर छाडि दयो अर सीस तक्रयो है ॥
बान लगियो हरि सिंघ तबै सिर टूटि परियो धर ठाढो रहियो है ॥
मेरु के स्रिंगहु ते उतरियो सु मनो रवि असत को प्राति भयो है ॥१०९६॥
मार लयो हरि सिंघ जबै रन सिंघ तबै हरि ऊपरि धायो ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि कै कर मै अति जुध मचायो ॥
कौच सजे निज अंग महा लखि कै कबि ने इह बात सुनायो ॥
मानहु मत करी बन मै रिस कै म्रिगराज के ऊपर आयो ॥१०९७॥
आइ के स्याम सो जुधु करियो रन की छिति ते पगु एक न भागियो ॥
फेरि गदा गहि कै कर मै ब्रिजभूखन को तनु ताड़न लागियो ॥
सो मधसूदन जू लखियो रस रुद्र बिखै अति इह पागियो ॥
स्री हरि चक्र लयो कर मै भूअ बक्र करी रिस सो अनुरागियो ॥१०९८॥
लै बरछी रन सिंघ तबै जदुबीर के मारन काज चलाई ॥
जाइ लगी हरि को अनचेत दई भुज फोर कै पारि दिखाई ॥
लाग रही प्रभ के तन सिउ उपमा तिह की कबि भाखि सुनाई ॥

मानहु ग्रीखम की रुति भीतर नागनि चंदन सिउ लपटाई ॥१०९९॥
स्याम उखार कै सो बरछी भुज ते अरि मारन हेत चलाई ॥
बानन के घन बीच चली चपला किधौ हंस की अंस तचाई ॥
जाइ लगी तिह के तन मै उरि फोरि दई उहि ओर दिखाई ॥
कालिका मानहु स्रउन भरी हनि सुंभ निसुंभ को मारन धाई ॥११००॥
रन सिंघ जबै रणि साग हन्यो धन सिंघ तबै करि कोपु सिधारियो ॥
धाइ परियो करि लै बरछा ललकार कै स्री हरि ऊपरि झारियो ॥
आवत सो लखियो घन स्याम निकार कै खग सु दुइ करि डारियो ॥
भूमि दुटूक होइ टूट परियो सु मनो खगराज बडो अहि मारियो ॥११०१॥
घाउ बचाइ कै स्री जदुबीर सरासनु लै अरि ऊपरि धायो ॥
चार महूरत जुध भयो हरि घाइ न हुइ उहि को नही घायो ॥
रोस कै बान हन्यो हरि कउ हरि हूं तिह खैच कै बान लगायो ॥
देख रहियो मुख स्री हरि को हरि हूं मुख देख रहियो मुसकायो ॥११०२॥
स्री जदुबीर को बीर बली असि लै कर मै धन सिंघ पै धायो ॥
आवत ही ललकार परियो गजि मानहु केहरि कउ डरपायो ॥
तउ धन सिंघ सरासनु लै सर सो तिह को सिर भूमि गिरायो ॥
जिउ अहि राज के आनन भीतर आनि परियो म्रिग जान न पायो ॥११०३॥
दूसर स्री जदुबीर के बीर सरासनु लै सर कोप भयो है ॥
धीर बली धन सिंघ की ओर चलावत बान निसंक गयो है ॥
स्री धन सिंघ लीओ असि हाथि कटिओ अरि माथन डार दयो है ॥
काछी निहारि सरोवर ते प्रफुलिओ मानहु बारिज तोर लयो है ॥११०४॥
मारि दु बीरन को धन सिंघ सरासन लै दल कउ तकि धायो ॥
आवत ही गजि बाज हने रथ पैदल काटि घनो रन पायो ॥
खग अलात की भाति फिरिओ खर सान न्रिपाल को छत्र लजायो ॥
अउर भली उपमा तिह की लखि भीखम कउ हरि चक्र भ्रमायो ॥११०५॥
बहुरो धन सिंघ सरासनु लै रिस कै अरि के दल माझि परियो ॥
रथि काटि घने गज बाज हने नही जात गने इह भाति लरियो ॥
जमलोकु सु बीर किते पठए हरि ओर चलियो अति कोप भरियो ॥
मुख मार ही मार पुकारि परियो दलु जादव को सिगरो बिडरियो ॥११०६॥

दोहरा ॥

धन सिंघ सैना जादवी दीनी घनी खपाइ ॥
तब ब्रिजभूखन कोपि भरि बोलियो नैन तचाइ ॥११०७॥
कानु बाच सैना प्रति ॥
सवैया ॥
देखत हो भट ठाढे कहा हम जानत है तुम पउरख हारियो ॥
स्री धन सिंघ के बान छुटे सभ हूं रन मंडल ते पग टारियो ॥
सिंघ के अग्रज जैसे अजा गन ऐसे भजे नहि ससत्र संभारियो ॥
काइर हुइ तिह पेखि डरे नहि आप मरे उन कउ नही मारियो ॥११०८॥
यौ सुनि कै हरि की बतीया भट दातन पीस कै क्रोध भरे ॥
धनु बान संभार कै धाइ परे धन सिंघहुं ते नही नैकु डरे ॥
धन सिंघ सरासनु लै करि मै कटि दैतन के सिर भूमि परे ॥
मनो पउन को पुंज बहियो लग के फुलवारी मै टूट कै फूलि झरै ॥११०९॥

कबितु ॥

कोप भरे आए भट गिरे रनि भूमि कटि जुध के निपट समुहाइ सिंघ धन सो ॥
आयुध लै पान मै निदान को समर जानि अउर दउर परे बीरता बढाइ मन सो ॥
कोप धन सिंघ लै सरासन सु बान तानि जुदे कर डारे सीस तिन ही के तन सो ॥
मानहु बसुंधरा की धीरता निहार इंद्र कीनी निज पूजा अरबिंद पुहपन सो ॥१११०॥

सवैया ॥
स्री धन सिंघ अयोधन मै अति कोप कीयो बहुते भट मारे ॥
अउर जिते बर आवत हे सु हने जनु मारुत मेघ बिडारे ॥
जादव के दल के गज के हलके दल के हलके करि डारे ॥
झूमि गिरे इक यौ धरनी मनो इंद्र के बज्र लगे गिर भारे ॥१११११ ॥
कोप भरे असि पानि धरे धन सिंघ अरे गजराज संघारे ॥
अउर जिते गज पुंज हुते डर मानि भजे अति ही धुजवारे ॥
ता छबि की उपमा कबि स्याम कहै मन मै सु बिचार उचारे ॥
मानहु इंद्र के आगम ते डर भू धर कै धरि पंख पधारे ॥१११२ ॥
जुध कीयो धन सिंघ घनो तिह के कोऊ सामुहि बीर न आयो ॥
सो रनि कोप सिउ आनि परियो नही जान दीयो सोई मारि गिरायो ॥
दासरथी दल सिउ जिमि रावन रोस भरियो अति जुध मचायो ॥
तैसे भिरियो धन सिंघ बली हनि कै चतुरंग चमूं पुनि धायो ॥१११३ ॥
टेरि कहियो धन सिंघ बली रन त्याग सुनो हरि भाजि न जईयै ॥
ता ते संभार के आनि भिरो निज लोकन को बिरथा न कटईयै ॥
हे बलिदेव सरासनु लै हम सो समुहाइ कै जुध करईयै ॥
संगर के सम अउर कछू नही या ते दुहूं जग मै जसु पईयै ॥१११४ ॥
यौ सुनि कै बतीया अरि की तरकी मन मै अति कोप भरियो है ॥
बाल कमान क्रिपान गदा गहि कै जदुबीर हूं धाइ परियो है ॥
जुध के फेरि फिरियो धन सिंघ सरासनु लै नही नैकु डरियो है ॥
बानन की बरखा करि के हरि सिउ लरि कै बलि साथ अरियो है ॥१११५ ॥
इत ते बलिभद्र सु कोप भरियो उत ते धन सिंघ भयो अति तातो ॥
जुध कीयो रिसि घाइन सो सु दुहूंन के अंग भयो रंग रातो ॥
मार ही मार पुकारि परे अरि भूलि गई मन की सुधि सातो ॥
राम कहै इह भाति लरै हरि सो हरि जिउ गज सो गज मातो ॥१११६ ॥
जो बलदेव करै तिह वार बचाइ कै आपनो आपु संभारे ॥
लै कर मो असि दउरि तबै कसि कै बल ऊपर घाइ प्रहारे ॥
बीर पै भीर लखी जदुबीर सु जादव लै रिपु ओर सिधारे ॥
घेरि लयो धन सिंघ तबै निस मै ससि की ढिग जिउ लख तारे ॥१११७ ॥
बेड़ि लयो धन सिंघ जबै गज सिंघ जु ठाढो हुतो सोऊ धायो ॥
स्री बलदेव लखियो तब ही चड़ि सयंदन वाही की ओरि धवायो ॥
आवन सो न दयो हरि लउ अध बीच ही बानन सो बिरमायो ॥
ठाढो रहियो गज सिंघ तहा सु मनो गज के पगि साकर पायो ॥१११८ ॥
धन सिंघ सो स्री हरि जुधु करे कबि राम कहै कहूं जात न मारियो ॥
कोप भरियो मधुसूदन जू कर बीच सु आपने चक्र संभारियो ॥
छाडि दयो रन मै बर कै धन सिंघ को काटि कै सीस उतारियो ॥
यौ तरफियो धर भूमि बिखै मनो मीन सरोवर ते गहि डारियो ॥१११९ ॥
मारि लयो धन सिंघ जबै तब ही लखि जादव संख बजाए ॥
केतक बीर कटे बिकटे हरि सो लरि कै हरि लोकि सिधाए ॥
ठाढो हुतो गज सिंघ जहा यह कउतुक देख महा बिसमाए ॥
तउ लगि भागलि आइ कहियो जो रहे भजि कै तुमरे पहि आए ॥११२० ॥
यौ सुन कै तिन के मुख ते गज सिंघ बली अति कोप भरियो ॥
कबि स्याम निहार कै राम की ओरि धवाइ तहा रथु जाइ परियो ॥
तजि संक निसंक हुइ जुध करियो जदुबीर कहा तिन यौ उचरियो ॥
धनि है धन सिंघ बली हरि के समुहे लरि कै भव सिंध तरियो ॥११२१ ॥
प्रेम सो यौ कहि कै मुख ते परलोक सु लोक रहे सु बिचारियो ॥
तेज प्रचंड बडो बरछा रिस कै करि मै गज सिंघ संभारियो ॥
जाहु कहा बलभद्र अबै कबि स्याम कहै इह भाति उचारियो ॥
सो बर कै कर को तन को जदुबीर के भ्रात के ऊपरि डारियो ॥११२२ ॥
आवत इउ बरछा गहि कै बलदेव सु एक उपाइ करियो है ॥

स्यंदन पै निहुरियो तब ही छत्री तरि हुइ इह भाति अरियो है ॥
फोरि कै पारि भयो फल यौ तिह की उपमा कबि यौ उचरियो है ॥
मानहु कलिंद्र के स्रिंगहु ते निकसियो अहि को फनु कोप भरियो है ॥११२३॥
बल सो बलि खैच लयो बरछा तिह के कर सो तिरछा सु भ्रमायो ॥
यौ चमकियो दमकियो नभ मै चुटीआ उड तेजु मनो दरसायो ॥
स्री बलभद्र अयोधन मै रिस कै गज सिंघ की ओरि चलायो ॥
मानहु काल परीछत कउ जमदंड प्रचंड किधो चमकायो ॥११२४॥
गज सिंघ अनेक उपाइ कीए न बचियो उरि आइ लगियो बरछा बरि ॥
भूप बिलोकत है सिगरे धुनि सीस हहा कहि मीचत है कर ॥
घाउ प्रचंड लगियो तिह को मुरछाइ परियो न तज्यो कर ते सर ॥
स्यंदन पै गज सिंघ गिरियो गिरि ऊपरि जिउ गजराज कलेवर ॥११२५॥
चेत भयो तब ही गज सिंघ संभारि प्रचंड कुवंड चलायो ॥
कान प्रमान लउ खैंच के आनि सु तान कै बान प्रकोप चलायो ॥
एक ते हुइ कै अनेक चले तिह की उपमा कहु भाखि सुनायो ॥
पउन के भछक तछक लछक लै बलि की सरनागति आयो ॥११२६॥
बान न एक लगियो बलि को गज सिंघ तबै इह भाति कहियो है ॥
सेस सुरेस धनेस दिनेस महेस निसेस खगेस गहियो है ॥
जुध बिखै अब लउ सुनि लै सोऊ बीर हन्यो मन मै जु चहियो है ॥
एक अचंभव है मुहि देखत तो तन मै कस जीव रहियो है ॥११२७॥
यौ कहि कै बतीया बलि सो बरछा धुज संजुत खैंचि चलायो ॥
तउ धनु लै करि मै मुसली सोऊ आवत नैनन सो लखि पायो ॥
उग्र पराक्रम कै संग बान अचानक सो कटि भूमि गिरायो ॥
मानहु पंखन को अहिवा खगराज के हाथि परियो रिसि घायो ॥११२८॥
कोप भरियो अति ही गज सिंघ लयो बरछा अरि ओर चलायो ॥
जाइ लगियो मुसलीधर के तनि लागत ता अति ही दुख पायो ॥
पारि प्रचंड भयो फल यौ जसु ता छबि को मन मै इह आयो ॥
मानहु गंग की धार के मधि उतंग हुइ कूरम सीस उचायो ॥११२९॥
लागत साग की स्री बलभद्र सु सयंदन ते गहि खैच कढियो ॥
मुरझाइ कै भूमि परियो न मरियो सुर ब्रिछ गिरियो मनो जोति मढियो ॥
जब चेत भयो भ्रम छूटि गयो उठि ठाढो भयो मनि कोपु बढियो ॥
रथ हेर कै धाइ चड़ियो बर सो गिरि पै मनो कूद कै सिंघ चढियो ॥११३०॥
पुनि आइ भिरियो गज सिंघ सो बीर बली मन मै नहीं नैकु डरियो ॥
धनु बान संभारि क्रिपान गदा रिसि बीच अयोधन जुध करियो ॥
जोऊ आवत भयो सरु सत्रन को संगि बानन के सोऊ काटि डरियो ॥
कबि स्याम कहै बलदेव महा रन की छित ते नही पैग टरियो ॥११३१॥
बहुरो हल मूसल लै कर मै अरि सिउ अर कै अति जुध मचायो ॥
लै बरछा गज सिंघ बली बलि सिउ बलिदेव की ओरि चलायो ॥
आवत सो लखि कै फल को हल कटि कै पुन भूमि गिरायो ॥
सो फल हीन भयो जब ही कस कै बलिभद्र के गाति लगायो ॥११३२॥
खग करं गहि कै गज सिंघ अनंत के ऊपरि कोपि चलायो ॥
तउ मसली करि चरम लीयो धरि यौ अरि कउ बलि घाउ बचायो ॥
ढाल के फूल पै धार बही चिनगार उठी कबि यौ गुन गायो ॥
मानहु पावस की निसि मै बिजुरी दुति तारन को प्रगटायो ॥११३३॥
घाइ हली सहि कै रिपु को गहि कै करवार सु बार करियो है ॥
धार बही अरि कंठि बिखै कटि कै तिह को सिरु भूमि झरियो है ॥
बज्र जरे रथ ते गिरियो तिह को जसु यौ कबि नै उचरियो है ॥
मानहु तारन लोक हूं ते सुर भानु हन्यो सिर भूमि परियो है ॥११३४॥
मारि लयो गज सिंघ जबै तजि कै रन को सभ ही भट भागे ॥
स्रउन भरे लखि लोथ डरे नहि धीर धरे निस के जनु जागे ॥
मारि लए न्रिप पंच भगे तिन यौ कहियो जा अपने प्रभि आगे ॥

यौ सुनि कै दलि धीर छुटियो न्रिप हीयो फटियो रिस मै अनुरागे ॥११३५॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे गज सिंघ बधह धयाइ समापतं ॥

अथ अमित सिंघ सैना सहित बधहि कथनं ॥

दोहरा ॥

अणग सिंघ अउ अचल सी अमित सिंघ न्रिप तीर ॥
अमर सिंघ अर अनघ सी महारथी रनधीर ॥११३६॥
सवैया ॥
देखि तिनै न्रिप संधि जरा हथीआर धरे लखि बीर पचारे ॥
पेखहु आज अयोधन मै न्रिप पंच बली जदुबीर संघारे ॥
ता संगि जाइ भिरो तुम हूं तजि संक निसंक बजाइ नगारे ॥
यौ सुनि कै प्रभ की बतीया अति कोप भरे रन ओरि पधारे ॥११३७॥
आवत ही जदुबीर तिनो रन भूमि बिखै जम रूप निहारियो ॥
पानि गहे धनु बान सोऊ रन बीच तिनो बलिदेव हकारियो ॥
खग कसे कटि मै अंग कौच लीए बरछा अणगेस पुकारियो ॥
आइ भिरो हरि जू हम सिउ अब ठाढो कहा इह भात उचारियो ॥११३८॥
देखि तबै तिन को हरि जू तब ही रन मै पंच बीर हकारे ॥
स्याम सु सैन चलियो इत ते उत तेऊ चले सु बजाइ नगारे ॥
पटसि लोह हथी परसे अगनायुध लै करि कोप प्रहारे ॥
जूझि गिरे इत के उत के भट भूमि गिरे सु मनो मतवारे ॥११३९॥
जुध भयो तिह ठउर बडो चढि कै सभ देव बिवाननि आए ॥
कउतक देखन कउ रन को कबि स्याम कहै मन मोद बढाए ॥
लागत सागन के भट यौ गिर असवन ते धरनी पर आए ॥
सो फिर कै उठि जुध करै तिह के गुन किंन गंध्रब गाए ॥११४०॥

कबितु ॥

केते बीर भाजे केते गाजे पुनि आइ आइ धाइ धाइ हरि जू सो जुध वे करत है ॥
केते भूमि गिरे केते भिरे गज मतन सो लरे तेतो म्रितक ह्वै कै छिति मै परत है ॥
अउर दउर परे मार मार ही उचरे हथियारन उघरे पगु एक न टरत है ॥
स्रउणत उदधि लोह आंच बड़वानल सी पउन बान चलै बीर त्रिण जिउ जरत है ॥११४१॥
सवैया ॥
अणगेस बली तब कोपि भरियो मनि जान निदान की मार मची जब ॥
स्यंदन पै चढि कै कढि कै कसि बान कमान तनाइ लई तब ॥
स्री हरि की प्रितना हू के ऊपरि आइ परियो तिन बीर हने सब ॥
भाजि गए तम से अरि यौ न्रिप पावत भयो रनि सूरज की छबि ॥११४२॥
प्रेरि तुरंग सु आगे भयो करि लै असि ढार बडी धर कै ॥
कछु जादव सो तिनि जुधु करियो न टरियो तिन सो पग दुइ डर कै ॥
जदुबीर के सामुहे आइ अरियो बहु बीरन प्रान बिदा करि कै ॥
ग्रिहु को न चलो इह मो प्रन है किधो प्रान तजउ कि त्वै मरि कै ॥११४३॥
यौ कहि कै असि को गहि कै जदुबीर चमू कहु जाइ हकारा ॥
जादव सैन हूं ते निकसियो रन सुंदर नाम सरूप अपारा ॥
प्रेरि तुरंग भयो समुहे न्रिप मुंड कटियो न लगी कछु बारा ॥
यौ धर ते सिर छूट परियो नभि ते टूट परो छित तारा ॥११४४॥
पुनि दउरि परियो जदुवी प्रितना पर स्याम कहै अति कीन रुसा ॥
उत ते जदुबीर फिरे इकठे अरिराइ बढाइ कै चित गुसा ॥

अगनसत्र छुटियो न्रिप के कर ते जरगे मनो पावक बीच तुसा ॥
कटि अंग परे बहु जोधन के मनो जग के मंडल मधि कुसा ॥११४५॥
कान प्रमान लउ खैच कमान सु बीर निहार कै बान चलावै ॥
जो इनि ऊपरि आन परे सर सो अध बीच ते काटि गिरावै ॥
लोह हथी परसे करि लै ब्रिजनाथ की देहि प्रहार लगावै ॥
जुध समै थकि कै जकि कै जदुबीर कउ पार संभार न आवै ॥११४६॥
जो इह उपर आइ परे भट कोप भरे इन हूं सु निवारे ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि मारि रथी बिरथी करि डारे ॥
घाइल कोटि चले तजि कै रन जूझि परे बहु डील डरारे ॥
यौ उपजी उपमा सु मनो अहिराज परे खगराज के मारे ॥११४७॥
जुध कीयो जदुबीरन सो उह बीर जबै कर मै असि साजियो ॥
मारि चमूं सु बिदार दई कबि राम कहै बलु सो न्रिप गाजियो ॥
सो सुनि बीर डरे सबही धुनि कउ सुन कै घन सावन लाजियो ॥
छाजत यौ अरि के गन मै म्रिग के बन मै मनो सिंघ बिराजियो ॥११४८॥
बहुर करवार संभारि बिदारि दई धुजनी न्रिप कोटि मरे ॥
असवार हजार पचास हने रथ काटि रथी बिरथी सु करे ॥
कहूं बाज गिरै कहूं ताज जरे गजरार घिरे कहूं राज परे ॥
थिरु नाहि रहै न्रिप को रथ भूमि मनो नटूआ बहु न्रित करे ॥११४९॥
एक अजाइब खा हरि को भट ता संग सो न्रिप आन अरियो है ॥
भाजत नाहि हठी रन ते अणगेस बली अति कोप भरियो है ॥
लै करवार प्रहार कीयो कटियो तिह सीस कबंध लरियो है ॥
फेरि गिरियो मानो आंधी बही द्रुम दीरघ भू परि टूट परियो है ॥११५०॥
देखि अजाइब खान दसा तब गैरत खा मनि रोस भरियो ॥
सु धवाइ कै स्यंदन जाइ परियो अरि बीर हूं ते नही नैकु डरियो ॥
असि पानि धरे रन बीच दुहूं तह आपस मै बहु जुध करियो ॥
मनि यौ उपजी उपमा बन मै गज सो मद को गज आनि अरियो ॥११५१॥
गैरत खा बरछी गहि कै बर सो अरि बीर की ओरि चलाई ॥
आवत बिदुलता सम देख कै काटि क्रिपान सो भूमि गिराई ॥
सो न लगी रिस कै रिपु को बरछी गहि दूसरी अउर चलाई ॥
यौ उपमा उपजी जीय मै मानो छूटि चली नभ ते जु हवाई ॥११५२॥
दूसरी देख कै साग बली न्रिप आवत काटि कै भूमि गिराई ॥
लै बरछी अपुने कर मै न्रिप गैरत खा पर कोपि चलाई ॥
लाग गई तिह के मुख मै बहि स्रउन चलियो उपमा ठहराई ॥
कोप की आग महा बढि कै डढ कै हीय कउ मनो बाहरि आई ॥११५३॥

दोहरा ॥

म्रितक हुइ धरनी परियो जोति रही ठहराइ ॥
जनु अकास ते भासकरि पयो राहु डर आइ ॥११५४॥
सवैया ॥
कोप भरे रन मै कबि स्याम तबै हरि जू इह भाति कहियो है ॥
जुध बिखै भट कउन गनै लखि बीर हनै मन मै जु चहियो है ॥
जानत हउ तिह त्रास तुमै किनहूं कर मै धन हूं गहियो है ॥
ता ते पधारहु धामन को सु लखियो तुम ते पुरखतु रहियो है ॥११५५॥
ऐसे कहियो जदुबीर तिनै सभ ही रिस कै धनु बान संभारियो ॥
ह्वै के इकत्र चले रन को बलि बिक्रम पउरख जीअ बिचारियो ॥
मार ही मार पुकारि परे जोऊ आइ अरियो अरि सो तिह मारियो ॥
होत भयो तिह जुध बडो दुहूं ओरन ते न्रिप ठाढि निहारियो ॥११५६॥
एक सुजान बडो बलवान धरे असि पानि तुरंगम डारियो ॥
अस्व पचास हने अरियो अनगेस बली कहु जा ललकारियो ॥
धाइ कै घाइ करियो न्रिप लै कर बाम मै चाम की ओटि निवारियो ॥

दाहनै पानि क्रिपान को तानि सुजान को काटि कै सीस उतारियो ॥११५७॥

दोहरा ॥

बीर सुजान हन्यो जबै अणग सिंघ तिह ठाइ ॥
देखियो सैना जादवी दउर परे अरराइ ॥११५८॥
सवैया ॥
भट लाज भरे अरराइ परे न डरे अरि सिउ तेऊ आइ अरे ॥
अति कोप भरे सब लोह जरे अब याहि हनो मुख ते उचरे ॥
असि भाल गदा अरु लोह हथी बरछी करि लै ललकार परे ॥
कबि राम भनै नही जात गने कितने बर बान कमान धरे ॥११५९॥
अनगेस बली धनु बान गहियो अति रोस भरियो दोऊ नैन तचाए ॥
मार ही मार पुकारि परियो सर सत्रन के उर बीच लगाए ॥
एक मरे इक घाइ भरे इक देखि डरे रन तिआगि पराए ॥
आइ लरे जोऊ लाज भरे मन मै रन कोप की ओप बढाए ॥११६०॥
सातकि अउ मुसली रथ पै बसुदेव ते आदिक धाइ सबै ॥
बरमाक्रित ऊधव अउर अक्रूर चले रन कउ भरि लाज तबै ॥
तिह बीच घिरिओ न्रिप राजत यौ लखि रीझ रहै भट ताहि छबै ॥
मन यौ उपजी उपमा रितु पावस अभ्रन मै दिन राज फबै ॥११६१॥
हलु पानि संभारि लयो मुसली रन मै अरि को हय चारो ही घाए ॥
बान कमान गही बसुदेव भले रथ के चक काटि गिराए ॥
सातकि सूत को सीस कटियो रिसि ऊधव बान अनेक चलाए ॥
फाधि परियो रथ ते ततकाल लए असि ढाल बडे भट घाए ॥११६२॥
ठाढो हुतो भट स्री जदुबीर को सो अणगेस जू नैन निहारियो ॥
पाइन की करि चंचलता बर सो असि सत्र के सीस प्रहारियो ॥
टूटि परियो झटदै कटियो सिर ता छबि को कबि भाउ उचारियो ॥
मानहु राहु निसाकर को नभि मंडल ते हनि कै छिति डारियो ॥११६३॥
कूदि चड़ियो अरि के रथ ऊपरि सारथी कउ बध कै तब ही ॥
धनु बान क्रिपान गदा बरछी अरि के करि ससत्र लए सब ही ॥
रथ आप ही हाक है स्याम कहै मधि जादव सैन परियो जब ही ॥
इक मारि लए इक भाजि गए इक ठाढि भए तेऊ न दबही ॥११६४॥
आपन ही रथ हाकत है अरु आपन ही सर जाल चलावै ॥
आपन ही रिपु घाइ बचावत आपन ही अरि घाइ लगावै ॥
एकन के धनु बान कटे भट एकन के रथ काटि गिरावै ॥
दामनि जिउ दमकै घट मै कर मै करवारहि तिउ चमकावै ॥११६५॥
मारि कै बीर घने रन मै बहु कोप कै दातन ओठ चबावै ॥
आवत जो इह के अरि ऊपरि बानन सिउ तिह काटि गिरावै ॥
धाइ परै रिपु के दल मै दल कै मल कै बहुरो फिरि आवै ॥
जुधु करै न डरै हरि सो अरि के रथ को बलि ओरि चलावै ॥११६६॥

दोहरा ॥

जब रिपु रन कीनो घनो बढियो क्रिसन तब तेहु ॥
जादव प्रति हरि यौ कहियो दुबिधा करि हनि लेहु ॥११६७॥
सवैया ॥
सातकि काटि दयो तिन को रथ कान्रह तबै हय काटि कै डारियो ॥
सूत को सीस कटियो मुसली बरमाक्रित अंग प्रतंग प्रहारियो ॥
बान अक्रूर हन्यो उर मै तिह जोर लगियो नहि नैकु संभारियो ॥
मूरछ ह्वै रनभूमि गिरियो असि लै करि ऊधव सीस उतारियो ॥११६८॥

दोहरा ॥

अणग सिंघ जब मारयो खट सुभटन मिलि ठउर ॥
जरासंधि की सैन ते चले चत्र न्रिप अउर ॥११६९ ॥
सवैया ॥
अमितेस बली अचलेस महा अनघेसहि लै असुरेस सिधाए ॥
बान कमान क्रिपान बडे बरछे परसे सु गदा गहि आए ॥
रोस कै बीर निसंक भिरे भट के न टिके भट ओघ पराए ॥
आइ घिरियो ब्रिजभूखन कउ मधु दूखन कउ बहु बान लगाए ॥११७० ॥
घाइन कउ सहि कै ब्रिज राज सरासन लै सर लेत भयो ॥
असुरेसहि को सिर काटि दयो अमितेस की देह बिदारि छयो ॥
अनघेस को काटि दुखंड कीयो म्रित ह्वै रथ ते गिरि भूमि पयो ॥
अचलेस जू बानन को सहि कै फिरि ठाढि रहियो नहि भाजि गयो ॥११७१ ॥
कोप कै बोलत यौ हरि को रन सिंघ ते आदि तै बीर खपाए ॥
तो ते कहीं गज सिंघ हन्यो अणगेस जू तै छल साथ गिराए ॥
जानत हौ अमितेस बली धन सिंघ संघार कै बीर कहाए ॥
सो तब लउ गज गाजत है जब लउ बन मै म्रिगराज न आए ॥११७२ ॥
यौ कहि कै बतीया हरि सो अभिमान भरे धनु बान संभारियो ॥
कान प्रमान सरासन तानि महा सर तीछन स्याम को मारियो ॥
लाग गयो हरि के उर मै हरि जू नहि आवत नैन निहारियो ॥
मूरछत ह्वै रथ माझि गिरे तजि कै रन लै प्रभ सूत पधारियो ॥११७३ ॥
एक महूरत बीति गयो तब स्यंदन पै जदुबीर संभारियो ॥
तउ अचलेस गुमान भरे अति ही हस कै इह भाति पुकारियो ॥
जात कहा हम ते भजि कै करि लै के गदा कटु बोल उचारियो ॥
मानहु केहरि जात हुतो नर लै लकुटी करि मै ललकारियो ॥११७४ ॥
यौ सुनि कै बतीआ अरि की रथु हाकि फिरियो हरि कोप भयो ॥
पट पीत महा फहरिओ धुज जिउ घन मै चपला सम रूप लयो ॥
बरखियो सर बूंदन जिउ घनि स्याम तबै रिपु को दल मार दयो ॥
रिस कै अचलेस सु बान कमान गहे हरि सामुहे आइ खयो ॥११७५ ॥

दोहरा ॥

सिंघ नाद तब तिन कीओ क्रिसन चितै करि नैन ॥
बिकटि निकटि रनि सुभट लखि हरि प्रति बोलियो बैन ॥११७६ ॥
अचल सिंघ बाच ॥
सवैया ॥
जीवत जे जग मै रहि है अति जुध कथा हमरी सुन लै है ॥
ता छबि की कविता करि कै कबि राम नरेसन जाइ रिझै है ॥
जो बलि पै कहि है कथ पंडित रीझि घनो तिह को धनु दे है ॥
हे हरि जू इह आहव के जुग चारनि मै गुन गंध्रब गैहै ॥११७७ ॥
कोप कै उतर देत भयो अरि की बतीया सुनि स्याम सबै ॥
चिरीया बन मै चुहकै तब लउ अति कोप न आवत बाज जबै ॥
गरबात है मूढ घनो रन मै कटि हौ तुहि सीस लखैगो तबै ॥
तिह ते तजि संक निसंक लरो बलबीर कहियो कहा ढील अबै ॥११७८ ॥
यौ सुनि कै कटु बैनन को अचलेस बली मनि कोप जगियो ॥
कस बोलत हो कछु लाज गहो रनि ठाढे रहो सुनि हो न भगियो ॥
यह उतर दै हरि को जब ही तब ही निज आयुध लै उमगियो ॥
मन मै हरखियो धनु को करखियो बरखियो सर स्री हरि को न लगियो ॥११७९ ॥
जो अचलेस जू बान चलावत सो हरि आवत काटि गिरावै ॥
जानै न देह लगियो अरि की सर फेरि रिसा करि अउर चलावै ॥
सो हरि आवत बीच कटै अपनो उह को उर बीच लगावै ॥
देखि सतक्रित कउतक को कबि राम कहै प्रभ को जसु गावै ॥११८० ॥
दारुक को कहिओ तेज कै स्यंदन स्री हरि जू करि खगु संभारियो ॥

दामनि जिउ घन मै लसकै रिस मै बरि कै अरि ऊपर मारियो ॥
दुजन को सिरु काटि दयो बिनु रुंड भयो जसु ताहि उचारियो ॥
जिउ सरदूल महा बन मै हत कै बल सो मनो केहरि डारियो ॥११८१॥

दोहरा ॥

अडर सिंघ अउ अजब सिंघ अघट सिंघ सिंघ बीर ॥
अमर सिंघ अरु अटल सिंघ महारथी रन धीर ॥११८२॥
अरजन सिंघ अरु अमिट सिंघ क्रिसन निहारिओ नैन ॥
आठ भूप मिलि परसपर बोलत ऐसे बैन ॥११८३॥
सवैया ॥
देखत हो न्रिप स्याम बली तिह के हम ऊपरि धाइ परै ॥
अपुने प्रभ को मिलि काज करै मुसली हरि ते नही नैकु डरै ॥
धनु बान क्रिपान गदा परसे बरछे गहि तीछन जाइ अरै ॥
सब ही सु कही इह ई प्रन है जदुबीर हनै मिलि जुध करै ॥११८४॥
आयुध लै सिगरे कर मै सु मुकंद के ऊपरि दउर परे ॥
सु धवाइ कै स्यंदन आनि अरे संगि चार अछूहनि सूर बरे ॥
कबि राम कहै अति आहव मै अघ खंडनि ते नहीं नैक डरे ॥
मनो गाजि प्रलै घन धाइ चलियो तिम दउरे सु मार ही मार करे ॥११८५॥
धन सिंघ अछूहनि दुइ संगि लै अनगेस अछूहनि तीन सु ल्याए ॥
सो तुम स्याम सुनो छल सो रन मै दस हूं न्रिप मारि गिराए ॥
चार अछूहनि लै हम हूं दल तो पर आए है कोप बढाए ॥
ता ते कहियो सुनि लै हमरो ग्रिह को तजि आहव जाहु पराए ॥११८६॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै बतीया तिह की हरि कोप कहियो हम जुध करैंगे ॥
बान कमान गदा गहि कै दोऊ भ्रात सबै अरि सैन हरैंगे ॥
सूर सिवादिक ते न भजै हनि है तुम कउ नहि जूझि मरैंगे ॥
मेरु हलै सुखि है निधि बारि तऊ रन की छिति ते न टरैंगे ॥११८७॥
यौ कहि कै बतीया तिन सो कसि कै इक बानु सु स्याम चलायो ॥
लागि गयो अजबेस के बछ सु लागत ही कछु खेदु न पायो ॥
फेरि हठी हठि कै हरि सो इम बैन महा करि कोप सुनायो ॥
का कहीए तिह पंडित को जिह ते धनु की बिधि तूं पड़ि आयो ॥११८८॥
कोप भरी जदुवी प्रितना इत ते उमडी उत ते वह आई ॥
मार ही मार कीए मुख ते कबि राम कहै जीय रोस बढाई ॥
बान क्रिपान गदा के लगे बहु जूझि परे करि दुंद लराई ॥
रीझ रहे सुर पेखि सबै पुहपावलि की बरखा बरखाई ॥११८९॥
इत ते रन मै रिस बीर लरै नभि मै ब्रहमादि सनादि निहारै ॥
आगे न ऐसो भयो कबहूं रन आपसि मै इम बोलि उचारै ॥
जूझ परे तिह स्रउन ढरे भरि खपर जुगनि पी किलकारै ॥
मुंडन माल अनेक गुही सिव के गन धनि ही धनि पुकारै ॥११९०॥
आयुध धारि अयोधन मै इक कोप भरे भट धाइ अरै ॥
इक मल की दाइन जुध करै इक देख महा रण दउरि परै ॥
इक राम ही राम कहै मुखि ते इकु मार ही मार इहै उचरै ॥
इक जूझि परे इक घाइ भरे इक स्याम कहा इह भाति ररै ॥११९१॥
मुकीया ऊ लरै इक आपस मै गहि केसनि केस एक अरे हैं ॥
एक चले रन ते भजि कै इक आहव को पग आगे करे हैं ॥
एक लरे गहि फेटनि फेट कटारन सो दोऊ जूझि मरे हैं ॥
सोऊ लरे कबि राम ररै अपुने कुल की जोऊ लाजि भरे हैं ॥११९२॥
आठो ही भूप अयोधन मै सब लै प्रितना हरि ऊपरि आए ॥
जुध करो न डरो हम ते कबि राम कहै इह बैन सुनाए ॥

दै कै कसीसनि ईसनि चापनि लै सर स्री हरि ओरि चलाए ॥
स्याम जू पानि सरासनि लै सर सो सर आवत काटि गिराए ॥११९३॥
तउ मिलि कै धुजनी अरि की जदुबीर चहूं दिस ते रिसि घेरियो ॥
आपसि मै मिलि कै भट धीर हन्यो बलबीर इहै पुनि टेरियो ॥
स्री धन सिंघ बली अचलेस कउ अउर नरेसनि या ही निबेरियो ॥
इउ कहि कै सर मारत भयो गज पुंज मनो करि केहरि छेरियो ॥११९४॥
घेरि लयो हरि कौ जब ही हरि जू तब ही सब ससत्र संभारे ॥
कोपि अयोधन मै फिरि कै रिस साथ घने अरि बीर संघारे ॥
एकन के सिर काटि दए इक जीवत ही गहि केसि पछारे ॥
एक लरे कटि भूमि परे इक देख डरे मरि गे बिनु मारे ॥११९५॥
आठो ई भूप कहिओ मुख ते भट भाजत हो कहा जुधु करो ॥
जब लउ रन मै हम जीवत है तब लउ हरि ते तुम हूं न डरो ॥
हमरो इह आइस है तुम को जदुबीर के सामुहि जाइ लरो ॥
कोऊ आहव ते नही नैकु टरो इक जूझि परो इक धाइ अरो ॥११९६॥
फेरि फिरे पट आयुध लै रन मै जदुबीर कउ घेरि लीयो ॥
न टरे अति रोसि भिरे जीय मै अति आहव चित्र बचित्र कीयो ॥
असि लै बर बीर गदा गहि कै रिपु को दलु मारि बिदारि दीयो ॥
इक बीरन के पदु सीस कटे भट एकन को दयो फारि हीयो ॥११९७॥
स्री जदुबीर सरासनि लै बहु काटि रथी सिर भूमि गिराए ॥
आयुध लै अपुने अपुने इक कोपि भरे हरि पै पुनि धाए ॥
ते ब्रिजनाथ करं गहि खग अभग हने सु घने तह घाए ॥
भाजि गए हरि ते अरि इउ सु कोऊ नहि आहव मै ठहराए ॥११९८॥

दोहरा ॥

भूपन की भाजी चमू खाइ घनी हरि मारि ॥
तबहि फिरे न्रिप जुध के आयुध सकल संभारि ॥११९९॥
सवैया ॥
कोप अयोधनु मै करि कै करि मै सब भूपन ससत्र संभारे ॥
आइ कै सामुहे स्याम ही के बल कै निजु आयुध रोसि प्रहारे ॥
कान्रह संभारि सरासनि लै सर सत्रन काटि कै भू परि डारे ॥
घाइ बचाइ कै यौ तिन कै बहुरे अरि कै सिर काटि उतारे ॥१२००॥

दोहरा ॥

अजब सिंघ को सिर कटियो हरि जू ससत्र संभारि ॥
अडर सिंघ घाइल करिओ अति रन भूमि मझारि ॥१२०१॥

चौपई ॥

अडर सिंघ घाइल जब भयो ॥
अति ही कोपु जीय तिह ठयो ॥
बहु तीछन बरछा तिनि लयो ॥
हरि की ओरि डारि कै दयो ॥१२०२॥

दोहरा ॥

बरछा आवत लखियो हरि धनुख बान करि कीन ॥
आवत सर सो काटि कै मारि वहै भट लीन ॥१२०३॥
अघड़ सिंघ लखि तिह दसा देत भयो नही पीठि ॥
समुहे हरि के आइ कै बोलियो ह्वै करि ढीठु ॥१२०४॥

चौपई ॥

हरि सनमुखि इह भाति उचारिओ ॥
अडर सिंघ तै छल सो मारिओ ॥
अजब सिंघ करि कपट खपायो ॥
इह सभ भेद हमो लखि पायो ॥१२०५॥

दोहरा ॥

अघड़ सिंघ अति निडर ह्वै बोलियो हरि समुहाइ ॥
बचन स्याम सों जे कहे सो कबि कहित सुनाइ ॥१२०६॥
सवैया ॥
ढीठ ह्वै बोलत भयो रन मै हसि कै हरि सो बतीया सुनि लैहो ॥
क्रुध कीए हम संगि निसंग कहा अब जुध कीए फलु पै हो ॥
ता ते लरो नही मो संगि आइ कै हो लरिका रन देखि परै हो ॥
जो हठ कै लरि हो मरि हो अपुने ग्रिह मारगि जीति न जैहो ॥१२०७॥

दोहरा ॥

जिउ बोलियो अति गरब सिउ इति हरि ऐचि कमान ॥
सर मारियो अरि मुखि बिखै परियो म्रितक छिति आनि ॥१२०८॥
अरजन सिंघ तब ढीठ हुइ कही क्रिसन सो बात ॥
महाबली हउ आज ही करि हों तेरो घात ॥१२०९॥
सुनत बचन हरि खगु लै अरि सिरि झारियो धाइ ॥
गिरिओ मनो आंधी बचे बडो ब्रिछ मुरझाइ ॥१२१०॥
सवैया ॥
अरजन सिंघ हन्यो असि सिउ अमरेस महीप हनिओ तब ही ॥
अटलेस प्रकोप भयो लखि कै हरि आपुने ससत्र लए सब ही ॥
अति मार ही मार पुकारि परिओ हरि सामुहे आइ अरिओ जब ही ॥
कलधउत के भूखन अंग सजे जिह की छबि सो सविता दब ही ॥१२११॥
जाम प्रमान कीओ घमसान बडौ बलवान न जाइ संघारियो ॥
मेघ जिउ गाजि मुरारि तबै असि लै करि मै अरि ऊपरि झारियो ॥
हुइ म्रित भूमि परियो तब ही जदुबीर जबै सिरु काटि उतारियो ॥
धंनि ही धंनि कहै सब देव बडो हरि जू भव भार उतारियो ॥१२१२॥

दोहरा ॥

अटल सिंघ जब मारिओ बहु बीरन को राउ ॥
अमिट सिंघ तब अमिट हुइ कीनो जुध उपाउ ॥१२१३॥
सवैया ॥
बोलत इउ हठि कै हरि सो भट तउ लखि हो जब मो सो लरैगो ॥
मो को कहा हनि राजन ज्यो छल मूरति हुइ छल साथ छरैगो ॥
मो अति कोप भरो लखि कै रहि हो नहि आहव हूं ते टरैगो ॥
जउ कबहूं भिर हो हम सो निसचै निज देह को तिआगु करैगो ॥१२१४॥
काहे कउ कान्रह अयोधन मै हित औरन के रिस कै रन पारो ॥
काहे कउ घाइ सहो तन मै पुनि का के कहे अरि भूपनि मारो ॥
जीवत हो तब लउ जग मै जब लउ मुहि संगि भिरिओ न बिचारो ॥
सुंदर जान कै छाडत हो तजि कै रन स्याम जू धामि सिधारो ॥१२१५॥
फेरि अयोधन मै रिसि के अमिटेस बली इह भाति उचारो ॥
बैस किसोर मनोहरि मूरति लै हो कहा लखि जुध हमारो ॥
हउ तुम सिउ हरि साच कहिओ तुम जउ जीय मै कछु अउर बिचारो ॥
कै हम संगि लरो तजि कै डर कै अपुने सभ आयुध डारो ॥१२१६॥

आजु आयोधन मै तुम को हनि हो तुमरी सभ ही प्रितना को ॥
जउ रे कोऊ तुम मै भट है बहु आवत है बिधि आहव जा को ॥
सो हमरे संग आइ भिरे न लरै परमेसुर की सहु ता को ॥
जो टरि है इह आहव ते सोई सिंघ नही भट स्रयार कहा को ॥१२१७॥

दोहरा ॥

अमिट सिंघ के बचन सुनि हरि जू क्रोध बढाइ ॥
ससत्र सबै कर मै लए सनमुखि पहुचियो धाइ ॥१२१८॥
सवैया ॥
आवत स्याम को पेखि बली अपुने मन मै अति कोप बढायो ॥
चारो ई घोरनि घाइल कै सर तीछन दारुक के उरि लायो ॥
दूसरे तीर सो कान्रह सरीर सु कोप हन्यो जोऊ ठउर तकायो ॥
स्याम कहै अमिटेस मनो जदुबीर की देह को लछ बनायो ॥१२१९॥
बान चलाइ घने हरि को इक लै सर तीछन और चलायो ॥
लागत स्याम गिरिओ रथ मै रन छाडि कै दारुक सूत परायो ॥
देख कै भूप भजियो बलबीर निहारि चमूं तिह ऊपर धायो ॥
मानहु हेरि बडे सर को गजराज कवी गन रौदन आयो ॥१२२०॥
आवत देखि हली अरि को सु धवाइ कै स्यंदन सामुहे आयो ॥
तानि लीयो धनु को कर मै सर को धर कै अरि ओरि चलायो ॥
सो अमिटेस जू नैन निहारि सु आवत बान सु काटि गिरायो ॥
आइ भिरियो बल सिउ तब ही अपुने जीय मै अति कोपु बढायो ॥१२२१॥
काटि धुजा रथु काटि दयो असि चाप को काटि जुदा करि डारिओ ॥
मूसल अउ हल काटि दयो बिनु आयुध हुइ बलदेव पधारिओ ॥
जात कहा मुसली भजि कै कबि राम कहै इह भाति उचारिओ ॥
यौ कहि कै असि को गहि कै लहि कै दल जादव को ललकारिओ ॥१२२२॥
जो इह सामुहे आइ भिरै भट ता ही संघार कै भूमि गिरावै ॥
कान प्रमान लउ तानि कमान घने सर सत्रन के तन लावै ॥
सोऊ बचे तिह ते बल बीर जोऊ भजि आपने प्रान बचावै ॥
अउरन की सु कहा गनती जु बडे भट जीवत जान न पावै ॥१२२३॥
मूसल अउर लए मुसली चड़ि स्यंदन पै बहुरो फिरि धायो ॥
आवत ही बल कै न्रिप सो चतुरंग प्रकार को जुधु मचायो ॥
अउर जिते भट ठाढे हुते रिस कै मुखि ते इह भाति सुनायो ॥
जानि न देहु अरे अरि को सुनि कै हरि के दलु कोपु बढायो ॥१२२४॥
ऐसे हलायुध कोपि कहियो तब जादव बीर सबै मिलि धाए ॥
जो इह सामुहे आइ अरे ग्रिह को तेऊ जीवत जानि न पाए ॥
अउर जिते तह ठाढे हुते असि लै बरछै परसे गहि आए ॥
तेऊ भिरे जोऊ लाज भरे अरि को बर कै तिन घाइ लगाए ॥१२२५॥

दोहरा ॥

अमिट सिंघ अति कोप ह्वै अमित चलाए बान ॥
हरि सैना तम जिउ भजी सर मानो करि भानु ॥१२२६॥
सवैया ॥
जात भजे जदवीर प्रितना रन मै मुसली इह भाति पचारे ॥
छत्रनि के कुल मै उपजे किह भाति परावत हो बलु हारे ॥
आयुध छाडत हो कर ते डरु मानि घनो बिन ही अरि मारे ॥
त्रास करो न कछू रन मै जब लउ तन मै थिरु प्रान हमारे ॥१२२७॥

दोहरा ॥

कोप अयोधन मै हली सुभटनि कहियो पचारि ॥

अमिट सिंघ को घेर कै कहियो लेहु तुम मार ॥१२२८॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
आइस पाइ तबै मुसली चहूं ओर चमूं ललकार परी ॥
अति कोप भरी अपुने मन मै अमिटेस के सामुहे आइ अरी ॥
बहु जुधु अयोधन बीच भयो कब स्याम कहै नहीं नैकु डरी ॥
न्रिप बीर सरासनि लै कर बान घनी प्रितना बिनु प्रान करी ॥१२२९॥
काटि करी रथ काटि दए बहु बीर हने अति बाज संघारे ॥
घाइल घूमत है रन मै कितने सिर भूमि परे धर भारे ॥
जीवत जे तेऊ आयुध लै न डरे अरि ऊपरि घाइ प्रहारे ॥
तउ तिन के तन आहव मै असि लै न्रिप खंडन खंड कै डारे ॥१२३०॥
जुध बिखै अति तीर लगे बहु बीरन को तन स्रोणत भीने ॥
काइर भाज गए रन ते अति ही डर सिउ जिह गात पसीने ॥
भूत पिसाच करै किलकार फिरै रन जोगिन खपर लीने ॥
आनि फिरिओ तह स्री त्रिपुरारि सु आधोई अंग सिवा तन कीने ॥१२३१॥

दोहरा ॥

मूरछा ते पाछे घरी तीनि भए हरि चेत ॥
दारुक सो कहिओ हाकि रथु पुनि आए जह खेतु ॥१२३२॥
सवैया ॥
जानो सहाइ भयो हरि को बहुरो जदु बंसनि कोप जगियो ॥
अमिटेस सो धाइ अरे रन मै तिह जोधन सो नही एक भगियो ॥
गहि बान कमान क्रिपान गदा अति ही दलु आहव को उमगियो ॥
बहु स्रउन पगे रंगि स्याम जगे मनो आगि लगे गन साल दगियो ॥१२३३॥
बिबिधायुध लै पुनि जुधु कीओ अति ही मन मै भट कोप भरे ॥
मुख ते कहि मारु ही मार परे लखि कै रन कउ नही नैकु डरे ॥
पुनि या बिधि सिउ कबि रामु कहै जदुबीर घने अरि साथ अरे ॥
रिसि भूप तबै बल कै असि लै रिपु के तन द्वै करि चार करे ॥१२३४॥
ऐसी निहारि कै मारि मची जोऊ जीवत थे तजि जुधु पराने ॥
स्याम भने अमिटेस के सामुहे आहव मै कोऊ न ठहिराने ॥
जे बर बीर कहावत है बहु बार भिरे रनि बाधित बाने ॥
सो इह भाति चले भजि कै जिम पउन बहे द्रुम पात उडाने ॥१२३५॥
केते रहे रन मै रुप कै कितने भजि स्याम के तीर पुकारे ॥
बीर घने नही जात गने अमिटेसि बली रिस साथि संघारे ॥
बाज मरे गज राज परे सु कहूं रथ काटि कै भू परि डारे ॥
आवत का तुमरे मन मै करता हरता प्रतिपालनहारे ॥१२३६॥

दोहरा ॥

रन आतुर ह्वै सुभट जो हरि सो बिनती कीन ॥
तब तिन को ब्रिजराज जू इह बिधि उतर दीन ॥१२३७॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
निधि बारि बिखै अति ही हठ कै बहु मास रहियो तपु जापु कीओ ॥
बहुरो तजि कै पित मात सु भ्रात अवास तजियो बनबास लीओ ॥
सिव रीझि तपोधन मै इह को कहियो माग महा बरु तोहि दीओ ॥
मुहि सामुहे कोऊ न सत्र रहै बरु देहु इहै मुखि माग लीओ ॥१२३८॥
सेस सुरेस गणेस निसेस दिनेस हूं ते नही जाइ संघारिओ ॥
सो बर पाइ महा सिव ते अरि ब्रिंद नरिंद इही रनि मारिओ ॥
सूरन सो बलबीर तबै अपुनै मुखि ते इह भाति उचारिओ ॥

हउ तिह संगर के समुहे म्रित की बिधि पूछि इही जीय धारिओ ॥१२३९ ॥

दोहरा ॥

जब हरि जू ऐसे कहियो तब मुसली सुनि पाइ ॥
इह को अब ही हउ हनो बोलियो बचनु रिसाइ ॥१२४०॥
सवैया ॥
कोप हली जदुबीर ही सो इह भाति कहियो कहों जाइ संघारो ॥
जउ सिव आइ सहाइ करै सिव को रन मै तिह संग प्रहारो ॥
साच कहो प्रभ जू तुम सो हनि हो अमिटेस नही बल हारो ॥
पउन सरूप सहाइ करो तुम पावक हुइ रिपु कानन जारो ॥१२४१॥
क्रिसन बाच मुसली सो ॥

दोहरा ॥

तुम सो तिनि जब जुध कीआ किउ न लरे पग रोपि ॥
अब हम आगे गरब को बचन उचारत कोपि ॥१२४२॥
सवैया ॥
जादव भाजि गए सिगरे तुम बोलत हो अहंकारनि जिउ ॥
अब आज हनो अरि को रन मै कस भाखत हो मतवारनि जिउ ॥
तिह को बडवानल के परसे जर जैहो तबै त्रिन भारन जिउ ॥
जदुबीर कहियो वहु केहरि है तिह ते भजि हो बलि बारुन जिउ ॥१२४३॥

दोहरा ॥

ब्रिजभूखन बलभद्र सो इह बिधि कही सुनाइ ॥
हरै बोलि बलि यौ कहियो करो जु प्रभहि सुहाइ ॥१२४४॥
सवैया ॥
यौ बलि सिउ कहियो रोस बढाइ चलियो हरि जू हथियार संभारे ॥
काइर जात कहा थिरु होहु सु केहरि ज्यो हरि जू भभकारे ॥
बान अनेक हने उन हूं हरि कोप हुइ बान सो बान निवारे ॥
अपुने पानि लयो धनु तानि घने सर लै अरि ऊपरि डारे ॥१२४५॥

दोहरा ॥

बान अनेक चलाइ कै पुनि बोले हरि देव ॥
अमिट सिंघ मिट जाइगो झूठो तुय अहंमेव ॥१२४६॥
सवैया ॥
हउ जब जुध के काज चलिओ तु अकाल कहियो हरि जू हम सउ ॥
तिह को कहियो कानि कीयो तब मै तुअ हेरि कै आयो हउ अपनी गउ ॥
तिह ते न्रिप बीर कहियो सुनि कै तजि संक भिरे दोऊ आहव मउ ॥
धूअ लोक टरै गिरि मेरु हलै सु तउ तुम तो टरिहो नही हउ ॥१२४७॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

कहियो क्रिसन तुहि मारिहो तूं करि कोटि उपाइ ॥
अमिट सिंघ बोलिओ तबहि अति ही कोपु बढाइ ॥१२४८॥
अमिट सिंघ बाच ॥
सवैया ॥
हउ न बकी बक नीच नही ब्रिखभासुर सो छल साथि संघारिओ ॥
केसी न हउ गज धेनुक नाहि न हउ त्रिनाव्रत सिला परि डारिओ ॥
हउ न अघासुर मुसट चंडूर सु कंस नही गहि केस पछारिओ ॥

भ्रात बली तुअ नाम परिओ कहो कउन बली बलु सो तुम मारिओ ॥१२४९ ॥
का चतुरानन मै बलु है जोऊ आहव मै हम सो रिस कै है ॥
कउन खगेस गनेस दिनेस निसेस निहारि कै मोन भजै है ॥
सेस जलेस सुरेस धनेस जू जउ अरि है तऊ मोह न छै है ॥
भाजत देव बिलोक कै मो कउ तू लरिका लरि का फलु लै है ॥१२५० ॥

दोहरा ॥

खोवत है जीउ किह नमित तजि रनि स्याम पधारु ॥
मारत हो रनि आज तुहि अपने बलहि संभार ॥१२५१ ॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

अमिट सिंघ के बचन सुनि बोलियो हरि करि कोप ॥
अब अकार तुअ लोप करि अमिट सिंघ बिनु ओप ॥१२५२ ॥
सवैया ॥
जुधु करियो हरि जू जुग जाम तबै रिपु रीझ कै ऐसे पुकारिओ ॥
बालक हो अरु जुध प्रबीन हो मागु कछू मुखि जो जीय धारिओ ॥
आपुनी पात की घात की बात कउ देहु बताइ मुरारि उचारिओ ॥
सामुहे मोहि न कोऊ हनै असि लै तब कान्रह पछावरि झारिओ ॥१२५३ ॥
सीस कटिओ न हटिओ तिह ठउर ते दउर कै आगै ही को पगु धारिओ ॥
कुंचर एक हुते दल मै तिह धाइ कै जाइ कै घाइ प्रहारिओ ॥
मारि करी हनि बीर चलिओ असि लै करि स्री हरि ओरि पधारिओ ॥
भूमि गिरिओ सिरु स्री सिव लै गुहि मुंड की माल को मेरु सवारिओ ॥१२५४ ॥

दोहरा ॥

अमिट सिंघ अति ही बली बहुतु करिओ संग्राम ॥
निकसि जोति हरि सो मिली जिउ निस को करि भानु ॥१२५५ ॥
सवैया ॥
अउर जिती प्रितना अरि की तिन हूं जदुबीर सो जुधु कीआ ॥
बिनु भूपति आनि अरे न डरे रिस को करि कै अति गाढो हीआ ॥
मिल धाइ परे हरि पै भट यौ कवि ता छबि को जसु मान लीआ ॥
मानो राति समै उडि कीट पतंग जिउ टूटि परै अविलोकि दीआ ॥१२५६ ॥

दोहरा ॥

तब ब्रिजभूखन खड़गु गहि अरि बहु दए गिराइ ॥
एक अरे इक रुपि लरे इक रन छाडि पराइ ॥१२५७ ॥

चौपई ॥

अमिट सिंघ दलु हरि जू हयो ॥
हाहाकार सत्रु दलि पयो ॥
उत ते सूर असतु होइ गयो ॥
प्राची दिस ते ससि प्रगटयो ॥१२५८ ॥
चार जाम दिन जुध सु कीनो ॥
बीरन को बलु हुइ गयो छीनो ॥
दोऊ दल आप आप मिल धाए ॥
इत जदुबीर बसत ग्रिहि आए ॥१२५९ ॥

अथ पंच भूप जुधु कथनं ॥

दोहरा ॥

जरा संधि तब रैनि कउ सकल बुलाए भूप ॥
बल गुन बिक्रम इंद्र सम सुंदर काम सरूप ॥१२६०॥
भूप अठारह जुध मै स्यामि हने बल बीर ॥
प्राति जुध वा सो करै ऐसो को रनधीर ॥१२६१॥
धूम सिंघ धुज सिंघ मनि सिंघ धराधर अउर ॥
धउल सिंघ पाचो न्रिपति सूरन के सिर मउर ॥१२६२॥
हाथ जोरि उठि सभा महि पाचहु कीयो प्रनाम ॥
कालि भोर के होत ही हनि है बल दल स्याम ॥१२६३॥
सवैया ॥
बोलत भे न्रिप सो तेऊ यौ जिनि चिंत करो हम जाइ लरैंगे ॥
आइस होइ तु बाधि लिआवहि नातर बान सो प्रान हरैंगे ॥
कालि अयोधन मै अरि कै बल अउ हरि जादव सो न टरैगे ॥
एक क्रिपान के संग निसंग उनै बिनु प्रान करै न डरैगे ॥१२६४॥

दोहरा ॥

जरासंधि इह मंत्र करि दई जु सभा उठाइ ॥
अपुने अपुने ग्रिह गए राजा अति सुखु पाइ ॥१२६५॥
ग्रिह आए उठि पाच न्रिप जाम एक गई राति ॥
तीन पहर सोए नहीं झाकत ह्वै गयो प्राति ॥१२६६॥

कबितु ॥

प्रात काल भयो अंधकार मिटि गयो क्रोध सूरन को भयो रथ साज कै सबै चले ॥
इतै ब्रिजराइ बलिदेव जू बुलाइ मनि महा सुखु पाइ जदुबीर संगि लै भले ॥
उतै डरु डार कै हथिआरन संभार कै सु आए है हकार कै अटल भट न टले ॥
स्यंदन धवाइ संख दुंदभि बजाइ द्वै तरंगनी के भाइ दल आपस बिखै रले ॥१२६७॥

दोहरा ॥

स्यंदन पै हरि सोभियै अमित तेज की खान ॥
कुमदिन जानिओ चंद्रमा कंजन मानिओ भान ॥१२६८॥
सवैया ॥
घन जान कै मोर नचिओ बन माझ चकोर लखियो ससि के सम है ॥
मनि कामिन काम सरूप भयो प्रभ दासन जानियो नरोतम है ॥
बर जोगन जानि जुगीसुर ईसुर रोगन मानियो सदा छम है ॥
हरि बालन बालक रूप लखियो जीय दुजन जानियो महा जम है ॥१२६९॥
चकवान दिनेस गजान गनेस गनान महेस महातम है ॥
मघवा धरनी हरि जिउ हरिनी उपमा बरनी न कछू स्रम है ॥
म्रिग जूथन नाद सरूप भयो जिन के न बिबाद तिनै दम है ॥
निज मीतन मीत ह्वै चीति बसिओ हरि सत्रनि जानियो महा जम है ॥१२७०॥

दोहरा ॥

द्वै सैना इकठी भई अति मनि कोप बढाइ ॥

जुधु करत है बीर बर रन दुंदभी बजाइ ॥१२७१॥

सवैया ॥

धूम धुज मन धउर धरा धर सिंघ सबै रनि कोप कै आए ॥
लै करवारन ढाल कराल ह्वै संक तजी हरि सामुहे धाए ॥
देखि तिनै तब ही ब्रिज राज हली सो कहियो सु करो मनि भाए ॥
धाइ बली बलि लै कर मै हलि पाचन के सिर काटि गिराए ॥१२७२॥

दोहरा ॥

द्वै अछूहनी दल न्रिपति पाचो हने रिसाइ ॥
एक दोइ जीवत बचे रन तजि गए पराइ ॥१२७३॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे पाच भूप दो अछूहनी दल सहित बधह धयाहि समापतं ॥

अथ द्वादस भूप जुध कथन ॥

सवैया ॥

द्वादस भूप निहारि दसा तिह दातन पीस कै कोप कीयो ॥
धरीआ सब ही बर अत्रन के बहु ससत्रन कै दल बाटि दीयो ॥
मिलि आप बिखै तिन मंत्र कीयो करि कै अति छोभ सो तातो हीयो ॥
लरि है मरि है भव को तरि है जस साथ भलो पल एक जीयो ॥१२७४॥
यौ मन मै धरि आइ अरे सु घनो दलु लै हरि पेखि हकारो ॥
याही हने न्रिप पाच अबै हम संग लरो हरि भ्राति तुमारो ॥
नातर आइ भिरो तुम हूं नहि आयुध छाड कै धामि सिधारो ॥
जो तुम मै बलु है घटिका लरि कै लखि लै पुरखत हमारो ॥१२७५॥
यौ सुनि कै बतीया तिन की सब आयुध लै हरि सामुहे आयो ॥
साहिब सिंघ को सीस कटियो सु सदा सिंघ मार कै भूमि गिरायो ॥
सुंदर सिंघ अधंधर कै पुनि साजन सिंघ हन्यो रन पायो ॥
केसन ते गहि कै सबलेस धरा पटकियो इम जुध मचायो ॥१२७६॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ पुनि हन्यो रनि सैन सिंघ हति दीन ॥
सफल सिंघ अरि सिंघ हनि सिंघ नाद हरि कीन ॥१२७७॥

सवछ सिंघ बाच ॥

सवैया ॥

सवछ नरेस कहियो हरि सिउ अपुने बल कोपि अयोधन मै ॥
अब तै दस भूप हने बलवंड न रंचक त्रास कीयो मन मै ॥
जदुबीर की ओर ते तीर चलै बरखा जिम सावन के घन मै ॥
सर पउन के जोर लगे न टरिओ गिरि जिउ थिरु ठाढो रहियो रन मै ॥१२७८॥

दोहरा ॥

जदु बंसन सो अति लरियो जिउ बासव सिउ जंभ ॥
अचल रहियो तिह ठउर न्रिप जिउ रन मै रन खंभ ॥१२७९॥

सवैया ॥

जिउ न हलै गिरि कंचन को अति हाथन को बल कोऊ करै ॥
अरु जिउ ध्रू लोक चलै न कहूं सिव मूरति जिउ कबहूं न चरै ॥
बर जिउ न सती सति छाडि पतिब्रति जिउ सिध जोग मै ध्यान धरै ॥
तिम स्याम चमूं मधि सवछ नरेस हठी रन ते नही नैकु टरै ॥१२८०॥

कबितु ॥

फेरि तिन कोपि कै अयोधन मै स्याम कहि बीर बहु मारे सवछ सिंघ महा बल सै ॥
अतिरथी सति महारथी जुग सति तहा सिंधुर हजार हने स्याम जू के दल सै ॥
घने बाज मारे रनि पैदल संघारे भई रुधर रंगीन भूमि लहरै उछल सै ॥
घाइल गिरे सु मानो महा मतवारे ह्वै कै सोए रूमी तरै लाल डार कै अतलसै ॥१२८१॥

दोहरा ॥

बहुत सैन हनि जादवी बढियो गरब अपार ॥
मानु उतारियो क्रिसन प्रति बोलिओ कोप हकारि ॥१२८२॥
कहा भयो जो भूप दस मारे स्याम रिसाइ ॥
जिउ म्रिग बन तिन भछ कर लरे न हरि समुहाइ ॥१२८३॥
रिपु के बचन सुनंत ही बोले हरि मुसकाइ ॥
सवछ सिंघ तुअ मारि हो स्रयार सिंघ की नयाइ ॥१२८४॥
सवैया ॥
सिंघ निहार के जिउ सरदूल घनो बल कै रिस साथि तचायो ॥
जिउ गजराज लखियो बन मै म्रिगराज मनो अति कोप बढायो ॥
जिउ चितवा म्रिग पेख कै दउरत सवछ नरेस पै तिउ हरि धायो ॥
पउन के गउन ते आगे चलियो हरि को रथु दारुक ऐसे धवायो ॥१२८५॥
उत ते न्रिप सवछ भयो समुहे इत ते सु चलियो रिस कै बल भईया ॥
बान कमान क्रिपान लरे दोऊ आपसि मै बर जुधु करईया ॥
मार ही मार पुकारि अरे न टरे रन ते अति धीर धरईया ॥
स्याम ते राम ते जादव ते न डरियो सु लरियो बर बीर लरईया ॥१२८६॥

दोहरा ॥

अधिक जुधु जब तिन कीयो तब ब्रिजपति का कीन ॥
खड़ग धारि सिर सत्र को मारि जुदा करि दीन ॥१२८७॥
सवछ सिंघ जब मारियो समर सिंघ कीओ कोप ॥
नह भाजियो लखि समर को रहियो सु दिड़ पगु रोपि ॥१२८८॥
सवैया ॥
रोस कै बीर बली असि लै अति ही भट स्री जदुबीर के मारे ॥
अउर किते गिरे घाइल ह्वै कितने रन भूमि निहारि पधारे ॥
स्याम जू पै इह भाति कहियो समरेस बली तिह ते हम हारे ॥
कासी मै जिउ कलवत्र वहै तिम बीरन चीर के द्वै करि डारे ॥१२८९॥
बोलि कहियो हरि जू दल मै भट है कोऊ जो अरि संग लरै ॥
उह को बहु असत्र सहै तन मै अपने उहि ऊपर ससत्र करै ॥
निज पान मै पान धरे घन स्याम सु कोइ न बीरन लाज धरै ॥
रन मै जस को सोऊ टीको लहै समरेस के जुध ते नाहि टरै ॥१२९०॥

दोहरा ॥

बहुतु जुधु सुभटनि करियो कहा करै बलवान ॥
आहव सिंघ बली हुतो माग लीए तिह पान ॥१२९१॥
कबियो बाच दोहरा ॥
कोऊ प्रसन इह ठा करै किउ न लरै ब्रिज राज ॥
यह उतर है ताहि को कउतुक देखन काज ॥१२९२॥
सवैया ॥
आहव सिंघ बली हरि को भट सो तिह उपर कोप कै धायो ॥
संघर सिंघ हठी हठि सिउ न हटियो सु तहा अति जुधु मचायो ॥
आहव सिंघ को संघर सिंघ महा असि लै सिर काटि गिरायो ॥

ऐसे परियो धरि पै धर मानहु बज्र परियो भूअ कंपु जनायो ॥१२९३॥

कबितु ॥

भूप अनरुध सिंघ ठाढो हुतो स्याम तीर हरि जू बिलोक कै निकटि बोलि लयो है ॥
कीनो सनमान घन स्याम कहियो जाहु तुम रथहि धवाइ चलियो रन माझ गयो है ॥
तीर तरवारन को सैथी जमदारन को घटका दुइ तिही ठउर महा जुधु भयो है ॥
जैसे सिंघ म्रिग को सिचानो जैसे चिरीआ को तैसे हरि बीर को समर सिंघ हयो है ॥१२९४॥
जैसे कोऊ अउखदि के बल कबि स्याम कहै दूर करे सति बैद रोग संनिपात को ॥
जैसे कोऊ सुकबि कुकबि के कबित सुनि सभा बीच दूखि करि मानत न बात को ॥
जैसे सिंघ नाग को हनत जल आग को अमल सुर राग को सचिंत नर गात को ॥
तैसे ततकाल हरि बीर मार डारियो जैसे लोभ हूं ते महा गुनि नासै तम प्रात को ॥१२९५॥
बीरभद्र सिंघ बासुदेव सिंघ बीर सिंघ बल सिंघ कोप करि अरि समुहे भए ॥
समर के बीच जहा ठाढो है समर सिंघ ताही को निहारि रूप पावक से ह्वै गए ॥
आयुध संभारि लीने जुध मै सबै प्रबीने स्याम जू के बीर चारो ओर हूं ते आ खए ॥
ताही समे बलवान तान के कमान बान चारो न्रिप हरि जू के मारि छिन मै लए ॥१२९६॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
जब चारो ई बीर हने रन मै तब अउरन सिउ हरि यौ उचरै ॥
अब को भट है हमरे दल मै इह सामुहे जाइ कै जुध करै ॥
अति ही बलवान सो धाइ कै जाइ कै घाइ करै सु लरै न डरै ॥
सब सिउ इम स्याम पुकारि कहियो कोऊ है अरि को बिनु प्रान करै ॥१२९७॥
राछस थो इक स्याम की ओर सोऊ चल कै अरि ओर पधारियो ॥
क्रूरधुजा तिह नाम कहै जग सो तिह सो इह भाति उचारियो ॥
मारत हो रे संभारु अबै कहि या बतीया धनु बान संभारियो ॥
ता समरेस को बान हनियो रहियो ठउर मनो कई दिवस को मारियो ॥१२९८॥

दोहरा ॥

क्रूरधुजा रन मै हन्यो समर सिंघ को कोपि ॥
सकति सिंघ के बधन को बहुर रहिओ पगु रोपि ॥१२९९॥
क्रूरधुज बाच ॥

कबितु ॥

गिरि सो दिखाई देत क्रूर धुज आहव मै कहै कबि राम सत्र बध को चहत है ॥
सुनि रे सकति सिंघ मारियो जिउ समर सिंघ तैसे हउ हनि हो तू हम सो खहत है ॥
ऐसे कहि गदा गहि बड़े ब्रिछ के समान लीन असि पानि अउर ससत्रनि सहत है ॥
बहुरो पुकारि दैत कहियो है निहारि न्रिप तो मै कोऊ घरी पल जीवन रहत है ॥१३००॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ सुनि अरि सबदि बोलियो कोपु बढाइ ॥
जानत हो घन क्वार को गरजत बरसि न आइ ॥१३०१॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै तिह बात निसाचर जी अपुने अति कोप भरिओ ॥
असि लै तिह सामुहे आइ अरियो सकतेस बली नही नैकु डरिओ ॥
बहु जुध कै अंतरि धिआन भयो नभि मै प्रगटियो ते उचरिओ ॥
अब तोहि संघारित हो पल मै धनु बान संभार कै पानि धरिओ ॥१३०२॥

दोहरा ॥

बानन की बरखा करत नभ ते उतरियो क्रूर ॥

पुनि आयो रन भूमि मै अधिक लरियो बर सूर ॥१३०३॥
सवैया ॥
बीरन मार कै दैत बली अपने चित मै अति ही हरखिओ है ॥
ही तजि संक निसंक भयो सकतेस संघारबे को सरखिओ है ॥
जिउ चपला चमकै दमकै बरि चाप लीयो कर मै करखिओ है ॥
मेघ परे बर बूंदन जिउ सर जाल करालनि तिउ बरखिओ है ॥१३०३॥
सोरठा ॥
पग न टरिओ बर बीर सकति सिंघ धुज क्रूर ते ॥
अचल रहिओ रन धीर जिउ अंगद रावन सभा ॥१३०५॥
सवैया ॥
भाजत नाहिन आहव ते सकतेस महा बलवंत संभारिओ ॥
जाल जितो अरि के सर को तब ही अगनायुध साथ प्रजारियो ॥
पानि लयो धनु बान रिसाइ कै क्रूरधुजा सिर काटि उतारियो ॥
ऐसे हन्यो रिपु जिउ मघवा बल कै ब्रितरासुर दैत संघारियो ॥१३०६॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ जब क्रूरधुज मारियो भूमि गिराइ ॥
जिउ बरखा रितु के समै दउर परे अरिराइ ॥१३०७॥
सवैया ॥
काकधुजा निज भ्रात निहारि हन्यो तब ही रिस कै वहु धायो ॥
दात कीए कई जोजन लउ गिरि सो तिह आपनो रूप बनायो ॥
रोम कीए तरु से तन मै करि आयुध लै रनि भूमहि आयो ॥
स्री सकतेस तन्रयो करि चाप सु एक ही बान सिउ मारि गिरायो ॥१३०८॥
दैत चमूं पति ठाढो हुतो तिह को बर कै न्रिप ऊपरि धायो ॥
राछस सैन अछूहनि लै अपने मन मै अति कोप बढायो ॥
बान बनाइ चढियो रन को तिह आपन नामु कुरूप कहायो ॥
ऐसे चलियो अरि के बध को मनो सावन को उनए घनु आयो ॥१३०९॥
हेरि चमूं बहु सत्रन की सकतेस बली मनि रोस भयो है ॥
धीरज बाधि अयोधन माझि सरासनि बान सु पानि लयो है ॥
त्रास सबै तजि कै लजि कै अरि के दल के समुहे सु गयो है ॥
दानव मेघ बिडारन को रन मै मनो बीर समीर भयो है ॥१३१०॥
अंत्र ध्यान कुरूप भयो नभ मै तिह जाइ कै बैन उचारे ॥
जैहो कहा हम ते भजि कै गज बाज अनेक अकास ते डारे ॥
रूख पखान सिला रथ सिंघ धराधर रीछ महा अहि कारे ॥
आनि परे रन भूमि मै जोर सो भूप बचिओ सिगरे दबि मारे ॥१३११॥
जेतक डारि दए न्रिप पै गिरि तेतक बानन साथ निवारे ॥
जे रजनीचर ठाढे हुते सकतेस बली तिह ओरि पधारे ॥
पानि क्रिपान लए बलवान सु घाइल एक करे इक मारे ॥
दैत चमूं न बसात कछू अपने छल छिद्रनि कै सब हारे ॥१३१२॥
न्रिप ने बहुरो धनु बान लयो रिस साथ कुरूप के बीर हने ॥
जेऊ जीवत थे करि आयुध लै अरराइ परे बरबीर घने ॥
जेऊ आनि लरे बिनु प्रान करे रुपि ठाढे लरे कोऊ स्रउन सने ॥
मनि यौ उपमा उपजी रितुराज समै द्रुम किंसक लाल बने ॥१३१३॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ तिह समर मै बहुरो ससत्र संभारि ॥
असुर सैन मै भट प्रबल ते बहु दए संघार ॥१३१४॥
सवैया ॥
बिक्रतानन नाम करूप को बाधव कोप भयो असि पानि गहिओ ॥

कबि स्याम कहै रन मै तिह को मन मै अरि के बधबे को चहिओ ॥
सु धवाइ कै स्यंदन आयो तहा न टरिओ वह जुध ही को उमहिओ ॥
सुनि रे सकतेस संभारि संघारत हो तुम को इह भाति कहिओ ॥१३१५॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ यहि बचनि सुनि लीनी सकति उठाइ ॥
चपला सी रवि किरन सी अरि तकि दई चलाइ ॥१३१६॥
सवैया ॥
लागि गई बिक्रतानन के उरि चीर कै ता तन पार भई ॥
जिह ऊपरि कंचन की सब आक्रित है सब ही सोऊ लोह मई ॥
लसकै उरि राकस के मध यौ उपमा तिह की कबि भाख दई ॥
मनो राहु बिचार कै पूरब बैर को सूरज की करि लील लई ॥१३१७॥

दोहरा ॥

उत बरछी के लगत ही प्रान तजे बलवान ॥
सब दैतन को मन डरिओ हा हा कीओ बखान ॥१३१८॥
बिक्रतानन जब मारिओ सकति सिंघ रनधीरि ॥
सो कुरूप अविलोक कै सहि न सकिओ दुखु बीर ॥१३१९॥
सवैया ॥
बिक्रतानन को बध पेखि कुरूप सु काल को प्रेरिओ अकास ते आयो ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि लै कर मै अति जुध मचायो ॥
स्री सकतेस बड़ धनु तान कै बान महा अरि ग्रीव लगायो ॥
सीस परिओ कटि कै धरनी सु कबंध लए असि को रनि धायो ॥१३२०॥
कबियो बाच दोहरा ॥
सकति सिंघ के सामुहे गयो लीए करवार ॥
एक बान न्रिप ने हनियो गिरियो भूमि मझारि ॥१३२१॥
जब कुरूप सैना सहित भूपति दयो संघार ॥
तब जादव लख समर मै कीनो हाहाकार ॥१३२२॥
बहुतु लरियो अरि बीर रनि कहिओ स्याम सो राम ॥
किउ न लरै कहियो क्रिसन जू सकति सिंघ जिह नाम ॥१३२३॥

चौपई ॥

तब हरि जू सब सो इम कहियो ॥
सकति सिंघ बध हम ते रहियो ॥
इन अति हित सो चंडि मनाई ॥
ता ते हमरी सैन खपाई ॥१३२४॥

दोहरा ॥

ता ते तुम हूं चंडि की सेव करहु चितु लाइ ॥
जीतन को बरु देइगी अरि तब लीजहु घाइ ॥१३२५॥
जागत जा की जोति जगि जलि थलि रही समाइ ॥
ब्रहम बिसनु हर रूप मै त्रिगुनि रही ठहराइ ॥१३२६॥
सवैया ॥
जा की कला बरतै जग मै अरु जा की कला सब रूपन मै ॥
अरु जा की कला बिमला हर के कमला पति के कमला तन मै ॥
पुनि जा की कला गिरि रूखन मै ससि पूखन मै मघवा घन मै ॥
तुम हूं नही जानी भवानी कला जग मानी को ध्यानु करो मन मै ॥१३२७॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ बरु सकति सो मागि लयो बलवानि ॥
ताही के प्रसादि ते रन जीतत नही हानि ॥१३२८॥
सिव सूरज ससि सचीपति ब्रहम बिसनु सुर कोइ ॥
जो इह सो रिस कै लरै जीत न जै है सोइ ॥१३२९॥
सवैया ॥
जउ हर आइ भिरे इह सो नही देखत हों बलु है तिन मो ॥
चतुरानन अउरु खड़ानन बिसनु घनो बल है सु कहिओ जिन मो ॥
पुनि भूत पिसाच सुरादिक जे असुरादिक है गनती किन मो ॥
जदुबीर कहियो सब बीरन सों सु इतो बल भूप धरै इन मो ॥१३३०॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
जुधु करो तुम जाहु उतै इत हउ ही भवानी को जापु जपैहउ ॥
ऐसे कहियो जदुबीर अबै अति ही हित भाव ते थाप थपैहउ ॥
है के प्रतछ कहै बर माग हनो सकतेसि इहै बरु लैहउ ॥
तउ चड़ कै अपुने रथ पै अब ही रन मै इह को बध कैहउ ॥१३३१॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
बीर पठे जदुबीर उतै इत भूमि मै बैठि सिवा जपु कीनो ॥
अउर दई सुधि छाडि सबै तब ताही के ध्यान बिखै मनु दीनो ॥
चंडि तबै परतछ भई बरु मागहु जो मन मै जोई चीनो ॥
या अरि आज हनो रन मै घन स्याम जू मागि इहै बर लीनो ॥१३३२॥
यौ बरु पाइ चड़ियो रथ पै हरि जू मन बीच प्रसंनि भयो ॥
जपु कै जु भवानी ते स्याम कहै अरि मारन को बरु माग लयो ॥
सब आयुध लै बरबीर बली हू के सामुहे तउ जदुबीर गयो ॥
मनो जीत के अंकुर जात रहियो हुतो या बर ते उपजियो सु नयो ॥१३३३॥

दोहरा ॥

सकति सिंघ उत समर मै बहुत हने बर सूर ॥
तब ही तिन के तनन सिउ भूमि रही भरपूरि ॥१३३४॥
सवैया ॥
जुधु करे सकतेस बली तिह ठा हरि आइ कै रूपु दिखायो ॥
जात कहा रहु रे थिर ह्वै अब हउ तुम पै बलु कै इत आइओ ॥
कोप गदा कर लै घन स्याम सु सत्र के सीस पै घाउ लगायो ॥
प्रान तजिओ मनि चंडि भजिओ तिह को तनु ताहि के लोकि सिधारिओ ॥१३३५॥
प्रान चलियो तिह को तब ही जब ही तन चंडि के लोग पधारिओ ॥
सूरज इंद्र सनादिक जे सुर हूं मिलि कै जसु ताहि उचारिओ ॥
ऐसो न आगे लरियो रन मै कोऊ अपनी बैसि मै नाहि निहारिओ ॥
स्री सकतेस बली धनि है हरि सो लरि कै परलोकि सिधारिओ ॥१३३६॥

चौपई ॥

जबै चंडि को हरि बरु पायो ॥
सकति सिंघ को मारि गिरायो ॥
अउर सत्र बहु गए पराई ॥
रवि निहारि ज्यों तम न रहाई ॥१३३७॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे दुआदस भूप सकति सिंघ सुधा बधहि धयाइ समापतं ॥*

अथ पंच भूप जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

असम सिंघ जस सिंघ पुनि इंद्र सिंघ बलवान ॥
अभै सिंघ सूरो बडो इछ सिंघ सुर गिआन ॥१३३८॥
चमूं भजी भूपन लखी चले जुध के काज ॥
अहंकार पाचो कीओ अजु हनि है जदुराज ॥१३३९॥
उत ते आयुध लै सबै आए कोप बढाइ ॥
इत ते हरि समुहे भए स्यंदन सीघ्र धवाइ ॥१३४०॥
सवैया ॥
सुभटेस महा बलवंत तबै जदुबीर की ओर ते आगे ही धायो ॥
पाच ही बान लए तिह पानि बडो धनु तान कै कोप बढायो ॥
एक ही एक हनिओ सर पाचन भूपनि को तिनि मारि गिरायो ॥
तूलि जिउ जारि दए न्रिप पाच मनो न्रिप आंच सु बेख बनायो ॥१३४१॥

दोहरा ॥

सुभट सिंघ रुपि समर मै कीयो प्रचंड बलु जासु ॥
नरपति आए पाच बर कीनो तिन को नास ॥१३४२॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुधु प्रबंधे पाच भूप बधह ॥

अथ दस भूप जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

अउर भूप दस कोप कै धाए संग लै बीर ॥
जुध बिखै दुरमद बडे महारथी रनधीर ॥१३४३॥
सवैया ॥
आवत ही मिल कै दस हूं न्रिप स्री सुभटेस को बान चलाए ॥
नैनन हेरि सोऊ हरि बीर लयो धनु बान सो काटि गिराए ॥
उतर सिंघ को सीस कटिओ तनि उजल सिंघ के घाइ लगाए ॥
उदम सिंघ हनिओ बहुरो असि लै करि संकर सिंघ से धाए ॥१३४४॥

दोहरा ॥

ओज सिंघ को हत कीयो ओट सिंघ को मारि ॥
उध सिंघ उसनेस अरु उतर सिंघ संघारि ॥१३४५॥
भूप नवो जब इह हने एकु बचियो संग्रामि ॥
नही भाजियो बलवंत सो उग्र सिंघ तिह नामु ॥१३४६॥
सवैया ॥
उग्र बली पड़ि मंत्र महा सर स्री सुभटेस की ओरि चलायो ॥
लाग गयो तिह के उर मै बर कै तन भेद कै पार परायो ॥
भूमि परियो मरि बान लगे इह को जसु यौ कबि स्याम सुनायो ॥
भूप हने कीए पाप घने जम ने उडिया मनो नाग डसायो ॥१३४७॥

दोहरा ॥

जादव एक मनोज सिंघ तब निकसियो बर बीर ॥
उग्र सिंघ पर क्रोध करि चलियो महा रन धीर ॥१३४८॥
सवैया ॥

जादव आवत पेखि बली अरि बीर महा रन धीर संभारिओ ॥
लोह मई गरूओ बरछा गहि कै बलि सो करि कोप प्रहारिओ ॥
लागत सिंघ मनोज हनिओ तिह प्रानन लै जम धामि पधारिओ ॥
मार कै ताहि लीयो धनु बान बली बलु कै बलि को ललकारिओ ॥१३४९॥
आवत सत्रहि पेखि हलायुध कोप कीयो गहि मूसर धायो ॥
आपसि मै बलवंत अरै दोऊ स्याम कहै अति जुधु मचायो ॥
उग्र नरेस के लागि गयो सिरि मूसल दाइ बचाइ न आयो ॥
भूमि गिरियो मर कै जब ही मुसली अपना तब संख बजायो ॥१३५०॥

◄ इति दस भूप सैना सहित बधहि धयाइ समापतं ॥

दस भूप सहित अनूप सिंघ जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

दस भूपन अविलोकियो उग्र हनियो बरबंड ॥
जुध काज आवत भए जिह बल भुजा प्रचंड ॥१३५१॥
सवैया ॥
अनूपम सिंघ अपूरब सिंघ चले रन कउ मनि कोपु बढायो ॥
आगे हुइ कंचन सिंघ चलियो बलि आवत को तिहि बान लगायो ॥
स्यंदन हूं ते गिरियो म्रित हुइ तब जोति सबूह तहा ठहरायो ॥
बान लगियो हनुमानि किधो रवि को फलु जान कै भूमि गिरायो ॥१३५२॥

दोहरा ॥

कोप सिंघ को हत कीयो कोटि सिंघ को मारि ॥
अउर अपूरब सिंघ हतिओ मोह सिंघ संघारि ॥१३५३॥

चौपई ॥

कटक सिंघ को पुनि हन दयो ॥
क्रिसन सिंघ को तब बध कयो ॥
कोमल सिंघहि बान लगायो ॥
बेग ताहि जम धामि पठायो ॥१३५४॥
पुनि कनकाचल सिंघ संघारिओ ॥
अनूपम सिंघ नरन ते हारिओ ॥
बलि कै आनि सामुहे भयो ॥
उत ते राम ओर सो गयो ॥१३५५॥

दोहरा ॥

बली अनूपम सिंघ अति बल सो लरिओ रिसाइ ॥
बहुतु बिसन भट जुधु करि जमपुरि दए पठाइ ॥१३५६॥
सवैया ॥
सिंघ क्रितासत्र आहव मै कबि राम कहै रिस कै अति धायो ॥
आइ कै सिंघ अनूपहि सिउ करि मै असि लै तब जुध मचायो ॥
तानि लयो धनु बान महा बर कै उरि सिंघ अनूप के लायो ॥
लागत प्रान चलियो तब ही रवि मंडल भेद कै पारि परायो ॥१३५७॥
ईस सिंघ सकंध बली सु अयोधन मै इह ऊपरि आए ॥
पेखि क्रितासत्र सिंघ तबै सर तीछन आवत ताहि लगाए ॥
चंद्रक बान लगे तिन कउ दुहु के सिर काट कै भूमि गिराए ॥
यौ उपमा उपजी मन मै मनो मुंडन को घरि ही धरि आए ॥१३५८॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे दस भूप अनूप सिंघ सहित बध धिआइ समापतं ॥

अथ करम सिंघादि पंच भूप जुध कथनं ॥

छपै छंद ॥

करम सिंघ जय सिंघ अउर भट रन मै आए ॥
जालप सिंघ अरु गजा सिंघ अति कोप बढाए ॥
जगत सिंघ न्रिप पाच महा सुंदर सूरे बर ॥
तुमल करियो संग्राम घने मारे जादव नर ॥
तब ससत्र क्रितासत्र सिंघ कसि चतुर भूप मिरतक कीए ॥
इक जगत सिंघ जीवत बचियो छत्रापन द्रिढ धर हीए ॥१३५९॥

चौपई ॥

करम सिंघ जालप सिंघ धाए ॥
गजा सिंघ जै सिंघ जू आए ॥
जगत सिंघ अति गरबु जु कीनो ॥
ता ते काल प्रेरि रनि दीनो ॥१३६०॥

दोहरा ॥

करम सिंघ जालप सिंघ गजा सिंघ बरबीर ॥
जय सिंघ सहित क्रितास सिंघ हने चार रनधीर ॥१३६१॥
सवैया ॥
सिंघ क्रितास अयोधन मै हरि की दिस के न्रिप चार संघारे ॥
अउर हने सु बनैत बने जदुबीर घने जमलोकि सिधारे ॥
जाइ भिरियो जगतेस बली संगि आपने बान कमान संभारे ॥
अउर जिते रनि ठाढे हुते भट पेखि तिनै सर जाल प्रहारे ॥१३६२॥
मारि बिदार दयो दल को बहुरो कर मै करवार संभारिओ ॥
धाइ कै जाइ कै आइ अरिओ जगतेस के सीस हूं हाथ प्रहारिओ ॥
दुइ धर होइ कै भूमि गिरियो रथ ते तिह को कबि भाव बिचारिओ ॥
मानो पहार के ऊपरि सालहि बीज परी तिह दुइ कर डारिओ ॥१३६३॥

दोहरा ॥

कठिन सिंघ हरि कटक ते आयो या पर धाइ ॥
मत दुरद जिउ सिंघ पै आवत कोप बढाइ ॥१३६४॥
सवैया ॥
आवत ही अरि को तिह हेरि सु एक ही बान के संगि संघारिओ ॥
अउर जितो दल साथ हुतो तिह को घरी एक बिखै हनि डारिओ ॥
बीर घने जदु बीरन के हति कोप कै स्याम की ओरि निहारिओ ॥
आइ लरो न डरो हरि जू रनि ठाढे कहा इह भाति उचारिओ ॥१३६५॥
तउ हरि जू करि कोप चलियो तब दारुक स्यंदन को सु धवायो ॥
पानि लीयो असि स्याम संभार कै ताहि हकार कै ताकि चलायो ॥
ढाल क्रितासत्र सिंघ लई हरि ताही की ओट कै वार बचायो ॥
आपनी काढि क्रिपान मियान ते दारुक के तन घाउ लगायो ॥१३६६॥
जुध करै करवारन को मन मै अति ही दोऊ क्रोध बढाए ॥
स्री हरि जू अरि घाइ लयो तब ही हरि को रिपु घाइ लगाए ॥
कउतकि देखि दोऊ ठटके दल बिओम ते देवन बैन सुनाए ॥

लागी अवार मुरारि सुनो पल मै मधु से मुर से तुम घाए ॥१३६७॥
चार महूरत जुधु भयो थक कै हरि जू इह घात बिचारिओ ॥
मारहु नाहि कहियो सु सही मुरि कै अरि पाछे की ओरि निहारिओ ॥
ऐसे ही तीछन लै असि स्री हरि सत्र की ग्रीव के ऊपर झारिओ ॥
ऐसी ए भाति हनिओ रिपु कउ अपने दल को सभ त्रास निवारियो ॥१३६८॥
यौ अरि मारि लयो रन मै अति ही मन मै हरि जू सुखु पायो ॥
आपनी सैन निहार मुरारि महा बलु धार कै संख बजायो ॥
संत सहाइक स्री ब्रिज नाइक है सब लाइक नाम कहायो ॥
स्री हरि जू मुख ऐसे कहियो चतुरंग चमूं रन जुधु मचायो ॥१३६९॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे पाच भूप बधह समापतमं ॥*

अथ खड़ग सिंघ जुध कथनं ॥

दोहरा ॥

तिह भूपति को मित्र इक खड़ग सिंघ तिह नाम ॥
पैरे समर समुद्र बहु महारथी बल धाम ॥१३७०॥
क्रुधत ह्वै अति मन बिखै चार भूप तिह साथ ॥
जुधु करनि हरि सिउ चलियो अमित सैन लै साथ ॥१३७१॥

छपै छंद ॥

खड़ग सिंघ बर सिंघ अउर न्रिप गवन सिंघ बर ॥
धरम सिंघ भव सिंघ बडे बलवंत जुधु कर ॥
रथ अनेक संग लीए सुभट बहु बाजत सजत ॥
दस हजार गज मत चले घनीअर जिम गजत ॥
मिलि घेरि लीओ तिन कउ तिनो सु कबि स्याम जसु लखि लीयो ॥
रितु पावस मै घन घटा जिउ घोर मनो नर बोलीओ ॥१३७२॥

दोहरा ॥

जादव की सैना हुते निकसे भूप सु चार ॥
नाम सरस सिंघ बीर सिंघ महा सिंघ सिंघ सार ॥१३७३॥
खड़ग सिंघ के संग न्रिप चारि चारु मतिवंत ॥
हरि की ओर चले मनो आयो इन को अंतु ॥१३७४॥
सरस महा अउ सार पुनि बीर सिंघ ए चार ॥
जादव सैना ते तबै निकसे अति बलु धारि ॥१३७५॥
हरि की दिस के चतुर न्रिप तिन वह लीने मारि ॥
खड़ग सिंघ अति कोप करि दीनो इनह संघारि ॥१३७६॥
सवैया ॥
स्री हरि ओर ते अउर नरेस चले तिन संगि महा दलु लीनो ॥
सूरत सिंघ सपूरन सिंघ चलियो बर सिंघ सु कोप प्रबीनो ॥
अउ मति सिंघ सजियो तन कउच सु ससत्रन असत्रन माझि प्रबीनो ॥
धाइ कै स्री खड़गेस के संगि जु चार ही भूपन आहव कीनो ॥१३७७॥

दोहरा ॥

इत चारो भूपति लरै खड़ग सिंघ के संगि ॥
उत दोऊ दिस की लरत सबल सैन चतुरंगि ॥१३७८॥

कबितु ॥

रथी संगि रथी महारथी संगि महारथी सुवार सिउ सुवार अति कोप कै कै मन मै ॥
पैदल सिउ पैदल लरत भए रन बीच जुध ही मै राखिओ मन राखिओ न ग्रिहन मै ॥
सैथी जमधार तरवारै घनी स्याम कहै मुसली त्रिसूल बान चले ता ही छिन मै ॥
दंतन सिउ दंती पै बजंत्रन सिउ बजंत्री लरिओ चारन सिउ चारन भिरिओ है ताही रन मै ॥१३७९॥
सवैया ॥
बहुरो सर सिंघ हतिओ रिस कै महा सिंघहि मारि लइओ जब ही ॥
पुनि सूरति सिंघ सपूरन सिंघ सु सुंदर सिंघ हनिओ तब ही ॥
बर स्री मति सिंघ को सीस कटिओ लखि जादव सैन गई दब ही ॥
नभि मै गन किंनर स्री खड़गेस की कीरति गावत है सब ही ॥१३८०॥

दोहरा ॥

छिअ भूपन को छै कीयो खड़ग सिंघ बल धाम ॥
अउरो भूपति तीन बर धाइ लरै संग्राम ॥१३८१॥
करन सिंघ पुनि अरन सी सिंघ बरन सुकुमार ॥
खड़ग सिंघ रुपि रनि रहिओ ए तीनो संघारि ॥१३८२॥
सवैया ॥
मार कै भूप बडे रन मै रिस कै बहुरो धन बान लीयो ॥
सिर काटि दए बहु सत्रन के करि अत्रन लै पुनि जुधु कीयो ॥
जिमि रावन सैन हती न्रिप राघव तिउ दलु मारि बिदार दीयो ॥
गन भूत पिसाच स्रिंगालन गीधन जोगिन स्रउन अघाइ पीयो ॥१३८३॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ करि खड़ग लै रुद्र रसहि अनुराग ॥
यौ डोलत रनि निडर हुइ मानो खेलत फागु ॥१३८४॥
सवैया ॥
बान चले तेई कुंकम मानहु मूठ गुलाल की साग प्रहारी ॥
ढाल मनो डफ माल बनी हथ नाल बंदूक छुटे पिचकारी ॥
स्रउन भरे पट बीरन के उपमा जनु घोर कै केसर डारी ॥
खेलत फागु कि बीर लरै नवलासी लीए करवार कटारी ॥१३८५॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ अति लरत है रस रुद्रहि अनुरागि ॥
रन चंचलता बहु करत जन नटूआ बडभागि ॥१३८६॥
सवैया ॥
सारथी आपने सो कहि कै सु धवाइ तही रथ जुधु मचावै ॥
ससत्र प्रहारत सूरन पै करि हाथन को अरथाव दिखावै ॥
दुंदभि ढोल म्रिदंग बजै करवार कटारन ताल बजावै ॥
मार ही मार उचार करै मुखि यौ करि न्रित अउ गान सुनावै ॥१३८७॥
मार ही मार अलाप उचारत दुंदभि ढोल म्रिदंग अपारा ॥
सत्रन के सिर अत्र तराक लगै तिहि तालन को ठनकारा ॥
जूझि गिरे धरि रीझ कै देत है प्रानन दान बडे रिझिवारा ॥
निरत करै नट कोप लरै भट जुध की ठउर कि न्रित अखारा ॥१३८८॥
रन भूमि भई रंग भूमि मनो धुनि दुंदभि बाजे म्रिदंग हीयो ॥
सिर सत्रन के पर अत्र लगै ततकार तराकनि ताल लीयो ॥
असि लागत झूमि गिरै मरि कै भट प्रानन मानहु दान कीयो ॥
बर न्रित करै कि लरै नट ज्यों न्रिप मार ही मार सु राग कीयो ॥१३८९॥

दोहरा ॥

इतो जुध हरि हेरि कै सबहनि कहियो सुनाइ ॥
को भट लाइक सैन मै लरै जु या संगि जाइ ॥१३९०॥

चौपई ॥

घन सिंघ घात सिंघ दोऊ जोधे ॥
जात न किसी सुभट ते सोधे ॥
घनसुर सिंघ घमंड सिंघ धाए ॥
मानहु चारो काल पठाए ॥१३९१॥
तब तिह तकि चहूंअन सर मारे ॥
चारो प्रान बिना करि डारे ॥
स्यंदन अस्व सूत सब घाए ॥
सैन सहित जमलोकि पठाए ॥१३९२॥

दोहरा ॥

चपल सिंघ अरु चतर सिंघ चंचल स्री बलवान ॥
चित्र सिंघ अर चउप सिंघ महारथी सुर ग्यान ॥१३९३॥
छत्र सिंघ अरु मान सिंघ सत्र सिंघ बलबंड ॥
सिंघ चमूंपति अति बली भुज बलि ताहि अखंड ॥१३९४॥
सवैया ॥
भूप दसो रिसि कै कबि स्याम कहै खड़गेस के ऊपर धाए ॥
आवत ही बलि कै धनु लै सु निखंगन ते बहु बान चलाए ॥
बाज हने सति दुइ अरु गै सति त्रै सति बीर महा तब घाए ॥
बीस रथी अउ महारथि तीस अयोधन मै जमलोकि पठाए ॥१३९५॥
पुनि धाइ हने सति गै हय दुइ सति अयुत पदात हने रन मै ॥
सु महारथी अउर पचास हने कबि स्याम कहै सु तही छिन मै ॥
दस हूं न्रिप की बहु सैन भजी लखि जिउ म्रिग केहरि कउ बन मै ॥
तिह संघर मै खड़गेस बली रुपि ठाढो रहिओ रिस कै मन मै ॥१३९६॥

कबितु ॥

दसो भूप रन पारियो सैन कउ बिपत डारिओ बीर प्रन धारिओ न डरै है काहूं आन सो ॥
ए ई दस भूपति रिसाइ समुहाइ गए उत आइ सउहे भयो महा सूर मान सो ॥
कहै कबि स्याम अति क्रुध हुइ खड़ग सिंघ तान कै कमान को लगाई जिह कान सो ॥
गजराज भारे अरु जुध के करारे दसो मारि डारे तिन दस दस बान सो ॥१३९७॥

दोहरा ॥

पाच बीर जदुबीर के गए सु अरि पर दउरि ॥
छकत सिंघ अरु छत्र सिंघ छोह सिंघ सिंघ गउर ॥१३९८॥
सोरठा ॥
छलबल सिंघ जिह नाम महाबीर बल बीर को ॥
लए खड़ग करि चाम खड़ग सिंघ पर सो चलिओ ॥१३९९॥

चौपई ॥

जब ही पाच बीर मिलि धाए ॥
खड़ग सिंघ के ऊपर आए ॥
खड़ग सिंघ तब ससत्र संभारे ॥
सब ही प्रान बिना करि डारे ॥१४००॥

दोहरा ॥

दुआदस जोधे क्रिसन के अति बलबंड अखंड ॥
जीत लयो है जगत जिन बल करि भुजा प्रचंड ॥१४०१॥
सवैया ॥
बालम सिंघ महामति सिंघ जगाजत सिंघ लए असि धायो ॥
सिंघ धनेस क्रिपावत सिंघ सु जोबन सिंघ महा बर पायो ॥
जीवन सिंघ चलियो जग सिंघ सदा सिंघ लै जस सिंघ रिसायो ॥
बीरम सिंघ लए सकती कर मै खड़गेस सो जुधु मचायो ॥१४०२॥

दोहरा ॥

मोहन सिंघ जिहि नाम भट सोऊ भयो तिन संगि ॥
ससत्र धारि कर मै लीए साजियो कवच निखंग ॥१४०३॥
सवैया ॥
खड़गेस बली कहु राम भनै सभ भूपन बान प्रहार करिओ है ॥
ठाढो रहिओ द्रिड़ भू पर मेरु सो आहव ते नही नैकु डरिओ है ॥
कोप सिउ ओप बढी तिह आनन ता छबि को कबि भाउ धरिओ है ॥
रोसि की आग प्रचंड भई सर पुंज छुटे मानो घीउ परिओ है ॥१४०४॥
जो दल हो हरि बीरनि के संग सो तो कछू अरि मारि लयो है ॥
फेरि अयोधन मै रुप कै असि लै जीय मै पुनि कोपु भयो है ॥
मारि बिदार दयो घट गयो दल सो कबि के मन भाउ नयो है ॥
मानहु सूर प्रलै को चड़ियो जलु सागर को सब सूकि गयो है ॥१४०५॥
प्रथमे तिन की भुज काटि दई फिर कै तिन के सिर काटि दए ॥
रथ बाजन सूत समेत सबै कबि स्याम कहै रन बीच छए ॥
जिन की सुख के संग आयु कटी तिन की लुथ जंबुक गीध खए ॥
जिन सत्र घने रन माझि हने सोऊ संघर मै बिनु प्रान भए ॥१४०६॥
द्वादस भूपन को हनि कै कबि स्याम कहै रन मै न्रिप छाजियो ॥
मानहु दूर घनो तमु कै दिन आधिक मै दिवराज बिराजियो ॥
गाजत है खड़गेस बली धुनि जा सुनि कै घन सावन लाजियो ॥
काल प्रलै जिउ किरारन ते बढि मानहु नीरध कोप कै गाजियो ॥१४०७॥
अउर किती जदुबीर चमूं न्रिप इउ पुरखति दिखाइ भजाई ॥
अउर जिते भट आइ भिरे तिन प्रानन की सब आस चुकाई ॥
लै कर मै असि स्याम भने जिन धाइ कै आइ कै कीनी लराई ॥
अंत को अंत के धामि गए तिन नाहक आपनी देह गवाई ॥१४०८॥
बहुरो रन मै रिस कै दस सै गज ऐत तुरंग चमूं हनि डारी ॥
दुइ सति सियंदन काटि दए बहु बीर हने बलु कै असि धारी ॥
बीस हज़ार पदात हने द्रुम से गिर है रन भूमि मंझारी ॥
मानो हनूं रिसि रावन बाग की मूल हूं ते जर मेख उचारी ॥१४०९॥
राछस अभ हुतो हरि की दिसि सो बलु कै न्रिप ऊपर धायो ॥
ससत्र संभारि सबै अपुने चपला सम लै असि कोप बढायो ॥
गाजत ही बरखियो बरखा सर स्याम कबीसर यो गुन गायो ॥
मानहु गोपन के गन पै अति कोप कीए मघवा चढि आयो ॥१४१०॥
दैत चमूं घन जिउ उमडी मन मै न कछू न्रिप हूं डरु कीनो ॥
कोप बढाइ घनो चित मै धनु बान संभारि भले कर लीनो ॥
खैच कै कान प्रमान कमान सु छेद ह्रिदा सर सो अरि दीनो ॥
मानहु बाबी मै साप धसिओ कबि ने जसु ता छबि को इमि चीनो ॥१४११॥
बानन संगि सु मारि कै सत्रन राम भने असि सो पुनि मारिओ ॥
स्रउन समूह परिओ तिह ते धरि प्रान बिना करि भू पर डारिओ ॥
ता छबि की उपमा लखि कै कबि ने मुखि ते इह भाति उचारिओ ॥
खग लगियो तिह को नही मानहु लै कर मै जम दंड प्रहारिओ ॥१४१२॥

राछस मारि लयो जब ही तब राछस को रिस कै दलु धायो ॥
आवत ही कबि स्याम कहै बिबिधायुध लै अति जुधु मचायो ॥
दैत घने तह घाइल है बहु घाइन सो खड़गेसहि घायो ॥
सो सहि कै असि को गहि कै न्रिप जुध कीयो नहीं घाउ जतायो ॥१४१३॥
धाइ परे सब राछसि या पर है तिन कै मनि कोपु बढिओ ॥
गहि बान कमान गदा बरछी तिन मिआनहु ते करवार कढिओ ॥
सब दानव तेज प्रचंड कीयो रिस पावक मै तिन अंग डढिओ ॥
इह भाति प्रहारत है न्रिप कउ तन कंचन मानो सुनार गढिओ ॥१४१४॥
जिन हूं न्रिप के संगि जुध कीयो सु सबै इन हूं हति कै तब दीने ॥
अउर जिते अरि जीत बचै तिन के बध कउ करि आयुध लीने ॥
तउ इन भूप सरासन लै कीए सत्रन के तन मुंडन हीने ॥
जो न डरे सु लरे पुनि धाइ निदान वही न्रिप खंडन कीने ॥१४१५॥
बीर बडो इक दैत हुतो तिनि कोप कीयो अति ही मन मै ॥
इह भाति सो भूप कउ बान हने सब फोकन लउ गडगे तन मै ॥
तब भूपति साग हनी रिपु को धस गी उरि जिउ चपला घन मै ॥
सु मनो उरगेस खगेस के त्रास ते धाइ कै जाइ दुरिओ बन मै ॥१४१६॥
लागत साग कै प्रान तजे तिह अउर हुतो तिह को असि झारिओ ॥
कोप अयोधन मै खड़गेस कहै कबि राम महा बल धारिओ ॥
राछस तीस रहो तिह ठा तिह को तब ही तिह ठउर संघारिओ ॥
प्रान बिना इह भाति परिओ मघवा मनो बज्र भए नगु मारिओ ॥१४१७॥

कबितु ॥

केते राछसन हूं की भुजन कउ काटि दयो केते सिर सत्रन के खंडन करत है ॥
केते भाजि गए अरि केते मारि लए बीर रन हूं की भूमि हूं ते पैगु न टरत है ॥
सैथी जमदार लै सरासन गदा त्रिसूल दुजन की सैना बीच ऐसे बिचरत है ॥
आगे हुइ लरत पग पाछे न करत डग कबूं देखीयत कबूं देखिओ न परत है ॥१४१८॥
कबियो बाच ॥
अड़िल ॥
खड़ग सिंघ बहु राछस मारे कोप हुइ ॥
रहे मनो मतवारे रन की भूमि सुइ ॥
जीअत बचे ते भाजे त्रास बढाइ कै ॥
हो जदुपति तीर पुकारे सब ही आइ कै ॥१४१९॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

तब ब्रिजपति सब सैन कउ ऐसे कहियो सुनाइ ॥
को लाइक भट कटक मै लरै जु या संग जाइ ॥१४२०॥
सोरठा ॥
स्री जदुपति के बीर दुइ निकसे अति कोप हुइ ॥
महारथी रनधीर इंद्र तुलि बिक्रम जिनै ॥१४२१॥
सवैया ॥
सिंघ झड़ाझड़ झूझन सिंघ गए तिह सामुहे लै सु घनो दलु ॥
घोरन की खुर बार बजै भूअ कंप उठी अरु सति रसातलु ॥
यौ खड़गेस रहिओ थिरु ह्वै जिम पउन लगै न हले कनकाचलु ॥
ता पै बसावतु है न कछु सब ही जदु बीरन को घटि गयो बलु ॥१४२२॥
कोप कीयो धनु लै कर मै जुग भूपन की बहु सैन हनी है ॥
बाज घने रथपति करी अनी जो बिधि ते नही जात गनी है ॥
ता छबि की उपमा मन मै लख के मुख ते कबि स्याम भनी है ॥
जुध की ठउर न होइ मनो रस रुद्र के खेल को ठउर बनी है ॥१४२३॥

लै धनु बान धसिओ रन मै तिह के मन मै अति कोप बढिओ ॥
जु हुतो दल बैरन को सब ही रिस तेज के संगि प्रतछ डढिओ ॥
अरि सैन को नास कीओ छिन मै जसु ता छबि को कबि स्याम पढिओ ॥
तम जिउ डर के अरि भाजि गए इह सूर नही मानो सूर चढिओ ॥१४२४॥
कोपि झझाझड़ सिंघ तबै असि तीछन लै करि ताहि प्रहारिओ ॥
भूप छिनाइ लीयो कर ते बर कै अरि के तन ऊपरि झारिओ ॥
लागत ही कटि मूंड गिरिओ धरि ता छबि को कबि भाउ निहारिओ ॥
मानहु ईस्वर कोप भयो सिर पूत को काटि जुदा करि डारिओ ॥१४२५॥
बीर हनिओ जब ही रन मै तब दूसर के मनि कोप छयो ॥
सु धवाइ कै स्यंदन ताही की ओर गयो असि तीछन पानि लयो ॥
तब भूप सरासनु बान लयो अरि को असि मूठ ते काटि दयो ॥
मानो जीह निकारि कै धाइओ हुतो जमु जीभ कटी बिनु आस भयो ॥१४२६॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
जब ही करि को असि काटि दयो भट जेऊ भजे हुते ते सभ धाए ॥
आयुध लै अपुने अपुने करि चित बिखै अति कोपु बढाए ॥
बीर बनैत बने सिगरे तिम के गुन स्याम कबीसर गाए ॥
मानहु भूप सुअंबर जुधु रचिओ भट एन बडे न्रिप आए ॥१४२७॥
जे न्रिप सामुहे आइ भिरे अरि बानन सो सोई मारि लए है ॥
केतकि जोरि भिरे हठि कै कितने रन को लखि भाजि गए है ॥
केतकि होइ इकत्र रहे जसु ता छबि को कबि चीन लए है ॥
मानहु आग लगी बन मै मदमत करी इक ठउर भए है ॥१४२८॥
बीर घने रन माझ हने मन मै न्रिप रंचक कोप भरिओ है ॥
बाज करी रथ काटि दए जब ही कर मै करवार धरिओ है ॥
पेख कै सत्र इकत्र भए न्रिप मारबे को तिन मंत्र करिओ है ॥
केहरि को बध जिउ चितवै म्रिग सो तो ब्रिथा कबहूं न डरिओ है ॥१४२९॥
भूप बली बहुरो रिस कै जब हाथन मै हथियार गहे है ॥
सूर हने बलबंड घने कबि राम भनै चित मै जु चहे है ॥
सीस परे कटि बीरन के धरनी खड़गेस सु सीस छहे है ॥
मानहु स्रउन सरोवर मै सिर सत्रन कंज से मूंद रहे है ॥१४३०॥

दोहरा ॥

तकि झूझ सिंघ को खड़ग सी खड़ग लीओ करि कोप ॥
हनिओ तबै सिर सत्र को जनु दीनी असि ओप ॥१४३१॥
सवैया ॥
पुनि सिंघ जुझार महा रन मै लरि कै मरि कै सुर लोकि बिहारिओ ॥
सैन जितो तिह संग हुतो तब ही असि लै न्रिप मारि बिदारिओ ॥
जेते रहे सु भजे रन ते किनहूं नही लाज की ओरि निहारिओ ॥
मानहु दंड लीए कर मै जम के सम भूप महा असि धारिओ ॥१४३२॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ सरु धनु गहिओ किनहू रहियो न धीर ॥
चले तिआग कै रन रथी महारथी बलबीर ॥१४३३॥
जब भाजी जादव चमूं क्रिसन बिलोकी नैनि ॥
सातकि सिउ हरि यौ कहिओ तुम धावहु लै सैन ॥१४३४॥
सवैया ॥
सातकि अउ बरमाक्रित ऊधव स्री मुसली कर मै हलु लै ॥
बसुदेव ते आदिक बीर जिते तिह आगे कीयो बलि कउ दलु दै ॥
सब हूं न्रिप ऊपरि बानन ब्रिसट करी मन मै तकि के खलु छै ॥

सुरराज पठे गिरि गोधन पै रिसि मेघ मनो बरखै बलु कै ॥१४३५॥
सर जाल कराल सबै सहि कै गहि कै बहुरो धनु बान चलाए ॥
बाज करे सभहूंन के घाइल सूत सबै तिन के रनि घाए ॥
पैदल के दल माझि परिओ तेई बानन सो जमुलोकि पठाए ॥
स्यंदन काटि दयो बहुरो सभ ह्वै बिरथी जदुबंस पराए ॥१४३६॥
काहे कउ भजत हो रन ते बलि जुध समो पुनि ऐसे न पै है ॥
सातकि सो खड़गेस कहिओ अब भाजहु तै कछु लाज रहै है ॥
जउ कहूं अउर समाज मै जाइ हो सो वहु काइर राज वहै है ॥
ता ते बिचार कै आनि भिरो किन भाज कै का मुखु लै घरि जै है ॥१४३७॥
यौ सुनि सूर न कोऊ फिरियो रिस कै अरि कै न्रिप पाछै धयो है ॥
जादव भाजत जैसे अजा खड़गेस मनो म्रिगराज भयो है ॥
धाइ मिलिओ मुसलीधर को तनि कंठ बिखै धनु डार लयो है ॥
तउ हसि कै अपने बस कै बलदेवहि कउ तब छाडि दयो है ॥१४३८॥

दोहरा ॥

जब सब ही भट भाज कै गए सरनि ब्रिज राइ ॥
तब जदुपति सब जादवन कीनो एक उपाइ ॥१४३९॥
सवैया ॥
घेरहि याहि सबै मिलि कै हम ऐसे बिचारि सबै भट धाए ॥
आगे कीओ ब्रिजभूखन कउ सब पाछे भए मन कोपु बढाए ॥
कान प्रमान लउ तान कमानन यौ न्रिप ऊपरि बान चलाए ॥
मानहु पावस की रितु मै घन बूंदन जिउ सर तिउ बरखाए ॥१४४०॥
काटि कै बान सबै तिन के अपुने सर स्री हरि के तन घाए ॥
घाइन ते बहु स्रउन बहिओ तब स्रीपति के पग न ठहराए ॥
अउर जिते बरबीर हुते रन देखि कै भूपति को बिसमाए ॥
धीर न काहूं सरीर रहिओ जदुबीर ते आदिक बीर पराए ॥१४४१॥
स्री जदुबीर के भाजत ही छुट धीर गयो बर बीरन को ॥
अति बिआकुल बुधि निराकुल ह्वै लखि लागे है घाइ सरीरन को ॥
सु धवाइ कै स्यंदन भाजि चले डरु मानि घनो अरि तीरन को ॥
मन आपने को समझावत सिआम तै कीनो है कामु अहीरन को ॥१४४२॥

दोहरा ॥

निज मन को समझाइ कै बहुरि फिरे घन स्याम ॥
जादव सैना संगि लै पुनि आए रन धाम ॥१४४३॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ को हरि कहिओ अब तू खड़ग संभारु ॥
जाम दिवस के रहत ही डारो तोहि संघारि ॥१४४४॥
सवैया ॥
कोप कै बैन कहै खड़गेस को स्री हरि जू धनु बानन लै कै ॥
चाम के दाम चलाइ लए तुम हूं रन मै मन को निरभै कै ॥
मति करी गरबै तब लउ जब लउ म्रिगराज गहिओ न रिसै कै ॥
काहे कउ प्रानन सो धन खोवत जाहु भले हथियारन दै कै ॥१४४५॥
यौ सुनि कै हरि की बतीआ तब ही न्रिप उतर देत भयो है ॥
काहे कउ सोर करै रन मै बन मै जनु काहू ने लूटि लयो है ॥
बोलत हो हठि कै सठि जिउ हम ते कई बारन भाज गयो है ॥
नाम परिओ ब्रिजराज ब्रिथा बिन लाज समाज मै आजु खयो है ॥१४४६॥
खड़गेस बाच ॥

सवैया ॥
काहे कउ क्रोध सो जुधु करो हरि जाहु भले दिन को इकु जीजै ॥
बैस किसोर मनोहरि मूरति आनन मै अब ही मस भीजै ॥
जाईऐ धामि सुनो घनि स्याम बिस्राम करो सुख अंम्रित पीजै ॥
नाहक प्रान तजो रन मै अपुने पित मात अनाथ न कीजै ॥१४४७॥
काहे कउ कान्रह अयोधन मै हठ कै हम सो रन दुंद मचै हो ॥
जुध की बात बुरी सब ते हरि क्रुध कीए न कछू फलु पै हो ॥
जानत हो अब या रन मै हम सो लरि कै तुम जीत न जैहो ॥
जाहु तो भाज कै जाहु अबै नहीं अंत को अंत के धामि सिधै हो ॥१४४८॥
यौ सुनि कै हरि चाप लयो करि तान कै बान कउ खैच चलायो ॥
भूपति कउ हरि घाइल कीनो है स्रीपत कउ न्रिप घाइ लगायो ॥
बीर दुहूं तिह ठउर बिखै कबि राम भनै अति जुधु मचायो ॥
बान अपार चले दुहूं ओर ते अभ्रन जिउ दिव मंडल छायो ॥१४४९॥
स्री जदुबीर सहाइ के काज जिनो बर बीरन तीर चलाए ॥
भूपति एक न बान लगियो लखि दूरि ते बानन सो बहु घाए ॥
धाइ परी बहु जादव सैन धवाइ कै स्यंदन चाप चढाए ॥
आवत स्याम भनै रिस कै न्रिप सो पल मै दल पैदल घाए ॥१४५०॥
एक गिरे तजि प्रानन को रन की छित मै अति जुधु मचै कै ॥
एक गए भजि कै इक घाइल एक लरे मनि कोपु बढै कै ॥
तउ न्रिप लै कर मै करवार दीयो बहु खंडन खंडन कै कै ॥
भूप को पउरख है महबूब निहार रहे सब आसिक ह्वै कै ॥१४५१॥
अउर किते बलबंड हुते कबि स्याम जिते न्रिप कोपि पछारे ॥
जुध प्रबीन सु बीर बडे रिसि साथ सोऊ छिन माहि संघारे ॥
स्यंदन काटि दए तिन के गज बाज घने संगि बानन मारे ॥
रुद्र को खेलु कीयो रन मै जेऊ जीवत ते तजि जुधु पधारे ॥१४५२॥
सैन भजाइ कै धाइ कै आइ कै राम अउ स्याम के साथ अरिओ है ॥
लै बरछा जमधार गदा असि क्रुध ह्वै जुध निसंग करिओ है ॥
तउ बहुरो कबि स्याम भनै धनु बान संभार कै पानि धरिओ है ॥
जिउ घन बूंदन तिउ सर सिउ कमलापति को तन ताल भरिओ है ॥१४५३॥

दोहरा ॥

बेधिओ जब तन क्रिसन रिसि इंद्रासत्र संधान ॥
मंत्रन सिउ अभिमंत्र करि गहि धनु छाडिओ बान ॥१४५४॥
सवैया ॥
इंद्र ते आदिक बीर जिते तब ही सर छूटत भू पर आए ॥
राम भनै अगनायुध लै न्रिप को लख कै करि कोप चलाए ॥
भूप सरासन लै सु कटे अपने सर लै सुर के तन लाए ॥
घाइल स्रउन भरे लखि कै सुर राज डरे मिलि कै सब धाए ॥१४५५॥
देव खादिक बीर घने कबि स्याम भने अति कोप तए है ॥
लै बरछी करवार गदा सु सबै रिसि भूप सो आइ खए है ॥
आनि इकत्र भए रन मै जसु ता छबि के कबि भाख दए है ॥
भूप के बान सुगंधि के लैबे कउ भउर मनो इक ठउर भए है ॥१४५६॥

दोहरा ॥

देवन मिलि खड़गेस कउ घेरि चहूं दिसि लीन ॥
तब भूपति धनु बान लै कहो जु पउरख कीन ॥१४५७॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
सूर को द्वादस बानन बेधि कै अउ ससि को दस बान लगाए ॥

और सचीपति कउ सर सउ सु लगे तन भेद कै पार पराए ॥
जछ जिते सुर किंनर गंध्रब ते सब तीरन सो न्रिप घाए ॥
केतक भाजि गए रन ते डरि केतकि तउ रन मै ठहराए ॥१४५८॥
जुधु भयो सु घनो जब ही तब इंद्र रिसे करि साग लई है ॥
स्याम भनै बल को करि कै तिह भूप कै ऊपरि डार दई है ॥
स्री खड़गेस सरासन लै सर काटि दई उपमा सु भई है ॥
बान भयो खगराज मनो बरछी जनो नागनि भछ गई है ॥१४५९॥
पीड़त कै सब बानन सो पुनि इंद्र ते आदिक बीर भजाए ॥
सूर ससी रन त्यागि भजै अपने मन मै अति त्रास बढाए ॥
खाइ कै घाइ घने तन मै भज गे सब ही न कोऊ ठहराए ॥
जाइ बसे अपुने पुर मै सुर सोक भरे सब लाज लजाए ॥१४६०॥

दोहरा ॥

जबै सकल सुर भजि गए तब न्रिप कीनो मान ॥
धनुख तानि कर मै प्रबल हरि पर मारे बान ॥१४६१॥
तब हरि रिसि कै करि लयो राछस असत्र संधान ॥
मंत्रन सिउ अभिमंत्र करि छाडिओ अदभुत बान ॥१४६२॥
सवैया ॥
दैत अनेक भए तिह ते बलवंड कुरूप भयानक कीने ॥
चक्र धरे जमदार छुरी असि ढाल गदा बरछी करि लीने ॥
मूसल और पहार उखारि लीए कर मै द्रुम पाति बिहीने ॥
दाति बढाइ कै नैन तचाइ कै आइ कै भूपति को भय दीने ॥१४६३॥
केस बडे सिरि बेस बुरे अरु देह मै रोम बडे जिन के ॥
मुख सो नर हाडन चाबत है पुनि दात से दात बजे तिन के ॥
सर स्रउनत के अखीआं जिन की संग कौन भिरै बल कै इन के ॥
सर चाप चढाइ कै रैन फिरै सब काम करै नित पापन के ॥१४६४॥
धाइ परे मिल कै उत राछस भूप इते थिर ठाढो रहिओ है ॥
डाढ सु कै अपने मन को रिसि सत्रन को इह भाति कहिओ है ॥
आज सबै हनि हो रन मै कहि यौ बतीया धनु बान गहिओ है ॥
यौ न्रिप को अति धीरज पेख कै दानव को दल रीझि रहिओ है ॥१४६५॥
तानि कमान महा बलवान सु सत्रन को बहु बान चलाए ॥
एकन की भुज काटि दई रिसि एकन के उर मै सर लाए ॥
घाइल एक गिरे रन मो लखि काइर छाडि कै खेत पराए ॥
एक महा बलवंत दयंत रहे थिर ह्वै तिन बैन सुनाए ॥१४६६॥
काहे को जूझ करे सुन रे न्रिप तोहू को जीवत जान न दै है ॥
दीरघ देह सलोनी सी मूरति तो सम भछ कहा हम पै है ॥
तू नही जानत है सुन रे सठ तो कहु दातन साथ चबै है ॥
तोही के मास के खंडन खंड कै पावक बान मै भुंज कै खै है ॥१४६७॥

दोहरा ॥

यौ सुन कै तिह बैन को न्रिप बोलिओ रिस खाइ ॥
जो हम ते भजि जाइ तिह माता दूध अपाइ ॥१४६८॥
एकु बैन सुनि दानवी सैन परी सब धाइ ॥
चहूं ओर घेरिओ न्रिपति खेत बार की निआइ ॥१४६९॥

चौपई ॥

असुरन घेर खड़ग सिंघ लीनो ॥
तब न्रिप कोप घनो मनि कीनो ॥
धनुख बान कर बीच संभारे ॥

सत्र अनेक मार ही डारै ॥१४७०॥
क्रूर करम इक राछस नामा ॥
जिन जीते आगे संग्रामा ॥
सो तब ही न्रिप सामुहे गयो ॥
अति ही जूझ दुहुन को भयो ॥१४७१॥
सवैया ॥
आयुध लै सब ही आपणे जब ही वह भूपति संग अरिओ है ॥
जुध अनेक प्रकार कीयो रन की छित ते कोऊ नहि टरिओ है ॥
तौ न्रिप लै कर मै असि को रिपु मूंड कटिओ गिर भूमि परिओ है ॥
देह छुटियो नही कोप हटिओ निज ओठ के दातन सो पकरिओ है ॥१४७२॥

दोहरा ॥

क्रूर करम को खड़ग सिंघ जब मारिओ रन ठौर ॥
असुरन की सैना हुती दानव निकसिओ और ॥१४७३॥
सोरठा ॥
क्रूर दैत जिह नाम वडो दैत बलवंड अति ॥
आगे बहु संग्राम लरिओ अरिओ नाहिन डरिओ ॥१४७४॥

चौपई ॥

क्रूर करम बध नैन निहारिओ ॥
तब ही अपनो खड़ग संभारिओ ॥
क्रूर दैत रिसि न्रिप पर धायो ॥
मानो काल मेघ उमडायो ॥१४७५॥
आवत ही तिह भूप पचारिओ ॥
जाहु कहा मुझ बंधु पछारिओ ॥
हउ तुम सो अब जुध मचै हो ॥
भ्रात गयो जहि तोहि पठै हो ॥१४७६॥
यौ कहि कै तब खड़ग संभारिओ ॥
अति प्रचंड बल कोपि प्रहारिओ ॥
भूपति लखिओ काटि असि दीनो ॥
सोऊ मारि रन भीतरि लीनो ॥१४७७॥

दोहरा ॥

क्रूर करम अरु क्रूर दैत दोऊ गए जम धामि ॥
सैना तिन की ससत्र लै घेरिओ न्रिप संग्रामि ॥१४७८॥
सवैया ॥
रोस कीओ तिन हूं मन मै जोउ दैत बचे न्रिप ऊपर धाए ॥
बान कमान गदा बरछी अगनायुध लै करि कोप बढाए ॥
तौ न्रिप तीर सरासनु लै सभ आवत बाट मै काटि गिराए ॥
आपने काढि निखंगहु ते सर सत्रन के उर बीच लगाए ॥१४७९॥

चौपई ॥

तब सभ सत्र भाज कै गए ॥
कोऊ सनमुख होत न पए ॥
अधिक दैत जमलोकि पठाए ॥
जीअति रहे रन त्यागि पराए ॥१४८०॥
सवैया ॥
भाज गए सब दैत जबै तब भूप रिसिओ हरि को सर मारे ॥

लागत ही कवि स्याम कहै तन स्री जदुबीर को चीर पधारे ॥
बेधि कै औरन के तन को पुनि औरन जाइ लगे सु संघारे ॥
देखहु पउरख भूपति को अब आप है एक अनेक बिदारे ॥१४८१॥

चौपई ॥

स्री हरि जल को असत्र चलायो ॥
सो छुट कै न्रिप ऊपर आयो ॥
बरुन सिंघ मूरति धरि आए ॥
सरितन की सैना संगि लियाए ॥१४८२॥
आवत सिंघन सबद सुनायो ॥
बारि राज अति रिस करि धायो ॥
सुनत सबद कापे पुर तीनो ॥
इन न्रिप मन मै त्रास न कीनो ॥१४८३॥
सवैया ॥
बानन संग जलाधिप को कवि स्याम भने तन ताड़न कीनो ॥
सातहु सिंधन को रिस कै सर जालन सिउ उर छेद कै दीनो ॥
घाइल है सरिता सगरी बहु स्रोनत सो तिह को अंग भीनो ॥
नैकु न ठाढो रहिओ रण मै जल राज भजिओ ग्रिह को मगु लीनो ॥१४८४॥

चौपई ॥

जबै जलाधिप धामि सिधारे ॥
तब हरि को न्रिप पुनि सर मारे ॥
तब जम को हरि असत्र चलायो ॥
है प्रतछ जम न्रिप पर धायो ॥१४८५॥
सवैया ॥
बीर बडो बिक्रत दैत सु नामहि कोप हुइ स्री खड़गेस पै धायो ॥
बान कमान क्रिपान गदा बरछी करि लै अति जुध मचायो ॥
तीर चलावत भयो बहुरो तब ता छबि को कवि भाव सुनायो ॥
भूप को बान मनो खगराज कटिओ अरि को सर नाग गिरायो ॥१४८६॥
बिक्रत दैत को न्रिप मारि लयो जमु को रिस कै पुनि उतर दीनो ॥
का भयो जो जीअ मारे घने अरु दंड बडो कर मै तुम लीनो ॥
तोहि न जीअत छाडत हो सुन रे अब मोहि इहै प्रन कीनो ॥
मारत हो कर लै करनो कछु मो बल जानत है पुर तीनो ॥१४८७॥
यौ कहि कै बतीया जम को कवि राम कहै पुनि जुध कीयो है ॥
भूत स्रिगालन काकन झाकनि डाकनि स्रौन अघाइ पीओ है ॥
मारिओ मरै न कहूं जम ते न्रिप मानहु अंम्रित पान कीओ है ॥
पानि लीओ धनु बान जबै तिन अंतक अंत भजाइ दीयो है ॥१४८८॥
सोरठा ॥
जब जम दीओ भजाइ क्रिसन हेरि न्रिप यौ कहियो ॥
लरते किउ नही आइ महारथी रन धीर तुम ॥१४८९॥
सवैया ॥
जो हरि मंत्र अराधत है तप साधत है मन मै नही आयो ॥
जग्य कीए बहु दान दीए सब खोजत है किनहूं नही पायो ॥
ब्रहम सचीपति नारद सारद बियास परासुर स्री सुक गायो ॥
सो ब्रिजराज समाज मै आज हकार कै जुध के काज बुलायो ॥१४९०॥

चौपई ॥

तब हरि जछ असत्र करि लीनो ॥
ऐच कमान छाडि सर दीनो ॥

नल कूबर मनग्रीव सु धाए ॥
सुत कुबेर के द्वै इह आए ॥१४९१॥
धनद जछ किंनर संग लीने ॥
ए आए मन मै रिस कीने ॥
सगल सैन तिन कै संग आई ॥
धाइ भूप सो करी लराई ॥१४९२॥
सवैया ॥
कोप कीए सब ससत्र लीए कर मै मिल कै तिह पै तब आए ॥
भूप निखंग ते काढ कै बान कमान को तानि सु खैच चलाए ॥
होत भए बिरथी बिनु सूत घने तब ही जमलोकि पठाए ॥
ठाढो न कोऊ रहिओ तिह ठौर सबै गन किंनर जछ पराए ॥१४९३॥
रोस घनो नल कूबर कै सु फिरियो लरबे कहु बीर बुलाए ॥
सउहे कुबेर भयो धनु लै सर जछ जिते मिल कै पुनि आए ॥
मार ही मार पुकारि परे सब ही कर मै असि लै चमकाए ॥
मानहु स्री खड़गेस के ऊपरि दंड लीए जम के गन धाए ॥१४९४॥

चौपई ॥

जब कुबेर को सब दलु आयो ॥
तब न्रिप मन मै कोप बढायो ॥
निज कर मै धनु बान संभारिओ ॥
अगनत दलु इक पल मै मारिओ ॥१४९५॥

दोहरा ॥

जछ सैन बलबंड न्रिप जम पुर दई पठाइ ॥
नल कूबर घाइल कीओ अति जीय कोपु बढाइ ॥१४९६॥
जब कुबेर के उर बिखै मारिओ तीछन बान ॥
लागत सर के सटकिओ छूटि गयो सब मान ॥१४९७॥

चौपई ॥

सैना सहित सबै भज गयो ॥
ठाढो न को रन भीतर भयो ॥
मनि कुबेर अति त्रास बढायो ॥
जुध करन चिति बहुर न भायो ॥१४९८॥
अड़िल ॥
भाजि जछ सब गए तबहि हरि महा बल ॥
रुद्र असत्र दीओ छाड सु कंपियो तल बितल ॥
तब सिव जू उठि धाए सूल संभार कै ॥
हो किउ हरि सिमरिओ हमै इहै जीअ धार कै ॥१४९९॥
संग रुद्र कै रुद्र चले भट उठि तबै ॥
एक रदन जू चले संग लै दल सबै ॥
और सकल गन चलै सु ससत्र संभार कै ॥
हो कौन अजित प्रगटिओ भव कहै बिचार कै ॥१५००॥

दोहरा ॥

को भट उपजियो जगत मै सब यौ करत बिचार ॥
सिव सिखि बाहन गन सहित आए रनि रिसि धारि ॥१५०१॥
प्रलै काल करता जही आए तिह ठा दौरि ॥
रन निहारि मन मै कहियो इह चिंता की ठौर ॥१५०२॥

गन गनेस सिव खटबदन देखै नैन निहारि ॥
सो रिस भूपति जुध हित लीने आप हकारि ॥१५०३॥
सवैया ॥
रे सिव आज अयोधन मै लरि लै हम सो कर लै बल जेतो ॥
ऐ रे गनेस लरै हमरे संग है तुमरे तन मै बल एतो ॥
किउ रे खड़ानन तू गरबै मर है अब ही इक बान लगै तो ॥
काहे कउ जूझ मरो रन मै अब लउ न गयो कछु जीअ महि चेतो ॥१५०४॥
सिव जू बाच खड़गेस सो ॥
सवैया ॥
बोलि उठियो रिसि कै सिव जू अरे किउ सुन तू गरबातु है एतो ॥
एतन सिउ जिनि रारि मंडो अबि ही लखि है हम मै बलु जेतो ॥
जौ तुम मै अति पउरख है अब ढील कहा धनु बानहि लेतो ॥
जेतो है दीरघ गात तिहारो सु बानन सो करि हो लहु तेतो ॥१५०५॥
खड़गेस बाच सिव सो ॥
सवैया ॥
किउ सिव मान करै इतनो भजि है तब ही जब मार मचैगी ॥
एक ही बान लगै कपि जिउ सिगरी तुमरी अब सैन नचैगी ॥
भूत पिसाचन की धुजनी मरि है रन मै नही नैकु बचैगी ॥
तेरे ही स्रउनत सो सुनि आजु धरा इह आरुन बेख रचैगी ॥१५०६॥

तोटक छंद ॥

सिव यौ सुनि कै धनु बान लीओ ॥
कसि कान प्रमान लउ छाडि दीओ ॥
न्रिप के मुख लाग बिराज रहिओ ॥
खगराज मनो अहि राज गहिओ ॥१५०७॥
बरछी तब भूप चलाइ दई ॥
सिव के उर मै लग क्राति भई ॥
उपमा कबि ने इह भाति कही ॥
रवि की कर कंज पै मंडि रही ॥१५०८॥
तब ही हरि द्वै करि खैंचि निकारी ॥
गहि डार दई मनो नागनि कारी ॥
बहुरो न्रिप म्यान ते खगु निकारिओ ॥
करि कै बलु को सिव ऊपर डारिओ ॥१५०९॥
हर मोहि रहिओ गिर भूमि परिओ ॥
मनो बज्र परिओ गिरि स्रिंग झरिओ ॥
इह रुद्र दसा सब सैन निहारी ॥
बरछी तब ही सिव पूत संभारी ॥१५१०॥
जब कर बीच सकति को लइओ ॥
तब आइ न्रिपति के सामुहि भइओ ॥
कर के बल कै न्रिप ओर चलाई ॥
बरछी नही मानो म्रित पठाई ॥१५११॥
सवैया ॥
न्रिप आवत काटि दई बरछी सर तीछन सो अरि के उरि मारिओ ॥
सो सर सो कबि स्याम कहै तिह बाहन कउ प्रतिअंग प्रहारिओ ॥
एक गनेस लिलाट बिखै सर लाग रहिओ तिरछो छबि धारिओ ॥
मान बढियो गजआनन दीह मनो सर अंकुस साथि उतारिओ ॥१५१२॥
चेत भयो चढि बाहन पै सिव लै धनु बान चलाइ दयो है ॥
सो सर तीछन है अति ही इह भूपति के उरि लाग गयो है ॥
फूल गयो जीअ जान नरेस हनियो नही रंचक त्रास भयो है ॥
चाप तनाइ लीयो कर मै सु निखंग ते बान निकास लयो है ॥१५१३॥

दोहरा ॥

तब तिन भूपति बान इक कान प्रमान सु तानि ॥
लखि मारिओ सिव उर बिखै अरि बध हित हीय जानि ॥१५१४॥

चौपई ॥

जब हर के उरि तिनि सर मारिओ ॥
इह बिक्रम सिव सैन निहारिओ ॥
कारतकेय निज दलु लै धाइओ ॥
पुनि गनेस मन कोप बढाइओ ॥१५१५॥
सवैया ॥
आवत ही दुह को लखि भूपति जी अपुने अति क्रोध बढाइओ ॥
पउरख कै भुजदंडन को सिखि बाहन को इकु बान लगाइओ ॥
अउर जितो गन को दलु आवत सो छिन मै जम धामि पठाइओ ॥
आइ खड़ानन को जब ही गज आनन छाडि कै खेत पराइओ ॥१५१६॥
मोद भयो न्रिप के मन मै जब ही सिव को दलु मारि भजायो ॥
काहे कउ भाजत रे डर कै जिनि भाजहु इउ तिह टेरि सुनायो ॥
स्याम भने खड़गेस तबै अपुने करि लै बर संख बजायो ॥
ससत्र संभारि सबै तब ही मनो अंतक रूप कीए रनि आयो ॥१५१७॥
टेर सुने सब फेरि फिरे करि लै करवारन कोप हुइ धाए ॥
लाज भरे सु टरे न डरे तिन हूं मिलि कै सब संख बजाए ॥
मार ही मार पुकारि परे ललकारि कहै अरे तै बहु घाए ॥
मारत है अब तोहि न छाड यौ कहि कै सर ओघ चलाए ॥१५१८॥
जब आनि निदान की मारु मची तब ही न्रिप आपने ससत्र संभारे ॥
खग गदा बरछी जमधार सु लै करवार ही सत्रु पचारे ॥
पानि लीओ धनु बान संभारि निहारि कई अरि कोटि संघारे ॥
भूप न मोरति संघर ते मुख अंत को अंतक से भट हारे ॥१५१९॥
लै अपुने सिव पानि सरासन जी अपुने अति कोप बढायो ॥
भूपति को चितियो चित मै बध बाहन आपुन को सु धवायो ॥
मारत हो अब या रन मै कहि कै न्रिप कउ इह भाति सुनायो ॥
यौ कहि नाद बजावत भयो मनो अंत भयो परलै घन आयो ॥१५२०॥
नाद सु नाद रहिओ भरपूर सुनियो पुरहूत महा बिसमायो ॥
सात समुद्र नदी नद अउ सर बिंध सुमेर महा गरजायो ॥
काप उठिओ सुनि यौ सहसानन चउदह लोकन चाल जनायो ॥
संकत ह्वै सुन कै जग के जन भूप नही मन मै डर पायो ॥१५२१॥
खड़गेस बाच सिव सो ॥
सवैया ॥
रुद्र के आनन को अविलोक कै यौ कहि कै न्रिप बात सुनाई ॥
का भयो जो जुगीया करि लै कर डिंभ के कारन नाद बजाई ॥
तंदुल मागन है तुय कारज मै न डरो तुहि चाप चढाई ॥
जूझबो काम है छत्रिन को कछु जोगिन को नही काम लराई ॥१५२२॥
यौ कहि कै बतीया सिव सों न्रिप पान बिखै रिसि खड़ग बडो लै ॥
मारत भे हर के तन मै कबि स्याम कहै जीय कोप महा कै ॥
घाउ कै सुंभ कै गात बिखै इम बोलि उठिओ हसि सिंध जरा जै ॥
रुद्र गिरिओ सिर माल कहूं कहूं बैल गिरिओ गिरियो सूल कहूं ह्वै ॥१५२३॥
घेर लीयो मिल कै न्रिप कउ जब ही सिव के दल कोप करिओ है ॥
आगे ह्वै भूप अयोधन मै दिढ ठाढो रहिओ नही पैग टरिओ है ॥
ताल जहा रथ रूख धुजा भट पंछन सिउ रन बाग भरिओ है ॥
भाग गए गन जैसे बिहंग मनो न्रिप टूट कै बाज परिओ है ॥१५२४॥

दोहरा ॥

ए सिव के गन थिरु रहे अति मन कोप बढाइ ॥
गन छउना गन राज स्री महाबीर मन राइ ॥१५२५॥
सवैया ॥
बीरन की मनि स्री गनराइ महा बरबीर फिरिओ गन छउना ॥
लोहत नैन चलिओ सिस होत कीओ गहि जा जमराज खिलउना ॥
आवत भूप बिलोक कै सत्रन आप कीयो मन रंचक भउ ना ॥
मारि लए छिन मै गन को गन जुध कीओ कि कीओ कछु टउना ॥१५२६॥

चौपई ॥

तब अरि लखि कै सर सो मारिओ ॥
जिह कुद्रिसटि न्रिप ओरि निहारिओ ॥
पुनि गनेस को न्रिप ललकारिओ ॥
त्रसत भयो तजि जुध पधारिओ ॥१५२७॥
जब सिव जू कछु संगिआ पाई ॥
भाजि गयो तज दई लराई ॥
अउर सगल छड कै गन भागे ॥
ऐसो को भट आवै आगे ॥१५२८॥
जबहि क्रिसन सिव भजत निहारिओ ॥
इहै आपने ह्रिदे बिचारिओ ॥
अब हउ आपन इह संग लरो ॥
कै अरि मारो कै लरि मरो ॥१५२९॥
तब तिह सउहे हरि जू गयो ॥
राम भनै अति जुध मचयो ॥
तब तिनै तकि तिह बान लगायो ॥
स्यंदन ते हरि भूमि गिरायो ॥१५३०॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
जा प्रभ कउ नित ब्रहम सचीपति स्री सनकादिक हूं जपु कीनो ॥
सूर ससी सुर नारद सारद ताही के धिआन बिखै मनु दीनो ॥
खोजत है जिह सिध महा मुनि बिआस परासुर भेद न चीनो ॥
सो खड़गेस अयोधन मै करि मोहित केसन ते गहि लीनो ॥१५३१॥
मारि बकी बक अउर अघासुर धेनक को पल मै बध कीनो ॥
केसी बछासुर मुसट चंडूर कीए चकचूर सुनियो पुर तीनो ॥
स्री हरि सत्र अनेक हने तिह कउन गने कबि स्याम प्रबीनो ॥
कंस कउ केसन ते गहि केसव भूप मनो बदलो वहु लीनो ॥१५३२॥
चिंत करी चित मै तिह भूपति जो इह कउ अब हउ बध कै हउ ॥
सैन सभै भज है जब ही तब का संग जाइ कै जुधु मचै हउ ॥
हउ किह पै करि हो बहु घाइन का के हउ घाइन सनमुख खै हउ ॥
छाडि दयो कहिओ जाहु चले हरि तो सम सूर कहूं नही पै हउ ॥१५३३॥
पउरख जैसो बडो कीयो भूप न आगै किसी न्रिप ऐसो कीयो ॥
भट पेखि कै भाजि गए सिगरे किनहूं धनु बान न पानि लीओ ॥
हथियार उतार चले बिसंभारि रथी रथ टारि डरात हीओ ॥
रन मै खड़गेस बली बलु कै अपुनो कर कै हरि छाडि दीयो ॥१५३४॥

चौपई ॥

छाडि केस ते जब हरि दयो ॥
लजत भयो बिसरि बलु गयो ॥

तब ब्रहमा प्रतछ हुइ आयो ॥
क्रिसन ताप तिनि सकल मिटायो ॥१५३५॥
कहे क्रिसन सिउ इह बिधि बैना ॥
लाज करो नहि पंकज नैना ॥
इह पउरख हउ तोहि सुनाऊ ॥
तिह ते तो कहु अबहि रिझाऊ ॥१५३६॥
ब्रहमा बाच ॥

तोटक छंद ॥

जब ही इह भूपति जनम लीओ ॥
तजि धाम तबै बनिबासु कीओ ॥
तपसा करि कै जग मात रिझायो ॥
तह ते अरि जीतन को बरु पायो ॥१५३७॥

चौपई ॥

इह के बध को एकु उपाई ॥
सो प्रभ तो कहि कहत सुनाई ॥
बिसन आइ जो या संगि लरै ॥
ताहि भजावै बिलमु न करै ॥१५३८॥
इंद्र द्वादस भान बुलावहु ॥
रुद्र गिआरह मिल करि धावहु ॥
सोम सु जम आठो बस जोधे ॥
ऐसी बिधि बिधि हरहिं प्रबोधे ॥१५३९॥
सोरठा ॥
ए सभ सुभट बुलाइ जुध काज रनि प्रगटही ॥
आपुने दलहिं जगाइ कहो जूझ एऊ करहिं ॥१५४०॥

चौपई ॥

पुनि अपछरा सकल बुलावहु ॥
इह की अग्रज द्रिसटि नचावहु ॥
कामदेव कउ आइस दीजै ॥
या को चित मोहि करि लीजै ॥१५४१॥

दोहरा ॥

तबहि क्रिसन सोऊ कीओ जो ब्रहमा सिख दीन ॥
इंद्र सूर सब रुद्र बस जमहि बोलि कर लीन ॥१५४२॥

चौपई ॥

निकटि स्याम के तब सब आए ॥
क्रोध होइ मन जुधहि धाए ॥
इत सब मिल कै जुध मचायो ॥
उत अपछरा नभि झरलायो ॥१५४३॥
सवैया ॥
कै कै कटाछ नचै तेऊ भामिन गीत सबै मिल कै सुर गावै ॥
बीन पखावज ताल बजै डफ भाति अनेकन भाउ दिखावै ॥
सारंग सोरठि मालसिरी अरु रामकली नट संग मिलावै ॥
भोगनि मोहि की बात किती सुनि कै मन जोगन के द्रव जावै ॥१५४४॥
उत सुंदर निरत करै नभ मै इत बीर सबै मिलि जुध करै ॥

बरछी करवार कटारन सिउ जब ही मन मै अति क्रुध भरै ॥
कबि स्याम अयोधन मै रदन छद पीस कै आनि परै न डरै ॥
लरि कै मरि कै जु कबंध उठै अरि कै सु अपछर ताहि बरै ॥१५४५॥

दोहरा ॥

बडो जुधु भूपति कीओ मन मै कोप बढाइ ॥
सब देवन को दिन परै सो कबि कहत सुनाइ ॥१५४६॥
सवैया ॥
गिआरह रुद्रन को सर बाइस द्वादस भानन चउबिसि मारे ॥
इंद्र सहंस्र खड़ानन को खट पाचसि कान्रह को कोप प्रहारे ॥
सोम को साठ गनेस को सतर आठ बसून को चउसठ डारे ॥
सात कुबेर को नउ जमराजहि एक ही एक सो अउर संघारे ॥१५४७॥
बानन बेधि जलाधिपि कउ नल कूबर अउ जम के उरि मारिओ ॥
अउर कहा लगि स्याम गनै जु हुते रन मै सबहून प्रहारिओ ॥
संकतमान भए सब ही किनहूं नही भूप की ओरि निहारिओ ॥
मानो जुगंत के अंत समै प्रगटिओ कलि काल तिनो सु बिचारिओ ॥१५४८॥

चौपई ॥

तिआगि दयो रन त्रास बढायो ॥
किनहूं न तिह सो जुधु मचायो ॥
चिति सब हूं इह भाति बिचारिओ ॥
इह नही मरै किसी ते मारिओ ॥१५४९॥
तब ब्रहमे हरि निकट उचारिओ ॥
जब सगलो दल न्रिपति संघारिओ ॥
जब लगि इह तेता करि मो है ॥
तब लगु बज्र सूल धरि को है ॥१५५०॥
ता ते इहै काज अब कीजै ॥
भिछकि होइ मागि सो लीजै ॥
मुकट राम ते जो इह पायो ॥
सो इंद्रादिक हाथि न आयो ॥१५५१॥
जब तेता इह कर ते लीजै ॥
तब या को बध छिन महि कीजै ॥
जिह उपाइ करि ते परहरै ॥
तउ कदाच न्रिप मरै तो मरै ॥१५५२॥
यो सुनि हरि दिज बेख बनायो ॥
मागन तिह पै हरि बिधि आयो ॥
तब इह स्याम ब्रहम लखि लीनो ॥
स्याम कहै इम उतर दीनो ॥१५५३॥
खड़गेस बाच ॥
सवैया ॥
बेखु कीओ हरि बामन को बलि बावन जिउ छलबे कहु आयो ॥
रे चतुरानन तू बसि कानन का के कहे तपिसा तज धायो ॥
धूम ते आग रहै न दुरी जिम तिउ छल ते तुम के लखि पायो ॥
मागहु जो तुमरे मन मै अब मागनहारे को रूप बनायो ॥१५५४॥

दोहरा ॥

जब इह बिधि सो न्रिप कहियो कही ब्रहम जस लेहु ॥
जग अनल ते जो मुकटि उपजिओ सो मुहि देहु ॥१५५५॥
जब चतुराननि यौ कही पुनि बोलिओ जदुबीर ॥

गउरा तेता तुहि दयो सो मुहि दे न्रिप धीर ॥१५५६॥

चौपई ॥

तब न्रिप मन को इह बिधि कहै ॥
रे जीअ जीयत न चहुं जुग रहै ॥
ता ते सु धरम ढील नहि कीजै ॥
जो हरि मागत सो इह दीजै ॥१५५७॥
सवैया ॥
किउ तन की मनि संक करै थिर तो जग मै अब तू न रहै है ॥
या ते भलो न कछू इह ते जसु लै रन अंतहि मो तजि जै है ॥
रे मन ढील रहियो गहि काहे ते अउसर बीत गए पछुतै है ॥
सोक निवारि निसंक हुइ दै भगवान सो भिछक हाथि न ऐ है ॥१५५८॥
मागत जो बिधि स्याम अरे मन सो तजि संक निसंक हुइ दीजै ॥
जाचत है जिह ते सगरो जग सो तुहि मागत ढील न कीजै ॥
अउर बिचार करो न कछू अब या महि तो न रती सुख छीजै ॥
दानन देत न मान करो बसु दै असु दै जग मै जसु लीजै ॥१५५९॥
बामन बेख कै स्याम जु चाहत स्री हरि को तिह भूपति दीनो ॥
जो चतुरानन के चित मै कबि राम कहै सु वहै न्रिप कीनो ॥
जो वह मागति सोऊ दयो तब देत समै रस मै मन भीनो ॥
दान क्रिपान दुहूं बिधि कै तिहु लोकन मै अति ही जसु लीनो ॥१५६०॥
ब्रहम करीट तवीत लयो हरि गाजि उठे तब ही सब सूरे ॥
धाइ परे न्रिप पै मिलि कै चिति मै चपि रोसि कै मारि मरूरै ॥
भूपि हने बर बीर घने सु परे धरि ऊपरि लागति रूरे ॥
छार लगाइ कै अंग मलंग रहे मनो सोइ कै खाइ धतूरे ॥१५६१॥
हेरि सबै मिलि घेरि लयो सु भयो मन भूपति कोपमई है ॥
राम अयोधन मै फिर कै करकी कर बीच कमान लई है ॥
सूरज की ससि की जम की हरि की बहु सैन गिराइ दई है ॥
मानहु फागुन मास के भीतर पउन बहिओ पत झार भई है ॥१५६२॥
पानि संभारि बडो धनु भूपति रुद्र लिलाट मै बानु लगायो ॥
एक कुबेर के मारिओ रिदै सर लागति डारि हथिआर परायो ॥
देखि जलाधिप ताहि दसा रन छाडि भजियो मन मै डर पायो ॥
धाइ परियो रिस कै जमु या पर सो न्रिप बान सो भूमि गिरायो ॥१५६३॥
यौ जमराज गिराइ दयो तब ही रिस कै हरि को दल धायो ॥
आए है कोप भरै पट दुइ बिबिधायुध लै तिन जुधु मचायो ॥
सिंघ हुतो बलवंड सो जादव सो रिस सो न्रिप मारि गिरायो ॥
बाहु बली बरमाक्रित बंधु सोऊ रन ते जमलोकि पठायो ॥१५६४॥
अउर महाबली सिंघ हुतो संग ते जस सिंघ को मारि लयो ॥
पुनि बीर महा जस सिंघ हुतो रिस कै इह सामुहे आइ गयो ॥
सोऊ खग संभार कै कोप भरे तिह कौ न्रिप नै ललकार लयो ॥
कीयो एक ही बार प्रहार क्रिपान को अंत के धामि पठाइ दयो ॥१५६५॥

चौपई ॥

उतम सिंघ प्रलै सिंघ धाए ॥
परम सिंघ असि लै करि आए ॥
अति पवित्र सिंघ स्री सिंघ गए ॥
पाचो भूप मारि तिह लए ॥१५६६॥

दोहरा ॥

फते सिंघ अरु फउज सिंघ चिति अति कोप बढाइ ॥

ए दोऊ भट आवत हुते भूपति हने बजाइ ॥१५६७॥
अड़िल ॥
भीम सिंघ भुज सिंघ सु कोप बढाइओ ॥
महा सिंघ सिंघ मान मदन सिंघ धाइओ ॥
अउर महा भट धाए ससत्र संभार कै ॥
हो ते छिन मै तिह भूपति दए संघार कै ॥१५६८॥
सोरठा ॥
बिकटि सिंघ जिह नाम बिकटि बीर जदुबीर को ॥
अपुने प्रभ के काम धाइ परियो अरि बध निमित ॥१५६९॥

दोहरा ॥

बिकट सिंघ आवत लखियो खड़ग सिंघ धनु तानि ॥
मारिओ सर उरि सत्र के लागत तजे परान ॥१५७०॥
सोरठा ॥
रुद्र सिंघ इक बीर ठाढ हुतो जदुबीर ढिग ॥
महारथी रण धीर रिस करि न्रिप सउहै भयो ॥१५७१॥

चौपई ॥

खड़ग सिंघ तब धनुख संभारियो ॥
रुद्र सिंघ जब नैन निहारियो ॥
छाडि बान भुज बल सो दयो ॥
आवत सत्र मार तिह लयो ॥१५७२॥
सवैया ॥
हिंमत सिंघ महा रिस सिउ इह भूपति पै तरवार चलाई ॥
हाथ संभाल कै ढाल लई तब ही सोऊ आवत ही सु बचाई ॥
फूलहु पै करवार लगी चिनगारि जगी उपमा कबि गाई ॥
बासव पै सिव कोप कीओ मानो तीसरे नैन की ज्वाल दिखाई ॥१५७३॥
पुनि हिंमत सिंघ महाबलु कै इह भूप के ऊपरि घाउ कीओ ॥
करि वार फिरिओ अपुने दलु को न्रिप तउ ललकारि हकार लीओ ॥
सिर माझ क्रिपान की तान दई बिबि खंड हुइ भूमि गिरिओ न जीओ ॥
सिरि तेग बही चपला सी मनो अध बीच ते भूधर चीरि दीओ ॥१५७४॥
हिंमत सिंघ हनिओ जब ही तब ही सब ही भट कोप भरे ॥
महा रुद्र ते आदिक बीर जिते इह पै इक बार ही टूटि परे ॥
धनु बान क्रिपान गदा बरछीन के स्याम भनै बहु वार करे ॥
न्रिप घाइ बचाइ सभै तिन के इह पउरख देख कै सत्र डरे ॥१५७५॥
रुद्र ते आदि जिते गन देव तिते मिल कै न्रिप ऊपरि धाए ॥
ते सब आवत देखि बली धनु तानि हकार कै बान लगाए ॥
एक गिरे तह घाइल हुइ इक त्रास भरे तजि जुधु पराए ॥
एक लरै न डरै बलवान निदान सोऊ न्रिप मारि गिराए ॥१५७६॥
सिव के दस सै गन जीत लए रिस सो पुनि लछक जछ संघारे ॥
राछस तेईस लाख हने कबि स्याम भनै जम धाम सिधारे ॥
स्री ब्रिजनाथ कीओ बिरथी बहु दारुक के तनि घाउ प्रहारे ॥
द्वादस सूर निहारि निसेस धनेस जलेस पस्वेस पधारे ॥१५७७॥
बहुरो अयुत गज मारत भयो पुनि तीस हजार रथी रिसि घायो ॥
छतीस लाख सु पत्रय हने दस लाख स्वारन मारि गिरायो ॥
भूपति लछ हने बहुरो दल जछ प्रतछहि मारि भजायो ॥
द्वादस सूरन गिआरह रुद्रन के दल कउ हनि कै पुनि धायो ॥१५७८॥
साठ हजार हने बहुरो भट जछ सु लछ कई तिह घाए ॥
जादव लछ कीए बिरथी बहु जछन के तन लछ बनाए ॥

पैदल लाख पचास हने पुरजे पुरजे करि भूमि गिराए ॥
अउर हने बलवान क्रिपान लै जो इह भूप के ऊपरि आए ॥१५७९॥
ताउ दे मूछि दुहूं कर भूपति सैन नै जाइ निसंक परियो ॥
पुनि लाख सुआर हने बलि कै ससि को रवि को अभिमान हरियो ॥
जम को सर एक ते डारि दयो छिति स्याम भनै नही नैकु डरियो ॥
जोऊ सूर कहावत है रन मै सबहूं न्रिप खंड निखंड करियो ॥१५८०॥
रन मै दस लछ हने पुनि जछ जलाधिप को भट लछकु मारिओ ॥
इंद्र के सूर हने अगने कबि स्याम भनै सु नही न्रिप हारिओ ॥
सातकि कउ मुसलीधर कउ बसुदेवहि कउ करि मूरछ डारिओ ॥
भाज गयो जम अउर सचीपति काहूं न हाथि हथीयार संभारिओ ॥१५८१॥

दोहरा ॥

जब भूपति एतो कीओ जुधु क्रुध कै साथ ॥
तब ब्रिजपति आवत भयो धनुख बान लै हाथि ॥१५८२॥
बिसनपद ॥
स्री हरि रिस भरि बल करि अरि पर जब धनु धरि करि धायो ॥
तब न्रिप मन मै क्रोध बढायो स्रीपति को गुन गायो ॥
रहाउ ॥
जा को प्रगट प्रताप तिहूं पुर सेस अंति नही पायो ॥
बेद भेद जा को नहीं जानत सो नंद नंद कहायो ॥
काल रूप नाथिओ जिह काली कंस केस गहि घायो ॥
सो मै रन महि ओर आपनी कोपि हकारि बुलायो ॥
जा को ध्यान राम निति मुनि जन धरति ह्रिदै नही आयो ॥
धनि भाग मेरे तिह हरि सो अति ही जुध मचायो ॥१५८३॥
जदुपति मोहि सनाथ कीयो ॥
दरसन देत न दरसन हू को मो कउ दरस दीयो ॥
रहाउ ॥
जानत हो जग मै सम मो सो अउर न बीर बीयो ॥
जिह रन मै ब्रिजराज आपुनी ओर हकारि लीयो ॥
जा को सुक नारद मुनि सारद गावत अंतु न पायो ॥
ता कउ स्याम आज रिस करि कै भिरबे हेत बुलायो ॥१५८४॥
सवैया ॥
गुन गाइ कै यौ धनु पानि गहियो पुनि धाइ परिओ बहु बान चलाए ॥
जे भट आनि परे रन मै नह जान दए बहु मारि गिराए ॥
घाइ लगे जिन के तन मै तिन मारन कउ नहि हाथ उठाए ॥
सैन संघार दई जदवी ब्रिजनाइक ऊपर ही न्रिप धाए ॥१५८५॥
स्री ब्रिजनाइक को सु किरीटु गिराइ कै बान कै संगि दयो है ॥
पंद्रहि सै गजराज समाज मै बाज अनेकन मारि लयो है ॥
द्वादस लछ जिते पुनि जछ सु सैन घनो बिनु प्रान भयो है ॥
ऐसीओ भाति को जुधु बिलोक कै सूरन को अभिमान गयो है ॥१५८६॥
दस दिवस निसा दस जुध कीओ ब्रिजनाइक सो न टरियो भट टारिओ ॥
चार अछूहनि अउर तहा रिसि ठानि सतिक्रित को दल मारिओ ॥
मूरछ हुइ भट भूमि गिरे बहु बीरन कौ लरते बलु हारिओ ॥
केते भजे डरु मानि तिनो कह जात बली इह भाति हकारिओ ॥१५८७॥
टेर सुने सब फेरि फिरे तब भूपति तीछन बान प्रहारे ॥
आवत ही मग बीच गिरे तिन फोरि जिरे सर पारि पधारे ॥
एक बली तब दउर परे मुख ढालन लै हथियार उघारे ॥
पउरख एक निहार कै भूप को बीर अयोधन मै ठटकारे ॥१५८८॥
एक सतिक्रित को गज दीरघ क्रुधत होइ न्रिपु ऊपरि धायो ॥
आवत ही घन जिउ गरजिओ अपुनो रन नै अति ओज जनायो ॥

भूप निहारि लयो असि हाथि कटिओ करि ताहि तबै सु परायो ॥
इउ उपमा उपजी मन मै गज सुंड मनो घरि ही धरि आयो ॥१५८९ ॥

दोहरा ॥

जुध इतो इत होत भयो उत हरि हेत सहाइ ॥
पाचो पाडव स्याम भनि तिह ठा पहुचे आइ ॥१५९० ॥
बहुत छोहनी दलु लीए रथ पैदल गज बाज ॥
आवत है तह स्याम कहि जदुपति हित के काज ॥१५९१ ॥
छोहण दोइ मलेछ है तिह सैना के संगि ॥
कवची खड़गी सकति धरि कटि मधि कसे निखंगि ॥१५९२ ॥
सवैया ॥
मीर अउ सयद सेख पठान सबै तिह भूप के ऊपरि धाए ॥
कउच निखंग कसे कटि मै सब आयुध लै करि कोप बढाए ॥
नैन नचाइ दोऊ रदन छद पीस कै भउह सो भउह चढाए ॥
आइ हकार परे चहूं ओर ते वा न्रिप कउ बहु घाइ लगाए ॥१५९३ ॥

दोहरा ॥

सकल घाइ सहि कै न्रिपति अति चित कोप बढाइ ॥
धनुख बान गहि जम सदनि बहु अरि दए पठाइ ॥१५९४ ॥

कबितु ॥

सेर खान मारिओ सीस सैद खा को काटि डारियो ऐसो रन पारिओ परिओ सैदन मै धाइ कै ॥
सैद मीरु मारिओ सैद नाहरि संघार डारिओ सेखन की फउजन कउ दीनो बिचलाइ कै ॥
सादिक फरीद सेख भले बिधि जुझ कीनो भूप तन घाइ गिरिओ आप घाइ खाइ कै ॥
ऐसी भाति हेर कै निबेर दीने सूर सबै आप ब्रिजराज ता के उठे गुन गाइ कै ॥१५९५ ॥

दोहरा ॥

देखि जुधिसटरि ओरि प्रभु अपनो भगति बिचारि ॥
तिह न्रिप को पउरख सुजसु मुख सो कहियो सुधारि ॥१५९६ ॥

कबितु ॥

भारे भारे सूरमा संघारि डारे महाराज जम की जमन की घनी ही सैना छई है ॥
ससि की सुरेस की दिनेस की धनेस की लुकेस हूं की चमूं म्रितलोक कउ पठई है ॥
भाज गे जलेस से गनेस से गनत कउन अउर हउ कहा कहो पस्वेस पीठ दई है ॥
जादव सबन ते न डारिओ रीझ लरिओ हा हा देखो न्रिप हम ते बजाइ बाजी लई है ॥१५९७ ॥
राजा जुधिसटर बाच ॥

दोहरा ॥

कहिओ जुधिसटर निम्र हुइ सुनीयै स्री ब्रिजराज ॥
यह समाजु तुम ही कीयो कउतुक देखन काज ॥१५९८ ॥

चौपई ॥

यौ न्रिप हरि से बचन सुनाए ॥
बहुरे उनि भट मारि गिराए ॥
पुनि मलेछ की सैना धाई ॥
नाम तिनहु कबि देत बताई ॥१५९९ ॥
सवैया ॥

नाहिर खान झड़ाझड़ खा बलबीर बहादर खान तबै ॥
पुनि खान निहंग भड़ंग झड़ंग लरे रनि आगे डरे न कबै ॥
जिह रूप निहारि डरै दिगपाल महा भट ते कबहूं न दबै ॥
करि बान कमान धरे अभिमान सों आइ परे तब खान सबै ॥१६००॥
जाहिद खानहु जबर खान सु वाहिद खान गए संग सूरे ॥
चउप चहूं दिस ते उमगे चित मै चपि रोस के मारि मरूरे ॥
गोरे मलेछ चले न्रिप पै इक सिआह मलेछ चले इक भूरे ॥
भूप सरासनु लै तब ही सु अचूर बडे छिन भीतर चूरे ॥१६०१॥
कोपि मलेछन की प्रितना सु दुधा करि कै सति धा कर डारी ॥
बीर परे कहूं बाज मरे कहूं झूमि गिरे गज भू परि भारी ॥
घूमति है कहूं घाइ लगे भट बोल सकै न गए बल हारी ॥
आसन लाइ मनो मुनि राइ लगावत धिआन बडे ब्रतधारी ॥१६०२॥
जुधु इतो जब भूप कीओ तब नाहिर खा रिसि कै अटकिओ ॥
हथिआर संभारि हकारि परिओ जु समाज मै बाजि हुतो मटकिओ ॥
खड़गेस तिनै गहि केसन ते झटकिओ अरु भूमि बिखै पटकिओ ॥
तब नाहिर खा इह देखि दसा कहि स्याम कहै भजि गयो न टिकिओ ॥१६०३॥
नाहिर खा भजि गयो जब ही तब ही रिसि खान झड़ाझड़ आए ॥
ससत्र संभारि सभै अपुने जम रूप कीए न्रिप ऊपरि धाए ॥
भूपति बान हने इन कउ इन हूं न्रिप कउ बहु बान लगाए ॥
किंनर जछ ररै उपमा रन चारन जीत के गीत बनाए ॥१६०४॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ लखि बिकटि भट तिउर चड़ाए माथि ॥
सीस काटि अरि को दयो एक बान के साथि ॥१६०५॥
सवैया ॥
पुनि खान निहंग झड़ंग भड़ंग चले मुख ढालनि कउ धरि कै ॥
करि मै करवार संभारि हकारि मुरार पै धाइ परे अरि कै ॥
दलु मारि बिदारि दयो पल मै धरि मुंड सु मीनन जिउ फरकै ॥
न टरे रन भूमि हूं ते तब लउ जब लउ छित पै न परे मरि कै ॥१६०६॥

दोहरा ॥

स्रोनत की सरता तहा चली महा अरिराइ ॥
मेद मास मजिया बहुत बैतरुनी के भाइ ॥१६०७॥

कबितु ॥

मचियो रन दारुन दिलावर दलेल खा सिचानन की भाति रन भूमि झटपटी सी ॥
हटी न निपट खटपटी सुभटन हूं की आनन की आभा ता की लागै नैकु लटी सी ॥
भूपति संभार कै क्रिपान पानि तानि अभिमान कै संघारी सैन बची फूटी फटी सी ॥
कहूं बाज मारे कहूं गिरे गज भारे भारे भूप मानो करी भट कटी बन कटी सी ॥१६०८॥

दोहरा ॥

खड़ग सिंघ तब खड़ग गहि अति चिति कोप बढाइ ॥
सैन मलेछन की हनी जमपुरि दई पठाइ ॥१६०९॥
सोरठा ॥
दोइ छुहनी सैन जब मलेछ की न्रिप हनी ॥
अउर सुभट जे ऐनि चले नाम कबि देत कहि ॥१६१०॥
सवैया ॥
भीम गदा करि भीम लीए इखुधी कटि सो कसि पारथ धायो ॥

राइ जुधिसटर लै धनु हाथि चलियो चित मै अति क्रोध बढायो ॥
भ्रात बली दोऊ साथ लीए दलु जेतक संग हुतो सु बुलायो ॥
ऐसे भिरे ब्रितरासुर सिउ मघवा रिसि कै जिम जुधु मचायो ॥१६११॥
सोरठा ॥
मन महि कोप बढाइ सुभटन सभै सुनाइ कै ॥
खड़ग सिंघ समुहाइ बचन कहत भयो क्रिसन सिउ ॥१६१२॥
खड़गेस बाच सभन भटन सो ॥
सवैया ॥
पसचिम सूर चड़ै कबहू अरु गंग बही उलटी जीअ आवै ॥
जेठ के मास तुखार परे बन अउर बसंत समीर जरावै ॥
लोक हलै धरूअ को जल को थलु हुइ थल को कबहूं जल जावै ॥
कंचन को नगु पंखन धारि उडै खड़गेस न पीठ दिखावै ॥१६१३॥
यौ कहि कै धनु को गहि कै लहि कै चहि कै बहु बीर कटे ॥
इक धाइ परै पुनि सामुहि ह्वै इक भाजि गए इक सूर लटे ॥
बलबंड घने छित पै पटके भट ऐसी दसा बहु हेरि हटे ॥
कबि स्याम भनै तिह आहव मै सु रहे केऊ बीर फटे ई फटे ॥१६१४॥
धनु पारथ को तिह काटि दयो पुनि काटि कै भीम गदा ऊ गिराई ॥
भूपति की करवार कटी कहूं जाइ परी कछु जानि न जाई ॥
भ्रात दोऊ अरु सैन घनी अति रोस भरी न्रिप ऊपर धाई ॥
भूपति बान हनै तिह कउ तन फोरि दई उह ओरि दिखाई ॥१६१५॥

दोहरा ॥

सैन अछूहनि तुरत ही दीनी तिनहि संघारि ॥
पुनि रिसि सिउ धावत भयो अपुने ससत्र संभारि ॥१६१६॥
सवैया ॥
एक चटाक चपेट हनै इक लै कर मै करवार संघारै ॥
एकन के उर फारि कटारन केसन ते गहि एक पछारै ॥
एक चलाइ दए दसहूं दिस एक डरे मर गे बिनु मारै ॥
पैदलु को दलु मार दयो दुह हाथन हाथीन दात उखारै ॥१६१७॥
पारथ आनि कमान गही तिह भूपति को इक बान लगायो ॥
लागत ही अवसान गुमान गयो खड़गेस महा दुखु पायो ॥
पउरख पेख कै जी हरिखिओ बल टेर नरेस सु ऐस सुनायो ॥
धंन पिता धंन वे जननी जु धनंजै नाम जिनो सुत जायो ॥१६१८॥
खड़गेस बाच पारथ सो ॥
सवैया ॥
आनन मै मसु भीजत है बर बारिज से जुग लोचन तेरे ॥
छूटि रही अलकै कटि लउ इह भाति मनो जुग नाग करेरे ॥
आनंद कंद किधो मुख चंद कटे दुख फंध चकोरन केरे ॥
सुंदर सूरति कैसे हनो तुम देखि दइआ उपजी जीअ मेरे ॥१६१९॥
पारथ हेरि हसिओ सुनि बैन चलियो मन भीतर कोप भरियो ॥
धनु बान संभार कै पानि लीयो ललकारि परिओ न रती कु डरियो ॥
उत ते खड़गेस भयो समुहै अति बानन को दुहूं जुध करियो ॥
तब पारथ सिउ लरबो तजि कै न्रिप भीम के ऊपरि धाइ परियो ॥१६२०॥
तब भीन को स्यंदन काटि दयो अरु बीर घने रन माझ छए है ॥
घाइल एक परै छित पै इक घाइल घाइल आइ खए है ॥
एक गए भजि कै इक तो सजि कै हथियारन कोप तए है ॥
एक फिरै भट कापत ही कर ते छुट कै करवारि गए है ॥१६२१॥

दोहरा ॥

पुनि पारथ धनु लै फिरिओ कसि कै तीछन बान ॥
मारत भयो खड़गेस तन मनि अरि बधि हित जानि ॥१६२२॥
सवैया ॥
बान लगियो जब ही तिह कउ तब ही रिसि कै कही भूपति बातै ॥
काहे कउ आगि बिरानी जरै सुन रे म्रिद मूरति हउ कहो ता तै ॥
ताही समेत हनो तुम कउ सिखई जिह बान चलान की घातै ॥
जाहु चले ग्रिह छाडत हो तुझि सुंदर नैननि जानि कै नातै ॥१६२३॥
यौ कहि भूपति पारथ कउ रनि धाइ परिओ कर लै असि पैना ॥
सैन निहारि महा बलु धारि हकारि परिओ मन रंचक भै ना ॥
सत्रन के अवसान गए छुट कोऊ सकिओ करि आयुध लै ना ॥
मारि अनेक दए रन मै इक पानी ही पानी रटै करि सैना ॥१६२४॥

दोहरा ॥

भजी सैन जब पाडवी किसन बिलोकी नैन ॥
दुरजोधन सो यौ कही तुम धावहु लै सैन ॥१६२५॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै हरि की बतीआ सजि कै दुरजोधन सैन सिधारिओ ॥
भीखम आगै भयो संग भानुज द्रोण क्रिपा दिज साथ पधारिओ ॥
धाइ परे अरराइ सबै तिह भूपति सो अति ही रन पारिओ ॥
आगे हुइ भूप लरिओ न डरिओ सभ कउ सर एक ही एक प्रहारिओ ॥१६२६॥
तब भीखम कोप कीओ मन मै इह भूपति पै बहु तीर चलाए ॥
आवत बान सो बान कटे खड़गेस महा असि लै करि धाए ॥
होत भयो तह जुधु बडो रिसि भीखम को न्रिप बैन सुनाए ॥
तउ लखि हो हमरे बल कउ जब ही जम के बसि हो ग्रिह जाए ॥१६२७॥

दोहरा ॥

भजत न भीखम जुध ते भूप लखी इह गाथ ॥
सीस कटिओ तिह सूत को एक बान के साथ ॥१६२८॥
सवैया ॥
अस्व लै भीखम को भजि गे तब ही दुरजोधन कोप भरिओ ॥
संग द्रोण को पुत्र क्रिपा बर लै बरमाक्रित जादव जाइ परिओ ॥
धनु बान लै द्रउण हूं आप तबै हठ ठानि रहिओ नहि नैकु डरिओ ॥
करवारि कटारिनि सूलनि सागनि चक्रनि को अति जूझ करिओ ॥१६२९॥
कान जू बाच खड़गेस सो ॥
सवैया ॥
तउ ही लउ जदुबीर लीए धनु स्री खड़गेस कउ बैन सुनायो ॥
मारत हउ हठि कै सठि तो कहु का भयो जु अति जुधु मचायो ॥
एक घरी लरि लै मरि है अब जानत हउ तुय काल ही आयो ॥
चेत रे चेत अजउ चित मै हरि इउ कहि कै धनु बान चलायो ॥१६३०॥

दोहरा ॥

आवत सर सो काटि कै रिसि बोलियो खड़गेस ॥
मुहि पउरख जानत सकल सेस सुरेस महेस ॥१६३१॥

कबितु ॥

भख जैहउ भूतन भजाइ दैहो सुरासुर स्याम पटिकै हो भूमि भुजा असि जो गहउ ॥
भैरव नचैहउ भारी जुधहि मचैहउ पुनि भाज हूं न जैहउ सुनि साची हरि हउ कहउ ॥
कहा द्रउण दिज कउ संघारत न लागै पल मारो दल बलि इंद्र जम रुद्र जो चहउ ॥

राधिका रवन तउ तेरे रन जुरे आजु छत्री खड़गेस हुइ कै ऐसो बोल हउ सहउ ॥१६३२॥

छपै छंद ॥

तबहि द्रउण रिस को बढाइ न्रिप सउहै धायो ॥
असत्र ससत्र गहि पानि बहुतु बिधि जुध मचायो ॥
अधिक स्रउण तन भरे लरे भट घाइल ऐसे ॥
लाल गुलाल भरे पटि खेलत चाचर जैसे ॥
तब देखि सभै सुर यौ कहै धनि दिज धनि सु भूप तुअ ॥
जुग चारन मै अब लउ कहूं ऐसे जुध न भयो भुअ ॥१६३३॥

दोहरा ॥

घेरिओ तब खड़गेस कउ पाडव सैन रिसाइ ॥
पारथ भीखम भीम दिज द्रउण क्रिपा कुर राइ ॥१६३४॥

कबितु ॥

जैसे बार खेत कउ जु काल फास चेत कउ सु भिछ्क दान देत कउ सु कंकन जिउ कर को ॥
जैसे देह प्रान कउ प्रवेख ससि भानु कउ अगिआन जैसे गिआन कउ सु गोपी जैसे हरि को ॥
जिउ तड़ाग आप कउ सु माला जैसे जापु कउ सो पुंनि जैसे पाप कउ जिउ आल बाल तरु को ॥
जैसे उड ध्रूअ कउ समुदर जैसे भूअ कउ सु तैसे घेरि लीनो है खड़ग सिंघ बर को ॥१६३५॥
सवैया ॥
घेरि लयो खड़गेस जबै तब ही दुरजोधन कोप भयो है ॥
पारथ भीम जुधिसटर भीखम अउर हली हलु पानि लयो है ॥
भानुज द्रउण जु अउर क्रिपा सु क्रिपान लए अरि ओरि गयो है ॥
अत्रन लातन मूकन दातन को तहा आहव होत भयो है ॥१६३६॥
स्री खड़गेस लयो धनु बान संभारि कई अरि कोटि संघारे ॥
बाज परे कहूं ताज गिरे गजराज गिरे गिरि से धरि कारे ॥
घाइल एक परे तरफै सु मनो करसायल सिंघ बिडारे ॥
एक बली करवारन सो अरि लोथ परी तिह मूंड उतारे ॥१६३७॥
भूपति बान कमान गही जदुबीरन के अभिमान उतारे ॥
फेरि लई जमधारि संभारि हकार के सत्रन के उर फारे ॥
घाइ एक गिरे रन मै अपने मन मै जगदीस संभारे ॥
ते वह मोख भए तब ही भव को तर कै हरि लोकि पधारे ॥१६३८॥

दोहरा ॥

निपट सुभट चटपट कटे खटपट कही न जाइ ॥
सटपट जे भाजे तिनहु पारथ कहिओ सुनाइ ॥१६३९॥
सवैया ॥
स्री ब्रिजराज कै काज को आज करो सभ ही भट नाहि टरो ॥
धनु बान संभार कै पानन मै अरि भूपति कउ ललकारि परो ॥
मुख ते मिलि मार ही मार ररो अपुने अपुने हथियार धरो ॥
तुम तो कुल की कछु लाज करो खड़गेस के संगि लरो न डरो ॥१६४०॥
भानुज कोप भयो चित मै तिह भूपति के हठि सामुहे धायो ॥
चाप चढाइ लयो कर मै सर यौ तब ही इक बैन सुनायो ॥
आयो है केहरि के मुख मै म्रिग ऐसे कहियो न्रिप तऊ सुनि पायो ॥
भूपति हाथि लयो धनु बान संभारि कहिओ मुख ते समझायो ॥१६४१॥
भानुज काहे कउ जुझि मरो ग्रिह जाहु भलो दिन कोइक जीजो ॥
खात हलाहल किउ अपने करि जाइ कै धामु सुधा रसु पीजो ॥
यौ कहि भूपति बान हनिओ मुख ते कहियो जुधहि को फलु लीजो ॥

लागति बान गिरिओ मुरछाइ कै स्रउन गिरिओ सगरो अंग भीजो ॥१६४२॥
तउ ही लउ भीम गदा गहि कै पुनि पारथ लै कर मै धन धायो ॥
भीखम द्रोण क्रिपा सहदेव सु भूरस्रवा मनि कोप बढायो ॥
स्री दुरजोधन राइ जुधिसटर स्री बिज नाइक लै दलु आयो ॥
भूप के तीरन के डर ते बर बीरन तउ मन मै डर पायो ॥१६४३॥
तउ लगि स्रीपति आप कुपियो सर भूपति के उर मै इक मारिओ ॥
एक ही बान को तान तबै तिह सारथी को प्रतिअंग प्रहारिओ ॥
भूपति आगे ही होत भयो रन भूमहि ते न टरिओ पग टारिओ ॥
सूर सराहत भे सभ ही जसु यों मुख ते कबि स्याम उचारिओ ॥१६४४॥
स्री हरि को अविलोक कै आनन इउ कहि कै न्रिप बात सुनाई ॥
छूट रही अलकै कटि लउ उपमा मुख की बरनी नही जाई ॥
चारु दिपै अखीआन दोऊ उपमा न कछू इन ते अधिकाई ॥
जाहु चले तुम कउ हरि छाडति लैहु कहा हठि ठानि लराई ॥१६४५॥
धनु बान संभारि कहियो बहुरो हमरी बतीया हरि जू सुनि लीजै ॥
किउ हठि ठानि अयोधन मै हम सिउ समुहाइ कै आहव कीजै ॥
मारत हो अब तोहि न छाडत जाहु भले अब लउ नही छीजै ॥
मान कहिओ हमरो पुर की कजरारनि को न ब्रिथा दुख दीजै ॥१६४६॥
हउ हठ ठानि अयोधन मै घन स्याम घने रनबीर निबेरे ॥
का के कहे हम सो हरि जू समुहाइ भयो न फिरिओ रन हेरे ॥
मारो कहा अब तो कहु हउ करुना अति ही जीय आवत मेरे ॥
तो कउ मरिओ सुनि कै छिन मै मरि जै है सखा हरि जेतक तेरे ॥१६४७॥
हरि इउ सुनि कै धनु बान लयो रिसि कै खड़गेस के सामुहे धायो ॥
आवत ही कबि स्याम भनै घटिका जुग बानन जुधु मचायो ॥
स्याम गिरावत भयो न्रिप कउ न्रिप हूं रथ ते हरि भूमि गिरायो ॥
कउतक हेरि सराहत भे भट स्री हरि को न्रिप को जसु गायो ॥१६४८॥
इति स्याम चढियो रथ आपन पै रथ पै उत स्री खड़गेस चढिओ ॥
अति कोप बढाइ महा चित मै तिह मयानहु ते करवार कढिओ ॥
सु घनो दल पंडु के पुत्रन को रिसि तेज की पावक संग डढिओ ॥
धुनि बेद की असत्रनि ससत्रनि की बिधि मानहु पारथ साथ पढिओ ॥१६४९॥
स्री दुरजोधन के दल को लखि भूप तबै अति बान चलाए ॥
बाके कीए बिरथी तह बीर घने तब ही जम धामि पठाए ॥
भीखम द्रउण ते आदिक सूर भजे रण मै न कोऊ ठहराए ॥
जीत की आस तजी बहुरो खड़गेस के सामुहे नाहिन आए ॥१६५०॥

दोहरा ॥

द्रउणज भानुज क्रिपा भजि गए न बाधी धीर ॥
भूरस्रवा कुरराज सब टरे लखी रन भीर ॥१६५१॥
सवैया ॥
भाजे सबै लखि कै सु जुधिसटरि स्रीपति के तटि ऐसे उचारिओ ॥
भूप बडो बलवंत क्रिपानिधि काहूं ते पैग टरिओ नही टारिओ ॥
भानुज भीखम द्रउण क्रिपा हम पारथ भीम घनो रन पारिओ ॥
सो नहि नैकु टरै रन ते हम हूं सब हूं प्रभ पउरख हारिओ ॥१६५२॥
भीखम भानुज अउ दुरजोधन भीम घनो हठि जुध मचायो ॥
स्री मुसली बरमाक्रित सातकि कोप घनो चित माझ बढायो ॥
हार रहे रनधीर सबै अब का प्रभ जू तुमरे मन आयो ॥
भागत पैगु न सो रन ते तिह सो हमरो सु कछू न बसायो ॥१६५३॥
रुद्र ते आदि जिते गन देव तिते मिलि कै न्रिप ऊपर धाए ॥
ते सब आवत देखि बली धनु तान कै बान हकारि लगाए ॥
एक गिरे तह घाइल ह्वै इक त्रास भरे तजि जुध पराए ॥
एक लरे न डरे बलवान निदान सोऊ न्रिप मारि गिराए ॥१६५४॥

जीति सुरेस धनेस खगेस गनेस को घाइल कै मुरछायो ॥
भूमि परियो बिसंभारि निहारि जलेस दिनेस निसेस परायो ॥
बीर महेस ते आदिक भाज गए इह सामुहे एक न आयो ॥
कोप क्रिपानिधि आवत जो सु चपेट सो मार कै भूमि गिरायो ॥१६५५॥

दोहरा ॥

स्री हरि सिउ हरि ए कही बात धरम के तात ॥
तिही समै सिव जू कहियो ब्रहमे सिउ मुसकात ॥१६५६॥
सवैया ॥
आपन सो सब ही भट जूझि रहै कर कै न मरै न्रिप मारिओ ॥
तउ चतुरानन सिउ सिव जू कबि स्याम कहै इह भाति उचारिओ ॥
सक्र जमादिक बीर जिते हम हूं इन सो अति ही रन पारिओ ॥
ए तो नही बल हारत रंचक चउदहूं लोकनि को दलु हारिओ ॥१६५७॥

दोहरा ॥

दोऊ करत बिचार इत पंकज पूत त्रिनैन ॥
उत रवि असताचलि गयो ससि प्रगटियो भई रैन ॥१६५८॥

चौपई ॥

दोऊ दल अति ही अकुलाने ॥
भूख पिआस सो तन मुरझाने ॥
अर ते लरते ह्वै गई साझ ॥
रहि गए ता ही रन के माझ ॥१६५९॥
भोर भयो सभ सुभट सु जागे ॥
दुहू दिस मारू बाजन लागे ॥
साजे कवच ससत्र करि धारे ॥
बहुर जुध के हेत सिधारे ॥१६६०॥
सवैया ॥
सिव कौ जम कौ रवि कौ संगि लै बसुदेव को नंद चलियो रन धानी ॥
मारत हो अरि कै अरि को हर को हरि भाखत यौ मुख बानी ॥
स्याम के संगि घने उमडे भट पानन बान कमाननि तानी ॥
आइ भिरे खड़गेस के संगि असंक भए कछु संक न मानी ॥१६६१॥
गिआरह घाइल कै सिव के गन द्वादस सूरनि के रथ काटे ॥
घाइ कीयो जम को बिरथी बसु आठन कउ ललकार के डाटै ॥
सत्र बिमुंडत कीने घने जु रहे रन ते तिन के पग हाटे ॥
पउण समान छुटे न्रिप बान सबै दल बादल जिउ चलि फाटे ॥१६६२॥
भाज गए रन ते डर कै भट तउ सिव एक उपाइ बिचारिओ ॥
माटी को मानस एक कीयो तिह प्रान परे जब स्याम निहारिओ ॥
सिंघ अजीत धरिओ तिह नामु दीओ बर रुद्र मरै नही मारिओ ॥
ससत्र संभारि सोऊ कर मै खड़गेस के मारन हेत सिधारओ ॥१६६३॥
अड़िल ॥
अति प्रचंड बलवंड बहुर मिल कै भट धाए ॥
अपने ससत्र संभारि लीए करि संख बजाए ॥
द्वादस भानन तानि कमाननि बान चलाए ॥
यौ बरखै सर जाल मनो परले घन आए ॥१६६४॥

दोहरा ॥

बानन सो बानन कटे कोप तचे जुग नैन ॥

स्री हरि सो खड़गेस तब रिस करि बोलियो बैन ॥१६६५॥

सवैया ॥

किउ रे गुमान करै घन स्याम अबै रन ते पुनि तोहि भजैहो ॥
काहे कौ आनि अरियो सुन रे सिर केसनि ते बहुरो गहि लैहो ॥
ऐ रे अहीर अधीर डरे नहि तो कहि जीवत जान न दैहो ॥
इंद्र बिरंच कुबेर जलाधिप को ससि को सिव को हत कै हो ॥१६६६॥
तउ ही लउ बीर महोत कट सिंघ हुतो रन मै मनि कोप भरिओ ॥
कर मै करवारि लै धाइ चलिओ कबि स्याम कहै नही नैकु डरिओ ॥
असि जुध दुहूं न्रिप कीन बडो न कोऊ रन ते पग एक टरिओ ॥
खड़गेस क्रिपान की तानि दई बिनु प्रान करिओ गिर भूमि परिओ ॥१६६७॥
देखि दसा तिह सिंघ बचित्र सु ठाढो हुतो रिस कै वह धायो ॥
स्याम भनै धनु बानन लै तिह भूपति सिउ अति जुध मचायो ॥
स्री खड़गेस बली धन तानि महा बर बान प्रकोप चलायो ॥
लागि गयो तिह के उर मै सर घूमि गिरिओ धरि इउ अरि घायो ॥१६६८॥

चौपई ॥

तब अजीत सिंघ आप ही धायो ॥
धनुख बान लै रन मधि आयो ॥
भूपति को तिन बचन सुनायो ॥
तो बध हित सिव मुहि उपजायो ॥१६६९॥
अजीत सिंघ यौ बचन उचारिओ ॥
खड़ग सिंघ रन माहि हकारिओ ॥
न्रिप ए बैन सुनत नही डरिओ ॥
महाबीर पगु आगै धरिओ ॥१६७०॥
अजीत सिंघ रछा हित धाए ॥
ग्यारह रुद्र भान सभ आए ॥
इंद्र क्रिसन जम बसु रिस भरे ॥
बरुन कुबेर घेरि सभ खरे ॥१६७१॥

सवैया ॥

सिंघ अजीत जबै खड़गेस सो स्याम कहै अति जुधु मचायो ॥
संगि सिवादिक सूरजि ते अरि मारन को तिह हाथ उचायो ॥
बान चले अति ही रन मै न्रिप काटि सबै मनि रोसि तचायो ॥
लै धनु बान महा बलवान हन्यो भट को किनहूं न बचायो ॥१६७२॥

चौपई ॥

जब अजीत सिंघ मारि गिरायो ॥
सु भटन मन भटकिओ डर पायो ॥
बहुरो भूपति खड़ग संभारिओ ॥
चक्रत ते सबहूं बलु हारिओ ॥१६७३॥
तब हरि हरि बिधि मंत्र बिचारिओ ॥
मरै न जरै अगन ते जारिओ ॥
ता ते जतन कछू अब कीजै ॥
या ते मारि भूप इह लीजै ॥१६७४॥
ब्रहमे कहिओ सु इह बिधि कीजै ॥
मोहित ह्वै मन तब बलु छीजै ॥
जब इह भूप गिरिओ लखि लईयै ॥
तब इह जम को धाम पठईयै ॥१६७५॥
पुनि अपछ्रन आइस दीजै ॥
जा सो न्रिप रीझै सोई कीजै ॥

कउतकि हेरि भूप जब लै है ॥
घटि जै है बल मन द्रवि जै है ॥१६७६॥

दोहरा ॥

कमलज यौ हरि सिउ कहियो सुनी बात सुरराज ॥
नभि निहार बासव कहियो करहु न्रित सुरराज ॥१६७७॥
सवैया ॥
उत देवबधू मिलि न्रित करै इत सूर सबै मिल जुधु मचायो ॥
किंनर गंध्रब गावत है उत मारू बजै रन मंगल गायो ॥
कउतुक देखि बडो तिन को इह भूपति को मन तउ बिरमायो ॥
कान्रह अचान लयो धनु तानि सु बान महा न्रिप के तनि लायो ॥१६७८॥
लागत ही सर मोहित भयो तेऊ तीरन सो बर बीर संघारे ॥
गिआरह रुद्रनि के अगनं गन मारि लए हरि लोकि सिधारे ॥
द्वादस भान जलाधिप अउ ससि इंद्र कुबेर के अंग प्रहारे ॥
अउर जिते भट ठाढे रहे कबि स्याम कहै बिपते करि डारे ॥१६७९॥
सक्र को साठ लगावत भयो सर द्वै सति कान्रह के गात लगाए ॥
चउसठि बान हने जम को रवि द्वादस द्वादस के संग घाए ॥
सोम को सउ सत रुद्र को चार लगावत भयो कबि स्याम सुनाए ॥
स्रौन भरे सब के पट मानहु चाचर खेलि अबै भट आए ॥१६८०॥

चौपई ॥

अउर सुभट बहुते तिह मारे ॥
जूझ परे जम धामि सिधारे ॥
तब न्रिप पै ब्रहमा चल आयो ॥
स्याम भनै यह बैन सुनायो ॥१६८१॥
कहिओ सु किउ इन कउ रनि मारै ॥
ब्रिथा कोप कै किउ सर डारै ॥
ता ते इहै काज अब कीजै ॥
देह सहित नभि मारग लीजै ॥१६८२॥
जुध कथा नही रिदै चितारो ॥
अपनो अगलो काज सवारो ॥
ता ते अबि बिलंब नही कीजै ॥
मेरो कहियो मान कै लीजै ॥१६८३॥
सवैया ॥
इंद्र के धाम चलो बलवान सुजान सुनो अब ढील न कीजै ॥
देवबधू जोऊ चाहत है तिन को मिलीऐ मिल कै सुख लीजै ॥
तेरो मनोरथ पूरन होत है मान कहिओ न्रिप अंम्रित पीजै ॥
राजन राज समाज तजो इन बीरन को न ब्रिथा दुखु दीजै ॥१६८४॥

दोहरा ॥

यौ सुनि बतीआ ब्रहम की भूप सत्र दुख दैन ॥
अति चिति हरख बढाइ कै बोलिओ बिधि सो बैन ॥१६८५॥

चौपई ॥

यौ ब्रहमा सो बैन सुनायो ॥
तो सिउ कहो जु मन मै आयो ॥
मो सो बीर ससत्र जब धरै ॥
कहो बिसन बिन का सो लरै ॥१६८६॥

दोहरा ॥

तुम सब जानत बिस्व कर खड़ग सिंघ मोहि नाउ ॥
लाज आपने नाउ की कहो कहा भजि जाउ ॥१६८७॥
सवैया ॥
चतुरानन मो बतीआ सुनि लै चित दै दुह स्रउनन मै धरीऐ ॥
उपमा को जबै उमगै मन तउ उपमा भगवान ही की करीऐ ॥
परीऐ नही आन के पाइन पै हरि के गुर के दिज के परीऐ ॥
जिह को जुग चार मै नाउ जपै तिह सो लरि कै मरीऐ तरीऐ ॥१६८८॥
जा सनकादिक सेस ते आदिक खोजत है कछु अंत न पायो ॥
चउदह लोकन बीच सदा सुक ब्यास महा कबि स्याम सु गायो ॥
जाही के नाम प्रताप हूं ते ध्रूअ सो प्रहलाद अछै पद पायो ॥
सो अब मो संग जुधु करै जिह स्रीधर स्री हरि नाम कहायो ॥१६८९॥
अड़िल ॥
चतुरानन ए बचन सुनत चक्रित भयो ॥
बिसन भगत को तबै भूप चित मै लयो ॥
साध साध करि बोलिओ बदन निहार कै ॥
हो मोन रहियो गहि कमलज प्रेम बिचार कै ॥१६९०॥
बहुरि बिधाता भूपति को इह बिधि कहियो ॥
भगति ग्यान को ततु भली बिधि तै लहियो ॥
ता ते अब तन साथहि सुरगि सिधारीऐ ॥
हो मुकत ओर करि द्रिसटि न जुध निहारीऐ ॥१६९१॥

दोहरा ॥

कहियो न मानै भूप जब तब ब्रहमे कह कीन ॥
नारद को सिमरनि कीओ मुनि आयो परबीन ॥१६९२॥
सवैया ॥
तब ही मुनि नारद आइ गयो तिह भूपति को इक बैन सुनायो ॥
चउदह लोकन बीच कहियो प्रभि तो सम राज न कोऊ बनायो ॥
ताही ते बीरन की मनि तै सु भलो कीयो स्याम सो जुध मचायो ॥
स्याम कहै मुनि की बतीआ सुनि भूप घनो मन मै सुखु पायो ॥१६९३॥

दोहरा ॥

अभिबंदन भूपति कीयो नारद को पहिचानि ॥
मुनिपति इह उपदेस दीआ जुध करो बलवान ॥१६९४॥
इत भूपति नारद मिले प्रेमु भगति की खान ॥
उत महेस चलि तह गए जह ठाढे भगवान ॥१६९५॥

चौपई ॥

इते रुद्र मनि मंत्र बिचारिओ ॥
स्री जदुपति के निकटि उचारिओ ॥
अब ही म्रितहि आइस दीजै ॥
तब इह भूप मारि कै लीजै ॥१६९६॥

दोहरा ॥

सर अपने मै म्रितु धरि इह तुम करहु उपाइ ॥
अब कसि कै धनु छाडीए भूले बडि अनिआइ ॥१६९७॥

चौपई ॥

सोई काम स्याम जू कीनो ॥
जिह बिधि सो सिव जू कहि दीनो ॥
तब चितवन हरि म्रित को कीयो ॥
मीच आइ कै दरसनु दीयो ॥१६९८॥

दोहरा ॥

कहिओ म्रित को क्रिसन जू मो सर मै कर बासु ॥
अब छाडत हो सत्र पै जाइ करहु तिह नासु ॥१६९९॥
सवैया ॥
देव बधून के नैन कटाछ बिलोकत ही न्रिप चित लुभायो ॥
नारद ब्रहम दुहूं मिल कै रन मै संगि बातन के उरझायो ॥
स्याम तबै लखि घात भली अरि मारन को म्रित बान चलायो ॥
मंत्रनि के बल सो छल सो तब भूपति को सिरु काटि गिरायो ॥१७००॥
जदिपि सीस कटिओ न हटिओ गहि केसनि ते हरि ओरि चलायो ॥
मानहु प्रान चलियो दिवि आनन काज बिदा ब्रिजराज पै आयो ॥
सो सिरु लाग गयो हरि के उरि मूरछ ह्वै पगु न ठहरायो ॥
देखहु पउरख भूप के मुंड को स्यंदन ते प्रभु भूमि गिरायो ॥१७०१॥
भूपत जैसो सु पौरख कीनो है तैसी करी न किसी करनी ॥
लखि जछनि किंनरी रीझ रही नभ मै सभ देवन की घरनी ॥
म्रिद बाजत बीन म्रिदंग उपंग मुचंग लीए उतरी धरनी ॥
नभ नाचत गावत रीझि रिझावत यौ उपमा कबि ने बरनी ॥१७०२॥

दोहरा ॥

नभ ते उतरी सुंदरी सकल लीए सुर साज ॥
कवन हेत कबि स्याम कहि भूपति बरबे काज ॥१७०३॥
सवैया ॥
मुंड बिना तब रुंड सु भूपति को चित मै अति कोप बढायो ॥
द्वादस भानु जु ठाढे हुते कबि स्याम कहै तिह ऊपरि धायो ॥
भाजि गए करि त्रास सोऊ सिव ठाढो रहियो तिह ऊपर आयो ॥
सो न्रिप बीर महा रनधीर चटाकि चपेट दै भूमि गिरायो ॥१७०४॥
एकन मारि चपेटन सिउ अरु एकन को धमकार गिरावै ॥
चीर कै एकनि डारि दए गहि एकन को नभि ओरि चलावै ॥
बाज सिउ बाजन लै रथ सिउ रथ अउ गज सिउ गजराज बजावै ॥
स्याम भनै रन या बिधि भूपति सत्रनि को जम धामि पठावै ॥१७०५॥
ह्वै कै सुचेत चढियो रथि स्याम महा मन भीतर कोप बढियो है ॥
आपन पउरख सोऊ संभार कै म्यानहु ते करवारि कढियो है ॥
धाइ परे रिस खाइ घनी अरिराइ मनो निधि नीर हढियो है ॥
तानि कमाननि मारत बानन सूरन के चित चउप चढियो है ॥१७०६॥
बीरन घाइ करे जब ही तब पउरख भूप कबंध समारिओ ॥
ससत्र संभार तबै अपुने इन नासु करो चित बीच बिचारिओ ॥
धाइ परिओ रिसि सिउ रन मै अरि भाजि गए जसु राम उचारिओ ॥
तारन को मनो मंडल भीतर सूर चढिओ अंधिआरि सिधारिओ ॥१७०७॥
स्री जदुबीर ते आदिक बीर गए भजि कै न कोऊ ठहिरानिओ ॥
आहव भूमि मै भूपति को सब सूरन मानहु काल पछानिओ ॥
भूप कमान ते बान चले मनो अंति प्रलै घन सिउ बरखानिओ ॥
इउ लखि भाजि गए सिगरे किनहूं न्रिप के संग जुधु न ठानिओ ॥१७०८॥
सब ही भट भाजि गए जब ही प्रभ को तब भूप भयो अनुरागी ॥
जूझ तबै तिन छाडि दयो हरि धिआन की ताहि समाधि सी लागी ॥
राज न राज समाज बिखै कबि स्याम कहै हरि मै मति पागी ॥

धीर गहिओ धरि ठाढो रहिओ कहो भूपति ते अब को बडभागी ॥१७०९ ॥
स्री जदुबीर को बीर सभो धरि डारनि को जब घात बनायो ॥
स्याम भने मिलि कै फिरि कै इह पै पुनि बाननि ओघ चलायो ॥
देवबधू मिल कै सबहूं इह भूप कबंध बिवानि चढायो ॥
कूद परिओ न बिवानि चढियो पुनि ससत्र लीए रन भू मधि आयो ॥१७१० ॥

दोहरा ॥

धनुख बान लै पान मै आनि परिओ रन बीच ॥
सूरबीर बहु बिधि हने ललकारियो तब मीच ॥१७११ ॥

चौपई ॥

अंतक जम जब लैने आवै ॥
लखि तिह को तब बान चलावै ॥
म्रितु पेख कै इत उत टरै ॥
मारिओ काल हूं को नही मरै ॥१७१२ ॥
पुनि सत्रनि दिसि रिसि करि धायो ॥
मानहु जम मूरति धरि आयो ॥
इउ सु जुधु बैरिन संगि करिओ ॥
हरि हर बिधि सुभटनि मनु डरिओ ॥१७१३ ॥
सवैया ॥
हारि परै मनुहारि करै कहै इउ न्रिप जुध ब्रिथा न करईयै ॥
डारि दै हाथन ते हथीआरन कोप तजो सुख साति समईयै ॥
सूर न कोऊ भयो तुमरे सम तेरो प्रताप तिहूं पुरि गईयै ॥
छाडति है हम ससत्र सबै सु बिवान चढो सुर धामि सिधईयै ॥१७१४ ॥
अड़िल ॥
सब देवन अरु क्रिसन दीन ह्वै जब कहिओ ॥
हटो जुध ते भूप हमो मुखि त्रिन गहिओ ॥
न्रिप सुनि आतुर बैन सु कोपु निवारिओ ॥
हो धनुख बान दिओ डारि राम मनु धारिओ ॥१७१५ ॥

दोहरा ॥

किंनर जछ अपछरनि लयो बिवान चढाइ ॥
जै जै कार अपार सुनि हरखे मुनि सुर राइ ॥१७१६ ॥
सवैया ॥
भूप गयो सुर लोकि जबै तब सूर प्रसंनि भए सब ही ॥
इह भात कहै रनु मै सिगरे मुखि काल के जाइ बचे अब ही ॥
ससि भानु धनाधिप रुद्र बिरंच सबै हरि तीर गए जब ही ॥
हरखे बरखे नभ ते सुर फूल सु जीत की बंब बजी तब ही ॥१७१७ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जुध प्रबंधे खड़ग सिंघ बधहि धिआइ समापतं ॥*

सवैया ॥
तउ ही लउ कोप कीओ मुसली अरि बीर तबै संग तीर प्रहारे ॥
ऐचि लीए इक बार ही बैरन प्रान बिना करि भू पर डारे ॥
एक बली गहि हाथन सो छित पै करि कोप फिराइ पछारे ॥
जीवत जोऊ बचे बल ते रन त्याग सोऊ न्रिप तीर सिधारे ॥१७१८ ॥

चौपई ॥

जरासंधि पै जाइ पुकारे ॥
खड़ग सिंघ रन भीतर मारे ॥
इउ सुनि कै तिन के मुख बैना ॥
रिसि के संग अरुन भए नैना ॥१७१९॥
अपुने मंत्री सबै बुलाए ॥
तिन प्रति भूपति बचन सुनाए ॥
खड़ग सिंघ जूझे रन माही ॥
अउर सुभट को तिह सम नाही ॥१७२०॥
खड़ग सिंघ सो सूरो नाही ॥
तिह सम जाइ लरै रन माही ॥
अब तुम कहो कउन बिधि कीजै ॥
कउन सुभट को आइस दीजै ॥१७२१॥
जरासंधि न्रिप सो मंत्री बाच ॥

दोहरा ॥

तब बोलिओ मंत्री सुमति जरासंधि के तीर ॥
साझ परी है अब न्रिपति कउन लरै रनि बीर ॥१७२२॥
उत राजा चुप होइ रहिओ मंत्रि कही जब गाथ ॥
इत मुसलीधर तह गयो जहा हुते ब्रिजनाथ ॥१७२३॥
मुसली बाच कान्रह सो ॥

दोहरा ॥

क्रिपासिंध इह कउन सुत खड़ग सिंघ जिह नाम ॥
ऐसो अपुनी बैस मै नहि देखिओ बल धाम ॥१७२४॥

चौपई ॥

ता ते या की कथा प्रकासो ॥
मेरे मन को भरमु बिनासो ॥
ऐसी बिधि सो बलि जब कहिओ ॥
सुनि स्री क्रिसनि मोन ह्वै रहिओ ॥१७२५॥
कान्रह बाच ॥
सोरठा ॥
पुनि बोलिओ ब्रिजनाथ क्रिपावंत ह्वै बंधु सिउ ॥
सुनि बलि या की गाथ जनम कथा भूपति कहो ॥१७२६॥

दोहरा ॥

खटमुख रमा गनेस पुनि सिंगी रिखि घन स्याम ॥
आदि बरन बिधि पंच लै धरिओ खड़ग सिंघ नाम ॥१७२७॥
खड़ग रमय तन गरमिता सिंघ नाद घमसान ॥
पंच बरन को गुन लीओ इह भूपति बलवान ॥१७२८॥

छपै छंद ॥

खरग सकति सविताात दई तिह हेत जीत अति ॥
बहु सुंदरता रमा दई तिन बिमल अमल मति ॥
गरमा सिधि गनेस स्रिंग रिखि सिंघनाद दीय ॥
करत अधिक घमसान इहै घन स्याम हेत कीय ॥
इह बिधि प्रकास भूपति कीयो सुनि हलधर इम भाखियो ॥
ब्रिजनाथ अनाथ सनाथ तुम बडो सत्रु रन मधि हयो ॥१७२९॥

सोरठा ॥
पुनि बोलिओ ब्रिजचंद संकरखन सो क्रिपा करि ॥
जादव इक मति मंद गरब करै बहु भुजा को ॥१७३०॥

चौपई ॥

जादव बंस मान भयो भारी ॥
राम स्याम हमरे रखवारी ॥
डीठ आन को आनत नाही ॥
ता को फलु पायो जग माही ॥१७३१॥
गरब प्रहारी स्री धरि जानो ॥
मेरो कहियो साचु करि मानो ॥
तिह के हेत भूप अउतरियो ॥
इह बिधि जान बिधाता करियो ॥१७३२॥

दोहरा ॥

कहा रंक भूपाल ए करिओ इतो संग्राम ॥
जादव गरब बिनास हित उपजायो स्री राम ॥१७३३॥

चौपई ॥

जादव कुल ते गरब न गयो ॥
इन के नाम हेत रिखि भयो ॥
दुख कै स्राप मुनीसुर दै है ॥
एक समै सभ ही को छै है ॥१७३४॥

दोहरा ॥

पुनि बोलिओ स्री क्रिसन जी पंकज नैन बिसाल ॥
हे मुसलीधर बुधि बर सुन अब कथा रसाल ॥१७३५॥

चौपई ॥

सुनि दै स्रउन बात कहो तो सो ॥
कवन जुधु करि जीतै मो सो ॥
खड़ग सिंघ मो अंतर नाही ॥
मुहि सरूप वरतत जग माही ॥१७३६॥
साच कहियो है हे बलिदेवा ॥
पायो नहिन किसू इह भेवा ॥
सूरन मै कोऊ इह सम नाही ॥
मेरो नाम बसै रिद माही ॥१७३७॥

दोहरा ॥

उदर माझ बसि मास दस तजि भोजन जल पान ॥
पवन अहारी हुइ रहिओ बरु दीनो भगवान ॥१७३८॥
रिपु जीतन को बरु लीयो खड़ग सिंघ बलवान ॥
बहुरि तपस्या बनि करी द्वादस बरख प्रमान ॥१७३९॥

चौपई ॥

बीती कथा भयो तब भोर ॥
जागे सु भट दुहूं दिसि ओरि ॥

जरासंधि दलु सजि रनि आयो ॥
जादव दलु बलि लै समुहायो ॥१७४०॥
सवैया ॥
स्री बलदेव सबै दलु लै इत ते उमडिओ उत ते उइ आए ॥
जुधु कीओ हल लै निज पानि हकारि हकारि प्रहार लगाए ॥
एक परे भट जूझि धरा पर एक लरै मिल कै इक धाए ॥
मूसल लै बहुरे कर मै अरि मारि घने जम धामि पठाए ॥१७४१॥
रोस भयो घन स्याम लयो धनु बानु संभारि तही उठि धायो ॥
आनि परिओ तब ही तिन पै रिपु कउ हति कै नदि स्रोन बहायो ॥
बाज करी रथपति बिपति परी रन मै नहि को ठहिरायो ॥
भाजत जात सबै रिसि खात कछू न बसात कहै दुखु पायो ॥१७४२॥
आगे की सैन भजी जब ही तब पउरख स्री ब्रिजराज संभारिओ ॥
ठाढो जहा दल को पति है तहा जाइ पर्यो चित बीच बिचारिओ ॥
ससत्र संभारि मुरारि सबै न्रिप ठाढो जहा तिह ओरि सिधारिओ ॥
बान कमान गही घनि स्याम जरासंधि को अभिमान उतारिओ ॥१७४३॥
स्री बलबीर सरासनु ते जब तीर छुटे तब को ठहरावै ॥
जाइ लगे जिह के उर मै सर सो छिन मै जम धामि सिधावै ॥
ऐसे न को प्रगटिओ जग मै भट जो समुहाइ कै जुधु मचावै ॥
भूपति कउ निज बीर कहैं हरि मारत सैन चलिओ रनि आवै ॥१७४४॥
स्याम की ओर ते बान छुटे न्रिप के दल के बहु बीरन घाए ॥
जेतिक आइ भिरे हरि सो छिन बीच तेऊ जम धामि पठाए ॥
कउतुक देख कै यौ रन मै अति आतुर हुइ तिन बैन सुनाए ॥
आवन देहु अबै हम लउ न्रिप ऐसे कहिओ सिगरे समझाए ॥१७४५॥
भूप लखिओ हरि आवत ही संग लै प्रितना तब आपु ही धायो ॥
आगे कीए निज लोग सबै तब लै कर मो बर संख बजायो ॥
स्याम भनै तिह आहव मै अति ही मन भीतर को डर पायो ॥
ता धुनि को सुनि कै बर बीरन के चिति मानहु चाउ बढायो ॥१७४६॥

दोहरा ॥

जरासंधि की अति चमूं उमडी क्रोध बढाइ ॥
धनुख बान हरि पानि लै छिन मै दीनी घाइ ॥१७४७॥
सवैया ॥
जदुबीर कमान ते बान छुटे अवसान गए लखि सत्रन के ॥
गजराज मरे गिर भूमि परे मनो रूख कटे करवत्रन के ॥
रिपु कउन गने जु हने तिह ठा मुरझाइ गिरे सिर छत्रन के ॥
रन मानो सरोवरि आंधी बहै टुटि फूल परे सत पत्रन के ॥१७४८॥
घाइ लगे इक घूमत घाइल स्रउन सो एक फिरै चुचवाते ॥
एक निहार कै डारि हथीआर भजै बिसंभार गई सुधि साते ॥
दै रन पीठ मरै लर कै तिह मास को जंबुक गीध न खाते ॥
बोलत बीर सु एक फिरै मनो डोलत कानन मै गज माते ॥१७४९॥
पानि क्रिपान गही घनि स्याम बडे रिपु ते बिनु प्रान कीए ॥
गज बाजन के असवार हजार मुरारि संघारि बिदारि दीए ॥
अरि एकन के सिर काटि दए इक बीरन के दए फारि हीए ॥
मनो काल सरूप कराल लखिओ हरि सत्र भजे इक मार लीए ॥१७५०॥

कबितु ॥

रोस भरे बहुरो धनुख बान पानि लीनो रिपन संघारत इउ कमला को कंतु है ॥
केते गज मारे रथी बिरथी करि डारे केते ऐसे भयो जुधु मानो कीनो रुद्र अंतु है ॥
सैथी चमकावत चलावत सुदरसन को कहै कबि राम स्याम ऐसो तेजवंतु है ॥

स्रउनत रंगीन पट सुभट प्रबीन रन फागु खेल पौढ रहे मानो बडे संत है ॥१७५१॥
कान्रह ते न डरे अरि अरराइ परे सब कहै कबि स्याम लरबे कउ उमगति है ॥
रन मै अडोल स्वाम कार जी अमोल बीर गोल ते निकस लरै कोप मै पगत है ॥
डोलत है आस पास जीतबे की करै आस त्रास मनि नैकु नही न्रिप के भगत है ॥
कंचन अचल जिउ अटल रहिओ जदुबीर तीर तीर सूरमा नछत्र से डिगत है ॥१७५२॥
सवैया ॥
इह भाति इतै जदुबीर घिरिओ उत कोप हलायुध बीर संघारे ॥
बान कमान क्रिपानन पानि धरे बिनु प्रान परे छिति मारे ॥
टूक अनेक कीए हलि सो बलि कातुर देखि भजे बिसंभारे ॥
जीतत भयो मुसली रन मै अरि भाजि चले तब भूप निहारे ॥१७५३॥
चक्रत हुइ चित बीच चमू पति आपुनी सैन कउ बैन सुनायो ॥
भाजत जात कहा रन ते भट जुधु निदान समो अब आयो ॥
इउ ललकार कहिओ दल को तब स्रउनन मै सबहूं सुनि पायो ॥
ससत्र संभारि फिरे तब ही अति कोप भरे हठि जुधु मचायो ॥१७५४॥
बीर बडे रनधीर सोऊ जब आवत स्री जदुबीर निहारे ॥
स्याम भनै करि कोप तिही छिन सामुहे होइ हरि ससत्र प्रहारे ॥
एकन के कर काटि दए इक मुंड बिना करि भू परि डारे ॥
जीत की आस तजी अरि एक निहार कै डारि हथियार पधारे ॥१७५५॥

दोहरा ॥

जब ही अति दल भजि गयो तब न्रिप कीओ उपाइ ॥
आपन मंत्री सुमति कउ लीनो निकटि बुलाइ ॥१७५६॥
द्वादस छूहनि सैन अब लै धावहु तुम संग ॥
ससत्र असत्र भूपति दयो अपुनो कवच निखंग ॥१७५७॥
सुमति चलत रन इउ कहियो सुनीए बचन न्रिपाल ॥
हरि हलधर केतक बली करो काल को काल ॥१७५८॥

चौपई ॥

इउ कहि जरासंधि सिउ मंत्री ॥
संग लीए तिह अधिक बजंत्री ॥
मारू राग बजावत धायो ॥
द्वादस छूहणि लै दलु आयो ॥१७५९॥

दोहरा ॥

संकरखण हरि सो कहियो करीऐ कवन उपाइ ॥
सुमति मंत्रि दल प्रबल लै रन मधि पहुंचियो आइ ॥१७६०॥
सोरठा ॥
तब बोलिओ जदुबीर ढील तजो बलि हलि गहो ॥
रहीयो तुम मम तीर आगै पाछै जाहु जिनि ॥१७६१॥
सवैया ॥
राम लीयो धनु पानि संभारि धस्रयो तिन मै मनि कोपु बढायो ॥
बीर अनेक हने तिह ठउर घनो अरि सिउ तब जुधु मचायो ॥
जो कोऊ आइ भिरियो बलि सिउ अति ही सोऊ घाइन के संग घायो ॥
मूरछ भूमि गिरे भट झूमि रहे रन मै तिह सामुहे धायो ॥१७६२॥
कान्रह कमान लीए कर मै रन मै जब केहरि जिउ भभकारे ॥
को प्रगटिओ भट ऐसे बली जगि धीर धरे हरि सो रन पारे ॥
अउर सु कउन तिहूं पुर मै बलि स्याम सिउ बैर को भाउ बिचारे ॥
जो हठ कै कोऊ जुधु करै सु मरै पल मै जमलोकि सिधारे ॥१७६३॥
जब जुधु को स्याम जू राम चढे तब कउन बली रन धीर धरै ॥

जोऊ चउदह लोकन को प्रतिपाल न्रिपाल सु बालक जानि लरै ॥
जिह नाम प्रताप ते पाप टरै तिह को रन भीतर कउन हरै ॥
मिलि आपसि मै सब लोक कहै रिपु संधि जरा बिनु आई मरै ॥१७६४॥
सोरठा ॥
इत ए करत बिचारि सुभट लोक न्रिप कटक मै ॥
उत बलि ससत्र संभारि धाइ परिओ नाहिन डरियो ॥१७६५॥
सवैया ॥
मूसल लै मुसली कर मै अरि को पल मै दल पुंज हरिओ है ॥
बीर परे धरनी पर घाइल स्रउनत सिउ तन ताहि भरिओ है ॥
ता छबि को जसु उच महा मन बीच बिचार कै स्याम करिओ है ॥
मानहु देखन कउ रन कउतुक क्रोध भिआनक रूप धरिओ है ॥१७६६॥
इत ओर हलायुध जुधु करै उत स्री गरड़धुज कोप भरिओ है ॥
ससत्र संभारि मुरारि तबै अरि सैन के भीतर जाइ अरिओ है ॥
मारि बिदार दए दल कउ रन या बिधि चित्र बचित्र करिओ है ॥
बाज पै बाज रथी रथ पै गज पै गज स्वार पै स्वार परिओ है ॥१७६७॥
एक कटे अध बीचहुं ते भट एकन के सिर काटि गिराए ॥
एक कीए बिरथी तब ही गिर भूमि परे संगि बानन घाए ॥
एक कीए कर हीन बली पग हीन किते गनती नहि आए ॥
स्याम भनै किनहूं नही धीर धरिओ तब ही रन छाडि पराए ॥१७६८॥
जा दल जीत लयो सिगरे जगु अउर कहूं रन ते नही हारिओ ॥
इंद्र से भूप अनेक मिले तिन ते कबहूं नही जा पगु टारिओ ॥
सो घनि स्याम भजाइ दीयो पल मै न किनूं धनु बान संभारिओ ॥
देव अदेव करै उपमा इम स्री जदुबीर बडो रन पारिओ ॥१७६९॥

दोहरा ॥

द्वै अछूहनी सैन रनि दई स्याम जब घाइ ॥
मंत्री सुमति समेत दलु कोप परिओ अरराइ ॥१७७०॥
सवैया ॥
धाइ परे करि कोप तबै भट दै मुख ढाल लए करवारै ॥
सामुहे आइ हठी हठि सिउ घनि स्याम कहा इह भाति हकारै ॥
मूसल चक्र गदा गहि कै सु हतै हरि कौच उठै चिनगारै ॥
मानो लुहार लीए घन हाथन लोह करेरे को काम सवारै ॥१७७१॥
तउ लग ही बरमाक्रित ऊधव आए है स्याम सहाइ के कारन ॥
अउर अक्रूर लए संग जादव धाइ परिओ अर बीर बिदारन ॥
ससत्र संभारि सभै अपुने कबि स्याम कहै मुख मारि उचारन ॥
ओर दुहूं अति जुधु भयो सु गदा बरछी करवारि कटारन ॥१७७२॥
आवत ही बरमाक्रित जू अरि सैनहु ते सु घने भट कूटे ॥
एक परे बिब खंड तही अरि एक गिरे धर पै सिर फूटे ॥
एक महा बलवान कमानन तानि चलावत इउ सर छूटे ॥
काज बसेरे के रैन समे मधिआन मनो तरु पै खग टूटे ॥१७७३॥
एक कबंध लीए करवारि फिरै रन भूमि के भीतर डोलत ॥
धाइ परै तिह ओर बली भट जो तिह को ललकार कै बोलत ॥
एक परे गिर पाइ कटे उठबे कहु बाहन को बलु तोलत ॥
एक कटी भुज यौ तरफै जल हीन जिउ मीन परिओ झकझोलत ॥१७७४॥
एक कबंध बिना हथिआरन राम कहै रन मधि दउरै ॥
सुंडन ते गज राजन को गहि कै करि कै बल सो झकझोरै ॥
भूमि गिरे म्रित अस्वन की दुहूं हाथन सो गहि ग्रीव मरोरै ॥
स्यंदन के असवारन के सिर एक चपेट ही के संगि तोरै ॥१७७५॥
कूदत है रन मै भट एक कुलाचन दै करि जुधु करै ॥
इक बान कमान क्रिपानन ते कबि राम कहै न रती कु डरै ॥

इक काइर त्रास बढाइ चितै रन भूमि हूं ते तज ससत्र टरै ॥
इक लाज भरे पुनि आइ अरै लरि कै मर कै गिरि भूमि परै ॥१७७६॥
ब्रिजभूखन चक्र संभारत ही तब ही दलु बैरन के धसि कै ॥
बिनु प्रान कीए बलवान घने कबि स्याम भनै सु कछू हसि कै ॥
इक चूरन कीन गदा गहि कै इक पास के संग लीए कसि कै ॥
जदुबीर अयोधन मै बल कै अरि बीर लीए सब ही बसि कै ॥१७७७॥
बलभद्र इते बहु बीर हने ब्रिजनाथ उतै बहु सूर संघारे ॥
जो सभ जीत फिरे जग कउ अरु गाढ परी न्रिप काम सवारे ॥
ते घनि स्याम अयोधन मै बिनु प्रान कीए अरि भू पर डारे ॥
इउ उपमा उपजी जीय मै कदली मनो पउन प्रचंड उखारे ॥१७७८॥
जो रन मंडन स्याम के संगि भले न्रिप धामन कउ तजि धाए ॥
एक रथै गज राज चढे इक बाजन के असवार सुहाए ॥
ते घनि जिउ ब्रिज राज के पउरख पउन बहै छिन माझ उडाए ॥
काइर भाजत ऐसे कहै अब प्रान रहै मनो लाखन पाइ ॥१७७९॥
स्याम के छूटत बानन चक्र सु चक्रित हुइ रथ चक्र भ्रमावत ॥
एक बली कुल लाज लीए द्रिड़ हुइ हरि के संगि जूझ मचावत ॥
अउर बडे न्रिप लै न्रिप आइस आवत है चले गाल बजावत ॥
बीर बडे जदुबीर कउ देखन चउप चड़े लरबे कहु धावत ॥१७८०॥
स्री ब्रिजनाथ तबै तिन ही धनु तान कै बान समूह चलावत ॥
आइ लगै भट एकन कउ नट साल भए मन मै दुखु पावत ॥
एक तुरंगन की भुज बान लगै अति राम महा छबि पावत ॥
साल मुनीस्वर काटे हुते ब्रिजराज मनो तिह पंख बनावत ॥१७८१॥

चौपई ॥

तब सभ सत्र कोप मनि भरे ॥
घेर लयो हरि नैकु न डरे ॥
बिबिधायुध लै आहव करै ॥
मार मार मुख ते उचरै ॥१७८२॥
सवैया ॥
क्रुधत सिंघ क्रिपान संभार कै स्याम कै सामुहे टेरि उचारिओ ॥
केस गहे खड़गेस बली जब छाडि दयो तब चक्र संभारिओ ॥
गोरस खात ग्वारिन वै दिन भूल गए अब जुध बिचारिओ ॥
स्याम भनै जदुबीर कउ मानहु बैनन बानन कै संगि मारिओ ॥१७८३॥
इउ सुन कै बतीया ब्रिज नाइक कोप कीओ करि चक्र संभारियो ॥
नैकु भ्रमाइ कै पान बिखै बलि कै अरि ग्रीव के ऊपर डारियो ॥
लागत सीसु कटियो तिह को गिर भूमि परियो जसु सिआम उचारियो ॥
तार कुंभार लै हाथ बिखै मनो चाक के कुंभ तुरंत उतारियो ॥१७८४॥
जुध कीओ ब्रिजनाथ कै साथ सु सत्रु बिदार कहै जग जा कउ ॥
जा दस हूं दिस जीत लई छिन मै बिनु प्रान कीओ हरि ता कउ ॥
जोति मिली तिह की प्रभु सिउ जिम दीपक क्राति मिलै रवि भा कउ ॥
सूरज मंडल छेद कै भेद कै प्रान गए हरि धाम दसा कउ ॥१७८५॥
सत्रु बिदार हनिओ जब ही तब स्री ब्रिजभूखन कोप भरियो है ॥
स्याम भने तजि कै सब संक निसंक हुइ बैरन माझ परियो है ॥
भैरव भूप सिउ जुध कीओ सु वहै छिन मै बिनु प्रान करियो है ॥
भूमि गिरियो रथ ते इह भाति मनो नभ ते ग्रह टूटि परियो है ॥१७८६॥
एक भरे भट स्रौनत सो भभकारत घाइ फिरै रनि डोलत ॥
एक परे गिर कै धरनी तिन के तन जंबुक गीध कढोलत ॥
एकन के मुखि ओठन आंखन काग सु चोचन सिउ टक टोलत ॥
एकन की उरि आंतन को कढि जोगनि हाथन सिउ झकझोलत ॥१७८७॥
मान भरे असि पानि धरे चहूं ओरन ते बहुरो अरि आए ॥

स्री जदुबीर के बीर जिते कबि स्याम कहै इत ते तेऊ धाए ॥
बानन सैथिन अउ करवारि हकारि हकारि प्रहार लगाए ॥
आइ खए इक जीत लए इक भाजि गए इक मारि गिराए ॥१७८८॥
जे भट आहव मै कबहूं अरि कै लरि कै पगु एक न टारे ॥
जीति फिरै सभ देसन कउ सोऊ भाजि गए जिह ओरि निहारे ॥
जो जम के संगि जूझ करै तब अंतक ते नहि जात निवारे ॥
ते भट जूझि परे रन मै जदुबीर के कोप क्रिपान के मारे ॥१७८९॥
एक हुतो बलबीर बडो जदुबीर लिलाट मै बान लगायो ॥
फोक रही गडि भउहनि मै सरु छेद सभै सिर पार परायो ॥
स्याम कहै उपमा तिह की बर घाइ लगे बहु स्रोन बहायो ॥
मानहु इंद्र पै कोपु कीयो सिव तीसरे नैन को तेज दिखायो ॥१७९०॥
जदुबीर महा रनधीर जबै सु धवाइ परे रथ इउ कहि कै ॥
बलि दछन ओरि निहार कितो दल धायो है ससत्र सबै गहि कै ॥
बतीया सुनि सो ब्रिज नाइक की हल सो बलि धाइ लीए चहि कै ॥
तिह को अति स्रोन परिओ भूअ मै मनो सारसुती सु चली बहि कै ॥१७९१॥
एक निहार भयो अति आहव स्याम भनै तजि कै रन भागे ॥
घाइल घूमत एक फिरै मनो नीद घनी निसि के कहूं जागे ॥
पउरखवंत बडे भट एक सु स्याम सो जुध ही कउ अनुरागे ॥
एक त्याग कै ससत्र सबै जदुराइ के आइ कै पाइन लागै ॥१७९२॥

दोहरा ॥

भजे सत्र जब जुध ते मन मै त्रास बढाइ ॥
अउर सूर आवत भए करवारिन चमकाइ ॥१७९३॥
सवैया ॥
ससत्र संभारि सभै भट आइ कै धाइ कै स्याम सो जुधु मचायो ॥
त्रक गहिओ कर मै ब्रिज नाइक कोप भयो तिह ऊपर धायो ॥
बीर कीए बिनु प्रान घने अरि सैन सबै इह भाति भजायो ॥
पउन प्रचंड समान सु कान्रह मनो उमडिओ दलु मेघ उडायो ॥१७९४॥
काटत एकन के सिर चक्र गदा गहि दूजन के तन झारै ॥
तीजन नैन दिखाइ गिरावत चउथन चौप चपेटन मारै ॥
चीर दए अरि के उरि स्री हरि सूरन के अंगि अंगि प्रचारै ॥
धीर तहा भट कउन धरै जदुबीर जबै तिह ओरि सिधारै ॥१७९५॥
रोस भरियो जब ही ब्रिज नाइक दुजन सैन निहारि परै ॥
तुम हूं धौ बिचार कहो चित मै जगि कउन बीओ भट धीर धरै ॥
जोऊ साहस कै सब आयुध लै संगि स्याम के आइ कै नैकु अरै ॥
तिह कउ जदुबीर तिही छिन मै कबि स्याम कहै बिन प्रान करै ॥१७९६॥
जो भट ससत्र संभारि सबै ब्रिजनाइक पै अति ऐडो सु आवै ॥
जो कोऊ दूर ते स्याम भनै धनु तानि के स्याम पै बान चलावै ॥
जो अरि आइ सकै नही सामुहे दूर ते ठाढे ई गाल बजावै ॥
ताहि कउ स्री ब्रिजनाथ चितै सर एक ही सो परलोकि पठावै ॥१७९७॥

कबितु ॥

देख दसा तिन की बडेई बीर सत्रन के राम भनै ऐसी भाति चित मै रिसात है ॥
लीने करवारि मार मार ही उचार समुहाइ आइ स्याम जू सो जुधु ही मचात है ॥
एक निजकात नही मन मै डरात मुसकाइ घाइ खात मनो सबै एक जाति है ॥
गालहि बजात एक हरख बढात छत्र धरम करात ते वे सुरगि सिधात है ॥१७९८॥
सवैया ॥
ब्रिजनाइक के बल लाइक जे कबि स्याम कहै सोऊ सामुहे आवै ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि क्रुध भरे अति जुध मचावै ॥

एक परै बिनु प्रान धरा इक सीस कटे रन भूमहि धावै ॥
एकन की बर लोथ परी कर सो गहि कै अरि ओरि चलावै ॥१७९९॥
सूर सु एक हनै तह बाज तहा इक बीर बडे गज मारै ॥
एक रथी बलवान हनै इक पाइक मार कै बीर पछारै ॥
एक भजे लखि आहव कउ इक घाइल घाइल को ललकारै ॥
एक लरै न डरै घन स्याम को धाइ क्रिपान के घाइ प्रहारै ॥१८००॥

दोहरा ॥

घेरि लीओ चहूं ओर हरि बीरनि ससत्र संभारि ॥
बारि खेत जिउ छाप नग रवि ससि जिउ परिवारि ॥१८०१॥
सवैया ॥
घेरि लीओ हरि कउ जब ही तब स्री जदुनाथ सरासन लीनो ॥
दुजन सैन बिखै धसि कै छिन मै बिनु प्रान घनो दलु कीनो ॥
लोथ पै लोथ गई परि कै इह भाति करियो अति जुधु प्रबीनो ॥
जो कोऊ सामुहे आइ अरिओ अरि सो ग्रिह जीवत जान न दीनो ॥१८०२॥
बहु बीर हने लखि कै रन मै बर बीर बडे अति कोप भरे ॥
जदुबीर के ऊपरि आइ परे हठि कै मन मै नहीं नैकु डरे ॥
सब ससत्र संभारि प्रहार करै कबि स्याम कहै नही पैगु टरे ॥
ब्रिजनाथ सरासन लै तिन के सर एक ही एक सो प्रान हरे ॥१८०३॥
बहु भूमि गिरे बर बीर जबै जेऊ सूर रहे मन कोपु पगे ॥
ब्रिजनाथ निहारि उचारत यौ सब गूजर पूत के कउन भगे ॥
अब या कहु मारत है रन मै मन मै रस बीर मिले उमगे ॥
जदुबीर के तीर छुटे ते डरे भट जिउ कोऊ सोवत चउक जगे ॥१८०४॥

झूलना छंद ॥

लीयो पानि संभार कै चक्र भगवान जू क्रोध कै सत्रु की सैन कुटी ॥
मही चाल कीनो दसो नाग भागे रमा नाथ जागे हरहि डीठ छुटी ॥
घनी मार संघारि बिदार कीनी घनी स्याम को देख कै सैन फुटी ॥
ऐसे स्याम भाखै महा सूरमो की तहा आपनी जीत की आस तुटी ॥१८०५॥
घनी मारि माची तहा कालि नाची घने जुध कउ छाडि कै बीर भागे ॥
किसन बान कमान के लागते ही ऐसे स्याम भाखै घनियो प्रान त्यागे ॥
घनियो हाथ काटे गिरे पेट फाटे फिरै बीर संग्राम मै बान लागे ॥
घनियो घाइ लागे बसत्र स्रउन पागे मनो पहनि आए सबै लाल बागे ॥१८०६॥
जबै स्याम बलि राम संग्राम म्याने लीयो पानि संभार कै चक्र भारी ॥
केऊ बान कमान को तान धाए केऊ ढाल त्रिसूल मुगद्र कटारी ॥
जरासंधि की फउज मै चाल पारी बली दउर कै ठउरि सैना संघारी ॥
दुहूं ओर ते सार पै सार बाजियो छुटी मैन के सत्रु की नैन तारी ॥१८०७॥
मची मारि घमकारि तलवारि बरछी गदा छुरी जमधरन अरि दल संघारे ॥
बढी स्रउन सलता बहे जात गज बाज रथ मुंड करि सुंड भट तुंड निआरे ॥
त्रसे भूत बैताल भैरवि भगी जुगनी पैर खपरि उलटि उरि सु धारे ॥
भनै राम संग्राम अति तुमल दारुन भयो मोन तजि सिव ब्रहम जीअ डरारे ॥१८०८॥
सवैया ॥
जब साम सु पउरख एतो कीयो अरि सैनहु ते भट एक पुकारियो ॥
कान्रह बडो बलवंड प्रचंड घमंड कीयो अति नैकु न हारियो ॥
ता ते अबै भजीऐ तजीऐ रन या ते न कोऊ बचियो बिनु मारियो ॥
बालक जान कै भूलहु रे जिनि केस ते गहि कंस पछारियो ॥१८०९॥
ऐसो उचार सबै सुनि कै चित मै अति संकति मान भए है ॥
काइर भाजन को मन कीनो है सूरन के मन कोपि तए है ॥
बान कमान क्रिपानन लै करि मान भरे भट आइ खए है ॥

स्याम लयो असि पानि संभार हकार बिदार संघारि दए है ॥१८१०॥
एक भजे लखि भीर परी जदुबीर कही बलिबीर संभारो ॥
ससत्र जिते तुमरे पहि है जु अरे अरि ताहि हकारि संघारो ॥
धाइ निसंक परो तिह ऊपरि संक कछू चित मै न बिचारो ॥
भाजत जात जिते रिपु है तिह पासि के संग ग्रसो जिनि मारो ॥१८११॥
स्री ब्रिजराज के आनन ते मुसलीधर बैन इहै सुनि पाए ॥
मूसल अउ हल पानि लयो बलि पासि सुधार कै पाछै ही धाए ॥
भाजत सत्रन को मिल कै गरि डारि दई रिपु हाथ बंधाए ॥
एक लरे रन माझ मरे इक जीवत जेलि कै बंध पठाए ॥१८१२॥
स्री जदुबीर के बीर तबै अरि सैन के पाछै परे असि धारे ॥
आइ खए सोऊ मारि लए तेऊ जानि दए जिनि इउ कहियो हारे ॥
जो न टरे कबहूं रन ते अरि ते बलिदेव के बिक्रम टारे ॥
भाजि गए बिसंभार भए गिर गे कर ते करवारि कटारे ॥१८१३॥
जो भट ठाढे रहे रन मै तेऊ दउरि परे तिह ठउर रिसै कै ॥
चक्र गदा असि लोहहथी बरछी परसे अरि नैन चितै कै ॥
नैकु डरै नही धाइ परै भट गाजि सबै प्रभ काज जितै कै ॥
अउर दुहूं दिस जुध करै कबि स्याम कहै सुर धाम हितै कै ॥१८१४॥
पुनि जादव धाइ परे इत ते उत ते मिलि कै अरि सामुहे धाए ॥
आवत ही तिन आपसि बीच हकारि हकारि प्रहार लगाए ॥
एक मरे इक सास भरे तरफै इक घाइल भू पर आए ॥
मानो मलंग अखारन भीतर लोटत है बहु भाग चड़ाए ॥१८१५॥

कबितु ॥

बडे स्वामिकारजी अटल सूर आहव मै सत्रन के सामुहे ते पैगु न टरत है ॥
बरछी क्रिपान लै कमान बान सावधान ताही समे चित मै हुलास कै लरत है ॥
जूझ कै परत भवसागर तरत भानु मंडल कउ भेद प्यान बैकुंठ करत है ॥
कहै कबि स्याम प्रान अगे कउ धसत ऐसे जैसे नर पैर पैर कारी पै धरत है ॥१८१६॥
सवैया ॥
इह भाति को जुधु भयो लखि कै भट क्रुधत ह्वै रिपु ओरि चहै ॥
बरछी करि बान कमान क्रिपान गदा परसे तिरसूल गहै ॥
रिपु सामुहे धाइ कै घाइ करै न टरै बर तीर सरीर सहै ॥
पुरजे पुरजे तन ह्वै रन मै दुखु तो मन मै मुख ते न कहै ॥१८१७॥
जे भट आइ अयोधन मै करि कोप भिरे नहि संकि पधारे ॥
ससत्र संभारि सबै कर मै तन सउहे करै नहि प्रान पिआरे ॥
रोस भरे जोऊ जूझ मरे कबि स्याम ररे सुर लोगि सिधारे ॥
ते इह भाति कहै मुख ते सुर धामि बसे बडे भाग हमारे ॥१८१८॥
एक अयोधन मै भट यौ अरि कै बरि कै लरि भूमि परै ॥
इक देख दसा भट आपन की कबि स्याम कहै जीअ कोप लरै ॥
तब ससत्र संभारि हकारि परै घन स्याम सो आइ अरै न टरै ॥
तजि संक लरै रन माझ मरै ततकाल बरंगन जाइ बरै ॥१८१९॥
इक जूझि परै इक देखि डरै इक तउ चित मै अति कोप भरै ॥
कहि आपने आपने सारथी सो सु धवाइ कै स्यंदन आइ अरै ॥
तलवार कटारन संग लरै अति संगर मो नहि संक धरै ॥
कबि स्याम कहै जदुबीर के सामुहे मारि ही मारि करै न टरै ॥१८२०॥
जब यौ भट आवत स्री हरि सामुहे तउ सब ही प्रभ ससत्र संभारे ॥
कोप बढाइ चितै तिन कउ इक बार ही बैरन के तन झारे ॥
एक हने अरि पाइन सो इक दाइन सो गहि भूमि पछारे ॥
ताही समै तिह आहव मै बहु सूर बिना करि प्रानन डारे ॥१८२१॥
एक लगे भट घाइन के तजि देह को प्रान गए जम के घरि ॥
सुंदर अंग सु एकनि के कबि स्याम कहै रहे स्रोनत सो भरि ॥

एक कबंध फिरै रन मै जिन के ब्रिज नाइक सीस कटे बर ॥
एक सु संकति ह्वै चित मै तजि आहव को न्रिप तीर गए डरि ॥१८२२॥
भाजि तबै भट आहव ते मिलि भूप पै जाइ कै ऐसे पुकारे ॥
जेते सु बीर पठे तुम राज गए हरि पै हथिआर संभारे ॥
जीत न कोऊ सके तिह को हम तो सब ही बल कै रन हारे ॥
बान कमान सु तान कै पानि सबै तिन प्रान बिना करि डारे ॥१८२३॥
इउ न्रिप कउ भट बोल कहै हमरी बिनती प्रभ जू सुनि लीजै ॥
आहव मंत्रन सउप चलो ग्रहि को सिगरे पुर को सुख दीजै ॥
आज लउ लाज रही रन मै सम जुधु भयो अजो बीर न छीजै ॥
स्याम ते जुध की स्याम भनै सुपने हू मै जीत की आस न कीजै ॥१८२४॥

दोहरा ॥

जरासंधि ए बचन सुनि रिसि करि बोलियो बैन ॥
सकल सुभट हरि कटिक कै पठवों जम के ऐनि ॥१८२५॥
सवैया ॥
का भयो जो मघवा बलवंड है आज हउ ताही सो जुधु मचैहों ॥
भानु प्रचंड कहावत है हनि ताही को हउ जम धामि पठैहों ॥
अउ जु कहा सिव मो बलु है मरि है पल मै जब कोप बढैहों ॥
पउरख राखत हउ इतनो कहा भूप ह्वै गूजर ते भजि जैहों ॥१८२६॥
इउ कहि कै मनि कोप भरिओ चतुरंग चमूं जु हुती सु बुलाई ॥
आइ है ससत्र संभारि सबै संग स्याम मचावन काज लराई ॥
छत्र तनाइ कै पीछे चलियो न्रिप सैन सबै तिह आगे सिधाई ॥
मानहु पावस की रितु मै घनघोर घटा घुर कै उमडाई ॥१८२७॥
भूप बाच हरि सो ॥

दोहरा ॥

भूप तबै हरि हेरि कै ऐसो कहिओ सुनाइ ॥
तूं गुआर छत्रीन सो जूझ करैगो आइ ॥१८२८॥
क्रिसन बाच न्रिप सो ॥
सवैया ॥
छत्री कहावत आपन को भजि हो तब ही जब जुध मचैहों ॥
धीर तबै लखि हो तुम को जब भीर परै इक तीर चलैहों ॥
मूरछ ह्वै अब ही छित मै गिरहों नहि स्यंदन मै ठहरैहों ॥
एकह बान लगे हमरो नभ मंडल पै अब ही उड जैहों ॥१८२९॥
इउ जब बैन कहे ब्रिजभूखन तउ मन मै न्रिप कोप बढायो ॥
सारथी आपन को कहि कै रथ तउ जदुराइ की ओर धवायो ॥
चाप चढाइ महा रिस खाइ कै लोहति बान सु खैच चलायो ॥
स्री गरुड़ासनि जान कै स्याम मनो दुरबे कहु तछक धायो ॥१८३०॥
आवत ता सर को लखि कै ब्रिज नाइक आपने ससत्र संभारे ॥
कान प्रमान लउ खैच कमान चलाइ दए जिन के पर कारे ॥
भूप संभार कै ढाल लई तिह मध लगे नहि जात निकारे ॥
मानहु सूरज के ग्रसबे कहु राहु के बाहन पंख पसारे ॥१८३१॥
भूपति पानि कमान लई ब्रिज नाइक कउ लखि बान चलाए ॥
इउ छुटके कर के बर ते उपमा तिह की कबि स्याम सुनाए ॥
मेघ की बूंदन जिउ बरखे सर स्री बिज नाथ के ऊपरि आए ॥
मानहु सूर नही सर सो तिह भच्छन को सलभा मिलि धाए ॥१८३२॥
जो सर भूप चलावत है तिन को ब्रिजनाइक काटि उतारे ॥
फोकन ते फल ते मधि ते पल मै करि खंडन खंड कै डारे ॥
ऐसीय भाति परे छित मै मनो बीज को ईख किसान निकारे ॥

स्याम के बान सिचान समान मनो अरि बान बिहंग संघारे ॥१८३३॥

दोहरा ॥

एक ओर स्री हरि लरे जरासंधि के संगि ॥
दुती ओरि बलि हल गहे हनी सैन चतुरंग ॥१८३४॥
सवैया ॥
बलि पानि लए सु क्रिपान संघारत बाज करी रथ पैदल आयो ॥
मारि हरउल भजाइ दए न्रिप गोल के मधि परियो तब धायो ॥
एक कीए सु रथी बिरथी अरि एकन को बहु घाइन घायो ॥
स्याम भनै सब सूरन को इह भाति हली पुरुखत दिखायो ॥१८३५॥
क्रोध भरियो रन मै अति क्रूर सु पान के बीच क्रिपान लीए ॥
अभिमान सो डोलत है रन भीतर आन को आनत है न हीए ॥
अति ही रस रुद्र के बीच छकिओ कबि स्याम कहै मद पानि पीए ॥
बलभद्र संघारत सत्र फिरै जम को सु भयानक रूप कीए ॥१८३६॥
सीस कटे अरि बीरन के अति ही मन भीतर कोप भरे है ॥
केतन के पद पान कटे अरि केतन के तन घाइ करे है ॥
जे बलवंड कहावत है निज ठउर को छाडि कै दउरि परे है ॥
तीर सरीरन बीच लगे भट मानहु सेह सरूप धरे है ॥१८३७॥
इत ऐसे हलायुध जुध कीयो उति स्री ब्रिजभूखन कोपु बढायो ॥
जो भट सामुहि आइ गयो सोऊ एक ही बान सो मारि गिरायो ॥
अउर जिते न्रिप सैन हुते सु निमेख बिखै जम धामि पठायो ॥
काहूं न धीर धरियो चित मै भजि गै जब स्याम इतो रन पायो ॥१८३८॥
जे भट लाज भरे अति ही प्रभ कारज जान के कोप बढाए ॥
संकहि त्याग असंकत हुइ सु बजाइ निसानन को समुहाए ॥
सारंग स्री ब्रिजनाथ लै हाथि सु खैच चढाइ कै बान चलाए ॥
स्याम भनै बलबंड बडे सर एक ही एक सो मारि गिराए ॥१८३९॥

चौपई ॥

जरासंधि को दलु हरि मारियो ॥
भूपति को सब गरब उतारियो ॥
अबि कहै कउन उपावहि करो ॥
रन मै आज जूझ ही मरो ॥१८४०॥
इउ चिति चिंत धनुख करि गहियो ॥
प्रभ कै संगि जूझ पुनि चहियो ॥
पहरियो कवच सामुहे धायो ॥
स्याम भनै मनि कोप बढायो ॥१८४१॥

दोहरा ॥

जरासंधि रन भूमि मै बान कमान चढाइ ॥
स्याम भनै तब क्रिसन सो बोलियो भउह तनाइ ॥१८४२॥
न्रिप जरासंधि बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
जो बल है तुम मै नंद नंदन सो अब पउरख मोहि दिखईयै ॥
ठाढो कहा मुहि ओर निहारत मारत हो सर भाजि न जईयै ॥
कै अब डारि हथिआर गवार संभार कै मो संगि जूझ मचईयै ॥
काहे कउ प्रान तजै रन मै बन मै सुख सो बछ गाइ चरईयै ॥१८४३॥
ब्रिजराज मनै कबि स्याम भनै उह भूप के बैन सुने जब ऐसे ॥
स्री हरि के उर मै रिस यौ प्रगटी परसे घ्रित पावक तैसे ॥
जिउ म्रिगराज स्रिगावल की कूक सुने बनि हूक उठे मन वैसे ॥

यौ अटकी अरि की बतीया खटकै पग मै अटि कंटक जैसे ॥१८४४॥
कुधत ह्वै ब्रिजराज इतै सु घने लखि कै तिह बान चलाए ॥
कोपि उते धनु लेत भयो न्रिप स्याम भनै दोऊ नैन तचाए ॥
जो सर आवत भयो हरि ऊपरि सो छिन मै सब काटि गिराए ॥
स्री हरि के सर भूपति के तन कउ तनको नहि भेटन पाए ॥१८४५॥
इत सो न्रिप जूझि करै हरि सिउ उत ते मुसली इक बैन सुनायो ॥
मारि बिदारि दए तुमरे भट तै मन मै नही नैकु लजायो ॥
रे न्रिप काहे कउ जूझ मरै फिरि जाहो घरै लरि का फलु पायो ॥
ता ते बड़ो जढ है म्रिग भूपति केहरि सो रन जीतनि आयो ॥१८४६॥

दोहरा ॥

जिह सुभटन बलि लरत है ते सभ गए पराइ ॥
कै लर मरि कै भाग सठि कै पग हरि के पाइ ॥१८४७॥
जरासंधि न्रिप बाच हली सो ॥

दोहरा ॥

कहा भयो मम ओर के सूर हने संग्रामि ॥
लरबो मरबो जीतबो इह सुभटन के कामि ॥१८४८॥
सवैया ॥
यौ कहि कै मनि कोप भरियो तब भूप हली कहु बान चलायो ॥
लागति ही नट साल भयो तन मै बलिभद्र महा दुखु पायो ॥
मूरछ ह्वै करि स्यंदन बीच गिरियो तिह को कबि नै जसु गायो ॥
मानहु बान भुजंग डसियो धन धाम सबै मन ते बिसरायो ॥१८४९॥
बहुरो चित चेत भयो बलदेव चिते अरि के अति कोप बढायो ॥
भारी गदा गहि कै करि मै न्रिप के बध कारन तारन आयो ॥
पाउ पिआदे हुइ स्यंदन ते कबि स्याम कहै इत भाति सिधायो ॥
अउर किसी भट जानियो नही कबि दउर परियो न्रिप ने लखि पायो ॥१८५०॥
आवत देखि हलायुध को सु भयो तब ही न्रिप कोपमई है ॥
जुध ही कउ समुहाइ भयो निज पानि कमान सु तानि लई है ॥
ल्याइओ हुते चपला सी गदा सर एक ही सिउ सोऊ काट दई है ॥
सत्रु को मारन की बलिभद्रहि मानहु आस दुटूक भई है ॥१८५१॥
काट गदा जब ऐसे दई तब ही बलि ढाल क्रिपान संभारी ॥
धाइ चलियो अरि मारनि कारनि संक कछू चित मै न बिचारी ॥
भूप निहार कै आवत को गरजियो बरखा करि बाननि भारी ॥
ढाल दई सत धा करि कै कर की करवारि त्रिधा कर डारी ॥१८५२॥
ढाल कटी तरवारि गई कटि ऐसे हलायुध स्याम निहारियो ॥
मारत है बलि को अब ही न्रिप यौ अपुने मन माझि बिचारियो ॥
चक्र संभारि मुरारि तबै करि जुध के हेत चलियो बल धारियो ॥
रे न्रिप तू भिर मो संग आइ कै राम भनै इम स्याम पुकारियो ॥१८५३॥
यौ बतीया रन मै सुनि भूपति जूझ मचावन स्याम सिउ आयो ॥
रोसि बढाइ घनो चित मै कर के बर सो धनु तानि चढायो ॥
दीरघ कउच सजे तन मो कबि के मन मै जसु इउ उपजायो ॥
मानहु जुध समे रिस कै रघुनाथ के ऊपरि रावन आयो ॥१८५४॥
आवत भयो न्रिप स्याम के सामुहे तउ धनु स्री ब्रिजनाथ संभारियो ॥
धावत भयो हित ते हरि सामुहे त्रास कछू चित मै न बिचारियो ॥
कान प्रमान लउ तानि कमान सु बान लै सत्र के छत्र पै मारियो ॥
खंड हुइ खंड गिरियो छित मै मनो चंद को राहु ने मारि बिदारियो ॥१८५५॥
छत्र कटिओ न्रिप को जब ही तब ही मन भूपति कोप भयो है ॥
स्याम की ओर कुद्रिसटि चितै करि उग्र सरासन हाथि लयो है ॥

जोर सो खैचन लागियो तहा नहि ऐच सके कर कंप भयो है ॥
लै धनु बान मुरारि तबै तिह चाप चटाक दै काटि दयो है ॥१८५६॥
ब्रिजराज सरासन काटि दयो तब भूपति कोपु कीयो मन मै ॥
करवारि संभारि महा बल धारि हकारि परियो रिपु के गन मै ॥
तहा ढाल सो ढाल क्रिपान क्रिपान सो यौ अटके खटके रन मै ॥
मनो ज्वाल दवानल की लपटै चटकै पटकै त्रिन जिउ बन मै ॥१८५७॥
घूमत घाइल हुइ इक बीर फिरै इक स्रउन भरे भभकाते ॥
एक कबंध फिरै बिनु सीस लखै तिन काइर है बिललाते ॥
त्यागि चले इक आहव कौ इक डोलत जुधहि के रंगि राते ॥
एक परे भट प्रान बिना मनो सोवत है मदरा मद माते ॥१८५८॥
जादव जे अति क्रोध भरे गहि आयुधि संध जरा पहि धावत ॥
अउर जिते सिरदार बली करवारि संभारि हकारि बुलावत ॥
भूपति पानि लै बान कमान गुमान भरियो रिपु ओरि चलावत ॥
एक ही बान के साथ कीए बिनु माथ सु नाथ अनाथ हुइ आवत ॥१८५९॥
एकन की भुज काटि दई अरु एकन के सिर काटि गिराए ॥
जादव एक कीए बिरथी पुनि स्री जदुबीर के तीर लगाए ॥
अउर हने गजराज घनौ बर बाज बने हनि भूमि गिराए ॥
जोगिन भूत पिसाच सिंगालन स्रउनत सागर माझ अनाए ॥१८६०॥
बीर संघार कै स्री जदुबीर के भूप भयो अति कोपमई है ॥
जुध बिखै मन देत भयो तन की सिगरी सुधि भूलि गई है ॥
ऐन ही सैन हनी प्रभ की सु परी छित मै बिन प्रान भई है ॥
भूपति मानहु सीसन की सभ सूरन हूं की जगाति लई है ॥१८६१॥
छाडि दए जित साच कै मानहु मारि दए मन झूठ न भायो ॥
जो भट घाइल भूमि परे मनो दोस कीयो कछु दंडु दिवायो ॥
एक हने कर पाइन ते जिन जैसो कीयो फल तैसो ई पायो ॥
राज सिंघासन स्यंदन बैठ कै सूरन के न्रिप निआउ चुकायो ॥१८६२॥
जब भूप इतो रन पावत भयो तब स्री ब्रिज नाइक कोप भरियो ॥
न्रिप सामुहे जाइ के जूझ मचात भयो चित मै न रती कु डरियो ॥
ब्रिज नाइक साइक एक हन्यो न्रिप को उरि लाग कै भूमि परियो ॥
इम मेद सो बान चखियो न्रिप को मनो पंनग दूध को पान करियो ॥१८६३॥
सहि कै सर स्री हरि को उर मै न्रिप स्याम ही कउ इक बान लगायो ॥
सूत के एक लगावत भयो सर दारुक लागत ही दुखु पायो ॥
हुइ बिसंभार गिरियो ई चहै तिह को रथु आसन न ठहरायो ॥
ताही समै चपलंग तुरंगनि आपनी चाल को रूप दिखायो ॥१८६४॥

दोहरा ॥

भुजा पकर के सारथी रथि तब डारियो धीर ॥
स्यंदन हाकत आपु ही चलियो लरत बलबीर ॥१८६५॥
सवैया ॥
सारथी स्यंदन पै न लखियो बलिदेव कहिओ रिसि ताहि सुनै कै ॥
जिउ दल तोर जितियो सब ही तैसो तो जित है जस डंक बजै कै ॥
मूढ भिरे पति चउदह लोक के संग सु आप कउ भूप कहै कै ॥
कीट पतंग सु बाजन संगि उडियो कछु चाहत पंख लगै कै ॥१८६६॥
छाडत है अजहुं तुहि कउ पति चउदह लोकन के संग न लरु ॥
ग्यान की बात धरो मन मै सु अग्यान की चित ते बात बिदा करु ॥
रछक है सभ को ब्रिजनाथ कहै कबि स्याम इहै जीअ मै धरु ॥
त्याग कै आहव ससत्र सबै सु अबै घनि स्याम के पाइन पै परु ॥१८६७॥

चौपई ॥

जबै हलायुध ऐसे कहियो ॥
क्रोध डीठ राजा तन चहियो ॥
कहियो न्रिपति सब को संघर हों ॥
छत्री होइ ग्वार ते टर हों ॥१८६८॥
सवैया ॥
भाखबो इउ न्रिप को सुन कै जदुबीर सबै अति कोप भरे है ॥
धाइ परे तजि संक निसंक चितै अरि कउ चितु मै न डरे है ॥
भूप अयोधन मै धनु लै तिह सीस कटे गिर भूमि परे है ॥
मानहु पउन प्रचंड बहै छुटि बेलन ते गिरि फूल झरे है ॥१८६९॥
सैन संघारत भूप फिरै भट आनि कउ आख तरै नही आने ॥
बाज घने गज राजन के सिर पाइन लउ संगि स्रउन के साने ॥
अउर रथीन करे बिरथी बहु भाति हने जेऊ बाधत बाने ॥
सूरन के प्रतिअंग गिरे मानो बीज बुयो छित माहि क्रिसाने ॥१८७०॥
इह भाति बिरुध निहार भयो मुसलीधर स्याम सो तेज तए है ॥
भाखि दोऊ निज सूतन को रिपु सामुहे जुध के काज गए है ॥
आयुध लै सु हठी कवची रिस कै संगि पावक बेख भए है ॥
स्याम भनै इम धावत भे मानहु केहरि दुइ म्रिग हेरि धए है ॥१८७१॥
धनु साइक लै रिसि भूपति के तन घाइ करे ब्रिजराज तबै ॥
पुनि चारो ई बानन सो हय चारो ई राम भनै हनि दीने सबै ॥
तिल कोटिक स्यंदन काटि कीयो धनु काटि दीयो करि कोप जबै ॥
न्रिप पिआदो गदा गहि सउहे गयो अति जुधु भयो कहिहौ सु अबै ॥१८७२॥
पाइन धाइ कै भूप बली सु गदा कहु घाइ हली प्रत झारियो ॥
कोप हुतो सु जितो तिह मै सब सूरन को सु प्रतछ दिखारियो ॥
कूदि हली भुइं ठाढो भयो जसु ता छबि को कबि स्याम उचारियो ॥
चारो ई अस्वन सूत समेत सु कै सब ही रथ चूरन डारियो ॥१८७३॥
इत भूप गदा गहि आवत भयो उत लै के गदा मुसलीधर धायो ॥
आइ अयोधन बीच दुहूं कबि स्याम कहै रन दुंद मचायो ॥
जुध कीयो बहुते चिर लउ नहि आपि गिरिओ उत कउ न गिरायो ॥
ऐसे रिझावत भयो सुर लोगन धीरन बीरन को रिझवायो ॥१८७४॥
हार कै बैठ रहै दोऊ बीर संभारि उठै पुनि जुधु मचावै ॥
रंच न संक करै चित मै रिस कै दोऊ मार ही मार उघावै ॥
जैसे गदाहव की बिधि है दोऊ तैसे लरै अरु घाव चलावै ॥
नैकु टरै न अरै हठ बाधि गदा को गदा संगि वार बचावै ॥१८७५॥
स्याम भनै अति आहव मै मुसली अरु भूपति कोप भरे है ॥
आपस बीच हकार दोऊ भट चित बिखै नही नैकु डरे है ॥
भारी गदा गहि हाथन मै रन भूमहि ते नहि पैगु टरे है ॥
मानहु मधि महा बन के पल के हित द्वै बर सिंघ अरे है ॥१८७६॥
काटि गदा बलदेव दई तिह भूपति की अरु बानन मारियो ॥
पउरख या ही भिरियो हम सो रिस कै अरि कउ इह भाति पचारियो ॥
इउ करि कै पुनि बानन मारि सरासन लै तिह ग्रीवहि डारियो ॥
देव करै उपमा सु कहै जदुबीर जितियो सु बडो अरि हारियो ॥१८७७॥
कंपत हो जिस ते खगेस महेस मुनी जिह ते भै भीतियो ॥
सेस जलेस दिनेस निसेस सुरेस हुते चित मै न निचीतियो ॥
ता न्रिप के सिर पै कबि स्याम कहै इह काल इसो अब बीतियो ॥
धंनहि धंनि करै सब सूर भले भगवान बडो अरि जीतियो ॥१८७८॥
बलभद्र गदा गहि कै इत ते रिस साथ कहियो अरि कउ हरि हौं ॥
इह प्रान बचावत को हम सो जम जउ भिरि है न तऊ डरि हौं ॥
घन स्याम सबै संगि जादव लै तजि याह कहै न भया टरि हौं ॥
कबि स्याम कहै मुसली इह भाति अबै इह को बध ही करि हौं ॥१८७९॥
सुनि भूप हलायुध की बतीया अपुने मन मै अति ही डरु मानियो ॥

मानुख रूप लखियो न बली निसचै बल कउ जम रूप पछानियो ॥
स्री जदुबीर की ओरि चितै तजि आयुध पाइन सो लपटानियो ॥
मेरी सहाइ करो प्रभ जू कबि स्याम कहै कहि यौ घिघियानियो ॥१८८०॥
करुनानिध देखि दसा तिह की करुनारस कउ चित बीच बढायो ॥
कोपहि छाडि दयो हरि जू दुहूं नैनन भीतर नीर बहायो ॥
बीर हलायुध ठाढो हुतो तिह को कहि कै इह बैन सुनायो ॥
छाडि दै जो हम जीतन आयो हो सो हम जीत लयो बिलखायो ॥१८८१॥
इह छोडि हली नही छोडत हो किह काज कहिओ तुहि बानन मारियो ॥
जीत लयो तो कहा भयो स्याम बडो अरि है इह पउरख हारियो ॥
आछो रथी है भयो बिरथी अरु पाइ गहै प्रभ तेरे उचारियो ॥
तेईस छोहनी को पति है तो कहा इह को सब सैन संघारियो ॥१८८२॥

दोहरा ॥

सैन बडो संगि सत्रु को जीति ताहि तिह जीति ॥
छाडत है नहि बधत तिह इहै बडन की रीति ॥१८८३॥
सवैया ॥
पाग दई अरु बागो दयो इक स्यंदन दै तिह छाड दयो है ॥
भूप चितै हरि को चित मै अति ही करि लजतवान भयो है ॥
ग्रीव निवाइ महा दुखु पाइ घनो पछताइ कै धामि गयो है ॥
स्री जदुबीर कउ चउदह लोकन स्याम भनै जसु पूरि रहियो है ॥१८८४॥
तेईस छोहन तेईस बार अयोधन ते प्रभ ऐसे ही मारे ॥
बाज घने गज पति हने कबि स्याम भने बिपते करि डारे ॥
एक ही बान लगे हरि को जम धामि सोऊ तजि देह पधारे ॥
स्री ब्रिजराज की जीत भई अरि तेईस बारन ऐसे ई हारे ॥१८८५॥

दोहरा ॥

देवन जो उसतति करी पाछे कही सुनाइ ॥
कथा सु आगै होइ है कहि हों वही बनाइ ॥१८८६॥
सवैया ॥
उत भूपति हारि गयो ग्रिह कौ रन जीति इतै हरि जू ग्रिह आयो ॥
मात पिता को जुहारु कीयो पुनि भूपति के सिर छत्र तनायो ॥
बाहरि आइ गुनीन सु दान दीयो तिन इउ जसु भाखि सुनायो ॥
स्री जदुबीर महा रनधीर बडो अरि जीति भलो जसु पायो ॥१८८७॥
अउर जिती पुरि नारि हुती मिलि कै सभ स्याम की ओरि निहारै ॥
भूखन अउर जितो धनु है पट स्री जदुबीर के ऊपर वारै ॥
बीर बडो अरि जीत लयो रनि यौ हसि कै सब बैन उचारै ॥
सुंदर तैसो ई पउरख मै कहि इउ सब सोक बिदा कर डारै ॥१८८८॥
हसि कै पुरि नारि मुरारि निहारि सु बात कहै कछु नैन नचै कै ॥
जीति फिरे रन धामहि को संगि बैरन के बहु जूझ मचै कै ॥
ए ई सु बैन कहै हरि सो तब स्याम भनै कछु संक न कै कै ॥
राधिका साथ हसो प्रभ जैसे सु तैसे हसै हम ओरि चितै कै ॥१८८९॥
इउ जब बैन कहै पुर बासनि तउ हसि कै ब्रिजनाथ निहारे ॥
चारु चितौन कउ हेरि तिनो मन के सब सोक संताप बिडारे ॥
प्रेम छकी त्रीय भूमि के ऊपर झूमि गिरी कबि स्याम उचारे ॥
भउह कमान समान मनो द्रिग साइक यौ ब्रिज नाइक मारे ॥१८९०॥
उत संकित हुइ त्रीया धामि गई इत बीर सभा महि स्याम जू आयो ॥
हेरि कै स्री ब्रिजनाथहि भूपति दउर कै पाइन सीस लुडायो ॥
आदर सो कबि स्याम भनै न्रिप लै सु सिंघासन तीर बैठायो ॥
बारनी लै रसु आगे धरियो तिह पेखि कै स्याम महा सुख पायो ॥१८९१॥

बारुनी के रस सौ जब सूर छके सब ही बलिभद्र चितारियो ॥
स्री ब्रिजराज समाज मै बाज हने गज राज न कोऊ बिचारियो ॥
सो बिनु प्रान कीयो छिन मै रिस कै जिह बान सु एक प्रहारियो ॥
बीरन बीच सराहत भयो सु हली युध स्याम इतो रन पारियो ॥१८९२॥

दोहरा ॥

सभा बीच स्री क्रिसन सो हली कहै पुनि बैन ॥
अति ही मदरा सो छके अरुन भए जुग नैन ॥१८९३॥
सवैया ॥
दीबो कछु मय पीयो घनो कहि सूरन सो इह बैन सुनायो ॥
जूझबो जूझ कै प्रान तजैबो जुझाइबो छत्रिन को बनि आयो ॥
बारुनु कउ कबि स्याम भनै कचु के हित तो भ्रिगु निंद करायो ॥
राम कहै चतुराननि सो इही रस कउ रस देवन पायो ॥१८९४॥

दोहरा ॥

जैसे सुख हरि जू कीए तैसे करे न अउर ॥
ऐसो अरि जित इंदर से रहत सूर नित पउरि ॥१८९५॥
सवैया ॥
रीझ कै दान दीओ जिन कउ तिन मागनि को न कहूं मनु कीनो ॥
कोपि न काहू सिउ बैन कहियो जु पै भूल परी चित कै हसि दीनो ॥
दंड न काहूं लयो जन ते खल मारि न ता को कछू धनु छीनो ॥
जीति न जान दयो ग्रिह को अरि स्री ब्रिजराज इहै ब्रत लीनो ॥१८९६॥
जो भूअ को नल राज भए कबि स्याम कहै सुख हाथि न आयो ॥
सो सुखु भूमि न पायो तबै मुर मारि जबै जम धामि पठायो ॥
जो हरिनाकस भ्रात समेत भयो सुपने प्रिथु न दरसायो ॥
सो सुखु कान्रह की जीत भए अपने चित मै पुहमी अति पायो ॥१८९७॥
जोरि घटा घनघोर घनै जुरि गाजत है कोऊ अउर न गाजै ॥
आयुध सूर सजै अपने करि आन न आयुध अंगहि साजै ॥
दुंदभि दुआर बजै प्रभ के बिनु ब्याह न काहूं के दुआरहि बाजै ॥
पाप न हो कहूं पुर मै जित ही कित धरम ही धरम बिराजै ॥१८९८॥

दोहरा ॥

क्रिसन जुध जो हउ कहियो अति ही संगि सनेह ॥
जिह लालच इह मै रचियो मोहि वहै बरु देहि ॥१८९९॥
सवैया ॥
हे रवि हे ससि हे करुनानिधि मेरी अबै बिनती सुनि लीजै ॥
अउर न मागत हउ तुम ते कछु चाहत हउ चित मै सोई कीजै ॥
ससत्रन सो अति ही रन भीतर जूझि मरो कहि साच पतीजै ॥
संत सहाइ सदा जग माइ क्रिपा कर स्याम इहै वरु दीजै ॥१९००॥
जउ किछु इछ करो धन की तउ चलियो धनु देसन देस ते आवै ॥
अउ सब रिधन सिधन पै हमरो नही नैकु हीयो ललचावै ॥
अउर सुनो कछु जोग बिखै कहि कउन इतो तपु कै तनु तावै ॥
जूझि मरो रन मै तजि भै तुम ते प्रभ स्याम इहै वरु पावै ॥१९०१॥
पूरि रहियो सिगरे जग मै अब लउ हरि को जसु लोक सु गावै ॥
सिध मुनीस्वर ईस्वर ब्रहम अजौ बलि को गुन ब्यास सुनावै ॥
अत्रि परासुर नारद सारद स्री सुक सेस न अंतहि पावै ॥
ता को कबितन मै कबि स्याम कहियो कहि कै कबि कउन रिझावै ॥१९०२॥

अथ काल जमन को ले जरासंधि फिर आए ॥

सवैया ॥
भूप सु दुखित होइ अति ही अपने लिखि मित्र कउ पात पठाई ॥
सैन हनियो हमरो जदु नंदन छोर दयो मुहि कै करुनाई ॥
बाचत पाती चड़ो तुम हूं इत आवत हउ सब सैन बुलाई ॥
ऐसी दसा सुनि मित्रहि की तब कीनी है काल जमन चड़ाई ॥१९०३॥
सैन कीओ इकठो अपने जिह सैनहि को कछु पार न पईयै ॥
बोल उठै कई कोटि बली जब एक को लै करि नामु बुलईयै ॥
दुंदभि कोटि बजै तिन की धुनि सो तिन की धुनि न सुनि पईयै ॥
ऐसे कहा सभ ह्यां न टिको पलि स्याम ही सो चलि जुधु मचईयै ॥१९०४॥

दोहरा ॥

काल नेमि आयो प्रबल एतो सैन बढाइ ॥
बन पत्रन कोऊ गनि सकै उनै न गनिबो जाइ ॥१९०५॥
सवैया ॥
डेरो परै तिन को जु जहा लघु घोरन की नदीआ उठि धावै ॥
तेज चलै हहराट कीए अति ही चित सत्रन के डर पावै ॥
पारसी बोल मलेछ कहै रन ते टरि कै पगु एक न आवै ॥
स्याम जू को टुक हेरि कहै सर एक ही सो जमलोकि पठावै ॥१९०६॥
अगने इत कोपि मलेछ चड़े उत संध जरा बहु लै दलु आयो ॥
पत्र सकै बन कै गन कै कोऊ जाति न को कछु पार न पायो ॥
ब्रिज नाइक बारुनी पीतो हुतो तह ही तिनि दूत नै जाइ सुनायो ॥
अउर जो ह्वै डरि प्रान तजै इत स्री जदुबीर महा सुखु पायो ॥१९०७॥
इत कोपि मलेछ चड़े अगने उत आइयो लै संध जरा दलु भारो ॥
आवत है गज राज बने मनो आवत है उमडियो घन कारो ॥
स्याम हली मथुरा ही के भीतर घेर लए जसु स्याम उचारो ॥
सेर बडे दोऊ घेरि लए कहु बीरन को मनो कै करि बारो ॥१९०८॥
कान्रह हली सभ ससत्र संभार कै क्रोध घनो चित बीच बिचारियो ॥
सैन मलेछन को जह थो तिह ओर ही स्याम भनै पग धारियो ॥
प्रान कीए बिनु बीर घने घन घाइल कै घन सूरन डारियो ॥
नैकु संभार रही न तिनै इहु भाति सो स्याम जू यौ दलु मारियो ॥१९०९॥
एक परो भट घाइल हुइ धरि एक परे बिनु प्रान ही मारे ॥
पाइ परे तिन के सु कटे कहूं हाथ परे तिन के कहूं डारे ॥
एक सु संकत हुइ भटवा तजि तउन समे रन भूमि सिधारे ॥
ऐसो सु जीत भई प्रभ की जु मलेछ हुते सभ या बिधि हारे ॥१९१०॥
वाहिद खा फरजुलहि खा बरबीर निजाबत खा हरि मारियो ॥
जाहिद खा लुतफुलह खा इनहूं करि खंडन खंडहि डारियो ॥
हिंमत खा पुनि जाफर खा इन हूं मुसली जू गदा सो प्रहारियो ॥
ऐसे सु जीत भई प्रभ की सभ सैन मलेछन को इम हारियो ॥१९११॥
ए उमराव हने जदुनंदन अउर घनो रिसि सो दलु घायो ॥
जो इन ऊपर आवत भयो ग्रिह को सोई जीवत जान न पायो ॥
जैसे मधिआन को सूर दिपै इह भाति को क्रुध कै तेज बढायो ॥
भाजि मलेछन के गन गे जदुबीर के सामुहे एक न आयो ॥१९१२॥
ऐसो सु जुध कीयो नंद नंदन या संगि जूझ कउ एक न आयो ॥
हेरि दसा तिह काल जमन करोर कई दल अउर पठायो ॥
सोऊ महूरत दु इक भिरियो न टिकियो फिरि अंत के धामि सिधायो ॥

रीझ रहे सभ देव कहै इव स्री जदुबीर भलो रन पायो ॥१९१३॥
क्रोध भरे रन भूमि बिखै इक जादव ससत्रन को गहि कै ॥
बल आप बराबर सूर निहार कै जूझ को जाति तहा चहि कै ॥
करि कोप भिरै न टरै तह ते दोऊ मारु ही मार बली कहि कै ॥
सिर लागे क्रिपान परै कटि कै तन भी गिरै नैकु खरै रहि कै ॥१९१४॥
ब्रिजराज को बीच अयोधन के संगि ससत्रन कै जब जुध मचियो ॥
भटवान के लाल भए पटवा ब्रहमा मनो आरुण लोक रचियो ॥
अउर निहारि भयो अति आहव खोलि जटा सब ईस नचियो ॥
पुनि वै सभ सैन मलेछन ते कबि स्याम कहै नहि एकु बचियो ॥१९१५॥

दोहरा ॥

ल्यायो थो जो सैन संगि तिन ते बचियो न बीर ॥
जुध करन को काल जमन आपु धरियो तब धीर ॥१९१६॥
सवैया ॥
जंग दराइद काल जमंन बुगोइद कि मन फौज को साहम ॥
बा मन जंग बुगो कुन बिया हरगिज दिल मो न जरा कुन वाहम ॥
रोज मया दुनीआ अफताबम स्याम सबे अदली सब साहम ॥
कान्रह गुरेजी मकुन तु बिआ खुस मातु कुनेम जि जंग गुआहम ॥१९१७॥
यौ सुनि कै तिह की बतीया ब्रिज नाइक ता ही की ओरि सिधारे ॥
क्रोध बढाइ चितै तिह को अगनायुध लै तिह ऊपरि झारे ॥
सूत हनियो प्रिथमै तिह को फिर कै तिह के हय चार ही मारे ॥
अउर जिते बिबिधासत्र हुते कबि स्याम कहै सभ ही कटि डारे ॥१९१८॥

चौपई ॥

जो मलेछ रिस ससत्र संभारे ॥
सो कटि स्री ब्रिजनाथहि डारे ॥
आयो भिरन इही बलु कहियो ॥
जब अरि पाइ पिआदा रहियो ॥१९१९॥
सवैया ॥
कान्रह बिचार कीयो चित मै भई सो न मलेछ जो मुसट लरै है ॥
तउ कबि स्याम कहै हमरे सभ ही तन को अपवित्र करै है ॥
आयुध कउच सजे तन मै सभ सैन जुरै मुहि नाइ बधै है ॥
जो इह को सिर काटत हों तु निरसत्र भयो हमरो बल जै है ॥१९२०॥
एक बिचार कीयो चित मै भज हौ इह ते इह पाछे परै हो ॥
जैहो हउ थोरेई बीच चलियो तन भेटन याहि मलेछ न दै हो ॥
सोवत है मुचकुंद जहा धसि वाही गुफा महि जाइ जगै हो ॥
जैहो बचाइ मै आपन कै तिह डीठह सो इह को जरवै हो ॥१९२१॥
सोरठा ॥
तउ इह स्वरगहि जाइ जउ इह रन भीतर हनिओ ॥
अगन भए जरवाइ ख्वै हो धरम मलेछ को ॥१९२२॥
सवैया ॥
छोर कै स्यंदन ससत्रन त्याग कै कान्रह भजियो जनु त्रास बढायो ॥
वाहि लखियो कि भजियो मुहि ते मथुरा हू के नाइक ह्वै कहि धायो ॥
सोवत थो मुचकुंद जहा सु तहा ही गयो तिह जाइ जगायो ॥
आपु बचाइ गयो तन को इह आवत थो इह को जरवायो ॥१९२३॥
सोरठा ॥
आपन को बचवाइ गयो कान्रह मुचकुंद ते ॥
तजी नीद तिह राइ हेरत भसम मलेछ भयो ॥१९२४॥
सवैया ॥

जरि छार मलेछ भयो जब ही मुचकुंद पै तउ ब्रिजभूखन आयो ॥
आवत ही तिह कान्रह को हेर कै पाइन ऊपरि सीस झुकायो ॥
अउर जितौ दुखु थो तिह को हरि बातन सो तिह ताप बुझायो ॥
ऐसे समोधि कै ता तिह जारि कै स्री ब्रिज नाइक डेरन आयो ॥१९२५॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे काल जमन बधहि धिआइ समापतं ॥

सवैया ॥
जउ लगि डेरन आवत थो तब लउ इकि आइ संदेस सुनायो ॥
धाम चलो ब्रिजनाथ कहा तुम पै सजि सैन जरासंधि आयो ॥
अउ सुनि कै बतीया तिह की मन मै भट अउरन त्रास बढायो ॥
स्याम भनै जदुबीर हली अति ही मन आपन मै सुख पायो ॥१९२६॥

दोहरा ॥

एई बातै करत भट निज पुर पहुंचे आइ ॥
भूप बैठि बुधिवंत सभ अपुने लीए बुलाइ ॥१९२७॥
सवैया ॥
जोरि घनो दलु संधि जरा न्रिप आयो है कोपि अबै कहि कईयै ॥
सैन घनो इह कै संगि है जो पै जुधु करै नहीं जाति बचईयै ॥
कै इह को सभ जाइ मिलै पुरि छाडि नहीं अनतै कउ सिधईयै ॥
बात कुपेच बनी सभ ही इन बातन ते धौ कहा अब कईयै ॥१९२८॥
सोरठा ॥
कीनो इहै बिचार पुरि तजि कै अनतै बसहि ॥
नातर डारै मारि जरासंधि भूपति प्रबल ॥१९२९॥
कीजो सोऊ बिचार जो भावै सभ जनन मनि ॥
अपुने चितह बिचारि बात न कीजै ठानि हठ ॥१९३०॥
सवैया ॥
तजि कै मथुरा सुनि कै इह सत्र सु लै के कुटंबन जादो पराए ॥
एक बडो गिरि थो तिह भीतर नैकु टिके चित मै सुखु पाए ॥
घेरत भयो नग संधि जरा तिह की उपमा कबि स्याम सुनाए ॥
पातन के जन भछन कउ भटवा नहि बादर ही मिलि आए ॥१९३१॥

दोहरा ॥

जरासंधि तब मंत्रीअन संगि यौ कहियो सुनाइ ॥
नग भारी इह सैन ते नैकु न सोधियो जाइ ॥१९३२॥
सोरठा ॥
दीजै आगि लगाइ दसो दिसा ते घेरि गिरि ॥
आपन ही जरि जाइ स्री जदुबीर कुटंब सनि ॥१९३३॥
सवैया ॥
घेरि दसो दिस ते गिरि कउ कबि स्याम कहै दई आगि लगाई ॥
तैसे ही पउन प्रचंड बहियो तिह पउन सो आगि घनी हहराई ॥
जीव बडो त्रिन रूख घने छिन बीच दए फुनि ताहि जराई ॥
तउन घरी तिन लोगन पै फुनि होत भई अति ही दुखदाई ॥१९३४॥

चौपई ॥

जीव मनुछ जरो त्रिन जबै ॥
संका करत भए भट तबै ॥
मिलि सभ ही जदुपति पहि आए ॥

दीन भाति हुइ अति घिघिआए ॥१९३५॥

सभ जादो बाच ॥

चौपई ॥

प्रभ जू हमरी रछ्या कीजै ॥
जीव राख इन सभ को लीजै ॥
आपहि कोऊ उपाव बतईयै ॥
कै भजीऐ कै जूझ मरईयै ॥१९३६॥

सवैया ॥

तिन की बतीया सुनि कै प्रभ जू गिरि कउ संगि पाइन के मसकियो ॥
न सकियो सह भार सु ता पग को कबि स्याम भनै जल लउ धसकियो ॥
उसकियो गिरि ऊरध को धसि कै कोऊ पावक जीव जरा न सकियो ॥
जदुबीर हली तिह सैन मै कूदि परे न हिया तिन कौ कसिकियो ॥१९३७॥
एकहि हाथि गदा गहि स्याम जू भूपति के बहुते भट मारे ॥
अउर घने असवार हने बिनु प्रान घने गजि कै भुइ पारे ॥
पाइन पंत हने अगने रथ तोरि रथी बिरथी करि डारे ॥
जीत भई जदुबीर की यो कबि स्याम कहै सभ यो अरि हारे ॥१९३८॥
जो भट स्याम सो जूझ को आवत जूझत है सु लगे भट भीर न ॥
स्री ब्रिजनाथ के तेज के अग्र कहै कबि स्याम धरै कोऊ धीर न ॥
भूपति देख दसा तिन की सु कहिओ इह भाति भयो अति ही रन ॥
मानो तंबोली ही की सम ह्वै न्रिप फेरत पानन की जिम बीरनि ॥१९३९॥
इत कोप गदा गहि कै मुसलीधर सत्रन सैन भले झकझोरियो ॥
जो भट आइ भिरे समुहे तिह एक चपेटहि सो सिरु तोरियो ॥
अउर जिती चतुरंग चमूं तिन को मुख ऐसी ही भाति सो मोरियो ॥
जीत लए सभ ही अरिवा तिन ते अजितिओ भट एक न छोरियो ॥१९४०॥
कान्रह हली मिलि भ्रात दुहूं जब सैन सबै तिह भूप को मारियो ॥
सो कोऊ जीत बचियो तिह ते जिनि दातन घास गहिओ बलु हारियो ॥
ऐसी दसा जब भी दल की तब भूपति आपने नैनि निहारियो ॥
जीत अउ जीव की आस तजी रन ठानत भयो पुरखत संभारियो ॥१९४१॥

सोरठा ॥

दीनी गदा चलाइ स्री जदुपति न्रिप हेरि कै ॥
सूतहि दयो गिराइ अस्व चारि संग ही हने ॥१९४२॥

दोहरा ॥

पाव पिआदा भूप भयो अउर गदा तब झारि ॥
स्याम भनै संग एक ही घाइ कीयो बिसंभार ॥१९४३॥

तोटक ॥

सब संधि जरा बिसंभार भयो ॥
गहि कै तब स्री घनि स्याम लयो ॥
गहि कै तिह को इह भाति कहियो ॥
पुरखत इही जड़ जुधु चहियो ॥१९४४॥

हली बाच कान्रह सो ॥

दोहरा ॥

काटत हो अब सीस इह मुसलीधर कहियो आइ ॥
जो जीवत इह छाडि हों तउ इह रारि मचाइ ॥१९४५॥

जरासंधि बाच ॥

सवैया ॥

सुधि लै तब भूप डरातुर ह्वै तजि ससत्रन स्याम के पाइ परियो ॥

बध मोर करो न अबै प्रभु जू न लहिओ तुमरो बलु भूलि परियो ॥
इह भाति भयो घिघयात घनो न्रिप त्वै सरनागति ऐसे ररियो ॥
कबि स्याम कहै इह भूप की देखि दसा करुणानिधि लाजि भरियो ॥१९४६॥
कान्रह जू बाच हली सो ॥

तोटक छंद ॥

इह दै रे हली कहियो छोर अबै ॥
मन ते तजि क्रोध की बात सबै ॥
कहिओ किउ हम सो इह जूझ चहियो ॥
तब यौ हसि कै जदुराइ कहियो ॥१९४७॥
सोरठा ॥
बडो सत्र जो होइ तजि ससत्रन पाइन परै ॥
नैकु न करि चित रोहि बडे न बध ता को करत ॥१९४८॥

दोहरा ॥

जरासंधि को छोरि प्रभ कहियो कहा सुन लेहु ॥
जो बतीया तुहि सो कहो तुम तिन मै चितु देहु ॥१९४९॥
सवैया ॥
रे न्रिप निआइ सदा करीओ दुखु दै के अन्याइ न अनाथह दीजो ॥
अउर जिते जन है तिन दै कछु कै कै क्रिपा सभ ते जसु लीजो ॥
बिपन सेव सदा करीयो दग बाजन जीवत जान न दीजो ॥
औ हम सो संग छत्रनि के कबहू रिस माड कै जुध न कीजो ॥१९५०॥

दोहरा ॥

जरासंधि सिर नाइ कै धामि गयो पछुताइ ॥
इत ग्रिहि आए स्याम जू हरखि हीए हुलसाइ ॥१९५१॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जरासंधि पकर कै छोरबो धिआइ समापतं ॥*

चौपई ॥

सुनत जीत फूले सभ आवहि ॥
न्रिप छोरियो सुनि सीसु ढुरावहि ॥
या ते हियाउ सभन का डरियो ॥
कहत स्याम घटि कारज करियो ॥१९५२॥
सवैया ॥
काज कीयो लरका हूं को स्याम जी ऐसो बली तुमरे कर आयो ॥
छोरि दयो कर कै करुना तिन काढि दयो पुर ते फलु पायो ॥
ऐसे अजान न काम करै जो कीयो हरि तै कहियो सीसु ढुरायो ॥
छाडि दयो नही जीत अबै अरि अउर चमूं बहु लैन पठायो ॥१९५३॥
एक कहै मथुरा को चलो इक फेरि कहै न्रिप लै दल ऐहै ॥
स्याम कहै तिह के तब संगि कहो भट कउन सो जूझ मचैहो ॥
अउर कदाच कोऊ हठ ठान कै जउ लरि है तऊ जीत न ऐ है ॥
ता ते न धाइ धसो पुर मै बिधना जोऊ लेख लिखिओ सोऊ ह्वै है ॥१९५४॥
छाडिबो भूपति को सुन कै सभ ही मनि जादव त्रास भरे ॥
निधि नीर के भीतर जाइ बसे मुख ते सभ ऐसे चले सु ररे ॥
किनहूं नहि स्याम कहै अपुने पुर की पुनि ओरि कउ पाइ धरे ॥
अति ही है डरे बलवंत खरे बिनु आयुध ही सभ मारि मरे ॥१९५५॥

सिंधु पै जाइ खरे भए स्याम जू सिंधु हूं ते सु कछू कर चाहियो ॥
छोरु कहियो भूअ छोरि दई तन कै धनु को जिह लउ सर बाहियो ॥
कंचन के ग्रिह कै दीए त्यार भले किनहूं तिन कउन अचाहियो ॥
ऐसे कहै सभ ही अपने मनि तै प्रभ जू सभ को दुख दाहियो ॥१९५६॥
जो सनकादिक कै रहे सेव घनी तिन के हरि हाथि न आए ॥
पूजत है बहुते हित कै तिह कउ पुनि पाहन मै सच पाए ॥
अउर घनियो मिलि बेदन के मत मै कबि स्याम कहे ठहराए ॥
ते कहैं ईहा ही है प्रभु जू जब कंचन के ग्रिह स्यामि बनाए ॥१९५७॥
स्याम भनै सभ सूरन सो मुसकाइ हली इह भाति उचारियो ॥
या को लहियो न कछू तुम भेद अरे इह चउदह लोक सवारियो ॥
या ही हनियो दसकंध मुरारि सुबाह इही बक को मुख फारियो ॥
अउर सुनो अरि दानव संग बली इह एक गदा ही सो मारियो ॥१९५८॥
हजार ही बरख इही लरि कै मधु कैटभ के घटि ते जीउ काढियो ॥
अउर जबै निधि नीर मथिओ तब देवन रछ करी सुख बाढियो ॥
रावन एही हनिओ रन मै हनि कै तिह के उर मै सर गाढियो ॥
अउर घनी हम ऊपरि भीर परी तु रहिओ रन खंभ सो ठाढियो ॥१९५९॥
अउर सुनो मन लाइ सबै तुमरे हित कंस सो भूप पछारिओ ॥
अउर हने तिह बाज घने गज मानहु मूल दै रूप उखारिओ ॥
अउर जिते हम पै मिलि कै अरि आइ हुते सु सभै इह मारिओ ॥
माटी के धाम तुमै छडवाइ कै कंचन के अब धाम सवारिओ ॥१९६०॥
यौ जब बैन कहे मुसलीधरि तउ सब के मन मै सचु आयो ॥
याही हनिओ बक अउर अघासुर याही चंडूर भली बिधि घायो ॥
कंस ते इंद्र न जीत सकिओ इन सो गहि केसन ते पटकायो ॥
कंचन के अब धाम दीए करि स्री ब्रिजनाथ सही प्रभु पायो ॥१९६१॥
ऐसे ही दिवस बतीत कीए सुखु सो दुखु पै किनहूं नही पायो ॥
कंचन धाम बने सभ के सु निहारि जिनै सिव सो ललचायो ॥
इंद्र त्याग कै इंद्रपुरी सभ देवन लै तिन देखन आयो ॥
दुआरवती हू को स्याम भनै जदुराइ भली बिधि बिओत बनायो ॥१९६२॥

◄ इति स्री दसम सकंधे पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दुआरक पुरी बनाईबो धयाइ समापतं ॥

अथ बलिभद्र ब्याह ॥

दोहरा ॥

ऐसे क्रिसन बतीत बहु दिवस कीए सुखु मानि ॥
तब लग रेवत भूप इक हली पाइ गहे आनि ॥१९६३॥
नाम रेवती जाहि को मम कंनिआ को नाम ॥
कहियो भूप तिह प्रसंनि ह्वै ताहि बरो बलिराम ॥१९६४॥
सवैया ॥
भूप की यौ सुन के बतीया बलिराम घनो चित मै सुखु पायो ॥
ब्याह को जोरि समाज सबै तिह ब्याह के काज तबै उठि धायो ॥
ब्याह कीयो सुख पाइ घनो बहु बिपन लोकन दान दिवायो ॥
ऐसे ब्याह हुलास बढाइ कै स्याम भनै अपने ग्रिहि आयो ॥१९६५॥

चौपई ॥

जब पीअ त्रीअ की ओरि निहारिओ ॥
छोटे हम इह बडी बिचारिओ ॥

तिह के हलु लै कंधहि धरिओ ॥
मन भावत ता को तनु करिओ ॥१९६६॥

दोहरा ॥

ब्याह भयो बलिदेव को नामु रेवती संगि ॥
सु कबि स्याम पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥१९६७॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे बलिभद्र बिआह बरननं समापतं ॥*

अथ रुकमिनि ब्याह कथनं ॥

सवैया ॥
बलिराम को ब्याह भयो जब ही मिलि कै नर नारि तबै सुखु पायो ॥
स्री ब्रिजनाथ के ब्याह को कबि स्याम कहै जीअरा ललचायो ॥
भीखम ब्याह उते दुहता को रचिओ अपनो सभ सैन बुलायो ॥
मानहु आपने ब्याहहि को जदुबीर भली बिधि ब्योत बनायो ॥१९६८॥
भीखम भूप बिचार कीयो दुहता इह स्री जदुबीर को दीजै ॥
या ते भलो न कछू कहूं है हम स्याम लहै जग मै जसु लीजै ॥
तउ लगि आइ गयो रुकमी रिसि बोल उठियो सु पिता कस कीजै ॥
जा कुल की न बिवाहत है हम ता दुहिता दै कहा जगु जीजै ॥१९६९॥
रुकमी बाच न्रिप सो ॥
सवैया ॥
है सिसुपाल चंदेरी मै बीर सु ताहि बियाह के काज बुलईयै ॥
गूजर को कहियो दै दुहिता जग मै संग लाजन के मरि जईयै ॥
स्रेसट एक बुलाइ भलो दिज ताही के लिआवन काज पठईयै ॥
ब्याह की जो बिधि बेद लिखी दुहिता सोऊ कै बिधि ताहि कउ दईयै ॥१९७०॥
यौ सुनि कै सुत की बतीया न्रिप बामन ताही को लैन पठायो ॥
दै दिज सीस चलिओ उत को दुहिता इत भूपति की सुनि पायो ॥
सीस धुनै कब स्याम भनै तिनि नैनन ते अति नीर बहायो ॥
मानहु आसहि की कटिगी जर सुंदर रूख सु है मुरझायो ॥१९७१॥
रुकमिनी बाच सखीअन सो ॥
सवैया ॥
संग सहेलिन बोलत भी सजनी प्रन एक अबै करि हउ ॥
कितो जोगनि भेस करो तज देस नही बिरहागिन सो जरि हउ ॥
मोर पिता हठ जिउ कर है तु बिसेख कहिओ बिख खा मरि हउ ॥
दुहिता न्रिप की कहिओ न तिह कउ बरि हौ तु स्याम ही को बरि हउ ॥१९७२॥

दोहरा ॥

अउर बिचारी मन बिखै करि हों एक उपाइ ॥
पतीआ दै कोऊ भेज हों प्रभ दै है सुधि जाइ ॥१९७३॥
इह चिंता करि चित बिखै इक दिज लयो बुलाइ ॥
बहु धनु दै ता को कहिओ प्रभ दे पतीआ जाइ ॥१९७४॥
रुकमिनी पाती पठी कान्रह प्रति ॥
सवैया ॥
लोचन चारु बिचार करो जिनि बाचत ही पतीआ उठि धावहु ॥
आवत है सिसपाल इतै मुहि ब्याहन कउ प्रभ ढील न लावहु ॥
मारि इनै मुहि जीति प्रभू चलो द्वारवती जग मै जसु पावहु ॥
मोरी दसा सुनि कै सभ यौ कबि स्याम कहै करि पंखन आवहु ॥१९७५॥

हे पति चउदहि लोकन के सुनीऐ चित दै जु संदेस कहे है ॥
तेरे बिना सु अहं अरु क्रोधु बढिओ सभ आतमे तीन बहे है ॥
यौ सुनीऐ तिपुरारि ते आदिक चित बिखै कबहूं न चहे है ॥
बाचत ही पतीया उठि आवहु जू ब्याह बिखै दिन तीन रहे है ॥१९७६॥

दोहरा ॥

तीन ब्याह मै दिन रहे इउ कहीऐ दिज गाथ ॥
तजि बिलंब आवहु प्रभू पतीआ पड़ि दिज साथ ॥१९७७॥
सवैया ॥
अउ जदुबीर सो यौ कहीयो तुमरे बिनु देखि निसा डरु आवै ॥
बार ही बार अति आतुर ह्वै तन तिआगि कहियो जीअ मोर परावै ॥
प्राची प्रतछ भयो ससि पूरन सो हम को अतिसै करि तावै ॥
मैन मनो मुख आरुन कै तुमरे बिनु आइ हमो डर पावै ॥१९७८॥
लागि रहिओ तुहि ओरहि स्याम जू मै इह बेर घनी हट के ॥
घनि स्याम की बंक बिलोकन फास के संगि फसे सु नही छुटके ॥
नही नैकु मुराए मुरै हमरे तुहि मूरति हेरन ही अटके ॥
कबि स्याम भने संगि लाज के आज भए दोऊ नैन बटा नट के ॥१९७९॥
साज दयो रथ बामन को बहुतै धनु दै तिह चित बढायो ॥
स्री ब्रिजनाथ लिआवन काज पठियो चित मै तिन हूं सुखु पायो ॥
यौ सोऊ लै पतीया को चलियो सु प्रबंध कथा कहि स्याम सुनायो ॥
मानहु पउन के गउन हूं ते सु सिताब दै स्री जदुबीर पै आयो ॥१९८०॥
स्री ब्रिजनाथ को बास जहा सु कहै कबि स्याम पुरी अति नीकी ॥
बज्र खचे अरु लाल जवाहिर जोति जगै अति ही सु मनी की ॥
कउन सराह करै तिह की तुम ही न कहो ऐसी बुधि किसी की ॥
सेस निसेस जलेस की अउर सुरेस पुरी जिह अग्रज फीकी ॥१९८१॥

दोहरा ॥

ऐसी पुरी निहार कै अति चिति हरख बढाइ ॥
स्री ब्रिजपति को ग्रिह जहा तहि दिज पहुचिओ जाइ ॥१९८२॥
सवैया ॥
देखत ही ब्रिजनाथ दिजोतम ठाढ भयो उठि आगे बुलायो ॥
लै दिजै आगै धरी पतीआ तिह बाचत ही प्रभ जी सुख पायो ॥
स्यंदन साजि चड़िओ अपुने सोऊ संगि लयो मनो पउन ह्वै धायो ॥
मानो छुधातरु होइ अति ही म्रिग झुंड तकै उठि केहरि आयो ॥१९८३॥
इत स्याम जू स्यंदन साजि चड़ियो उत लै सिसुपाल घनो दलु आयो ॥
आवत सो इन हूं सुनि कै पुर द्वार बजार जु थे सु बनायो ॥
सैन बनाइ भली इत ते रुकमादिक आगे ते लैन कउ धायो ॥
स्याम भनै सभ ही भटवा अपने मन मै अति ही सुखु पायो ॥१९८४॥
अउर बडे न्रिप आवत भे चतुरंग चमूं सु घनी संगि लै के ॥
हेरन ब्याह रुकमनि को अति ही चित मै सु हुलास बढै कै ॥
भेरि घनी सहनाइ सिंगे रन दुंदभि अउ तुरहीन बजै कै ॥
स्याम इते छपि आवत भयो कबि स्याम भनै तिन कारन छै कै ॥१९८५॥
स्याम भनै जोऊ बेद के बीच लिखी बिधि ब्याह की सो दुहूं कीनी ॥
मंत्रन सो अभिमंत्रन कै भूअ फेरन की सु पवित्र कै लीनी ॥
अउर जिते दिज स्रेसट हुते तिन को अति ही दछना तिन दीनी ॥
बेदी रची भली भातह सो जदुबीर बिना सभ लागत हीनी ॥१९८६॥
तउ ही लउ लै किह संगि पुरोहित देवी की पूजा के काज सिधारे ॥
स्यंदन पै चड़वाइ तबै तिह पाछे चले तिह के भट भारे ॥
या बिधि देखि प्रताप घनो मुख ते रुकमै इह बैन उचारे ॥

राखी प्रभू पति मोर भली बिधि धंन्य कहियो अब भाग हमारे ॥१९८७॥

चौपई ॥

जब रुकमिनी तिह मंदिर गई ॥
दुख संगि बिहबल अति ही भई ॥
तिनि इव रोइ सिवा संगि ररिओ ॥
तुहि ते मोहि इही बरु सरिओ ॥१९८८॥
सवैया ॥
दूरि दई सखीआ करि कै करि लीन छुरी कहिओ घात करै हउ ॥
मै बहु सेव सिवा की करी तिह ते सभ हौ सु इहै फलु पै हउ ॥
प्रानन धामि पठो जम के इह देहुरे ऊपर पाप चड़ै हउ ॥
कै इह को रिझवाइ अबै बरिबो हरि को इह ते बरु पै हउ ॥१९८९॥
देवी जू बाच रुकमिनी सो ॥
सवैया ॥
देखि दसा तिह की जग मात प्रतछ ह्वै ताहि कहिओ हसि ऐसे ॥
स्याम की बाम तै आपने चित करो दुचिता फुनि रंच न कैसे ॥
जो सिसुपाल के है चित मै नहि ह्वै है सोऊ तिह की सु रुचै से ॥
हुइ है अवसि सोऊ सुनि री कबि स्याम कहै तुमरे जी जैसे ॥१९९०॥

दोहरा ॥

यौ बरु लै के सिवा ते प्रसंन चली हुइ चित ॥
स्यंदन पै चड़ि मन बिखै चहि स्री जदुपति मित ॥१९९१॥
सवैया ॥
चड़ी जात हुती सोऊ स्यंदन पै ब्रिज नाइक द्रिसटि बिखै करि कै ॥
अरु सत्रन सैन निहारि घनी तिह ते नही स्याम भनै डरि कै ॥
प्रभ आइ परिओ तिह मधि बिखै इह लेत हो रे इम उचरि कै ॥
बलु धारि लई रथ भीतर डारि मुरारि तबै बहीया धरि कै ॥१९९२॥
डारि रुकमिनी स्यंदन पै सभ सूरन सो इह भाति सुनाई ॥
जात हो रे इह को अब लै इह कै रुकमै अब देखत भाई ॥
पउरख है जिह सूर बिखै सोऊ याहि छडाइन माडि लराई ॥
आज सभो मरि हों टरि नही स्याम भनै मुहि राम दुहाई ॥१९९३॥
यौ बतीया सुनि कै तिह की सभ आइ परे अति क्रोध बढै कै ॥
रोस भरे भट ठोकि भुजा कबि स्याम कहै अति क्रोधत ह्वै कै ॥
भेरि घनी सहनाइ सिंगे रन दुंदभि अउ अति ताल बजै कै ॥
सो जदुबीर सरासन लै छिन बीच दए जमलोकि पठै कै ॥१९९४॥
जो भट काहूं ते नैकु डरे नहि सो रिस कै तिह सामुहे आए ॥
गाल बजाइ बजाइ कै दुंदभि जिउ घन सावन के घहराए ॥
स्री जदुबीर के बान छुटे न टिके पल एक तहा ठहराए ॥
एक परे ही कराहत बीर बली इक अंत के धामि सिधाए ॥१९९५॥
ऐसी निहारि दसा दल की सिसुपाल तबै रिस आपहि आयो ॥
आइ कै स्याम सो ऐसो कहिओ न जरासंधि हउ जोऊ तोहि भगायो ॥
यौ बतीया कहि कै कस कै धनु कान प्रमान लउ बान चलायो ॥
मानहु क्रोध सभै तिह को सु प्रतछ है स्याम के ऊपर धायो ॥१९९६॥

दोहरा ॥

सो सर आवत देख कै क्रुधत हुइ ब्रिजनाथ ॥
कटि मारग भीतर दयो एक बान के साथ ॥१९९७॥
सवैया ॥
सर काटि कै स्यंदन काटि दयो अरु सूत को सीस दयो कटि कै ॥

अरु चारो ही अस्वन सीस कटे बहु ढालन के तब ही झटि कै ॥
फिरि दउरि चपेट चटाक हनिओ गिर गयो जब चोट लगी भटि कै ॥
तुम ही न कहो भट कउन बीयो जग मै जोऊ स्याम जू सो अटकै ॥१९९८॥
चित मै जिन धिआन धरियो हित कै सोऊ स्रीपति लोकहि को सटिकियो ॥
पग रोप जोऊ अटकियो प्रभू सो कबि स्याम कहै पल सो न टिकियो ॥
अटकियो जोऊ प्रेम सो बेध कै लोक चलियो तिह कउ न किन ही हटकियो ॥
जिह नैकु बिरोध हीयो सटकियो नर सो सभ ही भूअ मो पटकियो ॥१९९९॥
फउज बिदार घनी ब्रिजनाथ बिमुंछत कै सिसुपाल गिरायो ॥
अउर जितो दलु ठाढो हुतो सोऊ देखि दसा करि त्रास परायो ॥
फेरि रहे तिन को बहु बारि कोऊ फिरि जुध के काज न आयो ॥
तउ रुकमी दल लै बहुतो संगि आपने आप ही जुध को धायो ॥२०००॥
बीर बडे इह की दिस के रिस सो जदुबीर कउ मारन धाए ॥
जात कहा फिरि स्याम लरो हम सो सभ ही इह भाति बुलाए ॥
ते ब्रिजनाथ हने सभ ही कहि कै उपमा कबि स्याम सुनाए ॥
मानहु हेरि पतंग दीआ कहु टूटि परे फिरि जीत न आए ॥२००१॥
जब सैन हनियो घन स्याम सभै रुकमी कुप कै तब ऐसे कहिओ ॥
जब गूजर ह्वै धन बान गहियो छत्रापन छत्रिन ते तो रहिओ ॥
जिम बोलत थो बध कै सर स्याम बिमुंछत कै सु सिखा ते गहिओ ॥
गहि कै तिह मूंड को मूंड दयो उपहास कै जिउ चित बीच चहिओ ॥२००२॥

दोहरा ॥

भ्रात दसा पिखि रुकमिनी प्रभ जू के गहि पाइ ॥
अनिक भाति सो स्याम कबि भ्रात लयो छुटकाइ ॥२००३॥
सवैया ॥
जोऊ ताहि सहाइ कउ आवत भे सु हने सभ ही चित मै चहि कै ॥
जोऊ सूर हनियो न हनियो छल सो अरे मारत हउ तुहि यौ कहि कै ॥
बहु भूप हने गजबाज रथी सरता बहु स्रोन चली बहि कै ॥
फिरि त्रीय को कहे पीय छोड दयो रुकमी रनि जीति भले गहि कै ॥२००४॥
तउ लउ गदा गहि कै बलिभद्र परिओ तिन मै चिति रोस बढायो ॥
सत्रन सैन भजियो जोऊ जात हो स्याम भनै सभ कउ मिलि घायो ॥
घाइ कै सैन भली बिधि सो फिरि के ब्रिज नाइक की ढिग आयो ॥
सीस मुंडिओ रुकमी को सुनियो जब तो हरि सिउ इह बैन सुनायो ॥२००५॥
बलभद्र बाच कान्रह जू सो ॥

दोहरा ॥

भ्रात त्रीआ को रन बिखै कान्रह जीत जो लीन ॥
सीस मूंड ता को दयो कहियो काज घट कीन ॥२००६॥
सवैया ॥
अनि ते पुर बाधि रहो रुकमी उत द्वारवती प्रभ जू इत आए ॥
आइ है कान्रह जू जीति त्रीआ सभ यौ सुनि कै जन देखन धाए ॥
ब्याह के काज कउ जे थे दिजोतम ते सभ ही मिलि कै सु बुलाए ॥
अउर जितो बलवंत बडे कबि स्याम कहै सभ बोलि पठाए ॥२००७॥
कान्रह को ब्याह सुनियो पुर नारिन आवत भी सभ ही मिल गावत ॥
नाचत डोलत भाति भली कबि स्याम भनै मिलि ताल बजावत ॥
आपसि मै मिलि कै तरुनी सभ खेलन कउ अति ही ठट पावत ॥
अउर की बात कहा कहीऐ पिखिबे कहु देव बधू मिलि आवत ॥२००८॥
सुंदरि नारि निहारन कउ तजि कै ग्रिह जो इह कउतक आवै ॥
नाचत कूदत भाति भली ग्रिह की सुधि अउर सभै बिसरावै ॥
देख कै ब्याहहि की रचना सभ ही अपनो मन मै सुखु पावै ॥

ऐसे कहै बलि जाहि सभै जब कान्रह कउ देखि सभै ललचावै ॥२००९ ॥
जब कान्रह के ब्याह कउ बेदी रची पुर नारि सभै मिल मंगल गायो ॥
नाचत भे नटूआ तिह ठउर म्रिदंगन ताल भली बिधि द्रयायो ॥
कोटि कतूहल होत भए अरु बेसियन को कछु अंत न आयो ॥
जो इह कउतुक देखन कउ चलि आयो हुतो सभ ही सुखु पायो ॥२०१० ॥
एक बजावत बेनु सखी इक हाथि लीए सखी ताल बजावै ॥
नाचत एक भली बिधि सुंदरि सुंदरि एक भली बिधि गावै ॥
झाजर एक म्रिदंग के बाजत आए भले इक हाव दिखावै ॥
भाइ करै इक आइ तबै चित के रनिवारन मोद बढावै ॥२०११ ॥
बारुनी के रस संग छके जह बैठे है क्रिसन हुलास बढै कै ॥
कुंकम रंग रंगे पटवा भटवा अपने अति आनंद कै कै ॥
मंगन लोगन देत घनो धन स्याम भनै अति ही नचवै कै ॥
रीझि रहे मन मै सभ ही फुनि स्री जदुबीर की ओरि चितै कै ॥२०१२ ॥
बेद के बीच लिखी बिधि जिउ जदुबीर ब्याह तिही बिधि कीनो ॥
जो रुकमी ते भली बिधि कै रुकमनिहि को पुनि जीत कै लीनो ॥
जीतहि की बतीआ सुनि कै अति भीतर मोद बढिओ पुर तीनो ॥
स्याम भनै इह कउतक कै सभ ही जदुबीरन कउ सुख दीनो ॥२०१३ ॥
सुख मान कै माइ पीयो जल वार कै अउ द्विज लोकन दान दीओ है ॥
ऐसे कहियो सभ ही भूअ को सुख आज सभै हम लूटि लीओ है ॥
आज हुलास भयो सजनी उमगिओ न रहै कहिओ मोर हीओ है ॥
आज के दिवस हूं पै बलि जाउ अरी जब मो सुत ब्याह कीओ है ॥२०१४ ॥

◄ इति स्री दसम सकंधे बचित्र नाटके क्रिसनावतारे रुकमिनी हरन इत ब्याह करन बरननं धिआइ समापतं ॥

अथ प्रदुमन का जनम कथनं ॥

दोहरा ॥

पुरख त्रीआ आनंद सो बहु दिन भए बितीत ॥
गरभ भयो तब रुकमनी प्रभ ते परम पुनीत ॥२०१५ ॥
सोरठा ॥
उपजियो बालक बीर नाम धरियो तिह परदुमन ॥
महारथी रन धीर सभ जानत है जगति जिह ॥२०१६ ॥
सवैया ॥
दस दिउस को बालक भयो जब ही तब संबर दैत लै ताहि गयो है ॥
सिंध के भीतर डारि दयो इक मछ हुतो तिह लील लयो है ॥
मछ सोऊ गहि झीवरि एकु सु संबर पै फिरि जाइ दयो है ॥
भछन को फुनि ताहि रसोइ मै भेजि दयो सु उलास कयो है ॥२०१७ ॥
जब मछ को पारन पेट लगे तब सुंदर बारिक एक निहारियो ॥
होइ दइआल वती सु त्रीआ करुना रसु पै चित मै तिनि धारियो ॥
तेरो कहियो पति है इम नारद स्याम भनै इह भाति उचारियो ॥
सो बतीआ सुनि कै मुनि नारि भली बिधि सो भरता करि पारियो ॥२०१८ ॥

चौपई ॥

पोखन बहुतु दिवस जब करी ॥
तब इह द्रिसटि त्रीआ की धरी ॥
काम भाव चित भीतर चहियो ॥
रुकमिनि सुत सिउ बच इह कहियो ॥२०१९ ॥

मैनवती तब बैन सुनाए ॥
तुम मो पति रुकमिनि के जाए ॥
तुम को संबर दानव हरियो ॥
आनि सिंधु के भीतर डरियो ॥२०२०॥
तब इक मछ लील तुहि लयो ॥
सो भी मछ फासि बसि भयो ॥
झीवर फिरि संबर पै लिआयो ॥
तिह हम पै भछन हित दिआयो ॥२०२१॥
जब हम पेट मछ को फारियो ॥
तब तोहि कउ मै नैनि निहारियो ॥
मोरे ह्रिदै दइआ अति आई ॥
अउ नारद इह भात सुनाई ॥२०२२॥
इह अवतार मदन को आही ॥
ढूंढत फिरत रैन दिन जाही ॥
मै पति लखि तुहि सेवा करी ॥
अब मै मदन कथा चित धरी ॥२०२३॥
रुद्र कोप काइआ तुहि जरी ॥
तब मै पूजा सिव की करी ॥
बरु सिव दयो हुलास बढै है ॥
भरता वही मूरति तू पै है ॥२०२४॥

दोहरा ॥

तब हउ संबर दैत की भई रसोइन आइ ॥
अब भरता मुहि रुद्र तू सुंदर दयो बनाइ ॥२०२५॥
सवैया ॥
सुत कान्रह के यौ बतीया सुनि कै आपने चित मै अति क्रोध बढायो ॥
बान कमान क्रिपान गदा गहि कै अरि के बध कारन धायो ॥
धाम जहा तिह बैरी को थे तिह द्वार पै जाइ कै बैन सुनायो ॥
जाहि कउ सिंधु मै डार दयो अब सो तुहि सो लरबे कहु आयो ॥२०२६॥
यौ जब बैन कहु सुत स्याम तो संबर ससत्र गदा गहि आयो ॥
जैसे कही बिधि जुधहि की तिह भाति सो ताही ने जुध मचायो ॥
आप भजियो नहि ता भूअ ते नहि वाहि कउ त्रास दै पैगु भजायो ॥
आहव या बिधि होत भयो कहि कै इह भात सो स्याम सुनायो ॥२०२७॥
अति ही तिह ठा जब मार मची अरि जात भयो नभि मै छलु कै कै ॥
लै करि पाहन ब्रिसट करी सुत स्याम के पै अति क्रुधत ह्वै कै ॥
सो इन पाहन बिअरथ करे तिन को सर एकहि एक लगै है ॥
ससत्रन सो तिह को तन बेध कै भूमि डरिओ अति रोस बढै कै ॥२०२८॥
असि ऐचि झटाक लयो कटि ते सिरि संबर कै सु झटाक दे झारियो ॥
देवन के गन हेरत जे तिन पउरख देख कै धंनि उचारियो ॥
भूमि गिराइ दयो कै बिमुछित स्रोन संबूह धरा पै बिथारियो ॥
कान्रह को पूत सपूत भयो जिनि एक क्रिपान ते संबर मारियो ॥२०२९॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे परदुमन संबर दैत हरि लै गयो इत संबर को परदुमन बध कीओ धिआइ समापतम ॥*

अथ परदुमन संबर को बधि रुकमिन को मिले ॥

दोहरा ॥

तिह को बध कै परदुमनि आयो आपने ग्रेह ॥
रति आपने पति संगि तबै कहिओ बढै कै नेह ॥२०३०॥
चीलि आप हुइ आपने ऊपरि पतहि चड़ाइ ॥
रुकमिनि को ग्रिह थो जहा तहि ही पहुंची आइ ॥२०३१॥
सवैया ॥
छोर कै चील को रूप दयो त्रीआ को अति सुंदर रूप बनायो ॥
वाहि उतार कै कंधहि ते तिह कंधि पटंबर पीत धरायो ॥
सोरह हजार त्रीआ सभ थी जहि ठाढि तिनै इह रूप दिखायो ॥
सु सुकची चित बीच सभै इह भाति लखियो ब्रिज नाइक आयो ॥२०३२॥
सवैया ॥
ताहि निहारि कै स्याम सी मूरति त्रीअ सभै मन मै सुकचाही ॥
लिआयो है आनि बधू कोऊ ब्याहि कहै सखी की सु सखी गहि बाही ॥
एक निहारि कहै तिह कै उरि ओरि बिचार भले मन माही ॥
लछन अउर सभै हरि के इह एक लता भ्रिगु की उरि नाही ॥२०३३॥
पेखत ताहि रुकमनि के सु पयोधर वा पय सो भरि आए ॥
मोहु बढियो अति ही चित मै करुना रसु सो ढुरि बैन सुनाए ॥
ऐसे सखी कहिओ मो सुत थो प्रभ दै हम को हम ते जु छिनाए ॥
यौ कहि सास उसास लयो कबि स्याम कहै दोऊ नैन बहाए ॥२०३४॥
इति ते ब्रिज नाइक आइ गयो इह मूरति ओरि रहे टक लाई ॥
तउ ही लउ नारद आइ गयो बिरथा सभ ही तिनि भाखि सुनाई ॥
कान्रह जू पूत तिहारो ई है इह यौ सुनि कै पुर बाजी बधाई ॥
भागन की निधि स्याम भनै जदुबीर मनो इह दिवसहि पाई ॥२०३५॥
इति स्री दसम सकंधे बचित्र नाटक क्रिसनावतारे परदुमन संबर दैत बध कै रुकमिनि कान्रह जू को आई मिलत भए ॥

अथ सत्राजित सूरज ते मनि लिआए जामवंत बध कथनं ॥

दोहरा ॥

इत सूरज सेवा करी सत्राजित बलवान ॥
रवि तिह को तब मनि दई उजल आप समान ॥२०३६॥
सवैया ॥
लै मनि सूरज ते अरि जीत जु ता दिन आपने धामहि आयो ॥
जो कबि स्याम भनै करि सेव घनो रवि को चित ता रिझवायो ॥
अउ करि कै तपस्या अति ही तिह की हित सो तिह कउ जब गायो ॥
सो सुनि कै सु ब्रिथा पुर लोगन यौ जदुबीर पै जाइ सुनायो ॥२०३७॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
कान्रह बुलाइ अरंजित कउ हसि कै मुख ते इह आइस दीनो ॥
भूप कउ दै तु कहिओ अब ही रवि ते जु रिझाइ कै तै धनु लीनो ॥
जो चहि कै चित मै चपला दुति याहि कहियो इन नैकु न कीनो ॥
मोन ही ठान के बैठि रहियो ब्रिजनाथ को उतरु नैकु न दीनो ॥२०३८॥
प्रभ यौ बतीआ कहि बैठि रहियो तिह भ्रात अखेट के काज पधारियो ॥
बाध भले मनि कउ सिर पै सभ हूं जन दूसर भानु बिचारियो ॥
कानन के जब बीच गयो म्रिगराज बडो इक याहि निहारियो ॥
तान कै बान चलावत भयो सर वा सहि कै इह को फिरि मारियो ॥२०३९॥

चौपई ॥

जब तिनि के हरि के सरि मारियो ॥
तब के हरि पुरखत संभारियो ॥

एक चपेट चउकि तिह मारी ॥
मनि समेत लई पाग उतारी ॥२०४०॥

दोहरा ॥

तिह बध कै मनि पाग लै सिंघ धसियो बनि जाइ ॥
भालक एक बडो हुतो तिहि हेरिओ मिरगराइ ॥२०४१॥
सवैया ॥
भालक देखि मनी दुति कउ सु लखियो कोऊ केहरि लै फलु आयो ॥
या फल कउ अब भछ करो सु छुधातरु ह्वै तह भछन धायो ॥
ज्यो म्रिगराज थो जात चलियो तिउ अचानक आइ कै जुधु मचायो ॥
एक चपेट चटाक दै मारि झटाक दै सिंघ को मारि गिरायो ॥२०४२॥

दोहरा ॥

जामवान बधि सिंघ को मनि लै मनि सुखु पाइ ॥
जहा ग्रिहि आपन हुतो तह ही पहुचियो आइ ॥२०४३॥
सत्राजित लखि भेद नहि सभनन कहियो सुनाइ ॥
क्रिसन मारि मुहि भ्रात कउ लीनी मनि छुटकाइ ॥२०४४॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै चरचा प्रभ जू आपने ढिग जा तिह को सु बुलायो ॥
सत्राजीत कहै मुहि भ्रात हनियो हरि जू मनि हेतु सुनायो ॥
ऐसे कुबोल सुने मनूआ हमरो अति क्रोधहि के संगि तायो ॥
ता ते चलो तुम हूं तिह सोध कउ हउ हूं चलो कहि खोजन धायो ॥२०४५॥
जादव लै ब्रिजनाथ जबै अपने संगि खोजन ताहि सिधारे ॥
अस्वपती बिनु प्रान परे सु तही ए गए दोऊ जाइ निहारे ॥
केहरि को तह खोज पिखियो इह वा ही हने भट ऐसे पुकारे ॥
आगे जौ जाहि तो सिंघ पिखियो म्रित चउकि परे सभ पउरख वारे ॥२०४६॥

दोहरा ॥

तह भालक के खोज कउ चितै रहे सिर नाइ ॥
जहा खोज तिह जात पग तहा जात भट धाइ ॥२०४७॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
जा प्रभ के बरु दानि दए असुरारि जिते सभ दानव भागे ॥
जा प्रभ सत्रन नास कयो ससि सूर थपे फिरि कारज लागे ॥
सुंदर जाहि करी कुबिजा छिन बीच सुगंधि लगावत बागे ॥
सो प्रभु अपने कारज हेतु सु जात है रीछ के खोजहि लागे ॥२०४८॥
खोज लीए सभ एकु गुफा हू पै जात भए हरि ऐसे उचारियो ॥
है कोऊ सूर धसै इह बीच न काहूं बली पुरखत संभारियो ॥
या ही के बीच धसियो सोई रीछ सभो मन मै इह भाति बिचारियो ॥
कोऊ कहै नहि या मै कहियो हरि रे हम खोज इही महि डारियो ॥२०४९॥
कोऊ न बीर गुफा मै धसियो तब आप ही ताहि मै स्याम गयो है ॥
भालक लै सुधि बीच गुफाहूं कै जुधु को सामुहे कोप अयो है ॥
स्याम जू स्याम भनै उह सो दिन द्वादस बाहन जुधु कयो है ॥
जुधु इत जुग चारनि मै नहि ह्वै है कबै कबहूं न भयो है ॥२०५०॥
द्वादस दिउस भिरे दिन रैन नही तिह ते हरि नैकु डरानो ॥
लातन मूकन को अति ही फुनि तउन गुफा महि जुधु मचानो ॥
पउरख भालक को घटि गयो इह मै बहु पउरख ता पहिचानो ॥
जुधु को छाड कै पाइ परियो जदुबीर को राम सही करि जानो ॥२०५१॥
पाइ परियो घिघिआनो घनो बतीया अति दीन ह्वै या बिधि भाखी ॥

हो तुम रावन के मरीआ तुम ही पुनि लाज दरोपती राखी ॥
भूल भई हम ते प्रभ जू सु छिमा करीयै सिव सूरज साखी ॥
यौ कहि कै दुहिता जु हुती सोऊ लै ब्रिजनाथ के अग्रज राखी ॥२०५२॥
उत जुध कै स्याम जू ब्याह कयो इत ह्वै कै निरास ए धामन आए ॥
कान्रह गुफा हूं के बीच धसे सोऊ काहूं हने सु इही ठहराए ॥
नीर ढरै भटवान की आंखिन लोटत है चित मै दुखु पाए ॥
सीस धुनै इक ऐसे कहै हम हूं जदुबीर के काम न आए ॥२०५३॥
सैन जितो जदुबीर के संग गयो सोऊ भूप पै रोवत आयो ॥
भूपति देख दसा तिन की अति ही अपुने मन मै दुखु पायो ॥
धाइ गयो बलिभद्र पै पूछन रोइ इही तिन बैन सुनायो ॥
कान्रह गुफा के बिखै धसि कै तिह ते बहुरे नही बाहरि आयो ॥२०५४॥
हली बाच ॥
सवैया ॥
कै लरि कै अरि काहू के संगि तन आपन को जमलोकि पठायो ॥
खोजत कै मनि या जड़ की बलि लोकि गयो कोऊ मारग पायो ॥
कै मनि लै इह भ्रात के प्रान गयो जम लै तिन लैन कउ धायो ॥
कै इह मूरख को सु कुबोल लगियो हुइ लजातुर धामि न आयो ॥२०५५॥
रोइ जबै संग भूपति को मुख ते मुसली इह भाति उचारियो ॥
तउ सत्राजित कउ मिलि कै सभ जादव लातन मूकन मारियो ॥
पाग उतार दई मुसकै गहि गोडन ते मधि कूप के डारियो ॥
छोडबो ता के कहियो न किहू सभ हू तिह को बधबो चिति धारियो ॥२०५६॥
कानर की जब ए बतीया प्रभ की सभ नारिन जउ सुनि पाई ॥
रोवत भी कोऊ भूमि परी गिर पीटत भी करि कै दुचिताई ॥
एक कहै पति प्रान तजे अब हुइ है कहा हमरी गति माई ॥
अउर रुकमनि देत दिजोतम दान सती फुनि होबे कउ आई ॥२०५७॥

दोहरा ॥

बसुदेव अरु देवकी दुबिधा चितहि बढाइ ॥
प्रभ गति द्वै बिधि हेरि कै बरजिओ रुकमनि आइ ॥२०५८॥
सवैया ॥
पुत्र बधू हू को देवकी आइ सु स्याम भनै बिधि या समझायो ॥
जो हरि जूझ मरे रन मो जरिबो तुहि को निसचै बनि आयो ॥
जउ मनि ढूंढत या जड़ की ब्रिजनाथ घने पुनि कोस सिधायो ॥
ता ते रहो चुपि कै सुधि लै अरु यौ कहि पाइन सीस झुकायो ॥२०५९॥
ऐसो समोध कै पुत्र बधू को भवानी को पै तिन जाइ मनायो ॥
ठाईस दिवस लउ सेव करी तिह की तिह को अति ही रिझवायो ॥
रीझि सिवा तिन पै तब ही कबि स्याम इही बरुदान दिवायो ॥
आइ है स्याम न सोक करो तब लउ हरि लीने त्रीआ मनि आयो ॥२०६०॥
कान्रह को हेरि त्रीआ मनि के जुत सोक की बात सभै बिसराई ॥
डारि कमंडल मै जलु सीतल माइ पीयो पुनि वार कै आई ॥
जादव अउर सभै हरखै अरु बाजत भी पुर बीच बधाई ॥
अउर कहै कवि स्याम सिवा सु सभो जगमाइ सही ठहराई ॥२०६१॥
इति जामवंत को जीत कै दुहिता तिस की मनि सहित लिआवत भए ॥
सवैया ॥
हेर कै स्याम सत्राजित कउ मनि लै कर मै फुनि ता सिर मारी ॥
जा हित दोस दयो सोई लै जड़ कोप भरे इह भाति उचारी ॥
चउकि कहै सभ जादव यौ सु पिखो रिसि कैसी करी गिरधारी ॥
सो इह भाति कबितन बीच कथा जग मै कब स्याम बिथारी ॥२०६२॥
हाथि रहिओ मनि को धरि कै तिनि नैकु न काहूं की ओरि निहारिओ ॥
लजित ह्वै खिसियानो घनो दुबिधा करि धाम की ओरि सिधारिओ ॥

बैर परियो हमरो हरि सो रु कलंक चड़ियो गयो भ्रात्र मारिओ ॥
भीर परी ते अधीर भयो दुहिता देउ स्याम इही चिति धारिओ ॥२०६३॥

◄ *इति स्री दसम सकंधे बचित्र नाटक क्रिसनावतारे सत्राजित को मणि दैबो बरननण धिआइ समापतं ॥*

अथ सत्राजित की दुहिता को ब्याह कथनं ॥

स्वैया ॥
बोलि दिजोतम बेदन की बिधि जैस कही तिस ब्याह रचायो ॥
सति भामनि को कबि स्याम भनै जिह को सभ लोगन मै जसु छायो ॥
पावत है उपमा लछमी की न ता सम यौ कहिबो बनि आयो ॥
ताही के ब्याहन काज सु दै मनि मानि भलै घनि स्याम बुलायो ॥२०६४॥
स्री ब्रिजनाथ सुने बतीया सुभ साजि जनेत जहा को सिधाए ॥
आवत सो सुनि कै प्रभु को सभ आगे ही ते मिलिबे कउ धाए ॥
आदर संग लवाइ कै जाइ ब्याह कीयो दिज दान दिवाए ॥
ऐसे बिवाह प्रभू सुखु पाइ त्रीया संग लै करि धामहि आए ॥२०६५॥

◄ *इति बिवाह संपूरन होत भयो ॥*

लछीआ ग्रिह प्रसंग ॥
सवैया ॥
तउ ही लउ ऐसो सुनी बतीया लछीआ ग्रिहि मै सुत पंडु के आए ॥
गाइ समेत सभो मिलि कौरन चित बिखै करुना न बसाए ॥
ऐसे बिचार कीओ चित मै सु तहा को चलै सभ बिसनु बुलाए ॥
ऐसे बिचार सु साज कै स्यंदन स्री ब्रिजनाथ तहा को सिधाए ॥२०६६॥
कान्रह चले उत कउ जब ही बरमाक्रित तो इत मंत्र बिचारियो ॥
लै अक्रूर कउ आपने संग कहियो अरे कान्रह कहां कउ पधारियो ॥
छीन लै या ते अरे मिलि कै मनि ऐसे बिचार कीयो तिह मारियो ॥
लै बरमाक्रित वा बध कै मनि आपने धाम की ओरि सिधारियो ॥२०६७॥

चौपई ॥

सति धंना भी संगि रलायो ॥
जब सत्राजित को तिन घायो ॥
ए तिह बध के डेरन आए ॥
उतै संदेस स्याम सुनि पाए ॥२०६८॥
दूत बाच कान्रह सो ॥

चौपई ॥

प्रभु सो दूतन बैन उचारे ॥
सत्राजित क्रितबरमा मारे ॥
मनि धन छीनि ताहि ते लयो ॥
तोहि त्रीआ को अति दुखु दयो ॥२०६९॥
जब जदुपति इह बिधि सुनि पायो ॥
छोरि अउर सभ कारज आयो ॥
हरि आवन क्रितबरमै जानी ॥
सतिधंना सो बात बखानी ॥२०७०॥
अड़िल ॥
कहु सतिधंना बात अबै हम किआ करै ॥

कहो परै कै जाइ कहो लरि कै मरै ॥
दुइ मै इक मुहि बात कहो समझाइ कै ॥
हो के उपाइ कै स्यामहि मारै जाइ कै ॥२०७१॥
क्रितबरमा की बात सुनत तिनि यौ कहियो ॥
जदुपति बली प्रचंड हनियो अरि जो चहियो ॥
ता सो हम पै बल न लरै पुनि जाइ कै ॥
हो कंस से छिन मै मारि दए सुख पाइ कै ॥२०७२॥
बतीआ सुनि तिह की अक्रूर पै आयो ॥
प्रभु दुबिधा को भेद सु ताहि सुनायो ॥
तिन कहियो अब सुनि तेरो इहीं उपाइ है ॥
हो प्रभ ते बच है सोऊ जु प्रान बचाइ है ॥२०७३॥
सवैया ॥
दै मनि ताहि उदास भयो किह ओरि भजो चित मै इह धारियो ॥
मै अपराध कीओ हरि को मनि हेतु बली सत्राजित मारियो ॥
ताहि के हेतु गुसा करि स्याम सभै अपनो पुरखत संभारियो ॥
जउ रहि हउ तऊ मारत है एह कै डरु उतर ओरि सिधारियो ॥२०७४॥

दोहरा ॥

सतिधंना मनि लै जहा भज गयो त्रास बढाइ ॥
स्यंदन पै चड़ि स्याम जू तह हीं पहुंचियो जाइ ॥२०७५॥
पाव पिआदो सत्र होइ भजियो सु त्रास बढाइ ॥
तब जदुबीर क्रिपान सो मारियो ता को जाइ ॥२०७६॥
खोजत भयो तिह मार कै मनि नही आई हाथि ॥
मनि नही आई हाथि यौ कहियो हली के साथ ॥२०७७॥
सवैया ॥
ऐसे लखियो मुसली मन मै सु प्रभू हम ते मनि आज छपाई ॥
लै अक्रूर बनारस गयो मनि कउ तिह की न कछू सुधि पाई ॥
स्याम जू मो इक सिख्य है भूपति जात तहा हउ सो ऐसे सुनाई ॥
यौ बतीया कहि जात रहियो जदुबीर की कै मन मै दुचिताई ॥२०७८॥

दोहरा ॥

जउ मुसली तिह पै गयो तउ भूपति सुखु पाइ ॥
लै अपुने तिह धाम गयो आगे ही ते आइ ॥२०७९॥
गदा जुध मै अति चतुरु यौ सभ ते सुनि पाइ ॥
तबै दुरजोधन हली ते सभ सीखी बिधि आइ ॥२०८०॥
सवैया ॥
सतिधंना कउ मार जबै जदुनंदन द्वारवती हू के भीतर आयो ॥
कंचन को अक्रूर बनारस दान करै बहु यौ सुनि पायो ॥
सूरज दित उही पहि है मनि यौ अपने मन मै सु जनायो ॥
मानस भेज भलो तिह पै तिह को अपुने पहि बोलि पठायो ॥२०८१॥
जउ हरि पै सोऊ आवत भयो तिह ते मनि तो इन मागि लई है ॥
सूरज जे तिह रीझि दई धनसति की जा हितु देह गई है ॥
जा हितु स्याम त्रिया हरि भ्रातहि मानहि की मनि बात ठई है ॥
सो दिखराइ सभो हरखाइ कै लै अक्रूरह फेरि दई है ॥२०८२॥
जो सत्राजित कै करि सेव सु सूरज की फुनि ताहि ते पाई ॥
जा हरि कै इह को बध कारन कै धनसति सु आपनी देह गवाई ॥
ताहि गयो अक्रूर थो लै तिह ते फिरि सो ब्रिजनाथ पै आई ॥
सो हरि देत भयो तिह को मुंदरी मनो स्याम जू राघव हाई ॥२०८३॥

दोहरा ॥

बडे जसहि पावत भयो मनि दै स्री जदुबीर ॥
जो कटीआ सिर दुरजनन हरता साधन पीर ॥२०८४॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे सतिधंने को बध कै अक्रूर को मनि देत भए ॥
कान्रह जू को दिली महि आवन कथनं ॥

चौपई ॥

जब अक्रूरहि को मनि दई ॥
जदुपति दिली को सुधि लई ॥
तब दिली के भीतर आए ॥
पाडव पाच चरन लपटाए ॥२०८५॥

दोहरा ॥

तब कुंती के ग्रिह गए कुसल पूछिओ जाइ ॥
जो दुख इन कैरवि दए सो सभ दए बताइ ॥२०८६॥
इंद्रप्रसत मै क्रिसन जू रहे मास जब चार ॥
तब अरजुन को संग लै इक दिन चड़े सिकार ॥२०८७॥
सवैया ॥
सोध सिकार को लै हरि जू सु घनो जह थो तिह ओरि सिधारे ॥
गोइन सूकर रीछ बडे बहु चीतरु अउर ससे बहु मारे ॥
गैंडे हने महिखास के मत करी अरु सिंघन झुंडहि झारे ॥
नैकु संभार रही न परै बिसंभार जिनो सर स्याम प्रहारे ॥२०८८॥
पारथ को संग लै प्रभ जू बन मो धसि कै बहुते म्रिग घाए ॥
एक हने करवारिन सो तकि एकन के तनि बान लगाए ॥
अस्वन को दवराइ भजाइ कै कूकर तेऊ हने जु पराए ॥
स्री ब्रिजनाथ के अग्रज जे उठि भाजत भे तेऊ जान न पाए ॥२०८९॥
पारथ एक हने म्रिगवा इक आपहि स्री ब्रिज नाइक घाए ॥
जे उठि भाजत भे बन मै सोऊ कूकर डारि सबै गहिवाए ॥
तीतर जे उडि कै नभि ओरि गए तिन को प्रभ बाज चलाए ॥
चीतन एक म्रिगा गहि कै कबि स्याम कहै जमलोकि पठाए ॥२०९०॥
बेसरे अउर कुही बहिरी अरु बाज जुरे बहुते संग लीने ॥
बासे घने लगरा चरगे सिकरेन को फेट भली बिधि कीने ॥
धूती उकाब बसीनन को सजि कंठिज गोलिन द्वाल नवीने ॥
जा संग हेरि चलावत भे तिन पछिन ते इक जान न दीने ॥२०९१॥
पारथ अउ प्रभ जू मिलि कै जब ऐसो सिकार कीओ सुख पायो ॥
आपस मै कबि स्याम भनै तिह ठउर दुहू अति हेतु बढायो ॥
अउ दुहूं को जल पीवन को मनु अउसर तउन सु है ललचायो ॥
छोरि अखेटक दीन दुहूं चलि कै प्रभ जू जमना तटि आयो ॥२०९२॥
जात हुते जल पीवन के हित तउ ही लउ सुंदरि नारि निहारी ॥
पूछहु को है कहा इह देसु कहियो संगि पारथ यौ गिरिधारी ॥
आइस मानि पुरंदर को सु भयो तिह के संग बात उचारी ॥
कउन की बेटी है देस कहा तुहि को तोहि भ्रात तू कउन की नारी ॥२०९३॥
जमुना बाच अरजनु सो ॥

दोहरा ॥

अरजुन सो जमना तबै ऐसे कहिओ सुनाइ ॥
जदुपति बर ही चाहि चिति तपु कीनो मै आइ ॥२०९४॥
पारथ बाच कान्रह जू सो ॥

सवैया ॥
तब पारथ आइ कै सीस निवाइ सु स्याम जू सिउ इह बैन उचारे ॥
सूरज की दुहिता जमना इह नाम प्रभू जग जाहिर सारे ॥
भेस तपोधन काहे कीयो इन अउ ग्रिह के सभ काज बिसारे ॥
अरजुन उतर ऐसे दीयो घनि स्याम सुनो बर हेतु तुमारे ॥२०९५॥
पारथ की बतीया सुनि यौ बहीया गहि डारि लई रथ ऊपर ॥
चंद सो आनन जाहि लसै अति जोति जगै सु कपोलन दू पर ॥
कै कै क्रिपा अति ही तिह पै न क्रिपा करि स्याम जू ऐसी किसी पर ॥
आपने धामि लिआवत भयो सभ ऐस कथा इह मालुम भू पर ॥२०९६॥
डारि तबै रथ पै जमना कहु स्री ब्रिज नाइक डेरन आयो ॥
ब्याह के बीच सभा हू जुधिसटर गयो न्रिप पाइन सो लपटायो ॥
दुआरका जैसि रची प्रभ जू तुम मो पुर तैसि रचो सु सुनायो ॥
आइस देत भयो प्रभ जू करमाबिस्व सो तिन तैसो बनायो ॥२०९७॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे सिकार खेलबो जमुना को बिवाहत भए ॥
उजैन राजा की दुहिता को ब्याह कथनं ॥
सवैया ॥
पंडु के पुत्रन ते अरु कुंती ते लै के बिदा घनि स्याम सिधायो ॥
भूप उजैन पुरी को जहा कबि स्याम कहै तिह पै चलि आयो ॥
ता दुहिता हू को ब्याहन काज दुरजोधन हू को भी चितु लुभायो ॥
सैन बनाइ भली अपनी तिह ब्याहन कउ इत ते इह धायो ॥२०९८॥
सजि सैन दुरजोधन आयो उते पुर ताही इतै ब्रिज नाइक आए ॥
भूपति अउर बडे बलवंड सु वाह बियाह कउ देखन धाए ॥
स्याम भनै तिह की भगनी तिह आनंद दुंदभि कोटि बजाए ॥
तउ ही लउ स्याम जी ब्याह कै ताह को पारथ लै संगि अउधि सिधाए ॥२०९९॥

चौपई ॥

जब जदुबीर अजुधिआ आयो ॥
सुनि भूपति लैबे कहु धायो ॥
सिंघासन अपने बैठारियो ॥
चित को सोक दूर करि डारियो ॥२१००॥
चरन प्रभू के गहि कर रहियो ॥
तुम दरसन पावत दुख बहियो ॥
अरु न्रिप चित मै प्रेम बढायो ॥
मन अपनो संगि स्याम मिलायो ॥२१०१॥
कान्रह जू बाच न्रिप सो ॥
सवैया ॥
देख कै प्रीति न्रिपोतम की हसि कै तिह सो इम स्याम उचारो ॥
हो तुम राघव के कुल ते जिनि रावन सो रिसि सत्र पछारो ॥
मागवो छत्रन को न कहियो तऊ मागति हो नहि संक बिचारो ॥
अपनी दै दुहिता हम कउ तिह कउ चित चाहत है सु हमारो ॥२१०२॥
न्रिपो बाच कान्रह सो ॥

चौपई ॥

तब यौ भूप स्याम सो भाखी ॥
एक प्रतिग्रया मै कर राखी ॥
जो इन सत ब्रिखभन को नाथै ॥
सो इह को लै जा करि साथै ॥२१०३॥
सवैया ॥
कटि सो कसि स्याम पितंबर को अपुनो पुनि सातऊ बेख बनाए ॥

देखबे भीतर एक ही स्याम लगै किन हू लखि भेद न पाए ॥
पागहि दाबि नचाइ कै भउहन सूर सभो महि सूर कहाए ॥
धंनि ही धंनि कहियो सभ ही जब सात ही बैलन को नथि आए ॥२१०४॥
जब नाथत भयो प्रभ सात ब्रिखभ तब भाखत भे भटवा इह साथे ॥
आवत जो बलवंत इही हित सो पुरए इन सिंगन साथे ॥
कउन बली प्रगटियो जग मै इन सातन के जोऊ नाकहि नाथे ॥
बीर कहै हस कै रनधीर बिना रिपु चीर सु स्री ब्रिजनाथे ॥२१०५॥
साध कहै इक यौ हसि कै सम स्याम की जो जग बीर बियो है ॥
जा मघवाजित जीत लयो सिर रावण काटि कबंध कियो है ॥
गाड़ परी गज पै जब ही तिह नाकहि ते प्रभु राखि लियो है ॥
भीर परे रनधीर भयो जन पीर निहारि अधीर भयो है ॥२१०६॥
जो बिधि बेद के बीच लिखी बिधि ताही सो ब्याह सिआम को कीनो ॥
आनंद कै अति ही चित मै सभ दीन सु बिप्रन साज नवीनो ॥
अउ गजराज बडे अरु बाज घने धन लै ब्रिजनाथ को दीनो ॥
स्याम भने इह भाति सो भूपति लोक बिखै अति ही जसु लीनो ॥२१०७॥
न्रिप बाच सभा सो ॥
सवैया ॥
भूप सिंघासन ऊपरि बैठ कै मधि सभा इह भाति बखानियो ॥
तैसो ई कामु कीयो जदुनंदन जिउ धनु स्री रघुनंदन तानियो ॥
जीति उजैन के भूप की भैन पुरी इह अउध जबै पगु ठानियो ॥
देखत ही सभ ही मन मै ब्रिज नाइक सूर सही करि जानियो ॥२१०८॥
भूप जबै अपने मन मै जदुबीर को बीर सही करि जानियो ॥
स्री ब्रिज नाइक जुध समै अरि अउर न आंखन अग्रज आनियो ॥
मंत्रन हेरि सभै हरि को बरु लाइक है इह भाति बखानियो ॥
अउध के राइ तबै अपुने मन मै कबि स्याम महा सुखु मानियो ॥२१०९॥
करमन मै दिज स्रेसट जु थे जब सो इह भूप सभा हूं मै आए ॥
दै कै असीस न्रिपोतम को कबि स्याम भनै इह बैन सुनाए ॥
जा दुहिता के सुनो तुम हेतु घने दिज देसन देस पठाए ॥
सो तुम राइ अचानक ही बरु लाइक स्री ब्रिज नाइक पाए ॥२११०॥
यौ सुनि कै बतीया तिन की चित के न्रिप बीच हुलास बढै कै ॥
दाज दयो जिह अंत न आवत बाजन द्वार अनेक बजै कै ॥
बिप्रन दीन घनी दछना सुखु पाइ किते जदुबीर चितै कै ॥
सुंदर जो आपनी दुहिता सु दई घनि स्याम के संगि पठै कै ॥२१११॥
जीति सुअंबर मै हरि आउध के भूपति की दुहिता जब आयो ॥
बाग के भीतर सैल करै संग पारथ थे चित मै ठहरायो ॥
पोसत भाग अफीम घने मद पीवन के तिनि काज मंगायो ॥
मंगन लोगन बोलि पठियो बहु आवत भे जन पार न पायो ॥२११२॥
बहु रामजनी तह नाचत है इक झाझर बीन म्रिदंग बजावै ॥
दै इक झूमक आवत है इक भामिन दै हरि झूमक जावै ॥
कान्रह पटंबर देत तिनै मनि लाल घने चित को जु रिझावै ॥
स्याम भनै बहु मोल खरे सुर राजहि को कोऊ हाथि न आवै ॥२११३॥
पावत रामजनी नर कै धन पावत है बहु दान गवइया ॥
एक रिझावत है हरि को कबि स्याम भनै पड़ि छंत सवइया ॥
अउर दिसा के बिखै सु घने मिलि नाचत है करि गान भवइआ ॥
कउन कमी कहो है तिन को जोऊ स्री जदुबीर के धाम अवइया ॥२११४॥
तिन कौ बहु दै संगि पारथ लै हरि भोजन की भूअ मै पग धारियो ॥
पोसत भाग अफीम मंगाइ पीओ मद सोक बिदा करि डारियो ॥
मति हो चारोई कैफन सो सुत इंद्र कै सो इमि स्याम उचारियो ॥
काम कीयो ब्रहमा घटि किउ मदरा को न आठवो सिंधु सवारियो ॥२११५॥

दोहरा ॥

तब पारथ कर जोरि कै हरि सिउ कहियो सुनाइ ॥
जड़ बामन इन रसन को जाने कहा उपाइ ॥२११६॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक क्रिसनावतारे ब्रिखभ नाथि अवध राजे की दुहिता बिवाहत भए ॥

अथ इंद्र भूमासुर के दुख ते आवत भए कथनं ॥

चौपई ॥

द्वारवती जब जदुपति आयो ॥
इंद्र आइ पाइन लपटायो ॥
भूमासुर को दूख सुनायो ॥
प्रभ तिह ते मै अति दुखु पायो ॥२११७॥

दोहरा ॥

सो मो पर अति प्रबल है मो पै सधियो न जाइ ॥
ता को आपन ही प्रभू कीजै नास उपाइ ॥२११८॥
सवैया ॥
तब इंद्र बिदा कै दयो प्रभ जू तिह को सु समोध भलै करि कै ॥
मन मै कहियो चिंत न तू करि रे चलि हों नही हउ तिह ते टरि कै ॥
कुप कै जब ही रथ पै चड़ि हों सभ ससत्रन हाथन मै धरि कै ॥
डरि तू न अरे डरि हउ तुमरे अरि कउ पलि मै सति धा करि कै ॥२११९॥
मघवा सिर निआइ गयो ग्रिह को तिह को चित मै बधि स्याम बसायो ॥
संग लई जदुबी प्रितना नहि पारथ को करि संगि चलायो ॥
एक त्रीया हित लै संगि कउतकि यौ कहि कै कबि स्याम सुनायो ॥
स्याम चले तिह ओर नही तिह ऊपरि अंत दसानिह धायो ॥२१२०॥
गरुड़ पर स्याम जबै चड़ कै तिह सत्रहि की जब ओरि सिधारियो ॥
पाहन कोटि पिखियो प्रिथमै दुतीए बरु लोह को नैन निहारियो ॥
नीर को हेरत भयो त्रितीए अरु आगि को चउथी सु ठाउर बिचारियो ॥
पाचवो पउन पिखिओ खट फासन क्रोध कीयो इह भाति हकारियो ॥२१२१॥
कान्रह जू बाच ॥

दोहरा ॥

अरे दुरग पति दुरग के रहियो कहा छप बीच ॥
रिसि हम सो रन माड तुहि ठाढि पुकारत मीच ॥२१२२॥
सवैया ॥
जउ इह भात कहियो जदुनंदन तउ उह सत्र लखियो कोऊ आयो ॥
अउर सुनियो जिह एक ही चोट सो कोटन कोप चटाक गिरायो ॥
बारि के कोट बिखै मुर दैत हुतो सुनि सोर सोऊ उठि धायो ॥
स्याम के बाहन को तिन कोपि त्रिसूल कै आइ कै घाव चलायो ॥२१२३॥
सो खगराज न चोट गनी तिन दउरि गदा गहि कान्रह को मारी ॥
आवत है सिर सामुहे चोट चितै इम स्री बिजनाथ बिचारी ॥
कोप बढाइ तबै अपुने सु कमोदकी हाथ के बीच संभारी ॥
चोट जु आवत ही अरि की इह एकहि चोटि चटाक निवारी ॥२१२४॥
घाव बिअरथ गयो जब ही तब गाज कै राछस कोप बढायो ॥
देह बढाइ बढाइ कै आनन स्याम जू के बध कारन धायो ॥
नंदग काढि तबै कटि ते ब्रिजनाथ तबै तकि ताहि चलायो ॥
जैसे कुम्रहार कटै घटि को अरि को सिर तैसे ही काट गिरायो ॥२१२५॥

इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे मुर दैत बधह ॥

अथ भूमासुर जुध कथनं ॥

सवैया ॥
मुरि मारि मुरारि जबै असि सिउ तिह प्रान तबै जमलोकि पठाए ॥
बाल कमान क्रिपानन सो कबि स्याम कहै अति जुध मचाए ॥
थो सु कुटंब जितो तिह को सु सुनियो तिह यौ मुर स्यामहि घाए ॥
लै के अनी चतुरंग घनी हरि पै तिह के सुत सात ही धाए ॥२१२६॥
घेरि दसो दिस ते हरि कौ तिह स्याम भनै तकि बान प्रहारे ॥
एक गदा गहि हाथन बीच भिरे मन को फुनि त्रास निवारे ॥
सो सभ आयुध स्याम सहार कै जो अपुने रिसि ससत्र संभारे ॥
सूर न काहूं को छोरत भयो सभ ही पुरजे पुरजे करि डारे ॥२१२७॥
सवैया ॥
सैन निहारि हनी अगनी सुनि सातो ऊ भ्रातर क्रोधि भरे ॥
घनि स्याम जू पै कबि स्याम भनै सभ ससत्रन लै किलकारि परे ॥
चहूं ओर ते घेरत भे हरि को अपने मन मै न रती कु डरे ॥
तब लउ जब लउ जदुबीर सरासन लै नही खंडन खंड करे ॥२१२८॥

दोहरा ॥

तब करि सारिंग स्याम लै अति चिति क्रोध बढाइ ॥
पीटि सत्र भयन सहित जमपुरि दयो पठाइ ॥२१२९॥
सवैया ॥
भूअ बालक तो इह भाति सुनियो मुर बीर सुपुत्र मुरारि खपायो ॥
अउर जितो दल गयो तिन सो सु सोऊ छिन मै जम लोक पठायो ॥
या संगि जूझ की लाइक हउ ही हौं यौ कहि कै चिति क्रोध बढायो ॥
सैन बुलाइ सभै अपुनी जदुबीर सो कारन जुध को धायो ॥२१३०॥
जब भूमि को बारक जुध के काज चड़ियो तब कउच सु सूरन साजे ॥
आयुध अउर संभार सभै अरि घेरि लयो ब्रिज नाइक गाजे ॥
मानहु काल प्रलै दिन को प्रगटियो घन ही इह भाति बिराजे ॥
मानहु अंतक के पुर मै भटवा नहि बाजत है जनु बाजे ॥२१३१॥
अरि सैन जबै घन जिउ उमडिओ पुनि स्री ब्रिजनाथ चितै चिति जानियो ॥
अउर भूमासुर भूम को बारक भूपति है इन कउ पहिचानियो ॥
मानहु अंत समै निधि नीर ही है उमडियो कबि स्याम बखानियो ॥
स्याम जू हेरि तिने अपने चित भीतर नैकु नही डरु मानियो ॥२१३२॥
अरि पुंज गइंदन मै धनु ताहि लसै सभ ही जिह लोक फटा ॥
बक को जिनि कोप बिनास कीआ मुर को छिन मै जिह मुंड कटा ॥
मद मति करी दल आवत यौ जिम जोर कै आवत मेघ घटा ॥
तिन मै धनु स्याम की यौ चमकै जिम अभ्रन भीतर बिजु छटा ॥२१३३॥
बहु चक्र के संग हने भटवा बहुते प्रभ धाइ चपेटन मारे ॥
एक गदा ही सो धाइ हने गिर भूमि परे बहुरे न संभारे ॥
एक कटे करवारिन सो अध बीच ते होए परे भट निआरे ॥
मानो तखानन कानन मै कटि कै करवत्रन सो द्रुम डारे ॥२१३४॥
एक परे भट जूझ धरा इक देखि दसा तिह सामुहे धाए ॥
नैकु न त्रास धरे चित मै कबि स्याम भनै नही त्रास बढाए ॥
दै मुख ढाल लीए करवार निसंक दै स्याम कै ऊपर आए ॥
ते सर एक ही सो प्रभ जू हनि अंतक के पुर बीच पठाए ॥२१३५॥
स्री जदुबीर जबै रिस सो सभ ही भटवा जमलोकि पठाए ॥
अउर जिते भट जीत बचे इन देखि दसा डरि कै सु पराए ॥
जे हरि ऊपरि धाइ गए बधबे कहु ते फिर जीति न आए ॥

ऐसो उघाइ कै सीस ढुराइ कै आपहि भूपति जुध कौ धाए ॥२१३६॥
जुध को आवत भूप जबै ब्रिज नाइक आपने नैन निहारियो ॥
ठाढि रहियो नहि तउन धरा पर आगे ही जुध को आपि सिधारियो ॥
मारत हउ तुम कौ अब ही रहु ठाढ अरे इह भात उचारियो ॥
यौ कहि कै पुनि सारंग को तनि कै सर सत्र ह्रिदै महि मारियो ॥२१३७॥
सारंग तानि जबै अरि को ब्रिज नाइक तीछन बान चलायो ॥
लागत ही गिर भूमि भूमासुर झूमि परियो जमलोकि सिधायो ॥
स्रउन लगियो नहि ता सर को इह भाति चलाकी सौ पार परायो ॥
जोग के साधक जिउ तन तियागि चलियो नभि पाप न भेटन पायो ॥२१३८॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे भूमासुर बधह ॥

अथ उस के पुत्र कै राज देत भे सोला सहंस्र राज सुता बिवाह कथनं ॥

सवैया ॥
ऐसी दसा जब भी इह की तब माइ भूमासुर की सुनि धाई ॥
भूमि कै ऊपर झूमि गिरी सुधि बसत्रन की चित ते बिसराई ॥
पाइ न डारत भी पनीआ सु उतावल सो चलि स्याम पै आई ॥
देखत स्याम को रीझि रही दुख भूलि गयो सु तो कीन बडाई ॥२१३९॥

दोहरा ॥

बहु उसतति जदुपति करी लीनो स्याम रिझाइ ॥
पउत्र आनि पाइन डरियो सो लीनो बखसाइ ॥२१४०॥
सवैया ॥
भूपति ताही को बालक थापि क्रिपानिधि छोरन बंदि सिधायो ॥
सोलह सहंस्र भूपन की दुहिता थी जहा तिह ठउरहि आयो ॥
सुंदर हेरि कै स्याम जू कउ तिन त्रीअन को अति चित लुभायो ॥
या लखि पाइ बिवाह सभो करि स्याम भनै जसु डंक बजायो ॥२१४१॥

चौपई ॥

जे सभ जोरि भूमासुर राखी ॥
कहि लगि गनउ तिनन की साखी ॥
तिनि यौ कहियो इही हउ करि हो ॥
बीस हजार एकठी बरि हो ॥२१४२॥

दोहरा ॥

जुध समै अति क्रोध हुइ जदुपति बधि कै ताहि ॥
सोरह सहस्र सुंदरी आपहि लई बिवाहि ॥२१४३॥
सवैया ॥
जुध समै अति क्रोध हुइ स्याम जू सत्र सभै छिन माहि पछारे ॥
राजु दयो फिरि ता सुत को सुखु देत भयो तिन सोक निवारे ॥
फेरि बरियो त्रीअ सोरह सहंस्र सु ता पुर मै अति कै कै अखारे ॥
बिपन दान दै लै तिन को संगि दुआरवती जदुराइ सिधारे ॥२१४४॥
सोरह सहंस्र कउ सोरह सहंस्र ही धाम दीए सु हुलास बढै कै ॥
देत भयो सभ त्रीअन को सुख रूप अनेकन भाति बनै कै ॥
ऐसे लखियो सभहूं हमरे ग्रिहि स्याम बसै न बसै अनतै कै ॥
सो कब स्याम पुरानन ते सुनि भेदु कहियो सभ संत सुनै कै ॥२१४५॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे भूमासुर बध कै सुत को राजु देइ सोरह सहंस्र राज सुता बिवाहत भए ॥

अथ इंद्र को जीत कै कलप ब्रिछ लिआइबो कथनं ॥

सवैया ॥
यौ सुख दै तिन त्रीअन को फिरि स्याम पुरंदर लोक सिधायो ॥
कंकन कुंडल देत भयो तिह पाइ कै सोक सभै बिसरायो ॥
सुंदर एक पिखियो तह रूख तिही पर स्याम को चित लुभायो ॥
मागति भयो न दयो सुरराज तही हरि सिउ हरि जुधु मचायो ॥२१४६॥
रिसि साजि पुरंदर सैन चड़ियो चलि कै सभ स्याम के सामुहे आए ॥
घोरत मेघ लसै चपला बरखा बरसे रथ साज बनाए ॥
द्वादस सूर सबै उमडै बसु रावन से जिन हू बिचलाए ॥
भेद लहियो नहीं नैकु चले मद मति सु स्याम पै घूमत धाए ॥२१४७॥
आवत ही मिलि कै सभ हू जदुबीर कै ऊपर सिंधर पेले ॥
पंख सुमेर चले करि कै तिन के रिस सो टुक दात के ठेले ॥
सुंड कटे तिन के ब्रिजनाथ क्रिपानिधि सो झटि दै जिम केले ॥
स्रउन भरे रमनीय रमापति फागुन अंति बसंत से खेले ॥२१४८॥
स्री ब्रिज नाइक बैरन सो जब ही रिस माडि कीयो खरका ॥
बहु बीर भए बिनु प्रान तबै जब नाद प्रचंड सुनियो हरि का ॥
जदुबीर फिरावत भयो गहि कै गज सुंडन सो बर कै कर का ॥
उपमा उपजी कबि के मन यौ घिसूआ मनो फेरत है लरका ॥२१४९॥
जीवत सो न दयो ग्रिह जान जोऊ ब्रिजनाथ के सामुहे आयो ॥
जीति सुरेस दिवाकरि द्वादस आनंद कै चिति संख बजायो ॥
रूख चलो तुम ही हमरे ग्रिह लै उन को इह भाति सुनायो ॥
सो तरु लै हरि संग चले सु कबितन भीतर स्याम बनायो ॥२१५०॥
स्री ब्रिजनाथ रुकमन के ग्रिह आवत भे तरु सुंदर लै कै ॥
लाल लगे जिन धामन को ब्रहमा रहै देखत जाहि लुभै कै ॥
तउन समै सोऊ स्याम कथा जदुबीर कही तिन कउ सु सुनै कै ॥
सो कबि स्याम कबितन बीच कही सुनिओ सभ हेतु बढै कै ॥२१५१॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे इंद्र को जीत कर कलप ब्रिछ लिआवत पए ॥
रुकमिनि साथ कान्रह जी हासी करन कथनं ॥
सवैया ॥
स्री ब्रिजनाथ कहिओ त्रीअ सो मुहि भोजन गोपिन धामि करियो ॥
सुनि सुंदरि ता दिन ते हमरो बिचीआ दधि को फुनि नाम परियो ॥
जब संध जरा दलु साज चड़ायो भज गे तब नैकु न धीर धरियो ॥
तिह ते तुमरी मति को अब का कहीऐ हम सउ कहि आनि बरियो ॥२१५२॥
राज समाज नही सुनि सुंदरि न धन काहू ते मागि लयो ए ॥
सूर नही जिन तिआग कै आपनो देस समुंद्र मो बास कयो है ॥
चोर परियो मनि को फुनि नाम सु याही ते क्रुधित भ्रात भयो है ॥
ताही ते मो तजि कै बरु आनहि तेरो कछू अब लउ न गयो है ॥२१५३॥
रुकमिनी बाच सखी सो ॥
सवैया ॥
चिंत करी मन मै हम सो न थी जानत स्याम इती करि है ॥
बरु मो तजि कै तुम आनहि कउ बचना इह भाति के उचरि है ॥
हमरो मरिबो ई बनियो इह ठा जीअ है न आवसि अबै मरि है ॥
मरिबो जु न जात भले सजनी अपुने पति सो हठि कै जरि है ॥२१५४॥
त्रीअ कान्रह सो चिंतत हुइ मन मै मरिबो ई बनियो चित बीच बिचारियो ॥
मो संगि कउ ब्रिजनाथ अबै कबि स्याम कहै कटु बैन उचारियो ॥
क्रोध सो खाइ तवार धरा पर झूमि गिरी नही नैकु संभारियो ॥
यौ उपमा उपजी जीअ मै जनु टूट गयो रुख ब्रयार को मारियो ॥२१५५॥

दोहरा ॥

अंक लीओ भर कान्रह तिह दूर करन को क्रोध ॥
सवाधान करि रुकमिनी जदुपति कीओ प्रबोध ॥२१५६॥

सवैया ॥
तेरे ही धरम ते मै सुनि सुंदरि केसन ते गहि कंस पछारियो ॥
तेरे ही धरम ते संधि जरा हू को सैन सभै छिन माहि संघारियो ॥
तेरे ही धरम जितियो मघवा अरु तेरे ही धरम भूमासुर मारियो ॥
तो सो कीओ उपहास अबै मुहि तै अपने जीअ साच बिचारियो ॥२१५७॥
रुकमिनी बाच ॥
सवैया ॥
यौ पीअ की त्रीअ बात सुनी दुखु की तब बात सभै बिसराई ॥
भूलि परी प्रभु कीजै छिमा मुहि नार निवाइ कै नारि सुनाई ॥
अउर करी उपमा प्रभ की जु कबितन मै बरनी नही जाई ॥
ऊतर देत भई हसि कै हरि मै उपहास की बात न पाई ॥२१५८॥

दोहरा ॥

मान कथा रुकमिनी की स्याम कही चित लाइ ॥
आगे कथा सु होइगी सुनीअहु प्रेम बढाइ ॥२१५९॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
स्री जदुबीर की जेती त्रीआ सभ को दस हू दस पुत्र दीए ॥
अरु एकहि एक दई दुहिता तिन के सु हुलास बढाइ हीए ॥
सभ कान्रह की मूरति स्याम भनै सभ कंधि पटंबर पीत लीए ॥
करुनानिधि कउतुक देखन कउ इह भू पर आइ चरित्र कीए ॥२१६०॥

◄ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे रुकमिनी उपहास बरनन समापतं ॥*

अनरुध जी को ब्याह कथनं ॥
सवैया ॥
तउ ही लउ पौत्र की ब्याह क्रिपानिधि स्याम भनै रुचि मानि बिचारियो ॥
सुंदर थी रुकमी की सुता तिह ब्याहहि को सभ साजि सवारियो ॥
टीका दीयो तिह भाल मै कुंकम अउ मिलि बिप्रन बेद उचारियो ॥
स्री जदुबीर त्रीआ संग लै बलभद्र सु कउतक काज सिधारियो ॥२१६१॥

चौपई ॥

किसन जबै तिह पुर मै गए ॥
अति उपहास ठउर तिह भए ॥
रुकमिनि जब रुकमी दरसायो ॥
भैन भ्रात अति ही सुखु पायो ॥२१६२॥
ब्याह भलो अनरुध को कयो ॥
जदुपति आप सेहरा दयो ॥
जूप मंत्र उत रुकमि बिचारियो ॥
खेल हली हम संग उचारियो ॥२१६३॥
सवैया ॥
संग हली के तबै रुकमी कबि स्याम जूआ हू को खेलु मचायो ॥
भूप घने जिह थे तिन देखत दरब घनो तिह माझि लगायो ॥
दाव परियो मुसली को सभो रुकमी हू को दाव परियो यौ सुनायो ॥
हास कीयो मिलि कै अति ही गरुड़ धुज भ्रात घनो रिसवायो ॥२१६४॥

चौपई ॥

ऐसे घनी बेर डहकायो ॥

जदुपति भ्रात क्रोध अति आयो ॥
एक गदा उठि कर मै धरी ॥
सभ भूपन की पूजा करी ॥२१६५॥
घने चाइ सो भूप संघारे ॥
परे झूम कै भू बिसंभारे ॥
गिरे स्रउन के रस सो राते ॥
खेडि बसंत मनो मदमाते ॥२१६६॥
फिरत भूत सो तिन मै हली ॥
जैसे अंत काल सिव बली ॥
जिउ रिसि डंड लीए जमु आवै ॥
तैसे ही मुसली छबि पावै ॥२१६७॥
रुकमी भयो गदा गहि ठाढो ॥
घनो क्रोध ता कै चिति बाढो ॥
भाजत भयो न सामुहे आयो ॥
आइ हली सो जुधु मचायो ॥२१६८॥
हली गदा तब ता पर मारी ॥
उन हू कोप सो ता पर झारी ॥
स्रउनत छुटियो अरुन दोऊ भए ॥
मानहु क्रोध रूप हुइ गए ॥२१६९॥

दोहरा ॥

दात काढि इक हसत थो सो इह नैन निहारि ॥
रुकमिनि जुधु को छोर कै ता पर चलियो हकारि ॥२१७०॥
सवैया ॥
सभ तोर कै दात दए तिह के बलभद्र गदा संग पै गहि कै ॥
दोऊ मूछ उखार लई तिह की अति स्रउन चलियो तिह ते बहि कै ॥
फिरि अउर हने बलवंत घने कबि स्याम कहै चित मै चहि कै ॥
फिरि आइ भिरियो रुकमी संग यौ तुहि मारत हउ मुख ते कहि कै ॥२१७१॥
धावत भयो रुकमी पै हली कबि स्याम कहै चिति रोस बढै कै ॥
रोम खरे करि कै अपुने पुनि अउर प्रचंड गदा करि लै कै ॥
आवत भयो उत ते सोऊ बीर सु आपस मै रन दुंद मचै कै ॥
हुइ बिसंभार परे दोऊ बीर धरा पर घाइन के संग घै कै ॥२१७२॥

चौपई ॥

पहर दोइ तह जुधु मचायो ॥
एक न दो मै मारन पायो ॥
बिहबल होइ दोऊ धरि परे ॥
जीवत बचे सु मानहो मरे ॥२१७३॥
बिमुछित ह्वै फिर जुध मचायो ॥
कउतुक सभ लोकन दरसायो ॥
क्रोधित हुइ सु या बिधि अरै ॥
केहरि दुइ जनु बन मै लरै ॥२१७४॥
सवैया ॥
जुध बिखे थक गयो रुकमी तब धाइ हली इक घाइ चलायो ॥
तउ उन हू अरि को पुनि घाइ सु आवत मारग मै लखि पायो ॥
तउ ही संभारि गदा अपुनी अरु चित बिखै अति रोस बढायो ॥
स्याम भनै तिह बीर तबै सु गदा को गदा संगि घाइ बचायो ॥२१७५॥
स्याम भनै अरि को जब ही इह आवत घाइ को बीच निवारियो ॥
तउ बलभद्र महा रिसि ठानि सु अउर गदा हू को घाउ प्रहारियो ॥

सो इह के सिर भीतर लाग गयो इन हू नही नैकु संभारियो ॥
झूम कै देह परियो धरनी रुकमी पुनि अंत के धामि सिधारियो ॥२१७६ ॥
भ्रात जिते रुकमी के हुते बध भ्रात निहारि कै क्रोध भरे ॥
बरछी अरु बान कमान क्रिपान गदा गहि या पर आइ परे ॥
किलकार दसो दिस घेरत भे मुसलीधर ते न रती कु डरे ॥
निस को मनो हेरि पतंग दीआ पर नैकु डरे नही टूट परे ॥२१७७ ॥
संग हलायुध के उन हू सु उतै अति क्रोध हुइ जुधु मचायो ॥
भ्रात को जुध भयो त्रीअ भ्रात के संग इहै प्रभ जू सुनि पायो ॥
बैठ बिचार कीयो सभ हूं जु सबै जदुबीर कुटंब बुलायो ॥
अउर कथा दई छोर हली की सहाइ कउ कोपि क्रिपानिधि धायो ॥२१७८ ॥

दोहरा ॥

जम रूपी बलभद्र पिखि हरि आगम सुनि पाइ ॥
बुधवंतन तिह भाईअन कही सु कहउ सुनाइ ॥२१७९ ॥
सवैया ॥
देखि अनी जदुबीर घनी लीए आवत है डरु तोहि न आवै ॥
कउन बली प्रगटियो भूअ मै तुम ही न कहो इन सो समुहावै ॥
जउ जड़ कै हठ ही भिर है तु कहा फिर जीवत धामहि आवै ॥
आज सोऊ बचि है इह अउसर जो भजि कै भट प्रान बचावै ॥२१८० ॥
तउ लग ही जुत कोप क्रिपानिधि आहव की छित भीतर आए ॥
स्रउण भरियो बलिभद्र पिखियो बिनु प्रान परे रुकमी दरसाए ॥
भूपत अउर घने ही पिखे कबि स्याम भनै हरि घाइन आए ॥
भ्रात कउ देख प्रसंन भए बलि नारि को देखत नैन निवाए ॥२१८१ ॥
रथ ते तब आपहि धाइ कै स्याम जू जाइ हली कहु अंकि लीओ ॥
फुनि अउरन जाहि गहियो रुकमी तिह को सु भली बिधि दाह कीओ ॥
उति दउरि रुकमन भइयन बीच गई तिन जाए समोध कीओ ॥
किह काज कहियो इन सो तुम जूझ कीयो जिन सो भट को न बीओ ॥२१८२ ॥

चौपई ॥

तिन यौ स्याम समोध करायो ॥
पौत्र बधू लै डेरन आयो ॥
स्याम कथा ह्वै है मै कैहउ ॥
स्रोतन भली भाति रिझवै हउ ॥२१८३ ॥

◀ *इति स्री बचित नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे पौत्र बिआह रुकमी बध करत भए धिआइ समापतम ॥*

अथ ऊखा को बिआह कथनं ॥

दस सै भुजा को गरबु हरन कथनं ॥

चौपई ॥

जदुपति पौत्र ब्याह घर आयो ॥
अति चिति अपने हरख बढायो ॥
गरब उतै दस सै भुज कीनो ॥
मै बरु महारुद्र ते लीनो ॥२१८४ ॥
सवैया ॥
गाल बजाइ भली बिधि सो अरु ताल सभो संगि हाथन दीनो ॥
जैसे लिखी बिधि बेद बिखै तिह भूप तिही बिधि सो तपु कीनो ॥

जगि करे सभ ही बिधि पूरब कउन बिधान बिना नही हीनो ॥
रुद्र रिझाइ कहियो इह भाति सु हो कुटवार इही बरु लीनो ॥२१८५॥
रुद्र जबै कुटवार कयो तब देसनि देसन धरम चलायो ॥
पाप की बात गई छप कै सभ ही जग मै जसु भूपति छायो ॥
सत्र त्रिसूल कै बसि भए अरि अउर किहूं नहि सीस उठायो ॥
लोगन तउन समै जग मै कबि स्याम भनै अति ही सुख पायो ॥२१८६॥
रुद्र प्रताप भए अरि बसि किहूं अरि आन न सीस उठायो ॥
करि लै कबि स्याम भनै अति ही इह पाइन ऊपर सीस झुकायो ॥
भूप न रंचक बात लई इह पउरख मेरो ई है लखि पायो ॥
पउरख भयो भुजदंडन रुद्र ते जुध ही को बरु मागन धायो ॥२१८७॥
सोरठा ॥
मूरख लहियो न भेदु जुधु चहनि सिव पै चलियो ॥
करि बिरथा सभ खेदि जिव रवि तप बारू तपै ॥२१८८॥
सवैया ॥
सीस निवाइ कै प्रेम बढाइ कै यौ न्रिप रुद्र सो बैन सुनावै ॥
जात हो हउ जिह सत्र पै रुद्र जू कोऊ न आगे ते हाथ उठावै ॥
ता ते अयोधन कउ हमरो कबि स्याम कहै मनूआ ललचावै ॥
चाहत हो तुम ते बरु आज कोऊ हमरे संग जूझ मचावै ॥२१८९॥
रुद्र बाच न्रिप सो ॥

चौपई ॥

यौ सुनि के सिव क्रोध बढायो ॥
यौ कहि कै तिह बचन सुनायो ॥
जबै धुजा तुमरी गिर परि है ॥
तबै सूर कोऊ तुम संग लरि है ॥२१९०॥
सवैया ॥
ह्वै करि क्रोध जबै सिव जू तिह भूपति को तिन बैन सुनायो ॥
भूप लखियो नहि भेद कछू सु लखियो चित चाहत हो सोऊ पायो ॥
बागे के भीतर फूलि गयो भुज दंडन को अति ओज जनायो ॥
यौ दस सै भुज स्याम कहै अति आनंद सो फिरि मंदिर आयो ॥२१९१॥
एक हुती दुहता तिह की तिह सोति निसा सुपनो इकु पायो ॥
मैन सो रूप अनूप सी मूरति सो इह के चलि मंदिर आयो ॥
भोग कीयो तिह सो मिलि कै इनि चित बिखै अति ही सुख पायो ॥
चउक परी नही पीय पिखियो कबि स्याम कहै तिन सोक जनायो ॥२१९२॥
जागति ही बिरलाप कीओ अति ही चिति सोक की बात जनाई ॥
अंगन मै डगरी सी फिरै पति की करि कै मन मै दुचिताई ॥
प्रेत लगियो किधौ प्रीत लगी कि कछू अब या ठगमूरी सी खाई ॥
भाखत भी सखी मो कउ अबै मेरो दै गयो प्रीतम आज दिखाई ॥२१९३॥
एती ही कै बतीया मुख ते गिर भू पै परी सभ सुधि भुलाई ॥
यौ बिसंभार परी धरनी कबि स्याम भनै मनो नागिन खाई ॥
मानहु अंत समो पहुचियो इह दै गयो प्रीतम सोति दिखाई ॥
तउ लगि चित्र रेखा जु हुती सु सखी इह की इह के ढिगि आई ॥२१९४॥

चौपई ॥

सखिन दसा जब याहि सुनाई ॥
चित्र रेख तब सोच जनाई ॥
इह जीए जीय हो नही मरि हो ॥
जानत जतनु एक सोऊ करि हो ॥२१९५॥
जो मै नारद सो सुनि पायो ॥

वहै जतनु मेरे मनि आयो ॥
जतनु आज सोऊ मै करि हो ॥
बानासुर ते नैकु न डरि हो ॥२१९६॥
सखी बाच चित्र रेखा सो ॥

दोहरा ॥

आतुर ह्वै तिह की सखी तिह को कहियो सुनाइ ॥
जो जानत है जतन तू सो अब तुरतु बनाइ ॥२१९७॥
सवैया ॥
यौ सुनि कै तिह की बतीया तब ही इह चउदह लोक बनाए ॥
जीव जनावर देव निसाचर भीत के बीच लिखे चित लाए ॥
अउर सभै रचना जग हू की लिखी कहि लउ कबि स्याम सुनाए ॥
तउ इह आइ समुछत कै बहीआ गहि या सभ ही दरसाए ॥२१९८॥
जउ बहीआ गहि कै इह की उन चित्र सभै इह कउ दरसाए ॥
देखति देखति गी तिह ठा जह द्वारवती ब्रिजनाथ बनाए ॥
संबर को अरि थो जिह ठउर लिखियो इह ता पिखि नैन निवाए ॥
ता सुइ देखि कहियो इह भाति सही मेरे प्रीतम ए सखी पाए ॥२१९९॥

चौपई ॥

कहियो सखी अब ढील न कीजै ॥
प्रीतम मुहि मिलाइ कै दीजै ॥
जब सजनी इह कारज कै हो ॥
जीव दान तब मोकह दै हो ॥२२००॥
सवैया ॥
यौ बतीया सुनि कै भई चील चली उडि द्वारवती महि आई ॥
पौत्र हुतो जिह स्याम जू को छपि स्याम भनै तिह बात सुनाई ॥
एक त्रीया अटकी तुम पै तुहि ल्याइबे के हित हउ हू पठाई ॥
ता ते चलो तह बेग बलाइ लिउ मेटि सभै चित की दुचिताई ॥२२०१॥
बैठ सुनाइ कै स्याम भनै तिह आपनो रूप प्रतछ दिखायो ॥
जो त्रीय मो पर है अटकी तिह जाइ पिखो मनु याहि लुभायो ॥
खैच निखंग कसियो कटि सो धनु लै चलिबे कहु साज बनायो ॥
दूती को संग लए अपने इह ता त्रीअ लिआवन काज सिधायो ॥२२०२॥

दोहरा ॥

संग लयो अनरुध को दूती हरख बढाइ ॥
ऊखा को पुर थो जहा तहा पहूची आइ ॥२२०३॥
सोरठा ॥
त्रीअ पीअ दयो मिलाइ चतुर त्रीअ करि चतुरता ॥
कीयो भोग सुख पाइ ऊखा अरु अनरुध मिल ॥२२०४॥
सवैया ॥
चारि प्रकार को भोग कीओ नर नारि हुलास हीयै मै बढै कै ॥
आसन कोक के बीच जिते कबि भाखत है सु सबै इन कै कै ॥
बात कही अनरुध कछू मुसकाइ त्रीआ संग नैन नचै कै ॥
जिउ हमरी तुम हुइ रही सुंदरि तिउ हम हू तुमरे रहै ह्वै कै ॥२२०५॥
सुंदर थी जु धुजा न्रिप की सु गिरी भूअ पै लखि भूपति पायो ॥
जो बरु दान दयो मुहि रुद्र वहै प्रगटियो चित मै सु जनायो ॥
तउ ही लउ आइ कही इक यौ तुमरी दुहिता ग्रिह मो कोऊ आयो ॥
यौ न्रिप बात चलियो सुनि कै अपने चित मै अति रोस बढायो ॥२२०६॥
आवत ही करि ससत्र संभारत कोप भयो चिति रोस बढायो ॥

कान्रह के पौत्र सो स्याम भनै दुहिता हू के मंदरि जुधु मचायो ॥
हुइ बिसंभार परियो जब सो तब ही इह के करि भीतर आयो ॥
नाद बजाइ दिखाइ सभो बलु लै इह को न्रिप धामि सिधायो ॥२२०७॥
कान्रह के पौत्र को बाध कै भूप फिरियो उत नारद जाइ सुनाई ॥
कान्रह चलो उठि बैठे कहा अपुनी जदुवी सभ सैन बनाई ॥
यौ सुनि स्याम चले बतीया अपुने चित मै अति करोध बढाई ॥
ससत्र संभारि सभै रिस सो जिन को अस तेजु लखियो नहि जाई ॥२२०८॥

दोहरा ॥

बतीआ सुनि मुनि की सकल जदुपति सैन बनाइ ॥
जहि भूपति को पुर हुतो तहि ही पहुचियो आइ ॥२२०९॥
सवैया ॥
आवत स्याम जी को सुनि कै न्रिप मंत्र पुछियो तिन मंत्रन दीनो ॥
एक कही हम जो दुहिता इह दै सु कहियो तुहि मानि न लीनो ॥
माग लयो सिव ते रन को बरु जानत है तू भयो मति हीनो ॥
छोरिहो द्वै करि के कर आजु सु स्री ब्रिजनाथ इहै प्रन कीनो ॥२११०॥
मानो तो बात कहो न्रिप एक जो स्रउनन मै हित कै धरीऐ ॥
दुहिता अनरुध को लै अपुने संगि स्याम के पाइन पै परीऐ ॥
तुमरे न्रिप पाइ परै सुनीऐ नही स्याम के संगि कबै लरीऐ ॥
अरिहो न जो स्याम भनै हरि सो भूअ पै तब राजु सदा करीऐ ॥२२११॥
स्री ब्रिज नाइक जो रिस कै रन मै करि जो धनु सारंग लै है ॥
कउन बली प्रगटियो भूअ पै तुम हू न कहो बलि जो ठहरै है ॥
जो हठ कै भिरिहै तिह सो तिह कउ छिन मै जमलोकि पठै है ॥
अउर भुजा कटि कै तुमरी सब द्वै भुज राखि त्वै प्रान बचै है ॥२२१२॥
मंत्री की बात न मानत भयो न्रिप आपनो ओज अखंड जनायो ॥
ससत्र संभार कै हाथन मै फुनि बीरन मै अति ही गरबायो ॥
सैन प्रचंड हुतो जितनो तिस कउ न्रिप आपने धामि बुलायो ॥
रुद्र मनाइ जनाइ घनो बलु स्याम जू सो लरबै कहु धायो ॥२२१३॥
उत स्याम जू बान चलावत भयो इत ते दस सै भुज बान चलाए ॥
जादव आवत भे उत ते इत ते इन के सभ ही भट धाए ॥
घाइ करै मिल आपस मै तिन यौ उपमा कबि स्याम सुनाए ॥
मानहु फागुन की रुति भीतर खेलन बीर बसंतहि आए ॥२२१४॥
एक भिरे करवारिन सौ भट एक भिरे बरछी करि लै कै ॥
एक कटारिन संग भिरे कबि स्याम भनै अति रोसि बढै कै ॥
बान कमानन कउ इक बीर संभारत भे अति क्रुधत ह्वै कै ॥
कउतुक देखत भयो उत भूप इतै ब्रिज नाइक आनंद कै कै ॥२२१५॥
जा भट आहव मै कबि स्याम कहै भगवान सो जुधु मचायो ॥
ताही को एक ही बान सो स्याम धरा परि कै बिनु प्रान गिरायो ॥
जो धनु बानि संभारि बली कोऊ अउ इह के रिसि ऊपर आयो ॥
सो कबि स्याम भने अपनै ग्रिहि को फिरि जीवत जान न पायो ॥२२१६॥
गोकुल नाथ जू बैरिन सो कबि स्याम भनै जब ही रन माडियो ॥
जेतिक सत्रन सामुहे भे रिसि सो सभि गिध स्रिंगालन बाडियो ॥
पति रथी गजि बाज घने बिनु प्रान कीए कोऊ जीत न छाडियो ॥
देव सराहत भे सभ ही सु भले भगवान अखंडन खाडियो ॥२२१७॥
जीते सभै भय भीत भए तजि आहव को सभ ही भट भागे ॥
ठाढो बनासुर थो जिह ठउर सभै चलि कै तिह पाइन लागे ॥
छूट गयो सभहून ते धीरज त्रासहि के रस मै अनुरागे ॥
भाखत भे न्रिप सो भजीऐ बच है न कोऊ ब्रिजनाथ के आगे ॥२२१८॥
भीर परी जब भूपति पै तब आपने जान कै ईस निहारियो ॥
संत सहाइ को जाइ भिरियो ब्रिज नाइक सो चित बीच बिचारियो ॥

आयुध लै अपने सभ ही हरि ओर सु जुध के काज सिधारियो ॥
आवत ही सु कहो अब हउ जिह भाति दुहू तिह ठा रन पारियो ॥२२१९॥
रुद्र ह्वै रुद्र जबै रन मै कबि स्याम भनै रिसि नाद बजायो ॥
सूर न काहूं ते नैकु टिकियो गयो भाज गए न रती कु द्रिड़ायो ॥
सत्रन के दुहू सत्रन संग लै रोख हली सु सोऊ डर पायो ॥
स्री ब्रिजनाथ सो स्याम भनै तब ही सिव आइ कै जुधु मचायो ॥२२२०॥
जे सभ घाइ चलावत भयो सिव ते सभ ही ब्रिजनाथ बचाए ॥
तउन समै सिव को आपुने सभ स्याम भने तकि घाइ लगाए ॥
जुधु कीयो बहु भाति दुहू जिह को सभ ही सुर देखन आए ॥
अंति खिसाइ रिसाइ क्रिपानिधि एक गदा हूं सो रुद्र गिराए ॥२२२१॥

चौपई ॥

जब रुद्रहि हरि घाइ लगायो ॥
बिसुधो करि करि भूमि गिरायो ॥
संकित भयो न फिरि धनु तानियो ॥
स्री जदुबीर सही प्रभु जानियो ॥२२२२॥
सोरठा ॥
रुद्र कोप दयो त्याग जदुपति को बलु हेर कै ॥
पाइन लागियो आइ रहियो चरन गहि हर दोऊ ॥२२२३॥
सवैया ॥
रुद्र की देखि दसा इह भाति सु आपहि जुधु को भूपति आयो ॥
स्याम भनै दस सै भुज स्याम के ऊपर बानन ओघ चलायो ॥
ओघ जो आवत बानन को सभ ही हरि मारग मै निवरायो ॥
सारंग आपुन हाथ बिखै धरि कै अरि को बहु घाइन घायो ॥२२२४॥
स्री ब्रिज नाइक क्रुधित हुइ अपने कर मै धन सारंग लै कै ॥
जुधु मचावत भयो दस सै भुज सो अति ओज अखंड जनै कै ॥
अउर हने बलवंड घने कबि स्याम भनै अति पउरख कै कै ॥
छोरि दयो तिह भूपति को रन मै तिह की सु भुजा फुन द्वै कै ॥२२२५॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
बाह सहंस्र कहो तुम ही अब लउ जग मै नर काहू की होई ॥
अउर कहो किह भूप इती अपने ग्रिह बीच संपति समोई ॥
एते पै संत सुनो हित कै सिव सो छरीया पुनि राखत होई ॥
ता न्रिप को बरु या बिधि ईस दयो जगदीस कीओ भयो सोई ॥२२२६॥

चौपई ॥

जब तिह माति बात सुनि पाई ॥
न्रिप हारियो जीतियो जदुराई ॥
सभ तजि बसत्र नगन हुइ आई ॥
आइ स्याम को दई दिखाई ॥२२२७॥
तब प्रभु द्रिग नीचे हुइ रहियो ॥
नैक न जूझब चित मो चहियो ॥
भूपति समै भजन को पायो ॥
भाजि गयो नहि जुध मचायो ॥२२२८॥
न्रिप बाच बीरन सो ॥
सवैया ॥
बिपत हुइ बहु घाइन सो न्रिप बीरन मै इह भाति उचारियो ॥
कोऊ न सूर टिकियो मुह अग्रज हउ जिह की रिसि ओरि पधारियो ॥
गाजबो मो सुनि कै अब लउ किनहू कर मै नही ससत्र संभारियो ॥

एते पै मो संगि आइ भिरियो सु सही ब्रिज नाइक बीर निहारियो ॥२२२९॥
स्री जदुबीर ते जो सहस्र भुज भाजि गयो नहि जुधु मचायो ॥
द्वै भुज देखि भई अपुनी अपुने चित मै अति त्रास बढायो ॥
सो जग मै जसु लेति भयो जिनि स्री ब्रिजनाथहि को गुन गायो ॥
तउ ही जथामति संत प्रसाद ते यौ कहि कै कछु स्याम सुनायो ॥२२३०॥
आवत भयो रिस कै सिव जू फिरि आपुने संग सभै गन लै कै ॥
स्री जदुबीर के सामुहे बीर कहै कबि स्याम सु क्रुधित ह्वै कै ॥
बान क्रिपान गदा बरछी गहि आवत भे रिसि नाद बजै कै ॥
सो छिन मै प्रभ जू सभ बीर दए फुनि अंत के धामि पठै कै ॥२२३१॥
एक हने जदुराइ गदा गहि एक बली रिपु संबर घाए ॥
एक भिरे मुसलीधर सो सु ते जीवत धाम हू जान न पाए ॥
जो फिरि आइ भिरे हरि सो चित मै फुनि कोप की ओप बढाए ॥
यौ फिरि छेदत भयो तिन कउ जोऊ जंबुक गीधन हाथि न आए ॥२२३२॥
ऐसे निहारि भयो तहि आहव चित बिखै अति क्रोध बढायो ॥
ठोकि भुजा अपनी दोऊ आप ही हाथ लै आपनै नाद बजायो ॥
जिउ कुप अंधक दैत पै धावत भयो तिम कोप कै स्याम पै धायो ॥
यौ उपजी उपमा लरबे कहु केहरि सो जनु केहरि आयो ॥२२३३॥
जुध मंडियो अति ही तब ही सिव ताप हुतो इक सोऊ संभारियो ॥
स्याम जु भेद सभै लहि कै जुर सीत सु ताही की ओरि पचारियो ॥
देखत ही जुर सीत कउ सो जुर भाजि गयो न रती कु संभारियो ॥
यौ उपमा उपजी जीअ मै बदरा बहियो जात बियार को मारियो ॥२२३४॥
गरब जितो सिव बीच हुतो सभ ही हरि क्रुध कै जुधु मिटायो ॥
जो तिन तीरन ब्रिसट करी तिह ते सर एक ने भेटन पायो ॥
अउर जिते गन संग हुते सभ को हरि घाइ घने संगि घायो ॥
ऐसो निहार कै पउरख स्याम गनपति पाइन सो लपटायो ॥२२३५॥
सिव बाच ॥
सवैया ॥
भूल परियो प्रभ मै घट काम कीयो तुम सो जु पै जुध चहियो ॥
तो कहा भयो जो रिसि आइ भिरियो तु कहा इह ठा मेरो मान रहियो ॥
तुमरे गुन गावत ही सहस फनि अउर चतुरानन हारि रहियो ॥
तुमरे गुण कउन गनै कह लउ जिह बेद सकै नहि भेद कहियो ॥२२३६॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
का भयो जो धरि मूंड जटा सो तपोधन को जग भेख दिखायो ॥
का भयो जु कोऊ लोचन मूंदि भली बिधि सो हरि को गुन गायो ॥
अउर कहा जो पै आरती लै करि धूप जगाइ कै संख बजायो ॥
स्याम कहै तुम ही न कहो बिन प्रेम किहू ब्रिज नाइक पायो ॥२२३७॥
तिउ चतुरानन तिउहू खड़ानन तिउ सहसानन ही गुन गायो ॥
नारद सक्र सदा सिव ब्यास इते गुन स्याम को गाइ सुनायो ॥
चारो ई बेद न भेद लहियो जग खोजत है सभ पार न पायो ॥
स्याम भनै तुम ही न कहो बिन प्रेम कहू ब्रिजनाथ रिझायो ॥२२३८॥
सिव जू बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
पाइ परियो सिव जू हरि के कहियो मो बिनती हरि जू सुनि लीजै ॥
सेवक मागत है बरु एक वहै अब रीझि दइआ निधि दीजै ॥
हेरि हमै कबि स्याम भनै कबहूं करुना रस के संगि भीजै ॥
बाहै कटी सहस्राभुज की तु भलो तिह को अब नासु न कीजै ॥२२३९॥
कान्रह जू बाच सिव जू प्रति ॥
सवैया ॥
सो करिहो अब हउ सुनि रुद्र जू तो संगि बैन उचारत हउ ॥

बाहै कटी तिह भूलि निहारि अब हउ हू सु क्रोध निवारत हउ ॥
प्रहलाद को पौत्र कहावत है सु इहै जीअ माहि बिचारत हउ ॥
ता ते डंड ही दै करि छोरि दयो इह ते नाहि ताहि संघारत हउ ॥२२४०॥
यौ बखसाइ कै स्याम जू सो तिह भूप को स्याम के पाइन डारो ॥
भूल कै भूपति काम करियो अब हे प्रभ जू तुम क्रोध निवारो ॥
पौत्र को ब्याह करो इह की दुहिता संगि अउर कछू मन मै न बिचारो ॥
यौ करि ब्याह संग ऊखह लै अनरुध को स्याम जू धामि सिधारो ॥२२४१॥
जो सुनि है गुन स्याम जू के फुनि अउरन ते अरु आपन गै है ॥
आपन जो पड़ है पड़वाइ है अउर कबितन बीच बनै है ॥
सोवत जागत धावत धाम सु स्री ब्रिज नाइक की सुधि लै है ॥
सोऊ सदा कबि स्याम भनै फुनि या भव भीतर फेरि न ऐ है ॥२२४२॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे बाणासुर को जीति अनरुध ऊखा को ब्याह लिआवत भए ॥

अथ डिग राजा को उधार कथनं ॥

चौपई ॥

एक भूप छत्री डिग नामा ॥
धरियो ताहि किरला को जामा ॥
सभ जादव मिलि खेलन आए ॥
प्यासे भए कूप पिखि धाए ॥२२४३॥
इक किरला तिह माहि निहारियो ॥
काढै या को इहै बिचारियो ॥
काढन लगे न काढियो गयो ॥
अति असचरज सभहिन मनि भयो ॥२२४४॥
जादव बाच कान्रह जू सो ॥

दोहरा ॥

सभ सुचिंत जादव भए गए क्रिसन पै धाइ ॥
कहि किरला इक कूप मै ता को करहु उपाइ ॥२२४५॥

कबितु ॥

सुनत ही बातै सभ जादव की जदुराइ जानिओ सभ भेद कही बात मुसकाइ कै ॥
कहा वह कूप कहा परिओ है किरला ता मै बोलत भयो यौ मुह दीजीऐ दिखाइ कै ॥
आगे आगे सोऊ घन स्याम तिन पाछे पाछै चलत चलत जो निहारियो सोऊ जाइ कै ॥
मिटि गए पाप ता के एको न रहन पाए भयो नर जबै हरि लीनो है उठाइ कै ॥२२४६॥
सवैया ॥
ताही की मोछ भई छिन मै जिन एक घरी घन स्याम जू ध्यायो ॥
अउर तरी गनिका तब ही जिह हाथ लयो सुक स्याम पड़ायो ॥
को न तरियो जग मै नर जाहि नराइन को चिति नामु बसायो ॥
एते पै किउ न तरै किरला जिह को हरि आपन हाथ लगायो ॥२२४७॥
तोटक ॥
जब ही सोऊ स्याम उठाइ लयो ॥
तब मानुख को सोऊ बेख भयो ॥
तब यौ ब्रिजनाथ सु बैन उचारे ॥
तेरो देसु कहा तेरो नाम कहा रे ॥२२४८॥
किरला बाच कान्रह जू सो ॥
सोरठा ॥
डिग मेरो थो नाउ एक देस को भूप हो ॥

सो तुम कथा सुनाउ जा ते हउ किरला भयो ॥२२४९॥

कबितु ॥

नाथ हउ तो निताप्रति सोने को बनाइ साज गऊ सत देतो दिज सुत कउ बुलाइ कै ॥
एक गऊ मिली मेरी पुंन करी गऊअन सो जो हउ पुंन करबे कउ राखत मंगाइ कै ॥
सोऊ पुंन करी डीठ ताही दिज परी कहियो मेरी गऊ ता को धनु दै रहिओ सुनाइ कै ॥
वा न धन लयो मोहि इहै स्राप दयो होहु किरला कूआ को हउ सु भयो ता ते आइ कै ॥२२५०॥

दोहरा ॥

तुमरे कर ते छूअत अब मिटि गए सगरे पाप ॥
सो फल लहियो जु बहुतु दिन मुनि करि पावत जाप ॥२२५१॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे किरला को कूप ते काढ कै उधार करत भए धिआइ संपूरनं ॥*

अथ गोकुल बिखै बलिभद्र जू आए ॥

चौपई ॥

तिह उधारि प्रभ जू ग्रिहि आयो ॥
गोकुल कउ बलिभद्र सिधायो ॥
आइ नंद के पाइन लागियो ॥
सुखु अति भयो सोक सभ भागियो ॥२२५२॥
सवैया ॥
नंद के पाइन लागि हली चलि कै जसुधा हूं के मंदिर आयो ॥
देखत ही तिह को कबि स्याम सु पाइन ऊपरि सीस झुकायो ॥
कंठि लगाइ लयो कहियो सोऊ यौ मन मै कबि स्याम बनायो ॥
स्याम जू लेत कबै हमरी सुधि माइ यौ रोइ कै तात सुनायो ॥२२५३॥

कबितु ॥

गोपी सुनि पायो इह ठउर बलिभद्र आयो स्याम आयो ह्वै है माग सेंधुर भरत है ॥
बेसर बिंदूआ तनि भूखन बनाइ कबि स्याम चारु लोचनन अंजनु धरत है ॥
दामिनी सी दमक दिखाइ निज काइ आइ बूझै मात भ्रात की न संका को करत है ॥
दीजै घन स्याम की बताइ सुधि हाइ हमै स्याम बलिराम हा हा पाइन परत है ॥२२५४॥
कबियो बाच ॥
सोरठा ॥
हली कीयो सनमान सभ गुआरिन को तिह समै ॥
हउ कहि हउ सु बखानि जिउ कथ आगे होइ है ॥२२५५॥
सवैया ॥
एक समै मुसलीधर ताही मै आनंद सो इक खेलु मचायो ॥
याही के पीवन को मदरा हित स्याम जलाधिप दै कै पठायो ॥
पीवत भयो तब सो मुसली मदि मति भयो मन मै सुख पायो ॥
नीर चहियो जमुना कीयो मानु सु ऐच लई हल सिउ कबि गायो ॥२२५६॥
जमुना बाच हली सो ॥
सोरठा ॥
लेहु हली तुम नीरु बिनु दीजै नह दोस दुख ॥
सुनहु बात रनधीर हउ चेरी जदुराइ की ॥२२५७॥
सवैया ॥

दुइ ही सु मास रहे तिह ठा फिरि लैन बिदा चलि नंद पै आए ॥
फेरि गए जसोधा हू के मंदिर ता पग पै इह माथ छुहाए ॥
मागत भयो जब ही सु बिदा तब सोक कीयो दुह नैन बहाए ॥
कीनो बिदा फिरि यौ कहि कै तुम यौ कहीयो हरि किउ नही आए ॥२२५८॥
नंद ते लै जसुधा ते बिदा चड़ि स्यंदन पै बलभद्र सिधायो ॥
लाघत लाघत देस कई नग अउर नदी पुर के निजकायो ॥
आ पहुचियो न्रिप के पुर के जन काहू ते यौ हरि जू सुनि पायो ॥
आप हूं स्यंदन पै चड़ कै अति भ्रात सो हेत कै आगे ही आयो ॥२२५९॥

दोहरा ॥

अंक भ्रात दोऊ मिले अति पायो सुख चैन ॥
मदरा पीवत अति हसति आए अपुने ऐन ॥२२६०॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बलिभद्र गोकुल बिखै जाइ बहुर आवत भए ॥

अथ सिरगाल को दूत भेजबो जु हउ क्रिसन हौ कथनं ॥

दोहरा ॥

दोऊ भ्रात अति सुखु करत निज ग्रिहि पहुचे आइ ॥
पउडरीक की इक कथा सो मै कहत सुनाइ ॥२२६१॥
सवैया ॥
दूत स्रिगाल पठियो हरि को कहि हउ हरि हउ तुहि किउ कहवायो ॥
भेख सोऊ करि दूर सबै कबि स्याम अबै जो तै भेख बनायो ॥
तै रे गुआर है गोकुल नाथ कहावत है डरु तोहि न आयो ॥
कै इह दूत को मान कहियो नही पेखि हउ लीनो सभै दल आयो ॥२२६२॥
सोरठा ॥
क्रिसन न मानी बात जो तिह दूत उचारियो ॥
कही जाइ तिन बात पति आपन चड़ि आइयो ॥२२६३॥
सवैया ॥
कासी के भूपति आदिक भूपन को सु स्रिगालहि सैन बनायो ॥
स्री ब्रिजनाथ इतै अति ही मुसलीधर आदिक सैन बुलायो ॥
जादव अउर सभै संग लै हरि सो हरि जुध मचावन आयो ॥
आइ दुहू दिस ते प्रगटे भट यौ कहि कै कबि स्याम सुनायो ॥२२६४॥
सैन जबै दुहू ओरन की जु दई जब आपुसि बीच दिखाई ॥
मानहु मेघ प्रलै दिन के उमडे दोऊ इउ उपमा जीअ आई ॥
बाहरि ह्वै ब्रिज नाइक सैन ते सैन दुहू इह बात सुनाई ॥
ठाढे रहै दोऊ सैन दोऊ हम माडि है या भूअ बीच लराई ॥२२६५॥
या घनि स्याम कहायो सुनो सभ मैहो ते तै घनि स्याम कहायो ॥
या ते सैन स्रिगाल लै आयो है हउ हू तबै दलु लै संगि धायो ॥
काहे कउ सैन लरै दोऊ आप मै कउतुक देखहु ठाढि सुनायो ॥
स्याम भनै लरबो रन मै हमरो अरु याही ही को बनि आयो ॥२२६६॥

दोहरा ॥

मानि बात ठाढे रहे सैन दोऊ तजि क्रुध ॥
दोऊ हरि आवत भए हरि समान हित जुध ॥२२६७॥
सवैया ॥
आए है मति करी जनु दुइ लरबे कहु सिंघ दोऊ जनु आए ॥
अंतकि अंत समै जनु ईस सपछ मनो गिरि जूझन धाए ॥
कै दोऊ मेघ प्रलै दिन के निधि नीर दोऊ किधो क्रोध बढाए ॥

मानहु रुद्र ही क्रोध भरे दोऊ है मन मै लखि यौ कबि पाए ॥२२६८॥

कबितु ॥

जैसे झूठ साच सो पखान जैसे काच सो अउ पारा जैसे आंच सो पतऊआ जिउ लहिर सो ॥
जैसे गिआन मोह सो बिबेक जैसे द्रोह सो तपसी दिज ध्रोहि सो अनर जैसे नर सो ॥
लाज जैसे काम सो सु सीत जैसे घामु सो अउ पाप राम नाम सो अछ्रर जैसे छ्रर सो ॥
सूमता जिउ दान सो जिउ क्रोध सनमान सो सु स्याम कबि ऐसे आइ भिरयो हरि हरि सो ॥२२६९॥
सवैया ॥
जुधु भयो अति ही सु तहा तब स्री ब्रिज नाइक चक्र संभारियो ॥
मारत हउ तुहि ए रे स्रिगाल मै स्याम भनै इम स्याम पचारियो ॥
छोरि सुदरसन देत भयो सिरु सत्रु को मारि जुदा कर डारियो ॥
मानहु कुम्रहार लै तागहि को चक ते फुनि बासन काटि उतारियो ॥२२७०॥
देखि स्रिगाल हनियो रन मै इक कासी को भूप हुतो सोऊ धायो ॥
स्री ब्रिजनाथ सो स्याम भनै अति ही तिह आइ कै जुध मचायो ॥
मारि मची अति जो तिह ठा सु तबै तिह स्याम जू चक्र चलायो ॥
जिउ अरि आगलि को कटियो सीसु तिही बिधि याही को काटि गिरायो ॥२२७१॥
स्री ब्रिज नाइक जू जब ए दोऊ सैन के देखत कोपि संघारे ॥
फूल भई मन सबनन के तब बाज उठी सहनाइ नगारे ॥
अउर जिते अरि बीर हुते सभ आपने आपने धामि सिधारे ॥
फूल परे नभ मंडल ते घन जिउ घनि स्याम पै स्याम उचारे ॥२२७२॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे स्रिगाल कासी के भूप सहत बधह धिआइ संपूरनं ॥*

अथ सुदछन जुधु कथनं ॥

सवैया ॥
सैन भजियो जब सत्रन को तब आपने सैन मै स्याम जू आए ॥
आवत देव हुते जितने तितने हरि पाइन सो लपटाए ॥
दै कै प्रदछ्रन स्याम सभो तिन संख बजाइ कै धूप जगाए ॥
स्याम भनै सभ हू मन मै ब्रिज नाइक बीर सही करि पाए ॥२२७३॥
उत कै उपमा ग्रिहि दछ्र गए इति द्वारवती ब्रिज नाइक आयो ॥
जाइ उतै सिरु भूप को कासी के बीच परियो पुरि सोक जनायो ॥
भाखत भे सभ यौ बतीया सोई यौ कहि कै कबि स्याम सुनायो ॥
स्याम जू सो हमरे जैसे भूपति काज कीयो फलु तैसो ई पायो ॥२२७४॥
जा चतुरानन नारद को सिव को उठ कै जग लोक धिआवै ॥
नार निवाइ भले तिन को फुनि संख बजाइ कै धूप जगावै ॥
डार कै फूल भली बिधि सो कबि स्याम भनै तिह सो सिर नावै ॥
ते ब्रिजनाथ के साधन को गुन गावत गावत पार न पावै ॥२२७५॥
कासी के भूप को पूत सुदछ्रन ता मन मै अति क्रोध बढायो ॥
मेरे पिता को कीयो बधु जाइ हउ ताहि हनो चित बीच बसायो ॥
सेव करी सिव की हित सो तिह गाल्रह बजाइ प्रसंन करायो ॥
स्याम हनो झट दै छिन मै तिनि स्याम भनै तट दै बरु पायो ॥२२७६॥
रुद्र बाच दछ्र सो ॥

चौपई ॥

तब सिव जू फिर यौ उचरो ॥
हरि के बध हित होमहि करो ॥
ता ते मूरति एक निकरि है ॥

सो हरि जी के प्रानन हरि है ॥२२७७॥

दोहरा ॥

एक कही तिह जुध समै जो कोऊ बिमुख कराइ ॥
ता पै बलु नहि चलि सकै तुहि मारै फिरि आइ ॥२२७८॥
सवैया ॥
ऐसे सुदछन को जब ही कबि स्याम भनै अस रुद्र बखानियो ॥
सो उनि काज कीयो उठ कै अपुने मन मै अति ही हरिखानियो ॥
होम कीओ तिनि पावक मै घ्रित अछत जउ जैसे बेदन बखानियो ॥
रुद्र के भाखबे को सु कछू कबि स्याम भनै जड़ भेद न जानियो ॥२२७९॥
तउ निकसी तिह ते प्रितमा इह देखत ही सभ कउ डरु आवै ॥
कउन बली प्रगटियो जग मै इह धावत अग्रज को ठहरावै ॥
ठाढी भई करि लै कै गदा अति रोस कै दात सो दात बजावै ॥
ऐसे लखियो सभ हू इह ते ब्रिज नाइक जीवत जान न पावै ॥२२८०॥

चौपई ॥

तब दिस द्वारवती की धाई ॥
अति चिति अपने क्रोध बढाई ॥
स्री ब्रिजनाथ इतै सुनि पायो ॥
एक तेज कोऊ हम पै आयो ॥२२८१॥
जो इह के फुनि अग्रज आवै ॥
सो सभ भसम होत ही जावै ॥
जो इह संगि माडि रन लरै ॥
सो जमलोकि पयानो करै ॥२२८२॥
सवैया ॥
जो उहि के मुख आइ गयो प्रभ सो उन हू छिन माहि जरायो ॥
यौ सुनि बात चड़ियो रथ पै हरि ताही के सामुहे चक्र चलायो ॥
चक्र सुदरसन के तिन अग्र न ताही को पउरख नैकु बसायो ॥
अंत खिसाइ चली फिर कै कबि स्याम कहै सोऊ भूपति आयो ॥२२८३॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
स्री ब्रिज नाइक को जिन हू कबि स्याम भनै नहि ध्यान लगायो ॥
अउर कहा भयो जउ गुन काहू के गावत है गुन स्याम न गायो ॥
अउर कहा भयो जउ जगदीस बिना सु गनेस महेस मनायो ॥
लोक प्रलोक कहै कबि स्याम सदा तिह आपनो जनम गवायो ॥२२८४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटके मूरत सुदछन भूप सुत को बधहि समापतं ॥*

सवैया ॥
सोऊ जीत कै छोरि दयो रन मै न्रिप जो रन ते कबहूं न टरै ॥
दई काटि सहस्र भुजा तिह की जिह ते फुनि चउदह लोक डरै ॥
करि कंचन धाम दए तिह को दिज माग सदा जोऊ पेट भरै ॥
फुनि राख कै लाज लई द्रुपदी ब्रिजनाथ बिना ऐसी कउन करै ॥२२८५॥

अथ कपि बध कथनं ॥

चौपई ॥

रेवत नगर हलधर जू गयो ॥

त्रीय संगि लै हुलास चिति भयो ॥
सभन तहा मिलि मदरा पीयो ॥
गावत भयो उमग कै हीयो ॥२२८६॥
इक कपि हुते तहा सो आयो ॥
मदरा सकल फोरि घट ग्वायो ॥
फाधत भयो रती कु न डरियो ॥
मुसलीधरि अति क्रोधहि भरियो ॥२२८७॥

दोहरा ॥

उठि ठाढो मुसली भयो दोऊ असत्र संभारि ॥
जिउ कपि नाचत फिरत थो छिन मै दयो संघारि ॥२२८८॥

◀ *इति कपि को बलभद्र बध कीबो समापतं ॥*

गजपुर के राजा की दुहिता साब बरी ॥
सवैया ॥
बीर गजपुर के रुचि सो दुहिता को द्रुजोधन ब्याह रचायो ॥
भूप जिते भूअ मंडल के तिन कउतुक हेरबे काज बुलायो ॥
अंध के पूतहि ब्याह रचियो सो सु ताही को दुआरवती सुनि पायो ॥
साब हुतो इक कान्रह को बालक जाबवती हू ते सो चलि आयो ॥२२८९॥
गहि कै बहीया पुनि भूप सुता हू की स्यंदन भीतर डारि सिधारियो ॥
जो भट ताहि सहाइ के काज लरियो सोऊ एक ही बान सो मारियो ॥
धाइ परे छि रथी मिलि कै सु घनो दलु लै जब भूप पचारियो ॥
जुधु भयो तिह ठउर घनो सोऊ यौ मुख ते कबि स्याम उचारियो ॥२२९०॥
पारथ भीखम द्रोण क्रिपारु क्रिपी सुत कोप भरियो मन मै ॥
अरु अउर सु करन चलियो रिस सोअ करोध रु कउच तबै तन मै ॥
छबि पावत भयो कबि स्याम भनै सोऊ यौ इन सूरन के गन मै ॥
जिम सूरज सोभत दिवतन मै इह सो छबि पावत भयो रन मै ॥२२९१॥
जंग भयो जिह ठउर निसंग सु छूटत भे दुहू ओर ते भाले ॥
घाइल लाग भजे भट यौ मनो खाइ चले ग्रिह के सु निवाले ॥
बीर फिरै अति घूमति ही सु मनो अति पी मदरा मतवाले ॥
बासन ते धनु अउर निखंग फिरै रन बीच खतंग पिआले ॥२२९२॥
साब सरासन लै कर मै बहु बीर हने तिह ठउर करारे ॥
एकन के बिब पाग कटे अरु एकन के सिर ही कटि डारे ॥
अउर निहारि भजे भट यौ उपमा तिन की कबि स्याम उचारे ॥
साध की संगति पाइ मनो जन पुंनि के अग्रज पाप पधारे ॥२२९३॥
एकन की दई काट भुजा अरु एकन के कर ही कटि डारे ॥
एक कटै अध बीचहु ते रथ काटि रथी बिरथी करि मारे ॥
सीस कटे भट ठाढे रहे इक स्रोण उठिओ छबि स्याम उचारे ॥
बीरन को मनो बाग बिखै जनु फूटे है सु अनेक फुहारे ॥२२९४॥
स्री जदुबीर के पुत्र जबै बहु बीर हने रन मै चहि कै ॥
इक भाज गए न मुरे बहुरो इक घाइल आइ परे सहिकै ॥
बहु हुइ कै निरायुध ह्वै इह कै हम राखहु पाइ परे कहि कै ॥
इक ठाढे भए घिघियात बली त्रिन को दुहू दातन मै गहि कै ॥२२९५॥
जुधु कीयो सुत कान्रह इतो नहि हुइ है कबै किन हू नहीं कीनो ॥
द्वै घटि आठ रथी बलवंत तिनो हू ते एक बली नही हीनो ॥
सो मिलि कै करि कोप परे सुत कान्रह के ऊपर जान न दीनो ॥
रोस बढाइ मचाइ कै मारि हंकार कै केसन ते गहि लीनो ॥२२९६॥
तोटक ॥

इन बीरन की जब जीत भई दुहिता तब भूप की छीन लई ॥
सोऊ छीन कै मंदिर आनि धरी दुबिधा मन की सभ दूरि करी ॥२२९७॥

चौपई ॥

इतै द्रजोधन हरख जनायो ॥
उत हलधर हरि जू सुनि पायो ॥
सुनि बसुदेव क्रोध अति भरि कै ॥
स्याम भनै मूछहि रहिओ धरि कै ॥२२९८॥
बसुदेव बाच ॥

चौपई ॥

तिह सुधि कउ कोऊ दूत पठइयै ॥
पौत्र सोध कौ बेगि मंगइयै ॥
मुसलीधर तिह ठउर पठायो ॥
चलि हलधर तिह पुर मै आयो ॥२२९९॥
सवैया ॥
आइस पाइ पिता को जबै चलि कै बलिभद्र गजापुर आयो ॥
आइस ऐसे दयो हमरे न्रिप छोरि इनै सुत अंध सुनायो ॥
सो सुनि बात रिसाइ गयो ग्रिह ते अपने इह ओज जनायो ॥
ऐंच लयो पुर त्रास भरियो सोऊ लै दुहिता इह पूजन आयो ॥२३००॥
साब सो ब्याह सुता को कीयो दुरजोधन चिति घनो सुख पायो ॥
दान दयो जिह अंत कछू नहि बिप्रन को कहि स्याम सुनायो ॥
भ्रात के पुत्र को संगि हलायुध लै करि दुआरवती को सिधायो ॥
स्याम चरित्र उतै पिखबे कहु स्याम भनै चलि नारद आयो ॥२३०१॥

◄ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दुजोधन की बेटी साब को ब्याह लिआवत भए धिआइ समापतम ॥*

नारद को आइबो कथनं ॥

दोहरा ॥

नारद रुकमिनि के प्रिथम ग्रिह मै पहुचिओ आइ ॥
जहा कान्रह बैठो हुतो उठि लागो रिखि पाइ ॥२३०२॥
सवैया ॥
दूसरे मंदिर भीतर नारद जात भयो तिहि स्याम निहारियो ॥
अउर गयो ग्रिह स्याम तबै रिखि आनंद ह्वै इह भाति उचारियो ॥
पेखि भयो सभ हू ग्रिह स्याम सु यौ कबि स्यामहि ग्रंथ सुधारियो ॥
कान्रह जू को मन मै मुनि ईस सही करि कै जगदीस बिचारियो ॥२३०३॥
भाति कहू कहू गावत है कहू हाथि लीए प्रभु बीन बजावै ॥
पीवत है सु कहू मदरा अउ कहू लरकान को लाड लडावै ॥
जुधु करै कहू मलन सो कहू नंदग हाथि लीए चमकावै ॥
इउ हरि केल करै तिह ठा जिह कउतुक को कोऊ पार न पावै ॥२३०४॥

दोहरा ॥

यौ रिखि देखि चरित्र हरि चरन रहियो लपटाइ ॥
चलत भयो सभ जगत को कउतक देखो जाइ ॥२३०५॥

अथ जरासंधि बध कथनं ॥

सवैया ॥
ब्रहम महूरत स्याम उठै उठि न्रहाइ ह्रिदै हरि धिआन धरै ॥
फिरि संधयहि कै रवि होत उदै सु जलाजुलि दै अरु मंत्र ररै ॥
फिरि पाठ करै सतसैइ सलोक को स्याम निताप्रति पै न टरै ॥
तब करम न कउन करै जग मै जब आपन स्याम जू करम करै ॥२३०६ ॥
न्रहाइ कै स्याम जू लाइ सुगंध भले पट धार कै बाहर आवै ॥
आइ सिंघासन ऊपर बैठ कै स्याम भली बिधि निआउ करावै ॥
अउ सुखदेव को तात भला सु कथा करि स्री नंद लाल रिझावै ॥
तउ लगि आइ कही बतीआ इक सो मुख ते कबि भाख सुनावै ॥२३०७ ॥
दूत बाच ॥
सवैया ॥
कान्रह जू जो तुम जीत कै भूपति छोरि दयो तिह ओज जनायो ॥
मै दल तेईस छूहन लै संगि तेईस बार सु जुध मचायो ॥
कान्रह को अंति भजाइ रहियो मथरा के बिखै रहने हू न पायो ॥
बेच कै खाई है लाज मनो तिनि यौ जड़ आपन को गरबायो ॥२३०८ ॥

अथ कान्रह जू दिली आवन राजसूइ जग करन कथनं ॥

दोहरा ॥

तब लउ नारद क्रिसन की सभा पहुचिओ आइ ॥
दिली कौ ब्रिजनाथ को लै चलिओ संगि लवाइ ॥२३०९ ॥
सवैया ॥
स्री ब्रिजनाथ कही सभ सौ हम दिली चलै किधौ ताही को मारै ॥
जो मतिवारन के मन भीतर आवत है सोऊ बात बिचारै ॥
ऊधव ऐसे कहियो प्रभ जू प्रिथमै फुनि दिली ही ओर सिधारै ॥
पारथ भीम को लै संग आपने तउ तिह सत्रु कौ जाइ संघारै ॥२३१० ॥
ऊधव जो सुभ सत्रु कउ मारि कहिओ सु सभै हरि मान लीओ ॥
रथपति भले गज बाजन के ब्रिज नाइक सैन भले रचीओ ॥
मिलि टाक अफीमन भाग चड़ाइ सु अउ मदरा सुख मान पीओ ॥
सुधि कैबे कउ नारद भेजि दयो कहियो ऊधव सो मिलि काज कीओ ॥२३११ ॥

चौपई ॥

दिली सजि सभ ही दल आए ॥
कुंती सुत पाइन लपटाए ॥
जदुपति की अति सेवा करी ॥
सभ मन की चिंता परहरी ॥२३१२ ॥
सोरठा ॥
कही जुधिसटर बात इक प्रभु हउ बिनती करत ॥
जउ प्रभु स्रवन सुहात राजसूअ तब मै करो ॥२३१३ ॥

चौपई ॥

तब जदुपति इह भाति सुनायो ॥
मै इह कारज ही कउ आयो ॥
पहले जरासंधि कउ मारै ॥
नाम जग्य को बहुर उचारै ॥२३१४ ॥
सवैया ॥
भीम पठिओ तब पूरब को अरु दछन को सहदेव पठायो ॥
पछमि भेजत भे नुकल कहि बिउत इहै न्रिप जग्य बनायो ॥

पारथ गयो तब उतर कउ न बचियो जिह या संग जुध मचायो ॥
जोरि घनो धनु स्याम भनै सु दिलीपति पै चलि अरजुन आयो ॥२३१५॥
पूरब जीत कै भीम फिरियो अरु उतर जीत कै पारथ आयो ॥
दछन जीति फिरिओ सहदेव घनो चित मै तिनि ओज जनायो ॥
पछम जीति लीयो नुकले न्रिप के तिनि पाइन पै सिरु निआयो ॥
ऐस कहियो सभ जीत लए हम संधि जरा नही जीतन पायो ॥२३१६॥
सोरठा ॥
कही क्रिसन दिज भेख धरि ता सो हम रन चहै ॥
भिरि हम सिउ हुइ एक सुभट सैन सभ छोर कै ॥२३१७॥
सवैया ॥
भेख धरो तुम बिपन को संग पारथ भीम के स्याम कहिओ ॥
हमहू तुमरे संग बिप के भेखहि धारत है नहि जात रहिओ ॥
चित चाहत है चहि है तिह ते फुनि एकले कै करि खग गहिओ ॥
कहिओ फिरि आपन बिप को रूप धरिओ नही काहू ते जात लहिओ ॥२३१८॥
बामन भेख जबै धरि कै न्रिप संधि जरा के गए न्रिप जानी ॥
नैन निहार वडे भुज दंड सु छत्रिन की सभ रीति पछानी ॥
तेईस बार भिरियो हम सो सोऊ है जिह दुआरवती रजधानी ॥
भेद लहियो सभ ही छलि कै इह आयो है गोकुल नाथ गुमानी ॥२३१९॥
स्याम जू आपन ही उठ कै इह भूपति को इह भाति सुनायो ॥
तेईस बेर भजियो हरि सिउ हरि कौ त्वै एक ही बार भजायो ॥
एते पै बीर कहावत है सु इहै हमरे चित पै अब आयो ॥
बामन हुइ तुहि से संग छत्री के चाहत है कर जुधु मचायो ॥२३२०॥
बलि मापि कै देह दई हरि कउ सभ होर रहे न बिचार कीयो ॥
कहियो का तनु है भगवान सो भिछुक मागत देह बीयो न बीयो ॥
सुनि राम जू रावन मार कै राजु भिभीछन देहि तिह ते न लीयो ॥
हम रे अब मागत है न्रिप किउ चुप ठानि रहिओ सुकचात हीयो ॥२३२१॥
देखि दयो ब्रहमा सुत सूरज चित बिखै नही त्रास कीयो है ॥
दास भयो हरि चंद सुनियो सुत काज न लाज की ओरि धयो है ॥
मूंड दयो मधु काटि मुरारि रती कु न संकतमान भयो है ॥
जुधहि चाहत हो तिन ते तुमरो बकहा बल घाट गयो है ॥२३२२॥
पछम सूर चड़ियो सुनीयै उलटी फिरि गंग बही अब आवै ॥
सतु टरिओ हरी चंद हू को धरनी धर तिआग धरा ते परावै ॥
सिंघ चलै म्रिग ते टरि कै गज राज उडियो नभ मारगि जावै ॥
पारथ स्याम कहियो तब भूपति त्रास भरै नहि जुधु मचावै ॥२३२३॥
जरासंधि बाच ॥
सवैया ॥
पारथ सो ब्रिजनाथ जबै कबि स्याम कहै इह भाति बखानो ॥
स्री ब्रिजनाथ इही इह पारथ भीम इहै तिह भूपति जानो ॥
कान्रह भजियो हम ते इह बालक या संग हउ लरिहो सु बखानो ॥
जुधु के कारन ठाढो भयो उठि स्याम कहै कछु त्रास न मानो ॥२३२४॥
भारी गदा हुती धामि घनी इक भीम कौ आप को अउर मंगाई ॥
एक दई करि भीमहि के इक आपने हाथ के बीच सुहाई ॥
राति को सोइ रहै सुख पाइ सु दिवस करै उठि नित लराई ॥
ऐसे कथा दुह बीरन की मन बीच बिचार कै स्याम सुनाई ॥२३२५॥
भीम गदा गहि भूप पै मारत भूप गदा गहि भीम पै मारी ॥
रोस भरे बलवंत दोऊ लरै कानन मै जन केहरि भारी ॥
जुध करै न मुरै तिह ठउर ते बाटत है तिह ठा जनु यारी ॥
यौ उपजी उपमा चतुरे जनु खेलत है फुलथा सो खिलारी ॥२३२६॥
दिवस सताईस जुधु भयो जब भूप जितियो बलु भीमहि हारियो ॥
स्री ब्रिजनाथ दयो तब ही बलु जुध को क्रोध की ओरि पचारियो ॥

लै तिनका इक हाथहि भीतर चीर दयो इह भेद निहारियो ॥
तैसे ही भीम ने चीर दयो न्रिप यौ मुख ते कबि स्याम उचारियो ॥२३२७॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके ग्रंथे क्रिसनावतारे जरासंधि बधह प्रसंग समापतं ॥

सवैया ॥
मार के भूप गए तिह ठा जह बाधे कई पुनि भूप परे ॥
हरि देखत सोक मिटे तिन के इत स्याम जू के द्रिग लाज भरे ॥
बंधन जेतिक थे तिन के सब ही छिन भीतर काटि डरे ॥
दए छोर सबै कबि स्याम भनै करुना रसु सो जब कान्रह ढरे ॥२३२८॥
बंधन काटि सभै तिन के तिन कउ ब्रिज नाइक ऐसे उचारो ॥
आनद चित करो अपुने अपुने चित को सभ सोक निवारो ॥
राज समाज जितो तुम जाइ कै स्याम भनै धनु धाम संभारो ॥
स्री ब्रिजनाथ कही तिह को तुम आपने आपने देस सिधारो ॥२३२९॥
बंधन छोरि कहियो हरि यौ सभ भूपन तउ इह भाति उचारी ॥
राज समाज कछू नही तेरो ही धिआन लहै सु इहै जीअ धारी ॥
राज करो रु इहै लहि हो कबि स्याम कहियो इह भाति मुरारी ॥
सो उन मान कही हरि इउ सु सदा रहीयो सुधि लेत हमारी ॥२३३०॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे जरासंधि को बध करि सभ भूपनि को छुराइ दिली मो आवत भए धिआइ समापतं ॥

अथ राजसू जग सिसुपाल बध कथनं ॥

सवैया ॥
उत सीस निवाइ गए न्रिप धामि इतै जदुराइ दिली महि आयो ॥
भीम कहिओ सभु भेद सु मै बलु याही ते पाइ कै सत्रहि घायो ॥
बिप्र बुलाइ भली बिधि सो फिरि राजसूओ इक जगि मचायो ॥
आरंभ जग को भयो तब ही जसु दुंदभि जो ब्रिजनाथ बजायो ॥२३३१॥
जुधिसटर बाच सभा प्रति ॥
सवैया ॥
जोरि सभा द्विज छत्रिन की प्रिथमै न्रिप यौ कहियो कउन मनइयै ॥
को इह लाइक बीर ईहा जिह भाल मै कुंकम अछत लइयै ॥
बोलि उठियो सहदेव तबै ब्रिज नाइक लाइक याहि चड़इयै ॥
स्री ब्रिजनाथ सही प्रभु है कबि स्याम भनै जिह के बलि जइयै ॥२३३२॥
सहदेव बाच ॥
सवैया ॥
जाही की सेव सदा करीऐ मन अउर न काजन मै उरझइयै ॥
छोरि जंजार सभै ग्रिह के तिह धिआन के भीतर चित लगइयै ॥
जाहि को भेदु पुरानन ते मति साधन बेदन ते कछु पइयै ॥
ताही को स्याम भनै प्रथमै उठ कै किउ न कुंकम भालि लगइयै ॥२३३३॥
यौ जब बैन कहे सहदेव तु भूपति के मन मै सचु आयो ॥
स्री ब्रिज नाइक को मन मै कबि स्याम सही प्रभु कै ठहरायो ॥
कुंकम अछत भाति भली करि बेदन की धुनि भालि चड़ायो ॥
बैठो हुते सिसुपाल तहा अति सो अपने मन बीच रिसायो ॥२३३४॥
सिसुपाल बाच ॥
सवैया ॥
बीर बडो हम सो तजि कै इह का जिह कुंकम भालि चड़ायो ॥
गोकुल गाउ के बीच सदा इनि गुआरन सो मिलि गोरसु खायो ॥
अउर सुनो डरु सत्रन के गयो दुआरवती भजि प्रान बचायो ॥

ऐसे सुनाइ कही बतीया अरु कोपहि सो अति ही भरि आयो ॥२३३५॥
बोलत भयो सिसपालु तबै सु सुनाइ सभा सभ क्रोध बढै कै ॥
कोप भरियो उठि ठाढो भयो सु गरिसटि गदा करि भीतर लै कै ॥
गूजर हुइ जदुराइ कहावत गारी दई दोऊ नैन नचै कै ॥
सो सुनि फूफी के बैन चितारि रहियो ब्रिज नाइक जू चुप ह्वै कै ॥२३३६॥

चौपई ॥

फूफी बचन चिति हरि धरियो ॥
सत गारनि लौ क्रोध न भरियो ॥
सोब ठाढ बर त्रास न कीनो ॥
तब जदुबीर चक्र करि लीनो ॥२३३७॥
कान्रह जू बाच ॥
सवैया ॥
लै करि चक्र भयो उठि ठाढ सु यौ तिह सो रिस बात कही ॥
फुनि फूफी के बैन चितै अब लउ तुहि नास कीयो नही मोन गही ॥
सति गारनि ते बढ एक ही तुहि जानत आपनी म्रित चही ॥
पिख है सभ भूप जिते इह ठा अब हउ ही न ह्वै हउ कि तूही नही ॥२३३८॥
सिसपाल बाच कान्रह सो ॥
सवैया ॥
कोप कै उतर देत भयो इह भाति सुनियो जब ही अभिमानी ॥
तेरे कहे मरि हउ अरे गूजर इउ मुख ते तिन बात बखानी ॥
अउर कहा जु पै ऐसी सभा हू मै जूझब म्रित ही है निजकानी ॥
तउ अरे बेद पुरानन मै चलिहै जग मै जुग चारि कहानी ॥२३३९॥
का भयो जो चमकाइ कै चक्रहि ऐसे कहियो तुहि मारि डरोगो ॥
गूजर तो ते हउ छत्री कहाइ कै ऐसी सभा हू के बीच टरोगो ॥
मात सु भ्रात अरु तात की सउह रे तुहि मरि हो नहि आप मरोगो ॥
क्रोध रुकमनि को धर कै हरि तो संग आज निदान करोगो ॥२३४०॥
कोप प्रचंड कीयो तब स्याम जब ए बतीया सिसुपालहि भाखी ॥
कान्रह कहियो जड़ चाहत म्रित कीयो सभ लोगनि सूरज साखी ॥
चक्र सुदरसन लै कर भीतर कूदि सभा सभ ही सोऊ नाखी ॥
धावत भयो कबि स्याम कहै सु भयो तिह के बध को अभिलाखी ॥२३४१॥
धावत भयो ब्रिज नाइक जू इत ते उत ते सोऊ सामुहे आयो ॥
रोस बढाइ घनो चित मै तकि कै तिह सत्र को चक्र चलायो ॥
जाइ लगियो तिह कंठ बिखै कटि देत भयो छुटि भू पर आयो ॥
इउ उपमा उपजी जीअ मै दिव ते रवि को मनो मारि गिरायो ॥२३४२॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे राजसू जग्य करि सिसपाल बधह धिआइ समापतं ॥*

अथ कान्रह जू कोप राजा जुधिसटर छिमापन करत भए ॥

सवैया ॥
काट कै सीस दयो सिसुपाल को कोप भरियो दोऊ नैन नचावै ॥
कउन बली इह बीच सभा हू के है हम सो सोऊ जुधु मचावै ॥
पारथ भीम ते आदिक बीर रहे चुप होइ अति ही डर आवै ॥
सुंदर ऐसे सरूप के ऊपरि स्याम कबीसर पै बलि जावै ॥२३४३॥
जोति जिती अरि भीतर थी सु सबै मुख स्याम के बीच समानी ॥
बोल सकै न रहे चुप हुइ कबि स्याम कहै जु बडे अभिमानी ॥
बाको बली सिसुपाल हनियो तिह की हुती चंद्रवती रजधानी ॥
या सम अउर न कोऊ बीयो जगि स्री जदुबीर सही प्रभु जानी ॥२३४४॥

एक कहै जदुराइ बडो भट जाहि बली सिसुपाल सो घायो ॥
इंद्र ते सूरज ते जम ते हुतो जात न सो जमलोकि पठायो ॥
सो इह एक ही आंख के फोर के भीतर मारि दयो जीअ आयो ॥
चउदह लोकन को करता करि स्री ब्रिजनाथ सही ठहरायो ॥२३४५॥
चउदह लोकन को करता इह साधन संत इहै जीअ जानियो ॥
देव अदेव कीए सभ याही के बेदन ते गुन जानि बखानियो ॥
बीरन बीर बडोई लखियो हरि भूपन भूपन ते खुनसानियो ॥
अउर जिते अरि ठाढे हुते तिन स्याम सही करि काल पछानियो ॥२३४६॥
स्री ब्रिज नाइक ठाढि तहा कर बीच सुदरसन चक्र लीए ॥
बहु रोस ठने अति क्रोध भरियो अरि आन को आनत है न हीए ॥
तिह ठउर सभा हू मै गाजत भयो सभ कालहि को मनो भेख कीए ॥
जिह देखति प्रान तजै अरि वा बहु संत निहार के रूप जीए ॥२३४७॥
न्रिप जुधिसटर बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
आप ही भूप कही उठ कै कर जोरि दोऊ प्रभ क्रोध निवारो ॥
थो सिसुपाल बडो खल सो तुम चक्रहि लै छिन माहि संघारो ॥
यौ कहि पाइ रहियो गहि कै दुहू आपने नैनन ते जलु ढारो ॥
कान्रह जू जो तुम रोस करो तो कहा तुम सो बसु हैब हमारो ॥२३४८॥
दास कहै बिनती कर जोर कै स्याम भनै हरि जू सुनि लीजै ॥
कोप चिते तुमरे मरीऐ सु क्रिपा करि हेरत ही पल जीजै ॥
आनंद कै चिति बैठो सभा महि देखहु जग्य के हेतु पतीजै ॥
हउ प्रभु जान करो बिनती प्रभु जू पुनि कोप छिमापन कीजै ॥२३४९॥

दोहरा ॥

बैठायो जदुराइ को बहु बिनती करि भूप ॥
कंजन से द्रिग जिह बने बनियो सु मैन सरूप ॥२३५०॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे कान्रह जू को कोप राजा जुधिसटर छमापन करत भए धिआइ समापतं ॥*

अथ राजा जुधिसटर राजसूअ जग करत भए ॥

सवैया ॥
सउपी है सेव ही पारथ कउ दिज लोकन की जो पै नीकी करै ॥
अरु पूज करै दोऊ माद्री के पुत्र रिखीन की आनंद चिति धरै ॥
भयो भीम रसोईआ द्रजोधन धाम पै ब्यास ते आदिक बेद ररै ॥
कीयो सूर को बालक कैबे को दान सु जाही ते चउदह लोक डरै ॥२३५१॥
सूरज चंद गनेस महेस सदा उठ कै जिह धिआन धरै ॥
अरु नारद सो सुक सो दिज ब्यास सो स्याम भनै जिह जाप ररै ॥
जिहा मार दयो सिसुपाल बली जिह के बल ते सभ लोकु डरै ॥
अब बिपन के पग धोवत है ब्रिजनाथ बिना ऐसी कउन करै ॥२३५२॥
आहव कै संग सत्रन के तिन ते कबि स्याम भनै धनु लीनो ॥
बिप्रन को जिम बेद के बीच लिखी बिधि ही तिही भातहि दीनो ॥
एकन को सनमान कीयो अर एकन दै सभ साज नवीनो ॥

◀ *भूप जुधिसटर तउन समै सु सभै बिधि जगि संपूरन कीनो ॥2353॥*

न्रहान गयो सरता दयो दान सु दै जल पै पुरखा रिझवाए ॥
जाचक थे तिह ठउर जिते धन दीन घनो तिन कउ सु अघाए ॥
पुत्र लउ पौत्र लउ पै तिन के ग्रिह के अनतै नहि मागन धाए ॥

पूरन जगि कराइ कै यौ सुखु पाइ सभै मिलि डेरन आए ॥२३५४ ॥

दोहरा ॥

जबै आपने ग्रहि बिखै आए भूप प्रबीन ॥
जग्य काज बोले जिते सभै बिदा करि दीन ॥२३५५ ॥
सवैया ॥
कान्रह रहे बहु दिवस तहा सु बधू अपनी सभ ही संग लै कै ॥
कंचन देह दिपै जिन की तिन मैन रहे पिखि लजत ह्वै कै ॥
भूखन अंग सजे अपने सभ आवत भी द्रुपती सिरि निऐ कै ॥
कैसे बिवाहिओ है स्याम तुमै सभ मोह कहो तुमै आनंद कै कै ॥२३५६ ॥

दोहरा ॥

जब तिन कउ यौ द्रोपती पूछियो प्रेम बढाइ ॥
अपनी अपनी तिह ब्रिथा सभ हू कही सुनाइ ॥२३५७ ॥
सवैया ॥
जगि निहारि जुधिसटर को मन भीतर कउरन कोप बसायो ॥
पंडु कै पुत्रन जग कीयो तिह ते इन को जग मै जसु छायो ॥
ऐसो न लोक बिखै हमरो जसु होत भयो कहि स्याम सुनायो ॥
भीखम ते सुत सूरज ते सु नही हम ते ऐसो जग ह्वै आयो ॥२३५८ ॥

◄ इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे राजा जुधिसटर राजसूइ जग संपूरनं ॥

जुधिसटर को सभा बनाइ कथनं ॥
सवैया ॥
मै इक दैत हुतो तिन आइ कै सुंदर एक सभा सु बनाई ॥
लजत होइ रहे अमरावति ऐसी प्रभा इह भूमहि आई ॥
बैठि बिराजत भूप तहा जदुबीर लीए संग चारो ई भाई ॥
स्याम भनै तिह आभहि की उपमा मुख ते बरनी नही जाई ॥२३५९ ॥
नीर ढरे कहू चादर छतन छूटत है कहू ठउर फुहारे ॥
मल भिरै कहू मत करी कहू नाचत बेसयन के सु अखारे ॥
बाज लरै कहू साज सजै भट छाजत है अति डील डिलारे ॥
राजत स्री ब्रिजनाथ तहा जिम तारन मै ससि स्याम उचारे ॥२३६० ॥
जोति लसै कहू बज्रन की कहू लाल लगे छबि मंदिर पावै ॥
नागन को पुर लोक पुरी सुर देखि प्रभा जिह सीस निवावै ॥
रीझि रहे जिह देखि चतुरमुख हेरि प्रभा सिव सो ललचावै ॥
भूमि जहा तहा नीर सो लागत नीर जहा नही चीनबो आवै ॥२३६१ ॥
जुधिसटर बाच द्रजोधन सो ॥
सवैया ॥
ऐसी सभा रचि कै सु जुधिसटर अंध को बालकु बोलि पठायो ॥
सूरज को सुत संग लीए अरु भीखम मान भरियो सोऊ आयो ॥
भूमि जहा हुती ताहि लखियो जल बारि हुतो जह भूमि जनायो ॥
जाइ निसंक परियो जल मै कबि स्याम कहै कछु भेद न पायो ॥२३६२ ॥
जाइ परियो तब ही सर मै तन बसत्र धरे पुनि बूड गयो है ॥
बूडत जो निकसियो सोऊ भूपति चित बिखै अति कोप कयो है ॥
कान्रह जू भार उतारन के हित आंख सो भीमहि भेद दयो है ॥
सो इह भाति सो बोलि उठिओ अरे अंध के अंध ही पुत्र भयो है ॥२३६३ ॥
यौ जब भीम हसियो तिह कउ तु घनो चित भीतर भूप रिसायो ॥
मो कहु पंडु के पुत्र हसै अब ही बध या को करो जीअ आयो ॥
भीखम द्रोण रिसे मन मै जड़ भीम भयो कह स्याम सुनायो ॥

धामि गयो अपुने फिर कै सु सभा इह भीतर फेरि न आयो ॥२३६४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दुरजोधन सभा देखि धामि गए धयाइ समापतं ॥*

अथ दैत बकत्र जुध कथनं ॥

सवैया ॥

उत कोपि दुरजोधन धामि गयो इत दैत हुतो इह कोपु बसायो ॥

कान्रह हतियो सिसुपाल हुतो मेरो मित्र मरिओ न रती सुकचायो ॥

लै सिव ते बर हउ इह को बधु जाइ करो जीअ भीतर आयो ॥

धाइ किदार की ओरि चलिओ कबि स्याम इहै चित मै ठहरायो ॥२३६५॥

बद्री किदार के भीतर जाइ कै सेव करी महारुद्र रिझायो ॥

लै कै बिवान चलिओ उत ते जब ही हरि के बधु को बरु पायो ॥

द्वारवती हू के भीतर आइ कै कान्रह के पुत्र सो जुधु मचायो ॥

सो सुनि स्याम बिदा लै कै भूप ते स्याम भनै तिह ठउर सिधायो ॥२३६६॥

द्वारवती हू के बीच जबै हरि जू गयो तउ सोऊ सत्रु निहारियो ॥

स्याम भनै तब ही तिह कउ लरु रे हम सो ब्रिजनाथ उचारियो ॥

यौ सुनि वा बतीया हरि को कसि कान प्रमान लउ बान प्रहारियो ॥

मानो तची अति पावक ऊपर काहू बुझाइबे को घ्रित डारियो ॥२३६७॥

मारत भयो अरि बान जबै हरि स्यंदन वाही की ओरि धवायो ॥

आवत भयो उत ते अरि सो इत ते एऊ गे मिलि कै रन पायो ॥

स्यंदन हू बलि कै संगि स्यंदन ढाहि दयो कबि यौ जसु गायो ॥

जिउ सहबाज मनो चकवा संग एक धका हू के मारि गिरायो ॥२३६८॥

रथ तोर कै सत्र की नंदग सो कबि स्याम कहै कटि ग्रीव गिराई ॥

अउर जिती तिह के संग सैन हुती सु भले जमलोकि पठाई ॥

रोस भरियो हरि ठाढो रहियो रनि सो उपमा कबि स्याम सुनाई ॥

स्री ब्रिजनाइक चउदहू लोक मै पावत भयो बडी यौ सु बडाई ॥२३६९॥

दोहरा ॥

दंतबक्र तब चित मै अति ही कोप बढाइ ॥

स्री जदुपति जह ठाढो हो तह ही पहुचिओ जाइ ॥२३७०॥

सवैया ॥

स्री ब्रिज नाइक कउ जब ही तिन आइ आयोधन बीच हकारियो ॥

हउ मरिहउ नही यौ कहियो ताहि सु जिउ सिसुपाल बली तुहि मारियो ॥

ऐसे सुनियो जब स्याम जू बैन तबै हरि जू पुनि बान संभारियो ॥

सत्रु को स्याम भनै रथ ते फुनि मूरछ कै करि भू पर डारियो ॥२३७१॥

लै सुधि ह्वै सोऊ लोप गयो फिरि कोप भरियो रन भीतर आयो ॥

कान्रह के बाप को कान्रह ही कउ कटि माया को कै इक मूंड दिखायो ॥

कोप कीयो घनि स्याम तबै अरु नैन दुहून ते नीर बहायो ॥

हाथ पै चक्र सुदरसन लै अरि को सिर काटि कै भूमि गिरायो ॥२३७२॥

◀ *इति स्री दसम सकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दंत बकत्र दैत बधह धिआइ संपूरनं ॥*

अथ बैदूरथ दैत बध कथनं ॥

कबियो बाच ॥

सवैया ॥

जाहि सिवादिक ब्रहम निमिओ सु सदा अपने चित बीच बिचारियो ॥

स्याम भनै तिह कउ तब ही कब ही किरपा निधि रूप दिखारियो ॥
रंग न रूप अउ राग न रेख इहै चहूं बेदन भेद उचारियो ॥
ता धरि मूरति जुध बिखै इह स्याम भनै रन बीच संघारियो ॥२३७३॥

दोहरा ॥

क्रिसन कोप जब सत्र द्वै रन मै दए खपाइ ॥
तीसर जो जीवत बचियो सो तह पहुचियो आइ ॥२३७४॥
दातन सो दोऊ होठ कटि दोऊ नचावत नैन ॥
तब हलधर तिह सो कहे कहित स्याम ए बैन ॥२३७५॥
सवैया ॥
किउ जड़ जुध करै हरि सिउ मधु कीटभ से जिह सत्रु खपाए ॥
रावन से हरिनाखस से हरिनाछ हू से जगि जानि न पाए ॥
कंसहि से अरु संधि जरा संग देसन देसन के न्रिप आए ॥
तै रे कहा अरे सो छिन मै इह स्याम भनै जमलोक पठाए ॥२३७६॥
स्री बिजनाथ तबै तिह सो कबि स्याम कहै इह भाति उचारियो ॥
मै बक बीर अघासुर मारि सु केसनि ते गहि कंस पछारियो ॥
तेई छूहन संधि जरा हू की मै सुनि सैन सुधारि बिदारियो ॥
तै हमरे बल अग्रज स्याम कहियो घन स्याम ते कउन बिचारियो ॥२३७७॥
मोहि डरावत है कहि यौ मुहि कंस को बीर बकी बक मारियो ॥
संधि जरा हू की सैन सभै मोहि भाखत हो छिन माहि संघारियो ॥
मो कउ कहै बलु तेरो अरे मेरे पउरख अग्रज कउन बिचारियो ॥
सूरन की इह रीति नही हरि छत्री है तू कि भयो भठिआरियो ॥२३७८॥
आपने कोप की पावक मै बल तेरो सबै सम फूस जरै हो ॥
स्रउन जितो तुह अंगन मै सु सभै सम नीरह की आवटै हो ॥
देगचा आपने पउरख को रन मै जब ही कबि स्याम चड़ै हो ॥
तउ तेरो अंग को मासु सबै तिह भीतर डार कै आछै पकै हो ॥२३७९॥
ऐसे बिबाद कै आहव मै दोऊ क्रोध भरे अति जुधु मचायो ॥
बानन सिउ दिव अउर दिवाकरि धूरि उठी रथ पहीयन छायो ॥
कउतुक देखन कउ ससि सूरज आए हुते तिन मंगल गायो ॥
अंत न स्याम ते जीत सकियो सोऊ अंतहि के फुनि धामि सिधायो ॥२३८०॥
स्री ब्रिजनाथ हनियो अरि को कबि स्याम कहै करि गाढ अयोधन ॥
ह्वै कै कुरूप परियो धरि जुध की तउन समै बयदूरथ को तन ॥
स्रउनत संग भरियो परियो देखि दया उपजी करुनानिधि के मनि ॥
छोरि सरासन टेर कहियो दिन आजु के तै करिहो न कबै रन ॥२३८१॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे बयदूरथ दैत बधह धिआइ समातमं ॥
बलिभद्र जू तीरथ गवन कथनं ॥

चौपई ॥

तीरथ करन बलिभद्र सिधायो ॥
नैमख्वरन भीतर आयो ॥
आइ तहा नावन इन कयो ॥
चित को सोक दूर करि दयो ॥२३८२॥
तोमर ॥
रोम हरख न थो तहा सोऊ आयो तह दउरि ॥
हली मदरा पीत थो कबि स्याम ताही ठाउरि ॥
सोऊ आइ ठाढ भयो तहा जड़ याहि सिर न निवाइ कै ॥
बलिभद्र कुपियो कमान करि लै मारियो तिह धाइ कै ॥२३८३॥

चौपई ॥

सभ रिखि उठि ठाढे तब भए ॥
आनंद बिसर चित के गए ॥
इक रिखि थो तिनि ऐस उचारियो ॥
बुरा कीओ हलधरि दिज मारियो ॥२३८४॥
तब हलधर पुनि ऐस उचरियो ॥
बैठ रहिओ किउ न हम ते डरियो ॥
तब मै क्रोध चित मै कीयो ॥
मारि कमान संग इह दीयो ॥२३८५॥
सवैया ॥
छत्री को पूत थो कोप भरे तिह नास कयो बिनती सुनि लीजै ॥
ठाढ भए उठ कै रिखि सो जड़ बैठि रहिओ कहिओ साच पतीजै ॥
बात वहै करीऐ संग छत्रन जा के कीए जग भीतर जीजै ॥
ताही ते मै बधु ता को कीयो सु अबै मोरी भूल छिमापन कीजै ॥२३८६॥
रिख बाच हली सो ॥

चौपई ॥

मिलि सभ रिखिन हली सो भाखी ॥
कहै स्याम तिह दिज की साखी ॥
इह बालक थापि रोह हरो ॥
बहुरो जाइ तीरथ सभ करो ॥२३८७॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
चारो ई बेद मुखाग्रज होइ है ता सुत को बरु ऐसो दीयो ॥
सोऊ ऐसे पुरान लगियो रटने मनो तात सोऊ तिह फेरि जीयो ॥
चित आनंद कै सभ हू रिखि के मन कउ जिह की सम कउन बीयो ॥
सिर न्याइ तिनै सुख पाइ के तीरथन स्याम सु रामहि पैड लीयो ॥२३८८॥
गंगहि सिंधु जहा मिलियो प्रिथमै बलिभद्र तहा चलि न्रहायो ॥
फेरि त्रिबैनी मै कै इसनान दै दानु बली हरिदुआर सिधायो ॥
न्रहाइ तहा पुनि बद्री किदार गयो अति ही मन मै सुख पायो ॥
अउर गनो कह लउ जग के सभ तीरथ कै तिह ठउरहि आयो ॥२३८९॥

चौपई ॥

फेरि नैमख्वारन महि आयो ॥
आइ रिखिन कउ माथ निवायो ॥
तीरथ कहियो मै सभ ही करे ॥
बिधि पूरब जिउ तुम उचरे ॥२३९०॥
हली बाच रिखिन सो ॥

चौपई ॥

अब आइस जो होइ सु करो ॥
हे रिखि तुमरे पाइन परो ॥
अब आइस जो होइ सु कीजै ॥
हे रिखि बातहि सति पतीजै ॥२३९१॥
रिखि बाच ॥

चौपई ॥

तब मिलि रिखिन इहै जीअ धारो ॥
एक सत्रु है बडो हमारो ॥

बलल नाम हलधर तिह मारो ॥
मानो तिह पै काल पचारो ॥२३९२॥
हली बाच ॥

दोहरा ॥

कहा ठउर तिह सत्रु की कहो रिखिन के राज ॥
मोहि बतावै जाहि कउ ताहि हनो अउ आजु ॥२३९३॥

चौपई ॥

तब इक रिख नै जाइ बतायो ॥
तहा ठउर हो सत्रु बनायो ॥
जब हलधरि सो सत्र निहारियो ॥
हम संगि लरु इह भाति पचारियो ॥२३९४॥
सुनत बचन तब सत्रु रिसायो ॥
हाथ गागनो या परि आयो ॥
हलधरि संगि जुध तिह कीओ ॥
जिह सम ठउर बीर नही बीओ ॥२३९५॥
बहुत जुध तिह ठा दुहूं धारो ॥
दुहूं सूर ते एक न हारो ॥
जउ थकि जाहि बैठ तह रहै ॥
मुछित होहि जुधु फिर चहै ॥२३९६॥
फिरि दोऊ गाजि गाजि रन पारै ॥
आपस बीच गदा बहु मारै ॥
ठाढ रहै थिरु पैग न टरै ॥
मानहु रिसि परबत दोऊ लरै ॥२३९७॥
दोऊ भट अभ्रन जिउ गाजै ॥
बचन सुनत जिन के जम लाजै ॥
अति ही बीर रिसहि मै भरै ॥
दोऊ बीर क्रोध सो लरै ॥२३९८॥
जिन कउतुक देखन सुर आए ॥
भातिन भाति बिवान बनाए ॥
उत रंभादिक निरतहि करै ॥
इत ते बीर भूमि मै लरै ॥२३९९॥
बहुत गदा तन लगे न जानै ॥
मुख ते मारहि मार बखानै ॥
रन की छित ते पैगु न टरै ॥
रीझि रीझि दोऊ भट लरै ॥२४००॥
सवैया ॥
जुधु भयो बहुतो तिह ठा तब मूसल कउ मुसली जू संभारियो ॥
कै बल हाथन दोऊन के कबि स्याम कहै तकि घाहि प्रहारयो ॥
लागत घा इह कै मरि गयो अरि अंतक के फुनि धामि सिधारियो ॥
यौ बलिभद्र हनियो तिह को सभ बिपन को फुनि काज सवारियो ॥२४०१॥
पउरख जो मूसलीधरि को कहिओ न्रिप कउ सुकदेव सुनायो ॥
जाहि कथा दिज के मुख ते सभ स्रउन सुनी तिन हू सुख पायो ॥
जा के कीए ससि सूर निसा दिव ताही की बात सुनो जीअ आयो ॥
ताही की बात सुनाउ दिजोतम बेदन कै जोऊ भेद न पायो ॥२४०२॥
जाहि खडानन से सहसानन खोजि रहे कछु पार न पायो ॥
स्याम भनै जिह कउ चतुरानन बेदन के गुन भीतर गायो ॥
खोज रहे सिव से जिह अंत अनंत कहिओ थकि अंत न पायो ॥

ताही की बात सुनो तुमरे मुख ते सुकदेव इहै ठहरायो ॥२४०३॥
भूपति जउ इह भाति कहियो सुक कउ सुक हू इह भाति सुनाई ॥
दीन दिआल की बात सुनाव हों तुहि कउ तुहि भेदु छपाई ॥
बिप्र सुदामा हुतो बिपता तिह की हउ कहो हरि जैसे मिटाई ॥
सो हउ सुनावत हउ तुहि कउ सुन लै सोऊ स्रउनन दे न्रिप राई ॥२४०४॥

◄ इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे बलिभद्र तीरथ इसनान करि दैत बलल को मारत भए ग्रिह को आवत भए धिआइ समापतं ॥

सुदामा बारता कथनं ॥
सवैया ॥
एकु बधू जुत ब्राहमन थो तिह या जगु बीच बडो दुखु पायो ॥
दुखित ह्वै इक दिवस कहियो तिह मित्र है मो प्रभु जो जग गायो ॥
ता की त्रीया कहियो जाहु तहा सुनि मानत भयो तिह मूंड मुडायो ॥
तंदुल लै दिज दारदी हाथि सु दुआरवती हू की ओरि सिधायो ॥२४०५॥
दिजु बाच ॥
सवैया ॥
हउ अरु स्याम संदीपन के ग्रहि बीच पड़े हित है अति ही करि ॥
हउ चित मै धरि स्याम रहिओ रहै ह्वै है सु स्यामहि मो चित मै धरि ॥
दै धन पाइ घनो घरि मै कछु दीनन देत न नैकु क्रिपा करि ॥
ईस लहै किधो मोहि निहार कै कैसी क्रिपा करि है हम पै हरि ॥२४०६॥
मारग नाख कै बिप्र जबै ग्रिहि स्री जदुबीर के भीतर आयो ॥
स्री ब्रिजनाथ निहारत ताहि सु बिप्र सुदामा इहै ठहरायो ॥
आसन ते उठि आतुर हुइ अति प्रीति बढाइ कै लैबे कउ धायो ॥
पाइ परिओ तिह को हरि जी फिरि स्याम भनै उठि कंठि लगायो ॥२४०७॥
लै तिह मंदिर माहि गयो तिह को अति ही करि आदरु कीनो ॥
बारि मंगाइ तही दिज को दोऊ पाइन ध्वै चरनाम्रित लीनो ॥
झौपरी ते तिह ठा हरि जू सुभ कंचन को पुनि मंदरि कीनो ॥
तउ न सकिओ सु बिदा करि बिपहि स्याम भनै तिह रंच न दीनो ॥२४०८॥

दोहरा ॥

जब दिज के ग्रिहि पड़त तब मो सो हुतो गरोह ॥
अब लालच बसि हरि भए कछू न दीनो मोह ॥२४०९॥
कबियो बाच ॥
सवैया ॥
जो ब्रिजनाथ की सेवा करै पुनि पावत है बहुतो धन सोऊ ॥
लोग कहा तिह भेदहि पावत आपनी जानत है पुनि ओऊ ॥
साधन के बरता हरता दुख बैरन के सु बड़े घर खोऊ ॥
दीनन के जग पालबे काज गरीब निवाज न दूसर कोऊ ॥२४१०॥
सो सिसुपाल हनियो छिन मै जिह सो कोऊ अउर न मान धरै ॥
अरु दंत बकत्र हनियो जम लोक ते जो कबहूं न रती कु डरै ॥
रिस सो भूमासुर जीति लयो जोऊ इंद्र से बीर न संग अरै ॥
अब कंचन धाम कीयो दिज को ब्रिजनाथ बिना ऐसी कउन करै ॥२४११॥
जा मधु कीटभ को बध कै भू इंद्र दई करि कै करुनाई ॥
अउर जिती इह सामुहे सत्रन सैन गई सभ याहि खपाई ॥
जाहि बिभीछन राज दयो अरु रावन मार कै लंक लुटाई ॥
कंचन को तिह धाम दयो कबि स्याम कहै कहै कउन बडाई ॥२४१२॥
बिसनपद धनासरी ॥
जिह म्रिग राखै नैन बनाइ ॥
अंजन रेख स्याम पर अटकत सुंदर फाध चड़ाइ ॥

म्रिग मन हेरि जिने नर नारिन रहत सदा उरझाइ ॥
तिन के ऊपरि अपनी रुचि सिउ रीझि स्याम बलि जाइ ॥२४१३॥
हरि के नैना जलज ठए ॥
दिपत जोति दिन मनि दुति मुख ते कबहूं न मुंदित भए ॥
तिन कउ देखि जनन द्रिग पुतरी लगी सु भाव भए ॥
जनु पराग कमलन की ऊपर भ्रमर कोटि भ्रमए ॥२४१४॥
इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दिज सुदामा को दारिद दूर करत कंचन धाम कर देत भए ॥

अथ कान्रह जू सूरज ग्रहिण के दिन कुरखेत्र गवनि कथनं ॥

सवैया ॥
जउ रवि के ग्रसबे हू को दिवस लगिओ कहि जोतिकी यौ तु सुनायो ॥
कान्रह की मात बिमात अरु भ्रात चलै कुरुखेत्रि इहै ठहरायो ॥
तात चलियो ब्रिजनाथ को लै संगि भातिन भाति को सैन बनायो ॥
जो कोऊ अंतु चहै तिह को तिन को कछू आवत अंतु न पायो ॥२४१५॥
इत ते ब्रिज नाइक आवत भे उत नंद ते आदि सभै तह आए ॥
चंद्रभगा ब्रिखभान सुता सभ गुआरिनि स्याम जबै दरसाए ॥
रूप निहारि रही चकि कै जकि गी कछु बैन कहिओ नही जाए ॥
नंद जसोमत मोह बढाइ कै कान्रह जू के उर मै लपटाए ॥२४१६॥
नंद जसोमति प्रेम बढाइ कै नैनन ते दुहू नीर बहायो ॥
ऐसे कहिओ ब्रिज कउ तुम तिआगि गए मथुरा जीअ ऐसो ही भायो ॥
का भयो जो तुम मारि चंडूर प्रहारि कै संगहि कंसहि घायो ॥
हउ निरमोह निहार दसा हमरी तुमरे मन मोह न आयो ॥२४१७॥
जसोधा बाच कान्रह जू सो ॥
सवैया ॥
प्रीति बढाइ जसोमति यौ ब्रिजभूखन सो इक बैन उचारो ॥
पाल कीए जब पूत बडे तुम देखियो तबै हम हेत तुहारो ॥
तो कह दोस लगाउ हउ किउ हरि है सभ फुनि दोस हमारो ॥
ऊखल सो तुहि बाध कै मारियो है जानत हो सोऊ बैर चितारो ॥२४१८॥
माइ ह्वै बात कहो तुम सौ सु तो मो बतीआ सुनि साच पतीजै ॥
अउरन की सिख लै तब जिउ तैसो काज करो जिनि यौ सुनि लीजै ॥
नैक बिछोह भए तुमरे मरीऐ तुमरे पल हेरत जीजै ॥
बाल बलाइ लिउ हउ बहुरो ब्रिज को ब्रिजभूखन भूखित कीजै ॥२४१९॥

दोहरा ॥

नंद जसोदहि क्रिसन मिलि अति चित मै सुख पाइ ॥
सभै गोपिका जहि हुती तह ही पहुचे जाइ ॥२४२०॥
सवैया ॥
स्री ब्रिजनाथह को जब ही लखि कै तिह ग्वारनि आगम पायो ॥
आगे ही एक चली उठ कै नहि एकन के उरि आनंद मायो ॥
भेख मलीन जे गुआरि हुती तिन भेख नवीन सजे कबि गायो ॥
मानहु म्रितक जाग उठियो तिन के तन मै बहुरो जीअ आयो ॥२४२१॥
ग्वारिनि बाच ॥
सवैया ॥
यौ इक भाखत है मुख ते मिलि ग्वारिनि स्री ब्रिजनाथ चितै कै ॥
जिउ अक्रूर के संग गए चड़ि स्यंदन नाथ हुलास बढै कै ॥
दूर हुलास कीयो ब्रिज ते कछु गुआरिनि की करुना नहि कै कै ॥
एक कहै इह भाति सखी मुख जोवत एक रही चुप ह्वै कै ॥२४२२॥
स्री ब्रिजनाथ गयो मथुरा कछु चित बिखै सखी हेत न धारियो ॥
नैक न मोह कीयो चित मै निरमोह ही आपन चित बिचारियो ॥

यौ ब्रिज नाइक ग्वारि तजी जसु ता छबि को कबि स्याम उचारियो ॥
आपुनी चउपहि ते अपुनी मानो कुंजहि तिआग भुजंग सिधारियो ॥२४२३॥
चंद्रभगा ब्रिखभानु सुता ब्रिज नाइक कउ इह भाति सुनाई ॥
स्री ब्रिजनाथ गए मथुरा तजि कै ब्रिज प्रीति सभै बिसराई ॥
राधिका जा बिधि मान कीयो हरि तैसे ही मान कीयो जीअ आई ॥
ता दिन के बिछुरे बिछुरे सु दई हम कउ अब आनि दिखाई ॥२४२४॥
एक मिली कहि यौ बतीया जु हुती ब्रिजभूखन कउ अति पिआरी ॥
चंद्रभगा ब्रिखभानु सुता जु धरे तन बीच कुसुंभन सारी ॥
केल कथा दई छोरि रही चकि चित्रह की पुतरी सी सवारी ॥
स्याम भनै ब्रिजनाथ तबै सब ग्वारिन गिआन ही मै करि डारी ॥२४२५॥
बिसनपद धनासरी ॥
सुनि पाई ब्रिजबाला मोहन आए है कुरुखेति ॥
दरसन देखि सभै दुख बिसरे बेद कहत जिह नेति ॥
तन मन अटकिओ चरन कवल सो धन निवछावरि देत ॥
क्रिसन इकाति कीयो तिह ही छिन कहियो गिआन सिखि लेहु ॥
मिल बिछुरन दोऊ इह जग मै मिथिआ तनु असनेहु ॥२४२६॥
सवैया ॥
ब्रिज नाइक ठाढि भए उठ कै सभ गुआरनि कउ ऐसे गिआन द्रिड़ाए ॥
नंद जसोमति पंडु के पुत्रन संगि मिले अति हेतु बढाए ॥
कैरव आए हुते जितने सभ आपने आपने धामि सिधाए ॥
स्याम भनै बहुरो ब्रिजनाइक दुआरवती हू के भीतर आए ॥२४२७॥

दोहरा ॥

जगि तहा कर कै चलियो स्याम भनै बसुदेव ॥
जिह को सुत चउदह भवन सभ देवन को भेव ॥२४२८॥

चौपई ॥

चलियो स्याम जू प्रेम बढाई ॥
पूजियो चरन पिता के जाई ॥
तात जबै लखि आवत पाए ॥
त्रिभवन के करता ठहराए ॥२४२९॥
बहु बिधि हरि की उसतति करी ॥
मूरति हरि की चित मै धरी ॥
आपनो प्रभु लखि पूजा कीनी ॥
स्री जदुबीर जान सभ लीनी ॥२४३०॥

◀ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे कुरखेत्र बिखै जगि करकै ग्वारिन कउ गिआन द्रिड़ाइ द्वारवती जात भए धिआइ समापतं ॥*

अथ देवकी के छठही पुत्र बलि लोक ते लिआइ देनि कथनं ॥

सवैया ॥
स्री ब्रिजनाइक पै तब ही कबि स्याम कहै चलि देवकी आई ॥
चउदह लोकन के करता तुम सति इहै मन मै ठहराई ॥
हो मधु कीटभ के करता बध ऐसे करी हरि जानि बडाई ॥
पुत्र जिते हमरै हने कंस सोऊ हम कउ तुम देहु मंगाई ॥२४३१॥
आनि दीए बलि लोक ते बालक माइ के बैन जबै सुनि पाए ॥
देवकी बालक जानि तिनै कबि स्याम कहै उठि कंठि लगाए ॥

जनमन की सुधि भी तिन के हम बामन है इह बैन सुनाए ॥
मात पिता हू के देखत ही तेऊ ब्रहम के लोक की ओरि सिधाए ॥२४३२॥

अथ सुभद्रा को ब्याह कथनं ॥

चौपई ॥

तीरथ करन पारथ तब धायो ॥
दुआरवती जदुपति दरसायो ॥
अउर सुभद्रा रूप निहारियो ॥
चित को सोक दूरि करि डारियो ॥२४३३॥
या को बरो इहै चित आयो ॥
उह को उतै चित ललचायो ॥
जदुपति बात सभै इह जानी ॥
बरिओ चहत अरजुन अभिमानी ॥२४३४॥

दोहरा ॥

पारथ निकटि बुलाइ कै कही क्रिसन समझाइ ॥
तुम सु सुभद्रा को हरो हउ नहि लरि हो आइ ॥२४३५॥

चौपई ॥

तब अरजुन सोई फुनि करिओ ॥
पूजन जात सुभद्रा हरिओ ॥
जादव सभै कोप तब भरे ॥
स्री जदुपति पै आइ पुकरे ॥२४३६॥
सवैया ॥
स्री ब्रिजराज तबै तिन सो कबि स्याम कहै इह भाति सुनाई ॥
बीर बडे तुम हू हो कहावत जाइ मंडो तिह संगि लराई ॥
पारथ सो रन माडन काज चले तुमरी म्रित ही निजकाई ॥
किउ न चलो तुम मै तब तै तजिओ आहव स्याम इहै ठहिराई ॥२४३७॥

चौपई ॥

तब जोधा जदुपति के धाए ॥
पारथ कउ ए बैन सुनाए ॥
सुन रे अरजुन तो ते डरि है ॥
महा पतित तेरो बधि करि है ॥२४३८॥

दोहरा ॥

पंडु पुत्र जानी इहै मारत जादव मोर ॥
जीअ आतुर होइ स्याम कहि चलियो दुआरका ओरि ॥२४३९॥
सवैया ॥
सूक गयो मुख पारथ को मुसलीधरि जीत जबै ग्रिहि आयो ॥
स्री ब्रिजनाथ समोध कीओ अरे पारथ किउ चित मै डर पायो ॥
ब्याह सुभद्रा को कीन तबै जब ही मुसलीधरि कउ समझायो ॥
दाज दयो जिह पार न पइयत लै तिह अरजुन धामि सिधायो ॥२४४०॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे पारथ सुभद्रा कउ हर के ब्याह करि लयावत भए धिआइ समापतं ॥*

अथ मिथलापुर राजे अरु ब्राहमन का प्रसंगु अरु भसमागद दैत को छल के मार रुद्र कौ छडावत भए ॥

दोहरा ॥

मिथल देस को भूप इक अतिहुलास तिह नाम ॥
जदुपति की पूजा करै निसि दिन आठो जाम ॥२४४१॥
मत के दिज इक थो तहा बिनु हरि नाम न लेइ ॥
जो हरि की बातै करै ताही मै चित देइ ॥२४४२॥
सवैया ॥
भूपति जाइ दिजोतम के ग्रिहि हेरहि स्री ब्रिजनाथ बिचारै ॥
अउर कछू नहि बात करै कबि स्याम कहै दोऊ साझ सवारै ॥
बिप्र कहै घनि स्याम ही आइ है स्याम ही आइ है भूप उचारै ॥
स्री ब्रिज नाइक की चरचा संग सास घरी पुनि जामन टारै ॥२४४३॥
भूप दिजोतम की अति ही हरि जू मन मै जब प्रीति बिचारी ॥
मेरे है धिआन के बीच परे इह अउर कथा ग्रिह की जु बिसारी ॥
दारुक कउ कहि स्यंदन पै जु करी प्रभ जी तिह ओरि सवारी ॥
साधन जाइ सनाथ करो अब स्री ब्रिजनाथ इहै जीअ धारी ॥२४४४॥

चौपई ॥

तब जदुपति दुइ रूप बनायो ॥
इक दिज कै इक न्रिप के आयो ॥
दिज न्रिप अति सेवा तिह करी ॥
चित की सभ चिंता परहरी ॥२४४५॥

दोहरा ॥

चार मास हरि जू तहा रहे बहुतु सुख पाइ ॥
बहुरु आपुने ग्रिह गए जस की बंब बजाइ ॥२४४६॥
इक कहि गे दिज भूप कउ ब्रिजपति करि इस नेहु ॥
बेद चारि जिउ मुहि जपै तिउ मुहि जपु सुनि लेहु ॥२४४७॥

◄ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटके ग्रंथे क्रिसनावतारे कान्रह जू राजा तथा दिज को दरसन दे करि ग्रिह को जात भए धिआइ समापतं ॥*

अथ राजा परीछित जी तथा सुकदेव परसपर बाच ॥

सवैया ॥
का बिधि गावत है गुन बेद सुनो तुम ते सुक इउ जीय आई ॥
तिआगि सभै फुनि धाम के लालच स्याम भनै प्रभ की जसताई ॥
इउ गुन गावत बेद सुनो तुम रंग न रूप लखियो कछू जाई ॥
इउ सुक बैन कहै न्रिप सो न्रिप साच रिदे अपुने ठहराई ॥२४४८॥
रंग न रेख अभेख सदा प्रभ अंत न आवत है जु बतइयै ॥
चउदहू लोकन मै जिह को दिनि रैनि सदा जसु केवल गइयै ॥
गिआन बिखै अरु धिआन बिखै इसनान बिखै रस मै चित कइयै ॥
बेद जपै जिह को तिह जाप सदा करीयै न्रिप यौ सुनि लइयै ॥२४४९॥
जाहि की देह सदा गुन गावत स्याम जू के रस के संग भीनी ॥
ताहि पिता हमरे संग बात कही तिह ते हम हू सुनि लीनी ॥
जाप जपै सभ ही हरि को सु जपै नहि है जिह की मति हीनी ॥
ताहि सदा रुचि सो जपीऐ न्रिप को सुकदेव इहै मति दीनी ॥२४५०॥

कसट कीए जो न आवत है करि सीस जटा धरे हाथि न आवै ॥
बिदिआ पड़े न कड़े तप सो अरु जो द्रिग मूंद कोऊ गुन गावै ॥
बीन बजाइ सु न्रित दिखाइ बताइ भले हरि लोक रिझावै ॥
प्रेम बिना कर मो नही आवत ब्रहम हू सो जिह भेद न पावै ॥२४५१॥
खोज रहे रवि से ससि से तिह को तिह को कछु अंत न आयो ॥
रुद्र के पार न पइयत जाहि के बेद सकै नहि भेद बतायो ॥
नारद तूंबर लै करि बीन भले बिधि सो हरि को गुन गायो ॥
स्याम भनै बिनु प्रेम कीए ब्रिज नाइक सो ब्रिज नाइक पायो ॥२४५२॥

दोहरा ॥

जब न्रिप सो सुक यौ कहियो तब न्रिप सुक के साथ ॥
हरि जन दुखी सुखी सु सिव रहै सु कहु मुहि गाथ ॥२४५३॥

चौपई ॥

जब सुक सो या बिध कहियो ॥
दीबो तब सुक उतर चहियो ॥
इहै जुधिसटर कै जीअ आयो ॥
हरि पूछिओ हरि भेद सुनायो ॥२४५४॥
सुको बाच ॥

दोहरा ॥

सुनि भूपति या जगत मै दुखी रहत हरि संत ॥
अंति लहत है मुकति फल पावत है भगवंत ॥२४५५॥
सोरठा ॥
रुद्र भगत जग माहि सुख के दिवस सदा भरै ॥
मरै फिरि आवहि जाहि फलु कछु लहै न मुकति को ॥२४५६॥
सवैया ॥
सुन लै भसमागद दैत हुतो तिह नारद ते जब ही सुनि पायो ॥
रुद्र की सेव करी रुचि सो बहुते दिन रुद्रहि को रिझवायो ॥
आपने मासहि काटि कै आग मै होम करियो न रती कु डरायो ॥
हाथ धरो जिह के सिर पै तिह छार उडै सु इहै बरु पायो ॥२४५७॥
हाथ धरो जिह कै सिर पै तिह छार उडै जब ही बरु पायो ॥
रुद्र ही कउ प्रथमै हति कै जड़ चाहत तिउ तिह त्रीअ छिनायो ॥
रुद्र भजियो तब आए है स्याम जू आइ कै सो छल सो जरवायो ॥
भूप कहो बडो सो तुम ही कि बडो हर है जिह ताहि बचायो ॥२४५८॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे भसमागद दैत बधह धिआइ समापतं ॥*

अथ भ्रिगलता को प्रसंग कथनं ॥

सवैया ॥
बैठे हुते रिखि सात तहा इकठे तिन के जीअ मै अस आयो ॥
रुद्र भलो ब्रहमा किधो बिसनु जू पै प्रिथमै जिह को ठहरायो ॥
तीनो अनंत है अंति कछू नहि है इन को किन हू नही पायो ॥
भेद लहो इन को तिन मै भ्रिग बैठो हुतो सोऊ देखन धायो ॥२४५९॥
रुद्र के धाम गयो कहिओ तुम जीव हनो तिह सूल संभारियो ॥
गयो चतुरानन के चलि कै इह बेद रै इह जान न पारियो ॥
बिसन के लोक गयो सुख सोवत कोप भरियो रिखि लातहि मारियो ॥

कोप कीयो न गहे रिखि पा इह स्रीपति स्री ब्रिजनाथ बिचारियो ॥२४६०॥
बिसनु जू बाच भ्रिगु सो ॥
सवैया ॥
पाइ को घाइ रहिओ सहि कै हस कै दिज सो इह भाति उचारो ॥
बज्र समान ह्रिदै हमरो लगि पाइ दुखिओ ह्वै है तुहि मारो ॥
मागति हउ इक जो तुम देहु जु पै छिम कै अपराध हमारो ॥
जेतक रूप धरो जग हउ तु सदा रहै पाइ को चिहन तुहारो ॥२४६१॥
इउ जब बैन कहे ब्रिज नाइक तउ रिखि चित बिखै सुखु पायो ॥
कै कै प्रनाम घने प्रभ कउ पुनि आपने आस्रम मै फिरि आयो ॥
रुद्र को ब्रहम को बिसनु कथान को भेद सभै इन को समझायो ॥
स्याम को जाप जपै सभ ही हम स्री ब्रिजनाथ सही प्रभ पायो ॥२४६२॥
जाप कीयो सभ ही हरि को जब यो भ्रिगु आइ कै बात सुनाई ॥
है रे अनंत कहिओ करुनानिधि बेद सकै नही जाहि बताई ॥
क्रोधी है रुद्र गरे रुंड माल कउ डारि कै बैठो है डिंभ जनाई ॥
ताहि जपो न जपो हरि को प्रभ स्री ब्रिजनाथ सही ठहराई ॥२४६३॥
जाप जपियो सभ हू हरि को जब यौ भ्रिगु आनि रिखो समझायो ॥
जिउ जग भूत पिसाचन मानत तैसो ई लै इक रुद्र बनायो ॥
को ब्रहमा करि माला लीए जपु ता को करै तिह को नही पायो ॥
स्री ब्रिजनाथ को धिआन धरो सु धरिओ तिन अउर सभै बिसरायो ॥२४६४॥

◄ *इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे भ्रिगुलता प्रसंग बरननं नाम धिआइ समापतम ॥*

अथ पारथ दिज के नमित चिखा साज आप जलन लगा ॥

चौपई ॥

इक दिज हुतो सु हरि घरि आयो ॥
चित बित ते अति सोक जनायो ॥
मेरे सुत सभ ही जम मारे ॥
प्रभ जू या जग जीयत तुहारे ॥२४६५॥
सवैया ॥
देखि ब्रिलाप तबै दिज पारथ तउन समै अति ओज जनायो ॥
राखि हो हउ नहि राखे गए तब लजत ह्वै जरबो जीअ आयो ॥
स्री ब्रिजनाथ तबै तिह पै चलि आवत भयो हठ ते समझायो ॥
ताही कउ लै संगि आपि अरूड़त ह्वै रथ पै तिन ओरि सिधायो ॥२४६६॥
गयो हरि जी चल कै तिह ठा अंधिआर घनो जिह द्रिसटि न आवै ॥
द्वादस सूर चड़ै तिह ठा तु सभै तिन की गति ह्वै तम जावै ॥
पारथ ताही चड़ियो रथ पै डरपाति भयो प्रभ यौ समझावै ॥
चिंत करो न सुदरसनि चक्र दिपै जद ही हरि मारगु पावै ॥२४६७॥

चौपई ॥

जहा सेखसाई थो सोयो ॥
अहि आसन पर सभ दुखु खोयो ॥
जगयो स्याम जब ही दरसायो ॥
अपने मन अति ही सुखु पायो ॥२४६८॥
किह कारन इह ठा हरि आए ॥
हम जानत हम अब सुख पाए ॥
जानत दिज बालक अब लीजै ॥

एक घरी इह ठा सुख दीजै ॥२४६९॥

चौपई ॥

जबि हरि करि दिज बालक आए ॥
तब तिह कउ ए बचन सुनाए ॥
जात जाइ दिज बालक दै हो ॥
बडो सु जसु जग भीतर लै हो ॥२४७०॥
तब हरि नगर दुआरिका आयो ॥
दिज बालक दै अति सुख पायो ॥
जरत अगनि ते संत बचाए ॥
इउ प्रभ जू सभ संतन गाए ॥२४७१॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे दिज को जमलोक ते सात पुत्र लयाइ देत भए धयाइ समापतं ॥*

अथ कान्रह जू जल बिहार त्रीअन संग ॥

सवैया ॥
कंचन की जहि दुआरवती तिह ठा जब ही ब्रिजभूखन आयो ॥
लाल लगे जिह ठा मनो बज्र भले ब्रिज नाइक ब्योत बनायो ॥
ताल के बीच तरै जदु नंदन सोक सबै चित को बिसरायो ॥
लै त्रीया बालक दै दिज कउ जब स्री ब्रिजनाथ बडो जसु पायो ॥२४७२॥
त्रीअन सै जल मै ब्रिज नाइक स्याम भनै रुचि सिउ लपटाए ॥
प्रेम बढियो उन के अति ही प्रभ के लगी अंगि अनंग बढाए ॥
प्रेम सो एक ही हुइ गई सुंदरि रूप निहारि रही उरझाए ॥
पास ही स्याम जू रूप रची त्रीआ हेरि रही हरि हाथि न आए ॥२४७३॥
रूप रची सभ सुंदरि स्याम के स्याम भनै दस हू दिस दउरै ॥
कुंकम बेदु लिलाट दीए सु दीए तिन ऊपर चंदन खउरै ॥
मैन के बसि भई सभ भामिन धाई फिरै फुनि धामन अउरै ॥
ऐसे रटै मुख ते हम कउ तजि हो ब्रिजनाथ गयो किह ठउरै ॥२४७४॥
ढूंढत एक फिरै हरि सुंदरि चित बिखै सभ भरम बढाई ॥
बेख अनूप सजे तन पै तिन बेखन को बरनिओ नही जाई ॥
संक करै न ररै हरि ही हरि लाजहि बेचि मनो तिन खाई ॥
ऐसे कहै तजि गयो किह ठा तिह हो ब्रिज नाइक देहु दिखाई ॥२४७५॥

दोहरा ॥

बहुतु काल मुछित भई खेलत हरि के साथ ॥
मुछित ह्वै तिन यौ लखियो हरि आए अब हाथि ॥२४७६॥
हरि जन हरि संग मिलत है सुनत प्रेम की गाथ ॥
जिउ डारिओ मिलि जात है नीर नीर के साथ ॥२४७७॥

चौपई ॥

जल ते तब हरि बाहरि आए ॥
अंगहि सुंदर बसत्र बनाए ॥
का उपमा तिह की कबि कहै ॥
पेखत मैन रीझ कै रहै ॥२४७८॥
बसत्र त्रीअन हू सुंदर धरे ॥
दान बहुत बिप्रन कउ करे ॥
जिह तिह ठा हरि को गुन गायो ॥

तिह दारिद धन देइ गवायो ॥२४७९॥

अथ प्रेम कथा कथनं ॥

कबियो बाच ॥

चौपई ॥

हरि के संत कबढी सुनाऊ ॥
ता ते प्रभ लोगन रिझवाऊ ॥
जो इह कथा तनक सुनि पावै ॥
ता को दोख दूर होइ जावै ॥२४८०॥
सवैया ॥
जैसे त्रिनाव्रत अउ अघ को सु बकासुर को बध जा मुख फारिओ ॥
खंड कीओ सकटासुर को गहि केसन ते जिह कंस पछारिओ ॥
संधि जरा हू को सैन मथिओ अरु सत्रन को जिह मानहि टारिओ ॥
तिउ ब्रिज नाइक साधन के पुनि चाहत है सभ पापन टारिओ ॥२४८१॥
जो ब्रिज नाइक के रुच सो कबि स्याम भनै फुनि गीतन गै है ॥
चातुरता संग जो हरि को जसु बीच कबितन के सु बनै है ॥
अउरन ते सुनि जो चरचा हरि की हरि को मन भीतर दै है ॥
सो कबि स्याम भनै धरि कै तन या भव भीतर फेरि न ऐ है ॥२४८२॥
जो उपमा ब्रिजनाथ की गाइ है अउर कबितन बीच करैगे ॥
पापन की तेऊ पावक मै कबि स्याम भनै कबहूं न जरैगे ॥
चिंत सभै मिट है जु रही छिन मै तिन के अघ ब्रिंद टरैगे ॥
जे नर स्याम जू के परसे पग ते नर फेरि न देह धरैगे ॥२४८३॥
जो ब्रिज नाइक को रुचि सो कबि स्याम भनै फुनि जापु जपै है ॥
जो तिह के हित कै मन मै बहु मंगन लोगन कउ धन दै है ॥
जो तजि काज सभै घर के तिह पाइन के चित भीतर दै है ॥
भीतर ते अब या जग के अघ ब्रिंदन बीर बिदा करि जै है ॥२४८४॥
प्रेम कीओ न कीओ बहुतो तप कसट सहिओ तन को अति तायो ॥
कासी मै जाइ पड़िओ अति ही बहु बेदन को करि सार न आयो ॥
दान दीए बसि ह्वै गयो स्याम सभै अपनो तिन दरब गवायो ॥
अंत्रि की रुचि कै हरि सिउ जिह हेत कीओ तिन हू हरि पायो ॥२४८५॥
का भयो जो बक लोचन मूंद कै बैठि रहिओ जग भेख दिखाए ॥
मीन फिरिओ जल न्रहात सदा तु कहा तिह के करि मो हरि आए ॥
दादुर जो दिन रैनि रटै सु बिहंग उडै तनि पंख लगाए ॥
स्याम भनै इह संत सभा बिनु प्रेम कहू ब्रिजनाथ रिझाए ॥२४८६॥
लालच जो धन के किनहू जु पै गाइ भलै प्रभ गीत सुनायो ॥
नाच नचिओ न खचिओ तिह मै हरि लोक अलोक को पैड न पायो ॥
हास करिओ जग मै आपुनो सुपने हू न गिआन को ततु जनायो ॥
प्रेम बिना कबि स्याम भनै करि काहू के मै ब्रिज नाइक आयो ॥२४८७॥
हारि चले ग्रिह आपने को बन मो बहुतो तिन धिआन लगाए ॥
सिध समाधि अगाधि कथा मुनि खोज रहे हरि हाथि न आए ॥
स्याम भनै सभ बेद कतेबन संतन के मति यौ ठहराए ॥
भाखत है कबि संत सुनो जिह प्रेम कीए तिह स्रीपति पाए ॥२४८८॥
छत्री को पूत हौ बामन को नहि कै तपु आवत है जु करो ॥
अरु अउर जंजार जितो ग्रिह को तुहि तिआगि कहा चित ता मै धरो ॥
अब रीझि कै देहु वहै हम कउ जोऊ हउ बिनती कर जोरि करो ॥
जब आउ की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझि मरो ॥२४८९॥

दोहरा ॥

सत्रह सै पैतालि महि सावन सुदि थिति दीप ॥
नगर पावटा सुभ करन जमुना बहै समीप ॥२४९०॥
दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाइ ॥
अवर बासना नाहि प्रभ धरम जुध के चाइ ॥२४९१॥
सवैया ॥
धंनि जीओ तिह को जग मै मुख ते हरि चित मै जुधु बिचारै ॥
देह अनित न नित रहै जसु नाव चड़ै भव सागर तारै ॥
धीरज धाम बनाइ इहै तन बुधि सु दीपक जिउ उजीआरै ॥
गिआनहि की बढनी मनहु हाथ लै कातरता कुतवार बुहारै ॥२४९२॥

◀ इति स्री दसम सिकंध पुराणे बचित्र नाटक ग्रंथे क्रिसनावतारे धयाइ इकीसवो समापतम सतु सुभम सतु ॥

चौबीस अवतार ॥

SECTION 12: SHABAD HAZARE PATSHAHI 10

A Collection of Shabads — By Guru Gobind Singh Ji

ੴवाहिगुरू जी की फतहि ॥

अथ नर अवतार कथनं ॥

चौपई ॥

अब बाईस्वो गनि अवतारा ॥
जैस रूप कहु धरो मुरारा ॥
नर अवतार भयो अरजुना ॥
जिह जीते जग के भट गना ॥१॥
प्रिथम निवात कवच सभ मारे ॥
इंद्र तात के सोक निवारे ॥
बहुरे जुध रुद्र तन कीआ ॥
रीझै भूति राट बरु दीआ ॥२॥
बहुरि दुरजोधन कह मुकतायो ॥
गंध्रब राज बिमुख फिरि आयो ॥
खाडव बन पावकहि चरावा ॥
बूंद एक पैठै नहि पावा ॥३॥
जउ कहि कथा प्रसंग सुनाऊ ॥
ग्रंथ बढन ते ह्रिदै डराऊ ॥
ता ते थोरी कथा कहाई ॥
भूल देखि कबि लेहु बनाई ॥४॥
कऊरव जीति गाव सब आनी ॥
भाति भाति तिन महि अभिमानी ॥
क्रिसन चंद कहु बहुरि रिझायो ॥
जा तै जैतपत्र कहु पायो ॥५॥
गागेवहि भानुज कहु मार्यो ॥
घोर भयान अयोधन पार्यो ॥
दुरजोधन जीता अति बला ॥
पावत भयो राज अबिचला ॥६॥
कह लगि करत कथा कहु जाऊ ॥
ग्रंथ बढन ते अधिक डराऊ ॥
कथा ब्रिध कस करौ बिचारा ॥
बाईसवो अरजुन अवतारा ॥७॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे नर अवतार बाईसवो संपूरणं सतु सुभम सतु ॥२२॥

अथ बऊध अवतार तेईसवौ कथनं ॥

चौपई ॥

अब मै गनो बऊध अवतारा ॥
जैस रूप कहु धरा मुरारा ॥
बऊध अवतार इही को नाऊ ॥
जाकर नाव न थाव न गाऊ ॥१॥
जाकर नाव न ठाव बखाना ॥
बऊध अवतार वही पहचाना ॥
सिला सरूप रूप तिह जाना ॥

कथा न जाहि कलू महि माना ॥२॥

दोहरा ॥

रूप रेख जाकर न कछु अरु कछु नहिन आकार ॥
सिला रूप बरतत जगत सो बऊध अवतार ॥३॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे बऊध अवतार तेईसवो समापतम सतु सुभम सतु ॥23॥

अथ निहकलंकी चौबीसवौ अवतार कथनं ॥

चौपई ॥

अब मै महा सुध मति करि कै ॥
कहो कथा चितु लाइ बिचरि कै ॥
चउबीसवो कलकी अवतारा ॥
ता कर कहो प्रसंग सुधारा ॥१॥
भाराक्रित होत जब धरणी ॥
पाप ग्रसत कछु जात न बरणी ॥
भाति भाति तन होत उतपाता ॥
पुत्रहि सेजि सोवत लै माता ॥२॥
सुता पिता तन रमत निसंका ॥
भगनी भरत भ्रात कहु अंका ॥
भ्रात बहन तन करत बिहारा ॥
इसत्री तजी सकल संसारा ॥३॥
संकर बरण प्रजा सभ होई ॥
एक ग्रयात को रहा न कोई ॥
अति बिभचार फसी बर नारी ॥
धरम रीत की प्रीति बिसारी ॥४॥
घरि घरि झूठ अमसिआ भई ॥
साच कला ससि की दुर गई ॥
जह तह होन लगे उतपाता ॥
भोगत पूत सेजि चड़ि माता ॥५॥
ढूंढत साच न कतहूं पाया ॥
झूठ ही संग सबो चित लाया ॥
भिंन भिंन ग्रिह ग्रिह मत होई ॥
सासत्र सिम्रित छुऐ न कोई ॥६॥
हिंदव कोई न तुरका रहि है ॥
भिन भिन घरि घरि मत गहि है ॥
एक एक के पंथ न चलि है ॥
एक एक की बात उथलि है ॥७॥
भाराक्रित धरा सब हुइ है ॥
धरम करम पर चलै न कुइ है ॥
घरि घरि अउर अउर मत होई ॥
एक धरम पर चलै न कोई ॥८॥

दोहरा ॥

भिंन भिंन घरि घरि मतो एक न चल है कोइ ॥
पाप प्रचुर जह तह भयो धरम न कतहूं होइ ॥९॥

चौपई ॥

संकर बरण प्रजा सभ होई ॥
छत्री जगति न देखीऐ कोई ॥
एक एक ऐसे मत कै है ॥
जा ते प्रापति सूद्रता होइ है ॥१०॥
हिंदू तुरक मत दुहूं प्रहरि करि ॥
चलि है भिंन भिंन मत घरि घरि ॥
एक एक के मंत्र न गहि है ॥
एक एक के संगि न रहि है ॥११॥
आपु आपु पारब्रहम कहै है ॥
नीच ऊच कह सीस न नै है ॥
एक एक मत इक इक धामा ॥
घरि घरि होइ बैठ है रामा ॥१२॥
पड़ि है कोइ न भूलि पुराना ॥
कोऊ न पकर है पानि कुराना ॥
बेद कतेब जवन करि लहि है ॥
ता कहु गोबरागनि मो दहि है ॥१३॥
चली पाप की जगति कहानी ॥
भाजा धरम छाड रजधानी ॥
भिंन भिंन घरि घरि मत चला ॥
या ते धरम भरमि उडि टला ॥१४॥
एक एक मत ऐस उचै है ॥
जा ते सकल सूद्र हुइ जै है ॥
छत्री ब्रहमन रहा न कोई ॥
संकर बरन प्रजा सब होई ॥१५॥
सूद्र धामि बसि है ब्रहमणी ॥
बईस नारि होइ है छत्रनी ॥
बसि है छत्रि धामि बैसानी ॥
ब्रहमन ग्रिह इसत्री सूद्रानी ॥१६॥
एक धरम पर प्रजा न चल है ॥
बेद कतेब दोऊ मत दल है ॥
भिंन भिंन मत घरि घरि होई ॥
एक पैंड चल है नहीं कोई ॥१७॥

गीता मालती छंद ॥

भिंन भिंन मतो घरो घरि एक एक चलाइ है ॥
ऐंड बैंड फिरै सबै सिर एक एक न न्याइ है ॥
पुनि अउर अउर नए नए मत मासि मासि उचाहिंगे ॥
देव पितरन पीर को नहि भूलि पूजन जाहिंगे ॥१८॥
देव पीर बिसार कै परमेस्र आपु कहाहिंगे ॥
नर भाति भातन एक को जुरि एक एक उडाहिंगे ॥
एक मास दुमास लौ अध मास लौ तु चलाहिंगे ॥
अंति बूबरि पान जिउ मत आप ही मिटि जाहिंगे ॥१९॥
बेद अउर कतेब के दो दूख कै मत डारि है ॥
हित आपने तिह ठउर भीतर जंत्र मंत्र उचारि है ॥
मुख बेद अउर कतेब को कोई नाम लेन न देहिगे ॥
किसहूं न कउडी पुनि ते कबहूं न किउ ही देहगे ॥२०॥
पाप करम करै जहा तहा धरम करम बिसारि कै ॥

नहि द्रब देखत छोड है लै पुत्र मित्र संघारि कै ॥
एकनेक उठाइ है मति भिंन भिंन दिनं दिना ॥
फोकटं धरम सबै कलि केवलं प्रभणं बिना ॥२१॥
इक दिवस चलै कोऊ मति दोइ दिउस चलाहिगे ॥
अंति जोरि कै बहरो सभै दिन तीसरै मिट जाहिगे ॥
पुनि अउर अउर उचाहिगे मतणो गतं चतुरथ दिनं ॥
धरम फोकटणं सबं इक केवलं कलिनं बिनं ॥२२॥
छंद बंद जहा तहा नर नारि नित नए करहि ॥
पुनि जंत्र मंत्र जहा तहा नहीं तंत्र करत कछू डरहि ॥
धरम छत्र उतार कै रन छोरि छत्री भाज है ॥
सूद्र बैस जहा तहा गहि असत्र आहव गाज है ॥२३॥
छत्रीआनी छोर कै नर नाह नीचनि राव है ॥
तजि राज अउर समाज को ग्रिहि नीचि रानी जाव है ॥
सूद्र ब्रहम सुता भए रति ब्रहम सूद्री होहिगे ॥
बेसिया बाल बिलोक कै मुनि राज धीरज खोहिगे ॥२४॥
धरम भरमि उडयो जहा तहा पाप पग पग पर होहिगे ॥
निज सिख नारि गुरू रमै गुर दारा सो सिख सोहिगे ॥
अबिबेक अउर बिबेक को न बिबेक बैठि बिचार है ॥
पुनि झूठ बोलि कमाहिगे सिर साच बोल उतार है ॥२५॥

ब्रिध नराज छंद ॥

अक्रित क्रित कारणो अनित नित होहिगे ॥
तिआगि धरमणो त्रीअं कुनारि साध जोहिगे ॥
पवित्र चित्र चित्रतं बचित्र मित्र धोहिगे ॥
अमित्र मित्र भावणो सुमित्र अमित्र होहिगे ॥२६॥
कलत्रयं क्रितं करंमणो अभछ भछ जाहिगे ॥
अकज कजणो नरं अधरम धरम पाहिगे ॥
सुधरम धरम धोहि है ध्रितं धरा धरेसणं ॥
अधरम धरमणो ध्रितं कुकरम करमणो क्रितं ॥२७॥
कि उलंघि धरम करमणो अधरम धरम बिआप है ॥
सु तिआगि जगि जापणो अजोग जाप जाप है ॥
सु धरम करमणं भयो अधरम करम निरभ्रमं ॥
सु साध संक्रतं चितं असाध निरभयं डुलं ॥२८॥
अधरम करमणो क्रितं सु धरम करमणो तजं ॥
प्रहरख बरखणं धनं न करख सरबतो न्रिपं ॥
अकज कजणो क्रितं न्रिलज सरबतो फिरं ॥
अनरथ बरतितं भूअं न अरथ कथतं नरं ॥२९॥

तरनराज छंद ॥

बरन है अबरन को ॥
छाडि हरि सरन को ॥३०॥
छाडि सुभ साज को ॥
लाग है अकाज को ॥३१॥
त्याग है नाम को ॥
लाग है काम को ॥३२॥
लाज को छोर है ॥
दानि मुख मोर है ॥३३॥
चरन नहीं धिआइ है ॥
दुसट गति पाइ है ॥३४॥

नरक कहु जाहिगे ॥
अंति पछुताहिगे ॥३५॥
धरम कहि खोहिगे ॥
पाप कर रोहिगै ॥३६॥
नरकि पुनि बास है ॥
त्रास जम त्रास है ॥३७॥

कुमारि ललत छंद ॥

अधरम करम के है ॥
न भूल नाम लै है ॥
किसू न दान देहिगे ॥
सु साध लूटि लेहिगे ॥३८॥
न देह फेरि लै कै ॥
न देह दान कै कै ॥
हरि नाम कौ न लै है ॥
बिसेख नरकि जै है ॥३९॥
न धरम ठाढि रहि है ॥
करै न जउन कहि है ॥
न प्रीति मात संगा ॥
अधीन अरधंगा ॥४०॥
अभच्छ भच्छ भछै ॥
अकच्छ काछ कच्छै ॥
अभाख बैन भाखै ॥
किसू न काणि राखै ॥४१॥
अधरम करम कर है ॥
न तात मात डरि है ॥
कुमंत्र मंत्र कै है ॥
सुमंत्र को न लै है ॥४२॥
अधरम करम कै है ॥
सु भरम धरम खुऐ है ॥
सु काल फासि फस है ॥
निदान नरक बसि है ॥४३॥
कुकरम करम लागे ॥
सुधरम छाडि भागे ॥
कमात नित पापं ॥
बिसारि सरब जापं ॥४४॥
सु मद मोह मते ॥
सु करम के कुपते ॥
सु काम क्रोध राचे ॥
उतारि लाज नाचे ॥४५॥

नग सरूपी छंद ॥

न धरम करम कउ करै ॥
ब्रिथा कथा सुनै ररै ॥
कुकरम करमि सो फसै ॥
सति छाडि धरम वा नसै ॥४६॥
पुराण काबि न पड़ै ॥
कुरान लै न ते रड़ै ॥
अधरम करम को करै ॥

सु धरम जासु ते डरै ॥४७॥
धराकि वरणता भई ॥
सु भरम धरम की गई ॥
ग्रिहं ग्रिहं नयं मतं ॥
चले भूअं जथा तथं ॥४८॥
ग्रिहं ग्रिहं नए मतं ॥
भई धरं नई गतं ॥
अधरम राजता लई ॥
निकारि धरम देस दी ॥४९॥
प्रबोध एक न लगै ॥
सु धरम अधरम ते भगै ॥
कुकरम प्रचुरयं जगं ॥
सु करम पंख कै भगं ॥५०॥
प्रपंच पंच हुइ गडा ॥
अप्रपंच पंख के उडा ॥
कुकरम बिचरतं जगं ॥
सुकरम सु भ्रमं भगं ॥५१॥

रमाण छंद ॥

सुक्रितं तजिहै ॥
कुक्रितं भजि है ॥५२॥
भ्रमणं भरि है ॥
जस ते टरि है ॥५३॥
करि है कुक्रितं ॥
ररि है अन्रिथं ॥५४॥
जप है अजपं ॥
कुथपेण थपं ॥५५॥

सोमराजी छंद ॥

सुनै देसि देसं मुनं पाप करमा ॥
चुनै जूठ कूठं सुतं छोर धरमा ॥५६॥
तजै धरम नारी तकै पाप नारं ॥
महा रूप पापी कुवित्राधिकारं ॥५७॥
करै नित अनरथं समरथं न एती ॥
करै पाप तेतो परालबध जेती ॥५८॥
नए नित मतं उठै एक एकं ॥
करै निंत अनरथं अनेकं अनेकं ॥५९॥

प्रिया छंद ॥

दुख दंद है सुखकंद जी ॥
नही बंध है जगबंद जी ॥६०॥
नही बेद बाक प्रमान है ॥
मत भिंन भिंन बखान है ॥६१॥
न कुरान को मतु लेहगे ॥
न पुरान देखन देहगे ॥६२॥
नही एक मंत्रहि जाप है ॥
दिन द्वैक थापन थाप है ॥६३॥
गाहा छंदु दूजा ॥
क्रीअतं पापणो करमं न अधरमं भरमणं त्रसताइ ॥

कुकरम करमाक्रितं न देव लोकेण प्रापतहि ॥६४ ॥
रत्रयं अनरथं नित्रयं सुअरथ अरथिं न बुझियम ॥
न प्रहरख बरखणं धनिनं चितं बसीअ बिराटकं ॥६५ ॥
मातवं मद्रयं कुनारं अनरतं धरमणो त्रीआइ ॥
कुकरमणो कथतं बदितं लजिणो तजतं नरं ॥६६ ॥
सज्त्रयं कुतिसितं करमं भजितं तजतं न लजा ॥
कुविरतं नितप्रति क्रितणे धरम करमेण तिआगतं ॥६७ ॥

चतुरपदी छंद ॥

कुक्रितं नित करि है सुक्रितानु न सर है अघ ओघन रुचि राचे ॥
मान है न बेदन सिंम्रिति कतेबन लोक लाज तजि नाचे ॥
चीन है न बानी सुभग भवानी पाप करम रति हुइ है ॥
गुरदेव न मानै भल न बखानै अंति नरक कह जै है ॥६८ ॥
जप है न भवानी अकथ कहानी पाप करम रति ऐसे ॥
मानि है न देवं अलख अभेवं दुरक्रितं मुनि वर जैसे ॥
चीन है न बातं पर त्रिया रातं धरमणि करम उदासी ॥
जानि है न बातं अधक अगिआतं अंत नरक के बासी ॥६९ ॥
नित नव मति कर है हरि न निसरि है प्रभ को नाम न लै है ॥
स्रुति सम्रिति न मानै तजत कुरानै अउर ही पैंड बतै है ॥
पर त्रीअ रस राचे सत के काचे निज त्रीय गमन न कर है ॥
मान है न एकं पूज अनेकं अंति नरक महि पर है ॥७० ॥
पाहण पूजै है एक न धिऐ है मति के अधिक अंधेरा ॥
अम्रित कहु तजि है बिख कहु भजि है साझहि कहहि सवेरा ॥
फोकट धरमणि रति कुक्रित बिना मति कहो कहा फल पै है ॥
बाधे म्रित सालै जाहि उतालै अंत अधोगति जै है ॥७१ ॥

एला छंद ॥

कर है नित अनरथ अरथ नही एक कमै है ॥
नहि लै है हरि नामु दान काहूं नही दै है ॥
नित इक मत तजै इक मति नित उचै है ॥७२ ॥
नित इक मति मिटै उठै है नित इक मति ॥
धरम करम रहि गइओ भई बसुधा अउरै गति ॥
भरम धरम कै गइओ पाप प्रचरिओ जहा तह ॥७३ ॥
स्रिसटि इसट तजि दीन करत आरिसट पुसट सब ॥
ब्रिसटि स्रिसटि ते मिटी भए पापिसट भ्रिसट तब ॥
इक इक निंद है इक इक कहि हसि चलै ॥७४ ॥
तजी आनि जहान कानि काहूं नही मानहि ॥
तात मात की निंद नीच ऊचह सम जानहि ॥
धरम भरम कै गइओ भई इक बरण प्रजा सब ॥७५ ॥

घता छंद ॥

करि है पाप अनेक न एक धरम कर है नर ॥
मिट जै है सभ खसट करम के धरम घरन घरि ॥
नहि सुक्रित कमै है अधोगति जै है ॥
अमर लोगि जै है न बर ॥७६ ॥
धरम न कर है एक अनेक पाप कै है सब ॥
लाज बेचि तह फिरै सकल जगु ॥
पाप कमै वह दुरगति पै है ॥
पाप समुंद जै है न तरि ॥७७ ॥

दोहरा ॥

ठउर ठउर नव मत चले उठा धरम को दौर ॥
सुक्रित जह तह दुर रही पाप भइओ सिरमौर ॥७८॥

नवपदी छंद ॥

जह तह करन लगे सभ पापन ॥
धरम करम तजि कर हरि जापन ॥
पाहन कउ सु करत सब बंदन ॥
डारत धूप दीप सिरि चंदन ॥७९॥
जह तह धरम करम तजि भागत ॥
उठि उठि पाप करम सौ लागत ॥
जह तह भई धरम गति लोपं ॥
पापहि लगी चउगनी ओपं ॥८०॥
भाज्यो धरम भरम तजि अपना ॥
जानुक हुतो लखा इह सुपना ॥
सभ संसार तजी त्रीअ आपन ॥
मंत्र कुमंत्र लगे मिलि जापन ॥८१॥
चहु दिस घोर प्रचर भइओ पापा ॥
कोऊ न जाप सकै हरि जापा ॥
पाप क्रिआ सभ जा चल पई ॥
धरम क्रिआ या जग ते गई ॥८२॥
अड़िल दूजा ॥
जहा तहा आधरम उपजिया ॥
जानुक धरम पंख करि भजिया ॥
डोलत जह तह पुरख अपावन ॥
लागत कत ही धरम को दावन ॥८३॥
अरथह छाडि अनरथ बतावत ॥
धरम करम चिति एक न लिआवत ॥
करम धरम की क्रिआ भुलावत ॥
जहा तहा आरिसट बतावत ॥८४॥

कुलक छंद ॥

धरम न करही ॥
हरि न उचरही ॥
पर घरि डोलै ॥
जलह बिरोलै ॥८५॥
लहै न अरथं ॥
कहै अनरथं ॥
बचन न साचे ॥
मति के काचे ॥८६॥
परत्रीआ राचै ॥
घरि घरि जाचै ॥
जह तह डोलै ॥
रहि रहि बोलै ॥८७॥
धन नही छोरै ॥
निसि घर फोरै ॥
गहि बहु मारीअत ॥
नरकहि डारीअत ॥८८॥

अस दुर करमं ॥
छुट जगि धरमं ॥
मति पित भरमै ॥
धसत न घर मै ॥८९॥
सिख मुख मोरै ॥
भ्रित न्रिपि छोरै ॥
तजि त्रीआ भरता ॥
बिसरो करता ॥९०॥
नव नव करमं ॥
बढि गइओ भरमं ॥
सभ जग पापी ॥
कहूं न जापी ॥९१॥

पदमावती छंद ॥

देखीअत सब पापी नह हरि जापी तदिप महा रिस ठानै ॥
अति बिभचारी परत्रिअ भारी देव पित्र नही मानै ॥
तदिप महा बर कहते धरम धर पाप करम अधिकारी ॥
ध्रिग ध्रिग सभ आखै मुख पर नही भाखै देहि प्रिसट चड़ि गारी ॥९२॥
देखीअत बिन करमं तज कुल धरमं तदिप कहात सु मानस ॥
अति रति लोभं रहत सछोभं लोक सगल भलु जानस ॥
तदिप बिना गति चलत बुरी मति लोभ मोह बसि भारी ॥
पित मात न मानै कछू न जानै लैह घरण ते गारी ॥९३॥
देखअत जे धरमी ते भए अकरमी तदिप कहात महा मति ॥
अति बस नारी अबगति भारी जानत सकल बिना जत ॥
तदिप न मानत कुमति प्रठानत मति अरु गति के काचे ॥
जिह तिह घरि डोलत भले न बोलत लोग लाज तजि नाचे ॥९४॥

किलका छंद ॥

पाप करै नित प्राति घने ॥
जनु दोखन के तरु सुध बने ॥
जग छोरि भजा गति धरमण की ॥
सु जहा तहा पाप क्रिआ प्रचुरी ॥९५॥
संग लए फिरै पापन ही ॥
तजि भाज क्रिआ जग जापन की ॥
देव पित्र न पावक मानहिगे ॥
सभ आपन ते घटि जानहिगे ॥९६॥

मधुभार छंद ॥

भजिओ सु धरम ॥
प्रचुरिओ कुकरम ॥
जह तह जहान ॥
तजि भाज आनि ॥९७॥
नितप्रति अनरथ ॥
कर है समरथ ॥
उठि भाज धरम ॥
लै संगि सुकरम ॥९८॥
कर है कुचार ॥
तजि सुभ अचार ॥
भई क्रिआ अउर ॥

सब ठौर ठौर ॥९९॥
नही करत संग ॥
प्रेरति अनंग ॥
करि सुता भोग ॥
जो है अजोग ॥१००॥
तजि लाज भाज ॥
संजुत समाज ॥
घट चला धरम ॥
बढिओ अधरम ॥१०१॥
क्रीड़त कुनारि ॥
तजि धरम वारि ॥
बढि गयो भरम ॥
भाजंत धरम ॥१०२॥
देसन बिदेस ॥
पापी नरेस ॥
धरमी न कोइ ॥
पाप अति होइ ॥१०३॥
साधू सत्रास ॥
जह तह उदास ॥
पापीन राज ॥
ग्रिह सरब साज ॥१०४॥

हरि गीता छंद ॥

सब द्रोन गिरवर सिखर तर नर पाप करम भए भनौ ॥
उठि भाज धरम सभरम हुऐ चमकंत दामिनि सो मनौ ॥
किधौ सूद्र सुभट समाज संजुत जीत है बसुधा थली ॥
किधौ अत्र छत्र तजे भजे अरु अउर अउर क्रिआ चली ॥१०५॥
न्रिप देस देस बिदेस जह तह पाप करम सबै लगे ॥
नर लाज छाडि निलाज हुऐ फिरै धरम करम सबै भगे ॥
किधौ सूद्र जह तह सरब महि महाराज्य पाइ प्रहरख है ॥
किधौ चोर छाडि अचोर को गहि सरब दरब आकरख है ॥१०६॥

त्रिभंगी छंद ॥

सभ जग पापी कहूं न जापी अथपन थापी देस दिसं ॥
जह तह मतवारे भ्रमत भ्रमारे मति न उजियारे बाध रिसं ॥
पापन रस राते दुरमति माते कुमतन दाते मत नेकं ॥
जह तह उठि धावै चित ललचावै कछुहूं न पावै बिनु एकं ॥१०७॥
तजि हरि धरमं गहत कुकरमं बिन प्रभ करमं सब भरमं ॥
लागत नही तंत्रं फुरत न मंत्रं चलत न जंत्रं बिन मरमं ॥
जप है न देवी अलख अभेवी आदि अजेवी परम जुधी ॥
कुबुधन तन राचे कहत न साचे प्रभहि न जाचे तमक बुधी ॥१०८॥

हीर छंद ॥

अपंडित गुण मंडित सुबुधिनि खंडित देखीऐ ॥
छत्री बर धरम छाडि अकरम धरम लेखीऐ ॥
सति रहत पाप ग्रहित क्रुध चहत जानीऐ ॥
अधरम लीण अंग छीण क्रोध पीण मानीऐ ॥१०९॥
कुत्रीअन रस चाही गुणन न ग्राही जानीऐ ॥
सत करम छाड के असत करम मानीऐ ॥

रूप रहित जूप ग्रहित पाप सहित देखीऐ ॥
अकरम लीन धरम छीन नारि अधीन पेखीऐ ॥११०॥

पधिसटका छंद ॥

अति पापन ते जग छाइ रहिओ ॥
कछु बुधि बल धरम न जात कहिओ ॥
दिस बदिसन के जीअ देखि सबै ॥
बहु पाप करम रति है सु अबै ॥१११॥
प्रितमान न नर कहूं देख परै ॥
कछु बुधि बल बचन बिचार करै ॥
नर नारिन एक न नेक मतं ॥
नित अरथानरथ गनित गतं ॥११२॥

मारह छंद ॥

हित संग कुनारिन अति बिभचारिन जिन के ऐस प्रकार ॥
बड कुलि जदपि उपजी बहु छबि बिगसी तदिप प्रिअ बिभचारि ॥
चित्रत बहु चित्रन कुसम बचित्रन सुंदर रूप अपार ॥
किधो देव लोक तजि सुढर सुंदरी उपजी बिबिध प्रकार ॥११३॥
हित अति दुर मानस कछू न जानस नर हर अरु बट पार ॥
कछु सासत्र न मानत सिम्रित न जानत बोलत कुबिधि प्रकार ॥
कुसटित ते अंगन गलित कुरंगन अलप अजोगि अछजि ॥
किधो नरक छोरि अवतरे महा पसु डोलत प्रिथी निलज ॥११४॥

दोहरा ॥

संकर बरन प्रजा भई इक ब्रन रहा न कोइ ॥
सकल सूद्रता प्रापति भे दईव करै सो होइ ॥११५॥
संकर ब्रन प्रजा भई धरम न कतहूं रहान ॥
पाप प्रचुर राजा भए भई धरम की हानि ॥११६॥
सोरठा ॥
धरम न कतहूं रहान पाप प्रचुर जग मो धरा ॥
धरम सबन बिसरान पाप कंठ सब जग कीओ ॥११७॥
कलिजुग चड़्यो असंभ जगत कवन बिधि बाच है ॥
रंगहु एकहि रंगि तब छुटि हो कलि काल ते ॥११८॥

हंसा छंद ॥

जह तह बढा पाप का करम ॥
जग ते घटा धरम का भरम ॥११९॥
पाप प्रचुर जह तह जगि भइओ ॥
पंखन धार धरम उडि गइओ ॥१२०॥
नई नई होन लगी नित बात ॥
जह तह बाढि चलिओ उतपात ॥१२१॥
सब जगि चलत और ही करम ॥
जह तह घट गइओ धरा ते धरम ॥१२२॥

मालती छंद ॥

जह तह देखीअत ॥
तह तह पेखीअत ॥
सकल कुकरमी ॥

कहूं न धरमी ॥१२३॥
जह तह गुनीअत ॥
तह तह सुनीअत ॥
सब जग पापी ॥
कहूं न जापी ॥१२४॥
सकल कुकरमं ॥
भजि गइओ धरमं ॥
जग न सुनीअत ॥
होम न गुनीअत ॥१२५॥
सकल कुकरमी ॥
जगु भइओ अधरमी ॥
कहूं न पूजा ॥
बस रह्यो दूजा ॥१२६॥

अति मालती छंद ॥

कहूं न पूजा कहूं न अरचा ॥
कहूं न स्रुति धुनि सिंम्रित न चरचा ॥
कहूं न होमं कहूं न दानं ॥
कहूं न संजम कहूं न इसनानं ॥१२७॥
कहूं न चरचा कहूं न बेदं ॥
कहूं निवाज न कहूं कतेबं ॥
कहूं न तसबी कहूं न माला ॥
कहूं न होमं कहूं न ज्वाला ॥१२८॥
अउर ही करमं अउर ही धरमं ॥
अउर ही भावं अउर ही मरमं ॥
अउर ही रीता अउर ही चरचा ॥
अउर ही रीतं अउर ही अरचा ॥१२९॥
अउर ही भातं अउर ही बसत्रं ॥
अउर ही बाणी अउर ही असत्रं ॥
अउर ही रीता अउर ही भायं ॥
अउर ही राजा अउर ही न्यायं ॥१३०॥

अभीर छंद ॥

अति साधू अति राजा ॥
करन लगे दुर काजा ॥
पाप हिरदे महि ठानि ॥
करत धरम की हानि ॥१३१॥
अति कुचाल अरु क्रूर ॥
अति पापिसट कठूर ॥
थिर नही रहत पलाध ॥
करत अधरम की साधि ॥१३२॥
अति पापिसट अजान ॥
करत धरम की हानि ॥
मानत जंत्र न तंत्र ॥
जापत कोई न मंत्र ॥१३३॥
जह तह बडा अधरम ॥
धरम भजा करि भरम ॥
नव नव क्रिआ भई ॥
दुरमति छाइ रही ॥१३४॥

कुंडरीआ छंद ॥

नए नए मारग चले जग मो बढा अधरम ॥
राजा प्रजा सभै लगे जह जह करन कुकरम ॥
जह तह करन कुकरम प्रजा राजा नर नारी ॥
धरम पंख कर उडा पाप की क्रिआ बिथारी ॥१३५॥
धरम लोप जग ते भए पाप प्रगट बपु कीन ॥
ऊच नीच राजा प्रजा क्रिआ अधरम की लीन ॥
क्रिआ पाप की लीन नारि नर रंक अरु राजा ॥
पाप प्रचुर बपु कीन धरम धरि पंखन भाजा ॥१३६॥
पापाक्रात धरा भई पल न सकति ठहराइ ॥
काल पुरख को धिआन धरि रोवत भई बनाइ ॥
रोवत भई बनाइ पाप भारन भरि धरणी ॥
महा पुरख के तीर बहुतु बिधि जात न बरणी ॥१३७॥
सोरठा ॥
कर कै प्रिथम समोध बहुर बिदा प्रिथवी करी ॥
महा पुरख बिनु रोग भार हरण बसुधा निमित ॥१३८॥

कुंडरीआ छंद ॥

दीनन की रछा निमित कर है आप उपाइ ॥
परम पुरख पावन सदा आप प्रगट है आइ ॥
आप प्रगट है आइ दीन रछा के कारण ॥
अवतारी अवतार धरा के पाप उतारण ॥१३९॥
कलिजुग के अंतह समै सतिजुग लागत आदि ॥
दीनन की रछा लीए धरि है रूप अनादि ॥
धर है रूप अनादि कलहि कवतुक करि भारी ॥
सत्रन के नासारथ नमित अवतार अवतारी ॥१४०॥

सवैया छंद ॥

पाप संबूह बिनासन कउ कलिकी अवतार कहावहिगे ॥
तुरकछि तुरंग सपछ बडो करि काढि क्रिपान कंपावहिगे ॥
निकसे जिम केहरि परबत ते तस सोभ दिवालय पावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४१॥
रूप अनूप सरूप महा लखि देव अदेव लजावहिगे ॥
अरि मारि सुधार के टारि घणे बहुरो कलि धरम चलावहिगे ॥
सभ साध उबार लहै कर दै दुख आंच न लागन पावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४२॥
दानव मारि अपार बडे रणि जीति निसान बजावहिगे ॥
खल टारि हजार करोर किते कलकी कलि क्रिति बढावहिगे ॥
प्रगटि है जितही तित धरम दिसा लखि पापन पुंज परावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४३॥
छीन महा दिज दीन दसा लखि दीन दिआल रिसावहिगे ॥
खग काढि अभंग निसंग हठी रण रंगि तुरंग नचावहिगे ॥
रिपु जीति अजीत अभीत बडे अवनी पै सबै जसु गावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४४॥
सेस सुरेस महेस गनेस निसेस भले जसु गावहिगे ॥
गण भूत परेत पिसाच परी जय सद निनद सुनावहिगे ॥
नर नारद तुंबर किंनर जछ सु बीन प्रबीन बजावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४५॥

ताल म्रिदंग मुचंग उपंग सुरंग से नाद सुनावहिगे ॥
डफ बार तरंग रबाब तुरी रणि संख असंख बजावहिगे ॥
गण दुंदभि ढोलन घोर घनी सुनि सत्रु सबै मुरछावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४६॥
तीर तुफंग कमान सुरंग दुरंग निखंग सुहावहिगे ॥
बरछी अरु बैरख बान धुजा पट बात लगे फहरावहिगे ॥
गुण जच्छ भुजंग सु किंनर सिद्ध प्रसिध सबै जसु गावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४७॥
कउच क्रिपान कटारि कमान सुरंग निखंग छकावहिगे ॥
बरछी अरु ढाल गदा परसो करि सूल त्रिसूल भ्रमावहिगे ॥
अति क्रुधत ह्वै रण मूरधन मो सर ओघ प्रओघ चलावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४८॥
तेज प्रचंड अखंड महा छबि दुजन देखि परावहिगे ॥
जिम पउन प्रचंड बहै पतूआ सब आपन ही उडि जावहिगे ॥
बढि है जित ही तित धरम दसा कहूं पाप न ढूंढत पावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१४९॥
छूटत बान कमानिन के रण छाडि भटवा भहरावहिगे ॥
गण बीर बिताल कराल प्रभा रण मूरधन मधि सुहावहिगे ॥
गण सिद्ध प्रसिद्ध सम्रिद्ध सनै कर उचाइ कै क्रित सुनावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५०॥
रूप अनूप सरूप महा अंग देखि अनंग लजावहिगे ॥
भव भूत भविख भवान सदा सब ठउर सभै ठहरावहिगे ॥
भव भार अपार निवारन कौ कलिकी अवतार कहावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५१॥
भूम को भार उतार बडे बडआछ बडी छबि पावहिगे ॥
खल टारि जुझार बरिआर हठी घन घोखन जिउ घहरावहिगे ॥
कल नारद भूत पिसाच परी जैपत्र धरत्र सुनावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५२॥
झारि क्रिपान जुझार बडे रण मध महा छबि पावहिगे ॥
धरि लुथ पलुथ बिथार घणी घन की घट जिउ घहरावहिगे ॥
चतुरानन रुद्र चराचर जे जय सद निनद सुनावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५३॥
तार प्रमान उचान धुजा लखि देव अदेव त्रसावहिगे ॥
कलगी गजगाह गदा बरछी गहि पाणि क्रिपान भ्रमावहिगे ॥
जग पाप संबूह बिनासन कउ कलकी कलि धरम चलावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५४॥
पानि क्रिपान अजानु भुजा रणि रूप महान दिखावहिगे ॥
प्रतिमान सुजान अप्रमान प्रभा लखि बिओम बिवान लजावहिगे ॥
गणि भूत पिसाच परेत परी मिलि जीत के गीत गवावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५५॥
बाजत डंक अतंक समै रण रंगि तुरंग नचावहिगे ॥
कसि बान कमान गदा बरछी करि सूल त्रिसूल भ्रमावहिगे ॥
गण देव अदेव पिसाच परी रण देखि सबै रहसावहिगे ॥
भलु भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदरि आवहिगे ॥१५६॥

कुलक छंद ॥

सरसिज रूपं ॥
सब भट भूपं ॥
अति छबि सोभं ॥
मुनि गन लोभं ॥१५७॥

कर अरि धरमं ॥
परहरि करमं ॥
घरि घरि वीरं ॥
परहरि धीरं ॥१५८॥
जल थल पापं ॥
हर हरि जापं ॥
जह तह देखा ॥
तह तह पेखा ॥१५९॥
घरि घरि पेखै ॥
दर दर लेखै ॥
कहूं न अरचा ॥
कहूं न चरचा ॥१६०॥

मधुभार छंद ॥

सब देस ढाल ॥
जह तह कुचाल ॥
जह तह अनरथ ॥
नहीं होत अरथ ॥१६१॥
सब देस राज ॥
नितप्रति कुकाज ॥
नहीं होत निआइ ॥
जह तह अन्याइ ॥१६२॥
छित भई सुद्र ॥
क्रित करत छुद्र ॥
तह बिप्र एक ॥
जिह गुन अनेक ॥१६३॥

पाधरी छंद ॥

नित जपत बिप्र देबी प्रचंड ॥
जिह कीन धूम्र लोचन दुखंड ॥
जिह कीन देव देविस सहाइ ॥
जिह लीन रुद्र करि बचाइ ॥१६४॥
जिह हते सुंभ नैसुंभ बीर ॥
जिन जीत इंद्र कीनो फकीर ॥
तिनि गही सरन जग मात जाइ ॥
तिहि कीअस चंडिका देवराइ ॥१६५॥
तिहि जपत रैण दिन दिज उदार ॥
जिहि हणिओ रोसि रणि बासवार ॥
ग्रिह हुती तासु इसत्री कुचार ॥
तिह गहिओ नाह दिन इक निहारि ॥१६६॥
त्रीयो बाच पति सो ॥
किह काज मूड़ सेवंत देवि ॥
किह हेत तासु बुलत अभेवि ॥
किह कारण वाहि पगिआन परंत ॥
किम जान बूझ दोजखि गिरंत ॥१६७॥
किह काज मूरख तिह जपत जाप ॥
नही डरत तउन को थपत थाप ॥
कैहो पुकार राजा समीप ॥
दै है निकार तुहि बाधि दीप ॥१६८॥

नही लखा ताहि ब्रहमा कुनारि ॥
धरमारथ आनि लिनो वतार ॥
सूद्रं समसत नासारथ हेतु ॥
कलकी वतार करबे सचेत ॥१६९॥
हित जानि तासु हटकिओ कुनारि ॥
नही लोक त्रास बुले भतार ॥
तब कुड़ही नारि चित रोस ठानि ॥
संभल नरेस तन कही आनि ॥१७०॥
पूजंत देव दीनो दिखाइ ॥
तिह गहा कोप करि सूद्र राइ ॥
गहि ताहि अधिक दीनी सजाइ ॥
कै हनत तोहि कै जप न माइ ॥१७१॥
राजा सूद्र बाच ॥
नही हनत तोह दिज कही आज ॥
नही बोर बार मो पूज साज ॥
कै तजहु सेव देवी प्रचंड ॥
नही करत आज तो को दुखंड ॥१७२॥
बिप्र बाच राजा सौ॥
कीजै दुखंड नहि तजो सेव ॥
सुनि लेहु साच तुहि कहो देव ॥
किउ न होहि टूक तन के हजार ॥
नही तजो पाइ देवी उदार ॥१७३॥
सुन भयो बैन सूदर सु क्रुध ॥
जण जुट्यो आणि मकराछ जुध ॥
दोऊ द्रिग सक्रुध स्रोणत चुचान ॥
जन काल ताहि दीनी निसान ॥१७४॥
अति गरब मूड़ भ्रितन बुलाइ ॥
उचरे बैन इह हणो जाइ ॥
लै गए तासु द्रोही दुरंत ॥
जह संभ्र सुभ देवल सुभंत ॥१७५॥
तिह बाध आंख मुसकैं चड़ाइ ॥
करि लीन काढि असि को नचाइ ॥
जब लगे देन तिह तेग तान ॥
तब कीओ काल को बिप्र धिआन ॥१७६॥
जब कीयो चित मो बिप्र धिआन ॥
तिह दीन दरस तब काल आनि ॥
नही करो चिंत चित माझि एक ॥
तव हेतु सत्रु हनि है अनेक ॥१७७॥
तब परी सूंक भोहर मझार ॥
उपजिओ आनि कलकी वतार ॥
ताड़ प्रमानु करि असि उतंग ॥
तुरकछ सुवछ ताजी सुरंग ॥१७८॥

सिरखंडी छंद ॥

वजे नाद सुरंगी धगा घोरीआ ॥
नचे जाण फिरंगी वजे घुंघरू ॥
गदा त्रिसूल निखंगी झूलन बैरखा ॥
सावन जाण उमंगी घटा डरावणी ॥१७९॥
बाणे अंग भुजंगी सावल सोहणे ॥
त्रै सै हथ उतंगी खंडा धूहिआ ॥

ताजी भउर पिलंगी छाला पाईआ ॥
भंगी जाण भिड़ंगी नचे दाइरी ॥१८० ॥
बजे नाद सुरंगी अणीआं जुटीआं ॥
पैरे धार पवंगी फउजा चीर कै ॥
उठै छैल छलंगी छाला पाईआं ॥
झाड़ि झड़ाक झड़ंगी तेगा वजीआं ॥१८१ ॥

समानका छंद ॥

जु देख देख कै सबै ॥
सु भाजि भाजि गे तबे ॥
कहिओ सु सोभ सोभ ही ॥
बिलोकि लोक लोभ ही ॥१८२ ॥
प्रचंड रूप राजई ॥
बिलोकि भान लाजई ॥
सु चंड तेज इउ लसै ॥
प्रचंड जोति को हसै ॥१८३ ॥
सु कोपि कोप कै हठी ॥
चपै चिराइ जिउ भठी ॥
प्रचंड मंडली लसै ॥
कि मारतंड को हसै ॥१८४ ॥
सु कोप ओप दै बली ॥
कि राज मंडली चली ॥
सु असत्र ससत्र पानि लै ॥
बिसेख बीर मान कै ॥१८५ ॥

तोमर छंद ॥

भट ससत्र असत्र नचाइ ॥
चित कोप ओप बढाइ ॥
तुरकछ अछ तुरंग ॥
रण रंगि चार उतंग ॥१८६ ॥
करि क्रोध पीसत दात ॥
कहि आपु आपन बात ॥
भट भैरहव है धीर ॥
करि कोप छाडत तीर ॥१८७ ॥
कर कोप कलि अवतार ॥
गहि पानि अजान कुठार ॥
तनकेक कीन प्रहार ॥
भट जूझ गयो सै चार ॥१८८ ॥

भड़थूआ छंद ॥

ढढकंत ढोलं ॥
बबकंत बोलं ॥
उछकंत ताजी ॥
गजकंत गाजी ॥१८९ ॥
छुटकंत तीरं ॥
बबकंत बीरं ॥
ढलकंत ढालं ॥
उठकंत तालं ॥१९० ॥
खिमकंत खगं ॥

धधकंत धगं ॥
छुटकंत नालं ॥
उठकंत ज्वालं ॥१९१॥
बहतंत घायं ॥
झलकंत चायं ॥
डिगतंत बीरं ॥
भिगतंत भीरं ॥१९२॥
टुटंतंत खोलं ॥
ढमंकंत ढोलं ॥
टटंकंत तालं ॥
नचंतंत बालं ॥१९३॥
गिरंतंत अंगं ॥
कटंतंत जंगं ॥
चलंतंत तीरं ॥
भटंकंत भीरं ॥१९४॥
जुझंतंत वीरं ॥
भजंतंत भीरं ॥
करंतंत क्रोहं ॥
भरंतंत रोहं ॥१९५॥
तजंतंत तीरं ॥
भजंतंत भीरं ॥
बहंतंत घायं ॥
झलंतंत जायं ॥१९६॥
ततकंत अंगं ॥
जुटकंत जंगं ॥
उलथथ लुथं ॥
पलुथत जुथं ॥१९७॥
ढलंकंत ढालं ॥
पुअंतंत मालं ॥
नचंतंत ईसं ॥
कटंतंत सीसं ॥१९८॥
उछंकंत ताजी ॥
बहंतंत गाजी ॥
लुटंतंत लुथं ॥
कटंतंत मुखं ॥१९९॥
तपंतंत तेगं ॥
चमंकंत बेगं ॥
नचे मुंड माली ॥
हसेतत काली ॥२००॥
जुटंतंत वीरं ॥
छुटंतंत तीरं ॥
बरंतंत बालं ॥
ढलंतंत ढालं ॥२०१॥
सुमतंत मदं ॥
उठै सद गदं ॥
कटंतंत अंगं ॥
गिरंतंत जंगं ॥२०२॥
चलतंति चायं ॥
जुझंतंत जायं ॥
रणंकंत नादं ॥

बजंतंत बादं ॥२०३॥
पुऐरंत पत्री ॥
लगंतंत अत्री ॥
बजतंत्र अत्रं ॥
जुझतंत छत्रं ॥२०४॥
गिरंतंत भूमी ॥
उठंतंत झूमी ॥
रटंतंत पानं ॥
जुझंतंत जुआनं ॥२०५॥
चलंतंत बाणं ॥
रुकंतंत दिसाणं ॥
गिरंतंत बीरं ॥
भजंतंत भीरं ॥२०६॥
नचंतंत ईसं ॥
पुअंतंत सीसं ॥
बजंतंत डउरू ॥
भ्रमंतंत भउरू ॥२०७॥
नचंतंत बालं ॥
तुटंतंत तालं ॥
मचंतंत वीरं ॥
भजंतंत भीरं ॥२०८॥
लगंतंत बाणं ॥
ढहंतंत जुआणं ॥
कटंतंत अधं ॥
भटंतंत बधं ॥२०९॥
खहंतंत खूनी ॥
चड़े चउप दूनी ॥
बहंतंत अत्रं ॥
कटंतंत छत्रं ॥२१०॥
बहंतंत पत्री ॥
जुझंतंत अत्री ॥
हिंणंकंत ताजी ॥
कणंछंत गाजी ॥२११॥
तुटंतंत चरमं ॥
कटंतंत बरमं ॥
गिरंतंत भूमी ॥
उठंतंत घूमी ॥२१२॥
रटंतंत पानं ॥
कटंतंत जुआनं ॥
उडंतंत एकं ॥
गडंतंत नेकं ॥२१३॥

अनूप निराज छंद ॥

अनूप रूप दिख कै सु क्रधु जोधणं बरं ॥
सनध बध उदितं सु कोप ओप दे नरं ॥
चहंत जैत पत्रणं करंत घाव दुधरं ॥
तुटंत असत्र ससत्रणो लसंत उजलो फलं ॥२१४॥
उठंत भउर भूरणो कढंत भैकरी सुरं ॥
भजंत भीर भैकरं बजंत बीर सुप्रभं ॥
तुटंत ताल तथियं नचंत ईस्रणो रणं ॥

खहंत खत्रिणो खगं निनदि गदि घुंघरं ॥२१५ ॥
भजंत आसुरी सुतं उठंत भैकरी धुणं ॥
चलंत तीछणो सरं सिलेण उजली क्रितं ॥
नचंत रंगि जोगणं चचकि चउदणो दिसं ॥
कपंत कुंदनो गिरं त्रसंत सरबतो दिसं ॥२१६ ॥
नचंत बीर बावरं खहंत बाहणी धुजं ॥
बरंत अछ्रणो भटं प्रबीन चीन सुप्रभं ॥
बकंत डउर डामरी अनंत तंत्रणो रिसं ॥
हसंत जछ गंध्रबं पिसाच भूत प्रेतनं ॥२१७ ॥
भरंत चुच चावडी भछंत फिकणी तनं ॥
डकंत डाकणी डुलं भरंत पत्र स्रोणतं ॥
पिपंत यासवं सुभं हसंत मारजनी म्रिड़ं ॥
अटुट हासणो हसं खिमंत उजलो असं ॥२१८ ॥

अकवा छंद ॥

जुटे वीरं ॥
छुटे तीरं ॥
जुझे ताजी ॥
डिगे गाजी ॥२१९ ॥
बजे जुआणं ॥
बाहे बाणं ॥
रुझे जंगं ॥
जुझे अंगं ॥२२० ॥
तुटे तंगं ॥
फुटे अंगं ॥
सजे सूरं ॥
घुंमी हूरं ॥२२१ ॥
जुझे हाथी ॥
रुझे साथी ॥
उभे उसटं ॥
सुभे पुसटं ॥२२२ ॥
फुटे बीरं ॥
छुटे तीरं ॥
डिगे भूमं ॥
उठे घूमं ॥२२३ ॥
बकै मारं ॥
चकै चारं ॥
सजै ससत्रं ॥
बजै असत्रं ॥२२४ ॥

चाचरी छंद ॥

जुझारे ॥
अपारे ॥
निहारे ॥
बिचारे ॥२२५ ॥
हकारै ॥
पचारै ॥
बिचारै ॥
प्रहारै ॥२२६ ॥

सु ताजी ॥
सिराजी ॥
सलाजी ॥
बिराजी ॥२२७॥
उठावै ॥
दिखावै ॥
भ्रमावै ॥
चखावै ॥२२८॥

क्रिपान क्रित छंद ॥

जहा तीर छुटत ॥
रणंधीर जुटत ॥
बरंबीर उठत ॥
तनं त्रान फुटत ॥२२९॥
रणं बीर गिरत ॥
भवं सिंधु तरत ॥
नभं हूर फिरत ॥
बरं बीर बरत ॥२३०॥
रण नाद बजत ॥
सुणि भीर भजत ॥
रण भूमि तजत ॥
मन माझ लजत ॥२३१॥
फिरि फेरि लरत ॥
रण जुझि मरत ॥
नहि पाव टरत ॥
भव सिंधु तरत ॥२३२॥
रण रंगि मचत ॥
चतुरंग फटत ॥
सरबंग लटत ॥
मनि मान घटत ॥२३३॥
बर बीर भिरत ॥
नही नैकु फिरत ॥
जब चित चिरत ॥
उठि सैन घिरत ॥२३४॥
गिर भूमि परत ॥
सुर नारि बरत ॥
नही पाव टरत ॥
मनि कोप भरत ॥२३५॥
कर कोप मंडत ॥
पग द्वै न भजत ॥
करि रोस लरत ॥
गिर भूमि परत ॥२३६॥
रण नाद बजत ॥
सुणि मेघ लजत ॥
सभ साज सजत ॥
पग द्वै न भजत ॥२३७॥
रणि चक्र चलत ॥
दुति मान दलत ॥
गिरि मेरु हलत ॥
भट स्रोण पलत ॥२३८॥

रण रंगि मचत ॥
बर बंब बजत ॥
रण खंभ गडति ॥
असिवार मंडत ॥२३९॥
क्रिपान किरत ॥
करि कोप भिरत ॥
नही फिरै फिरत ॥
अति चित चिरत ॥२४०॥

चाचरी छंद ॥

हकारै ॥
प्रचारै ॥
प्रहारै ॥
करवारै ॥२४१॥
उठावै ॥
दिखावै ॥
भ्रमावै ॥
चलावै ॥२४२॥
सु धावै ॥
रिसावै ॥
उठावै ॥
चखावै ॥२४३॥
झुझारे ॥
अपारे ॥
हजारे ॥
अरिआरे ॥२४४॥
सु ढूके ॥
कि कूके ॥
भभूके ॥
कि झूके ॥२४५॥
सु बाणं ॥
सुधाणं ॥
अचाणं ॥
जुआणं ॥२४६॥
धमके ॥
हमके ॥
झड़के ॥
छटके ॥२४७॥
सगाजै ॥
ससाजै ॥
न भाजै ॥
बिराजै ॥२४८॥
निखंगी ॥
खतंगी ॥
सुरंगी ॥
भिड़ंगी ॥२४९॥
तमकै ॥
पलकै ॥
हसकै ॥
प्रधकै ॥२५०॥

सु बीरं ॥
सु धीरं ॥
प्रहीरं ॥
ततीरं ॥२५१॥
पलटै ॥
बिलटै ॥
न छुटै ॥
उपटै ॥२५२॥
बबकै ॥
न थकै ॥
धसकै ॥
झझकै ॥२५३॥
सखगं ॥
अदगं ॥
अजगं ॥
अभगं ॥२५४॥
झमकै ॥
खिमकै ॥
बबकै ॥
उथकै ॥२५५॥

भगउती छंद ॥

कि जुटैत बीरं ॥
कि छुटैत तीरं ॥
कि फुटैत अंगं ॥
कि जुटैत जंगं ॥२५६॥
कि मचैत सूरं ॥
कि घुमैत हूरं ॥
कि बजैत खगं ॥
कि उठैत अगं ॥२५७॥
कि फुटेति अंगं ॥
कि रुझेति जंगं ॥
कि नचेति ताजी ॥
कि गजेति गाजी ॥२५८॥
कि घलैति घायं ॥
कि झलेति चायं ॥
कि डिगैति धुमी ॥
कि झुमैति झुमी ॥२५९॥
कि छडैति हूहं ॥
कि सुभेति ब्रयूहं ॥
कि डिगैति चेतं ॥
कि नचेति प्रेतं ॥२६०॥
कि बुठेति बाणं ॥
कि जुझेति जुआणं ॥
कि मथेति नूरं ॥
कि तकेति हूरं ॥२६१॥
कि जुजेति हाथी ॥
कि सिझेति साथी ॥
कि भगेति वीरं ॥
कि लगेति तीरं ॥२६२॥

कि रजेति रोसं ॥
कि तजेति होसं ॥
कि खुलेति केसं ॥
कि डुलेति भेसं ॥२६३॥
कि जुझेति हाथी ॥
कि लुझेति साथी ॥
कि छुटेति ताजी ॥
कि गजेति गाजी ॥२६४॥
कि घुंमीति हूरं ॥
कि भुंमीति पूरं ॥
कि जुझेति वीरं ॥
कि लगेति तीरं ॥२६५॥
कि चलैति बाणं ॥
कि रुकी दिसाणं ॥
कि झमकैति तेगं ॥
कि नभि जान बेगं ॥२६६॥
कि छुटेति गोरं ॥
कि बुठेति ओरं ॥
कि गजैति गाजी ॥
कि पेलेति ताजी ॥२६७॥
कि कटेति अंगं ॥
कि डिगेति जंगं ॥
कि मतेति माणं ॥
कि लुझेति जुआणं ॥२६८॥
कि बकैति मारं ॥
कि चकैति चारं ॥
कि ढुकैति ढीठं ॥
न देवेति पीठं ॥२६९॥
कि घलेति सागं ॥
कि बुकैति बागं ॥
कि मुछेति बंकी ॥
कि हठेति हंकी ॥२७०॥
कि बजैति ढोलं ॥
कि बकैति बोलं ॥
कि बजे नगारे ॥
कि जुटे हठिआरे ॥२७१॥
उछकैति ताजी ॥
हमकैत गाजी ॥
छुटकैत तीरं ॥
भटकैत भीरं ॥२७२॥

भवानी छंद ॥

जहा बीर जुटै ॥
सबै ठाट ठटै ॥
कि नेजे पलटै ॥
चमतकार छुटै ॥२७३॥
जहा सार बजै ॥
तहा बीर गजै ॥
मिलै संज सजै ॥
न द्वै पैग भजै ॥२७४॥

कहूं भूर भाजै ॥
कहूं बीर गाजै ॥
कहूं जोध जुटै ॥
कहूं टोप टुटै ॥२७५॥
जहा जोध जुटै ॥
तहा असत्र छुटै ॥
न्रिभै ससत्र कटै ॥
कहूं बीर लुटै ॥२७६॥
कहूं मार बकै ॥
किते बाज उथकै ॥
किते सैण हकै ॥
किते दाव तकै ॥२७७॥
किते घाइ मेलै ॥
किते सैण पेलै ॥
किते भूमि डिगे ॥
तनं स्रोण भिगे ॥२७८॥

दोहरा ॥

इह बिधि मचा प्रचंड रण अरध महूरत उदंड ॥
बीस अयुत दस सत सुभट जुझत भए अडंड ॥२७९॥

रसावल छंद ॥

सुण्यो संभरेसं ॥
भयो अप भेसं ॥
उडी बंब रैणं ॥
छुही सीस गैणं ॥२८०॥
छके टोप सीसं ॥
घणं भानु दीसं ॥
ससं नाह देही ॥
कथं उकति केही ॥२८१॥
मनो सिध सुधं ॥
सुभी ज्वाल उधं ॥
कसे ससत्र त्रोणं ॥
गुरू जाणु द्रोणं ॥२८२॥
महा ढीठ ढूके ॥
मुखं मार कूके ॥
करै ससत्र पातं ॥
उठै असत्र घातं ॥२८३॥
खगं खग बजै ॥
नदं मछ लजै ॥
उठै छिछ इछं ॥
बहै बाण तिछं ॥२८४॥
गिरे बीर धीरं ॥
धरे बीर चीरं ॥
मुखं मुछ बंकी ॥
मचे बीर हंकी ॥२८५॥
छुटै बाण धारं ॥
धरे खग सारं ॥
गिरे अंग भंगं ॥

चले जाइ जंगं ॥२८६॥
नचे मासहारं ॥
हसै बिओम चारं ॥
पुऐ ईस सीसं ॥
छली बारुणीसं ॥२८७॥
छुटै ससत्र धारं ॥
कटै असत्र झारं ॥
गिरे रत खेतं ॥
कटे बीर अचेतं ॥२८८॥
उठै क्रुध धारं ॥
मचे ससत्र झारं ॥
खहे खग खूनी ॥
चड़ै चउप दूनी ॥२८९॥
पिपं स्रोण देवी ॥
हसै अंसु भेवी ॥
अटा अट हासं ॥
सु जोतं प्रकासं ॥२९०॥
ढुके ढीठ ढालं ॥
नचे मुंड मालं ॥
करै ससत्र पातं ॥
उठै असत्र घातं ॥२९१॥
रुपे वीर धीरं ॥
तजै ताण तीरं ॥
झमै बिजु बेगं ॥
लसै एम तेगं ॥२९२॥
खहे खग खूनी ॥
चड़ै चौप दूनी ॥
करै चित्र चारं ॥
बकै मारु मारं ॥२९३॥
अपो आप दाबै ॥
रणं बीर फाबै ॥
घणं घाइ पेलै ॥
महा वीर झेलै ॥२९४॥
मंडे वीर सुधं ॥
करै मल जुधं ॥
अपो आप बाहै ॥
उभै जीत चाहै ॥२९५॥
रणं रंग रते ॥
चड़े तेज तते ॥
खुले खग खूनी ॥
चड़े चउप दूनी ॥२९६॥
नभं हूर पूरं ॥
भए वीर चूरं ॥
बजै तूर ताली ॥
नचे मुंड माली ॥२९७॥
रणं रूह उठै ॥
सरं धार बुठै ॥
गजै वीर गाजी ॥
तुरे तुंद ताजी ॥२९८॥

चौपई ॥

भइओ घोर आहव बिकरारा ॥
नाचे भूत प्रेत बैतारा ॥
बैरक बाण गगन गइओ छाई ॥
जानुक रैन दिनहि हुइ आई ॥२९९॥
कहूं पिसाच प्रेत नाचै रणि ॥
जूझ जूझ कहूं गिरे सुभट गण ॥
भईरव करत कहूं भभकारा ॥
उडत काक कंकै बिकरारा ॥३००॥
बाजत ढोल म्रिदंग नगारा ॥
ताल उपंग बेण बंकारा ॥
मुरली नाद नफीरी बाजे ॥
भीर भयानक हुऐ तजि भाजे ॥३०१॥
महा सुभट जूझे तिह ठामा ॥
खरभर परी इंद्र के धामा ॥
बैरक बाण गगन गइओ छाई ॥
उठै घटा सावण जनु आई ॥३०२॥

तोमर छंद ॥

बहु भाति कोपे सबीर ॥
धनु तानि तिआगत तीर ॥
सर अंगि जासु लगंत ॥
भट सुरगि बास करंत ॥३०३॥
कहूं अंग भंग उतंग ॥
कहूं तीर तेग सुरंग ॥
कहूं चउर चीर सुबाह ॥
कहूं सुध सेल सनाह ॥३०४॥
रणि अंग रंगत ऐस ॥
जनु फुल किंसक जैस ॥
इक ऐस जूझ मरंत ॥
जनु खेलि फागु बसंत ॥३०५॥
इक धाइ आइ परंत ॥
पग द्वै न भागि चलंत ॥
तजि त्रास करत प्रहार ॥
जनु खेल फागि धमार ॥३०६॥

तारक छंद ॥

कलकी अवतार रिसावहिगे ॥
भट ओघ प्रओघ गिरावहिगे ॥
बहु भातन ससत्र प्रहारहिगे ॥
अरि ओघ प्रओघ संघारहिगे ॥३०७॥
सर सेल सनाहरि छूटहिगे ॥
रण रंगि सुरासुर जूटहिगे ॥
सर सेल सनाहरि झारहिगे ॥
मुख मार पचार प्रहारहिगे ॥३०८॥
जमडढ क्रिपाण निकारहिगे ॥
करि कोप सुरासुर झारहिगे ॥
रणि लुथ पै लुथ गिरावहिगे ॥

लखि प्रेत परी रहसावहिगे ॥३०९ ॥
रणि गूड़ अगूड़णि गजहिगे ॥
लखि भीर भयाहव भजहिगे ॥
सर बिंद प्रबिंद प्रहारहिगे ॥
रणरंगि अभीत बिहारहिगे ॥३१० ॥
खग उध अधो अध बजहिगे ॥
लखि जोध महा जुध गजहिगे ॥
अणिणेस दुहूं दिस ढूकहिगे ॥
मुख मार महा सुर कूकहिगे ॥३११ ॥
गण गंध्रव देव निहारहिगे ॥
जै सद निनद पुकारहिगे ॥
जमदाड़ि क्रिपाणणि बाहहिगे ॥
अधअंग अधोअध लाहहिगे ॥३१२ ॥
रणरंगि तुरंगै बाजहिगे ॥
डफ झाझ नफीरी गाजहिगे ॥
अणिणेस दुहूं दिस धावहिगै ॥
करि काढि क्रिपाण कंपावहिगे ॥३१३ ॥
रणि कुंजर पुंज गरजहिगे ॥
लखि मेघ महा दुति लजहिगे ॥
रिस मंडि महा रण जूटहिगे ॥
छुटि छत्र छटाछट छूटहिगे ॥३१४ ॥
रणणंक निसाण दिसाण घुरे ॥
गड़गज हठी रण रंगि फिरे ॥
करि कोप क्रिपाण प्रहारहिगे ॥
भट घाइ झटाझट झारहिगे ॥३१५ ॥
करि काढि क्रिपाण कंपावहिगे ॥
कलिकी कलि क्रित बढावहिगे ॥
रणि लुथ पलुथ बिथारहिगे ॥
तकि तीर सु बीरन मारहिगे ॥३१६ ॥
घण घुंघर घोर घमकहिगे ॥
रण मो रणधीर पलकहिगे ॥
गहि तेग झड़ाझड़ झाड़हिगे ॥
तकि तीर तड़ातड़ ताड़हिगे ॥३१७ ॥
गज बाज रथी रथ कूटहिगे ॥
गहि केसन एकिन झूटहिगे ॥
लख लातन मुसट प्रहारहिगे ॥
रणि दातन केसनु पारहिगे ॥३१८ ॥
अवणेस अणीणि सुधारहिगे ॥
करि बाण क्रिपाण संभारहिगे ॥
करि रोस दुहूं दिसि धावहिगे ॥
रणि सीझि दिवालय पावहिगे ॥३१९ ॥
छणणंकि क्रिपाण छणकहिगी ॥
झणणकि संजोअ झणकहिगी ॥
कणणंछि कंधारि कणछहिगे ॥
रणरंगि सु चाचर मचहिगे ॥३२० ॥
दुहूं ओर ते साग अनचहिगी ॥
जटि धूरि धरारंगि रचहिगी ॥
करवारि कटारीआ बजहिगी ॥
घट सावणि जाणु सु गजहिगी ॥३२१ ॥
भट दातन पीस रिसावहिगे ॥

दुहूं ओरि तुरंग नचावहिगे ॥
रणि बाण कमाणणि छोरहिगे ॥
हय त्राण सनाहिन फोरहिगे ॥३२२॥
घटि जिउ घणि की घुरि ढूकहिगे ॥
मुख मार दसो दिस कूकहिगे ॥
मुख मार महा सुर बोलहिगे ॥
गिरि कंचन जेमि न डोलहिगे ॥३२३॥
हय कोटि गजी गज जुझहिगे ॥
कवि कोटि कहा लग बुझहिगे ॥
गण देव अदेव निहारहिगे ॥
जै सद निनद पुकारहिगे ॥३२४॥
लख बैरख बान सुहावहिगे ॥
रण रंग समै फहरावहिगे ॥
बर ढाल ढला ढल ढूकहिगे ॥
मुख मार दसो दिसि कूकहिगे ॥३२५॥
तन त्राण पुरजन उडहिगे ॥
गडवार गाडागड गुडहिगे ॥
रणि बैरख बान झमकहिगे ॥
भट भूत परेत भभकहिगे ॥३२६॥
बर बैरख बान क्रिपाण कहूं ॥
रणि बोलत आज लगे अजहूं ॥
गहि केसन ते भ्रमावहिगे ॥
दसहूं दिसि ताकि चलावहिगे ॥३२७॥
अरुणं बरणं भट पेखीअहिगे ॥
तरणं किरणं सर लेखीअहिगे ॥
बहु भाति प्रभा भट पावहिगे ॥
रंग किंसुक देखि लजावहिगे ॥३२८॥
गज बाज रथी रथ जुझहिगे ॥
कवि लोग कहा लगि बुझहिगे ॥
जसु जीत कै गीत बनावहिगे ॥
जुग चार लगै जसु गावहिगे ॥३२९॥
अचलेस दुहूं दिसि धावहिगे ॥
मुखि मारु सु मारु उघावहिगे ॥
हथियार दुहूं दिसि छूटहिगे ॥
सर ओघ रणं धनु टूटहिगे ॥३३०॥

हरि बोल मना छंद ॥

भट गाजहिगे ॥
घन लाजहिगे ॥
दल जूटहिगे ॥
सर छूटहिगे ॥३३१॥
सर बरखहिगे ॥
धनु करखहिगे ॥
असि बाजहिगे ॥
रणि साजहिगे ॥३३२॥
भूअ डिगहिगे ॥
भय भिगहिगे ॥
उठ भाजहिगे ॥
नही लाजहिगे ॥३३३॥
गण देखहिगे ॥

जय लेखहिगे ॥
जसु गावहिगे ॥
मुसकयावहिगे ॥३३४॥
प्रण पूरहिगे ॥
रजि रूरहिगे ॥
रणि राजहिगे ॥
गण लाजहिगे ॥३३५॥
रिस मंडहिगे ॥
सर छंडहिगे ॥
रण जूटहिगे ॥
असि टूटहिगे ॥३३६॥
गल गाजहिगे ॥
नहीं भाजहिगे ॥
असि झारहिगे ॥
अरि मारहिगे ॥३३७॥
गज जूझहिगे ॥
हय लूझहिगे ॥
भट मारीअहिगे ॥
भव तारीअहिगे ॥३३८॥
दिव देखहिगे ॥
जय लेखहिगे ॥
धनि भाखहिगे ॥
चिति राखहिगे ॥३३९॥
जय कारण हैं ॥
अरि हारण हैं ॥
खल खंडनु हैं ॥
महि मंडनु हैं ॥३४०॥
अरि दूखन हैं ॥
भव भूखन हैं ॥
महि मंडनु हैं ॥
अरि डंडनु हैं ॥३४१॥
दल गाहन हैं ॥
असि बाहन हैं ॥
जग कारन हैं ॥
अय धारन हैं ॥३४२॥
मन मोहन हैं ॥
सुभ सोहन हैं ॥
अरि तापन हैं ॥
जग जापन हैं ॥३४३॥
प्रण पूरण हैं ॥
अरि चूरण हैं ॥
सर बरखन हैं ॥
धनु करखन हैं ॥३४४॥
तीअ मोहन हैं ॥
छबि सोहन हैं ॥
मन भावन हैं ॥
घन सावन हैं ॥३४५॥
भव भूखन हैं ॥
भ्रित पूखन हैं ॥
ससि आनन हैं ॥

सम भानन हैं ॥३४६॥
अरि घावन है ॥
सुख दावन हैं ॥
घन घोरन हैं ॥
सम मोरन हैं ॥३४७॥
जगतेस्वर हैं ॥
करुनाकर हैं ॥
भव भूखन हैं ॥
अरि दूखन हैं ॥३४८॥
छबि सोभित हैं ॥
त्रीअ लोभित हैं ॥
द्रिग छाजत हैं ॥
म्रिग लाजत हैं ॥३४९॥
हरणी पति से ॥
नलणी धर से ॥
करुनाबुद हैं ॥
सु प्रभा धर हैं ॥३५०॥
कलि कारण है ॥
भव उधारण है ॥
छबि छाजत है ॥
सुर लाजत है ॥३५१॥
असयुपासक है ॥
अरि नासक है ॥
अरि घाइक है ॥
सुखदाइक है ॥३५२॥
जलजेछ्छण है ॥
प्रण पेछ्छण है ॥
अरि मरदन है ॥
म्रित करदन है ॥३५३॥
धरणीधर है ॥
करणीकर है ॥
धनु करखन है ॥
सर बरखण है ॥३५४॥
छटि छैल प्रभा ॥
लखि चंद लभा ॥
छबि सोहत है ॥
त्रीय मोहत है ॥३५५॥
अरणं बरणं ॥
धरणं धरणं ॥
हरि सी करि भा ॥
सु सुभंत प्रभा ॥३५६॥
सरणालय है ॥
अरि घालय है ॥
छटि छैल घने ॥
अति रूप सने ॥३५७॥
मन मोहत है ॥
छबि सोहत है ॥
कल कारन है ॥
करणाधर है ॥३५८॥
अति रूप सने ॥

जनु मैनु बने ॥
अति क्राति धरे ॥
ससि सोभ हरे ॥३५९॥
अस्त्रय उपासिक हैं ॥
अरि नासिक हैं ॥
बर दाइक हैं ॥
प्रभ पाइक हैं ॥३६०॥

संगीत भुजंग प्रयात छंद ॥

बागड़दं बीरं जागड़दं जूटे ॥
तागड़दं तीरं छागड़दं छूटे ॥
सागड़दं सुआरं जागड़दं जूझे ॥
कागड़दं कोपे रागड़दं रुझै ॥३६१॥
मागड़दं माचिओ जागड़दं जुधं ॥
जागड़दं जोधा कागड़दं क्रुधं ॥
सागड़दं सागं डागड़दं डारे ॥
बागड़दं बीरं आगड़दं उतारे ॥३६२॥
तागड़दं तै कै जागड़दं जुआणं ॥
छागड़दं छोरै बागड़दं बाणं ॥
जागड़दं जूझे बागड़दं बाजी ॥
डागड़दं डोलै तागड़दं ताजी ॥३६३॥
खागड़दं खूनी खयागड़दं खेतं ॥
झागड़दं झूझे आगड़दं अचेतं ॥
आगड़दं उठे कागड़दं कोपे ॥
डागड़दं डारे धागड़दं धोपे ॥३६४॥
नागड़दं नाचे रागड़दं रुद्रं ॥
भागड़दं भाजे छागड़दं छुद्रं ॥
जागड़दं जुझे वागड़दं वीरं ॥
लागड़दं लागे तागड़दं तीरं ॥३६५॥
रागड़दं रुझे सागड़दं सूरं ॥
घागड़दं घुमी हागड़दं हूरं ॥
तागड़दं तकै जागड़दं जुआनं ॥
मागड़दं मोही तागड़दं तानं ॥३६६॥
दागड़दं देखै रागड़दं रूपं ॥
पागड़दं प्रेमं कागड़दं कूपं ॥
डागड़दं डुबी पागड़दं पिआरी ॥
कागड़दं कामं मागड़दं मारी ॥३६७॥
मागड़दं मोही बागड़दं बाला ॥
रागड़दं रूपं आगड़दं उजाला ॥
दागड़दं देखै सागड़दं सूरं ॥
बागड़दं बाजे तागड़दं तूरं ॥३६८॥
रागड़दं रूपं कागड़दं कामं ॥
नागड़दं नाचै बागड़दं बामं ॥
रागड़दं रीझे सागड़दं सूरं ॥
बागड़दं बिआहै हागड़दं हूरं ॥३६९॥
कागड़दं कोपा भागड़दं भूपं ॥
कागड़दं कालं रागड़दं रूपं ॥
रागड़दं रोसं धागड़दं धायो ॥
चागड़दं चल्यो आगड़दं आयो ॥३७०॥
आगड़दं अरड़े गागड़दं गाजी ॥

नागड़दं नाचे तागड़दं ताजी ॥
जागड़दं जुझे खागड़दं खेतं ॥
रागड़दं रहसे पागड़दं प्रेतं ॥३७१॥
मागड़दं मारे बागड़दं बीरं ॥
पागड़दं पराने भागड़दं भीरं ॥
धागड़दं धायो रागड़दं राजा ॥
रागड़दं रणके बागड़दं बाजा ॥३७२॥
टागड़दं टूटे तागड़दं तालं ॥
आगड़दं उठे जागड़दं जुआलं ॥
भागड़दं भाजे बागड़दं बीरं ॥
लागड़दं लागे तागड़दं तीरं ॥३७३॥
रागड़दं रहसी दागड़दं देवी ॥
गागड़दं गैण आगड़दं भेवी ॥
भागड़दं भैरं भागड़दं प्रेतं ॥
हागड़दं हसे खागड़दं खेतं ॥३७४॥

दोहरा ॥

असि टुटे लुटे घने तुटे ससत्र अनेक ॥
जे जुटे कुटे सबै रहि गयो भूपति एक ॥३७५॥

पंकज बाटिका छंद ॥

सैन जुझत न्रिप भयो अति आकुल ॥
धावत भयो सामुहि अति बिआकुल ॥
संनिध ह्वै चित मै अति क्रुधत ॥
आवत भयो रिस कै करि जुधत ॥३७६॥
ससत्र प्रहार अनेक करे तब ॥
जंग जुटिओ अपनो दल लै सब ॥
बाज उठे तह कोटि नगारे ॥
रुझ गिरे रण जुझ निहारे ॥३७७॥

चामर छंद ॥

ससत्र असत्र लै सकोप बीर बोलि कै सबै ॥
कोप ओप दै हठी सु धाइ कै परे सबै ॥
कान के प्रमान बान तानि तानि तोर ही ॥
सु जूझि जूझ कै परै न नैकु मुख मोर ही ॥३७८॥
बान पानि लै सबै सक्रुध सूरमा चले ॥
बीनि बीनि जे लए प्रबीन बीरहा भले ॥
संक छोर कै भिरै निसंक घाइ डार ही ॥
सु अंग भंग हुइ गिरैं न जंग ते पधार ही ॥३७९॥

निसपालिक छंद ॥

आनि सर तानि अरु मान करि छोर हीं ॥
ऐन सर चैन करि तैन करि जोर हीं ॥
घाव करि चाव करि आनि करि लाग हीं ॥
छाडि रणि खाइ ब्रिण बीर बर भाग हीं ॥३८०॥
क्रोध करि बोधि हरि सोधि अरि धावहीं ॥
जोध बर क्रोध धरि बिरोधि सर लावहीं ॥
अंग भट भंग हुऐ जंग तिह डिगहीं ॥

संगि बिनु रंगि रण स्रोण तन भिगहीं ॥३८१॥
धाइ भटि आइ रिस खाइ असि झारहीं ॥
सोर करि जोरि सर तोर अरि डारहीं ॥
प्रान तजि पै न भजि भूमि रन सोभहीं ॥
पेखि छबि देखि दुति नारि सुर लोभहीं ॥३८२॥
भाज नह साजि असि गाजि भट आवहीं ॥
क्रोध करि बोध हरि जोध असि लावहीं ॥
जूझि रणि झालि ब्रिण देव पुरि पावहीं ॥
जीति कै गीत कुलि रीत जिम गावहीं ॥३८३॥

नराज छंद ॥

साज साज कै सबै सलाज बीर धावहीं ॥
जूझि जूझ के मरै प्रलोक लोक पावहीं ॥
धाइ धाइ कै हठी अघाइ घाइ झेलहीं ॥
पछेल पाव न चलै अरैल बीर ठेलहीं ॥३८४॥
कोप ओप दै सबै सरोख सूर धाइ हैं ॥
धाइ धाइ जूझ हैं अरूझि जूझि जाइ हैं ॥
सु असत्र ससत्र मेल कै प्रहार आनि डारहीं ॥
न भाजि गाज है हठी निसंक घाइ मारहीं ॥३८५॥
म्रिदंग ढोल बासुरी सनाइ झाझ बाज हैं ॥
सु पाव रोप कै बली सकोप आनि गाज हैं ॥
सु बूझि बूझ कै हठी अरूझि आनि जूझ हैं ॥
सु अंध धुंध हुइ रही दिसा विसा न सूझ हैं ॥३८६॥
सरोख कालि केसरी संघारि सैण धाइ हैं ॥
अगसत सिंधु की जिमं पचाइ सैन जाइ हैं ॥
संघारि बाहणीस को अनीस तीर गाज हैं ॥
बिसेख जुध मंड है असेख ससत्र बाज हैं ॥३८७॥

सवैया छंद ॥

आवत ही न्रिप के दल ते हरि बाज करी रथ कोटिक कूटे ॥
साज गिरे न्रिप राज कहूं बर बाज फिरै हिहनावत छूटे ॥
ताज कहूं गजराज रणं भट केसन ते गहि केसन जूटे ॥
पउन समान बहै कलि बान सबै अरि बादल से चलि फूटे ॥३८८॥
धाइ परे करि कोप बड़े भट बान कमान क्रिपान संभारे ॥
पटिस लोहहथी परसा करि क्रोध चहूं दिस चउक प्रहारे ॥
कुंजर पुंज गिरे रणि मूरधन सोभत है अति डील डिलारे ॥
रावण राम समै रण के गिरिराज नो हनवंति उखारे ॥३८९॥
चओपु चरी चतुरंग चमूं करुणालय के पर सिंधुर पेले ॥
धाइ परे करि कोप हठी कर काटि सबै पग द्वै न पिछेले ॥
बान कमान क्रिपानन के घन स्याम घने तनि आयुध झेले ॥
स्रोन रंगे रमणीअ रमापति फागुन अंति बसंत से खेले ॥३९०॥
घाइ सबै सहि कै कमलापति कोपि भर्यो करि आयुध लीने ॥
दुजन सैन बिखै धसि कै छिन मै बिन प्राण सबै अरि कीने ॥
टूट परे रमणी अस भूखण बीर बली अति सुंदर चीने ॥
यौ उपमा उपजी मन मै रण भूमि को मानहु भूखन दीने ॥३९१॥
चउपि चड़िओ करि कोप कली क्रित आयुध अंग अनेकन साजे ॥
ताल म्रिदंग उपंग मुचंग सु भाति अनेक भली बिधि बाजे ॥
पूरि फटी छुटि धूर जटी जट देव अदेव दोऊ उठि भाजे ॥
कोप कछू करि कै चित मो कलकी अवतार जबै रणि गाजे ॥३९२॥

बाज हने गजराज हने न्रिपराज हने रण भूमि गिराए ॥
डोलि गिरिओ गिर मेर रसातल देव अदेव सबै भहराए ॥
सातोऊ सिंधु सुकी सरता सब लोक अलोक सबै थहराए ॥
चउक चके द्रिगपाल सबै किह पै कलकी करि कोप रिसाए ॥३९३॥
बान कमान संभारि हठी हठ ठानि हठी रणि कोटिकु मारे ॥
जाघ कहूं सिर बाह कहूं असि रेणु प्रमाण सबै करि डारे ॥
बाज कहूं गजराज धुजा रथ उसट परे रणि पुसट बिदारे ॥
जानुक बाग बनिओ रणि मंडल पेखन कउ जटि धूर पधारे ॥३९४॥
लाज भरे अरिराज चहूं दिस भाजि चले नही आनि घिरे ॥
गहि बान क्रिपान गदा बरछी छट छैल छके चित चौप चिरे ॥
प्रतिमान सुजान अजानु भुजा करि पैज परे नही फेरि फिरे ॥
रण मो मरि कै जस को करि कै हरि सो लरि कै भव सिंधु तरे ॥३९५॥
रंग सो जानु सुरंगे है सिंधुर छूटी है सीस पै स्रोन अलेलै ॥
बाज गिरे भट राज कहूं बिचले कुप कै कल के असि केलै ॥
चाचर जानु करै बसुधा पर जूझि गिरे पग द्वै न पछेलै ॥
जानुक पान कै भंग मलंग सु फागुन अंति बसंत सो खेलै ॥३९६॥
जेतक जीति बचे सु सबै भट चओप चड़े चहुं ओरन धाए ॥
बान कमान गदा बरछी असि काढि लए कर मो चमकाए ॥
चाबुक मारि तुरंग धसे रनि सावन की घटि जिउ घहराए ॥
स्री कलकी करि लै करवारि सु एक हने अरि अनेक पराए ॥३९७॥
मार मची बिसंभार जबै तब आयुध छोरि सबै भट भाजे ॥
डारि हथ्यार उतारि सनाहि सु एक ही बार भजे नही गाजे ॥
स्री कलकी अवतार तहा गहि ससत्र सबै इह भाति बिराजे ॥
भूमि अकास पतार चकिओ छबि देव अदेव दोऊ लखि लाजे ॥३९८॥
देखि भजी प्रतिना अरि की कलकी अवतार हथ्यार संभारे ॥
बान कमान क्रिपान गदा छिन बीच सबै करि चूरन डारे ॥
भागि चले इह भाति भटा जिमि पउन बहे द्रुम पात निहारे ॥
पैन परी कछु मान रहिओ नहि बानन डारि निदान पधारे ॥३९९॥

सुप्रिआ छंद ॥

कहूं भट मिलत मुखि मार उचारत ॥
कहूं भट भाजि पुकारत आरत ॥
केतक जोध फिरत दल गाहत ॥
केतक जूझ बरंगन ब्रयाहत ॥४००॥
कहूं बर बीर फिरत सर मारत ॥
कहूं रण छोडि भजत भट आरत ॥
केई डरु डारि हनत रणि जोधा ॥
केई मुखि मार रटत करि क्रोधा ॥४०१॥
केई खग खंडि गिरत रणि छत्री ॥
केतक भागि चलत त्रसि अत्री ॥
केतक निभ्रम जुध मचावत ॥
आहव सीझि दिवालय पावत ॥४०२॥
केतक जूझि मरत रण मंडलि ॥
केईकु भेदि चले ब्रहमंडल ॥
केईकु आनि प्रहारत सागै ॥
केतक भंग गिरत हुइ आंगै ॥४०३॥

बिसेख छंद ॥

भाजि बिना भट लाज सबै तजि साज जहा ॥

नाचत भूत पिसाच निसाचर राज तहा ॥
देखत देव अदेव महा रण को बरनै ॥
जूझ भयो जिह भाति सु पारथ सो करनै ॥४०४॥
दाव करै रिस खाइ महा हठ ठान हठी ॥
कोप भरे इह भात सु पावक जानु भठी ॥
क्रुध भरे रणि छत्रज अत्रण झारत है ॥
भाजि चलै नही पाव सु मारि पुकारत है ॥४०५॥
देखत है दिव देव धनै धनि जंपत है ॥
भूम अकास पताल चवो चक कंपत है ॥
भाजत नाहिन बीर महा रणि गाजत है ॥
जछ भुजंगन नारि लखे छबि लाजत है ॥४०६॥
धावत है करि कोप महा सुर सूर तहा ॥
माडत है बिकरार भयंकर जुध जहा ॥
पावत है सुर नारि सु सामुहि जुझत है ॥
देव अदेव गंध्रब सबै क्रित सुझत है ॥४०७॥

चंचला छंद ॥

मारबे को ताहि ताकि धाए बीर सावधान ॥
होन लागे जुध के जहा तहा सबै बिधान ॥
भीम भाति धाइ कै निसंक घाइ करत आइ ॥
जूझि जूझ कै मरै सु देव लोकि बसत जाइ ॥४०८॥
तानि तानि बान को अजानु बाह धावही ॥
जूझि जूझ कै मरै अलोक लोक पावही ॥
रंग जंगि अंग नंग भंग अंगि होइ परत ॥
टूकि टूकि होइ गिरै सु देव सुंद्रीनि बरत ॥४०९॥

त्रिड़का छंद ॥

त्रिड़रिड़ तीरं ॥
ब्रिड़रिड़ बीरं ॥
द्रिड़रिड़ ढोलं ॥
ब्रिड़रिड़ बोलं ॥४१०॥
त्रिड़ड़िड़ ताजी ॥
ब्रिड़ड़िड़ बाजी ॥
ह्रिड़ड़िड़ हाथी ॥
स्रिड़ड़िड़ साथी ॥४११॥
ब्रिड़ड़िड़ बाणं ॥
ज्रिड़ड़िड़ जुआणं ॥
छ्रिड़ड़िड़ छोरैं ॥
ज्रिड़ड़िड़ जोरैं ॥४१२॥
ख्रिड़रिड़ खेतं ॥
प्रिड़रिड़ प्रेतं ॥
झ्रिड़ड़िड़ नाचै ॥
रिड़झिड़ राचै ॥४१३॥
ह्रिड़रिड़ हूरं ॥
प्रिड़रिड़ पूरं ॥
क्रिड़रिड़ काछी ॥
न्रिड़रिड़ नाची ॥४१४॥
त्रिड़रिड़ तेगं ॥
ब्रिड़रिड़ बेगं ॥

न्रिड़रिड़ चमकै ॥
झिड़रिड़ झमकै ॥४१५॥
ज्रिड़रिड़ जोधं ॥
क्रिड़रिड़ क्रोधं ॥
ज्रिड़रिड़ जूझै ॥
ल्रिड़रिड़ लूझै ॥४१६॥
खिड़रिड़ खेतं ॥
अरिड़रिड़ अचेतं ॥
ब्रिड़रिड़ बाजी ॥
ग्रिड़रिड़ गाजी ॥४१७॥
ग्रिड़रिड़ गजणं ॥
भ्रिड़रिड़ भजणं ॥
रिंड़रिड़ राजा ॥
ल्रिड़रिड़ लाजा ॥४१८॥
खिड़रिड़ खाडे ॥
ब्रिड़िरिड़ बाडे ॥
अरिड़रिड़ अंगं ॥
ज्रिड़रिड़ जंगं ॥४१९॥

पाधड़ी छंद ॥

इह भाति सैन जुझी अपार ॥
रणि रोह क्रोह धाए लुझार ॥
तजंत बाण गजंत बीर ॥
उठंत नाद भजंत भीर ॥४२०॥
धाए सबाह जोधा सकोप ॥
कढत क्रिपाण बाहंत धोप ॥
लुझंत सूर जुझंत अपार ॥
जण सेतबंध दिखीअत पहार ॥४२१॥
कटंत अंग भभकंत घाव ॥
सिझंत सूर जुझंत चाव ॥
निरखंत सिध चारण अनंत ॥
उचरंत क्रित जोधन बिअंत ॥४२२॥
नाचंत आप ईसर कराल ॥
बाजंत डउरु भैकरि बिसाल ॥
पोअंत माल काली कपाल ॥
चल चित चख छाडंत ज्वाल ॥४२३॥

रसावल छंद ॥

बजे घोर बाजे ॥
धुणं मेघ लाजे ॥
खहे खेत खत्री ॥
तजे ताणि पत्री ॥४२४॥
गिरै अंग भंगं ॥
नचे जंग रंगं ॥
खुले खग खूनी ॥
चड़े चउप दूनी ॥४२५॥
भयो घोर जुधं ॥
इती काहि सुधं ॥
जिणिओ काल रूपं ॥

भजे सरब भूपं ॥४२६॥
सबै सैण भाजा ॥
फिर्यो आप राजा ॥
ठट्र्यो आणि जुधं ॥
भइओ नाद उधं ॥४२७॥
तजे बाण ऐसे ॥
बणं पत्र जैसे ॥
जलं मेघ धारा ॥
नभं जाणु तारा ॥४२८॥
कर अंसुमाली ॥
सरं सत्रु साली ॥
चहूं ओरि छूटे ॥
महा जोध जूटे ॥४२९॥
चले कीटका से ॥
बढे टिडका से ॥
कनं सिंधु रेतं ॥
तनं रोम तेतं ॥४३०॥
छुटे स्वरण पुखी ॥
सुधं सार मुखी ॥
कलं कंक पत्री ॥
तजे जाणु छत्री ॥४३१॥
गिरै रेत खेतं ॥
नचै भूत प्रेतं ॥
करै चित्र चारं ॥
तजै बाण धारं ॥४३२॥
लहै जोध जोधं ॥
करै घाइ क्रोधं ॥
खहै खग खगै ॥
उठै झाल अगै ॥४३३॥
नचे पखराले ॥
चले बाल आले ॥
हसे प्रेत नाचै ॥
रणं रंगि राचै ॥४३४॥
नचे पारबतीसं ॥
मंडिओ जुध ईसं ॥
दसं दिउस कुधं ॥
भयो घोर जुधं ॥४३५॥
पुनर बीर त्याग्रयो ॥
पगं द्वैकु भाग्यो ॥
फिर्यो फेरि ऐसे ॥
क्रोधी साप जैसे ॥४३६॥
पुनर जुध मंडिओ ॥
सरं ओघ छंडिओ ॥
तजै बीर बाणं ॥
म्रितं आइ त्राणं ॥४३७॥
सभै सिध देखै ॥
कलंक्रित लेखै ॥
धनं धंनि जंपै ॥
लखै भीर कंपै ॥४३८॥

नराज छंद ॥

आनि आनि सूरमा संधानि बान धावहीं ॥
रूझि जूझ कै मरै सु देव नारि पावहीं ॥
सु रीझि रीझि अछरा अलछ सूरणो बरैं ॥
प्रबीन बीनि बीन कै सुधीन पानि कै धरैं ॥४३९॥
सनध बध अध ह्वै बिरुधि सूर धावहीं ॥
सु क्रोध साग तीछणं कि ताकि सत्रु लावहीं ॥
सु जूझि जूझ कै गिरै अलूझ लूझ कै हठीं ॥
अबूझ ओरि धावही बनाइ सैन एकठीं ॥४४०॥

संगीत भुजंग प्रयात छंद ॥

कागड़दं कोपा रागड़दं राजा ॥
घागड़दं घोरे बागड़दं बाजा ॥
फागड़दं फीलं छागड़दं छूटे ॥
सागड़दं सूरं जागड़दं जूटे ॥४४१॥
बागड़दं बाजे नागड़दं नगारे ॥
जागड़दं जोधा मागड़दं मारे ॥
डागड़दं डिगे खागड़दं खूनी ॥
चागड़दं चउपै दागड़दं दूनी ॥४४२॥
हागड़दं हसे सागड़दं सिधं ॥
भागड़दं भाजे बागड़दं ब्रिधं ॥
छागड़दं छुटे तागड़दं तीरं ॥
जागड़दं जुटे बागड़दं बीरं ॥४४३॥
कागड़दं कुहके बागड़दं बाणं ॥
फागड़दं फरके नागड़दं निसाणं ॥
बागड़दं बाजी भागड़दं भेरी ॥
सागड़दं सैणं फागड़दं फेरी ॥४४४॥
भागड़दं भीरं कागड़दं कंपै ॥
मागड़दं मारे जागड़दं जंपै ॥
छागड़दं छप्रं भागड़दं भाजे ॥
चागड़दं चितं लागड़दं लाजे ॥४४५॥
छागड़दं छोरिओ रागड़दं राजं ॥
सागड़दं सैणं भागड़दं भाजा ॥
छागड़दं छूटे बागड़दं बाणं ॥
रागड़दं रोकी दागड़दं दिसाणं ॥४४६॥
मागड़दं मारे बागड़दं बाणं ॥
टागड़दं टूटे तागड़दं ताणं ॥
लागड़दं लागे दागड़दं दाहे ॥
डागड़दं डारे बागड़दं बाहे ॥४४७॥
बागड़दं बरखे फागड़दं फूलं ॥
मागड़दं मिटिओ सागड़दं सूलं ॥
मागड़दं मारिओ भागड़दं भूपं ॥
कागड़दं कोपे रागड़दं रूपं ॥४४८॥
जागड़दं जंपै पागड़दं पानं ॥
दागड़दं देवं आगड़दं आनं ॥
सागड़दं सिधं कागड़दं क्रित ॥
बागड़दं बनाए कागड़दं कबितं ॥४४९॥
रागड़दं गावै कागड़दं कबितं ॥
धागड़दं धावै बागड़दं बित्रं ॥

हागड़दं होही जागड़दं जात्रा ॥
नागड़दं नाचै पागड़दं पात्रा ॥४५०॥

पाधरी छंद ॥

संभर नरेस मारिओ निदान ॥
ढोलं मिदंग बजे प्रमान ॥
भाजे सुबीर तजि जुध त्रासि ॥
तजि ससत्र सरब ह्वै चिति निरास ॥४५१॥
बरखंत देव पुहपण ब्रिसट ॥
होवंत जग जह तह सु इसट ॥
पूजंत लाग देवी कराल ॥
होवंत सिध कारज सु ढाल ॥४५२॥
पावंत दान जाचक दुरंत ॥
भाखंत क्रित जह तह बिअंत ॥
जग धूप दीप जगि आदि दान ॥
होवंत होम बेदन बिधान ॥४५३॥
पूजंत लाग देबी दुरंत ॥
तजि सरब काम जह तह महंत ॥
बाधी धुजान परमं प्रचंड ॥
प्रचुरिओ सु धरम खंडे अखंड ॥४५४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कलकी अवतार संभर नरेस बधह बिजय भएत नाम प्रथम धिआइ बरननं समापतं सतु सुभम सतु ॥1॥*

अथ देसंतर जुध कथनं ॥

रसावल छंद ॥

हण्यो संभरेसं ॥
चतुर चारु देसं ॥
चली धरम चरचा ॥
करै काल अरचा ॥४५५॥
जितिओ देस ऐसे ॥
चड़िओ कोप कैसे ॥
बुलिओ सरब सैणं ॥
करे रकत नैणं ॥४५६॥
दई जीत बंबं ॥
गडिओ जुध खंभं ॥
चमूं चउपि चाली ॥
थिरा सरब हाली ॥४५७॥
उठी कंपि ऐसे ॥
नदं नाव जैसे ॥
चड़े चउप सूरं ॥
रहिओ धूर पूरं ॥४५८॥
छुभे छत्रधारी ॥
अणी जोड़ि भारी ॥
चले कोपि ऐसे ॥
ब्रितं इंद्र जैसे ॥४५९॥
सुभै सरब सैणं ॥

कथै कौण बैणं ॥
चली साजि साजा ॥
बजै जीत बाजा ॥४६०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जिणे गखरी पखरी खगधारी ॥
हणे पखरी भखरी औ कंधारी ॥
गुरजिसतान गाजी रजी रोहि रूमी ॥
हणे सूर बंके गिरे झूमि भूमी ॥४६१॥
हणे काबुली बाबली बीर बाके ॥
कंधारी हरेवी इराकी निसाके ॥
बली बालखी रोहि रूमी रजीले ॥
भजे त्रास कै कै भए बंद ढीले ॥४६२॥
तजे असत्र ससत्रं सजे नारि भेसं ॥
लजै बीर धीरं चले छाडि देसं ॥
गजी बाजि गाजी रथी राज हीणं ॥
तजै बीर धीरं भए अंग छीणं ॥४६३॥
भजे हाबसी हालबी कउक बंद्री ॥
चले बरबरी अरमनी छाडि तंद्री ॥
खुलिओ खग खूनी तहा एक गाजी ॥
दुहूं सैण मधं नचिओ जाइ ताजी ॥४६४॥
लखिओ जुध जंगी महा जंग करता ॥
छुभिओ छत्रधारी रणं छत्रि हरता ॥
दुरं दुरदगामी दलं जुध जेता ॥
छुभे छत्रि हंता जयं जुध हेता ॥४६५॥
महा क्रोध कै बाण छडे अपारं ॥
कटे टटरं फउज फुटी न्रिपारं ॥
गिरी लुथ जुथं मिले हथ बथं ॥
गिरे अंग भंगं रणं मुख जुथं ॥४६६॥
करै केल कंकी किलकैत काली ॥
तजै ज्वाल माला महा जोति ज्वाली ॥
हसै भूत प्रेतं तुटै तथि तालं ॥
फिरै गउर दौरी पुऐ रुंड मालं ॥४६७॥

रसावल छंद ॥

करै जुध क्रुधं ॥
तजै बाण सुधं ॥
बकै मारु मारं ॥
तजै बाण धारं ॥४६८॥
गिरे अंग भंगं ॥
नचे जंग रंगं ॥
दिवं देव देखै ॥
धनं धनि लेखै ॥४६९॥

असता छंद ॥

असि लै कलकी करि कोपि भरिओ ॥
रण रंग सुरंग बिखै बिचरिओ ॥
गहि पान क्रिपाण बिखे न डरिओ ॥
रिस सो रण चित्र बचित्र करिओ ॥४७०॥

करि हाकि हथियार अनेक धरै ॥
रण रंगि हठी करि कोप परै ॥
गहि पानि क्रिपान निदान भिरे ॥
रणि जूझि मरे फिरि ते न फिरे ॥४७१॥
उमडी जनु घोर घमंड घटा ॥
चमकंत क्रिपाण सु बिजु छटा ॥
दल बैरन को पग द्वै न फटा ॥
रुप कै रण मो फिरि आनि जुटा ॥४७२॥
करि कोप फिरे रण रंगि हठी ॥
तप कै जिमि पावक ज्वाल भठी ॥
प्रतिना पति कै प्रतिना इकठी ॥
रिस कै रण मो रुपि सैण जुटी ॥४७३॥
तरवार अपार हजार लसै ॥
हरि जिउ अरि कै प्रतिअंग डसै ॥
रत डूबि समै रणि ऐस हसै ॥
जनु बिजुल जुआल कराल कसै ॥४७४॥

विधूप नराज छंद ॥

खिमंत तेग ऐस कै ॥
जुलंत ज्वाल जैस कै ॥
हसंत जेमि कामिणं ॥
खिमंत जाणु दामिणं ॥४७५॥
बहंत दाइ घाइणं ॥
चलंत चित्र चाइणं ॥
गिरंत अंग भंग इउ ॥
बने सु ज्वाल जाल जिउ ॥४७६॥
हसंत खेति खपरी ॥
भकंत भूत भै धरी ॥
खिमंत जेमि दामिणी ॥
नचंत हेरि कामिणी ॥४७७॥
हहंक भैरवी सुरी ॥
कहंक साध सिधरी ॥
छलंक छिछ इछणी ॥
बहंत तेग तिछणी ॥४७८॥
गणंत गूड़ गंभरी ॥
सुभंत सिप सौ भरी ॥
चलंति चित्र चापणी ॥
जपंत जापु जापणी ॥४७९॥
पुअंत सीस ईसणी ॥
हसंत हार सीसणी ॥
करंत प्रेत निसनं ॥
अगंमगंम भिउ रणं ॥४८०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जबै जंग जंगी रचिओ जंग जोरं ॥
हने बीर बंके तमं जाणु भोरं ॥
तबै कोपि गरजिओ कलकी अवतारं ॥
सजे सरब ससत्रं धसिओ लोह धारं ॥४८१॥
जया सबद उठे रहे लोग पूरं ॥

खुरं खेह उठी छुही जाइ सूरं ॥
छुटे स्वरनपंखी भयो अंधकारं ॥
अंधाधुंद मची उठी ससत्र झारं ॥४८२॥
हणिओ जोर जंगं तजिओ सरब सैणं ॥
त्रिणं दंत थाभै बकै दीन बैणं ॥
मिले दै अकोरं निहोरंत राजं ॥
भजे गरब सरबं तजे राज साजं ॥४८३॥
कटे कासमीरी हठे कसटवारी ॥
कुपे कासकारी बडे छत्रधारी ॥
बली बंगसी गोरबंदी ग्रदेजी ॥
महा मूड़ माजिंद्रानी मजेजी ॥४८४॥
हणे रूसि तूसी क्रिती चित्र जोधी ॥
हठे पारसी यद खूबा सक्रोधी ॥
बुरे बागदादी सिपाहा कंधारी ॥
कुली कालमाछा छुभे छत्रधारी ॥४८५॥
छुटे बाण गोलं उठे अग नालं ॥
घुरे जाण स्यामं घटा जिमि ज्वालं ॥
नचे ईस सीसं पुऐ रुंड मालं ॥
जुझे बीर धीरं बरै बीनि बालं ॥४८६॥
गिरै अंग भंगं भ्रमं रुंड मुंडं ॥
गजी बाज गाजी गिरै बीर झुंडं ॥
इकं हाक हंकैति धरकैत सूरं ॥
उठे तछ मुछं भई लोह पूरं ॥४८७॥

रसावल छंद ॥

अरे जे सु मारे ॥
मिले ते जु हारे ॥
लए सरब संगं ॥
रसे रीझ रंगं ॥४८८॥
दइओ दान एतो ॥
कथै कबि केतो ॥
रिझे सरब राजा ॥
बजे बंब बाजा ॥४८९॥
खुरासान जीता ॥
सबहूं संग लीता ॥
दइओ आप मंत्रं ॥
भले अउर जंत्रं ॥४९०॥
चलिओ दे नगारा ॥
मिलिओ सैन भारा ॥
क्रिपाणी निखंगं ॥
सक्रोधी भड़ंगं ॥४९१॥

तोटक छंद ॥

भूअ कंपत जंपत सेस फणं ॥
घहरंत सु घुंघर घोर रणं ॥
सर तजत गजत क्रोध जुधं ॥
मुख मार उचारि जुझार क्रुधं ॥४९२॥
ब्रिन झलत घलत घाइ घणं ॥
कड़कुट सु पखर बखतरणं ॥

गण गिध सु ब्रिध रडंत नभं ॥
किलकारत डाकिण उच सुभं ॥४९३॥
गणि हूर सु पूर फिरी गगनं ॥
अविलोकि सबाहि लगी सरणं ॥
मुख भावत गावत गीत सुरी ॥
गण पूर सु पखर हूर फिरी ॥४९४॥
भट पेखत पोअत हार हरी ॥
हहरावत हास फिरी पखरी ॥
दल गाहत बाहत बीर ब्रिणं ॥
प्रण पूर सु पछिम जीत रणं ॥४९५॥

दोहरा ॥

जीति सरब पछिम दिसा दछन कीन पिआन ॥
जिमि जिमि जुध तहा परा तिमि तिमि करो बखान ॥४९६॥

तोटक छंद ॥

रणि जंपत जुगिण जूह जयं ॥
कलि कंपत भीरु अभीर भयं ॥
हड़ हसत हसत हास म्रिड़ा ॥
डल डोलस संकत सेस थिरा ॥४९७॥
दिव देखत लेखत धंनि धनं ॥
किलकंत कपालयि क्रूर प्रभं ॥
ब्रिण बरखत परखत बीर रणं ॥
हय घलत झलत जोध जुधं ॥४९८॥
किलकंत कपालिन सिंघ चड़ी ॥
चमकंत क्रिपाण प्रभानि मड़ी ॥
गणि हूर सु पूरत धूरि रणं ॥
अविलोकत देव अदेव गणं ॥४९९॥
रणि भरमत क्रूर कबंध प्रभा ॥
अविलोकत रीझत देव सभा ॥
गणि हूरन ब्रयाहत पूर रणं ॥
रथ थंभत भानु बिलोक भटं ॥५००॥
ढढि ढोलक झाझ म्रिदंग मुखं ॥
डफ ताल पखावज नाइ सुरं ॥
सुर संख नफीरीय भेरि भकं ॥
उठि निरतत भूत परेत गणं ॥५०१॥
दिस पछम जीति अभीत न्रिपं ॥
कुपि कीन पयान सु दछणिणं ॥
अरि भजीय तजीय देस दिसं ॥
रण गजीअ केतक एसुरिणं ॥५०२॥
न्रित न्रितत भूत बिताल बली ॥
गज गजत बजत दीह दली ॥
हय हिंसत चिंसत गूड़ गजी ॥
असि लसत रसत तेग जगी ॥५०३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

हने पछमी दीह दानो दिवाने ॥
दिसा दछनी आनि बाजे निसाने ॥
हने बीर बीजापुरी गोलकुंडी ॥

गिरे तछ मुछं नची रुंड मुंडी ॥५०४॥
सबै सेतुबंधी सुधी बंद्र बासी ॥
मंडे मछबंद्री हठी जुध रासी ॥
द्रही द्रावड़े तेज ताते तिलंगी ॥
हते सूरती जंग भंगी फिरंगी ॥५०५॥
चपे चाद राजा चले चाद बासी ॥
बडे बीर बईदरभि संरोस रासी ॥
जिते दछनी संग लिने सुधारं ॥
दिसा प्राचियं कोपि कीनो सवारं ॥५०६॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कलकी अवतार दछन जै बिजय नाम दूजा धिआय समापतं ॥2॥*

पाधरी छंद ॥

पछमहि जीति दछन उजारि ॥
कोपिओ कछूकु कलकी वतार ॥
कीनो पयाण पूरब दिसाण ॥
बजीअ जैत पत्रं निसाण ॥५०७॥
मागधि महीप मंडे महान ॥
दस चार चारु बिदिया निधान ॥
बंगी कलिंग अंगी अजीत ॥
मोरंग अगोर नयपाल अभीत ॥५०८॥
छजादि करण इकाद पाव ॥
मारे महीप कर कै उपाव ॥
खंडे अखंड जोधा दुरंत ॥
लिनो छिनाइ पूरबु परंत ॥५०९॥
दिनो निकार राछस द्रुबुध ॥
किनो पयान उतर सुक्रुध ॥
मंडे महीप मावास थान ॥
खंडे अखंड खूनी खुरान ॥५१०॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे कलकी वतार पूरब जीत बिजय नाम तीजा धिआय समापतं ॥3॥*

पाधरी छंद ॥

इह भाति पूरब पटन उपटि ॥
खंडे अखंड कटे अकट ॥
फटे अफट खंडे अखंड ॥
बजे निसान मचिओ घमंड ॥५११॥
जोरे सु जंग जोधा जुझार ॥
जो तजे बाण गजत लुझार ॥
भाजंत भीर भहरंत भाइ ॥
भभकंत घाइ डिगे अघाइ ॥५१२॥
साजंत साज बाजत तुफंग ॥
नाचंत भूत भैधर सुरंग ॥
बबकंत बिताल कहकंत काल ॥
डमकंत डउर मुकतंत ज्वाल ॥५१३॥
भाजंत भीर तजि बीर खेत ॥
नाचंत भूत बेताल प्रेत ॥

क्रीड़ंत ईस पोअंत कपाल ॥
निरखत बीर छकि बरत बाल ॥५१४॥
धावंत बीर बाहंत घाव ॥
नाचंत भूत गावंत चाव ॥
डमकंत डउरु नाचंत ईस ॥
रीझंत हिमद्रि अंत सीस ॥५१५॥
गंध्रभ सिध चारण प्रसिध ॥
कथंत काबि सोभंत सिध ॥
गावंत बीन बीना बजंत ॥
रीझंत देव मुनि मनि डुलंत ॥५१६॥
गुंजत गजिंद्र हैवर असंख ॥
बुलत सुबाह मारू बजंत ॥
उठंत नाद पूरत दिसाणं ॥
डुलत महोंद्र महि धर महाणं ॥५१७॥
खुलंत खेति खूनी खतंग ॥
छुटंत बाण जुटे निसंग ॥
भिदंत मरम जुझत सुबाह ॥
घुमंत गैणि अछ्री उछाह ॥५१८॥
सरखंत सेल बरखंत बाण ॥
हरखंत हूर परखंत जुआण ॥
बाजंत ढोल डउरू कराल ॥
नाचंत भूत भैरो कपालि ॥५१९॥
हरड़ंत हथ खरड़ंत खोल ॥
टिरड़ंत टीक झिरड़ंत झोल ॥
दरड़ंत दीह दानो दुरंत ॥
हरड़ंत हास हसत महंत ॥५२०॥

उतभुज छंद ॥

हहासं कपालं ॥
सु बासं छतालं ॥
प्रभासं ज्वालं ॥
अनासं करालं ॥५२१॥
महा रूप धारे ॥
दुरं दुख तारे ॥
सरंनी उधारे ॥
अघी पाप वारे ॥५२२॥
दिपै जोति ज्वाला ॥
किधौ ज्वाल माला ॥
मनो ज्वाल बाला ॥
सरूपं कराला ॥५२३॥
धरे खग पाणं ॥
तिहूं लोग माणं ॥
दयं दीह दानं ॥
भरे सउज मानं ॥५२४॥

अजंन छंद ॥

अजीते जीत जीत कै ॥
अभीरी भाजे भीर ह्वै ॥
सिधारे चीन राज पै ॥

सथोई सरब साथ कै ॥५२५॥
तमंके राजधारी कै ॥
रजीले रोहवारी कै ॥
काटीले काम रूपा कै ॥
कंबोजे कासकारी कै ॥५२६॥
ढमंके ढोल ढालो कै ॥
डमंके डंक वारो कै ॥
घमंके नेज बाजा दे ॥
तमंके तीर ताजा दे ॥५२७॥

पाधरी छंद ॥

जीते अजीत मंडे अमंड ॥
तोरे अतोर खंडे अखंड ॥
भंने अभंन भजे अभजि ॥
खाने खवास मावास तजि ॥५२८॥
संकड़े सूर भंभरे भीर ॥
निरखंत जोध रीझंत हूर ॥
डारंत सीस केसर कटोरि ॥
म्रिग मद गुलाब करपूर घोरि ॥५२९॥
इह भाति जीत तीनं दिसाण ॥
बजिओ सुकोप उतर निसाण ॥
चले सु चीन माचीन देसि ॥
सामंत सुध रावली भेख ॥५३०॥
बजे बजंत्र गजे सुबाह ॥
सावंत देखि अछ्री उछाह ॥
रीझंत देव अदेव सरब ॥
गावंत गीत तज दीन गरब ॥५३१॥
सजिओ सु सैण सुणि चीन राज ॥
बजे बजंत्र सरबं समाज ॥
चले अचल सावंत जुध ॥
बरखंत बाण भर लोह क्रुध ॥५३२॥
खुले खतंग खूनी खत्रिहाण ॥
उझरे जुध जोधा महाण ॥
धुकंत ढोल घुंमंत घाइ ॥
चिकंत चावडी मासु चाइ ॥५३३॥
हसंत हास काली कराल ॥
भभकंत भूत भैरो बिसाल ॥
लागंत बाण भाखंत मास ॥
भाजंत भीर हुइ हुइ उदास ॥५३४॥

रसावल छंद ॥

चड़िओ चीन राजं ॥
सजे सरब साजं ॥
खुले खेति खूनी ॥
चड़े चौप दूनी ॥५३५॥
जुटे जोध जोधं ॥
तजै बाण क्रोधं ॥
तुटै अंग भंगं ॥
भ्रमे रंग जंगं ॥५३६॥

नचे ईस भीसं ॥
पुऐ माल सीसं ॥
करै चित्र चारं ॥
तजै बाण धारं ॥५३७॥
मंडे जोध जोधं ॥
तजे बाण क्रोधं ॥
नदी स्रोण पूरं ॥
फिरी गैण हूरं ॥५३८॥
हसै मुंड माला ॥
तजै जोग ज्वाला ॥
तजै बाण ज्वाणं ॥
ग्रसै दुसट प्राणं ॥५३९॥
गिरे घुंमि भूमी ॥
उठी धूर धूंमी ॥
सुभे रेत खेतं ॥
नचे भूत प्रेतं ॥५४०॥
मिलिओ चीन राजा ॥
भए सरब काजा ॥
लइओ संग कै कै ॥
चलिओ अग्र ह्वै कै ॥५४१॥

छपै छंद ॥

लए संग न्रिप सरब बजे बिजई दुंदभि रण ॥
सुभे सूर संग्राम निरखि रीझई अपछ्र गण ॥
छके देव आदेव जके गंधरब जछ्र बर ॥
चके भूत अरु प्रेत सरब बिदिआधर नर बर ॥
खंकड़ीय काल क्रूरा प्रभा बहु प्रकार उसतति करीय ॥
खंडन अखंड चंडी महा जय ज्रय ज्रय सबदोचरीय ॥५४२॥
भिड़िय भेड़ लड़खड़िय मेरु झड़पड़िय पत्र बण ॥
डुलिय इंदु तड़फड़ फनिंद संकुड़िय द्रवण गण ॥
चकियो गइंद धधकय चंद भंभजिग दिवाकर ॥
डुलग सुमेरु डगग कुमेर सभ सुकग साइर ॥
ततजग ध्यान तब धूरजटी सहि न भार सकग थिरा ॥
उछलग नीर पछुलग पवन सु डग डग डग कंपगु धरा ॥५४३॥
चलगु बाणु रुकिग दिसाण पब्रय पिसान हूअ ॥
डिगगु बिंध उछलगु सिंधु कंपगु सुनि मुनि धूअ ॥
ब्रहम बेद तज भजगु इंद्र इंद्रासणि तजगु ॥
जदिन क्रूर कलकीवतार क्रुधत रणि गजगु ॥
उछरंत धूरि बाजन खुरीय सब अकास मगु छाइ लीअ ॥
जणु रचीय लोक करि कोप हरि असटकास खटु धरणि कीअ ॥५४४॥
चक्रित चारु चक्रवे चक्रित सिर सहंस सेस फण ॥
धकत मछ मावास छोडि रण भजग द्रवण गण ॥
भ्रमत काक कुंडलीअ गिध उधहूं ले उडीय ॥
बमत ज्वाल खंकालि लुथ हथों नही छुटीय ॥
टुटंत टोप फुटंत जिरह दसतराग पखर तुरीय ॥
भजंत भीर रिझंत मन निरखि सूर हूरैं फिरीय ॥५४५॥

माधो छंद ॥

जब कोपा कलकी अवतारा ॥

बाजत तूर होत झनकारा ॥
हा हा माधो बान कमान क्रिपान संभारे ॥
पैठे सुभट हथ्यार उघारे ॥५४६॥
लीन मचीन देस का राजा ॥
ता दिन बजे जुझाऊ बाजा ॥
हा हा माधो देस देस के छत्र छिनाए ॥
देस बिदेस तुरंग फिराए ॥५४७॥
चीन मचीन छीन जब लीना ॥
उतर देस पयाना कीना ॥
हा हा माधो कह लौ गनो उतरी राजा ॥
सभ सिरि डंक जीत का बाजा ॥५४८॥
इह बिधि जीति जीत कै राजा ॥
सभ सिरि नाद बिजै का बाजा ॥
हा हा माधो जह तह छाडि देस भजि चले ॥
जित तित दीह दनुज दल मले ॥५४९॥
कीने जग अनेक प्रकारा ॥
देसि देस के जीति न्रिपारा ॥
हा हा माधो देस बिदेस भेट लै आए ॥
संत उबारि असंत खपाए ॥५५०॥
जह तह चली धरम की बाता ॥
पापहि जात भई सुधि साता ॥
हा हा माधो कलि अवतार जीत घर आए ॥
जह तह होवन लाग बधाए ॥५५१॥
तब लो कलिजुगात नीयरायो ॥
जह तह भेद सबन सुनि पायो ॥
हा हा माधो कलकी बात तबै पहचानी ॥
सतिजुग की आगमता जानी ॥५५२॥

अनहद छंद ॥

सतिजुग आयो ॥
सभ सुनि पायो ॥
मुनि मन भायो ॥
गुन गन गायो ॥५५३॥
सब जग जानी ॥
अकथ कहानी ॥
मुनि गनि मानी ॥
किनहु न जानी ॥५५४॥
सभ जग देखा ॥
अन अन भेखा ॥
सुछबि बिसेखा ॥
सहित भिखेखा ॥५५५॥
मुनि मन मोहे ॥
फुल गुल सोहे ॥
सम छबि को है ॥
ऐसे बनिओ है ॥५५६॥

तिलोकी छंद ॥

सतिजुग आदि कलिजुग अंतह ॥
जह तह आनंद संत महंतह ॥

जह तह गावत बजावत ताली ॥
नाचत सिव जी हसत ज्वाली ॥५५७॥
बाजत डउरू राजत तंत्री ॥
रीझत राजं सीझस अत्री ॥
बाजत तूरं गावत गीता ॥
जह तह कलकी जुधन जीता ॥५५८॥

मोहन छंद ॥

अरि मारि कै रिपु टार कै न्रिप मंडली संग कै लीओ ॥
जत्र तत्र जिते तिते अति दान मान सबै दीओ ॥
सुर राज ज्यो न्रिप राज हुऐ गिर राज से भट मार कै ॥
सुख पाइ हरख बढाइकै ग्रहि आइयो जसु संग लै ॥५५९॥
अरि जीत जीत अभीत ह्वै जगि होम जग घने करे ॥
देसि देसि असेस भिछक रोग सोग सबै हरे ॥
कुर राज जिउ दिज राज के बहु भाति दारिद मार कै ॥
जगु जीति संभर को चलयो जगि जित कित बिथार कै ॥५६०॥
जग जीति बेद बिथार के जग सु अरथ अरथ चितारीअं ॥
देसि देसि बिदेस मै नव भेजि भेजि हकारीअं ॥
धर दाड़ जिउ रण गाड़ हुइ तिरलोक जीत सबै लीए ॥
बहु दान दै सनमान सेवक भेज भेज तहा दीए ॥५६१॥
खल खंडि खंडि बिहंड कै अरि दंड दंड बडो दीयो ॥
अरब खरब अदरब दरब सु जीत कै आपनो कीयो ॥
रणजीत जीत अजीत जोधन छत्र अत्र छिनाईअं ॥
सरदार बिंसति चार कलि अवतार छत्र फिराईअं ॥५६२॥

मथान छंद ॥

छाजै महा जोति ॥
भानं मनोदोति ॥
जगि संक तज दीन ॥
मिलि बंदना कीन ॥५६३॥
राजै महा रूप ॥
लाजै सबै भूप ॥
जग आन मानीसु ॥
मिलि भेट लै दीसु ॥५६४॥
सोभे महाराज ॥
अछी रहै लाज ॥
अति रीझि मधु बैन ॥
रस रंग भरे नैन ॥५६५॥
सोहत अनूपाछ ॥
काछे मनो काछ ॥
रीझै सुरी देखि ॥
रावलड़े भेखि ॥५६६॥
देखे जिनै नैकु ॥
लागै तिसै ऐख ॥
रीझै सुरी नारि ॥
देखै धरे पाਿਰ ॥५६७॥
रंगे महा रंग ॥
लाजै लखि अनंग ॥
चितगं चिरै सत्र ॥

लगै जनो अत्र ॥५६८॥
सोभे महा सोभ ॥
अछ्री रहै लोभि ॥
आंजे इसे नैन ॥
जागे मनो रैन ॥५६९॥
रूपं भरे राग ॥
सोभे सु सुहाग ॥
काछे नटं राज ॥
नाचै मनो बाज ॥५७०॥
आखैं मनो बान ॥
कैधो धरे सान ॥
जाने लगे जाहि ॥
या को कहै काहि ॥५७१॥

सुखदा ब्रिद छंद ॥

कि काछे काछ धारी हैं ॥
कि राजा अधिकारी हैं ॥
कि भाग को सुहाग हैं ॥
कि रंगो अनुराग हैं ॥५७२॥
कि छोभै छत्र धारी छै ॥
कि छत्री अत्र वारी छै ॥
कि आंजे बान बानी से ॥
कि काछी काछ कारी हैं ॥५७३॥
कि कामी काम बान से ॥
कि फूले फूल माल से ॥
कि रंगे रंग राग से ॥
कि सुंदर सुहाग से ॥५७४॥
कि नागनी के एस हैं ॥
कि म्रिगी के नरेस छै ॥
कि राजा छत्र धारी हैं ॥
कि काली के भिखारी छै ॥५७५॥
सोरठा ॥
इम कलकी अवतारि जीते जुध सबै न्रिपति ॥
कीनो राज सुधारि बीस सहस दस लछ बरख ॥५७६॥

रावणबाद छंद ॥

गही समसेर ॥
कीयो जंगि जेर ॥
दए मति फेर ॥
न लागी बेर ॥५७७॥
दयो निज मंत्र ॥
तजै सभ तंत्र ॥
लिखै निज जंत्र ॥
सु बैठि इकंत्र ॥५७८॥

बान तुरंगम छंद ॥

बिबिध रूप सोभै ॥
अनिक लोग लोभै ॥
अमित तेज ताहि ॥

निगम गनत जाहि ॥५७९ ॥
अनिक भेख ता के ॥
बिबिध रूप वा के ॥
अनूप रूप राजै ॥
बिलोकि पाप भाजै ॥५८० ॥
बिसेख प्रबल जे हुते ॥
अनूप रूप संजुते ॥
अमित अरि घावहीं ॥
जगत जसु पावहीं ॥५८१ ॥
अखंड बाहु है बली ॥
सुभंत जोति निरमली ॥
सु होम जग को करैं ॥
परम पाप को हरैं ॥५८२ ॥

तोमर छंद ॥

जग जीतिओ जब सरब ॥
तब बाढिओ अति गरब ॥
दीअ काल पुरख बिसार ॥
इह भाति कीन बिचार ॥५८३ ॥
बिनु मोहि दूसर न और ॥
असि मान्यो सब ठउर ॥
जगु जीति कीन गुलाम ॥
आपन जपायो नाम ॥५८४ ॥
जगि ऐस रीति चलाइ ॥
सिर अत्र पत्र फिराइ ॥
सब लोग आपन मान ॥
तरि आंखि अउर न आनि ॥५८५ ॥
नही काल पुरख जपंत ॥
नहि देवि जापु भणंत ॥
तब काल देव रिसाइ ॥
इक अउर पुरख बनाइ ॥५८६ ॥
रचिअसु महिदी मीर ॥
रिसवंत हाठ हमीर ॥
तिह तउन को बधु कीन ॥
पुनि आप मो कीअ लीन ॥५८७ ॥
जग जीति आपन कीन ॥
सब अंति काल अधीन ॥
इह भाति पूरन सु धारि ॥
भए चौबिसे अवतार ॥५८८ ॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे चतुर बिसति कलकी अवतार बरननं समापतं ॥*

अथ महिदी अवतार कथनं ॥

तोमर छंद ॥

इह भाति कै तिंह नासि ॥
कीअ सतिजुग प्रकास ॥

कलिजुग सरब बिहान ॥
निजु जोति जोति समान ॥१॥
महिदी भयों तब गरब ॥
जग जीतयो जब सरब ॥
सिरि अत्र पत्र फिराइ ॥
जग जेर कीन बनाइ ॥२॥
बिनु आपु जानि न और ॥
सब रूप अउ सब ठउर ॥
जिनि एक दिसटि न आन ॥
तिसु लीन काल निदान ॥३॥
बिनु एक दूसर नाहि ॥
सब रंग रूपन माहि ॥
जिनि एक को न पछान ॥
तिह ब्रिथा जनम बितान ॥४॥
बिनु एक दूज न और ॥
जल बा थले सब ठउर ॥
जिनि एक सति न जान ॥
सो जूनि जूनि भ्रमान ॥५॥
तजि एक जाना दूज ॥
मम जानि तासु न सूझ ॥
तिह दूख भूख पिआस ॥
दिन रैनि सरब उदास ॥६॥
नहिं चैन ऐन सु वाहि ॥
नित रोग होवत ताहि ॥
अति दूख भूख मरंत ॥
नही चैन दिवस बितंत ॥७॥
तन पाद कुसट चलंत ॥
बपु गलत नित गलंत ॥
नहिं नित देह अरोग ॥
निति पुत्र पौत्रन सोग ॥८॥
नित नास तिह परिवार ॥
नहि अंत देह उधार ॥
नित रोग सोग ग्रसंत ॥
म्रित स्वान अंत मरंत ॥९॥
तब जानि काल प्रबीन ॥
तिह मारिओ करि दीन ॥
इकु कीट दीन उपाइ ॥
तिस कानि पैठो जाइ ॥१०॥
धसि कीट कानन बीच ॥
तिसु जीतयो जिमि नीच ॥
बहु भाति देइ दुख ताहि ॥
इह भाति मारिओ वाहि ॥११॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे महिदी मीर बध ॥
ब्रहमा अवतार ॥

SECTION 13: SWAYYEY — TV PRASAD SAVAIYE

Swayyey verses — Divine praise in Swayya metre

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

अथ ब्रहमा अवतार कथनं ॥

पातिसाही १० ॥

तोमर छंद ॥

सतिजुगि फिरि उपराजि ॥
सब नउतनै करि साज ॥
सब देस अउर बिदेस ॥
उठि धरम लागि नरेस ॥१॥
कलि काल कोपि कराल ॥
जगु जारिआ तिह ज्वाल ॥
बिनु तासु और न कोई ॥
सब जाप जापो सोइ ॥२॥
जे जाप है कलि नामु ॥
तिसु पूरन हुइ है काम ॥
तिसु दूख भूख न पिआस ॥
निति हरखु कहूं न उदास ॥३॥
बिनु एक दूसर नाहि ॥
सभ रंग रूपन माहि ॥
जिन जापिआ तिहि जापु ॥
तिन के सहाई आप ॥४॥
जे तासु नाम जपंत ॥
कबहूं न भाजि चलंत ॥
नहि त्रासु ता को सत्र ॥
दिसि जीति है गहि अत्र ॥५॥
तिह भरे धन सो धाम ॥
सभ होहि पूरन काम ॥
जे एक नामु जपंत ॥
नाहि काल फासि फसंत ॥६॥
जे जीव जंत अनेक ॥
तिन मो रह्यो रमि एक ॥
बिनु एक दूसर नाहि ॥
जगि जानि लै जीअ माहि ॥७॥
भव गड़न भंजन हार ॥
है एक ही करतार ॥
बिनु एक अउरु न कोइ ॥
सब रूप रंगी सोइ ॥८॥
कई इंद्र पानपहार ॥
कई ब्रहम बेद उचार ॥
कई बैठि दुआरि महेस ॥
कई सेसनाग असेस ॥९॥
कई सूर चंद सरूप ॥
कई इंद्र की सम भूप ॥

कई इंद्र उपिंद्र मुनिंद्र ॥
कई मछ कछ फनिंद्र ॥१०॥
कई कोटि क्रिसन अवतार ॥
कई राम बार बुहार ॥
कई मछ कछ अनेक ॥
अविलोक दुआरि बिसेख ॥११॥
कई सुक्र ब्रसपति देखि ॥
कई दत गोरख भेख ॥
कई राम क्रिसन रसूल ॥
बिनु नाम को न कबूल ॥१२॥
बिनु एकु आस्रै नाम ॥
नहीं और कौनै काम ॥
जे मानि है गुरदेव ॥
ते जानि है अनभेव ॥१३॥
बिनु तासु और न जानु ॥
चित आन भाव न आनु ॥
इक मानि जै करतार ॥
जितु होइ अंति उधारु ॥१४॥
बिनु तास यौ न उधारु ॥
जीअ देखि यार बिचारि ॥
जो जापि है कोई और ॥
तब छूटि है वह ठौर ॥१५॥
जिह राग रंग न रूप ॥
सो मानीऐ सम रूप ॥
बिनु एक ता कर नाम ॥
नहि जान दूसर धाम ॥१६॥
जो लोक अलोक बनाइ ॥
फिर लेत आपि मिलाइ ॥
जो चहै देह उधारु ॥
सो भजन एकंकार ॥१७॥
जिनि राचियो ब्रहमंड ॥
सब लोक औ नव खंड ॥
तिह किउ न जाप जपंत ॥
किम जान कूपि परंत ॥१८॥
जड़ जाप ता कर जाप ॥
जिनि लोक चउदहं थाप ॥
तिसु जापीऐ नित नाम ॥
सभ होहि पूरन काम ॥१९॥
गनि चउबिसै अवतार ॥
बहु कै कहे बिसथार ॥
अब गनो उप अवतार ॥
जिमि धरे रूप मुरार ॥२०॥
जे धरे ब्रहमा रूप ॥
ते कहों काबि अनूप ॥
जे धरे रुद्र अवतार ॥
अब कहों ताहि बिचार ॥२१॥
कलि तासु आगिआ दीन ॥
तब बेद ब्रहमा कीन ॥
तब तासु बाढ्यो गरब ॥
सरि आपु जान न सरब ॥२२॥

सरि मोह कबि नहि कोइ ॥
इक आप होइ त होइ ॥
कछु काल की भूअ बक्र ॥
छिति डारीआ जिम सक्र ॥२३॥
जब गिर्यो भू तरि आनि ॥
मुख चार बेद निधान ॥
उठि लागिआ फिर सेव ॥
जीअ जानि देवि अभेव ॥२४॥
दस लख बरख प्रमान ॥
कीअ देवि सेव महान ॥
किमि होइ मोहि उधार ॥
अस देहु देव बिचार ॥२५॥
देवो वाच ब्रहमा प्रति ॥
मन चित कै करि सेव ॥
तब रीझि है गुरदेव ॥
तब होइ नाथ सनाथ ॥
जगनाथ दीना नाथ ॥२६॥
सुनि बैन यौ मुखचार ॥
कीअ चउक चिंति बिचार ॥
उठि लागिआ हरि सेव ॥
जिह भाति भाख्यो देव ॥२७॥
परि पाइ चंडि प्रचंड ॥
जिह मंड दुसट अखंड ॥
ज्वालाछ लोचन धूम ॥
हनि जासु डारे भूमि ॥२८॥
तिसु जापि हो जब जाप ॥
तब होइ पूरन स्राप ॥
उठि लाग काल जपंन ॥
हठि तिआग आव सरंन ॥२९॥
जे जात तासु सरंनि ॥
ते है धरा मै धंनि ॥
तिन कउ न कउनै त्रास ॥
सब होत कारज रास ॥३०॥
दस लछ बरख प्रमान ॥
रह्यो ठाढ एक पगान ॥
चित लाइ कीनी सेव ॥
तब रीझि गे गुरदेव ॥३१॥
जब भेत देवी दीन ॥
तब सेव ब्रहमा कीन ॥
जब सेव की चित लाइ ॥
तब रीझि गे हरि राइ ॥३२॥
तब भयो सु ऐस उचार ॥
हउ आहि ग्रब प्रहार ॥
मम गरब कहूं न छोरि ॥
सभ कीन जेर मरोरि ॥३३॥
तै गरब कीन सु काहि ॥
नहि मोह भावत ताहि ॥
अब कहो एक बिचार ॥
जिमि होइ तोहि उधार ॥३४॥
धरि सपत भूमि वतार ॥

तब होइ तोहि उधारि ॥
सोई मान ब्रहमा लीन ॥
धरि जनम जगति नवीन ॥३५॥
मुरि निंद उसतति तूलि ॥
इमि जानि जीय जिनि भूलि ॥
इक कहो और बिचार ॥
सुनि लेहु ब्रहम कुमार ॥३६॥
इक बिसनु मोहि धिआन ॥
बहु सेवि मोहि रिझान ॥
तिनि मागिआ बर ऐस ॥
मम दीन ता कहु तैस ॥३७॥
मम तास भेद न कोइ ॥
सब लोक जानत सोइ ॥
तिह जान है करतार ॥
सब लोक अलोक पहार ॥३८॥
जब जब धरे बपु सोइ ॥
जो जो पराक्रम होइ ॥
सो सो कथौ अबिचार ॥
सुनि लेहु ब्रहम कुमार ॥३९॥

नराज छंद ॥

सु धारि मानुखी बपुं संभारि राम जागि है ॥
बिसारि ससत्र असत्रणं जुझार सत्रु भागि है ॥
बिचार जौन जौन भयो सुधारि सरब भाखीयो ॥
हजार कोऊ न कियो करो बिचारि सबद राखीयो ॥४०॥
चितारि बैण वाकिसं बिचारि बालमीक भयो ॥
जुझार रामचंद्र को बिचार चारु उचर्यो ॥
सु सपत काडणो कथ्यो असकत लोकु हुइ रह्यो ॥
उतार चत्रआननो सुधारि ऐस कै कह्यो ॥४१॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे ब्रहमा प्रति आगिआ समापतं ॥*

नराज छंद ॥

सु धारि अवतार को बिचार दूज भाखि है ॥
बिसेख चत्रान के असेख स्वाद चाखि है ॥
अकरख देवि कालिका अनिरख सबद उचरो ॥
सु बीन बीन कै बडे प्राबीन अछ्र को धरो ॥१॥
बिचारि आदि ईस्वरी अपार सबदु राखीऐ ॥
चितारि क्रिपा काल की जु चाहीऐ सु भाखीऐ ॥
न संक चिति आनीऐ बनाइ आप लेहगे ॥
सु क्रित काबि क्रित की कबीस और देहगे ॥२॥
समान गुंग के कवि सु कैसे काबि भाख है ॥
अकाल काल की क्रिपा बनाइ ग्रंथ राखि है ॥
सु भाख्य कउमदी पड़े गुनी असेख रीझ है ॥
बिचारि आपनी क्रितं बिसेख चिति खीझि है ॥३॥
बचित्र काब्रय की कथा पवित्र आज भाखीऐ ॥
सु सिध ब्रिध दाइनी सम्रिध बैन राखीऐ ॥
पवित्र निरमली महा बचित्र काब्रय कथीऐ ॥

पवित्र सबद ऊपजै चरित्र कौ न किजीऐ ॥४॥
सु सेव काल देव की अभेव जानि कीजीऐ ॥
प्रभात उठि तासु को महात नाम लीजीऐ ॥
असंख दान देहिगो दुरंत सत्रु घाइ है ॥
सु पान राखि आपनो अजान को बचाइ है ॥५॥
न संत बार बाकि है असंत जूझि है बली ॥
बिसेख सैन भाज है सितंस रेण निरदली ॥
कि आनि आपु हाथ दै बचाइ मोहि लेहिंगे ॥
दुरंत घाट अउघटे कि देखनै न देहिंगे ॥६॥

◀ इति अवतार बालमीक प्रिथम समापतं ॥1॥

दुतीया अवतार ब्रहमा कसप कथनं ॥

पाधड़ी छंद ॥

पुनि धरा ब्रहम कसप वतार ॥
स्रुति करे पाठ त्रीअ बरी चार ॥
मथनी स्रिसटि कीनी प्रगास ॥
उपजाइ देव दानव सु बास ॥७॥
जो भए रिखि ह्वै गे वतार ॥
तिन को बिचार किनो बिचार ॥
स्रुति करे बेद अरु धरे अरथ ॥
कर दए दूर भूअ के अनरथ ॥८॥
इह भाति कीन दूस्र वतार ॥
अब कहो तोहि तीस्र बिचार ॥
जिह भाति धर्यो बपु ब्रहम राइ ॥
सभ कह्यो ताहि नीके सुभाइ ॥९॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे दुतीय अवतारे ब्रहमा कसप समापतं ॥2॥

अथ त्रितीआ अवतार सुक्र कथनं ॥

पाधड़ी छंद ॥

पुनि धरा तीसर इह भाति रूप ॥
जगि भयो आन करि दैत भूप ॥
तब देब बंस प्रचुर्यो अपार ॥
कीने सु राज प्रिथमी सुधारि ॥१॥

बड पुत्र जानि किनी सहाइ ॥

तीसर अवतार भइओ सुक्र राइ ॥
निंदा ब्रयाज उसतती कीन ॥
लखि तासु देवता भए छीन ॥२॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक गंथे त्रितीआ अवतार ब्रहमा सुक्र समापतं ॥3॥

अथ चतुरथ ब्रहमा बचेस कथनं ॥

पाधड़ी छंद ॥

मिलि दीन देवता लगे सेव ॥
बीते सौ बरख रीझे गुरदेव ॥
तब धरा रूप बाचेस आनि ॥
जीता सुरेस भई असुर हानि ॥३॥
इह भाति धरा चतुरथ वतार ॥
जीता सुरेस हारे दिवार ॥
उठि देव सेव लागे सु सरब ॥
धरि नीच नैन करि दूर गरब ॥४॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे चतुरथ अवतार ब्रहमा बचेस समापतं ॥4॥*

अथ पंचमो अवतार ब्रहमा बिआस मनु राजा को राज कथनं ॥

पाधड़ी छंद ॥

त्रेता बितीत जुग दुआपुरान ॥
बहु भाति देख खेले खिलान ॥
जब भयो आनि क्रिसनावतार ॥
तब भए ब्यास मुख आनि चार ॥५॥
जे जे चरित्र कीअ क्रिसन देव ॥
ते ते भने सु सारदा तेव ॥
अब कहो तउन संछेप ठानि ॥
जिह भाति कीन स्री अभिराम ॥६॥
जिह भाति कथि कीनो पसार ॥
तिह भाति काबि कथि है बिचार ॥
कहो जैस काब्रय कहियो ब्यास ॥
तउने कथान कथो प्रभास ॥७॥
जे भए भूप भूअ मो महान ॥
तिन को सुजान कथत कहान ॥
कह लगे तासि किजै बिचारु ॥
सुणि लेहु बैण संछेप यार ॥८॥
जे भए भूप ते कहे ब्यास ॥
होवत पुराण ते नाम भास ॥
मनु भयो राज महि को भूआर ॥
खड़गन सु पानि महिमा अपार ॥९॥
मानवी स्रिसटि किनी प्रकास ॥
दस चार लोक आभा अभास ॥
महिमा अपार बरने सु कउन ॥
सुणि स्रवण क्रित हुइ रहै मउन ॥१०॥
दस चार चारि बिदिआ निधान ॥
अरि जीति जीति दिनो निसान ॥
मंडे महीप मावास खेति ॥
गजे मसाण नचे परेत ॥११॥
जिते सु देस एसुर मवास ॥
किने खराब खाने ख्वास ॥
भंडे अभंड मंडे महीप ॥
दिने निकार छिने सु दीप ॥१२॥

खंडे सु खेति खूनी खत्रीयाण ॥
मोरे अमोर जोधा दुराण ॥
चले अचल मंडे अमंड ॥
किने घमंड खंडे प्रचंड ॥१३॥
किने सु जेर खूनी खत्रेस ॥
मंडे महीप मावास देस ॥
इह भाति दीह दोही फिराइ ॥
मानी सु मानि मनु राज राइ ॥१४॥
इह भाति दीह करि देस राज ॥
बहु करे जगि अरु होम साज ॥
बहु भाति स्वरण करि कै सु दान ॥
गोदान आदि बिधवत सनान ॥१५॥
जो हुती जग अरु बेद रीति ॥
सो करी सरब न्रिप लाइ प्रीति ॥
भूआ दान दान रतनादि आदि ॥
तिन भाति भाति लिने सुवाद ॥१६॥
करि देस देस इमि नीति राज ॥
बहु भाति दान दे सरब साज ॥
हसतादि दत बाजादि मेध ॥
ते भाति भाति किने न्रिपेध ॥१७॥
बहु साज बाज दिने दिजान ॥
दस चारु चारु बिदिआ सुजान ॥
खट चार सासत्र सिंम्रित रटंत ॥
कोकादि भेद बीना बजंत ॥१८॥
घनसार घोरि घसीअत गुलाब ॥
म्रिग मदित डारि चूवत सराब ॥
कसमीर घास घोरत सुबास ॥
उघटत सुगंध महकंत अवास ॥१९॥

संगीत पाधरी छंद ॥

तागड़दं ताल बाजत मुचंग ॥
बीना सु बैण बंसी म्रिदंग ॥
डफ ताल तुरी सहिनाइ राग ॥
बाजंत जान उपनत सुहाग ॥२०॥
कहूं ताल तूर बीना म्रिदंग ॥
डफ झाझ ढोल जलतर उपंग ॥
जह जह बिलोक तह तह सुबास ॥
उठत सुगंध महकंत अवास ॥२१॥

हरि बोल मना छंद ॥

मनु राज कर्यो ॥
दुख देस हर्यो ॥
बहु साज सजे ॥
सुनि देव लजे ॥२२॥

◀ इति स्री बचित्र नाटके मनु राजा को राज समापतं ॥1॥5॥

अथ प्रिथु राजा को राज कथनं ॥

तोटक छंद ॥

कहं लाग गनो न्रिप जौन भए ॥
प्रभु जोतहि जोति मिलाइ लए ॥
पुनि स्री प्रिथराज प्रिथीस भयो ॥
जिनि बिपन दान दुरंत दयो ॥२३॥
दलु लै दिन एक सिकार चड़े ॥
बनि निरजन मो लखि बाघ बड़े ॥
तह नारि सुकुंतल तेज धरे ॥
ससि सूरज की लखि क्राति हरे ॥२४॥

हरि बोल मना छंद ॥

तह जात भए ॥
म्रिग घात कए ॥
इक देखि कुटी ॥
जनु जोग जुटी ॥२५॥
तह जात भयो ॥
संग को न लयो ॥
लखि नारि खरी ॥
रस रीति भरी ॥२६॥
अति सोभत है ॥
लखि लोभत है ॥
न्रिप पेखि जबै ॥
चिति चउक तबै ॥२७॥
इह कउन जई ॥
जनु रूप मई ॥
छबि देखि छक्यो ॥
चित चाइ चक्रयो ॥२८॥
न्रिप बाह गही ॥
त्रीअ मोन रही ॥
रस रीति रच्यो ॥
दुहूं मैन मच्यो ॥२९॥
बहु भाति भजी ॥
निस लौ न तजी ॥
दोऊ रीझि रहे ॥
नही जात कहे ॥३०॥
रस रीति रच्यो ॥
कल केल मच्यो ॥
अमितासन दे ॥
सुख रासन से ॥३१॥
ललतासन लै ॥
बिबधासन कै ॥
ललना रु लला ॥
करि काम कला ॥३२॥
करि केल उठी ॥
मधि परन कुटी ॥
न्रिप जात भयो ॥
तिह गरभ रहियो ॥३३॥
दिन कै कु गए ॥

तिनि भूर जए ॥
तनि कउच धरे ॥
ससि सोभ हरे ॥३४॥
जनु ज्वाल दवा ॥
अस तेज भवा ॥
रिखि जौन पिखै ॥
चित चउक चकै ॥३५॥
सिसु स्रयान भयो ॥
करि संग लयो ॥
चलि आव तहा ॥
तिह तात जहा ॥३६॥
न्रिप देखि जबै ॥
करि लाज तबै ॥
यह मो न सूअं ॥
त्रीअ कौन तूअं ॥३७॥
त्रीयो बाच राजा प्रति ॥

हरि बोल मना छंद ॥

न्रिप नारि सुई ॥
तुम जौन भजी ॥
मधि परन कुटी ॥
तह केल ठटी ॥३८॥
तब बाच दीयो ॥
अब भूलि गयो ॥
तिस चित करो ॥
मुहि राज बरो ॥३९॥
तब काहि भजो ॥
अब मोहि तजो ॥
इह पूत तुअं ॥
सुनु साच न्रिपं ॥४०॥
नहि स्राप तुझै ॥
भज कैब मुझै ॥
अब तो न तजो ॥
नहि लाज लजो ॥४१॥
न्रिप बाच त्रीया सो ॥
कोई चिन बताउ ॥
कितो बात दिखाउ ॥
हउ यौ न भजो ॥
नहि नारि लजो ॥४२॥
इक मुद्रक लै ॥
न्रिप कै करि दै ॥
इह देखि भलै ॥
कस हेर तलै ॥४३॥
न्रिप जानि गए ॥
पहिचानत भए ॥
तब तउन बरी ॥
बहु भाति भरी ॥४४॥
सिसु सात भए ॥
रस रूप रए ॥
अमितोज बली ॥

दल दीह दली ॥४५॥
हनि भूप बली ॥
जिणि भूमि थली ॥
रिखि बोलि रजी ॥
बिधि जग सजी ॥४६॥
सुभ करम करे ॥
अरि पुंज हरे ॥
अति सूर महा ॥
नहि और लहा ॥४७॥
अति जोति लसै ॥
ससि क्राति कसै ॥
दिस चार चकी ॥
सुर नारि छकी ॥४८॥

रूआल छंद ॥

गारि गारि अखरब गरबिन मारि मारि नरेस ॥
जीति जीति अजीत राजन छीनि देस बिदेस ॥
टारि टारि करोरि पबय दीन उतर दिसान ॥
सपत सिंधु भए धरा पर लीक चक्र रथान ॥४९॥
गाहि गाहि अगाह देसन बाहि बाहि हथियार ॥
तोरि तोरि अतोर भूभ्रिक दीन उत्रहि टार ॥
देस और बिदेस जीति बिसेख राज कमाइ ॥
अंत जोति सु जोति मो मिलि जाति भी प्रिथ राइ ॥५०॥

◄ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे ब्रहमा अवतारे बिआस राजा प्रिथु को राज समापतं ॥2॥5॥*

अथ राजा भरथ राज कथनं ॥

रूआल छंद ॥

जानि अंत समो भयो प्रिथु राज राज वतार ॥
बोलि सरब सम्रिधि संपति मंत्रि मित्र कुमार ॥
सपत द्वीप सु सपत पुत्रनि बाट दीन तुरंत ॥
सपत राज करै लगै सुत सरब सोभावंत ॥५१॥
सपत छत्र फिरै लगै सिर सपत राज कुमार ॥
सपत इंद्र परे धरा परि सपत जान अवतार ॥
सरब सासत्र धरी सबै मिलि बेद रीति बिचारि ॥
दान अंस निकार लीनी अरथ स्वरथ सुधारि ॥५२॥
खंड खंड अखंड उरबी बाटि लीनि कुमार ॥
सपत दीप भए पुनिर नवखंड नाम बिचार ॥
जेसट पुत्र धरी धरा तिह भरथ नाम बखान ॥
भरथ खंड बखान ही दस चार चारु निधान ॥५३॥
कउन कउन कहै कथे कवि नाम ठाम अनंत ॥
बाटि बाटि सबो लए नवखंड द्वीप दुरंत ॥
ठाम ठाम भए नराधिप ठाम नाम अनेक ॥
कउन कउन उचारीऐ करि सूर सरब बिबेक ॥५४॥
सपत दीपन सपत भूप भुगै लगे नवखंड ॥
भाति भातिन सो फिरे असि बाधि जोध प्रचंड ॥

दीह दीह अजीह देसनि नाम आपि भनाइ ॥
आनि जानु दुती भए छिति दूसरे हरि राइ ॥५५॥
आप आप समै सबै सिरि अत्र पत्र फिराइ ॥
जीति जीति अजीत जोधन रोह क्रोह कमाइ ॥
झूठ साच अनंत बोलि कलोल केल अनेक ॥
अंति काल सबै भछे जगि छाडीआ नहि एक ॥५६॥
आप अरथ अनरथ अपरथ समरथ करत अनंत ॥
अंति होत ठटी कछू प्रभू कोटि क्योन न करंत ॥
जान बूझ परंत कूप लहंत मूड़ न भेव ॥
अंति काल तबै बचै जब जान है गुरदेव ॥५७॥
अंति होत ठटी भली प्रभ मूड़ लोग न जानि ॥
आप अरथ पछान ही तजि दीह देव निधान ॥
धरम जानि करत पापन यौ न जानत मूड़ ॥
सरब काल दइआल को कहु प्रयोग गूड़ अगूड़ ॥५८॥
पाप पुंन पछान ही करि पुंन की सम पाप ॥
परम जान पवित्र जापन जपै लाग कुजाप ॥
सिध ठउर न मानही बिनु सिध ठउर पूजंत ॥
हाथि दीपकु लै महा पसु मधि कूप परंत ॥५९॥
सिध ठउर न मान ही अनसिध पूजत ठउर ॥
कै कु दिवस चलाहिगे जड़ भीत की सी दउर ॥
पंख हीन कहा उडाइब नैन हीन निहार ॥
ससत्र हीन जुधा न पैठब अरथ हीन बिचार ॥६०॥
दरब हीण बपार जैसक अरथ बिनु इस लोक ॥
आंख हीण बिलोकबो जगि कामकेल अकोक ॥
गिआन हीण सु पाठ गीता बुधि हीण बिचार ॥
हिंमत हीन जुधान जूझब केल हीण कुमार ॥६१॥
कउन कउन गनाईऐ जे भए भूमि महीप ॥
कउन कउन सु कथीऐ जगि के सु द्वीप अद्वीप ॥
जासु कीन गनै वहै इमि और की नहि सकति ॥
यौ न ऐस पहचानीऐ बिनु तासु की कीए भगति ॥६२॥

◀ *इति राजा भरथ राज समापतं ॥3॥5॥*

अथ राजा सगर राज कथनं ॥

रूआल छंद ॥

स्रेसट स्रेसट भए जिते इह भूमि आनि नरेस ॥
तउन तउन उचारहो तुमरे प्रसादि असेस ॥
भरथ राज बितीत भे भए राजा सगर राज ॥
रुद्र की तपसा करी लीअ लछ सुत उपराजि ॥६३॥
चक्र बक्र धुजा गदा भ्रित सरब राज कुमार ॥
लछ रूप धरे मनो जगि आनि मैन सु धार ॥
बेख बेख बने नरेस्वर जीति देस असेस ॥
दास भाव सबै धरे मनि जत्र तत्र नरेस ॥६४॥
बाज मेध करै लगै हयसालि ते हय चीनि ॥
बोलि बोलि अमोल रितुज मंत्र मित्र प्रबीन ॥
संग दीन समूह सैन ब्रयूह ब्रयूह बनाइ ॥
जत्र तत्र फिरै लगे सिरि अत्र पत्र फिराइ ॥६५॥

जैतपत्र लह्यो जहा तह सत्रु भे सभ चूर ॥
छोरि छोरि भजे नरेस्वर छाडि ससत्र करूर ॥
डारि डारि सनाहि सूर त्रीआन भेस सु धारि ॥
भाजि भाजि चले जहा तह पुत्र मित्र बिसारि ॥६६॥
गाजि गाजि गजे गदाधरि भाजि भाजि सु भीर ॥
साज बाज तजै भजै बिसंभार बीर सुधीर ॥
सूरबीर गजे जहा तह असत्र ससत्र नचाइ ॥
जीति जीति लए सु देसन जैतपत्र फिराइ ॥६७॥
जीति पूरब पछिमै अरु लीन दछनि जाइ ॥
ताकि बाज चल्यो तहा जह बैठि थे मुनि राइ ॥
ध्रयान मधि हुते महा मुनि साज बाज न देखि ॥
प्रिसटि पछ खरो भयो रिखि जानि गोरख भेख ॥६८॥
चउक चित रहे सबै जब देखि नैन न बाज ॥
खोजि खोजि थके सबै दिस चारि चारि सलाज ॥
जानि पयार गयो तुरंगम कीन चिति बिचार ॥
सगर खात खुदै लगे रणधीर बीर अपार ॥६९॥
खोदि खोदि अखोदि प्रिथवी क्रोध जोध अनंत ॥
भछि भछि गए सबै मुख म्रितका दुति वंत ॥
सगर खात खुदै लगे दिस खोद दछन सरब ॥
जीति पूरब को चले अति ठान कै जीअ गरब ॥७०॥
खोद दछन की दिसा पुनि खोद पूरब दिसान ॥
ताकि पछम को चले दस चारि चारि निधान ॥
पैठि उतर दिसा जबै खोदै लगे सभ ठउर ॥
अउर अउर ठटै पसू कलि कालि ठाटी अउर ॥७१॥
खोदि कै बहु भाति प्रिथवी पूजि अरध दिसान ॥
अंति भेद बिलोकीआ मुनि बैठि संजुत ध्यान ॥
प्रिसट पाछ बिलोक बाज समाज रूप अनूप ॥
लात भे मुनि मारिओ अति गरब कै सुत भूप ॥७२॥
ध्रयान छूट तबै मुनी द्रिग ज्वाल माल कराल ॥
भाति भातिन सो उठी जनु सिंध अगनि बिसाल ॥
भसमि भूत भए सबे न्रिप लछ पुत्र सु नैन ॥
बाज राज सु संपदा जुत असत्र ससत्र सु सैन ॥७३॥

मधुभार छंद ॥

भए भसमि भूत ॥
न्रिप सरब पूत ॥
जुत सुभट सैन ॥
सुंदर सुबैन ॥७४॥
सोभा अपार ॥
सुंदर कुमार ॥
जब जरे सरब ॥
तब तजा गरब ॥७५॥
बाहू अजान ॥
सोभा महान ॥
दस चारि वंत ॥
सूरा दुरंत ॥७६॥
जारि भाजे बीर ॥
हुऐ चिति अधीर ॥
दिनो संदेस ॥
जह सागर देस ॥७७॥

लहि सागर बीर ॥
ह्वै चिति अधीर ॥
पुछे संदेस ॥
पूतन सुबेस ॥७८॥
करि जोरि सरब ॥
भट छोरि गरब ॥
उचरे बैन ॥
जल चुअत नैन ॥७९॥
भूअ फेरि बाज ॥
जिणि सरब राज ॥
सब संग लीन ॥
न्रिप बर प्रबीन ॥८०॥
हय गयो पयार ॥
तुअ सुत उदार ॥
भूअ खोद सरब ॥
अति बढा गरब ॥८१॥
तहं मुनि अपार ॥
गुनि गन उदार ॥
लखि मध ध्यान ॥
मुनि मनि महान ॥८२॥
तव पुत्र क्रोध ॥
लै संगि जोध ॥
लता प्रहार ॥
कीअ रिखि अपार ॥८३॥
तब छुटा ध्यान ॥
मुनि मनि महान ॥
निकसी सु ज्वाल ॥
दावा बिसाल ॥८४॥
तरं जरे पूत ॥
कहि ऐसे दूत ॥
सैना समेत ॥
बाचा न एक ॥८५॥
सुनि पुत्र नास ॥
भयो पुरि उदास ॥
जह तह सु लोग ॥
बैठे सु सोग ॥८६॥
सिव सिमर बैण ॥
जल थापि नैण ॥
करि धीरज चिति ॥
मुनि मनि पवित ॥८७॥
तिन म्रितक करम ॥
न्रिप करम धरम ॥
बहु बेद रीति ॥
किनी सु प्रीति ॥८८॥
न्रिप पुत्र सोग ॥
गये सुरग लोगि ॥
न्रिप भे सु जौन ॥
कथि सकै कौन ॥८९॥

◀ *इति राजा सागर को राज समापतं ॥4॥5॥*

अथ जुजाति राजा को राज कथनं

मधुभार छंद ॥

पुनि भयो जुजाति ॥
सोभा अभाति ॥
दस चारवंत ॥
सोभा सुभंत ॥९०॥
सुंदर सु नैन ॥
जन रूप मैन ॥
सोभा अपार ॥
सोभत सुधार ॥९१॥
सुंदर सरूप ॥
सोभंत भूप ॥
दस चारवंत ॥
आभा अभंत ॥९२॥
गुन गन अपार ॥
सुंदर उदार ॥
दस चारिवंत ॥
सोभा सुभंत ॥९३॥
धन गुन प्रबीन ॥
प्रभ को अधीन ॥
सोभा अपार ॥
सुंदर कुमार ॥९४॥
सासत्रग सुध ॥
क्रोधी सु जुध ॥
न्रिप भयो बेन ॥
जन काम धेन ॥९५॥
खूनी सु खग ॥
जोधा अभग ॥
खत्री अखंड ॥
क्रोधी प्रचंड ॥९६॥
सत्रूनि काल ॥
काढी क्रवाल ॥
सम तेज भानु ॥
ज्वाला समान ॥९७॥
जब जुरत जंग ॥
नहि मुरत अंग ॥
अरि भजत नेक ॥
नहि टिकत एक ॥९८॥
थरहरत भानु ॥
कंपत दिसान ॥
मंडत मवास ॥
भजत उदास ॥९९॥
थरहरत बीर ॥
भंभरत भीर ॥
ततजत देस ॥
न्रिपमनि नरेस ॥१००॥
चचकत चंद ॥

धधकत इंद ॥
फनिमन फटंत ॥
भूअधर भजंत ॥१०१॥

संजुता छंद ॥

जस ठौर ठौर सबो सुन्यो ॥
अरि ब्रिंद सीस सबो धुन्नयो ॥
जग जग साज भले करे ॥
दुख पुंज दीनन के हरे ॥१०२॥
इति जुजाति राजा म्रित बसि होत भए ॥५॥५॥

अथ बेन राजे को राज कथनं ॥

संजुता छंद ॥

पुनि बेणु राज महेस भयो ॥
निजि डंड काहूं ते न लयो ॥
जीअ भाति भाति सुखी नरा ॥
अति गरब स्रब छुटिओ धरा ॥१०३॥
जीअ जंत सब दिखियत सुखी ॥
तरि द्रिसटि आवत न दुखी ॥
सब ठौर ठौर प्रिथी बसी ॥
जनु भूमि राज सिरी लसी ॥१०४॥
इह भाति राज कमाइ कै ॥
सुख देस सरब बसाइ कै ॥
बहु दोख दीनन के दहे ॥
सुनि थकत देव समसत भए ॥१०५॥
बहु राज साज कमाइ कै ॥
सिरि अत्रपत्र फिराइ कै ॥
पुनि जोति जोति बिखै मिली ॥
अरि छैनु बेनु महाबली ॥१०६॥
अबिकार भूप जिते भए ॥
करि राज अंत समै गए ॥
कबि कौन नाम तिनै गनै ॥
संकेत करि इते भनै ॥१०७॥
इति बेनु राजा म्रित बस होत भए ॥६॥५॥

अथ मानधाता को राजु कथनं

दोधक छंद ॥

जेतक भूप भए अवनी पर ॥
नाम सकै तिन के कवि को धरि ॥
नाम जथामति भाखि सुनाऊ ॥
चित तऊ अपने डर पाऊ ॥१०८॥
बेनु गए जग ते न्रिपता करि ॥
मानधात भए बसुधा धरि ॥
बासव लोग गए जब ही वह ॥
उठि दयो अरधासन बासव तिह ॥१०९॥

रोस भर्यो तब मान महीधर ॥
हाकि गह्यो करि खग भयंकर ॥
मारन लाग जबै रिस इंद्रहि ॥
बाह गही ततकाल दिजिंद्रहि ॥११०॥
नास करो जिनि बासव को न्रिप ॥
आसन अरध दयो तुह या ब्रत ॥
है लवनास्र महासुर भूधरि ॥
ताहि न मार सके तुम किउ कर ॥१११॥
जौ तुम ताहि संघार कै आवहु ॥
तौ तुम इंद्र सिंघासन पावहु ॥
ऐसे कै अरध सिंघासन बैठहु ॥
साचु कहो पर नाकु न ऐठहु ॥११२॥

असतर छंद ॥

धायो असत्र लै के तहा ॥
मथुरा मंडल दानो था जहा ॥
महा गरबु कै कै महा मंद बुधी ॥
महा जोर कै कै दलं परम क्रुधी ॥११३॥
महा घोर कै कै घनं की घटा जियो ॥
सु धाइआ रणं बिजुली की छटा जियो ॥
सुने सरब दानो सु सामुहि सिधाइ ॥
महा क्रोध कै कै सु बाजी नचाए ॥११४॥

मेदक छंद ॥

अब एक कीए बिनु यौ न टरै ॥
दोऊ दातन पीस हंकारि परै ॥
जब लौ न सुनो लव खेत मरा ॥
तब लउ न लखो रनि बाज टरा ॥११५॥
अब ही रणि एक की एक करै ॥
बिनु एक कीए रणि ते न टरै ॥
बहु साल सिला तल ब्रिछ छुटे ॥
दुहूं ओरि जबै रण बीर जुटे ॥११६॥
कुप कै लव पानि त्रिसूल लयो ॥
सिरि धातयमान दुखंड कियो ॥
बहु जूथप जूथन सैन भजी ॥
न उचाइ सकै सिरु ऐस लजी ॥११७॥
घन जैसे भजे घन घाइल हुऐ ॥
बरखा जिमि स्रोणत धार चुऐ ॥
सभ मान महीपति छेत्रहि दै ॥
सब ही दल भाजि चला जीअ लै ॥११८॥
इक घूमत घाइल सीस फुटे ॥
इक स्रोण चुचावत केस छुटे ॥
रणि मार कै मानि त्रिसूल लीए ॥
भट भातहि भाति भजाइ दीए ॥११९॥

◀ *इति मानधाता राज समापतं ॥7॥5॥*

अथ दलीप को राज कथनं ॥

तोटक छंद ॥

रण मो मान महीप हए ॥
तब आनि दिलीप दिलीस भए ॥
बहु भातिन दानव दीह दले ॥
सब ठौर सबै उठि धरम पले ॥१२०॥

चौपई ॥

जब न्रिप हना मानधाता बर ॥
सिव त्रिसूल करि धरि लवनासुर ॥
भयो दलीप जगत को राजा ॥
भाति भाति जिह राज बिराजा ॥१२१॥
महारथी अरु महा न्रिपारा ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारा ॥
अति सुंदर जनु मदन सरूपा ॥
जानुक बने रूप को भूपा ॥१२२॥
बहु बिधि करे जग बिसथारा ॥
बिधवत होम दान मखसारा ॥
धरम धुजा जह तह बिराजी ॥
इंद्रावती निरखि दुति लाजी ॥१२३॥
पग पग जगि खंभ कहु गाडा ॥
घरि घरि अंन साल करि छाडा ॥
भूखा नाग जु आवत कोई ॥
ततछिन इछ पुरावत सोई ॥१२४॥
जो जिहं मुख मागा तिह पावा ॥
बिमुख आस फिरि भिछक न आवा ॥
धामि धामि धुजा धरम बधाई ॥
धरमावती निरखि मुरछाई ॥१२५॥
मूरख कोऊ रहै नहि पावा ॥
बार बूढ सभ सोधि पढावा ॥
घरि घरि होत भई हरि सेवा ॥
जह तह मानि सबै गुर देवा ॥१२६॥
इह बिधि राज दिलीप बडो करि ॥
महारथी अरु महा धनुर धर ॥
कोक सासत्र सिम्रिति सुर गिआना ॥
जोतिवंत दस चारि निधाना ॥१२७॥
महा क्रमठी महा सुजानू ॥
महा जोति दस चारि निधानू ॥
अति सरूप अरु अमित प्रभासा ॥
महा मान अरु महा उदासा ॥१२८॥
बेद अंग खट सासत्र प्रबीना ॥
धनुरबेद प्रभ के रस लीना ॥
खड़गन ईस्वर पुनि अतुल बल ॥
अरि अनेक जीते जिनि दलि मलि ॥१२९॥
खंड अखंड जीति बड राजा ॥
आनि समान न आपु बिराजा ॥
अति बलिसट असि तेज प्रचंडा ॥
अरि अनेक जिनि साधि उदंडा ॥१३०॥
देस बिदेस अधिक जिह जीता ॥

जह तह चली राज की नीता ॥
भाति भाति सिरि छत्र बिराजा ॥
तजि हठ चरनि लगे बड राजा ॥१३१॥
जह तह होत धरम की रीता ॥
कहूं न पावति होनि अनीता ॥
दान निसान चहूं चक बाजा ॥
करन कुबेर बेणु बलि राजा ॥१३२॥
भाति भाति तन राज कमाई ॥
आ समुद्र लौ फिरी दुहाई ॥
जह तह करम पाप भयो दूरा ॥
धरम करम सभ करत हजूरा ॥१३३॥
जह तह पाप छपा सब देसा ॥
धरम करम उठि लागि नरेसा ॥
आ समुद्र लौ फिरी दुहाई ॥
इह बिधि करी दिलीप रजाई ॥१३४॥

◀ *इति दलीप राज समापतं ॥8॥5॥*

अथ रघु राजा को राज कथनं ॥

चौपई ॥

बहुर जोति सो जोति मिलानी ॥
सब जग ऐस क्रिआ पहिचानी ॥
स्री रघुराज राजु जगि कीना ॥
अत्रपत्र सिरि ढारि नवीना ॥१३५॥
बहुतु भाति करि जगि प्रकारा ॥
देस देस महि धरम बिथारा ॥
पापी कोई निकटि न राखा ॥
झूठ बैन किहूं भूलि न भाखा ॥१३६॥
निसा तासु निस नाथ पछाना ॥
दिनकर ताहि दिवस अनुमाना ॥
बेदन ताहि ब्रहम करि लेखा ॥
देवन इंद्र रूप अविरेखा ॥१३७॥
बिपन सबन ब्रहसपति देख्यो ॥
दैतन गुरू सुक्र करि पेख्यो ॥
रोगन ताहि अउखधी माना ॥
जोगिन परम तत पहिचाना ॥१३८॥
बालन बाल रूप अविरेख्यो ॥
जोगन महा जोग करि देख्यो ॥
दातन महादानि करि मान्यो ॥
भोगन भोग रूप पहचान्यो ॥१३९॥
संनिआसन दत रूप करि जान्यो ॥
जोगन गुर गोरख करि मान्यो ॥
रामानंद बैरागिन जाना ॥
महादीन तुरकन पहचाना ॥१४०॥
देवन इंद्र रूप करि लेखा ॥
दैतन सुंभ राजा करि पेखा ॥
जछन जछ राज करि माना ॥

किन्नन किन्नदेव पहचाना ॥१४१॥
कामिन काम रूप करि देख्यो ॥
रोगन रूप धनंतर पेख्यो ॥
राजन लख्यो राज अधिकारी ॥
जोगन लख्यो जोगीसर भारी ॥१४२॥
छत्रन बडो छत्रपति जाना ॥
अत्रिन महा ससत्रधर माना ॥
रजनी तासु चंद्र करि लेखा ॥
दिनीअर करि तिह दिन अविरेखा ॥१४३॥
संतन साति रूप करि जान्यो ॥
पावक तेज रूप अनुमान्नयो ॥
धरती तासु धराधर जाना ॥
हरणि एणराज पहिचाना ॥१४४॥
छत्रिन ता सबु छत्रिपति सूझा ॥
जोगिन महा जोग कर बूझा ॥
हिमधर ताहि हिमालय जाना ॥
दिनकर अंधकारि अनुमाना ॥१४५॥
जल सरूप जल तासु पछाना ॥
मेघन इंद्रदेव कर माना ॥
बेदन ब्रहम रूप कर देखा ॥
बिपन ब्यास जानि अविरेखा ॥१४६॥
लखमी ताहि बिसनु करि मान्यो ॥
बासव देव बासवी जान्यो ॥
संतन साति रूप करि देखा ॥
सत्रन कलह सरूप बिसेखा ॥१४७॥
रोगन ताहि अउखधी सूझा ॥
भामिन भोग रूप करि बूझा ॥
मित्रन महा मित्र करि जाना ॥
जोगिन परम ततु पहचाना ॥१४८॥
मोरन महा मेघ करि मानिआ ॥
दिनकर चित चकवी जानिआ ॥
चंद सरूप चकोरन सूझा ॥
स्वाति बूंद सीपन करि बूझा ॥१४९॥
मास बसंत कोकिला जाना ॥
स्वाति बूंद चात्रक अनुमाना ॥
साधन सिधि रूप करि देखा ॥
राजन महाराज अविरेखा ॥१५०॥
दान सरूप भिछकन जाना ॥
काल सरूप सत्रु अनुमाना ॥
सासत्र सरूप सिम्रितन देखा ॥
सति सरूप साध अविरेखा ॥१५१॥
सील रूप साधविन चीना ॥
दिआल सरूप दइआ चिति कीना ॥
मोरन मेघ रूप पहिचाना ॥
चोरन ताहि भोर करि जाना ॥१५२॥
कामिन केल रूप करि सूझा ॥
साधन सिधि रूप तिह बूझा ॥
फणपतेस फणीअर करि जान्यो ॥
अंम्रित रूप देवतन मान्यो ॥१५३॥
मणि समान फणीअर करि सूझा ॥

प्राणिन प्रान रूप करि बूझा ॥
रघु बंसीअन रघुराज प्रमान्नयो ॥
केवल क्रिसन जादवन जान्यो ॥१५४॥
बिपति हरन बिपतहि करि जाना ॥
बलि महीप बावन पहचाना ॥
सिव सरूप सिव संतन पेखा ॥
ब्यास परासुर तुल बसेखा ॥१५५॥
बिप्रन बेद सरूप बखाना ॥
छत्रि जुध रूप करि जाना ॥
जउन जउन जिह भाति बिचारा ॥
तउनै काछि काछि अनुहारा ॥१५६॥
भाति भाति तिनि कीनो राजा ॥
देस देस के जीति समाजा ॥
भाति भाति के देस छिनाए ॥
पैग पैग पर जगि कराए ॥१५७॥
पग पग जगि खंभ कहु गाडा ॥
डग डग होम मंत्र करि छाडा ॥
ऐसी धरा न दिखीअत कोई ॥
जगि खंभ जिह ठउर न होई ॥१५८॥
गवालंभ बहु जग करे बर ॥
ब्रहमण बोलि बिसेख धरमधर ॥
बाजमेध बहु बारन कीने ॥
भाति भाति भूय के रस लीने ॥१५९॥
गजा मेध बहु करे जगि तिह ॥
अजा मेध ते सकै न गन किह ॥
गवालंभ करि बिधि प्रकारं ॥
पसु अनेक मारे तिह बारं ॥१६०॥
राजसूअ करि बिबिध प्रकारं ॥
दुतीआ इंद्र रघु राज अपारं ॥
भाति भाति के बिधवत दाना ॥
भाति भाति कर तीरथ नाना ॥१६१॥
सरब तीरथ परि पावर बाधा ॥
अंन छेत्र घरि घरि मै साधा ॥
आसावंत कहूं कोई आवै ॥
ततछिन मुख मंगै सो पावै ॥१६२॥
भूख नाग कोई रहन न पावै ॥
भूपति हुऐ करि रंक सिधावै ॥
बहुर दान कह कर न पसारा ॥
एक बारि रघु राज निहारा ॥१६३॥
स्वरण दान दे बिबिध प्रकारा ॥
रुकम दान नही पायत पारा ॥
साजि साजि बहु दीने बाजा ॥
जन सभ करे रंक रघु राजा ॥१६४॥
हसत दान अर उसटन दाना ॥
गऊ दान बिधिवत इसनाना ॥
हीर चीर दे दान अपारा ॥
मोह सबै महि मंडल डारा ॥१६५॥
बाजी देत गजन के दाना ॥
भाति भाति दीनन सनमाना ॥
दूख भूख काहूं न संतावै ॥

जो मुख मागै वह बरु पावै ॥१६६ ॥
दान सील को जान पहारा ॥
दइआ सिंध रघु राज भुआरा ॥
सुंदर महा धनुख धर आछा ॥
जनु अलिपनच काछ तन काछा ॥१६७ ॥
निति उठि करत देव की पूजा ॥
फूल गुलाब केवड़ा कूजा ॥
चरन कमल निति सीस लगावै ॥
पूजन नित चंडिका आवै ॥१६८ ॥
धरम रीति सब ठौर चलाई ॥
जत्र तत्र सुख बसी लुगाई ॥
भूख नाग कोई कहूं न देखा ॥
ऊच नीच सब धनी बिसेखा ॥१६९ ॥
जह तह धरम धुजा फहराई ॥
चोर जार नह देत दिखाई ॥
जह तह यार चोर चुनि मारा ॥
एक देसि कहूं रहै न पारा ॥१७० ॥
साध ओरि कोई दिसटि न पेखा ॥
ऐस राज रघु राज बिसेखवा ॥
चारो दिसा चक्र फहरावै ॥
पापिन काटि मूंड फिरि आवै ॥१७१ ॥
गाइ सिंघ कहु दूध पिलावै ॥
सिंघ गऊ कह घासु चुगावै ॥
चोर करत धन की रखवारा ॥
त्रास मारि कोई हाथु न डारा ॥१७२ ॥
नारि पुरख सोवत इक सेजा ॥
हाथ पसार न साकत रेजा ॥
पावक घ्रित इक ठउर रखाए ॥
राज त्रास ते ढरै न पाए ॥१७३ ॥
चोर साध मग एक सिधारै ॥
त्रास त्रसत करु कोई न डारै ॥
गाइ सिंघ इक खेत फिराहीं ॥
हाथ चलाइ सकत कोई नाही ॥१७४ ॥
इह बिधि राजु कर्यो रघु राजा ॥
दान निसान चहूं दिस बाजा ॥
चारो दिसा बैठ रखवारे ॥
महाबीर अरु रूप उजिआरे ॥१७५ ॥
बीस सहंस्र बरख परमाना ॥
राजु करा दस चार निधाना ॥
भाति अनेक करे निति धरमा ॥
और न सकै ऐस कर करमा ॥१७६ ॥

पाधड़ी छंद ॥

इहु भाति राजु रघुराज कीन ॥
गज बाज साज दीनान दीन ॥
न्रिप जीति जीति लिने अपार ॥
करि खंड खंड खंडे गड़वार ॥१७७ ॥

◄ *इति रघु राज समापतहि ॥9॥5॥*

अथ अज राजा को राज कथनं ॥

पाधड़ी छंद ॥

फुनि भए राज अजराज बीर ॥
जिनि भाति भाति जिते प्रबीर ॥
किने खराब खाने खवास ॥
जिते महीप तोरे मवास ॥१॥
जिते अजीत मुंडे अमुंड ॥
खंडे अखंड किने घमंड ॥
दस चारि चारि बिदिआ निधान ॥
अजराज राज राजा महान ॥२॥
सूरा सुबाह जोधा प्रचंड ॥
स्रुति सरब सासत्र बिदिआ उदंड ॥
मानी महान सुंदर सरूप ॥
अविलोकि जासु लाजंत भूप ॥३॥
राजान राज राजाधिराज ॥
ग्रिह भरे सरब संपति समाज ॥
अविलोक रूप रीझंत नारि ॥
स्रुति दान सील बिदिआ उदार ॥४॥
जौ कहो कथा बाढंत ग्रंथ ॥
सुणि लेहु मित्र संछेप कंथ ॥
बैदरभ देसि राजा सुबाह ॥
चंपावती सु ग्रिह नारि ताहि ॥५॥
तिह जई एक कंनिआ अपार ॥
तिह मतीइंद्र नामा उदार ॥
जब भई जोग बर के कुमारि ॥
तब कीन बैठि राजा बिचारि ॥६॥
लिने बुलाइ न्रिप सरब देस ॥
धाए सुबाहु लै दल असेस ॥
मुख भई आनि सरस्वती आपु ॥
जिहि जपत लोग मिलि सरब जापु ॥७॥
तब देस देस के भूप आनि ॥
किनो प्रणाम राजा महानि ॥
तह बैठि राज सोभंत ऐसु ॥
जन देव मंडली सम न तैसु ॥८॥
बाजंत ढोल दुंदभि अपार ॥
बाजंत तूर झनकंत तार ॥
सोभा अपार बरनी न जाइ ॥
जनु बैठि इंद्र आभा बनाइ ॥९॥
इह भाति राज मंडली बैठि ॥
अविलोकि इंद्र जह नाक ऐठि ॥
आभा अपार बरने सु कउन ॥
ह्वै रहे जछ गंध्रब मउन ॥१०॥

अरध पाधड़ी छंद ॥

सोभंत सूर ॥
लोभंत हूर ॥

अछ्री अपार ॥
रिझी सु धार ॥११॥
गावंत गीत ॥
मोहंत चीत ॥
मिलि दे असीस ॥
जुग चारि जीस ॥१२॥
बाजंत तार ॥
डारै धमार ॥
देवान नारि ॥
पेखत अपार ॥१३॥
कै बेद रीति ॥
गावंत गीत ॥
सोभा अनूप ॥
सोभंत भूप ॥१४॥
बाजंत तार ॥
रीझंत नारि ॥
गावंत गीत ॥
आनंद चीति ॥१५॥

उछाल छंद ॥

गावत नारी ॥
बाजत तारी ॥
देखत राजा ॥
देवत साजा ॥१६॥
गावत गीतं ॥
आनंद चीतं ॥
सोभत सोभा ॥
लोभत लोभा ॥१७॥
देखत नैणं ॥
भाखत बैणं ॥
सोहत छत्री ॥
लोभत अत्री ॥१८॥
गजत हाथी ॥
सजत साथी ॥
कूदत बाजी ॥
नाचत ताजी ॥१९॥
बाजत तालं ॥
नाचत बालं ॥
गावत गाथं ॥
आनंद साथं ॥२०॥
कोकिल बैणी ॥
सुंदर नैणी ॥
गावत गीतं ॥
चोरत चीतं ॥२१॥
अछ्रण भेसी ॥
सुंदर केसी ॥
सुंदर नैणी ॥
कोकिल बैणी ॥२२॥
अदभुत रूपा ॥
कामिण कूपा ॥

चारु प्रहासं ॥
उनति नासं ॥२३॥
लखि दुति राणी ॥
लजित इंद्राणी ॥
सोहत बाला ॥
रागण माला ॥२४॥

मोहणी छंद ॥

गउर सरूप महा छबि सोहत ॥
देखत सुर नर को मन मोहत ॥
रीझत ताकि बडे न्रिप ऐसे ॥
सोभहिं कउन सकै कहि तैसे ॥२५॥
सुंदर रूप महा दुति बालीय ॥
पेखत रीझत बीर रसालीय ॥
नाचत भाव अनेक त्रीआ करि ॥
देखत सोभा रीझत सुर नर ॥२६॥
हिंसत हैवर चिंसत हाथी ॥
नाचत नागरि गावत गाथी ॥
रीझत सुर नर मोहत राजा ॥
देवत दान तुरंत समाजा ॥२७॥
गावत गीतन नाचत अपछरा ॥
रीझत राजा खीझत अछरा ॥
बाजत नारद बीन रसाली ॥
देखत देव प्रभासत ज्वाली ॥२८॥
आंजत अंजन साजत अंगा ॥
सोभत बसत्र सु अंग सुरंगा ॥
नाचत अछ्री रीझत राऊ ॥
चाहत बरबो करत उपाऊ ॥२९॥
ततथई नाचै सुर पुर बाला ॥
रुण झुण बाजै रंग अंग माला ॥
बनि बनि बैठे जह तह राजा ॥
दै दै डारै तन मन साजा ॥३०॥
जिह जिह देखा सो सो रीझा ॥
जिन नही देखा तिह मन खीझा ॥
करि करि भायं त्रीअ बर नाचै ॥
अतिभुति भायं अंग अंग राचै ॥३१॥
तिन अतिभुति गति तह जह ठानी ॥
जह तह सोहै मुनि मनि मानी ॥
तजि तजि जोगं भजि भजि आवै ॥
लखि अति आभा जीअ सुख पावै ॥३२॥
बनि बनि बैठे जह तह राजा ॥
जह तह सोभै सभ सुभ साजा ॥
जह तह देखै गुनि गन फूले ॥
मुनि मनि छबि लखि तन मन भूले ॥३३॥
तत बित घन मुखरस सब बाजै ॥
सुनि मन रागं गुनि गन लाजै ॥
जह तह गिर गे रिझि रिझि ऐसे ॥
जनु भट जूझे रण ब्रिण कैसे ॥३४॥
बनि बनि फूले जनु बर फूलं ॥
तनु बरु सोभे जनु धर मूलं ॥

जहं तहं झूले मद मत राजा ॥
जनु मुरि बोलै सुन घन गाजा ॥३५॥

पाधरी छंद ॥

जह तह बिलोकि सोभा अपार ॥
बनि बैठि सरब राजाधिकार ॥
इह भाति कहै नही परत बैन ॥
लखि नैन रूपि रीझंत नैन ॥३६॥
अविलोकि नाचि ऐसो सुरंग ॥
सर तानि न्रिपन मारत अनंग ॥
सोभा अपार बरणी न जाइ ॥
रीझे अविलोकि राना रु राइ ॥३७॥
आगम बसंत जनु भइओ आज ॥
इह भाति सरब देखै समाज ॥
राजाधिराज बनि बैठ ऐस ॥
तिन के समान नही इंद्र हैस ॥३८॥
इक मास लाग तह भइओ नाच ॥
बिन पीऐ कैफ कोऊ न बाच ॥
जह जह बिलोकि आभा अपार ॥
तह तह सु राज राजन कुमार ॥३९॥
लै संग तास सारस्वति आप ॥
जिह को जपंत सभ जगत जाप ॥
निरखो कुमार इह सिंध राज ॥
जा की समान नही इंद्र साज ॥४०॥
अविलोक सिंध राजा कुमार ॥
नही तास चित किनो सुमार ॥
तिह छाडि पाछ आगै चलीसु ॥
जनु सरब सोभ कहु लील लीसु ॥४१॥
पुनि कहै तास सारस्वती बैन ॥
इह पसचमेस अब देख नैनि ॥
अविलोकि रूप ता को अपार ॥
नही मधि चिति आनिओ कुमार ॥४२॥

मधुभार छंद ॥

देखो कुमार ॥
राजा जुझार ॥
सुभ वार देस ॥
सुंदर सुबेस ॥४३॥
देखिओ बिचार ॥
राजा अपार ॥
आना न चित ॥
परमं पवित ॥४४॥
तब आगि चाल ॥
सुंदर सु बाल ॥
मुसकिआत ऐस ॥
घनि बीज जैस ॥४५॥
न्रिप पेखि रीझ ॥
सुर नार खीझ ॥
बढि तास जान ॥

घट आप मान ॥४६॥
सुंदर सरूप ॥
सौंदरजु भूप ॥
सोभा अपार ॥
सोभै सु धार ॥४७॥
देखो नरोंद्र ॥
डाढे महोंद्र ॥
मुलतान राज ॥
राजान राज ॥४८॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चली छोडि ता कौ त्रीआ राज ऐसे ॥
मनो पाडु पुत्रं सिरी राज जैसे ॥
खरी मधि राजिसथली ऐस सोहै ॥
मनो ज्वाल माला महा मोनि मोहै ॥४९॥
सुभे राजिसथली ठाढि ऐसे ॥
मनो चित्रकारी लिखी चित्र जैसे ॥
बधे स्वरण की किंकणी लाल मालं ॥
सिखा जान सोभे न्रिपं जगि ज्वालं ॥५०॥
कहे बैन सारस्वती पेखि बाला ॥
लखो नैनि ठाढे सभै भूप आला ॥
रुचै चित जउनै सुई नाथ कीजै ॥
सुनो प्रान पिआरी इहै मानि लीजै ॥५१॥
बडी बाहनी संगि जा के बिराजै ॥
घुरै संग भेरी महा नाद बाजै ॥
लखो रूप बेसं नरेसं महानं ॥
दिनं रैण जापै सहंस्र भुजानं ॥५२॥
धुजा मधि जा के बडो सिंघ राजै ॥
सुने नाद ता को महा पाप भाजै ॥
लखो पूरबीसं छितीसं महानं ॥
सुनो बैन बाला सुरूपं सु भानं ॥५३॥
घुरै दुंदभी संख भेरी अपारं ॥
बजै दछनी सरब बाजंत्र सारं ॥
तुरी कानरे तूर तानं तरंगं ॥
मुचं झाझरं नाइ नादं म्रिदंगं ॥५४॥
बधे हीर चीरं सु बीरं सुबाहं ॥
बडो छत्रधारी सो सोभिओ सिपाहं ॥
नहे पिंग बाजी रथं जेणि जानो ॥
तिसै दछनेसं हीऐ बाल मानो ॥५५॥
महा बाहनीसं नगीसं नरेसं ॥
कई कोटि पातं सुभै पत्र भेसं ॥
धुजा बध उधं गजं गूड़ बाको ॥
लखो उतरी राज कै नाम ता को ॥५६॥
फरी धोप पाइक सु आगे उमंगै ॥
जिणै कोटि बंकै मुरे नाहि अंगै ॥
हरे बाज राजं कपोतं प्रमानं ॥
नहे स्रयंदनी इंद्र बाजी समाणं ॥५७॥
बडे स्रिंग जा के धरे सूर सोभै ॥
लखे दैत कंन्या जिनै चित लोभै ॥
कढे दंत पतं सिरं केस उचं ॥

लखे गरभणी आणि के गरभ मुचं ॥५८॥
लखो लंक एसं नरेसं सु बालं ॥
सबै संग जा कै सबै लोक पालं ॥
लुटिओ एक बेरं कुबेरं भंडारी ॥
जिणिओ इंद्र राजा बडो छत्रधारी ॥५९॥
कहे जउन बाली न ते चित आने ॥
जिते भूप भारी सु पाछे बखाने ॥
चहूं ओर राजा कहो नाम सो भी ॥
तजे भाति जैसी सबै राज ओ भी ॥६०॥
लखो दईत सैना बडी संगि ता के ॥
सुभै छत्र धारी बडे संग जा के ॥
धुजा गिध उधं लसै काक पूरं ॥
तिसै पिआल राजा बली ब्रिध नूरं ॥६१॥
रथं बेसटं हीर चीरं अपारं ॥
सुभै संग जा के सभे लोक पारं ॥
इहै इंद्र राजा दुरं दानवारं ॥
त्रीआ तास चीनो अदितिआ कुमारं ॥६२॥
नहे सपत बाजी रथं एक चक्रं ॥
महा नाग बधं तपै तेज बक्रं ॥
महा उग्र धंन्वा सु आजान बाहं ॥
सही चित चीनो तिसै दिउस नाहं ॥६३॥
चड़िओ एण राजं धरे बाण पाणं ॥
निसा राज ता को लखो तेज माणं ॥
करै रसमि माला उजाला परानं ॥
जपै रात्र दिउसं सहंस्री भुजानं ॥६४॥
चड़े महिखीसं सुमेरं जु दीसं ॥
महा क्रूर करमं जिणिओ बाह बीसं ॥
धुजा दंड जा की प्रचंडं बिराजै ॥
लखे जास गरबीन को गरब भाजै ॥६५॥
कहा लौ बखानो बडे गरबधारी ॥
सबै घेरि ठाढे जुरी भीर भारी ॥
नचै पातरा चातुरा निरतकारी ॥
उठै झाझ सबदं सुनै लोग धारी ॥६६॥
बडो दिरब धारी बडी सैन लीने ॥
बडो दिरब को चित मै गरब कीने ॥
चितं तास चीनो सही दिरब पालं ॥
उठै जउन के रूप की ज्वाल मालं ॥६७॥
सभै भूप ठाढे जहा राज कंनिआ ॥
बिखै भू तलं रूप जा के न अंनिआ ॥
बडे छत्रधारी बडे गरब कीने ॥
तहा आनि ठाढे बडी सैन लीने ॥६८॥
नदी संग जा के सबै रूप धारे ॥
सबै सिंध संगं चड़े तेज वारे ॥
बडी काइ जा की महा रूप सोहै ॥
लखे देव कंनिआन के मान मोहै ॥६९॥
कहो नार तो कौ इहै बरुन राजा ॥
जिसै पेखि राजान को मान भाजा ॥
कहा लौ बखानो जिते भूप आए ॥
सबै बाल कौ लै भवानी बताए ॥७०॥
सवैया ॥

आनि जुरे न्रिप मंडल जेति तेत सबै तिन तास दिखाए ॥
देख फिरी चहूं चक्रन को न्रिप राज कुमारि ह्रिदै नही लिआए ॥
हारि परिओ सभ ही भट मंडल भूपति हेरि दसा मुरझाए ॥
फूक भए मुख सूक गए सब राज कुमारि फिरे घरि आए ॥७१॥
तउ लगि आन गए अजिराज सु राजन राज बडो दल लीने ॥
अंबर अनूप धरे पसमंबर संबर के अरि की छबि छीने ॥
बेखन बेख चड़े संग ह्वै न्रिप हान सबै सुख धाम नवीने ॥
आनि गए जरिकंबर से अंबर से न्रिप कंबर कीने ॥७२॥
पाति ही पाति बनाइ बडो दल ढोल म्रिदंग सुरंग बजाइ ॥
भूखन चारु दिपै सब अंग बिलोकि अनंग प्रभा मुरछाए ॥
बाजत चंग म्रिदंग उपंग सुरंग सु नाद सबै सुनि पाए ॥
रीझ रहे रिझवार सबै लखि रूप अनूप सराहत आए ॥७३॥
जैस सरूप लखिओ अजि को हम तैस सरूप न अउर बिचारे ॥
चंदि चपिओ लखि कै मुख की छबि छेद परे उर मै रिस मारे ॥
तेज सरूप बिलोकि कै पावक चिति चिरी ग्रिह अउरन जारे ॥
जैस प्रभा लखिओ अजि को हम तैस सरूप न भूप निहारे ॥७४॥
सुंदर जुआन सरूप महान प्रधान चहुं चक मै हम जानिओ ॥
भानु समान प्रभा न प्रमान कि राव कि रान महान बखानिओ ॥
देव अदेव चके अपने चिति चंद सरूप निसा पहिचानिओ ॥
दिउस कै भानु मुनिओ भगवान पछान मनै घन मोरन मानिओ ॥७५॥
बोलि उठे पिक जान बसंत चकोरन चंद सरूप बखानिओ ॥
साति सुभाव लखिओ सभ साधन जोधन क्रोध प्रतछ प्रमानिओ ॥
बालन बाल सुभाव लखिओ तिह सत्रन काल सरूप पछानिओ ॥
देवल देव अदेवन कै सिव राजन राजि बडो जीअ जानिओ ॥७६॥
साधन सिध सरूप लखिओ तिह सत्रन सत्र समान बसेखिओ ॥
चोरन भोर करोरन मोरन तासु सही घन कै अविरेखिओ ॥
काम सरूप सभै पुर नारन संभू समान सबू गन देखिओ ॥
सीप स्वाति की बूंद तिसै करि राजन राज बडो तिह पेखिओ ॥७७॥
कंबर जिउ जरिकंबर की ढिग तिउ अविनंबर तीर सुहाए ॥
नाक लखे रिस मान सूआ मन नैन दोऊ लखि एण लजाए ॥
पेखि गुलाब सराब पीऐ जनु पेखत अंग अनंग रिसाए ॥
कंठ कपोत कटू पर केहर रोस रसे ग्रिह भूलि न आए ॥७८॥
पेखि सरूप सिरात न लोचन घूटत है जनु घूट अमी के ॥
गावत गीत बजावत ताल बतावत है जनो आछर ही के ॥
भावत नारि सुहावत गार दिवावत है भरि आनंद जी के ॥
तू सु कुमार रची करतार कहै अबिचार त्रीआ बर नीके ॥७९॥
देखत रूप सिरात न लोचन पेखि छकी पीअ की छबि नारी ॥
गावत गीत बजावत ढोल म्रिदंग मुचंगन की धुनि भारी ॥
आवत जात जिती पुर नागर गागरि डारि लखै दुति भारी ॥
राज करो तब लौ जब लौ महि जउ लग गंग बहै जमुना री ॥८०॥
जउन प्रभा अजि राज की राजत सो कहि कै किह भाति गनाऊ ॥
जउन प्रभा कबि देत सबै जौ पै तास कहो जीअ बीच लजाऊ ॥
हउ चहूं ओर फिरिओ बसुधा छबि अंगन कीन कहूं कोई पाऊ ॥
लेखन ऊख ह्वै जात लिखो छबि आनन ते किमि भाखि सुनाऊ ॥८१॥
नैनन बान चहूं दिस मारत घाइल कै पुर बासन डारी ॥
सारस्वती न सकै कहि रूप सिंगार कहै मति कउन बिचारी ॥
कोकिल कंठि हरिओ न्रिप नाइक छीन कपोत की ग्रीव अनिआरी ॥
रीझ गिरे नर नारि धरा पर घूमति है जनु घाइल भारी ॥८२॥

दोहरा ॥

निरखि रूप अजि राज को रीझ रहे नर नारि ॥
इंद्र कि चंद्र कि सूर इहि इह बिधि करत बिचार ॥८३॥

कबितु ॥

नागन के छउना हैं कि कीने काहूं टउना हैं कि काम के खिलउना हैं बनाए हैं सुधार के ॥
इसत्रिन के प्रान हैं कि सुंदरता की खान हैं कि काम के कलान बिधि कीने हैं बिचार के ॥
चातुरता के भेस हैं कि रूप के नरेस हैं कि सुंदर सु देस एस कीने चंद्र सार के ॥
तेग हैं कि तीर हैं कि बाना बाधे बीर हैं सु ऐसे नेत्र अजि के बिलोकीऐ संभार के ॥८४॥
सवैया ॥
तीरन ते तरवारन से म्रिग बारन से अविलोकहु जाई ॥
रीझ रहीं रिझवार लखे दुति भाखि प्रभा नही जात बताई ॥
संगि चली उठि बाल बिलोकन मोर चकोर रहे उरझाई ॥
डीठि परै अजि राज जबै चित देखत ही त्रीअ लीन चुराई ॥८५॥

तोमर छंद ॥

अविलोकीआ अजि राज ॥
अति रूप सरब समाज ॥
अति रीझ कै हस बाल ॥
गुहि फूल माल उताल ॥८६॥
गहि फूल की करि माल ॥
अति रूपवंत सु बाल ॥
तिसु डारीआ उरि आनि ॥
दस चारि चारि निधानि ॥८७॥
तिह देबि आगिआ कीन ॥
दस चारि चारि प्रबीन ॥
सुनि सुंदरी इम बैन ॥
ससि क्रात सुंदर नैन ॥८८॥
तव जोग है अजि राज ॥
सुन रूपवंत सलाज ॥
बरु आजु ता कह जाइ ॥
सुनि बैनि सुंदर काइ ॥८९॥
गहि फूल माल प्रबीन ॥
उरि डार ता के दीन ॥
तब बाज तूर अनेक ॥
डफ बीण बेण बसेख ॥९०॥
डफ बाज ढोल म्रिदंग ॥
अति तूर तान तरंग ॥
नय बासुरी अरु बैन ॥
बहु सुंदरी सुभ नैन ॥९१॥
तिह बिआहि कै अजि राजि ॥
बहु भाति लै कर दाज ॥
ग्रिह आईआ सुख पाइ ॥
डफ बेण बीण बजाइ ॥९२॥
अजि राज राज महान ॥
दस चारि चारि निधान ॥
सुख सिंधु सील समुंद्र ॥
जिनि जीतिआ रण रुद्र ॥९३॥
इह भाति राज कमाइ ॥
सिरि अत्र पत्र फिराइ ॥

रण धीर राज बिसेख ॥
जग कीन जासु भिखेख ॥९४॥
जगजीत चारि दिसान ॥
अजि राज राज महान ॥
न्रिप दान सील पहार ॥
दस चारि चारि उदार ॥९५॥
दुतिवंति सुंदर नैन ॥
जिह पेखि खिझत मैन ॥
मुख देखि चंद्र सरूप ॥
चित सो चुरावत भूप ॥९६॥
इह भाति कै बड राज ॥
बहु जग धरम समाज ॥
जउ कहो सरब बिचार ॥
इक होत कथा पसार ॥९७॥
तिह ते सु थोरीऐ बात ॥
सुनि लेहु भाखो भ्रात ॥
बहु जग धरम समाज ॥
इह भाति कै अजि राज ॥९८॥
जग आपनो अजि मान ॥
तरि आख आन न आन ॥
तब काल कोप कवाल ॥
अजि जारीआ मधि ज्वाल ॥९९॥
अजि जोति जोति मिलान ॥
तब सरब देखि डरान ॥
जिम नाव खेवट हीन ॥
जिम देह अरबल छीन ॥१००॥
जिम गाव राव बिहीन ॥
जिम उरबरा क्रिस छीन ॥
जिम दिरब हीण भंडार ॥
जिम साहि हीण बिपार ॥१०१॥
जिम अरथ हीण कबित ॥
बिनु प्रेम के जिम मित ॥
जिम राज हीण सु देस ॥
जिम सैण हीन नरेस ॥१०२॥
जिम गिआन हीण जुगेंद्र ॥
जिम भूम हीण महेंद्र ॥
जिम अरथ हीण बिचार ॥
जिम दरब हीण उदार ॥१०३॥
जिम अंकुस हीण गजेस ॥
जिम सैण हीण नरेस ॥
जिम ससत्र हीण लुझार ॥
जिम बुधि बाझ बिचार ॥१०४॥
जिम नारि हीण भतार ॥
जिम कंत हीण सु नार ॥
जिम बुधि हीण कबित ॥
जिम प्रेम हीण सु मित ॥१०५॥
जिम देस भूप बिहीन ॥
बिनु कंत नारि अधीन ॥
जिह भाति बिप्र अबिदि ॥
जिम अरथ हीण सबिदि ॥१०६॥

ते कहे सरब नरेस ॥
जे आ गए इह देसि ॥
करि असट दस्रय पुरानि ॥
दिज बिआस बेद निधान ॥१०७॥
कीने अठारह परब ॥
जग रीझीआ सुनि सरब ॥
इह बिआस ब्रहम वतार ॥
भए पंचमो मुख चार ॥१०८॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे पंचमोवतार ब्रहमा बिआस राजा अज को राज समापतं ॥10॥5॥*

अथ ब्रहमावतार खट रिखि कथनं ॥

तोमर छंद ॥

जुग आगले इह बिआस ॥
जगि कीअ पुराण प्रकास ॥
तब बाढिआ तिह गरब ॥
सर आप जानि न सरब ॥१॥
तब कोपि काल क्रवाल ॥
जिह जाल ज्वाल बिसाल ॥
खट टूक ता कह कीन ॥
पुनि जान कै तिनि दीन ॥२॥
नही लीन प्रान निकार ॥
भए खसट रिखै अपार ॥
तिन सासत्रग बिचार ॥
खट सासत्र नाम सु डारि ॥३॥
खट सासत्र कीन प्रकास ॥
मुखचार बिआस सु भास ॥
धरि खसटमो अवतार ॥
खट सासत्र कीन सुधारि ॥४॥

◀ *इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे खसटमो अवतार ब्रहमा खसट रिख समापतं ॥6॥*

अथ ब्रहमावतार कालिदास कथनं ॥

तोमर छंद ॥

इह ब्रहम बेद निधान ॥
दस असट सासत्र प्रमान ॥
कलि जुगिय लाग निहारि ॥
भए कालिदास अबिचार ॥१॥
लखि रीझ बिक्रमजीत ॥
अति गरबवंत अजीत ॥
अति गिआन मान गुनैन ॥
सुभ क्राति सुंदर नैन ॥२॥
रघु काबि कीन सुधारि ॥

करि कालिदास वतार ॥
कह लौ बखानो तउन ॥
जो काबि कीनो जउन ॥३॥
धरि सपत ब्रहम वतार ॥
तब भइओ तासु उधार ॥
तब धरा ब्रहम सरूप ॥
मुखचार रूप अनूप ॥४॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे सपतमो अवतार ब्रहमा कालिदास समापतम ॥7॥

रुद्र अवतार ॥

SECTION 14: RUDRA AVTAR (SECOND SECTION)

Further Rudra incarnation narrative

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ रुद्र अवतार कथनं ॥

तोमर छंद ॥

अब कहो तउन सुधारि ॥
जे धरे रुद्र अवतार ॥
अति जोग साधन कीन ॥
तब गरब के रसि भीन ॥१॥
सरि आप जान न अउर ॥
सब देस मो सब ठौर ॥
तब कोपि कै इम काल ॥
इम भाखि बैण उताल ॥२॥
जे गरब लोक करंत ॥
ते जान कूप परंत ॥
मुर नाम गरब प्रहार ॥
सुन लेहु रुद्र बिचार ॥३॥
कीअ गरब को मुख चार ॥
कछु चित मो अबिचारि ॥
जब धरे तिन तन सात ॥
तब बनी ता की बात ॥४॥
तिम जनमु धरु तै जाइ ॥
चित दे सुनो मुनि राइ ॥
नहीं ऐस होइ उधार ॥
सुन लेहु रुद्र बिचार ॥५॥
सुनि स्रवन ए सिव बैन ॥
हठ छाडि सुंदर नैन ॥
तिह जानि गरब प्रहार ॥
छिति लीन आनि वतार ॥६॥

पाधरी छंद ॥

जिम कथे सरब राजान राज ॥
तिम कहे रिखिन सब ही समाज ॥
जिह जिह प्रकार तिह करम कीन ॥
जिह भाति जेमि दिज बरन लीन ॥७॥
जे जे चरित्र किने प्रकास ॥
ते ते चरित्र भाखो सु बास ॥
रिखि पुत्र एस भए रुद्र देव ॥
मोनी महान मानी अभेव ॥८॥
पुनि भए अत्रि रिखि मुनि महान ॥
दस चार चार बिदिआ निधान ॥
लिने सु जोग तजि राज आनि ॥
सेविआ रुद्र संपति निधान ॥९॥
किनो सु योग बहु दिन प्रमान ॥
रीझिओ रुद्र ता पर निदान ॥

बरु माग पुत्र जो रुचै तोहि ॥
बरु दानु तउन मै देउ तोहि ॥१०॥
करि जोरि अत्रि तब भयो ठाढ ॥
उठि भाग आन अनुराग बाढ ॥
गद गद सु बैण भभकंत नैण ॥
रोमान हरख उचरे सु बैण ॥११॥
जो देत रुद्र बरु रीझ मोहि ॥
ग्रिह होइ पुत्र सम तुलि तोहि ॥
कहि कै तथासतु भए अंत्र धिआन ॥
ग्रिह गयो अत्रि मुनि मनि महान ॥१२॥
ग्रिहि बरी आनि अनसूआ नारि ॥
जनु पठिओ ततु निज सिव निकारि ॥
ब्रहमा रु बिसन निज तेज काढि ॥
आए सु मधि अनिसूआ छाडि ॥१३॥
भई करत जोग बहु दिन प्रमान ॥
अनसूआ नाम गुन गन महान ॥
अति तेजवंत सोभा सुरंग ॥
जनु धरा रूप दूसर अनंग ॥१४॥
सोभा अपार सुंदर अनंत ॥
सऊहाग भाग बहु बिधि लसंत ॥
जिह निरखि रूप सोरहि लुभाइ ॥
आभा अपार बरनी न जाइ ॥१५॥
निस नाथ देखि आनन रिसान ॥
जलि जाइ नैन लहि रोस मान ॥
तम निरखि केस कीअ नीच डीठ ॥
छपि रहा जानु गिर हेम पीठ ॥१६॥
कंठहि कपोति लखि कोप कीन ॥
नासा निहारि बनि कीर लीन ॥
रोमावलि हेरि जमुना रिसान ॥
लजा मरंत सागर डुबान ॥१७॥
बाहू बिलोकि लाजै म्रिनाल ॥
खिसियान हंस अविलोकि चाल ॥
जंघा बिलोकि कदली लजान ॥
निस राट आप घटि रूप मान ॥१८॥
इह भाति तासु बरणो सिंगार ॥
को सकै कबि महिमा उचार ॥
ऐसी सरूप अविलोक अत्रि ॥
जनु लीन रूप को छीन छत्र ॥१९॥
कीनी प्रतगि तिह समे नारि ॥
ब्रयाहै न भोग भोगै भतार ॥
मै बरौ तासु रुचि मानि चित ॥
जो सहै कसट ऐसे पवित ॥२०॥
रिखि मानि बैन तब बर्यो वाहि ॥
जनु लीन लूट सीगार ताहि ॥
लै गयो धामि करि नारि तउन ॥
पित दत देव मुनि अत्रि जउन ॥२१॥

अथ रुद्र वतार दत कथनं ॥

तोमर छंद ॥

बहु बरख बीत किनो बिवाहि ॥
इक भयो आनि अउरै उछाहि ॥
तिह गए धामि ब्रहमादि आदि ॥
किनी सु सेव त्रीय बहु प्रसादि ॥२२॥
बहु धूप दीप अरु अरघ दान ॥
पादरघि आदि किने सुजान ॥
अविलोकि भगति तिह चतुर बाक ॥
इंद्रादि बिसनु बैठे पिनाक ॥२३॥
अविलोकि भगति भए रिख प्रसंन ॥
जो तिहू मधि लोकानि धंनि ॥
किनो सु ऐस ब्रहमा उचार ॥
तै पुत्रवंत हूजो कुमारि ॥२४॥

तोमर छंद ॥

कीअ ऐस ब्रहमा उचार ॥
तै पुत्र पावस बार ॥
तबि नारि ए सुन बैन ॥
बहु आसु डारत नैन ॥२५॥
तब बाल बिकल सरीर ॥
जल स्रवत नैन अधीर ॥
रोमाचि गद गद बैन ॥
दिन ते भई जनु रैन ॥२६॥
रोमाचि बिकल सरीर ॥
तन कोप मान अधीर ॥
फरकंत उसटरु नैन ॥
बिनु बुध बोलत बैन ॥२७॥

मोहण छंद ॥

सुनि ऐस बैन ॥
म्रिगीएस नैन ॥
अति रूप धाम ॥
सुंदर सु बाम ॥२८॥
चल चाल चित ॥
परमं पवित ॥
अति कोप वंत ॥
मुनि त्रिअ बिअंत ॥२९॥
उपटंत केस ॥
मुनि त्रिअ सुदेस ॥
अति कोप अंगि ॥
सुंदर सुरंग ॥३०॥
तोरंत हार ॥
उपटंत बार ॥
डारंत धूरि ॥
रोखंत पूर ॥३१॥

तोमर छंद ॥

लखि कोप भी मुनि नारि ॥
उठि भाज ब्रहम उदार ॥

सिव संगि लै रिख सरब ॥
भयमान ह्वै तजि गरब ॥३२॥
तब कोप कै मुनि नारि ॥
सिर केस जटा उपारि ॥
करि सौ जबै कर मार ॥
तब लीन दत अवतार ॥३३॥
कर बाम मात्र समान ॥
करु दछनत्रि प्रमान ॥
कीआ पान भोग बिचार ॥
तब भए दत कुमार ॥३४॥
अनभूत उतम गात ॥
उचरंत सिंम्रित सात ॥
मुखि बेद चार रड़ंत ॥
उपजो सु दत महंत ॥३५॥
सिव सिमरि पूरबल स्राप ॥
बपु दत को धरि आप ॥
उपजिओ निसूआ धामि ॥
अवतार प्रिथम सु ताम ॥३६॥

पाधरी छंद ॥

उपजिओ सु दत मोनी महान ॥
दस चार चार बिदिआ निधान ॥
सासत्रगि सुध सुंदर सरूप ॥
अवधूत रूप गण सरब भूप ॥३७॥
संनिआस जोग किनो प्रकास ॥
पावन पवित सरबत्र दास ॥
जन धरिओ आनि बपु सरब जोग ॥
तजि राज साज अरु तिआग भोग ॥३८॥
आछिज रूप महिमा महान ॥
दस चारवंत सोभा निधान ॥
रवि अनिल तेज जल सो सुभाव ॥
उपजिआ जगत संन्यास राव ॥३९॥
संन्यास राज भए दत देव ॥
रुद्रावतार सुंदर अजेव ॥
पावक समान भये तेज जासु ॥
बसुधा समान धीरज सु तासु ॥४०॥
परमं पवित्र भए देव दत ॥
आछिज तेज अरु बिमल मति ॥
सोवरण देखि लाजंत अंग ॥
सोभंत सीस गंगा तरंग ॥४१॥
आजान बाहु अलिपत रूप ॥
आदग जोग सुंदर सरूप ॥
बिभूत अंग उजल सु बास ॥
संनिआस जोग किनो प्रकास ॥४२॥
अविलोकि अंग महिमा अपार ॥
संनिआस राज उपजा उदार ॥
अनभूत गात आभा अनंत ॥
मोनी महान सोभा लसंत ॥४३॥
आभा अपार महिमा अनंत ॥
संन्यास राज किनो बिअंत ॥

कापिआ कपटु तिह उदे होत ॥
ततछिन अकपट किनो उदोत ॥४४॥
महिमा अछिज अनभूत गात ॥
आविलोकि पुत्र चकि रही मात ॥
देसन बिदेस चकि रही सरब ॥
सुनि सरब रिखिन तजि दीन गरब ॥४५॥
सरबत्र प्रयाल सरबत्र अकास ॥
चल चाल चितु सुंदर सु बास ॥
कंपाइमान हरखंत रोम ॥
आनंदमान सभ भई भोम ॥४६॥
थरहरत भूमि आकास सरब ॥
जह तह रिखीन तजि दीन गरब ॥
बाजे बजंत्र अनेक गैन ॥
दस दिउस पाइ दिखी न रैण ॥४७॥
जह तह बजंत्र बाजे अनेक ॥
प्रगटिआ जाणु बपु धरि बिबेक ॥
सोभा अपार बरनी न जाइ ॥
उपजिआ आन संन्यास राइ ॥४८॥
जनमंत लागि उठ जोग करम ॥
हति कीओ पाप परचुरिओ धरम ॥
राजाधिराज बड लाग चरन ॥
संनिआस जोग उठि लाग करन ॥४९॥
अतिभुति अनूप लखि दत राइ ॥
उठि लगे पाइ न्रिप सरब आइ ॥
अविलोकि दत महिमा महान ॥
दस चार चार बिदिआ निधान ॥५०॥
सोभंत सीस जत की जटान ॥
नख नेम के सु बढए महान ॥
बिभ्रम बिभूत उजल सो सोह ॥
दिज चरज तुलि म्रिग चरम अरोह ॥५१॥
मुख सित बिभूत लंगोट बंद ॥
संन्यास चरज तजि छंद बंद ॥
आसुनक सुंनि अनब्रयकत अंग ॥
आछिज तेज महिमा सुरंग ॥५२॥
इक आस चित तजि सरब आस ॥
अनभूत गात निस दिन उदास ॥
मुनि चरज लीन तजि सरब काम ॥
आरकति नेत्र जनु धरम धाम ॥५३॥
अबिकार चित अणडोल अंग ॥
जुत धिआन नेत्र महिमा अभंग ॥
धरि एक आस अउदास चित ॥
संनियास देव परमं पवित ॥५४॥
अवधूत गात महिमा अपार ॥
स्रुति गिआन सिंधु बिदिआ उदार ॥
मुनि मनि प्रबीन गुनि गन महान ॥
जनु भयो परम गिआनी महान ॥५५॥
कबहूं न पाप जिह छुहा अंग ॥
गुनि गन संपंन सुंदर सुरंग ॥
लंगोटबंद अवधूत गात ॥
चकि रही चित अवलोकि मात ॥५६॥

संनियास देव अनभूत अंग ॥
लाजंत देखि जिह दुति अनंग ॥
मुनि दत देव संन्यास राज ॥
जिह सधे सरब संन्यास साज ॥५७॥
परमं पवित्र जा के सरीर ॥
कबहूं न काम किनो अधीर ॥
जट जोग जासु सोभंत सीस ॥
अस धरा रूप संनियास ईस ॥५८॥
आभा अपार कथि सकै कउन ॥
सुनि रहै जछ गंध्रब मउन ॥
चकि रहिओ ब्रहम आभा बिचारि ॥
लाजयो अनंग आभा निहारि ॥५९॥
अति गिआनवंत करमन प्रबीन ॥
अन आस गात हरि को अधीन ॥
छबि दिपत कोट सूरज प्रमान ॥
चक रहा चंद लखि आसमान ॥६०॥
उपजिया आप इक जोग रूप ॥
पुनि लगो जोग साधन अनूप ॥
ग्रिह प्रिथम छाडि उठि चला दत ॥
परमं पवित्र निरमली मति ॥६१॥
जब कीन जोग बहु दिन प्रमान ॥
तब काल देव रीझे निदान ॥
इमि भई बिओम बानी बनाइ ॥
तुम सुणहु बैन संन्यास राइ ॥६२॥
आकास बानी बाचि दत प्रति ॥

पाधड़ी छंद ॥

गुर हीण मुकति नही होत दत ॥
तुहि कहो बात सुनि बिमल मत ॥
गुर करहि प्रिथम तब होगि मुकति ॥
कहि दीन काल तिह जोग जुगत ॥६३॥
बहु भाति दत दंडवत कीन ॥
आसा बिरहति हरि को अधीन ॥
बहु भात जोग साधना साधि ॥
आदग जोग महिमा अगाध ॥६४॥
तब नमसकार करि दत देव ॥
उचरंत परम उसतति अभेव ॥
जोगीन जोग राजान राज ॥
अनभूत अंग जह तह बिराज ॥६५॥
जल थल बियाप जिह तेज एक ॥
गावंत जासु मुनि गन अनेक ॥
जिह नेति नेति भाखंत निगम ॥
ते आदि अंत मधह अगम ॥६६॥
जिह एक रूप किने अनेक ॥
पुहमी अकास किने बिबेक ॥
जल बा थलेस सब ठौर जान ॥
अनभै अजोनि अनि आस मान ॥६७॥
पावन प्रसिध परमं पुनीत ॥
आजान बाह अनभउ अजीत ॥
परमं प्रसिध पूरण पुराण ॥

राजान राज भोगी महाण ॥६८॥
अनछिज तेज अनभै प्रकास ॥
खड़गन सपंन परमं प्रभास ॥
आभा अनंत बरनी न जाइ ॥
फिर फिरे सरब मति को चलाइ ॥६९॥
सबहू बखान जिह नेति नेति ॥
अकलंक रूप आभा अमेत ॥
सरबं सम्रिध जिह पान लाग ॥
जिह नाम लेत सब पाप भाग ॥७०॥
गुन सील साधु ता के सुभाइ ॥
बिनु तास सरनि नही कोऊ उपाइ ॥
दीनन उधारणि जासु बान ॥
कोऊ कहै कैसेई लेत मान ॥७१॥
अकलंक रूप अनछिज तेज ॥
आसन अडोल सुभ सुभ्र सेज ॥
अनगन जासु गुन मधि सोभ ॥
लखि सत्र मित्र जिह रहत लोभ ॥७२॥
जिह सत्र मित्र सम एक जान ॥
उसतती निंद जिह एक मान ॥
आसन अडोल अनछिज रूप ॥
परमं पवित्र भूपाण भूप ॥७३॥
जिहबा सुधान खग उध सोहि ॥
अविलोक दईत अरु देव मोहि ॥
बिनु बैर रूप अनभव प्रकास ॥
अनछिज गात निसि दिन निरास ॥७४॥
दुति आदि अंति एकै समान ॥
खड़गंन सपंनि सब बिधि निधान ॥
सोभा सु बहुत तन जासु सोभ ॥
दुति देखि जछ गंध्रब लोभ ॥७५॥
अनभंग अंग अनभव प्रकास ॥
पसरी जगति जिह जीव रासि ॥
किने सु जीव जलि थलि अनेक ॥
अंतहि समेय फुनि रूप एक ॥७६॥
जिह छूआ नैकु नही काल जालु ॥
छ्वै सका पाप नही कउन काल ॥
आछिज तेज अनभूत गात ॥
एकै सरूप निस दिन प्रभात ॥७७॥
इह भाति दत असतोत्र पाठ ॥
मुख पड़त अछ्र गयो पाप नाठ ॥
को सकै बरन महिमा अपार ॥
संछेप कीन ता ते उचार ॥७८॥
जे करै पत्र कासिपी सरब ॥
लिखे गणेस करि कै सु गरब ॥
मसु सरब सिंध लेखक बनेसि ॥
नही तदिप अंति कहि सकै सेसु ॥७९॥
जउ करै बैठि ब्रहमा उचार ॥
नही तदिप तेज पायंत पार ॥
मुख सहंस नाम फण पति रड़ंत ॥
नही तदिप तासु पायंत अंतु ॥८०॥
निस दिन जपंत सनकं सनात ॥

नही तदिप तासु सोभा निरात ॥
मुख चार बेद किने उचार ॥
तजि गरब नेति नेतै बिचार ॥८१॥
सिव सहंस्र बरख लौ जोग कीन ॥
तजि नेह गेह बन बास लीन ॥
बहु कीन जोग तह बहु प्रकार ॥
नही तदिप तासु लहि सका पार ॥८२॥
जिह एक रूप अनकं प्रकास ॥
अबियकत तेज निस दिन उदास ॥
आसन अडोल महिमा अभंग ॥
अनभव प्रकास सोभा सुरंग ॥८३॥
जिह सत्रु मित्र एकै समान ॥
अबियकत तेज महिमा महान ॥
जिह आदि अंति एकै सरूप ॥
सुंदर सुरंग जग करि अरूप ॥८४॥
जिह राग रंग नही रूप रेख ॥
नही नाम ठाम अनभव अभेख ॥
आजान बाहि अनभव प्रकास ॥
आभा अनंत महिमा सु बास ॥८५॥
कई कलप जोग जिनि करत बीत ॥
नही तदिप तउन धरि गए चीत ॥
मुनि मन अनेक गुनि गन महान ॥
बहु कसट करत नही धरत धिआन ॥८६॥
जिह एक रूप किने अनेक ॥
अंतहि समेय फुनि भए एक ॥
कई कोटि जंत जीवन उपाइ ॥
फिरि अंत लेत आपहि मिलाइ ॥८७॥
जिह जगत जीव सब परे सरनि ॥
मुन मनि अनेक जिह जपत चरन ॥
कई कलप तिहं करत धिआन ॥
कहूं न देखि तिह बिदिमान ॥८८॥
आभा अनंत महिमा अपार ॥
मुन मनि महान अत ही उदार ॥
आछिज तेज सूरति अपार ॥
नही सकत बुध करि कै बिचार ॥८९॥
जिह आदि अंति एकहि सरूप ॥
सोभा अभंग महिमा अनूप ॥
जिह कीन जोति उदोत सरब ॥
जिह हत्रयो सरब गरबीन गरब ॥९०॥
जिह गरबवंत एकै न राख ॥
फिरि कहो बैण नही बैण भाख ॥
इक बार मारि मार्यो न सत्रु ॥
इक बार डारि डारिओ न अत्र ॥९१॥
सेवक थापि नही दूर कीन ॥
लखि भई भूल मुखि बिहस दीन ॥
जिह गही बाहिं किनो निबाह ॥
त्रीया एक ब्याहि नही कीन ब्याह ॥९२॥
रीझंत कोटि नही कसट कीन ॥
सीझंत एक ही नाम लीन ॥
अनकपट रूप अनभउ प्रकास ॥

खड़गन सपंनि निस दिन निरास ॥९३॥
परमं पवित्र पूरण पुराण ॥
महिमा अभंग सोभा निधान ॥
पावन प्रसिध परमं पुनीत ॥
आजान बाहु अनभै अजीत ॥९४॥
कई कोटि इंद्र जिह पानिहार ॥
कई चंद सूर क्रिसनावतार ॥
कई बिसन रुद्र रामा रसूल ॥
बिनु भगति यौ न कोई कबूल ॥९५॥
कई दत सत गोरख देव ॥
मुनमनि मछिंद्र नही लखत भेव ॥
बहु भाति मंत्र मत कै प्रकास ॥
बिनु एक आस सभ ही निरास ॥९६॥
जिह नेति नेति भाखत निगम ॥
करतार सरब कारण अगम ॥
जिह लखत कोई नही कउन जाति ॥
जिह नाहि पिता भ्रित तात मात ॥९७॥
जानी न जात जिह रंग रूप ॥
साहान साहि भूपान भूप ॥
जिह बरण जाति नही क्रित अनंत ॥
आदो अपार निरबिख बिअंत ॥९८॥
बरणी न जाति जिह रंग रेख ॥
अतभुत अनंत अति बल अभेख ॥
अनखंड चित अबिकार रूप ॥
देवान देव महिमा अनूप ॥९९॥
उसतती निंद जिह इक समान ॥
आभा अखंड महिमा महान ॥
अबिकार चित अनुभव प्रकास ॥
घटि घटि बियाप निस दिन उदास ॥१००॥
इह भाति दत उसतति उचार ॥
डंडवत कीन अत्रिज उदार ॥
अरु भाति भाति उठि परत चरनि ॥
जानी न जाइ जिह जाति बरन ॥१०१॥
जउ करै क्रित कई जुग उचार ॥
नही तदिप तासु लहि जात पार ॥
मम अलप बुधि तव गुन अनंत ॥
बरना न जात तुम अति बिअंत ॥१०२॥
तव गुण अति ऊच अंबर समान ॥
मम अलप बुधि बालक अजान ॥
किम सकौ बरन तुमरे प्रभाव ॥
तव परा सरणि तजि सभ उपाव ॥१०३॥
जिह लखत चत्र नहि भेद बेद ॥
आभा अनंत महिमा अछेद ॥
गुन गनत चत्रमुख परा हार ॥
तब नेति नेति किनो उचार ॥१०४॥
थकि गिरिओ ब्रिध सिर लिखत कित ॥
चकि रहे बालिखिलादि चित ॥
गुन गनत चत्रमुख हार मानि ॥
हठि तजि बिअंति किनो बखान ॥१०५॥
तह जपत रुद्र जुग कोटि भीत ॥

बहि गई गंग सिर मुरि न चीत ॥
कई कलप बीत जिह धरति धिआन ॥
नही तदिप धिआन आए सुजान ॥१०६॥
जब कीन नालि ब्रहमा प्रवेस ॥
मुन मनि महान दिजबर दिजेस ॥
नही कमल नाल को लखा पार ॥
कहो तासु कैस पावै बिचार ॥१०७॥
बरनी न जाति जिह छबि सुरंग ॥
आभा आपार महिमा अभंग ॥
जिह एक रूप किनो अनेक ॥
पग छोरि आन तिह धरो टेक ॥१०८॥

रूआल छंद ॥

भाति भाति बिअंति देस भवंत किरत उचार ॥
भाति भाति पगो लगा तजि गरब अत्रि कुमार ॥
कोटि बरख करी जबै हरि सेवि वा चितु लाइ ॥
अकसमात भई तबै तिह बिओम बान बनाइ ॥१०९॥
ब्योम बानी बाच दत प्रति ॥
दत सति कहो तुझै गुर हीण मुकति न होइ ॥
राव रंक प्रजा वजा इम भाखई सभ कोइ ॥
कोटि कसट न किउ करो नही ऐस देहि उधार ॥
जाइ कै गुर कीजीऐ सुनि सति अत्रि कुमार ॥११०॥
दत बाच ॥

रूआल छंद ॥

ऐस बाक भए जबै तब दत सत सरूप ॥
सिंधु सील सुब्रित को नद ग्यान को जनु कूप ॥
पान लाग डंडौति कै इह भाति कीन उचार ॥
कउन सो गुर कीजीऐ कहि मोहि तत बिचार ॥१११॥
ब्योम बानी बाच ॥
जउन चित बिखै रुचै सोई कीजीऐ गुरदेव ॥
तिआग करि कै कपट कउ चित लाइ कीजै सेव ॥
रीझ है गुरदेव तउ तुम पाइ हो बरु दान ॥
यौ न होइ उधार पै सुनि लेहु दत सुजान ॥११२॥
प्रिथम मंत्र दयो जिनै सोई जानि कै गुरदेव ॥
जोग कारण को चला जीअ जानि कै अनभेव ॥
तात मात रहे मनै करि मान बैन न एक ॥
घोर कानिन कौ चला धरि जोगि न्यास अनेक ॥११३॥
घोर काननि मै करी तपसा अनेक प्रकार ॥
भाति भातिन के करे इक चित मंत्र उचार ॥
कसट कै जब ही कीआ तप घोर बरख प्रमान ॥
बुधि को बरु देत भे तब आनि बुधि निधान ॥११४॥
बुधि कौ बरु जउ दयो तिन आन बुध अनंत ॥
परम पुरख पवित्र कै गए दत देव महंत ॥
अकसमात्र बढी तबै बुधि जत्र तत्र दिसान ॥
धरम प्रचुर कीआ जही तह परम पाप खिसान ॥११५॥
प्रिथम अकाल गुरू कीआ जिह को कबै नही नास ॥
जत्र तत्र दिसा विसा जिह ठउर सरब निवास ॥
अंड जेरज सेत उतभुज कीन जास पसार ॥

ताहि जान गुरू कीयो मुनि सति दत सु धार ॥११६ ॥

◀ इति स्री दत महातमे प्रथम गुरू अकाल पुरख समापतं ॥1॥

रूआल छंद ॥

परम रूप पवित्र मुनि मन जोग करम निधान ॥
दूसरे गुर कउ करा मन ई मनै मुनि मानि ॥
नाथ तउ ही पछान जो मन मानई जिह काल ॥
सिध तउ मन कामना सुध होत है सुनि लाल ॥११७ ॥

◀ इति स्री दत महातमे दुतीआ गुरू मन बरननं धिआइ समापतं ॥2॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जबै द्वै सु कीने गुरू दत देवं ॥
सदा एक चितं करै नित सेवं ॥
जटा जूट सीसं सु गंगा तरंगं ॥
कबै छ्वै सका अंग को न अनंगं ॥११८ ॥
महा उजली अंग बिभूत सोहै ॥
लखै मोन मानी महा मान मोहै ॥
जटा जूट गंगा तरंगं महानं ॥
महा बुधि उदार बिदिआ निधानं ॥११९ ॥
भगउहे लसै बसत्र लंगोट बंदं ॥
तजे सरब आसा रटै एक छंदं ॥
महा मोन मानी महा मोन बाधे ॥
महा जोग करमं सभै न्यास साधे ॥१२० ॥
दया सिंधु सरबं सुभं करम करता ॥
हरे सरब गरबं महा तेज धरता ॥
महा जोग की साधना सरब साधी ॥
महा मोन मानी महा सिध लाधी ॥१२१ ॥
उठै प्राति संधिआ करै नान जावै ॥
करै साधना जोग की जोग भावै ॥
त्रिकालग दरसी महा परम ततं ॥
सु संन्रयासु देवं महा सुध मतं ॥१२२ ॥
पियासा छुधा आन कै जो संतावै ॥
रहे एक चितं न चितं चलावै ॥
करै जोग न्यासं निरासं उदासी ॥
धरे मेखला परम ततं प्रकासी ॥१२३ ॥
महा आतम दरसी महा तत बेता ॥
थिरं आसणेकं महा ऊरधरेता ॥
करै सति करमं कुकरमं प्रनासं ॥
रहै एक चितं मुनीसं उदासं ॥१२४ ॥
सुभं सासत्रगंता कुकरमं प्रणासी ॥
बसै काननेसं सुपात्रं उदासी ॥
तज्यो काम करोधं सबै लोभ मोहं ॥
महा जोग ज्वाला महा मोनि सोहं ॥१२५ ॥
करै न्यास एकं अनेकं प्रकारी ॥
महा ब्रहमचरजं सु धरमाधिकारी ॥

महा तत बेता सु संन्यास जोगं ॥
अनासं उदासी सु बासं अरोगं ॥१२६॥
अनास महा ऊरधरेता संन्यासी ॥
महा तत बेता अनासं उदासी ॥
सबै जोग साधै रहै एक चितं ॥
तजै अउर सरबं गह्यो एक हितं ॥१२७॥
तरे ताप धूमं करै पान उचं ॥
झुलै मधि अगनं तउ धिआन मुचं ॥
महा ब्रहमचरजं महा धरम धारी ॥
भए दत के रुद्र पूरण वतारी ॥१२८॥
हठी तापसी मोन मंत्र महानं ॥
परं पूरणं दत प्रग्रया निधानं ॥
करै जोग न्यासं तजे राज भोगं ॥
चके सरब देवं जके सरब लोगं ॥१२९॥
जके जछ गंध्रब बिदिआ निधानं ॥
चके देवता चंद सूरं सुरानं ॥
छके जीव जंत्रं लखे परम रूपं ॥
तज्यो गरब सरबं लगे पान भूपं ॥१३०॥
जटी दंड मुंडी तपी ब्रहमचारी ॥
जती जंगमी जामनी जंत्र धारी ॥
परी पारबती परम देसी पछेले ॥
बली बालखी बंग रूमी रुहेले ॥१३१॥
जटी जामनी जंत्र धारी छलारे ॥
अजी आमरी निवलका करम वारे ॥
अतेवागनहोत्री जूआ जग्य धारी ॥
अधं उरधरेते बरं ब्रहमचारी ॥१३२॥
जिते देस देसं हुते छत्रधारी ॥
सबै पान लगे तज्यो गरब भारी ॥
करै लाग सरबं सु संन्यास जोगं ॥
इही पंथ लागे सुभं सरब लोगं ॥१३३॥
सबे देस देसान ते लोग आए ॥
करं दत के आनि मूंडं मुंडाए ॥
धरे सीस पै परम जूटे जटानं ॥
करै लागि संन्यास जोग अप्रमानं ॥१३४॥

रूआल छंद ॥

देस देसन के सबै न्रिप आनि कै तहि ठउर ॥
जानि पान परै सबै गुरु दत स्री सरमउर ॥
तिआगि अउर नए मति एक ही मति ठान ॥
आनि मूंड मुंडात भे सभ राज पाट निधान ॥१३५॥
आनि आनि लगे सबै पग जानि कै गुरदेव ॥
ससत्र सासत्र सबै भ्रिताबर अनंत रूप अभेव ॥
अछिद गात अछिज रूप अभिद जोग दुरंत ॥
अमित उजल अजित परम उपजिओ सु दत महंत ॥१३६॥
पेखि रूप चके चराचर सरब ब्योम बिमान ॥
जत्र तत्र रहे नराधप चित्र रूप समान ॥
अत्र छत्र न्रिपत को तजि जोग लै संन्यास ॥
आनि आनि करै लगे ह्वै जत्र तत्र उदास ॥१३७॥
इंद्र उपिंद्र चके सबै चित चउकियो ससि भानु ॥
लै न दत छनाइ आज न्रिपत मोर महान ॥

रीझ रीझ रहे जहा तहा सरब ब्योम बिमान ॥
जान जान सबै परे गुरदेव दत महान ॥१३८॥
जत्र तत्र दिसा विसा न्रिप राज साज बिसार ॥
आनि आनि सबो गहे पग दत देव उदार ॥
जानि जानि सु धरम को घर मानि कै गुरदेव ॥
प्रीति मान सबै लगे मन छाडि कै अहंमेव ॥१३९॥
राज साज सबै तजे न्रिप भेस कै संन्यास ॥
आनि जोग करै लगे ह्वै जत्र तत्र उदास ॥
मंडि अंगि बिभूत उजल सीस जूट जटान ॥
भाति भातन सौ सुभे सभ राज पाट निधान ॥१४०॥
जत्र तत्र बिसारि संपति पुत्र मित्र कलत्र ॥
भेस लै संन्यास को न्रिप छाडि कै जय पत्र ॥
बाज राज समाज सुंदर छाड के गज राज ॥
आनि आनि बसे महा बनि जत्र तत्र उदास ॥१४१॥

पाधड़ी छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

इह भाति सरब छित के न्रिपाल ॥
संन्यास जोग लागे उताल ॥
इक करै लागि निवलि आदि करम ॥
इक धरत धिआन लै बसत्र चरम ॥१४२॥
इक धरत बसत्र बलकलन अंगि ॥
इक रहत कलप इसथित उतंग ॥
इक करत अलप दुगधा अहार ॥
इक रहत बरख बहु निराहार ॥१४३॥
इक रहत मोन मोनी महान ॥
इक करत न्यास तजि खान पान ॥
इक रहत एक पग निराधार ॥
इक बसत ग्राम कानन पहार ॥१४४॥
इक करत कसट कर धूम्र पान ॥
इक करत भाति भातिन सनान ॥
इक रहत इक पग जुग प्रमान ॥
कई ऊरध बाह मुनि मन महान ॥१४५॥
इक रहत बैठि जलि मधि जाइ ॥
इक तपत आगि ऊरध जराइ ॥
इक करत न्यास बहु बिधि प्रकार ॥
इक रहत एक आसा अधार ॥१४६॥
केई कबहूं नीच नही करत डीठ ॥
केई तपत आगि पर जार पीठ ॥
केई बैठ करत ब्रत चरज दान ॥
केई धरत चित एकै निधान ॥१४७॥
केई करत जगि अरु होम दान ॥
केई भाति भाति बिधवति इसनान ॥
केई धरत जाइ लै पिसट पान ॥
केई देत करम की छाडि बान ॥१४८॥
केई करत बैठि परमं प्रकास ॥
केई भ्रमत पब बनि बनि उदास ॥
केई रहत एक आसन अडोल ॥
केई जपत बैठि मुख मंत्र अमोल ॥१४९॥
केई करत बैठि हरि हरि उचार ॥
केई करत पाठ मुनि मन उदार ॥

केई भगति भाव भगवत भजंत ॥
केई रिचा बेद सिंम्रित रटंत ॥१५०॥
केई एक पान असथित अडोल ॥
केई जपत जाप मनि चित खोलि ॥
केई रहत एक मन निराहार ॥
इक भछत पउन मुनि मन उदार ॥१५१॥
इक करत निआस आसा बिहीन ॥
इक रहत एक भगवत अधीन ॥
इक करत नैकु बन फल अहार ॥
इक रटत नाम सिआमा अपार ॥१५२॥
इक एक आस आसा बिरहत ॥
इक बहुत भाति दुख देह सहत ॥
इक कहत एक हरि को कथान ॥
इक मुकत पत्र पावत निदान ॥१५३॥
इक परे सरणि हरि के दुआर ॥
इक रहत तासु नामै अधार ॥
इक जपत नाम ता को दुरंत ॥
इक अंति मुकति पावत बिअंत ॥१५४॥
इक करत नामु निस दिन उचार ॥
इक अगनि होत्र ब्रहमा बिचार ॥
इक सासत्र सरब सिम्रिति रटंत ॥
इक साध रीति निस दिन चलंत ॥१५५॥
इक होम दान अरु बेद रीति ॥
इक रटत बैठि खट सासत्र मीत ॥
इक करत बेद चारो उचार ॥
इक गिआन गाथ महिमा अपार ॥१५६॥
इक भाति भाति मिसटान भोज ॥
बहु दीन बोलि भछ देत रोज ॥
केई करत बैठि बहु भाति पाठ ॥
कई अंनि तिआगि चाबंत काठ ॥१५७॥

पाधड़ी छंद ॥

केई भाति भाति सो धरत धिआन ॥
केई करत बैठि हरि क्रित कानि ॥
केई सुनत पाठ परमं पुनीत ॥
नही मुरत कलप बहुत जात बीत ॥१५८॥
केई बैठ करत जलि को अहार ॥
केई भ्रमत देस देसन पहार ॥
केई जपत मध कंदरी दीह ॥
केई ब्रहमचरज सरता मझीह ॥१५९॥
केई रहत बैठि मध नीर जाइ ॥
केई अगन जारि तापत बनाइ ॥
केई रहत सिधि मुख मोन ठान ॥
अनि आस चित इक आस मान ॥१६०॥
अनडोल गात अबिकार अंग ॥
महिमा महान आभा अभंग ॥
अनभै सरूप अनभव प्रकास ॥
अबयकत तेज निस दिन उदास ॥१६१॥
इह भाति जोगि कीने अपार ॥
गुर बाझ यौ न होवै उधार ॥

तब परे दत के चरनि आनि ॥
कहि देहि जोग के गुर बिधान ॥१६२॥
जल मधि जौन मुंडे अपार ॥
बन नाम तउन ह्वैगे कुमार ॥
गिरि मधि सिख किने अनेक ॥
गिरि भेस सहति समझो बिबेक ॥१६३॥
भारथ भणंत जे भे दुरंत ॥
भारथी नाम ता के भणंत ॥
पुरि जास सिख कीने अपार ॥
पुरी नाम तउन जान बिचार ॥१६४॥
परबत बिखै सजे सिख कीन ॥
परबति सु नाम लै ताहि दीन ॥
इह भाति उचरि करि पंच नाम ॥
तब दत देव किंने बिस्राम ॥१६५॥
सागर मंझार जे सिख कीन ॥
सागरि सु नाम तिन के प्रबीन ॥
सारसुति तीर जे कीन चेल ॥
सारसुती नाम तिन नाम मेल ॥१६६॥
तीरथन बीच जे सिख कीन ॥
तीरथि सु नाम तिन को प्रबीन ॥
जिन चरन दत के गहे आनि ॥
ते भए सरब बिदिआ निधान ॥१६७॥
इमि करत सिख जह तह बिहारि ॥
आस्रमन बीच जो जो निहारि ॥
तह तही सिख जो कीन जाइ ॥
आस्रमि सु नाम को तिन सुहाइ ॥१६८॥
आरंन बीच जेअ भे दत ॥
संन्यास राज अति बिमल मति ॥
तह तह सु कीन जे सिख जाइ ॥
अरिंनि नाम तिन को रखाइ ॥१६९॥
इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे दत महातमे अनभउ प्रकासे दस नाम ध्याय संपूरण ॥

पाधड़ी छंद ॥

आजान बाहु अतिसै प्रभाव ॥
अबियकत तेज संन्यास राव ॥
जह जह बिहार मुनि करत दत ॥
अनभउ प्रकास अरु बिमल मत ॥१७०॥
जे हुते देस देसन न्रिपाल ॥
तजि गरब पान लागे सु ढाल ॥
तजि दीन अउर झूठे उपाइ ॥
द्रिड़ गहिओ एक संन्यास राइ ॥१७१॥
तजि सरब आस इक आस चित ॥
अबिकार चित परमं पवित ॥
जह करत देस देसन बिहार ॥
उठि चलत सरब राजा अपार ॥१७२॥

दोहरा ॥

गवन करत जिहां जिहां दिसा मुनि मन दत अपार ॥
संगि चलत उठि सब प्रजा तज घर बार पहार ॥१७३॥

चौपई ॥

जिह जिह देस मुनीसर गए ॥
ऊच नीच सब ही संगि भए ॥
एक जोग अरु रूप अपारा ॥
कउन न मोहै कहो बिचारा ॥१७४॥
जह तह चला जोगु संन्यासा ॥
राज पाट तज भए उदासा ॥
ऐसी भूमि न देखीअत कोई ॥
जहा संन्यास जोग नही होई ॥१७५॥

◀ *इति मन नूं गुरू दूसर ठहराइआ समापतं ॥2॥*

अथ त्रिती गुरू मकरका कथनं ॥

चौपई ॥

चउबीस गुरू कीन जिहा भाता ॥
अब सुन लेहु कहो इह बाता ॥
एक मकरका दत निहारी ॥
ऐस ह्रिदे अनुमान बिचारी ॥१७६॥
आपन हीऐ ऐस अनुमाना ॥
तीसर गुरु याहि हम माना ॥
प्रेम सूत की डोरि बढावै ॥
तब ही नाथ निरंजन पावै ॥१७७॥
आपन आपु आप मो दरसै ॥
अंतरि गुरू आतमा परसै ॥
एक छाडि कै अनत न धावै ॥
तब ही परम ततु को पावै ॥१७८॥
एक सरूप एक करि देखै ॥
आन भाव को भाव ने पेखै ॥
एक आस तजि अनत न धावै ॥
तब ही नाथ निरंजन पावै ॥१७९॥
केवल अंग रंग तिह राचै ॥
एक छाडि रस नेक न माचै ॥
परम ततु को धिआन लगावै ॥
तब ही नाथ निरंजन पावै ॥१८०॥
तीसर गुरू मकरिका ठानी ॥
आगे चला दत अभिमानी ॥
ता कर भाव ह्रिदे महि लीना ॥
हरखवंत तब चला प्रबीना ॥१८१॥

◀ *इति त्रिती गुरू मकरका समापतं ॥3॥*

अथ बक चतरथ गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

जबै दत गुरु अगै सिधारा ॥
मछ रासकर बैठि निहारा ॥
उजल अंग अति धिआन लगावै ॥
मोनी सरब बिलोकि लजावै ॥१८२॥
जैसक धिआन मछ के काजा ॥
लावत बक नावै निरलाजा ॥
भली भाति इह धिआन लगावै ॥
भाव तास को मुनि मन भावै ॥१८३॥
ऐसो धिआन नाथ हित लईऐ ॥
तब ही परम पुरख कहु पईऐ ॥
मछातक लखि दत लुभाना ॥
चतरथ गुरू तास अनुमाना ॥१८४॥

◀ *इति मछातक चतुरथ गुरू समापतं ॥4॥*

अथ बिड़ाल पंचम गुरू नाम ॥

चौपई ॥

आगे चला दत मुनि राई ॥
सीस जटा कह जूट छकाई ॥
देखा एक बिड़ाल जु आगे ॥
धिआन लाइ मुनि निरखन लागै ॥१८५॥
मूस काज जस लावत धिआनू ॥
लाजत देखि महंत महानूं ॥
ऐस धिआन हरि हेत लगईऐ ॥
तब ही नाथ निरंजन पईऐ ॥१८६॥
पंचम गुरू याहि हम जाना ॥
या कहु भाव हीऐ अनुमाना ॥
ऐसी भाति धिआन जो लावै ॥
सो निहचै साहिब को पावै ॥१८७॥

◀ *इति बिड़ाल पंचमो गुरू समापतं ॥5॥*

अथ धुनीआ गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

आगे चला राज संन्यासा ॥
एक आस गहि ऐस अनासा ॥
तह इक रूम धुनखतो लहा ॥
ऐस भाति मन सौ मुनि कहा ॥१८८॥
भूप सैन इह जात न लही ॥
ग्रीवा नीच नीच ही रही ॥
सगल सैन वाही मग गई ॥
ता कौ नैकु खबर नहीं भई ॥१८९॥
रूई धुनखतो फिरि न निहारा ॥

नीच ही ग्रीवा रहा बिचारा ॥
दत बिलोकि हीए मुसकाना ॥
खसटम गुरू तिसी कहु जाना ॥१९०॥
रूम हेत इह जिम चितु लायो ॥
सैन गई परु सिर न उचायो ॥
तैसीए प्रभ सौ प्रीति लगईऐ ॥
तब ही पुरख पुरातन पईऐ ॥१९१॥

◀ *इति रुई धुनखता पेंजा खसटमो गुरु समापतं ॥6॥*

अथ माछी सपतमो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

आगे चला राज संन्यासा ॥
महा बिमल मन भयो उदासा ॥
निरखा तहा एक मछहा ॥
लए जार करि जात न कहा ॥१९२॥
बिनछी एक हाथ मो धारे ॥
जरीआ अंध कंध पर डारे ॥
इसथित एक मछि की आसा ॥
जानुक वा के मध न सासा ॥१९३॥
एकसु ठाढ मछ की आसू ॥
राज पाट ते जान उदासू ॥
इह बिधि नेह नाथ सौ लईऐ ॥
तब ही पूरन पुरख कह पईऐ ॥१९४॥

◀ *इति माछी गुरु सपतमो समापतं ॥7॥*

अथ चेरी असटमो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

हरखत अंग संग सैना सुनि ॥
आयो दछ प्रजापति के मुनि ॥
तहा एक चेरका निहारी ॥
चंदन घसत मनो मतवारी ॥१९५॥
चंदन घसत नारि सुभ धरमा ॥
एक चित ह्वै आपन घर मा ॥
एक चित नही चित चलावै ॥
प्रितमा चित्र बिलोकि लजावै ॥१९६॥
दत लए संन्यासन संगा ॥
जात भयो तह भेटत अंगा ॥
सीस उचाइ न तास निहारा ॥
राव रंक को जात बिचारा ॥१९७॥
ता को दत बिलोकि प्रभावा ॥
असटम गुरू ताहि ठहरावा ॥

धंनि धंनि इह चेरका सभागी ॥
जा की प्रीति नाथ संगि लागी ॥१९८॥
ऐस प्रीति हरि हेत लगइयै ॥
तब ही नाथ निरंजन पइयै ॥
बिनु चिति दीन हाथि नही आवै ॥
चार बेद इमि भेद बतावै ॥१९९॥

◀ *इति चेरका असटमो गुरू समापतं ॥8॥*

अथ बनजारा नवमो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

आगे चला जोग जट धारी ॥
लए संगि चेलका अपारी ॥
देखत बनखंड नगर पहारा ॥
आवत लखा एक बनजारा ॥२००॥
धन कर भरे सबै भंडारा ॥
चला संग लै टाड अपारा ॥
अमित गाव लवंगन के भरे ॥
बिधना ते नही जात बिचरे ॥२०१॥
राति दिवस तिन द्रब की आसा ॥
बेचन चला छाडि घर वासा ॥
और आस दूसर नही कोई ॥
एकै आस बनज की होई ॥२०२॥
छाह धूप को त्रास न मानै ॥
राति अउ दिवस गवन ई ठानै ॥
पाप पुंन की अउर न बाता ॥
एकै रस मात्रा के राता ॥२०३॥
ता कह देखि दत हरि भगतू ॥
जा कर रूप जगति जग मगतू ॥
ऐस भाति जो साहिब धिआईऐ ॥
तब ही पुरख पुरातन पाईऐ ॥२०४॥

◀ *इति बनजारा नउमो गुरू समापतं ॥9॥*

अथ काछन दसमो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

चला मुनी तजि परहरि आसा ॥
महा मोनि अरु महा उदासा ॥
परम तत बेता बडभागी ॥
महा मोन हरि को अनुरागी ॥२०५॥
परम पुरख पूरो बडभागी ॥
महा मुनी हरि के रस पागी ॥
ब्रहम भगत खट गुन रस लीना ॥

एक नाम के रस सउ भीना ॥२०६॥
उजल गात महा मुनि सोहै ॥
सुर नर मुनि सभ को मन मोहै ॥
जह जह जाइ दत सुभ करमा ॥
तह तह होत सभै निहकरमा ॥२०७॥
भरम मोह तिह देखत भागै ॥
राम भगति सभ ही उठि लागै ॥
पाप ताप सभ दूर पराई ॥
निसि दिन रहै एक लिव लाई ॥२०८॥
काछन एक तहा मिल गई ॥
सोआ चूक पुकारत भई ॥
भाव याहि मन माहि निहारा ॥
दसवो गुरू ताहि बीचारा ॥२०९॥
जो सोवै सो मूलु गवावै ॥
जो जागै हरि ह्रिदै बसावै ॥
सति बोलि या की हम मानी ॥
जोग धिआन जागै ते जानी ॥२१०॥

◀ *इति काछन गुरू दसवो समापतं ॥10॥*

अथ सुरथ यारमो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

आगे दत देव तब चला ॥
साधे सरब जोग की कला ॥
अमित तेज अरु उजल प्रभाउ ॥
जानुक बना दूसर हरि राउ ॥२११॥
सभ ही कला जोग की साधी ॥
महा सिधि मोनी मनि लाधी ॥
अधिक तेज अरु अधिक प्रभावा ॥
जा लखि इंद्रासन थहरावा ॥२१२॥

मधुभार छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

मुनि मनि उदार ॥
गुन गन अपार ॥
हरि भगति लीन ॥
हरि को अधीन ॥२१३॥
तजि राज भोग ॥
संन्यास जोग ॥
संन्यास राइ ॥
हरि भगत भाइ ॥२१४॥
मुख छबि अपार ॥
पूरण वतार ॥
खड़गं असेख ॥
बिदिआ बिसेख ॥२१५॥
सुंदर सरूप ॥
महिमा अनूप ॥

आभा अपार ॥
मुनि मनि उदार ॥२१६॥
संनयास देव ॥
गुन गन अभेव ॥
अबियकत रूप ॥
महिमा अनूप ॥२१७॥
सभ सुभ सुभाव ॥
अतिभुत प्रभाव ॥
महिमा अपार ॥
गुन गन उदार ॥२१८॥
तह सुरथ राज ॥
संपति समाज ॥
पूजंत चंडि ॥
निसि दिन अखंड ॥२१९॥
न्रिप अति प्रचंड ॥
सभ बिधि अखंड ॥
सिलसित प्रबीन ॥
देवी अधीन ॥२२०॥
निसदिन भवानि ॥
सेवत निधान ॥
करि एक आस ॥
निसि दिन उदास ॥२२१॥
दुरगा पुजंत ॥
नितप्रति महंत ॥
बहु बिधि प्रकार ॥
सेवत सवार ॥२२२॥
अति गुन निधान ॥
महिमा महान ॥
अति बिमल अंग ॥
लखि लजत गंग ॥२२३॥
तिह निरख दत ॥
अति बिमल मति ॥
अनखंड जोति ॥
जनु भिओ उदोत ॥२२४॥
झमकंत अंग ॥
लखि लजत गंग ॥
अति गुन निधान ॥
महिमा महान ॥२२५॥
अनभव प्रकास ॥
निस दिन उदास ॥
अतिभुत सुभाव ॥
संन्यास राव ॥२२६॥
लखि तासु सेव ॥
संन्यास देव ॥
अति चित रीझ ॥
तिह फासि बीझ ॥२२७॥

स्री भगवती छंद ॥

कि दिखिओत दतं ॥
कि परमंति मतं ॥

सु सरबत्र साजा ॥
कि दिखिओत राजा ॥२२८॥
कि आलोक करमं ॥
कि सरबत्र परमं ॥
कि आजित भूपं ॥
कि रतेस रूपं ॥२२९॥
कि आजान बाहु ॥
कि सरबत्र साहु ॥
कि धरमं सरूपं ॥
कि सरबत्र भूपं ॥२३०॥
कि साहान साहं ॥
कि आजानु बाहं ॥
कि जोगेंद्र गामी ॥
कि धरमेंद्र धामी ॥२३१॥
कि रुद्रारि रूपं ॥
कि भूपान भूपं ॥
कि आदग जोगं ॥
कि तिआगंत सोगं ॥२३२॥

मधुभार छंद ॥

बिमोहियोत देखी ॥
कि रावल भेखी ॥
कि संन्यास राजा ॥
कि सरबत्र साजा ॥२३३॥
कि संभाल देखा ॥
कि सुध चंद्र पेखा ॥
कि पावित्र करमं ॥
कि संनिआस धरमं ॥२३४॥
कि संनिआस भेखी ॥
कि आधरम द्वैखी ॥
कि सरबत्र गामी ॥
कि धरमेस धामी ॥२३५॥
कि आछिज जोगं ॥
कि आगंम लोगं ॥
कि लंगोट बंधं ॥
कि सरबत्र मंधं ॥२३६॥
कि आछिज करमा ॥
कि आलोक धरमा ॥
कि आदेस करता ॥
कि संन्यास सरता ॥२३७॥
कि अगिआन हंता ॥
कि पारंग गंता ॥
कि आधरम हंता ॥
कि संन्यास भकता ॥२३८॥
कि खंकाल दासं ॥
कि सरबत्र भासं ॥
कि संन्यास राजं ॥
कि सरबत्र साजं ॥२३९॥
कि पारंग गंता ॥
कि आधरम हंता ॥

कि संनिआस भकता ॥
कि साजोज मुकता ॥२४०॥
कि आसकत करमं ॥
कि अबियकत धरमं ॥
कि अतेव जोगी ॥
कि अंगं अरोगी ॥२४१॥
कि सुधं सुरोसं ॥
न नैकु अंग रोसं ॥
न कुकरम करता ॥
कि धरमं सु सरता ॥२४२॥
कि जोगाधिकारी ॥
कि संन्यास धारी ॥
कि ब्रहमं सु भगता ॥
कि आरंभ जगता ॥२४३॥
कि जाटान जूटं ॥
कि निधिआन छूटं ॥
कि अबियकत अंगं ॥
कि कै पान भंगं ॥२४४॥
कि संन्यास करमी ॥
कि रावल धरमी ॥
कि त्रिकाल कुसली ॥
कि कामादि दुसली ॥२४५॥
कि डामार बाजै ॥
कि सब पाप भाजै ॥
कि बिभूत सोहै ॥
कि सरबत्र मोहै ॥२४६॥
कि लंगोट बंदी ॥
कि एकादि छंदी ॥
कि धरमान धरता ॥
कि पापान हरता ॥२४७॥
कि निनादि बाजै ॥
कि पंपाप भाजै ॥
कि आदेस बुलै ॥
कि लै ग्रंथ खुलै ॥२४८॥
कि पावित्र देसी ॥
कि धरमेंाद्र भेसी ॥
कि लंगोट बंदं ॥
कि आजोति वंदं ॥२४९॥
कि आनरथ रहिता ॥
कि संन्यास सहिता ॥
कि परमं पुनीतं ॥
कि सरबत्र मीतं ॥२५०॥
कि अचाचल अंगं ॥
कि जोगं अभंगं ॥
कि अबियकत रूपं ॥
कि संनिआस भूपं ॥२५१॥
कि बीरान राधी ॥
कि सरबत्र साधी ॥
कि पावित्र करमा ॥
कि संन्यास धरमा ॥२५२॥

अपाखंड रंगं ॥
कि आछिज अंगं ॥
कि अंनिआइ हरता ॥
कि सु न्याइ करता ॥२५३॥
कि करमं प्रनासी ॥
कि सरबत्र दासी ॥
कि अलिपत अंगी ॥
कि आभा अभंगी ॥२५४॥
कि सरबत्र गंता ॥
कि पापान हंता ॥
कि सासध जोगं ॥
कितं तिआग रोगं ॥२५५॥

◀ इति सुरथ राजा यार्हमो गुरू बरननं समापतं ॥११॥

अथ बाली दुआदसमो गुरू कथनं ॥

रसावल छंद ॥

चला दत आगे ॥
लखे पाप भागे ॥
बजै घंट घोरं ॥
बणं जाणु मोरं ॥२५६॥
नवं नाद बाजै ॥
धरा पाप भाजै ॥
करै देव्रय अरचा ॥
चतुर बेद चरचा ॥२५७॥
स्रुतं सरब पाठं ॥
सु संन्यास राठं ॥
महाजोग न्यासं ॥
सदाई उदासं ॥२५८॥
खटं सासत्र चरचा ॥
रटै बेद अरचा ॥
महा मोन मानी ॥
कि संन्यास धानी ॥२५९॥
चला दत आगै ॥
लखे पाप भागै ॥
लखी एक कंनिआ ॥
तिहूं लोग धंनिआ ॥२६०॥
महा ब्रहमचारी ॥
सु धरमाधिकारी ॥
लखी पानि वा के ॥
गुडी बालि ता के ॥२६१॥
खिलै खेल ता सो ॥
इसो हेत वा सो ॥
पीऐ पानि न आवै ॥
इसो खेल भावै ॥२६२॥
गए मोनि मानी ॥
तरै दिसट आनी ॥

न बाला निहार्यो ॥
न खेलं बिसार्यो ॥२६३॥
लखी दत बाला ॥
मनो रागमाला ॥
रंगी रंगि खेलं ॥
मनो नाग्र बेलं ॥२६४॥
तबै दत रायं ॥
लखे तास जायं ॥
गुरू तास कीना ॥
महा मंत्र भीना ॥२६५॥
गुरू तास जान्यो ॥
इमं मंत्र ठान्नयो ॥
दसं द्वै निधानं ॥
गुरू दत जानं ॥२६६॥

रुणझुण छंद ॥

लखि छबि बाली ॥
अति दुति वाली ॥
अतिभुत रूपं ॥
जणु बुधि कूपं ॥२६७॥
फिर फिर पेखा ॥
बहु बिधि लेखा ॥
तन मन जाना ॥
गुन गन माना ॥२६८॥
तिह गुर कीना ॥
अति जसु लीना ॥
अगि तब चाला ॥
जनु मनि ज्वाला ॥२६९॥

◄ *इति दुआदस गुरू लड़की गुडी खेडती समापतं ॥12॥*

अथ भ्रित त्रोदसमो गुरू कथनं ॥

तोमर छंद ॥

तब दत देव महान ॥
दस चार चार निधान ॥
अतिभुत उतम गात ॥
हरि नामु लेत प्रभात ॥२७०॥
अकलंक उजल अंग ॥
लखि लाज गंग तरंग ॥
अनभै अभूत सरूप ॥
लखि जोति लाजत भूप ॥२७१॥
अवलोकि सु भ्रित एक ॥
गुन मधि जासु अनेक ॥
अधि राति ठाढि दुआरि ॥
बहु बरख मेघ फुहार ॥२७२॥
अधि राति दत निहारि ॥

गुणवंत बिक्रम अपार ॥
जल मुसलधार परंत ॥
निज नैन देखि महंत ॥२७३॥
इक चित ठाढ सु ऐस ॥
सोवरन मूरति जैस ॥
द्रिड़ देखि ता की मति ॥
अति मनहि रीझे दत ॥२७४॥
नही सीत मानत घाम ॥
नही चित ल्यावत छाम ॥
नहीं नैकु मोरत अंग ॥
इक पाइ ठाढ अभंग ॥२७५॥
ढिग दत ता के जाइ ॥
अविलोकि तासु बनाए ॥
अधि रात्रि निरजन त्रास ॥
असि लीन ठाढ उदास ॥२७६॥
बरखंत मेघ महान ॥
भाजंत भूमि निधान ॥
जगि जीव सरब सु भास ॥
उठि भाज त्रास उदास ॥२७७॥
इह ठाढ भूपति पउर ॥
मन जाप जापत गउर ॥
नही नैकु मोरत अंग ॥
इक पाव ठाढ अभंग ॥२७८॥
असि लीन पानि कराल ॥
चमकंत उजल ज्वाल ॥
जन काहू को नही मित्र ॥
इह भाति परम पवित्र ॥२७९॥
नही नैकु उचावत पाउ ॥
बहु भाति साधत दाउ ॥
अनआस भूपति भगत ॥
प्रभ एक ही रस पगत ॥२८०॥
जल परत मूसलधार ॥
ग्रिह ले न ओटि दुआर ॥
पसु पछ सरबि दिसान ॥
सभ देस देस सिधान ॥२८१॥
इह ठाढ है इक आस ॥
इक पान जान उदास ॥
असि लीन पानि प्रचंड ॥
अति तेजवंत अखंड ॥२८२॥
मनि आनि को नही भाव ॥
इक देव को चित चाव ॥
इक पाव ऐसे ठाढ ॥
रन खंभ जानुक गाड ॥२८३॥
जिह भूमि धारस पाव ॥
नही नैकु फेरि उचाव ॥
नहीं ठाम भीजस तउन ॥
अवलोक भइओ मुनि मउन ॥२८४॥
अवलोकि तासु मुनेस ॥
अकलंक भागवि भेस ॥
गुरु जानि परीआ पाइ ॥

तजि लाज साज सचाइ ॥२८५॥
तिह जान कै गुरदेव ॥
अकलंक दत अभेव ॥
चित तास के रस भीन ॥
गुरु त्रउदसमो तिह कीन ॥२८६॥

◀ इति त्रउदसमो गुरू भ्रित समापतं ॥13॥

अथ चतुरदसमो गुर नाम ॥

रसावल छंद ॥

चल्यो दत राजं ॥
लखे पाप भाजं ॥
जिनै नैकु पेखा ॥
गुरू तुलि लेखा ॥२८७॥
महा जोति राजै ॥
लखै पाप भाजै ॥
महा तेज सोहै ॥
सिवऊ तुलि को है ॥२८८॥
जिनै नैकु पेखा ॥
मनो मैन देखा ॥
सही ब्रहम जाना ॥
न द्वै भाव आना ॥२८९॥
रिझी सरब नारी ॥
महा तेज धारी ॥
न हारं संभारै ॥
न चीरऊ चितारै ॥२९०॥
चली धाइ ऐसे ॥
नदी नाव जैसे ॥
जुवा ब्रिध बालै ॥
रही कौ न आलै ॥२९१॥
लही एक नारी ॥
सु धरमाधिकारी ॥
किधौ पारबती छै ॥
मनो बासवी है ॥२९२॥

स्री भगवती छंद ॥

कि राजा स्री छै ॥
कि बिदुलता छै ॥
कि हईमाद्रजा है ॥
कि परमं प्रभा है ॥२९३॥
कि रामं त्रीआ है ॥
कि राजं प्रभा है ॥
कि राजेस्वरी छै ॥
कि रामानुजा छै ॥२९४॥
कि कालिंद्र का छै ॥
कि कामं प्रभा छै ॥

कि देवानुजा है ॥
कि दईतेसुरा है ॥२९५॥
कि सावित्रका छै ॥
कि गाइत्री आछै ॥
कि देवेस्वरी है ॥
कि राजेस्वरी छै ॥२९६॥
कि मंत्रावली है ॥
कि तंत्रालका छै ॥
कि हईमाद्रजा छै ॥
कि हंसेसुरी है ॥२९७॥
कि जाजुलिका छै ॥
सुवरन आदिजा छै ॥
कि सुधं सची है ॥
कि ब्रहमा रची है ॥२९८॥
कि परमेसुरजा है ॥
कि परमं प्रभा है ॥
कि पावित्रता छै ॥
कि सावित्रका छै ॥२९९॥
कि चंचालका छै ॥
कि कामहि कला छै ॥
कि क्रितयं धुजा छै ॥
कि राजेस्वरी है ॥३००॥
कि राजहि सिरी है ॥
कि रामंकली है ॥
कि गउरी महा है ॥
कि टोडी प्रभा है ॥३०१॥
कि भूपालका छै ॥
कि टोडीज आछै ॥
कि बासंत बाला ॥
कि रागान माला ॥३०२॥
कि मेघं मलारी ॥
कि गउरी धमारी ॥
कि हिंडोल पुत्री ॥
कि आकास उतरी ॥३०३॥
सु सऊहाग वंती ॥
कि पारंग गंती ॥
कि खट सासत्र बकता ॥
कि निज नाह भगता ॥३०४॥
कि रंभा सची है ॥
कि ब्रहमा रची है ॥
कि गंध्रबणी छै ॥
कि बिदिआधरी छै ॥३०५॥
कि रंभा उरबसी छै ॥
कि सुधं सची छै ॥
कि हंस एस्वरी है ॥
कि हिंडोलका छै ॥३०६॥
कि गंध्रबणी है ॥
कि बिदिआधरी है ॥
कि राजहि सिरी छै ॥
कि राजहि प्रभा छै ॥३०७॥

कि राजानजा है ॥
कि रुद्रं प्रिआ है ॥
कि संभालका छै ॥
कि सुधं प्रभा छै ॥३०८॥
कि अंबालिका छै ॥
कि आकरखणी छै ॥
कि चंचालक छै ॥
कि चित्रं प्रभा है ॥३०९॥
कि कालिंद्रका छै ॥
कि सारस्वती है ॥
किधौ जान्रहवी है ॥
किधौ दुआरका छै ॥३१०॥
कि कालिंद्रजा छै ॥
कि कामं प्रभा छै ॥
कि कामएसवरी है ॥
कि इंद्रानुजा है ॥३११॥
कि भै खंडणी छै ॥
कि खंभावती है ॥
कि बासंत नारी ॥
कि धरमाधिकारी ॥३१२॥
कि परमह प्रभा छै ॥
कि पावित्रता छै ॥
कि आलोकणी है ॥
कि आभा परी है ॥३१३॥
कि चंद्रा मुखी छै ॥
कि सूरं प्रभा छै ॥
कि पावित्रता है ॥
कि परमं प्रभा है ॥३१४॥
कि सरपं लटी है ॥
कि दुखं कटी है ॥
कि चंचालका छै ॥
कि चंद्रं प्रभा छै ॥३१५॥
कि बुधं धरी है ॥
कि क्रुधं हरी है ॥
कि छत्रालका छै ॥
कि बिजं छटा है ॥३१६॥
कि छत्राणवी है ॥
कि छत्रंधरी है ॥
कि छत्रं प्रभा है ॥
कि छत्रं छटा है ॥३१७॥
कि बानं द्रिगी है ॥
नेत्रं म्रिगी है ॥
कि कउला प्रभा है ॥
निसेसाननी छै ॥३१८॥
कि गंध्रबणी है ॥
कि बिदिआधरी छै ॥
कि बासंत नारी ॥
कि भूतेस पिआरी ॥३१९॥
कि जाद्वेस नारी ॥
कि पंचाल बारी ॥

कि हिंडोलका छै ॥
कि राजह सिरी है ॥३२०॥
कि सोवरण पुत्री ॥
कि आकास उत्री ॥
कि स्वरणी प्रिता है ॥
कि सुव्रणं प्रभा है ॥३२१॥
कि पदमं द्रिगी है ॥
कि परमं प्रभी है ॥
कि बीराबरा है ॥
कि ससि की सुभा है ॥३२२॥
कि नागेसजा है ॥
नागन प्रभा है ॥
कि नलनं द्रिगी है ॥
कि मलिनी म्रिगी है ॥३२३॥
कि अमितं प्रभा है ॥
कि अमितोतमा है ॥
कि अकलंक रूपं ॥
कि सभ जगत भूपं ॥३२४॥

मोहणी छंद ॥

जुबणमय मंती सु बाली ॥
मुख नूरं पूरं उजाली ॥
म्रिग नैणी बैणी कोकिला ॥
ससि आभा सोभा चंचला ॥३२५॥
घणि मंझै जै है चंचाली ॥
म्रिदुहासा नासा खंकाली ॥
चखु चारं हारं कंठायं ॥
म्रिग नैणी बेणी मंडायं ॥३२६॥
गज गामं बामं सु गैणी ॥
म्रिदहासं बासं बिध बैणी ॥
चखु चारं हारं निरमला ॥
लखि आभा लजी चंचला ॥३२७॥
द्रिड़ धरमा करमा सुकरमं ॥
दुख हरता सरता जाणु धरमं ॥
मुख नूरं भूरं सु बासा ॥
चखु चारी बारी अंनासा ॥३२८॥
चखु चारं बारं चंचाली ॥
सत धरमा करमा संचाली ॥
दुख हरणी दरणी दुख द्वंदं ॥
प्रिया भकता बकता हरि छंदं ॥३२९॥
रंभा उरबसीआ घ्रिताची ॥
अछै मोहणी आजे राची ॥
लखि सरबं गरबं परहारी ॥
मुखि नीचे धामं सिधारी ॥३३०॥
गंधरबं सरबं देवाणी ॥
गिरजा गाइत्री लंकाणी ॥
सावित्री चंद्री इंद्राणी ॥
लखि लजी सोभा सूरजाणी ॥३३१॥
नागणीआ न्रितिआ जछाणी ॥
पापा पावित्री पबाणी ॥

पईसाच प्रेती भूतेसी ॥
भिंभरीआ भामा भूपेसी ॥३३२॥
बर बरणी हरणी सब दुखं ॥
सुख करनी तरुणी ससि मुखं ॥
उरगी गंध्रबी जछ्यानी ॥
लंकेसी भेसी इंद्राणी ॥३३३॥
द्रिग बानं तानं मदमती ॥
जुबन जगमगणी सुभवंती ॥
उरि धारं हारं बनि मालं ॥
मुखि सोभा सिखिरं जन ज्वालं ॥३३४॥
छतपत्री छत्री छत्राली ॥
बिधु बैणी नैणी न्रिमाली ॥
असि उपासी दासी निरलेपं ॥
बुधि खानं मानं संछेपं ॥३३५॥
सुभ सीलं डीलं सुख थानं ॥
मुख हासं रासं निरबानं ॥
प्रिया भकता बकता हरि नामं ॥
चित लैणी दैणी आरामं ॥३३६॥
प्रिय भकता ठाढी एकंगी ॥
रंग एकै रंगै सो रंगी ॥
निर बासा आसा एकातं ॥
पति दासी भासी परभातं ॥३३७॥
अनि निंद्र अनिंदा निरहारी ॥
प्रिय भकता बकता ब्रतचारी ॥
बासंती टोडी गउडी है ॥
भुपाली सारंग गउरी छै ॥३३८॥
हिंडोली मेघ मलारी है ॥
जैजावंती गौड मलारी छै ॥
बंगलीआ रागु बसंती छै ॥
बैरारी सोभावंती है ॥३३९॥
सोरठि सारंग बैरारी छै ॥
परज कि सुध मलारी छै ॥
हिंडोली काफी तैलंगी ॥
भैरवी दीपकी सुभंगी ॥३४०॥
सरबेवं रागं निरबाणी ॥
लखि लोभी आभा गरबाणी ॥
जउ कथउ सोभा सरबाणं ॥
तउ बाढे एकं ग्रंथाणं ॥३४१॥
लखि ताम दतं ब्रतचारी ॥
सब लगे पानं जटधारी ॥
तन मन भरता कर रस भीना ॥
चव दसवो ता कौ गुरु कीना ॥३४२॥

◄ *इति प्रिय भगत इसत्री चतुरदसवा गुरू समापतं ॥14॥*

अथ बानगर पंधरवो गुरू कथनं ॥

तोटक छंद ॥

करि चउदसवों गुरु दत मुनं ॥
मग लगीआ पूरत नाद धुनं ॥
भ्रम पूरब पछ्रम उत्र दिसं ॥
तकि चलीआ दछ्रन मोन इसं ॥३४३॥
अविलोकि तहा इक चित्र पुरं ॥
जनु क्राति दिवालय सरब हरं ॥
नगरेस तहा बहु मारि म्रिगं ॥
सब सिंघ म्रिगीपति घाइ खगं ॥३४४॥
चतुरं लए न्रिप संगि घनी ॥
थहरंत धुजा चमकंत अनी ॥
बहु भूखन चीर जराव जरी ॥
त्रिदसालय की जनु क्राति हरी ॥३४५॥
तह बैठ हुतो इक बाणगरं ॥
बिनु प्राण किधौ नही बैनुचरं ॥
तह बाजत बाज म्रिदंग गणं ॥
डफ ढोलक झाझ मुचंग भणं ॥३४६॥
दल नाथ लए बहु संगि दलं ॥
जल बारिध जानु प्रलै उछलं ॥
हय हिंसत चिंसत गूड़ गजं ॥
गल गजत लजत सुंड लजं ॥३४७॥
द्रुम ढाहत गाहत गूड़ दलं ॥
कर खीचत सीचत धार जलं ॥
सुख पावत धावत पेखि प्रभै ॥
अवलोकि बिमोहत राज सुभै ॥३४८॥
चपि डारत चाचर भानु सूअं ॥
सुख पावत देख नरेस भूअं ॥
गल गजत ढोल म्रिदंग सुरं ॥
बहु बाजत नाद नयं मुरजं ॥३४९॥
कलि किंकणि भूखत अंगि बरं ॥
तन लेपत चंदन चार प्रभं ॥
म्रिदु डोलत बोलत बात मुखं ॥
ग्रिहि आवत खेल अखेट सुखं ॥३५०॥
मुख पोछ गुलाब फुलेल सुभं ॥
कलि कजल सोहत चारु चखं ॥
मुख उजल चंद समान सुभं ॥
अविलोकि छके गण गंध्रबिसं ॥३५१॥
सुभ सोभत हार अपार उरं ॥
तिलकं दुति केसर चारु प्रभं ॥
अनसंख अछूहन संग दलं ॥
तिह जात भए सन सैन मगं ॥३५२॥
फिरि आइ गए तिह पैंड मुनं ॥
कलि बाजत संखन नाद धुनं ॥
अविलोकि तहा इक बान गरं ॥
सिर नीच मनो लिख चित्र धरं ॥३५३॥
अविलोक रिखीसर तीर गरं ॥
हसि बैन सु भाति इमं उचरं ॥
कहु भूप गए लीए संगि दलं ॥
कहिओ सो न गुरू अविलोक द्रिगं ॥३५४॥
चकि चित रहे अचित मुनं ॥
अनखंड तपी नही जोग डुलं ॥

अनआस अभंग उदास मनं ॥
अबिकार अपार प्रभास सभं ॥३५५॥
अनभंग प्रभा अनखंड तपं ॥
अबिकार जती अनिआस जपं ॥
अनखंड ब्रतं अनडंड तनं ॥
हठवंत ब्रती रिखि अत्र सूअं ॥३५६॥
अविलोकि सरं करि धिआन जुतं ॥
रहि रीझ जटी हठवंत ब्रतं ॥
गुरु मानिस पंचदस्वो प्रबलं ॥
हठ छाडि सबै तिन पान परं ॥३५७॥
इमि नाह सौ जो नर नेह करै ॥
भव धार अपारहि पार परै ॥
तन के मन के भ्रम पासि धरे ॥
करि पंद्रसवो गुरु पान परे ॥३५८॥

◀ इति पंद्रसव गुरू बानगर समापतं ॥15॥

अथ चावडि सोरवो गुरु कथनं ॥

तोटक छंद ॥

मुख बिभूत भगवे भेस बरं ॥
सुभ सोभत चेलक संग नरं ॥
गुन गावत गोबिंद एक मुखं ॥
बन डोलत आस उदास सुखं ॥३५९॥
सुभ सूरति पूरत नाद नवं ॥
अति उजल अंग बिभूत रिखं ॥
नही बोलत डोलत देस दिसं ॥
गुन चारत धारत ध्यान हरं ॥३६०॥
अविलोकय चावंडि चारु प्रभं ॥
ग्रिहि जात उडी गहि मासु मुखं ॥
लखि कै पल चावंडि चार चली ॥
तिह ते अति पुसट प्रमाथ बली ॥३६१॥
अविलोकिस मास अकास उडी ॥
अति जुधु तही तिहं संग मंडी ॥
तजि मासु चड़ा उडि आप चली ॥
लहि कै चित चावंडि चार बली ॥३६२॥
अविलोकि सु चावंडि चार पलं ॥
तजि त्रास भाई थिर भूमि थलं ॥
लखि तासु मनं मुनि चउक रह्यो ॥
चित सोर्हसवे गुरु तासु कह्यो ॥३६३॥
कोऊ ऐस तजै जब सरब धनं ॥
करि कै बिनु आस उदास मनं ॥
तब पाचउ इंद्री तिआग रहै ॥
इन चीलन जिउ स्रुत ऐस कहै ॥३६४॥

◀ इति सोर्हिवो गुरू चावंडि समापतं ॥16॥

अथ दुधीरा सतारवो गुरू कथनं ॥

तोटक छंद ॥

करि सोरसवो रिखि तासु गुरं ॥
उठि चलीआ बाट उदास चितं ॥
मुखि पूरत नादि निनाद धुनं ॥
सुनि रीझत गंध्रब देव नरं ॥३६५॥
चलि जात भए सरिता निकटं ॥
हठवंत रिखं तपसा बिकट ॥
अविलोक दुधीरया एक तहा ॥
उछरंत हुते नदि मछ जहा ॥३६६॥
थरकंत हुतो इक चित नभं ॥
अति उजल अंग सुरंग सुभं ॥
नही आनि बिलोकत आप द्रिगं ॥
इह भाति रह्यो गड मछ मनं ॥३६७॥
तहा जाइ महा मुनि मजन कै ॥
उठि कै हरि धिआन लगा सुच कै ॥
न टरो तब लौ वह मछ अरी ॥
रथ सूर अथिओ नह डीठ टरी ॥३६८॥
थरकंत रहा नभि मछ कटं ॥
रथ भानु हटिओ नही ध्यान छुटं ॥
अविलोक महा मुनि मोहि रहिओ ॥
गुरु सत्रसवो कर तासु कहिओ ॥३६९॥

◀ *इति सतारवो गुरू दुधीरा समापतं ॥17॥*

अथ म्रिगहा अठारसवो गुरू बरननं ॥

तोटक छंद ॥

करि मजन गोबिंद गाइ गुनं ॥
उठि जाति भए बन मधि मुनं ॥
जह साल तमाल मढाल लसै ॥
रथ सूरज के पग बाज फसै ॥३७०॥
अविलोक तहा इक ताल महा ॥
रिखि जात भए हित जोग जहा ॥
तह पत्रण मध लह्यो म्रिगहा ॥
तन सोभत कंचन सुध प्रभा ॥३७१॥
करि संधित बाण कमाण सितं ॥
म्रिग मारत कोट करोर कितं ॥
सभ सैन मुनीसर संगि लए ॥
जह कानन थो तह जात भए ॥३७२॥
कनकं दुति उजल अंग सने ॥
मुनि राज मनं रितु राज बने ॥
रिखि संग सखा निसि बहुत लए ॥
तिह बारिध दूज बिलोकि गए ॥३७३॥
रिखि बोलत घोरत नाद नवं ॥

तिह ठउर कुलाहल उच हूअं ॥
जल पीवत ठउर ही ठउर मुनी ॥
बन मधि मनो रिख माल बनी ॥३७४॥
अति उजल अंग बिभूत धरै ॥
बहु भाति न्यास अनास करै ॥
निवलयादिक सरबं करम कीए ॥
रिखि सरब चहूं चक दास थीए ॥३७५॥
अनभंग अखंड अनंग तनं ॥
बहु साधत न्यास संन्यास बनं ॥
जट सोहत जानुक धूर जटी ॥
सिव की जनु जोग जटा प्रगटी ॥३७६॥
सिव ते जनु गंग तरंग छुटे ॥
इह हुइ जन जोग जटा प्रगटे ॥
तप सरब तपीसन के सब ही ॥
मुनि जे सब छीन लए तब ही ॥३७७॥
स्रुत जेतिक न्यास उदास कहे ॥
सब ही रिखि अंगन जान लए ॥
घन मै जिम बिदुलता झमकै ॥
रिखि मो गुन तास सबै दमकै ॥३७८॥
जस छाडत भानु अनंत छटा ॥
रिखि के तिम सोभत जोग जटा ॥
जिन की दुख फास कहूं न कटी ॥
रिखि भेटत तासु छटाक छुटी ॥३७९॥
नर जो नही नरकन ते निवरै ॥
रिखि भेटत तउन तराक तरै ॥
जिन के समता कहूं नाहि ठटी ॥
रिखि पूजि घटी सब पाप घटी ॥३८०॥
इत बधि तउन बिठो म्रिगहा ॥
जस हेरत छेरिनि भीम भिडहा ॥
तिह जान रिखीन ही सास सस्रयो ॥
म्रिग जान मुनी कहु बान कस्रयो ॥३८१॥
सर पेख सबै तिह साध कहै ॥
म्रिग होइ न रे मुनि राज इहै ॥
नह बान सरासन पान तजे ॥
अस देखि द्रिड़ं मुनि राज लजे ॥३८२॥
बहुते चिर जिउ तिह ध्यान छुटा ॥
अविलोक धरे रिखि पाल जटा ॥
कस आवत हो डरु डारि अबै ॥
मुहि लागत हो म्रिग रूप सबै ॥३८३॥
रिख पाल बिलोकि तिसै दिड़ता ॥
गुरु मान करी बहुतै उपमा ॥
म्रिग सो जिह को चित ऐस लग्यो ॥
परमेसर कै रस जान पग्रयो ॥३८४॥
मुन को तब प्रेम प्रसीज हीआ ॥
गुर ठारसमो म्रिग नास कीआ ॥
मन मो तब दत बीचार कीआ ॥
गुन म्रिगहा को चित बीच लीआ ॥३८५॥
हरि सो हितु जो इह भाति करै ॥
भव भार अपारह पार परै ॥
मल अंतरि याही इसनान कटै ॥

जग ते फिरि आवन जान मिटै ॥३८६॥
गुरु जान तबै तिह पाइ परा ॥
भव भार अपार सु पार तरा ॥
दस असटसमो गुरु तासु कीयो ॥
कबि बाधि कबितन मधि लीयो ॥३८७॥
सब ही सिख संजुति पान गहे ॥
अविलोकि चराचरि चउध रहे ॥
पसु पछ चराचर जीव सबै ॥
गण गंध्रब भूत पिसाच तबै ॥३८८॥

◀ *इति अठदसवो गुरू भ्रिगहा समापतं ॥18॥*

अथ नलनी सुक उनीवो गुरू कथनं ॥

क्रिपाण क्रित छंद ॥

मुनि अति अपार ॥
गुण गण उदार ॥
बिदिआ बिचार ॥
नित करत चार ॥३८९॥
लखि छबि सुरंग ॥
लाजत अनंग ॥
पिखि बिमल अंग ॥
चकि रहत गंग ॥३९०॥
लखि दुति अपार ॥
रीझत कुमार ॥
ग्यानी अपार ॥
गुन गन उदार ॥३९१॥
अबयकत अंग ॥
आभा अभंग ॥
सोभा सुरंग ॥
तन जनु अनंग ॥३९२॥
बहु करत न्यास ॥
निसि दिन उदास ॥
तजि सरब आस ॥
अति बुधि प्रकास ॥३९३॥
तनि सहत धूप ॥
संन्यास भूप ॥
तनि छबि अनूप ॥
जनु सिव सरूप ॥३९४॥
मुख छबि प्रचंड ॥
आभा अभंग ॥
जुटि जोग जंग ॥
नही मुरत अंग ॥३९५॥
अति छबि प्रकास ॥
निसि दिन निरास ॥
मुनि मन सुबास ॥
गुन गन उदास ॥३९६॥
अबयकत जोग ॥

नही कउन सोग ॥
नितप्रति अरोग ॥
तजि राज भोग ॥३९७॥
मुन मनि क्रिपाल ॥
गुन गन दिआल ॥
सुभि मति सुढाल ॥
द्रिड़ ब्रित कराल ॥३९८॥
तन सहत सीत ॥
नही मुरत चीत ॥
बहु बरख बीत ॥
जनु जोग जीत ॥३९९॥
चालंत बात ॥
थरकंत पात ॥
पीअरात गात ॥
नही बदत बात ॥४००॥
भंगं भछंत ॥
काछी कछंत ॥
किंग्री बजंत ॥
भगवत भनंत ॥४०१॥
नहीं डुलत अंग ॥
मुनि मन अभंग ॥
जुटि जोग जंग ॥
जिमि उडत चंग ॥४०२॥
नही करत हाइ ॥
तप करत चाइ ॥
नितप्रति बनाइ ॥
बहु भगत भाइ ॥४०३॥
मुख भछत पउन ॥
तजि धाम गउन ॥
मुनि रहत मउन ॥
सुभ राज भउन ॥४०४॥
संन्यास देव ॥
मुनि मन अभेव ॥
अनजुरि अजेव ॥
अंतरि अतेव ॥४०५॥
अनभू प्रकास ॥
नितप्रति उदास ॥
गुन अधिक जास ॥
लखि लजत अनास ॥४०६॥
ब्रहमंन देव ॥
गुन गन अभेव ॥
देवान देव ॥
अनभिख अजेव ॥४०७॥
संनिआस नाथ ॥
अनधर प्रमाथ ॥
इक रटत गाथ ॥
टक एक साथ ॥४०८॥
गुन गनि अपार ॥
मुनि मनि उदार ॥
सुभ मति सुढार ॥

बुधि को पहार ॥४०९॥
संनिआस भेख ॥
अनिबिख अद्वैख ॥
जापत अभेख ॥
ब्रिध बुधि अलेख ॥४१०॥

कुलक छंद ॥

धं धकित इंद ॥
चं चकित चंद ॥
थं थकत पउन ॥
भं भजत मउन ॥४११॥
जं जकित जछ ॥
पं पचत पछ ॥
धं धकत सिंधु ॥
बं बकत बिंध ॥४१२॥
सं सकत सिंधु ॥
गं गकत गिंध ॥
तं तकत देव ॥
अं अकत भेव ॥४१३॥
लं लखत जोगि ॥
भं भ्रमत भोगि ॥
बं बकत बैन ॥
चं चकत नैन ॥४१४॥
तं तजत अत्र ॥
छं छकत छत्र ॥
पं परत पान ॥
भं भरत भान ॥४१५॥
बं बजत बाद ॥
नं नजत नाद ॥
अं उठत राग ॥
उफटत सुहाग ॥४१६॥
छं सकत सूर ॥
भं भ्रमत हूर ॥
रं रिझत चित ॥
तं तजत बित ॥४१७॥
छं छकत जछ ॥
भं भ्रमत पछ ॥
भं भिरत भूप ॥
नव निरख रूप ॥४१८॥

चरपट छंद ॥

गलितं जोगं ॥
दलितं भोगं ॥
भगिवे भेसं ॥
सुफिले देसं ॥४१९॥
अचल धरमं ॥
अखिल करमं ॥
अमित जोगं ॥
तजित भोगं ॥४२०॥

सुफल करमं ॥
सुब्रित धरमं ॥
कुक्रित हंता ॥
सुगतं गंता ॥४२१॥
दलितं द्रोहं ॥
मलितं मोहं ॥
सलितं सारं ॥
सुक्रित चारं ॥४२२॥
भगवे भेसं ॥
सुफलं देसं ॥
सुह्रिदं सरता ॥
कुक्रितं हरता ॥४२३॥
चक्रितं सूरं ॥
बमतं नूरं ॥
एकं जपितं ॥
एको थपितं ॥४२४॥
राजं तजित्वं ॥
ईसं भवित्वं ॥
जपं जपित्वं ॥
एकं थपित्वं ॥४२५॥
बजतं नादं ॥
बिदितं रागं ॥
जपतं जापं ॥
त्रसितं तापं ॥४२६॥
चकितं चंदं ॥
धकतं इंदं ॥
तकतं देवं ॥
भगतं भेवं ॥४२७॥
भ्रमतं भूतं ॥
लखितं रूपं ॥
चक्रतं चारं ॥
सुह्रिदं सारं ॥४२८॥
नलिनं सूअं ॥
लखि अउधूअं ॥
चट दे छुटा ॥
भ्रम ते जटा ॥४२९॥
तकितं देवं ॥
बकितं भेवं ॥
दस नव सीसं ॥
करमक दीसं ॥४३०॥
बुधितं धामं ॥
ग्रिहितं बामं ॥
भ्रमतं मोहं ॥
ममतं मोहं ॥४३१॥
ममता बुधं ॥
स्रिहतं लोगं ॥
अहिता धरमं ॥
लहितह भोगं ॥४३२॥
ग्रिसतं बुधं ॥
ममता मातं ॥

इसत्री नेहं ॥
पुत्रं भ्रातं ॥४३३॥
ग्रसतं मोहं ॥
धरितं कामं ॥
जलतं क्रोधं ॥
पलितं दामं ॥४३४॥
दलतं बियोधं ॥
तकितं दावं ॥
अंतह नरकं ॥
गंतह पावं ॥४३५॥
तजितं सरबं ॥
ग्रहितं एकं ॥
प्रभतं भावं ॥
तजितं द्वैखं ॥४३६॥
नलिनी सुकि जयं ॥
तजितं दिरबं ॥
सफली करमं ॥
लहितं सरबं ॥४३७॥
इति नलिनी सुक उनीसवो गुरू बरननं ॥१९॥

अथ साह बीसवो गुरु कथनं ॥

चौपई ॥

आगे चला दत जट धारी ॥
बेजत बेण बिखान अपारी ॥
असथावर लखि चेतन भए ॥
चेतन देख चक्रित ह्वै गए ॥४३८॥
महा रूप कछु कहा न जाई ॥
निरखि चक्रित रही सकल लुकाई ॥
जित जित जात पथहि रिखि ग्यो ॥
जानुक प्रेम मेघ बरखयो ॥४३९॥
तह इक लखा साह धनवाना ॥
महा रूप धरि दिरब निधाना ॥
महा जोति अरु तेज अपारू ॥
आप घड़ा जानुक मुखि चारू ॥४४०॥
बिक्रिअ बीच अधिक सवधाना ॥
बिनु बिपार जिन अउर न जाना ॥
आस अनुरकत तासु ब्रित लागा ॥
मानहु महा जोग अनुरागा ॥४४१॥
तहा रिखि गए संगि संन्यासन ॥
कई छोहनी जात नही गनि ॥
ता के जाइ दुआर पर बैठे ॥
सकल मुनी मुनीराज इकैठे ॥४४२॥
साह सु दिरब ब्रित लग रहा ॥
रिखन ओर तिन चित्रयो न कहा ॥
नेत्र मीच एकै धन आसा ॥
ऐस जानीअत महा उदासा ॥४४३॥
तह जे हुते राव अरु रंका ॥
मुनि पग परे छोर कै संका ॥

तिह बिपार करम कर भारी ॥
रिखीअन ओर न द्रिसटि पसारी ॥४४४॥
तासु देखि करि दत प्रभाऊ ॥
प्रगट कहा तज कै हठ भाऊ ॥
ऐस प्रेम प्रभु संग लगईऐ ॥
तब ही पुरखु पुरातन पईऐ ॥४४५॥

◀ इति साह बीसवो गुरू समापतं ॥20॥

अथ सुक पड़ावत नर इकीसवो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

बीस गुरू करि आगे चला ॥
सीखे सरब जोग की कला ॥
अति प्रभाव अमितोजु प्रतापू ॥
जानुक साधि फिरा सब जापू ॥४४६॥
लीए बैठ देखा इक सूआ ॥
जिह समान जगि भयो न हूआ ॥
ता कहु नाथ सिखावत बानी ॥
एक टक परा अउर न जानी ॥४४७॥
संग लए रिखि सैन अपारी ॥
बडे बडे मोनी ब्रतिधारी ॥
ता के तीर तीर चलि गए ॥
तिनि नर ए नही देखत भए ॥४४८॥
सो नर सुकहि पड़ावत रहा ॥
इनै कछू मुख ते नही कहा ॥
निरखि निठुरता तिह मुनि राऊ ॥
पुलक प्रेम तन उपजा चाऊ ॥४४९॥
ऐसे नेहुं नाथ सो लावै ॥
तब ही परम पुरख कहु पावै ॥
इकीसवा गुरु ता कह कीआ ॥
मन बच करम मोल जनु लीआ ॥४५०॥

◀ इति इकीसवों गुरू सुक पड़ावत नर समापतं ॥21॥

अथि हर बाहत बाईसवो गुरू कथनं ॥

चौपई ॥

जब इकीस कर गुरू सिधारा ॥
हर बाहत इक पुरख निहारा ॥
ता की नारि महा सुखकारी ॥
पति की आस हीए जिह भारी ॥४५१॥
भता लए पानि चलि आई ॥
जनुक नाथ ग्रिह बोल पठाई ॥
हर बाहत तिन कछू न लहा ॥
त्रीआ को धिआन नाथ प्रति रहा ॥४५२॥
मुनि पति संगि लए रिख सैना ॥

मुख छबि देखि लजत जिह मैना ॥
तीर तीर ता के चलि गए ॥
मुनि पति बैठ रहत पछ्छ भए ॥४५३॥

अनूप नराज छंद ॥

अनूप गात अतिभुतं बिभूत सोभतं तनं ॥
अछिज तेज जाजुलं अनंत मोहतं मनं ॥
ससोभ बसत्र रंगतं सुरंग गेरू अंबरं ॥
बिलोक देव दानवं ममोह गंध्रबं नरं ॥४५४॥
जटा बिलोकि जानवी जटी समान जानई ॥
बिलोकि लोक लोकिणं अलोकि रूप मानई ॥
बजंत चार किंकुरी भजंत भूत भैधरी ॥
पपात जछ्छ किंन्रनी ममोह माननी मनं ॥४५५॥
बचित्र नारि चित्रणी पवित्र चित्रणं प्रभं ॥
र रीझ जछ्छ गंध्रबं सुरारि नारि सु प्रभं ॥
कड़ंत क्रू किंन्रणी हसंत हास कामिणी ॥
लसंत दंतणं दुतं खिमंत जाणु दामिणी ॥४५६॥
दलंत पाप दुभरं चलंत मोनि सिंमरं ॥
सुभंत भारगवं पटं बिअंत तेज उफणं ॥
परंत पानि भूचरं भ्रमंत सरबतो दिसं ॥
तजंत पाप नर बरं चलंत धरमणो मगं ॥४५७॥
बिलोकि बीरणो दयं अरुझ छत्र करमणं ॥
तजंति साइकं सितं कटंत टूक बरमणं ॥
थथंभ भानणो रथं बिलोकि कउतकं रणं ॥
गिरंत जुधणो छितं बमंत स्रोणतं मुखं ॥४५८॥
फिरंत चक्रणो चकं गिरंत जोधणो रणं ॥
उठंत क्रोध कै हठी ठठुकि क्रुधितं भुजं ॥
भ्रमंत अध बधतं कमध बधतं कटं ॥
परंत भूतलं भटं बकंत मारूड़ै रटं ॥४५९॥
पिपंत असव भटंत भिरंत दारुणो रणं ॥
बहंत तीछ्छणो सरं झलंत झाल खड़िगिणं ॥
उठंत मारूड़ो रणं बकंत मारणो मुखं ॥
चलंत भाजि न हठी जुझंत दुधरं रणं ॥४६०॥
कटंत कारमं सुभं बचित्र चित्रतं क्रितं ॥
सिलेणि उजली क्रितं बहंत साइकं सुभं ॥
बिलोकि मोनिसं जुधं चचउध चक्रतं भवं ॥
ममोह आस्रमं गतं पपात भूतली सिरं ॥४६१॥
सभार भारग बसनिनं जजपि जापणो रिखं ॥
निहारि पान पै परा बिचार बाइसवो गुरं ॥
बिअंत जोगणो सधं असंख पापणो दलं ॥
अनेक चेलका लए रिखेस आसनं चलं ॥४६२॥

◄ *इति हर बाहता बाईसवो गुरू इसत्री भात लै आई समापतं ॥22॥*

अथ त्रिआ जछ्छणी तेईसमो गुरू कथनं ॥

अनूप नराज छंद ॥

बजंत नाद दुधरं उठंत निसनं सुरं ॥
भजंत अरि दितं अघं बिलोकि भारगवं भिसं ॥
बिलोकि कंचनं गिरंत तज मानुखी भुअं ॥
स सुहक तापसी तनं अलोक लोकणो बपं ॥४६३॥
अनेक जछ्छ गंध्रबं बसेख बिधिका धरी ॥
निरकत नागणी महा बसेख बासवी सुरी ॥
पवित्र परम पारबती अनूप आलकापती ॥
असकत आपितं महा बिसेख आसुरी सुरी ॥४६४॥
अनूप एक जछ्छणी ममोह रागणो मनं ॥
घुमंत घूमणं छितं लगंत सारंगो सरं ॥
बिसारि नेह गेहणं सनेह रागणो मनं ॥
म्रिगीस जाणु घुमतं क्रितेण क्रिस क्रिती सरं ॥४६५॥
रझीझ रागणो चितं बदंत राग सुप्रभं ॥
बजंत किंगुरी करं ममोह आस्रमं गतं ॥
ससजि साइकं सितं कपंत कामणो कलं ॥
भ्रमंत भूतलं भलं भुगंत भामिणी दलं ॥४६६॥

तोमर छंद ॥

गुनवंत सील अपार ॥
दस चार चार उदार ॥
रस राग सरब सपंनि ॥
धरणी तला महि धंनि ॥४६७॥
इक राग गावत नारि ॥
गुणवंत सील अपार ॥
सुख धाम लोचन चारु ॥
संगीत करत बिचार ॥४६८॥
दुति मान रूप अपार ॥
गुणवंत सील उदार ॥
सुख सिंधु राग निधान ॥
हरि लेत हेरति प्रान ॥४६९॥
अकलंक जुबन मान ॥
सुख सिंधु सुंदरि थान ॥
इक चित गावत राग ॥
उफटंत जानु सुहाग ॥४७०॥
तिह पेख कै जटि राज ॥
संग लीन जोग समाज ॥
रहि रीझ आपन चित ॥
जुग राज जोग पवित ॥४७१॥
इह भाति जो हरि संग ॥
हित कीजीऐ अनभंग ॥
तब पाईऐ हरि लोक ॥
इह बात मै नही सोक ॥४७२॥
चित चउप सो भर चाइ ॥
गुर जानि कै परि पाइ ॥
चित तऊन के रस भीन ॥
गुरु तेईसवो तिह कीन ॥४७३॥

◀ *इति जछणी नारि राग गावती गुरू तेईसवो समापतं ॥23॥*

तोमर छंद ॥

तब बहुत बरख प्रमान ॥
चड़ि मेर स्रिंग महान ॥
कीअ घोर तपसा उग्र ॥
तब रीझए कछु सुग्र ॥४७४॥
जग देख के बिवहार ॥
मुनि राज कीन बिचार ॥
इन कउन सो उपजाइ ॥
फिरि लेति आपि मिलाइ ॥४७५॥
तिह चीनीऐ करि गिआन ॥
तब होइ पूरण ध्यान ॥
तिह जाणीऐ जत जोग ॥
तब होइ देह अरोग ॥४७६॥
तब एक पुरख पछान ॥
जग नास जाहिन जान ॥
सब जगत को पति देखि ॥
अनभउ अनंत अभेख ॥४७७॥
बिन एक नाहिन साति ॥
सभ तीरथ कियुं न अनात ॥
जब सेविहो इकि नाम ॥
तब होइ पूरण काम ॥४७८॥
बिनु एक चौबिस फोक ॥
सब ही धरा सब लोक ॥
जिनि एक कउ पहिचान ॥
तिन चउबिसो रस मान ॥४७९॥
जे एक के रस भीन ॥
तिनि चउबिसो रसि लीन ॥
जिन एक को नही बूझ ॥
तिह चउबिसै नही सूझ ॥४८०॥
जिनि एक कौ नही चीन ॥
तिनि चउबिसै फल हीन ॥
जिन एक को पहिचान ॥
तिनि चउबिसै रस मान ॥४८१॥

बचित्र पद छंद ॥

एकहि जउ मनि आना ॥
दूसर भाव न जाना ॥
दुंदभि दउर बजाए ॥
फूल सुरन बरखाए ॥४८२॥
हरखे सब जट धारी ॥
गावत दे दे तारी ॥
जित तित डोलत फूले ॥
ग्रिह के सब दुख भूले ॥४८३॥

तारक छंद ॥

बहु बरख जबै तपसा तिह कीनी ॥
गुरदेव क्रिआ जु कही धर लीनी ॥
तब नाथ सनाथ हुऐ ब्योत बताई ॥

तब ही दसओ दिसि सूझ बनाई ॥४८४॥
दिज देव तबै गुर चउबिस कै कै ॥
गिरि मेर गए सभ ही मुनि लै कै ॥
तपसा जब घोर तहा तिन कीनी ॥
गुरदेव तबै तिह या सिख दीनी ॥४८५॥

तोटक छंद ॥

गिरि मेरु गए रिखि बालक लै ॥
धर सीस जटा भगवे पट कै ॥
तप घोर करा बहु बरख दिना ॥
हरि जाप न छोरस एक छिना ॥४८६॥
दस लछ सु बीस सहंस्र ब्रखं ॥
तप कीन तहा बहु भाति रिखं ॥
सब देसन देस चलाइ मतं ॥
मुनि देव महा मति गूड़ गतं ॥४८७॥
रिखि राज दसा जब अंत भई ॥
बल जोग हुते मुनि जान लई ॥
धूअरो जग धउलुर जानि जटी ॥
कछु अउर क्रिआ इह भाति ठटी ॥४८८॥
सधि कै पवनै रिख जोग बलं ॥
तजि चाल कलेवर भूमि तलं ॥
कल फोरि उताल कपाल कली ॥
तिह जोति सु जोतिह मध मिली ॥४८९॥
कल काल क्रवाल कराल लसै ॥
जग जंगम थावर सरब कसै ॥
जग कालहि जाल बिसाल रचा ॥
जिह बीच फसे बिन को न बचा ॥४९०॥
सवैया ॥
देस बिदेस नरेसन जीति अनेस बडे अवनेस संघारे ॥
आठो ई सिध सबै नव निधि सम्रिधन सरब भरे ग्रिह सारे ॥
चंद्रमुखी बनिता बहुतै घरि माल भरे नहीं जात संभारे ॥
नाम बिहीन अधीन भए जम अंति को नागे ही पाइ सिधारे ॥४९१॥
रावन के महिरावन के मनु के नल के चलते न चली गउ ॥
भोज दिलीपति कौरवि कै नहीं साथ दयो रघुनाथ बली कउ ॥
संगि चली अब लौ नही काहूं के साच कहौ अघ ओघ दली सउ ॥
चेत रे चेत अचेत महा पसु काहू के संगि चली न हली हउ ॥४९२॥
साच और झूठ कहे बहुतै बिधि काम करोध अनेक कमाए ॥
भाज निलाज बचा धन के डर लोक गयो परलोक गवाए ॥
दुआदस बरख पड़ा न गुड़िओ जड़ राजीवि लोचन नाहिन पाए ॥
लाज बिहीन अधीन गहे जम अंत के नागे ही पाइ सिधाए ॥४९३॥
काहे कउ बसत्र धरो भगवे मुनि ते सब पावक बीच जलैगी ॥
कियों इम रीत चलावत हो दिन द्वैक चलै सबदा न चलैगी ॥
काल कराल की रीति महा इह काहूं जुगेसि छली न छलैगी ॥
सुंदरि देह तुमारी महा मुनि अंत मसान ह्वै धूरि रलैगी ॥४९४॥
काहे को पउन भछो सुनि हो मुनि पउन भछे कछू हाथि न ऐहै ॥
काहे को बसत्र करो भगवा इन बातन सो भगवान न ह्वैहै ॥
बेद पुरान प्रमान के देखहु ते सब ही बस काल सबै है ॥
जारि अनंग न नंग कहावत सीस की संगि जटाऊ न जैहै ॥४९५॥
कंचन कूट गिर्यो कहो काहे न सातओ सागर कियों न सुकानो ॥
पसचम भानु उद्रयो कहु काहे न गंग बही उलटी अनुमानो ॥

अंति बसंत तप्यो रवि काहे न चंद समान दिनीस प्रमानो ॥
कियों डमडोल डुबी न धरा मुनि राज निपातनि तियों जग जानो ॥४९६॥
अत्रि परासर नारद सारद ब्यास ते आदि जिते मुन भाए ॥
गालव आदि अनंत मुनीस्वर ब्रहम हूं ते नहीं जात गनाए ॥
अगसत पुलसत बसिसट ते आदि न जान परे किह देस सिधाए ॥
मंत्र चलाइ बनाइ महा मति फेरि मिले पर फेर न आए ॥४९७॥
ब्रहम निरंध्र को फोरि मुनीस की जोति सु जोति के मधि मिलानी ॥
प्रीति रली परमेसर सो इम बेदन संगि मिलै जिम बानी ॥
पुंन कथा मुनि नंदन की कहि कै मुख सो कबि स्याम बखानी ॥
पूरण धिआइ भयो तब ही जय स्री जगनाथ भवेस भवानी ॥४९८॥

◀ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे दत महातमे रुद्रवतार प्रबंध समापतं ॥ सुभं भवेत गुरु चउबीस ॥24॥

SECTION 15: SHABAD PATSHAHI 10

Compositions attributed to Patshahi 10

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

अथ पारस नाथ रुद्र अवतार कथनं ॥

पातसाही १० ॥

चौपई ॥

इह बिधि दत रुद्र अवतारा ॥
पूरण मत को कीन पसारा ॥
अंति जोति सो जोति मिलानी ॥
जिह बिधि सो पारब्रहम भवानी ॥१॥
एक लछ दस बरख प्रमाना ॥
पाछे चला जोग को बाना ॥
ग्रयारव बरख बितीतत भयो ॥
पारसनाथ पुरख भूअ वयो ॥२॥
रोह देस सुभ दिन भल थानु ॥
परस नाथ भयो सुर ग्रयानु ॥
अमित तेज असि अवर न होऊ ॥
चक्रत रहे मात पित दोऊ ॥३॥
दसऊ दिसनि तेज अति बढा ॥
द्वादस भान एक ह्वै चढा ॥
दह दिस लोक उठे अकुलाई ॥
भूपति तीर पुकारे जाई ॥४॥
सुनो भूप इक कहों कहानी ॥
एक पुरख उपज्यो अभिमानी ॥
जिह सम रूप जगत नहीं कोई ॥
एकै घड़ा बिधाता सोई ॥५॥
कै गंध्रब जछ कोई अहा ॥
जानुक दूसर भानु चड़ रहा ॥
अति जोबन झमकत तिह अंगा ॥
निरखत जा के लजत अनंगा ॥६॥
भूपति देखन काज बुलावा ॥
पहिले द्योस साथ चल आवा ॥
हरख ह्रिदै धर के जटधारी ॥
जानुक दुती दत अवतारी ॥७॥
निरख रूप कापे जटधारी ॥
यह कोऊ भयो पुरखु अवतारी ॥
यह मत दूर हमारा कै है ॥
जटाधार कोई रहै न पै है ॥८॥
तेज प्रभाव निरखि तब राजा ॥
अति प्रसंनि पुलकत चित गाजा ॥
जिह जिहा लखा रहे बिसमाई ॥
जानुक रंक नवो निध पाई ॥९॥
मोहन जाल सभन सिर डारा ॥
चेटक बान चक्रित ह्वै मारा ॥
जह तह मोहि सकल नर गिरे ॥
जान सुभट सामुहि रण भिरे ॥१०॥
नर नारी जिह जिह तिह पेखा ॥

तिह तिह मदन रूप अविरेखा ॥
साधन सरब सिधि कर जाना ॥
जोगन जोग रूप अनुमाना ॥११॥
निरखि रूप रनवास लुभाना ॥
दे तिह सुता न्रिपति मनि माना ॥
न्रिप को भयो जबै जामाता ॥
महा धनुखधर बीर बिख्याता ॥१२॥
महा रूप अरु अमित प्रतापू ॥
जानु जपै है आपन जापू ॥
ससत्र सासत्र बेता सुरि ग्याना ॥
जा सम पंडित जगति न आना ॥१३॥
थोरि बहिक्रम बुधि बिसेखा ॥
जानुक धरा बितन यहि भेखा ॥
जिह जिह रूप तवन का लहा ॥
सो सो चमक चक्रि हुऐ रहा ॥१४॥
सवैया ॥
मान भरे सर सान धरे मठ सान चड़े असि स्रोणति साए ॥
लेत हरे जिह डीठ परे नही फेरि फिरे ग्रिह जान न पाए ॥
झीम झरे जन सेल हरे इह भाति गिरे जनु देखन आए ॥
जासु हिरे सोऊ मैन घिरे गिर भूमि परे न उठंत उठाए ॥१५॥
सोभत जानु सुधासर सुंदर काम के मानहु कूप सु धारे ॥
लाजि के जान जहाज बिराजत हेरत ही हर लेत हकारे ॥
हउ चहु कुंट भ्रम्यो खग ज्यों इन के सम रूप न नैकु निहारे ॥
पारथ बान कि जुबन खान कि काल क्रिपान कि काम कटारे ॥१६॥
तंत्र भरे किधौ जंत्र जरे अर मंत्र हरे चख चीनत या ते ॥
जोबन जोति जगे अति सुंदर रंग रंगे मद से मदूआ ते ॥
रंग सहाब फूल गुलाब से सीखे है जोरि करोरक घाते ॥
माधुरी मूरति सुंदर सूरति हेरति ही हर लेत हीया ते ॥१७॥
पान चबाइ सीगार बनाइ सुगंध लगाइ सभा जब आवै ॥
किंनर जछ भुजंग चराचर देव अदेव दोऊ बिसमावै ॥
मोहित जे महि लोगन माननि मोहत तउन महा सुख पावै ॥
वारहि हीर अमोलक चीर त्रीया बिन धीर सबै बल जावै ॥१८॥
रूप अपार पड़े दस चार मनो असुरारि चतुर चक जान्यो ॥
आहव जुकति जितीक हुती जग सरबन मै सब ही अनुमान्नयो ॥
देसि बिदेसन जीत जुधाबर क्रित चंदोव दसो दिस तान्नयो ॥
देवन इंद्र गोपीन गोबिंद निसा करि चंद समान पछान्यो ॥१९॥
चउधित चार दिसा भई चक्रत भूमि अकास दुहूं पहिचाना ॥
जुध समान लख्यो जग जोधन बोधन बोध महा अनुमाना ॥
सूर समान लखा दिन कै तिह चंद सरूप निसा पहिचाना ॥
राननि रावि सवानिन साव भवानिन भाव भलो मनि माना ॥२०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

बितै बरख द्वै असट मासं प्रमानं ॥
भयो सुप्रभं सरब बिद्या निधानं ॥
जपै हिंगुला ठिंगुला पाण देवी ॥
अनासा छुधा अत्रधारी अभेवी ॥२१॥
जपै तोतला सीतला खग ताणी ॥
भ्रमा भैहरी भीम रूपा भवाणी ॥
चलाचल सिंघ झमाझंम अत्रं ॥
हहा हूहि हासं झला झल छत्रं ॥२२॥

अटा अट हासं छटा छुट केसं ॥
असं ओध पाणं नमो क्रूर भेसं ॥
सिरंमाल स्वछं लसै दंत पंतं ॥
भजै सत्रु गूड़ं प्रफुलंत संतं ॥२३॥
अलिंपाति अरधी महा रूप राजै ॥
महा जोत ज्वालं करालं बिराजै ॥
त्रसै दुसट पुसटं हसै सुध साधं ॥
भजै पान दुरगा अरूपी अगाधं ॥२४॥
सुने उसतती भी भवानी क्रिपालं ॥
अधं उरधवी आप रूपी रसालं ॥
दए इख्वधी द्वै अभंगं खतंगं ॥
परस्रयं धरं जान लोहं सुरंगं ॥२५॥
जबै ससत्र साधी सबै ससत्र पाए ॥
उघारे चूमे कंठ सीसं छुहाए ॥
लख्यो सरब रावं प्रभावं अपारं ॥
अजोनी अजै बेद बिदिआ बिचारं ॥२६॥
ग्रिहीतुआ जबै ससत्र असत्रं अपारं ॥
पड़े अनुभवं बेद बिदिआ बिचारं ॥
पड़े सरब बिदिआ हुती सरब देसं ॥
जिते सरब देसी सु असत्रं नरेसं ॥२७॥
पठे कागदं देस देसं अपारी ॥
करो आनि कै बेद बिद्या बिचारी ॥
जटे दंड मुंडी तपी ब्रहमचारी ॥
सधी स्रावगी बेद बिदिआ बिचारी ॥२८॥
हकारे सबै देस देसा नरेसं ॥
बुलाए सबै मोन मानी सु बेसं ॥
जटा धार जेते कहूं देख पईयै ॥
बुलावै तिसै नाथ भाखै बुलईयै ॥२९॥
फिरे सरब देसं नरेसं बुलावै ॥
मिले न तिसै छत्र छैणी छिनावै ॥
पठे पत्र एकै दिसा एक धावै ॥
जटी दंड मुंडी कहूं हाथ आवै ॥३०॥
रच्यो जग राजा चले सरब जोगी ॥
जहा लउ कोई बूढ बारो सभोगी ॥
कहा रंक राजा कहा नार होई ॥
रच्यो जग राजा चलिओ सरब कोई ॥३१॥
फिरे पत्र सरबत्र देसं अपारं ॥
जुरे सरब राजा न्रिपं आनि दुआरं ॥
जहा लौ हुते जगत मै जटाधारी ॥
मिलै रोह देसं भए भेख भारी ॥३२॥
जहा लउ हुते जोग जोगिसट साधे ॥
मले मुख बिभूतं सु लंगोट बाधे ॥
जटा सीस धारे निहारे अपारं ॥
महा जोग धारं सुबिदिआ बिचारं ॥३३॥
जिते सरब भूपं बुले सरब राजा ॥
चहूं चक मो दान नीसान बाजा ॥
मिले देस देसान अनेक मंत्री ॥
करै साधना जोग बाजंत्र तंत्री ॥३४॥
जिते सरब भूमि सथली संत आहे ॥
तिते सरब पारस नाथं बुलाए ॥

दए भाति अनेक भोज अरघ दानं ॥
लजी पेख देवि सथली मोन मानं ॥३५॥
करै बैठ के बेद बिदिआ बिचारं ॥
प्रकासो सबै आपु आपं प्रकारं ॥
टकं टक लागी मुखं मुखि पेखिओ ॥
सुन्यो कान हो तो सु तो आखि देखिओ ॥३६॥
प्रकासो सबै आप आपं पुराणं ॥
रड़ो देसि देसाण बिदिआ मुहाणं ॥
करो भाति भातं सु बिदिआ बिचारं ॥
न्रिभै चित दै कै महा त्रास टारं ॥३७॥
जुरे बंगसी राफिजी रोहि रूमी ॥
चले बालखी छाड कै राज भूमी ॥
न्रिभै भिंभरी कासमीरी कंधारी ॥
कि कै कालमाखी कसे कासकारी ॥३८॥
जुरे दछणी ससत्र बेता अरयारे ॥
द्रुजै द्रावड़ी तपत तईलंग वारे ॥
परं पूरबी उत्र देसी अपारं ॥
मिले देस देसेण जोधा जुझारं ॥३९॥

पाधरी छंद ॥

इह भाति बीर बहु बीर जोरि ॥
मत देस देस राजा करोर ॥
दे हीर चीर बहु दिरब साज ॥
सनमान दान बहु भाति राज ॥४०॥
अनभै अभंग अवधूत छत्र ॥
अनजीत जुध बेता अति अत्र ॥
अनगंज सूर अबिचल जुझार ॥
रण रंग अभंग जिते हजार ॥४१॥
सब देस देस के जीत राव ॥
कर क्रुध जुध नाना उपाव ॥
कै साम दाम अरु दंड भेद ॥
अवनीप सरब जोरे अछेद ॥४२॥
जब सरब भूप जोरे महान ॥
जै जीत पत्र दिनो निसान ॥
दै हीर चीर अनभंग दिरब ॥
महिपाल मोहि डारे सु सरब ॥४३॥
इक दयोस बीत पारस्व राइ ॥
उतिसट देवि पूजंत जाइ ॥
उसतति किन बहु बिधि प्रकार ॥
सो कहो छंद मोहणि मझार ॥४४॥

मोहणी छंद ॥

जै देवी भेवी भावाणी ॥
भउ खंडी दुरगा सरबाणी ॥
केसरीआ बाही कऊमारी ॥
भैखंडी भैरवि उधारी ॥४५॥
अकलंका अत्री छत्राणी ॥
मोहणीअं सरबं लोकाणी ॥
रकतागी सागी सावित्री ॥

परमेस्री परमा पावित्री ॥४६॥
तोतलीआ जिहबा कऊमारी ॥
भव भरणी हरणी उधारी ॥
म्रिदु रूपा भूपा बुधाणी ॥
जै जंपै सुधं सिधाणी ॥४७॥
जग धारी भारी भगतायं ॥
करि धारी भारी मुकतायं ॥
सुंदर गोफणीआ गुरजाणी ॥
ते बरणी हरणी भामाणी ॥४८॥
भिंभरीआ जछं सरबाणी ॥
गंधरबी सिधं चाराणी ॥
अकलंक सरूपं निरमलीअं ॥
घण मधे मानो चंचलीअं ॥४९॥
असिपाणं माणं लोकायं ॥
सुख करणी हरणी सोकायं ॥
दुसट हंती संतं उधारी ॥
अनछेदाभेदा कउमारी ॥५०॥
आनंदी गिरजा कउमारी ॥
अनछेदाभेदा उधारी ॥
अनगंज अभंजा खंकाली ॥
म्रिगनैणी रूपं उजाली ॥५१॥
रकतागी रुद्रा पिंगाछी ॥
कटि कछी स्वछी हुलासी ॥
रकताली रामा धउलाली ॥
मोहणीआ माई खंकाली ॥५२॥
जगदानी मानी भावाणी ॥
भवखंडी दुरगा देवाणी ॥
रुद्रागी रुद्रा रकतागी ॥
परमेसरी माई धरमागी ॥५३॥
महिखासुर दरणी महिपाली ॥
चिछुरासर हंती खंकाली ॥
असि पाणी माणी देवाणी ॥
जै दाती दुरगा भावाणी ॥५४॥
पिंगाछी परमा पावित्री ॥
सावित्री संधिआ गाइत्री ॥
भै हरणी भीमा भामाणी ॥
जै देवी दुरगा देवाणी ॥५५॥
दुरगा दल गाही देवाणी ॥
भै खंडी सरबं भूताणी ॥
जै चंडी मुंडी सत्रु हंती ॥
जै दाती माता जैअंती ॥५६॥
संसरणी तराणी लोकाणी ॥
भिंभराणी दरणी दईताणी ॥
केकरणी कारण लोकाणी ॥
दुख हरणी देवं इंद्राणी ॥५७॥
सुंभ हंती जयंती खंकाली ॥
कंकड़ीआ रूपा रकताली ॥
तोतलीआ जिहवा सिंधुलीआ ॥
हिंगलीआ माता पिंगलीआ ॥५८॥
चंचाली चित्रा चित्रागी ॥

भिंभरीआ भीमा सरबागी ॥
बुधि भूपा कूपा जुज्वाली ॥
अकलंका माई न्रिमाली ॥५९ ॥
उछलै लंकुड़ीआ छत्राला ॥
भिंभरीआ भैरो भउहाला ॥
जै दाता माता जैदाणी ॥
लोकेसी दुरगा भावाणी ॥६० ॥
संमोही सरबं जगतायं ॥
निंद्रा छुध्रया पिपासायं ॥
जै कालं राती सक्राणी ॥
उधारी भारी भगताणी ॥६१ ॥
जै माई गाई बेदाणी ॥
अनछिज अभिदा अखिदाणी ॥
भै हरणी सरबं संताणी ॥
जै दाता माता क्रिपाणी ॥६२ ॥

अचकड़ा छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

अंबिका तोतला सीतला साकणी ॥
सिंधुरी सुप्रभा सुभ्रमा डाकणी ॥
सावजा संभिरी सिंधुला दुखहरी ॥
सुंमिला संभिला सुप्रभा दुधरी ॥६३ ॥
भावना भै हरी भूतिली भैहरा ॥
टाकणी झाकणी साकणी सिंधुला ॥
दुधरा द्रुमुखा द्रुकटा दुधरी ॥
कंपिला जंपिला हिंगुला भैहरी ॥६४ ॥
चित्रणी चापणी चारणी चछणी ॥
हिंगुला पिंगुला गंध्रबा जछणी ॥
बरमणी चरमणी परघणी पासणी ॥
खड़गणी गड़गणी सैथणी सापणी ॥६५ ॥
भीमड़ा समदड़ा हिंगुला कारतकी ॥
सुप्रभा अछिदा अधिरा मारतकी ॥
गिंगली हिंगुली ठिंगुली पिंगुला ॥
चिकणी चरकटा चरपटा चावडा ॥६६ ॥
अछिदा अभिदा असिता अधरी ॥
अकटा अखंडा अछटा दुधरी ॥
अंजनी अंबिका असत्रणी धारणी ॥
अभरं अधरा जगति उधारणी ॥६७ ॥
अंजनी गंजनी साकड़ी सीतला ॥
सिधरी सुप्रभा सामला तोतला ॥
संभरी गंभरी अंभरी अकटा ॥
दुसला द्रुभिखा द्रुकटा अमिटा ॥६८ ॥
भैरवी भैहरी भूचरा भानवी ॥
त्रिकुटा चरपटा चावडा मानवी ॥
जोबना जैकरी जंभहरी जालपा ॥
तोतला तुंदला दंतली कालिका ॥६९ ॥
भरमणा निभ्रमा भावना भैहरी ॥
बर बुधा दात्रणी सत्रणी छैकरी ॥
द्रुकटा द्रुभिदा दुधरा द्रुमदी ॥
अत्रुटा अछुटा अजटा अभिदी ॥७० ॥
तंतला अंतला संतला सावजा ॥

भीमड़ा भैहरी भूतला बावजा ॥
डाकणी साकणी झाकणी काकिड़ा ॥
किंकड़ी कालिका जालपा जै म्रिड़ा ॥७१॥
ठिंगुला हिंगुला पिंगुला प्रासणी ॥
ससत्रणी असत्रणी सूलणी सासणी ॥
कंनिका अंनिका धंनिका धउलरी ॥
रकतिका सकतिका भकतका जैकरी ॥७२॥
झिंगड़ा पिंगड़ा जिंगड़ा जालपा ॥
जोगणी भोगणी रोग हरीं कालिका ॥
चंचला चावडा चाचरा चित्रता ॥
तंतरी भिंभरी छत्रणी छिंछला ॥७३॥
दंतुला दामणी द्रुकटा द्रुभ्रमा ॥
छुधिता निंद्रका न्रिभिखा न्रिगमा ॥
कद्रका चूड़िका चाचका चापणी ॥
चिन्नड़ी चावड़ा चिंपिला जापणी ॥७४॥
बिसनपद ॥ परज ॥ त्वप्रसादि कथता ॥
कैसे कै पाइन प्रभा उचारों ॥
जानुक निपट अघट अंम्रित सम संपट सुभट बिचारो ॥
मन मधुकरहि चरन कमलन पर ह्वै मनमत गुंजारो ॥
मात्रिक सपत सपित पितरन कुल चौदहूं कुली उधारो ॥७५॥
बिसनपद ॥ काफी ॥
ता दिन देह सफल कर जानो ॥
जा दिन जगत मात प्रफुलित ह्वै देहि बिजै बरदानो ॥
ता दिन ससत्र असत्र कटि बाधो चंदन चित्र लगाऊं ॥
जा कहु नेत निगम कहि बोलत तासु सु बरु जब पाऊं ॥७६॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥ त्वप्रसादि कथता ॥
अंतरजामी अभय भवानी ॥
अति ही निरखि प्रेम पारस को चित की ब्रिथा पछानी ॥
आपन भगत जान भवखंडन अभय रूप दिखायो ॥
चक्रत रहे पेखि मुनि जन सुर अजर अमर पद पायो ॥७७॥
सोभित बामहि पानि क्रिपाणी ॥
जा तर जछ किंनर असुरन की सब की क्रिया हिरानी ॥
जा तन मधु कीटभ कहु खंड्यो सुंभ निसुंभ संघारे ॥
सोई क्रिपान निदान लगे जग दाइन रहो हमारे ॥७८॥
जा तन बिड़ालाछ चिछ्रादिक खंडन खंड उडाए ॥
धूलीकरन धूम्रलोचन के मासन गिध रजाए ॥
राम रसूल किसन बिसनादिक काल क्रवालहि कूटे ॥
कोटि उपाइ धाइ सभ थाके बिन तिह भजन न छूटे ॥७९॥
बिसनपद ॥ सूही ॥ त्वप्रसादि कथता ॥
सोभित पानि क्रिपान उजारी ॥
जा तन इंद्र कोटि कई खंडे बिसन क्रोरि त्रिपुरारी ॥
जा कहु राम उचर मुनि जन सब सेवत धिआन लगाए ॥
तस तुम राम क्रिसन कई कोटिक बार उपाइ मिटाए ॥८०॥
अनभव रूप सरूप अगंजन कहो कवन बिधि गईयै ॥
जिहबा सहंस्र रटत गुन थाकी कबि जिहवेक बतईयै ॥
भूमि अकास पतार जवन कर चउदहि खंड बिहंडे ॥
जगमग जोति होति भूतलि मै खंडन अउ ब्रहमंडे ॥८१॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥
जै जै रूप अरेख अपार ॥
जासि पाइ भ्रमाइ जह तह भीख को सिव दुआर ॥

जासि पाइ लग्यो निसेसिह कारमा तन एक ॥
देवतेस सहंस्र भे भग जासि पाइ अनेक ॥८२॥
क्रिसन राम भए किते पुनि काल पाइ बिहान ॥
काल को अनकाल कै अकलंक मूरति मान ॥
जासि पाइ भयो सभै जग जास पाइ बिलान ॥
ताहि तै अबिचार जड़ करतार काहि न जान ॥८३॥
नरहरि जान काहि न लेत ॥
तै भरोस पर्यो पसू जिह मोहि बधि अचेत ॥
राम क्रिसन रसूल को उठि लेत नितप्रति नाउ ॥
कहा वै अब जीअत जग मै कहा तिन को गाउ ॥८४॥
सोरठि ॥
तास किउ न पछानही जे होहि है अब है ॥
निहफल काहे भजत पाहन तोहि कछु फलि दै ॥
तासु सेवहु जास सेवति होहि पूरण काम ॥
होहि मनसा सकल पूरण लैत जा के नाम ॥८५॥
बिसनपद ॥ रामकली ॥ त्वप्रसादि ॥
इह बिधि कीनी जबै बडाई ॥
रीझे देव दिआल तिह उपर पूरण पुरख सुखदाई ॥
आपनि मिले देवि दरसनि भयो सिंघ करी असवारी ॥
लीने छत्र लंकुरा कूदत नाचत गण दै तारी ॥८६॥
रामकली ॥
झमकत असत्र छटा ससत्रनि की बाजत डउर अपार ॥
निरतत भूत प्रेत नाना बिधि डहकत फिरत बैतार ॥
कुहकति फिरति काकणी कुहरत डहकत कठन मसान ॥
घहरति गगनि सघन रिख दहलत बिचरत ब्योम बिवान ॥८७॥
देवी बाच ॥
बिसनपद ॥ सारंग ॥ त्वप्रसादि ॥
कछू बर मागहु पूत सयाने ॥
भूत भविख नही तुमरी सर साध चरित हम जाने ॥
जो बरदान चहो सो मागो सब हम तुमै दिवार ॥
कंचन रतन बज्र मुकताफल लीजहि सकल सु धार ॥८८॥
पारस नाथ बाच ॥
बिसनपद ॥ सारंग ॥
सब ही पड़ो बेद बिदिआ बिधि सब ही ससत्र चलाऊ ॥
सब ही देस जेर करि आपन आपे मता मताऊ ॥
कहि तथासतु भई लोप चंडिका तास महा बर दै कै ॥
अंत्र ध्यान हुऐ गई आपन पर सिंघ अरूड़त हुऐ कै ॥८९॥
बिसनपद ॥ गउरी ॥ त्वप्रसादि ॥
पारस करि डंडौत फिरि आए ॥
आवत बीर देस देसन ते मानुख भेज बुलाए ॥
न्रिप को रूप बिलोकि सुभट सभ चक्रित चित बिसमाए ॥
ऐसे कबही लखे नही राजा जैसे आज लखाए ॥
चक्रित भई गगनि की बाला गन उडगन बिरमाए ॥
झिमझिम मेघ बूंद ज्यों देवन अमर पुहप बरखाए ॥
जानुक जुबन खान हुऐ निकसे रूप सिंधु अनुवाए ॥
जानुक धारि निडर बसुधा पर काम कलेवर आए ॥९०॥
बिसनपदि ॥ सारंग ॥ त्वप्रसादि ॥
भूपति परम ग्यान जब पायो ॥
मन बच करम कठन कर ता को जौ करि ध्यान लगायो ॥
करि बहु न्यास कठन जपु साध्रयो दरसनि दीयो भवानी ॥

ततछिन परम ग्यान उपदेस्यो लोक चतुरदस रानी ॥
तिह छिन सरब सासत्र मुख उचरे तत अतत पछाना ॥
अवर अतत सबै कर जाने एक तत ठहराना ॥
अनभव जोति अनूप प्रकासी अनहद नाद बजायो ॥
देस बिदेस जीति राजन कहु सुभट अभै पद पायो ॥९१॥
बिसनपद ॥ परज ॥
ऐसे अमरपद कहु पाइ ॥
देस अउर बिदेस भूपति जीति लीन बुलाइ ॥
भाति भाति भरे गुमान निसान सरब बजाइ ॥
चउप चउप चले चमूंपति चित चउप बढाइ ॥
आनि आनि सबै लगे पग भूप के जुहराइ ॥
आव आव सुभाव सो कहि लीन कंठ लगाइ ॥
हीर चीर सु बाज दै गज राज दै पहिराइ ॥
साध दै सनमान कै कर लीन चित चुराइ ॥९२॥
बिसनपद ॥ काफी ॥ त्वप्रसादि ॥
इम कर दान दै सनमान ॥
भाति भाति बिमोहि भूपति भूप बुध निधान ॥
भाति भातिन साज दै बर बाज अउ गजराज ॥
आपने कीनो न्रिपं सब पारसै महाराज ॥
लाल जाल प्रवाल बिद्रम हीर चीर अनंत ॥
लछ लछ स्वरण सिंडी दिज एक एक मिलंत ॥
मोहि भूपित भूमि कै इक कीन जग बनाइ ॥
भाति भाति सभा बनाइ सु बैठि भूपति आइ ॥९३॥
बिसनपद ॥ काफी ॥
इक दिन बैठे सभा बनाई ॥
बडे बडे छत्री बसुधा के लीने निकटि बुलाई ॥
अरु जे हुते देस देसन मति ते भी सरब बुलाए ॥
सुनि इह भाति सरब जटधारी देस देस ते आए ॥
नाना भाति जटन कह धारे अरु मुख बिभूत लगाए ॥
बलकुल अंगि दीरघ नख सोभत म्रिगपति देख लजाए ॥
मुंद्रत नेत्र ऊरध कर ओपत परम काछनी काछे ॥
निस दिन जप्यो करत दतात्रै महा मुनीसर आछे ॥९४॥
पारसनाथ बाच ॥ धनासरी ॥ त्वप्रसादि ॥
कै तुम हम को परचौ दिखाओ ॥
नातर जिते तुम हो जटधारी सबही जटा मुंडाओ ॥
जोगी जोगु जटन के भीतर जे कर कछूअक होई ॥
तउ हरि ध्यान छोरि दर दर ते भीख न मागै कोई ॥
जे कर महा तत कहु चीनै परम तत कहु पावै ॥
तब यह मोन साधि मनि बैठे अनत न खोजन धावै ॥
जा की रूप रेख नहीं जानीऐ सदा अद्वैख कहायो ॥
जउन अभेख रेख नही सो कहु भेख बिखै किउ आयो ॥९५॥
बिसनपद ॥ सारंग ॥ त्वप्रसादि ॥
जे जे तिन मै हुते सयाने ॥
पारस परम तत के बेता महा परम कर माने ॥
सबहनि सीस न्याइ करि जोरे इह बिधि संगि बखाने ॥
जो जो गुरू कहा सो कीना अउर हम कछू न जाने ॥
सुनहो महाराज राजन के जो तुम बचन बखाने ॥
सो हम दत बकत्र ते सुन करि साच हीऐ अनुमाने ॥
जानुक परम अंम्रित ते निकसे महा रसन रस साने ॥
जो जो बचन भए इह मुखि ते सो सो सब हम माने ॥९६॥

बिसनपद ॥ सोरठि ॥
जोगी जोगु जटन मो नाही ॥
भ्रम भ्रम मरत कहा पचि पचि करि देखि समझ मन माही ॥
जो जन महा तत कहु जानै परम ग्यान कहु पावै ॥
तब यह एक ठउर मनु राखै दरि दरि भ्रमत न धावै ॥
कहा भयो ग्रिह तजि उठि भागे बन मै कीन निवासा ॥
मन तो रहा सदा घर ही मो सो नही भयो उदासा ॥
अधिक प्रपंच दिखाइआ ठगा जग जानि जोग को जोरा ॥
तुम जीअ लखा तजी हम माया माया तुमै न छोरा ॥९७ ॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥
भेखी जोग न भेख दिखाए ॥
नाहन जटा बिभूत नखन मै नाहिन बसत्र रंगाए ॥
जो बनि बसै जोग कहु पईऐ पंछी सदा बसत बनि ॥
कुंचर सदा धूरि सिरि मेलत देखहु समझ तुम ही मनि ॥
दादुर मीन सदा तीरथ मो कर्यो करत इसनाना ॥
ध्रयान बिड़ाल बकी बक लावत तिन किआ जोगु पछाना ॥
जैसे कसट ठगन कर ठाटत ऐसे हरि हित कीजै ॥
तब ही महा ग्यान को जानै परम पयूखहि पीजै ॥९८ ॥
बिसनपद ॥ सारंग ॥
सुनि सुनि ऐसे बचन सियाने ॥
उठि उठि महा बीर पारस के पाइन सो लपटाने ॥
जे जे हुते मूड़ अगिआनी तिन तिन बैन न माने ॥
उठि उठि लगे करन बकबादह मूरख मुगध इआने ॥
उठि उठि भजे किते कानन को केतकि जलहि समाने ॥
केतक भए जुध कहि प्रापति सुनत सबदु घहराने ॥
केतक आनि आनि सनमुखि भए केतक छोरि पराने ॥
केतक जूझि सोभे रण मंडल बासव लोकि सिधाने ॥९९ ॥
बिसनपद ॥ तिलंग ॥ त्वप्रसादि कथता ॥
जब ही संख सबद घहराए ॥
जे जे हुते सूर जटधारी तिन तिन तुरंग नचाए ॥
चक्रत भई गगन की तरुनी देव अदेव त्रसाए ॥
निरखत भयो सूर रथ थंभत नैन निमेख न लाए ॥
ससत्र असत्र नाना बिधि छाडे बाण प्रयोघ चलाए ॥
मानहु माह मेघ बूंदन ज्यों बाण ब्रयूह बरसाए ॥
चटपट चरम बरम पर चटके दाझत त्रिणा लजाए ॥
स्रोणत भरे बसत्र सोभित जनु चाचर खेलि सिधाए ॥१०० ॥
बिसनपद ॥ किदारा ॥
इह बिधि भयो आहव घोर ॥
भाति भाति गिरे धरा पर सूर सुंदर किसोर ॥
कोप कोप हठी घटी रणि ससत्र असत्र चलाइ ॥
जूझि जूझि गए दिवालय ढोल बोल बजाइ ॥
हाइ हाइ भई जहा तह भाजि भाजि सु बीर ॥
पैठि पैठि गए त्रीआलै हारि हारि अधीर ॥
अप्रमान छुटे सरान दिसान भयो अंधिआर ॥
टूक टूक परे जहा तह मारि मारि जुझार ॥१०१ ॥
बिसनपद ॥ देवगंधारी ॥
मारू सबदु सुहावन बाजै ॥
जे जे हुते सुभट रणि सुंदर गहि गहि आयुध गाजे ॥
कवच पहरि पाखर सो डारी अउरै आयुध साजे ॥
भरे गुमान सुभट सिंघन ज्यों आहव भूमि बिराजे ॥

गहि गहि चले गदा गाजी सब सुभट अयोधन काजे ॥
आहव भूमि सूर अस सोभे निरखि इंद्र दुति लाजे ॥
टूक टूक हूऐ गिरे धरणि पर आहव छोरि न भाजे ॥
प्रापति भए देव मंदर कहु ससत्रन सुभट निवाजे ॥१०२॥
बिसनपद ॥ कलिआन ॥
दहदिस धाव भए जुझारे ॥
मुदगर गुफन गुरज गोलाले पटसि परघ प्रहारे ॥
गिरि गिरि परे सुभट रन मंडलि जानु बसंत खिलारे ॥
उठि उठि भए जुध कउ प्रापति रोह भरे रजवारे ॥
भखि भखि बीर पीस दातन कह रण मंडली हकारे ॥
बरछी बान क्रिपान गजाइधु असत्र ससत्र संभारे ॥
भसमी भूत भए गंध्रब गण दाझत देव पुकारे ॥
हम मत मंद चरण सरणागति काहि न लेत उबारे ॥१०३॥
मारू ॥
दोऊ दिस सुभट जबै जुरि आए ॥
दुंदभि ढोल म्रिदंग बजत सुनि सावन मेघ लजाए ॥
देखन देव अदेव महा हव चड़े बिमान सुहाए ॥
कंचन जटत खचे रतनन लखि गंध्रब नगर रिसाए ॥
काछि कछि काछ कछे कछनी चड़ि कोप भरे निजकाए ॥
कोऊ कोऊ रहे सुभट रण मंडलि केई केई छाडि पराए ॥
झिमझिम महा मेघ परलै ज्यों ब्रिंद बिसिख बरसाए ॥
ऐसो निरखि बडे कवतक कह पारस आप सिधाए ॥१०४॥
बिसनपद ॥ भैरो ॥ त्वप्रसादि ॥
दै रे दै रे दीह दमामा ॥
करहौ रुंड मुंड बसुधा पर लखत स्वरग की बामा ॥
धुकि धुकि परहि धरणि भारी भट बीर बैताल रजाऊ ॥
भूत पिसाच डाकणी जोगण काकण रुहर पिवाऊ ॥
भकि भकि उठे भीम भैरो रणि अरध उरध संघारो ॥
इंद्र चंद सूरज बरणादिक आज सभै चुनि मारो ॥
मोहि बर दान देवता दीना जिह सरि अउर न कोई ॥
मै ही भयो जगत को करता जो मै करौ सु होई ॥१०५॥
बिसनपद ॥ गउरी ॥ त्वप्रसादि कथता ॥
मो ते अउर बली को है ॥
जउन मो ते जंग जीते जुध मै कर जै ॥
इंद्र चंद उपिंद्र कौ पल मधि जीतौ जाइ ॥
अउर ऐसो को भयो रण मोहि जीते आइ ॥
सात सिंध सुकाइ डारो नैकु रोसु करो ॥
जछ गंध्रब किंन्र कोर करोर मोरि धरो ॥
देव और अदेव जीते करे सबै गुलाम ॥
दिब दान दयो मुझै छुऐ सकै को मुहि छाम ॥१०६॥
बिसनपद ॥ मारू ॥
यौ कहि पारस रोस बढायो ॥
दुंदभि ढोल बजाइ महा धुनि सामुहि संन्यासनि धायो ॥
असत्र ससत्र नाना बिधि छडै बाण प्रयोघ चलाए ॥
सुभट सनाहि पत्र चलदल ज्यों बानन बेधि उडाए ॥
दुहदिस बान पान ते छूटे दिनपति देह दुराना ॥
भूमि अकास एक जनु हुऐ गए चाल चहूं चक माना ॥
इंदर चंद्र मुनिवर सब कापे बसु दिगिपाल डरानीय ॥
बरन कुबेर छाडि पुर भाजे दुतीय प्रलै करि मानीय ॥१०७॥
बिसनपद ॥ मारू ॥

सुरपुर नारि बधावा माना ॥
बरि है आज महा सुभटन कौ समर सुयंबर जाना ॥
लखि है एक पाइ ठाढी हम जिम जिम सुभट जुझै है ॥
तिम तिम घालि पालकी आपन अमरपुरी लै जै है ॥
चंदन चारु चित्र चंदन के चंचल अंग चड़ाऊ ॥
जा दिन समर सुअंबर करि कै परम पिअर वहि पाऊ ॥
ता दिन देह सफल करि मानो अंग सींगार धरो ॥
जा दिन समर सुयंबर सखी री पारस नाथ बरो ॥१०८॥
बिसनपद ॥ काफी ॥
चहु दिस मारू सबद बजे ॥
गहि गहि गदा गुरज गाजी सब हठि रणि आनि गजे ॥
बान कमान क्रिपान सैहथी बाण प्रयोघ चलाए ॥
जानुक महा मेघ बूंदन ज्यों बिसिख ब्रयूहि बरसाए ॥
चटपट चरम बरम सब बेधे सटपट पार पराने ॥
खटपट सरब भूमि के बेधे नागन लोक सिधाने ॥
झमकत खड़ग काढि नाना बिधि सैहथी सुभट चलावत ॥
जानुक प्रगट बाट सुर पुर की नीके हिरदे दिखावत ॥१०९॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥
बानन बेधे अमित संनिआसी ॥
ते तज देह नेह संपति को भए सुरग के बासी ॥
चरम बरम रथ धुजा पताका बहु बिधि काटि गिराए ॥
सोभत भए इंद्र पुर जम पुर सुर पुर निरख लजाए ॥
भूखन बसत्र रंग रंगन के छुटि छुटि भूमि गिरे ॥
जनुक असोक बाग दिवपति के पुहप बसंति झरे ॥
कटि कटि गिरे गजन कुंभ सथल मुकता बिथुरि परे ॥
जानुक अंम्रित कुंड मुख छुटै जल कन सुभग झरे ॥११०॥
देव गंधारी ॥
दूजी तरह ॥
दुह दिस परे बीर हकारि ॥
काढि काढि क्रिपाण धावत मारु मारु उचारि ॥
पान रोकि सरोख रावत क्रुध जुध फिरे ॥
गाहि गाहि गजीं रथी रणि अंति भूमि गिरे ॥
तानि तानि संधान बान प्रमान कान सुबाहि ॥
बाहि बाहि फिरे सुबाहन छत्र धरम निबाहि ॥
बेधि बेधि सु बान अंग जुआन जुझे ऐस ॥
भूरि भारथ के समे सर सेज भीखम जैस ॥१११॥
बिसनपद ॥ सारंग ॥
इह बिधि बहुतु संनिआसी मारे ॥
केतिक बाधि बारि मो बोरे किते अगनि मो सारे ॥
केतन एक हाथ कटि डारे केतिन के द्वै हाथ ॥
तिल तिल पाइ रथी कटि डारे कटे कितन के माथ ॥
छत्र चम्र रथ बाज कितने के काटि काटि रणि डारे ॥
केतन मुकट लकुट लै तोरे केतन जूट उपारे ॥
भकि भकि गिरे भिंभर बसुधा पर घाइ अंग भिभरारे ॥
जानुक अंत बसंत समै मिलि चाचर खेल सिधारे ॥११२॥
बिसनपद ॥ अडान ॥
चुपरे चारु चिकने केस ॥
आनि आनि फिरी चहूं दिसि नारि नागरि भेस ॥
चिबक चारु सु धार बेसर डारि काजर नैन ॥
जीव जंतन का चली चित लेत चोर सु मैन ॥

देख री सुकुमार सुंदर आजु बर है बीर ॥
बीन बीन धरो सबंगन सुध केसरि चीर ॥
चीन चीन बरि है सुबाह सु मध जुध उछाह ॥
तेग तीरन बान बरछन जीत करि है बयाह ॥११३॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥
कहा लौ उपमा इती करौ ॥
ग्रंथ बढन के काज सुनहु जू चित मै अधिक डरौ ॥
तउ सुधारि बिचार कथा कहि कहि संछेप बखानो ॥
जैसे तव प्रताप के बल ते जथा सकति अनुमानो ॥
जब पारस इह बिधि रन मंड्यो नाना ससत्र चलाए ॥
हते सु हते जीअ लै भाजे चहुं दिस गए पराए ॥
जे हठ तिआगि आनि पग लागे ते सब लए बचाई ॥
भूखन बसन बहुतु बिधि दीने दै दै बहुत बडाई ॥११४॥
बिसनपद ॥ काफी ॥
पारस नाथ बडो रण पार्यो ॥
आपन प्रचुर जगत मतु कीना देवदत को टार्यो ॥
लै लै ससत्र असत्र नाना बिधि भाति अनिक अरि मारे ॥
जीते परम पुरख पारस के सगल जटा धर हारे ॥
बेख बेख भट परे धरन गिरि बाण प्रयोघन घाए ॥
जानुक परम लोक पावन कहु प्रानन पंख लगाए ॥
टूक टूक ह्वै गिरे कवच कटि परम प्रभा कहु पाई ॥
जणु दै चले निसाण सुरग कह कुलहि कलंक मिटाई ॥११५॥
बिसनपद ॥ सूही ॥
पारस नाथ बडो रण जीतो ॥
जानुक भई दूसर करणारजुन भारथ सो हुइ बीतो ॥
बहु बिधि चलै प्रवाहि स्रोण के रथ गज असव बहाए ॥
भै कर जान भयो बड आहव सात समुंदर लजाए ॥
जह तह चले भाज संनिआसी बाणन अंग प्रहारे ॥
जानुक बज्र इंद्र के भै ते पब सपछ सिधारे ॥
जिह तिह गिरत स्रोण की धारा अरि घूमत भिभरात ॥
निंदा करत छत्रीय धरम की भजत दसो दिस जात ॥११६॥
बिसनपद ॥ सोरठि ॥
जेतक जीअत बचे संन्यासी ॥
त्रास मरत फिरि बहुरि न आए होत भए बनबासी ॥
देस बिदेस ढूंढ बन बेहड तह तह पकरि संघारे ॥
खोजि पताल अकास सुरग कहु जहा तहा चुनि मारे ॥
इह बिधि नास करे संनिआसी आपन मतह मतायो ॥
आपन न्यास सिखाइ सबन कहु आपन मंत्र चलायो ॥
जे जे गहे तिन ते घाइल तिन की जटा मुंडाई ॥
दोही दूर दत की कीनी आपन फेरि दुहाई ॥११७॥
बिसनपद ॥ बसंत ॥
इह बिधि फाग क्रिपानन खेले ॥
सोभत ढाल माल डफ मालै मूठ गुलालन सेले ॥
जानु तुफंग भरत पिचकारी सूरन अंग लगावत ॥
निकसत स्रोण अधिक छबि उपजत केसर जानु सुहावत ॥
स्रोणत भरी जटा अति सोभत छबहि न जात कह्यो ॥
मानहु परम प्रेम सौ डार्यो ईंगर लागि रह्यो ॥
जह तह गिरत भए नाना बिधि सागन सत्रु पराए ॥
जानुक खेल धमार पसारि कै अधिक स्रमित ह्वै सोए ॥११८॥
बिसनपद ॥ परज ॥

दस सै बरख राज तिन कीना ॥
कै कै दूर दत के मत कहु राज जोग दोऊ लीना ॥
जे जे छपे लुके कहूं बाचे रहि रहि वहै गए ॥
ऐसे एक नाम लैबे को जग मो रहत भए ॥
भाति भाति सौ राज करत यौ भाति भाति धन जोर्यो ॥
जहा जहा मानस स्रउनन सुन तहा तहा ते तोर्यो ॥
इह बिधि जीत देस पुर देसन जीत निसान बजायो ॥
आपन करण कारण करि मान्यो काल पुरख बिसरायो ॥११९ ॥

रूआमल छंद ॥

दस सहंस्र प्रमाण बरखन कीन राज सुधारि ॥
भाति भाति धरान लै अरु सत्रु सरब संघारि ॥
जीति जीति अनूप भूप अनूप रूप अपार ॥
भूप मेध ठट्यो न्रिपोतम एक जग सुधारि ॥१२० ॥
देस देसन के नरेसन बाधि कै इक बारि ॥
रोह देस बिखै गयो लै पुत्र मित्र कुमार ॥
नारि संजुत बैठि बिधवत कीन जग अरंभ ॥
बोलि बोलि करोर रितज और बिप असंभ ॥१२१ ॥
राजमेध कर्यो लगै आरंभ भूप अपार ॥
भाति भाति सम्रिध जोरि सुमित्र पुत्र कुमार ॥
भाति अनेकन के जुरे जन आनि कै तिह देस ॥
छीनि छीनि लए न्रिपाबर देस दिरब अविनेस ॥१२२ ॥
देख के इह भाति सरब सु भूप संपति नैण ॥
गरब सो भुज दंड कै इह भाति बोला बैण ॥
भूप मेध करो सबै तुम आज जग अरंभ ॥
सतजुग माहि भयो जिही बिधि कीन राजै जंभ ॥१२३ ॥
मंत्रीय बाच ॥
लछ जउ न्रिप मारीयै तब होत है न्रिप मेध ॥
एक एक अनेक संपति दीजीयै भविखेध ॥
लछ लछ तुरंग एकहि दीजीऐ अबिचार ॥
जग पूरण होतु है सुन राज राज वतार ॥१२४ ॥
भाति भाति सुम्रिध संपति दीजीयै इक बार ॥
लछ हसत तुरंग द्वै लछ सुवरन भार अपार ॥
कोटि कोटि दिजेक एकहि दीजीयै अबिलंब ॥
जग पूरण होइ तउ सुन राज राज असंभ ॥१२५ ॥
पारसनाथ बाच ॥

रूआल छंद ॥

सुवरन की न इती कमी जउ टुट है बहु बरख ॥
हसत की न कमी मुझै हय सार लीजै परख ॥
अउर जउ धन चाहीयै सो लीजीयै अबिचार ॥
चित मै न कछू करो सुन मंत्र मित्र अवतार ॥१२६ ॥
यउ जबै न्रिप उचर्यो तब मंत्रि बर सुनि बैन ॥
हाथ जोरि सलाम कै न्रिप नीच कै जुग नैन ॥
अउर एक सुनो न्रिपोतम उचरौं इक गाथ ॥
जौन मधि सुनी पुरानन अउर सिंम्रित साथ ॥१२७ ॥
मंत्री बाच ॥

रूआल छंद ॥

अउर जो सभ देस के न्रिप जीतीयै सुनि भूप ॥
परम रूप पवित्र गात अपवित्र हरण सरूप ॥
ऐस जउ सुनि भूप भूपति सभ पूछीआ तिह गाथ ॥
पूछ आउ सबै न्रिपालन हउ कहो तुह साथ ॥१२८॥
यौ कहे जब बैन भूपति मंत्रि बर सुनि धाइ ॥
पंच लछ बुलाइ भूपति पूछ सरब बुलाइ ॥
अउर सात हूं लोक भीतर देहु अउर बताइ ॥
जउन जउन न जीतिआ न्रिप रोस कै न्रिप राइ ॥१२९॥
देखि देखि रहे सबै तर को न देत बिचार ॥
ऐस कउन रहा धरा पर देहु ताहि उचार ॥
एक एक बुलाइ भूपति पूछ सरब बुलाइ ॥
को अजीत रहा नही जिह ठउर देहु बताइ ॥१३०॥
एक न्रिप बाच ॥

रूआल छंद ॥

एक भूपति उचरो सुनि लेहु राजा बैन ॥
जान माफ करो कहो तब राज राज सु नैन ॥
एक है मुनि सिंधु मै अरु मछ के उर माहि ॥
मोहि राव बिबेक भाखौ ताहि भूपति नाहि ॥१३१॥
एक द्योस जटधरी न्रिप कीनु छीर प्रवेस ॥
चित्र रूप हुती तहा इक नारि नागर भेस ॥
तासु देखि सिवेस को गिर बिंद सिंध मझार ॥
मछ पेट मछंद्र जोगी बैठि है न्रिप बार ॥१३२॥
तासु ते चल पुछीऐ न्रिप सरब बात बिबेक ॥
एन तोहि बताइ है न्रिप भाखि हो जु अनेक ॥
ऐस बात सुनी जबै तब राज राज अवतार ॥
सिंधु खोजन को चला लै जगत के सब जार ॥१३३॥
भाति भाति मंगाइ जालन संग लै दल सरब ॥
जीत दुंदभ दै चला न्रिप जानि कै जीअ गरब ॥
मंत्री मित्र कुमारि संपत सरब मधि बुलाइ ॥
सिंध जार डरे जहा तहा मछ सत्रु डराइ ॥१३४॥
भाति भातन मछ कछप अउर जीव अपार ॥
बधि जारन ह्वै कढे तब तिआगि प्रान सु धार ॥
सिंधु तीर गए जबै जल जीव एकै बार ॥
ऐस भाति भए बखानत सिंधु पै मत सार ॥१३५॥
बिप को धरि सिंधु मूरति आइयो तिह पासि ॥
रतन हीर प्रवाल मानक दीन है अनिआस ॥
जीव काहि संघारीऐ सुनि लीजीऐ न्रिप बैन ॥
जउन कारज को चले तुम सो नही इह ठैन ॥१३६॥
सिंधु बाच ॥

रूआल छंद ॥

छीर सागर है जहा सुन राज राज वतार ॥
मछ उदर मछंद्र जोगी बैठ है ब्रत धारि ॥
डारि जार निकार ताकहि पूछ लेहु बनाइ ॥
जो कहा सो कीजीऐ न्रिप इही सति उपाइ ॥१३७॥
जोरि बीरन नाख सिंधह आग चाल सुबाह ॥
हूर पूर रही जहा तहा जत्र तत्र उछाह ॥
भाति भाति बजंत्र बाजत अउर घुरत निसान ॥

छीर सिंधु हुतो जहा तिह ठाम पहुचे आनि ॥१३८॥
सूत्र जार बनाइ कै तिह मधि डारि अपार ॥
अउर जीव घने गहे न विलोकयो सिव बार ॥
हारि हारि फिरे सबै भट आनि भूपति तीर ॥
अउर जीव घने गहे पर सो न पाव फकीर ॥१३९॥
मछ पेटि मछंद्र जोगी बैठ है बिनु आस ॥
जार भेट सकै न वा को मोनि अंग सु बास ॥
एक जार सुना नयो तिह डारीऐ अबिचार ॥
सति बात कहो तुमै सुनि राज राज वतार ॥१४०॥
गिआन नामु सुना हमो तिह जार को न्रिप राइ ॥
तउन ता मै डारि कै मुनि राज लेहु गहाइ ॥
यौ न हाथि परे मुनीसुर बीत है बहु बरख ॥
सति बात कहौ तुमै सुन लीजीऐ भरतरख ॥१४१॥
यौ न पानि परे मुनाबर होहिां कोटि उपाइ ॥
डार के तुम ग्यान जार सु तासु लेहु गहाइ ॥
ग्यान जार जबै न्रिपंबर डार्यो तिह बीच ॥
तउन जार गहो मुनाबर जानु दूज दधीच ॥१४२॥
मछ सहित मछिंद्र जोगी बधि जार मझार ॥
मछ लोक बिलोकि कै सब ह्वै गए बिसंभार ॥
द्वै महूरत बिती जबै सुधि पाइ कै कछु अंगि ॥
भूप द्वार गए सभै भट बाधि असत्र उतंग ॥१४३॥
मछ उदर लगे सु चीरन किउहूं न चीरा जाइ ॥
हारि हारि परै जबै तब पूछ मित्र बुलाइ ॥
अउर कउन बिचारीऐ उपचार ताकर आज ॥
द्रिसटि जा ते परै मुनीस्वर सरे हमरो काजु ॥१४४॥

दोहरा ॥

मछ पेट किहूं न फटे सब कर हटे उपाइ ॥
ग्यान गुरू तिन को हुतो पूछा तहि बनाइ ॥१४५॥

तोटक छंद ॥

भट त्याग कै सब गरब ॥
न्रिप तीर बोलो सरब ॥
न्रिप पूछीऐ गुर ग्यान ॥
कहि देइ तोहि बिधान ॥१४६॥
बिधि पूरि कै सुभ चार ॥
अरु ग्यान रीति बिचारि ॥
गुर भाखीऐ मुहि भेव ॥
किम देखीऐ मुनि देव ॥१४७॥
गुर ग्यान बोल्यो बैन ॥
सुभ बाच सो सुख दैन ॥
छुरका बिबेक लै हाथ ॥
इह फारीऐ तिह साथ ॥१४८॥
तब काम तैसो ई कीन ॥
गुर ग्यान ज्यों सिख दीन ॥
गहि कै बिबेकहि हाथ ॥
तिह चीरिआ तिह साथ ॥१४९॥
जब चीरि पेट बनाइ ॥
तब देखए जग राइ ॥

जुत ध्यान मुंद्रत नैन ॥
बिनु आस चित न डुलैन ॥१५०॥
सत धात पुत्रा कीन ॥
मुनि द्रिसटि तर धर दीन ॥
जब छूटि रिखि के ध्यान ॥
तब भए भसम प्रमान ॥१५१॥
जो अउर द्रिग तरि आउ ॥
सोऊ जीअत जान न पाउ ॥
सो भसम होवत जानु ॥
बिनु प्रीति भगत न मानु ॥१५२॥
जब भए पुत्रा भसम ॥
जन अंधता रवि रसम ॥
पुनि पूछीआ तिहा जाइ ॥
मुनि राज भेद बताइ ॥१५३॥

नराज छंद ॥

कउन भूप भूमि मै बताइ मोहि दीजीयै ॥
जो मोहि त्रासि न त्रस्यो क्रिपा रिखीस कीजीयै ॥
सु अउर कउन है हठी सु जउन मो न जीतियो ॥
अत्रास कउन ठउर है जहा न मोह बीतियो ॥१५४॥
न संक चित आनीयै निसंक भाख दीजीयै ॥
सु को अजीत है रहा उचार तासु कीजीयै ॥
नरेस देस देस के असेस जीत मै लीए ॥
छितेस भेस भेस के गुलाम आनि हूऐ रहे ॥१५५॥
असेख राज काज मो लगाइ कै दीए ॥
अनंत तीरथ नाति कै अछिन पुंन मै कीए ॥
अनंत छत्रीआन छै दुरंत राज मै करो ॥
सो को तिहुं जहान मै समाज जउन ते टरो ॥१५६॥
अनंग रंग रंग के सुरंग बाज मै हरे ॥
बसेख राजसूइ जग बाजमेध मै करे ॥
न भूमि ऐस को रही न जग खंभ जानीयै ॥
जगत्र करण कारण करि दुतीय मोहि मानीयै ॥१५७॥
सु अत्र छत्र जे धरे सु छत्र सूर सेवही ॥
अदंड खंड खंड के सुदंड मोहि देवही ॥
सु ऐस अउर कौन है प्रतापवान जानीऐ ॥
त्रिलोक आज के बिखै जोगिंदर मोहि मानीऐ ॥१५८॥
मछिंद्र बाच पारसनाथ सो ॥
सवैया ॥
कहा भयो जो सभ ही जग जीति सु लोगन को बहु त्रास दिखायो ॥
अउर कहा जु पै देस बिदेसन माहि भले गज गाहि बधायो ॥
जो मनु जीतत है सभ देस वहै तुमरै न्रिप हाथि न आयो ॥
लाज गई कछु काज सर्यो नही लोक गयो परलोक न पायो ॥१५९॥
भूमि को कउन गुमान है भूपति सो नही काहूं के संग चलै है ॥
है छलवंत बडी बसुधा यहि काहूं की है नह काहूं हुऐ है ॥
भउन भंडार सबै बर नारि सु अंति तुझै कोऊ साथ न दै है ॥
आन की बात चलात हो काहे कउ संगि की देह न संगि सिधै है ॥१६०॥
राज के साज को कउन गुमान निदान जु आपन संग न जै है ॥
भउन भंडार भरे घर बार सु एक ही बार बिगान कहै है ॥
पुत्र कलत्र सु मित्र सखा कोई अंति समै तुहि साथ न दै है ॥
चेत रे चेत अचेत महा पसु संग बीयो सो भी संग न जै है ॥१६१॥

कउन भरोस भटान को भूपति भार परे जिनि भार सहैंगे ॥
भाज है भीर भयानक हुऐ कर भारथ सो नही भेर चहैंगे ॥
एक उपचार न चाल है राजन मित्र सबै म्रित नीर बहैंगे ॥
पुत्र कलत्र सभै तुमरे न्रिप छूटत प्रान मसान कहैंगे ॥१६२॥
पारसनाथ बाच मछिंद्र सो ॥

तोमर छंद ॥

मुनि कउन है वह राउ ॥
तिह आज मोहि बताउ ॥
तिह जीत हो जब जाइ ॥
तब भाखीअउ मुहि राइ ॥१६३॥
मछिंद्र बाच पारसनाथ सो ॥

तोमर छंद ॥

सुन राज राजन हंस ॥
भव भूमि के अवतंस ॥
तुहि जीतए सब राइ ॥
पर सो न जीतयो जाइ ॥१६४॥
अबिबेक है तिह नाउ ॥
तव हीय मै तिह ठाउ ॥
तिह जीत कही न भूप ॥
वह है सरूप अनूप ॥१६५॥

छपै छंद ॥

बलि महीप जिन छल्यो ब्रहम बावन बस किनो ॥
किसन बिसन जिन हरे दंड रघुपति ते लिनो ॥
दस ग्रीवहि जिनि हरा सुभट सुंभासुर खंड्यो ॥
महखासुर मरदीआ मान मधु कीट बिहंड्यो ॥
सोऊ मदन राज राजा न्रिपति न्रिप अबिबेक मंत्री कीयो ॥
जिह देव दईत गंध्रब मुनि जीति अडंड डंडहि लीयो ॥१६६॥
जवन क्रुध जुध करण कैरव रण घाए ॥
जासु कोप के कीन सीस दस सीस गवाए ॥
जउन क्रुध के कीए देव दानव रणि लुझे ॥
जासु क्रोध के कीन खसट कुल जादव जुझे ॥
सोऊ ता समानु सैनाधिपति जिदिन रोस वहु आइ है ॥
बिनु इक बिबेक सुनहो न्रिपति अवर समुहि को जाइ है ॥१६७॥
पारसनाथ बाच मछिंद्र सो ॥

छपै छंद ॥

सुनहु मछिंद्र बैन कहो तुहि बात बिचछन ॥
इक बिबेक अबिबेक जगत द्वै न्रिपति सुलछन ॥
बड जोधा दुहूं संग बडे दोऊ आप धनुरधर ॥
एक जाति इक पाति एक ही मात जोधाबर ॥
इक तात एक ही बंस पुनि बैर भाव दुह किम गहो ॥
तिह नाम ठाम आभरण रथ ससत्र असत्र सब मुनि कहो ॥१६८॥
मछिंद्र बाच पारसनाथ सो ॥

छपै छंद ॥

असित बरण अबिबेक असित बाजी रथ सोभत ॥
असित बसत्र तिह अंगि निरखि नारी नर लोभत ॥
असित सारथी अग्र असित आभरण रथोतम ॥
असित धनुख करि असित धुजा जानुक पुरखोतम ॥
इह छबि नरेस अबिबेक न्रिप जगत जयंकर मानीयै ॥
अनजित जासु कह न तजो क्रिसन रूप तिह जानीयै ॥१६९॥
पुहप धनुख अलि पनच मतस जिह धुजा बिराजै ॥
बाजत झाझर तूर मधुर बीना धुनि बाजै ॥
सब बजंत्र जिह संग बजत सुंदर छब सोहत ॥
संग सैन अबला संबूह सुर नर मुनि मोहत ॥
अस मदन राज राजा न्रिपति जिदिन क्रुध करि धाइ है ॥
बिनु इक बिबेक ता के समुहि अउर दूसर को जाइ है ॥१७०॥
करत न्रित सुंदरी बजत बीना धुनि मंगल ॥
उपजत राग संबूह बजत बैरारी बंगलि ॥
भैरव राग बसंत दीप हिंडोल महा सुर ॥
उघटत तान तरंग सुनत रीझत धुनि सुर नर ॥
इह छबि प्रभाव रितु राज न्रिप जिदिन रोस करि धाइ है ॥
बिनु इक बिबेक ता के न्रिपति अउर समुहि को जाइ है ॥१७१॥
सोरठि सारंग सुध मलार बिभास सरबि गनि ॥
रामकली हिंडोल गौड गूजरी महा धुनि ॥
ललत परज गवरी मलार कानड़ा महा छबि ॥
जाहि बिलोकत बीर सरब तुमरे जै है दबि ॥
इह बिधि नरेस रितु राज न्रिप मदन सूअन जब गरज है ॥
बिनु इक ग्यान सुन हो न्रिपति सु अउर दूसर को बरजि है ॥१७२॥
कऊधत दामनि सघन सघन घोरत चहुदिस घन ॥
मोहित भामिन सघन डरत बिरहनि त्रिय लखि मनि ॥
बोलत दादुर मोर सघन झिली झिंकारत ॥
देखत द्रिगन प्रभाव अमित मुनि मन ब्रित हारत ॥
इह बिधि हुलास मदनज दूसर जिदिन चटक दै सटक है ॥
बिनु इक बिबेक सुनहो न्रिपति अउर दूसर को हटक है ॥१७३॥
त्रितीआ पुत्र अनंद जिदिन ससत्रन कहु धरि है ॥
करि है चित्र बचित्र सु रण सुर नर मुनि डरि है ॥
को भट धरि है धीर जिदिन सामुहि वह ऐ है ॥
सभ को तेज प्रताप छिनक भीतर हर लै है ॥
इह बिधि अनंद दुर धरख भट जिदिन ससत्र गह मिक है ॥
बिनु इक धीरज सुनि रे न्रिपति सु अउर न दूसरि टिक है ॥१७४॥
रतन जटत रथ सुभत खचित बज्रन मुकताफल ॥
हीर चीर आभरण धरे सारथी महाबल ॥
कनक देख कुररात कठन कामिन ब्रित हारत ॥
तनि पटंबर जरकसी परम भूखन तन धारत ॥
इह छबि अनंद मदनज न्रिपति जिदिन गरज दल गाहि है ॥
बिनु इक धीरज सुनि रे न्रिपति सु अउर समुह को जाहि है ॥१७५॥
धूम्र बरण सारथी धूम्र बाजीरथ छाजत ॥
धूम्र बरण आभरण निरखि सुर नर मुनि लाजत ॥
धूम्र नैन धूमरो गात धूमर तिह भूखन ॥
धूम्र बदन ते बमत सरब सत्रू कुल दूखन ॥
अस भरम मदन चतुरथ सुवन जिदिन रोस करि धाइ है ॥
दल लूट कूट तुमरो न्रिपति सु सरब छिनक महि जाइ है ॥१७६॥
अउर अउर जे सुभटि गनो तिह नाम बिचछन ॥
बड जोधा बड सूर बडे जितवार सुलच्छन ॥

कलहि नाम इक नारि महा कल रूप कलह कर ॥
लोग चतुरदस माझि जासु छोरा नही सुर नर ॥
सब ससत्र असत्र भीतर निपुण अति प्रभाव तिह जानीऐ ॥
सब देस भेस अरु राज सब त्रास जवन को मानीऐ ॥१७७॥
बैर नाम इक बीर महा दुर धरख अजै रणि ॥
कबहु दीन नही पीठि अनिक जीते जिह न्रिप गण ॥
लोचन स्रौणत बरण अरुण सब ससत्र अंगि तिह ॥
रवि प्रकास सर धुजा अरुण लाजत लखि छबि जिह ॥
इह भाति बैर बीरा बडे जिदिन क्रुध करि गरजि है ॥
बिनु एक साति सुन रे न्रिपति सु अउर न दूसर बरजि है ॥१७८॥
धूम्र धुजा रथ धूम्र धूम्र सारथी बिराजत ॥
धूम्र बसत्र तन धरे निरखि धूअरो मनि लाजत ॥
धूम्र धनुख कर छक्यो बान धूमरे सुहाए ॥
सुर नर नाग भुजंग जछ अरु असुर लजाए ॥
इह छबि प्रभाव आलस न्रिपति जिदिन जुध कह जुट है ॥
उदम बिहीन सुन रे न्रिपति अउर सकल दल फुट है ॥१७९॥
हरित धुजा अरु धनुख हरित बाजी रथ सोभंत ॥
हरत बसत्र तन धरे निरखि सुर नर मन मोहंत ॥
पवन बेग रथ चलत भ्रमन बघूला लखि लजित ॥
सुनत स्रवन चक सबद मेघ मन महि सुखु सजित ॥
इह छबि प्रताप मद नाम न्रिप जिदिन तुरंग नचाइ है ॥
बिनु इक बिबेक सुन लै न्रिपति ससु समरि न दूसर जाइ है ॥१८०॥
असित धुजा सारथी असित बसत्रै अरु बाजी ॥
असित कवच तन कसे तजत बाणन की राजी ॥
असित सकल तिह बरण असित लोचन दुख मरदन ॥
असित मणिण के सकल अंगि भूखण रुचि बरधन ॥
अस कुव्रिति बीर दुर धरख अति जिदिन समर कह सजि है ॥
बिनु इक धीरज बीरत तजि अउर सकल दल भजि है ॥१८१॥
चरम बरम कह धरे धरम छत्री को धारत ॥
अजै जानि आपनहि सरब रण सुभट पचारत ॥
धरन न आगै धीर बीर जिह सामुह धावत ॥
सुर असुर अरु नर नारि जछ गंध्रब गुन गावत ॥
इह बिधि गुमान जा दिन गरज परम क्रोध कर ढूक है ॥
बिनु इक सील सुन न्रिपति न्रिपाणि सु अउर सकल दल हूक है ॥१८२॥
कड़कि क्रोध करि चड़गु भड़कि भादवि ज्यों गजत ॥
सड़क तेग दामिन तड़क तड़भड़ रण सजत ॥
लुड़क लुथ बिथुरग सेल सामुहि ह्वै घलत ॥
जिदिन रोस रावत रणहि दूसर को झलत ॥
इह बिधि अपमान तिह भ्रात भन जिदिन रुद्र रस मचि है ॥
बिन इक सील दुसील भट सु अउर कवण रणि रचि है ॥१८३॥
धनुख मंडलाकार लगत जा को सदीव रण ॥
निरखत तेज प्रभाव भटक भाजत है भट गण ॥
कउन बाधि ते धीर बीर निरखत दुति लाजत ॥
नहन जुध ठहराति त्रसत दसहूं दिस भाजत ॥
इह बिधि अनरथ समरथ रणि जिदिन तुरंग मटक है ॥
बिनु इक धीर सुन बीर बरु सु दूसर कउन हटकि है ॥१८४॥
प्रीत बसत्र तनि धरे धुजा पीअरी रथ धारे ॥
पीत धनुख करि सोभ मान रति पति को टारे ॥
पीत बरण सारथी पीत बरणै रथ बाजी ॥
पीत बरन को बाण खेति चड़ि गरजत गाजी ॥

इह भाति बैर सूरा न्रिपति जिदिन गरजि दल गाहि है ॥
बिनु इक गिआन सवधान ह्वै अउर समर को चाहि है ॥१८५॥
मलित बसत्र तनि धरे मलित भूखन रथ बाधे ॥
मलित मुकट सिर धरे परम बाणण कह साधे ॥
मलित बरण सारथी मलित ताहूं आभूखन ॥
मलयागर की गंध सकल सत्रू कुल दूखन ॥
इह भाति निंद अनधर सुभट जिदिन अयोधन मचि है ॥
बिनु इक धीरज सुन बीर बर सु अउर कवण रणि रचि है ॥१८६॥
घोर बसत्र तनि धरे घोर पगीआ सिर बाधे ॥
घोर बरण सिरि मुकट घोर सत्रन कह साधे ॥
घोर मंत्र मुख जपत परम आघोर रूप तिह ॥
लखत स्वरग भहरात घोर आभा लखि कै जिह ॥
इह भाति नरक दुर धरख भट जिदिन रोसि रणि आइ है ॥
बिनु इक हरिनाम सुन हो न्रिपति सु अउर न कोइ बचाइ है ॥१८७॥
समट साग संग्रहै सेल सामुहि ह्वै सुटै ॥
कलित क्रोध संजुगति गलित गैवर जियों जुटै ॥
इक इक बिनु कीन इक ते इक न चलै ॥
इक इक संग भिड़ै ससत्र सनमुख ह्वै झलै ॥
इह बिधि नसील दुसील भट सहत कुचील जबि गरजि है ॥
बिनु एक सुचहि सुनि न्रिप न्रिपणि सु अउर न कोऊ बरजि है ॥१८८॥
ससत्र असत्र दोऊ निपुण निपुण सब बेद सासत्र कर ॥
अरुण नेत्र अरु रकत बसत्र भ्रितवान धनुरधर ॥
बिकट बाक्रय बड ड्रयाछ बडो अभिमान धरे मन ॥
अमित रूप अमितोज अभै आलोक अजै रन ॥
अस सुभट छुधा त्रिसना सबल जिदिन रंग रण रचि है ॥
बिनु इक न्रिपति निग्रह बिना अउर जीअ न लै बचि है ॥१८९॥
पवन बेग रथ चलत सु छबि सावज तड़ता क्रित ॥
गिरत धरन सुंदरी नैक जिह दिसि फिरि झाकत ॥
मदन मोह मन रहत मनुछ देखि छबि लाजत ॥
उपजत हीय हुलास निरखि दुति कह दुख भाजत ॥
इमि कपट देव अनजेव न्रिपु जिदिन झटक दै धाइ है ॥
बिनु एक साति सुनहो न्रिपति सु अउर कवन समुहाइ है ॥१९०॥
चखन चारु चंचल प्रभाव खंजन लखि लाजत ॥
गावत राग बसंत बेण बीना धुनि बाजत ॥
धधकत भ्रिकट म्रिदंग झाझ झालर सुभ सोहत ॥
खग म्रिग जछ भुजंग असुर सुर नर मन मोहत ॥
अस लोभ नाम जोधा बडो जिदिन जुध कह जुटि है ॥
जस पवन बेग ते मेघ गण सु अस तव सब दल फुटि है ॥१९१॥
धुज प्रमाण बीजुरी भुजा भारी जिह राजत ॥
अति चंचल रथ चलत निरख सुर नर मुनि भाजत ॥
अधिक रूप अमितोज अमिट जोधा रण दुह कर ॥
अति प्रताप बलवंत लगत सत्रन कह रिपु हर ॥
अस मोह नाम जोधा जस जिदिन जुध कह जुटि है ॥
बिन इक बिचार अबिचार न्रिप अउर सकल दल फुटि है ॥१९२॥
पवन बेग रथ चलत गवन लखि मोहित नागर ॥
अति प्रताप अमितोज अजै प्रतमान प्रभाधर ॥
अति बलिसट अधिसट सकल सैना कहु जानहु ॥
क्रोध नाम बढियाछ बडो जोधा जीअ मानहु ॥
धरि अंगि कवच धर पनच करि जिदिन तुरंग मटक है ॥
बिनु एक साति सुन सति न्रिप सु अउर न कोऊ हटकि है ॥१९३॥

गलित दुरद मदि चड्यो कढि करवार भयंकर ॥
स्याम बरण आभरण खचित सब नील मणिण बर ॥
स्वरन किंकणी जाल बधे बानैत गजोतम ॥
अति प्रभाव जुति बीर सिध सावंत नरोतम ॥
इह छबि हंकार नामा सुभट अति बलिसट तिह मानीऐ ॥
जिह जगत जीव जीते सबै आप अजीत तिह जानीऐ ॥१९४॥
सेत हसत आरूड़ ढुरत चहूं ओरि चवर बर ॥
स्वरण किंकणी बधे निरखि मोहत नारी नर ॥
सुभ्र सैहथी पाणि प्रभा कर मै अस धावत ॥
निरखि दिपति दामनी प्रभा हीयरे पछुतावत ॥
अस द्रोह नाम जोधा बडो अति प्रभाव तिह जानीऐ ॥
जल थल बिदेस देसन न्रिपति आन जवन की मानीऐ ॥१९५॥
तबल बाज घुंघरार सीस कलगी जिह सोहत ॥
द्वै क्रिपाण गजगाह निरखि नारी नर मोहत ॥
अमित रूप अमितोज बिकट बानैत अमिट भट ॥
अति सुबाह अति सूर अजै अनभिद सु अनकट ॥
इह भाति भरम अनभिद भट जिदिन क्रुध जीय धार है ॥
बिन इक बिचार अबिचार न्रिप ससु अउर न आनि उबारि है ॥१९६॥
लाल माल सुभ बधै नगन सरपेचि खचित सिर ॥
अति बलिसट अनिभेद अजै सावंत भटाबर ॥
कटि क्रिपाण सैहथी तजत धारा बाणन कर ॥
देखत हसत प्रभाव लजत तड़िता धाराधर ॥
अस ब्रहम दोख अनमोख भट अकट अजै तिह जानीऐ ॥
अरि दवन अजै आनंद कर न्रिप अबिबेक को मानीऐ ॥१९७॥
असित बसत्र अरु असित गात अमितोज रणाचल ॥
अति प्रचंड अति बीर बीर जीते जिन जल थल ॥
अकट अजै अनभेद अमिट अनरथि नाम तिह ॥
अति प्रमाथ अरि मथन सत्रु सोखन है ब्रिद जिह ॥
दुर धरख सूर अनभेद भट अति प्रताप तिह जानीऐ ॥
अनजै अनंद दाता अपन अति सुबाह तिह मानीऐ ॥१९८॥
मोर बरण रथ बाज मोर ही बरण परम जिह ॥
अमित तेज दुर धरख सत्रु लख कर कंपत तिह ॥
अमिट बीर आजान बाहु आलोक रूप गन ॥
मतस केतु लखि जाहि ह्रिदै लाजत है दुति मनि ॥
अस झूठ रूठि जिदिन न्रिपति रणहि तुरंग उथकि है ॥
बिनु इक सति सुण सति न्रिप सु अउर न आनि हटकि है ॥१९९॥
रथ तुरंग सित असित असित सित धुजा बिराजत ॥
असित सेतहि बसत्र निरखि सुर नर मुनि लाजत ॥
असित सेत सारथी असित सेत छकिओ रथाबर ॥
सुवरण किंकनी केस जनुक दूसरे देवेसुर ॥
इह छबि प्रभाव मिथिआ सुभट अति बलिसट तिह कह कह्यो ॥
जिह जगत जीव जीते सबै नहि अजीत नर को रह्यो ॥२००॥
चक्र बक्र कर धरे चारु बागा तनि धारे ॥
आनन खात तंबोल गंधि उतम बिसथारे ॥
चवरु चारु चहूं ओरि ढुरत सुंदर छबि पावत ॥
निरखत नैन बसंत प्रभा ताकह सिर न्यावत ॥
इह बिधि सुबाहु चिंता सुभट अति दुर धरख बखानीऐ ॥
अनभंग गात अनभै सुभट अति प्रचंड तिह मानीऐ ॥२०१॥

रूआल छंद ॥

लाल हीरन के धरे जिह सीस पै बहु हार ॥
स्वरणी किंकणि सौ छक गज राज पबाकार ॥
दुरद रूड़ दरिद्र नाम सु बीर है सुनि भूप ॥
कउन ता ते जीत है रण आनि राज सरूप ॥२०२॥
जरकसी के बसत्र है अरु परम बाजारूड़ ॥
परम रूप पवितर गात अछिज रूप अगूड़ ॥
छत्र धरम धरे महा भट बंस की जिह लाज ॥
संक नामा सूर सो सब सूर है सिरताज ॥२०३॥
पिंग बाज नहे रथै सहि अडिग बीर अखंड ॥
अंत रूप धरे मनो अछिज गात प्रचंड ॥
नाम सूर असोभ ता कह जानही सभ लोक ॥
कउन राव बिबेक है जु न मानि है इह सोक ॥२०४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सजे स्याम बाजी रथं जासु जानो ॥
महा जंग जोधा अजै तासु मानो ॥
असंतुसट नाम महाबीर सोहै ॥
तिहूं लोक जा को बडो त्रास मोहै ॥२०५॥
चड़्यो तत ताजी सिराजीत सोभै ॥
सिरं जैत पत्रं लखे चंद्र छोभै ॥
अनास ऊच नामा महा सूर सोहै ॥
बडो छत्रधारी धरै छत्र जो है ॥२०६॥
रथं सेत बाजी सिराजीत सोहै ॥
लखे इंद्र बाजी तरै द्रिसट को है ॥
हठी बाबरी को हिंसा नाम जानो ॥
महा जंग जोधा अजै लोक मानो ॥२०७॥
सुभं संदली बाज राजी सिराजी ॥
लखे रूप ता को लजै इंद्र बाजी ॥
कुमंतं महा जंग जोधा जुझारं ॥
जलं वा थलं जेण जिते बरिआरं ॥२०८॥
चड़्यो बाज ताजी कोपतं सरूपं ॥
धरे चरम बरमं बिसालं अनूपं ॥
धुजा बध सिधं अलजा जुझारं ॥
बडो जंग जोधा सु क्रुधी बरारं ॥२०९॥
धरे छीन बसत्रं मलीनं दरिद्री ॥
धुजा फाट बसत्रं सु धारे उपद्री ॥
महा सूर चोरी करोरी समानं ॥
लसै तेज ऐसो लजै देखि स्वानं ॥२१०॥
फटे बसत्र सरबं सबै अंग धारे ॥
बधे सीस जारी बुरी अरध जारे ॥
चड़्यो भीम भैसं महा भीम रूपं ॥
बिभैचार जोधा कहो तास भूपं ॥२११॥
सभै सिआम बरणं सिरं सेत एकं ॥
नहे गरधपं स्रयंदनेकं अनेकं ॥
धुजा स्याम बरणं भुजं भीम रूपं ॥
सरं स्रोणितं एक अछेक कूपं ॥२१२॥
महा जोध दारिद्र नामा जुझारं ॥
धरे चरम बरमं सु पाणं कुठारं ॥
बडो चित्र जोधी करोधी करालं ॥
तजै नासका नैन धूम्रं बरालं ॥२१३॥

रूआल छंद ॥

स्वामिघात क्रितघनता दोऊ बीर है दुर धरख ॥
सत्रु सूरन के संघारक सैन के भरतरख ॥
कउन दो थन सो जना जु न मानि है तिहं त्रास ॥
रूप अनूप बिलोकि कै भट भजै होइ उदास ॥२१४॥
मित्र दोख अरु राज दोख सु एक ही है भ्रात ॥
एक बंस दुहूंन को अर एक ही तिह मात ॥
छत्रि धरम धरे हठी रण धाइ है जिह ओर ॥
कउन धीर धर भटाबर लेत है झकझोर ॥२१५॥
ईरखा अरु उचाट ए दोऊ जंग जोधा सूर ॥
भाजि है अविलोक कै अरु रीझि है लखि हूर ॥
कउन धीर धरै भटाबर जीति है सब सत्रु ॥
दंत लै त्रिण भाजि है भट को न गहि है अत्र ॥२१६॥
घात अउर बसीकरण बड बीर धीर अपार ॥
क्रूर करम कुठार पाणि कराल दाड़ बरिआर ॥
बिज तेज अछिज गाति अभिज रूप दुरंत ॥
कउन कउन न जीतिए जिनि जीव जंत महंत ॥२१७॥
आपदा अरु झूठता अरु बीर बंस कुठार ॥
परम रूप दुर धरख गात अमरख तेज अपार ॥
अंग अंगनि नंग बसत्र न अंग बलकुल पात ॥
दुसट रूप दरिद्र धाम सु बाण साधे सात ॥२१८॥
बियोग अउर अपराध नाम सु धार है जब कोप ॥
कउन ठाढ सकै महा बलि भाजि है बिनु ओप ॥
सूल सैथन पानि बान संभारि है तव सूर ॥
भाजि है तजि लाज को बिसंभार ह्वै सब कूर ॥२१९॥
भानु की सर भेद जा दिन तपि है रण सूर ॥
कउन धीर धरै महा भट भाजि है सभ कूर ॥
ससत्र असत्रन छाडि कै अरु बाज राज बिसारि ॥
काटि काटि सनाह तव भट भाजि है बिसंभार ॥२२०॥
धूम्र बरण अउ धूम्र नैन सु सात धूम्र जुआल ॥
छीन बसत्र धरे सबै तन क्रूर बरण कराल ॥
नाम आलस तवन को सुनि राज राज वतार ॥
कउन सूर संघारि है तिह ससत्र असत्र प्रहार ॥२२१॥

तोटक छंद ॥

चड़ि है गहि कोप क्रिपाण रणं ॥
घमकंत कि घुंघर घोर घणं ॥
तिह नाम सु खेद अभेद भटं ॥
तिह बीर सुधीर लखो निपटं ॥२२२॥
कल रूप कराल ज्वाल जलं ॥
असि उजल पानि प्रभा न्रिमलं ॥
अति उजल दंद अनंद मनं ॥
कुक्रिआ तिह नाम सु जोध गनं ॥२२३॥
अति सिआम सरूप करूप तनं ॥
उपजं अग्यान बिलोकि मनं ॥
तिह नाम गिलानि प्रधान भटं ॥
रण मो न महा हठि हारि हटं ॥२२४॥
अति अंग सुरंग सनाह सुभं ॥

बहु कसट सरूप सु कसट छुभं ॥
अति बीर अधीर न भयो कब ही ॥
दिव देव पछानत है सब ही ॥२२५॥
भट करम बिकरम जबै धरि है ॥
रण रंग तुरंगहि बिचरि है ॥
तब बीर सु धीरहि को धरि है ॥
बल बिक्रम तेज तबै हरि है ॥२२६॥

दोहरा ॥

इह बिधि तन सूरा सु धरि धै है न्रिप अबिबेक ॥
न्रिप बिबेक की दिसि सुभट ठाढ न रहि है एक ॥२२७॥

◄ *इति स्री बचित नाटक ग्रंथे पारस मछिंद्र संबादे न्रिप अबिबेक आगमन नाम सुभट बरननं नाम धिआइ समापतम सत सुभम सत ॥*

अथ न्रिप बिबेक दे दल कथनं ॥

छपय छंद ॥

जिह प्रकार अबिबेक न्रिपति दल सहित बखाने ॥
नाम ठाम आभरन सु रथ सभ के हम जाने ॥
ससत्र असत्र अरु धनुख धुजा जिह बरण उचारी ॥
त्वप्रसादि मुनि देव सकल सु बिबेक बिचारी ॥
करि क्रिपा सकल जिह बिधि कहे तिह बिधि वहै बखानीऐ ॥
किह छबि प्रभाव किह दुति न्रिपति न्रिप बिबेक अनुमानीऐ ॥२२८॥
अधिक न्यास मुनि कीन मंत्र बहु भाति उचारे ॥
तंत्र भली बिधि सधे जंत्र बहु बिधि लिखि डारे ॥
अति पवित्र हुऐ आप बहुरि उचार करो तिह ॥
न्रिप बिबेक अबिबेक सहित सैन कथ्यो जिह ॥
सुर असुर चक्रित चहु दिस भए अनल पवन ससि सूर सब ॥
किह बिधि प्रकास करि है संघार जके जछ गंधरब सब ॥२२९॥
सेत छत्र सिर धरै सेत बाजी रथ राजत ॥
सेत ससत्र तन सजे निरखि सुर नर भ्रमि भाजत ॥
चंद चक्रित ह्वै रहत भानु भवता लखि भुलत ॥
भ्रमर प्रभा लखि भ्रमत असुर सुर नर डग डुलत ॥
इह छबि बिबेक राजा न्रिपति अति बलिसट तिह मानीऐ ॥
मुनि गन महीप बंदत सकल तीनि लोकि महि जानीऐ ॥२३०॥
चमर चारु चहूं ओर ढुरत सुंदर छबि पावत ॥
निरखि हंस तिह ढुरनि मान सरवरहि लजावत ॥
अति पवित्र सब गात प्रभा अति ही जिह सोहत ॥
सुर नर नाग सुरेस जछ किंनर मन मोहत ॥
इह छबि बिबेक राजा न्रिपति जिदिन कमान चड़ाइ है ॥
बिनु अबिबेक सुनि हो न्रिपति सु अउर न बान चलाइ है ॥२३१॥
अति प्रचंड अबिकार तेज आखंड अतुल बल ॥
अति प्रताप अति सूर तूर बाजत जिह जल थल ॥
पवन बेग रथ चलत पेखि चपला चित लाजत ॥
सुनत सबद चक चार मेघ मोहत भ्रम भाजत ॥
जल थल अजेअ अनभै भट अति उतम परवानीऐ ॥
धीरजु सु नाम जोधा बिकट अति सुबाहु जग मानीऐ ॥२३२॥

धरम धीर बीर जसमीर अनभीर बिकट मति ॥
कलप ब्रिछ कुब्रितन क्रिपान जस तिलक सुभट अति ॥
अति प्रतापु अति ओज अनल सर तेज जरे रण ॥
ब्रहम असत्र सिव असत्र नहिन मानत एकै ब्रण ॥
इह दुति प्रकास ब्रित छत्र न्रिप ससत्र असत्र जब छंडि है ॥
बिनु एक अब्रित सुब्रित न्रिपति अवर न आहव मंडि है ॥२३३॥
अछिज गात अनभंग तेज आखंड अनिल बल ॥
पवन बेग रथ को प्रतापु जानत जीअ जल थल ॥
धनुख बान परबीन छीन सब अंग ब्रितन करि ॥
अति सुबाहु संजम सुबीर जानत नारी नर ॥
गहि धनुख बान पानहि धरम परम रूप धरि गरजि है ॥
बिनु इक अब्रित सुब्रित न्रिपति अउर न आनि बरजि है ॥२३४॥
चक्रित चारु चंचल प्रकास बाजी रथ सोहत ॥
अति प्रबीन धुनि छीन बीन बाजत मन मोहत ॥
प्रेम रूप सुभ धरे नेम नामा भट भै कर ॥
परम रूप परमं प्रताप जुध जै अरि छै कर ॥
अस अमिट बीर धीरा बडो अति बलिसट दुर धरख रणि ॥
अनभै अभंज अनमिट सुधीस अनबिकार अनजै सु भण ॥२३५॥
अति प्रताप अमितोज अमिट अनभै अभंग भट ॥
रथ प्रमाण चपला सु चारु चमकत है अनकट ॥
निरखि सत्रु तिह तेज चक्रित भयभीत भजत रणि ॥
धरत धीर नहि बीर तीर सर है नही हठि रणि ॥
बिग्रयान नामु अनभै सुभट अति बलिसट तिह जानीऐ ॥
अगिआन देसि जा को सदा त्रास घरन घरि मानीऐ ॥२३६॥
बमत ज्वाल डमरू कराल डिम डिम रणि बजत ॥
घन प्रमान चक सबद घहरि जा को गल गजत ॥
सिमटि साग संग्रहत सरकि सामुह अरि झारत ॥
निरखि तासु सुर असुर ब्रहम जै सबद उचारत ॥
इसनान नाम अभिमान जुत जिदिन धनुख गहि गरजि है ॥
बिनु इक कुचील सामुहि समर अउर न तासु बरजि है ॥२३७॥
इकि निब्रित अति बीर दुतीअ भावना महा भट ॥
अति बलिसट अनमिट अपार अनछिज अनाकट ॥
ससत्र धारि गज है जब भीर भाजि है निरखि रणि ॥
पत्र भेस भहरात धीर धर है न अनगण ॥
इह बिधि सु धीर जोधा न्रिपति जिदिन अयोधन रचि है ॥
तज ससत्र असत्र भजि है सकल एक न बीर बिरच है ॥२३८॥

संगीत छपय छंद ॥

तागड़दी तुर बाज है जागड़दी जोधा जब जुटहि ॥
लागड़दी लुथ बिथुरहि सागड़दी संनाह सु तुटहि ॥
भागड़दी भूत भैरो प्रसिध अरु सिध निहारहि ॥
जागड़दी जछ जुगणी जूथ जै सबद उचारहि ॥
संसागड़दी सुभट संजम अमिट कागड़दी क्रुध जब गरजि है ॥
दंदागड़दी इक दुरमति बिना आगड़दी सु अउर न बरजि है ॥२३९॥
जागड़दी जोग जयवान कागड़दी करि क्रोध कड़कहि ॥
लागड़दी लुट अरु कुट तागड़दी तरवार सड़कहि ॥
सागड़दी ससत्र संनाह पागड़दी पहिर है जवन दिन ॥
सागड़दी सत्रु भजि है टागड़दी टिकि है न इक छिन ॥
पंपागड़दी पीअर सित बरण मुख सागड़दी समसत सिधार है ॥
अंआगड़दी अमिट दुर धरख भट जागड़दी कि जिदिन निहार है ॥२४०॥

आगड़दी इक अरचारु पागड़दी पूजा जब कुपहि ॥
रागड़दी रोस करि जोस पागड़दी पाइन जब रुपहि ॥
सागड़दी सत्रु तजि अत्र भागड़दी भजहि सु भ्रमि रणि ॥
आगड़दी ऐस उझड़हि पागड़दी जणु पवन पत्र बण ॥
संसागड़दी सुभट सब भजि है तागड़दी तुरंग नचाइ है ॥
छंछागड़दी छत्र ब्रिति छडि कै आगड़दी अधोगति जाइ है ॥२४१॥

छपय छंद ॥

चमर चारु चहूं ओरि ढुरत सुंदर छबि पावत ॥
सेत बसत्र अरु बाज सेत ससत्रण छबि छावत ॥
अति पवित्र अबिकार अचल अनखंड अकट भट ॥
अमित ओज अनमिट अनंत अछलि रणाकट ॥
धर असत्र ससत्र सामुह समर जिदिन न्रिपोतम गरजि है ॥
टिकि है इक भट नहि समरि अउर कवण तब बरजि है ॥२४२॥
इकि बिदिआ अरु लाज अमिट अति ही प्रताप रणि ॥
भीम रूप भैरो प्रचंड अमिट अदाहण ॥
अति अखंड अडंड चंड परताप रणाचल ॥
ब्रिखभ कंध आजान बाह बानैत महाबलि ॥
इह छबि अपार जोधा जुगल जिदिन निसान बजाइ है ॥
भजि है भूप तजि लाज सभ एक न सामुहि आइ है ॥२४३॥

नराज छंद ॥

संजोग नाम सूरमा अखंड एक जानीऐ ॥
सु धामि धामि जास को प्रताप आज मानीऐ ॥
अडंड औ अछेद है अभंग तासु भाखीऐ ॥
बिचार आज तउन सो जुझार कउन राखीऐ ॥२४४॥
अखंड मंडलीक सो प्रचंड बीर देखीऐ ॥
सुक्रित नाम सूरमा अजित तासु लेखीऐ ॥
गरजि ससत्र सजि कै सलजि रथ धाइ है ॥
अमंड मारतंड ज्यों प्रचंड सोभ पाइ है ॥२४५॥
बिसेख बाण सैहथी क्रिपान पाणि सजि है ॥
अमोह नाम सूरमा सरोह आनि गज है ॥
अलोभ नाम सूरमा दुतीअ जो गरजि है ॥
रथी गजी हई पती अपार सैण भजि है ॥२४६॥
हठी जपी तपी सती अखंड बीर देखीऐ ॥
प्रचंड मारतंड ज्यों अडंड तासु लेखीऐ ॥
अजिति जउन जगत ते पवित्र अंग जानीऐ ॥
अकाम नाम सूरमा भिराम तासु मानीऐ ॥२४७॥
अक्रोध जोध क्रोध कै बिरोध सजि है जबै ॥
बिसारि लाज सूरमा अपार भाजि है सभै ॥
अखंड देहि जास की प्रचंड रूप जानीऐ ॥
सु लज नाम सूरमा सु मंत्रि तासु मानीऐ ॥२४८॥
सु परम तत आदि दै निराहंकार गरजि है ॥
बिसेख तोर सैन ते असेख बीर बरजि है ॥
सरोख सैहथीन लै अमोघ जोध जुटि है ॥
असेख बीर कारमादि क्रूर कउच तुट है ॥२४९॥

नराज छंद ॥

सभगति एक भावना सु क्रोध सूर धाइ है ॥

असेख मारतंड ज्यों बिसेख सोभ पाइ है ॥
संघारि सैण सत्रुवी जुझार जोध जुटि है ॥
करूर कूर सूरमा तरक तंग तुटि है ॥२५०॥
सिमटि सूर सैहथी सरकि साग सेल है ॥
दुरंत घाइ झालि कै अनंत सैण पेलि है ॥
तमकि तेग दामिणी सड़कि सूर मटि है ॥
निपटि कटि कुटि कै अकट अंग सटि है ॥२५१॥
निपटि सिंघ ज्यों पलटि सूर सेल बाहि है ॥
बिसेख बूथनीस की असेख सैण गाहि है ॥
अरुझि बीर अप मझि गझि आनि जुझि है ॥
बिसेख देव दईत जछ किंनर क्रित बुझि है ॥२५२॥
सरकि सेल सूरमा मटिक बाज सुटि है ॥
अमंड मंडलीक से अफुट सूर फुटि है ॥
सु प्रेम नाम सूर को बिसेख भूप जानीऐ ॥
सु साख तास की सदा तिहूंन लोक मानीऐ ॥२५३॥
अनूप रूप भान सो अभूत रूप मानीऐ ॥
संजोग नाम सत्रुहा सु बीर तासु जानीऐ ॥
सु साति नाम सूरमा सु अउर एक बोलीऐ ॥
प्रताप जास को सदा सु सरब लोग तोलीऐ ॥२५४॥
अखंड मंडलीक सो प्रचंड रूप देखीऐ ॥
सु कोप सुध सिंघ की समान सूर पेखीऐ ॥
सु पाठ नाम तास को अठाट तासु भाखीऐ ॥
भज्यो न जुध ते कहूं निसेस सूर साखीऐ ॥२५५॥
सुकरम नाम एक को सुसिछ दूज जानीऐ ॥
अभिज मंडलीक सो अछिज तेज मानीऐ ॥
सु कोप सूर सिंघ ज्यों घटा समान जुटि है ॥
दुरंत बाज बाजि है अनंत ससत्र छुटि है ॥२५६॥
सु जगि नाम एक को प्रबोध अउर मानीऐ ॥
सु दान तीसरा हठी अखंड तासु जानीऐ ॥
सु नेम नाम अउर है अखंड तासु भाखीऐ ॥
जगत जासु जीतिआ जहान भानु साखीऐ ॥२५७॥
सु सतु नाम एक को संतोख अउर बोलीऐ ॥
सु तपु नाम तीसरो दसंत्र जासु छोलीऐ ॥
सु जापु नाम एक को प्रताप आज तास को ॥
अनेक जुध जीति कै बरियो जिनै निरास को ॥२५८॥

छपै छंद ॥

अति प्रचंड बलवंड नेम नामा इक अति भट ॥
प्रेम नाम दूसरो सूर बीरारि रणोतकट ॥
संजम एक बलिसटि धीर नामा चतुरथ गनि ॥
प्राणयाम पंचवो धिआन नामा खसटम भनि ॥
जोधा अपार अनखंड सति अति प्रताप तिह मानीऐ ॥
सुर असुर नाग गंध्रब धरम नाम जवन को जानीऐ ॥२५९॥
सुभाचार जिह नाम सबल दूसर अनुमानो ॥
बिक्रम तीसरो सुभट बुधि चतुरथ जीअ जानो ॥
पंचम अनुरकतता छठम सामाध अभै भट ॥
उदम अरु उपकार अमिट अनजीत अनाकट ॥
जिह निरखि सत्रु तजि आसननि बिमन चित भाजत तवन ॥
बलि टारि हारि आहव हठी अठट ठाट भुलत गवन ॥२६०॥

तोमर छंद ॥

सु बिचार है भट एक ॥
गुन बीच जासु अनेक ॥
संजोग है इक अउर ॥
जिनि जीतिआ पति गउर ॥२६१॥
इक होम नाम सु बीर ॥
अरि कीन जासु अधीर ॥
पूजा सु अउर बखान ॥
जिह सो न पउरखु आनि ॥२६२॥
अनुरकतता इक अउर ॥
सभ सुभट को सिर मउर ॥
बेरकतता इक आन ॥
जिह सो न आन प्रधान ॥२६३॥
सतसंग अउर सुबाह ॥
जिह देख जुध उछाह ॥
भट नेह नाम अपार ॥
बल जउन को बिकरार ॥२६४॥
इक प्रीति अरु हरि भगति ॥
जिह जोति जगमग जगति ॥
भट दत मत महान ॥
सब ठउर मै परधान ॥२६५॥
इक अक्रुध अउर प्रबोध ॥
रण देखि कै जिह क्रोध ॥
इह भाति सैन बनाइ ॥
दुहु दिसि निसान बजाइ ॥२६६॥

दोहरा ॥

इह बिधि सैन बनाइ कै चड़े निसान बजाइ ॥
जिह जिह बिधि आहव मच्यो सो सो कहत सुनाइ ॥२६७॥

स्री भगवती छंद ॥

कि संबाह उठे ॥
कि सावंत जुटे ॥
कि नीसाण हुके ॥
कि बाजंत्र धुके ॥२६८॥
कि बंबाल नेजे ॥
कि जंज्वाल तेजे ॥
कि सावंत ढूके ॥
कि हा हाइ कूके ॥२६९॥
कि सिंधूर गजे ॥
कि तंदूर बजे ॥
कि संबाह जुटे ॥
कि संनाह फुटे ॥२७०॥
कि डाकंत डउरू ॥
कि भ्रामंत भउरू ॥
कि आहाड़ि डिगे ॥
कि राकत्र भिगे ॥२७१॥
कि चामुंड चरमं ॥

कि सावंत धरमं ॥
कि आवंत जुधं ॥
कि सानध बधं ॥२७२॥
कि सावंत सजे ॥
कि नीसाण बजे ॥
कि जंज्वाल क्रोधं ॥
कि बिसारि बोधं ॥२७३॥
कि आहाड़ मानी ॥
कि ज्यों मछ पानी ॥
कि ससत्रासत्र बाहै ॥
कि ज्यों जीत चाहै ॥२७४॥
कि सावंत सोहे ॥
कि सारंग रोहे ॥
कि ससत्रासत्र बाहे ॥
भले सैण गाहे ॥२७५॥
कि भैरउ भभकै ॥
कि काली कुहकै ॥
कि जोगन जुटी ॥
कि लै पत्र टुटी ॥२७६॥
कि देवी दमके ॥
कि काली कुहके ॥
कि भैरो भकारै ॥
कि डउरू डकारै ॥२७७॥
कि बहु ससत्र बरखे ॥
कि परमासत्र करखे ॥
कि दईतासत्र छुटे ॥
देवासत्र मुके ॥२७८॥
कि सैलासत्र साजे ॥
कि पउनासत्र बाजे ॥
कि मेघासत्र बरखे ॥
कि अगनासत्र करखे ॥२७९॥
कि हंसासत्र छुटे ॥
कि काकसत्र तुटे ॥
कि मेघासत्र बरखे ॥
कि सूक्रासत्रु करखे ॥२८०॥
कि सावंत्र सजे ॥
कि ब्रयोमासत्र गजे ॥
कि जछासत्र छुटे ॥
कि किंन्रासत्र मुके ॥२८१॥
कि गंध्राबसात्र बाहै ॥
कि नर असत्र गाहै ॥
कि चंचाल नैणं ॥
कि मैमत बैणं ॥२८२॥
कि आहाड़ि डिगै ॥
कि आरकत भिगै ॥
कि ससत्रासत्र बजे ॥
कि सावंत गजे ॥२८३॥
कि आवरत हूरं ॥
कि सावरत पूरं ॥
फिरी ऐण गैणं ॥

कि आरकत नैणं ॥२८४॥
कि पावंग पुले ॥
कि सरबासत्र खुले ॥
कि हंकारि बाहै ॥
अधं अधि लाहै ॥२८५॥
छुटी ईस तारी ॥
कि संन्यास धारी ॥
कि गंधरब गजे ॥
कि बाद्दित बजे ॥२८६॥
कि पापासत्र बरखे ॥
कि धरमासत्र करखे ॥
अरोगासत्र छुटे ॥
सु भोगासत्र सुटे ॥२८७॥
बिबादासत्र सजे ॥
बिरोधासत्र बजे ॥
कुमंत्रासत्र छुटे ॥
समुंत्रासत्र टुटे ॥२८८॥
कि कामासत्र छुटे ॥
करोधासत्र तुटे ॥
बिरोधासत्र बरखे ॥
बिमोहासत्र करखे ॥२८९॥
चरित्रासत्र छुटे ॥
कि मोहासत्र जुटे ॥
कि त्रासासत्र बरखे ॥
कि क्रोधासत्र करखे ॥२९०॥

चौपई छंद ॥

इह बिधि ससत्र असत्र बहु छोरे ॥
न्रिप बिबेक के भट झकझोरे ॥
आपन चला निसरि तब राजा ॥
भाति भाति के बाजन बाजा ॥२९१॥
दुहु दिसि पड़ा निसानै घाता ॥
महा सबद धुनि उठी अघाता ॥
बरखा बाण गगन गयो छाई ॥
भूति पिसाच रहे उरझाई ॥२९२॥
झिमि झिमि सारु गगन ते बरखा ॥
भल भल सुभट पखरीआ परखा ॥
सिमटे सुभट अनंत अपारा ॥
परि गई अंध धुंध बिकरारा ॥२९३॥
न्रिप बिबेक तब रोसहि भरा ॥
सभ सैना कहि आइसु करा ॥
उमडे सूर सु फउज बनाई ॥
नाम तास कबि देत बताई ॥२९४॥
सिरी पाखरी टोप सवारे ॥
चिलतह राग संजोवा डारे ॥
चले जुध के काज सु बीरा ॥
सूखत भयो नदन को नीरा ॥२९५॥

दोहरा ॥

दुहू दिसन मारू बज्यो पर्यो निसाणे घाउ ॥
उमडि दुबहीआ उठि चले भयो भिरन को चाउ ॥२९६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

रणं सुधि सावंत भावंत गाजे ॥
तहा तूर भेरी महा संख बाजे ॥
भयो उच कोलाहलं बीर खेतं ॥
बहे ससत्र असत्रं नचे भूत प्रेतं ॥२९७॥
फरी धोप पाइक सु खंडे बिसेखं ॥
तुरे तुंद ताजी भए भूत भेखं ॥
रणं राग बजे ति गजे भटाणं ॥
तुरी तत नचे पलटे भटाणं ॥२९८॥
हिणंकेत हैवार गैवार गाजी ॥
मटके महाबीर सुटे सिराजी ॥
कड़ाकुट ससत्रासत्र बजे अपारं ॥
नचे सुध सिधं उठी ससत्र झारं ॥२९९॥
किलंकीत काली कमछ्या करालं ॥
बक्यो बीर बैतालं बामंत ज्वालं ॥
चवी चावडी चाव चउसठि बालं ॥
करै स्रोणहारं बमै जोग ज्वालं ॥३००॥
छुरी छिप्र छंडैति मंडै रणारं ॥
तमकैत ताजी भभकै भटाणं ॥
सुभे संदली बोज बाजी अपारं ॥
बहे बोर पिंगी समुंदे कंधारं ॥३०१॥
तुरे तुंद ताजी उठे कछ अछं ॥
कछे आरबी पब मानो सपछं ॥
उठी धूरि पूरं छुही ऐण गैणं ॥
भयो अंध धुंधं परी जानु रैणं ॥३०२॥
इतै दत धायो अनादत उतं ॥
रही धूरि पूरं परी कटि लुथं ॥
अनावरत बीरं महाबरत धारी ॥
चड़यो चउपि कै तुंद नचे ततारी ॥३०३॥
खुरं खेह उठी छयो रथ भानं ॥
दिसा बेदिसा भू न दिखया समानं ॥
छुटे ससत्र असत्र परी भीर भारी ॥
छुटे तीर करवार काती कटारी ॥३०४॥
गहे बाण दतं अनादत मार्यो ॥
भजी सरब सैणं न नैणं निहार्यो ॥
जित्रयो बीर एकै अनेकं परानो ॥
पुराने पलासी हने पौन मानो ॥३०५॥
रणं रोस कै लोभ बाजी मटक्रयो ॥
भज्यो बीर बाच्यो अर्रयो सु झटक्यो ॥
फिर्यो देख बीरं अनालोभ धायो ॥
छुटे बाण ऐसे सबै ब्योम छायो ॥३०६॥
दसं बाण लै बीर धीरं प्रहारे ॥
सरं सठि लै संजमै ताकि मारे ॥
नवं बाण सो नेम को अंग छेद्यो ॥
बली बीसि बाणानि बिग्रयान बेध्रयो ॥३०७॥
पचिस बाण पावित्रता को प्रहारे ॥
असीह बाण अरचाहि कै अंगि झारे ॥

पचासी सरं पूरि पूजाहि छेद्यो ॥
बडो लसटका लै सलजाहि भेद्यो ॥३०८॥
बिआसी बली बाण बिद्रयाहि मारे ॥
तपस्रयाहि पै ताकि तेतीस डारे ॥
कई बाण सों कीरतनं अंग छेद्यो ॥
अलोभादि जोधा भली भाति भेद्यो ॥३०९॥
न्रिहंकार को बान असीन छेद्यो ॥
भले परम तत्वादि को बछ भेद्यो ॥
कई बाण करुणाहि के अंगि झारे ॥
सरं सउक सिछिआ के अंगि मारे ॥३१०॥

दोहरा ॥

दान आनि पुजियो तबै ग्यान बान लै हाथि ॥
जुआन जानि मार्यो तिसै ध्यान मंत्र के साथ ॥३११॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

रणं उछल्यो दान जोधा महानं ॥
सभै ससत्र बेता अति असत्रं निधानं ॥
दसं बाण सो लोभ को बछि मार्यो ॥
सरं सपत सो क्रोध को देहु तार्यो ॥३१२॥
नवं बाण बेध्रयो अनंन्रयास बीरं ॥
त्रियो तीर भेद्यो अनाबरत धीरं ॥
भयो भेदि क्रोधं सतसंगि मारे ॥
भई धीर धरमं ब्रहम गिआन तारे ॥३१३॥
कई बाण कुलहत्रता को चलाए ॥
कई बाण लै बैर के बीर घाए ॥
किते घाइ आलस कै अंगि लागे ॥
सबै नरक ते आदि लै बीर भागे ॥३१४॥
इकै बाण निसील को अंग छेद्यो ॥
दुती कुसतता को भलै सूत भेद्यो ॥
गुमानादि के चार बाजी संघारे ॥
अनरथादि के बीर बाके निवारे ॥३१५॥
पिपासा छुधा आलसादि पराने ॥
भज्यो लोभ क्रोधी हठी देव जाने ॥
तप्यो नेम नामा अनेमं प्रणासी ॥
धरे जोग असत्रं अलोभी उदासी ॥३१६॥
हत्रयो कापटं खापटं सोक पालं ॥
हन्यो रोह मोहं सकामं करालं ॥
महा क्रुध कै क्रोध को बान मार्यो ॥
खिस्रयो ब्रहम दोखादि सरबं प्रहार्यो ॥३१७॥

रूआल छंद ॥

सु द्रोह अउ हंकार को हजार बान सो हन्यो ॥
दरिद्र असंक मोह को न चित मै कछू गन्यो ॥
असोच अउ कुमंत्रता अनेक बान सो हत्रयो ॥
कलंक कौ निसंक ह्वै सहंस्र साइकं छत्रयो ॥३१८॥
क्रितघनता बिस्वासघात मित्रघात मार्यो ॥
सु राज दोख ब्रहम दोख ब्रहम असत्र झार्यो ॥
उचाट मारणादि बसिकरण को सरं हन्यो ॥

बिखाध को बिखाध कै न ब्रिध ताहि को गन्यो ॥३१९॥
भजे रथी हई गजी सु पति त्रास धारि कै ॥
भजे रथी महारथी सु लाज को बिसारि कै ॥
असंभ जुध जो भयो सु कैस के बताईऐ ॥
सहंस बाक जो रटै न तत्र पार पाईऐ ॥३२०॥
कलंक बिभ्रमादि अउ क्रितघन ताहि कौ हन्यो ॥
बिखाद बिपदादि को कछू न चित मै गन्यो ॥
सु मित्रदोख राजदोख ईरखाहि मारि कै ॥
उचाट अउ बिखाध को दयो रणं निकारि कै ॥३२१॥
गिलानि कोप मान अप्रमान बान सो हन्यो ॥
अनरथ को समरथ कै हजार बान सो झन्रयो ॥
कुचार को हजार बान चार सो प्रहार्यो ॥
कुकसट अउ कुक्रिआ कौ भजाइ त्रासु डार्यो ॥३२२॥

छपय छंद ॥

अतप बीर कउ ताकि बान सतरि मारे तप ॥
नवे साइकनि सील सहस सर हनै अजप जप ॥
बीस बाण कुमतहि तीस कुकरमहि भेद्यो ॥
दस साइक दारिद्र काम कई बाणनि छेद्यो ॥
बहु बिधि बिरोध को बध कीयो अबिबेकहि सर संधि रणि ॥
रणि रोह क्रोह करवार गहि इम संजम बुल्यो बयण ॥३२३॥
अरुण पछमहि उग्वै बरुणु उतर दिस तकै ॥
मेरु पंख करि उडै सरब साइर जल सुकै ॥
कोल दाड़ कड़मुड़ै सिमटि फनीअर फण फटै ॥
उलटि जान्रहवी बहै सत हरीचंदे हटै ॥
संसार उलट पुलट ह्वै धसकि धउल धरणी फटै ॥
सुनि न्रिप अबिबेक सु बिबेक भटि तदपि न लटि संजम हटै ॥३२४॥
तेरे जोरि मै गुंगा कहता हो ॥
तेरा सदका तेरी सरणि ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

कुप्रयो संजमं परम जोधा जुझारं ॥
बडो गरबधारी बडो निरबिकारं ॥
अनंतासत्र लै कै अनरथै प्रहार्यो ॥
अनादत के अंग को छेद डार्यो ॥३२५॥
तेरे जोरि कहत हौ ॥
इसो जुधु बीत्यो कहा लौ सुनाऊ ॥
रटो सहंस जिहवा न तउ अंत पाऊ ॥
दसं लछ जुग्गयं सु बरखं अनंतं ॥
भयो बीरखेतं कथै कउण खंतं ॥३२६॥
तेरे जोर संग कहता ॥
भई अंध धुंधं मच्यो बीर खेतं ॥
नची जुगणी चारु चउसठ प्रेतं ॥
नची कालका स्री कमख्या करालं ॥
डकं डाकणी जोध जागंत ज्वालं ॥३२७॥
तेरा जोरु ॥
मच्यो जोर जुधं हट्यो नाहि कोऊ ॥
बडे छत्रधारी पती छत्र दोऊ ॥
खप्यो सरब लोकं अलोकं अपारं ॥

मिटे जुध ते ए न जोधा जुझारं ॥३२८॥
तेरा जोर ॥

दोहरा ॥

चटपट सुभट बिकट कटे झटपट भई अभंग ॥
लटि भट हटे न रन घट्रयो अटपट मिट्रयो न जंग ॥३२९॥
तेरे जोरि ॥

चौपई ॥

बीस लछ जुग ऐतु प्रमाना ॥
लरे दोऊ भई किस न हाना ॥
तब राजा जीअ मै अकुलायो ॥
नाक चढे मछिंद्र पै आयो ॥३३०॥
कहि मुनि बरि सभ मोहि बिचारा ॥
ए दोऊ बीर बडे बरिआरा ॥
इन का बिरुध निवरत न भया ॥
इनो छडावत सभ जगु गया ॥३३१॥
इनै जुझावत सब कोई जूझा ॥
इन का अंत न काहू सूझा ॥
ए है आदि हठी बरिआरा ॥
महारथी अउ महा भयारा ॥३३२॥
बचनु मछिंद्र सुनत चुप रहा ॥
धरा नाथ सबनन तन कहा ॥
चक्रित चित चटपट ह्वै दिखसा ॥
चरपट नाथ तदिन ते निकसा ॥३३३॥
इति चरपट नाथ प्रगटणो नामह ॥

चौपई ॥

सुनि राजा तुहि कहै बिबेका ॥
इन कह द्वै जानहु जिनि एका ॥
ए अबिकार पुरख अवतारी ॥
बडे धनुरधर बडे जुझारी ॥३३४॥
आदि पुरख जब आप संभारा ॥
आप रूप मै आप निहारा ॥
ओअंकार कह इकदा कहा ॥
भूमि अकास सकल बनि रहा ॥३३५॥
दाहन दिस ते सति उपजावा ॥
बाम परस ते झूठ बनावा ॥
उपजत ही उठि जुझे जुझारा ॥
तब ते करत जगत मै रारा ॥३३६॥
सहंस बरख जो आयु बढावै ॥
रसना सहस सदा लौ पावै ॥
सहंस जुगन लौ करे बिचारा ॥
तदपि न पावत पार तुमारा ॥३३७॥
तेरे जोरि गुंगा कहता ॥
बिआस परासर अउ रिखि घने ॥
सिंगी रिखि बकदालभ भने ॥
सहंस मुखन का ब्रहमा देखा ॥
तऊ न तुमरा अंतु बिसेखा ॥३३८॥

तेरा जोरु ॥

दोहरा ॥

सिंधु सुभट सावंत सभ मुनि गंधरब महंत ॥
कोटि कलप कलपात भे लह्यो न तेरो अंत ॥३३९ ॥
तेरे जोर सो कहो ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सुनो राज सारदूल उचरो प्रबोधं ॥
सुनो चित दै कै न कीजै बिरोधं ॥
सु स्री आद पुरखं अनादं सरूपं ॥
अजेअं अभेअं अदगं अरूपं ॥३४० ॥
अनामं अधामं अनीलं अनादं ॥
अजैअं अभैअं अवै निर बिखादं ॥
अनंतं महंतं प्रिथीसं पुराणं ॥
सु भब्रयं भविख्यं अवैयं भवाणं ॥३४१ ॥
जिते सरब जोगी जटी जंत्र धारी ॥
जलास्री जवी जामनी जगकारी ॥
जती जोग जुधी जकी ज्वाल माली ॥
प्रमाथी परी परबती छत्रपाली ॥३४२ ॥
तेरा जोरु ॥
सबै झूठु मानो जिते जंत्र मंत्रं ॥
सबै फोकटं धरम है भरम तंत्रं ॥
बिना एक आसं निरासं सबै है ॥
बिना एक नाम न कामं कबै है ॥३४३ ॥
करे मंत्र जंत्रं जु पै सिध होई ॥
दरं द्वार भिछ्या भ्रमै नाहि कोई ॥
धरे एक आसा निरासोर मानै ॥
बिना एक करमं सबै भरम जानै ॥३४४ ॥
सुन्यो जोगि बैनं नरेसं निधानं ॥
भ्रमियो भीत चितं कुप्रयो जेम पानं ॥
तजी सरब आसं निरासं चितानं ॥
पुनिर उचरे बाच बंधी बिधानं ॥३४५ ॥
तेरा जोरु ॥

रसावल छंद ॥

सुनो मोन राजं ॥
सदा सिध साजं ॥
कछ देह मतं ॥
कहो तोहि बतं ॥३४६ ॥
दोऊ जोर जुधं ॥
हठी परम क्रुधं ॥
सदा जाप करता ॥
सबै सिध हरता ॥३४७ ॥
अरीले अरारे ॥
हठील जुझारे ॥
कटीले करूरं ॥
करै सत्रु चूरं ॥३४८ ॥
तेरा जोरु ॥

चौपई ॥

जो इन जीति सकौ नहि भाई ॥
तउ मै जोर चिताहि जराई ॥
मै इन कहि मुनि जीति न साका ॥
अब मुर बल पौरख सब थाका ॥३४९॥
ऐस भाति मन बीच बिचारा ॥
प्रगट सभा सब सुनत उचारा ॥
मै बड भूप बडो बरिआरू ॥
मै जीत्यो इह सभ संसारू ॥३५०॥
जिनि मो को इह बात बताई ॥
तिनि मुहि जानु ठगउरी लाई ॥
ए द्वै बीर बडे बरिआरा ॥
इन जीते जीतो संसारा ॥३५१॥
अब मो ते एई जिनि जाई ॥
कहि मुनि मोहि कथा समझाई ॥
अब मै देखि बनावौ चिखा ॥
पैठौ बीच अगनि की सिखा ॥३५२॥
चिखा बनाइ सनानहि करा ॥
सभ तनि बसत्र तिलोना धरा ॥
बहु बिधि लोग हटकि करि रहा ॥
चटपट करि चरनन भी गहा ॥३५३॥
हीर चीर दै बिधवत दाना ॥
मधि कटास करा असथाना ॥
भाति अनक तन ज्वाल जराई ॥
जरत न भई ज्वाल सीअराई ॥३५४॥

तोमर छंद ॥

करि कोप पारस राइ ॥
करि आपि अगनि जराइ ॥
सो भई सीतल ज्वाल ॥
अति काल रूप कराल ॥३५५॥
तत जोग अगनि निकारि ॥
अति ज्वलत रूप अपारि ॥
तब कीअस आपन दाह ॥
पुरि लखत साहन साहि ॥३५६॥
तब जरी अगनि बिसेख ॥
त्रिण कासट घिरत असेख ॥
तब जर्यो ता महि राइ ॥
भए भसम अदभुत काइ ॥३५७॥
कई द्योस बरख प्रमान ॥
सल जरा जोर महान ॥
भई भूत भसमी देह ॥
धन धाम छाडयो नेह ॥३५८॥
सबद ॥

SECTION 16: KHALSA MAHIMA

Glorification of the Khalsa

ੴसतिगुरप्रसादि ॥

रामकली पातसाही १० ॥
रे मन ऐसो कर संनिआसा ॥
बन से सदन सबै कर समझहु मन ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥
जत की जटा जोग को मंजनु नेम के नखन बढाओ ॥
गिआन गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ ॥१॥
अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ॥
सील संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥२॥
काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन सिउ ल्यावै ॥
तब ही आतम तत को दरसे परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातिसाही १० ॥

रे मन इह बिधि जोगु कमाओ ॥
सिंङी साचु अकपट कंठला धिआन बिभूत चड़ाओ ॥१॥ रहाउ ॥
ताती गहु आतम बसि कर की भिच्छा नाम अधारं ॥
बाजे परम तार ततु हरि को उपजै राग रसारं ॥१॥
उघटै तान तरंग रंगि अति गिआन गीत बंधानं ॥
चकि चकि रहे देव दानव मुनि छकि छकि ब्योम बिवानं ॥२॥
आतम उपदेस भेसु संजम को जाप सु अजपा जापै ॥
सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं ब्यापै ॥३॥२॥

रामकली पातिसाही १० ॥

प्रानी परम पुरख पगि लागो ॥
सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वै जागो ॥१॥ रहाउ ॥
औरन कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो ॥
सिंचत कहा परे बिखियन कह कबहु बिखै रस त्यागो ॥१॥
केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥
संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥२॥
जा ते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥
जौ सुख चाहो सदा सभन कौ तौ हरि के रसि पागो ॥३॥३॥

रागु सोरठि पातिसाही १० ॥

प्रभ जू तो कह लाज हमारी ॥
नील कंठ नरहरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥
परम पुरख परमेसर सुआमी पावन पउन अहारी ॥
माधव महा जोति मधु मरदन मान मुकंद मुरारी ॥१॥
निरबिकार निरजुर निंद्रा बिनु निरबिख नरक निवारी ॥
क्रिपा सिंध काल त्रै दरसी कुक्रित प्रनासनकारी ॥२॥
धनुरपानि ध्रितमान धराधर अनबिकार असिधारी ॥
हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥३॥१॥४॥

रागु कलिआण पातिसाही १० ॥

बिन करतार न किरतम मानो ॥
आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ॥१॥ रहाउ ॥
कहा भयो जो आन जगत मै दसक असुर हरि घाए ॥
अधिक प्रपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहमु कहाए ॥१॥
भंजन गढ़न समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ॥
ता ते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ॥२॥
कैसे तोहि तारिहै सुनि जड़ आप डुबियो भव सागर ॥
छुटिहो काल फास ते तब ही गहो सरनि जगतागर ॥३॥१॥५॥

खिआल पातिसाही १० ॥

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ॥
तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढणु नाग निवासां दे रहणा ॥
सूल सुराही खंजरु पियाला बिंग कसाईयां दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सथर चंगा भठ खेड़िआं दा रहणा ॥१॥१॥६॥

तिलंग काफी पातिसाही १० ॥

केवल कालई करतार ॥
आदि अंत अनंत मूरति गढ़न भंजनहार ॥१॥ रहाउ ॥
निंद उसतत जउन के सम सत्र मित्र न कोइ ॥
कउन बाट परी तिसै पथ सारथी रथ होइ ॥१॥
तात मात न जात जाकर पुत्र पौत्र मुकंद ॥
कउन काज कहाहिंगे ते आन देविक नंद ॥२॥
देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसार ॥
कउन उपमा तौन कौ मुख लेत नामु मुरार ॥३॥१॥७॥

राग बिलावल पातिसाही १० ॥

सो किम मानस रूप कहाए ॥
सिध समाधि साध कर हारे क्योहूं न देखन पाए ॥१॥ रहाउ ॥
नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ॥
बेद पुरान हारि हठ छाडिओ तदपि धिआन न आए ॥१॥
दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतह नेत कहाए ॥
सूछम ते सूछम कर चीने ब्रिधन ब्रिध बताए ॥२॥
भूम अकास पताल सभै सजि एक अनेक सदाए ॥
सो नर काल फास ते बाचे जो हरि सरणि सिधाए ॥३॥१॥८॥

राग देवगंधारी पातिसाही १० ॥

इक बिन दूसर सो न चिनार ॥
भंजन गड़न समरथ सदा प्रभ जानत है करतार ॥१॥ रहाउ ॥
कहा भइओ जो अत हित चित कर बहु बिध सिला पुजाई ॥
प्रान थकिओ पाहन कह परसत कछु करि सिध न आई ॥१॥
अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खैहै ॥
ता मैं कहां सिध है रे जड़ तोहि कछू बर दैहै ॥२॥
जौ जीय होत तौ देत कछु तुहि कर मन बच करम बिचार ॥

केवल एक सरण सुआमी बिनु यौ नहि कतहि उधार ॥३॥१॥९॥

राग देवगंधारी पातिसाही १० ॥

बिनु हरि नाम न बाचन पैहै ॥
चौदहि लोक जाहि बस कीने ता ते कहां पलैहै ॥१॥ रहाउ ॥
राम रहीम उबार न सकहै जा कर नाम रटै है ॥
ब्रहमा बिसन रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबै है ॥१॥
बेद पुरान कुरान सबै मत जाकह नेत कहै है ॥
इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु धिआवत धिआन न ऐहै ॥२॥
जाकर रूप रंग नहि जनियत सो किम स्याम कहै है ॥
छुटहो काल जाल ते तब ही तांहि चरन लपटैहै ॥३॥१॥१०॥

SECTION 17: SHASTAR NAM MALA

Garland of Weapon Names — Detailed compendium of weapons

ੴवाहिगुरू जी की फतहि ॥

सवये ॥

स्री मुखवाक पातसाही १० ॥

सवैया ॥

जागत जोति जपै निस बासुर एकु बिना मनि नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़्ही मठ भूल न मानै ॥
तीरथ दान दइआ तप संजम एकु बिना नहि एक पछानै ॥
पूरन जोति जगै घट मै तब खालस ताहि न खालस जानै ॥१॥
सति सदैव सरूप सत ब्रत आदि अनादि अगाध अजै है ॥
दान दया दम संजम नेम जत ब्रत सील सुब्रित अबै है ॥
आदि अनील अनादि अनाहद आपि अद्वेख अभेख अभै है ॥
रूप अरूप अरेख जरारदन दीन दयाल क्रिपाल भए है ॥२॥
आदि अद्वैख अवेख महा प्रभ सति सरूप सु जोति प्रकासी ॥
पूर रहयो सभ ही घट कै पट तत समाधि सुभाव प्रनासी ॥
आदि जुगादि जगादि तुही प्रभ फैल रहयो सभ अंतर बासी ॥
दीन दयाल क्रिपाल क्रिपा कर आदि अजोन अजै अबिनासी ॥३॥
आदि अभेख अछेद सदा प्रभ बेद कतेबनि भेदु न पायो ॥
दीन दयाल क्रिपाल क्रिपानिधि सति सदैव सभै घट छायो ॥
सेस सुरेस गणेस महेसुर गाहि फिरै स्रुति थाह ना आयो ॥
रे मन मूड़ि अगूड़ इसो प्रभ तै किहि काजि कहो बिसरायो ॥४॥
अचुत आदि अनील अनाहद सत सरूप सदैव बखाने ॥
आदि अजोनि अजाइ जहा बिनु परम पुनीत परंपर माने ॥
सिध सयंभू प्रसिध सबै जग एक ही ठौर अनेक बखाने ॥
रे मन रंक कलंक बिना हरि तै किह कारण ते न पहिचाने ॥५॥
अछर आदि अनील अनाहद सत सदैव तुही करतारा ॥
जीव जिते जल मै थल मै सब कै सद पेट कौ पोखन हारा ॥
बेद पुरान कुरान दुहूं मिलि भाति अनेक बिचार बिचारा ॥
और जहान निदान कछू नहि ए सुबहान तुही सिरदारा ॥६॥
आदि अगाधि अछेद अभेद अलेख अजेअ अनाहद जाना ॥
भूत भविख भवान तुही सबहूं सब ठौरन मो मन माना ॥
सदेव अदेव मणीधर नारद सारद सति सदैव पछाना ॥
दीन दयाल क्रिपानिधिको कछु भेद पुरान कुरान न जाना ॥७॥
सति सदैव सरूप सदाब्रत बेद कतेब तुही उपजायो ॥
देव अदेवन देव महीधर भूत भवान वही ठहरायो ॥
आदि जुगादि अनील अनाहद लोक अलोक बिलोक न पायो ॥
रे मन मूड़ अगूड़ि इसो प्रभ तोहि कहो किहि आन सुनायो ॥८॥
देव अदेव महीधर नागन सिध प्रसिध बडो तपु कीनो ॥
बेद पुरान कुरान सबै गुन गाइ थके पै तो जाइ न चीनो ॥
भूमि अकास पतार दिसा बिदिसा जिहि सो सब के चित चीनो ॥
पूर रही महि मो महिमा मन मै तिनि आनि मुझै कहि दीनो ॥९॥
बेद कतेब न भेद लहयो तिहि सिध समाधि सबै करि हारे ॥
सिंम्रित सासत्र बेद सबै बहु भाति पुरान बीचार बीचारे ॥
आदि अनादि अगाधि कथा ध्रूअ से प्रहिलादि अजामल तारे ॥
नामु उचार तरी गनिका सोई नामु अधार बीचार हमारे ॥१०॥
आदि अनादि अगाधि सदा प्रभ सिध स्वरूप सबो पहिचानयो ॥
गंध्रब जछ महीधर नागन भूमि अकास चहूं चक जानयो ॥
लोक अलोक दिसा बिदिसा अरु देव अदेव दुहूं प्रभ मानयो ॥
चित अगयान सु जान सुयंभव कौन की कानि निधान भुलानयो ॥११॥

काहूं लै ठोकि बधे उरि ठाकुर काहूं महेस को एस बखानयो ॥
काहू कहियो हरि मंदर मै हरि काहू मसीत कै बीच प्रमानयो ॥
काहूं ने राम कहयो क्रिसना कहु काहू मनै अवतारन मानयो ॥
फोकट धरम बिसार सबै करतार ही कउ करता जीअ जानयो ॥१२॥
जौ कहो राम अजोनि अजै अति काहे कौ कौसलि कुख जयो जू ॥
काल हूं काल कहो जिह कौ किहि कारण काल ते दीन भयो जू ॥
सति सरूप बिबैर कहाइ सु कयों पथ को रथ हाकि धयो जू ॥
ताही को मानि प्रभू करि कै जिह को कोऊ भेदु न लैन लयो जू ॥१३॥
क्यो कहो क्रिसन क्रिपानिधि है किह काज ते बधक बाणु लगायो ॥
अउर कुलीन उधारत जो किह ते अपनो कुलि नासु करायो ॥
आदि अजोनि कहाइ कहो किम देवकि के जठरंतर आयो ॥
तात न मात कहै जिह को तिह कयो बसुदेवहि बापु कहायो ॥१४॥
काहे कौ एस महेसहि भाखत काहि दिजेस को एस बखानयो ॥
है न रघ्वेस जद्वेस रमापति तै जिन को बिसुनाथ पछानयो ॥
एक को छाडि अनेक भजे सुकदेव परासर बयास झुठानयो ॥
फोकट धरम सजे सब ही हम एक ही कौ बिधि नेक प्रमानयो ॥१५॥
कोऊ दिजेस कु मानत है अरु कोऊ महेस को एस बतै है ॥
कोऊ कहै बिसनो बिसुनाइक जाहि भजे अघ ओघ कटै है ॥
बार हजार बिचार अरे जड़ अंत समे सब ही तजि जै है ॥
ता ही को धयान प्रमानि हीए जोऊ के अब है अर आगै ऊ ह्वै है ॥१६॥
कोटक इंद्र करे जिह के कई कोटि उपिंद्र बनाइ खपायो ॥
दानव देव फनिंद्र धराधर पछ पसू नहि जाति गनायो ॥
आज लगे तपु साधत है सिव ऊ ब्रहमा कछु पार न पायो ॥
बेद कतेब न भेद लखयो जिह सोऊ गुरू गुर मोहि बतायो ॥१७॥
धयान लगाइ ठगिओ सब लोगन सीस जटा न हाथि बढाए ॥
लाइ बिभूत फिरयो मुख ऊपरि देव अदेव सबै डहकाए ॥
लोभ के लागे फिरयो घर ही घरि जोग के नयास सबै बिसराए ॥
लाज गई कछु काजु सरयो नहि प्रेम बिना प्रभ पानि न आए ॥१८॥
काहे कउ डिंभ करै मन मूरख डिंभ करे अपुनी पति ख्वै है ॥
काहे कउ लोग ठगे ठग लोगनि लोग गयो परलोग गवै है ॥
दीन दयाल की ठौर जहा तिहि ठौर बिखै तुहि ठौर न ह्वै है ॥
चेत रे चेत अचेत महा जड़ भेख के कीने अलेख न पै है ॥१९॥
काहे कउ पूजत पाहन कउ कछु पाहन मै परमेसर नाही ॥
ताही को पूज प्रभू करि के जिह पूजत ही अघ ओघ मिटाही ॥
आधि बिआधि के बंधन जेतक नाम के लेत सबै छुटि जाही ॥
ताही को धयानु प्रमान सदा इन फोकट धरम करे फलु नाही ॥२०॥
फोकट धरम भयो फल हीन जु पूज सिला जुगि कोटि गवाई ॥
सिधि कहा सिल के परसै बलु ब्रिध घटी नव निधि न पाई ॥
आज ही आजु समो जु बितयो नहि काजि सरयो कछु लाजि न आई ॥
स्री भगवंत भजयो न अरे जड़ ऐसे ही ऐसे सु बैस गवाई ॥२१॥
जौ जुग ते कर है तपसा कुछ तोहि प्रसंनु न पाहन कै है ॥
हाथि उठाइ भली बिधि सो जड़ तोहि कछू बरदानु न दै है ॥
कउन भरोसो भया इह को कहु भीर परी नहि आनि बचै है ॥
जानु रे जानु अजान हठी इह फोकट धरम सु भरम गवै है ॥२२॥
जाल बधे सब ही म्रित के कोऊ राम रसूल न बाचन पाए ॥
दानव देव फनिंद धराधर भूत भविख उपाइ मिटाए ॥
अंत मरे पछुताइ प्रिथी परि जे जग मै अवतार कहाए ॥
रे मन लैल इकेल ही काल के लागत काहि न पाइन धाए ॥२३॥
काल ही पाइ भइओ ब्रहमा गहि दंड कमंडल भूमि भ्रमानयो ॥
काल ही पाइ सदा सिव जू सभ देस बदेस भइआ हम जानयो ॥

काल ही पाइ भयो मिट गयो जग या ही ते ताहि सभो पहिचानयो ॥
बेद कतेब के भेद सबै तजि केवल काल क्रिपानिधि मानयो ॥२४॥
काल गयो इन कामन सिउ जड़ काल क्रिपाल हीऐ न चितारयो ॥
लाज को छाडि न्रिलाज अरे तजि काजि अकाज के काज सवारयो ॥
बाज बने गजराज बडे खर को चड़िबो चित बीच बिचारयो ॥
स्री भगवंत भजयो न अरे जड़ लाज ही लाज तै काजु बिगारयो ॥२५॥
बेद कतेब पड़े बहुते दिन भेद कछू तिन को नहि पायो ॥
पूजत ठौर अनेक फिरयो पर एक कबै हीय मै न बसायो ॥
पाहन को असथालय को सिर नयाइ फिरयो कछु हाथि न आयो ॥
रे मन मूड़ अगूड़ प्रभू तजि आपन हूड़ कहा उरझायो ॥२६॥
जो जुगियान के जाइ उठि आस्रम गोरख को तिह जाप जपावै ॥
जाइ संनयासन के तिह कौ कहि दत ही सति है मंत्र द्रिड़ावै ॥
जो कोऊ जाइ तुरकन मै महिदीन के दीन तिसे गहि लयावै ॥
आपहि बीच गनै करता करतार को भेदु न कोऊ बतावै ॥२७॥
जो जुगीआन के जाइ कहै सब जोगन को ग्रिह माल उठै दै ॥
जो परो भाजि संन्यासन कै कहै दत के नाम पै धाम लुटै दै ॥
जो करि कोऊ मसंदन सौ कहै सरब दरब लै मोहि अबै दै ॥
लेउ ही लेउ कहै सब को नर कोऊ न ब्रहम बताइ हमै दै ॥२८॥
जो करि सेव मसंदन की कहै आनि प्रसादि सबै मोहि दीजै ॥
जो कछु माल तवालय सो अब ही उठि भेट हमारी ही कीजै ॥
मेरो ई धयान धरो निसि बासुर भूल कै अउर को नामु न लीजै ॥
दीने को नामु सुनै भजि रातहि लीने बिना नहि नैकु प्रसीजै ॥२९॥
आखन भीतरि तेल कौ डार सु लोगन नीरु बहाइ दिखावै ॥
जो धनवानु लखै निज सेवक ताही परोसि प्रसादि जिमावै ॥
जो धन हीन लखै तिह देत न मागन जात मुखो न दिखावै ॥
लूटत है पसु लोगन को कबहूं न प्रमेसुर के गुन गावै ॥३०॥
आंखन मीचि रहै बक की जिम लोगन एक प्रपंच दिखायो ॥
निआत फिरयो सिरु बधक जयो धयान बिलोक बिड़ाल लजायो ॥
लागि फिरयो धन आस जितै तित लोग गयो परलोग गवायो ॥
स्री भगवंत भजयो न अरे जड़ धाम के काम कहा उरझायो ॥३१॥
फोकट करम द्रिड़ात कहा इन लोगन को कोई काम न ऐहै ॥
भाजत का धन हेत अरे जम किंकर ते नह भाजन पैहै ॥
पुत्र कलित्र न मित्र सबै ऊहा सिख सखा कोऊ साख न दैहै ॥
चेत रे चेत अचेत महा पसु अंत की बार इकेलो ई जैहै ॥३२॥
तो तन तयागत ही सुन रे जड़ प्रेत बखान त्रिआ भजि जैहै ॥
पुत्र कलत्र सु मित्र सखा इह बेग निकारहु आइसु दैहै ॥
भउन भंडार धरा गड़ जेतक छाडत प्रान बिगान कहैहै ॥
चेत रे चेत अचेत महा पसु अंत की बारि इकेलो ई जैहै ॥३३॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्वैया ॥

पातसाही १० ॥

जो किछु लेखु लिखिओ बिधना सोई पायतु मिस्र जू सोक निवारो ॥

मेरो कछू अपराधु नही गयो याद ते भूल नह कोपु चितारो ॥

बागो निहाली पठै दैहो आजु भले तुम को निहचै जीअ धारो ॥

छत्री सभै भ्रित बिपन के इनहू पै कटाछ क्रिपा कै निहारो ॥१॥

जुद्ध जिते इनही के प्रसादि इनही के प्रसादि सु दान करे ॥

अघ अउघ टरै इनही के प्रसादि इनही की क्रिपा फुन धाम भरे ॥

इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई इनही की क्रिपा सभ सत्र मरे ॥

इनही की क्रिपा के सजे हम है नही मो से गरीब करोर परे ॥२॥

सेव करी इनही की भावत अउर की सेव सुहात न जीको ॥

दान दयो इनही को भलो अरु आन को दान न लागत नीको ॥

आगै फलै इनही को दयो जग मै जसु अउर दयो सभ फीको ॥

मो ग्रिह मै तन ते मन ते सिर लउ धन है सब ही इनही को ॥३॥

दोहरा ॥

चटपटाइ चित मै जरयो त्रिण जयों क्रुद्धत होइ ॥

खोज रोज के हेत लग दयो मिस्र जू रोइ ॥४॥

ससत्र नाम माला ॥

ੴवाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

अथ स्री ससत्र नाम माला पुराण लिख्यते ॥

पातिसाही १० ॥

दोहरा ॥

साग सरोही सैफ असि तीर तुपक तरवारि ॥
सत्रातकि कवचाति कर करीऐ रछ्छ हमारि ॥१॥
असि क्रिपान धाराधरी सैफ सूल जमदाढ ॥
कवचातकि सत्रात कर तेग तीर धरबाढ ॥२॥
असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर ॥
सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर ॥३॥
तीर तुही सैथी तुही तुही तबर तरवारि ॥
नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव पार ॥४॥
काल तुही काली तुही तुही तेग अरु तीर ॥
तुही निसानी जीत की आजु तुही जगबीर ॥५॥
तुही सूल सैथी तबर तू निखंग अरु बान ॥
तुही कटारी सेल सभ तुम ही करद क्रिपान ॥६॥
ससत्र असत्र तुम ही सिपर तुम ही कवच निखंग ॥
कवचातकि तुम ही बने तुम ब्यापक सरबंग ॥७॥
स्री तुही सभ कारन तुही तू बिद्या को सार ॥
तुम सभ को उपराजही तुम ही लेहु उबार ॥८॥
तुम ही दिन रजनी तुही तुम ही जीअन उपाइ ॥
कउतक हेरन के नमित तिन मौ बाद बढाइ ॥९॥
असि क्रिपान खंडो खड़ग सैफ तेग तरवारि ॥
रछ्छ करो हमरी सदा कवचातकि करवारि ॥१०॥
तुही कटारी दाड़ जम तू बिछूओ अरु बान ॥
तो पति पद जे लीजीऐ रछ्छ दास मुहि जानु ॥११॥
बाक बज्र बिछूओ तुही तुही तबर तरवारि ॥
तुही कटारी सैहथी करीऐ रछ्छ हमारि ॥१२॥
तुमी गुरज तुम ही गदा तुम ही तीर तुफंग ॥
दास जानि मोरी सदा रछ्छ करो सरबंग ॥१३॥
छुरी कलम रिपु करद भनि खंजर बुगदा नाइ ॥
अरध रिजक सभ जगत को मुहि तुम लेहु बचाइ ॥१४॥
प्रिथम उपावहु जगत तुम तुम ही पंथ बनाइ ॥
आप तुही झगरा करो तुम ही करो सहाइ ॥15॥
मछ्छ कछ्छ बाराह तुम तुम बावन अवतार ॥
नारसिंघ बऊधा तुही तुही जगत को सार ॥१६॥
तुही राम स्री क्रिसन तुम तुही बिसनु को रूप ॥
तुही प्रजा सभ जगत की तुही आप ही भूप ॥१७॥
तुही बिप्र छत्री तुही तुही रंक अरु राउ ॥
साम दाम अरु डंड तूं तुम ही भेद उपाउ ॥१८॥
सीस तुही काया तुही तै प्रानी के प्रान ॥

तै बिद्या जुग बकत्र हुइ करे बेद बख्यान ॥१९ ॥
बिसिख बान धनुखाग्र भन सर कैबर जिह नाम ॥
तीर खतंग ततारचो सदा करो मम काम ॥२० ॥
तूणीरालै सत्र अरि म्रिग अंतक ससिबान ॥
तुम बैरण प्रथमै हनो बहुरो बजै क्रिपान ॥२१ ॥
तुम पाटस पासी परस परम सिधि की खान ॥
ते जग के राजा भए दीअ तव जिह बरदान ॥२२ ॥
सीस सत्रु अरि अरियारि असि खंडो खड़ग क्रिपान ॥
सत्रु सुरेसर तुम कीयो भगत आपुनो जानि ॥२३ ॥
जमधर जमदाड़ा जबर जोधातक जिह नाइ ॥
लूट कूट लीजत तिनै जे बिनु बाधे जाइ ॥२४ ॥
बाक बज्र बिछुओ बिसिख बिरह बान सभ रूप ॥
जिन को तुम किरपा करी भए जगत के भूप ॥२५ ॥
ससत्रेसर समरात करि सिपरारि समसेर ॥
मुकत जाल जम के भए जिनै गह्यो इक बेर ॥२६ ॥
सैफ सरोही सत्रु अरि सारंगारि जिह नाम ॥
सदा हमारे चिति बसो सदा करो मम काम ॥२७ ॥

◀ *इति स्री नाम माला पुराणे स्री भगउती उसतति प्रिथम धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥1॥*

अथ स्री चक्र के नाम ॥

दोहरा ॥

कवच सबद प्रिथमै कहो अंत सबद अरि देहु ॥
सभ ही नाम क्रिपान के जान चतुर जीअ लेहु ॥२८ ॥
सत्रु सबद प्रिथमै कहो अंत दुसट पद भाखु ॥
सभै नाम जगंनाथ को सदा ह्रिदै मो राखु ॥२९ ॥
प्रिथी सबद प्रिथमै भनो पालक बहरि उचार ॥
सकल नामु स्रिसटेस के सदा ह्रिदै मो धार ॥३० ॥
सिसटि नाम पहले कहो बहुरि उचारो नाथ ॥
सकल नामु मम ईस के सदा बसो जीअ साथ ॥३१ ॥
सिंघ सबद भाखो प्रथम बाहन बहुरि उचारि ॥
सभै नाम जग मात के लीजहु सुकबि सुधारि ॥३२ ॥
रिपु खंडन मंडन जगत खल खंडन जग माहि ॥
ता के नाम उचारीऐ जिहे सुनि दुख टरि जाहि ॥३३ ॥
सभ ससत्रन के नाम कहि प्रिथम अंत पति भाखु ॥
सभ ही नाम क्रिपान के जाण ह्रिदै महि राखु ॥३४ ॥
खत्रियाकै खेलक खड़ग खग खंडो खत्रिआरि ॥
खेलातक खलकेमरी असि के नाम बिचार ॥३५ ॥
भूतातकि स्री भगवती भवहा नाम बखान ॥
सिरी भवानी भै हरन सभ को करौ कल्यान ॥३६ ॥
अड़िल ॥
भूत सबद कौ भाखि बहुरि अरि भाखीऐ ॥
सभ असि जू के नाम जान जीअ राखीऐ ॥
नाम म्रिगन सभ कहि धनुसर उचारीऐ ॥
हो सभ खंडे के नाम सति जीअ धारीऐ ॥३७ ॥

दोहरा ॥

प्रिथम नाम जम को उचरि बहुरो रदन उचारि ॥
सकल नाम जमदाड़ के लीजहु सुकबि सुधारि ॥३८॥
उदर सबद प्रिथमै कहो पुनि अरि सबद उचार ॥
नाम सभै जमदाड़ के लीजहु सुकबि बिचार ॥३९॥
म्रिग ग्रीवा सिर अरि उचरि पुनि असि सबद उचार ॥
सभै नाम स्री खड़ग के लीजो ह्रिदै बिचारि ॥४०॥
करी करातक कसट रिपु कालायुध करवारि ॥
कराचोल क्रिपान के लीजहु नाम सुधार ॥४१॥
हसति करी कर प्रिथम कहि पुनि अरि सबद सुनाइ ॥
ससत्र राज के नाम सब मोरी करहु सहाइ ॥42॥
सिरी सरोही सेरसम जा सम अउर न कोइ ॥
तेग जापु तुमहूं जपो भलो तुहारो होइ ॥४३॥
खग म्रिग जछ भुजंग गन ए पद प्रिथम उचारि ॥
फुनि अरि सबद उचारीऐ जान तिसै तरवारि ॥४४॥
हलबि जुनबी मगरबी मिसरी ऊना नाम ॥
सैफ सरोही ससत्रपति जित्यो रूम अरु साम ॥४५॥
कती यामानी हिंदवी सभ ससत्र के नाथ ॥
लए भगउती निकस है आप कलंकी हाथि ॥४६॥
प्रिथम सकति पद उचरि कै पुनि कहु सकति बिसेख ॥
नाम सैहथी के सकल निकसत जाहि अनेक ॥४७॥
प्रिथम सुभट पद उचरि कै बहुरि सबद अरि देहु ॥
नाम सैहथी के सभै समझि चतुर चित लेहु ॥४८॥
प्रिथम भाख संनाह पदु पुनि रिपु सबद उचारि ॥
नाम सैहथी के सकल चतुर चित निज धारि ॥४९॥
उचरि कुंभ प्रिथमै सबद पुनि अरि सबद कहो ॥
नाम सैहथी के सभै चित महि चतुर लहो ॥५०॥
तनु त्रान पद प्रिथम कहि पुनि अरि सबद बखान ॥
नाम सैहथी के सभै रुचिर चतुर चित जान ॥५१॥
यसटीसर को प्रिथम कहि पुनि बच कहु अरधंग ॥
नाम सैहथी के सभै उचरत जाहु निसंग ॥५२॥
साग समर कर सैहथी ससत्र ससन कुंभेस ॥
सबल सु भटहा हाथ लै जीते समर सुरेस ॥५३॥
छत्रधर म्रिगहा बिजै करि भटहा जा को नाम ॥
सकल सिध दात्री सभन अमित सिध को धाम ॥५४॥
लछमन अउर घटोतकच ए पद प्रिथम उचारि ॥
पुनि अरि भाखो सकति के निकसहि नाम अपार ॥५५॥
गड़ीआ भसुडी भैरवी भाला नेजा भाखु ॥
बरछी सैथी सकति सभ जान ह्रिदै मै राखु ॥५६॥
बिसनु नाम प्रिथमै उचरि पुनि पद ससत्र उचारि ॥
नाम सुदरसन के सभै निकसत जाहि अपार ॥५७॥
मुर पद प्रिथम उचारि कै मरदन बहुरि कहो ॥
नाम सुदरसन चक्र के चित मै चतुर लहो ॥५८॥
मधु को नाम उचारि कै हा पद बहुरि उचारि ॥
नाम सुदरसन चक्र के लीजै सुकबि सुधारि ॥५९॥
नरकासुर प्रिथमै उचरि पुनि रिपु सबद बखान ॥
नाम सुदरसन चक्र को चतुर चित मै जान ॥६०॥
दैत बकत्र को नाम कहि सूदन बहुरि उचार ॥
नाम सुदरसन चक्र को जान चित निरधार ॥६१॥
प्रिथम चंदेरी नाथ को लीजै नाम बनाइ ॥
पुनि रिपु सबद उचारीऐ चक्र नाम हुइ जाइ ॥६२॥

नरकासुर को नाम कहि मरदन बहुरि उचार ॥
नाम सुदरसन चक्र को लीजहु सुकबि सु धार ॥६३॥
किसन बिसन कहि जिसनु अनुज आयुध बहुरि उचार ॥
नाम सुदरसन चक्र के निकसत चलहि अपार ॥६४॥
बज्र अनुज प्रिथमै उचर फिरि पद ससत्र बखान ॥
नाम सुदरसन चक्र के चतुर चित मै जान ॥६५॥
प्रिथम बिरह पद उचरि कै पुनि कहु ससत्र बिसेख ॥
नाम सुदरसन चक्र के निकसत चलै असेख ॥६६॥
प्रिथमै वहै उचारीऐ रिध सिध को धाम ॥
पुनि पद ससत्र बखानीऐ जानु चक्र के नाम ॥६७॥
गिरधर प्रिथम उचारि पद आयुध बहुरि उचारि ॥
नाम सुदरसन चक्र के निकसत चलै अपार ॥६८॥
काली नथीआ प्रिथम कहि ससत्र सबद कहु अंति ॥
नाम सुदरसन चक्र के निकसत जाहि अनंत ॥६९॥
कंस केसिहा प्रथम कहि फिरि कहि ससत्र बिचारि ॥
नाम सुदरसन चक्र के लीजहु सुकबि सु धार ॥७०॥
बकी बकासुर सबद कहि फुनि बच सत्रु उचार ॥
नाम सुदरसन चक्र के निकसत चलै अपार ॥७१॥
अघ नासन अघहा उचरि पुनि बच ससत्र बखान ॥
नाम सुदरसन चक्र के सभै चतुर चिति जान ॥७२॥
स्री उपेंद्र के नाम कहि फुनि पद ससत्र बखान ॥
नाम सुदरसन चक्र के सबै समझ सुर गिआन ॥७३॥
कबियो बाच दोहरा ॥
सबै सुभट अउ सभ सुकबि यौ समझो मन माहि ॥
बिसनु चक्र के नाम मै भेद कउनहूं नाहि ॥७४॥

◀ इति स्री नाम माला पुराणे चक्र नाम दुतीय धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥2॥

अथ स्री बाण के नाम ॥

दोहरा ॥

बिसिख बाण सर धनुज भन कवचातक के नाम ॥
सदा हमारी जै करो सकल करो मम काम ॥७५॥
धनुख सबद प्रिथमै उचरि अग्रज बहुरि उचार ॥
नाम सिलीमुख के सभै लीजहु चतुर सुधार ॥७६॥
पनच सबद प्रिथमै उचरि अग्रज बहुरि उचार ॥
नाम सिलीमुख के सभै निकसत चलै अपार ॥७७॥
नाम उचारि निखंग के बासी बहुरि बखान ॥
नाम सिलीमुख के सभै लीजहु ह्रिदै पछान ॥७८॥
सभ म्रिगयन के नाम कहि हा पद बहुरि उचार ॥
नाम सभै स्री बान के जाणु ह्रिदै निरधार ॥७९॥
सकल कवच के नाम कहि भेदक बहुरि बखान ॥
नाम सकल स्री बान के निकसत चलै प्रमान ॥८०॥
नाम चरम के प्रिथम कहि छेदक बहुरि बखान ॥
नाम सबै ही बान के चतुर चित मै जानु ॥८१॥
सुभट नाम उचारि कै हा पद बहुरि सुनाइ ॥
नाम सिलीमुख के सबै लीजहु चतुर बनाइ ॥८२॥
सभ पछन के नाम कहि पर पद बहुरि बखान ॥

नाम सिलीमुख के सबै चित मै चतुरि पछान ॥८३॥
पंछी परी सपंख धर पछि अंतक पुनि भाखु ॥
नाम सिलीमुख के सभै जान ह्रिदै मै राखु ॥८४॥
सभ अकास के नाम कहि चर पद बहुरि बखान ॥
नाम सिलीमुख के सभै लीजै चतुर पछान ॥८५॥
खं अकास नभि गगन कहि चर पद बहुरि उचारु ॥
नाम सकल स्री बान के लीजहु चतुर सु धार ॥८६॥
असमान सिपिहर सु दिव गरदूं बहुरि बखानु ॥
पुनि चर सबद बखानीऐ नाम बान के जान ॥८७॥
प्रिथम नाम कहि चंद्र के धर पद बहुरो देहु ॥
पुनि चर सबद उचारीऐ नाम बान लखि लेहु ॥८८॥
गो मरीच किरनं छटा धर धर कहि मन माहि ॥
चर पद बहुरि बखानीऐ नाम बान हुइ जाहि ॥८९॥
रजनीसर दिनहा उचरि धर धर पद कहि अंति ॥
नाम सकल स्री बान के निकरत जाहि अनंत ॥९०॥
रात्रि निसा दिन घातनी चर धर सबद बखान ॥
नाम सकल स्री बान के करीअहु चतुर बखिआन ॥९१॥
ससि उपराजनि रवि हरनि चर को लै कै नाम ॥
धर कहि नाम ए बान के जपो आठहूं जाम ॥९२॥
रैन अंधपति महा निसि निसि ईसर निसि राज ॥
चंद्र बान चंद्रहि धर्यो चित्रन के बध काज ॥९३॥
सभ किरनन के नाम कहि धर पद बहुरि उचार ॥
पुनि धर कहु सभ बान के जानु नाम निरधार ॥९४॥
सभ समुंदर के नाम लै अंति सबद सुत देहु ॥
पुनि धर सबद उचारीऐ नाम बान लखि लेहु ॥९५॥
जलपति जलालै नदी पति कहि सुत पद को देहु ॥
पुनि धर सबद बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥९६॥
नीरालै सरताधिपति कहि सुत पद को देहु ॥
पुनि धर सबद बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥९७॥
सभै झखन के नाम लै बिरीआ कहि ले एक ॥
सुत धर कहु सभ नाम सर निकसत जाहि अनेक ॥९८॥
सभ जल जीवनि नाम लै आस्रै बहुरि बखान ॥
सुत धर बहुरि बखानीऐ नाम बान सभ जान ॥९९॥
धरी नगन के नाम कहि धर सुत पुनि पद देहु ॥
पुनि धर सबद बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥१००॥
बासव कहि अरि उचरीऐ धर सुत धर पुनि भाखु ॥
नाम सकल स्री बान के जान जीअ मै राखु ॥१०१॥
पुहप धनुख के नाम कहि आयुध बहुरि उचार ॥
नाम सकल स्री बान के निकसत चलै अपार ॥१०२॥
सकल मीन के नाम कहि केतुवायुध कहि अंत ॥
नाम सकल स्री बान के निकसत जाहि अनंत ॥१०३॥
पुहप आदि कहि धनुख कहि धर आयुधहि बखान ॥
नाम सकल स्री बान के निकसत जात अप्रमान ॥१०४॥
आदि भ्रमर कहि पनच कहि धर धर सबद बखान ॥
नाम सकल स्री बान के जानहु गुनन निधान ॥१०५॥
सभ भलकन के नाम कहि आदि अंति धर देहु ॥
नाम सकल स्री बान के चीन चतुर चित लेहु ॥१०६॥
सोरठा ॥
जिह धर प्रिथम बखान तिह सुत बहुरि बखानीऐ ॥
सर के नाम अपार चतुर चित मै जानीऐ ॥१०७॥

दोहरा ॥

बिस के नाम उचरि कै बिख पद बहुरि बखान ॥
नाम सकल ही बाण के लीजो चतुर पछान ॥१०८॥
बा पद प्रिथम बखानि कै पुनि नकार पद देहु ॥
नाम सकल स्री बान के जान चतुर चिति लेहु ॥१०९॥
कानी नाम बखानि कै धर पद बहुरि बखान ॥
हिरदै समझो चतुर तुम सकल नाम ए बान ॥११०॥
फोक सबद प्रिथमै उचरि धर पद बहुरौ देहु ॥
नाम सकल स्री बान के चतुर ह्रिदै लखि लेहु ॥१११॥
पसुपति प्रथम बखानि कै अस्र सबद पुनि देहु ॥
नाम सकल स्री बान के चिति चतुर लखि लेहु ॥११२॥
सहस नाम सिव के उचरि अस्र सबद पुनि देहु ॥
नाम सकल स्री बान के चतुर चीन चिति लेहु ॥११३॥
प्रिथम करन के नाम कहि पुनि अरि सबद बखान ॥
नाम सकल स्री बान के लीजो चतुर पछान ॥११४॥
भानजात करनात करि ऐसी भाति बखान ॥
नाम सकल स्री बान के चतुर लीजीअहु जान ॥११५॥
सभ अरजुन के नाम कहि आयुध सबद बखान ॥
नाम सकल स्री बान के लीजहु चतुर पछान ॥११६॥
जिसन धनंजै क्रिसन भनि स्वेतवाह लै नाइ ॥
आयुध बहुरि बखानीअहु सबै बान हुइ जाइ ॥११७॥
अरजुन पारथ केसगुड़ साची सबय बखान ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम बान के जान ॥११८॥
बिजै कपीधुज जैद्रथरि सूरज जारि फुनि भाखु ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम बान लखि राखु ॥११९॥
तिमररि बल ब्रत निसच हा कहि सुत बहुरि उचार ॥
आयुध उचरि स्री बान के निकसहि नाम अपार ॥१२०॥
सहस्र बिसन के नाम लै अनुज सबद कौ देहु ॥
तनुज उचरि पुनि ससत्र कहि नामु बानु लखि लेहु ॥१२१॥
नरकि निवारन अघ हरन क्रिपा सिंध कौ भाखु ॥
अनुज तनुज कहि ससत्र कहु नाम बान लखि राखु ॥१२२॥
बिघन हरन बिआधनि दरन प्रिथमय सबद बखान ॥
अनुज तनुज कहि ससत्र कहु नाम बान जीअ जान ॥१२३॥
मकर केतु कहि मकर धुज पुनि आयुध पदु देहु ॥
सभै नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥१२४॥
पुहप धनुख अलि पनच के प्रिथमै नाम बखान ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ जानु नाम सभ बान ॥१२५॥
संबरारि त्रिपुरारि अरि प्रिथमै सबद बखान ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम बान के मान ॥१२६॥
स्री सारंगग्रा बीरहा बलहा बान बखान ॥
बिसिख बिसी बासी धरन बान नाम जीअ जान ॥१२७॥
बिख के प्रिथमे नाम कहि धर पद बहुरौ देहु ॥
नाम सकल स्री बान के चतुर चिति लखि लेहु ॥१२८॥
सकल सिंधु के नाम लै तनै सबद कौ देहु ॥
धर पद बहुर बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥१२९॥
उदधि सिंधु सरितेस जा कहि धर बहुरि बखान ॥
बंसीधर के नाम सभ लीजहु चतुर पछान ॥१३०॥
बध नासनी बीरहा बिख बिसखाग्रज बखान ॥
धर पद बहुरि बखानीऐ नाम बान के मान ॥१३१॥

सभ मनुखन के नाम कहि हा पद बहुरो देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चतुर चिति लखि लेहु ॥१३२॥
कालकूट कहि कसटकरि सिवकंठी अहि उचारि ॥
धर पद बहुरि बखानीऐ जानु बान निरधार ॥१३३॥
सिव के नाम उचारि कै कंठी पद पुनि देहु ॥
पुनि धर सबद बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥१३४॥
बिआधि बिखी मुखि प्रिथम कहि धर पद बहुरि बखान ॥
नाम सभै ए बान के लीजो चतुर पछान ॥१३५॥
खपरा नालिक धनुख सुत लै सु कमानज नाउ ॥
सकर कान नराच भनि धर सभ सर के गाउ ॥१३६॥
बारिद जिउ बरसत रहै जसु अंकुर जिह होइ ॥
बारिद सो बारिद नहीं ताहि बतावहु कोइ ॥१३७॥
बिखधर बिसी बिसोककर बारणारि जिह नाम ॥
नाम सबै स्री बान के लीने होवहि काम ॥१३८॥
अरि बेधन छेदन लह्यो बेदन कर जिह नाउ ॥
रछ करन अपनान की परो दुसट के गाउ ॥१३९॥
जदुपतारि बिसनाधिप अरि क्रिसनातक जिह नाम ॥
सदा हमारी जै करो सकल करो मम काम ॥१४०॥
हलधर सबद बखानि कै अनुज उचरि अरि भाखु ॥
सकल नाम स्री बान के चीनि चतुर चित राखु ॥१४१॥
रउहणाय मुसली हली रेवतीस बलराम ॥
अनुज उचरि पुनि अरि उचरि जानु बान के नाम ॥१४२॥
तालकेतु लागलि उचरि क्रिसनाग्रज पद देहु ॥
अनुज उचरि अरि उचरीऐ नाम बान लखि लेहु ॥१४३॥
नीलाबर रुकमिआंत कर पऊराणिक अरि भाखु ॥
अनुज उचरि अरि उचरीऐ नाम बान लखि राखु ॥१४४॥
सभ अरजुन के नाम लै सूत सबद पुनि देहु ॥
पुनि अरि सबद बखानीऐ नाम बान लखि लेहु ॥१४५॥
प्रिथम पवन के नाम लै सुत पद बहुरि बखान ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान पहिचानु ॥१४६॥
मारुत पवन घनातकर कहि सुत सबद उचारि ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि सर के नाम बिचारु ॥१४७॥
सरब बिआपक सरबदा सलयजन सु बखान ॥
तनुज अनुज सूतरि उचरि नाम बान के जान ॥१४८॥
प्रिथम बार के नाम लै पुनि अरि सबद बखान ॥
तनुज अनुज सूतरि उचरि नाम बान पहिचान ॥१४९॥
प्रिथम अगनि के नाम लै अंति सबद अरि देहु ॥
तनुज अनुज सूतरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१५०॥
प्रिथम अगनि के नाम लै अंति सबदि अरि भाखु ॥
तनुज अनुज कहि अरि उचरि नाम बान लखि राखु ॥१५१॥
प्रिथम अगनि के नाम लै अरि अरि पद पुनि देहु ॥
तनुज अनुज कहि अरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१५२॥
पावकारि अगनात कर कहि अरि सबद बखान ॥
अरि कहि अनुज तनुज उचरि सूतरि बान पछान ॥१५३॥
हिम बारि बकहा गदी भीम सबद पुनि देहु ॥
तनुज अनुज सुतअरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१५४॥
दुरजोधन के नाम लै अंतु सबद अरि देहु ॥
अनुज उचरि सुतअरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१५५॥
अंध सुतन के नाम लै अंति सबद अरि भाखु ॥
अनुज उचरि सुतअरि उचरि नाम बान लखि राखु ॥१५६॥

दुसासन दुरमुख दूजै कहि अरि सबद बखान ॥
अनुजा उचरि सुतअरि उचरि नाम बान पहिचान ॥१५७॥
दसला करभिख आदि कहि अंति सबद अरि भाखु ॥
अनुज तनुज सत्रु उचरि नाम बान लखि राखु ॥१५८॥
प्रिथम भीखम के नाम लै अंति सबद अरि देहु ॥
सुत आदि अंतअरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१५९॥
तटति जानवी अग्रजा प्रिथमै सबद बखान ॥
तनुज सत्रु सुतअरि उचरि नाम बान पहिचान ॥१६०॥
गंगा गिरिजा प्रिथम कहि पुत्र सबद पुनि देहु ॥
सत्रु उचरि सुतअरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१६१॥
नाकाले सरितेसरी प्रिथमै सबद उचारि ॥
सुतअरि कहि सूतरि उचरि सभ सर नाम उचारि ॥१६२॥
भीखम सातनु सुत उचरि पुनि अरि सबद बखान ॥
सूत उचरि अंत अरि उचरि नाम बान पहिचान ॥१६३॥
गागेय नदीअज उचरि सरितज सत्रु बखान ॥
सूत उचरि अंत अरि उचरि नाम बान पहिचान ॥१६४॥
तालकेतु सवितास भनि आदि अंत अरि देहु ॥
सूत उचरि रिपु पुनि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१६५॥
प्रिथम द्रोण कहि सिख्य कहि सूतरि बहुरि बखान ॥
नाम बान के सकल ही लीजो चतुर पछान ॥१६६॥
भारद्वाज द्रोणज पिता उचरि सिख्य पद देहु ॥
सूतरि बहुरि बखानीयै नाम बान लखि लेहु ॥१६७॥
सोरठा ॥
प्रिथम जुधिसटर भाखि बंधु सबद पुनि भाखयै ॥
जान ह्रिदै मै राखु सकल नाम ए बान के ॥१६८॥

दोहरा ॥

दुउभया पंचालि पति कहि पुनि भ्रात उचारि ॥
सुत अरि कहि सभ बान के लीजो नाम सु धारि ॥१६९॥
धरमराज धरमज उचरि बंधु सबद पुनि देहु ॥
सूतरि बहुरि बखानीयै नाम बान लखि लेहु ॥१७०॥
कालज धरमज सलरिपु कहि पद बंधु बखान ॥
सूतरि बहुरि बखानीयै सभ सर नाम पछान ॥१७१॥
बईवसत पद प्रिथम कहि पुनि सुत सबद बखानि ॥
बंधु उचरि सूतरि उचरि सभ सर नाम पछान ॥१७२॥
प्रिथम सूरज के नाम लै बहुरि पुत्र पद भाखि ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लखि राखु ॥१७३॥
कालिंद्री को प्रिथम कहि पुनि पद अनुज बखान ॥
तनुज उचरि अनुज अग्र कहि सर के नाम पछान ॥१७४॥
जमुना कालिंद्री अनुज कहि सुत बहुरि बखान ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि सर के नाम पछान ॥१७५॥
पंडु पुत्र कुर राज भनि बहुरि अनुज पदु देहु ॥
सुत उचारि अंति अरि उचरि नाम बान लख लेहु ॥१७६॥
जऊधिसटर भीमाग्र भनि अरजुनाग्र पुनि भाखु ॥
सुत आदि अंति अरि उचरि नाम बानु लखि राखु ॥१७७॥
नुकल बंधु सहिदेव अनुज कहि पद बंधु उचारि ॥
सुत आदि अंत अरि उचरि सर के नाम बिचार ॥१७८॥
जागसेनि को प्रिथम कहि पति पद बहुरि उचारि ॥
अनुज आदि सूतात करि सभ सरु नाम अपार ॥१७९॥
प्रिथम द्रोपदी द्रुपदजा उचरि सु पति पद देहु ॥

अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लखि लेहु ॥१८०॥
प्रिसटु द्रुमनुजा प्रिथम कहि पुनि पति सबद बखान ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान के जान ॥१८१॥
द्रुपत द्रोण रिपु प्रिथम कहि जा कहि पति पुनि भाखि ॥
अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लखि राखु ॥१८२॥
प्रिथम नाम लै द्रुपत को जामाता पुनि भाखि ॥
अनुज उचर सूतरि उचरि नाम बान लखि राखु ॥१८३॥
प्रिथम द्रोण को नाम लै अरि पद बहुरि उचारि ॥
भगनी कहि पति भ्रात कहि सूतरि बान बिचार ॥१८४॥
असुर राज सुतात करि बिसिख बारहा बान ॥
तूनीरप दुसटात करि नाम तीर के जान ॥१८५॥
माद्री सबद प्रिथमे कहो सुत पद बहुरि बखान ॥
अग्र अनुज सूतरि उचरि सर के नाम पछान ॥१८६॥
सुग्रीव को प्रिथम कहि अरि पद बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री बान के लीजहु चतुर पछान ॥१८७॥
दस ग्रीव दस कंठ भनि अरि पद बहुरि उचार ॥
सकल नाम एह बान के लीजहु चतुर सुधार ॥१८८॥
प्रिथम जटायु बखान कै अरि पद बहुरि बखान ॥
रिपु पद बहुरि उचारीयै सर के नाम पछान ॥१८९॥
रावन रसासुर प्रिथम भनि अंति सबद अरि देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥१९०॥
प्रिथम मेघ के नाम लै अंत सबद धुनि देहो ॥
पिता उचरि अरि सबद कहु नाम बान लखि लेहु ॥१९१॥
मेघनाद भन जलदधुनि पुनि घननिसन उचारि ॥
पित कहि अरि कहि बाण के लीजहु नाम सु धार ॥१९२॥
अंबुद धुनि भनि नाद घन पुनि पित सबद उचारि ॥
अरि पदि बहुरि बखानीयै सर के नाम विचार ॥१९३॥
धाराधर पद प्रिथम कहि धुनि पद बहुरि बखानि ॥
पित कहि अरि सबदो उचरि नाम बान के जान ॥१९४॥
प्रिथम सबद के नाम लै परध्वनि पुनि पद देहु ॥
धुनि उचारि अरि उचरीयै नाम बान लखि लेहु ॥१९५॥
जलद सबद प्रिथमै उचरि नाद सबद पुनि देहु ॥
पिता उचरि अरि उचरीयै नाम बान लखि लेहु ॥१९६॥
प्रिथम नीर के नाम लै धर धुनि बहुरि बखान ॥
तात आदि अंत अरि उचरि नाम बान के जान ॥१९७॥
धारा प्रिथम उचारि कै धर पद बहुरो देह ॥
पित कहि अरि पद उचरौ नाम बान लखि लेहु ॥१९८॥
नीर बारि जल धर उचरि धुनि पद बहुरि बखानि ॥
तात उचरि अरि उचरीयै नाम बान पहिचान ॥१९९॥
पानी प्रिथम उचारि कै धर पद बहुरि बखान ॥
धुनि पित अरि कहि बान के लीजहु नाम पछान ॥२००॥
घन सुत प्रिथम बखानि कै धर धुनि बहुरि बखान ॥
तात उचरि अरि उचरीयै सर के नाम पछान ॥२०१॥
आबद धुनि कहि पित उचरि अरि ते गुनन निधान ॥
सकल नाम ए बान के लीजहु ह्रिदै पछान ॥२०२॥
धार बारि कहि उचरि कै धर धुनि बहुरि बखान ॥
तात उचरि अरि उचरीयै नाम बान के जान ॥२०३॥
नीरद प्रिथम उचार के धुनि पद बहुरि बखान ॥
पित कहि अरि कहि बान के लीजहु नाम पछान ॥२०४॥
घनज सबद को उचरि कै धुनि पद बहुरि बखान ॥

सकल नाम स्री बान के लीजो चतुर पछान ॥२०५॥
मतस सबद प्रिथमै उचरि अछ सबद पुनि देहु ॥
अरि पद बहुरि बखानीयै नाम बान लखि लेहु ॥२०६॥
प्रिथम मीन को नाम लै चखु रिपु बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री बान के लीजहु चतुर पछान ॥२०७॥
मकर सबद प्रिथमै उचरि चखु रिपु बहुर बखान ॥
सबै नाम स्री बान के लीजो चतुर पछान ॥२०८॥
झख पद प्रिथम बखानि कै चखु रिपु बहुरि बखान ॥
सभे नाम स्री बान के लीजै चतुर पछान ॥२०९॥
सफरी नेत्र बखानि कै अरि पद बहुरि उचार ॥
सकल नाम स्री बान के लीजो सु कवि सु धार ॥२१०॥
मछरी चछु बखानि कै अरि पद बहुर उचार ॥
नाम सकल स्री बान के लीजो चतुर सुधार ॥२११॥
जलचर प्रिथम बखानि कै चखु पद बहुरि बखान ॥
अरि कहि सभ ही बान के लीजो नाम पछान ॥२१२॥
बकत्रागज पद उचरि कै मीन सबद अरि देहु ॥
नाम सिलीमुख के सभै चीन चतुर चिति लेहु ॥२१३॥
प्रिथम नाम लै मीन के केतु सबद पुनि देहु ॥
चखु कहि अरि कहि बान के नाम चीन चिति लेहु ॥२१४॥
संबरारि पद प्रिथम कहि चखु धुज पद पुनि देहु ॥
अरि कहि सभ ही बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२१५॥
प्रिथम पिनाकी पद उचरि अरि धुज नेत्र उचारि ॥
अरि कहि सभ ही बान के लीजहु नाम सु धार ॥२१६॥
महारुद्र अरिधुज उचरि पुनि पद नेत्र बखान ॥
अरि कहि सभ स्री बान के नाम ह्रिदै पहिचान ॥२१७॥
त्रिपुरातक अरि केतु कहि चखु अरि बहुरि उचार ॥
नाम सकल ए बान के लीजहु सुकबि सु धार ॥२१८॥
कारतकेअ पितु प्रिथम कहि अरि धुज नेत्र बखानि ॥
अरि पद बहुरि बखानीऐ नाम बान पहिचान ॥२१९॥
बिरल बैरि करि बारहा बहुलातक बलवान ॥
बरणातक बलहा बिसिख बीर पतन बर बान ॥२२०॥
प्रिथम सललि कौ नाम लै धर अरि बहुरि बखानि ॥
केतु चछु अरि उचरीयै नाम बान के जान ॥२२१॥
कारतकेअ पद प्रिथम कहि पितु अरि केतु उचारि ॥
चखु अरि कहि सभ बान के लीजहु नाम सु धार ॥२२२॥
प्रिथम पिनाकी पानि कहि रिपु धुज चखु अरि देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२२३॥
पसु पति सुरिधर अरि उचरि धुज चखु सत्रु बखान ॥
सकल नाम स्री बान के चतुर चित मै जान ॥२२४॥
पारबतीस अरि केतु चखु कहि रिपु पुनि पद देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२२५॥
ससत्र साग सामुहि चलत सत्रु मान को खाप ॥
सकल स्रिसट जीती तिसै जपीअतु ता को जापु ॥२२६॥
सकल संभु के नाम लै अरि धुज नेत्र बखानि ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलत अप्रमान ॥२२७॥
प्रिथम नाम लै सत्रु को अरदन बहुरि उचार ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलै अपार ॥२२८॥
सकल म्रिग सबद आदि कहि अरदन पद कहि अंति ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलै अनंत ॥२२९॥
कुंभकरन पद आदि कहि अरदन बहुरि बखान ॥

सकल नाम स्री बान के चतुर चित मै जान ॥२३०॥
रिपु समुद्र पित प्रिथम कहि कान अरि भाखो अंति ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलहि अनंत ॥२३१॥
प्रिथम नाम दसग्रीव के लै बंधु अरि पद देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२३२॥
खोल खड्ग खत्रिअंत करि कै हरि पदु कहु अंति ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलै अनंत ॥२३३॥
कवच क्रिपान कटारीअहि भाखि अंति अरि भाखु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चित महि राखु ॥२३४॥
प्रिथम ससत्र सभ उचरि कै अंति सबद अरि देहु ॥
सरब नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२३५॥
सूल सैहथी सत्रु हा सिप्रादर कहि अंति ॥
सकल नाम स्री बान के निकसत चलहि अनंत ॥२३६॥
समर संदेसो सत्रुहा सत्रातक जिह नाम ॥
सभै बरन रछा करन संतन के सुख धाम ॥२३७॥
बर पद प्रिथम बखानि कै अरि पद बहुरि बखान ॥
नाम सत्रुहा के सभै चतुर चित महि जान ॥२३८॥
दखण आदि उचारि कै सखण अंति उचार ॥
दखण कौ भखण दीओ सर सौ राम कुमार ॥२३९॥
रिसरा प्रिथम बखानि कै मंडरि बहुरि बखान ॥
रिसरा को बिसिरा कीयो स्री रघुपति के बान ॥२४०॥
बली ईस दस सीस के जाहि कहावत बंधु ॥
एक बान रघुनाथ के कीयो कबंध कबंध ॥२४१॥
प्रिथम भाखि सुग्रीव पद बंधुरि बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री बान के जानीअहु बुधि निधान ॥२४२॥
अंगद पितु कहि प्रिथम पद अंत सबद अरि देहु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर चिति लेहु ॥२४३॥
हनूमान के नाम लै ईस अनुज अरि भाखु ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चित महि राखु ॥२४४॥
ससत्र सबद प्रिथमै उचरि अंति सबद अरि देहु ॥
सकल नाम स्री बान के जान अनेकनि लेहु ॥२४५॥
असत्र सबद प्रिथमै उचरि अंति अरि सबद बखान ॥
सकल नाम स्री बान के लीजहु चतुर पछान ॥२४६॥
प्रिथम चरम के नाम लै सभ अरि पद कहि अंत ॥
सकल नाम सत्रात के निकसत चलहि बिअंत ॥२४७॥
तनु त्रान के नाम सभ उचरि अंति अरि देहु ॥
सकल नाम स्री बान के ता सिउ कीजै नेहु ॥२४८॥
सकल धनुख के नाम कहि अरदन बहुरि उचार ॥
सकल नाम स्री बान के चीन चतुर निरधार ॥२४९॥
प्रिथम नाम लै पनच के अंतक बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री बान के करीअहु चतुर बखिआन ॥२५०॥
सर पद प्रिथम बखानि कै अरि पद बहुर बखान ॥
सकल नाम स्री बान के चतुर चित मै जान ॥२५१॥
म्रिग पद प्रिथम बखानि कै हा पद बहुरि बखान ॥
म्रिगहा पद यह होत है लीजहु चतुर पछान ॥२५२॥

◀ *इति स्री नाम माला पुराणे स्री बान नाम त्रितीय धिआइ समापतम सतु सुभम सुत ॥3॥*

अथ स्री पासि के नाम ॥

दोहरा ॥

बीर ग्रसितही ग्रीव धर बरुणायुध कहि अंत ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै अनंत ॥२५३॥
ग्रीव ग्रसितनि भव धरा जलध राज हथीआर ॥
परौ दुसट के कंठ मै मोकहु लेहु उबार ॥२५४॥
प्रिथम नदन के नाम लै एस एस पद भाखि ॥
ससत्र उचरि सभ पासि के नाम चीनि चिति राखु ॥२५५॥
गंगा एस बखानि कै ईस ससत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै अनंत ॥२५६॥
जटज जानवी क्रितहा गंगा ईस बखानु ॥
आयुध अंति बखानीऐ नाम पासि के जान ॥२५७॥
सकल अघन के नाम लै हा आयुध सु बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जान ॥२५८॥
किलबिख पाप बखानि कै रिपु पति ससत्र बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के लीजहु चतुर पछान ॥२५९॥
अधरम पाप बखानि कै नासनीस असत्र भाखि ॥
सकल नाम स्री पासि के चीन चतुर चिति राखि ॥२६०॥
सकल जटनि को नाम लै जा पति असत्र बखानि ॥
अमित नाम स्री पास के चतुर चित महि जानु ॥२६१॥
तउसारा सत्रु बखानि कै भेदक ग्रंथ बखान ॥
ससत्र सबद पुनि भाखीऐ नाम पासि पहिचान ॥२६२॥
गिरि पद प्रिथम बखानि कै नासनि नाथ बखानि ॥
ससत्र सबद पुनि भाखीऐ नाम पासि पहिचान ॥२६३॥
फोकी नोकी पखधर पत्री परी बखान ॥
पछी पछि अंतक कहो सकल पासि के नाम ॥२६४॥
कसट सबद प्रिथमै उचरि अघन सबद कहु अंति ॥
पति ससत्र भाखहु पासि के निकसहि नाम अनंत ॥२६५॥
पब्यां प्रिथम बखानि कै भेदन ईस बखान ॥
ससत्र सबद पुनि भाखीऐ नाम पासि पहिचान ॥२६६॥
जलनाइक बारसत्रु भनि ससत्र सबद पुनि देहु ॥
सकल नाम स्री पासि के चीन चतुर चिति लेहु ॥२६७॥
सभ गंगा के नाम लै पति कहि ससत्र बखान ॥
सभै नाम स्री पासि के लीजहु चतुर पछान ॥२६८॥
जमुना प्रिथम बखानि कै एस असत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलत अनंत ॥२६९॥
कालिंद्री पद प्रिथम भनि इंद्र सबद कहि अंति ॥
असत्र बहुरि कहु पासि के निकसहि नाम अनंत ॥२७०॥
कालिनुजा पद प्रिथमह कहि इसरासत्र पुनि भाखु ॥
सकल नाम स्री पास के चीनि चतुर चिति राखु ॥२७१॥
क्रिसन बलभा प्रिथम कहि इसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलत अनंत ॥२७२॥
सूरज पुत्रि को प्रिथम कहि पति कहि ससत्र बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के लीजीअहु चतुर पछान ॥२७३॥
भानु आतजमा आदि कहि अंत आयुध पद देहु ॥
सकल नाम ए पासि के चीन चतुर चित लेहु ॥२७४॥
सूर आतजमा आदि कहि अंति ससत्र पद दीन ॥
सकल नाम स्री पासि के चीनहु चित परबीन ॥२७५॥
काल पिता प्रथमै उचरि अंति तनुज पदि देहु ॥
पति कहि असत्र बखानीऐ नाम पासि लखि लेहु ॥२७६॥

दिवकर तनुजा प्रिथम कहि पति कहि ससत्र बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के लीजहु चतुर पछान ॥२७७॥
पासि ग्रीवहा कंठ रिपु बरुणायुध जिह नाम ॥
परो दुसट के कंठ मै करो हमारो काम ॥२७८॥
आदि कंठ के नाम लै ग्राहक पद कहि अंति ॥
बरुणायुध के नाम सभु निकसत चलत बिअंत ॥२७९॥
नारि कंठ गर ग्रीव भनि ग्रहिता बहुरि बखान ॥
सकल नाम ए पासि के निकसत चलत अप्रमान ॥२८०॥
जमुना प्रिथम बखानि कै एसरायुधहिं बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चीनहु चतुर सुजान ॥२८१॥
का बरणादि बखानि कै मंद बहुर पद देहु ॥
होत है नाम कमंद के चीन चतुर चिति लेहु ॥२८२॥
किसन आदि पद उचरि कै बलभाति पद देहु ॥
पति असत्राति उचारीऐ नाम पासि लखि लेहु ॥२८३॥
बीर ग्रसतनी सुभटहा कालायुध जिह नाम ॥
परो दुसट के कंठ मै करो हमारो काम ॥२८४॥
काल अकाल कराल भनि आयुध बहुरि बखानु ॥
सकल नाम ए पासि के चतुर चित महि जानु ॥२८५॥
आदि उचरीऐ सूरज पद पूत उचरीऐ अंति ॥
ससत्र भाखीऐ पासि के निकसहि नाम बिअंत ॥२८६॥
सकल सूरज के नाम लै सुत पद असत्र बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित मै जानु ॥२८७॥
भानु दिवाकर दिनध भनि सुत कहि असत्र बखानु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित मै जानु ॥२८८॥
दिनमणि दिवकरि रैणहा सुत कहि असत्र बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित मै जानु ॥२८९॥
दिन को नाम बखानि कै मणि पद बहुरि बखान ॥
सुत कहि असत्र बखानीऐ नाम पासि पहिचान ॥२९०॥
दिवकरि दिनपति निसरि भनि दिन नाइक पुनि भाखु ॥
सुत कहि असत्र बखानीऐ नाम पासि लखि राखु ॥२९१॥
सकल सूरज के नाम लै सुत कहि असत्र बखानु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥२९२॥
जम पद प्रिथम बखानि कै ससत्र सबद पुनि देहु ॥
सकल नाम स्री पासि के चीन चतुर चिति लेहु ॥२९३॥
बईवसतु पद आदि कहि आयुध अंति बखानु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥२९४॥
काल सबद को आदि कहि असत्र सबद कहि अंत ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै अनंत ॥२९५॥
पितर राज पद प्रिथम कहि असत्र सबद पुनि देहु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चीन चिति लेहु ॥२९६॥
दंडी प्रिथम बखानि कै असत्र सबद कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के चीनहु चतुर बिअंत ॥२९७॥
जमुना भ्रात बखान कै आयुध बहुरि बखानु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥२९८॥
सभ जमुना के नाम लै भ्रात असत्र पुनि देहु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चिति लखि लेहु ॥२९९॥
पितर सबद प्रिथमै उचरि एसर बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥३००॥
सभ पितरन के नाम लै नाइक बहुरि बखान ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥३०१॥

सकल जगत के नाम लै घाइक असत्र बखानु ॥
सकल नाम स्री पासि के चतुर चित महि जानु ॥३०२॥
रिपु खंडनि दल दाहनी सत्रु तापनी सोइ ॥
सकल पासि के नाम सभ जा ते बच्यो न कोइ ॥३०३॥
रिपु पद प्रिथम बखानि कै ग्रसितनि बहुरि बखानु ॥
सकल नाम जम पासि के चतुर चित महि जानु ॥३०४॥
खल पद आदि उचारि कै खंडनि अंति बखान ॥
सकल नाम जम पासि के चीनीअहु चतुर सुजान ॥३०५॥
दल दाहनि रिपु ग्रसितनी सत्रु तापनी सोइ ॥
काल पासि के नाम सभ जा ते रहित न कोइ ॥३०६॥
जा पद प्रिथम उचारि कै मी पद अंति बखानु ॥
जामी पद ए होत है नाम पासि के जानु ॥३०७॥
दिसा बारुणी प्रिथम कहि एसरासत्र कहि अंति ॥
नाम सकल स्री पासि के निकसत चलत बिअंत ॥३०८॥
पछ्रम आदि बखानि कै एसर पुनि पद देहु ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि लखि लेहु ॥३०९॥
प्रिथम ठगन के नाम लै आयुध बहुरि बखान ॥
सकल नाम ए पासि के चतुर चित पहिचान ॥३१०॥
बाटि आदि पद उचरि कै हा पद असत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥३११॥
मग पद आदि बखानि कै छिद पद अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजो चतुर पछ्रान ॥३१२॥
मारग आदि बखानि कै मार बखानहु अंति ॥
नाम पासि को होत है निकसत चलै बिअंत ॥३१३॥
पंथ आदि पद उचरि कै करखण पुनि पद देहु ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि लखि लेहु ॥३१४॥
बाट आदि सबद उचारि कै हा असत्राति बखान ॥
नाम पासि को होत है चीनीअहु गुनन निधान ॥३१५॥
राह आदि पद उचरीऐ रिपु कहि असत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥३१६॥
प्रिथमै धन सबदो उचरि हरता आयुध दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥३१७॥
माल आदि सबदोचरि कै काल जाल कहि अंति ॥
सकल नाम इह पासि के चीनीअहु प्रग्रयावंत ॥३१८॥
माया हरन उचारि कै आयुध बहुरि बखान ॥
सकल नाम ए पासि के चतुर चित महि जान ॥३१९॥
मगहा पथहा पैंडहा धनहा द्रिबहा सोइ ॥
जा को डारत सो सनो पथक न उबर्यो कोइ ॥३२०॥
बिखीआ आदि बखानि कै आयुध अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजीअहु चतुर सु धार ॥३२१॥
बिख सबदादि उचारि कै दाइक असत्र बखान ॥
नाम पास के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥३२२॥
चंद्रभगा के नाम लै पति कहि असत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है चीनीअहु प्रग्रयावान ॥३२३॥
सतुद्रव नाथ बखान कै पुनि कहि असत्र बिसेख ॥
सकल नाम ए पासि के निकसत चलतु असेख ॥३२४॥
सतलुज सबदादि बखानि कै एसरासत्र कहि अंति ॥
नाम सकल है पास के चीन लेहु बुधिवंत ॥३२५॥
प्रिथम बिपासा नाम लै एसरासत्र पुनि भाखु ॥
नाम सकल स्री पासि के चीन चित मै राखु ॥३२६॥

रावी सावी आदि कहि आयुध एस बखान ॥
नाम पासि के होत है चीनहु प्रग्रयावान ॥३२७॥
सावी ईस्रावी सभिन आयुध बहुरि उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥३२८॥
जल सिंधु एस बखानि कै आयुध अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर चित महि जान ॥३२९॥
बिहथि आदि सबदोचरि कै एसरासत्र कहु अंति ॥
सकल नाम ए पासि के चीन लेहु मतिवंत ॥३३०॥
सिंधु आदि सबद उचरि कै आयुध अंति बखान ॥
नाम पासि के होत सभ चीनहु प्रग्रयावान ॥३३१॥
नील आदि सबदुचरि कै एसर असत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु सुर गिआन ॥३३२॥
असित बारि सबदादि कहि पति असत्राति बखान ॥
नाम पास के होत है चीन लेहु मतिवान ॥३३३॥
किसना आदि उचारि कै आयुध एस बखान ॥
नाम पास के होत है लीजहु चतुर पछान ॥३३४॥
सबद आदि कहि भीमरा एसरासत्र कहि अंत ॥
नाम पास के होत है चीन लेहु मतिवंत ॥३३५॥
तपती आदि उचारि कै आयुध एस बखान ॥
नाम पास के होत है सु जनि सति करि जान ॥३३६॥
बारि राज समुंदेस भनि सरित सरिध पति भाखु ॥
आयुध पुनि कहि पास के चीन नाम चिति राखु ॥३३७॥
बरुण बीरहा आदि कहि आयुध पुनि पद देहु ॥
नाम पास के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥३३८॥
नदी राज सरितीस भनि समुंदराट पुनि भाखु ॥
आयुध अंति बखानीऐ नाम पासि लखि राखु ॥३३९॥
ब्रहम पुत्र पद आदि कहि एसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पासि के सकल ही चीन लेहु मतिवंत ॥३४०॥
ब्रहमा आदि बखानि कै अंति पुत्र पद देहु ॥
आयुध एस बखानीऐ नाम पासि लखि लेहु ॥३४१॥
ब्रहमा आदि उचारि कै सुत पद बहुरि बखान ॥
एसरासत्र पुनि भाखीऐ नाम पासि पहिचान ॥३४२॥
जगत पिता पद प्रिथम कहि सुत पद अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चीनीअहु प्रगिआवान ॥३४३॥
घघर आदि उचारि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पास के होत है चीनीअहु प्रगिआवंत ॥३४४॥
आदि सुरसती उचरि कै एसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पास के सकल ही चीन लेहु मतिवंत ॥३४५॥
आमू आदि बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम सकल स्री पासि के निकसत चलत बिअंत ॥३४६॥
समुंद गामनी जे नदी तिन के नाम बखानि ॥
ईसरासत्र पुनि उचारीऐ नाम पासि पहिचान ॥३४७॥
सकल काल के नाम लै आयुध बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥३४८॥
दुघध सबद प्रिथमै उचरि निधि कहि ईस बखान ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि पहिचान ॥३४९॥
पानिधि प्रिथम बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम सकल स्री पासि के चीनत चलै अनंत ॥३५०॥
स्रोनज आदि उचारि कै निधि कहि ईस बखान ॥
आयुध भाखो पासि को निकसत नाम प्रमान ॥३५१॥

छितजज आदि बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के चीनहु प्रग्रयावंत ॥३५२॥
इसत्रिन आदि बखानि कै रज पद अंति उचारि ॥
ईसरासत्र कहि पासि के लीजीऐ नाम सु धार ॥३५३॥
नारिज आदि उचारि कै ईसरासत्र पद देहु ॥
नाम सकल स्री पासि के चीन चतुर चिति लेहु ॥३५४॥
चंचलान के नाम लै जा कहि निधहि बखानि ॥
ईसरासत्र पुनि उचरीऐ नाम पासि पहिचान ॥३५५॥
आदि नाम नारीन के लै जा अंति बखान ॥
निधि कहि ईसरासत्र कहि नाम पासि पहिचान ॥३५६॥
बनिता आदि बखानि कै जा कहि निधहि बखानि ॥
ईसरासत्र पुनि भाखीऐ नाम पासि पहिचान ॥३५७॥
इसत्रिज आदि उचारि कै निधि कहि ईस बखानि ॥
ईसरासत्र कहि फासि के जानीअहु नाम सुजान ॥३५८॥
बनिता आदि बखानि कै निधि कहि ईस बखानि ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि पहिचान ॥३५९॥
अंजनान के नाम लै जा कहि निधहि उचारि ॥
ईसरासत्र कहि पासि के लीजहु नाम सु धार ॥३६०॥
बाला आदि बखानि कै निधि कहि ईस बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥३६१॥
अंजनीन के नाम लै जा कहि निधहि बखानि ॥
ईसरासत्र पुनि उचरीऐ नाम पासि पहिचान ॥३६२॥
अबला आदि उचारि कै निधि कहि ईस बखानि ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि पहिचान ॥३६३॥
नरजा आदि उचारि कै जा निधि ईस बखान ॥
आयुध बहुरि बखानीऐ नाम पासि पहिचान ॥३६४॥
नरी आसुरी किंन्रनी सुरी भाखि जा भाखि ॥
निधिपति असत्र कहि पासि के नाम चीनि चिति राखि ॥३६५॥
फनिजा आदि उचारि कै जा कहि निधहि बखान ॥
ईसरासत्र कहि पासि के चीनीअहु नाम सुजान ॥३६६॥
अबला बाला मानजा त्रिय जा निधहि बखान ॥
ईसरासत्र कहि पास के चीनीअहु नाम सुजान ॥३६७॥
समुद गामनी जे नदी तिन के नाम बखान ॥
ईस एस कहि असत्र कहि नाम पासि पहिचान ॥३६८॥
पै पद प्रिथम बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै बिअंत ॥३६९॥
प्रिथमै भाखि तड़ाग पद ईसरासत्र पुनि भाखु ॥
नाम पासि के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥३७०॥
प्रिथम सरोवर सबद कहि ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के चीन लेहु मतिवंत ॥३७१॥
जलधर आदि बखानि कै ईसरासत्र पद भाखु ॥
नाम पासि के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥३७२॥
मघजा आदि उचारि कै धर पद बहुरि बखानि ॥
ईसरासत्र कहि पासि के लीजहु नाम पछान ॥३७३॥
आदि बारि धर उचरि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवंत ॥३७४॥
घनज धरन पद प्रिथम कहि ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के चीन लेहु मतिवंत ॥३७५॥
मघजा धर पद प्रिथम कहि ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पास के होत है चीन लेहु मतिवंत ॥३७६॥

अंबुदजा धर आदि कहि ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतवंत ॥३७७॥
अंबुदजा धर प्रिथम कहि ईसरासत्र पद दीन ॥
नाम पास के होत है लीजीअहु जान प्रबीन ॥३७८॥
बारिद आदि उचारि कै जा निधि ईस बखान ॥
असत्र उचरि सभ पासि के लीजीअहु नाम पछान ॥३७९॥
प्रिथम उचरि पद नीर धर ईसरासत्र कहि अंत ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै बिअंत ॥३८०॥
रिद पद आदि बखानि कै ईसरासत्र कहि दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥३८१॥
हर धर आदि बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलत बिअंत ॥३८२॥
जलज त्राणि सबदोचरि कै ईसरासत्र कहि दीन ॥
नाम पासि के होत है लीजहु चीन प्रबीन ॥३८३॥
हरध्रद जलध्रद बारिध्रद निधि पति असत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजहु चतुर पछान ॥३८४॥
नीरधि आदि उचारि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलै बिअंत ॥३८५॥
अंबुदजा धर निधि उचरि ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम पासि के सकल ही चीनहु चतुर बिअंत ॥३८६॥
धाराधरज उचारि कै निधि पति एस बखानि ॥
ससत्र उचरि सभ पासि के लीजहु नाम पछान ॥३८७॥
धाराधर ध्रद ईस कहि असत्र बहुरि पद दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥३८८॥
पै पद प्रिथम उचारि कै निधि कहि ईस बखानि ॥
असत्र उचरि करि पासि के लीजहु नाम पछान ॥३८९॥
सकल दुधद के नाम लै निधि कहि ईस बखान ॥
असत्र उचरि करि पासि के चीनीअहु नाम सुजान ॥३९०॥
नाम सु बीरन के सभै मुख ते प्रिथम उचारि ॥
ग्रसितनि कहि सभ पासि के लीजहु नाम सु धारि ॥३९१॥
सकल बारि के नाम लै निधि पति ईस बखानि ॥
असत्र उचरि करि पासि के लीजहु नाम सुजान ॥३९२॥
सकल नाम लै धूरि के धर निधि ईस बखानि ॥
असत्र उचरि करि पासि के चीनीअहु नाम सुजान ॥३९३॥
बारिद अरि पद प्रिथम कहि ईसरासत्र कहि अंत ॥
निधि कहि नाम स्री पासि के चीनहु चतुर अनंत ॥३९४॥
त्रात्रातक पद प्रिथम कहि निधि एसासत्र बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥३९५॥
झखी त्राणि पद प्रिथमै कहि ईसरासत्र कहि अंति ॥
नाम सकल स्री पासि के निकसत चलत बिअंत ॥३९६॥
मतस त्राणि प्रिथमै उचरि ईसरासत्र कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥३९७॥
मैन केतु कहि त्राणि कहि ईसरासत्र कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥३९८॥
सकल नाम लै नीर के जा कहि त्राणि बखान ॥
ईसरासत्र कहि पासि के चीनहु नाम अप्रमान ॥३९९॥
बारिज त्राणि बखानि कै ईसरासत्र कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४००॥
जलज त्राणि पद प्रिथम कहि ईसरासत्र पुनि भाखु ॥
नाम पासि के होत है चतुर चीन चित राखु ॥४०१॥

नीरज त्राणि बखानि कै ईसरासत्र कहि अंति ॥
सकल नाम स्री पासि के निकसत चलत अनंत ॥४०२॥
कमल त्राणि पद प्रिथम कहि ईसरासत्र कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४०३॥
रिपु पद प्रिथम उचारि कै अंतक बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजीअहु समझ सुजान ॥४०४॥
सत्रु आदि सबदु उचरि कै अंतक पुनि पद देहु ॥
नाम सकल स्री पासि के चीन चतुर चिति लेहु ॥४०५॥
आदि खल सबद उचरि कै अंत्यातक कै दीन ॥
नाम पास के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४०६॥
दुसट आदि सबद उचरि कै अंत्यातक कहि भाखु ॥
नाम सकल स्री पासि के चीन चतुर चिति राखु ॥४०७॥
तन रिपु प्रिथम बखानि कै अंत्यातक कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४०८॥
असु अरि आदि बखानि कै अंत्यातक कहु भाखु ॥
नाम पासि के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥४०९॥
दलहा प्रिथम बखानि कै अंत्यातक कौ देहु ॥
नाम पासि के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥४१०॥
प्रितनातक पद प्रिथम कहि अंत्यातक कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४११॥
धुजनी अरि पद प्रिथम कहि अंत्रयातकहि उचारि ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधारि ॥४१२॥
आदि बाहनी सबद कहि रिपु अरि सबद बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४१३॥
बाहनि आदि बखानि कै रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥४१४॥
सैना आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि बखानि ॥
नाम पासि के होत है लीजहु चतुर पछान ॥४१५॥
हयनी आदि बखानि कै अंत्रयंतक कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४१६॥
गैनी आदि बखानि कै अंत्रयंतक अरि देहु ॥
नाम पासि के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥४१७॥
पतिनी आदि बखानि कै अरि पद बहुरि उचारि ॥
नाम पासि के होत है जान लेहु निरधार ॥४१८॥
रथनी आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचारु ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥४१९॥
न्रिपणी आदि बखानि कै रिपु खिप बहुर उचारि ॥
नाम पासि के होत है लीजअहु सुकबि सुधार ॥४२०॥
भटनी आदि बखानि कै रिपु अरि बहुर बखान ॥
नाम पासि के होत है चीनहु प्रग्रयावान ॥४२१॥
आदि बीरणी सबद कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४२२॥
सत्रणि आदि बखानि कै रिपु अरि पुनि पद देहु ॥
नाम पासि के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥४२३॥
जुधनि आदि बखानि कै पुनि रिपु अरि कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४२४॥
रिपुणी आदि उचारि कै रिपु खिप अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर चित पहिचान ॥४२५॥
अरिणी आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४२६॥

राजनि आदि उचारि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥४२७॥
आदि ईसरणी सबद कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४२८॥
भूपणि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है चीनहु चतुर अपार ॥४२९॥
न्रिपजन एस्रणि आदि कहु रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४३०॥
राजनि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है चीनहु चतुर अपार ॥४३१॥
एसनि आदि बखानि कै अंतक बहुरि उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४३२॥
प्रिथम नरेसणि सबद कहि रिपु अरि अंत उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥४३३॥
आदि रावनी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥४३४॥
राइनि आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम पासि के होत है समझहु सुघर सुजान ॥४३५॥
ईसरणि आदि बखानि कै रिपु अरि उचरहु अंति ॥
नाम पासि के होत है चीनहु चतुर अनंत ॥४३६॥
धुजनी आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है चीनहु चतुर अपार ॥४३७॥
दैतनि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है चीनहु सुकबि सु धार ॥४३८॥
रदनी आदि बखानि कै रिपु अरि उचरहु अंति ॥
नाम पासि कै होत है चीनहु चतुर बिअंत ॥४३९॥
प्रिथम पद उचरि बारणी रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४४०॥
द्विपनि प्रिथम उचारि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि कै ए सभै निकसत चलत हजार ॥४४१॥
दुरदनी प्रिथम बखानि कै रिपु अरि पुनि पद देहु ॥
नाम पासि के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥४४२॥
सावजनी पद प्रिथम कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥४४३॥
मातंगनि पद प्रिथम कहि रिपु अरि पद कहि अंति ॥
नाम पासि के होत है चीनहु चतुर अनंत ॥४४४॥
प्रिथम तुरंगनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चतुर लेहु पहिचान ॥४४५॥
हसतनि आदि उचारि कै रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम पासि के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥४४६॥
प्रिथम उचरि पद दंतनी रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥४४७॥
दुरदनि आदि उचारि कै मरदनि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४४८॥
पदमनि आदि उचारीऐ रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४४९॥
ब्रयाला आदि बखानीऐ रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम पासि के होत है सुकबि लीजीअहु चीन ॥४५०॥
आदि सबद कहि कुंजरी अंत रिपंतक दीन ॥
नाम पासि के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥४५१॥

इंभी आदि सबद उचरीऐ रिपु अरि कौ पुनि दीन ॥
नाम पासि के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥४५२॥
प्रिथम कुंभनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजीअहु समझ सुजान ॥४५३॥
करनी प्रिथम उचारि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजीअहु समझ सुजान ॥४५४॥
प्रिथम सिंधुरी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के सकल ही निकसत चलत अपार ॥४५५॥
आदि अनकपी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४५६॥
प्रिथम नागनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४५७॥
हरिनी आदि उचारीऐ रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है समझ लेहु बुधिवान ॥४५८॥
मातंगनि पद प्रिथम कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम पासि के होत है लीजहु सुकबि सुधार ॥४५९॥
आदि उचरि पद बाजिनी रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम पासि के होत है सुघर सति करि मान ॥४६०॥

◀ *इति स्री नाम माला पुराण स्री पासि नाम चतुरथमो धिआइ समापतम सत सुभम सतु ॥4॥*

अथ तुपक के नाम ॥

दोहरा ॥

बाहिनि आदि उचारीऐ रिपु पद अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४६१॥
सिंधवनी पद प्रिथम कहि रिपणी अंत उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४६२॥
तुरंगनि प्रिथम उचारि कै रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४६३॥
हयनी आदि उचारि कै हा अरि पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥४६४॥
अरबनि आदि बखानीऐ रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४६५॥
किंकाणी प्रथमोचरि कै रिपु पद अंत उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धारि ॥४६६॥
असुनी आदि उचारीऐ अंति सबद अरि दीन ॥
सत्रु तुपक के नाम है लीजहु समझ प्रबीन ॥४६७॥
सुआसनि आदि बखानीऐ रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥४६८॥
आधिनि आदि उचारि कै रिपु पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४६९॥
प्रभुणी आदि उचारि कै रिपु पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४७०॥
आदि भूपणी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धारि ॥४७१॥
आदि ईसणी सबद कहि रिपु अरि पद के दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥४७२॥

आदि संउडणी सबद कहि रिपु अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥४७३॥
प्रथम सत्रुणी उचरीऐ रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥४७४॥
सकल छत्र के नाम लै नी कहि रिपुहि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४७५॥
प्रथम छत्रनी सबद उचरि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥४७६॥
आतपत्रणी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधारि ॥४७७॥
आदि पताकनि सबद कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥४७८॥
छितपताढि प्रिथमोचरि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥४७९॥
रउदनि आदि उचारीऐ रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर पछान ॥४८०॥
ससत्रनि आदि बखानि कै रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥४८१॥
सबद सिंधुरणि उचरि कै रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥४८२॥
आदि सुभटनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४८३॥
रथिनी आदि उचारि कै मथनी मथन बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४८४॥
सबद स्रयंदनी आदि कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४८५॥
आदि सकटनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है समझ लेहु मतिवान ॥४८६॥
प्रथम सत्रुणी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४८७॥
आदि दुसटनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर पछान ॥४८८॥
असु कवचनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥४८९॥
प्रथम बरमणी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥४९०॥
तनुत्राणनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४९१॥
प्रथम चरमणी सबद कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४९२॥
प्रथम सिपरणी सबद कहि रिपु अरि उचरहु अंति ॥
नाम तुपक जू के सकल निकसत चलत अनंत ॥४९३॥
सबद सलणी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥४९४॥
प्रथमै चक्रणि सबदि कहि रिपु अरि पद के दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥४९५॥
आदि खड़गनी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥४९६॥
असिनी आदि उचारि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥४९७॥

निसत्रिसनी उचारि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है निकसत चलत प्रमान ॥४९८॥
खगनी आदि बखानि कै रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥४९९॥
ससत्र एस्रणी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५००॥
ससत्र राजनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५०१॥
ससत्र राटनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर प्रमान ॥५०२॥
आदि सैफनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५०३॥
आदि तेगनी सबद कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५०४॥
आदि क्रिपाननि सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक होत है लीजहु चतुर प्रमान ॥५०५॥
समसेरणी उचारि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चतुर चित महि जान ॥५०६॥
आदि खंडनी सबद कहि रिपु अरि बहुरि उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५०७॥
खलखंडन पद आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५०८॥
कवचातकनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५०९॥
धाराधरनी आदि कहि रिपु अरि पद के दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५१०॥
कवच तापनी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥५११॥
तनु त्राणि अरि आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चतुर लीजीअहु जान ॥५१२॥
कवच घातनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर प्रमान ॥५१३॥
दुसट दाहनी आदि कहि रिपु अरि सबद बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५१४॥
दुरजन दरनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है जानु चतुर निरधार ॥५१५॥
दुरजन दबकनी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५१६॥
दुसट चरबनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर पछान ॥५१७॥
बीर बरजनी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५१८॥
बार बरजनी आदि कहि रिपुणी अंत बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर पछान ॥५१९॥
बिसिख बरखनी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है चतुर लीजीअहु चीन ॥५२०॥
बान दाइनी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५२१॥
बिसिख ब्रिसटनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सुधारि ॥५२२॥

पनज प्रहारनि आदि कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५२३॥
धनुनी आदि उचारीऐ रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५२४॥
प्रथम धनुखनी सबद कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥५२५॥
कोअंडनी आदि उचारीऐ रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५२६॥
बाणाग्रजनी आदि कहि रिपु अरि पद कौ देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥५२७॥
बाण प्रहरणी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥५२८॥
आदि उचरि पद बाणनी रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५२९॥
बिसिख परननी आदि कहि रिपु पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर प्रमान ॥५३०॥
बिसिखनि आदि बखानि कै रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर अपार ॥५३१॥
सुभट घाइनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर सु धार ॥५३२॥
सत्रु संघरणी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५३३॥
पनज प्रहरणी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५३४॥
कोअंडज दाइनि उचरि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५३५॥
आदि निखंगनी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर पछान ॥५३६॥
प्रथम पत्रणी पद उचरि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५३७॥
प्रथम पछ्णी सबद कहि रिपु अरि पद कौ देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥५३८॥
प्रथम पत्रणी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजीअहु सुघर पछान ॥५३९॥
परिणी आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर प्रमान ॥५४०॥
पंखणि आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५४१॥
पत्रणि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥५४२॥
नभचरि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धारि ॥५४३॥
रथनी आदि उचारि कै रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥५४४॥
सकटनि आदि उचारीऐ रिपु अरि पद के दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५४५॥
रथणी आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५४६॥
आदि सबद कहि स्रयंदनी रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५४७॥

पटनी आदि बखानि कै रिपु अरि अंत उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥५४८॥
आदि बसत्रणी सबद कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥५४९॥
बियूहनि आदि बखानीऐ रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥५५०॥
बज्रणि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५५१॥
बलणी आदि बखानीऐ रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५५२॥
दलणी आदि उचारि कै मलणी पद पुनि देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥५५३॥
बादित्रणी बखानि कै अंति सबद अरि देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥५५४॥
आदि नादनी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर अपार ॥५५५॥
दुंदभि धरनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५५६॥
दुंदभनी पद प्रथम कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५५७॥
नाद नादनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५५८॥
दुंदभि धुननी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है समझहु सुघर अपार ॥५५९॥
आदि भेरणी सबद कहि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥५६०॥
दुंदभि घोखन आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥५६१॥
नादानिसनी आदि कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है करीअहु चतुर प्रमान ॥५६२॥
आनिकनी पद आदि कहि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५६३॥
प्रथम ढालनी सबद कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ बिचार ॥५६४॥
ढढनी आदि उचारि कै रिपु पद बहुरो देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥५६५॥
संखनिसनी आदि कहि रिपु अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥५६६॥
संख सबदनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर सु धार ॥५६७॥
संख नादनी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५६८॥
सिंघ नादनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५६९॥
पल भछि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चतुर चित पहिचान ॥५७०॥
बिआघ्र नादनी आदि कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५७१॥
हरि जछनि नादनि उचरि कै रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर पछान ॥५७२॥

पुंडरीक नादनि उचरि कै रिपु पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥५७३॥
हर नादनि पद प्रिथम कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥५७४॥
पंचाननि घोखनि उचरि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चतुर चित पहिचान ॥५७५॥
सेर सबदनी आदि कहि रिपु अरि अंत उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५७६॥
म्रिगअरि नादनि आदि कहि रिपु अरि बहुर बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु प्रगिआवान ॥५७७॥
पसुपतारि ध्वननी उचरि रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥५७८॥
म्रिगपति नादनि आदि कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु प्रगिआवान ॥५७९॥
पसु एस्रण नादनि उचरि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर सु धार ॥५८०॥
गजरि नादिनी आदि कहि रिपु पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु जान ॥५८१॥
सऊडियरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५८२॥
दंतियरि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५८३॥
अनकपियरि नादनि उचरि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥५८४॥
सिंधुरारि ध्वननी उचरि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति बिचार ॥५८५॥
मातंगरि नादनि उचरि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघरि संभारि ॥५८६॥
साविजारि ध्वननी उचरि रिपु पद अंति सु भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥५८७॥
गजनियारि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥५८८॥
नागरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है उचरत चलो सुजान ॥५८९॥
हसतियरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि पुनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चिति लेहु ॥५९०॥
हरिनिअरि आदि उचारि कै रिपु पद बहुरो देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥५९१॥
करनियरि ध्वननी आदि कहि रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥५९२॥
बरियरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥५९३॥
दंतीयरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि पद को देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥५९४॥
द्विपि रिपु ध्वननी आदि कहि रिपु अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि संभार ॥५९५॥
पदमियरि आदि बखानि कै रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥५९६॥
बलियरि आदि बखानि कै रिपु पद पुनि कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५९७॥

इंभिअरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुमति लीजीअहु बीन ॥५९८॥
कुंभियरि नादनि आदि कहि रिपु खिप पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥५९९॥
कुंजरियरि आदि उचारि कै रिपु पुनि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति संभार ॥६००॥
पत्रियरि अरि ध्वननी उचरि रिपु पुनि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥६०१॥
तरुरिपु अरि ध्वननी उचरि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर निधान ॥६०२॥
सऊडियातक ध्वननि उचरि रिपु अरि बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥६०३॥
हयनिअरि आदि उचारि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥६०४॥
हयनिअरि ध्वननी आदि कहि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु बुधिवान ॥६०५॥
हयनियातक ध्वननी उचरि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥६०६॥
असुअरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है सुघर लीजीअहु चीन ॥६०७॥
तुरयारि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंत उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सु धार ॥६०८॥
तुरंगारि ध्वननी आदि कहि रिपु पुनि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥६०९॥
घोरातकनी आदि कहि रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति१ सु धार ॥६१०॥
बाजातकनी आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥६११॥
बाहनातकी आदि कहि पुनि रिपु नादनि भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चित राखु ॥६१२॥
सरजज अरि ध्वननी उचरि रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चीन लेहु मतिवान ॥६१३॥
बाज अरि ध्वननी आदि कहि अंत्यातक पद दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥६१४॥
सिंधुररि प्रथम उचारि कै रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६१५॥
बाहनि नादिन आदि कहि रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धारि ॥६१६॥
तुरंगारि आदि बखानि कै ध्वननी बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धारि ॥६१७॥
अरबयरि आदि उचारि कै रिपु अरि बहुरि उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सवारि ॥६१८॥
तुरंगारि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि पुनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६१९॥
किंकन अरि ध्वननी उचरि रिपु पद अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥६२०॥
घुरअरि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सु धार ॥६२१॥
म्रिग अरि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धारि ॥६२२॥

सिंगी अरि ध्वननी आदि कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६२३॥
म्रिगी अरि नादनि आदि कहि रिपु अरि अंति उचारि ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सवारि ॥६२४॥
त्रिण अरि नादनि उचरि कै रिपु पद बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है चतुर चित पहिचान ॥६२५॥
भूचरि आदि बखानि कै रिपु अरि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६२६॥
सुभट आदि सबद उचरि कै अंति सत्रु पद दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु चीन ॥६२७॥
आदि सत्रु सबद उचरि कै अंत्यातक पद भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥६२८॥
सत्रु आदि सबद उचरीऐ सूलनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६२९॥
आदि जुधनी भाखीऐ अंतकनी पद भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥६३०॥
बरम आदि सबद उचरि कै बेधनि अंति उचार ॥
बरम बेधनी तुपक को लीजहु नाम सु धार ॥६३१॥
चरम आदि पद भाखि कै घाइनि पद कै दीन ॥
चरम घाइनी तुपक के नाम लीजीअहु चीन ॥६३२॥
द्रुजन आदि सबद उचरि कै भछनी अंति उचार ॥
द्रुजन भछनी तुपक को लीजहु नाम सु धार ॥६३३॥
खल पद आदि बखानि कै हा पद पुनि कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥६३४॥
दुसटन आदि उचारि कै रिपुणी अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लेहु प्रबीन पछान ॥६३५॥
रिपुणी आदि उचारि कै खिपणी बहुरि बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सयान ॥६३६॥
नाल सैफनी तुपक भनि जबरजंग हथ नाल ॥
सुतर नाल घुड़ नाल भनि चूरणि पुनि पर जुआल ॥६३७॥
जुआल आदि सबदुचरि कै धरणी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सु धार ॥६३८॥
अनलु आदि सबदुचरि कै छोडणि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ॥६३९॥
जुआला बमनी आदि कहि मन मै सुघर बिचार ॥
नाम तुपक के होत है जानि चतुर निरधार ॥६४०॥
घन पद आदि बखानि कै ध्वननी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर अपार ॥६४१॥
घन पद आदि उचारि कै नादनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६४२॥
बारिद आदि बखानि कै सबदनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६४३॥
मेघन ध्वननी आदि कहि रिपु अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनहु चतुर अपार ॥६४४॥
मेघन सबदनी बकत्र ते प्रथमै सबद उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६४५॥
गोला आदि उचारि कै आलय अंत उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६४६॥
गोला आदि उचारि कै धरनी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६४७॥

गोला आदि उचारि कै असत्रणि पुनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥६४८॥
गोलालयणी आदि कहि मुख ते सबद उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६४९॥
गोला आदि उचारि कै आलयणी पुनि भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर चिति राखु ॥६५०॥
गोला आदि बखानि कै सदननि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि बिचार ॥६५१॥
गोला पद प्रथमै उचरि कै केतनि पद कहु अंति ॥
नाम सकल स्री तुपक के निकसत चलत अनंत ॥६५२॥
गोला आदि उचारि कै केतनि पद कै दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥६५३॥
गोला आदि उचारि कै सदनी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६५४॥
गोला आदि उचारीऐ धामिन अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमत सवार ॥६५५॥
गोला आदि उचारि कै नईवासन कहि अंति ॥
नाम तुपक के होत है निकसत चलत बिअंत ॥६५६॥
गोला आदि उचारि कै लिआली अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥६५७॥
गोला आदि उचारि कै मुकतनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के कहि कबो लीजहु सकल बीचार ॥६५८॥
गोला आदि उचारि कै दाती अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥६५९॥
गोला आदि उचारि कै तजनी पुनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६६०॥
जुआला आदि उचारि कै छडनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६६१॥
जुआला सकतनी बकत्र ते प्रथमै करो बखिआन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर पछान ॥६६२॥
जुआला तजणी बकत्र ते प्रथमै करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु चतुर बिचार ॥६६३॥
जुआला छाडणि प्रथम ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६६४॥
जुआला दाइनि प्रथम ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६६५॥
जुआला बकत्रणि प्रथम ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥६६६॥
जुआला आदि उचारि कै प्रगटाइनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६६७॥
जुआला आदि उचारि कै धरणी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥६६८॥
दुरजन आदि उचारि कै दाहनि पुनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चित लेहु ॥६६९॥
द्रुजन आदि सबद उचरि कै दररनि अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६७०॥
गोली धरणी बकत्र ते प्रथमै करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६७१॥
दुसट आदि सबद उचारि कै दाहनि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६७२॥

चौपई ॥

कासट प्रिसठणी आदि उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥
भूमिज प्रिसठनि पुनि पद दीजै ॥
नाम चीन तुपक को लीजै ॥६७३॥
कासठि प्रिसठणी आदि उचार ॥
नाम तुपक के सकल बिचार ॥
द्रुमज बासनी पुनि पद दीजै ॥
चीन नाम नाली को लीजै ॥६७४॥

दोहरा ॥

कासठि प्रिसठणी बकत्र ते प्रथमै करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुजन सवार ॥६७५॥
जलज प्रिसठणी प्रिथम ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सु धार ॥६७६॥
बारज प्रिसठण आदि ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥६७७॥
नीरजालयणि बकत्र ते प्रिथमै करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६७८॥
अंबुज प्रिसठणी प्रिथम ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥६७९॥
घनजज प्रिसठण प्रिथम हीं मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥६८०॥
जल तर आदि उचारि कै प्रिसठणि धर पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६८१॥
बार आदि सबद उचरि कै तर प्रिसठण पुनि भाखु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति राखु ॥६८२॥
नीर आदि सबद उचरि कै तर पद प्रिसठण देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६८३॥
हरज प्रिसठणी आदि ही मुख ते करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥६८४॥

चौपई ॥

बारिज प्रिसठणी आदि उचार ॥
नाम नालि के सकल बिचार ॥
भूरह प्रिसठणि पुनि पद दीजै ॥
नाम जान तुपक को लीजै ॥६८५॥
भूमि सबद को आदि उचारो ॥
रुह प्रिसठणि तुम बहुरि सवारो ॥
नाम तुपक के सभ ही होहीं ॥
जो कोऊ चतुर चीन कर जोही ॥६८६॥
तरु रुह प्रिसठनि आदि उचरीअहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचरीअहु ॥
कासठ कुंदनी आदि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥६८७॥
भूमि सबद कहु आदि उचारहु ॥
रुह सु सबद को बहुर बिचारहु ॥
नाम तुपक जू के सभ मानहु ॥

या मै कछू भेद नही जानहु ॥६८८॥
प्रिथी सबद को प्रिथमै दीजै ॥
रुह पद बहुरि उचारन कीजै ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥६८९॥
बिरछ सबद को आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद कहि जीअ बिचारो ॥
नाम तुपक के होहि अपारा ॥
या मै कछु न भेद निहारा ॥६९०॥
द्रुमज सबद को आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद कहि हीए बिचारो ॥
सभ ही नाम तुपक के होवै ॥
जउ कोऊ चतुर चित मै जोवै ॥६९१॥
तरु पद मुख ते आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद कौ बहुरि बिचारो ॥
नाम तुपक के सब जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥६९२॥
रुख सबद को आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद कहि बहुरि बिचारो ॥
सभ ही नाम तुपक के होई ॥
या मै कहूं भेद नही कोई ॥६९३॥
उतभुज पद को आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद कहि हीए बिचारो ॥
सभ ही नाम तुपक के जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥६९४॥
तरु सुत सबद को आदि उचारो ॥
बहुरि प्रिसठणी सबद बिचारो ॥
सभ ही नाम तुपक के जानो ॥
या मै कछू भेद न पछानो ॥६९५॥
पत्री पद को आदि बखानो ॥
प्रिसठणि सबद सु बहुरि प्रमानो ॥
सभ ही नाम तुपक के जानहु ॥
या मै कछू भेद नही मानहु ॥६९६॥
अड़िल ॥
धराधार पद प्रथम उचारन कीजीऐ ॥
प्रिसठणि पद को बहुरि ठउर तह दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जी जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैक नही मानीऐ ॥६९७॥

दोहरा ॥

धराराज प्रथमै उचरि पुनि प्रिसठनि पद देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥६९८॥
धरा आदि सबद उचरि कै नाइक अंत उचार ॥
प्रिसठ भाखि बंदूक के लीजहु नाम सु धार ॥६९९॥

चौपई ॥

धरा सबद को आदि बखानहु ॥
नाइक सबद तहा फुनि ठानहु ॥
प्रिसठनि पद को बहुरि उचरीऐ ॥

नाम तुपक कै सभै बिचरीऐ ॥७००॥
धरनी पद प्रथमै लिखि डारो ॥
राव सबद तिह अंति उचारो ॥
प्रिसठनि बहुरि सबद को दीजै ॥
नाम पछान तुपक को लीजै ॥७०१॥
धरनीपति पद आदि उचारो ॥
प्रिसठनि सबदहि बहुरि सवारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नहीं मानो ॥७०२॥
धराराट पद आदि उचारो ॥
प्रिसठनि पद को बहुरि सु धारो ॥
नाम तुपक जानो मन माही ॥
या मै भेद नैक हूं नाही ॥७०३॥
धराराज पुनि आदि उचरीऐ ॥
ताहि प्रिसठणी बहुरि सु धरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के होवहि ॥
जा के सभ गुनिजन गुन जोवहि ॥७०४॥
धरा सबद को आदि उचारो ॥
प्रिसठनि सबद सु अंति सु धारो ॥
सकल नाम तुपक के जानो ॥
या मै कछू भेद नहीं मानो ॥७०५॥
धरा सबद को आदि भनीजै ॥
इंद्र सबद ता पाछे दीजै ॥
प्रिसठनि पद को बहुरि उचारो ॥
सकल तुपक के नाम बीचारो ॥७०६॥
धरा सबद को आदि उचरीऐ ॥
पालक सबद सु अंति बिचरीऐ ॥
प्रिसठनि पद को बहुरि बखानो ॥
सभ ही नाम तुपक के जानो ॥७०७॥
तरुज सबद को आदि बखानो ॥
नाथ सबद तिह अंति प्रमानो ॥
प्रिसठनि सबद सु बहुरि भनीजै ॥
नाम जान तुपक को लीजै ॥७०८॥
द्रुमज सबद को आदि सु दीजै ॥
नाइक पद को बहुरि भनीजै ॥
प्रिसठनि सबद सु अंति बखानहु ॥
सभ ही नाम तुपक के मानहु ॥७०९॥
फल पद आदि उचारन कीजै ॥
ता पाछे नाइक पद दीजै ॥
पुनि प्रिसठनि तुम सबद उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७१०॥
तरुज सबद को आदि उचरीऐ ॥
राज सबद को बहुरि सु धरीऐ ॥
ता पाछे प्रिसठनि पद दीजै ॥
नाम तुफंग जान जीअ लीजै ॥७११॥
धरनीजा पद आदि भनिजै ॥
राट सबद ता पाछे दिजै ॥
प्रिसठनि पद को अंति बखानो ॥
नाम तुपक सभ भेद न मानो ॥७१२॥
ब्रिछज सबद को आदि भनीजै ॥

ता पाछै राजा पद दीजै ॥
प्रिसठनि सबद सु अंति उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७१३॥
तरु रुह अनुज आदि पद दीजै ॥
नाइक पद को बहुरि भनीजै ॥
प्रिसठनि सबद अंत को दीने ॥
नाम तुपक के होहिं नवीने ॥७१४॥

दोहरा ॥

तरु रुह प्रिसठनि प्रथम ही मुख ते करौ उचार ॥
नाम तुपक के होत है चीनि चतुर निरधार ॥७१५॥
सुकबि बकत्र ते कुंदणी प्रथमै करो उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुमति सवार ॥७१६॥
अड़िल ॥
कासट कुंदनी आदि उचारन कीजीऐ ॥
नाम तुपक के चीन चतुर चित लीजीऐ ॥
ब्रिछज बासनी सबद बकत्र ते भाखीऐ ॥
हो नाम तुपक के जानि ह्रिदै मै राखीऐ ॥७१७॥
धरएस रजा सबद सु अंति बखानीऐ ॥
ता पाछे कुंदनी बहुरि पद ठानीऐ ॥
सुकबि सभै चित माझ सु साच बिचारीयो ॥
हो नाम तुपक के सकल निसंक उचारीयो ॥७१८॥
तरुज बासनी आदि सु सबद बखानीऐ ॥
नाम तुपक के सकल सुकबि मन मानीऐ ॥
या मै संक न कछू ह्रिदै मै कीजीऐ ॥
हो जहा जहा इह नाम चहो तह दीजीऐ ॥७१९॥

चौपई ॥

भूमि सबद को आदि उचारो ॥
जा पद तिह पाछे दै डारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥७२०॥
प्रिथी सबद को आदि उचारो ॥
ता पाछे जा पद दै डारो ॥
नाम तुफंग जान जीय लीजै ॥
चहीऐ जहा तही पद दीजै ॥७२१॥
बसुधा सबद सु आदि बखानहु ॥
ता पाछे जा पद कहु ठानहु ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥७२२॥
प्रथम बसुंध्रा सबद उचरीऐ ॥
ता पाछे जा पद दै डरीऐ ॥
नाम तुपक के सभि जीअ लहीऐ ॥
चहीऐ जहा तही पद कहीऐ ॥७२३॥
तरनी पद को आदि बखानो ॥
ता पाछे जा पद को ठानो ॥
नाम तुपक के सभ ही लहीऐ ॥
चहीऐ जहा तही पद कहीऐ ॥७२४॥

छंद ॥

बलीस आदि बखान ॥
बासनी पुनि पद ठान ॥
नामै तुपक सभ होइ ॥
नही भेद या महि कोइ ॥७२५॥

चौपई ॥

सिंघ सबद को आदि बखान ॥
ता पाछे अरि सबद सु ठान ॥
नाम तुपक के सकल पछानहु ॥
या मै कछू भेद नहीं मानहु ॥७२६॥
पुंडरीक पद आदि उचारो ॥
ता पाछे अरि पद दै डारो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥
या मै कछू भेद नही कीजै ॥७२७॥
आदि सबद हर जछ उचारो ॥
ता पाछे अरि पद दै डारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ लहीयो ॥
चहीऐ नाम जहा तह कहीयो ॥७२८॥

छंद ॥

म्रिगराज आदि उचार ॥
अरि सबद बहुरि सु धार ॥
तऊफंग नाम पछान ॥
नही भेद या महि मान ॥७२९॥

चौपई ॥

आदि सबद म्रिगराज उचारो ॥
ता पाछे रिपु पद दै डारो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥
या मै कछू भेद नही जानो ॥७३०॥
पसु पतेस पद प्रथम भनिजै ॥
ता पाछै अरि पद को दिजै ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥७३१॥

दोहरा ॥

सकल पसुन के नाम लै सत्रु सबद कहि अंति ॥
सभ ही नाम तुफंग के निकसत चलत अनंत ॥७३२॥
म्रिग पद आदि बखानि कै पति पद बहुरि उचार ॥
अरि कहि नाम तुफंग के लीजै सुकबि सु धार ॥७३३॥

छंद ॥

म्रिग सबद आदि बखान ॥
पाछै सु पति पद ठान ॥
रिपु सबद बहुरि उचार ॥
सभ नाम तुपक बिचार ॥७३४॥

सिंगी प्रिथम पद भाखु ॥
अरि सबद कहि लखि राखु ॥
अरि सबद बहुरि बखान ॥
सभ नाम तुपक पछान ॥७३५॥
छंद वडा ॥
पति सबद आदि उचारि कै म्रिग सबद बहुरि बखानीऐ ॥
अरि सबद बहुरि उचार कै नाम तुपक पहिचानीऐ ॥
नही भेद या मै नैकु है सभ सुकबि मानहु चित मै ॥
जह जानीऐ तह दीजीऐ पद अउर छंद कबित मै ॥७३६॥

चौपई ॥

हरण सबद को आदि भणिजै ॥
ता पाछे पति पद को दिजै ॥
ता पाछे अरि सबद उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७३७॥
सिंगी आदि उचारन कीजै ॥
ता पाछे पति पद कहु दीजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥७३८॥
क्रिसनाजिन पद आदि उचारो ॥
ता पाछे पति पद दै डारो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥
या मै भेद न कोऊ जानो ॥७३९॥

दोहरा ॥

नैनोतम पद बकत्र ते प्रथमै करो उचार ॥
पति अरि कहि कर तुपक के लीजो नाम सु धार ॥७४०॥

चौपई ॥

स्वेतास्वेत तनि आदि उचारो ॥
ता पाछे पति सबद सवारो ॥
रिपु पद बहुरि उचारन कीजै ॥
नाम तुपक को सभ लखि लीजै ॥७४१॥
अड़िल ॥
म्रिगी सबद को आदि उचारन कीजीऐ ॥
ता पाछे नाइक सु सबद कहु दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहि नाम तुपक के जानीऐ ॥
हो जउन ठउर पद रुचै सु तही बखानीऐ ॥७४२॥
सेत असित अजिना के आदि उचारीऐ ॥
ता पाछे पति सबद सु बहुरि सुधारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सु हीय मै जानीऐ ॥७४३॥
उदर सेत चरमादि उचारन कीजीऐ ॥
ता के पाछे बहुरि नाथ पद दीजीऐ ॥
ता के पाछे रिपु पद बहुरि उचारीऐ ॥
हो नाम तुपक के सभ ही चतुर बिचारीऐ ॥७४४॥

चौपई ॥

किसन पिसठ चरमादि उचारो ॥
ता पाछे नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥७४५॥
चारु नेत्र सबदादि उचारो ॥
ता पाछे पति सबद बिचारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरो दीजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥७४६॥
नैनोतम पद आदि उचारो ॥
नाइक पद पाछे दे डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥७४७॥
द्रिगी सबद को आदि बखानो ॥
ता पाछे नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरो दीजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥७४८॥
चर्खी सबद को आदि उचारो ॥
ता पाछे पति पद दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥७४९॥
म्रिगी अधिप को आदि उचारो ॥
ता पाछे पति पद दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥७५०॥
म्रिगीराट सबदादि भनिजै ॥
ता पाछे पति पद कहु दिजै ॥
सत्रु सबद को अंति उचारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ धारो ॥७५१॥
म्रिगी इंद्र सबदादि बखानो ॥
ता पाछे नाइक पद ठानो ॥
ता पाछे रिपु सबद भनीजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥७५२॥
म्रिगी एसर को आदि उचरीऐ ॥
ता पाछे पति पद दे डरीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति बखानो ॥
नाम तुफंग सकल पहिचानो ॥७५३॥
अड़िल ॥
म्रिगीराज को आदि उचारन कीजीऐ ॥
ता के पाछे नाइक पद कहि दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीयो ॥
हो नाम तुपक कै सकल चतुर पहिचानीयो ॥७५४॥
म्रिगिज सबद को मुख ते आदि बखानीऐ ॥
ता के पाछे नाइक पद को ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो नाम तुपक के सभ ही चतुर बिचारीऐ ॥७५५॥
मुख ते प्रथम म्रिगी सु सबद को भाखीऐ ॥
ता के पाछे नाइक पद को राखीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो नाम तुपक के सकल चतुर चिति धारीऐ ॥७५६॥

चौपई ॥

म्रिगी अनुज को आदि उचारो ॥
ता पाछे नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि प्रमानहु ॥
नाम तुफंग सकल जीअ जानहु ॥७५७॥
म्रिगी अनुज को आदि उचारो ॥
ता पाछै नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद बहुरो सु बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥७५८॥
म्रिगी अनुज सबदादि उचारो ॥
नाइक पद पाछै दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुर बखानो ॥
नाम तुफंग सभै जीअ जानो ॥७५९॥
म्रिगी रवण सबदादि भणिजै ॥
ता पाछे नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥७६०॥
म्रिगजाइक पद आदि बखानै ॥
ता पाछे नाइक पद ठानै ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम बंदूक जान जीअ लिजै ॥७६१॥

दोहरा ॥

आदि म्रिगीजा उचरि कै पति रिपु अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥७६२॥
त्रिणचर आदि उचार कै पति अरि बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुघर सवार ॥७६३॥
अड़िल ॥
त्रिणचर पद को आदि उचारन कीजीऐ ॥
नाथ सबद को ता कै पाछै दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
सकल तुपक के नामु सु चतुर पछानीऐ ॥७६४॥
त्रिणभख पद को आदि उचारन कीजीऐ ॥
नाइक पद को ता के पाछे दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥७६५॥

चौपई ॥

त्रिणहा पद को आदि बखानो ॥
ता पाछै नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७६६॥
अड़िल ॥
त्रिणहात्री को आदि उचारन कीजीऐ ॥
ता के पाछे नाथ सबद को दीजीऐ ॥
ता के पाछे सत्रु सबद को ठानीऐ ॥
हो सकल तुपक को नाम चतुर चिति जानीऐ ॥७६७॥
त्रिण भछी को आदि बखानन कीजीऐ ॥

नाइक पद को ता के पाछे दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को कहीओ बहुरि सुधारि कै ॥
हो नाम तुपक के लीजहु सकल बिचार कै ॥७६८॥
त्रिणहा रिपु को आदि बखानन कीजीऐ ॥
नाथ सबद को ता के पाछै दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो नाम तुपक के सकल चतुर पहिचानीऐ ॥७६९॥

दोहरा ॥

त्रिणरिपु आदि उचारि कै पति रिपु अंति उचार ॥
सभ ही नाम तुफंग के लीजहु सुघर सुधार ॥७७०॥

चौपई ॥

त्रिणरिपु आदि उचारन कीजै ॥
ता पाछे नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७७१॥
भूजातक सबदादि उचारो ॥
नाइक ता पाछे पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥७७२॥
प्रिथीज अरि सबदादि उचारो ॥
ता पाछे नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥७७३॥
अड़िल ॥
भू सुत रिपु सबदादि बखानन कीजीऐ ॥
ता के पाछे बहुरि नाथ पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥७७४॥

चौपई ॥

उरविज सबद सु आदि उचारो ॥
रिपु नाइक पाछे पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥७७५॥
बैसुंधरजा सत्रु उचारो ॥
नइक सबद अंति दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
नाम बंदूक चित मै धरीऐ ॥७७६॥
पूरनि आदि उचारन कीजै ॥
जा रिपु पद को पाछै दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥७७७॥
द्वीपनि आदि सबद को दिजै ॥
जा पाछे चर सबद भनिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल सवारो ॥७७८॥
सिसटनि पद को आदि उचारो ॥

जा कहि चर पाछे दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चित लिजै ॥७७९॥
धरनि सबद को आदि उचारो ॥
जा चर पद पाछे तिहि डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥७८०॥
धरा सबद को आदि बखानो ॥
जा चर पद पाछे तिह ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुफंग सकल चिति धारो ॥७८१॥

दोहरा ॥

भूमिज आदि उचारि कै चर पद बहुरि उचारि ॥
रिपु कहि नाम तुफंग के लीजहु सुकबि सु धार ॥७८२॥

चौपई ॥

द्रुमनी आदि उचारन कीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥७८३॥
ब्रिछनिज आदि उचारन कीजै ॥
चरनाइक पाछे पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥७८४॥
धरएसरणी आदि बखानो ॥
ता पाछे जा चर पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥७८५॥
धराराटनी आदि उचारो ॥
जा नाइक चर सबद बिचारो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥
या मै कछू भेद नही मानो ॥७८६॥
अड़िल ॥
बारिधनी सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर नाइक सबद अंति तिह दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंत उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति धारीऐ ॥७८७॥
सामुद्रनि सबदादि उचारो जानि कै ॥
जा चर पद ता के पुनि पाछे ठानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥७८८॥
नीररासि को आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर नाइक सबद अंति तिह दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता को अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम साच पहिचानीऐ ॥७८९॥

चौपई ॥

नीरालयनी आदि उचारो ॥

जा चर नाइक बहुरि बिचारो ॥
ता के अंति सत्रु पद दीजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥७९०॥
अड़िल ॥
नीरधनी सबदादि उचारो जानि कै ॥
जा चर नाइक पद को पाछे ठानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥७९१॥

दोहरा ॥

बारालयणी आदि कहि जा चर पति पद देहु ॥
सत्रु सबद पुनि भाखीऐ नाम तुपक लखि लेहु ॥७९२॥
अड़िल ॥
जल रासननी आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर नाइक पद तिह पाछे दीजीऐ ॥
सत्रु पद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुकबि बिचारीऐ ॥७९३॥

चौपई ॥

कंनिधनी सबदादि भणिजे ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजे ॥
सत्रु सबद को अंति उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७९४॥
अंबुजनी सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥७९५॥
जलनी आदि बखानन कीजै ॥
जा चर पति पाछै पद दीजै ॥
सत्रु सबद को अंति बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥७९६॥
पानिनि आदि उचारन कीजै ॥
जा चर पति सबदाति भणीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥७९७॥
अंबुजनी सबदादि भणिजै ॥
जा चर पति सबदाति कहिजै ॥
सत्रु सबद बहुरो तुम ठानो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥७९८॥

दोहरा ॥

बारिनि आदि उचारि कै जा चर धर पद देहु ॥
सत्रु उचारु तुफंग के नाम चतुर लखि लेहु ॥७९९॥
अड़िल ॥
बारिजनी सबदादि उचारो जानि कै ॥
जा चर पति पद को तिह पाछे ठानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारि कै ॥
हो सकल तुपक के नाम सु लेहु बिचारि कै ॥८००॥
जलनिधनी सबदादि उचारन कीजीऐ ॥

जा चर कहि नाइक पद बहुरो दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥८०१॥

चौपई ॥

मेघजनी सबदादि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग जान जीअ लीजै ॥८०२॥
अंबुदनी सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥८०३॥
हरिनी आदि उचारन कीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥८०४॥
बारिदनी सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारहु ॥
नाम तुपक सभ हीए बिचारहु ॥८०५॥
नदिनी आदि उचारन कीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥८०६॥
अड़िल ॥
नयनी सबद सु मुख ते आदि उचारीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पुनि दे डारीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता कै अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति जानीऐ ॥८०७॥
सरतनि सबद सु मुख ते आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पाछे ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥८०८॥
नादिनि मुख ते सबद उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरो दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक को नाम चतुर चिति जानीऐ ॥८०९॥
जलनी मुख ते आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पाछे दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८१०॥
आदि तरंगनि सबद उचारो जानि कै ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरो ठानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंत उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८११॥
आदि करारनि सबद उचारो बकत्र ते ॥
जा चर कहि नाइक पद उचरो चित ते ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बखानीऐ ॥८१२॥

फेननी सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरो दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८१३॥
ब्रिछ कंदनिनि आदि बखानो जानि कै ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानीऐ ॥८१४॥

दोहरा ॥

जल रस सननी आदि कहि जा चर पति कहि अंति ॥
सत्रु सबद कहि तुपक के निकसहि नाम अनंत ॥८१५॥
क्रितअरिनी पद आदि कहि जा चर नाथ उचारि ॥
सत्रु उचरि करि तुपक के लीजो नाम सु धार ॥८१६॥

चौपई ॥

क्रार कंदनीनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥८१७॥
क्रार आरिनी आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥८१८॥
कलुनासननि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचरीऐ ॥
नाम तुपक के सकल बिचरीऐ ॥८१९॥
अड़िल ॥
गंगनि पद को प्रथम उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरो दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८२०॥

चौपई ॥

जनुवनि पद को आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥८२१॥
अड़िल ॥
भागीरथनी पद को आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरो ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥८२२॥

चौपई ॥

जटनिनि पद को आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद धरीऐ ॥

सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल प्रमानो ॥८२३॥
नदी राटनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणीजै ॥
नाम तुफंग जान जीअ लीजै ॥८२४॥
भीखम जननिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
नाम तुपक के सभ ही लहीऐ ॥
या मै कछू भेद नहीं कहीऐ ॥८२५॥
नदी ईस्रनिनि आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद डरीऐ ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥८२६॥
नदी राजनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद बहुरो मुखि भाखु ॥
नाम तुफंग चीनि चिति राखु ॥८२७॥
नदि नाइकनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद बहुरो तिह दीजै ॥
नाम तुफंग चीनि चिति लीजै ॥८२८॥
सरितेस्रनिनि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥८२९॥
सरिता बरनिनि आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद डरीऐ ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥८३०॥
सरितेद्रनिनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि पति पद दे डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥८३१॥

दोहरा ॥

सरिता न्रिपनिनि बकत्र ते प्रथमै करो उचार ॥
जा चर पति कहि सत्रु कहि नाम तुपक जीअ धार ॥८३२॥
अड़िल ॥
आदि तरंगनि राजनि सबद उचारीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पुनि दे डारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८३३॥
नदी न्रिपनिनी मुख ते आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति धारीऐ ॥८३४॥

चौपई ॥

आदि जमुननी सबद उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चित लिजै ॥८३५॥
कालिंद्रनिनी आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद डरीऐ ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८३६॥
किसन बलभिनि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानीऐ ॥८३७॥
बसुदेवज बलभननि भाखो ॥
जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥
या मै भेद एक नही मानो ॥८३८॥
अड़िल ॥
सकल नाम बसुदेव के आदि उचारीऐ ॥
जा बलभनी ता पाछे पद डारीऐ ॥
जा चर कहि रिपु सबद बहुरि तिह भाखीऐ ॥
हो चीनि तुपक के नाम चतुर चिति राखीऐ ॥८३९॥

चौपई ॥

सिआम बलभा आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पदु ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥८४०॥
मुसलीधर बलभा बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणीजै ॥
जान नाम तुपक को लीजै ॥८४१॥
बापुरधर बलभा प्रमानो ॥
जा चर कहि पति सबदहि ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
सब जीअ नाम तुपक के धरीऐ ॥८४२॥
बंसीधर धरनिनि पद दिजै ॥
जा चर कहि पति सबद भणिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक पहिचानो ॥८४३॥
बिसुइस बलभादि पद दीजै ॥
जा चर कहि पति सबद भणीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८४४॥
बिसुइसेस्रणी आदि भणिजै ॥
जा चर कहि पति पद पुनि दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥८४५॥
जदु नाइक नाइका बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
ता के अंति सत्रु पद दीजै ॥

नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥८४६॥
अड़िल ॥
दुआरावतीस बलभा आदि उचारीऐ ॥
जा चर नाइक पद को पुनि दै डारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८४७॥
जादो राइ बलभा आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति भणीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर लखि लीजीऐ ॥८४८॥
दुआरकोंद्र बलभिनि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पाछे दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८४९॥
दुआरकेस बलभनि सु आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुर प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति धारीऐ ॥८५०॥

चौपई ॥

दुआरके अनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के धरीऐ ॥८५१॥
जदुनाथननी आदि भनीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८५२॥
दुआरवती सरनिन पद भाखु ॥
जा चर कहि नाइक पद राखु ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८५३॥
अड़िल ॥
दुआरवती नाइकनिनि आदि उचारीऐ ॥
जा चर कहि कै पुन नाइक पद डारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानीऐ ॥८५४॥

चौपई ॥

दुआरका धननि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणीजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लीजै ॥८५५॥
दुआरकोंद्रनिनि आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि पति सबद सु धरीऐ ॥
सत्रु सबद के अंति बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के मानो ॥८५६॥
दुआरावतेस्रनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद सु ठानहु ॥

सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के धरीऐ ॥८५७॥
जद्वेसनि आदि उचारन कीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक पहिचानो ॥८५८॥
दुआरावती नाइकनिनि भाखहु ॥
जा चर कहि पति पद कहु राखहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥८५९॥
जगतेसरनिनि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८६०॥
अड़िल ॥
अनिक दुंदभजा बलभनि आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८६१॥
हली भ्रातनिनि आदि बखाननि कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥८६२॥

चौपई ॥

बलि आनुजनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुफंग चीन चिति लिजै ॥८६३॥
बलि भईअननी आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद को बहुरो कहीयो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीयो ॥८६४॥
रउहणेअ भ्रातननि भाखु ॥
जा चर कहि नाइक पद राखु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लहि लिजै ॥८६५॥
बलभद्र भ्रातनिनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८६६॥
अड़िल ॥
प्रलंबघनु अनुजननी आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥८६७॥
कामपाल अनुजनिनी आदि भनीजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारीऐ ॥८६८॥

हल आयुध अनुजनिनी आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
अरि पद ता के अंति सुकबि कहि दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥८६९॥
रिवति रवन अनुजनिनी आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति सु दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥८७०॥

चौपई ॥

राम अनुजनिनी आदि उचारो ॥
जा चर कहि पति पद दै डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक पद जानो ॥८७१॥
बलदेव अनुजनी आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥८७२॥
अड़िल ॥
प्रलंबारि अनुजनिनी आदि उचारीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद पुनि दे डारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानीऐ ॥८७३॥
त्रिणावरत अरिननि सबदादि बखानीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८७४॥
केसियातकनिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंत उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८७५॥
बकीआंतकनिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥८७६॥
पतिनागनिनि आदि उचारो जानि कै ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद ठानि कै ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥८७७॥
सकटासुर हननिन सबदादि भणीजीऐ ॥
जा चर कहि पाछे नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुगिआन पछानीऐ ॥८७८॥

चौपई ॥

मुरअरिनिनि सबदादि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥८७९॥

नरकातकनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहिजै ॥८८०॥
आदि नरकहानिनि पद भाखो ॥
जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥८८१॥
सत्रु घाइननि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक पहिचानहु ॥८८२॥
अड़िल ॥
मुर मरदनिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि के पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति भणीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥८८३॥

चौपई ॥

मधुसूदननिनि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद को बहुर बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥८८४॥
अड़िल ॥
मधु दुंदननी मुख ते आदि भणिजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि सबदोंद्र कहिजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥८८५॥
मधु नासननी मुख ते आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि के पुनि सबदेसुर प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति धारीऐ ॥८८६॥
कालजमुन अरिननि सबदादि बखानीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८८७॥
नरक अरिननि मुख ते आदि भणिजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दिजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥८८८॥
कंसकेस करखनणी आदि बखानही ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद ठानही ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥८८९॥
बासुदिवेसननिनी आदि भणिजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दिजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥८९०॥
अनक दुंदभेसनिनि आदि उचारीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद डारीऐ ॥

सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र पछानीऐ ॥८९१॥
रस नर कसनिनि आदि सबद को भाखऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद राखीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति धारीऐ ॥८९२॥
नाराइननी आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै राज सबद पुनि दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥८९३॥
बारालयननि मुखि ते आदि भणिजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ बहुरि पद दिजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥८९४॥
नीरालयनी आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि पति सबद बहुरि तिह दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥८९५॥
नार केतनिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै पुनि नाइक पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥८९६॥
जल बासननी आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद पुनि दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥८९७॥

चौपई ॥

जल केतननी आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कह बहुरि भणिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लखि लिजै ॥८९८॥
अड़िल ॥
जल बासननी आदि बखानन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद पुनि दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥८९९॥

चौपई ॥

जल धामननी आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लखि लिजै ॥९००॥
जलग्रिहननी आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लखि लिजै ॥९०१॥
जल बासननी आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद धरीऐ ॥

सत्रु सबद कहु अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के मानहु ॥९०२॥
जल संकेतनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९०३॥
बार धामनी आदि भणिजै ॥
जा चर कहि सबदेस कहिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९०४॥
बार ग्रिहननी आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९०५॥
अड़िल ॥
मेघ जनिनि सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि करि नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारीऐ ॥९०६॥

चौपई ॥

सारसुती सबदादि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९०७॥
गंग भेटनी आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल कहिजै ॥९०८॥
अरुणि बारनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥९०९॥
अरुण बारिनी आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारो ॥
सकल तुपक के नाम बिचारो ॥९१०॥
अड़िल ॥
अरुण अंबुनिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥९११॥

चौपई ॥

अरुण तरंगनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहिजै ॥९१२॥
आरकता जलनिनि पद भाखो ॥

जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लखि लिजै ॥९१३॥
अरुण अंबुनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥९१४॥
अरुण पानिनी आदि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानो ॥९१५॥
अरुण जलनिनी आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लखि लिजै ॥९१६॥
अरुण नीरनिनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९१७॥
सतद्रवनिनी प्रिथम प्रकासो ॥
जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
अरि पद ता के अंति उचरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम बिचरीऐ ॥९१८॥
सत प्रवाहनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥९१९॥
सहस नारनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद के बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९२०॥
अड़िल ॥
सत द्रवननिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद कहु दीजीऐ ॥
रिपु पद को ता के पुनि अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥९२१॥

चौपई ॥

सत प्रवाहनिनि प्रथम बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९२२॥
सता गामिनी प्रथम भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९२३॥
सत तरंगननि आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
अंति सबद ता के अरि कहीऐ ॥
नाम तुपक के सभ जीअ लहीऐ ॥९२४॥

भूमि सबद को आदि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बीचारहु ॥९२५॥
आदि बिआसनिनी पद भाखो ॥
जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥९२६॥
बिअहननी सबदादि भणिजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारहु ॥
सकल तुपक के नाम बिचारहु ॥९२७॥
पास सकतिननि आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद धरीऐ ॥
रिपु पद ता के अंति भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहिजै ॥९२८॥
पास नासनिनि आदि बखनीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद ठनीऐ ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम बिचरीऐ ॥९२९॥
बरुणाइध नासननि बखानहु ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहिजै ॥९३०॥
जलिसन आयुध नाम कहीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९३१॥
अड़िल ॥
सकल पासि लै नाम नासनिनि भाखीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ बहुरि पद राखीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥९३२॥
राविननी सबदादि बखानन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद पुनि दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबीर पछानीऐ ॥९३३॥

चौपई ॥

राविनीनि सबदादि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद कहिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥९३४॥
चंद्र भगनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥९३५॥
ससि भगनिनि सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥

नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९३६॥
चंद्रनुजनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद सु ठानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरो धरीऐ ॥
नाम तुपक के सकल बिचरीऐ ॥९३७॥
अड़िल ॥
ससि अनुजनिनी आदि उचारन कीजीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥९३८॥

चौपई ॥

मयंक अनुजनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
अरि पद अंति तवन के दिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९३९॥
अड़िल ॥
मयंक सहोदरनिनि सबदादि बखानीऐ ॥
जा चर कहि करि नाथ सबद कहु ठानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति भणीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुकबि लहि लीजीऐ ॥९४०॥

चौपई ॥

अज अनुजननिनि आदि कहिजै ॥
जा चर कहि पति सबद भणिजै ॥
सत्रु सबद कहु अंति उचारहु ॥
सकल तुपक के नाम बिचारहु ॥९४१॥
निसिस अनुजननिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबदि प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम बिचरीऐ ॥९४२॥
निसि इसरननिनि आदि कहिजै ॥
जा चर कहि पति सबद भणिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥९४३॥
रैनाधिपनी आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लखि लिजै ॥९४४॥
रैन राटनिनि आदि उचरीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद धरीऐ ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानहु ॥९४५॥
रैनराजनी आदि कहिजै ॥
जा चर कहि पति सबद भणिजै ॥
ता के अंति सत्रु पद कहीऐ ॥
नाम तुपक के सभ जीअ लहीऐ ॥९४६॥
निस नाइकनिनि आदि उचरीऐ ॥
सून उचरि चर पति पद डरीऐ ॥

अरि पद ता के अंति बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९४७॥
निसिइसनी सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारहु ॥
सुकबि तुपक के नाम बिचारहु ॥९४८॥
निसि पतिनिनि सबदादि उचरीऐ ॥
सुत चर अरि अंतहि पद धरीऐ ॥
सत्रु सबद कहु अंति बखानहु ॥
सुकबि तुपक के नाम पछानहु ॥९४९॥
निस धनिनी सबदादि कहिजै ॥
जा चर कहि अरि पदहि भणिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानहु ॥९५०॥
रैन नाइकनि आदि सु कहीऐ ॥
जा चर कहि पति पद दै रहीऐ ॥
ता के अंति सत्रु पद भाखहु ॥
नाम तुपक के सभ लखि राखहु ॥९५१॥
निस चरनिनि प्रथमै पद भाखहु ॥
सुत चर कहि नाइक पुनि राखहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥९५२॥
आदि निसाचरिननि कहु भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहिजै ॥९५३॥
रैन रमनि सबदादि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद कहिजै ॥
सत्रु सबद को अंति बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९५४॥
रैन राजनिनि प्रथम उचारो ॥
सुत चर कहि पति पदहि सवारो ॥
ता के अंति सत्रु पद कहीऐ ॥
नाम तुपक के सभ ही लहीऐ ॥९५५॥
निसारवनिनि आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद ता पाछे कहीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥९५६॥
दिन अरि रवनिनि आदि उचारो ॥
सुत चर कहि पति सबद बिचारो ॥
ता के अंति सत्रु पद भाखो ॥
नाम तुपक जू के लखि राखो ॥९५७॥
हरिज अरि रवनिनि आदि बखानो ॥
सुत चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
ता के अंति सत्रु पद कहो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहो ॥९५८॥
तिम्रियरि सो रवननि पद कहीऐ ॥
सुत चर कहि नाइक पद गहीऐ ॥
सत्रु सबद तिह अंति कहिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९५९॥

हरिजरि रवनिनि आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचरीऐ ॥
नाम तुपक के सुकबि बिचरीऐ ॥९६०॥
रविजरि रवनिनि आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद कहु बहुरो भाखहु ॥
सभ स्री नाम तुपक लखि राखहु ॥९६१॥
भानुज अरि कहि रवनि भनीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९६२॥
सूरजरि रवनि आदि पद कहीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद गहीऐ ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ धारो ॥९६३॥
भानुजारि रवनिनि पद भाखो ॥
सुत चर कहि पति पद पुनि राखो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
नाम तुपक के सकल प्रमानहु ॥९६४॥
अड़िल ॥
दिनधुज अरि रवनिनि को आदि उचारीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद दे डारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥९६५॥
दिनराजि अरि रवनिनी सु आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि कै नाथ सबद पुनि ठानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुध बिचारीऐ ॥९६६॥

चौपई ॥

दिनिस अरि रवनिनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद कहु पुनि कहि लीजै ॥
नाम तुपक के सकल पतीजै ॥९६७॥
तम अरि जरि रवनिनि पद भाखो ॥
जा चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद तिह अंति भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल पतिजै ॥९६८॥
चंद्र जोननी आदि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल पतिजै ॥९६९॥
ससि उपसखिनी आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥९७०॥
निस इस भगनी आदि बखानहु ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥

नाम तुपक के सकल पतिजै ॥९७१॥
सिस भगनी सबदादि बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥९७२॥
निसिस भगा सबदादि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद कहिजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९७३॥
रैन राट कहि भगा बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद को अंति भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल पतिजै ॥९७४॥
अड़िल ॥
रैन रावनि कहि भगा सबद बखानीऐ ॥
जा चर कहि कर नाथ सबद को ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति भनीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चहो तह दीजीऐ ॥९७५॥
रैन राज कहि भगा बखानन कीजीऐ ॥
जा चर कहि करि नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि मन धारीऐ ॥९७६॥

चौपई ॥

रैन राव कहि भगा बखानो ॥
जा चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद तिह अंति भणिजै ॥
नाम तुपक जह चहो कहिजै ॥९७७॥
दिन अरि कहि भग सबद बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद तिह अंति सु कहीऐ ॥
नाम तुपक उचरहु जह चहीऐ ॥९७८॥
तमचर कहि भग सबद बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥९७९॥
रैण रावि कहि भगणि कहीजै ॥
जा चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि उचारहु ॥
सकल तुपक के नाम बिचारहु ॥९८०॥
जउन करण कहि भगणि बखानो ॥
जा चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥९८१॥
किरण धरण कहि भगणि कहीजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरीजै ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
नाम तुपक के सभ अनुमानहु ॥९८२॥
मयंक सबद कहि भगणि भणिजै ॥
सतु चर कहि पद नाथ धरिजै ॥

सत्रु सबद को बहुरि उचरीऐ ॥
नाम तुपक के सकल सु धरीऐ ॥९८३॥
म्रिग बाहनि कहि भगणि बखानो ॥
सुत चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचारहु ॥
सभ स्री नाम तुपक चिति धारहु ॥९८४॥
हिरण राट कहि भगणि उचारहु ॥
सुत चर कहि नाइक पद डारहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥९८५॥
स्रिंग बाहणी भगा भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९८६॥
म्रिग पतिणी कहि भगणि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९८७॥
प्रजापति कहि भगणि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥९८८॥

छंद ॥

म्रिग नाथ भगणणि भाखु ॥
रिपु नाथ चर पति राखु ॥
रिपु सबद बहुरि बखान ॥
सभ नाम तुपक प्रमान ॥९८९॥

चौपई ॥

नदी राट सुत भगणि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक अनुमानहु ॥९९०॥
सामुंद्रज कहि भगणि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचारो ॥
नाम तुपक के सभ जीअ धारो ॥९९१॥
नदी राट सुत भगणि उचारो ॥
जा चर कहि पति पद दे डारो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम अनुमानहु ॥९९२॥
समुद्रज भगणिनि आदि भणिजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९९३॥
म्रिगजा भगणिनि आदि उचारो ॥
जा चर कहि पति पद दे डारो ॥
रिपु पद ता के अंति बखानहु ॥

सकल तुपक के नाम अनुमानहु ॥९९४ ॥
नदिसज भगणि आदि पद दीजै ॥
जा चर कहि पति सबद धरीजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९९५ ॥
नदि नाइक कहि भगणिनि भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक को जानो ॥९९६ ॥
सरितिस भगणिनि आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥९९७ ॥
सरित इंद्र भगणनी भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक पहिचानहु ॥९९८ ॥
अड़िल ॥
निससिणि कहि भगणिनि पद आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि नाइक पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति भनीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुकबि लखि लीजीऐ ॥९९९ ॥
तम हर भगणिनि मुख ते आदि बखानीऐ ॥
जा चर कहि के पति पद बहुरि प्रमानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥१००० ॥
तम हर भगणिनि आदि बखानन कीजीऐ ॥
सुत चर कहि कै पति पद अंति भणीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति सुबुधि कहु ॥
हो सकल तुपक के नाम अनेक प्रबीन लहु ॥१००१ ॥
तम अरि भगणाणनि पद प्रिथम कहीजीऐ ॥
सुत चर कहि पति सबद अंति तिहु दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि प्रमानीऐ ॥१००२ ॥

चौपई ॥

तिमररि भगणणि आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानो ॥
सकल तुक के नाम पछानो ॥१००३ ॥
तिमर नास करि भगणनि भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद को बहुरि बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥१००४ ॥
तिमर रदन भगणनी बखानो ॥
सुत चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणीजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥१००५ ॥
तिमर उचरि हा भगण बखानहु ॥
सुत चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥

सत्रु सबद तिह अंति भणीजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥१००६॥
तिमर निकंदनि आदि उचरीऐ ॥
भगणिनि सुत चर पुनि पति धरीऐ ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥१००७॥
तिमरमंद भगणिनी भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सकल तुपक के नाम अनुमानहु ॥१००८॥
तिमरयात कहि भगणिनि भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
नाम तुपक के सकल प्रमानहु ॥१००९॥
अड़िल ॥
तिमर नास करि भगणिनि आदि बखानीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद कहु ठानीऐ ॥
रिपु पद को ता के पुनि अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥१०१०॥
उडगराज कहि भगणिनि आदि बखानीऐ ॥
सुत चर कहि के नाथ सबद कहु ठानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारीऐ ॥१०११॥

चौपई ॥

उडगिस कहि भगणिनी भणिजै ॥
सुत चर कहि नाइक पद दिजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानहु ॥
नाम तुपक के सभ जीअ जानहु ॥१०१२॥
उडग नाथ कहि भगणि उचारो ॥
सुत चर कहि पति पद कहु डारो ॥
रिपु पद ता के अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक जीअ जानहु ॥१०१३॥
उडग न्रिपति कहि भगणिनी भणीजै ॥
सुत चर कहि नाइक पद दीजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१०१४॥
उडग न्रिपति कहि भगणि भणीजै ॥
सुत चर कहि नाइक पद दीजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥१०१५॥
अड़िल ॥
उडगएस भगणिनि सबदादि बखानीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद को ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि जीअ धारीऐ ॥१०१६॥
उडपति भगणिनि आदि उचारन कीजीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानीऐ ॥१०१७॥

चौपई ॥

उडग भूपणी भूपि बखानो ॥
सुत चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥१०१८॥
तारापति कहि भगणिनि भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद कहु बहुरि उचारहु ॥
सभ स्री नाम तुपक जीअ धारहु ॥१०१९॥
तारेसर कहि भगणि उचारो ॥
सुत चर कहि नाइक पद डारो ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१०२०॥
तारालयइस भगणि बखानो ॥
सुत चर कहि पति सबद प्रमानो ॥
ता के अंति सत्रु पद कहीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥१०२१॥
अड़िल ॥
तारा ग्रिहणिस भगणी आदि बखानीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद को ठानीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंतहि दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि लहि लीजीऐ ॥१०२२॥
उडग निकेतिस भगनी आदि भणीजीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ बहुरि पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥१०२३॥
उडग नाथ भगणिनी प्रिथम पद भाखीऐ ॥
सुतु चर कहि करि नाथ बहुरि पद राखीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि पहिचानीऐ ॥१०२४॥
उडगएसर भगणिनि सबदादि उचारीऐ ॥
सुत चर कहि करि नाथ सबद दै डारीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति भणीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुकबि लहि लीजीऐ ॥१०२५॥
उडग एसर भगणिनि सबदादि भणीजीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद को दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि जीअ धारीऐ ॥१०२६॥

चौपई ॥

उडगास्रै भगणिनी बखानो ॥
सुत चर कहि नाइक पद ठानो ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक जीअ धरीऐ ॥१०२७॥
रिखिज भगणिनी आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१०२८॥

मुनिज भगणिनी आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचारहु ॥
नाम तुपक के ह्रिदै बिचारहु ॥१०२९॥
ब्रिति उतमज भगणिनी भाखो ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखो ॥
सत्रु सबद तिह अंति सु कहीऐ ॥
सकल तुपक के नामन लहीऐ ॥१०३०॥
तपिस उचरि भगणिनी भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
ता के अंति सत्रु पद ठानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१०३१॥
कसिप सुत कहि भगणिनि भाखीऐ ॥
सुत चर कहि नाइक पद राखीऐ ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचरीऐ ॥
नाम तुपक के सभ जीअ धरीऐ ॥१०३२॥
जवन करण भगणिनी बखानहु ॥
सुत चर कहि पति सबद प्रमानहु ॥
ता के अंति सत्रु पद दीजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥१०३३॥
क्रिसनिनि आदि बखानन कीजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरीजै ॥
रिपु पद ता के अंति बखानहु ॥
नाम तुपक के सभ अनुमानहु ॥१०३४॥
सिआम मूरतिनिनि आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक अनुमानहु ॥१०३५॥
प्रथम तपतिनी सबद उचरीऐ ॥
सुत चर कहि नाइक पद धरीऐ ॥
सत्रु सबद तिह अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१०३६॥
सूरज पुत्रिका आदि भणिजै ॥
सुत चर कहि नाइक पद दिजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचारहु ॥
सभ स्री नाम तुपक जीअ धारहु ॥१०३७॥
सूरज आतमजा आदि भणीजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरीजै ॥
सत्रु सबद तिह अंति उचारो ॥
नाम तुपक के सकल बिचारो ॥१०३८॥
आदि माननी सबद उचारो ॥
सुत चर कहि पति पद दे डारो ॥
अरि पद ता के अंति उचरीऐ ॥
नाम तुपक के सकल बिचरीऐ ॥१०३९॥
अभिमानिनी पदादि भणिजै ॥
सुत चर कहि पति सबद धरिजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के मानहु ॥१०४०॥
प्रथम समयणी सबद उचारो ॥
सुत चर कहि नाइक पद डारो ॥

सत्रु सबद को बहुरि कहिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥१०४१॥
गरबिणि आदि उचारन कीजै ॥
सुत चर कहि नाइक पद दीजै ॥
अरि पद ता के अंति उचारहु ॥
नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥१०४२॥
अड़िल ॥
द्रपनिनि मुख ते सबद सु आदि उचारीऐ ॥
सुत चर कहि कर नाथ सबद दे डारीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि पहिचानीऐ ॥१०४३॥

चौपई ॥

अहंकारनी आदि उचारो ॥
सुत चर कहि पति पद कहु डारो ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥१०४४॥
पीअणीणि आदि उचारण कीजै ॥
सुत चर कहि पति सबद भणीजै ॥
रिपु पद ता के अंति बखाणहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जाणहु ॥१०४५॥

दोहरा ॥

धिखणी आदि बखान कै रिपु पद अंति उचार ॥
सभ स्री नाम तुफंग के लीजहु सुकबि सु धार ॥१०४६॥
मेधणि आदि उचारि कै रिपु पद कहीऐ अंति ॥
सभ स्री नाम तुफंग के निकसत चलै अनंत ॥१०४७॥
सेमुखिनी सबदादि कहि अरि पद अंति बखान ॥
सकल तुपक के नाम ए लहि लीजो बुधिवान ॥१०४८॥
आदि मनीखनि सबद कहि रिपु पद बहुरि उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु सुकबि सु धार ॥१०४९॥
बुधनी आदि बखान कै अंति सबद अरि देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥१०५०॥

चौपई ॥

भानी आदि बखानन कीजै ॥
रिपु पद ता के अंति भणीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥
या मै भेद कछू नहि मानहु ॥१०५१॥

दोहरा ॥

आदि आभानी सबद कहि रिपु पद अंति बखान ॥
नाम सकल स्री तुपक के लीजहु सुकबि पछान ॥१०५२॥
अड़िल ॥
आदि सोभनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति भणीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥१०५३॥

प्रभा धरनि मुख ते सबदादि बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति प्रमानीऐ ॥
ता ते उतर तुपक को नाम भनीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद जान नहीं लीजीऐ ॥१०५४॥
सुखमनि पद को मुख ते आदि उचारीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंतहि डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही कीजीऐ ॥१०५५॥

चौपई ॥

धीमनि पद को आदि बखानहु ॥
ता के अंति सत्रु पद ठानहु ॥
सरब तुपक के नाम लहीजै ॥
या मै भेद नैकु नही कीजै ॥१०५६॥
आदि क्रातनी सबद उचारो ॥
ता के अंति सत्रु पद डारो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥
या के बिखै भेद नही मानहु ॥१०५७॥
छबिनी आदि उचारन कीजै ॥
रिपु पद अंति तवन के दीजै ॥
नाम तुपक के सकल पछानहु ॥
या के बिखै भेद नही मानहु ॥१०५८॥
प्रिथम बाजनी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
चित मै रुचै तिसी ठा कहीऐ ॥१०५९॥
अड़िल ॥
आदि बाहनी सबद बखानन कीजीऐ ॥
ता के पाछे सत्रु सबद कहु दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो चहीऐ जवनै ठवर सु तहा बखानीऐ ॥१०६०॥
आदि तुरंगनी मुख ते सबद बखानीऐ ॥
अरि पद ता के अंति सु बहुरि प्रमानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही कीजीऐ ॥१०६१॥
हयनी सबदहि मुख ते आदि उचारीऐ ॥
ता के अंति अंतकरि पद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर जीअ जानीयो ॥
हो दीयो जहा तुम चहो सु तही बखानीयो ॥१०६२॥

चौपई ॥

सैंधवनी सबदादि उचारो ॥
अरि पद अंति तवन के डारो ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
या मै भेद नैकु नही मानहु ॥१०६३॥
आदि अरबिनी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
या मै भेद नैकु नही जानहु ॥१०६४॥

आदि तुरंगनी सबद बखानहु ॥
अरि पद ता के अंत प्रमानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के लईऐ ॥
जह चित रुचै तही ते कहीऐ ॥१०६५॥
आदि घोरनी सबद भनीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सभै तुपक के नाम बिचारो ॥
जह चाहो तिन तही उचारो ॥१०६६॥
आदि हसतिनी सबद उचारो ॥
रिपु पद अंति तवन के डारो ॥
सभै तुपक के नाम लहिजै ॥
जह चाहो ते तही भणिजै ॥१०६७॥
अड़िल ॥
आदि दंतिनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबदु को अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥१०६८॥

चौपई ॥

आदि दुरदनी सबद बखानहु ॥
ता के अंति सत्रु पद ठानहु ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥
या के बिखै भेद नही किजै ॥१०६९॥
द्विपनी आदि उचारन कीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
जह चाहो तह ही ते कहीऐ ॥१०७०॥
आदि पदमिनी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
नाम तुपक के सकल लहीजै ॥
या मै भेद न कछहू कीजै ॥१०७१॥
अड़िल ॥
प्रिथम बारणी मुख ते सबद बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुकबि लहि लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही कीजीऐ ॥१०७२॥

चौपई ॥

आदि बिआलणी सबद बखानहो ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥
या मै भेद नैकु नही मानहो ॥१०७३॥
इंभणी आदि उचारन कीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के होवे ॥
जा को सकल सुकबि कुल जोवै ॥१०७४॥
प्रथम कुंभणी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के जानहु ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥

नितप्रति मुख ते पाठ करीजै ॥१०७५॥
अड़िल ॥
कुंजरणी सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
अरि पद ता के अंत बहुर कहि दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥१०७६॥
करिनी सबदि सु मुख ते आदि बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुकबि लहि लीजीऐ ॥
हो दीयो चहो जिह ठवर तहा ही दीजीऐ ॥१०७७॥
मद्रय धरननी मुख ते आदि भनीजीऐ ॥
हंता ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर चित मै लहो ॥
हो कह्यो चहो इन जहा तहा इन कौ कहो ॥१०७८॥
सिंधुरनी मुख ते सबदादि बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुकबि जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैक नही मानीऐ ॥१०७९॥
अनकपनी पद मुख ते प्रिथम भणीजीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो दयो चहो जिह ठवरै तही प्रमानीऐ ॥१०८०॥
प्रिथम नागनी मुख ते सबद उचारीऐ ॥
सत्रु सबद कहु अंति तवन के डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही कीजीऐ ॥१०८१॥
हरिनी सबद सु मुख ते आदि बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति प्रमानीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के चतुर पछानीअउ ॥
हो जवनै ठवर सु चहीऐ तही बखानीअउ ॥१०८२॥
गजनी सबद बकत्र ते आदि भनीजीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के दीजीऐ ॥
चतुर तुपक के नाम सकल लहि लीजीऐ ॥
हो जिह चाहो तिह ठवर उचारन कीजीऐ ॥१०८३॥

चौपई ॥

सावजनी सबदादि बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
जिह ठा चहो तही ते कहीऐ ॥१०८४॥
मातंगनी पदादि भणिजै ॥
अरि पद अंति तवन के दिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के होवै ॥
जा को सकल सुकबि मिल जोवै ॥१०८५॥
आदि गइंदनि सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
जवनै ठवर रुचै तह कहीऐ ॥१०८६॥
द्रुम अरि आदि उचारन कीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥

नाम तुपक के सकल पछानो ॥
या मै भेद न कछु जीअ जानो ॥१०८७॥
ब्रिछातकर्णी आदि उचारो ॥
अरि पद अंति तवन के डारो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
दयो चहे जह ठा तह कहीऐ ॥१०८८॥
फलधर अरिणी आदि कहीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥
जहा चहो तिह ठवर बखानो ॥१०८९॥
फलदाइक अरिणी अहि उचरीऐ ॥
अरि पद अंति तवन के डरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥
या मै भेद न रंचक मानो ॥१०९०॥
अड़िल ॥
धराधरन अरिणी सबदादि बखानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो जवन ठवर तिन चहो तही ते दीजीऐ ॥१०९१॥

चौपई ॥

धूरिराट अरिणी पद भाखो ॥
ता के अंति सत्रु पद राखो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥
जह चाहो तिह ठवर प्रमानो ॥१०९२॥
फलध सबद को आदि उचारहु ॥
अरि पद अंति तवन के डारहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥
जह चाहो तिह ठवर बखानहु ॥१०९३॥
फलि सबद को आदि भणिजै ॥
अरि पद कहि रिपु पद पुनि दिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
चहीऐ जहा तही ते कहीऐ ॥१०९४॥
तरु अरिणी सबदादि बखानो ॥
अरि पद अंति तवन के ठानो ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद नैकु नही मानहु ॥१०९५॥
धरिस अरिणी सबदादि भणिजै ॥
अरि पद अंति तवन के दिजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या के बिखै भेद नही जानो ॥१०९६॥
बिरछरिणी सबदादि भणीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
नाम तुपक के सभ जीअ लहीऐ ॥
जिह चाहो तिह ठवर सु कहीऐ ॥१०९७॥
रदनी आदि उचारन कीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लहि लीजै ॥
जिह चाहो तिह ठवर सु भनीजै ॥१०९८॥
रदनछंदनी अरिणी भाखो ॥

अरि पद अंति तवन के राखो ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद नैकु नही जानो ॥१०९९॥
अड़िल ॥
नाम सकल दंतन के आदि बखानीऐ ॥
अरिणी अरि पद अंति तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो दीयो चहो जिह ठवर तहा ही दीजीऐ ॥११००॥

चौपई ॥

न्रिपणी आदि बखानन कीजै ॥
अरि पद अंति तवन के दीजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद कछू नही जानो ॥११०१॥
आदि भूपनी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥
जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ॥११०२॥
अड़िल ॥
प्रिथम सुआमनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥११०३॥
आदि अधिपनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥११०४॥
धरद्रिड़नी मुख ते सबदादि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जी लीजीऐ ॥
हो सुघर चहो जिह ठवर उचारन कीजीऐ ॥११०५॥
आदि अधिपनी सबद सु मुख ते भाखीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो जवन ठवर मै चहीऐ तही प्रमानीऐ ॥११०६॥
पतिणी आदि बखान सत्रुणी भाखीऐ ॥
होत तुपक के नाम ह्रिदै मै राखीऐ ॥
इन के भीतर भेद न नैकु पछानीऐ ॥
हो जवन ठवर मै चहीऐ तही प्रमानीऐ ॥११०७॥

चौपई ॥

भूपतिणी सबदादि बखानो ॥
अरिणी सबद अंति तिह ठानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
जवनै ठवर रुचै तह कहीऐ ॥११०८॥
आदि भूपणी सबद बखानहु ॥
अरि पद अंति तवन के ठानहु ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥
जिह ठा रुचै सु तही प्रमानो ॥११०९॥

अड़िल ॥
बधकरणी मुख ते सबदादि उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो जवन ठवर रुचि होइ तही ते दीजीऐ ॥१११०॥
किंकरणी सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम पछान प्रबीन चिति ॥
हो जिह चाहो इह नाम देहु भीतर कबित ॥११११॥

चौपई ॥

अनुचरनी सबदादि उचरीऐ ॥
अरि पद अंति तवन के डरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
उचरो तहा ठवर जिह चहीऐ ॥१११२॥
अड़िल ॥
आदि अनुगनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
हननी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो जह जह सबद चहीजै तह तह दीजीऐ ॥१११३॥
किंकरणी मुख ते सबदादि उचारीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर जीअ जानि लै ॥
हो जवन ठवर मो चहो तही ए सबद दै ॥१११४॥

दोहरा ॥

प्रतना आदि उचारि कै अरि पद अंति उचार ॥
सभ स्री नाम तुफंग के लीजै सुकबि सु धार ॥१११५॥
धुजनी आदि बखानि कै अरि पद भाखो अंति ॥
सभ स्री नाम तुफंग के निकसत चलै अनंत ॥१११६॥
आदि बाहनी सबद कहि अंत सत्रु पद दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजो समझ प्रबीन ॥१११७॥
कामि आदि सबदोचरि कै अरि पद अंति सु देहु ॥
नाम तुपक के होत है चीन चतुर चिति लेहु ॥१११८॥
कामि आदि सबदोचरि कै अरि पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥१११९॥
आदि बिरूथनि सबद कहि अति सत्रु पद दीन ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ प्रबीन ॥११२०॥
सैना आदि बखानि कै अरि पद अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥११२१॥
धनुनी आदि बखानि कै अरिणी अंति बखान ॥
नाम तुपक के होत है लीजहु समझ सुजान ॥११२२॥
अड़िल ॥
आदि धनुखनी सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद न नैकु प्रमानीऐ ॥११२३॥
कोवंडनी सबद को आदि उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥

सकल तुपक को नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो जहा सबद ए चहो तही ते दीजीऐ ॥११२४॥

चौपई ॥

इखुआसनी पदादि भनीजै ॥
अरिणी अंति सबद तिह दीजै ॥
सकल तुपक के नाम लहिजहि ॥
जह चाहो तिह ठवर भणिजहि ॥११२५॥
कारमुकनी सबदादि उचरीऐ ॥
अरिणी सबद अंति तिह धरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
जह चाहो तिह ठवर बखानो ॥११२६॥
रिपु संतापनि आदि बखानो ॥
अरिणी सबद अंति तिह ठानो ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
या मै भेद नैकु नही कीजै ॥११२७॥
रिपु खंडणनी आदि भणिजै ॥
अरिणी सबद अंति तिह दिजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
जह तह मिलि सुघरुच बखानो ॥११२८॥
दुसट दाहनी आदि भनीजै ॥
अरिणी सबद अंति तिह दीजै ॥
नाम तुपक के तुम लखि पावहु ॥
जह चाहो तिह ठवर बतावहु ॥११२९॥
रिपु घाइनी पदादि बखानो ॥
अरिणी सबद अंति तिह ठानो ॥
नाम तुपक के सकल लहीजै ॥
जउन ठवर चहीऐ तह दीजै ॥११३०॥
अड़िल ॥
आदि चापणी सबद उचारन कीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो जहा चाहीऐ सबद सु तह तह दीजीऐ ॥११३१॥
प्रतंचनी सबद को आदि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो कहो निसंक सभ ठउर न गनती कीजीऐ ॥११३२॥

रूआमल छंद ॥

सत्रु भंजणि आदि बखान ॥
रिपु सबदु बहुरि प्रमान ॥
सभ नाम तुपक पछान ॥
नहि भेद या महि जान ॥११३३॥

चौपई ॥

हरि सकतणि पद आणि भणिजै ॥
अरिणी सबद अंति तिह दिजै ॥
नाम तुपक के सकल लहीजै ॥
जही ठवर चहीऐ तह दीजै ॥११३४॥

अड़िल ॥

बिसिख बरसणी आदि उचारण कीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो काबि कबित के भीतर सदा प्रमानीऐ ॥११३५॥

चौपई ॥

बान बरखणी आदि उचरीऐ ॥
अरिणी सबद अंति तिह धरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ॥११३६॥

अड़िल ॥

आदि बाननी सबदहि अभूलि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
नाम तुपक के सकल जान जीअ लीजीऐ ॥
हो जह चाहो तह सबद तही ते दीजीऐ ॥११३७॥

चौपई ॥

आदि पनचनी सबद बखानो ॥
मथणी सबद अंति तिह ठानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
रुचि जै जही तही ते कहीऐ ॥११३८॥
कोवंडजनी आदि उचरीऐ ॥
मथनी अंति सबद तिह धरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥
जहा रुचै ते तही बखानहु ॥११३९॥
इखुआसजनी आदि भणीजै ॥
मथणी अंति सबद तिह दीजै ॥
सकल तुपक के नाम लहिजै ॥
जवन ठवर चहीऐ तह दिजै ॥११४०॥

अड़िल ॥

कारमुकजनी पद को प्रिथम उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥
हो कबित काबि मै चहो तहा ते दीजीऐ ॥११४१॥
रिपु तापणी सबदहि आदि उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सु पद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥
हो जहा चहो तह देहु न संका मानीऐ ॥११४२॥
आदि चापणी मुख ते सबद बखानीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि लहि लीजीऐ ॥
हो जह चाहो तिह ठवर उचारन कीजीऐ ॥११४३॥
पनच धरननी आदि उचारन कीजीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि पछानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही मानीऐ ॥११४४॥

चौपई ॥

आदि सुह्रिदणी सबद बखानो ॥
मथणी सबद अंति तिह ठानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
जिह ठा रुचै तही ते कहीऐ ॥११४५॥
अड़िल ॥
बलभणी सबदादि बखानन कीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर चिति जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद न नैकु प्रमानीऐ ॥११४६॥

चौपई ॥

साखाइनणी आदि उचरीऐ ॥
अरिणी सबद अंति तिह धरीऐ ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥
जिह चहीऐ तिह ठवर भणिजै ॥११४७॥
प्रीतमणी पद आदि बखानीऐ ॥
मथणी अंति तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै नैकु न मिथिआ जानो ॥११४८॥
अड़िल ॥
आदि सुजननी सबद उचारन कीजीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुबुधि जीअ जानीऐ ॥
हो या के भीतर भेद तनक नही मानीऐ ॥११४९॥
प्रिथम सुहिरदिनी मुख ते सबद उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति बहुरि पद डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर चित माझ लहु ॥
हो कबित काबि मै रुचै तही ते नाम कहु ॥११५०॥

चौपई ॥

मानुखनी सबदादि भणीजै ॥
अरिणी अंति सबद तिह दीजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
चहो जहा सभ ठवर बखानहु ॥११५१॥
आदि मरतणी सबद बखानो ॥
अंतक सबद अंति तिह ठानो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥
जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ॥११५२॥
आदि मानुखनी सबद बखानो ॥
ता के मथणी अंति सु ठानो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥
जिह चाहो तिह ठवर भणिजै ॥११५३॥
मानिखयनी पदादि भणीजै ॥
अंति सबद मथणी तिह दीजै ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥
रुचै जहा तिह ठवर भणिजै ॥११५४॥
नरणी आदि उचारण कीजै ॥
अरिणी अंति सबद तिह दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥

या मै भेद न नैकु प्रमानहु ॥११५५॥
मानवनी सबदादि भणिजै ॥
ता के अंति सत्रु पद दिजै ॥
नाम तुपक के सकल लहीजै ॥
सभा मधि बिनु संक कहीजै ॥११५६॥
अड़िल ॥
प्रिथीराटनी आदि उचारन कीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो इन के कहत न संका मन मै कीजीऐ ॥११५७॥

चौपई ॥

छितणीसणी पदादि भणिजै ॥
अरिणी पद को बहुरि कहिजै ॥
नाम तुपक के सकल बखानहु ॥
सकल सभा मै प्रगट प्रमानहु ॥११५८॥
छत्रिसणी सबदादि भणिजै ॥
अंति सबद मथणी तिह दिजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
या मै भेद नैकु नही जानहु ॥११५९॥
छमि इसणी सबदादि उचारो ॥
मथणी सबद अंति तिह डारो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥
सदा सुनत बुधिजनन भणीजै ॥११६०॥

रूआमल छंद ॥

धरतीसणि आदि बखान ॥
अरि सबद अंति प्रमान ॥
सभ चीन नाम तुफंग ॥
सभ ठवर भनहु निसंग ॥११६१॥
अड़िल ॥
धवल धरिसणी पद को प्रिथम उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
अमित तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥
हो सकल बुधिजन सुनत उचारन कीजीऐ ॥११६२॥

चौपई ॥

ब्रिखभ धरिसणी आदि बखानो ॥
अरि पद अंति तवन के ठानो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥
सकल सभा ते सुणत भणिजै ॥११६३॥
धावलेसणी आदि बखानो ॥
मथणी सबद अंति तिह ठानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानीऐ ॥
सकल बुधिजन सुनत बखानीऐ ॥११६४॥
अड़िल ॥
आदि धवलइसणी सबदादि बखानीऐ ॥
ता के अरिणी अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥

हो गुनीजनन की सभा उचारन कीजीऐ ॥११६५॥
प्रिथम ब्रिखभणीइसणी सबद उचारीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चीन लै चतुर चित ॥
हो काबि कथा मै दीजै अउ भीतर कबित ॥११६६॥
गाविसइसणी सबदहि आदि उचारीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीअहि ॥
हो कबित काबि के बीच निडर हुइ दीजीअहि ॥११६७॥
भुविसणी पद प्रिथम उचारन कीजीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद कहु दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीऐ ॥
हो जवन ठवर मै चहीऐ तह ते दीजीऐ ॥११६८॥

चौपई ॥

उरविसणी सबदादि भणिजै ॥
मथणी अंति सबद तिह दिजै ॥
सकल तुपक के नाम लहिजहि ॥
सरब ठवर बिनु संक भणिजहि ॥११६९॥
जगतीसणी पदादि बखानो ॥
अंति सबद मथणी तिह ठानो ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
या मै भेद रती न प्रमानहु ॥११७०॥
बसुमतेसणी आदि उचरीऐ ॥
अरिणी सबद अंति तिह धरीऐ ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजहि ॥
सभन सुनत बिनु संक भणिजहि ॥११७१॥
अड़िल ॥
बसुधेसणी सबद को आदि उचारीऐ ॥
ता के मथणी अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर चित चीन लै ॥
हो जवन ठवर मै चहो तही ते सबद दै ॥११७२॥
बैसुंधुराएसनी आदि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
नाम तुपक के जान चतुर जीअ लीजीअहि ॥
हो जवन ठवर मो चहो तही ते दीजीअहि ॥११७३॥
बसुमतेसणी प्रिथम सबद को भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंति बहुरि पद राखीऐ ॥
नाम तुपक के चतुर सकल जीअ जानीऐ ॥
हो जहा जहा चहीऐ पद तही बखानीऐ ॥११७४॥

चौपई ॥

सामुंद्रणी एसणी कहीऐ ॥
अरिणी अंति सबद कहु गहीऐ ॥
नाम तुपक के लेहु सुजन जन ॥
अपने अपने बीच सकल मनि ॥११७५॥
सामुंद्रणीएसणी भाखो ॥
अरिणी सबद अंति तिह राखो ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥

सकल सुकबि जन सुनत भणिजै ॥११७६॥
अचलाइसणी आदि भणिजै ॥
मथणी सबद अंति तिह दिजै ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
जवन ठवर चहीऐ तह दीजै ॥११७७॥
बिपलीसिणी पदादि उचारो ॥
अरिणी सबद अंति तिह धारो ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद न रंचक जानो ॥११७८॥
अड़िल ॥
आदि सागरा सबद बखानन कीजीऐ ॥
एस दररनी अंति तवन को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीअहि ॥
हो कबित काबि के बीच चहो तह दीजीअहि ॥११७९॥
महाअरणवी सबदहि आदि उचारीऐ ॥
पति मरदननीह अंति सबद कहु डारीऐ ॥
नाम तुपक के सकल जान जीय राखअहि ॥
हो सकल सुजन जन सुनत निडर हुइ भाखीअहि ॥११८०॥

चौपई ॥

आदि सिंधुणी सबद भणीजै ॥
पति अरदनी पदात कहीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहो ॥
सकल सुजन जन सुनते कहो ॥११८१॥
नीरालयनी आदि उचरो ॥
नाइक अरिणी पुनि पद धरो ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद रतीकु न जानो ॥११८२॥
आदि जलालयणी पद दिजै ॥
पति अरिणी पद बहुरि भणिजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
सकल सुजन जन सुनत बखानहु ॥११८३॥
बारिधणी सबदादि उचरीऐ ॥
पति अरि अंति सबद को धरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम कहीजै ॥
सकल गुनिजनन सुनत भनीजै ॥११८४॥
धराएसणी आदि सबद कहि ॥
मथणी अंति तवन के पद गहि ॥
सकल तुपक के नाम लहिजै ॥
संक छोरि बिन संक भणिजै ॥११८५॥
लोरभरेसणी आदि उचरीऐ ॥
अंति सबद मथणी कहु धरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम पछानहु ॥
संक छोरि बिनु संक बखानहु ॥११८६॥
गोरा आदि उचारन कीजै ॥
एस अंतकणी अंति भणीजै ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥
जहा रुचै तिह ठवर प्रमानो ॥११८७॥
अवनेसणी पदादि कहीजै ॥
मथणी सबद अंति तिह दीजै ॥

सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
भै निवारि निरभै हुइ कहीऐ ॥११८८॥
दिगजनी सबदादि भणिजै ॥
एसारदनी अंति कहिजै ॥
सकल सु नाम तुपक के चीनहु ॥
जह चाहो तह कहो प्रीबनहु ॥११८९॥
कुंभिनेसनी आदि उचरीऐ ॥
अरिणी अंति सबद कहु धरीऐ ॥
सभै तुपक के नाम पछानो ॥
या महि झूठ नैक नही जानो ॥११९०॥
महिएसणी पदादि भणिजै ॥
अरिणी सबद अंति महि दिजै ॥
सकल तुपक के नाम कहीजै ॥
जह ही चहो तही लै दीजै ॥११९१॥
मेदणेसणी आदि उचरीऐ ॥
घारी अंति सबद कहु धरीऐ ॥
नाम सु जान तुपक के सभ ही ॥
चाहो जहा उचरहु तब ही ॥११९२॥
अड़िल ॥
बसुंधरेसणी आदि उचारन कीजीऐ ॥
सबद दाहनी अंति तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीअहि ॥
हो प्रगट सभा के माझ उचारन कीजीअहि ॥११९३॥

चौपई ॥

सुंधरेसणी आदि उचरीऐ ॥
मथणी अंति सबद को धरीऐ ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
अधिक गुनिजनन सुनत भनीजै ॥११९४॥
नराधिपणी आदि भणिजै ॥
मथणी पद को अंति धरिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
प्रगट सुकबि जन सुनते कहीऐ ॥११९५॥
अड़िल ॥
मानुखेसणी आदि उचारन कीजीऐ ॥
अतकनी सबदादि तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानीऐ ॥
हो संका तिआग उचरीऐ संक न मानीऐ ॥११९६॥
देसएसणी पद को प्रिथम बखानीऐ ॥
अंति अरदनी सबद तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥
हो कबितु काबि के बीच उचारन कीजीऐ ॥११९७॥
जनपदेसणी आदि उचारन कीजीऐ ॥
अंति यंतकनी सबद तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीअहि ॥
हो चहीअहि ठवर जहा सु तहा ते दीजीअहि ॥११९८॥
मानवेद्रणी पद को प्रिथम बखानीऐ ॥
अंत यंतकनी पद को बहुरि प्रमानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान तिह चित महि ॥
हो भूत भविख भवान इसी कर मित महि ॥११९९॥

लोकएांद्रणी आदि उचारन कीजीऐ ॥
ता के हरणी अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीअहि ॥
हो रैन दिवस सभ मुख ते भाख्यो कीजीअहि ॥१२०० ॥

चौपई ॥

लोकराजनी आदि भणिजै ॥
अरिणी सबद अंति तिह दिजै ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
सासत्र सिंम्रितन माझ कहीजै ॥१२०१ ॥
देसेसनी रवणनी भाखो ॥
अंति अंतकनी सबदहि राखो ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
सुकबि जनन के सुनत भनीजै ॥१२०२ ॥
थिरा भाखि इसणी पुनि भाखो ॥
अंति अंतकनी पद कहु राखो ॥
सकल तुपक के नाम लहिजै ॥
सासत्र सिंम्रितन माझ भणिजै ॥१२०३ ॥
अड़िल ॥
प्रिथम कासपी इसणी सबद बखानीऐ ॥
अंत यंतकनी सबद तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीऐ ॥
हो संका तिआगि निसंक उचारन कीजीऐ ॥१२०४ ॥
आदि नाम नागन के प्रिथम बखानीऐ ॥
पितणी इसणी अंति तवन के ठानीऐ ॥
बहुरि घातनी सबद तवन के दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥१२०५ ॥
सरप तातणी इसणी आदि उचारीऐ ॥
ता के मथणी अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥
हो सभ कबितन के बिखै निडरु हुइ दीजीऐ ॥१२०६ ॥
इंदएांद्रणी आदि उचारन कीजीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीअहि ॥
हो कबित काबि के माझ निडर हुइ दीजीअहि ॥१२०७ ॥

चौपई ॥

देवदेवणी आदि उचरीऐ ॥
एसरातकन पुनि पद धरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
संक तिआग निरसंक हुइ कहीऐ ॥१२०८ ॥
अड़िल ॥
सक्रतात अरिणी सबदादि बखानीऐ ॥
मथणी ताके अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम हीये पहिचानीऐ ॥
हो कथा बारता भीतर निडर बखानीऐ ॥१२०९ ॥
सतक्रितेसणी इसणी आदि उचारीऐ ॥
ता के अरिणी अंति सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीऐ ॥

हो सकल गुनिजनन सुनत उचारन कीजीऐ ॥१२१०॥

चौपई ॥

सचीपतिसणी इसणी भाखो ॥
मथणी सबद अंत को राखो ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
देस देस करि प्रगट भनीजै ॥१२११॥
अड़िल ॥
सकंद्रन तातणी एसणी भाखीऐ ॥
मथणी ता के अंति सबद को राखीऐ ॥
नाम तुपक के चित मै चतर पछानीऐ ॥
हो बिना कपट तिन लखो न कपट प्रमानीऐ ॥१२१२॥
कऊसकेसणी इसणी प्रिथम बखानि कै ॥
मथणी ता के अंत सबद को ठानि कै ॥
सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानीऐ ॥
हो कहे हमारे बचन सति करि मानीऐ ॥१२१३॥

चौपई ॥

बासवेसणी आदि भणिजै ॥
अंति सबद अरिणी तिह दिजै ॥
नाम तुपक के सभ जीय जानो ॥
संक तिआग निरसंक बखानो ॥१२१४॥
अड़िल ॥
बरहा इसणी अरिणी आदि बखानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम सु चित मै जानीऐ ॥
संक तिआगि निरसंक उचारन कीजीऐ ॥
हो सति सु बचन हमारे माने लीजीऐ ॥१२१५॥

दोहरा ॥

मघवेसरणी इसरणी प्रिथमै पदहि उचार ॥
नाम तुपक के होत हैं लीजै सुकबि सु धार ॥१२१६॥
मातलेसणी एसणी मथणी अंति उचार ॥
नाम तुपक के होत है लीजहि सुकबि सु धार ॥१२१७॥

चौपई ॥

जिसनएसणी आदि भणिजै ॥
इसणी मथणी अंति कहिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
दीजै तवन ठवर जह चहीऐ ॥१२१८॥
अड़िल ॥
प्रिथम पुरंदर इसणी सबद बखानीऐ ॥
इसणी मथणी पद को बहुरि प्रमानीऐ ॥
नाम तुपक के सकल जान जीय लीजीअहि ॥
हो संक तिआग निरसंक उचारन कीजीअहि ॥१२१९॥
बज्रधरिसणी अरिणी आदि उचारीऐ ॥
नाम तुपक के चित मै चतुर बिचारीऐ ॥
संक तयाग निरसंक हुइ सबद बखानीऐ ॥
हो किसी सुकबि की कान न मन मै आनीऐ ॥१२२०॥

तुराखाड़ पितणी इसणी पद भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम हीयै पहिचानीअहि ॥
हो चतुर सभा के बीच निसंक बखानीअहि ॥१२२१॥
इंद्रेणी इंद्राणी आदि बखानि कै ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानि कै ॥
सकल तुपक के नाम जान जीय लीजीऐ ॥
हो कबित काबि के बीच निडर हुइ दीजीऐ ॥१२२२॥
उचस्रिवाइस एस एसणी भाखीऐ ॥
इसणी कहि कै अरिणी पद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम अमित जीअ जानीऐ ॥
हो संक तिआग निरसंक हुइ सदा बखानीऐ ॥१२२३॥
हयणी इसणी इसणी इसणी भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो निडर सभा के माझ उचारन कीजीऐ ॥१२२४॥
गाजराज राजननी प्रभणी भाखीऐ ॥
मथणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद न नैकु हूं कीजीऐ ॥१२२५॥
अस्व एसणी इसणी इसणि उचारीऐ ॥
ता के मथणी अंत सबद को डारीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो संक तिआगि निरसंक उचार्यो कीजीऐ ॥१२२६॥
बाहराज राजनणी राजनि भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम हीये पहिचानीऐ ॥
हो कबित काबि के भीतर प्रगट बखानीऐ ॥१२२७॥
तुरंग एसणी इसणी प्रभणी प्रिथम कहि ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के बहुरि गहि ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो सकल गुनिजनन सुनत निसंक भणीजीऐ ॥१२२८॥

चौपई ॥

आइस पति पितणी पद कहीऐ ॥
इसणी अरिणी सबदहि लहीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के जनीऐ ॥

कबित काबि के भीतर भनीऐ ॥१२२९॥

अड़िल ॥
बाज राज के सभ ही नाम बखानि कै ॥
प्रभणी पितणी इसणी बहुरि पद ठानि कै ॥
अरिणी भाखि तुपक के नाम पछानीऐ ॥
हो जवन सबद मै चहीऐ तही बखानीऐ ॥१२३०॥
हसती एस प्रभ पितणी ग्रभणी भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
नाम तुपक के सकल जान जीअ लीजीऐ ॥
हो जवन कवित मै चहो सु पद तह दीजीऐ ॥१२३१॥
दंति राट प्रभ पित सुतणी पद भाखि कै ॥

अरिणी ता के अंत सबद को राखि कै ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो चहीऐ दीजीऐ जहा न ब्रिथा बखानीऐ ॥१२३२॥
दुरद राट राटिसणी इसणी भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो कबित काबि के भीतर उचर्यो कीजीऐ ॥१२३३॥
द्विपि इस इसणी मथणी आदि भणीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम हिरदे महि जानीऐ ॥
हो चहो सबद तुम जहा निडर तह ठानीऐ ॥१२३४॥
पदमी इस इसराटिन आदि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानीअहि ॥
हो कबित काबि माझ निसंक बखानीअहि ॥१२३५॥
बारणोंद्र एांद्रणी इंद्रणी आदि कहि ॥
अरिणी ता के अंति सबद को बहुर गहि ॥
सकल तुपक के नाम सति कर जानीऐ ॥
हो संका त्यागि उचार न संका मानीऐ ॥१२३६॥
ब्रयालह पति पतणी पद प्रिथम कहीजीऐ ॥
अरदन ता के अंत सबद को दीजीऐ ॥
अमित तुपक के नाम चतुर जीअ जानीअहु ॥
हो जवन ठवर मै चहीऐ तही बखानीअहु ॥१२३७॥
इंभसेसणी इसणी इसणी भाखीऐ ॥
हंत्री ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो कबित काबि के माझ निडर हुइ दीजीऐ ॥१२३८॥
कुंभीएस इस इसणी आदि बखानीऐ ॥
इसणी अरिणी अंत तवन के ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम लीजीअहु जान कर ॥
हो जो पूछै दीजीअहु तिह तुरत बताइ कर ॥१२३९॥
कुंजरेस इस पितणी प्रभणी भाखीऐ ॥
हंत्री ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो कबित काबि के बीच निसंक भणीजीऐ ॥१२४०॥
करीएांद्र इंद्रणी इंद्रणी भाखीऐ ॥
पतिणी ता के अंति सबद को राखीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के लेहु पछानि कै ॥
हो कबित काबि के बीच दीजीअहु जानि कै ॥१२४१॥
तरु अरि प्रभु प्रभु प्रभणी आदि बखानीऐ ॥
अरिणी ता के अंति सबद को ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो जह जह चहीऐ सबद तही ते दीजीऐ ॥१२४२॥
सउडिसइस इस इसणी आदि बखानि कै ॥
अरिणी ता के अंत सबद को ठानि कै ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो या के भीतर भेद नैकु नही कीजीऐ ॥१२४३॥
सिंधुरेस इस पित कहि प्रभणी भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥

हो कबित दोहरन माझ निडर हुइ दीजीऐ ॥२४४॥
अनकपोंद्र इंद्रणी इंद्रणी भाखीऐ ॥
इसणी अरिणी अंति सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो सुकबि सभा के बीच उचारन कीजीऐ ॥२४५॥
नागिनाहि नाहि इसणि एसणी भाखीऐ ॥
मथणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो पुसतक पोथनि माझ निसंक बखानीऐ ॥२४६॥
हरिपति पति पति पतिणी आदि भणीजीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो कबित काबि के माझ निसंक बखानीऐ ॥२४७॥

चौपई ॥

गजपति न्रिपणी न्रिपणि भणिजै ॥
न्रिपणी अरिणी पुनि पद दिजै ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
दोहा माझ चउपई कहीऐ ॥२४८॥
अड़िल ॥
सावज न्रिप न्रिप न्रिपति न्रिपणनी भाखीऐ ॥
अरिणी ता के अंत सबद को राखीऐ ॥
अमित तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो कबित काबि के माझ उचार्यो कीजीऐ ॥२४९॥

चौपई ॥

आदि सबद मातंग भणीजै ॥
चार बार न्रिप पद को दीजै ॥
अरिणी ता के अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥२५०॥
आदि गयंदन सबद उचरीऐ ॥
चार बार न्रिप सबदहि धरीऐ ॥
अरिणी सबद बहुरि तिह दिजै ॥
नाम तुपक के सभ लहि लिजै ॥२५१॥
बाज सबद को प्रिथम भणीजै ॥
चार बार न्रिप सबद धरीजै ॥
सकल तुपक के नाम पछानो ॥
या मै भेद रतीकु न जानो ॥२५२॥
बाह सबद को आदि उचरीऐ ॥
चार बार न्रिप सबदहि धरीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥
चहीऐ जिह ठा तिह ठा कहीऐ ॥२५३॥
तुरंग सबद को आदि उचारो ॥
चार बार न्रिप पद कहु डारो ॥
सकल तुपक के नाम लहीजै ॥
रुचै जहा तिह ठवर भणीजै ॥२५४॥
है पद मुख ते आदि बखानो ॥
चार बार न्रिप सबदहि ठानो ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥

कबित काबि के माझ भणिजै ॥१२५५॥

थरी सबद को आदि भणिजै ॥
चार बार न्रिप सबद कहिजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानो ॥
नाम तुपक के सकल पछानो ॥१२५६॥
देव सबद कहु आदि बखानहु ॥
न्रिप पद तीन बार पुनि ठानहु ॥
सत्रु सबद को बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥१२५७॥
अमर सबद कहु आदि उचारहु ॥
न्रिप पद तीन बार पुनि डारहु ॥
अरि कहि नाम तुपक के लीजै ॥

कबित काबि के भीतर दीजै ॥१२५८॥

न्रिजर सबद को आदि उचरीऐ ॥
न्रिप पद तीन बार पुनि धरीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के जानहु ॥
संक छाडि निरसंक बखानहु ॥१२५९॥
बिबुध सबद को आदि भणीजै ॥
तीन बार न्रिप सबद धरीजै ॥
रिपु कहि नाम तुपक के लहीअहि ॥
संका तिआगि सभा मै कहीअहि ॥१२६०॥
सुर पद आदि सबद को धारीऐ ॥
तीन बार न्रिप पद कहु डारीऐ ॥
अरि पद ता के अंति बखानो ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥१२६१॥
सुमन सबद को आदि बखानहु ॥
तीन बार नाइक पद ठानहु ॥
अरि पद ता के अंति भणिजै ॥
नाम तुपक के सकल लहिजै ॥१२६२॥
आदि सबद त्रिदिवेस बखानो ॥
तीन बार न्रिप पदहि प्रमानो ॥
अरि पद ता के अंति भनीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लहि लीजै ॥१२६३॥
ब्रिंदारक सबदादि उचारहु ॥
तीन बार नाइक पद डारहु ॥
अरि पद अंति तवन के दीजो ॥
नाम तुपक के सभ लहि लीजो ॥१२६४॥
गति बिवान सबदादि बखाणहु ॥
तीन बार पति पदिहि प्रमाणहु ॥
अरि पद अंति तवन के कहीऐ ॥
सभ स्री नाम तुपक के लहीऐ ॥१२६५॥
अड़िल ॥
अंम्रितेस सबदादि उचारन कीजीऐ ॥
तीन बार पति सबद तवन के दीजीऐ ॥
सत्रु सबद पुनि ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥१२६६॥
मधु पद मुख ते प्रिथमै नीके भाखीऐ ॥
तीन बार पति सबद तवन के राखीऐ ॥

अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो जह जह चहीऐ सबद निसंक बखानीऐ ॥१२६७॥
सुधा सबद को आदि उचारन कीजीऐ ॥
न्रिप पद ता के अंति बार त्रै दीजीऐ ॥
रिपु पद भाखि तुफंग नाम जीअ जानीऐ ॥
हो सुकबि चउपई माझ निसंक बखानीऐ ॥१२६८॥
सबद पयूख सु मुख ते प्रिथम उचारीऐ ॥
तीन बार न्रिप सबद अंति तिह डारीऐ ॥
रिपु पद भाखि तुपक नाम लहीजीऐ ॥
हो सुकबि दोहरा माहि निडर हुइ दीजीऐ ॥१२६९॥
असुदा सबद सु मुख ते आदि उचारि कै ॥
तीन बार न्रिप सबद तवन के डारि कै ॥
रिपु कहि नाम तुपक के चतुर बिचारीऐ ॥
हो छंद सोरठा माहि निसंक उचारीऐ ॥१२७०॥
प्रिथम प्राणदा पद को सुकबि बखानीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के ठानीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदै पछानीऐ ॥
हो सुधनि सवैया भीतर निडर बखानीऐ ॥१२७१॥
जीवदत पद प्रिथम उचारन कीजीऐ ॥
चार बार न्रिप सबदहि अंति भणीजीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदे पछान लै ॥
हो कही हमारी आज ह्रिदे पहिचान लै ॥१२७२॥

चौपई ॥

बपुदा पद को प्रिथम उचारहु ॥
चार बार नाइक पद डारहु ॥
सत्रु सबद के बहुरि भणिजै ॥
नाम तुपक सभ लहि लिजै ॥१२७३॥
बहुरि देहदा सबद बखानो ॥
चार बार पति सबद प्रमानो ॥
अरि कहि नाम तुपक के लहीऐ ॥
झूला छंद बीचि हसि कहीऐ ॥१२७४॥
प्राणदत पद प्रिथम भणीजै ॥
चार बार न्रिप सबद धरीजै ॥
अरि पद ता के अंति बखानहु ॥
सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥१२७५॥
अड़िल ॥
जरा सबद कहु मुख सो आदि बखानीऐ ॥
रिपु कहि न्रिप पद बार चार फुन ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानि कै ॥
हो सकल तुपक के नाम लीजीऐ जानि कै ॥१२७६॥
प्रिथम ब्रिधता सबद उचारन कीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति भनीजीऐ ॥
बहुरि सत्रु पद तिह उपरंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चित जानीऐ ॥१२७७॥

चौपई ॥

जरा सबद कहु आदि उचरीऐ ॥
हरि पद अंति तवन के धरीऐ ॥

अरि पद मुख ते बहुरि बखानै ॥
नाम तुपक के होइ प्रमानै ॥१२७८॥
अड़िल ॥
आलस सबद सु मुख ते आदि बखानीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद सु हरि कहि ठानीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो छंद पाधड़ी माझ निडर होइ दीजीऐ ॥१२७९॥
तरुन दंत पद मुख ते आदि बखानीऐ ॥
अरि कहि न्रिप पद बार चार पुनि ठानीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदै बखानीअहि ॥
हो छंद रुआला बिखै निडर हुइ ठानीअहि ॥१२८०॥
जोबनात अंतक पद प्रिथम उचारीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन पर डारीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो छंद चउपई माहि निसंक बखानीऐ ॥१२८१॥
तरुन दंत अरि सबद सु मुख ते भाखीऐ ॥
चतुर बारि न्रिप सबद तवन के राखीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीऐ ॥
हो सुधनि दोहरा माहि निडर हुइ दीजीऐ ॥१२८२॥
जोबनारि अरि पद को आदि बखानीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति तवन के भाखीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर चिति राखीऐ ॥१२८३॥
चतुरथ अवसथा अरि पद आदि बखानीऐ ॥
चतुर बार न्रिप सबद तवन के ठानीऐ ॥
सत्रु सबद को अंति सु बहुरि बखानि कै ॥
हो सकल तुपक के नाम लीजीऐ जानि कै ॥१२८४॥
जमपासी के नामन आदि उचारीऐ ॥
हरि कहि न्रिप पद बार चार फुनि डारीऐ ॥
सुकबि तुपक के नाम भाख अरि लीजीऐ ॥
हो सुधनि सवैया माझ निडर हुइ दीजीऐ ॥१२८५॥
अरबलारि अरि आदि उचारन कीजीऐ ॥
चार बार पति सबद तवन के दीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम जान जीअ लीजीअहि ॥
हो छंद कुंडरीआ माहि संक तजि दीजीअहि ॥१२८६॥
आरजारि अरि आदि उचारन कीजीऐ ॥
चार बार न्रिप पद को बहुरि भणीजीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो छंद झूलना माहि निसंक बखानीऐ ॥१२८७॥
देहबासी अरि हरि पद आदि भनीजीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद सु बहुरि कहीजीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर बिचारीऐ ॥
हो छंद अड़िल के माहि निडर कहि डारीऐ ॥१२८८॥
बपुबासी अरि अरि सबदादि बखानीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के ठानीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो छंद चंचरीआ माहि निसंक प्रमानीऐ ॥१२८९॥
तनबासी अर हरि को आदि बखानि कै ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के ठानि नै ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥

हो करहु उचारन तहा जहा जीअ जानीऐ ॥१२९०॥
असुर सबद को आदि उचारन कीजीऐ ॥
पित कहि न्रिप पद अंति तवन के दीजीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो निडर बखानो तहा जहा जीअ जानीऐ ॥१२९१॥
राछसारि पद मुख ते आदि बखानीअहु ॥
चार बार पति सबद तवन के ठानीअहु ॥
अरि कहि नाम तुपक के चित मै जान लै ॥
हो जो पूछै तुहि आइ निसंक बताइ दै ॥१२९२॥
दानवारि पद मुख ते सुघरि प्रिथम उचरि ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के अंति धरु ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछान लै ॥
हो सुकबि सभा के माझ निडर हुइ राख दै ॥१२९३॥
अमरारदन अरि आदि सुकबि उचारि कै ॥
तीन बार न्रिप सबद अंति तिह डारि कै ॥
अरि कहि नाम तुपक के सकल सुधार लै ॥
हो पड़्यो चहत तिह नर को तुरत सिखाइ लै ॥१२९४॥
सक्र सबद कहु आदि उचारन कीजीऐ ॥
अरि अरि कहि पति चार बार पद दीजीऐ ॥
सत्रु सबद कहु ता के अंति बखानीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥१२९५॥
सत क्रित अरि अरि आदि उचारन कीजीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के दीजीऐ ॥
सत्रु सबद को ता के अंति बखानि कै ॥
हो सकल तुपक के नाम लीजीअहु जानि कै ॥१२९६॥
सचीपतिरि अरि आदि सबद कहु भाखीऐ ॥
चार बार न्रिप सबद तवन के राखीऐ ॥
अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानीऐ ॥
हो छंद झूलना माझ निसंक बखानीऐ ॥१२९७॥
सक्ररदन अरि रिपु पद आदि बखानि कै ॥
तीन बार न्रिप पद कहु बहुरि प्रमानि कै ॥
सत्रु सबद कहि नाम तुपक के जानीऐ ॥
हो झूला छंदन माझ निसंक बखानीऐ ॥१२९८॥
आदि सबद पुरहूतरि उचारन कीजीऐ ॥
अरि कहि पितणीस अरि पद बहुरि भणीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजीऐ ॥
हो सुघर सोरठा माझि निडर हुइ दीजीऐ ॥१२९९॥
बासवारि अरि आदि उचारन कीजीऐ ॥
पितणी इसणी अरिणी अंति भणीजीऐ ॥
सकल तुपक के नाम चतुर जीअ जानीऐ ॥
हो छंद दोहरा माहि निसंक बखानीऐ ॥१३००॥
आदि ब्रितहा अरि अरि पदहि प्रमानि कै ॥
तीन बार इस सबद तवन के ठानि कै ॥
रिपु पुनि ठान तुपक के नाम पछान लै ॥
हो पड़ियो चाहत जो नर तिह भेद बताइ दै ॥१३०१॥
मघवातक अरि आदि सबद को भाखीऐ ॥
तीन बार न्रिप पदहि तवन के राखीऐ ॥
रिपु कहि नाम तुपक के सुघर लहीजीऐ ॥
हो कथा कीरतन माझि निसंक भणीजीऐ ॥१३०२॥
मातलेस्र अरि सबदहि आदि बखानि कै ॥

तीन बार न्रिप सबद तवन के ठानि कै ॥
सत्रु सबद फुनि ता के अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमत संभारीऐ ॥१३०३॥
जिसनातक अंतक सबदादि उचारीऐ ॥
तीन बार पद राज तवन के डारीऐ ॥
अरि पुनि तवनै अंति सबद के दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजीऐ ॥१३०४॥
पुरंद्रारि अरि आदि सबद कहु भाखि कै ॥
तीन बार न्रिप पदहि अंति तिह राखि कै ॥
बहुरि सत्रु पद अंति तवन के दीजीऐ ॥
हो सुघर तुपक के नाम सदा लखि लीजीऐ ॥१३०५॥

चौपई ॥

बज्रधररि अरि पद आदि बखानहु ॥
तीन बार ईसर पद ठानहु ॥
अरि पुनि अंति बहुरि तिह दीजै ॥
सभ स्री नाम तुपक लहि लीजै ॥१३०६॥
अड़िल ॥
तुराखाड़ अरि अरि पद आदि उचारीऐ ॥
तीन बार न्रिप पदहि अंति तहि धारीऐ ॥
सत्रु बहुरि पुनि अंति तवन के ठानि कै ॥
हो सकल तुपक के नाम लीजीअहु जानि कै ॥१३०७॥
रिपु पाकरि रिपु सबद अंति तिह भाखीऐ ॥
नाइक पद त्रै बार तवन के राखीऐ ॥
रिपु पुनि ता के अंति सुघर कहि दीजीऐ ॥
हो नाम तुपक बहु चीन उचारियो कीजीऐ ॥१३०८॥
इंद्रातक अरि आदि सबद को भाखीऐ ॥
नाइक पद त्रै बार तवन के राखीऐ ॥
सत्रु बहुरि पुनि ता के अंति धरीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम जान मन लीजीऐ ॥१३०९॥
देव सबद को मुख ते आदि बखानीऐ ॥
अरदन कहि अरदन पद अंति प्रमानीऐ ॥
तीन बार पति सबद तवन के भाखीऐ ॥
हो अरि कहि नाम तुपक के मन लहि राखीऐ ॥१३१०॥
अमरा अरदन सबद सु मुख ते भाखीऐ ॥
नाइक पद त्रै बार तवन के राखीऐ ॥
रिपु कहि नाम तुपक के सुघर पछानीऐ ॥
हो भेदाभेद कबित के माहि बखानीऐ ॥१३११॥
निरजरारि अरदन पद प्रिथम उचारि कै ॥
तीन बार न्रिप सबद तवन के डारि कै ॥
अरि कहि नाम तुपक के सुघर लहीजीऐ ॥
हो अड़िल छंद के माहि निडर हुइ दीजीऐ ॥१३१२॥
बिबुधातक अंतक सबदादि उचार कर ॥
तीन बार न्रिप सबद तवन के डार कर ॥
रिपु कहि नाम तुपक के सुघर बिचारीऐ ॥
हो छंद रुआला माझ निसंक उचारीऐ ॥१३१३॥
सुपरबाण पर अरि पद प्रिथम भणीजीऐ ॥
तीन बार पति सबद तवन पर दीजीऐ ॥
अरि पद भाख तुपक के नाम पछानीअहु ॥
हो छंद चंचरीआ माझ निडर हुऐ ठानीअहु ॥१३१४॥

प्रिथम सबद त्रिदवेस उचारन कीजीऐ ॥
अरि अरि कहि न्रिप पद त्रै वार भणीजीऐ ॥
सत्रु सबद ता के पुनि अंति उचारीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुबुधि बिचारीऐ ॥१३१५॥
ब्रिंदारक अरि अरि सबदादि उचारजै ॥
तीन बार पति सबद तवन के डारजै ॥
सत्रु सबद ता के पुनि अंति भनीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमति लहि लीजीऐ ॥१३१६॥
सभ बिवान के नाम भाखि गति भाखीऐ ॥
अरि अरि कहि न्रिप चार बार पद राखीऐ ॥
बहुर सत्रु पुनि अंति तवन के दीजीऐ ॥
हो सकल तुपक के नाम सुमति लहि लीजीऐ ॥१३१७॥
आदि अगनि जिव पद को सु पुनि बखानीऐ ॥
अरि अरि कहि न्रिप चार बार पुनि ठानीऐ ॥
रिपु पद भाखि तुपक के नाम पछानीऐ ॥
हो कबित काबि के माझि निसंक प्रमानीऐ ॥१३१८॥

◀ *इति स्री नाम माला पुराण स्री तुपक नाम पाचवों धिआइ समापतम सत सुभम सतु ॥4॥*

SECTION 18: CHARITAR PAKHYAN (TRIYA CHARITAR)

Tales of Women — Moral narratives · 404 Charitars

ੴवाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगौती ए नम ॥

अथ पख्यान चरित्र लिख्यते ॥

पातिसाही १० ॥

भुजंग छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

तुही खड़गधारा तुही बाढवारी ॥
तुही तीर तरवार काती कटारी ॥
हलबी जुनबी मगरबी तुही है ॥
निहारौ जहा आपु ठाढी वही है ॥१॥
तुही जोग माया तुसी बाकबानी ॥
तुही आपु रूपा तुही स्री भवानी ॥
तुही बिसन तू ब्रहम तू रुद्र राजै ॥
तुही बिस्व माता सदा जै बिराजै ॥२॥
तुही देव तू दैत तै जछु उपाए ॥
तुही तुरक हिंदू जगत मै बनाए ॥
तुही पंथ ह्वै अवतरी स्रिसटि माही ॥
तुही बक्रत ते ब्रहम बादो बकाही ॥३॥
तुही बिक्रत रूपा तुही चारु नैना ॥
तुही रूप बाला तुही बक्र बैना ॥
तुही बक्र ते बेद चारो उचारे ॥
तुमी सुंभ नैसुंभ दानौ संघारे ॥४॥
जगै जंग तो सौ भजै भूप भारी ॥
बधे छाडि बाना कढी बाढवारी ॥
तू नरसिंघ ह्वै कै हिरानाछ मार्यो ॥
तुमी दाड़ पै भूमि को भार धार्यो ॥५॥
तुमी राम ह्वै कै हठी दैत घायो ॥
तुमी क्रिसन ह्वै कंस केसी खपायो ॥
तुही जालपा कालका कै बखानी ॥
तुही चौदहूं लोक की राजधानी ॥६॥
तुही काल की रात्रि ह्वै कै बिहारै ॥
तुही आदि उपावै तुही अंत मारै ॥
तुही राज राजेस्वरी कै बखानी ॥
तुही चौदहूं लोक की आपु रानी ॥७॥
तुमै लोग उग्रा अतिउग्रा बखानै ॥
तुमै अद्रजा ब्यास बानी पछानै ॥
तुमी सेस की आपु सेजा बनाई ॥
तुही केसर बाहनी कै कहाई ॥८॥
तुतो सार कूटान किरि कै सुहायो ॥
तुही चंड औ मुंड दानो खपायो ॥
तुही रकत बीजारि सौ जुध कीनो ॥
तुमी हाथ दै राखि देवे सु लीनो ॥९॥
तुमी महिक दानो बडे कोपि घायो ॥

तू धूम्राछ ज्वालाछ की सौ जरायो ॥
तुमी कौच बक्रतापने ते उचार्यो ॥
बिडालाछ औ चिछुराछस बिडार्यो ॥१० ॥
तुमी डह डह कै डवर को बजायो ॥
तुही कह कह कै हसी जुधु पायो ॥
तुही असट असट हाथ मै असत्र धारे ॥
अजै जै किते केस हूं ते पछारे ॥११ ॥
जयंती तुही मंगला रूप काली ॥
कपालनि तुही है तुही भद्रकाली ॥
द्रुगा तू छिमा तू सिवा रूप तोरो ॥
तू धात्री स्वाहा नमसकार मोरो ॥१२ ॥
तुही प्रात संध्रया अरुन बसत्र धारे ॥
तुमं ध्यान मै सुकल अंबर सु धारे ॥
तुही पीत बाना सयंकाल धार्यो ॥
सभै साधूअन को महा मोह टार्यो ॥१३ ॥
तुही आप को रकत दंता कहै है ॥
तुही बिप्र चिंतान हूं को चबै है ॥
तुही नंद के धाम मै औतरैगी ॥
तु साकं भरी साक सो तन भरैगी ॥१४ ॥
तु बौधा तुही मछ को रूप कै है ॥
तुही कछ ह्वै है समुंद्रहि मथै है ॥
तुही आपु दिज राम को रूप धरि है ॥
निछत्रा प्रिथी बार इकीस करि है ॥१५ ॥
तुही आप कौ निहकलंकी बनै है ॥
सभै ही मलेछान को नास कै है ॥
माइया जान चेरो मया मोहि कीजै ॥
चहौ चित मै जो वहै मोहि दीजै ॥१६ ॥
सवैया ॥
मुंड की माल दिसान के अंबर बाम करियो गल मै असि भारो ॥
लोचन लाल कराल दिपै दोऊ भाल बिराजत है अनियारो ॥
छूटे है बाल महा बिकराल बिसाल लसै रद पंति उज्यारो ॥
छाडत ज्वाल लए कर ब्रयाल सु काल सदा प्रतिपाल तिहारो ॥१७ ॥
भान से तेज भयानक भूतज भूधर से जिन के तन भारे ॥
भारी गुमान भरे मन भीतर भार परे नहि सी पग धारे ॥
भालक जयो भभकै बिनु भैरन भैरव भेरि बजाइ नगारे ॥
ते भट झूमि गिरे रन भूमि भवानी जू के भलकान के मारे ॥१८ ॥
ओट करी नहि कोटि भुजान की चोट परे रन कोटि संघारे ॥
कोटन से जिन के तन राजित बासव सौ कबहूं नहि हारे ॥
रोस भरे न फिरे रन ते तन बोटिन लै नभ गीध पधारे ॥
ते न्रिप घूमि गिरे रन भूमि सु काली के कोप क्रिपान के मारे ॥१९ ॥
अंजन से तन उग्र उदायुधु धूमरी धूरि भरे गरबीले ॥
चौपि चड़े चहूं ओरन ते चित भीतरि चौपि चिरे चटकीले ॥
धावत ते धुरवा से दसो दिसि ते झट दै पटकै बिकटीले ॥
रौर परे रन राजिव लोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥२० ॥
कोटिन कोट सौ चोट परी नहि ओट करी भए अंग न ढीले ॥
जे निपटे अकटे भट ते चट दै छित पै पटके गरबीले ॥
जे न हटे बिकटे भट काहू सौ ते चट दै चटके चटकीले ॥
गौर परे रन राजिव लोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥२१ ॥
धूमरी धूरि भरे धुमरे तन धाए निसाचर लोह कटीले ॥
मेचक पबन से जिन के तन कौच सजे मदमत जटीले ॥

राम भनै अति ही रिसि सो जग नाइक सौ रन ठाट ठटीले ॥
ते झट दै पटके छित पै रन रौर परे रन सिंघ रजीले ॥२२॥
बाजत डंक अतंक समै लखि दानव बंक बडे गरबीले ॥
छूटत बान कमानन के तन कै न भए तिन के तन ढीले ॥
ते जग मात चितै चपि कै चटि दै छित पै चटके चटकीले ॥
रौर परे रन राजिव लोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥२३॥
जंग जगे रन रंग समै अरिधंग करे भट कोटि दुसीले ॥
रुंडन मुंड बिथार घने हर कौ पहिरावत हार छबीले ॥
धावत है जितही तितही अरि भाजि चले कितही करि हीले ॥
रौर परे रन राविज लोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥२४॥
सुंभ निसुंभ ते आदिक सूर सभे उमडे करि कोप अखंडा ॥
कौच क्रिपान कमानन बान कसे कर धोप फरी अरु खंडा ॥
खंड भए जु अखंडल ते नहि जीति फिरे बसुधा नव खंडा ॥
ते जुत कोप गिरेबनि ओप क्रिपान के कीने कीए कटि खंडा ॥२५॥

तोटक छंद ॥

जब ही कर लाल क्रिपान गही ॥
नहि मो ते प्रभा तिह जात कही ॥
तिह तेजु लखे भट यौ भटके ॥
मनो सूर चड़्यो उड से सटके ॥२६॥
कुपि कालि क्रिपान करं गहि कै ॥
दल दैतन बीच परी कहि कै ॥
घटिका इक बीच सभो हनिहौं ॥
तुम ते नहि एक बली गनिहौं ॥२७॥
सवैया ॥
मंदल तूर म्रिदंग मुचंगन की धुनि कै ललकारि परे ॥
अरु मान भरे मिलि आनि अरे न गुमान कौ छाडि कै पैगु टरे ॥
तिन के जम जदिप प्रान हरे न मुरे तब लौ इह भाति अरे ॥
जस को करि कै न चले डरि कै लरि कै मरि कै भव सिंध तरे ॥२८॥
जेन मिटे बिकटे भट काहू सों बासव सौ कबहूं न पछेले ॥
ते गरजे जब ही रन मै गन भाजि चले बिनु आपु अकेले ॥
ते कुपि कालि कटे झट कै कदली बन ज्यों धरनी पर मेले ॥
स्रोन रंगीन भए पट मानहु फागु समै सभ चाचरि खेले ॥२९॥

दोहरा ॥

चड़ी चंडिका चंड ह्वै तपत ताम्र से नैन ॥
मत भई मदरा भए बकत अटपटे बैन ॥३०॥
सवैया ॥
सभ सत्रन को हनिहौ छिन मै सु कहियो बच कोप कीयो मन मै ॥
तरवारि संभारि महा बल धारि धवाइ कै सिंघ धसी रन मै ॥
जग मात के आयुधु हाथन मै चमकै ऐसे दैतन के गन मै ॥
लपकै झपकै बड़वानल की दमकै मनो बारिध के बन मै ॥३१॥
कोप अखंड कै चंडि प्रचंड मिआन ते काढि क्रिपान गही ॥
दल देव औ दैतन की प्रतिना लखि तेग छटा छब रीझ रही ॥
सिर चिछुर के इह भाति परी नहि मो ते प्रभा तिह जात कही ॥
रिपु मारि कै फारि पहार से बैरी पतार लगे तरवारि बही ॥३२॥

दोहरा ॥

तुपक तबर बरछी बिसिख असि अनेक झमकाहि ॥

धुजा पताका फरहरै भान न हेरे जाहि ॥३३॥
रन मारू बाजै घने गगन गीध मंडराहि ॥
चटपट दै जोधा बिकट झटपट कटि कटि जाहि ॥३४॥
अनिक तूर भेरी प्रणव गोमुख अनिक म्रिदंग ॥
संख बेनु बीना बजी मुरली मुरज मुचंग ॥३५॥
नाद नफीरी कानरे दुंदभ बजे अनेक ॥
सुनि मारू कातर भिरे रन तजि फिरियो न एक ॥३६॥
किचपचाइ जोधा मंडहि लरहि सनंमुख आन ॥
धुकि धुकि परै कबंध भूअ सुर पुर करै पयान ॥३७॥
रन फिकरत जंबुक फिरहि आसिख अचवत प्रेत ॥
गीध मास लै लै उडहि सुभट न छाडहि खेत ॥३८॥
सवैया ॥
निस ननाद डह डह डामर दै दै दमामन कौ निजकाने ॥
भूर दईतन को दल दारुन दीह हुते करि एक न जाने ॥
जीति फिरै नवखंडन कौ नहि बासव सो कबहूं डरपाने ॥
ते तुम सौ लरि कै मरि कै भट अंत को अंत के धाम सिधाने ॥३९॥

दोहरा ॥

रन डाकिनि डहकत फिरत कहकत फिरत मसान ॥
बिनु सीसन डोलत सुभट गहि गहि करन क्रिपान ॥४०॥
असि अनेक काढे करन लरहि सुभट समुहाइ ॥
लरि गिरि मरि भू पर परै बरै बरंगनि जाइ ॥४१॥
अनतरया ज्यो सिंधु को चहत तरन करि जाउ ॥
बिनु नौका कैसे तरै लए तिहारो नाउ ॥४२॥
मूक उचरै सासत्र खट पिंग गिरन चड़ि जाइ ॥
अंध लखै बदरो सुनै जो तुम करौ सहाइ ॥43॥
अरघ गरभ न्रिप त्रियन को भेद न पायो जाइ ॥
तऊ तिहारी क्रिपा ते कछु कछु कहो बनाइ ॥४४॥
प्रथम मानि तुम को कहो जथा बुधि बलु होइ ॥
घटि कबिता लखि कै कबहि हास न करियहु कोइ ॥४५॥
प्रथम ध्याइ स्री भगवती बरनौ त्रिया प्रसंग ॥
मो घट मै तुम ह्वै नदी उपजहु बाक तरंग ॥४६॥
सवैया ॥
मेरु कियो त्रिण ते मुहि जाहि गरीब निवाज न दूसर तोसौ ॥
भूल छिमो हमरी प्रभु आपु न भूलनहार कहूं कोऊ मो सौ ॥
सेव करै तुमरी तिन के छिन मै धन लागत धाम भरोसौ ॥
या कलि मै सभि कलि क्रिपान की भारी भुजान को भारी भरोसौ ॥४७॥
खंडि अखंडन खंड कै चंडि सु मुंड रहे छित मंडल माही ॥
दंडि अदंडन को भुजदंडन भारी घमंड कियो बल बाही ॥
थापि अखंडल कौ सुर मंडल नाद सुनियो ब्रहमंड महा ही ॥
क्रूर कवंडल को रन मंडल तो सम सूर कोऊ कहूं नाही ॥४८॥

CHARITAR १ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने चंडी चरित्रे प्रथम ध्याइ समापतम सतु सुभम सतु ॥1॥48॥अफजूं॥

दोहरा ॥

चित्रवती नगरी बिखै चित्र सिंघ न्रिप एक ॥

ते के ग्रिह संपति घनी रथ गज बाज अनेक ॥१॥
ता को रूप अनूप अति जो बिधि धरियो सुधारि ॥
सुरी आसुरी किंन्रनी रीझि रहत पुर नारि ॥२॥
एक अपसरा इंद्र के जात सिंगार बनाइ ॥
निरख राइ अटकति भई कंज भवर के भाइ ॥३॥
अड़िल ॥
रही अपसरा रीझि रूप लखि राइ को ॥
पठी दूतिका छल करि मिलन उपाइ को ॥
बिनु प्रीतम के मिले हलाहल पीवहो ॥
हो मारि कटारी मरिहो घरी न जीवहो ॥४॥

दोहरा ॥

ताहि दूतिका राइ सो भेद कह्यो समुझाइ ॥
बरी राइ सुख पाइ मन दुंदभि ढोल बजाइ ॥५॥
एक पुत्र ता ते भयो अमित रूप की खानि ॥
महा रुद्र हूं रिसि करे कामदेव पहिचानि ॥६॥
बहुत बरसि संग अपसरा भूपति माने भोग ॥
बहुरि अपसरा इंद्र के जात भई उडि लोग ॥७॥
तिह बिनु भूतति दुखित ह्वै मंत्री लए बुलाइ ॥
चित्र चित्रि ता को तुरित देसन दयो पठाइ ॥८॥
खोजत ओडछ नाथ के लही कंनिका एक ॥
रूप सकल सम अपसरा ता ते गुनन बिसेख ॥९॥

चौपई ॥

सुनत बचन न्रिप सैन बुलायो ॥
भाति भाति सो दरबु लुटायो ॥
साजे ससत्र कौच तन धारे ॥
सहर ओडछा ओर सिधारे ॥१०॥
भेव सुनत उनहूं दल जोरियो ॥
भाति भाति भए सैन निहोरियो ॥
रन छत्रिन को आइसु दीनो ॥
आपुन जुध हेत मनु कीनो ॥११॥

दोहरा ॥

भाति भाति मारू बजे मंडे सुभट रन आइ ॥
अमित बान बरछा भए रहत पवन उरझाइ ॥१२॥

भुजंग छंद ॥

बधे बाढवारी महा बीर बाके ॥
कछै काछनी ते सभै ही निसाके ॥
धए सामुहे वै हठी जुध जारे ॥
हटै न हठीले कहूं ऐठियारे ॥१३॥

दोहरा ॥

हनिवति सिंघ आगे कियो अमित सैन दै साथ ॥
चित्र सिंघ पाछे रहियो गहै बरछिया हाथ ॥१४॥
सवैया ॥
हाकि हजार हिमालय सो हल काहनि कै हठवारन हूंके ॥

हिंमति बाधि हिरौलहि लौ कर लै हथिआर हहा कहि ढूके ॥
हालि उठियो गिर हेम हलाचल हेरत लोग हरी हर जू के ॥
हारि गिरे बिनु हारे रहे अरु हाथ लगे अरि हासी हनूं के ॥१५ ॥
ठाढे जहा सरदार बडे कुपि कौच क्रिपान कसे पठनेटे ॥
आनि परे हठ ठानि तही सिरदारन तेटि बरंगनि भेटे ॥
भारी भिरे रन मै तब लौ जब लौ नहि सार की धार लपेटे ॥
सत्रु की सैन तरंगनि तुलि ह्वै ता मै तरंग तरे खतिरेटे ॥१६ ॥

दोहरा ॥

मारि ओडछा राइ को लई सुता तिह जीति ॥
बरी राइ सुख पाइ मन मानि सासत्र की रीति ॥१७ ॥
ओडछेस जा की हितू चित्रमती तिह नाम ॥
हनिवति सिंघहि सो रहै चितवत आठो जाम ॥१८ ॥
पड्न हेतु ता कौ न्रिपति सौप्यो दिज ग्रिह माहि ॥
एक मास ता सौ कहियो दिजबर बोल्यहु नाहि ॥१९ ॥

चौपई ॥

राजे निजु सुत निकट बुलायो ॥
दिजबर ताहि संग लै आयो ॥
पड़ो पड़्यो गुन छितपति कहियो ॥
सुन सुअ बचन मोनि ह्वै रहियो ॥२० ॥

दोहरा ॥

लै ता को राजै किया अपने धाम पयान ॥
सखी सहस ठाढी जहा सुंदरि परी समान ॥२१ ॥
बोलत सुत मुख ते नही यौ न्रिप कहियो सुनाइ ॥
चित्रपती तिह लै गई अपुने सदन लवाइ ॥२२ ॥
अड़िल ॥
चोर चतुरि चित लयो कहो कस कीजीऐ ॥
काढि करिजवा अपन लला कौ दीजीऐ ॥
जंत्र मंत्र जौ कीने पीअहि रिझाईऐ ॥
हो तदिन घरी के सखी सहित बलि जाईऐ ॥२३ ॥

दोहरा ॥

अति अनूप सुंदर सरस मनो मैन के ऐन ॥
मो मन को मोहत सदा मित्र तिहारे नैन ॥२४ ॥
सवैया ॥
बान बधी बिरहा के बलाइ लियो रीझि रही लखि रूप तिहारो ॥
भोग करो मुहि साथ भली बिधि भूपति को नहि त्रास बिचारो ॥
सो न करै कछु चारु चितैबे को खाइ गिरी मन मैन तवारो ॥
कोटि उपाइ रही कै दया की सो कैसे हूं भीजत भयो न ऐठ्यारो ॥२५ ॥

दोहरा ॥

चित चेटक सो चुभि गयो चमकि चक्रित भयो अंग ॥
चोरि चतुर चित लै गयो चपल चखन के संग ॥२६ ॥
चेरि रूप तुहि बसि भई गहौं कवन की ओट ॥
मछरी ज्यो तरफै परी चुभी चखन की चोट ॥२७ ॥

चौपई ॥

वा की कही न न्रिप सुत मानी ॥
चित्रमती तब भई खिसानी ॥
चित्र सिंघ पै जाइ पुकारो ॥
बडो दुसट इह पुत्र तुहारो ॥२८॥

दोहरा ॥

फारि चीर कर आपने मुख नख घाइ लगाइ ॥
राजा को रोखित कियौ तन को चिहन दिखाइ ॥२९॥

चौपई ॥

बचन सुनत क्रुधित न्रिप भयो ॥
मारन हेत सुतहि लै गयो ॥
मंत्रिन आनि राव समुझायो ॥
त्रिया चरित्र न किनहूं पायो ॥३०॥

CHARITAR २ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दुतिय चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥2॥78॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दियो पठाइ ॥
भोर होत अपने निकटि बहुरौ लियो बुलाइ ॥१॥
एक पुत्रिका ग्वार की ता को कहो बिचार ॥
एक मोटिया यार तिह और पतरिया यार ॥२॥
स्री म्रिग चछुमती रहै ता को रूप अपार ॥
ऊच नीच ता सौ सदा नितप्रति करै जुहार ॥३॥

चौपई ॥

सहर कालपी माहि बसत तै ॥
भाति भाति के भोग करै वै ॥
स्री म्रिग नैन मती तह राजै ॥
निरखि छपाकरि की छबि लाजै ॥४॥

दोहरा ॥

बिरधि मोटियो यार तिह तरुन पतरियो यार ॥
रात दिवस ता सौ करै द्वैवै मैन बिहार ॥५॥
होत तरुन के तरुनि बसि बिरध तरुनि बसि होइ ॥
इहै रीति सभ जगत की जानत है सभ कोइ ॥६॥
तरुनि पतरिया सौ रमै मोटे निकट न जाइ ॥
जौ कबहूं ता सौ रमे मन भीतर पछुताइ ॥७॥
रमत पतरिया संग हुती आनि मोटीए यार ॥
पायन कौ खरको कियो तवनि तरुनि के द्वार ॥८॥
कहियो पतरीए यार कह जाहु दिवरियहि फाधि ॥
जिन कोऊ पापी आइ है मुहि तुहि लैहै बाधि ॥९॥
अति रति ता सौ मानि कै यार पतरियहि टारि ॥

भरभराइ उठि ठाढ भी जानि मोटियो यार ॥१०॥
उठत बीरज भू पर गिरियो लख्यो मोटिये यार ॥
या को तुरत बताइयै भेद रमै सु कुमारि ॥११॥
अधिक तिहारो रूप लखि मोहि न रही संभार ॥
ता ते गिरियो अनंग भूअ सक्यो न बीरज उबार ॥१२॥
फूलि गयो पसु बात सुनि निजु सुभ मानै अंग ॥
मोहि निरखि छबि बाल को छित पर गिरियो अनंग ॥१३॥

CHARITAR ३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रितय चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥3॥91॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बंदिसाल न्रिप पूत पठायो ॥
भई भोर फिरि पकरि मगायो ॥
मंत्री प्रभु सो बचन उचरे ॥
भूपति सुधा स्रवनु जनु भरे ॥१॥

दोहरा ॥

महानंद मुरदार की हुती बहुरिया एक ॥
ता सो रति मानत हुते हिंदू तुरक अनेक ॥२॥
महानंद मुरदार की घुरकी त्रिय को नाम ॥
कोप समै निजु नाह को घुरकत आठो जाम ॥३॥
एक चछ ता को रहै बिरधि आपु त्रिय ज्वान ॥
सो या पर रीझत नही या के वा महि प्रान ॥४॥
काज कवन हूं के निमिति गयो धाम को धाइ ॥
तरुन पुरख सो तरुनि तह रही हुती लपटाइ ॥५॥
महानंद आवत सुन्यो लयो गरे सौ लाइ ॥
अति बचित्र बातै करी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥६॥
कान दोऊ गहिरे गहे चुंमि एक द्रिग लीन ॥
इह छल सौ छलि कै जड़हि यार बिदा करि दीन ॥७॥
स्रवनन कछु खरको सुनै इक चखु सकै न हेरि ॥
परो सदा मोरे रहै लहै न भेव अधेर ॥८॥
हेरि रूप तव बसि भई मो मन बढ्यो अनंग ॥
चूंमि नेत्र ता ते लयो अति हित चित के संग ॥९॥
महानंद इह बात सुनि फूलि गयो मन माहि ॥
अधिक प्रीति ता सो करी भेद पछान्यो नाहि ॥१०॥

CHARITAR ४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चतुरथे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥4॥101॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दयो पठाइ ॥
भोर होत अपने निकटि बहुरो लीयो बुलाइ ॥१॥

चौपई ॥

बंदिसाल न्रिप पूत पठायो ॥
भई भोर फिरि पकर मंगायो ॥
मंत्री प्रभु सो बचन उचारे ॥
जानुक सोक दूरि करि डारे ॥२॥

दोहरा ॥

इक जोगी बन मै हुतो द्रुम मै कुटी बनाइ ॥
एक साह की सुता को लै ग्यो मंत्र चलाइ ॥३॥

चौपई ॥

कासिकार को साहिक जनियत ॥
सहज कला तिह सुता बखनियत ॥
ता को हरि जोगी लै गयो ॥
राखत एक बिरछ मै भयो ॥४॥

दोहरा ॥

करी किवारी बिरछ की खोदि कियो तिह ग्रेह ॥
राति दिवस ता कौ भजै अधिक बढाइ सनेह ॥५॥
मारि किवरिया बिरछ की आपि नगर मै आइ ॥
मागि भिछा निसि के समै रहत तिसी द्रुम जाइ ॥६॥
जाइ तहा आपन करै हाथन को ततकार ॥
सुनत सबद ताकी तरुनि छोरत करन किवार ॥७॥

चौपई ॥

ऐसी भाति नित्य जड करै ॥
मधुर मधुर धुनि बैनु उचरै ॥
राज कला बिनसी सभ गावै ॥
सहज कला बिनसी न सुनावै ॥८॥

दोहरा ॥

तिही नगर मै अति चतुर हुतो पुत्र इक भूप ॥
बल गुन बिक्रम इंद्र सम सुंदर काम सरूप ॥९॥
सुरी आसुरी किंन्रनी गंधरबी किन माहि ॥
हिंदुनी तुरकानी सभै हेरि रूप बलि जाहि ॥१०॥

चौपई ॥

न्रिप सुत ता के पाछे धायो ॥
तिन जुगयहि कछु भेद न पायो ॥
जब वह जाइ बिरछ मै बरियो ॥
तब छित पति सुत द्रुम पर चरियो ॥११॥
भयो प्रात जोगी पुर आयो ॥
उतरि भूप सुत ताल बजायो ॥
छोरि किवार कुअरि तिन दीनो ॥
ता सौ कुअर भोग द्रिड़ कीनो ॥१२॥

दोहरा ॥

लेहज पेहज भछ सुभ भोजन भलो खवाइ ॥

ता सौ रति मानत भयो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१३॥
ता त्रिय को जो चित हुतो न्रिप सुत लियो चुराइ ॥
ता दिन ते तिह जोगियहि चित ते दियो भुलाइ ॥१४॥
अड़िल ॥
भलो हेरि करि बुरौ न कबहु निहारियै ॥
चतुर पुरखु को पाइ न मूरख चितारियै ॥
धनी चतुर अरु तरुनि तरुनि जो पाइ है ॥
हो बिरध कुरूप निधन जड़ पै कियो जाइ है ॥१५॥

दोहरा ॥

साह सुता ता सौ कहियो संग चलहु लै मोहि ॥
भोग करोगी जोग तजि अधिक रिझैहो तोहि ॥१६॥

चौपई ॥

तब मै चलौ संग लै तो कौ ॥
जुगयहि बोलि मानु हित मो कौ ॥
आखि मूंदि दोऊ बीन बजैयै ॥
मोरे कर के तालि दिवैयै ॥१७॥
आखि मूंदि दोऊ बीन बजाई ॥
तिह त्रिय घात भली लखि पाई ॥
न्रिप सुत के संग भोग कमायो ॥
चोट चटाकन ताल दिवायो ॥१८॥

दोहरा ॥

अति रति करि ता को लियो अपने है करि स्वार ॥
नगर साल पुर को गयो बिरछ किवरियहि मारि ॥१९॥

CHARITAR ५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पंचमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥5॥120॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दियो पठाइ ॥
भोर होत मंत्री सहित बहुरो लियौ बुलाइ ॥१॥
पुनि मंत्री ऐसे कही एक त्रिया की बात ॥
सो सुनि न्रिप रीझत भयो कहो कहो मुहि तात ॥२॥
एक बधू थी जाट की दूजे बरी गवार ॥
खेलि अखेटक न्रिपति इक आनि भयो तिह यार ॥३॥
अड़िल ॥
लंग चलाला को इक राइ बखानियै ॥
मधुकर साह सु बीर जगत मै जानियै ॥
माल मती जटिया सौ नेहु लगाइयो ॥
हो खेलि अखेटक भवन तवन के आइयो ॥४॥

दोहरा ॥

खेलि अखेटक आनि न्रिप रति मानी तिह संग ॥
इही बीच आवत भयो जाट रीछ कै संग ॥५॥

जाटावत लखि न्रिप डरियो कहियो न डरि बलि जाउ ॥
तिह देखत तुहि काढि हौ ता के सिर धरि पाउ ॥६॥
अड़िल ॥
एक कुठरिया बीच राव को राखियो ॥
रोइ बचन मूरख सो इह बिधि भाखियो ॥
रैन समै इक बुरो सुपन मुहि आइयो ॥
हो जानुक तो कह स्याम भुजंग चबाइयो ॥७॥

दोहरा ॥

ता ते मै अपने सदन दिजबर लियो बुलाइ ॥
उन मो को ऐसे कहियो भेद सकल समझाइ ॥८॥
जो कोऊ नारि पतिब्रता जापु जपै हितु लाइ ॥
अकस मात्र प्रगटै पुरख एक भूप के भाइ ॥९॥
जौ तुमरे सिर जाइ धरि पुरख पाव बडभाग ॥
जो तुम हूं जीवत बचो हमरो बचै सुहाग ॥१०॥
ता ते तव आग्या भए जापु जपत हौ जाइ ॥
तुमरे मरे मै जरि मरो जिये जिवो सुखु पाइ ॥११॥
जौ हौ हो सु पतिब्रता जौ मो मै सत आइ ॥
एक पुरख तब जाइ धरि या के सिर परि पाइ ॥१२॥
सुनत बचन राजा उठियो ता के सिर पग ठानि ॥
गयो प्रसंन्य मूरख भयो त्रिया पतिब्रत जानि ॥१३॥

CHARITAR ६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे खसटमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥6॥133॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

साहजहानाबाद मै एक तुरक की नारि ॥
इक चरित्र अति तिन कियो सो तुहि कहो सुधारि ॥१॥
अनिक पुरख ता सो सदा निसु दिन केल कमाहि ॥
स्वान हेरि लाजत तिनै इक आवहि इक जाहि ॥२॥

चौपई ॥

सो इक रहै मुगल की बामा ॥
जैनाबादी ता को नामा ॥
बहु पुरखन सो केल कमावै ॥
अधिक ढीठ नहि ह्रिदै लजावै ॥३॥

दोहरा ॥

जाहिद खा आगे हुतो बेग यूसफ गयो आइ ॥
भरभराइ उठ ठाढ भी ताहि बैद ठहराइ ॥४॥
अड़िल ॥
टरि आगे तिह लियो बचन यौ भाखियो ॥
तुमरे अरथहि बैद बोलि मै राखियो ॥
ता ते बेगि इलाज बुलाइ कराइयै ॥
हो ह्वै करि अबै अरोग तुरत घर जाइयै ॥५॥

दोहरा ॥

दौरे आवत हौकनी सोए ऊरध स्वास ॥
बहु ठाढे जानूं दुखै यहै त्रिदोख प्रकास ॥६॥
अड़िल ॥
तुमरो करो इलाज न हासी जानियो ॥
रोग हेत अनुसरौ बुरै मति मानियो ॥
बैद धाइ गुर मित ते भेद दुराइयै ॥
हो कहौ कवन के आगे ब्रिथा जनाइयै ॥७॥

कबितु ॥

दादुरी चबाई ता के मूरियो धसाई घनी धेरिन चुगाई वाहि जूतिन की मारि कै ॥
राख सिर पाई ता की मूंछै भी मुंडाई दोऊ ऐसी लीकै लाई कोऊ सकै न उचारि कै ॥
गोदरी डराई ता ते भीख भी मंगाई तिह ऐसो कै चरित्र ताहि ग्रिह ते निकारि कै ॥
त्रिय को ऐसो चरित्र वाहि को दिखाइ जार आपु टरि गयो महा मूरख को टारि कै ॥८॥

चौपई ॥

भीख माग बहुरो घर आयो ॥
तहा तवन को दरस न पायो ॥
कह गयो जिन मुर रोग घटाइस ॥
यह जड़ भेव नैक न पाइस ॥९॥
तब अबला यौ बचन उचारे ॥
कहो बात सुनु मीत हमारे ॥
सिधि औखध जा के कर आयो ॥
दै तिन बहुरि न दरस दिखायो ॥१०॥

दोहरा ॥

मंत्री और रसाइनी जौ भागनि मिलि जात ॥
दै औखध तब ही भजै बहुरि न दरस दिखात ॥११॥

चौपई ॥

ता को कहियो सति करि मान्यो ॥
भेद अभेद जड़ कछू न जान्यो ॥
ता सो अधिक सु नेह सु धारियो ॥
मेरो बडो रोग त्रिय टारियो ॥१२॥

CHARITAR ७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सपतमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥7॥145॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहर अकबराबाद मै त्रिया क्रिया की हीन ॥
मंत्र जंत्र अरु तंत्र सभ तिन मै अधिक प्रबीन ॥१॥
स्री अनुराग मती कुअरि लोग बखानहि ताहि ॥
सुरी आसुरी किंन्रनी रीझि रहत लखि वाहि ॥२॥
अड़िल ॥
बहु पुरखन सो बाल सदा रति मानई ॥
काहू की नहि लाज ह्रिदै मै आनई ॥

सैयद सेख पठान मुगल बहु आवई ॥
हो ता सो भोग कमाइ बहुरि घर जावई ॥३॥

दोहरा ॥

ऐसे ही ता सौ सभै नितिप्रति भोग कमाहि ॥
बरिया अपनी आपनी इक आवै इक जाहि ॥४॥
प्रथम पहर सैयद रमै सेख दूसरे आनि ॥
त्रितिय पहर मुगलावई चौथे पहर पठान ॥५॥

चौपई ॥

भूल पठान प्रथम ही आयो ॥
पुनि सैयद मुखि आनि दिखायो ॥
लै सु पठान खाट तर दीनो ॥
सैयदहि लाइ गरे सौ लीनो ॥६॥
सेख सैयद के पाछे आयो ॥
घास बिखै सैयदहि छपायो ॥
तब लौ मुगल आइ ही गयो ॥
सेखहि डारि गोनि महि दीयो ॥७॥

दोहरा ॥

तिह पाछे कुटवार के गए पयादे आइ ॥
तुरतु कुठरिया नाज की मुगलहि दयो दुराइ ॥८॥
घेरि पयादन जब लई रहियो न कछू उपाइ ॥
निकसि आपु ठाढी भई ग्रिह कौ आगि लगाइ ॥९॥
दुहूं हाथ पीटत भई जरियो जरियो ग्रिह भाखि ॥
वै चारौ ता मै जरे किनहूं न हेरी राखि ॥१०॥

CHARITAR ८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे असटमे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥8॥155॥अफज्रूं॥*

दोहरा ॥

सहर लहौर बिखै हुती एक बहुरिया साह ॥
कमल निरखि लोचन जलत हेरि लजत मुख माह ॥१॥

चौपई ॥

स्री जगजोति मती तिह नामा ॥
जा सम और न जग मो बामा ॥
अधिक तरुन की प्रभा बिराजै ॥
लखि ता कौ तड़िता तन लाजै ॥२॥

दोहरा ॥

इक राजा अटकत भयो निरखि तरनि के अंग ॥
रति मानी रुचि मानि कै अति हित चित कै संग ॥३॥
सो न्रिप पर अटकत भई निति ग्रिह लेत बुलाइ ॥
चित्रकला इक सहचरी तिह ग्रिह ताहि पठाइ ॥४॥

चित्रकला जो सहचरी सो न्रिप रूप निहारि ॥
गिरी मूरछना ह्वै धरनि हर अरि सर गयो मारि ॥५ ॥

चौपई ॥

उठत बचन न्रिप साथ उचारे ॥
आजु भजो मुहि राज पिआरे ॥
हेरि तुमै हर अरि बस भई ॥
मो कह बिसरि सकल सुधि गई ॥६ ॥

दोहरा ॥

सुनत बचन न्रिप न करियो ता सौ भोग बनाइ ॥
संग ल्याइ इह खाइ रिसि कहियो साह सौ जाइ ॥७ ॥
अड़िल ॥
सुनत बचन तिह साह तुरत घर आइयो ॥
लखियो तवन त्रिय भेद अधिक दुख पाइयो ॥
मोरि निरखि पति न्रिप को जिय ते मारि है ॥
हो ता पाछे हमहूं कौ तुरत संघारि है ॥८ ॥

दोहरा ॥

ता ते आगे कीजियै न्रिप को तुरत उपाइ ॥
जिय ते जियत निकारियै भोजन भलो खवाइ ॥९ ॥
इक सफ बीच लपेटि तिह धरियो भीत सो लाइ ॥
जाइ साह आगे लियौ भोजन भलो मंगाइ ॥१० ॥
अड़िल ॥
भोजन भलो साह कौ ताहि खवाइयो ॥
बहुरि बचन ता को इह भाति सुनाइयो ॥
भरि मेवा की मुठि या सफ मो डारियै ॥
हो परे जीतिबै दाव परे बिनु हारियै ॥११ ॥

दोहरा ॥

मेवा साहुनि साहु लै तिह सफ भीतरि डारि ॥
खाहि न्रिपति तू भछ सुभ ऐसे कहियो सुधारि ॥१२ ॥
सुनत साहु चमक्यो बचन त्रिय कौ कहियो रिसाइ ॥
तै मुहि क्यो राजा कहियो मो कहु बात बताइ ॥१३ ॥
धाम रहत तोरे सुखी तो सौ नेहु बढाइ ॥
ता ते मै राजा कहियो मेरे तुम ही राइ ॥१४ ॥
रीझ गयो जड़ बात सुनि भेद न सकियो पछानि ॥
तुरति गयो हाटै सु उठि अधिक प्रीति मन मानि ॥१५ ॥
साहु गए त्रिय साह की न्रिप को दयो निकारि ॥
सुनत बात अति कोप कै अधिक लौडियहि मारि ॥१६ ॥

CHARITAR ९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नौमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥9॥171॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

तवन लौडियहि साहु त्रिय मारी जौ रिसि खाइ ॥

किय चरित्र तिन मंत्रियन न्रिप सो कहियो सुनाइ ॥१॥

चौपई ॥

चोटन लगे रोह मन आनो ॥
जाइ सैयद सो करियो यरानो ॥
नित तिह अपने सदन बुलावै ॥
साहु त्रिया को दरबु लुटावै ॥२॥

दोहरा ॥

साहु त्रिया की खाट पर इक दिन ताहि सवाइ ॥
साहु त्रिया सो अगमनै कहियो बचन सौ जाइ ॥३॥
तवनै न्रिप तुअ हित परियो बेगि बुलावत तोहि ॥
चलो अबै उठि तुम तहा बात स्रवन धरि मोहि ॥४॥
न्रिप ठाढो हेरै तुमै तुमरे अति हित पागि ॥
बेगि चलो उठि तहा तुम जहा बरतु है आगि ॥५॥
सुनत बचन त्रिय तह चली कहियो न्रिपति सो धाइ ॥
सोइ यार तुमरी रही गहो चरन दोऊ जाइ ॥६॥
आपु अगमने दौरि कै सैयदहि कहियो सुनाइ ॥
गहि क्रिपान जागत रहो जिनि न गहै कोऊ आइ ॥७॥
चोर जरावत आगि जह तह त्रिय पहुची जाइ ॥
लूटि कूटि ता कौ दियो गहिरे गड़े दबाइ ॥८॥
अड़िल ॥
चरन छुअन दोऊ काल प्रेरि न्रिप आनियो ॥
चित्र कला को बचन सति कर मानियो ॥
उठत तेग को तब बिन घाव प्रहारियो ॥
हो सुघर सिंघ राजा को हनि ही डारियो ॥९॥

दोहरा ॥

साहु बधू चोरन हनी सैयद न्रिप कौ घाइ ॥
तवन लौडियहि लै गयो अपने सदन बनाइ ॥१०॥
त्रियहि न अंतर दीजियै ता को लीजै भेद ॥
बहु पुरखन के करत है ह्रिदै चंचला छेद ॥११॥
चित त्रिय को हरि लीजियै ताहि न दीजै चित ॥
नितप्रति ताहि रिझाइयै दै दै अगनित बित ॥१२॥
गंध्रब जछ भुजंग गन नर बपुरे किन माहि ॥
देव अदेव त्रियान के भेव पछानत नाहि ॥१३॥

◀ इति स्री चरित्रे पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥10॥184॥अफ़्जूं॥

दोहरा ॥

बहुरि मंत्रि बर राइ सौ भेद कहियो समझाइ ॥
सभा बिखै भाखत भयो दसमी कथा सुनाइ ॥१॥
बनिया एक पिसौर मै ताहि कुक्रिआ नारि ॥
ताहि मारि ता सौ जरी सो मै कहो सुधारि ॥२॥
बनिक बनिज के हित गयो ता ते रहियो न जाइ ॥
एक पुरख राखत भई अपुने धाम बुलाइ ॥३॥
रैनि दिवस ता सौ रमै जब सुत भूखो होइ ॥

प्रीत मात लखि दुगध हित देत उच सुर रोइ ॥४॥

चौपई ॥

जब सुत भूखो होइ पुकारै ॥
तब मुख सौ यौ जार उचारै ॥
त्रिय या को तुम चुपन करावो ॥
हमरे चित को सोक मिटावो ॥५॥
उठि असथन ता को तिन दयो ॥
लै असथन चुप बाल न भयो ॥
निज सुत को निजु करन संघारियो ॥
आनि मित्र को सोक निवारियो ॥६॥
बाल रहत चुप जार उचारो ॥
अब क्यो न रोवत बाल तिहारो ॥
तब तिन बचन तरुनि यौ भाखियो ॥
तव हित मारि पूत मै राखियो ॥७॥

दोहरा ॥

जार बचन सुनि कै डरियो अधिक त्रास मन ठानि ॥
ता त्रिय की निंद्या करी बाल चरित मुखि आनि ॥८॥
जार जबै ऐसे क्यो निरख तरुनि की ओर ॥
ताहि तुरत मारत भई ह्रिदै कटारी घोर ॥९॥
पुत्र और तिह जार को इक कोना मै जाइ ॥
मरद एक लगि भूमि खनि दुहूंअन दयो दबाइ ॥१०॥
अतिथ एक तिह घर हुतो तिन सभ चरित निहारि ॥
बनिक मित्र ता को हुतो ता सो कहियो सुधारि ॥११॥

चौपई ॥

बचन सुनत बनियो घर आयो ॥
ता त्रिय सो यौ बचन सुनायो ॥
जो ग्रिह कोना खोदि दिखै है ॥
तब तो कौ पति धाम बसै है ॥१२॥
अड़िल ॥
जब ता त्रिया सो बनिक बचन यौ भाखियो ॥
तमकि तेग की दई मारि ही राखियो ॥
काटि मूंड ता को इह भाति उचारियो ॥
हो लूटि चोर लै गए धाम इह मारियो ॥१३॥

दोहरा ॥

पति मारियो सुत मारियो धन लै गए चुराइ ॥
ता पाछै मैहूं जरौ ढोल म्रिदंग बजाइ ॥१४॥
भयो प्रात चड़ि चिखा पै चली जरन के काज ॥
लोग तमासे कौ चले लै लकरिन को साज ॥१५॥
सुनत सोर लोगन को बाजत ढोल म्रिदंग ॥
लख्यो हुतो जौने अतिथ वहै चलियो है संग ॥१६॥

चौपई ॥

सोऊ अतीत संग हूं चलो ॥
देखौ जौन तमासो भलो ॥

तिन ता सो यौ बचन उचारो ॥
सुनो नारि तुम कहियो हमारो ॥१७॥

दोहरा ॥

वह का किय वहु का कियो इह का कियस कुकाइ ॥
कहियो जो तुम आगे कहत तेरउ करत उपाइ ॥१८॥
सुत घायो मित घायो अरु निजु करि पति घाइ ॥
तिह पाछै आपन जरी ढोल म्रिदंग बजाइ ॥१९॥
अड़िल ॥
निजु मन की कछु बात न त्रिय को दीजियै ॥
ता को चित चुराइ सदा ही लीजियै ॥
निजु मन की ता सो जो बात सुनाइयै ॥
हो बाहर प्रगटत जाइ आपु पछुताइयै ॥२०॥

CHARITAR ११ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे ग्यारवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥11॥204॥अफजूं॥

दोहरा ॥

बिंदाबन ब्रिखभान की सुता राधिका नाम ॥
हरि सो किया चरित्र तिह दिन कह देखत बाम ॥१॥
क्रिसन रूपि लखि बसि भई निसु दिन हेरत ताहि ॥
ब्यास परासर असुर सुर भेद न पावत जाहि ॥२॥
लोक लाज जिह हित तजी और तज्यो धन धाम ॥
किह बिधि प्यारो पाइयै पूरन होवहि काम ॥३॥
मिलन हेत इक सहचरी पठी चतुरि जिय जानि ॥
कवनै छल मो कौ सखी मीत मिलैयै कान्रह ॥४॥
अड़िल ॥
ब्रहम ब्यास अरु बेद भेद नहि जानही ॥
सिव सनकादिक सेस नेति करि मानही ॥
जो सभ भातिन सदा जगत मै गाइयै ॥
हो तवन पुरख सजनी मुहि आनि मिलाइयै ॥५॥

कबितु ॥

सितता बिभूत अते मेखुली निमेख संदी अंजन दी सेली दा सुभाव सुभ भाखणा ॥
भगवा सु भेस साडे नैणा दी ललाई सईयो यारा दा ध्यानु एहो कंद मूल चाखणा ॥
रौदन दा मजनु सु पुतरी पत्र गीत गीता देखण दी भिछ्या ध्यान धूंआ बाल राखणा ॥
आली एना गोपीया दीआं अखीआं दा जोगु सारा नंद दे कुमार नूं जरूर जाइ आखणा ॥६॥
बैठी हुती साजि कै सिंगार सभ सखियन मै याही बीच कान्रह जू दिखाई आनि दै गए ॥
तब ही ते लीनो है चुराइ चितु मेरो माई चेटक चलाइ मानो चेरी मोहि कै गए ॥
कहा करौ कितै जाउ मरो किधो बिखु खाउ बीस बिस्वै मेरे जान बिजू सो डसै गए ॥
चखन चितोन सौ चुराइ चितु मेरो लीयो लटपटी पाग सो लपेटि मनु लै गए ॥७॥

दोहरा ॥

लाल बिरह तुमरे पगी मो पै रहियो न जाइ ॥
ता ते मै आपन लिखी पतिया अति अकुलाइ ॥८॥

कबितु ॥

रूप भरे रागु भरे सुंदर सुहाग भरे म्रिग औ मिमोलन की मानो इह खानि है ॥
मीन हीन कीने छीन लीनै है बिधूप रूप चित के चुराइबो कौ चोरन समान है ॥
लोगों के उजागर हैं गुनन के नागर हैं सूरति के सागर हैं सोभा के निधान हैं ॥
साहिब की सीरी पड़े चेटक की चीरी अरी आली तेरे नैन रामचंद्र के से बान है ॥९ ॥

दोहरा ॥

मैनप्रभा इक सहचरी ता कौ लयो बुलाइ ॥
ताहि पठायो क्रिसन प्रति भेद सकल समझाइ ॥१० ॥
ता के कर पतिया दई कहो क्रिसन सो जाइ ॥
तुमरे बिरह राधा बधी बेगि मिलो तिह आइ ॥११ ॥
ब्रिज बाला बिरहिणि भई बिरह तिहारे संग ॥
तह तुम कथा चलाइयो कवनो पाइ प्रसंग ॥१२ ॥
जब राधा ऐसे कहियो मैनप्रभा के साथ ॥
मैनप्रभा चलि तह गई जहा हुते ब्रिजनाथ ॥१३ ॥

चौपई ॥

पतिया खोलि जबै हरि बाची ॥
लखी प्रीति ता की मन साची ॥
ता के तिन जो कबितु उचारे ॥
जानुक बज्र लाल खचि डारे ॥१४ ॥
सवैया ॥
रीझ भरे रस रीत भरे अति रूप भरे सुख पैयत हेरे ॥
चारो चकोर सरोरुह सारस मीन करे म्रिग खंजन चेरे ॥
भाग भरे अनुराग भरे सु सुहाग भरे मन मोहत मेरे ॥
मान भरे सुख खानि जहान के लोचन स्री नंद नंदन तेरे ॥१५ ॥
सोहत सुध सुधारे से सुंदर जोबन जोति सु ढार ढरे है ॥
सारस सोम सुरा सित साइक कंज कुरंगन क्राति हरे है ॥
खंजन औ मकर ध्वज मीन निहारि सभै छबि लाज मरे है ॥
लोचन स्री नंद नंदन के बिधि मानहु बान बनाइ धरे है ॥१६ ॥

कबितु ॥

चिंता जैसो चंदन चिराग लागे चिता सम चेटक से चित्र चारु चौपखा कुसैल सी ॥
चिता जैसे चीर चपला सी चितवन लागै चीरबे सी चौपखा सुहातु न रुचैल सी ॥
चंगुल सी चौप सर चाप जैसो चामीकर चोट सी चिनौत लागै सीरी लागै सैल सी ॥
चटक चुपेट सी लगत बिना चिंतामनि चाबुक से चौर लागै चादनी चुरैल सी ॥१७ ॥

दोहरा ॥

पड़ि पतिया ता की तुरतु रीझि गए ब्रिजनाथ ॥
सखी एक पठावत भए मैनप्रभा के साथ ॥१८ ॥
राधा सौ मिलनो बद्यो जल जमुना मै जाइ ॥
सखी पठी ता को तबै तिह मुहि आनि मिलाइ ॥१९ ॥
सखी तुरत तह कौ चली स्री जदुपति के हेत ॥
जैसे पवन प्रचंड कौ तन न दिखाई देत ॥२० ॥
तड़िता क्रित जा कौ सखी चतुरि कहत त्रिय आइ ॥
सो हरि राधा प्रति पठी भेद सकल समझाइ ॥२१ ॥
सवैया ॥
फूल फुलेल लगाइ कै चंदन बैठि रही करि भोजन भामनि ॥

बेग बुलावत है बड ड़याछ करो न बिलंब चलो गज गामिनि ॥
आज मिलो घन से तन को घहरै घन मै जैसे कौधत दामिनि ॥
मानत बात न जानत तै सखी जात बिहात इतै बहु जामिनि ॥२२॥
गोप को भेख कबै धरि है हरि कुंज गरी कब आनि बसै है ॥
मोर पखऊअन कौ धरि है कब ग्वारनि कै ग्रिह गोरस खै है ॥
बंसी बजै है कबै जमुना तट तोहि बुलावन मोहि पठै है ॥
मान कहियो हमरो हरि पै चलु री बहुरो हरिहूं न बुलै है ॥२३॥
तेरी सराह सदैव करै त्रिय तेरी कथा पिय गावत है ॥
हित तेरे सिंगार सजै सजनी हित तेरे ही बैन सजावत है ॥
हित तेरे ही चंदन गौ घनसार दोऊ घसि अंग लगावत है ॥
हरि को मनु स्री ब्रिखभान कुमारि हरियो कहूं जान न पावत है ॥२४॥
मोर पखा की छटा मधु मूरति सोभित है जमुना के किनारै ॥
बूझत बात बिहाल भे बलभ बाल चलो जहा लाल बिहारै ॥
राधिका माधव की बतिया सुनि कै अकुलाइ उठी डर डारै ॥
यौ सुनि बैन चली तजि ऐन रहियो नहि मान मनोज के मारै ॥२५॥
मोती के अंग बिराजत भूखन मोती के बेसर की छब बाढी ॥
मोती के चौसर हार फबै दुति मोतिन के गजरान की गाढी ॥
राधिका माधव कौ जमुना तट कंज गहे करि जोवति ठाढी ॥
छीर के सागर को मथि कै मनौ चंद को चीर सभै तन काढी ॥२६॥

चौपई ॥

न्रहावत जहा आपु हरि ठाढे ॥
अधिक ह्रिदै मै आनंद बाढे ॥
वार गुपाल पार ब्रिज नारी ॥
गावत गीत बजावत तारी ॥२७॥
सवैया ॥
क्रीड़त है जहा कान्रह कुमार बडे रस साथ बडे जल माही ॥
वार त्रिया उहि पार गुपाल बिराजत ग्वारनि के दल माही ॥
लै डुबकी दोऊ आपस मै रति मानि उठै द्रिड़ जाइ तहा ही ॥
यौ रुचि मानि रमै रस सों मनो दूरि रहे कोऊ जानत नाही ॥२८॥
खेलती लाल सो बाल भली बिधि काहूं सो बात न भाखत जी की ॥
नेह जगियो नव जोबन को उर बीच रही गडि मूरति पी की ॥
बारि बिहार मै नंद कुमार सो क्रीड़त है करि लाज सखी की ॥
जाइ उठै बल तौनहि ते रति मान दोऊ मन मानत जी की ॥२९॥
सोरठा ॥
जो निजु त्रिय को देत पुरख भेद कछु आपनो ॥
ता के बिधना लेत प्रान हरन करि पलक मै ॥३०॥

CHARITAR १२ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे द्वादसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥12॥234॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बहुरि सु मंत्री राइ सौ कथा उचारी आनि ॥
सुनत सीस राजै धुन्रयो रहियो मौन मुखि ठानि ॥१॥
पदूआ उहि टिबिया बसै गैनी हमरे गाउ ॥
दास खसम ता को रहत राम दास तिह नाउ ॥२॥
राम दास अनतै रहत पदूआ के संग सोइ ॥

न्रहान हेत उठि जात तह जबै दुपहरी होइ ॥३॥
इक दिन पदूआ के सदन बहु जन बैठे आइ ॥
भेद न पायो गैनि यहि तहा पहुंची जाइ ॥४॥

चौपई ॥

तबै तुरत त्रिय बचन उचारे ॥
राम दास आए न तुहारे ॥
मेरे पति परमेस्वर ओऊ ॥
कह गयो ताहि बतावहु कोऊ ॥५॥

दोहरा ॥

गरा ओर कह यौ गई जात भए उठि लोग ॥
तुरतु आनि ता सौ रमी मन मै भई निसोग ॥६॥
पदूआ सौ रति मानि कै तहा पहूंची आइ ॥
राखियो हुतो सवारि जह आपन सदन सुहाइ ॥७॥
कैसो ही बुधिजन कोऊ चतुर कैसउ होइ ॥
चरित चतुरिया त्रियन को पाइ सकत नहि कोइ ॥८॥
जो नर अपुने चित कौ त्रिय कर देत बनाइ ॥
जरा ताहि जोबन हरै प्रान हरत जम जाइ ॥९॥
सोरठा ॥
त्रियहि न दीजै भेद ताहि भेद लीजै सदा ॥
कहत सिंम्रिति अरु बेद कोकसारऊ यौ कहत ॥१०॥

CHARITAR १३ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रिदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥13॥244॥अफ्जूं॥

दोहरा ॥

बहुरि सु मंत्री राइ सौ कथा उचारी एक ॥
अधिक मोद मन मै बढै सुनि गुन बढै अनेक ॥१॥
एक त्रिया गई बाग मै रमी और सो जाइ ॥
तहा यार ता को तुरत दुतिय पहूंच्यो आइ ॥२॥

चौपई ॥

जार आवत जब तिन त्रिय लहियो ॥
दुतिय मीत सो इह बिधि कहियो ॥
माली नाम आपन तुम करो ॥
फल फूलनि आगे लै धरो ॥३॥

दोहरा ॥

जो हम इह जुत बाग मै बैठे मोद बढाइ ॥
फूल फलन लै तुम तुरतु आगे धरो बनाइ ॥४॥
तबै तवन तियो ही कियो जो त्रिय तिह सिख दीन ॥
फूल फुले अरु फल घने तोरि तुरतु कर लीन ॥५॥
त्रिया सहित जद बाग मै जार बिराजियो जाइ ॥
तो तिन फुल फल लै तुरतु आगे धरे बनाइ ॥६॥
इह माली इह बाग को आयो तुमरे पास ॥

बहु या कौ धन दीजियै जिनि इह जाइ निरास ॥७॥
सुनत बचन त्रिय को तरुनि बहु धन दिय तिह हाथ ॥
माली करि काढ्यो हितु इह चरित्र के साथ ॥८॥
पुहप मती इह छल भए मित्रहि दियो टराइ ॥
माली करि काढ्यो तिसै रूप नगर के राइ ॥९॥

CHARITAR १४ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे चत्रदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥14॥253॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

कथा चतुरदस मंत्र बर न्रिप सौ कही बखानि ॥
सुनत रीझि के न्रिप रहे दियो अधिक तिह दान ॥१॥
एक बिमात्रा भान की रामदास पुर बीच ॥
बहु पुरखन सौ रति करै ऊच न जानै नीच ॥२॥
ता को पति मरि गयो जबै ताहि रहियो अवधान ॥
अधिक ह्रिदै भीतर डरी लोक लाज जिय जानि ॥३॥

चौपई ॥

भानमती तिहा नाम बखनियत ॥
बडी छिनारि जगत मै जनियत ॥
जब ता कौ रहि गयो अधाना ॥
तब अबला को ह्रिदै डराना ॥४॥
अड़िल ॥
तिन प्रसाद हू किय बहु पुरख बुलाइ कै ॥
तिन देखत रही सोइ सु खाट डसाइ कै ॥
चमकि ठाढ उठि भई चरित्र मन आनि कै ॥
हो पति को नाम बिचार उचारियो जानि कै ॥५॥

दोहरा ॥

जा दिन मोरे पति मरे मो सौ कहियो बुलाइ ॥
जे अब तूं मो सौ जरै परै नरक मो जाइ ॥६॥
अड़िल ॥
भान लरिकवा रहै सेव तिह कीजियै ॥
पालि पोसि करि ताहि बडो करि लीजियै ॥
आपु जदिन वह खै है खाटि कमाइ कै ॥
हो तदिन सुपनि तुहि दैहो हौ हूं आइ कै ॥७॥

दोहरा ॥

भान करो करते बडो सुपन दियो पति आइ ॥
ता ते हौ हरि राइ के जरत कीरति पुर जाइ ॥८॥
अड़िल ॥
लोग अटकि बहु रहे न तिन बच मानियो ॥
धनु लुटाइ उठि चली घनो हठ ठानियो ॥
राम दास पुर छाडि कीरति पुर आइ कै ॥
हो इक पग ठाढे जरी म्रिदंग बजाइ कै ॥९॥

दोहरा ॥

बहु लोगनु देखत जरी इक पग ठाढी सोइ ॥
हेरि रीझि रीझिक रहे भेद न जानत कोइ ॥१०॥
सकल जगत मै जे पुरखु त्रिय को करत बिस्वास ॥
साति दिवस भीतर तुरतु होत तवन को नास ॥११॥
जो नर काहू त्रिया को देत आपनो चित ॥
ता नर कौ इह जगत मै होत खुआरी नित ॥१२॥

CHARITAR १५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पंद्रसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥15॥265॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

तीर सतुद्रव के हुतो रहत राइ सुख पाइ ॥
दरब हेत तिह ठौर ही रामजनी इक आइ ॥१॥
अड़िल ॥
छजिया जा को नाम सकल जग जानई ॥
लधीआ वा की नाम हितू पहिचानई ॥
जो कोऊ पुरख बिलोकत तिन को आइ कै ॥
हो मन बच क्रम करि रहित ह्रिदै सुखु पाइ कै ॥२॥

दोहरा ॥

निरखि राइ सौ बसि भई तिस बसि होत न सोइ ॥
तिन चित मै चिंता करी किह बिधि मिलबौ होइ ॥३॥
यह मो पर रीझत नही कहु कस करो उपाइ ॥
मोरे सदन न आवई मुहि नहि लेत बुलाइ ॥४॥
तुरतु तवन को कीजियै किह बिधि मिलन उपाइ ॥
जंत्र मंत्र चेटक चरित्र कीए जु बसि ह्वै जाइ ॥५॥
जंत्र मंत्र रही हारि करि राइ मिल्यो नहि आइ ॥
एक चरित्र तब तिन कियो बसि करबे के भाइ ॥६॥
बसत्र सभै भगवे करे धरि जुगिया को भेस ॥
सभा मध्य तिह राइ कौ कीनो आनि अदेस ॥७॥
अड़िल ॥
तिह जुगियहि लखि राइ रीझि चित मै रहियो ॥
जा ते कछु संग्रहौ मंत्र मन मो चहियो ॥
तिह ग्रिहि दियो पठाइक दूत बुलाइ कै ॥
हो कला सिखन के हेत मंत्र समझाइ कै ॥८॥

चौपई ॥

चलि सेवक जुगिया पहि आवा ॥
राइ कहियो सो ताहि जतावा ॥
कछू मंत्र मुर ईसहि दीजै ॥
क्रिपा जानि कारज प्रभु कीजै ॥९॥

दोहरा ॥

पहर एक लौ छोरि द्रिग कही जोग यहि बात ॥
लै आवहु राजहि इहा जौ गुन सिख्यो चहात ॥१०॥
अरध रात बीतै जबै आवै हमरे पास ॥

स्री गोरख की मया ते जै है नही निरास ॥११॥

चौपई ॥

सेवक ता सो जाइ सुनायो ॥
अरध रात्र बीते सु जगायो ॥
ता जुगिया के ग्रिह लै आयो ॥
हेरि राइ त्रिय अति सुख पायो ॥१२॥

दोहरा ॥

राजा सो आइसु कही दीजै लोग उठाहि ॥
धूप दीप अछत पुहप आछो सुरा मंगाइ ॥१३॥
तब राजै तैसो कीआ लोगन दिया उठाइ ॥
धूप दीप अछत पुहप आछो सुरा मंगाइ ॥१४॥
तब राजे अपने सभन लोगन दिया उठाइ ॥
आपु इकेलो ही रहियो मंत्र हेत सुख पाइ ॥१५॥

चौपई ॥

रहियो इकेलो राइ निहारियो ॥
तब जोगी इह भाति उचारियो ॥
चमतकार इक तौहि दिखैहौ ॥
तिह पाछै तुहि मंत्र सिखैहौ ॥१६॥

दोहरा ॥

होत पुरख ते मै त्रिया त्रिय ते नर ह्वै जाउ ॥
नर ह्वै सिखवौ मंत्र तुहि त्रिय ह्वै भोग कमाउ ॥१७॥
राइ बाच ॥
पुरख मंत्र दाइक पिता मंत्र दाइक त्रिय मात ॥
तिन की सेवा कीजियै भोगन की न जात ॥१८॥
अड़िल ॥
बहु बरिसन लगि जानि सेव गुर कीजियै ॥
जतन कोटि करि बहुरि सु मंत्रहि लीजियै ॥
जाहि अरथ के हेत सीस निहुराइयै ॥
हो कहो चतुरि ता सौ क्योन केल मचाइयै ॥१९॥

चौपई ॥

तब जोगी इह भाति सुनायो ॥
तव भेटन हित भेख बनायो ॥
अब मेरे संग भोग कमैयै ॥
आन पिया सुभ सेज सुहैयै ॥२०॥

दोहरा ॥

तन तरफत तव मिलन कौ बिरह बिकल भयो अंग ॥
सेज सुहैयै आन पिय आजु रमो मुहि संग ॥२१॥
भजे बधैहौ चोर कहि तजे दिवैहौ गारि ॥
नातर संक बिसारि करि मो सौ करहु बिहार ॥२२॥
कामातुर ह्वै जो तरुनि आवत पिय के पास ॥
महा नरक सो डारियत दै जो जान निरास ॥२३॥

तन अनंग जा के जगै ताहि न दै रति दान ॥
तवन पुरख को डारियत जहा नरक की खानि ॥२४॥
अड़िल ॥
रामजनी ग्रिह जनम बिधातै मुहि दिया ॥
तव मिलबे हित भेख जोग को मै लिया ॥
तुरत सेज हमरी अब आनि सुहाइयै ॥
हो ह्वै दासी तव रहों न मुहि तरसाइयै ॥२५॥

दोहरा ॥

कहा भयो सुघरे भए करत जुबन को मान ॥
बिरह बान मो को लगे ब्रिथा न दीजै जान ॥२६॥
अड़िल ॥
ब्रिथा न दीजै जान मैन बसि मै भई ॥
बिरहि समुंद के बीच बूडि सिर लौ गई ॥
भोग करे बिनु मोहि जान नही दीजियै ॥
हो घनवारी निस हेरि गुमान न कीजियै ॥२७॥
दिसन दिसन के लोग तिहारे आवही ॥
मन बाछत जो बात उहै बर पावही ॥
कवन अवग्रया मोरि न तुम कह पाइयै ॥
हो दासन दासी ह्वै हौ सेज सुहाइयै ॥२८॥
मंत्र सिखन हित धाम तिहारे आइयो ॥
तुम आगै ऐसे इह चरित बनाइयो ॥
मै न तुहारे संग भोग क्योहूं करो ॥
हो धरम छूटन के हेत अधिक मन मै डरो ॥२९॥

चौपई ॥

रामजनी बहु चरित्र बनाए ॥
हाइ भाइ बहु भाति दिखाए ॥
जंत्र मंत्र तंत्रो अति करे ॥
कैसे हूं राइ न कर मै धरे ॥३०॥
अड़िल ॥
चोर चोर कहि उठी सु आंगन जाइ कै ॥
त्रास दिखायो ताहि मिलन हित राइ कै ॥
बहुरि कही त्रिय आइ बात सुन लीजियै ॥
हो अबै बधैहौ तोहि कि मोहि भजीजियै ॥३१॥
चोर बचन सुनि लोग पहुंचे आइ कै ॥
तिन प्रति कहियो कि सोत उठी बरराइ कै ॥
गए धाम ते कहियो मित्र कौ कर पकरि ॥
हो अबै बधैहौ तोहि कि मो सौ भोग करि ॥३२॥

दोहरा ॥

तबै राइ चित के बिखै ऐसे किया बिचार ॥
चरित खेलि कछु निकसियै इहे मंत्र का सार ॥३३॥
भजौ तौ इजत जात है भोग कियो ध्रम जाइ ॥
कठिन बनी दुहूं बात तिह करता करै सहाइ ॥३४॥
पूत होइ तौ भाड वह सुता तौ बेस्वया होइ ॥
भोग करे भाजत धरम भजे बंधावत सोइ ॥३५॥

चौपई ॥

कहियो सुनहु तुम बात पिआरी ॥
देखत थो मै प्रीति तिहारी ॥
तुम सी त्रिया हाथ जो परै ॥
बडो मूड़ जो ताहि प्रहरै ॥३६॥

दोहरा ॥

रूपवंत तो सी त्रिया परै जु कर मै आइ ॥
ताहि त्याग मन मै करै ता को जनम लजाइ ॥३७॥
पोसत भाग अफीम बहुत लीजै तुरत मंगाइ ॥
निजु कर मोहि पिवाइयै ह्रिदै हरख उपजाइ ॥३८॥
तुम मदरा पीवहु घनो हमै पिवावहु भंग ॥
चारि पहर कौ मानिहौ भोगि तिहारे संग ॥३९॥

चौपई ॥

फूलि गई सुन बात अयानी ॥
भेद अभेद की बात न जानी ॥
अधिक ह्रिदे मै सुख उपजायो ॥
अमल कहियो सो तुरत मंगायो ॥४०॥

दोहरा ॥

पोसत भाग अफीम बहु गहिरी भाग घुटाइ ॥
तुरत तरनि ल्यावत भई मद सत बार चुआइ ॥४१॥
अड़िल ॥
राइ तबै चित भीतर किया बिचार है ॥
याहि न भजिहौ आजु मंत्र का सार है ॥
अधिक मत करि याहि खाट पर डारि कै ॥
हो साठि मुहर दै भजिहों धरम संभारि कै ॥४२॥

दोहरा ॥

रीति न जानत प्रीत की पैसन की परतीत ॥
बिछू बिसीअरु बेसया कहो कवन के मीत ॥४३॥
ता को मद प्रयायो घनो अति चित मोद बढाइ ॥
मत सवाई खाट पर आपि भजन के भाइ ॥४४॥
मदरा प्रयायो तरुनि को निजु कर प्याले डारि ॥
इह छल सौ तिह मत करि राखी खाट सुवारि ॥४५॥
अड़िल ॥
भरि भरि निजु कर प्याले मद तिह प्रयाइयो ॥
रामजनी सौ अधिक सु नेह जताइयो ॥
मत होइ स्वै गई राइ तब यौ कियो ॥
हो साठि मुहर दै ताहि भजन को मगु लियो ॥४६॥
जो तुम सौ हित करे न तुम तिह सौ करो ॥
जो तुमरे रस ढरे न तिह रस तुम ढरो ॥
जा के चित की बात आपु नहि पाइयै ॥
हो ता कह चित को भेद न कबहु जताइयै ॥४७॥

दोहरा ॥

राइ भज्यो त्रिय मत करि साठि मुहर दै ताहि ॥

आनि बिराजयो धाम मै किनहूं न हेरियो वाहि ॥४८॥
अड़िल ॥
तबै राइ ग्रिह आइ सु प्रण ऐसे कियो ॥
भले जतन सौ राखि धरम अब मै लियो ॥
देस देस निजु प्रभ की प्रभा बिखेरिहौ ॥
हो आन त्रिया कह बहुरि न कबहूं हेरिहौ ॥४९॥

दोहरा ॥

वहै प्रतग्रया तदिन ते ब्यापत मो हिय माहि ॥
ता दिन ते पर नारि कौ हेरत कबहूं नाहि ॥५०॥

CHARITAR १६ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे खोड़समो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥16॥315॥अफजूं॥

अड़िल ॥
बंदिसाल न्रिप सुत को दियो पठाइ कै ॥
भोर होत पुन लियो सु निकटि बुलाइ कै ॥
मंत्री तब ही कथा उचारी आनि कै ॥
हो बढयो भूप के भरम अधिक जिय जानि कै ॥१॥

दोहरा ॥

सहर बदखसा मै हुती एक मुगल की बाल ॥
ता सौ किया चरित्र तिन सो तुम सुनहु न्रिपाल ॥२॥
बितन मती इक चंचला हितू मुगल की एक ॥
जंत्र मंत्र अरु बसीकर जानत हुती अनेक ॥३॥
अड़िल ॥
एक दिवस तिन लीनी सखी बुलाइ कै ॥
परि गई तिन मै होड सु ऐसे आइ कै ॥
कालि सजन के बाग कहियो चलि जाइहों ॥
हो इह मूरख के देखत भोग कमाइ हो ॥४॥

दोहरा ॥

दुतीय सखी ऐसे कहियो सुनु सखी बचन हमार ॥
भोग कमैहो यार सो नार बधैहौ जार ॥५॥

चौपई ॥

असताचल सूरज जब गयो ॥
प्राची दिस ते ससि प्रगटयो ॥
भागवतिन उपज्यो सुख भारो ॥
बिरहिणि कौ साइक ससि मारो ॥६॥

दोहरा ॥

असताचल सूरज गयो रहियो चंद्र मंडराइ ॥
लपटि रहियो पिय त्रियन सो त्रिया पियन लपटाइ ॥७॥
उडग तगीरी रवि अथन प्रभा प्रवाना पाइ ॥
जानुक चंद्र अमीन के फिरे बितालो आइ ॥८॥

चौपई ॥

असता सो भोगन तिन माने ॥
चारि जाम घटिका इक जाने ॥
चौथे जाम सोइ कर रहे ॥
चतुरन के ग्रीवा कुच गहे ॥९ ॥

दोहरा ॥

नान खान अरु दान हित दिनि दिखि जगि है राज ॥
दुजन दलन दीनोधरन दुसटन दाहिबे काज ॥१० ॥
सवैया ॥
जानि पयान बिछोह त्रियान के छोभ बडयो उर भीतर भारी ॥
अंचर डारि कै मोतिन हार दुरावत जानि भयो उजियारी ॥
पान हूं पोछत प्रीतम को तन कैसे रहै इह चाहत प्यारी ॥
चंद चड़ियो सु चहै चिर लौ चित देत दिवाकर की दिसि गारी ॥११ ॥

भुजंग छंद ॥

चलो प्रान प्यारे फुले फूल आछे ॥
दिपै चारु मानो ढरे मैन साछे ॥
किधो गीरबाणेसहूं के सुधारे ॥
सुने कान ऐसे न वैसे निहारे ॥१२ ॥
तिही बाग हूं मै तरोरुह चबैयै ॥
रिझैयै तुमै भोग भावत कमैयै ॥
बिलंब न करो प्रात होतो पधारे ॥
सभै चित के दूरि कै सोक डारै ॥१३ ॥
अड़िल ॥
लई सहचरी चतुरि सो एक बुलाइ कै ॥
कहो पिअरवा साथ भेद समझाइ कै ॥
लिखि पतिया कर दई कहियो तिह दीजीयो ॥
हो कालि हमारे बाग क्रिपा चलि कीजीयो ॥१४ ॥
कहियो पिअरवहि ऐस भेद समुझाइयौ ॥
कालि हमारे बाग क्रिपा करि आइयौ ॥
जबै मुगल छलि दैहो रूख चड़ाइ कै ॥
हो तबै सजनवा मिलियहु हम को आइ कै ॥१५ ॥

दोहरा ॥

प्रात मुगल को लै चली अपने बाग लिवाइ ॥
रस कस लै मदरा चली ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१६ ॥
बाग मुगल को लै चली उत न्रिप सुतहि बुलाइ ॥
फलन चबावन के नमित चड़ी बिरछ पर जाइ ॥१७ ॥
चड़त रूख ऐसे कहियो कहा करत तै काज ॥
मुहि देखत त्रिय अनत सो रमत न आवत लाज ॥१८ ॥
उतरि रूख ते यौ कही कहा गई वह त्रीय ॥
तौ जिह अब भोगत हुतो अधिक मानि सुख जीय ॥१९ ॥
मै न रमियो त्रिय अनत सो भयो भेद यह कौन ॥
कछु चरित्र इह रूख मै यौ कहि बाधी मौन ॥२० ॥
यौ चिंता चित बीच करि चड़ियो बिरछ पर धाइ ॥
रति मानी त्रिय न्रिपति के सुत को निकट बुलाइ ॥२१ ॥
अति पुकार कर द्रखत ते उतरियो न्रिप सुत जानि ॥

उतरत दियो भजाइ त्रिय कछू न देख्यो आनि ॥२२ ॥

अड़िल ॥

चलि काजी पै गयो ताहि ऐसे कहियो ॥

एक रूख अचरज को आंखिन मै लहियो ॥

ता को चलि काजी जू आपु निहारियै ॥

हो मेरो चित को भरमु सु आजु निवारियै ॥२३ ॥

दोहरा ॥

सुनत बचन काजी उठियो संग लई निजु नारि ॥

चलि आयो तिह रूख तर लोग संग को टारि ॥२४ ॥

चौपई ॥

भेदि नारि सौ सभ तिन कहियो ॥

ता पाछे तिह द्रुम के लहियो ॥

तिनहूं अपनो मित्र बुलाइयो ॥

रूख चरे पिय भोग कमायो ॥२५ ॥

अड़िल ॥

मोहि मीर जो कहियो सति मो जानियो ॥

ता दिन ते तिन मुगल हितू कर मानियो ॥

तवन दिवस ते काजी चेरो ह्वै रहियो ॥

हो सति बचन सोऊ भयो जु मो को इन कहियो ॥२६ ॥

दोहरा ॥

कोट कसट स्यानो सहहि कैसौ दहै अनंग ॥

नैक नेह नहि कीजियै तऊ तरनि के संग ॥२७ ॥

CHARITAR १७ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सपतदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥17॥342॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

कथा सत्रवी राम कबि उचरी हित चित लाइ ॥

बहुरि कथा बंधन निमित मन मै कहियो उपाइ ॥१ ॥

धाम निकट ता के हुती होड़ बदी जिह नारि ॥

तिनहूं करियो चरित्र इक सो तुम सुनहु सुधारि ॥२ ॥

चौपई ॥

स्री छलछिद्र कुअरि तिह नामा ॥

दूजे रहत मुगल की बामा ॥

तिन जु किया सु चरित्र सुनाऊ ॥

ता ते तुमरौ ह्रिदै रिझाऊ ॥३ ॥

अड़िल ॥

एक दिवस तिन मिहदी लई मंगाइ कै ॥

लीपि आपने हाथ पतिहि दिखराइ कै ॥

यारि दूसरे संग यो कहियो सुधारि कै ॥

हो ऐहो तुमरे तीर तिहारे पयारि कै ॥४ ॥

चौपई ॥

पिय प्यारो आयो जब जान्यो ॥
यार दूसरे संग बखान्यो ॥
मै अब ही लघु के हित जैहो ॥
आनि नार तव पास बधैहो ॥५॥

दोहरा ॥

नार खुलायो जार ते गई जार के पासि ॥
जाइ न्रिपति के संग रमी रंचक किया न त्रास ॥६॥
अड़िल ॥
मुहर परापति होइ टका को लेवई ॥
बिनु दीने धन सरै त को धन देवई ॥
धनी त्यागि निरधन के को ग्रिह जावई ॥
हो राव त्यागि करि रंक कवन चित ल्यावई ॥७॥

दोहरा ॥

नेह ठानि रति मानि करि राजा दिया उठाइ ॥
लगी मिहदीआ कर रही नार बधायो आइ ॥८॥
बैन सुनत मूरख उठियो भेद न सक्यो पछानि ॥
बाध्रयो बंद इजार कौ अधिक प्रीति मन मानि ॥९॥
प्रीति कैसियै तन बढै कसट कैसहू होइ ॥
तऊ तरुनि सौ दोसती भूलि न करियहु कोइ ॥१०॥

CHARITAR १८ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे असटदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥18॥352॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बंदसाल न्रिप सुतहि पठायो ॥
प्रात समै पुनि निकटि बुलायो ॥
बहुरौ मंत्री कथा उचारियो ॥
चित्र सिंघ को भरमु निवारियो ॥१॥

दोहरा ॥

साहजहानाबाद मै एक मुगल की बाल ॥
ता सो किया चरित्र इक सो तुम सुनहु न्रिपाल ॥२॥

चौपई ॥

ता को नाम नादरा बानो ॥
अमित रूप ता को जग जानो ॥
अधिक तरुनि को तेज बराजत ॥
जा सम अनत न कतहूं राजत ॥३॥

दोहरा ॥

निस दिन बास तहा करै मुगलन अनतै जाइ ॥
और इसत्रियन सो भजै त्रिय तो कछू न संकाइ ॥४॥

हेर मुगल अनतै रमत तरुनि धार रिसि चित ॥
कीना एक बुलाइ ग्रिह बाल बनिक को मित ॥५॥
एक दिवस ता सौ कहियो भेद सकल समझाइ ॥
पुत्र धाम तिह राखियो निजु पति ते डर पाइ ॥६॥
पिय सोवत त्रिय जागि कै पति कौ दियो जगाइ ॥
लै आग्या सुत बनक के संग बिहारी जाइ ॥७॥
पिय सोवत त्रिय जो जगै कहै दुसट कोऊ आइ ॥
तुरतु दोसती पति तजै नात नेह छुटि जाइ ॥८॥
अड़िल ॥
पिय को प्रिथम जवाइ आपु पुनि खाइयै ॥
पिय पूछे बिनु नैक न लघु कह जाइयै ॥
जो पिय आइसु देइ सु सिर पर लीजियै ॥
हो बिनु ता के कछु कहे न कारज कीजियै ॥९॥

दोहरा ॥

बिनु पिय की आग्या लई मै लघु को नहि जाउ ॥
कोटि कसट तन पै सहो पिय को कहियो कमाउ ॥१०॥
सुनत बचन मूरख मुगल आग्या त्रिय कह दीन ॥
रीझि गयो जड़ बैन सुनि सक्यो न कछु छल चीन ॥११॥
सुनत बचन त्रिय उठि चली पिय की आग्या पाइ ॥
रति मानी सुत बनिक सो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१२॥
परै आपदा कैसियै कोट कसट सहि लेत ॥
तऊ सुघर नर इसत्रियन भेद न अपनो देत ॥१३॥

CHARITAR १९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥19॥365॥अफजूं॥*

भुजंग छंद ॥

बहुरि बंद ग्रिह माझ न्रिप पूत डारियो ॥
भई भोर बहुरौ निकट को हकारियो ॥
तबै मंत्र यो राइ सो बैन भाख्यो ॥
चितर सिंघ के पूत कौ प्रान राख्यो ॥१॥
सहर चीन माचीन मै एक नारी ॥
रहै आपने खावंदहि अधिक प्यारी ॥
जु सो बैन भाखै वही बात मानै ॥
बिना ताहि पूछे नही काज ठानै ॥२॥
दिनो रैन डारे रहै ताहि डेरै ॥
बिना ताहि नहि इंद्र की हूर हेरै ॥
त्रिया रूप आनूप लहि पीय जीवै ॥
बिना नारि पूछे नही पान पीवै ॥३॥
मती लाल नीको रहै नाम बाला ॥
दिपै चारु आभा मनो राग माला ॥
सुनी कान ऐसी न वैसी निहारी ॥
भई है न आगे न ह्वैहै कुमारी ॥४॥
मनौ आपु लै हाथ ब्रहमै बनाई ॥
किधौ देव जानी किधौ मैन जाई ॥
भई नाहि नहि है न ह्वैहै त्रिवैसी ॥

मनो जछ्नी नागनी किंन्रनैसी ॥५ ॥
तिनक देस के राव सौ नेह ठान्नयो ॥
महा चतुर तिह चित के बीच जान्यो ॥
अधिक रूप आनूप ता को बिराजै ॥
लखे जाहि कंद्रप को द्रप भाजै ॥६ ॥

दोहरा ॥

अधिक प्रीत ता सौ करी चित मै चतुर पछान ॥
छाडि दई लजा सभै बधी बिरह के बान ॥७ ॥

तोटक छंद ॥

लखि रूप लला जू को रीझ रही ॥
जिह जोत प्रभा नहि जात कही ॥
निस एक त्रिया तिह बोल लियो ॥
मन भावत भूप सौ भोग कियो ॥८ ॥
सिगरी निस भूप सौ भोग करियो ॥
इह बीच त्रिया पति आन परियो ॥
तिह आवत जानि डरी हिय मै ॥
इह भाति चरित्र ठटियो जिय मै ॥९ ॥

दोहरा ॥

तकिया करि राख्यो न्रिपहि आपणी सेज बणाइ ॥
जाइ पियहि आगे लियो परम प्रीति उपजाइ ॥१० ॥
भूप लख्यो चित मै फस्यो आनि त्रिया के हेत ॥
अधिक चित भीतर डरियो स्वास न ऊचो लेत ॥११ ॥
पति सौ अति रति मानि कै रही गरे लपटाइ ॥
कियो सिरानो भूप को सोइ रहे सुख पाइ ॥१२ ॥
भोर भए उठि पिय गयो न्रिप सो भोग कमाइ ॥
काढि सिराना ते तुरत सदन दियो पहुचाइ ॥१३ ॥
जे जे स्याने ह्वै जगत मै त्रिय सो करत पî ॥
ताहि महा जड़ समुझियै चित भीतर निरधार ॥१४ ॥

CHARITAR २० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥20॥379॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

भूप बंद ग्रिह निजु सुतहि गहि करि दियो पठाइ ॥
प्रात समै मंत्री सहित बहुरो लियो बुलाइ ॥१ ॥
रीझ राइ ऐसे कह्यो बचन मंत्रियन संग ॥
पुरख त्रियन चतुरन चरित मो सो करहु प्रसंग ॥२ ॥
तीर सतुद्रव के हुतो पुर अनंद इक गाउ ॥
नेत्र तुंग के ढिग बसत काहलूर के ठाउ ॥३ ॥
तहा सिख साखा बहुत आवत मोद बढाइ ॥
मन बाछत मुखि माग बर जात ग्रिहन सुख पाइ ॥४ ॥
एक त्रिया धनवंत की तौन नगर मै आनि ॥
हेरि राइ पीड़त भई बिधी बिरह के बान ॥५ ॥

मगन दास ता को हुतो सो तिन लियो बुलाइ ॥
कछुक दरब ता को दियो ऐसे कहियो बनाइ ॥६॥
नगर राइ तुमरो बसत ताहि मिलावहु मोहि ॥
ताहि मिले दैहो तुझै अमित दरब लै तोहि ॥७॥
मगन लोभ धन के लगे आनि राव के पास ॥
परि पाइन कर जोरि करि इह बिधि किय अरदासि ॥८॥
सिख्यो चहत जो मंत्र तुम सो आयो मुर हाथ ॥
कहै तुमै सो कीजियहु जु कछु तुहारे साथ ॥९॥

भुजंग छंद ॥

चलियो धारि आतीत को भेस राई ॥
मनापन बिखै स्री भगौती मनाई ॥
चलियो सोत ता के फिरियो नाहि फेरे ॥
धस्रयो जाइ कै वा त्रिया के सु डेरे ॥१०॥

चौपई ॥

लखि त्रिय ताहि सु भेख बनायो ॥
फूल पान अरु कैफ मंगायो ॥
आगे टरि ता को तिन लीना ॥
चित का सोक दूरि करि दीना ॥११॥

दोहरा ॥

बसत्र पहिरि बहु मोल के अतिथ भेस को डारि ॥
तवन सेज सोभित करी उतम भेख सुधारि ॥१२॥
तब ता सो त्रिय यौ कही भोग करहु मुहि साथ ॥
पसु पतारि दुख दै घनो मै बेची तव हाथ ॥१३॥
राइ चित चिंता करी बैठे ताही ठौर ॥
मंत्र लैन आयो हुतो भई और की और ॥१४॥
अड़िल ॥
भए पूज तो कहा गुमान न कीजियै ॥
धनी भए तो दुख्यन निधन न दीजियै ॥
रूप भयो तो कहा ऐंठ नहि ठानियै ॥
हो धन जोबन दिन चारि पाहुनो जानियै ॥१५॥

छंद ॥

धरम करे सुभ जनम धरम ते रूपहि पैयै ॥
धरम करे धन धाम धरम ते राज सुहैयै ॥
कहियो तुहारो मानि धरम कैसे कै छोरो ॥
महा नरक के बीच देह अपनी क्यो बोरो ॥१६॥
कहियो तुमारो मानि भोग तोसो नहि करिहो ॥
कुलि कलंक के हेत अधिक मन भीतर डरिहो ॥
छोरि ब्रयाहिता नारि केल तो सो न कमाऊ ॥
धरमराज की सभा ठौर कैसे करि पाऊ ॥१७॥

दोहरा ॥

कामातुर ह्वै जो त्रिया आवत नर के पास ॥
महा नरक सो डारियै दै जो जान निरास ॥१८॥
पाइ परत मोरो सदा पूज कहत है मोहि ॥

ता सो रीझ रम्यो चहत लाज न आवत तोहि ॥१९॥

भुजंग छंद ॥

किसन पूज जग के भए कीनी रासि बनाइ ॥
भोग राधिका सो करे परे नरक नहि जाइ ॥२०॥
पंच तत लै ब्रहम कर कीनी नर की देह ॥
कीया आप ही तिन बिखै इसत्री पुरख सनेह ॥२१॥

चौपई ॥

ता ते आन रमो मोहि संगा ॥
ब्यापत मुर तन अधिक अनंगा ॥
आज मिले तुमरे बिनु मरिहो ॥
बिरहानल के भीतरि जरिहो ॥२२॥

दोहरा ॥

अंग ते भयो अनंग तौ देत मोहि दुख आइ ॥
महा रुद्र जू को पकरि ताहि न दयो जराइ ॥२३॥

छंद ॥

धरहु धीरज मन बाल मदन तुमरो कस करि है ॥
महा रुद्र को ध्यान धरो मन बीच सु डरि है ॥
हम न तुमारे संग भोग रुचि मानि करैगे ॥
त्यागि धरम की नारि तोहि कबहूं न बरैगे ॥२४॥
अड़िल ॥
कहियो तिहारो मानि भोग तोसो क्योन करियै ॥
घोर नरक के बीच जाइ परबे ते डरियै ॥
तब आलिंगन करे धरम अरि कै मुहि गहि है ॥
हो अति अपजस की कथा जगत मो कौ निति कहि है ॥२५॥
चलै निंद की कथा बकत्र कस तिसै दिखैहो ॥
धरम राज की सभा ज्वाब कैसे करि दैहौ ॥
छाडि यराना बाल ख्याल हमरे नहि परियै ॥
कही सु हम सो कही बहुरि यह कहियो न करियै ॥२६॥
नृप कुअरि यौ कही भोग मो सौ पिय करियै ॥
परे न नरक के बीच अधिक चित माहि न डरियै ॥
निंद तिहारी लोग कहा करि कै मुख करि है ॥
त्रास तिहारे सौ सु अधिक चित भीतर डरि है ॥२७॥
तौ करि है कोऊ निंद कछू जब भेद लहैंगे ॥
जौ लखि है कोऊ बात त्रास तो मोनि रहैंगे ॥
आजु हमारे साथ मित्र रुचि सौ रति करियै ॥
हो नातर छाडौ टाग तरे अबि होइ निकरियै ॥२८॥
टाग तरे सो जाइ केल कै जाहि न आवै ॥
बैठि निफूंसक रहै रैनि सिगरी न बजावै ॥
बधे धरम के मै न भोग तुहि साथ करत हो ॥
जग अपजस के हेत अधिक चित बीच डरत हो ॥२९॥
कोटि जतन तुम करो भजे बिनु तोहि न छोरो ॥
गहि आपन कर आजु सगर तो को निस भोरो ॥
मीत तिहारे हेत कासि करवत हूं लैहो ॥
हो धरमराज की सभा ज्वाब ठाढी ह्वै दैहो ॥३०॥

आजु पिया तव संग सेजु रुचि मान सुहैहो ॥
मन भावत को भोग रुचित चित माहि कमैहो ॥
आजु सु रति सभ रैनि भोग सुंदर तव करिहो ॥
सिव बैरी को दरप सकल मिलि तुमै प्रहरिहो ॥३१॥
राइ बाच ॥
प्रथम छत्रि के धाम दियो बिधि जनम हमारो ॥
बहुरि जगत के बीच कियो कुल अधिक उजियारो ॥
बहुरि सभन मै बैठि आपु को पूज कहाऊ ॥
हो रमो तुहारे साथ नीच कुल जनमहि पाऊ ॥३२॥
कहा जनम की बात जनम सभ करे तिहारे ॥
रमो न हम सो आजु ऐस घटि भाग हमारे ॥
बिरह तिहारे लाल बैठि पावक मो बरियै ॥
हो पीव हलाहल आजु मिले तुमरे बिनु मरियै ॥३३॥

दोहरा ॥

राइ डरियो जउ दै मुझै स्री भगवति की आन ॥
संक त्याग या सो रमो करिहौ नरक पयान ॥३४॥
चित के सोक निवरत करि रमो हमारे संग ॥
मिले तिहारे बिनु अधिक ब्यापत मोहि अनंग ॥३५॥
नरक परन ते मै डरो करो न तुम सो संग ॥
तो तन मो तन कैसऊ ब्यापत अधिक अनंग ॥३६॥

छंद ॥

तरुन करियो बिधि तोहि तरुनि ही देह हमारो ॥
लखे तुमै तन आजु मदन बसि भयो हमारो ॥
मन को भरम निवारि भोग मोरे संगि करियै ॥
नरक परन ते नैक अपन चित बीच न डरियै ॥३७॥

दोहरा ॥

पूज जानि कर जो तरुनि मुरि कै करत पयान ॥
तवनि तरुनि गुर तवन की लागत सुता समान ॥३८॥

छंद ॥

कहा तरुनि सो प्रीति नेह नहि ओर निबाहहि ॥
एक पुरख कौ छाडि और सुंदर नर चाहहि ॥
अधिक तरुनि रुचि मानि तरुनि जा सो हित करही ॥
हो तुरतु मूत्र को धाम नगन आगे करि धरही ॥३९॥

दोहरा ॥

कहा करौ कैसे बचौ ह्रिदै न उपजत सात ॥
तोहि मारि कैसे जियो बचन नेह के नात ॥४०॥

चौपई ॥

राइ चित इह भाति बिचारो ॥
इहा सिख कोऊ न हमारो ॥
याहि भजे मेरो भ्रम जाई ॥
भाजि चलौ त्रिय देत गहाई ॥४१॥

ता ते याकी उसतति करो ॥
चरित खेलि या को परहरो ॥
बिनु रति करै तरनि जिय मारै ॥
कवन सिख्य मुहि आनि उबारै ॥४२॥
अड़िल ॥
धंन्य तरुनि तव रूप धंन्य पितु मात तिहारो ॥
धंन्य तिहारे देस धंन्य प्रतिपालन हारो ॥
धंन्य कुअरि तव बक्रत अधिक जा मै छबि छाजै ॥
हो जलज सूर अरु चंद्र द्रप कंद्रप लखि भाजै ॥४३॥
सुभ सुहाग तन भरे चारु चंचल चखु सोहहि ॥
खग म्रिग जछ भुजंग असुर सुर नर मुनि मोहहि ॥
सिव सनकादिक थकित रहित लखि नेत्र तिहारे ॥
हो अति असचरज की बात चुभत नहि ह्रिदै हमारे ॥४४॥
सवैया ॥
पौढती अंक प्रजंक लला को लै काहू सो भेद न भाखत जी को ॥
केल कमात बहात सदा निसि मैन कलोल न लागत फीको ॥
जागत लाज बढी तह मै डर लागत है सजनी सभ ही को ॥
ता ते बिचारत हौ चित मै इह जागन ते सखि सोवन नीको ॥४५॥

दोहरा ॥

बहुर त्रिया तिह राइ सो यौ बच कहियो सुनाइ ॥
आज भोग तो सो करौ कै मरिहौ बिखु खाइ ॥४६॥
बिसिखी बराबरि नैन तव बिधना धरे बनाइ ॥
लाज कौच मो कौ दयो चुभत न ता ते आइ ॥४७॥
बने ठने आवत घने हेरत हरत ग्यान ॥
भोग करन कौ कछु नही डहकू बेर समान ॥४८॥
धंन्य बेर हम ते जगत निरखि पथिक कौ लेत ॥
बरबस खुआवत फल पकरि जान बहुरि घर देत ॥४९॥
अटपटाइ बाते करै मिल्यो चहत पिय संग ॥
मैन बान बाला बिधी बिरह बिकल भयो अंग ॥५०॥

छंद ॥

सुधि जब ते हम धरी बचन गुर दए हमारे ॥
पूत इहै प्रन तोहि प्रान जब लग घट थारे ॥
निज नारी के साथ नेहु तुम नित बढैयहु ॥
पर नारी की सेज भूलि सुपने हूं न जैयहु ॥५१॥
पर नारी के भजे सहस बासव भग पाए ॥
पर नारी के भजे चंद्र कालंक लगाए ॥
पर नारी के हेत सीस दस सीस गवायो ॥
हो पर नारी के हेत कटक कवरन कौ घायो ॥५२॥
पर नारी सौ नेहु छुरी पैनी करि जानहु ॥
पर नारी के भजे काल ब्यापयो तन मानहु ॥
अधिक हरीफी जानि भोग पर त्रिय जो करही ॥
हो अंत स्वान की म्रितु हाथ लोंडी के मरही ॥५३॥
बाल हमारे पास देस देसन त्रिय आवहि ॥
मन बाछत बर मागि जानि गुर सीस झुकावहि ॥
सिख्य पुत्र त्रिय सुता जानि अपने चित धरियै ॥
हो कहु सुंदरि तिह साथ गवन कैसे करि करियै ॥५४॥

चौपई ॥

बचन सुनत क्रुधित त्रिय भई ॥
जरि बरि आठ टूक ह्वै गई ॥
अब ही चोरि चोरि कहि उठिहौ ॥
तुहि कोप करि मारि ही सुटिहौ ॥५५॥

दोहरा ॥

हसि खेलो सुख सो रमो कहा करत हो रोख ॥
नैन रहे निहुराइ क्यो हेरत लगत न दोख ॥५६॥
या ते हम हेरत नही सुनि सिख हमारे बैन ॥
लखे लगन लगि जाइ जिन बडे बिरहिया नैन ॥५७॥

छपै छंद ॥

दिजन दीजियहु दान द्रुजन कह द्रिसटि दिखैयहु ॥
सुखी राखियहु साध सत्रु सिर खड़ग बजैयहु ॥
लोक लाज कउ छाडि कछू कारज नहि करियहु ॥
पर नारी की सेज पाव सुपने हूं न धरियहु ॥
गुर जब ते मुहि कहियो इहै प्रन लयो सु धारै ॥
हो पर धन पाहन तुलि त्रिया पर मात हमारै ॥५८॥

दोहरा ॥

सुनत राव को बच स्रवन त्रिय मनि अधिक रिसाइ ॥
चोर चोर कहि कै उठी सिख्यन दियो जगाइ ॥५९॥
सुनत चोर को बच स्रवन अधिक डरियो नर नाहि ॥
पनी पामरी तजि भज्यो सुधि न रही मन माहि ॥६०॥

CHARITAR २१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥21॥439॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सुनत चोर के बच स्रवन उठियो राइ डर धार ॥
भजियो जाइ डर पाइ मन पनी पामरी डारि ॥१॥
चोरि सुनत जागे सभै भजै न दीना राइ ॥
कदम पाच सातक लगे मिले सिताबी आइ ॥२॥

चौपई ॥

चोर बचन सभ ही सुनि धाए ॥
काढे खड़ग राइ प्रति आए ॥
कूकि कहै तुहि जान न दैहै ॥
तुहि तसकर जमधाम पठै है ॥३॥

दोहरा ॥

आगे पाछे दाहने घेरि दसो दिस लीन ॥
पैंड भजन कौ न रहियो राइ जतन यौ कीन ॥४॥
वा की कर दारी धरी पगिया लई उतारि ॥

चोर चोर करि तिह गहियो द्वैक मुतहरी झारि ॥५ ॥
लगे मुहतरी के गिरियो भूमि मूरछना खाइ ॥
भेद न काहूं नर लहियो मुसकै लई चड़ाइ ॥६ ॥
लात मुसट बाजन लगी सिख्य पहुंचे आइ ॥
भ्रात भ्रात त्रिय कहि रही कोऊ न सकियो छुराइ ॥७ ॥

चौपई ॥

जूती बहु तिह मूंड लगाई ॥
मुसकै ता की ऐठ चड़ाई ॥
बंदसाल तिह दिया पठाई ॥
आनि आपनी सेज सुहाई ॥८ ॥
इह छल खेलि राइ भज आयो ॥
बंदसाल त्रिय भ्रात पठायो ॥
सिख्यन भेद अभेद न पायो ॥
वाही कौ तसकर ठहरायो ॥९ ॥

CHARITAR २२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे बाईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥22॥448॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

भयो प्रात सभ ही जन जागे ॥
अपने अपने कारज लागे ॥
राइ भवन ते बाहर आयो ॥
सभा बैठ दीवान लगायो ॥१ ॥

दोहरा ॥

प्रात भए तवनै त्रिया हित तजि रिस उपजाइ ॥
पनी पामरी जो हुते सभहिन दए दिखाइ ॥२ ॥

चौपई ॥

राइ सभा महि बचन उचारे ॥
पनी पामरी हरे हमारे ॥
ताहि सिख्य जो हमै बतावै ॥
ता ते काल निकट नहि आवै ॥३ ॥

दोहरा ॥

बचन सुनत गुर बक्रत ते सिख्य न सके दुराइ ॥
पनी पामरी के सहित सो त्रिय दई बताइ ॥४ ॥

चौपई ॥

तबै राइ यौ बचन उचारे ॥
गहि ल्यावहु तिह तीर हमारे ॥
पनी पामरी संग लै ऐयहु ॥
मोरि कहे बिनु त्रास न दैयहु ॥५ ॥

दोहरा ॥

सुनत राइ के बचन को लोग परे अरराइ ॥
पनी पामरी त्रिय सहित ल्यावत भए बनाइ ॥६॥
अड़िल ॥
कहु सुंदरि किह काज बसत्र तै हरे हमारे ॥
देख भटन की भीरि त्रास उपज्यो नहि थारे ॥
जो चोरी जन करै कहौ ता कौ क्या करियै ॥
हो नारि जानि कै टरौ नातर जिय ते तुहि मरियै ॥७॥

दोहरा ॥

पर पियरी मुख पर गई नैन रही निहुराइ ॥
धरक धरक छतिया करै बचन न भाख्यो जाइ ॥८॥
अड़िल ॥
हम पूछहिगे याहि न तुम कछु भाखियो ॥
याही कै घर माहि भली बिधि राखियो ॥
निरनौ करि है एक इकात बुलाइ कै ॥
हो तब देहै इह जान ह्रिदै सुखु पाइ कै ॥९॥

चौपई ॥

प्रात भयो त्रिय बहुरि बुलाई ॥
सकल कथा कहि ताहि सुनाई ॥
तुम कुपि हम परि चरित बनायो ॥
हमहूं तुम कह चरित दिखायो ॥१०॥
ता को भ्रात बंदि ते छोरियो ॥
भाति भाति तिह त्रियहि निहोरियो ॥
बहुरि ऐस जिय कबहूं न धरियहु ॥
मो अपराध छिमापन करियहु ॥११॥

दोहरा ॥

छिमा करहु अब त्रिय हमै बहुरि न करियहु राधि ॥
बीस सहंस टका तिसै दई छिमाही बाधि ॥१२॥

CHARITAR २३ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे तेईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥23॥460॥अफजूं॥

सोरठा ॥
दीनो बहुरि पठाइ बंदसाल पित पूत कउ ॥
लीनो बहुरि बुलाइ भोर होत अपुने निकटि ॥१॥

चौपई ॥

पुनि मंत्री इक कथा उचारी ॥
सुनहु राइ इक बात हमारी ॥
एक चरित त्रिय तुमहि सुनाऊ ॥
ता ते तुम कौ अधिक रिझाऊ ॥२॥
उतर देस न्रिपति इक भारो ॥
सूरज बंस माहि उजियारो ॥
चंद्रमती ता की पटरानी ॥
मानहु छीर सिंध मथिआनी ॥३॥

एक सुता ता के भव लयो ॥
जानक डारि गोद रवि दयो ॥
जोबन जेब अधिक तिह बाढी ॥
मानहु चंद्र सार मथि काढी ॥४॥
धरियो सुमेर कुअरि तिह नामा ॥
जा सम और न जग मै बामा ॥
सुंदरि तिहूं भवन महि भई ॥
जानुक कला चंद्र की वई ॥५॥
जोबन जेब अधिक तिह धरी ॥
मैन सुनार भरनु जनु भरी ॥
वा की प्रभा जात नहि कही ॥
जानक फूल मालती रही ॥६॥

दोहरा ॥

जगै जुबन की जेब के झलकत गोरे अंग ॥
जनु करि छीर समुंद्र मै दमकत छीर तरंग ॥७॥

चौपई ॥

दछिन देस न्रिपत वह बरी ॥
भाति भाति के भोगन करी ॥
दोइ पुत्र कंन्या इक भई ॥
जानुक रासि रूपि की वई ॥८॥
कितकि दिनन राजा वहु मरियो ॥
तिह सिर छत्रु पूत बिधि धरियो ॥
को आग्या ता की ते टरै ॥
जो भावे चित मै सो करै ॥९॥
ऐस भाति बहु काल बिहान्रयो ॥
चड़ियो बसंत सभन जिय जान्यो ॥
ता ते पिय बिन रहियो न परै ॥
बिरह बान भए हियरा जरै ॥१०॥

दोहरा ॥

बिरह बान गाड़े लगे कैसक बंधै धीर ॥
मुख फीकी बातै करै पेट पिया की पीर ॥११॥
सर अनंग के तन गडे कढे दसऊअलि फूटि ॥
लोक लाज कुल कानि सभ गई तरक दै तूटि ॥१२॥
एक पुरख सुंदर हुतो ता कौ लयो बुलाइ ॥
मैन भोग ता सौ कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१३॥

चौपई ॥

ता सौ भोग करत त्रिय रसी ॥
जन ह्वै नारि भवन तिह बसी ॥
नित निसा कह ताहि बुलावै ॥
मन भावत के भोग कमावै ॥१४॥
आवत ताहि लोग सभ रोकै ॥
चोर पछानि पाहरू टोकै ॥
जब चेरी तिन बचन सुनावै ॥
तब ग्रिह जार सु पैठै पावै ॥१५॥

भोग जार सो त्रिय अति करै ॥
भाति भाति के भोगन भरै ॥
अधिक काम को त्रिय उपजावै ॥
लपटि लपटि करि भोग कमावै ॥१६॥

दोहरा ॥

जब चेरी पहरून को उतर देत बनाइ ॥
तब वहु पावत पैठबो मीत मिलत तिह आइ ॥१७॥

चौपई ॥

रैनि भई त्रिय मित्र बुलायो ॥
त्रिय को भेस धारि सो आयो ॥
इह बिधि ता सो बचन उचरे ॥
हम सो भोग अधिक तुम करे ॥१८॥
नारि कहियो सुनि मित्र हमारे ॥
कहो बात सो करहु प्यारे ॥
मंत्र मोर कानन धरि लीजहु ॥
अवर किसू तन भेद न दीजहु ॥१९॥
एक दिवस तुम बन मै जैयहु ॥
एक बावरी भीतरि नैयहु ॥
मोहि मिले जदुपति यौ कहियहु ॥
ए बच भाखि मौन ह्वै रहियहु ॥२०॥
तुम जो लोग देख है आई ॥
यौ कहि यहु तिन बचन सुनाई ॥
आनि गाव ते बचन कहैंगे ॥
सुन बतिया हम चक्रित रहैंगे ॥२१॥
चड़ि झंपान सु तहा हम ऐ है ॥
गुरू भाखि तव सीस झुकै है ॥
लै तो को अपने घर जैहो ॥
भाति भाति के भोग कमैहो ॥२२॥
तवनै जार तैस ही कियो ॥
जवन भाति अबला कहि दियो ॥
भयो प्रात बन माहि सिधारियो ॥
एक बावरी माहि बिहारियो ॥२३॥

दोहरा ॥

मजन करि बापी बिखै बैठियो ध्यान लगाइ ॥
कहियो आनि मुहि दै गए दरसन स्री जदुराइ ॥२४॥

चौपई ॥

यौ सुनि लोक सकल ही धाए ॥
छेरा सकर कुचारू ल्याए ॥
दूध भात आगे लै धरही ॥
भाति भाति सौ पाइन परही ॥२५॥
दरस दयो तुम कौ जदुराई ॥
गुरू भाखि दै गयो बडाई ॥
ता ते सभ उसतति हम करही ॥
महा काल की बंद न परही ॥२६॥

दोहरा ॥

महा काल की बंद ते सभ को लेहु छुराइ ॥
तव प्रसादि बिचरहि सुरग परहि नरक नहि जाइ ॥२७॥

चौपई ॥

चली कथा पुरि भीतरि आई ॥
तिन रानी स्रवनन सुनि पाई ॥
चड़ि झंपान तहा कह चली ॥
लीने बीस पचासिक अली ॥२८॥

दोहरा ॥

चली चली आई तहा जहा हुते निजु मीत ॥
भाखि गुरू पाइन परी अधिक मान सुख चीत ॥२९॥

चौपई ॥

किह बिधि दरसु स्याम तुहि दीनो ॥
कवन क्रिपा करि कै गुर कीनो ॥
सकल कथा वहु हमै सुनावहु ॥
मोरे चित को ताप मिटावहु ॥३०॥

दोहरा ॥

जो कछु कथा तुम पै भई सु कछु कहौ तुम मोहि ॥
तुहि जदुपति कैसे मिले कहा दयो बर तोहि ॥३१॥

चौपई ॥

मजन हेत इहा मै आयो ॥
न्रहाइ धोइ करि ध्यान लगायो ॥
इक चित ह्वै द्रिड़ जपु जब कियो ॥
तब जदुपति दरसन मुहि दियो ॥३२॥
सुनु अबला मै कछू न जानो ॥
कहा दयो मुहि कहा बखानो ॥
मै लखि रूप अचरज तब भयो ॥
मो कह बिसरि सभै किछु गयो ॥३३॥

दोहरा ॥

बनमाला उर मै धरी पीत बसन फहराइ ॥
निरख दिपत दामनि लजै प्रभा न बरनी जाइ ॥३४॥

चौपई ॥

अधिक जोति जदुपति की सोहै ॥
खग म्रिग जछ भुजंगन मोहै ॥
लहि नैनन को म्रिग सकुचाने ॥
कमल जानि अलि फिरत दिवाने ॥३५॥

छंद ॥

पीत बसन बनमाल मोर को मुकट सु धारै ॥

मुख मुरली अति फबत हिये कौसतभ मनि धारै ॥
सारंग सुदरसन गदा हाथ नंदग असि छाजै ॥
लखे सावरी देह सघन घन सावन लाजै ॥३६॥

दोहरा ॥

चतुर कान्रह आयुध चतुर चहूं बिराजत हाथ ॥
दोख हरन दीनो धरन सभ नाथन कै नाथ ॥३७॥
नवल कान्रह गोपी नवल नवल सखा लिये संग ॥
नवल बसत्र जामै धरे रंगित नाना रंग ॥३८॥
इहै भेख भगवान को या मै कछू न भेद ॥
इहै उचारत सासत्र सभ इहै बखानत बेद ॥३९॥
इहै भेख पंडित कहै इहै कहत सभ कोइ ॥
दरसु दयो जदुपति तुमै या मै भेद न कोइ ॥४०॥

चौपई ॥

सभ बनिता पाइन पर परी ॥
भाति भाति सो बिनती करी ॥
नाथ हमारे धाम पधारहु ॥
स्री जदुपति को नाम उचारहु ॥४१॥

दोहरा ॥

धाम चलो हमरे प्रभू करि कै क्रिपा अपार ॥
हम ठाढी सेवा करै एक चरन निरधार ॥४२॥
रानी सुत तुमरे जियै सुखी बसै तव देस ॥
हम अतीत बन ही भले धरे जोग को भेस ॥४३॥

चौपई ॥

क्रिपा करहु ग्रिह चलहु हमारे ॥
लगी पाइ मै रहो तिहारे ॥
जो कछु कहो करिहो अब सोई ॥
तव आग्या फेरि है न कोई ॥४४॥

दोहरा ॥

मै या सो गोसटि करो कहि अलि दई उठाइ ॥
आपु आइ ता सो रमी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥४५॥
लै ता को घर चली मन मानत करि भोग ॥
याहि मिलियो सभ हरि कहै भेद न जानहि लोग ॥४६॥

चौपई ॥

तवन जार को संग लै चली ॥
लीने साथि पचासकि अली ॥
गोसटि हेत धाम तिह आवै ॥
संक त्यागि करि भोग कमावै ॥४७॥

दोहरा ॥

तवन जार सौ यौ रहै निजु नारी जियो होइ ॥
लोग गुरू कहि पग परै भेद न पावै कोइ ॥४८॥

चंचलान के चरित्र को सकत न कोऊ पाइ ॥
चंद्र सूर सुर असुर सभ ब्रहम बिसन सुर राइ ॥४९॥

CHARITAR २४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौबीसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥24॥509॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

गंग जमुन भीतर बसै कैलाखर दी दून ॥
तिह ठा लोग बसै घनै प्रतछ पसू की जून ॥१॥

चौपई ॥

बहुरि सु मंत्री बचन उचारे ॥
सुनहु न्रिपति प्रानन ते प्यारे ॥
एक कथा त्रिय तुमहि सुनाऊ ॥
ता ते तुमरो ताप मिटाऊ ॥२॥

दोहरा ॥

कैलाखर के राव की एक हुती बर नारि ॥
राज नसट के हेतु तिन चित मै किया बिचारि ॥३॥

चौपई ॥

प्रेम कुअरि ता की इक रानी ॥
बिरध राव लखि करि डर पानी ॥
या के धाम एक सुत नाही ॥
इह चिंता ता के चित माही ॥४॥

दोहरा ॥

पुत्र न ग्रिह या के भयो बिरध गयो ह्वै राइ ॥
केल कला तै थकि गयो सकत न सुत उपजाइ ॥५॥

चौपई ॥

ता ते कछू चरित्र बनैये ॥
राज धाम ते जान न दैयै ॥
पूत अनत कौ लै करि परियै ॥
नाम न्रिपति कौ बदन उचरियै ॥६॥

दोहरा ॥

गरभवती इक त्रिय हुती लीनी निकटि बुलाइ ॥
रनियहि रहियो अधान जग ऐसे दई उडाइ ॥७॥
अधिक दरब ता कौ दयो मोल पुत्र तिह लीन ॥
सुत उपज्यो ग्रिह राइ के यौ कहि उतसव कीन ॥८॥
डोम भाट ढाढीन कौ दीना दरबु अपार ॥
सेर सिंघ ता कौ धरियो सभहिन नाम सुधार ॥९॥

चौपई ॥

कितक दिनन राजा मरि गयो ॥
राव सु सेर सिंघ तह भयो ॥
राव राव सभ लोग बखानै ॥
ता को भेद न कोऊ जानै ॥१०॥

दोहरा ॥

करम रेख की गति हुते भए रंक ते राइ ॥
रावत ते राजा करे त्रिया चरित्र बनाइ ॥११॥

CHARITAR २५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे पचीसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥25॥520॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

कथा सुनाऊ बनिक की सुन न्रिप बर तुहि संग ॥
इक त्रिया ता की बन बिखै बुरि पर खुद्रयो बिहंग ॥१॥

चौपई ॥

जब ही बनिक बनिज ते आवै ॥
बीस चोर अब हने सुनावै ॥
प्रात आनि इमि बचन उचारे ॥
तीस चोर मै आजु संघारे ॥२॥
ऐसी भाति नित वहु कहै ॥
सुनि त्रिय बैन मोन ह्वै रहै ॥
ता के मुख पर कछू न भाखै ॥
ए सभ बात चित मै राखै ॥३॥
निरत मती इह बिधि तब कियो ॥
बाजसाल ते है इक लियो ॥
बाधि पाग सिर खड़ग नचायो ॥
सकल पुरख को भेस बनायो ॥४॥
दहिने हाथ सैहथी सोहै ॥
जा के तीर सिपाही कोहै ॥
सभ ही साज पुरख के बनी ॥
जानुक महाराज पति अनी ॥५॥

दोहरा ॥

सिपर सरोही सैहथी धुजा रही फहराइ ॥
महाबीर सी जानियै त्रिया न समझी जाइ ॥६॥
बनिज हेत बनिया चलियो अति हरखत सभ अंग ॥
गावत गावत गीत सुभ बन मै धसियो निसंग ॥७॥

चौपई ॥

बनिक जात एकलौ निहारियो ॥
छलो याहि यौ बाल बिचारियो ॥
मारि मारि करि सामुहि धाई ॥
काढि क्रिपान पहूंची आई ॥८॥

दोहरा ॥

कहा जात रे मूड़ मति जुध करहु डर डारि ॥
मारत हो नहि आजु तुहि पगिया बसत्र उतारि ॥९॥

चौपई ॥

बनिक बचन सुनि बसत्र उतारे ॥
घास दात गहि राम उचारे ॥
सुन तसकर मै दास तिहारो ॥
जानि आपनो आजु उबारो ॥१०॥

दोहरा ॥

जौ अपनी तै गुदा पर खोदन देइ बिहंग ॥
तो तुम अब जीवत रहो बचै तिहारे अंग ॥११॥
तबै बनिक तैसे किया ज्यों त्रिय कहियो रिसाइ ॥
थरहरि करि छित पर गिरियो बचन न भाख्यो जाइ ॥१२॥
तबु तरुनी है ते उतरि इक छुरकी के संग ॥
राम भनै तिह बनिक की बुरि पर खुद्रयो बिहंग ॥१३॥

CHARITAR २६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे छबीसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥26॥533॥अफजूं॥*

चौपई ॥

कंक नाम दिजबर इक सुना ॥
पड़्हे पुरान सासत्र बहु गुना ॥
अति सुंदर तिह रूप अपारा ॥
सूर लयो जा ते उजिआरा ॥१॥
दिज को रूप अधिक तब सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥
लाबे केस छके घुंघरारे ॥
नैन जानु दोऊ बने कटारे ॥२॥
ब्योम कला रानी रस भरी ॥
बिरध राइ सुत हित जरी ॥
तिन त्रिय भोग कंक सौ चहा ॥
लए कपूर आवतो गहा ॥३॥
त्रिय दिजबर सो बचन उचारे ॥
भजहु आजु तुम हमै पियारे ॥
कंक न ता की मानी कही ॥
रानी बाहि जोर तन गही ॥४॥

दोहरा ॥

गहि चुंबन लागी करन न्रिपत निकसया आइ ॥
तब त्रिय किया चरित्र इक अधिक ह्रिदै सकुचाइ ॥५॥
या दिजबर ते मै भ्रमी सुनु राजा मम सूर ॥
जिनि इन चोरि भख्यो कछू सुंघन हुती कपूर ॥६॥
सूर नाम सुनि मूरि मति अति हरखत भयो जीय ॥
सींघत हुती कपूर कह धंन्य धंन्य इह त्रीय ॥७॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे सताईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥27॥540॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

अनत कथा मंत्री इक कही ॥
सुनि सभ सभा मोनि ह्वै रही ॥
एक अहीर नदी तट रहई ॥
अति सुंदरि तिह त्रिय जग कहई ॥१॥

दोहरा ॥

रूप कुरूप अहीर को सुंदर ता की नारि ॥
वहु तरुनी इक राव को अटकी रूप निहारि ॥२॥

चौपई ॥

दुखत अहीर नारि को राखै ॥
कटु कटु बचन रैन दिन भाखै ॥
गोरस बेचन जान न देई ॥
छीनि बेचि गहनन कह लई ॥३॥
अड़िल ॥
सूरछट तिह नाम तरुनि को जानियै ॥
छत्र केतु न्रिप भए अधिक हित मानियै ॥
चंद्रभगा सरिता तट भैस चरावई ॥
हो जही राव नावन हित नितप्रत आवई ॥४॥

चौपई ॥

गोरस दुहन त्रियहि तह ल्यावै ॥
समै पाइ राजा तह जावै ॥
दुहत छीरि कटिया दुख देई ॥
त्रिय कह भाखि ताहि गहि लेई ॥५॥

दोहरा ॥

जब वहु चोवत भैस को करि कै नीचा सीस ॥
तुरत आनि त्रिय को भजै बहु पुरखन को ईस ॥६॥
भाति भाति राजा भजै ता कह मोद बढाइ ॥
चिमटि चिमटि सुंदरि रमै लपटि लपटि त्रिय जाइ ॥७॥
चोट लगे महिखी कंपै दुघद परत छित आइ ॥
संग अहीर अहीरनी बोलत कोप बढाइ ॥८॥
अड़िल ॥
सुनहु अहीरन बैन कहा तुम करत हो ॥
भूमि गिरावत दूध न मो ते डरत हो ॥
कहियो त्रिया पिय साथ बात सुनि लीजियै ॥
हो कटी दुखावत याहि पियन पै दीजियै ॥९॥

दोहरा ॥

राव अहीरनि दुइ तरुन भोग करहि सुख पाइ ॥

लपटि लपटि राजा रमै चिमटि चिमटि त्रिय जाइ ॥१०॥
डोलत महिखी न रहै बोल्यो बचन अहीर ॥
कहा करत हो ग्वारनी ब्रिथा गवावत छीर ॥११॥
हो अहीर मै क्या करो कटिया मुहि दुख देत ॥
या कह चूंघन दीजियै दुगध जियन के हेत ॥१२॥
अधिक मानि सुख घर गयो राव अहीर निसंग ॥
यौ कहि मंत्री न्रिपति पति पूरन कीयो प्रसंग ॥१३॥
भेद अहीर न कछु लहियो आयो अपने ग्रेह ॥
राम भनै तिन त्रिय भए अधिक बढायो नेह ॥१४॥

CHARITAR २८ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे अठाईसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥28॥554॥अफजूं॥

सोरठा ॥
बंदसाल के माह न्रिप बर दिया उठाइ सुत ॥
बहुरो लिया बुलाइ भोर होत अपने निकटि ॥१॥

दोहरा ॥

दुतिया मंत्री बुधि बर राज रीति की खानि ॥
चित्र सिंघ राजा निकट कथा बखानी आनि ॥२॥

चौपई ॥

सरिता निकटि राव इक रहै ॥
मदन केतु नामा जग कहै ॥
मदन मती तिय तह इक बसी ॥
संग सु तवन राइ के रसी ॥३॥

दोहरा ॥

पैरि नदी को पार को उठि न्रिप तिह प्रति जाइ ॥
भाति भाति तिह नारि को भजत अधिक सुख पाइ ॥४॥

चौपई ॥

कबहूं पैरि नदी न्रिप जावै ॥
कबहूं तरि ता को त्रिय आवै ॥
आपु बिखै अति हित उपजावै ॥
भाति भाति सो भोग कमावै ॥५॥
कोक सासत्र की रीति उचरै ॥
भाति अनिक रसि रसि रति करै ॥
लपटि लपटि करि केल कमावै ॥
वैसे ही पैरि नदी घरि आवै ॥६॥
ऐसी बिधि दोऊ नित बिहारै ॥
ताप चित के सकल निवारै ॥
काम केल बहु बिधि उपजावै ॥
वैसे ही पैरि नदी घर आवै ॥७॥

दोहरा ॥

तरी तरुनि आवत हुती ह्रिदै हरख उपजाइ ॥

तब लो लहिर समुंद्र सी निकट पहूंची आइ ॥८॥
अपनो सो बल करि थकी पार न भई बनाइ ॥
लहरि नदी की आइ तह लै गई कहूं बहाइ ॥९॥

चौपई ॥

बहत बहत कोसन बहु गई ॥
लागत एक किनारे भई ॥
एक अहीर द्रिसटि तिह आयो ॥
हाक मार त्रिय ताहि बुलायो ॥१०॥

दोहरा ॥

हे अहीर हौ जात हौ बहत नदी के माहि ॥
जो ह्यां ते काढै मुझै वहै हमारो नाहि ॥११॥

चौपई ॥

धावत सुनि अहीर बच आयो ॥
ऐचि त्रिया कह तीर लगायो ॥
बहुरि भोग तिह सौ तिन करियो ॥
घर लै जाइ घरनि तिह करियो ॥१२॥

दोहरा ॥

प्रान बचायो आपनो रति अहीर सौ ठानि ॥
बहुर राव की रुचि बढी अधिक तरुनि की आन ॥१३॥

चौपई ॥

सुनु अहीर मै त्रिया तिहारी ॥
तुम प्यारो मुहि मै तुहि प्यारी ॥
राइ नगर मै नहिन निहारो ॥
तिह देखन कह हिया हमारो ॥१४॥

दोहरा ॥

चलहु अबै उठि कै दोऊ तवन नगर मै जाइ ॥
भाति भाति के सुख करै ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१५॥
तवन नगर आवत भई लै गूजर को साथ ॥
तिवही तरि भेटत भई उहीं न्रिपति के साथ ॥१६॥

चौपई ॥

तैसिय भाति नदी तरि गई ॥
वैसिय भेट न्रिपति सौ भई ॥
भूप कहियो बहुते दिन आई ॥
आजु हमारी सेज सुहाई ॥१७॥

दोहरा ॥

सुनु राजा तुम बिनु अधिक त्रिय पायो तन दुख्य ॥
तुम हम पै कोऊ न पठियो पूछन कुसल मनुख्य ॥१८॥

चौपई ॥

जब त्रिय अधिक दुख्य तन पायो ॥
प्रानाकुल हम कूक सुनायो ॥
जो या दुख ते बैद उसारै ॥
सो हमरो ह्वै नाथ बिहारै ॥१९॥

दोहरा ॥

इक अहीर उपचार करि मो कौ लियो उबारि ॥
अब मो सौ ऐसे कहत होहि हमारी नारि ॥२०॥

चौपई ॥

दुखित होइ तुहि मै यौ कही ॥
मो कर ते बतिया अब रही ॥
कहु राजा मो कह का करियै ॥
तो सौ छाडि रंक कह बरियै ॥२१॥

दोहरा ॥

सुनत बचन ता को न्रिपत लयो अहीर बुलाइ ॥
तुरत बाधि ता को दिया सरिता बिखै बहाइ ॥२२॥
प्रान उबारियो सुख दीआ जम ते लीआ बचाइ ॥
न्रिप हित ते मारियो तिसै ऐसो चरित्र दिखाइ ॥२३॥

CHARITAR २९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे उनतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥29॥577॥अफजूं॥*

चौपई ॥

चित्र सिंघ मंत्री सौ कही ॥
हम ते सकल कुक्रिया रही ॥
तुम जो हम सौ बचन उचारे ॥
जानुक सुधा स्रवन भरि डारे ॥१॥

दोहरा ॥

मन क्रम बच करि मंत्रि बरि इहै बचन मुर तोहि ॥
जो कछु चरित इसत्रिन करे सु कछु कहो सभ मोहि ॥२॥
एक राव कानो हुतो ताहि कुक्रिया नार ॥
रमी जार सौ राइ की आख अंबीरह डारि ॥३॥

चौपई ॥

जब ही मास फागु को आयो ॥
नर नारिन आनंद बढायो ॥
घर घर होत कुलाहल भारी ॥
गावत गीत बजावत तारी ॥४॥
चाचर मती नाम त्रिय ता कौ ॥
अति सुंदर बिध बपु किय वा को ॥
मानी सैन न्रिपत को नामा ॥

चाचर मती जवन की बामा ॥५॥
रूपवंत नट तवन निहारियो ॥
मदन तबै तन बिसिख प्रहारियो ॥
मन क्रम बच करि कै बसि भई ॥
जानुक दास मोल की लई ॥६॥

दोहरा ॥

घर घर चाचरि खेलही घर घर गैयहि गीत ॥
घर घर होत म्रिदंग धुन घर घर नचत संगीत ॥७॥
तिह ठा एक प्रबीन नट सभ नटूअन को राइ ॥
मदन छपाए काढीऐ मदन कि नवरंग राइ ॥८॥

चौपई ॥

चाचर परी नगर मै भारी ॥
गावत गीत सभै नर नारी ॥
नवलासिन हाथन लहकावै ॥
चतुरन के चतुरा तन लावै ॥९॥

दोहरा ॥

घर घर चाचर गावही घर घर बजत म्रिदंग ॥
हरि दर राग अलापियत घर घर बजत मुचंग ॥१०॥
घर घर अबला गावही मिलि मिलि गीत बचित्र ॥
मुरली मुरज म्रिदंग धुन जह तह बजत बजित्र ॥११॥

चौपई ॥

नर नारिन मिल खेल रचायो ॥
फूल पान कैफान मंगायो ॥
दुहूं ओर नवलासिन मारै ॥
मधुर मधुर धुनि गीत उचारै ॥१२॥

दोहरा ॥

छैल छबीली खेल ही नर नारिन की भीर ॥
जित जित द्रिसट पसारियै तितहि किसरिया चीर ॥१३॥
घर घर चाचर खेलीयहि हसि हसि गैयहि गीत ॥
घर घर होत म्रिदंग धुनि घर घर नचत संगीत ॥१४॥
निरखि रूप ता को सकल उरझि रहियो सु कुमार ॥
रानी हूं चटपट अटक नट सो कियो पा॥ ॥१५॥
खेलत फागु बचित्र गति नर नारी सुख पाइ ॥
अलता की आंधी चली मनुख न निरख्यो जाइ ॥१६॥
क्रम क्रम बजै बजंत्र बहु रुन झुन मुरलि मुचंग ॥
झिमि झिमि बरसियो नेह रस द्रिम द्रिम दया म्रिदंग ॥१७॥

चौपई ॥

अलता साथ भयो अंधयारो ॥
द्रिसटि परत नहि हाथ पसारो ॥
रानी पति अंबीर द्रिग पारा ॥
जानुक न्रिपहि अंध कै डारा ॥१८॥

दोहरा ॥

एक आखि काना हुतो दुतियो परा अंबीर ॥
गिरियो अंध जिमि ह्वै न्रिपति द्रिग जुत भयो असीर ॥१९ ॥
रानी नवरंग राइ कौ तब ही लिया बुलाइ ॥
आलिंगन चुंबन करे दिड़ रति करी मचाइ ॥२० ॥
जब लगि न्रिप द्रिग पोछि करि देखन लग्यो बनाइ ॥
तब लगि रानी मानि रति नटूआ दिया उठाइ ॥२१ ॥

CHARITAR ३० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे तीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥30॥598॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बहुरि राव ऐसे कहा बिहस सु मंत्री संग ॥
चरित चतुर चतुरान के मो सौ कहौ प्रसंग ॥१ ॥

चौपई ॥

एक बनिक की बाल बखानिय ॥
अधिक दरबु जिह धाम प्रमानिय ॥
तिनिक पुरख सौ हेतु लगायो ॥
भोग काज गहि ग्रेह मंगायो ॥२ ॥

दोहरा ॥

मान मंजरी साहु की बनिता सुंदर देह ॥
बिद्रयानिधि इक बाल सौ अधिक बढायो नेह ॥३ ॥

चौपई ॥

तब ता सौ त्रिय बचन उचारे ॥
आजु भजहु मुहि आनि प्यारे ॥
तिन वा त्रिय सौ भोग न करियो ॥
राम नाम लै उर मै धरियो ॥४ ॥

दोहरा ॥

राम नाम लै उठि चला जात निहारा नारि ॥
चोर चोर कहि कै उठी अति चित कोप बिचार ॥५ ॥
सुनत चोर को बच स्रवन लोक पहुंचै आइ ॥
बंदसाल भीतर तिसै तद ही दिया पठाइ ॥६ ॥
तद लौ त्रिय कुटवार के भई पुकारू जाइ ॥
धन बल ते तिह साध कह जमपुरि दयो पठाइ ॥७ ॥

CHARITAR ३१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे इकतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥31॥605॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनहु न्रिपति इक कथा सुनाऊ ॥
ता ते तुम कह अधिक रिझाऊ ॥
देस पंजाब एक बर नारी ॥
चंद्र लई जा ते उजियारी ॥१॥
रस मंजरी नाम तिह त्रिय को ॥
निरखि प्रभा लागत सुख जिय को ॥
ता को नाथ बिदेस सिधारो ॥
तिह जिय सोक तवन कौ भारो ॥२॥

दोहरा ॥

अमित दरब ता के सदन चोरन सुनी सुधारि ॥
रैनि परी ता के परे अमित मसालै जारि ॥३॥

चौपई ॥

चोर आवत अति नारि निहारे ॥
ऐस भाति सो बचन उचारे ॥
सुनु तसकर मै नारि तिहारी ॥
अपनी जान करहु रखवारी ॥४॥

दोहरा ॥

सभ ग्रिह को धनु तुम हरहु हमहूं संग लै जाहु ॥
भाति भाति के रैनि दिन मो सौ केल कमाहु ॥५॥
प्रथम हमारे धाम को भोजन करहु बनाइ ॥
पाछे मुहि लै जाइयहु ह्रिदै हरख उपजाइ ॥६॥

चौपई ॥

चोर कहियो त्रिय भली उचारी ॥
अब नारी तै भई हमारी ॥
प्रथम भछ कै हमहि खवावहु ॥
ता पाछे मुरि नारि कहावहु ॥७॥

दोहरा ॥

चौछता पर तब तरुनि चोरन दियौ चराइ ॥
आपि कराही चारि कै लीने बरे पकाइ ॥८॥

चौपई ॥

चोर महल पर दए चड़ाई ॥
आपु मारि ताले उठि आई ॥
बैठि तेल को भोज पकायो ॥
अधिक बिखै भे ताहि मिलायो ॥९॥

दोहरा ॥

डारि महुरा भोज मै चोरन दयो खवाइ ॥
निकसि आपि आवत भई तालो द्रिड़ करि लाइ ॥१०॥

चौपई ॥

हसि हसि बैन चोर सो कहै ॥
ता को हाथ हाथ सो गहै ॥
बातन सो ता को बिरमावै ॥
बैठी आपि तेल अवटावै ॥११॥

दोहरा ॥

तेल जबै तातो भयो ता की द्रिसटि बचाइ ॥
डारि सीस ता के दयो मारियो चोर जराइ ॥१२॥
चोर राज जरि कै मरियो चोर मरियो बिखु खाइ ॥
प्रात भए कुटवार के सभ ही दए बंधाइ ॥१३॥

CHARITAR ३२ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे बतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥32॥618॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उतर देस राव इक कहियै ॥
अधिक रूप जा को जग लहियै ॥
छत्र केतु राजा को नामा ॥
निरखि थकित रहई जिह बामा ॥१॥
छत्र मंजरी नाम तवन को ॥
अधिक रूप जग सुनत जवन को ॥
भवन चतुरदस माझि उजियारी ॥
राजा छत्रकेतु की नारी ॥२॥
छत्र मंजरी ता की प्यारी ॥
अंग उतंग न्रिपति ते भारी ॥
बहुत जतन आगम को करै ॥
कैसे राज हमारो सरै ॥३॥
कंन्या ह्वै ता के मरि जाही ॥
पूत आनि प्रगटै कोऊ नाही ॥
त्रिय कौ सोक अधिक जिय भारो ॥
चरित एक तिय चित बिचारो ॥४॥
सुत बिनु त्रिय चित चित बिचारी ॥
क्यो न दैव गति करी हमारी ॥
दिज मुरि हाथ दान नहि लेही ॥
ग्रिह के लोग उराभे देही ॥५॥
ता ते दुराचार कछु करियै ॥
पुत्र राव को बदन उचरियै ॥
एक पुत्र लीजै उपजाई ॥
न्रिप को कवन निरखि है आई ॥६॥
सवति एक तिह न्रिपति बुलाई ॥
इह ब्याहहु इह जगत उडाई ॥
यौ सुनि नारि अधिक अकुलाई ॥
सेवकान सौ दरबु लुटाई ॥७॥

दोहरा ॥

सवति त्रास रानी अधिक लोगन दरबु लुटाइ ॥
ते वा की सवतिह चहै सकै न मूरख पाइ ॥८॥

चौपई ॥

लोग सवति ता की कह चहै ॥
वा की उसतति न्रिप सो कहै ॥
कहै जु इह प्रभू बरै सु मारो ॥
अधिक टूकरो चलै हमारो ॥९॥
सवति त्रास अति त्रियहि दिखावै ॥
ता को मूंड मूंड करि खावै ॥
ता कह दरबु न देखन देही ॥
लूटि कूटि बाहर ते लेही ॥१०॥
पुनि तिह मिलिहि सवति सौ जाई ॥
भाति भाति तिन करहि बडाई ॥
तुम कह बरि है न्रिपति हमारो ॥
ह्वैहै अधिक प्रताप तुमारो ॥११॥
यौ कहि कै ता कौ धन लूटहि ॥
बहुरि आनि वा त्रिया कह कूटहि ॥
इह बिध त्रास तिनै दिखरावै ॥
दुहूंअन मूंड मूंडि कै खावै ॥१२॥

दोहरा ॥

अनिक भाति तिह न्रिपति को दुहूंअन त्रास दिखाइ ॥
दरबु जड़नि के धाम कौ इह छल छलहि बनाइ ॥१३॥

चौपई ॥

सवति त्रास जड़ दरबु लुटावै ॥
दुराचार सुत हेत कमावै ॥
अधिक प्रीति तिन के संग ठानै ॥
मूरख नारि भेद नहि जानै ॥१४॥

दोहरा ॥

ते रमि औरन सो कहै इह कुतिया किह काज ॥
एक दरबु हमै चाहियै जौ दै स्री जदुराज ॥१५॥

चौपई ॥

यह सभ भेद न्रिपति जिय जानै ॥
मूरख नारि न बात पछानै ॥
राजा अवर त्रियान बुलावै ॥
भाति भाति के भोग कमावै ॥१६॥

दोहरा ॥

ध्रिग ता त्रिय कह भाखियै जा कह पिय न बुलाइ ॥
तिह देखत त्रिय अनत की सेज बिहारन जाइ ॥१७॥

चौपई ॥

मूरख नारि भेद नहि पावै ॥
सवति त्रास ते दरबु लुटावै ॥
ते वा की कछु प्रीति न मानै ॥

न्रिपति भए कछु और बखानै ॥१८॥

अड़िल ॥

सुनो राइ इक त्रिया सुभ ताहि बुलाइयै ॥
ता सौ मैन बिहार बिसेख कमाइयै ॥
ऐसी त्रिय कर परै जान नहि दीजियै ॥
हो निजु नारी सो नेहु न कबहूं कीजियै ॥१९॥

चौपई ॥

भलौ वहै जो भोग कमावै ॥
भाति भाति सो दरबु लुटावै ॥
निजु त्रिय साथ न नेह लगैये ॥
जो जित जग आपन न कहैयै ॥२०॥

दोहरा ॥

तुम राजा सम भवर की फूली त्रियहि निहारि ॥
बिनु रस लीने क्यो रहो त्रिय की संक बिचारि ॥२१॥

चौपई ॥

जिह तुम चाहहु तिसै लै आवहि ॥
अब ही तुहि सो आनि मिलावहि ॥
ता सो भोग मानि रुचि कीजै ॥
मधुर बचन स्रवनन सुनि लीजै ॥२२॥
यौ राजा सो बैन सुनावहि ॥
बहुरि जाइ रानीयहि भुलावहि ॥
जौ हम तै निकसन प्रभु पावै ॥
अनिक त्रियन सो भोग कमावै ॥२३॥

दोहरा ॥

ऐस भाति नित भ्रितन के निसदिन सोच बिहाइ ॥
न्रिपति समझि कछु दै नहीं रानी धनहि लुटाइ ॥२४॥

चौपई ॥

न्रिप इक दिन रानियहि बुलायो ॥
भछ भोज अरु मदहि मंगायो ॥
अधिक मदहि राजा लै पियो ॥
थोरिक सो रानी तिन लियो ॥२५॥
न्रिप कह भयो मद्रय मद भारो ॥
सोइ रहियो नहि सुधहि संभारो ॥
पति सोयो लहि त्रिय मन माही ॥
भेद अभेद पछान्यो नाही ॥२६॥

दोहरा ॥

त्रिय जान्यो सोयो न्रिपति गई जारि पहि धाइ ॥
जागत को सोवत समझि भेद न लहा कुकाइ ॥२७॥

चौपई ॥

रानी गई भूप तब जागियो ॥

ह्रिदै कुअरि को हित अनुरागियो ॥
बहुरो तिन को पाछो गहियो ॥
केल कमात सुंन्रय ग्रिह लहियो ॥२८॥

दोहरा ॥

निरख राइ त्रिय को रमत सर तनि कान प्रमान ॥
अब इन दुहूंअन को हने यौ कहि कसी कमान ॥२९॥

चौपई ॥

बहुरि न्रिपति के यौ मनि आई ॥
संकि रहा नहि चोट चलाई ॥
यह बिचार मन माहि बिचारा ॥
जार सहित त्रिय कौ नहि मारा ॥३०॥

दोहरा ॥

जौ इन कह अब मारि हौ इमि बाहरि उडि जाइ ॥
आन पुरख सौ गहि त्रिया जम पुर दई पठाइ ॥३१॥

चौपई ॥

तिन दुहूंअन नहि बान चलायो ॥
तह ते उलटि बहुरि घर आयो ॥
ह्रिदै मती सौ भोग कमानो ॥
पौढि रहा सोवत सो जानो ॥३२॥
त्रिय आई ता सौ रति करि कै ॥
अधिक चित के भीतर डरि कै ॥
पौढि रही त्रयो ही लपटाई ॥
सोवत जान न्रिपति हरखाई ॥३३॥
सोवत सो न्रिप लखि हरखानी ॥
मूरख नारि बात नहि जानी ॥
जागत पति सोवत पहिचाना ॥
मोर भेद इन कछू न जाना ॥३४॥
राव बचन तब त्रियहि सुनायो ॥
कह गई थी तै हमै बतायो ॥
तब रानी इमि बैन उचारे ॥
सुनु राजा प्रानन ते पिआरे ॥३५॥
सुनि न्रिप बर इक टक मुहि परी ॥
सो तुमरे सोवत हम करी ॥
पुत्र एक बिधि दिया हमारे ॥
ते मोकह प्रानन ते प्यारे ॥३६॥

दोहरा ॥

पुत्र सेज के चहूं दिसि लेत भवरिया नित ॥
वहै जानु तुमरे फिरी सति समझियहु चित ॥३७॥
प्रिय त्रिय कौ हनि न सकियो मन ते खुरक न जाइ ॥
ता दिन ते तिह नारि सौ रम्यो न रुचि उपजाइ ॥३८॥
भाति भाति न्रिप नारि कह भजत हुतो सुखु पाइ ॥
बात आइ चिति जाइ जब घरी न भोगा जाइ ॥३९॥

चौपई ॥

इह रानी जीय भीतर जानै ॥
लजत न्रिपत सौ कछु न बखानै ॥
बातन सौ ता कह बिरमावै ॥
करि करि अधिक कटाछ दिखावै ॥४०॥

दोहरा ॥

सभ कछु टूटे जुरत है जानि लेहु मन मित ॥
ए द्वै टूटे न जुरहि एकु सीस अरु चित ॥४१॥
चाकर की अरु नारि की एकै बडी सजाइ ॥
जिय ते कबह न मारियहि मन ते मिलहि भुलाइ ॥४२॥

CHARITAR ३३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे तेतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥33॥660॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सुनहु न्रिपति इक कथा उचरिहौ ॥
तुमरे चित को भरमु निवरिहौ ॥
त्रिय चरित्र इक तुमै सुनैहो ॥
ता ते तुम कह अधिक रिझैहौ ॥१॥
सहर सिरंद बिखै इक जोगी ॥
काम केल भीतर अति भोगी ॥
एक ग्रिहसती के ग्रिह आवै ॥
ता की त्रिय सो भोग कमावै ॥२॥
सुरग नाथ जोगी का नामा ॥
स्री छबि मान मती वह नामा ॥
वा सौ निसु दिन भोग कमावै ॥
ता को नाह नाहि कछु पावै ॥३॥

दोहरा ॥

इक दिन जोगी घर हुतो ग्रिहसती पहूंच्या आइ ॥
ता सौ कहा बनाइ त्रिय एक चरित समझाइ ॥४॥

चौपई ॥

काढे खड़ग हाथ तुम धैयहु ॥
दौरत निकट सु या के जैयहु ॥
ताहि सुनाइ बचन इम भाख्यो ॥
मोरो चोर चोरि इन राख्यो ॥५॥

दोहरा ॥

भ्रितजु तुहारो नाथ इह ता कहु जाहु दुराइ ॥
ता कौ बहुरि निकारि हौ कछु चरित्र बनाइ ॥६॥

चौपई ॥

कहि ऐसे आइसहि पठायो ॥

आप तवन सो भोग कमायो ॥
आवत पतिहि दुरायो ता को ॥
आप बचन भाख्यो इमि वा को ॥७॥
सुनो नाथ इक कथा उचरो ॥
तुम ते अधिक चित मै डरो ॥
कोप एक जोगी कह जाग्यो ॥
निजु चेला कह मारन लाग्यो ॥८॥
मै जुगिया कह दयो हटाई ॥
वा चेला कह लयो छपाई ॥
चलहु नाथ उठि तुमै दिखाऊ ॥
ता ते तुमरो ह्रिदै सिराऊ ॥९॥

दोहरा ॥

भला किया तै राख्या सुखित किया मुर चीति ॥
सरनागत दीजत नही इहै बडन की रीति ॥१०॥
सुनत मनोहर बात जड़ रीझि गयो मन माहि ॥
अधिक प्रीति ता सो करी भेद पछाना नाहि ॥११॥

CHARITAR ३४ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रो मंत्री भूप संबादे चौतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥34॥671॥अफज्रूं॥*

चौपई ॥

नर चरित्र न्रिप निकटि उचारो ॥
कहियो नाथ सुनु बचन हमारो ॥
दछिन देस राइ इक रहै ॥
अति सुंदर जा को जग कहै ॥१॥
अड़िल ॥
ता को रूप अनूप लहन त्रिय आवही ॥
निरखि प्रभा बलि जाहि सभै सुख पावही ॥
पिय पिय ता कह बैन सदा मुख भाखही ॥
हो अधिक प्रीति राजा सो नितिप्रति राखही ॥२॥

दोहरा ॥

द्वै इसत्री ता के रहै अमित रूप की खानि ॥
एक संग राजा रमै अधिक प्रीति जीय जानि ॥३॥
एक दिवस दोऊ त्रिया न्रिप बर लई बुलाइ ॥
आखि मीचन खेलत भयो अधिक नेह उपजाइ ॥४॥
आखि मूंदि त्रिय एक की दूजी लई बुलाइ ॥
अधिक भोग ता सो किया इमि कहि दई उठाइ ॥५॥
ऐ रुचि सो तो सौ रमो रमो न या के संग ॥
कोटि कसट तन पै सहों कैसोई दहै अनंग ॥६॥
अड़िल ॥
स्री असमान कला भजि दई उठाइ कै ॥
रुकम केतु न्रिप ऐसो चरित दिखाइ कै ॥
मूरख रानी दुतिय न कछु जानत भई ॥
हो लुक मीचन की खेल जान जिय मै लई ॥७॥

चौपई ॥

रति करि कै त्रिय दई उठाई ॥
पुनि वा की दोऊ आखि छुराई ॥
अधिक नेह तिह संग उपजायो ॥
मूरख नारि भेद नहि पायो ॥८॥

CHARITAR ३५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे पैतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥35॥679॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनो राइ इक कथा प्रकासो ॥
तुमरे चित के भ्रमहि बिनासो ॥
गैंडे खा डोगर तह रहै ॥
फते मती तिह त्रिय जग कहै ॥१॥
ता के महिख धाम धन भारी ॥
तिन की करति अधिक रखवारी ॥
चरवारे बहु तिनै चरावहि ॥
साझ परै घर को लै आवहि ॥२॥
इक चरवाहा सौ त्रिय अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुधि घटकी ॥
नितिप्रति ता सौ भोग कमावै ॥
नदी पैरि बहुरो घर आवै ॥३॥
डोगर सोध एक दिन लहियो ॥
तुरतु त्रिया को पाछो गहियो ॥
केल करत निरखे तह जाई ॥
बैठ रहा जिय कोप बढाई ॥४॥
करि करि केलि सोइ ते गए ॥
बेसंभार निजु तन ते भए ॥
सोवत दुहूंअन नाथ निहारियो ॥
काढि क्रिपान मार ही डारियो ॥५॥

दोहरा ॥

काटि मूंड ता को तुरत तही बैठ छपि जाइ ॥
तनिक तात लोहू लगे बाल जगी अकुलाइ ॥६॥

चौपई ॥

मूंड बिना निजु मीत निहारियो ॥
अधिक कोप चित भीतर धारियो ॥
दसो दिसन काढे असि धावै ॥
हाथि परै तिह मारि गिरावै ॥७॥
डोगर छप्यो हाथ नहि आयो ॥
ढूंढि रही त्रिय न दरसायो ॥
वैसे ही पैरि नदी कह आई ॥
तहा मित्र कह दिया बहाई ॥८॥
पैरि धाम सरिता कह आई ॥
पौढि रही जनु साप चबाई ॥

पाछे तरि डोगर हूं आयो ॥
मूरख नारि भेद नहि पायो ॥९॥
ऐस भाति सो काल बिहान्रयो ॥
बीता बरख एक दिन जान्यो ॥
तब डोगर इह भाति उचारो ॥
करो नारि इकि काज हमारो ॥१०॥
एक त्रिया कारज मुर कीजहु ॥
मखनी काढि धाम ते दीजहु ॥
जात कहियो तह त्रिय मै नाही ॥
हेरि अंधेर डरो मन माही ॥११॥
डोगर कहा लगत दुखु मो को ॥
भूलि गयो वह दिन त्रिय तो को ॥
नदी पैरि करि पार पराई ॥
जार वहाइ बहुरि घर आई ॥१२॥
चमकि उठी जब बचन उचारे ॥
मोर भेद इन सकल निहारे ॥
ता ते अब ही यारि संघारो ॥
मारि चोर इह गए उचारो ॥१३॥

दोहरा ॥

पैठि अंधेरे धाम महि काढि लई करवारि ॥
निजु पति पै हत के निमिति करे पचासिक वारि ॥१४॥
निरखि चमक तरवार की दुरया महिख तर जाइ ॥
तनिक न ब्रिण लागन दई इह छल गयो बचाइ ॥१५॥
पैरि नदी गई मित्र को आई तही बहाइ ॥
निजु पति को घाइल किया नैक न रही लजाइ ॥१६॥

CHARITAR ३६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे छतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥36॥695॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

नर चरित्र न्रिप के निकटि मंत्री कहा बिचारि ॥
तबै कथा छतीसवी इह बिधि कही सुधारि ॥१॥
तवन त्रिया को तुरतु ही डोगर घाउ उबारि ॥
ताहि तुरतु मारत भयो गेरे रसहिय डारि ॥२॥
वा रसिया कह छानि कै बाधिसि बरो बनाइ ॥
आपु ऊच कूकत भयो लोगन सभन सुनाइ ॥३॥

चौपई ॥

सभ लोगन कह धाम बुलायो ॥
निजु देही को घाव दिखायो ॥
पुनि तिन को लै नारि दिखारी ॥
रोइ कूक ऊचे करि मारी ॥४॥
जब मोरे त्रिय घाव निहारियो ॥
अधिक सोक चित माझ बिचारियो ॥
भेद पाइ दिय मुहि कह टारी ॥
लै पासी सुर लोक बिहारी ॥५॥

दोहरा ॥

दूध दुहत कटिया निमति महिखी मारिस मोहि ॥
घाव भयो तरवार सो कहा बताऊ तोह ॥६॥

चौपई ॥

अब आछो तिह कफन बनैयै ॥
भली भाति भूअ खोद गडैयै ॥
हौहूं ब्याह अवर नहि करिहौ ॥
या के बिरहि लागि कै बरिहौ ॥७॥

दोहरा ॥

लोगन सभन बुलाइ कै आछो कफन बनाइ ॥
दुराचारनी नारि कह इह बिधि दिया दबाइ ॥८॥

CHARITAR ३७ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे सैतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥37॥703॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बहुर सु मंत्री कथा उचारी ॥
एक तरुनि जोबन की भरी ॥
एक चोर ता कह ठग बरियो ॥
अधिक अनंद दुहूं चित करियो ॥१॥
रैनि भए तसकर उठि जावै ॥
दिन देखत ठग दरबु कमावै ॥
ता त्रिय सौ दोऊ भोग कमाई ॥
मूरख भेद पछानत नाही ॥२॥
ठग जानै मोरी है नारी ॥
चोर कहै मोरी हितकारी ॥
त्रिय कै ताहि दोऊ पहिचानै ॥
मूरख भेद न कोऊ जानै ॥३॥

चौपई ॥

एक रुमाल बाल हित काढा ॥
दुहूंअन के जिय आनंद बाढा ॥
वह जानै मोरे हित कै है ॥
चोर लखै मोही कह दै है ॥४॥

दोहरा ॥

चोर त्रियहि प्यारा हुतो ता कहु दिया रुमाल ॥
ता कहु नैन निहारि ठग मन मै भया बिहाल ॥५॥

चौपई ॥

मुसट जुध तसकर सो कियो ॥
छीन रुमाल हाथ ते लियो ॥

चोर कहा मो त्रिय इह काढा ॥
यौ सुनि अधिक रोस जिय बाढा ॥६॥
आपु बीच गारी दोऊ देही ॥
दाति निकार केस गहि लेही ॥
लात मुसट के करै प्रहारा ॥
जानुक चोट परै घरियारा ॥७॥
दोऊ लरि इसत्री पहि आए ॥
अधिक कोप ह्वै बचन सुनाए ॥
ठग तसकर दुहूं बचन उचारी ॥
तै इह नारि कि मोरी नारी ॥८॥

दोहरा ॥

सुन तसकर ठग मै कहो हौ ताही की नारि ॥
जो छल बल जानै घनो जा मै बीरज अपार ॥९॥
बहुरि बाल ऐसे कहा सुनहु बचन मुर एक ॥
सो मो को इसत्री करै जिह महि हुनर अनेक ॥१०॥

चौपई ॥

सुनि बाला मै बैन तिहारो ॥
अब पौरख तै देखु हमारो ॥
अधिक बीरज जा मै जिय धरि है ॥
ताही कह अपनो पति करि है ॥११॥
ठग बच भाखि नगर महि गयो ॥
इसथित एक हाट पर भयो ॥
मुहरै सकल द्रिसटि तह धरी ॥
साहु भए इह भाति उचरी ॥१२॥

दोहरा ॥

ऐस भाति उचरत भया ह्वै ढीलो सरबंग ॥
मुहरन को सौदा करौ साहु तिहारे संग ॥१३॥
मदन राइ ठग इम कही मन मै मंत्र बिचारि ॥
लै मुहरै रुपया देवौ तुम कह साह सुधारि ॥१४॥

चौपई ॥

यौ जब साह बैनि सुन पायो ॥
काढि असरफी धनी कहायो ॥
ठग की द्रिसटि जबै ते परी ॥
सभ सन की मन भीतरि धरी ॥१५॥
मुहिरै डारि गुथरियहि लई ॥
अधिक मारि बनिया कह दई ॥
ऊचे सोर करा पुर माही ॥
मै मुहरन कह बेचत नाही ॥१६॥
सोर सुनत पुर जन सभ धाए ॥
वा बनिया ठग के ढिग आए ॥
मुसट जुध निरखत अनुरागे ॥
तिह दुहूंअन कह पूछन लागे ॥१७॥
तुम क्यो जुध करत हो भाई ॥
हमै कहहु सभ ब्रिथा सुनाई ॥

दुहूंअन कह अब ही गहि लैहै ॥
लै काजी पै न्याइ चुकैहै ॥१८॥
सुनत बचन उदित ठग भयो ॥
ता कह लै काजी पह गयो ॥
अधिक दुखित ह्वै दीन पुकारो ॥
करि काजी तै न्याइ हमारो ॥१९॥

दोहरा ॥

तब लगि बनिया ह्वै दुखी इमि काजी सो बैन ॥
हमरौ करौ नियाइ तुम कहियो स्रवत जल नैन ॥२०॥

चौपई ॥

सुनु काजी जू बचन हमारे ॥
कलामुला की आनि तिहारे ॥
खुदाइ सुनौगे दाद हमारो ॥
ह्वैहौ दावनगीर तुहारो ॥२१॥

दोहरा ॥

अधिक दीन ह्वै ठग कहियो सुनु काजिन के राइ ॥
हम पुकार तुम पै करी हमरो करो न्याइ ॥२२॥

चौपई ॥

तब काजी जिय न्याइ बिचारियो ॥
प्रगट सभा मै दुहूं उचारियो ॥
जो मुहरन के सनहि बतावै ॥
सो सभ आजु असरफी पावै ॥२३॥
सन मुहरन को बनिक न जानो ॥
मूंदि रहा मुख कछु न बखानो ॥
रोइ पीट करि करत पुकारा ॥
हाहा कियसि कहा करतारा ॥२४॥

दोहरा ॥

मुहर अकबरी एक सत जहागीरी सै दोइ ॥
साहि जहानी चारि सै देख लेहु सभ कोइ ॥२५॥

चौपई ॥

सभा बीच जब मुहर उघारी ॥
सो निकरी जो ठगहि उचारी ॥
काजी छीनि साहु ते लीनी ॥
लै तसकर के कर मै दीनी ॥२६॥

दोहरा ॥

जस काजी को पसरियो ठग भाख्यो सभ गाउ ॥
कीनो उमर खिताब जिमि आजु हमारो न्याउ ॥२७॥

चौपई ॥

ठग लै कै मुहरै घर आयो ॥
तिन काजी कछु न्याइ न पायो ॥
बनिया काढि सदन ते दीना ॥
झूठे ते साचा ठग कीना ॥२८॥

दोहरा ॥

ठगहि असरफी सात सै कर दीनी नरनाहि ॥
ता त्रिय पहि लै आइयो अपने घर के माहि ॥२९॥

CHARITAR ३८ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥38॥732॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

रैन भई तसकर उठि धायो ॥
सकल स्वान को भेस बनायो ॥
साहिजहा के ग्रिह पग धारियो ॥
गपै कहत गपिअहि निहारियो ॥१॥
एदिल साह नाम तसकर बर ॥
आयो साहिजहा जू के घर ॥
राज मती नारी हित गयो तह ॥
राजन को राजा सोवत जह ॥२॥
सवैया ॥
बहुरो तरवारि निकारि कै चोर सु वा गपिया कह मारि लियो ॥
फुनि लाल उतारि लयो पगिया जुत फोरि इजार पे अंड दियो ॥
तब सूथनि साहु उतार दई सभ बसत्रन को तिन हाथ कियो ॥
फुनि गोसटि बैठि करी तिह सौ त्रिय के हित कै करि गाड़ हियो ॥३॥

दोहरा ॥

साह लखा बीरज गिरा कीनी दूरि इजार ॥
बसत्र पगरिया लाल जुत कीने चोर संभार ॥४॥

चौपई ॥

बैठि चोरु असि कथा प्रकासी ॥
एक चोर दूजो धर फासी ॥
एक नारि सो केल कमावै ॥
अपनी जानि अधिक सुखि पावै ॥५॥

दोहरा ॥

दिन तसकर ता सौ रमत दरब ठगन ठग जाइ ॥
रैनि चोर चोरत ग्रिहन ताहि मिलत ठग आइ ॥६॥

चौपई ॥

होड रुमाल हेत तिन परी ॥
मुहर सात सै ठगहूं हरी ॥
पुन बारी तसकर की आई ॥

तुमै कथा सो कहौ सुनाई ॥७॥
हजरति ते तसकर ग्रिह आयो ॥
गपिया कह जम लोक पठायो ॥
बसत्र लाल पगिया जुत हरी ॥
गोसटि बैठि साह सो करी ॥८॥

दोहरा ॥

लाल बत्र पगिया हरी लई इजार उतार ॥
प्रान उबारा साह का होइ कवन की नारि ॥९॥
लाल बसत्र हर पहुचिया जहा न पहुचत कोइ ॥
प्रान उबारियो साह को त्रिया कवन की होइ ॥१०॥

चौपई ॥

दिन के चड़े अदालति भई ॥
वहु त्रिया साह चोर कह दई ॥
ता की करी सिफति बहु भारा ॥
अधिक दियसि धन छोरि भंडारा ॥११॥

दोहरा ॥

एदिल राज मती लई ठग कहि दियसि निकारि ॥
लाल बसत्र हर साह के तिह गपिया कह मारि ॥१२॥

CHARITAR ३९ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥39॥744॥अफजूं॥

दोहरा ॥

एक जाट जंगल बसै धाम कलहनी नारि ॥
जो वहु कहत सु न करत गारिन करत प्रहार ॥१॥

चौपई ॥

स्री दिलजान मती ता की त्रिय ॥
अचल देव तिह नाम रहत प्रिय ॥
रहत रैनि दिन ता के डारियो ॥
कबहूं जात न ग्रहि ते मारियो ॥२॥

दोहरा ॥

जहा बिपासा के भए मिलत सतुद्रव जाइ ॥
तिह ठा ते दोऊ रहहि चौधर करहि बनाइ ॥३॥

चौपई ॥

जो कारज करनो वह जानत ॥
ताहि करै नही ऐस बखानत ॥
तब वहु काज तरुनि हठ करई ॥
पति की कानि न कछु जिय धरई ॥४॥
पितरन पछ पहूचा आई ॥

पितु की थिति तिन हूं सुनि पाई ॥
त्रिय सौ कहा स्राध नहि कीजै ॥
तिन इम कही अबै करि लीजै ॥५॥
सकल स्राध को साज बनायो ॥
भोजन समै दिजन को आयो ॥
पति इमि कही काज त्रिय कीजै ॥
इन कह दछना कछू न दीजै ॥६॥
त्रिय भाखा मै ढील न कैहौ ॥
टका टका बीरा जुत दैहौ ॥
दिजन देत अब बिलंब न करिहौ ॥
तोर मूंड पर बिसटा भरिहौ ॥७॥
तब ब्रहमन सभ बैठ जिवाए ॥
अधिक दरबु दै धाम पठाए ॥
पुनि त्रिय सौ तिन ऐस उचारी ॥
सुनहु सासत्र की रीति पिआरी ॥८॥

दोहरा ॥

पिंड नदी परवाहीयहि या महि कछु न बिचार ॥
कहा न कीना तिन तरुनि दिये कुठोरहि डारि ॥९॥

चौपई ॥

तब तिन जाट अधिक रिसि मानी ॥
ता की नास बिवत जिय आनी ॥
इहु कहि कहूं बोरि करि मारो ॥
नित्य नित्य को तापु निवारो ॥१०॥
तिह त्रिय सो इह भाति बखानी ॥
जनम धाम नहि जाहु अयानी ॥
करि डोरी तुम कह मै दैहो ॥
उन भाखो यौ ही उठि जैहो ॥११॥
वा त्रिय को लै संगि सिधायो ॥
चलत चलत सरता तट आयो ॥
बहुरि जाट इह भाति उचारो ॥
सुनु अबला तै बचन हमारो ॥१२॥
सुखी चलहु चड़ि नाव पियारी ॥
मानि लेहु यह मोर उचारी ॥
त्रिय कहियो बैल पूछि गहि जैहौ ॥
अब ही पारि नदी के ह्वैहौ ॥१३॥
सवैया ॥
भोर हुते गरजै लरजै बरजै सभ लोग रहै नहि ठानी ॥
सासु के त्रास न आवत स्वास दुआरन ते फिरि जात जिठानी ॥
पास परोसिन बास गहियो बन लोग भए सभ ही नक वानी ॥
पानी के मागत पाथर मारत नारि किधौ घर नाहर आनी ॥१४॥

दोहरा ॥

बैल पूछि गहि कै जबै गई नदी के धार ॥
द्रिड़ करि या कह पकरियै बोल सु कूकि गवार ॥१५॥
छोरि पूछि कर ते दई सुनी कूकि जब कान ॥
गारी भाखत बहि गई जम पुर कियसि पयान ॥१६॥
नारि कलहनी बोरि करि जाट अयो ग्रिह माहि ॥

कहा सुखी ते जन बसै असिन ब्याहन जाहि ॥१७॥

CHARITAR ४० — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे चालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥40॥761॥अफजूं॥

दोहरा ॥

साहजहा पुर मै हुती इक पटूआ की नारि ॥
अति चरित्र तिन जो करा सो तुहि कहौ सुधारि ॥१॥
अड़िल ॥
प्रीति मंजरी त्रिय को नाम बखानियत ॥
सैनापति तिह पति कौ नाम सु जानियत ॥
बीरभद्र नर इक सौ हित ता को भयो ॥
हो पठै सहचरी बोलि ताहि निजु घर लयो ॥२॥

चौपई ॥

अधिक तवन सौ नेह लगायो ॥
समै पाइ करि केल मचायो ॥
तब लौ आवत पटूआ भयो ॥
मित्रहि डारि माट महि दयो ॥३॥
द्वै तरबूजनि रखि घट माही ॥
इक काटचो काटचो इक नाही ॥
गुदा भखयो खपर सिर धरियो ॥
दुतिया लै तिह ऊपर जरियो ॥४॥
इही बिखै पटूआ ग्रिह आयो ॥
बैठि खाट पर प्रमुद बढायो ॥
कहियो भछ कछु तरुनि तिहारे ॥
अब आगे तिह धरहु हमारे ॥५॥
जब इह भाति त्रिया सुन पायो ॥
काटि ताहि तरबूज खुलायो ॥
मित्र लेत तिह कौ अति डरा ॥
हमरो घात त्रिया इन करा ॥६॥
काटि ताहि तरबूज खुलायो ॥
पुनि पटूआ सौ भोग कमायो ॥
केल कमाइ टारि तिह दयो ॥
मित्रहि काढि खाट पर लयो ॥७॥
बहुरि मित्र सौ भोग कमायो ॥
मूरख नाथ न कछु छल पायो ॥
दुतिय बार ता सौ रति मानी ॥
दूजे कान न किनहूं जानी ॥८॥

CHARITAR ४१ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥41॥769॥अफजूं॥

दोहरा ॥

एक पीर मुलतान मै सुत बिनु ता की त्रीय ॥

सो झूरत निजु चित महि बिरध निरखि करि पीय ॥१॥
अड़िल ॥
रुसतम कला तरुनि को नामु बखानियै ॥
सेख इनायत भरता ता को जानियै ॥
अधिक बिरध ते भोगु न ता सौ ह्वै सकै ॥
हो चड़त खलत ह्वै गिरत बाइ मुखि अति थकै ॥२॥

चौपई ॥

इक दिन पीर पास त्रिय गई ॥
अधिक दुख्य सौ रोवत भई ॥
ता ते माग लोग इक लयो ॥
निजु कह गरभवती ठहरयो ॥३॥
भोग खुदायन भए कमायो ॥
जोरावरी गरभ रखवायो ॥
नौ मासन पाछे सुत भयो ॥
सकल मुरीदन ताहि उडयो ॥४॥

दोहरा ॥

पीर बचन जो तुम करियो लौग दयो त्रिय हाथ ॥
ता ते सुत उपज्यो सदन क्रिपा तिहारी साथ ॥५॥

CHARITAR ४२ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बयालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥42॥774॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

कारज कछू खरीद के पूरब गयो पठान ॥
एक गुलाम खरीद करि राखसि ग्रिह महि आनि ॥१॥

चौपई ॥

एक पठान नारि तिह बरी ॥
अब लौ रति ता सौ नहि करी ॥
ता सौ बचन गुलाम सुनाए ॥
इह तेरे पति के दस खाए ॥२॥
अड़िल ॥
मिरजा खान पठान नाम तिह जानियै ॥
आछो बीबी संख्या नारि पछानियै ॥
गाजीपुर को माझ सु ते दोऊ रहहि ॥
हो जिन की कथा सुधारि तवागे हम कहहि ॥३॥

दोहरा ॥

बहुरौ कही पठान सौ इमि गुलाम तिन बात ॥
मै इह त्रिय डाइनि सुनी क्यो या के तट जात ॥४॥
अड़िल ॥
त्रिय सौ बचन गुलाम उचारे जाइ करि ॥
तुम सौ नेह बढाइ कही हम आइ करि ॥
जब या कौ सुख सो सोयो लहि लीजियो ॥

हो तब या के खाइन पर द्रिसटि सु कीजियो ॥५ ॥

चौपई ॥

इमि चेरे तिन बचन उचारो ॥
सुनि साहिब तै कहियो हमारो ॥
जब यहि तुहि सो यौ लखि लैहै ॥
तब तेरे दोऊ अंड चबैहै ॥६ ॥
बतिया ते पठान चित धारी ॥
वा त्रिय सो नहि प्रगट उचारी ॥
संग लै जब तिह पति स्वै गयो ॥
तब सिमरन तिह कौ बच भयो ॥७ ॥
हेरनि अंड त्रिया कर डारियो ॥
पति चमक्यो कर खड़ग संभारियो ॥
तब ही त्रिय ता कह हनि दियो ॥
बहुरो नास आपनो कियो ॥८ ॥

दोहरा ॥

खान पठानी आपु महि लरि मरि भए परेत ॥
नास दुहन को ह्वै गयो वा गुलाम के हेत ॥९ ॥

CHARITAR ४३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रैतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥43॥783॥अफ्जूं॥*

चौपई ॥

बनिया एक ओडछे रहई ॥
अधिक दरब जा के जग कहई ॥
तिलक मंजरी ता की नारी ॥
चंद्र लई जा ते उजियारी ॥१ ॥

दोहरा ॥

एक तहा राजा रहै अमित तेज की खान ॥
चंद्र सूर जिह रिस करै अधिक आपु ते जानि ॥२ ॥

चौपई ॥

सो त्रिय निरखि राइ छबि अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुध घट की ॥
अधिक नेह राजा सौ ठान्यो ॥
ता कह भवन आपनो आन्यो ॥३ ॥
बीर केतु सो भोग कमायो ॥
अधिक ह्रिदै महि सुख उपजायो ॥
चिमटि चिमटि ता सौ रति करी ॥
भाति भाति के भोगन करी ॥४ ॥
केल करत न्रिप सो पति आयो ॥
बडे संदूक बिखै तिह पायो ॥
आपु नाथ सौ बचन उचारे ॥
सुनो बैन तुम पीय पिआरे ॥५ ॥

दोहरा ॥

जार हमारो चोर तव या संदूक के माहि ॥
छोरि अबै इह देखियै कहौ सु वाहि कराहि ॥६॥

चौपई ॥

सुनि न्रिप अधिक त्रासि तिन धारियो ॥
आजु नारि मो को इन मारियो ॥
छोरि संदूक हमै गहि लैहै ॥
काढि क्रिपान भए बध कैहै ॥७॥
कुंजी डारि साह ढिग दीनी ॥
द्वै कर जोरि बेनती कीनी ॥
जार संदूक छोरि लखि लीजै ॥
मो बतिया करि साचु पतीजै ॥८॥

दोहरा ॥

जब संदूक छोरन लगा लै कुंजी कह हाथ ॥
बहुरि त्रिया ऐसे कहा बचन पिया के साथ ॥९॥

चौपई ॥

दुहूं हाथ ता के सिर मारी ॥
गई साहु मति सगल तिहारी ॥
जो या सौ मै भोग कमैहौ ॥
तौ तौ कहु किह बाति बतैहौ ॥१०॥

दोहरा ॥

ऐसे बचन बखानि करि मूरख दिया उठाइ ॥
बहुरि राइ सौ रति करी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥११॥
न्रिप सो केल कमाइ करि ग्रिह कह दयो पठाइ ॥
बहुरि सुखी ह्वै पुर बसी साहु लयो गर लाइ ॥१२॥

CHARITAR ४४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौआलीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥44॥795॥अफजूं॥*

चौपई ॥

एक जाट दिली महि रहै ॥
नैनौ नाम जगत तिह कहै ॥
एक नारि ता के कलहारी ॥
ता को रहत प्रान ते प्यारी ॥१॥
स्री त्रिय राज मती तिह नामा ॥
नैनौ नाम जट की बामा ॥
सहर जहानाबाद बसै वै ॥
दरबवान दुति मान रहै वै ॥२॥
सौदा कारन ताहि पठायो ॥
एक रपैया हाथ दिवायो ॥
एक हुतो तिह ठा को जोगी ॥

नागी करि नारी तिन भोगी ॥३॥

दोहरा ॥

छोरि गाठि ता के सिखन रुपया लयो चुराइ ॥
छारि बाधि ता मै धरी ता की ठौर बनाइ ॥४॥

चौपई ॥

भोग कमाइ बहुरि त्रिय आई ॥
सौदा कारन पुनि घर धाई ॥
लोगन ते अति ही सरमाई ॥
छार ओर नहि द्रिसटि चलाई ॥५॥

दोहरा ॥

बिनु सौदा आवत भई तीर पिया के नारि ॥
छोरि गाठि देखै कहा ता मै निकसी छार ॥६॥

चौपई ॥

कर रुपया मोरे तुम दयो ॥
सौदा ल्यावन काज पठयो ॥
रुपया गिरा राह मह जाई ॥
लोग बिलोकि लाज मुहि आई ॥७॥

दोहरा ॥

छार सहित मै सो गहयो गोद लाज ते डारि ॥
तुम हाथन सो खोजि करि या ते लेहु निकारि ॥८॥
मूड़ नाह कछु न लखा खोजन लागा छार ॥
सो न लहा चुप ह्वै रहा सक्रया न भेद बिचारि ॥९॥

CHARITAR ४५ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पैतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥45॥804॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

काजी इक कसमीर मै ता की इसत्री एक ॥
जंत्र मंत्र अरु बसीकर जानत हुती अनेक ॥१॥

चौपई ॥

अदल महंमद नाम तवनि पति ॥
न्याइ सासत्र के बीच निपुनि अति ॥
नूरम बीबी नारि तवन घर ॥
जा के साथ रमत निति अति नर ॥२॥
तिन इक जाट भए रति ठानी ॥
कछु काजी की कानि न मानी ॥
हजरति आइ तबै लगि गयो ॥
मित्रहि बाधि खाट तर लयो ॥३॥

दोहरा ॥

आपु मुसफ बाचत भई जाट खाटि तर बाधि ॥
काजी को मोहित किया बान द्रिगन के साधि ॥४॥

चौपई ॥

खाट ऊपर काजी बैठायो ॥
कामकेल ता सौ उपजायो ॥
ता की कानि न आनत मनै ॥
मूरख चोट चटाकन गनै ॥५॥

दोहरा ॥

काम भोग करि काजियहि दीना बहुरि उठाइ ॥
खाट तरे ते काढि करि जाट लयो उर लाइ ॥६॥

चौपई ॥

सुनि लै मीत बचन तै मेरा ॥
मै काजी कह बहुत लबेरा ॥
ता कह बहु जूतिन सौ मारा ॥
ता ते उठत तराको भारा ॥७॥

दोहरा ॥

जु वै तराक पनीन के परै तिहारे कान ॥
तौ हम साचु तिसै हना लीजहो ह्रिदै पछानि ॥८॥
सति सति तिन कहा हम सुने तराके कान ॥
सीस खुरकि ग्रिह कौ गए भेद न सका पछान ॥९॥

CHARITAR ४६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छयालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥46॥813॥अफजूं॥*

चौपई ॥

कथा एक स्रवनन हम सुनी ॥
हरियाबाद एक त्रिय गुनी ॥
बादल कुअरि नाम त्रिय तिह कौ ॥
जानत है सिगरौ जग जिह कौ ॥१॥
एक मुगल तिन धाम बुलायो ॥
आछो भोजन ताहि खवायो ॥
ताहि भजन कह हाथ पसारा ॥
तब त्रिय ताहि जूतियन मारा ॥२॥
मारि मुगल कूकत इमि धाई ॥
यह सुनि बैन प्रजा मिलि आई ॥
करि समोध तिन धाम पठयो ॥
या के कंठ टूक फसि गयो ॥३॥

दोहरा ॥

चेत मुगल जब ही भया सीस रहियो निहुराइ ॥

अति लजत जिय मै भया बैन न भाख्यो जाइ ॥४॥
अब मै याहि उबारिया सीतल बारि पियाइ ॥
सभ सौ ऐसी भाति कहि ता कौ दिया उठाइ ॥५॥

CHARITAR ४७ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे संतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥47॥818॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

जहागीर पातिसाह के बेगम नूर जहा ॥
बसि कीना पति आपना इह जस जहा तहा ॥१॥

चौपई ॥

नूर जहा इमि बचन उचारे ॥
जहागीर सुनु साह हमारे ॥
हम तुम आजु अखेटक जैहैं ॥
सभ इसत्रिन कह साथ बुलैहैं ॥२॥

दोहरा ॥

जहागीर ए बचन सुनि खेलन चड़ा सिकार ॥
सखी सहेली संग लै आयो बनहि मंझार ॥३॥
अरुन बसत्र तन महि धरे इमि अबला दुति देहि ॥
नर बपुरे का सुरन के चित चुराए लेहि ॥४॥
नवल बसत्र नवलै जुबन नवला तिया अनूप ॥
ता कानन मै डोलही रति से सकल सरूप ॥५॥
इक गोरी इक सावरी हसि हसि झूमर देहि ॥
जहागीर नर नाह की सगल बलैया लेहि ॥६॥

चौपई ॥

सब त्रिय हथिन अरूड़ित भई ॥
सभ ही हाथ बंदूकै लई ॥
बिहसि बिहसि करि बचन सुनावै ॥
जहागीर कह सीस झुकावै ॥७॥
सभ इसत्रिन कर जोरै कीनौ ॥
एक म्रिगहि जाने नहि दीनौ ॥
केतिक बैठ बहल पर गई ॥
है गै किती अरूड़ित भई ॥८॥

दोहरा ॥

किनहूं गही तुफंग कर किनहूं गही क्रिपान ॥
किनहूं कटारी काढि ली किनहूं तनी कमान ॥९॥

चौपई ॥

प्रिथम म्रिगन पर स्वान धवाए ॥
पुनि चीता ते हरिन गहाए ॥
बाज जुरन का किया सिकारा ॥

नूर जहा पर प्रीति अपारा ॥१०॥
रोझ हरिन झंखार संघारे ॥
नूर जहा गहि तुपक प्रहारे ॥
किनहूं हने बेगमन बाना ॥
पसुन करा जम धाम पयाना ॥११॥

दोहरा ॥

अधिक रूप बेगम निरखि रीझि रहै म्रिग कोटि ॥
गिरे मूरछना ह्वै धरनि लगे बिना सर चोटि ॥१२॥
जिन कै तीखन असि लगे लीजत तिनै बचाइ ॥
जिनै द्रिगन के सर लगे तिन को कछु न उपाइ ॥१३॥

चौपई ॥

किती सहचरी तुरै धवावै ॥
पहुचि म्रिगन को घाइ लगावै ॥
किनहूं म्रिगन द्रिगन सर मारे ॥
बिनु प्रानन गिरि गए बिचारे ॥१४॥
इहीं भाति सो कीआ सिकारा ॥
तब लौ निकसा सिंघ अपारा ॥
यह धुनि साह स्रवन सुनि पाई ॥
सकल नारि इकठी ह्वै आई ॥१५॥

दोहरा ॥

बहु अरना भैसान को आगे धरा बनाइ ॥
ता पाछे हजरति चले बेगम संग सुहाइ ॥१६॥

चौपई ॥

जहागीर तकि तुपकि चलाई ॥
सो नहि लगी सिंघ के जाई ॥
अधिक कोप करि केहरि धायो ॥
पातिसाह के ऊपर आयो ॥१७॥
हरि धावत हथिनी भजि गई ॥
नूर जहादिक ठाढ न पई ॥
जोध बाइ यह ताहि निहारियो ॥
ताकि तुपक को घाइ प्रहारियो ॥१८॥

दोहरा ॥

सिंघ प्रान तब ही तजे लगे तुपक के घाइ ॥
तीन सलामै तिन करी जहागीर को आइ ॥१९॥

चौपई ॥

अधिक खुसी हजरति जू भए ॥
जनु मुहि प्रान आजु इह दए ॥
धंन्य धंन्य निजु त्रिय कह कीनो ॥
प्रान दान हम को इन दीनो ॥२०॥

दोहरा ॥

नूर जहा की सहचरी कौतक सकल निहार ॥
जहागीर स्रवनन सुनत भाख्यो बचन सुधारि ॥२१॥

चौपई ॥

जिन केहरि त्रिय बली संघारो ॥
तिह आगे क्या मनुख बिचारो ॥
हाहा दैया कह क्या करियै ॥
ऐसी ढीठ नारि ते डरियै ॥२२॥
अड़िल ॥
जहागीर ए बचन जबै स्रवनन सुन्यो ॥
चित मै अधिक रिसाइ सीस अपुनो धुन्रयो ॥
ऐसी त्रिय के निकट न बहुरे जाइयै ॥
हो करै देह को घात बहुरि क्या पाइयै ॥२३॥

चौपई ॥

जहागीर सुनि बचन डरान्रयो ॥
त्रिय को त्रास अधिक जिय मान्यो ॥
सिंघ हनत जिह लगी न बारा ॥
तिह आगे क्या मनुख बिचारा ॥२४॥

दोहरा ॥

अति बचित्र गति त्रियन की जिनै न जानै कोइ ॥
जो बाछै सोई करै जो चाहै सो होइ ॥२५॥
पियहि उबारा हरि हना एक तुपक के ठौर ॥
ता कौ छलि पल मै गई भई और की और ॥२६॥
जहागीर पतिसाह तब मन मै भया उदास ॥
ता संग सो बातैं सदा डर ते भया निरास ॥२७॥

CHARITAR ४८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥48॥845॥अफजूं॥*

चौपई ॥

आनंद पुर नाइन इक रहई ॥
नंद मती ता को जग कहई ॥
मूरख नाथ तवन को रहै ॥
त्रिय कह कछू न मुख ते कहै ॥१॥
ता के धाम बहुत जन आवै ॥
निस दिन ता सो भोग कमावै ॥
सो जड़ परा हमारे रहई ॥
ता को कछू न मुख ते कहई ॥२॥
जब कबहूं वहु धाम सिधावै ॥
यौ ता सो त्रिय बचन सुनावै ॥
या कह कलि की बात न लागी ॥
मेरो पिया बडो बडभागी ॥३॥

दोहरा ॥

निसु दिन सबदन गावही सभ साधन को राउ ॥
मो पति गुर को भगति है लगी न कलि की बाउ ॥४ ॥

चौपई ॥

यह जड़ फूलि बचन सुनि जावै ॥
अधिक आपु कह साधु कहावै ॥
वह जारन सौ निसु दिन रहई ॥
इह कछु तिनै न मुख ते कहई ॥५ ॥

CHARITAR ४९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनचासवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥49॥850॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

रानी एक ओडछे रहै ॥
पुहप मंजरी जिह जग कहै ॥
ता के तुलि अवर कोऊ नाही ॥
या ते नारि रिसत मन माही ॥१ ॥
अधिक रूप ता कौ बिधि दयो ॥
जा ते बसि राजा ह्वै गयो ॥
जो त्रिय कहै बचन सोई मानै ॥
बिनु पूछे कछु काज न ठानै ॥२ ॥
रानी राज देस को कयो ॥
राजा रानी की सम भयो ॥
जो त्रिय कहै वहै जग मानै ॥
न्रिप की चित कोऊ कानि न आनै ॥३ ॥

दोहरा ॥

रानी राज कमावई पति की करै न कानि ॥
राजा कौ रानी किया देखत सकल जहान ॥४ ॥

चौपई ॥

राजा कौ रानी बसि कियो ॥
जीत जंत्र मंत्रन सौ लियो ॥
जब चाहत तब देत उठाई ॥
पुनि सुहात तब लेत बलाई ॥५ ॥

दोहरा ॥

हेरि एक सुंदर पुरख रानी तजी सियान ॥
पुरख भेस धरि तिह सदन निसि कह किया पयान ॥६ ॥

चौपई ॥

इही बीच राजा जू आयो ॥
रानी बिना सखी दुख पायो ॥
धाम न पैठन न्रिप कह दीना ॥
तब त्रिय ताहि बचन असि कीना ॥७ ॥

दोहरा ॥

कछू भूल तुम ते भई ता ते त्रिय किय मान ॥
मुर ग्रिह करन न दीजियहु न्रिप कह कहा पयान ॥८॥

चौपई ॥

रानी ता सो भोग कमाई ॥
बहुरो धामु अपुने आई ॥
यह चरित्र कह तिनै सुनायो ॥
ता ते त्रिय कह अधिक रिझायो ॥९॥
तब तिन त्रियो अधिक धन दीनो ॥
भाति अनेक निहोरौ कीनो ॥
भली सखी हमरी मुख भाखी ॥
हमरी आजु लाज इन राखी ॥१०॥

दोहरा ॥

अधिक निहोरौ राइ करि रानी लई मनाइ ॥
अधिक प्रीति ता सो करी भेद न सकिया पाइ ॥११॥
जो न्रिप चमका न रहै त्रिय का करत बिस्वास ॥
अवर पुरख पर अटकि त्रिय करत तवन को नास ॥१२॥
चित न दीजै आपनो सभ को लेहु बनाइ ॥
तब सभ कह जीतत रहो राज करो सुख पाइ ॥१३॥

CHARITAR ५० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचासवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥50॥863॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मारवार इक साहु कहावै ॥
अनिक दरबु कौ बनिज चलावै ॥
दै दै करज ब्रयाज बहु लेई ॥
पुंन्य दान बिप्रन कह देई ॥१॥
सील मती ता की त्रिय भारी ॥
सूरज लखी न चंद्र निहारी ॥
निरखि रूपि निजु पति को जीयै ॥
तिह निरखे बिनु पानि न पीयै ॥२॥
ता के पति को रूपि अपारा ॥
रीझि दिया ता को करतारा ॥
उदै करन ता कौ सुभ नामा ॥
सील मंजरी ता की बामा ॥३॥

दोहरा ॥

रूप अनूपम साहु को जो निरखत बर नारि ॥
लोक लाज कह छोरि करि ता कह रहत निहारि ॥४॥

चौपई ॥

एक त्रिया के इमि चित आई ॥

हेरि रूप ता को ललचाई ॥
कवन कहा चित चरित बनैयै ॥
जे ते साहु मीत करि पैयै ॥५॥
ता की त्रिय सो प्रीति लगाई ॥
धरम बहिन अपनी ठहराई ॥
नई नई निति कथा सुनावै ॥
साहु त्रिया कह अधिक रिझावै ॥६॥
सुनि साहुनि तुहि कथा सुनाऊं ॥
तुमरे चित को गरबु मिटाऊं ॥
जैसो अति सुंदर पति तेरौ ॥
तैसो ही चीनहु पिय मेरो ॥७॥

दोहरा ॥

तेरे अरु मेरे पतिह भेद रूप नहि कोइ ॥
उठि करि आपु बिलोकियै तोर कि मोरो होइ ॥८॥

चौपई ॥

आजु साझि निजु पतिहि लियैहो ॥
तुमरी द्रिसटि अगोचर कैहो ॥
साहु त्रियहि कछु भेद न पायो ॥
तिह देखन कह चित ललचायो ॥९॥
आपु अगमने त्रिया उचारे ॥
साहु कुक्रिआ नारि तिहारे ॥
ता को सकल चरित्र दिखैहो ॥
तुम को मीत आपनो कैहो ॥१०॥
तब तुम गवन हमारो कीजो ॥
निजु त्रिय चरित्र देखि जब लीजो ॥
तहा ठाढ तुम को लै करिहौ ॥
मीत आयो तव ताहि उचरिहौ ॥११॥

दोहरा ॥

जब वहु ताकी छोरि त्रिय निरखै नैन पसारि ॥
तब तुम अपने चित बिखै लीजहु चरित बिचारि ॥१२॥
तहा ठाढ ता कौ किया आपु गई तिह पास ॥
मो पति आयो देखियै चित को छोरि बिस्वास ॥१३॥

चौपई ॥

ता की कही कान त्रिय धरी ॥
ताकी छोरि द्रिसटि जब करी ॥
यह कौतक सभ साहु निहारियो ॥
दुराचार इह नारि बिचारियो ॥१४॥
मो सो सति तवन त्रिय कहियो ॥
यौ कहि साहु मोनि ह्वै रहियो ॥
निज त्रिय भए नेह तजि दीनो ॥
तिह त्रिअ साथ यरानो कीनो ॥१५॥

दोहरा ॥

छलियो साहु त्रिय त्रियाजुत ऐसे चरित सुधारि ॥

ता सो नेहु तुराइ कै किया आपुनो यार ॥१६॥

CHARITAR ५१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥51॥879॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उतर देस न्रिपति इक भारो ॥
सूरज बंस बिखै उजियारो ॥
इंद्र प्रभा ता की पटरानी ॥
बिजै सिंघ राजा बर आनी ॥१॥

दोहरा ॥

एक सुता ता के भवन अमित रूप की खानि ॥
काम देव ठटके रहत रति सम ताहि पछानि ॥२॥

चौपई ॥

जोबन अधिक ताहि जब भयो ॥
लै ता को गंगा पितु गयो ॥
बडे बडे राजा तह ऐहै ॥
तिन मै भलो हेरि तह दैहै ॥३॥
चले चले गंगा पहि आए ॥
बंधु सुता इसत्रिन संग ल्याए ॥
स्री जान्रहवि को दरसन कीनो ॥
पूरब पाप बिदा करि दीनो ॥४॥
बडे बडे भूपति तह आए ॥
तवनि कुअरि को सकल दिखाए ॥
इन पर द्रिसटि सभन पर करियै ॥
जो जिय रुचै तिसी कौ बरियै ॥५॥

दोहरा ॥

हेरि न्रिपति सुत न्रिपन के कंन्या कही बिचार ॥
सुभट सिंघ सुंदर सुघर बरहो वहै कुमार ॥६॥
अधिक रूप ता को निरखि सभ राजा रिसि खाहि ॥
जियो कियो याहि बिवाहि कै ग्रिहि अपुने लै जाहि ॥७॥

चौपई ॥

भूपति सकल अधिक रिसि करै ॥
हाथ हथयारन ऊपर धरै ॥
कुपि कुपि बचन बकत्र ते कहै ॥
बिनु रन किये आजु नहि रहै ॥८॥
राइ प्रोहितन लिया बुलाई ॥
सुभट सिंघ प्रति दए पठाई ॥
मो पर कही अनुग्रहु करियै ॥
बेद बिधान सहित इह बरियै ॥९॥

दोहरा ॥

सुभट सिंघ ऐसे कही त्रिय मुर आगे एक ॥
ब्याह दूसरौ न करो जौ जन कहै अनेक ॥१०॥

चौपई ॥

प्रोहित भूपति सौ इह उचरै ॥
सुभट सिंघ या को नहि बरै ॥
ता ते कछू जतन प्रभ कीजै ॥
इह कंन्या अवरै न्रिप दीजै ॥११॥

दोहरा ॥

तब कंन्या ऐसे कही बचन पिता के साथ ॥
जो को जुध जीतै मुझै वहै हमारो नाथ ॥१२॥

चौपई ॥

सभ भूपन न्रिप ऐस सुनायो ॥
आप जुध को बिवत बनायो ॥
जो कोऊ तुमल जुध ह्यां कर है ॥
वहै याहि कंन्या कहु बरि है ॥१३॥

दोहरा ॥

सुनत बचन बीरान के चित मै भया अनंद ॥
मथि समुंद्र दल पाइ है आजु कुअरि मुख चंद ॥१४॥

चौपई ॥

सभन जुध के साज बनाए ॥
गंगा तीर बीर चलि आए ॥
पहिरि कवच सभ सूर सुहावै ॥
डारि पाखरै तुरै नचावै ॥१५॥
गरजै करी अस्व हिहनाने ॥
पहिरे कवच सूर निजुकाने ॥
किनहूं काढि खड़ग कर लीनो ॥
किनहूं केसरिया बाना कीनो ॥१६॥

दोहरा ॥

किनूं तिलौने बसत्र करि कटि सो कसी क्रिपान ॥
जो गंगा तट जूझि है करि है स्वरग पयान ॥१७॥
जोरि अनिन राजा चड़े परा निसाने घाव ॥
भाति भाति जोधा लरे अधिक ह्रिदै कर चाव ॥१८॥

चौपई ॥

तब कंन्या सभ सखी बुलाई ॥
भाति भाति सो करी बडाई ॥
कै लरि करि सुरसरि तट मरि हौ ॥
नातर सुभट सिंघ कह बरि हौ ॥१९॥

दोहरा ॥

तब कंन्या ऐसे कहे सकल सखिन सो बैन ॥
बिकट कटक के सुभट भट पठवो जम के ऐन ॥२०॥
सकल सखिन को ससत्र दै अवर कवच पहिराइ ॥
निकसि आपु ठाढी भई जै दुंदभी बजाइ ॥२१॥

चौपई ॥

कंन्या रथ आरूड़ित भई ॥
जुधि समग्री सभियन दई ॥
सफाजंग महि तुरै नचाए ॥
सुर सुरपति देखन रन आए ॥२२॥

दोहरा ॥

उमडे अमित अनेक दल बारद बूंद समान ॥
बनि बनि न्रिप आवत भए समर सुयंबर जान ॥२३॥

चौपई ॥

मचियौ तुमल जुध तह भारी ॥
नाचे सूरबीर हंकारी ॥
तानि धनुहियन बिसिख चलावत ॥
माइ मरे पद कूकि सुनावत ॥२४॥
जिह बचित्र दे बान लगावै ॥
वहै सुभट म्रितु लोक सिधावै ॥
जा पर तमकि तेग की झारै ॥
ता को मूंड काटि ही डारै ॥२५॥
काहू सिमटि सैहथी हनै ॥
एक सुभट मन माहि न गनै ॥
देखै सुर बिबान चड़ि सारे ॥
चटिपट सुभट बिकट कटि डारे ॥२६॥
गीधन को मन भयो अनंदं ॥
आजु भखै मानस के अंगं ॥
दहिने बाए जोगिनि खड़ी ॥
लै पातर स्रोनत कह अड़ी ॥२७॥
मारू दुहूं दिसन मै बाजै ॥
दुहूं ओर ससत्रन भट साजै ॥
ऊपर गिध साल मंडराही ॥
तरै सूरमा जुध मचाही ॥२८॥
सवैया ॥
बाल को रूप अनूपम हेरि चहूं दिसि ते न्रिप चौपि चले ॥
गजराजन बाजन के असवार रथी रथ पाइक जोरि भले ॥
जब राइ बचित्र क्रिपान गही तजि लाज हठी यौ रन बिचले ॥
मनो राम के नाम कहे मुख ते अघ ओघन के त्रसि ब्रिंद टले ॥२९॥
कोप प्रचंड भरे मन मै भट चौपि चड़े चहूं घा चपि धाए ॥
काढि क्रिपान लई बलवानन तानि कमानन बान चलाए ॥
बूंदन ज्यो बरखे चहूं ओरन बेधि सनाहन पार पराए ॥
बीरन चीर बिदीरन भूमि को बारि को फारि पतार सिधाए ॥३०॥

चौपई ॥

चटपट सुभट बिकट कटि गए ॥

केते करी करन बिनु भए ॥
टूटै रथ कूटं भट डारे ॥
नाचे भूत प्रेत मतवारे ॥३१॥
मुनि नारद कहूं बेनु बजावै ॥
कहूं रुद्र डमरू डमकावै ॥
रुधिर खपर जुगिन भरि भारी ॥
मारहि भूत प्रेत किलकारी ॥३२॥
रन अगंम कोऊ जान न पावै ॥
डह डह डह सिव डमरु बजावै ॥
कह कह कहूं कालिका कहकै ॥
जानुक धुजा काल की लहकै ॥३३॥
हसत पारबती नैन बिसाला ॥
नाचत भूप प्रेत बैताला ॥
कह कहाट कहूं काल सुनावै ॥
भीखन सुने नाद भै आवै ॥३४॥
बिनु सीसन केतिक भट डोलहि ॥
केतिन मारि मारि करि बोलहि ॥
किते तमकि रन तुरै नचावै ॥
जूझि कितक जम लोक सिधावै ॥३५॥
कटि कटि परे सुभट छित भारे ॥
भूप सुता करि कोप पछारे ॥
जिन के परी हाथ नहि प्यारी ॥
बिनु मारे हनि मरे कटारी ॥३६॥

दोहरा ॥

मोड़तेस अंबेर पति अमित सैन लै साथ ॥
बाल निमिति आवत भए गहे बरछियै हाथ ॥३७॥
बिकट सिंघ अंबेर पति अमिट सिंघ तिह नाम ॥
कबहूं दई न पीठ रन जीते बहु संग्राम ॥३८॥

चौपई ॥

ते न्रिप जोरि सैन द्वै धाए ॥
भाति भाति बाजित्र बजाए ॥
राज सुता जब नैन निहारे ॥
सैना सहित मार ही डारे ॥३९॥
जब अबला न्रिप दोऊ संघारे ॥
ठटके सुभट सकल तब भारे ॥
खेत छाडि यह तरुनि न टरिहै ॥
सभहिन को प्रानन बिनु करि है ॥४०॥
बूंदी नाथ रणुत कट धायो ॥
अधिक मदुत कट सिंघ रिसायो ॥
नाथ उजैन जिसे जग कहई ॥
वा कहि जीतै जग को रहई ॥४१॥
जब अबला आवत वहु लहे ॥
हाथ हथयार आपने गहे ॥
अधिक कोप करि कुवति प्रहारे ॥
छिनिक बिखै दल सहित संघारे ॥४२॥
गंगाद्री जमुनाद्री हठे ॥
सारस्वती ह्वै चले इकठे ॥

सतुद्रवादि अति द्रिड़ पग रोपे ॥
ब्रयाहाद्री सिगरे मिलि कोपे ॥४३॥

दोहरा ॥

परम सिंघ पूरो पुरख करम सिंघ सुर ग्यान ॥
धरम सिंघ हाठो हठी अमित जुध की खान ॥४४॥
अमर सिंघ अरु अचल सिंघ मन मै कोप बढाइ ॥
पाचौ भूप पहारियै सनमुखि पहुचे आइ ॥४५॥

चौपई ॥

परबतीस पाचो न्रिप धाए ॥
खसीया अधिक संग लै आए ॥
पाहन ब्रिसटि कोप करि करी ॥
मारि मारि मुख ते उचरी ॥४६॥
दुंदभ ढोल दुहूं दिसि बाजे ॥
साजे ससत्र सूरमा गाजे ॥
कुपि कुपि अधिक ह्रिदन मै लरे ॥
कटि कटि मरे बरंगनि बरे ॥४७॥
भूप पाचउ बान चलावैं ॥
बाधे गोल सामुहे आवैं ॥
तब बचित्र दे ससत्र प्रहारे ॥
छिनिक बिखै सकले हनि डारे ॥४८॥
देइ बचित्र पाच न्रिप मारे ॥
और सुभट चुनि चुनि हनि डारे ॥
सात न्रिपति अवरै तब चले ॥
जोधा जोर जुध करि भले ॥४९॥
कासि राज मघधेस्वर कोपे ॥
अंग बंग राजन पग रोपे ॥
और कुलिंग देस पति धायो ॥
त्रिगति देस एस्वर हूं आयो ॥५०॥
राजा कामरूप को धायो ॥
अमित कटक लीने संग आयो ॥
दारुण रण सूरण तह करियो ॥
रवि ससि चक्रयो इंद्र थरहरियो ॥५१॥
अंग कटे तरफै कहूं अंगरी ॥
बीर परे उछरत कहूं टंगरी ॥
हठि हठि भिरे सुभट रन माही ॥
जंबक गीध मासु लै जाही ॥५२॥
अड़िल ॥
बाल सूरमा मारे कोप बढाइ कै ॥
जो चितु चहै संघारे रथहि धवाइ कै ॥
पैदल अमित बिदारे अति चित कोप करि ॥
हो रथी गजी हनि डारे ससत्र अनिक प्रहरि ॥५३॥

चौपई ॥

सपतावत न्रिप बाल निहारे ॥
अमित कोप करि बिसिख प्रहारे ॥
स्यंदन सहित सूत सभ घाए ॥
सैन सहित म्रित लोक पठाए ॥५४॥

अवर न्रिपत तब ही उठि धाए ॥
बाधे गोल सामुहे आए ॥
दसौ दिसन क्रुधित ह्वै ढूके ॥
मारै मार बक्र ते कूके ॥५५॥

दोहरा ॥

बीर केतु बाको रथी चित्र केतु सुर ग्यान ॥
छत्र केतु छत्री अमिट बिकट केतु बलवान ॥५६॥
इंद्र केतु उपइंद्र धुज चित अति कोप बढाइ ॥
गीध केतु दानव सहित तहा पहूंचे आइ ॥५७॥
सपत न्रिपति आयुध धरे अमित सैन लै साथ ॥
धाइ परे नाहिन डरे कढे बढारी हाथ ॥५८॥

चौपई ॥

ससत्र संभारि सूरमा धाए ॥
जोरे सैन कुअरि ढिग आए ॥
आयुध हाथ बचित्र धरे ॥
अमित सुभट प्रानन बिनु करे ॥५९॥
बीर केतु को मूंड उतारियो ॥
चित्र केतु कटि ते कट डारियो ॥
छत्र केतु छत्री पुनि घायो ॥
बिकट केतु म्रित लोक पठायो ॥६०॥

दोहरा ॥

इंद्र केतु उपइंद्र धुज दोनो हने रिसाइ ॥
गीध केतु दानव दियै जमपुरि बहुरि पठाइ ॥६१॥
सैना सतहूं न्रिपन की कोपि भरी अरराइ ॥
ते बाला तब ही दए म्रितु के लोक पठाइ ॥६२॥
सुमत केतु सूरा बडो समर सिंघ लै संग ॥
ब्रहम केतु लै दल चला उमडि चली जनु गंग ॥६३॥
ताल केतु खटबक्र धुज जोधा हुते बिसेख ॥
सो या पर आवत भए कियै काल को भेख ॥६४॥

चौपई ॥

दानव गीध केतु को भ्राता ॥
काक केतु तिहूं लोक बिख्याता ॥
क्रूर केतु दानव इक धायो ॥
लीने अमित दैत दल आयो ॥६५॥
सवैया ॥
काक धुजा करि कोप तहीं छिन आनि परियो करवार निकारे ॥
सिंघ सला सरदूल सिलीमुख साल तमाल हने अहि कारे ॥
स्वान स्रिंगाल सुरातक सीस धुजा रथ नाग धराधर भारे ॥
यौ बरखे नभ ते हरखे रिपु आनि दसो दिसि ते भभकारे ॥६६॥

दोहरा ॥

माया दैत पसारि कै पुनि बोला इमि बैन ॥
जुधु सुयंबर जीति तुहि लै जैहौ निजु ऐन ॥६७॥
सवैया ॥

राज सुता करि कोप तिही छिन सामुहि ह्वै हथियार गहे ॥
बलवान कमान को तानि हने कबि राम भनै चित मै जु चहे ॥
सर सूर दइंतन के तन मै इह भाति लगे नहि जात कहे ॥
मनो इंद्र के बाग असोक बिखै फुलवारिन के फल फूल रहे ॥६८॥
काढि क्रिपान महा कुपि कै भट कूदि परे सरदार करोरे ॥
बाल हने बलवान घने इक फासिन सौ गहि कै झकझोरे ॥
साज परे कहूं ताज गिरे गजराज गिरे छित पै सिर तोरे ॥
लुटे रथी रथ फूटे कहूं बिनु स्वार फिरै हिननावत घोरे ॥६९॥

चौपई ॥

जे भट अमित कोप करि धाए ॥
ते बिनु तन ह्वै सुरग सिधाए ॥
चटपट बिकट पलटि जे लरे ॥
कटि कटि मरे बरंगनिन बरे ॥७०॥
जे भट बिमुखाहव ह्वै मूए ॥
इत के भए न उत के हूए ॥
गरजि प्रान बीरन जिन दए ॥
दै दुंदभी स्वरग जनु गए ॥७१॥

दोहरा ॥

जिन इसत्रिन जरि अगनि मै प्रान आपने दीन ॥
झगरि बरंगनिन ते तहा छीनि पतिन कह लीन ॥७२॥

चौपई ॥

ऐसे बाल बीर बहु मारे ॥
सुमति सिंघ आदिक हनि डारे ॥
समर सैन राजा पुनि हयो ॥
ताल केतु म्रित लोक पठयो ॥७३॥
ब्रहम केतु कह पुनि हनि दीनो ॥
कारतिकेय धुज को बध कीनो ॥
क्रूर केतु दानव तब धायो ॥
तुमल जुध तिह ठौर मचायो ॥७४॥
कौल केतु दानव उठि धायो ॥
कमठ केतु चित अधिक रिसायो ॥
केतु उलूक चला दल लै कै ॥
कुतिसित केतु क्रोध तन तै कै ॥७५॥
कौल केतु त्रिय तबै संघारा ॥
कुतिसित केतु मार ही डारा ॥
कछप केतु गदा गहि घायो ॥
केतु लूक म्रित लोक पठायो ॥७६॥
जा तन बाल गदा की मारै ॥
एकै घाइ चौथि सिर डारै ॥
जा केतकि मार तन बाना ॥
करै बीर जमपुरी पयाना ॥७७॥

दोहरा ॥

ता को जुधु बिलोकि करि कवन सुभट ठहराइ ॥
जो समुहै आवत भया जमपुर दिया पठाइ ॥७८॥

सवैया ॥
कोप अनेक भरे अमरारदन आनि परै करवारि उघारे ॥
पटिस लोहहथी परसे अमितायुध लै करि कोप प्रहारे ॥
नारि संभारि हथयार सुरारि हकारि हने नहि जात बिचारे ॥
खेलि बसंत बडे खिलवार मनो मद चाखि गिरे मतवारे ॥७९॥

दोहरा ॥

है गै रथी बाजी घने जोधा हने अनेक ॥
जीति सुयंबर रन रही भूपति बचा न एक ॥८०॥
बाजन की बाजी परी बाजन बजे अनेक ॥
बिसिख बहुत बरसे तहा बचा न बाजी एक ॥८१॥

चौपई ॥

दैत दए जम धाम पठाई ॥
बारी सुभट सिंघ की आई ॥
तिह त्रिय कहा आइ तुम लरो ॥
कै अब हारि मान मुहि बरो ॥८२॥
सुभट सिंघ जब यौ सुनि पायो ॥
अधिक चित मै कोप बढायो ॥
मै का जुध त्रिया ते डरिहो ॥
या को त्रास मानि यह बरिहो ॥८३॥
कहूं मति गैवर गरजाही ॥
कहूं पाखरे है हिांहनाही ॥
ससत्र कवच सूरा कहूं कसै ॥
जुगिन रुधिर खपर भर हसै ॥८४॥
सवैया ॥
स्री सुभटेस बडो दलु लै उमडियो गहि कै करि आयुध बाके ॥
बीर हठी कवची खड़गी परसीस भई सरदार निसाके ॥
एक टरे इक आन अरे इक जूझि गिरे ब्रिण खाइ त्रिया के ॥
छार चड़ाइ कै अंग मलंग रहे मनौ सोइ पिये बिजया के ॥८५॥

चौपई ॥

ऐसो बीर खेत तह परियो ॥
एक सुभट जीवत न उबरियो ॥
दस हजार माते गज मारे ॥
बीस हजार बर बाज बिदारे ॥८६॥
तीस ऐत पैदल कह मारियो ॥
तेइस लच्छ रथ हनि डारियो ॥
द्वादस लच्छ रथी अति मारिस ॥
महारथी अनगनत संघारसि ॥८७॥

दोहरा ॥

सुभट सिंघ तनहा बचा साथी रहा न एक ॥
है गै रथ बाजी घने रथ कटि गए अनेक ॥८८॥

चौपई ॥

दुंद जुध त्रिय पतिह मचायो ॥
निरखन दिनिस निसिस रन आयो ॥

ब्रहमा चड़े हंस पर आए ॥
पंच बदन हूं तहा सुहाए ॥८९॥
त्रिय कोमल पिय बान प्रहारै ॥
जिय ते ताहि मारि नहि डारै ॥
लगे बिसिख के जिन पति मरै ॥
मुहि पैठब पावक महि परै ॥९०॥
चार पहर निज पति सो लरी ॥
दुहूंअन बिसिख ब्रिसटि बहु करी ॥
तब लो सूर असत ह्वै गयो ॥
प्राची दिसा चंद्र प्रगटयो ॥९१॥

दोहरा ॥

हकाहकी आहव भयो रहियो सुभट कोऊ नाहि ॥
जुध करत अति थकत भे रहत भए रन माहि ॥९२॥

चौपई ॥

लगे ब्रिनन के घाइल भए ॥
अति लरि अधिक स्रमत ह्वै गए ॥
आहव बिखै गिरे बिसंभारी ॥
कर ते किनहूं क्रिपान न डारी ॥९३॥

दोहरा ॥

प्रेत नचहि जुगनि हसहि जंबुक गीध फिराहि ॥
निसि सिगरी मुरछित रहे दुहूं रही सुधि नाहि ॥९४॥
प्राची दिसि रवि प्रगटिया भई चंद्र की हान ॥
पुनि पति त्रिय रन को उठे अधिक कोप मन ठानि ॥९५॥

चौपई ॥

आठ जाम दोऊ उठि करि लरे ॥
टूकत तनुत्राणन के झरे ॥
अधिक लराई दुहूं मचई ॥
अथयो सूर रैन ह्वै गई ॥९६॥
चारि बाज बिसिखन त्रिय मारे ॥
रथ के काटि दोऊ चक डारे ॥
नाथ धुजा कटि भूमि गिराई ॥
सूति दिया जमलोक पठाई ॥९७॥
सुभट सिंघ कह पुनि सर मारियो ॥
मूरछित करि प्रिथवी पर डारियो ॥
बिनु सुधि भए ताहि लख लीनो ॥
आपु बेखि तिह त्रिय को कीनो ॥९८॥
रथ ते उतरि बारि लै आई ॥
कान लाग करि बात सुनाई ॥
सुनो नाथ मै त्रिय तिहारी ॥
तुम को जो प्रानन ते प्यारी ॥९९॥

दोहरा ॥

जल सीचे जागति भयो अति तन लागे घाइ ॥
भलो बुरो खल अखल को कछू न चीना जाइ ॥१००॥

चौपई ॥

त्रिय को नाम जबै सुनि पायो ॥
घूमत घायल बचन सुनायो ॥
धंन्य धंन्य करि करी बडाई ॥
किह निमित इह ठा तू आई ॥१०१॥

दोहरा ॥

सुनु राजा मै लाज तजि या ते पहुंची आइ ॥
जिय ते निरखि लिआइ हौ मरे बरौगी जाइ ॥१०२॥
न्रिप घायल घूमत द्रिगन मूंदि बचन इमि कीन ॥
मन बाछत बरु मागियै मै त्रिय तुम बर दीन ॥१०३॥

चौपई ॥

जब मै तुहि जीवत लिख लयो ॥
जनु बिधि नयो जनम तुहि दयो ॥
ता ते ह्रिदै संक नहि धरियै ॥
बहुरि ब्याह मो सौ अब करियै ॥१०४॥
जो त्रिय कहा वहै पति मान्यो ॥
भेद अभेद कछु दुखित न जान्यो ॥
चकमक झारि आगि तह जारी ॥
चारि भवारै लई प्यारी ॥१०५॥
पुनि बचित्र दे ऐस उचारौ ॥
सुनो नाथ तुम बचन हमारौ ॥
त्रिपरातक अरि अति मुहि भयो ॥
तुम बिनु मोहि अधिक दुख दयो ॥१०६॥
तुरतु नाथ हम सो उठि रमो ॥
सभ अपराध हमारो छमो ॥
तब राजा तिह साथ बिहारियो ॥
त्रिय को ताप दूरि करि डारियो ॥१०७॥

दोहरा ॥

लपटि लपटि राजा रम्यो चिमटि चिमटि गई त्रीय ॥
बिकट सु दुख झटपट कटे अधिक बढा सुख जीय ॥१०८॥

चौपई ॥

पति रति करि रथ लयो चड़ाई ॥
बरियो प्रात दुंदभी बजाई ॥
सभ राजन को दल बल हरा ॥
आपन सुभट सिंघ पति करा ॥१०९॥

दोहरा ॥

तुमल जुधु तिह त्रिय करा सभ राजन को घाइ ॥
सुभट सिंघ को पति करा जै दुंदभी बजाइ ॥११०॥
है गै रथ बाजी हने छीन न्रिपन बल कीन ॥
समर सुयंबर जीति करि सुभट सिंघ पति लीन ॥१११॥

चौपई ॥

दानविंद्र प्रिथवीस संघारे ॥
हैं गै रथ पैदल दलि डारे ॥
किसू बीर को भै न धरत भी ॥
सुभट सिंघ कह जीत बरत भी ॥११२॥

CHARITAR ५२ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥52॥991॥अफजूं॥*

चौपई ॥

रानी एक ठवर इक रहै ॥
बिजै कुअरि ता को जग कहै ॥
बडे राज की दुहिता सोहै ॥
जा सम अवर न दूसर को है ॥१॥
तिन सुंदर इक पुरख निहारा ॥
काम बान ता के तन मारा ॥
निरखि सजन की छबि उरझाई ॥
पठै सहचरी लयो बुलाई ॥२॥
काम केल तिह संग कमायो ॥
भाति भाति सो गरे लगायो ॥
रात्रि दो पहर बीते सोए ॥
चित के दुहूं सकल दुख खोए ॥३॥
सोवत उठै बहुरि रति मानै ॥
रही रैनि जब घरी पछानै ॥
आपु चेरियहि जाइ जगावै ॥
तिह संग दै उहि धाम पठावै ॥४॥
इह बिधि सो तिह रोज बुलावै ॥
अंत रात्रि के धाम पठावै ॥
लपटि लपटि ता सो रति मानै ॥
भेद और कोऊ पुरख न जानै ॥५॥
एक दिवस तिह लिया बुलाई ॥
काम केल करि दयो उठाई ॥
चेरी कह निंद्रा अति भई ॥
सोइ रही तिह संग न गई ॥६॥
चेरी बिना जार हूं धायो ॥
चौकी हुती तहा चलि आयो ॥
ता को काल पहूंच्यो आई ॥
तिन मूरख कछु बात न पाई ॥७॥

दोहरा ॥

को है रे तै कह चला ह्यां आयो किह काज ॥
यह तिह बात न सहि सक्यो चला तुरतु दै भाज ॥८॥
तिनै हटावै ज्वाब दै चेरी हुती न साथ ॥
धाइ परे ते चोर कहि गहि लीना तिह हाथ ॥९॥

चौपई ॥

चली खबर रानी पहि आई ॥
बैठी कहा काल की खाई ॥
तुमरो मीत चोर करि गहियो ॥
सभहूं भेद तुहारो लहियो ॥१०॥
रानी हाथ हाथ सौ मारियो ॥
केस पेस सो जूट उपारियो ॥
जा दिन पिय प्यारे बिछुराही ॥
ता सम दुख जग दूसर नाही ॥११॥

दोहरा ॥

लोक लाज के त्रास ते ताहि न सकी बचाइ ॥
मीत प्रीत तजि कै हना सतुद्रव दयो बहाइ ॥१२॥

चौपई ॥

कहियो कि यह न्रिप बध कह आयो ॥
इह पूछहु तुहि कवन पठायो ॥
मारि तुरतु तहि नदी बहायो ॥
भेद दूसरे पुरख न पायो ॥१३॥

CHARITAR ५३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रिपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥53॥1004॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

मंत्री कथा सताइसी दुतिय कही न्रिप संग ॥
सु कबि राम औरै चली तब ही कथा प्रसंग ॥१॥
त्रितिया मंत्री यौ कही सुनहु कथा मम नाथ ॥
इसत्री कह चरित्र इक कहो तुहारे साथ ॥२॥

चौपई ॥

चाभा जाट हमारे रहै ॥
जाति जाट ता की जग कहै ॥
काधल ता की त्रिय सौ रहई ॥
बाल मती कह सु कछु न कहई ॥३॥

दोहरा ॥

एक चछु ता के रहै मुख कुरूप के साथ ॥
बाल मती को भाखई बिहसि आपु को नाथु ॥४॥

चौपई ॥

रैनि भई काधल तह आवत ॥
लै जाघै दोऊ भोग कमावत ॥
कछुक जागि जब पाव डुलावै ॥
द्रिग पर हाथ राखि त्रिय जावै ॥५॥
हाथ धरे रजनी जड़ जानै ॥
सोइ रहै नहि कछू बखानै ॥

इक दिन निरखि जार को धायो ॥
एक चछ्रु अति कोप जगायो ॥६ ॥

दोहरा ॥

काढि क्रिपान पहूंचियो तबै तुरत ही जार ॥
भरि मूंठी कर रेत की गयो आखि मै डारि ॥७ ॥
अंध भयो बैठो रहियो गयो जार तब भाज ॥
एक चछ्रु की बात सुनि रीझि रहे महाराज ॥८ ॥

CHARITAR ५४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥54॥1012॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उतर देस राव इक भारो ॥
सूरज बंस माझ उजियारो ॥
रूप मती ता की बर नारी ॥
जनुक चीरि चंद्रमा निकारी ॥१ ॥
वह त्रिय एक नीच सो रहै ॥
अधिक निंद ता की जग कहै ॥
इह बिरतात न्रिपति जब सुन्यो ॥
अधिक कोप करि मसतक धुन्रयो ॥२ ॥
त्रिय की लाग न्रिपत हूं करी ॥
बातै करत द्रिसटि महि परी ॥
ता दिन ते ता सौ हित त्यागियो ॥
अवर त्रियन के रस अनुरागियो ॥३ ॥
अवर त्रियन सौ प्रीति लगाई ॥
ता त्रिय सौ दिय नेह भुलाई ॥
ता के धाम नित्य चलि आवै ॥
प्रीति ठानि नहि केल कमावै ॥४ ॥

दोहरा ॥

चारि पहर रजनी त्रियहि रमत हुतो सुख पाइ ॥
रोस भयो जब ते ह्रिदै घरी न भोगा जाइ ॥५ ॥

चौपई ॥

जब राजा पूजा कह जावै ॥
तब वहु समौ जार त्रिय पावै ॥
मिलि बातै दोऊ यौ करही ॥
न्रिप की कानि कछू नहि धरही ॥६ ॥
सामुहि ताहि हुतो दरवाजो ॥
लागि रहा भीतन सौ राजो ॥
जब इह भाति जार सुनि पायो ॥
भाजि गयो न सक्यो ठहरायो ॥७ ॥

दोहरा ॥

निरखि कोप द्रिग राइ के नीच तुरतु गयो भाज ॥

भाति अनेक मनाइयो तऊ न फिरा निलाज ॥८॥

चौपई ॥

तिह हित नारि जतन बहु कीने ॥
बहुतु रुपए खरचि कह दीने ॥
कोटि करे एको नहि भयो ॥
तिह पति डारि ह्रिदै ते दयो ॥९॥
जब वहु बात न्रिपति चित आवै ॥
संकि रहै नहि भोग कमावै ॥
यह सभ भेद इक नारी जानै ॥
लजत नाथ सौ कछु न बखानै ॥१०॥

दोहरा ॥

तब राजे ऐसे कहा या त्रिय कछू न देउं ॥
नाम जार को लै तुरत या को धनु हरि लेउं ॥११॥

चौपई ॥

काहू कह मुहरै चटवाई ॥
काहू कहा मित्र की न्रयाई ॥
काहू संग नेह उपजायो ॥
किसू त्रिया संग भोग कमायो ॥१२॥

दोहरा ॥

काहू कह सुभ पट दए काहू कह धनु दीन ॥
ऐसी बिधि चेरी सकल न्रिप अपनी करि लीन ॥१३॥

चौपई ॥

ऐस ही बाहर की बसि करी ॥
सभ इसत्री न्रिप के रस ढरी ॥
जो राजा कह भेद न देई ॥
तिह त्रिय न्रिप पैठन नहि देई ॥१४॥

दोहरा ॥

सभ चेरी न्रिप बसि भई सभ सो राखत नेह ॥
जु कछु बात तव त्रिय करै आनि इसै कह देह ॥१५॥
सभ इसत्रिन सौ सो त्रिया जो कछु कहत बखानि ॥
मुख वा पै हा हा करै कहै न्रिपति सो आनि ॥१६॥

चौपई ॥

एक दिवस न्रिप मंत्र बिचारियो ॥
चित मै इहै चरित्र सु धारियो ॥
जड़ त्रिय को सभ धन हरि लेऊ ॥
लै अपने खरचन कह देऊ ॥१७॥
रानी की चेरी कहलावै ॥
आनि भेद सभ न्रिपहि जतावै ॥
त्रिय तिन कह अपनी करि मानै ॥
मूरख नारि भेद नहि जानै ॥१८॥

निजु सुत ते तिह मात कहावै ॥
अधिक धाम ते दरब लुटावै ॥
जो चित की तिह बात सुनावत ॥
सो कहि करि न्रिप कह समझावत ॥१९॥
भलो बुरो तुहि मै बहु करिहो ॥
तो पर रूठि लहत तिह रहिहो ॥
वा की भाखि अधिक तुहि मारौ ॥
त्रिय न लहत चित ते तुहि डारौ ॥२०॥

दोहरा ॥

न्रिप ता सौ ऐसौ कहा रहो तिसी की होइ ॥
भेद सकल मुहि दीजियहु जु कछु कहै त्रिय सोइ ॥२१॥
वा ही की होई रहत नित तिह अधिक रिझाइ ॥
जु कछु भेद अबला कहै देत न्रिपति कह आइ ॥२२॥

चौपई ॥

एक त्रिय कह राइ बुलायो ॥
कछुक दरबु ता ते चटवायो ॥
मै जु कहो कहीयहु तिह जाई ॥
हौ तो पहि तव मित्र पठाई ॥२३॥

दोहरा ॥

न्रिप नारी वहु दरबु दै अपनी करी बनाइ ॥
सभ ब्रितात लै तवन को सभ कहियहु मुहि आइ ॥२४॥

चौपई ॥

मोर न कछू भेद तिहि दिजियहु ॥
ता के चोरि चित कह लिजियहु ॥
वा ही की होई तुम रहियहु ॥
लै ता को अंतर मुहि कहियहु ॥२५॥

दोहरा ॥

ता के मित को नाम लै पतिया लिखी बनाइ ॥
हम बिखरच रहते घने कछु धनु दैहु पठाइ ॥२६॥
देस छाडि परदेस मै बसा बहुत दिन आइ ॥
प्रेम जानि कछु कीजियहु मुसकल समै सहाइ ॥२७॥
त्रिया तिहारे ह्वै रहे इमि समझो मन माहि ॥
हम से तुम कह बहुत है तुम से हम कह नाहि ॥२८॥

चौपई ॥

हमरे खरचन कह कछु दिजियहु ॥
वै दिन यादि हमारे किजियहु ॥
प्रीति पुरातन प्रिया बिचरियहु ॥
हम पर अधिक क्रिपा तुम करियहु ॥२९॥
तवन राति की बात संवरियहु ॥
मो पर नारि अनुग्रहु करियहु ॥
या पतिया कह तुही पछानै ॥

अवर पुरख कोऊ दुतिय न जानै ॥३०॥

दोहरा ॥

जब वै दिन हमरे हुते एदिन तुमरे आइ ॥
क्रिपा जानि किछु दीजियहु करियहु मोहि सहाइ ॥३१॥
बाचत पतिया मूड़ त्रिय फूल गई मन माहि ॥
तुरतु काढि बहु धनु दिया भेद लखिओ जड़ नाहि ॥३२॥

चौपई ॥

काढि दरबु मूरख त्रिय दीनो ॥
ता को सोध फेरि नहि लीनो ॥
लै अपनो न्रिप काज चलायो ॥
त्रियहि जानि मुर मित धन पायो ॥३३॥

दोहरा ॥

त्रिय जाना मुर मीत कह दरब पहूंच्यो जाइ ॥
मूड़ न जाना न्रिपति हरि लीना रोज चलाइ ॥३४॥

चौपई ॥

हित मित के त्रिय दरबु लुटायो ॥
निजु नायक सौ नेहु गवायौ ॥
हरि धनु लै न्रिप रोज चलावै ॥
वा को मूंड मूंडि नित खावै ॥३५॥

दोहरा ॥

जो जनु जा सौ रुचि करै ता ही को लै नामु ॥
दरबु कढावै त्रियन ते आपु चलावै कामु ॥३६॥

CHARITAR ५५ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥55॥1048॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चंद्र देव के बंस मै चंद्र सैन इक भूप ॥
चंद्र कला ता की त्रिया रति के रहत सरूप ॥१॥

चौपई ॥

चंद्र देव जब ही स्वै जावै ॥
तब त्रिय जार पास उठि आवै ॥
केल कमाइ रहत तह जाई ॥
तैसे ही सोइ रहत लपटाई ॥२॥
सोवत जग्यो भेद न्रिप जान्यो ॥
चित राखियो नहि प्रगट बखान्यो ॥
चित चौगनो नेहु बढायो ॥
मूरख नारि भेद नहि पायो ॥३॥
आंखि मूंदि जागत स्वै रहियो ॥

भौंदू नारि सोत सो लहियो ॥
तुरत जार के तट चलि गई ॥
उठि न्रिप कर क्रिपान गह लई ॥४॥

दोहरा ॥

उठि राजा त्रिय भेस धर गहि क्रिपान ली हाथ ॥
रानी यो जानी जियहि आवत चेरी साथ ॥५॥

चौपई ॥

पाइन को खटको नहि करियो ॥
कर महि काढि खड़ग कहि धरियो ॥
भोग करत जब तिनै निहारियो ॥
इहै चित महि चरित बिचारियो ॥६॥
रमत जार सो त्रिय लख पाई ॥
कर महि काढि क्रिपान कंपाई ॥
दुहूं हाथ करि कुअत प्रहारियो ॥
दुहूंअन चारि टूक करि डारियो ॥७॥

दोहरा ॥

चंद्र कला को जार जुत हनि न्रिप लयो उठाइ ॥
वैसह आपनी खाट तर राखत भयो बनाइ ॥८॥
धरि दुहूंअन को खाट तर घरी एक दो टारि ॥
मारि मारि कहि कै उठा कढे कोप करवार ॥९॥
चोर मोहि मारत हुतो त्रिय के लागियो घाइ ॥
काढि भगौती तुरतु मै या को दयो सु घाइ ॥१०॥

चौपई ॥

जबै लोग न्रिप पूछन आए ॥
यहै तिनौ सौ बचन सुनाए ॥
जब तसकर मुहि घाव चलायो ॥
हौ बचि गयो त्रिया कौ घायो ॥११॥
जब द्रिड़ घाव त्रिया के लागियो ॥
तब हौ काढि भगौती जागियो ॥
त्रिय के नेह कोप मन धारियो ॥
चोरहि ठौर मार ही डारियो ॥१२॥

दोहरा ॥

नर नारी पुर सभ कहै धंनि राजा तव हीय ॥
बदलो लीनो बाम को चोर संघारियो जीय ॥१३॥

CHARITAR ५६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे छपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥56॥1061॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बंग देस बंगेस्वर राजा ॥

सभ ही राजन को सिर ताजा ॥
कितक दिनन राजा मर गयो ॥
सभ जग इंद्र मती को भयो ॥१॥

दोहरा ॥

दिन थोरन को सत रहियो भई हकूमति देस ॥
राजा ज्यो राजहि कियो भई मरद के भेस ॥२॥

चौपई ॥

ऐसहि बहुत बरस ही बीते ॥
बैरी अधिक आपने जीते ॥
एक पुरख सुंदर लखि पायो ॥
रानी ता सौ नेह लगायो ॥३॥
अधिक प्रीति रानी को लागी ॥
छूटै कहा निगौडी जागी ॥
रैनि परी तिह तुरत बुलायो ॥
केल दुहूंनि मिलि अधिक मचायो ॥४॥
रहत बहुत दिन ता सौ भयो ॥
गरभ इंद्र मतियहि रहि गयो ॥
उदर रोग को नाम निकारियो ॥
किनूं पुरख नहि भेद बिचारियो ॥५॥
नव मासन बीते सुत जनियो ॥
मानौ आपु मैन सो बनियो ॥
एक नारि के घर मै धरियो ॥
ता को धाम दरबु सो भरियो ॥६॥
काहू कहो बात इह नाही ॥
यो कहि फिरि आई घर माही ॥
दुतिय कान किनहूं नहि जाना ॥
कहा किया तिय कहा बखाना ॥७॥

दोहरा ॥

ता के कछू न धन हुतो दिया जरावै धाम ॥
ता के घर मै सौप्यो रानी को सुत राम ॥८॥

चौपई ॥

रानी इक दिन सभा बनाई ॥
तवन त्रियादिक सभै बुलाई ॥
जब तिह त्रिय के सुतहि निहारियो ॥
ता ते लै अपनो करि पारियो ॥९॥

दोहरा ॥

लै पारक करि पालियो किनूं न पायो भेद ॥
रमा सासत्र को सुर असुर उचरि न साकहि बेद ॥१०॥

CHARITAR ५७ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥57॥1071॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

कासमीर के सहर मै बीरज सैन नरेस ॥
ता के दल के बलहु ते कंपति हुतो सुरेस ॥१॥
चित्र देवि ता की त्रिया बुरी ह्रिदै जिह बुधि ॥
मंद सील जा को रहै चित की रहै कुसुधि ॥२॥
बोलि रसोयहि तिन कही इह राजै बिखि देहु ॥
बहुतु बढैहौ हौ तुमै अबै अधिक धन लेहु ॥३॥
ता की कही न तिन करी तब त्रिय चरित बनाइ ॥
राजा कौ निउता कहियो सऊअन सहित बुलाइ ॥४॥

चौपई ॥

राजा सऊअन सहित बुलायो ॥
भाति भाति पकवान पकायो ॥
ता मै जहर घोरि कै डारियो ॥
राजा जू को मार ही डारियो ॥५॥
जब राजा जू म्रित बसि भए ॥
तब ही पकर रसोया लए ॥
वाहै ताम लै ताहि खुआरियो ॥
ताहू कौ तब ही हनि डारियो ॥६॥

CHARITAR ५८ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥58॥1077॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सहर निकोदर बनयो रहै ॥
द्वै इसत्री जग ता के कहै ॥
लाडम कुअरि सुहागम देई ॥
जिन ते बहु सिछ्या त्रिय लेई ॥१॥
बनयो अनत देस कह गयो ॥
अधिक सोक दुहूंअन को भयो ॥
बहुत काल परदेस बितायो ॥
खाटि कमाइ देस कह आयो ॥२॥
कितक दिनन बनिया घर आयो ॥
दुहूं त्रियन पकवान पकायो ॥
वहु जानै मेरे घर ऐहै ॥
वह जानै मेरे ही जैहै ॥३॥
एक गाव बनिया रहि गयो ॥
आवत चोर त्रियन के भयो ॥
जागत हेरि त्रियहि नहि आयो ॥
दुतिय त्रिया के घर कौ धायो ॥४॥
त्रिय जान्यो मेरे पति आए ॥
मम घर ते हटि या के धाए ॥
दोऊ चली हम पतिहि हटै है ॥
मोरि आपने धाम लयै है ॥५॥

दोहरा ॥

दोऊ त्रिय धावत भई अधिक कोप मन कीन ॥
तसकर को पति जानि कै दुहू त्रियन गहि लीन ॥६॥
तसकर को पति भाव ते देखियो दिया जराइ ॥
चोर जानि कुटवार के दीनो धाम पठाइ ॥७॥

CHARITAR ५९ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥59॥1084॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

राजा रनथंभौर को जा को प्रबल प्रताप ॥
राव रंक जा को सदा निस दिन जापहि जाप ॥१॥
रंग राइ ता की त्रिया अति जोबन तिह अंग ॥
राजा कौ प्यारी रहै जिह लखि लजै अनंग ॥२॥
एक दिवस तिह राव नै सुभ उपबन मै जाइ ॥
रंग राइ सुत मानि कै लीनी कंठ लगाइ ॥३॥
रंग राइ सौ राइ तब ऐसे कही बनाइ ॥
ज्यो इसत्री द्वै मै गही तोहि न नर गहि जाइ ॥४॥

चौपई ॥

केतक दिवस बीत जब गए ॥
रंग राइ सिमरन बच भए ॥
एक पुरख सौ नेह लगायो ॥
बिना समस जा कौ लखि पायो ॥५॥
नारी को तिह भेस बनायो ॥
राजा सौ इह भाति जतायो ॥
ग्रिह ते बहिनि हमारी आई ॥
हम तुम चलि तिह करै बडाई ॥६॥

दोहरा ॥

टरि आगे तिह लीजिऐ बहु कीजै सनमान ॥
मोरे ढिग बैठारियै अमित दरबु दै दान ॥७॥
तिह न्रिप टरि आगै लियो बैठारियो त्रिय तीर ॥
अति धनु दै आदरु करियो भए त्रियन की भीर ॥८॥
जब राजा ढिग बैठ्यो तब दुहूंअन लपटाइ ॥
कूकि कूकि रोवत भई अधिक सनेह बढाइ ॥९॥
रंग राइ तिह पुरख को त्रिय को भेस सुधारि ॥
दछिनंग राजा लयो बामै अंग सु यार ॥१०॥
यह भगनी तो प्रान पति या ते प्रीतम कौन ॥
दिन देखत त्रिय छलि गई जिह लखि भजियै मौन ॥११॥
अतिभुत गति बनितान की जिनै न पावै कोइ ॥
भेद सुरासुर न लहै जो चाहै सो होइ ॥१२॥

CHARITAR ६० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे साठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥60॥1096॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

बनियो ग्वारिएर के माही ॥
घर धन बहु खरचत कछु नाही ॥
ता को घर तसकर इक आयो ॥
तिन साहुनि सो बचन सुनायो ॥१॥
बनिक बोलि साहुनि सो भाख्यो ॥
राम हमै निपूत करि राख्यो ॥
धन बहु धाम काम किह आवै ॥
पुत्र बिना मुर बंस लजावै ॥२॥

दोहरा ॥

सुनु साहुनि हमरे बिधहि पूत न दीना धाम ॥
चोरहु सुत कै राखियै जो ह्यां ल्यावै राम ॥३॥

चौपई ॥

चोरहु होइ पूत करि राखो ॥
ता ते कछू न मुख ते भाखो ॥
साहुनि सहित बनिक जब मरि है ॥
हमरो कवन दरबु लै करि है ॥४॥
यह जब भनक चोर सुनि पाई ॥
फूलि गयो बसत्रन नहि माई ॥
जाइ बनिक को पूत कहैहों ॥
या कै मरे सकल धन लैहों ॥५॥
तब लो चोर द्रिसटि पर गयो ॥
अधिक बनिक के आनंद भयो ॥
पल्यो पलोस्यो सुतु बिधि दीनो ॥
ता को पूत पूत कहि लीनो ॥६॥
खाट उपर तसकरहि बैठायो ॥
भलो भलो पकवान खवायो ॥
पूत पूत कहि साहुनि धाई ॥
साहु चउतरे जाइ जताई ॥७॥

दोहरा ॥

पंच पयादे संग लै चोरहि दयो दिखाइ ॥
इह पैंडे आयो हुतो मै सुत कहियो बुलाइ ॥८॥

चौपई ॥

अमित दरबु हमरे बिधि दयो ॥
पूत न धाम हमारे भयो ॥
या कउ हम कहि पूत उचारो ॥
ता ते तुम मिलि कै नहि मारो ॥९॥
पूत पूत बनिया कहि रहियो ॥
पंच पयादन तसकर गहियो ॥
ता को कहियो एक नहि कीनो ॥
लै तसकर फासी सो दीनो ॥१०॥

CHARITAR ६१ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥61॥1106॥अफजूं॥

दोहरा ॥

महा सिंघ के घर बिखै तसकर रहै अपार ॥
नितिप्रति ता के ल्यावही अधिक खजानो मारि ॥१॥

चौपई ॥

हरन दरबु तसकर चलि आयो ॥
सो गहि लयो जान नहि पायो ॥
महा सिंघ ता को यौ कहियो ॥
तुम अपने चित मै द्रिड़ रहियो ॥२॥

दोहरा ॥

तुमरे सिर पर काढि कै ठाढे ह्वै तरवारि ॥
तुम डरि कछु न उचारियो लै हों जियत उबारि ॥३॥

चौपई ॥

तुम को मारन कौ लै जैहैं ॥
काढि भगवौती ठाढे ह्वैहैं ॥
ढीठतु आपन चित मै गहियहु ॥
त्रास मानि कछु तिनै न कहियहु ॥४॥

दोहरा ॥

ता कौ ढीठ बधाइ कै काढि लई तरवारि ॥
तुरत घाव ता को कियो हनत न लागी बारि ॥५॥
ता को हनि डारत भयो कछू न पायो खेद ॥
गाव सुखी अपने बसियो किनूं न जान्यो भेद ॥६॥

CHARITAR ६२ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे बासठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥62॥1112॥अफजूं॥

चौपई ॥

प्रबल सिंघ दछिन को न्रिप बर ॥
बहु भातनि को धन ता के घर ॥
चारु चछु ता की त्रिय रहई ॥
जो वहु कहै सु राजा करई ॥१॥
अति सुंदरि वहु नारि सुनीजै ॥
ता को पटतर का को दीजै ॥
राजा अधिक पा॥र तिह राखै ॥
कटु बच कदी न मुख ते भाखै ॥२॥
बंगस के राजे कहलावै ॥
भाति भाति के भोग कमावै ॥
इक सुंदर नर रानी लहियो ॥
तब ही आनि मैन तिह गहियो ॥३॥

ता सौ नेहु रानियहि कीनो ॥
ग्रिह ते काढि अमित धनु दीनो ॥
तिह जारहि इह भाति सिखायो ॥
आपु चरित इह भाति बनायो ॥४॥

दोहरा ॥

दरवाजे इह कोट के रहियो सवेरे लागि ॥
अति दुरबल को भेस करि सभ बसत्रन को त्याग ॥५॥

चौपई ॥

ता के ग्रिह जब न्रिप पग धारियो ॥
बिखु दै ताहि मारि ही डारियो ॥
दीन बचन तब त्रियहि उचारे ॥
मोहि त्याग गे राज हमारे ॥६॥
मरती बार न्रिपति मुहि कहियो ॥
सो मै बचन ह्रिदै द्रिड़ गहियो ॥
राज साज दुरबल को दीजो ॥
मोरो कहियो मानि त्रिय लीजो ॥७॥

दोहरा ॥

अति सुंदर दुरबल घनो कोट दुआरे होइ ॥
राज साज तिह दीजियहु लाज न करियहु कोइ ॥८॥

चौपई ॥

हम तुम कोट दुआरे जैहै ॥
ऐसे पुरख लहै तिह लयैहै ॥
राज साज ताही को दीजै ॥
मेरो बचन स्रवन सुनि लीजै ॥९॥
मरते पति मुहि बचन उचारे ॥
सो हौं उचरत साथ तुमारे ॥
दिज बर स्राप भूप को दियो ॥
ता ते भेख रंक को कियो ॥१०॥

दोहरा ॥

इही कोट के द्वार मै बसियहु भूपति जाइ ॥
देहि न्रिपति की त्याग कै देह रंक की पाइ ॥११॥
तब राजै ता सो कहियो ह्वै है कबै उधार ॥
जो न्रिप सो दिजबर कहियो सो मै कहौ सुधार ॥१२॥

चौपई ॥

कछु दिन दुरग द्वार मो रहि हो ॥
अति दुख देह आपनी लहि हो ॥
खोजत तब रानी ह्यां ऐहै ॥
तुम को राज आपनो दै है ॥१३॥

दोहरा ॥

राज वैस ही करैगो रूप न वैसा होइ ॥

ज्यो राजा मुहि कहि मूए तुमै कहत मै सोइ ॥१४॥

चौपई ॥

हम तुम मिलि खोजन तह जैयै ॥
जो न्रिप कहियो सु काज कमैयै ॥
तब हो जियत जगत मै रहिहो ॥
ऐसे रूप भूप जब लहिहो ॥१५॥
रानी को लै मंत्री धायो ॥
तवन पुरख करि न्रिप ठहरायो ॥
सकल देस को राजा कीनो ॥
राज साज सभ ता को दीनो ॥१६॥

दोहरा ॥

निजु न्रिप आपु संघारि कै रानी चरित बनाइ ॥
रंकहि लै राजा कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१७॥

CHARITAR ६३ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रिसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥63॥1129॥अफज्ूं॥*

चौपई ॥

मैंगल सिंघ राव इक रहई ॥
रघु बंसी जा को जग कहई ॥
ता के भवन एक बर नारी ॥
जनु बिधि अपन करन गड़ि भारी ॥१॥
सोरठा ॥
दंत प्रभा तिह नाम जा को जग जानत सभै ॥
सुर सुरपति अभिराम थकित रहत तिह देखि दुति ॥२॥

दोहरा ॥

इक चेरी ता के भवन जा मै अति रस रीति ॥
बेद ब्याकरन सासत्र खट पड़ी कोक संगीति ॥३॥
सो राजा अटकत भयो ता को रूप निहारि ॥
दै न सकै ता को कछू त्रिय की संक बिचार ॥४॥

चौपई ॥

एक अंगूठी न्रिप कर लई ॥
लै तवनै चेरी कौ दई ॥
ताहि कथा इह भाति सिखाई ॥
कहियहु परी मुंद्रिका पाई ॥५॥
एक दिवस न्रिप सभा बनाई ॥
सभ इसत्री ग्रिह बोलि पठाई ॥
न्रिपति कही मुंद्री मम गई ॥
वहु कहि उठी चीनि मै लई ॥६॥
यह मुंद्रिका कहा ते पाई ॥
डारी हुती द्रिसटि मम आई ॥
सो मै करि उठाइ कर लई ॥

लै राजा जी तुम कौ दई ॥७॥

दोहरा ॥

जा को परमेसुर दई मै ताहू को दीन ॥
भेद न काहू त्रिय लहियो न्रिप छल गयो प्रबीन ॥८॥

CHARITAR ६४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥64॥1137॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

राइक राठ महोबे रहै ॥
मित्र सिंघ जा को जग कहै ॥
दछिन पैंड चलन नहि देई ॥
कूटि लूटि लोगन कह लेई ॥१॥
जो लिंडियाइ तिह कौ धन ल्यावै ॥
जो ऐठै तिह मारि गिरावै ॥
लूटि कूटि सभ ही कौ लेई ॥
अधिक दरबु इसत्री कौ देई ॥२॥
एक दिवस धारा को गयो ॥
सूरमान संग भेटा भयो ॥
है दौराइ चलत गिर परियो ॥
तब तिन आन सूरमन धरियो ॥३॥

दोहरा ॥

बाधि कालपी लै गए ताहि हनन के भाइ ॥
तनक भनक सुनि तिह त्रिया तहा पहूंची आइ ॥४॥

चौपई ॥

चुनि चुनि गोबर है पर धरै ॥
काहू की संका नहि करै ॥
पति कौ बध न होइ यौ धाई ॥
इह मिसि निकटि पहूची आई ॥५॥

दोहरा ॥

झटकि बाह ते निजु पतिह है पर लयो चराइ ॥
ताही कौ असि छीनि कै ताहि चंडारहि घाइ ॥६॥

चौपई ॥

जवन स्वार पहूंच्यो तिह मारियो ॥
एकै बान मारि ही डारियो ॥
काहू ते चित डरत न भई ॥
निजु पति लै पुरवा कह गई ॥७॥

CHARITAR ६५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पैसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥65॥1144॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

दुहिता एक वजीर की रूप सहर के माहि ॥
ता के सम तिहूं लोक मै रूपवती कऊ नाहि ॥१॥
अगनत धनु बिधि घर दयो अमित रूप कौ पाइ ॥
लोक चौदहूं मै सदा रोसन रोसन राइ ॥२॥
साम देस के साह को सुंदर एक सपूत ॥
सूरति सीरति मै जनुक आपु बन्यो पुरहूत ॥३॥
सुमति सैन सूरा बडो खेलण चरियो सिकार ॥
स्वान सिचाने संग लै आयो बनै मंझार ॥४॥
सुमति सैन सभ सभा मै ऐसे उचरे बैन ॥
जिह आगे आवै हनै औ कोऊ म्रिगहि हनै न ॥५॥

चौपई ॥

म्रिग जा के आगे ह्वै आवै ॥
वहै आपनो तुरै धवावै ॥
कै म्रिग मारै कै गिरि मरै ॥
यौ ग्रिह कौ दरसन नहि करै ॥६॥
हुकम धनी को ऐसो भयो ॥
राज पुत्र आगे म्रिग गयो ॥
सुमति सिंघ तब तुरै धवायो ॥
पाछै लगियो हिरन को आयो ॥७॥

दोहरा ॥

पाछे लागियो हिरन के रूप पहूंच्यो आइ ॥
दुहिता हेरि वजीर की रूप रही मुरछाइ ॥८॥

चौपई ॥

पान खाइ कर पुरी बनई ॥
पीक डारि न्रिप सुत पर दई ॥
सुमति सैन मुरि ताहि निहारियो ॥
ता को सोक दूरि करि डारियो ॥९॥
मंदर पै न्रिप सुतहि बुलायो ॥
मन भावत को भोग कमायो ॥
हरिन हनन यौ हुतौ सु भाख्यो ॥
कामकेल दुहूंअन रस चाख्यो ॥१०॥
चारि पहर रजनी सुख पायो ॥
कामकेल दुहूंअन को भायो ॥
अति प्रमुदित मन भीतर भए ॥
भाति भाति के आसन लए ॥११॥

दोहरा ॥

कोक सासत्र को उचरै रमत दोऊ सुख पाइ ॥
भाति भाति आसन करै गनना गनी जाइ ॥१२॥
प्रात होत निसि बसि चलियो गहियो पयादन आइ ॥
बाधि हनन कौ लै चले रहियो न कछू उपाइ ॥१३॥

चौपई ॥

न्रिप सुत बाधि पयादन लयो ॥
देखन लोग नगर को गयो ॥
राजा जू के धाम ते नेरियो ॥
महलन चरे राव जू हेरियो ॥१४॥
रोसनि तुरकी तुरा बुलायो ॥
आपु पुरख को भेख बनायो ॥
सवा लाख को अभरन करियो ॥
स्याम बरन को बाना धरियो ॥१५॥

दोहरा ॥

तिह को रूप निहारि कै भूप रहियो मुरछाइ ॥
कौन न्रिपति को पुत्र यह ता को लेहु बुलाइ ॥१६॥

चौपई ॥

न्रिप को बचन भ्रित सुनि धाए ॥
मंत्री की दुहिता ढिग आए ॥
कौन देस एस्वर तुहि जायो ॥
चलो राव जू बोलि पठायो ॥१७॥

दोहरा ॥

कौन न्रिपति को पुत्र तै क्यो आयो इह देस ॥
क्यो मुसकी घोरा चरियो धरियो असित क्यो भेस ॥१८॥

छपै छंद ॥

न है न्रिपति को पुत्र न है देसन को राई ॥
तव मंत्री की सुता लखन कौतक कौ आई ॥
सासत्र सिम्रितन माहि सदा स्रवनन सुनि पायो ॥
ततु लखन के हेत मोर हियरा उमगायो ॥
तबै उचरिहौ बैन जबै नेत्रन सो लहिहो ॥
बिनु नेत्रन के लहे भेद न्रिप तुमै न कहिहो ॥१९॥

चौपई ॥

कहियो न्रिपति मुहि भेद बतावहु ॥
रोसन राइ न ह्रिदै लजावहु ॥
तुमरी कही ह्रिदै मै राखो ॥
भेद और तन कछू न भाखो ॥२०॥

दोहरा ॥

सुन राजा जू मै कहों किसू न दीजहु भेद ॥
जु कछु सासत्र सिम्रिति कहत और उचारत बेद ॥२१॥
जहा साध कह चोर करि मारत लोग रिसाइ ॥
तुरत धरनि तिह ठौर की धसकि रसातल जाइ ॥२२॥

चौपई ॥

जो सासत्र सिंम्रतन सुनि पाई ॥

सो कौतक देखन कह आई ॥
देखो कहा इह ठा अब ह्वै है ॥
फटि है धरनि कि नाहि फटि जै है ॥२३॥

दोहरा ॥

जु कछु कथा स्रवनन सुनी सु कछु कही तुय देव ॥
अपने चित मै राखियो किसू न दीजहु भेव ॥२४॥
सुनत बचन ता के न्रिपति निकटि बोलि तिह लीन ॥
स्याम साह को पुत्र लखि तुरत बिदा करि दीन ॥२५॥
दुहिता दई वजीर की है गै दए अनेक ॥
पति कीनो छलि कै तुरत बार न बाकयो एक ॥२६॥

चौपई ॥

झूठा ते साचा करि डारियो ॥
किनहूं भेद न ह्रिदै बिचारियो ॥
साम देस लै ताहि सिधाई ॥
तेग तरे ते लयो बचाई ॥२७॥

दोहरा ॥

अतिभुत गति बनितान की जिह न सकत कोउ पाइ ॥
भेद हाथ आवै नही कोटिन किये उपाइ ॥२८॥

CHARITAR ६६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छिआसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥66॥1172॥अफजूं॥*

चौपई ॥

दछिन देस बिचछन नारी ॥
जोगी गए भए घर बारी ॥
चतुर सिंघ राज तह भारो ॥
चंद्रबंस मै रहै उजियारो ॥१॥
है गै रथ पैदल बहु वा के ॥
और भूप कोऊ तुलि न ता के ॥
रूप कला ता की बर नारी ॥
जनु रति पति ते भई कुमारी ॥२॥
अधिक राव ता के बसि रहै ॥
जो वहु मुख ते कहै सु कहै ॥
रूप मती तिह त्रास न डरै ॥
जो चित भावे सोई करै ॥३॥

दोहरा ॥

इक दिन बैठे त्रियन मै होड परी तिन माहि ॥
पिय देखत कोऊ जार सो भोग सकत करि नाहि ॥४॥

चौपई ॥

रानी बात चित मै राखी ॥

मुख ते कछू न तिह ठा भाखी ॥
एक दोइ जब मास बितायो ॥
आन राव सो बचन सुनायो ॥५॥
सुनु न्रिप मै सिव पूजन गई ॥
बानी मोहि तहा तै भई ॥
एक बात ऐसी बहि जैहै ॥
सभ को भोग करत द्रिसटै है ॥६॥

दोहरा ॥

जु कछु मोहि सिवजू कहियो सु कछु कहियो तुहि देव ॥
चित अपने मै राखियहु किसू न दीजहु भेव ॥७॥
ऐसे न्रिप सो भाखि कै दिन द्वै चार बिताइ ॥
सकल कोठरिन ते लए सभ ही जार बुलाइ ॥८॥
आपन सो लौडियन सों जार दए चिमटाइ ॥
पठै एक चेरी दई कहौ न्रिपति सो जाइ ॥९॥

चौपई ॥

जु मै तुमै सिव बानी कही ॥
वहै बात तुमरे ग्रिह लही ॥
छोरि ससत्र चलि तुरत निहारहु ॥
कछू कोप नहि ह्रिदै बिचारहु ॥१०॥

दोहरा ॥

तुरत बचन सुनि न्रिप गयो केल करत जह त्रीय ॥
सिव के बचन संभारि कै ठटकि रहत भयो जीय ॥११॥

चौपई ॥

मुहि जु त्रिया सिव बैन उचारे ॥
साच भए वह धाम हमारे ॥
रूप मती मुहि झूठि न कहियो ॥
अब सो साच तवन को लहियो ॥१२॥

दोहरा ॥

रति करि कै सभ ही त्रियन दीने जार उठाइ ॥
आपु आनि न्रिप सो कहियो बहिगी बात बनाइ ॥१३॥
जो मै तुम सो न्रिप कहियो बात अब वहै लही ॥
कोप न चित मै कीजियहु सिव के बचन सही ॥१४॥
किंनर जछ भुजंग गन नर मुनि देव अदेव ॥
त्रिय चरित्र को चित मै रंच न चीनत भेव ॥१५॥

CHARITAR ६७ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतासठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥67॥1187॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

साहु एक गुजरात को ता के ग्रिह इक पूत ॥

सौदा कौ चौकस करै पितु ते भयो सपूत ॥१॥
नाऊ के इक पुत्र सो ता को रहै पिआर ॥
सूरति मै दोऊ एकसो कोऊ न सकै बिचार ॥२॥

चौपई ॥

साहु पुत्र ससुरारे चलो ॥
संग लए नऊआ सुत भलो ॥
गहिरे बन भीतर दोऊ गए ॥
बचन कहत नऊआ सुत भए ॥३॥
नऊआ के सुत बचन उचारे ॥
सुनो साहु सुत बैन हमारे ॥
तब हौ यार तुमै पहिचानौ ॥
मेरे कहियो अबै जौ मानौ ॥४॥

दोहरा ॥

अस्व बसत्र सभ अपने तनकिक मो को देहु ॥
यह बुगचा तुम लै चलौ चलि आगे फिरि लेहु ॥५॥

चौपई ॥

साहु पुत्र सोई तब करियो ॥
ता कौ बुगचा निजु सिरि धरियो ॥
निजु घोरा पै ताहि चरायो ॥
अपुने बसत्रन सो पहिरायो ॥६॥
नऊआ सुत तिह भेख बनायो ॥
दे बुगचा सुत साहु चलायो ॥
ता को अति ही चित हरखानो ॥
साहु पुत्र कछु भेद न जानो ॥७॥

दोहरा ॥

चलत चलत ससुरारि कौ गाव पहूंच्यो आइ ॥
उतरि न तिह सुत साहु को है पर लियो चराइ ॥८॥
साहु पुत्र तिह कहि रहियो लयो न तुरै चराइ ॥
साहु पुत्र लखि तिह धनी सकल मिलत भे आइ ॥९॥

चौपई ॥

साहु पुत्र नऊआ करि मान्यो ॥
नऊआ सुत सुत साहु पछान्यो ॥
अति लजाइ मन मै वहु रहियो ॥
तिन प्रति कछू बचन नहि कहियो ॥१०॥

दोहरा ॥

नऊआ सुत को साहु की दीनी बधू मिलाइ ॥
साहु पुत्र सो यौ कहियो दुआरे बैठहु जाइ ॥११॥

चौपई ॥

तब नऊआ यौ बचन उचारे ॥
कहौ काज इह करो हमारे ॥

बहु बकरी तिह देहु चरावै ॥
दिवस चराइ राति घर आवै ॥१२॥

दोहरा ॥

साहु पुत्र छेरी लए बन मै भयो खराब ॥
सूकि दूबरो तन भयो हेरे लजत रबाब ॥१३॥

चौपई ॥

अति दुरबल जब ताहि निहारियो ॥
तब नऊआ सुत बचन उचारियो ॥
एक खाट या को अब दीजै ॥
मेरो कहियो बचन यह कीजै ॥१४॥

दोहरा ॥

खाट साहु को पुत्र लै अधिक दुख्य भयो चित ॥
गहिरे बन मै जाइ कै रोवत पीटत नित ॥१५॥
महा रुद्र अरु पारबती जात हुतै नर नाहि ॥
ता को दुखित बिलोकि कै दया भई मन माहि ॥१६॥

चौपई ॥

दया मान यौ बचन उचारे ॥
सुनहु साहु के सुत दुखयारे ॥
जाइ चमरु तू तू मुख कहि है ॥
छेरी लगी भूंम मै रहि है ॥१७॥

दोहरा ॥

जबै उझरु तू भाखि है तुरत वहै छुटि जाइ ॥
जब लगियो कहि है नहीं मरै धरनि लपटाइ ॥१८॥

चौपई ॥

जबै चमरु तू वहि मुख कहै ॥
चिमटियो अधर धरनि सो रहै ॥
साचु बचन सिव को जब भयो ॥
तब तिह चित यह ठाट ठट्यो ॥१९॥

दोहरा ॥

सभै चमरु तू मै बिना या पुर मै ह्वै जाहि ॥
जह तह नर नारी हुती लगी रही छित माहि ॥२०॥
सोत जगत बैठत उठत चिमट गए छिन माहि ॥
कूक उठी पुर मै घनी नैक रही सुधि नाहि ॥२१॥
पति धोती बाधित फसियो पाक पकावत त्रीय ॥
नौआ त्रिय सोवत फसियो कछु न रही सुधि जीय ॥२२॥

चौपई ॥

साहु पुत्र तबह ता के आयो ॥
कहा भयो कहि तिसै सुनायो ॥

जु कछु कहो मुहि काज कमाऊ ॥
बैदहि ढूढि तिहारे ल्याऊ ॥२३॥
लै घोरी सुत साहु सिधायो ॥
खोजि बैद को संग लै आयो ॥
तह जंगल की हाजति भई ॥
घोरी साहु पुत्र को दई ॥२४॥

दोहरा ॥

जाइ बूटै तब बैठियो लई कुपीन उठाइ ॥
डला भए पौछन लगियो कहियो चमरु तू ताहि ॥२५॥
हाथ लगोटी रहि गई डला फसियो बुरि माहि ॥
चरन झार के संग रसे ताहि रही सुधि नाहि ॥२६॥
लए अस्वनी साहु को पूत पहूंच्यो आइ ॥
कहियो बैद मै क्या करों इह दुख को सु उपाइ ॥२७॥

चौपई ॥

साहु पुत्र तब बचन उचारो ॥
सुनो बैद उपचार हमारो ॥
हमरो इह आगे दुख भयो ॥
इह उपचार दूरि ह्वै गयो ॥२८॥

दोहरा ॥

या घोरी के भग बिखै जीभ दई सौ बार ॥
तुरत रोग हमरो कटियो सुनहु बैद उपचार ॥२९॥

चौपई ॥

तबै बैद सोऊ क्रिआ कमाई ॥
ता के भग मै जीभ धसाई ॥
कहियो चमरु तू सो लगि गई ॥
अति हासी गदहा को भई ॥३०॥
लए लए ता को पुर आयो ॥
सगल गाव को दरस दिखायो ॥
बैद कछू उपचारहि करौ ॥
इन के प्रान छुटन ते डरौ ॥३१॥
पुर जन बाच ॥

दोहरा ॥

अधिक दुखी पुर जन भए कछू न चलियो उपाइ ॥
चलत फिरत या को निरखि रहे चरन लपटाइ ॥३२॥

चौपई ॥

हमरे नाथ उपाइहि कीजै ॥
अपने जानि राखि करि लीजै ॥
इनै करी कछु चूक तिहारी ॥
महा रोग ते लेहु उबारी ॥३३॥
साह सुत बाच ॥

चौपई ॥

सकल कथा तिन भाखि सुनाई ॥
पुर लोगन सभहूं सुनि पाई ॥
लै दूजी कंन्या तिह दीनी ॥
भाति भाति उसतति मिल कीनी ॥३४॥
और सकल पुर छोरि उबारियो ॥
नऊआ सुत चिमटियो ही मारियो ॥
ब्याह दूसरो अपनो कीनो ॥
निजु पुर को बहुरो मगु लीनो ॥३५॥

CHARITAR ६८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठासठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥68॥1222॥अफज्रूं॥*

दोहरा ॥

चपल सिंघ राजा बडो राज कला तिह नारि ॥
इंद्र देव रीझे रहै जानि सची अनुहारि ॥१॥
सो रानी इक चोर सो रम्यो करत दिनु रैनि ॥
ताहि बुलावै निजु सदन आपु जाइ तिह ऐन ॥२॥
एक दिवस आवत सदन न्रिप बर लखियो बनाइ ॥
लूटि कूटि तसकर लयो सूरी दियो चराइ ॥३॥
जब स्रोनत भभको उठत तब आखै खुलि जाहि ॥
जबै स्वास तर को रमै कछू रहै सुधि नाहि ॥४॥

चौपई ॥

रानी जब बतिया सुन पाई ॥
तसकर के मिलबे कह धाई ॥
जब स्रोनत ऊरध तिह आयो ॥
छुटी आखि दरसन त्रियु पायो ॥५॥
तब रानी तिह बचन उचारे ॥
सुनु तसकर मम बैन प्यारे ॥
जो कछु आग्या देहु सु करो ॥
तुम बिन मार कटारी मरो ॥६॥
तब तसकर यौ बैन उचारे ॥
यहै होस मन रही हमारे ॥
मरत समै चुंबन तव करो ॥
बहुरो या सूरी पर मरो ॥७॥
जब रानी चुंबन तिह दीनो ॥
स्रोन भभाकै तसकर कीनो ॥
तब तसकर को मुखि जुरि गयो ॥
नाक काट रानी को लयो ॥८॥

दोहरा ॥

जब तसकर चुंबन करियो प्रान तजे ततकाल ॥
नाक कटियो मुख मै रहियो रानी भई बिहाल ॥९॥

चौपई ॥

नाक कटाइ त्रिया घर आई ॥
जोरि न्रिपति को बात सुनाई ॥
काट नाक सिव भोजन चरायो ॥
सो नहि लग्यो रुद्र यौ भायो ॥१०॥
पुन सिवजू यौ बचन उचारो ॥
चोर बक्र मै नाक तिहारो ॥
तुरहु तहा ते काढ मंगैयै ॥
आनि त्रिया के बक्र लगैयै ॥११॥

दोहरा ॥

तब राजै सोई कियो सिव को बचन पछानि ॥
ता के मुख सो काढ है नाक लगायो आनि ॥१२॥

CHARITAR ६९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनहतरौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥69॥1234॥अफजूं॥*

चौपई ॥

एक लहौर सुनारो रहै ॥
अति तसकर ता को जग कहै ॥
साहु त्रिया ता को सुनि पायो ॥
घाट गड़न हित ताहि बुलायो ॥१॥

दोहरा ॥

चित्र प्रभा त्रिय साहु की जैमल नाम सुनार ॥
घाट घड़त भयो स्वरन को तवन त्रिया के द्वार ॥२॥

चौपई ॥

जौन सुनारो घात लगावै ॥
तवनै घात त्रिया लखि जावै ॥
एक उपाइ चलन नहि देई ॥
ग्रिह को धन मम हर नहि लेई ॥३॥

दोहरा ॥

कोरि जतन सठ कर रहियो कछू न चलियो उपाइ ॥
आपन सुत को नाम लै रोदनु कियो बनाइ ॥४॥

चौपई ॥

बंदन नाम पुत्र हौं मरियो ॥
मेरे सकलो सुख बिधि हरियो ॥
जो कहि मूंड धरनि पर मारियो ॥
भाति भाति हिय दुखत पुकारियो ॥५॥
एक पुत्र ताहू को मारियो ॥
सो चितारि तिन रोदन करियो ॥
तब ही घात सुनारे पायो ॥
नाल बीच कर स्वरन चुरायो ॥६॥

तपत सलाक डारि छित दई ॥
सोनहि माटी सो मिलि गई ॥
कहियो न सुत ग्रिह भयो हमारै ॥
पाछे मूंठी छार की डारै ॥७॥
जब सुनार त्रिय सो सुनि पाई ॥
बहु मूंठी भरि राखि उडाई ॥
सुन सुनार तेरे सिर माही ॥
जा के एक पुत्र ग्रिह नाही ॥८॥

दोहरा ॥

पूतन सो पत पाईयै पूत भिरत रन जाइ ॥
इह मिस राखि उडाइ कै लई सलाक छपाइ ॥९॥

चौपई ॥

तब ऐसो त्रिय बचन उचारे ॥
मोरे पति परदेस पधारे ॥
ता ते मै औसी को डारो ॥
ऐहै न ऐहै नाथ बिचारो ॥१०॥

दोहरा ॥

कर सो औसी काढि कै लई सलाक उठाइ ॥
ह्यां रोदन कोऊ किन करो कहि सिर धरी बनाइ ॥११॥
चोर सुनारो चुप रहियो कछू न बोलियो जाइ ॥
पाई परी सलाक कहि सोना लयो भराइ ॥१२॥
हरी सलाक हरी त्रियहि स्वरन तोलि भरि लीन ॥
चल्यो दरबु दै गाठि को दुखित सुनारो दीन ॥१३॥
छल रूप छैली सदा छकी रहत छित माहि ॥
अछल छलत छितपतिन को छली कौन ते जाहि ॥१४॥

CHARITAR ७० — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥70॥1248॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

नगर पावटा बहु बसै सारमौर के देस ॥
जमुना नदी निकटि बहै जनुक पुरी अलिकेस ॥१॥
नदी जमुन के तीर मै तीरथ मुचन कपाल ॥
नगर पावटा छोरि हम आए तहा उताल ॥२॥

चौपई ॥

खिलत अखेटक सूकर मारे ॥
बहुते म्रिग औरै हनि डारे ॥
पुनि तिह ठा कौ हम मगु लीनौ ॥
वा तीरथ के दरसन कीनौ ॥३॥

दोहरा ॥

तहा हमारे सिख्य सभ अमित पहूंचे आइ ॥
तिनै दैन को चाहियै जोरि भलो सिरपाइ ॥४॥
नगर पावटे बूरियै पठए लोक बुलाइ ॥
एक पाग पाई नही निहफल पहुचे आइ ॥५॥

चौपई ॥

मोलहि एक पाग नहि पाई ॥
तब मसलति हम जियहि बनाई ॥
जाहि इहा मूतति लखि पावो ॥
ता की छीन पगरिया ल्यावो ॥६॥
जब पयादन ऐसे सुनि पायो ॥
तिही भाति मिलि सभन कमायो ॥
जो मनमुख तीरथ तिह आयो ॥
पाग बिना करि ताहि पठायो ॥७॥

दोहरा ॥

राति बीच करि आठ सै पगरी लई उतारि ॥
आनि तिनै हम दीह मै धोवनि दई सुधारि ॥८॥

चौपई ॥

प्रात लेत सभ धोइ मगाई ॥
सभ ही सिख्यन को बंधवाई ॥
बची सु बेचि तुरत तह लई ॥
बाकी बची सिपाहिन दई ॥९॥

दोहरा ॥

बटि कै पगरी नगर को जात भए सुख पाइ ॥
भेद मूरखन न लहियो कहा गयो करि राइ ॥१०॥

CHARITAR ७१ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकहतरौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥71॥1258॥अफजूं॥

दोहरा ॥

राजा एक पहार को चित्रनाथ तिह नाम ॥
ता को जन सभ देस के जपत आठहूं जाम ॥१॥
इंद्र मुखी रानी रहै ता के रूप अनूप ॥
सची जानि करि जक रहै जाहि आपु पुरहूत ॥२॥

चौपई ॥

न्रिप पुर तरै नदी इक बहै ॥
चंद्रभगा ता को जग कहै ॥
तट टीला पै महल उसारे ॥
जनु बिसकरमै करन सुधारे ॥३॥

दोहरा ॥

गहिरो जा को जल रहै जा सम नदी न आन ॥
डरत तैरि कोऊ न सकै लागत सिंधु समान ॥४॥
साहु एक गुजरात को घोरा बेचन काज ॥
चलि आयो तिह ठा जहा चित्रनाथ महाराज ॥५॥
रूप अनूपम साहु को जौन लखै नर नारि ॥
धन आपन की क्या चली तन मन डारहि वार ॥६॥

चौपई ॥

एक त्रियहि वहु साहि निहारियो ॥
इंद्र मुखी के निकट उचारियो ॥
ऐसो पुरखु भोग को पैयै ॥
प्रान सहित ता के बलि जैयै ॥७॥
सुनु रानी तिह बोलि पठैयै ॥
मैन भोग तिह साथ कमैयै ॥
तुम ते ता को जो सुत ह्वै है ॥
ता के रूप तुलि कह को है ॥८॥
ता को जो इसत्री लखि पैहै ॥
बहुरि आपने धाम न जैहै ॥
ताही पै आसिक ह्वै रहि है ॥
राम नाम को ज्यों नित कहि है ॥९॥

दोहरा ॥

तव सुत को जो इसत्री नैकु निहरि है नित ॥
स्री राघव के नाम ज्यों सदा संभरि है चित ॥१०॥

चौपई ॥

जब रानी ऐसे सुनु पायो ॥
बोलि साहु को धाम पठायो ॥
भाति भाति आसन तिह दीनो ॥
उर अपने ते जुदा न कीनो ॥११॥

दोहरा ॥

तब लग राजा तुरत ही धाम गयो तिह आइ ॥
चारि ममटि यहि तह दयो सोक ह्रिदै उपजाइ ॥१२॥
दो सै गज दो बैरकै लीनी साहु मंगाइ ॥
बडी धुजन सौ बाधि कै बाधी भुजन बनाइ ॥१३॥
रूंई मनि कु मंगाइ कै अंग लई लपटाइ ॥
बाधि घोघरो पवन लखि कूदत भयो रिसाइ ॥१४॥

चौपई ॥

ज्यों ज्यों पवन झलातो आवै ॥
धीमै धीमै तरकह जावै ॥
दुहूं बैरकन साहु उडारियो ॥
गहिरी नदी बिखै लै डारियो ॥१५॥
घोघरन जोर नदी नर तरियो ॥
धुजन हेत तह हुतो उबरियो ॥
रूंई ते कछु चोट न लागी ॥
प्रान बचाइ गयो बडभागी ॥१६॥

दोहरा ॥

जब ता को जीवत सुन्यो रानी स्रवनन माहि ॥
या दिन सो सुख जगत मै कहियो कहूं कोऊ नाहि ॥१७॥

चौपई ॥

कूदि साहु जो प्रान बचायो ॥
तिन राजै कछु भेद न पायो ॥
तब रानी धीरज मन भयो ॥
चित जु हुतो सकल भ्रम गयो ॥१८॥

CHARITAR ७२ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥72॥1276॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

बजवारे बनिया रहै केवल ता को नाम ॥
निसु दिनु करै पठान के ग्रिह को सगरो काम ॥१॥

चौपई ॥

सुंदर त्रिय ता कै ग्रिह रहै ॥
पुहप वती ता को जग चहै ॥
बाके संग नेहु तिन लायो ॥
केवल को चित ते बिसरायो ॥२॥

दोहरा ॥

एक दिवस केवल गयो ग्रिह को कौने काज ॥
देखै क्या निजु त्रिय भए बाको रहियो बिराज ॥३॥

चौपई ॥

जब त्रिय पति आवत लखि पाइस ॥
यहै चित मै चरित बनाइस ॥
सौ छितर तिह मूंढ लगायो ॥
छोरि पठान कहियो क्यो आयो ॥४॥

दोहरा ॥

आपु जूतियन जुरि गई रही न ताहि संभारि ॥
ऐसो चरित बनाइ कै बाको दयो निकारि ॥५॥
अति चित कोप बढाइ कै तपत ताम्र कर नैन ॥
बिकट बिक्र करि आपनो कहै बनकि सो बैन ॥६॥
त्रियो बाच ॥

कबितु ॥

जा को लोन खैयै ता को छोरि कबहूं न जैयै जा को लोन खैयै ता को आगे ह्वै कै जूझियै ॥
जा को लोन खैयै ता को दगा कबहूं न दैयै साची सुनि लैयै ता सौ साचहूं को लूझियै ॥
चोरी न कमैयै आपु देवै सो भी बाटि खैयै झूठ न बनैयै कछू लैबे कौ न रूझियै ॥

रोस न बढैयै बुरी भाखै सो भी मानि लैयै चाकरी कमैयै नाथ मोरी बात बूझियै ॥७॥

दोहरा ॥

बनियै जूती खाइ कै सीख लई मन माहि ॥
कह स्यानी त्रिय ग्रिह गयो भेद पछान्यो नाहि ॥८॥

CHARITAR ७३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तिहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥73॥1284॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

चोर एक चतुरो रहै बैरम ता को नाव ॥
जात सेखजादो रहै बसै कालपी गाव ॥१॥

चौपई ॥

चौ चोबा ग्रिह बसत्र बनायो ॥
आपन को उमराव कहायो ॥
मै हजरति ते मनसब लयो ॥
पलवल देस परगना भयो ॥२॥

दोहरा ॥

ता के कछु उपचारु को कीजै ह्रिदै बिचार ॥
तहा चलन को साजु सभ लीजै मोल सुधारि ॥३॥

चौपई ॥

सकल गाव के बनिक बुलाए ॥
सौ कु रुपैया तिन चटवाए ॥
कहियो त्यार साजु करि दीजै ॥
अब ही रोक रुपैया लीजै ॥४॥

दोहरा ॥

रोक रुपैयन खरचि कै लीजै मुहर बटाइ ॥
भर बरदारी को घनो खरचन होइ बनाइ ॥५॥

चौपई ॥

जो तिन कही सु बनिकन मानी ॥
कछू संक चित बीच न आनी ॥
मुहरै अधिक आनि कर दई ॥
तसकर डारि गुथरियहि लई ॥६॥

दोहरा ॥

और खजानो साहु को सभ ही लयो मंगाइ ॥
जाइ जहानाबाद मै दैहौ धन पहुचाइ ॥७॥

चौपई ॥

बनियन के बैठे सो गयो ॥
सभ ही धनु इकठो कै लयो ॥
साथिन तिनि द्वार बैठायो ॥
सोयो खान न जात जगायो ॥८॥

दोहरा ॥

छोरि द्वारो पाछलो भाज गए ततकाल ॥
सभ रुपयन हर लै गए बनिया भए बिहाल ॥९॥

CHARITAR ७४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥74॥1293॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

मुगल एक गजनी रहै बखतियार तिह नाम ॥
बडे सदन ता के बने बहुत गाठि मै दाम ॥१॥
ता के घर इक हय हुतो ता को चोर निहारि ॥
या को क्यो हूं चोरियै कछू चरित्र सु धारि ॥२॥
आनि चाकरी की करी ता के धाम तलास ॥
मुगल महीना कै तुरत चाकर कीनो तास ॥३॥

चौपई ॥

महियाना अपनो करवायो ॥
करजाई को नामु सुनायो ॥
ता की सेवा को बहु करियो ॥
बखतियार को धनु है हरियो ॥४॥

दोहरा ॥

दिन को धनु है हरि चल्यो करजाई कहलाइ ॥
सकल लोक ठटके रहै रैनाई लखि पाइ ॥५॥

चौपई ॥

पाछे मुगल पीटतो आयो ॥
करजाई धनु तुरा चुरायो ॥
जो इह बैनन को सुनि पावै ॥
ता ही को झूठो ठहरावै ॥६॥
जा ते दरबु करजु लै खायो ॥
कहा भयो तिन तुरा चुरायो ॥
क्योन तै दरबु उधारो लयो ॥
कहा भयो जो है लै गयो ॥७॥

दोहरा ॥

वाही को झूठा कियो भेद न पावै कोइ ॥
वह दिन धन है हर गयो राम करै सो हइ ॥८॥

CHARITAR ७५ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥75॥1302॥अफजूं॥

दोहरा ॥

पुनि मंत्री ऐसे कहियो सुनियै कथा न्रिपाल ॥
तेहीं चोर चरित्र इक कियो सु कहो उताल ॥१॥

चौपई ॥

जब तसकर धनु तुरा चुरायो ॥
पुनि ता के चित मै यौ आयो ॥
अतिभुत एक चरित्र बनैये ॥
त्रिय सुंदरि जा ते ग्रिह पैयै ॥२॥

दोहरा ॥

धाम जवाई आपनो राख्यो नामु बनाइ ॥
बिधवा त्रिय के धाम मै डेरा कीनो जाइ ॥३॥

चौपई ॥

वा के ह्रिदै अनंदित भयो ॥
मोरे धाम पूत बिधि दयो ॥
धाम जवाई नामु जतायो ॥
आदरु कै भोजनहि खवायो ॥४॥

चौपई ॥

ऐसी भाति बरिस जब बीती ॥
वह त्रिय दुख ते भई निचीती ॥
वह तिह घर को कामु चलावै ॥
बिधवा बधू खेद नहि पावै ॥५॥

दोहरा ॥

केतिक दिन तह चलि गयो ता की सुता चुराइ ॥
त्रिय रोवत कुटवार के तट चट कूकी जाइ ॥६॥

चौपई ॥

धाम जवाई दुहिता हरी ॥
देखह दैव कहा इह करी ॥
सूर उदोत गयो नहि आयो ॥
मै तिन को कछु सोध न पायो ॥७॥
काजी कोटवार जब सुन्यो ॥
दुहूं बिहसि कै माथो धुन्नयो ॥
जा को सुता दानु तै दयो ॥
कहा भयो जौ ग्रिह लै गयो ॥८॥
सभहिन तहि झूठी करि मान्यो ॥
भेद अभेद कछु ह्रिदै न जान्यो ॥
लूटि दरबु ता को सभ लयो ॥
तब ही देस निकारो दयो ॥९॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे छिहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥76॥1310॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चंद्रपुरी भीतर हुतो चंद्र सैन इक राव ॥
बल गुन बीरज मै जनुक त्रिदसेस्वर के भाव ॥१॥
भागवती ता की त्रिया जा को रूप अपार ॥
रति रतिनाथ पछानि तिह झुकि झुकि करहि जुहार ॥२॥
एक पुरख सुंदर हुतो रानी लयो बुलाइ ॥
भोग अधिक ता सो कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥३॥

चौपई ॥

केल करत राजा जू आयो ॥
रानी ह्रिदै अधिक दुखु पायो ॥
या को दया कहौ का करिहौ ॥
या के हने बहुरि हौ मरिहौ ॥४॥
जार बाच ॥
तबै जार यौ कथा उचारी ॥
रानी करहु न चिंत हमारी ॥
यह तरबूज काटि मुहि दीजै ॥
या की गरी भछ कर लीजै ॥५॥
तब रानी सोऊ काज कमायो ॥
काटि ताहि तरबूज खुलायो ॥
लै खोपर तिन सिर पै धरियो ॥
स्वास लेत कह छेकौ करियो ॥६॥

दोहरा ॥

धरि खोपर सिर पर नदी तरियो न्रिपति डर सोइ ॥
दिन लोगन देखत गयो भेद न जानत कोइ ॥७॥
तब रानी ऐसे कहियो सुनियै बचन रसाल ॥
बहत जात तरबूज जो मोहि मिलै दरहाल ॥८॥
बचनु सुनत राजा तबै पठए मनुख अनेक ॥
जात बहे तरबूज कौ पहुचत भयो न एक ॥९॥

चौपई ॥

तब रानी यौ बचन उचारे ॥
सुनहु नाथ बडभाग हमारे ॥
बूडि कोऊ जा के हित मरै ॥
मोर मूंड अपजस बहु धरै ॥१०॥

दोहरा ॥

रानी हित हिदवान के मनुख बुरायो एक ॥
यह अपजस न कबहु मिटै भाखहि लोग अनेक ॥११॥

चौपई ॥

आपहि दै तरबूज तरायो ॥

आपहि आइ न्रिपहि रिसवायो ॥
आपहि होरि मनुछ्रन लीना ॥
त्रिया चरित्र न किनहूं चीना ॥१२॥

CHARITAR ७७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सततहरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥77॥1322॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

एक तखान उजैन मै बिबिचारनि तिह नारि ॥
ता सो करियो चरित्र तिन सो तुहि कहौ सुधारि ॥१॥

चौपई ॥

सुमति बाढियहि तबै उचारो ॥
सुनु गींगो तै बचन हमारो ॥
हौ अब ही परदेस सिधैहौं ॥
खाटि कमाइ तुमै धनु लयैहौं ॥२॥
यौ कहि कै परदेस सिधारो ॥
खाट तरे छपि रहियो बिचारो ॥
तब बाढिन इक जार बुलायो ॥
कामकेल तिह साथ कमायो ॥३॥
कामकेल ता सौ त्रिय मान्यो ॥
खाट तरे निजु पतिहि पछान्यो ॥
सभ अंगन बिहबल ह्वै गई ॥
चित के बिखै दुखित अति भई ॥४॥
तब ता सौ त्रिय बचन उचारे ॥
मुहि का करत दई के मारे ॥
प्रान नाथ मेरे घर नाही ॥
हौ जिह बसत बाह की छाही ॥५॥

दोहरा ॥

निति अंसूआ आखिन भरौं रहों मलीने भेस ॥
पौर लगे बिहरौ नहीं प्रान नाथ परदेस ॥६॥
लगत बीरिया बान सी बिखु सो लगत अनाज ॥
प्रान नाथ परदेस गे ता बिन कछू न साज ॥७॥
बाढी ऐसे बचन सुनि मन मै भयो खुसाल ॥
जार सहित त्रिय खाट लै नाचि उठियो ततकाल ॥८॥

CHARITAR ७८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥78॥1330॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बनिक एक बानारसी बिसन दत तिह नाम ॥
बिस्व मती ता की त्रिया धन जा को बहु धाम ॥१॥

चौपई ॥

बनियो हेत बनिज को गयो ॥
मैन दुख्य त्रिय को अति दयो ॥
तिह त्रिय पै ते रहियो न जाई ॥
केल कियो इक पुरख बुलाई ॥२॥
केल कमात गरभ रहि गयो ॥
कीने जतन दूरि नहि भयो ॥
नव मासन पाछे सुत जायो ॥
तवनहि दिवस बनिक घर आयो ॥३॥
बनिक कोप करि बचन सुनायो ॥
कछु त्रिय तै बिभचार कमायो ॥
भोग करे बिनु पूत न होई ॥
बाल ब्रिध जानत सभ कोई ॥४॥
सुनहु साहु मै कथा सुनाऊ ॥
तुमरे चित को भरमु मिटाऊ ॥
इक जोगी तुमरे ग्रिह आयो ॥
तिह प्रसादि ते ग्रिह सुत पायो ॥५॥

दोहरा ॥

मुरज नाथ जोगी हुतो सो आयो इह धाम ॥
द्रिसटि भोग मो सौ कियौ सुत दीनो ग्रिह राम ॥६॥
बनिक बचन सुनि चुप रहियो मन मै भयो प्रसंन्य ॥
द्रिसटि भोग जिनि सुत दियौ धरनी तल सो धंन्य ॥७॥

CHARITAR ७९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥79॥1337॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बिंद्राबन ग्रिह नंद के कान्रह लयो अवतार ॥
तीनि लोक जा को सदा निति उठि करत जुहार ॥१॥

चौपई ॥

सभ गोपी ता के गुन गावहि ॥
नितिय किसन कह सीस झुकावहि ॥
मन महि बस्यो प्रेम अति भारी ॥
तन मन देत अपनो वारी ॥२॥
राधा नाम गोपि इक रहै ॥
क्रिसन क्रिसन मुख ते निति कहै ॥
जगनायक सौ प्रेम लगायो ॥
सूत सिधन की भाति बढायो ॥३॥

दोहरा ॥

क्रिसन क्रिसन मुख ते कहै छोरि धाम को काम ॥
निसदिन रटत बिहंग ज्यो जगनायक को नाम ॥४॥

चौपई ॥

त्रास न पितु माता को करै ॥

किसन किसन मुख ते उचरै ॥
हेरनि ताहि नित उठि आवै ॥
नंद जसोमति देखि लजावै ॥५॥
सवैया ॥
जोबन जेब जगे अति सुंदर जात जराव जुरी कह नातै ॥
अंग हुते ब्रिज लोग सभे हरि राइ बनाइ कही इक बातै ॥
हाथ उचाइ हनी छतिया मुसकाइ लजाइ सखी चहूं घातै ॥
नैनन सौ कहियो ए जदुनाथ सु भौहन सौ कहियो जाहु इहा तै ॥६॥

दोहरा ॥

नैनन सो हरि राइ कहि भौहन उतर दीन ॥
भेद न पायो कौनहूं किसन बिदा कर दीन ॥७॥

CHARITAR ८० *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे असीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥80॥1344॥अफजूं॥

दोहरा ॥

नगर सिरोमनि को हुतो सिंघ सिरोमनि भूप ॥
अमित दरबु घर मै धरे सुंदर काम सरूप ॥१॥

चौपई ॥

द्रिग धंन्रया ता की बर नारी ॥
न्रिप को रहै लाज ते प्यारी ॥
एक दिवस राज घर आयो ॥
रंग नाथ जोगियहि बुलायो ॥२॥

दोहरा ॥

ब्रहम बाद ता सौ कियो राजै निकटि बुलाइ ॥
जु कछु कथा तिन सौ भई सो मै कहत बनाइ ॥३॥
एक नाथ सभ जगत मै ब्यापि रहियो सभ देस ॥
सभ जोनिन मै रवि रहियो ऊच नीच के भेस ॥४॥

चौपई ॥

सरब ब्यापी स्रीपति जानहु ॥
सभ ही को पोखक करि मानहु ॥
सरब दयाल मेघ जिमि ढरई ॥
सभ काहू कर किरपा करई ॥५॥

दोहरा ॥

सभ काहू को पोखई सभ काहू कौ देइ ॥
जो ता ते मुख फेरई मागि मीच कह लेइ ॥६॥

चौपई ॥

एकन सोखै एकन भरै ॥
एकन मारै इकनि उबरै ॥

एकन घटवै एक बढावै ॥
दीन दयाल यौ चरित दिखावै ॥७॥
रूप रेख जा के कछु नाही ॥
भेख अभेख सभ के घट माही ॥
जा पर क्रिपा चछु करि हेरै ॥
ता की कौन छाह कौ छेरै ॥८॥
जछ भुजंग अकास बनायो ॥
देव अदेव थपि बादि रचायो ॥
भूमि बारि पंच ततु प्रकासा ॥
आपहि देखत बैठ तमासा ॥९॥

दोहरा ॥

जीव जंत सभ थापि कै पंथ बनाए दोइ ॥
झगरि पचाए आपि महि मोहि न चीनै कोइ ॥१०॥

चौपई ॥

यह सभ भेद साधु कोऊ जानै ॥
सति नामु को तत पछानै ॥
जो साधक या कौ लखि पावै ॥
जननी जठर बहुरि नहि आवै ॥११॥

दोहरा ॥

जब जोगी ऐसे कहियो तब राजै मुसकाइ ॥
तत ब्रहम के बादि कौ उचरत भयो बनाइ ॥१२॥

चौपई ॥

जोगी डिंभ कि जोगी जियरो ॥
जोगी देह कि जोगी हियरो ॥
सो जोगी जो जोग पछानै ॥
सति नामु बिनु अवरु न जानै ॥१३॥

दोहरा ॥

डिंभ दिखायो जगत को जोगु न उपजियो जीय ॥
या जग के सुख ते गयो जनम ब्रिथा गे कीय ॥१४॥

चौपई ॥

तब जोगी हसि बचन उचारो ॥
सुनहु राव जू ग्यान हमारो ॥
सो जोगी जो जोग पछानै ॥
सति नामु बिनु अवरु न जानै ॥१५॥

दोहरा ॥

जब चाहत है आतमा इक ते भयो अनेक ॥
अनिक भाति पसरत जगत बहुरि एक को एक ॥१६॥

चौपई ॥

यह नहि मरै न काहू मारै ॥
भूला लोक भरमु बीचारै ॥
घट घट ब्यापक अंतरजामी ॥
सभ ही महि रवि रहियो सुआमी ॥१७॥

कबितु ॥

घोरा कहूं भयो कहूं हाथी ह्वै कै गयो कहूं पंछी रूप लयो कहूं फल फूल रहियो है ॥
पावक ह्वै दहियो कहूं पौन रूप कहियो कहूं चीत ह्वै कै गहियो कहूं पानी ह्वै कै बहियो है ॥
अंबर उतारे रावनादिक संघारे कहूं बन मै बिहारे ऐसे बेदन मै कहियो है ॥
पुरख ह्वै आपु कहूं इसत्रिन को रूप धरियो मूरखन भेद ता को नैक हूं न लहियो है ॥१८॥

चौपई ॥

कवन मरै का को कोऊ मारै ॥
भूला लोक भरम बीचारै ॥
यह न मरत मारत है नाही ॥
यौ राजा समझहु मन माही ॥१९॥

दोहरा ॥

बिना नाम ता के जपे बाल ब्रिध कोऊ होइ ॥
राव रंक राजा सभै जियत न रहसी कोइ ॥२०॥

चौपई ॥

सति नामु जो जिय लखि पावै ॥
ता के काल निकट नहि आवै ॥
बिना नाम ता के जो रहि है ॥
बन गिर पुर मंदर सभ ढहि है ॥२१॥

दोहरा ॥

चकिया कैसे पट बने गगन भूमि पुनि दोइ ॥
दुहूं पुरन मै आइ कै साबित गया न कोइ ॥२२॥

चौपई ॥

सति नाम जो पुरख पछानै ॥
सति नाम लै बचन प्रमानै ॥
सति नामु मारग लै चलही ॥
ता को काल न कबहूं दलही ॥२३॥

दोहरा ॥

ऐसे बचनन सुनत ही राजा भयो उदासु ॥
भूमि दरबु घर राज ते चित मै भयो निरासु ॥२४॥
जब रानी ऐसे सुनियो दुखत भई मन माह ॥
देस दरबु ग्रिह छाडि कै जात लखियो नर नाह ॥२५॥
तब रानी अति दुखित ह्वै मंत्री लयो बुलाइ ॥
क्योहूं न्रिप ग्रिह राखियै कीजै कछू उपाइ ॥२६॥

चौपई ॥

तब मंत्री इमि बचन उचारे ॥
सुनु रानी तै मंत्र हमारे ॥
ऐसो जतन आजु हम करि है ॥
न्रिप ग्रिह राखि जोगियहि मरि है ॥२७॥
रानी जो हौ कहौ सु करियहु ॥
राजा जू ते नैक न डरियहु ॥
या जुगिया कह धाम बुलैयहु ॥
लौन डारि भूअ माझ गडैयहु ॥२८॥

दोहरा ॥

तब रानी तयो ही कियो जुगियहि लयो बुलाइ ॥
लौन डारि भूअ खोदि कै गहि तिह दयो दबाइ ॥२९॥

चौपई ॥

जाइ न्रिपति पति बचन उचारे ॥
जुगिय माटी लई तिहारे ॥
मरती बार बचन यौ कहियो ॥
सो मै द्रिड़्ह करि जिय महि गहियो ॥३०॥
मोरी कही भूप सौ कहियहु ॥
तुम बैठे ग्रिह ही मै रहियहु ॥
इन रानिन कौ तापु न दीजहु ॥
राजि जोग दोनो ही कीजहु ॥३१॥
पुनि मो सो इक बचन उचारो ॥
जौ न्रिप कहियो न करै तिहारो ॥
तब पाछे यह बचन उचरियहु ॥
राजा जू के तप कह हरियहु ॥३२॥
जो तिन कही सु पाछे कहि हौ ॥
तुमरे सकल भरम को दहि हौ ॥
अब सुनि लै तै बचन हमारो ॥
जा ते रहि है राज तिहारो ॥३३॥

दोहरा ॥

सुत बालक तरुनी त्रिया तै त्यागत सभ साज ॥
सभ बिधि कीयो कसूति ग्रिह क्यो करि रहसी राज ॥३४॥
पूत परे लोटत धरनि त्रिया परी बिललाइ ॥
बंधु भ्रित रोदन करै राज बंस ते जाइ ॥३५॥

चौपई ॥

चेले सभै अनंदित भए ॥
दुरबल हुते पुसट ह्वै गए ॥
नाथ न्रिपहि जोगी करि लयै हौ ॥
द्वार द्वार के टूक मंगै है ॥३६॥

दोहरा ॥

न्रिप कह जोगी भेस दै कब ही लियै है नाथ ॥
यौ मूरख जानै नही कहा भई तिह साथ ॥३७॥
सुत बालक तरुनी त्रिया क्यो न्रिप छाडत मोहि ॥
चेरी सभ रोदन करै दया न उपजत तोहि ॥३८॥

सुनु रानी तो सो कहो ब्रहम ग्यान को भेद ॥
जु कछु सासत्र सिंम्रित कहत और उचारत बेद ॥३९॥

चौपई ॥

सुत हित कै माता दुलरावै ॥
काल मूड पर दात बजावै ॥
वुह नित लखे पूत बढि जावत ॥
लैन न मूड़ काल निजकावत ॥४०॥

दोहरा ॥

को माता बनिता सुता पाच तत की देह ॥
दिवस चार को पेखनो अंत खेह की खेह ॥४१॥

चौपई ॥

प्रानी जनम प्रथम जब आवै ॥
बालापन मै जनमु गवावै ॥
तरुनापन बिखियन कै कीनो ॥
कबहु न ब्रहम ततु को चीनो ॥४२॥

दोहरा ॥

बिरध भए तनु कापई नामु न जपियो जाइ ॥
बिना भजन भगवान के पाप ग्रिहत तन आइ ॥४३॥
मिरतु लोक मै आइ कै बाल ब्रिध कोऊ होइ ॥
ऊच नीच राजा प्रजा जियत न रहसी कोइ ॥४४॥
रानी ऐसे बचन सुनि भूमि परी मुरछाइ ॥
पोसतिया की नीद ज्यों सोइ न सोयो जाइ ॥४५॥
जो उपजियो सो बिनसि है जग रहिबो दिन चारि ॥
सुत बनिता दासी कहा देखहु ततु बीचारि ॥४६॥

छंद ॥

पति पूतन ते रहै बिजै पूतन ते पैयै ॥
दिरबु कपूतन जाइ राज सपूतनु बहुरैयै ॥
पिंड पुत्र ही देहि प्रीति पूतो उपजावहि ॥
बहुत दिनन को बैर गयो पूतै बहुरावहि ॥
जो पूतन कौ छाडि न्रिपति तपस्या को जावै ॥
परै नरक सो जाइ अधिक तन मै दुख पावै ॥४७॥
न को हमारो पूत न को हमरी कोई नारी ॥
न को हमारो पिता न को हमरी महतारी ॥
न को हमरी भैन न को हमरो कोई भाई ॥
न को हमारो देस न हौ काहू कौ राई ॥
ब्रिथा जगत मै आइ जोग बिनु जनमु गवायो ॥
तज्यो राज अरु पाट यहै जियरे मुहि भायो ॥४८॥
जननि जठर महि आइ पुरख बहुतो दुखु पावहि ॥
मूत्र धाम कौ पाइ कहत हम भोग कमावहि ॥
थूक त्रिया कौ चाटि कहत अधराम्रित पायो ॥
ब्रिथा जगत मै जनमु बिना जगदीस गवायो ॥४९॥
रानी बाच ॥
रिखि याही ते भए न्रिपति याही उपजाए ॥

ब्रयासादिक सभ चतुर इही मारग ह्वै आए ॥
परसे या के बिना कहो जग मै को आयो ॥
प्रथम ऐत भव पाइ बहुरि परमेस्वर पायो ॥५०॥

दोहरा ॥

अति चातुरि रानी सुमति बातै कही अनेक ॥
रोगी के पथ ज्यो न्रिपति मानत भयो न एक ॥५१॥
राजा बाच ॥

छंद ॥

पुनि राजै यौ कही बचन सुन मेरो रानी ॥
ब्रहम ग्यान की बात कछू तै नैकु न जानी ॥
कहा बापुरी त्रिया नेह जा सौ अति करि है ॥
महा मूत्र को धाम बिहसि आगे तिह धरि है ॥५२॥

दोहरा ॥

पुनि राजै ऐसे कहियो सुनु हो राज कुमारि ॥
जो जोगी तुम सौ कहियो सो मुहि कहौ सुधारि ॥५३॥

चौपई ॥

दुतिय बचन जोगी जो कहियो ॥
सो मै ह्रिदै बीच द्रिड़ गहियो ॥
जो तुम कहौ सु बचन बखानो ॥
तुम जो साचु जानि जिय मानो ॥५४॥
मंदर एक उजार उसरियहु ॥
बैठे तहा तपस्या करियहु ॥
हौ तह और मूरति धर ऐहो ॥
ब्रहम ग्यान न्रिप को समुझैहो ॥५५॥

दोहरा ॥

बानी तहा अकास की ह्वै है तुमै बनाइ ॥
तब तुम सति पछानियो जोगी पहुच्यो आइ ॥५६॥

चौपई ॥

रानी बन मै सदन सवारियो ॥
छात बीच रौजन इक धारियो ॥
जा के बिखे मनुख छपि रहै ॥
जो चाहै चित मै सो कहै ॥५७॥
बैठे तरे नजरि नहि आवै ॥
बानी नभ ही की लखि जावै ॥
रानी तहा पुरख बैठायो ॥
अमित दरबु दै ताहि सिखायो ॥५८॥

दोहरा ॥

एक पुरख चाकर हुतो नाम सिंघ आनूप ॥
वहि जुगिया की बैस थो ता की सकल सरूप ॥५९॥

चौपई ॥

ता सौ कहियो न्रिपहि समुझैयहु ॥
तुम जोगी आपहि ठहिरैयहु ॥
क्यो हूं न्रिपहि मोरि घर ल्यावहु ॥
जो कछु मुख मागहु सो पावहु ॥६०॥

दोहरा ॥

जब ता सो ऐसो बचन रानी कहियो बुलाइ ॥
चतुर पुरखु आगे हुतो सकल भेद गयो पाइ ॥६१॥

चौपई ॥

तब रानी राजा पहि आई ॥
लीने द्वै कंथा करवाई ॥
इक तुम धरो एक हौ धरि हो ॥
तुमरे संग तपस्या करिहो ॥६२॥

दोहरा ॥

जब रानी ऐसे कहियो तब राजै मुसकाइ ॥
जो ता सो बातै करी सो तुहि कहो सुनाइ ॥६३॥
सवैया ॥
है बन को बसिबो दुख को कहु सुंदरि तू संग कयों निबहै है ॥
सीत तुसार परै तन पै सु इतो तब तौ हठहूं न गहै है ॥
साल तमाल बडे जह ब्रयाल निहाल तिनै बहुधा बिललै है ॥
तू सुकमारि करी करतार सु हारि परे तुहि कौन उठै है ॥६४॥
रानी बाच ॥
सीत समीर सहौ तन पै सुनु नाथ तुमै अब छाडि न जैहो ॥
साल तमाल बडे जह ब्रयाल निहाल तिनै कछु न डर पैहो ॥
राज तजो सज साज तपो धन लाज धरे प्रभ संग सिधैहो ॥
बात इहै दुख गात सहो बन नायक के संग पात चबैहो ॥६५॥
राजा बाच ॥

दोहरा ॥

राज भली बिध राखियहु नाथ संभरियहु नित ॥
सुत सेवा नित कीजियहु बचन धारियहु चित ॥६६॥
सवैया ॥
राज तजो सजि साज तपो धन काज न बासव की ठकुराई ॥
अस्व पदातु बनै बन बारुण चाहत हौ न कछू प्रभताई ॥
बालक बार तजे बर नारि तजो असुरारि यहै ठहराई ॥
जाइ बसो बन मै सुखु सो सुनु सुंदरि आजु इहै मन भाई ॥६७॥

दोहरा ॥

जो इसत्री पति छाडि कै बसत धाम के माहि ॥
तिन को आगे स्वरग के भीतरि पैठब नाहि ॥६८॥
रानी बाच ॥

कबितु ॥

बालकन बोरौ राज इंद्रहूं को छोरौ और भूखनन तोरो कठिनाई ऐसी झलिहौं ॥
पात फल खैहौ सिंघ साप ते डरैहौ नाहि बिना प्रान प्यारे के हिमाचल मै गलिहौं ॥
जौन हौ सु हैहौ मुख देखौ पाछे चली जैहौ ना तौ बिरहागनि की आगि बीच बलि हौं ॥
कौन काज राजहूं को साज महाराज बिन नाथ जू तिहारो रहे रहौं चले चलिहौं ॥६९॥
सवैया ॥
देस तजो करि भेस तपो धन केस मरोरि जटानि सवारौं ॥
लेस करौ न कछू धन कौ प्रभ की पनिया पर ह्वै तन वारौं ॥
बालक क्रोरि करौ इक ओर सु बसत्रन छोरि कै राम संभारौं ॥
इंद्र को राज नही मुहि काज बिना महाराज सभै घर जारौं ॥७०॥
अंगन मै सजिहौ भगवै पट हाथ बिखै चिपिया गहि लैहौं ॥
मुंद्रन कान धरै अपने तव मूरति भिछहि मागि अघैहौं ॥
नाथ चलौ तुम ठौर जहा हमहूं तिह ठौर बिखै चलि जैहो ॥
धाम रहो नहि बात कहो पट फारि सभै अब जोगिन ह्वैहौं ॥७१॥
राजा बाचु ॥
रानी को रूप निहारि महीपति सोच बिचार करियो चित माही ॥
राज करो सुख सो सुनि सुंदरि तोहि तजे लरका मरि जाही ॥
सो न मिटै न हटै बन ते न्रिप झारि पछोरि भले अवगाही ॥
मात परी बिललात धरा पर नारि हठी हठ छाडत नाही ॥७२॥
अड़िल ॥
जब रानी न्रिप लखी सति जोगिनि भई ॥
छोरि न चलियो धाम संग अपुने लई ॥
धारि जोग को भेस मात पहि आइयो ॥
हो भेस जोग न्रिप हेरि सभन दुख पाइयो ॥७३॥

दोहरा ॥

बिदा दीजियै दास कौ बन कौ करै पयान ॥
बेद बिधानन ध्याइ हौ जौ भव के भगवान ॥७४॥
माता बाच ॥
सवैया ॥
पूत रहौ बलि जाउ कछू दिन पाल करौ इन देसन कौ ॥
तुहि क्यो करि जान कहो मुख ते अति ही दुख लागत है मन कौ ॥
ग्रिह ते तुहि काढि इतो सुख छाडि कहा कहि हौ इन लोगन कौ ॥
सुनु साचु सपूत कहो मुख ते तुहि कैसे कै देउ बिदा बन कौ ॥७५॥

चौपई ॥

राज करो सुत बन न पधारो ॥
मेरे कहियो मंत्र बीचारो ॥
लोगन के कहिबो अनुसरियै ॥
राज जोग घरि ही महि करियै ॥७६॥
राजा बाच ॥

दोहरा ॥

मातहि सीस झुकाइ कै पुनि बोलियो न्रिप बैन ॥
ऊच नीच राजा प्रजा जै है जम के ऐन ॥७७॥
सवैया ॥
मात की बात न मानी कछू तजि रोवत ही रनिवासहि आयो ॥
आवत ही दिज लोग बुलाइ जितो धन हो घर मो सु लुटायो ॥
संग लए बनिता अपुनी बनि कै जुगिया बन ओर सिधायो ॥
त्याग कै देस भये अथितेस भजौ जगतेस यहे ठहरायो ॥७८॥

कबितु ॥

लाबी लाबी साल जहा ऊचे बट ताल तहा ऐसी ठौर तप को पधारै ऐसो कौन है ॥
जा की प्रभा देखि प्रभा खाडव की फीकी लागै नंदन निहारि बन ऐसो भजै मौन है ॥
तारन की कहा नैकु नभ न निहारियो जाइ सूरज की जोति तहा चंद्र की न जौन है ॥
देव न निहारियो दैत कोऊ न बिहारियो जहा पंछी की न गंम्रय तहा चीटी को न गौन है ॥७९ ॥

चौपई ॥

जब ऐसे बन मै दोऊ गए ॥
हेरत तवन महल को भए ॥
तुरतु ताहि न्रिप बचन सुनायो ॥
तप को भले ठौर हम पायो ॥८० ॥
रानी बाच ॥
या मै बैठि तपस्या करि है ॥
राम राम मुख ते उचरि है ॥
या घर मै दिन कितक बितै है ॥
भसमी भूत पाप सभ कै है ॥८१ ॥

दोहरा ॥

रानी जाहि बुलाइ कै भेद कहियो समझाइ ॥
वहै पुरख जुगिया बन्यो न्रिपहि मिलत भयो आइ ॥८२ ॥

चौपई ॥

न्रिप को त्रियहि कहियो समुझाई ॥
जोगी वहै पहूंच्यो आई ॥
मरत बचन मो सो तिन कहियो ॥
सो मै आजु साचु करि लहियो ॥८३ ॥

दोहरा ॥

उठि राजा पाइन परियो ता कह गुरू पछानि ॥
बैठि गोसटि दोनो करी सो मै कहत बखानि ॥८४ ॥
जोगी बाच ॥
न्रहाइ नदी सो जो न्रिपति बैठहुगे ह्यां आइ ॥
तब तुम सै मै भाखिहो ब्रहम बादि समुझाइ ॥८५ ॥

चौपई ॥

ऐसे जतन न्रिपति को टारियो ॥
छात बिखै इक नर पैठारियो ॥
साधु साधु इह बच सुनि कहियहु ॥
तीन बार कहि कै चुप रहियहु ॥८६ ॥
न्रहाइ धोइ राजा जब आयो ॥
तब तिह नर यौ बचन सुनायो ॥
सुनु न्रिप जब माटी मै लई ॥
धरम राज आग्या मुहि दई ॥८७ ॥

दोहरा ॥

तै राजा को तीर तजि क्योन आयो इह ठौर ॥

मो सौ ब्रिथा बखानियै सुनु जोगिन सिरमौर ॥८८॥

चौपई ॥

धरम राज मुहि बचन उचारे ॥
सु हौ कहत हौ तीर तिहारे ॥
मोरी कही राव सौ कहियहु ॥
नातर भ्रमत नरक महि रहियहु ॥८९॥
जैसो कोटि जग्य तपु कीनो ॥
तैसो साच न्याइ करि दीनो ॥
न्याइ सासत्र लै राज कमावै ॥
ता के निकट काल नहीं आवै ॥९०॥

दोहरा ॥

जो न्रिप न्याइ करै नही बोलत झूठ बनाइ ॥
राज त्याग तपस्या करै परै नरक महि जाइ ॥९१॥
ब्रिध माता अरु तात की सेवा करियो नित ॥
त्याग न बन को जाइयै यहै धरमु सुनु मित ॥९२॥
जौ हौ जोगी वहै हौ पठै दयो ध्रमराइ ॥
हौं ईहा बोलै तुरतु अपनो रूप छपाइ ॥९३॥
जब जोगी ऐसे कहियो ताहि भेद समुझाइ ॥
सति सति तब तिन कहियो तीन बार मुसकाइ ॥९४॥
जियबो जग कौ सहल है यहै कठिन द्वै काम ॥
प्रात संभरिबो राज को राति संभरिबो राम ॥९५॥

चौपई ॥

महाराज जैसी सुनि बानी ॥
चित कै बिखै साच करि मानी ॥
दिन कौ राजु आपनौ करिहौ ॥
परे रात्रि के राम संभरिहौ ॥९६॥
रानी महाराज समझाइसि ॥
जोग मारग ते छलि बहुराइसि ॥
न्रिप धरि बसत्र धाम मै आयो ॥
बहुर आपनौ राज कमायो ॥९७॥

दोहरा ॥

जियते जुगिया मारियो भूअ के बिखै गडाइ ॥
त्रिय न्रिप को बहुराइयो ऐसे चरित बनाइ ॥९८॥

CHARITAR ८१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥81॥1442॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

जहागीर आदिल मरि गयो ॥
साहिजहा हजरति जू भयो ॥
दरिया खा पर अधिक रिसायौ ॥
मारन चहियो हाथ नहि आयौ ॥१॥

दोहरा ॥

तिह हजरति मारन चहै हाथ न आवै नित ॥
राति दिवस जागत उठत बसत सोवते चित ॥२॥
साहजहा जू पलंघ पर सोत उठियो बरराइ ॥
दरिया खा को मारियो करि कै क्रोरि उपाइ ॥३॥

चौपई

सोवत साहजहा बररायो ॥
जागत हुती बेगम सुनि पायो ॥
चिंत करी सत्रु कौ मारियै ॥
पत को सोक संताप निवारियै ॥४॥
बेगम बाच ॥
टूंब पाव हजरतहि जगायो ॥
तीन कुरनसै करि सिर न्यायो ॥
जो तुम कहियो सु मै बीचारियो ॥
दरिया खा कह जानहु मारियो ॥५॥

दोहरा ॥

मुसकिल हनन हरीफ को कबहु न आवै दाव ॥
जड़ को कहा संघारिबै जा को रिझल सुभाव ॥६॥
सोरठा ॥
स्यानी सखी बुलाइ पठई मंत्र सिखाइ कै ॥
दरिआ खा को जाइ ल्यावहु चरित बनाइ कै ॥७॥

चौपई ॥

स्यानी सखी समझ सभ गई ॥
दरिया खा के जात ग्रिह भई ॥
गोसे बैठि सु मंत्र बतायो ॥
तव ग्रिह मै बेगमहि पठायो ॥८॥

दोहरा ॥

रूप तिहारो हेरि कै बेगम रही लुभाइ ॥
हेत तिहारे मिलन के मो कह दयो पठाइ ॥९॥
हजरति त्रिय को चोरि चित कहा फिरत हो ऐठि ॥
बेगि बुलायो बेगमहि चलहु देग महि बैठ ॥१०॥
छारिया उरदा बेगनी खोजे जहा अनेक ॥
पंखी फटकि सकै नही पहुचै मनुख न एक ॥११॥

चौपई ॥

काहू द्रिसटि तहा जो परै ॥
टूट टूट हजरति तिह करै ॥
ग्रिह कौ पलटि बहुरि नहि आवै ॥
हन्यो भाग के भारे जावै ॥१२॥

दोहरा ॥

तहा पहूचन को कछू पैयतु नहीं उपाइ ॥

चलहु देग मै बैठि कै जा ते लख्यो न जाइ ॥१३॥

चौपई ॥

बेगम जब ते तुमै निहारियो ॥
खान पान सभ कछु बिसारियो ॥
लगन लगै बिहवल ह्वै गई ॥
ग्रिह को छाडि दिवानी भई ॥१४॥
सीस फूल सिर पर जब धारै ॥
कोटि सूर जनु चड़े सवारै ॥
जब बिहसि कै बिरी चबावै ॥
देखी पीक कंठ महि जावै ॥१५॥

दोहरा ॥

हजरति तिह पूछे बिना कछू न उचरत बैन ॥
लाल भए बिसपाल मन हेरि बाल के नैन ॥१६॥
ता को तुमरो रूप लखि पुलिकि पसीज्रयो अंग ॥
बेसंभार भूअ पै गिरी जनु करि डस्रयो भुजंग ॥१७॥
खान सुनत त्रिय बात कौ मन महि भयो खुसाल ॥
ज्यो तुम कहौं तिवै चलौं मिलौं जाइ ततकाल ॥१८॥

चौपई ॥

यह जड़ बात सुनत हरखयो ॥
दुरबल हुतो पुसट ह्वै गयो ॥
जौ तुम कहौ सु काज कमैयै ॥
बेगम सी भोगन कह पैयै ॥१९॥

दोहरा ॥

हजरति जा की मूरति लखि रहियो प्रेम सौ पाग ॥
सो हम सो अटकत भई धंन्य हमारे भाग ॥२०॥

चौपई ॥

यह सुनि भेद चित महि राख्यो ॥
और मित्र तन प्रगट न भाख्यो ॥
प्रथम देग मै बसत्र बिछयो ॥
ता मै बैठि आपु पुनि गयो ॥२१॥

दोहरा ॥

खान तिहारौ रूप लखि बेगम रही लुभाइ ॥
साहिजहा को छाडि कै तो पर गई बिकाइ ॥२२॥

चौपई ॥

तौन पठान देग महि डारिस ॥
लै हजरति ग्रिह ओर सिधारस ॥
देखत लोग सभै तह जावै ॥
वा कौ भेद न कोऊ पावै ॥२३॥
लै बेगम के पास उतारियो ॥
बेगम ता को दारिद मारियो ॥

सखी भेज पति लयो बुलाई ॥
कान लागि कै बात जताई ॥२४॥

दोहरा ॥

सखी भेजि पातसाह कौ लीनो निकट बुलाइ ॥
जो चाहहु सो कीजियै दीनी देग दिखाइ ॥२५॥

चौपई ॥

जब बेगम कहि चरित बखान्यो ॥
प्रानन ते प्यारी तिह जान्यो ॥
पुनि कछु कहियो चरित्रहि करियै ॥
पुछि काजियहि या कह मरियै ॥२६॥

दोहरा ॥

तब बेगम तिह सखी सो ऐसे कहियो सिखाइ ॥
भूत भाखि इह गाडियहु चौक चादनी जाइ ॥२७॥

चौपई ॥

तिह त्रिय लए हनन को आवै ॥
मूरख परियो देग मै जावै ॥
जानै आजु बेगमहि पैहौ ॥
काम कला तिह साथ कमैहौ ॥२८॥
लए देग को आवै कहा ॥
काजी मुफती सभ है जहा ॥
कोटवार जह कसट दिखावै ॥
बैठ चौतरे न्याउ चुकावै ॥२९॥
सखी बाच ॥

दोहरा ॥

भूत एक इह देग मै कहु काजी क्या न्याइ ॥
कहौ तौ या को गाडियै कहौ ते देउ जराइ ॥३०॥
तब काजी ऐसे कहियो सुनु सुंदरि मम बैन ॥
या को जीयतहि गाडियै छूटै किसू हनै न ॥३१॥
कोटवार काजी जबै मुफती आयसु कीन ॥
देग सहित तह भूत कहि गाडि गोरि महि दीन ॥३२॥
जीति रहियो दल साह को गयो खजाना खाइ ॥
सो छल सौ त्रिय भूत कहि दीनो गोरि गडाइ ॥३३॥

CHARITAR ८२ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बिआसीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥82॥1475॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

राजौरी के देस मै राजपुरो इक गाउ ॥
तहा एक गूजर बसै राज मल तिह नाउ ॥१॥

चौपई ॥

राजो नाम एक तिह नारी ॥
सुंदर अंग बंस उजियारी ॥
तिह इक नर सौ नेह लगायो ॥
गूजर भेद तबै लखि पायो ॥२॥
जार लख्यो गूजर मुहि जान्यो ॥
अधिक चित भीतर डर मान्यो ॥
छाडि गाव तिह अनत सिधायो ॥
बहुरि न ता को दरसु दिखायो ॥३॥

दोहरा ॥

राजो बिछुरे यार के चित मै भई उदास ॥
निति चिंता मन मै करै मीत मिलन की आस ॥४॥

चौपई ॥

यहि सभ भेद गूजरहि जान्यो ॥
ता सो प्रगट न कछू बखान्यो ॥
चिंता यहे करी मन माही ॥
या के धन छोडौ ग्रिह नाही ॥५॥

दोहरा ॥

पतिया लिखी बनाइ कै तवन मीत के नाम ॥
एक अतिथ को हाथ दै पठी त्रिया के धाम ॥६॥

चौपई ॥

जब पतिया तिन छोरि बचाई ॥
मीत नाम सुनि कंठ लगाई ॥
यहै यारि लिखि ताहि पठायो ॥
तुम बिनु अधिक कसट हम पायो ॥७॥
पतिया मै लखि यहै पठायो ॥
तुम बिन हम सभ किछु बिसरायो ॥
हमरी सुधि आपन तुम लीजहु ॥
कछु धनु काढि पठै मुहि दीजहु ॥८॥

दोहरा ॥

सुनत बात मूरख त्रिया चित मै भई प्रसंन्य ॥
मीत चितारियो आजु मुहि धरनी तल हौं धंन्य ॥९॥

चौपई ॥

भेजि काहू त्रिय इहै सिखायो ॥
लिखि पतिया मै यहै पठायो ॥
प्रात समै पिछवारे ऐहौ ॥
दुहूं हाथ भए ताल बजैहौ ॥१०॥
जब तारी स्रवनन सुनि पैयहु ॥
तुरतु तहा आपन उठि ऐयहु ॥
काध उपरि करि थैली लैयहु ॥
मेरो कहियो मानि त्रिय लैयहु ॥११॥
प्रात समै तारी तिन करी ॥

सु धुनि कान त्रिया के परी ॥
थैली काध ऊपर करि डारी ॥
भेद न लख्यो दैव की मारी ॥१२॥

दोहरा ॥

यौ ही बार छि सात करि लयो दरबु सभ छीन ॥
भेद न मूरख तिय लख्यो कहा जतन इह कीन ॥१३॥

चौपई ॥

याही जतन सकल धन हरियो ॥
रानी हुते रंक तह करियो ॥
हाथ मित्र के दरबु न आयो ॥
नाहक अपनो मूंड मुंडायो ॥१४॥

CHARITAR ८३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे तिरासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥83॥1489॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

महारासट्र के देस मै महारासट्र पति राव ॥
दरबु बटावै गुनि जनन करत कबिन को भाव ॥१॥

चौपई ॥

इंद्र मती ता की पटरानी ॥
सुंदरि सकल भवन मै जानी ॥
अति राजा ता के बसि रहै ॥
जो वहु कहै वहै न्रिप कहै ॥२॥

दोहरा ॥

मोहन सिंघ सपूत सभ द्रावड़ देसहि एस ॥
महारासट्र पति नगर मै गयो अथित के भेस ॥३॥

चौपई ॥

जब रानी तिह ओर निहारियो ॥
यहै आपने ह्रिदै बिचारियो ॥
जोगिन यह राजा सो लहियै ॥
भेजि मानुखन या कौ गहियै ॥४॥

दोहरा ॥

भेजि मानुखन गहि लयो लीनो धाम बुलाइ ॥
दुहिता दई बिवाहि कै जानि देस कौ राइ ॥५॥
बचन सुनत न्रिप रिसि भरियो छोडि राम को जाप ॥
दुहिता दई बिवाहि तिह जा कै माइ न बाप ॥६॥
राजा बाच ॥

चौपई ॥

माइ न बाप जानियत जा कौ ॥
दुहिता कहू दीजियत ता कौ ॥
या कौ अबै बाधि करि मारो ॥
रानी दुहता सहित संघारो ॥७॥
रानी बचन सुनत डरि गई ॥
चीनत कछू उपाइ न भई ॥
जा ते जामाता नहि मरियै ॥
सुता सहित इह जियत निकरियै ॥८॥
रानी एक मंगाइ पिटारो ॥
दुहूंअन दुहूं कनारे डारो ॥
एक पिटारो और मंगायो ॥
वह पिटार तिह भीतर पायो ॥९॥

दोहरा ॥

अंतर हूं के पिटार मै डारे रतन अपार ॥
तिह ढकनौ दै दुतिय मै दई मिठाई डारि ॥१०॥

चौपई ॥

दुतिय पिटार मिठाई डारी ॥
वह पिटार नहि देत दिखारी ॥
सभ को द्रिसटि सिरीनी आवै ॥
ता को भेद न कोउ पावै ॥११॥
पठे चेरि यह न्रिपति बुलायो ॥
गहि बहिया सभ सदन दिखायो ॥
हम का तुम ते नैक न डरि है ॥
बिनु तव कहे सगाई करि है ॥१२॥
रानी बाच ॥

दोहरा ॥

चित को सोक निवारि कै राव कचहिरी जाहु ॥
तव हित धरी बनाइ कै चलहु मिठाई खाहु ॥१३॥

चौपई ॥

छोरि पिटारि पकवान खवायो ॥
वह कछु भेद राइ नहि पायो ॥
पुनि इह कहियो दान करि दीजै ॥
मेरो कहियो मान न्रिप लीजै ॥१४॥
जब पिटार तिह छोरि दिखायो ॥
अति डर जामाता मन आयो ॥
अब ही मोकह पकरि निकरि है ॥
बहुरो बाधि मारही डरि है ॥१५॥
हौ इह ठौर आन त्रिय मारियो ॥
अब उपाइ क्या करो बिचारियो ॥
का सौ कहौ संग कोऊ नाही ॥
इह चिंता ता के मन माही ॥१६॥

दोहरा ॥

ससत्र असत्र घोरा नही साथी संग न कोइ ॥

अति मुसकिल मो कौ बनी करता करै सु होइ ॥१७॥
साथी कोऊ संग नही का सो करो पुकार ॥
मनसा बाचा करमना मोहि हनि है निरधार ॥१८॥
खाइ मिठाई राव तब दीयो पिटारो दान ॥
वह बिवाहि तिह लै गयो अधिक ह्रिदै सुखु मानि ॥१९॥
दुहित जामाता सहित जीयत दयो पठाइ ॥
सभ देखत दिन काढियो न्रिपहि मठाई ख्वाइ ॥२०॥

चौपई ॥

बनिता चरित हाथ नहि आयो ॥
दैव दैत किनहूं नहि पायो ॥
त्रिया चरित्र न किसहू कहियै ॥
चित मै समझि मोनि ह्वै रहियो ॥२१॥

CHARITAR ८४ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौरासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥84॥1510॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उरीचंग उचिस्रव राजा ॥
जा की तुलि कहूं नहि साजा ॥
रूप कला ता की वर नारी ॥
मानहु काम कंदला प्यारी ॥१॥

दोहरा ॥

इंद्र नाथ जोगी हुतो सो तहि निकसियो आइ ॥
झरनन ते झाई परी रानी लयो बुलाइ ॥२॥

चौपई ॥

जोगी दै अंजनु तह आवै ॥
गुटकै बलु कै बहु उडि जावै ॥
जिसी ठौर चाहै तिसु जावै ॥
भाति भाति कै भोग कमावै ॥३॥
भाति भाति के देस निहारै ॥
भाति भाति की प्रभा बिचारै ॥
अंजन बल तिह कोऊ न पावै ॥
तिसी ठौर रनियहि लै जावै ॥४॥

दोहरा ॥

भाति भाति के देस मै भाति भाति करि गौन ॥
ऐसे सुखन बिलोकि कै न्रिप पर रीझत कौन ॥५॥

चौपई ॥

जब यह भेद राव लखि पावा ॥
अधिक कोप मन माझ बसावा ॥
चित महि कहियो कौन बिधि कीजै ॥

जा ते नास त्रिया करि दीजै ॥६॥
राजा तहा आपि चलि आयो ॥
पाइन को खरको न जतायो ॥
सेज सोत जोगियहि निहारियो ॥
काढि क्रिपान मार ही डारियो ॥७॥
गुटका हुतो हाथ महि लयो ॥
जुगियहि डारि कुठरियहि दयो ॥
स्रोन पोछ बसत्रन सो डारियो ॥
सेवत रानी कछु न बिछारियो ॥८॥

दोहरा ॥

जुगिया हू के बकत्र ते पतिया लिखी बनाइ ॥
रानी मै बेखरचि हौं कछु मुहि देहु पठाइ ॥९॥

चौपई ॥

इसी भाति लिखि निति पठावै ॥
सभ रानी को दरब चुरावै ॥
धनी हुती निरधन ह्वै गई ॥
न्रिपहूं डारि चित ते दई ॥१०॥
जो न्रिप धनु इसत्री ते पावै ॥
टका टका करि दिजन लुटावै ॥
तिह सौतिन सौ केल कमावै ॥
ता के निकट न कबहूं आवै ॥११॥
सभ ता को धनु लयो चुराई ॥
सौतिन के ग्रिह भीख मंगाई ॥
लए ठीकरौ हाथ बिहारै ॥
भीखि सोति ता को नहि डारै ॥१२॥
द्वार द्वार ते भीख मंगाई ॥
दरबु हुतो सो रहियो न काई ॥
भूखन मरत दुखित अति भई ॥
टूकन ही मागत मरि गई ॥१३॥

CHARITAR ८५ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥85॥1523॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चामरंग के देस मै इंद्र सिंघ थो नाथ ॥
सकल सैन चतुरंगनी अमित चड़त तिह साथ ॥१॥
चंद्रकला ता की त्रिया जा सम त्रिया न कोइ ॥
जो वहु चाहै सो करै जो भाखै सो होइ ॥२॥

चौपई ॥

सुंदरि एक सखी तह रहै ॥
ता सौ नेह राव निरबहै ॥
रानी अधिक ह्रिदै मै जरई ॥
या सो प्रीत अधिक न्रिप करई ॥३॥

गाधी इक खत्री तह भारो ॥

फतह चंद नामा उजियारो ॥

सो तिन चेरी बोलि पठायो ॥
काम केल तिह साथ कमायो ॥४॥
भोग कमात गरभ रहि गयो ॥
चेरी दोसु राव सिर दयो ॥
राजा मो सौ भोग कमायो ॥
ता ते पूत सपूतु उपजायो ॥५॥
न्रिप इह भेद लहियो चुपि रहियो ॥
ता सौ प्रगट न मुख ते कहियो ॥
मै या सो नहि भोगु कमायो ॥
चेरी पुत्र कहा ते पायो ॥६॥

दोहरा ॥

फतह चंद को नामु लै चेरी लई बुलाइ ॥

मारि आपने हाथ ही गडहे दई गडाइ ॥७॥

CHARITAR ८६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छिआसीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥86॥1530॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

राजा एक भुटंत को चंद्र सिंघ तिह नाम ॥
पूजा स्री जदुनाथ की करत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

चंद्र प्रभा ता के त्रिय घर मै ॥
कोबिद सभ ही रहत हुनर मै ॥
ता को हेरि नित्य न्रिप जीवै ॥
तिह हेरे बिनु पानि न पीपवै ॥२॥
एक भुटंती सौ वहु अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुधि घट की ॥
राति दिवस तिह बोलि पठावै ॥
काम कला तिह संग कमावै ॥३॥
भोग कमात राव ग्रिह आयो ॥
ता को रानी तुरत छपायो ॥
न्रिपहि अधिक मद आनि पियारियो ॥
करि कै मत खाट पर डारियो ॥४॥

दोहरा ॥

ता को खलरी स्वान की लई तुरत पहिराई ॥
राजा जू के देखते ग्रिह कौ दयो पठाइ ॥५॥

चौपई ॥

आप न्रिपति सो बचन उचारो ॥

सुन नाथ इह स्वान तिहारो ॥
मो कौ अधिक प्रान ते प्यारो ॥
या कौ जिनि पाहन तुम मारो ॥६॥

दोहरा ॥

सति सति तब न्रिप कहियो ताहि टूकरो डारि ॥
आगे ह्वै कै निकसियो सकियो न मूड़ बिचारि ॥७॥

CHARITAR ८७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥87॥1537॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

इंद्र दत राजा हुतो गोखा नगर मझार ॥
कंज प्रभा रानी रहै जा को रूप अपार ॥१॥
सरब मंगला कौ भवन गोखा सहिर मंझार ॥
ऊच नीच राजा प्रजा सभ तिह करत जुहार ॥२॥

चौपई ॥

ता के भवन सकल चलि आवहि ॥
आनि गोर कौ सीस झुकावहि ॥
कुंकम और अछ्तन लावहि ॥
भाति भाति को धूप जगावहि ॥३॥

दोहरा ॥

भाति भाति दै प्रक्रमा भाति भाति सिर न्याइ ॥
पूज भवानी कौ भवन बहुरि बसै ग्रिह आइ ॥४॥

चौपई ॥

नर नारी सभ तह चलि जाहीं ॥
अछ्त धूप कुंकमहि लाही ॥
भाति भाति के गीतन गावै ॥
सरब मंगला को सिर नयावै ॥५॥
जो इछा कोऊ मन मै धरै ॥
जाइ भवानी भवन उचरै ॥
पूरन भावना तिन की होई ॥
बाल ब्रिध जानत सभ कोई ॥६॥

दोहरा ॥

फलत आपनी भावना या मै भेद न कोइ ॥
भलो भलो को होत है बुरो बुरे को होइ ॥७॥
चेत्र असटमी के दिवस उतसव तिह ठा होइ ॥
ऊच नीच राजा प्रजा रहै न घर मै कोइ ॥८॥

चौपई ॥

दिवस असटमी को जब आयो ॥

जात्री एक रानियहि भायो ॥
ता सौ भोग करत मन भावै ॥
घात एकहूं हाथ न आवै ॥९॥
यहै बिहार चित महि आयो ॥
जात्री कह पिछवार सदायो ॥
ता सो घात यहै बदि राखी ॥
प्रगट राव जू तन यौ भाखी ॥१०॥
जानसि मिति पिछवारे आवा ॥
बदि संकेति यौ बचन सुनावा ॥
सखियहि सहित कालि मै जैहो ॥
पूज गौरजा कौ ग्रिह ऐहौ ॥११॥

दोहरा ॥

जो कोऊ हमरौ हितू तह मिलियो मुहि आइ ॥
भेद राव कछु न लहियो मीतहि गई जताइ ॥१२॥
सवैया ॥
रानी पछानी कि मंदर के पिछवारे है मेरो खरो सुखदाई ॥
चाहत बात कहियो सकुचै तब कीनी है बैननि मै चतुराई ॥
पूछि सखी अपनी मिसही उत प्यारे को ऐसी सहेट बताई ॥
साथ चलौगी हौ कालि चलौगी मै देबी कौ देहुरो पूजन माई ॥१३॥

चौपई ॥

यौ न्रिप सो कहि प्रगट सुनाई ॥
मीतहि उतै सहेट बताई ॥
भवन भवानी के मै जैहो ॥
पूजि मंगला को फिरि ऐहो ॥१४॥

दोहरा ॥

जो कोऊ हमरो हितू तह मिलियो मुहि आइ ॥
भेद कछू न्रिप न लखियो मीतहि गई जताइ ॥१५॥
यौ कहि कै रानी उठी करियो मीत ग्रिह गौन ॥
न्रिपति प्रफुलित चित भयो गई सिवा के भौन ॥१६॥

CHARITAR ८८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥88॥1553॥अफजूं॥*

चौपई ॥

माझा देस जाट इक रहै ॥
काज क्रिसानी को निरबहै ॥
रैनि दिना खेतन मै रहई ॥
राम सीह नामा जग कहई ॥१॥
राधा नाम नारि ग्रिह ता के ॥
कछू न लाज रहत तन वा के ॥
नित उठि बागवान पै जावै ॥
भोग कमाइ बहुरि ग्रिह आवै ॥२॥
लै सतूआ पति ओर सिधाई ॥

चली चली माली पहि आई ॥
बसत्र छोरि कै भोग कमायो ॥
तिह सतूआ की करी बनायो ॥३॥

दोहरा ॥

सतूअन करी बनाइ कै ता मै बध्यो बनाइ ॥
सतूआ ही सो जानियै करी न चीन्यो जाइ ॥४॥

चौपई ॥

भोग करत भामिनि सुख पायो ॥
जामिक ता सौ केल कमायो ॥
माली के ग्रिह ते जब आई ॥
बसत्र आपनो लयो उठाई ॥५॥
लै सतूआ निजु पति पहि गई ॥
छोरत बसत्र हेत तिह भई ॥
हाथी हेरि चौक जड़ रहियो ॥
तुरत बचन तब ही त्रिय कहियो ॥६॥
सोवत हुती सुपन मुहि आयो ॥
करी मत पाछै तव धायो ॥
मै डरि पंडित लयो बुलाई ॥
जो उन कहियो सु क्रिआ कमाई ॥७॥

दोहरा ॥

सतूअन करी बनाइ कै दंतन चाबे कोइ ॥
ता कौ गैवर मत को कबहूं त्रास न होइ ॥८॥
फूलि गयो जड़ बात सुनि भेद न सकियो पाइ ॥
सतूअन करी तुराइ कै मुहि त्रिय लयो बचाइ ॥९॥

CHARITAR ८९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नवासीमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥89॥1562॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

सहर इटावा मै हुतो नाना नाम सुनार ॥
ता की अति ही देह मै दीनो रूप मुरार ॥१॥

चौपई ॥

जो त्रिय ता को नैन निहारै ॥
आपुन को करि धंन्य बिचारै ॥
या कै रूप तुलि कोऊ नाही ॥
यौ कहि कै अबला बलि जाही ॥२॥

दोहरा ॥

दीप कला नामा हुती दुहिता राज कुमारि ॥
अमित दरबु ता के रहै दासी रहै हजार ॥३॥
पठै एक तिन सहचरी लयो सुनार बुलाइ ॥

रैनि दिना ता सो रमै अधिक चित सुखु पाइ ॥४॥

चौपई ॥

रात दिवस तिह धाम बुलावै ॥
काम केल तिह संग कमावै ॥
प्रीति मानि तिह साथ बिहारै ॥
वा के लिये प्रान दै डारै ॥५॥
एक दिवस तिह धाम बुलायो ॥
तब लो पितु ता के ग्रिह आयो ॥
कछू न चलियो जतन इह कीनो ॥
अंजन आंजि बिदा करि दीनो ॥६॥

दोहरा ॥

अधिक मूड़ ता को पिता सकियो भेद नहि चीन ॥
आखन अंजन आंजि त्रिय मीत बिदा करि दीन ॥७॥

CHARITAR ९० — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नबवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥90॥1569॥अफज्ूं॥

दोहरा ॥

गबिंद चंद नरेस के माधवनल निजु मीत ॥
पड़े ब्याकरन सासत्र खट कोक सार संगीत ॥१॥

चौपई ॥

मधुर मधुर धुनि बेनु बजावै ॥
जो कोऊ त्रिय स्रवनन सुनि पावै ॥
चित मै अधिक मत ह्वै झूलै ॥
ग्रिह की सकल ताहि सुधि भूलै ॥२॥
पुर बासी न्रिप पै चलि आए ॥
आइ राइ तन बचन सुनाए ॥
कै माधवनल कौ अब मरियै ॥
ना तो या कह देस निकरियै ॥३॥

दोहरा ॥

इह हमारी इसत्रीन के लेत चित बिरमाइ ॥
जौ हम सभ कौ काढियै तौ इह रखियै राहि ॥४॥

चौपई ॥

तोरि राव तब जलज मंगाए ॥
भाति बिछौना की बिछवाए ॥
सकल सखी तिह पर बैठाई ॥
भाति भाति की प्रभा बनाई ॥५॥
माधवनल कौ बोलि पठाइस ॥
तवन सभा भीतर बैठाइस ॥
रीझि बिप्र तब बेन बजाई ॥

सभ इसत्रिन के चित सु भाई ॥६॥

दोहरा ॥

सभ अबला मोहित भई नाद स्रवन सुनि पाइ ॥
सभहिन के तन सौ गए कमल पत्र लपटाइ ॥७॥

चौपई ॥

माधवनल न्रिप तुरतु निकारियो ॥
बिप्र जानि जिय ते नही मारियो ॥
कामावती नगर चलि आयो ॥
कामकंदला सौ हित भायो ॥८॥

दोहरा ॥

काम सैन राजा जहा तह दिज पहूंच्यो जाइ ॥
प्रगट तीनि सै साठि त्रिय नाचत जहा बनाइ ॥९॥

चौपई ॥

माधव तौन सभा महि आयो ॥
आनि राव कौ सीस झुकायो ॥
सूरबीर बैठे बहु जहा ॥
नाचत कामकंदला तहा ॥१०॥

दोहरा ॥

चंदन की तन कंचुकी कामा कसी बनाइ ॥
अंगिया ही सभ को लखै चंदन लख्यो न जाइ ॥११॥
चंदन की लै बासना भवर बहिठ्यो आइ ॥
सो तिन कुच की बायु ते दीनौ ताहि उठाइ ॥१२॥

चौपई ॥

इह सु भेद बिप नै लहि लयो ॥
रीझत अधिक चित महि भयो ॥
अमित दरबु न्रिप ते जो लीनो ॥
सो लै कामकंदलहि दीनो ॥१३॥

दोहरा ॥

अमित दरबु हम जो दयो सो इह दयो लुटाइ ॥
ऐसे बिप्र फजूल को मोहि न राख्यो जाइ ॥१४॥

चौपई ॥

बिप्र जानि जिय ते नहि मरियै ॥
इह पुर ते इह तुरतु निकरियै ॥
जा के दुरियो धाम लहि लीजै ॥
टूक अनेक तवन को कीजै ॥१५॥
यह सभ भेद बिप्र सुनि पायो ॥
चलियो चलियो कामा ग्रिह आयो ॥
मो पर कोप अधिक न्रिप कीनो ॥

तिह हित धाम तिहारो चीनो ॥१६॥

दोहरा ॥

सुनत बचन कामा तुरत दिज ग्रिह लयो दुराइ ॥
राजा की निंद्या करी ताहि गरे सो लाइ ॥१७॥
कामा बाच ॥

चौपई ॥

ध्रिग इह राइ भेद नहि जानत ॥
तुम से चतुरन सौ रिसि ठानत ॥
महा मूड़ न्रिप को का कहियै ॥
या पापी के देस न रहियै ॥१८॥

दोहरा ॥

चलौ त एकै मगु चलौ रहे रहौ तिह गाउ ॥
निसु दिन रटौ बिहंग ज्यो मीत तिहारो नाउ ॥१९॥
बिरह बान मो तन गडे का सो करो पुकार ॥
तनक अगनि को सिव भए जरौ संभारि संभारि ॥२०॥
आजु सखी मै यौ सुन्यो पहु फाटत पिय गौन ॥
पहु हियरे झगरा परियो पहिले फटि है कौन ॥२१॥
माधव बाच ॥

चौपई ॥

तुम सुख सो सुंदरि ह्यां रहो ॥
हम को बेगि बिदा मुख कहो ॥
हमरो कछू ताप नह करियहु ॥
नित राम को नाम संभरियहु ॥२२॥

दोहरा ॥

सुनत बचन कामा तबै भूमि परी मुरछाइ ॥
जनु घायल घाइन लगे गिरै उठै बरराइ ॥२३॥
सोरठा ॥
अधिक बिरह के संग पीत बरन कामा भई ॥
रकत न रहियो अंग चलियो मीत चुराइ चित ॥२४॥

दोहरा ॥

टाक तोल तन न रहियो मासा रहियो न मास ॥
बिरहिन कौ तीनो भले हाड चाम अरु स्वास ॥२५॥
अति कामा लोटत धरनि माधवनल के हेत ॥
टूटो अमल अफीमियहि जनु पसवारे लेत ॥२६॥
मिलत नैन नहि रहि सकत जानत प्रीति पतंग ॥
छूटत बिरह बियोग ते होमत अपनो अंग ॥२७॥
कामा बाच ॥

चौपई ॥

खंड खंड कै तीरथ करिहौ ॥
बारि अनेक आगि मै बरिहौ ॥

कासी बिखै करवतिहि पैहौ ॥
ढूंढि मीत तो कौ तऊ लैहौ ॥२८॥
अड़िल ॥
जहा पियरवा चले प्रान तितही चले ॥
सकल सिथिल भए अंग संग जै है भले ॥
माधवनल कौ नामु मंत्र सो जानियै ॥
हो जातौ लगत उचाट सति करि मानियै ॥२९॥

दोहरा ॥

जो तुमरी बाछ्या करत प्रान हरै जम मोहि ॥
मरे परात चुरैल ह्वै चमकि चितैहौ तोहि ॥३०॥
बरी बिरह की आगि मै जरी रखै हौ नाउ ॥
भाति जरी की बरी की ढिग ते कबहूं न जाउ ॥३१॥
साच कहत है बिरहनी रही प्रेम सौ पागि ॥
डरत बिरह की अगनि सौ जरत काठ की आगि ॥३२॥
तब माधवनल उठि चलियो भयो पवन को भेस ॥
जस धुनि सुनि सिर धुनि गयो बिक्रम जहा नरेस ॥३३॥

चौपई ॥

बिक्रम जहा निति चलि आवै ॥
पूजि गौरजा कौ ग्रिह जावै ॥
मंदिर ऊच धुजा फहराही ॥
फटकाचल लखि ताहि लजाही ॥३४॥

दोहरा ॥

तिही ठौरि माधव गयो दोहा लिख्यो बनाइ ॥
जौ बिक्रम इह बाचि है ह्वै हो मोर उपाइ ॥३५॥
जे नर रोगन सौ ग्रसे तिन को होत उपाउ ॥
बिरह त्रिदोखन जे ग्रसे तिन को कछु न बचाउ ॥३६॥

चौपई ॥

बिक्रम सैनि तहा चलि आयो ॥
आन गौरजा कौ सिर न्यायो ॥
बाचि दोहरा को चकि रहियो ॥
को बिरही आयो ह्यां कहियो ॥३७॥

दोहरा ॥

को बिरही आयो ह्यां ता कौ लेहु बुलाइ ॥
जो वहु कहै सो हौ करौ ता कौ जियन उपाइ ॥३८॥

चौपई ॥

बिक्रम माधव बोलि पठायो ॥
आदरु दै आसनु बैठायो ॥
कहसि दिजाग्रया देहु सु करिहौ ॥
प्रानन लगे हेतु तुहि लरिहो ॥३९॥
जब माधव कहि भेद सुनायो ॥
तब बिक्रम सभ सैन बुलायो ॥

साजे ससत्र कौच तन धारे ॥
कामवती की ओर सिधारे ॥४०॥
सोरठा ॥
दूत पठायो एक कामसैन न्रिप सौ कहै ॥
कामकंदला एक दै सभ देस उबारियै ॥४१॥

चौपई ॥

कामवती भीतर दूतायो ॥
कामसैन जू को सिरु न्यायो ॥
बिक्रम कहियो सु ताहि सुनावा ॥
अधिक राव को दुख उपजावा ॥४२॥

दोहरा ॥

निसिसि चड़े दिन के भए निसि रवि करै उदोत ॥
कामकंदला को दियब तऊ न हम ते होत ॥४३॥
दूतो बाच ॥

भुजंग छंद ॥

सुनो राज कहा नारि कामा बिचारी ॥
कहा गाठि बाधी तुमै जानि प्यारी ॥
कही मानि मेरी कहा नाहि भाखो ॥
इनै दै मिलौ ताहि कौ गरब राखो ॥४४॥
हठी है हमारी सु तुमहूं पछानो ॥
दिसा चारि जा की सदा लोह मानो ॥
बली देव आदेव जा कौ बखानै ॥
कहा रोक तू तौन सो जुधु ठानै ॥४५॥
बजी दुंदभी दीह दरबार भारे ॥
जबै दूत कटु बैन ऐसे उचारे ॥
हठियो बीर हाठौ कहियो जुध मंडो ॥
कहा बिक्रमा काल को खंड खंडो ॥४६॥
चड़ियो लै अनी को बली बीर भारे ॥
खंडेले बघेले पंधेरे पवारे ॥
गहरवार चौहान गहलौत दौरे ॥
महा जंग जोधा जिते नाहि औरे ॥४७॥
सुन्यो बिक्रमा बीर सभ ही बुलाए ॥
ठटे ठाट गाड़े चले खेत आए ॥
दुहूं ओर ते सूर सैना उमंगै ॥
मिले जाइ जमुना मनौ धाइ गंगै ॥४८॥
किते बीर करवारि काढै चलावै ॥
किते चरम पै घाइ ता को बचावै ॥
कितो बरम पै चरम रुपि गरम झारै ॥
उठै नाद भारे छुटै चिंनगारै ॥४९॥
किते गोफनै गुरज गोला चलावै ॥
किते अरध चंद्रादि बाना बजावै ॥
किते सूल सैथी सूआ हाथ लै कै ॥
मंडे आनि जोधा महा कोप ह्वै कै ॥५०॥
फरी धोप खाडे लए फास ऐसी ॥
मनौ नारि के साहु की जुलफ जैसी ॥
करी मत की भाति मारत बिहारै ॥

जिसे कंठि डारै तिसै ऐच मारै ॥५१॥

चौपई ॥

जब इह भाति सकल भट लरे ॥
टूक टूक रन मै ह्वै परे ॥
तब बिक्रम हसि बैन उचारो ॥
कामसैन सुनु कहियो हमारो ॥५२॥

दोहरा ॥

दै बेस्वा इह बिप्र कौ सुनु रे बचन अचेत ॥
ब्रिथा जुझारत क्यो कटक एक नटी के हेत ॥५३॥

चौपई ॥

कामसैन तिह कही न करी ॥
पुनि बिक्रम हसि यहै उचरी ॥
हम तुम लरै कपट तजि दोई ॥
कै जीते कै हारै कोई ॥५४॥
अपनी अपने ही सिर लीजै ॥
औरन के सिर ब्रिथा न दीजै ॥
बैठि बिगारि आपु जो करियै ॥
नाहक और लोक नहि मरियै ॥५५॥

दोहरा ॥

कामसैन इह बचन सुनि अधिक उठियो रिस खाइ ॥
अपनौ तुरै धवाइ कै बिक्रम लयो बुलाइ ॥५६॥
कामसैन ऐसे कहियो सूर सामुहे जाइ ॥
झागि सैहथी ब्रिण करै तौ तू बिक्रम सराइ ॥५७॥
झागि सैहथी पेट महि चित महि अधिक रिसाइ ॥
आनि कटारी को कियो कामसैन को घाइ ॥५८॥
ऐसे कौ ऐसो लहत जियत न छाडत और ॥
मारि कटारी राखियो जियत राव तिह ठौर ॥५९॥

चौपई ॥

जीति ताहि सभ सैन बुलाई ॥
भाति भाति की बजी बधाई ॥
देवन रीझि इहै बरु दयो ॥
ब्रणी हुतो अब्रण ह्वै गयो ॥६०॥

दोहरा ॥

अथित भेख सजि आपु न्रिप गयो बिप्र के काम ॥
जह कामा लोटत हुती लै माधव को नाम ॥६१॥

चौपई ॥

जातै इहै बचन तिन कहियो ॥
माधव खेत हेत तव रहियो ॥
सुनत बचन तब ही मरि गई ॥
न्रिप लै इहै खबरि दिज दई ॥६२॥

यह बच जब स्रोनन सुनि लीनो ॥
पलक एक महि प्रानहि दीनो ॥
जब कौतक इह राइ निहारियो ॥
जरन मरन का निग्रह धारियो ॥६३॥
चिता जराइ जरन जब लाग्यो ॥
तब बैताल तहा ते जाग्यो ॥
संचि अंम्रित तिह दुहूंन जियायो ॥
न्रिप के चित को तापु मिटायो ॥६४॥

दोहरा ॥

सहि सैथी पावक बरियो दुहूंअन लयो बचाइ ॥
कामा दई दिजोत महि धंन्य बिक्रमाराइ ॥६५॥

CHARITAR ९१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥91॥1634॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

दछिन देस बिचछन नारी ॥
जोगी गए भए घर बारी ॥
मंगल सैन राव जगु कहई ॥
सभ अरि कुल जा ते त्रिण गहई ॥१॥
सरूप कला ता की बर नारी ॥
मानहु महा रुद्र की प्यारी ॥
ता सो नेह न्रिपति को रहै ॥
करै सोई जोई वह कहै ॥२॥

रुआमल छंद ॥

रंग महल बिखै हुते नर राइ तवनै काल ॥
रूप प्रभा बिराजती तह सुंदरी लै बाल ॥
कान्रहरे नाद औ नफीरी बेनु बीन म्रिदंग ॥
भाति भातिन के कुलाहल होत नाना रंग ॥३॥
एक नटूआ तह रहै तिह बिसुन दत्वा नाम ॥
राव जू ता कौ नचावत रहै आठौ जाम ॥
अमित रूप बिलोकि ता कौ रानियहि निजु नैन ॥
ह्वै गिरी बिसंभार भू पै बधी सायक मैन ॥४॥

तोमर छंद ॥

रानियिह सखी पठाइ ॥
सो लयो धाम बुलाइ ॥
तजि कै न्रिपति की कानि ॥
ता सौ रमी रुचि मानि ॥५॥
तिह अमित रूप निहारि ॥
सिव सत्रु गयो सर मारि ॥
तब लौ न्रिपति गयो आइ ॥
अबला अधिक दुख पाइ ॥६॥
तब कियो इहै उपाइ ॥

इक देग लई मंगाइ ॥
ता पै तवा कौ दीन ॥
कोऊ सकै ताहि न चीन ॥७॥
जा मै घनौ जल परै ॥
तर कौ न बूंदिक ढरै ॥
ता मै गुलाबहि पाइ ॥
काढियौ पतिहि दिखराइ ॥८॥

दोहरा ॥

सींच्रयो वहै गुलाब लै पति की पगिया माहि ॥
छिरकि सभन पहि काढियौ भेद लहियो जड़ नाहि ॥९॥

चौपई ॥

नाथ बाग जो मै लगवायो ॥
यह गुलाब तिह ठा ते आयो ॥
सकल सखिन जुत तुम पै डारियो ॥
प्रफुलत भयो जड़ कछु न बिचारियो ॥१०॥

CHARITAR ९२ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥92॥1644॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चलियो जुलाहो साहुरे उडि जा कहता जाइ ॥
बधिकन कुसगुन जानि कै मारियो ताहि बनाइ ॥१॥
बधिक बाच ॥
उडि उडि आवहु फासियहु सौ कहता मगु जाइ ॥
जो ऐसो बच पुनि कहियो हनिहै तोहि रिसाइ ॥२॥

चौपई ॥

फसि फसि जावहु उडि उडि आइ ॥
ऐसे कहत जुलाहो जाइ ॥
चोरन कुसगुन चित बिचारियो ॥
दो सै जुती सौ तिह मारियो ॥३॥
चोरन बाच ॥

दोहरा ॥

लै आवहु धरि जाइयहु यौ कहि करौ पयान ॥
जो उहि भाति बखानिहो हनिहै तुहि तन बान ॥४॥
जब चोरन ऐसे कहियो तब ता ते डर पाइ ॥
लै आवहु धरि जाइयहु यौ मगु कहतौ जाइ ॥५॥
चार पुत्र पातिसाह के इक नै तजा परान ॥
दाबन ता कौ लै चले अधिक सोक मन मानि ॥६॥

चौपई ॥

तब लौ कहत जुलाहो ऐयहु ॥

लै लै आवहु धर धर जैयहु ॥
सैना के स्रवनन यह परी ॥
पंद्रह सै पनही तह झरी ॥७॥
तिन सो कहियो कहो सु उचारो ॥
कहियो बुरा भयो कहत पधारो ॥
भेद अभेद की बात न जानी ॥
जो तिन कहियो वहै जड़ मानी ॥८॥
एक राव ता के बहु नारी ॥
पूत न होत ताहि दुख भारी ॥
और ब्याहि ब्याकुल ह्वै कीनो ॥
ता के भवन पूत बिधि दीनो ॥९॥
सभहिन आनंद चित बढायो ॥
तब लौ कहत जुलाहो आयो ॥
बुरा भयो कहि ऊच पुकारियो ॥
सुन्यो जाहि पनहिन तिन मारियो ॥१०॥
पुर जन बाच ॥
भला भयो इह कहत पधारियो ॥
जब लोगन जूतिन सो मारियो ॥
जात भयो तिह ठा बडभागी ॥
जह अति अगनि नगर महि लागी ॥११॥
गिरि गिरि परै महल जह भारे ॥
छपरन के जह उडै अवारे ॥
भला भयो यौ मूड़ पुकारियो ॥
जाहि सुन्यो ताही गहि मारियो ॥१२॥

दोहरा ॥

दस हजार पनहीन की सही जुलाहे मारि ॥
ता पाछै पहुचत भयो जहा हुती ससुरारि ॥१३॥

चौपई ॥

ग्रिह जन कहा खाहु नहि खावै ॥
भूखन मरत न लजत बतावै ॥
आधी रैनि बीत जब गई ॥
लागतु अधिक छुधा तिह भई ॥१४॥
लकरी भए तेल घट फोरियो ॥
पीनो सकल नैक नहि छोरियो ॥
सूरज चड़ियो उडग छपि गए ॥
फासि पान सो कऊआ लए ॥१५॥

दोहरा ॥

तानी बेचि क्रिपान ली चलियो चाकरी धाइ ॥
मारत मारग सिंघ जह तिह ठा पहुच्यो जाइ ॥१६॥
त्रसित जुलाहो द्रुम चड़यो गहै सैहथी हाथ ॥
तरे आनि ठाढो भयो सिंघ रोस के साथ ॥१७॥

चौपई ॥

सिंघहि द्रिसटि जुलाहे परी ॥
बरछी कंपत हाथ ते झरी ॥

मुख मै लगी पिसटि तर निकसी ॥
जन करि कंजकली सी बिगसी ॥१८॥
जान्यो साचु सिंघ मरि गयो ॥
उतरियो पूछि कान कटि लयो ॥
जाइ न्रिपति कौ ताहि दिखायो ॥
अधिक महीनो अपन करायो ॥१९॥

दोहरा ॥

एक सत्रु ता को हुतो चड़ियो अनी बनाइ ॥
सैनापति पचमार कै इह न्रिप दियो पठाइ ॥२०॥

चौपई ॥

यह पचमार खबरि सुन पाई ॥
नारि जुलाही हुती बुलाई ॥
चित मै अधिक दुहूं डर कीनो ॥
अरध राति बन को मगु लीनो ॥२१॥
जब त्रिय सहित जुलाहो भाज्यो ॥
तब ही घोर घटा घन गाज्यो ॥
कबहूं चमिकि बिजुरिया जावै ॥
तब मारग को चीनन आवै ॥२२॥
मग तै भूलि तिसी मगु परियो ॥
जह न्रिप अरि को लसकर ढरियो ॥
कूंई हुती द्रिसटि नहि आई ॥
ता मौ परियो जुलाहो जाई ॥२३॥

दोहरा ॥

जब ताही कूंई बिखै जाइ परियो बिसंभार ॥
तब ऐसे त्रिय कहि उठी आनि परियो पचमार ॥२४॥
अड़िल ॥
आनि परियो पचमार सभन सुनि पाइयो ॥
अति लसकर चित माहि सु त्रास बढाइयो ॥
लोह अधिक तिन माहि भाति ऐसी परियो ॥
हो जोधा तिन ते एक न जियते उबरियो ॥२५॥

दोहरा ॥

पूत पिता के सिर दई पिता पूत सिर माहि ॥
इसी भाति सभ कटि मरे रहियो सुभट कोऊ नाहि ॥२६॥

चौपई ॥

तज पुर तिसी जुलाई आई ॥
आइ बारता न्रिपहि जताई ॥
जब यह भेद राव सुनि पायो ॥
पठै पालकी ताहि बुलायो ॥२७॥

CHARITAR ९३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तिरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥93॥1671॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चादन हूं के देस मै प्रगट चाद पुर गाउ ॥
बिप्र एक तिह ठा रहै दीन दयाल तिह नाउ ॥१॥

चौपई ॥

दिसन दिसन की इसत्री आवहि ॥
आइ बिप्र को सीस झुकावहि ॥
सुभ बानी मिलि यहै उचारै ॥
रति पति की अनुहारि बिचारै ॥२॥

दोहरा ॥

एक नारि तिह ठा हुती रति सम रूप अपार ॥
सो या पै अटकत भई रति पति ताहि बिचार ॥३॥

चौपई ॥

कबहूं त्रिय ता के ग्रिह आवै ॥
कबहूं तिह घर बोलि पठावै ॥
एक दिवस दिन कौ वहु आयो ॥
तब अबला इह चरित दिखायो ॥४॥
सवैया ॥
बैठी हुती सखी मधि अलीन मौ दीन दयाल सौ नेहु नवीनो ॥
बैननि चिंत करै चित मै इत नैननि प्रीतम को मनु लीनो ॥
नैन की काल को बीचल देखि सु सुंदरि घात चितैबे को कीनो ॥
ही लखि पाइ जंभाइ लई चुटकी चटकाइ बिदा करि दीनो ॥५॥

CHARITAR ९४ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥94॥1676॥अफजूं॥

चौपई ॥

दुहिता एक जाट उपजाई ॥
मागत भीखि हमारे आई ॥
बिंदो अपनो नामु रखायो ॥
चेरनि के संग द्रोह बढायो ॥१॥
डोला माटी को तिन लयो ॥
ता मै डारि सरसवहि दयो ॥
चारि मेख लोहा की डारी ॥
दाबि गई ता की पिछ्वारी ॥२॥
आप राव तन आनि जतायो ॥
इकु टौना इह कर मम आयो ॥
जो तुम कहो तो आनि दिखाऊ ॥
कछु मुख ते आग्या तव पाऊ ॥३॥
न्रिप कहियो आनि दिखाइ दिखायो ॥
सभहिन के चित भरमुपजायो ॥
सति सति सभहूंन बखान्यो ॥
ता को भेद न किनहूं जान्यो ॥४॥

इह चुगली जिह ऊपर खाई ॥
सो चेरी न्रिपा पकरि मंगाई ॥
कुररन मारि अधिक तिह मारी ॥
सी न मुख ते नैक उचारी ॥५॥
मारि परी वह नैकु न मान्यो ॥
यह त्रिय हठी रावहूं जान्यो ॥
दिब की बात चलन जब लागी ॥
आधी राति गए तब भागी ॥६॥
भेजि मनुख न्रिप पकरि मंगाई ॥
एक कोठरी मै रखवाई ॥
बिखु को खाना ताहि खवायो ॥
वाहि म्रितु के धाम पठायो ॥७॥

CHARITAR ९५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥95॥1683॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

मरग जौहडे के बिखै एक पठानी नार ॥
बैरम खा ता को रहै भरता अति सुभ कार ॥१॥
तवन पठानी को हुतो नाम गौहरा राइ ॥
जानु कनक की पुत्रिका बिधना रची बनाइ ॥२॥
अरि बलु कै आवत भए ता पै अति दल जोरि ॥
दै है याहि निकारि कै लै है देस मरोरि ॥३॥

चौपई ॥

दूत तबै बैरम पहि आयो ॥
ता को अधिक रोस उपजायो ॥
बैठियो कहा दैव के खोए ॥
तो पै करे आरबिन ढोए ॥४॥
बैरम अधिक बचन सुनि डरियो ॥
आपु भजन को सामो करियो ॥
तद चलि तीर पठानी आई ॥
ता सो कहियो सु चहौ सुनाई ॥५॥

दोहरा ॥

तोर पिता ऐसो हुतो जा को जग मै नाम ॥
तू कातर ऐसो भयो छाडि चलियो संग्राम ॥६॥

चौपई ॥

अपनी पगिया मो कह दीजै ॥
मेरी पहिर इजारहि लीजै ॥
जब मै ससत्र तिहारो धरिहौ ॥
टूक टूक बैरिन के करिहौ ॥७॥
यौ कहि पतिहि भोहरे दीनो ॥
ता कै छीनि आयुधन लीनो ॥
ससत्र बाधि नर भेख बनायो ॥

पहिरि कवच दुंदभी बजायो ॥८॥

दोहरा ॥

सैन सकल लै कै चड़ी सूरन सकल जताइ ॥
बैरम खा मुहि भ्रित कौ बीरा दयो बुलाइ ॥९॥

चौपई ॥

सैना सकल संग लै धाई ॥
बाधे गोल सामुहे आई ॥
बैरम खा इक भ्रित पठायो ॥
मो कह जीति तब आगे जायो ॥१०॥
यौ सुनि सूर सकल रिस भरे ॥
भाति भाति कै आयुधु धरे ॥
ता को घेरि दसौ दिसि आए ॥
तानि कमानन बान चलाए ॥११॥

दोहरा ॥

असि फासी धरि सिपर लै गुरज गुफन लै हाथ ॥
गिरि गिरि गे जोधा धरनि बिधै बरछियन साथ ॥१२॥

भुजंग छंद ॥

लए हाथ सैथी अरब खरब धाए ॥
बंधे गोल हाठे हठी खेत आए ॥
महा कोप कै बाल के तीर ढूके ॥
दुहूं ओर ते मार ही मारि कूके ॥१३॥
सवैया ॥
छोरि निसासन के फररे भट ढोल ढमाकन दै करि ढूके ॥
ढालन कौ गहि कै कर भीतर मार ही मारि दसौ दिसि कूके ॥
वार अपार बहे कई बार गए छुटि कंचन कोटि कनूके ॥
लोह लुहार गड़ै जनु जारि उठै इक बारि त्रिनारि भभूके ॥१४॥

भुजंग छंद ॥

गुरिए खेल महमंदिले जाक धाए ॥
दओजई अफरीदीए कोपि आए ॥
हठे सूर लोदी महा कोप कै कै ॥
परे आनि कै बाढवारीन लै कै ॥१५॥

चौपई ॥

परी बाढवारीन की मारि भारी ॥
गए जूझि जोधा बडेई हंकारी ॥
महा मारि बानन की गाड़ ऐसी ॥
मनौ कुआर के मेघ की ब्रिसटि जैसी ॥१६॥
परे आनि जोधा चहूं ओर भारे ॥
महा मार ही मारि ऐसे पुकारे ॥
हटे नाहि छत्री छके छोभ ऐसे ॥
मनो साच स्री काल की ज्वाल जैसे ॥१७॥
धए अरब आछे महा सूर भारी ॥

करै तीनहूं लोक जिन कौ जुहारी ॥
लए हाथ तिरसूल ऐसो भ्रमावै ॥
मनो मेघ मै दामनी दमकि जावै ॥१८॥

चौपई ॥

धाए बीर जोरि दल भारी ॥
बाना बधे बडे हंकारी ॥
तान धनुहियन बान चलावै ॥
बाधे गोल सामुहे आवै ॥१९॥
जब अबला वह नैन निहारे ॥
भाति भाति के ससत्र प्रहारे ॥
मूंड जंघ बाहन बिनु कीने ॥
पठै धाम जम के सो दीने ॥२०॥
जूझि अनेक सुभट रन गए ॥
है गै रथी बिना असि भए ॥
जूझै बीर खेत भट भारी ॥
नाचे सूर बीर हंकारी ॥२१॥

दोहरा ॥

लगे ब्रिणन के सूरमा परे धरनि पै आइ ॥
गिर परे उठि पुनि लरे अधिक ह्रिदै करि चाइ ॥२२॥

भुजंग छंद ॥

किते गोफनै गुरज गोले उभारै ॥
किते चंद्र त्रिसूल सैथी संभारै ॥
किते परघ फासी लए हाथ डोलै ॥
किते मार ही मारि कै बीर बोलै ॥२३॥

दोहरा ॥

अति चित कोप बढाइ कै सूरन सकलन घाइ ॥
जहा बालि ठाढी हुती तहा परत भे आइ ॥२४॥

चौपई ॥

किचपचाइ जोधा समुहावै ॥
चटपट सुभट बिकट कटि जावै ॥
जूझि प्रान सनमुख जे देही ॥
डारि बिवान बरंगनि लेही ॥२५॥

दोहरा ॥

जे भट आनि अपछ्रनि लए बिवान चड़ाइ ॥
तिनि प्रति और निहारि कै लरतु सूर समुहाइ ॥२६॥

भुजंग छंद ॥

चहूं ओर ते चावडै चीतकारी ॥
रहे गिध आकास मंडराइ भारी ॥
लगे घाइ जोधा गिरे भूमि भारे ॥
ऐसी भाति झूमे मनौ मतवारे ॥२७॥

परी बान गोलान की भीर भारी ॥
बहै तीर तरवारि काती कटारी ॥
हठै ऐठियारे महाबीर धाए ॥
बधे गोल गाड़े चले खेत आए ॥२८॥
गुरिया खेल महमंदि लेजाक मारे ॥
दओजई अफरीति लोदी संघारे ॥
बली सूर न्रयाजी ऐसी भाति कूटे ॥
चले भाज जोधा सभै सीस फूटे ॥२९॥
सवैया ॥
सूर गए कटि कै झट दै तब बाल कुपी हथिआर संभारे ॥
पटिस लोह हथी परसे इक बार ही बैरनि के तन झारे ॥
एक लरे इक हारि टरे इक देखि डरे मरि गे बिनु मारे ॥
बीर करोरि सरासन छोरि त्रिणान कौ तोरि सु आनन डारे ॥३०॥

चौपई ॥

कोपे अरि बिलोकि तब भारे ॥
दुंदभ चले बजाइ नगारे ॥
टूटे चहूं ओर रिसि कै कै ॥
भाति भाति के आयुधु लै कै ॥३१॥

दोहरा ॥

बज्रबान बिछूआ बिसिख बरसियो सार अपार ॥
ऊच नीच कायर सुभट सभ कीने इक सार ॥३२॥

चौपई ॥

ऐसी भाति खेत जब परियो ॥
अरब राइ कुपि बचन उचरियो ॥
या को जियत जान नही दीजै ॥
घेरि दसो दिसि ते बधु कीजै ॥३३॥
अरब राइ कुपि बचन उचारे ॥
कोपे सूरबीर ऐठ्रयारे ॥
तानि कमानन बान चलाए ॥
बेधि बाल को पार पराए ॥३४॥

दोहरा ॥

बेधि बान जब तन गए तब त्रिय कोप बढाइ ॥
अमित जुध तिह ठा कियो सो मै कहत बनाइ ॥३५॥

चौपई ॥

लगे देह ते बान निकारे ॥
तन पुनि वहै बैरियन मारे ॥
जिन की देह घाव दिड़ लागे ॥
तुरत बरंगनिन सो अनुरागे ॥३६॥
ऐसी भाति बीर बहु मारे ॥
बाजी करी रथी हनि डारे ॥
तुमल जुध तिह ठा अति मचियो ॥
एक सूर जीयत नह बचियो ॥३७॥
अरब राइ आपन तब धायो ॥

आनि बाल सो जूझ मचायो ॥
चतुर बान तब त्रिया प्रहारे ॥
चारो अस्व मार ही डारे ॥३८॥
पुनि रथ काटि सारथी मारियो ॥
अरब राइ को बान प्रहारियो ॥
मोहित कै ता को गहि लीनो ॥
दुंदभि तबै जीति कौ दीनो ॥३९॥
ता को बाधि धाम लै आई ॥
भाति भाति सो दरबु लुटाई ॥
जै दुंदभी द्वार पै बाजी ॥
ग्रिह के लोक सकल भे राजी ॥४०॥

दोहरा ॥

काढि भोहरा ते पतिहि दीनो सत्रु दिखाइ ॥
बिदा कियो इक अस्व दै औ पगिया बधवाइ ॥४१॥

CHARITAR ९६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छयानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥96॥1724॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सयालकोट के देस मै सालबाहना राव ॥
खट दरसन कौ मानई राखत सभ को भाव ॥१॥
स्री त्रिपरारि मती हुती ता की त्रिय कौ नाम ॥
भजै भवानी कौ सदा निसु दिन आठौ जाम ॥२॥

चौपई ॥

यह जब भेद बिक्रमै पायो ॥
अमित सैन लै कै चड़ि धायो ॥
नैकु सालबाहन नहि डरियो ॥
जोरि सूर सनमुख ह्वै लरियो ॥३॥

दोहरा ॥

तब ता सौ स्री चंडिका ऐसे कहियो बनाइ ॥
सैन म्रितका की रचो तुम मै देउ जियाइ ॥४॥

चौपई ॥

जो जग मात कहियो सो कीनो ॥
सैन म्रितका की रचि लीनो ॥
क्रिपा द्रिसटि स्री चंडि निहारे ॥
जगे सूर हथिआर संभारे ॥५॥

दोहरा ॥

माटी ते मरद ऊपजे करि कै क्रुध बिसेख ॥
है गै रथ पैदल घने न्रिप उठि चले अनेक ॥६॥

चौपई ॥

गहिरे नाद नगर मै बाजे ॥
गहि गहि गुरज गरबिया गाजे ॥
टूक टूक भाखै जो ह्वै है ॥
बहुरो फेरि धाम नहि जै है ॥७॥

दोहरा ॥

यहै मंत्र करि सूरमा परे सैन मै आइ ॥
जो बिक्रम को दलु हुतो सो लै चले उठाइ ॥८॥

भुजंग छंद ॥

रथी कोटि कूटे करी क्रोरि मारे ॥
किते साज औ राज बाजी बिदारे ॥
घने घूमि जोधा तिसी भूमि जूझे ॥
कहा लौ गनौ मै नही जात बूझे ॥९॥

रूआल छंद ॥

अमित सैना लै चलियो तह आपु राजा संग ॥
जोरि कोरि सु बीर मंत्री ससत्र धारि सुरंगि ॥
सूल सैथिन के लगे अरु बेधि बानन साथ ॥
जूझि जूझि गए तहा रन भूमि मधि प्रमाथ ॥१०॥

भुजंग छंद ॥

जगे जंग जोधा गए जूझि भारे ॥
किते भूमि घूमै सु मनो मतवारे ॥
किते मार ही मारि ऐसे पुकारै ॥
किते ससत्र छोरै त्रिया भेख धारै ॥११॥
जबै आनि जोधा चहूं घात गजे ॥
महा संख औ दुंदभी नाद वजे ॥
परी जौ अभीतान की भीर भारी ॥
तबै आपु स्री कालिका किलकारी ॥१२॥
तहा आपु लै रुद्र डौरू बजायो ॥
चतर साठि मिलि जोगनी गीत गायो ॥
कहूं कोपि कै डाकनी हाक मारै ॥
कहूं भूत औ प्रेत नागे बिहारै ॥१३॥

तोमर छंद ॥

तब बिक्रमै रिसि खाइ ॥
भट भाति भाति बुलाइ ॥
चित मै अधिक हठ ठानि ॥
तिह ठा परत भे आनि ॥१४॥
अति तह सु जोधा आनि ॥
लरि मरत भे तजि कानि ॥
बाजंत्र कोटि बजाइ ॥
रन राग मारू गाइ ॥१५॥

चौपई ॥

आनि परे ते सकल निबेरे ॥

उमडे और काल के प्रेरे ॥
जे चलि दल रन मंडल आए ॥
लरि मरि कै सभ स्वरग सिधाए ॥१६॥
ऐसी भाति सैन जब लरियो ॥
एक बीर जीयत न उबरियो ॥
तब हठि राव आपि दोऊ धाए ॥
भाति भाति बादित्र बजाए ॥१७॥
तुरही नाद नफीरी बाजी ॥
संख ढोल करनाए गाजी ॥
भाति भाति मो घुरे नगारे ॥
देखत सुर बिवान चड़ि सारे ॥१८॥
जो बिक्रमा तिह घाइ चलावै ॥
आपि आनि स्री चंडि बचावै ॥
तिह ब्रिण एक लगन नहि देवै ॥
सेवक जानि राखि कै लेवै ॥१९॥

दोहरा ॥

देवी भगत पछानि तिह लगन न दीने घाइ ॥
बज्र बान बरछीन को बिक्रम रहियो चलाइ ॥२०॥

चौपई ॥

सालबाहन की इक पटरानी ॥
सो रन हेरि अधिक डरपानी ॥
पूजि गौरजा ताहि मनाई ॥
भूत भविख्य वहै ठहिराई ॥२१॥
तब तिह दरसु गौरजा दयो ॥
उठि राणी तिह सीस झुकयो ॥
भाति भाति जग मात मनायो ॥
जीत होइ हमरी बरु पायो ॥२२॥

दोहरा ॥

सालबाहन बिक्रम भए बाजियो लोह अपार ॥
आठ जाम आहव बिखै जुध भयो बिकरार ॥२३॥

चौपई ॥

स्यालकोटि नायक रिसि भरियो ॥
चित्र बचित्र चौपि रन करियो ॥
तनि धन बान बज्र से मारे ॥
राव बिक्रमा स्वरग सिधारे ॥२४॥

दोहरा ॥

जीति बिक्रमाजीत को चित मै हरख बढाइ ॥
अंतह पुर आवत भयो अधिक ह्रिदै सुखु पाइ ॥२५॥

चौपई ॥

जब राजा अंतह पुर आयो ॥
सुन्यो जु बरु रानी जू पायो ॥

मो कौ कहियो जीति इह दई ॥
ता सौ प्रीति अधिक ह्वै गई ॥२६॥

दोहरा ॥

हमरे हित इह रानियै लीनी गौरि मनाइ ॥
रीझि भगौती बरु दयो तब हम जिते बनाइ ॥२७॥

चौपई ॥

निस दिन रहै तवन के डेरै ॥
और रानियन ओर न हेरै ॥
बहुत मास रहते जब भयो ॥
देबी पूत एक तिह दयो ॥२८॥
ता को नाम रिसालू राखियो ॥
ऐसो बचन चंडिका भाखियो ॥
महा जती जोधा इह होई ॥
जा सम और न जग मै कोई ॥२९॥
ज्यो ज्यो बढत रिसालू जावै ॥
निति अखेट करै म्रिग घावै ॥
सैर देस देसन को करै ॥
किसहू राजा ते नहि डरै ॥३०॥
खेल अखेटक जब ग्रिह आवै ॥
तब चौपर की खेलि मचावै ॥
जीति चीति राजन कौ लेई ॥
छोरि छोरि चित्र करि देई ॥३१॥
एक डोम ता को ग्रिह आयो ॥
खेल रिसालू साथ रचायो ॥
पगिया बसत्र अस्व जब हारे ॥
चित्र चित यौ बचन उचारे ॥३२॥
चौपर बाज तोहि तब जानो ॥
मेरो कहियो एक तुम मानो ॥
सिरकप के संग खेल रचावो ॥
तब इह खेल जीति ग्रिह आवो ॥३३॥
यौ सुण बचन रिसालू धायो ॥
चड़ि घोरा पै तही सिधायो ॥
सिरकप के देसंतर आयो ॥
आनि राव सौ खेल रचायो ॥३४॥
तब सिरकप छल अधिक सु धारे ॥
ससत्र असत्र बसत्रन जुत हारे ॥
धन हराइ सिर बाजी लागी ॥
सोऊ जीति लई बडभागी ॥३५॥
जीति ताहि मारन लै धायो ॥
यौ सुनि कै रनिवासहि पायो ॥
या की सुता कोकिला लीजै ॥
जिय ते बध या कौ नहि कीजै ॥३६॥
तब तिह जान माफ कै दई ॥
ता की सुता कोकिला लई ॥
दंडकार मै सदन सवारियो ॥
ता के बीच राख तिह धारियो ॥३७॥
ता कौ लरिकापन जब गयो ॥

जोबन आनि दमामो दयो ॥
राजा निकट न ता के आवै ॥
या ते अति रानी दुखु पावे ॥३८॥
एक दिवस राजा जब आयो ॥
तब रानी यौ बचन सुनायो ॥
हम को लै तुम संग सिधारौ ॥
बन मै जहा म्रिगन कौ मारौ ॥३९॥
लै राजा तिह संग सिधायो ॥
जह म्रिग हनत हेत तह आयो ॥
दै फेरा सर सौ म्रिग मारियो ॥
यह कौतक कोकिला निहारियो ॥४०॥
तब रानी यौ बचन उचारे ॥
सुनो बात न्रिप नाथ हमारे ॥
द्रिग सर सो म्रिग को हौ मारौ ॥
तुम ठाढे यह चरित निहारो ॥४१॥
घूंघट छोरि कोकिला धाई ॥
म्रिग लखि ताहि गयो उरझाई ॥
अमित रूप जब ताहि निहारियो ॥
ठाढि रहियो नहि संक पधारियो ॥४२॥
कर सौ म्रिग रानी जब गहियो ॥
यह कौतक रीसालू लहियो ॥
तब चित भीतर अधिक रिसायो ॥
कान काट कै ताहि पठायो ॥४३॥
कान कटियो म्रिग लखि जब पायो ॥
सो होडी महलन तर आयो ॥
सिंध देस एस्वर गहि लयो ॥
चड़ि घोड़ा पै पाछे धयो ॥४४॥
तब आगे ता के म्रिग धायो ॥
महल कोकिला के तर आयो ॥
होडी ता को रूप निहारियो ॥
हरि अरि सर ता कौ तनु मारियो ॥४५॥
होडी जब कोकिला निहारी ॥
बिहसि बात इह भाति उचारी ॥
हम तुम आउ बिराजहिं दोऊ ॥
जा को भेद न पावत कोऊ ॥४६॥
है ते उतर भवन पग धारियो ॥
आनि कोकिला साथ बिहारियो ॥
भोग कमाइ बहुरि उठ गयो ॥
दुतय दिवस पुनि आवत भयो ॥४७॥
तब मैना यह भाति बखानी ॥
का कोकिला तू भई अयानी ॥
यौ सुनि बैन ताहि हनि डारियो ॥
तब सुक तिह इह भाति उचारियो ॥४८॥
भलो करियो मैना तै मारी ॥
सिंध एस के साथ बिहारी ॥
मोकह काढि हाथ पै लीजै ॥
बीच पिंजरा रहन न दीजै ॥४९॥
सोरठा ॥
जिनि रीसालू धाइ इह ठा पहुंचै आइ कै ॥
मुहि तुहि सिंधु बहाइ जमपुर देइ पठाइ लखि ॥५०॥

चौपई ॥

तब तिह काढि हाथ पै लयो ॥
द्रिसटि चुकाइ सूआ उडि गयो ॥
जाइ रिसालू साथ जतायो ॥
खेलत कहा चोर ग्रिह आयो ॥५१॥
यौ सुनि बैनि रिसालू धायो ॥
तुरतु धौलहर के तट आयो ॥
भेद कोकिला जब लखि पायो ॥
सफ के बिखै लपेटि दुरायो ॥५२॥
कहियो बकत्र फीकौ कियो भयो ॥
जनु करि राहु लूटि ससि लयो ॥
अंबुयन की अंबिआ किन हरी ॥
ढीली सेज कहो किह करी ॥५३॥

दोहरा ॥

जब ते गए अखेट तुम तब ते मै दुख पाइ ॥
घायल ज्यो घूंमत रही बिना तिहारे राइ ॥५४॥

चौपई ॥

बात बही अंबियन लै गई ॥
मो तन मैनुपजावति भई ॥
तब मै लए अधिक पसवारे ॥
जैसे म्रिग सायक के मारे ॥५५॥
ता ते लरी मोतियन छूटी ॥
उडग सहित निसि जनु रवि टूटी ॥
हौ अति दखित मैन सौ भई ॥
या ते सेज ढील ह्वै गई ॥५६॥

दोहरा ॥

तव दरसन लखि चित को मिटि गयो सोक अपार ॥
ज्यो चकवी पति आपने दिवकर नैन निहार ॥५७॥

चौपई ॥

यौ राजा रानी बरमायो ॥
घरीक बातन सो उरझायो ॥
पुनि ता सौ इह भाति उचारो ॥
सुनो राव जू बचन हमारो ॥५८॥
हम तुम कर मेवा दोऊ लेही ॥
डारि डारि या सफ मै देही ॥
हम दोऊ दाव इहै बद डारै ॥
सो हारै जिह परै किनारै ॥५९॥

दोहरा ॥

तब दुहूंअन मेवा लयो ऐसे बैन बखानि ॥
चतुरि न्रिपति अति चित हुतो इही बीच गयो जानि ॥६०॥

चौपई ॥

तब राजै इह बचन उचारी ॥
सुनु रानी कोकिला पिआरी ॥
एक हराइ म्रिगहि मै आयो ॥
कंपत बूट मै दुरियो डरायो ॥६१॥
हौडी बात मूंड इह आनी ॥
म्रिग पै करि कोकिला पछानी ॥
कहे तौ तुरत ताहि हनि ल्याऊ ॥
ता को तुम को मासु खवाऊ ॥६२॥
तब कोकिला खुसी ह्वै गई ॥
चाहत थी चित मै सो भई ॥
यह इन मूड़ भेद नहि पायो ॥
तजि या कौ म्रिग को तब धायो ॥६३॥
सीड़िन बीच न्रिपति लग रहियो ॥
तीर कमान हाथ मै गहियो ॥
जब होडी तिह ठा चलि आयो ॥
बिहसि रिसालु बचन सुनायो ॥६४॥
अब तुम कहियो पौरखहि धरो ॥
मो पर प्रथम घाइ कह करो ॥
कंपत त्रसत नहि ससत्र संभारियो ॥
तनि धनु बान रिसालू मारियो ॥६५॥
लागत बान धरनि गिर परियो ॥
एकै ब्रिण लागत ही मरियो ॥
ता को तुरत मासु कटि लीनो ॥
भूंजि कोकिला कौ लै दीनो ॥६६॥
जब तिह मासु कोकिला खायो ॥
लगियो सलौनो अति चित भायो ॥
जा के तुलि मासु कोऊ नाही ॥
राजा मै रीझी मन माही ॥६७॥
तब रीसालू बचन उचारे ॥
वहै मिरग कर परियो हमारे ॥
जियत तू जा सौ भोग कमायो ॥
मरे प्रात मासु तिह खायो ॥६८॥
जब यह तनिक भनिक सुनि पई ॥
लाल हुती पियरी ह्वै गई ॥
ध्रिग जियबो इह जगत हमारो ॥
जिन घायो निजु मीत प्यारो ॥६९॥

दोहरा ॥

सुनत कटारी न्रिपति की लै अपने उरि मारि ॥
उरि हनि धोलहर ते गिरी होडिहि नैन निहार ॥७०॥
उदर कटारी मारि कै परी महल तै टूटि ॥
एक घरी ससतक रही बहुरि प्रान गे छूटि ॥७१॥

चौपई ॥

ग्रिह ते टूटि धरनि पर परी ॥
लाज मरत जमपुर मगु धरी ॥
तब चल तहा रिसालू आयो ॥
मास कूकरन दुहूं खवायो ॥७२॥

दोहरा ॥

जो बनिता पति आपनो त्याग और पै जाइ ॥
सो ऐसो पुनि तुरत ही क्यो नहि लहत सजाइ ॥७३॥

CHARITAR ९७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥97॥1797॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

चंद्रभगा सरिता निकटि राझन नामा जाट ॥
जो अबला निरखै तिसै जात सदन परि खाट ॥१॥

चौपई ॥

मोहत तिह त्रिय नैन निहारे ॥
जनु सावक सायक के मारे ॥
चित मै अधिक रीझ के रहै ॥
राझन राझन मुख ते कहै ॥२॥
करम काल तह ऐसो भयो ॥
तौने देस काल पर गयो ॥
जियत न कौ नर बचियो नगर मै ॥
सो उबरियो जा के धनु घर मै ॥३॥
चित्र देवि इक रानि नगर मै ॥
राझा एक पूत तिह घर मै ॥
ता के और न बचियो कोई ॥
माइ पूत वै बाचे दोई ॥४॥
रनियहि भूख अधिक जब जागी ॥
ता कौ बेचि मेखला साजी ॥
निति पीसन पर द्वारे जावै ॥
जूठ चून चौका चुनि खावै ॥५॥
ऐसे ही भूखन मरि गई ॥
पुनि बिधि तहा ब्रिसटि अति दई ॥
सूके भए हरे जनु सारे ॥
बहुरि जीत के बजे नगारे ॥६॥
तहा एक राझा ही उबरियो ॥
और लोग सभ तह को मरियो ॥
राझो जाट हेत तिन पारियो ॥
पूत भाव ते ताहि जियारियो ॥७॥
पूत जाट को सभ को जानै ॥
तिस ते कोऊ न रहियो पछानै ॥
ऐसे काल बीत कै गयो ॥
ता मै मदन दमामो दयो ॥८॥
महिखी चारि निति ग्रिह आवै ॥
राझा अपनो नाम सदावै ॥
पूत जाट को तिह सभ जानै ॥
राजपूतु कै को पहिचानै ॥९॥
इती बात राझा की कही ॥
अब चलि बात हीर पै रही ॥
तुम कौ ता की कथा सुनाऊ ॥

ता ते तुमरो ह्रिदै सिराऊ ॥१०॥
अड़िल ॥
इंद्र राइ के नगर अपसरा इक रहै ॥
मैन कला तिह नाम सकल जग यौ कहै ॥
ता कौ रूप नरेस जो कोऊ निहारही ॥
हो गिरै धरनि पर झूमि मैन सर मारही ॥११॥

चौपई ॥

तौने सभा कपिल मुनि आयो ॥
औसर जहा मैनका पायो ॥
तिह लखि मुनि बीरज गिरि गयो ॥
चपि चित मै स्रापत तिह भयो ॥१२॥
तुम गिरि मिरत लोक मै परो ॥
जूनि सयाल जाट की धरो ॥
हीर आपनो नाम सदावो ॥
जूठ कूठ तुरकन की खावो ॥१३॥

दोहरा ॥

तब अबला कंपति भई ता के परि कै पाइ ॥
क्रयोहू होइ उधार मम सो दिज कहो उपाइ ॥१४॥

चौपई ॥

इंद्र सु म्रित मंडल जब जैहै ॥
राझा अपनो नामु कहै है ॥
तो सौ अधिक प्रीति उपजावै ॥
अमरवती बहुरि तुहि ल्यावै ॥१५॥

दोहरा ॥

जूनि जाट की तिन धरी म्रित मंडल मै आइ ॥
चूचक के उपजी भवन हीर नाम धरवाइ ॥१६॥

चौपई ॥

इसी भाति सो काल बिहान्रयो ॥
बीतयो बरख एक दिन जान्यो ॥
बालापनो छूटि जब गयो ॥
जोबन आनि दमामो दयो ॥१७॥
राझा चारि महिखियन आवै ॥
ता को हेरि हीर बलि जावै ॥
ता सौ अधिक नेहु उपजायो ॥
भाति भाति सौ मोह बढायो ॥१८॥

दोहरा ॥

खात पीत बैठत उठत सोवत जागत निति ॥
कबहूं न बिसरै चित ते सुंदर दरस नमित ॥१९॥
हीर बाच ॥
सवैया ॥
बाहर जाउ तौ बाहर ही ग्रिह आवत आवत संग लगेही ॥

जौ हठि बैठि रहो घर मै पिय पैठि रहै हिय मै पहि लेही ॥
नींद हमै नकवानी करी छिन ही छिन राम सखी सुपनेही ॥
जागत सोवत रातहूं द्योस कहूं मुहि राझन चैन न देही ॥२०॥

चौपई ॥

राझन राझन सदा उचारै ॥
सोवत जागत तहा संभारै ॥
बैठत उठत चलत हूं संगा ॥
ताही कौ जानै कै अंगा ॥२१॥
काहूं को जो हीर निहारै ॥
राझन ही रिद बीच बिचारै ॥
ऐसी प्रीति प्रिआ की लागी ॥
नींद भूख ता की सभ भागी ॥२२॥
राझन ही के रूप वह भई ॥
ज्यो मिलि बूंदि बारि मो गई ॥
जैसे म्रिग म्रिगया को लहे ॥
होत बधाइ बिना ही गहे ॥२३॥

दोहरा ॥

जैसे लकरी आग मै परत कहूं ते आइ ॥
पलक द्वैक ता मै रहै बहुरि आग ह्वै जाइ ॥२४॥
हरि जा असि ऐसे सुन्यो करत एक ते दोइ ॥
बिरह बढारनि जो बधे एक दोइ ते होइ ॥२५॥
राझन हीर प्रेम मै रहै एक ही होइ ॥
कहिबे कौ तन एक ही लहिबे को तन दोइ ॥२६॥

चौपई ॥

ऐसी प्रीति प्रिया की भई ॥
सिगरी बिसरि ताहि सुधि गई ॥
राझा जू के रूप उरझानी ॥
लोक लाज तजि भई दिवानी ॥२७॥
तब चूचक इह भाति बिचारी ॥
यह कंन्या नहि जियत हमारी ॥
अब ही यह खेरा को दीजै ॥
या मै तनिक ढील नहि कीजै ॥२८॥
खेरहि बोल तुरतु तिह दयो ॥
राझा अतिथ होइ संग गयो ॥
मागत भीख घात जब पायो ॥
लै ता को सुर लोक सिधायो ॥२९॥
राझा हीर मिलत जब भए ॥
चित के सकल सोक मिटि गए ॥
हिया की अवधि बीति जब गई ॥
बाटि दुहूं सुर पुर की लई ॥३०॥

दोहरा ॥

राझा भयो सुरेस तह भई मैनका हीर ॥
या जग मै गावत सदा सभ कबि कुल जस धीर ॥३१॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥98॥1828॥अफजूं॥*

चौपई ॥

पोठोहारि नारि इक रहै ॥
रुद्र कला ता को जग कहै ॥
तिह ग्रिह रोज खुदाई आवै ॥
धन डर पाइ ताहि लै जावै ॥१॥
इक दिन इन कछु धनु नहि दयो ॥
कोप खदाइन के मन भयो ॥
सभ ही हाथ कुरान उठाए ॥
मिलि गिलि भवन तवन के आए ॥२॥
हानत कहियो नबी की करी ॥
यह सुनि बचन नारि अति डरी ॥
तिन को सदन बीच बैठायो ॥
खान मुहबत साथ जतायो ॥३॥
ता के तुरत पयादे आए ॥
इक ग्रिह मै बैठाइ छिपाए ॥
खाना भलो तिनागे राख्यो ॥
आपु खदाइन सो यो भाख्यो ॥४॥
हानत मै न नबी की करी ॥
मो तौ कहो चूक का परी ॥
ता की जो निंदा मै करो ॥
अपने मारि कटारी मरो ॥५॥
जो कछु लैनो होइ सु लीजै ॥
हानत को मुहि दोसु न दीजै ॥
बिहसि खुदाइन बचन उचारियो ॥
धन लालच हम चरित सु धारियो ॥६॥

दोहरा ॥

जो हौ कछू मुहंमदहि मुख तै काढो गारि ॥
तो मै आपन आप ही मरो कटारी मारि ॥७॥

चौपई ॥

तै नहि कछू नबी को कहियो ॥
धन के हेत तोहि हम गहियो ॥
अधिक दरबु अब ही मुहि दीजै ॥
नातर मीच मूंडि पै लीजै ॥८॥

दोहरा ॥

हम बहु लोग पिसौर के इनी तुहमतन साथ ॥
धनी करै निधनी घने ह्वै ह्वै गए अनाथ ॥९॥

चौपई ॥

यौ सुनि बचन पयादनु पायो ॥
वेई सभ झूठे ठहिरायो ॥

ग्रिह ते निकसि तिनै गहि लीनो ॥
सभहिन की मुसकै कसि दीनो ॥१०॥

दोहरा ॥

लात मुसट कुररे घने बरसी पन्नही अपार ॥
दै मुसकन कौ लै चले हेरतु लोक हजार ॥११॥

चौपई ॥

तिन को बाधि लै गए तहा ॥
खान मुहबति बैठो जहा ॥
पनहिन मारि नवाब दिलाई ॥
तोबह तोबह करै खुदाई ॥१२॥
पनहिन के मारत मरि गए ॥
तब वै डारि नदी मै दए ॥
चुप ह्वै रहे तुरक सभ सोऊ ॥
तब ते तुहमति देत न कोऊ ॥१३॥

दोहरा ॥

तब तिन बिप बुलाइ कै दीनो दान अपार ॥
छल कै कै जूतिन भए बीस खुदाई मार ॥१४॥

चौपई ॥

चुप तब ते ह्वै रहे खुदाई ॥
काहू साथ न रारि बढाई ॥
सोई करै जु हिंदू कहै ॥
तुहमति दै काहूं न गहै ॥१५॥

CHARITAR ९९ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे निंनानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥99॥1843॥अफजूं॥*

चौपई ॥

रोपर राव रुपेस्वर भारो ॥
रघुकुल बीच अधिक उजियारो ॥
चित्र कुअरि रानी इक ता के ॥
रूपवती कोऊ तुलि न वा के ॥१॥
दानव एक लंक ते आयो ॥
ता को रूपि हेरि उरझायो ॥
मन मै अधिक रीझि करि गयो ॥
ता को लगा न तजि तहि दयो ॥२॥
तब तिन मंत्री अधिक बुलाए ॥
अनिक भाति उपचार कराए ॥
तहा एक मुला चलि आयो ॥
आनि आपना ओजु जनायो ॥३॥
तब तिन घात दानवहि पायो ॥
एक हाथ सौ महल उचायो ॥
दुतिय हाथ ता कौ गहि लीनो ॥

तवन छात भीतर धरि दीनो ॥४॥

दोहरा ॥

धरियो थंभ ऊपर तिसै इक कर छात उठाइ ॥
मारि मुलाना को दयो जम के धाम पठाइ ॥५॥

चौपई ॥

तह इक और मुलानो आयो ॥
सोऊ पकरि टाग पटकायो ॥
तीजौ और आइ तह गयो ॥
सोऊ डारि नदी मै दयो ॥६॥
तबि इक त्रिया तहा चलि आई ॥
भाति भाति तिह करी बडाई ॥
लेहज पेहज बहु ताहि खवायो ॥
मदरो प्रयाइ ताहि रिझवायो ॥७॥
ता के निति बुहारी देवै ॥
ता को चित चुराइ कै लेवै ॥
इक दिन होइ बिमन सी रही ॥
तब ऐसे दानो तिह कही ॥८॥
खात पीत हमरो तूं नाही ॥
सेवा करत रहत ग्रिह माही ॥
अधिक रीझि निसचरहि उचारो ॥
देउ वहै जो ह्रिदै बिचारो ॥९॥
जब दो तीनि बार तिन कहियो ॥
ता पै अधिक रीझि कै रहियो ॥
कहियो असुर लागयो इक त्रिया को ॥
सकै दूरि कर तू नहि ता को ॥१०॥
तब तिन जंत्र तुरतु लिखि लीनो ॥
लै ता को कर भीतर दीनो ॥
जा को तू इक बार दिखै है ॥
जरि बरि ढेर भसमि सो ह्वै है ॥११॥
ता कै कर ते जंत्र लिखायो ॥
लै कर मै तहि को दिखरायो ॥
जब सु जंत्र दानो लखि लयो ॥
सो जरि ढेर भसम ह्वै गयो ॥१२॥

दोहरा ॥

देवराज जिह दैत कौ जीत सकत नहि जाइ ॥
सो अबला इह छल भए जम पुर दयो पठाइ ॥१३॥

CHARITAR १०० — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौवौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥100॥1856॥अफजूं॥

चौपई ॥

रावी तीर जाट इक रहै ॥
महीवाल नाम जग कहै ॥

निरखि सोहनी बसि ह्वै गई ॥
ता पै रीझि सु आसिक भई ॥१॥
जब ही भान असत ह्वै जावै ॥
तब ही पैरि नदी तह आवै ॥
द्रिड़ गहि घट उर के तर धरै ॥
छिन महि पैर पार तिह परै ॥२॥
एक दिवस उठि कै जब धाई ॥
सोवत हुतो बंधु लखि पाई ॥
पाछै लागि भेद तिह चहियो ॥
कछू सोहनी ताहि न लहियो ॥३॥

भुजंग छंद ॥

छकी प्रेम बाला तिसी ठौर धाई ॥
जहा दाबि कै बूट मै माट आई ॥
लीयौ हाथ ता कौ धसी नीर म्याने ॥
मिली जाइ ता कौ यही भेद जाने ॥४॥
मिली जाइ ता कौ फिरी फेरि बाला ॥
दिपै चारि सोभा मनो आगि ज्वाला ॥
लए हाथ माटा नदी पैरि आई ॥
कोऊ नाहि जानै तिनी बात पाई ॥५॥
भयो प्रात लै काच माटा सिधायो ॥
तिसै डारि दीनो उसे राखि आयो ॥
भए सोहनी रैनि जब ही सिधाई ॥
वहै माट लै के छकी प्रेम आई ॥६॥

दोहरा ॥

अधिक जब सरिता तरी माटि गयो तब फूटि ॥
डुबकी लेते तन गयो प्रान बहुरि गे छूटि ॥७॥

चौपई ॥

मेहीवाल अधिक दुखु धारियो ॥
कहा सोहनी रही बिचारियो ॥
नदी बीच खोजत बहु भयो ॥
आई लहिर डूबि सो गयो ॥८॥
एक पुरख यह चरित्र सुधारियो ॥
मेहीवाल सोहनियहि मारियो ॥
काचो घट वा को दै बोरियो ॥
मेहीवाल हूं को सिर तोरियो ॥९॥

CHARITAR १०१ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इक चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥101॥1865॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

अवध पुरी भीतर बसै अज सुत दसरथ राव ॥
दीनन की रछ्या करै राखत सभ को भाव ॥१॥
दैत देवतन को बन्यो एक दिवस संग्राम ॥

बोलि पठायो इंद्र नै लै दसरथ को नाम ॥२॥

चौपई ॥

दूतहि कहियो तुरत तुम जैयहु ॥
सैन सहित दसरथ कै ल्यैयहु ॥
ग्रिह के सकल काम तज आवै ॥
हमरी दिसि ह्वै जुधु मचावै ॥३॥

दोहरा ॥

दूत सतक्रित जो पठियो सो दसरथ पै आइ ॥
जो ता सो स्वामी कहियो सो तिह कहियो सुनाइ ॥४॥

चौपई ॥

बासव कहियो सु ताहि सुनायो ॥
सो सुनि भेद केकई पायो ॥
चले चलो रहि हौ तौ रहि हौ ॥
नातर देह अगनि मै दहि हौ ॥५॥
त्रिय को मोह न्रिपति सौ भारो ॥
तिह संग लै उह ओरि पधारो ॥
बाल कहियो सेवा तव करिहो ॥
जूझो नाथ पावकहि बरिहो ॥६॥
अवध राज तह तुरत सिधायो ॥
सुर असुरन जह जुध मचायो ॥
बज्र बान बिछूआ जह बरखै ॥
कुपि कुपि बीर धनुहियन करखै ॥७॥

भुजंग छंद ॥

बधे गोल गाड़े चलियो बज्रधारी ॥
बजै देव दानव जहा ही हकारी ॥
गजै कोटि जोधा महा कोप कै कै ॥
परै आनि कै बाढवारीन लै कै ॥८॥
भजे देव दानो अनिक बान मारे ॥
चले छाडि कै इंदर के बीर भारे ॥
रहियो एक ठाढो तहा बज्रधारी ॥
परियो ताहि सो राव तहि मार भारी ॥९॥
इतै इंद्र राजा उतै दैत भारे ॥
हटे न हठीले महा रोह वारे ॥
लयो घेरि ता को चहूं ओर ऐसे ॥
मनो पवन उठै घटा घोर जैसे ॥१०॥
परी देव दावान की मारि भारी ॥
हठियो एक हाठे तहा छत्रधारी ॥
अज्रयानंद जू कौ सते लोक जानै ॥
परे आनि सोऊ महा रोस ठानै ॥११॥
महा कोप कै कै हठी दैत ढूके ॥
फिरे आनि चारो दिसा राव जू के ॥
महा बज्र बानान कै घाइ मारै ॥
बली मार ही मारि ऐसे पुकारै ॥१२॥
हटे न हठीले हठे ऐठियारे ॥

मंडे कोप कै कै महाबीर मारे ॥
चहुं ओर बादित्र आनेक बाजै ॥
उठियो राग मारू महा सूर गाजै ॥१३॥
कितै हाक मारे किते बाक दाबे ॥
किते ढाल ढाहे किते दाड़ चाबे ॥
किते बाक सौ हल हले बीर भारी ॥
किते जूझि जोधा गए छत्रधारी ॥१४॥

दोहरा ॥

असुरन की सैना हुते असुर निकसियो एक ॥
सूत संघारि अज नंद कौ मारे बिसिख अनेक ॥१५॥

चौपई ॥

भरथ मात ऐसे सुनि पायो ॥
काम सूति अजि सुत कौ आयो ॥
आपन भेख सुभट को धरियो ॥
जाइ सूतपन न्रिप को करियो ॥१६॥
स्यंदन ऐसी भाति धवावै ॥
न्रिप को बान न लागन पावै ॥
जायो चाहत अजि सुत जहा ॥
लै अबला पहुचावै तहा ॥१७॥
ऐसे अबला रथहि धवावै ॥
जहु पहुचै ता कौ न्रिप घावै ॥
उडी धूरि लगी असमाना ॥
असि चमकै बिजुरी परमाना ॥१८॥
तिलु तिलु टूक एक करि मारे ॥
एक बीर कटि तै कटि डारे ॥
दसरथ अधिक कोप करि गाजियो ॥
रन मै राग मारूआ बाजियो ॥१९॥

दोहरा ॥

संख नफीरी कान्रहरे तुरही भेर अपार ॥
मुचंग सनाई डुगडुगी डवरू ढोल हजार ॥२०॥

भुजंग छंद ॥

चले भाजि लोंडी सु जोधा गरजै ॥
महा भेर भारीन सौ नाद बजै ॥
परी आनि भूतान की भीर भारी ॥
मंडे कोप कै कै बडे छत्र धारी ॥२१॥
दिपै हाथ मै कोटि काढी क्रिपानै ॥
गिरै भूमि मै झूमि जोधा जुआनै ॥
परी आनि बीरान की भीर भारी ॥
बहै ससत्र और असत्र काती कटारी ॥२२॥
बजै सार भारो किते ही पराए ॥
किते चुंग बाधे चले खेत आए ॥
परी बान गोलान की मारि ऐसी ॥
मनो क्वार के मेघ की ब्रिसटि जैसी ॥२३॥
परी मारि भारी मचियो लोह गाढो ॥

अहिलाद जोधान कै चित बाढो ॥
कहूं भूत औ प्रेत नाचै रु गावै ॥
कहूं जोगिनी पीत लोहू सुहावै ॥२४॥
कहूं बीर बैतला बाके बिहारै ॥
कहूं बीर बीरान को मारि डारै ॥
किते बान लै सूर कंमान ऐंचै ॥
किते घैंचि जोधान के केस खैंचै ॥२५॥
कहूं पारबती मूड माला बनावै ॥
कहूं राग मारू महा रुद्र गावै ॥
कहूं कोप कै डाकनी हाक मारै ॥
गए जूझि जोधा बिना ही संघारै ॥२६॥
कहूं दुंदभी ढोल सहनाइ बजै ॥
महा कोप कै सूर केते गरजै ॥
परे कंठ फासी किते बीर मूए ॥
तनं त्याग गामी सु बैकुंठ हूए ॥२७॥
किते खेत मै देव देवारि मारे ॥
किते प्रान सुर लोक तजि कै बिहारे ॥
किते घाइ लागो महाबीर झूमै ॥
मनो पानि कै भंग मालंग घूमै ॥२८॥
बली मार ही मारि कै कै पधारे ॥
हने छत्रधारी महा ऐठियारे ॥
कई कोटि पत्री तिसी ठौर छूटे ॥
ऊडे छिप्र सौ पत्र से छत्र टूटे ॥२९॥
मचियो जुध गाड़ो मंडौ बीर भारे ॥
चहूं ओर के कोप कै कै हकारे ॥
हूए पाक साहीद जंगाह म्यानै ॥
गए जूझि जोधा घनो स्याम जानै ॥३०॥

चौपई ॥

अजि सुत जहा चित लै जावै ॥
तही केकई लै पहुचावै ॥
अब्रिण राखि ऐसो रथ हाक्रयो ॥
निजु पिय के इक बार न बाक्यो ॥३१॥
जहा केकई लै पहुचायो ॥
अजि सुत ता कौ मारि गिरायो ॥
ऐसो करियो बीर संग्रामा ॥
खबरै गई रूम अरु सामा ॥३२॥
ऐसी भाति दुसट बहु मारे ॥
बासव के सभ सोक निवारे ॥
गहियो दात त्रिण उबरियो सोऊ ॥
नातर जियत न बाच्यो कोऊ ॥३३॥

दोहरा ॥

पति राख्यो रथ हाकियो सूरन दयो खपाइ ॥
जीति जुध द्वै बर लए कै कै अति सुभ काइ ॥३४॥

CHARITAR १०२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ दोइ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥102॥1899॥अफजूं॥*

चौपई ॥

असट नदी जिह ठा मिलि गई ॥
बहती अधिक जोर सो भई ॥
ठटा सहिर बसियो तह भारो ॥
जन बिधि दूसर स्वरग सु धारो ॥१॥

दोहरा ॥

तहा धाम पतिसाह के जलन नामा पूत ॥
सूरति सीरति मै अधिक बिधि नै सजियो सपूत ॥२॥
जो अबला ता कौ लखै रीझ रहै मन माहि ॥
गिरे मूरछना ह्वै धरनि तनिक रहै सुधि नाहि ॥३॥
साह जलाल सिकार कौ इक दिन निकसियो आइ ॥
म्रिगियन कौ मारत भयो तरल तुरंग धवाइ ॥४॥

चौपई ॥

एक मिरग आगे तिह आयौ ॥
तिह पाछे तिन तुरै धवायो ॥
छोरि सैन ऐसे वह धायो ॥
सहिर बूबना के महि आयो ॥५॥
अधिक त्रिखा जब ताहि संतायो ॥
बाग बूबना के महि आयो ॥
पानी उतरि अस्व ते पीयो ॥
ता को तब निंद्रहि गहि लीयो ॥६॥
तब तह सोइ रहियो सुख पाई ॥
भई साझ अबला तह आई ॥
अमित रूप जब ताहि निहारियो ॥
हरि अरि सर ता के तन मारियो ॥७॥
ता कौ रूप हेरि बस भई ॥
बिनु दामन चेरी ह्वै गई ॥
ता की लगन चित मै लागी ॥
नीद भूख सिगरी तिह भागी ॥८॥

दोहरा ॥

जा के लागत चित मै लगन पिया की आन ॥
लाज भूखि भागत सभै बिसरत सकल सियान ॥९॥
जा दिन पिय प्यारे मिलै सुख उपजत मन माहि ॥
ता दिन सो सुख जगत मै हर पुर हूं मै नाहि ॥१०॥
जा के तन बिरहा बसै लगत तिसी को पीर ॥
जैसे चीर हिरौल को परत गोल पर भीर ॥११॥
बूबना बाच ॥
कौन देस एस्वरज तू कौन देस को राव ॥
क्योन आयो इह ठौर तू मो कह भेद बताव ॥१२॥
जलू बाच ॥

चौपई ॥

ठटा देस एस्वर महि जायो ॥

खिलत अखेटक इह ठा आयो ॥
पियत पानि हारियो स्वै गयो ॥
अब तुमरो दरसन मुहि भयो ॥१३॥

दोहरा ॥

हेरि रूप ता कौ तरुनि बसि ह्वै गई प्रबीन ॥
जैसे बूंद की मेघ ज्यों होत नदी मै लीन ॥१४॥
प्रीति लाल की उर बसी बिसरी सकल सियान ॥
गिरी मूरछना ह्वै धरनि बिधी बिरह के बान ॥१५॥
सोरठा ॥
रकत न रहियो सरीर लोक लाज बिसरी सकल ॥
अबला भई अधीर अमित रूप पिय को निरखि ॥१६॥

चौपई ॥

जा दिन मीत पियारो पैयै ॥
तौन घरी उपर बलि जैयै ॥
बिरहु बधी चेरी तिह भई ॥
बिसरि लाज लोगन की गई ॥१७॥

दोहरा ॥

निरखि बूबना बसि भई परी बिरह की फास ॥
भूखि प्यास भाजी सकल बिनु दामनु की दास ॥१८॥
बतिस अभरन त्रिय करै सोरह सजत सिंगार ॥
नाक छिदावत आपनो पिय के हेतु पियार ॥१९॥
तीय पिया के चित मै ऐसो लागियो नेह ॥
भूख लाज तन की गई दुहुअन बिसरियो ग्रेह ॥२०॥
सवैया ॥
बीन सकै बिगसै नहि काहू सौ लोक की लाज बिदा करि राखे ॥
बीरी चबात न बैठि सकै बिल मै नहि बाल हहा करि भाखै ॥
इंद्र को राज समाजन सो सुख छाडि छिनेक बिखै दुख गाखै ॥
तीर लगो तरवारि लगो न लगो जिनि काहू सौ काहू की आखैं ॥२१॥

दोहरा ॥

हेरि बूबना कौ धरनि लोटत मात अधीर ॥
चतुरि हुती चीनत भई पिय बिरह की पीरि ॥२२॥

चौपई ॥

या की लगनि किसू सो लागी ॥
ता ते भूखि प्यास सभ भागी ॥
ता ते बेगि उपायहि करियै ॥
जा ते सगरो सोक निवरियै ॥२३॥
ह्रिदै मंत्र इह भाति बिचारियो ॥
निज पति सो इह भाति उचारियो ॥
सुता तरुनि तुमरे ग्रिह भई ॥
ता की करन सगाई लई ॥२४॥
या को अधिक सुयंबर कैहै ॥
बडे बडे राजान बुलैहै ॥
दुहिता द्रिसटि सभन पर करि है ॥

जो चित रुचे तिसी कह बरि है ॥२५॥
भयो प्रात यह ब्योत बनायो ॥
पुर बासिन सभहीन बुलायो ॥
देस देस बहु दूत पठाए ॥
नरपति सभ ठौरन ते आए ॥२६॥

दोहरा ॥

तौन बाग मै बूबना नित प्रति करत पयान ॥
भेटत साह जलाल को रैनि बसै ग्रिह आनि ॥२७॥

चौपई ॥

ऐसी प्रीति दुहूं मै भई ॥
दुहूंअन बिसरि सकल सुधि गई ॥
कमल नाभ की छबि पहिचनियत ॥
टूक दु प्रीति तार इक जनियत ॥२८॥

दोहरा ॥

भयो प्रात पित बूबना राजा लए बुलाइ ॥
आग्या दुहिता को दई रुचै बरो तिह जाइ ॥२९॥

चौपई ॥

यहै सकेत तहा बदि आई ॥
साहि जलालहि लयो बुलाई ॥
जब हौ द्रिसटि तवू पर करिहौ ॥
फूलन की माला उर डरि हौ ॥३०॥
चड़ि बिवान देखन न्रिप गई ॥
द्रिसटि करत सभहिन पर भई ॥
जब तिह साह जलाल निहारियो ॥
फूल हार ता के उर डारियो ॥३१॥
भाति भाति तब बाजन बाजे ॥
जनियत साहि जलू के गाजे ॥
सभ न्रिप बक्र फूक ह्वै गए ॥
जानक लूटि बिधा तहि लए ॥३२॥

दोहरा ॥

फूक बकत्र भे सभ न्रिपति गए आपने ग्रेह ॥
जलू बूबना को तबै अधिक बढत भयो नेह ॥३३॥

चौपई ॥

इह छल सो अबला करि आई ॥
जानक रंक नवो निधि पाई ॥
ऐसी बसि तरुनी ह्वै गई ॥
मानहु साह जलालै भई ॥३४॥

दोहरा ॥

अरुन बसत्र अति क्रात तिह तरुनि तरुन को पाइ ॥
भाति भाति भोगन भयो ताहि गरे सौ लाइ ॥३५॥

चौपई ॥

ऐसी प्रीति दुहू की लागी ॥
जा को सभ गावत अनुरागी ॥
सोत जगत डोलत ही मग मै ॥
जाहिर भई सगल ही जग मै ॥३६॥

CHARITAR १०३ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिंन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥103॥1935॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

इक अबला थी जाट की तसकर सो तिह नेह ॥
केल कमावत तौन सो निति बुलावत ग्रेह ॥१॥

चौपई ॥

एक दिवस तसकर ग्रिह आयो ॥
बहसि नारि यौ बचन सुनायो ॥
कहा चोर तुम दरबु चुरावत ॥
सु तुम निजु धन हिरि लै जावत ॥२॥

दोहरा ॥

कापत हो चित मै अधिक नैकु निहारत भोर ॥
भजत संधि को तजि सदन चित चुरावो चोर ॥३॥

चौपई ॥

प्रथम साधि दै दरबु चुरावै ॥
पुनि अपुने पति कौ दिखरावै ॥
काजी मुफती सकल निहारै ॥
सो तसकर तिह राह पधारै ॥४॥

दोहरा ॥

धन तसकर कौ अमित दे घर ते दयो पठाइ ॥
कोटवार को खबरि करि हौ मिलिहौ तुहि आइ ॥५॥

चौपई ॥

अमित दरबु दै चोर निकारियो ॥
दै साधहि इह भाति पुकारियो ॥
पतिहि जगाइ कहियो धन हरियो ॥
इह देसेस न्याइ नहि करियो ॥६॥
त्रियो बाच ॥
कोटवार पै जाइ पुकारियो ॥
किनी चोर धन हरियो हमारियो ॥
सकल लोक तिह ठा पग धरियै ॥
हमरो कछुक न्याइ बिचरियै ॥७॥
काजी कोटवार कौ ल्याई ॥

सभ लोगन को साधि दिखाई ॥
ता कौ हेरि अधिक पति रोयो ॥
चोरन मोर सकल धनु खोयो ॥८॥
देखत तिनै मूंद वह लई ॥
रहन तैसियै अंतर दई ॥
दिन बीतयो रजनी ह्वै आई ॥
तिसी पैंड ह्वै आपु सिधाई ॥९॥

दोहरा ॥

काजी औ कुटवार पै निजु पति साधि दिखाइ ॥
प्रथमै धनु पहुचाइ कै बहुरि मिली तिह जाइ ॥१०॥

चौपई ॥

सभ कोऊ ऐसी भाति बखानै ॥
न्याइ न भयो ताहि कर मानै ॥
धनु बिनु नारि झखत अति भई ॥
ह्वै जोगन बन माझ सिधई ॥११॥

CHARITAR १०४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चार चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥104॥1946॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अलिमरदा कौ सुत इक रहै ॥
तास बेग नामा जग कहै ॥
बचा जौहरी को तिन हेरियो ॥
महा रुद्र रिपु ता कौ घेरियो ॥१॥
ता के द्वारे देखन जावै ॥
रूप निहारि ह्दिै सुखु पावै ॥
केल करो या सो चित भायो ॥
तुरतु दूत ग्रिह ताहि पठायो ॥२॥
दूत अनेक उपचार बनावै ॥
मोहन राइ हाथ नहि आवै ॥
तिह ता सो इह भाति उचारियो ॥
तास बेग ता सौ खिझि मारियो ॥३॥
चोटन लगे दूत रिसि भरियो ॥
मूरख जानि जतन तिह करियो ॥
मोहन आजु कहियो मै ऐहो ॥
ता कौ तास बेग तू पैहो ॥४॥
यह सुनि बैन फूलि जड़ गयो ॥
साच बात चीनत चित भयो ॥
लोग उठाइ पान मद करियो ॥
मानुख हुतो जोनि पसु परियो ॥५॥
मो मन मोल मोहनहि लयो ॥
तब ते मै चेरो ह्वै गयो ॥
एक बार जौ ताहि निहारो ॥
तनु मनु धन ता पै सभ वारो ॥६॥
बिनु सुधि भए दूत तिह चीनो ॥

अंड फोरि आसन पर दीनो ॥
भूखन बसत्र पाग तिह हरी ॥
मूरख कौ सुधि कछू न परी ॥७॥
मदरा की अति भई खुमारी ॥
प्रात लगे जड़ बुधि न संभारी ॥
बीती रैनि भयो उजियारो ॥
तन मन अपने आप संभारो ॥८॥
हाथ जाइ आसन पर परियो ॥
चौकि बचन तब मूड़ उचरियो ॥
निकट आपनो दूत बुलायो ॥
तिन कहि भेद सकल समुझायो ॥९॥

दोहरा ॥

मत भए तुम मद भए सकियो कछू नहि पाइ ॥
मम प्रसाद तुमरे सदन आयो मोहन राइ ॥१०॥

चौपई ॥

मोहन तुम को अधिक रिझायो ॥
भाति भाति करि भाव लडायो ॥
तब तुम कछु संका न बिचारी ॥
भूखन बसत्र पाग दै डारी ॥११॥
ता सो अधिक केल तै कीनो ॥
भाति भाति ता कौ रस लीनो ॥
बीती रैनि प्रात जब भयो ॥
तब तुम ताहि बिदा करि दयो ॥१२॥
तब ते अधिक मत ह्वै सोयो ॥
परे परे आधो दिन खोयो ॥
मिटि मद गयो जबै सुध पाई ॥
तब मो कौ तै लयो बुलाई ॥१३॥
यह सुनि बात रीझि जड़ गयो ॥
छोरि भंडार अधिक धनु दयो ॥
भेद अभेद कछु नैकु न चीनो ॥
लूटयो हुतो लूटि धनु लीनो ॥१४॥
यह चरित्र वह निति बनावै ॥
मदरो प्रयाइ अधिक तिह स्वावै ॥
सुधि बिनु भयो ताहि जब जानै ॥
लेत उतारि जु कछु मनु मानै ॥१५॥

दोहरा ॥

ऐसे करै चरित्र वहु सकै मूड़ नहि पाइ ॥
मदरो अधिक पिवाइ कै मूंड मूंड लै जाइ ॥१६॥

CHARITAR १०५ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पाच चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥105॥1962॥अफजूं॥

चौपई ॥

चार यार मिलि मता पकायो ॥
हम कौ भूखि अधिक संतायो ॥
ता ते जतन कछू अब करियै ॥
बकरा या मूरख को हरियै ॥१॥
कोस कोस लगि ठाढे भए ॥
मन मै इहै बिचारत भए ॥
वह जा के आगे ह्वै आयो ॥
तिन ता सो इह भाति सुनायो ॥२॥
कहा सु एहि काधो पै लयो ॥
का तोरी मति को ह्वै गयो ॥
या को पटकि धरनि पर मारो ॥
सुख सेती निज धाम सिधारो ॥३॥

दोहरा ॥

भलौ मनुख पछानि कै तौ हम भाखत तोहि ॥
कूकर तै काधै लयो लाज लगत है मोहि ॥४॥

चौपई ॥

चारि कोस मूरख जब आयो ॥
चहूंअन यौ बच भाखि सुनायो ॥
साचु समुझि लाजत चित भयो ॥
बकरा स्वानि जानि तजि दयो ॥५॥

दोहरा ॥

तिन चारौ गहि तिह लयो भखियो ता कह जाइ ॥
अजि तज भजि जड़ि घर गयो छल नहि लख्यो बनाइ ॥६॥

CHARITAR १०६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छटि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥106॥1968॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

जोधन देव जाट इक रहै ॥
मैन कुअरि तिह त्रिय जग अहै ॥
जोधन देव सोइ जब जावै ॥
जार तीर तब त्रिया सिधावै ॥१॥
जब सोयो जोधन बडभागी ॥
तब ही मैन कुअरि जी जागी ॥
पति कौ छोरि जार पै गई ॥
लागी साधि द्रिसटि पर गई ॥२॥
तब ग्रिह पलटि बहुरि वहु आई ॥
जोधन देवहि दयो जगाई ॥
तेरी मति कौन कहु हरी ॥
लागी संधि द्रिसटि नहि परी ॥३॥
जोधन जगत लोग सभ जागे ॥
ग्रिह ते निकसि चोर तब भागे ॥
केते हने बाधि कई लए ॥

केते त्रसत भाजि कै गए ॥४ ॥
जोधन देव फुलित भयो ॥
मेरौ धाम राखि इह लयो ॥
त्रिय की अधिक बडाई करी ॥
जड़ कौ कछू खबर नहि परी ॥५ ॥

दोहरा ॥

धाम उबारियो आपनो कीनो चोर खुआर ॥
मीत जगायो आनि कै धंनि सु मैन कुआर ॥६ ॥

CHARITAR १०७ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सात चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥107॥1974॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

एक दिवस स्री कपिल मुनि इक ठा कियो पयान ॥
हेरि अपसरा बसि भयो सो तुम सुनहु सुजान ॥१ ॥
रंभा नामा अपसरा ता को रूप निहारि ॥
मुनि को गिरियो तुरत ही बीरज भूमि मझार ॥२ ॥
गिरियो रेति मुनि के जबै रंभा रहियो अधान ॥
डारि सिंधु सरिता तिसै सुर पुर करियो पयान ॥३ ॥

चौपई ॥

बहत बहत कंनिया तह आई ॥
आगे जहा सिंध को राई ॥
ब्रहमदत सो नैन निहारी ॥
तह ते काढि सुता करि पारी ॥४ ॥
ससिया संखिया ता की धरी ॥
भाति भाति सो सेवा करी ॥
जब जोबन ता के ह्वै आयो ॥
तब राजे इह मंत्र पकायो ॥५ ॥
पुंनू पातिसाह कौ चीनो ॥
पठै दूत ता को इक दीनो ॥
पुंनू बचन सुनत तह आयो ॥
राव ब्याह को बिवत बनायो ॥६ ॥

दोहरा ॥

म्रिगीअहि ते जा के सरस नैन बिराजत स्याम ॥
जीति लई ससि की कला या ते ससिया नाम ॥७ ॥

चौपई ॥

पुर के लोक सकल मिलि आए ॥
भाति भाति बादित्र बजाए ॥
मिलि मिल गीत सभै सुभ गावहि ॥
ससियहि हेरि सभै बलि जावहि ॥८ ॥

दोहरा ॥

नाद नफीरी कान्रहरे दुंदभि बजे अनेक ॥
तरुनि ब्रिधि बाला जिती ग्रिह महि रही न एक ॥९ ॥

चौपई ॥

अबला रही धाम कोऊ नाही ॥
हेरि रूप दुहूंअन बलि जाही ॥
इह भीतर पुंनू कहु को है ॥
सबज धनुख जा के कर सोहै ॥१० ॥
सवैया ॥
ढोल म्रिदंग बजे सभ ही घर यौ पुर आजु कुलाहल भारी ॥
गावत गीत बजावत ताल दिवावत आवति नागरि गारी ॥
भेर हजार बजी इक बार महा छबियार हसै मिलि नारी ॥
देहि असीस कहैं जगदीस इह जोरी जियो जुग चारि तिहारी ॥११ ॥
रूप अपार लखै न्रिप को पुरबासिन कौ उपजियो सुख भारो ॥
भीर भई नर नारिन की सभहूं सभ सोक बिदा करि डारो ॥
पूरन पुंन्य प्रताप ते आजु मिलियो मन भावत मीत पियारो ॥
आवत जाहि कहै मन माहि सु बाल जीओ पति लाल तिहारो ॥१२ ॥
केसरि अंग बरातिन के छिरके मिलि बाल सु आनंद जी के ॥
छैलनि छैल छके चहूं ओरन गावत गीत सुहावत नीके ॥
राज को रूप लखे अति ही गन राजन के सभ लागत फीके ॥
यौ मुसकाहि कहै मन माहि सभे बलि जाहि पियारी के पी के ॥१३ ॥
सात सुहागनि लै बटनो घसि लावत है पिय के तन मै ॥
मुरछाइ लुभाइ रही अबला लखि लालची लाल तिसी छिन मै ॥
न्रिप राज सु राजत है तिन मो लखि यौ उपमा उपजी मन मै ॥
सजि साजि बराजत है सु मनो निसि राज नछत्रन के गन मै ॥१४ ॥
सिंधु के संख सुरेस के आवज सूर के नाद सुनै दरवाजे ॥
मौजन के मुरली मधुरी धुनि देवन के बहु दुंदभि बाजे ॥
जीत के जोग महेसन के मुख मंगल के ग्रिह मंदल राजे ॥
ब्याह तही न्रिप राज तबै अति आनंद के अति आनक बाजे ॥१५ ॥
ब्याह भयो जब ही इह सो तब बात सुनी न्रिप की बर नारी ॥
चौकि रही अति ही चित मै कछु और हुती अब और बिचारी ॥
मंत्र करे लिखि जंत्र घने अरु तंत्रन सो इह बात सुधारी ॥
लागी उचाट रहे चित मै कबहूं न सुहाइ पिया को पिआरी ॥१६ ॥

चौपई ॥

यौ उचाट अति ही तिह लागी ॥
नीद भूखि सिगरी ही भागी ॥
सोत उठै चकि कछु न सुहावै ॥
ग्रिह को छोरि बाहरो धावै ॥१७ ॥

दोहरा ॥

तब ससिया अति चमकि चित ता कौ कियो उपाइ ॥
सखी जिती स्यानी हुती ते सभ लई बुलाइ ॥१८ ॥

चौपई ॥

तब सखियन यह कियौ उपाई ॥
जंत्र मंत्र करि लयो बुलाई ॥
ससिया संग प्रेम अति भयो ॥

पहिली त्रिय परहरि करि दयो ॥१९ ॥
भाति भाति ता सो रति मानै ॥
बरस दिवस को इक दिन जानै ॥
ता पर मत अधिक न्रिप भयो ॥
ग्रिह को राज बिसरि सभ गयो ॥२० ॥

दोहरा ॥

एक तरुनि दूजे चतुरि तरुन तीसरे पाइ ॥
चहत लगायो उरन सो छिनकि न छोरियो जाइ ॥२१ ॥

चौपई ॥

रैनि दिवस ता सो रति मानै ॥
प्रानन ते प्यारो पहिचानै ॥
लागी रहत तवन के उर सो ॥
जैसो भाति माखिका गुर सो ॥२२ ॥
सवैया ॥
लाल को ख्याल अनूपम हेरि सु रीझ रही अबला मन माही ॥
छैलनि छैल छके रस सो दोऊ हेरि तिने मन मै बलि जाही ॥
काम कसी सु ससी ससि सी छबि मीत सो नैन मिले मुसकाही ॥
यौ डहकी बहकी छबि यार पीया हूं को पाइ पतीजत नाही ॥२३ ॥

कबितु ॥

जोबन के जोर जोरावरी जागी जालिम सो जग ते अन्नयारीयौ बिसारी सुधि चीत की ॥
निसि दिन लागियो रहित ता सो छबि की ज्यों एकै ह्वै गई सु मानो ऐसी राजनीत की ॥
अपने ही हाथन बनावत सिंगार ता के पास की सखी न कीन नैक कु प्रतीत की ॥
अंग लपटाइ मुखु चापि बलि जाइ ता के ऐसो ही पियारी जानै प्रीतम सो प्रीत की ॥२४ ॥

दोहरा ॥

रूप लला को लालची लोचन लाल अमोल ॥
बंक बिलौकनि खरच धनु मो मन लीनो मोल ॥२५ ॥
सवैया ॥
रीझ रही अबला मन मै अति ही लखि रूप सरूप की धानी ॥
स्रयान छुटी सिगरी सभ की लखि लाल को खियाल भई अति यानी ॥
लाज तजी सजि साज सभै लखि हेरि रही सजनी सभ स्यानी ॥
हौ मन होरि रही न हटियो बिनु दामन मीत के हाथ बिकानी ॥२६ ॥
ससिया बाच ॥
अंग सभै बिनु संग सखी सिव को अरि आनि अनंग जग्यो ॥
तब ते न सुहात कछू मुहि को सभ खान औ पान सियान भग्यो ॥
झटकौ पटकौ चित ते झट दै न छूटे इह भाति सो नेह लग्यो ॥
बलि हौ जु गई ठग कौ ठगनै ठग मै न ठग्यो ठग मोहि ठग्यो ॥२७ ॥

कबितु ॥

देखे मुख जीहौ बिनु देखे पिय हूं न पाणी तात मात त्याग बात इहै है प्रतीत की ॥
ऐसो प्रन लैहौ पिय कहै सोई काज कैहौ अति हीं रिझैहौ यहै सिछा राजनीत की ॥
जौ कहै बकैहौ कहै पानी भरि आनि दैहौ हेरे बलि जैहौ सुन सखी बात चीत की ॥
लगन निगौडी लागी जा तै नीद भूखि भागी प्यारो मीत मेरो हो पियारी अति मीत की ॥२८ ॥

चौपई ॥

यह सभ बात तवन सुनि पाई ॥
पहिले ब्याहि धाम मै आई ॥
या सौ प्रीति सुनत रिसि भरी ॥
मसलत जोरि सूर निजु करी ॥२९॥
जनमे कुअरि बाप के रही ॥
ह्वै बेरकत मेखला गही ॥
घात आपणे पत को करिहो ॥
सुत के छत्र सीस पर धरिहो ॥३०॥
जनु ग्रिह छोरि तीरथन गई ॥
मानहु रहत चंद्र ब्रत भई ॥
या सुहाग ते राडै नीकी ॥
या की लगत राजेस्वरि फीकी ॥३१॥

दोहरा ॥

खिलत अखेटक जो हनै हमरे पति को कोइ ॥
तो सुनि कै ससिया मरे जियत न बचि है सोइ ॥३२॥

चौपई ॥

बैठ मंत्र तिन यहै पकायो ॥
अमित दरबु दै दूत पठायो ॥
खिलत अखेटक राव जबै है ॥
तब मेरो उर मै सर खैहै ॥३३॥
ता को कालु निकट जब आयो ॥
पुंनू साह सिकार सिधायो ॥
जब गहिरे बन बीच सिधारियो ॥
तनि धनु बान सत्रु तब मारियो ॥३४॥
लागत तीर बीर रिसि भरियो ॥
तुरै धवाइ घाइ तिह करियो ॥
ता को मारि आपु पुनि मरियो ॥
सुर पुर माझि पयानो करियो ॥३५॥

दोहरा ॥

मारि तवन को राव जी परियो धरनि पर आइ ॥
भ्रितन निकट पहूंचि कै लयो गरे सो लाइ ॥३६॥

चौपई ॥

ऐसो हाल चाकरन भयो ॥
जनुक धनी न्रिधनी ह्वै गयो ॥
न्रिप दै कहा धाम हम जैहै ॥
कहा रानियहि बकत्र दिखै है ॥३७॥
नभ बानी तिन को तब भई ॥
भ्रित सुधि कहा तुमारी गई ॥
जोधा बडो जूझि जह जावै ॥
रन छित ते तिन कौन उचावै ॥३८॥

दोहरा ॥

ता ते या की कबर खनि गाडहु इही बनाइ ॥

अस्व बसत्र लै जाहु घर देहु संदेसो जाइ ॥३९॥
बानी सुनि गाडियो तिसै भए पवन भ्रित भेस ॥
अस्व बसत्र लै लाल के बालहि दयो संदेस ॥४०॥

चौपई ॥

बैठी बाल जहा बडभागी ॥
चित चोर की चितवनि लागी ॥
तब लौ खबरि चाकरन दई ॥
अरुन हुती पियरी ह्वै गई ॥४१॥

दोहरा ॥

चड़ि बिवान तह त्रिय चली जहा हन्यो निजु पीय ॥
कै लै ऐहौं पीय कौ कै तह देहौं जीय ॥४२॥

चौपई ॥

चली चली अबला तह आई ॥
दाबियो जहा मीत सुखदाई ॥
कबरि निहारि चक्रित चित भई ॥
ताही बिखै लीन ह्वै गई ॥४३॥

दोहरा ॥

मरन सभन के मूंड पै सफल मरन है ताहि ॥
तनक बिखै तन कौ तजै पिय सो प्रीति बनाइ ॥४४॥
तन गाडियो जह तुम मिले अंग मिलियो सरबंग ॥
सभ कछु तजि ग्रिह को चलियो प्रान पियारे संग ॥४५॥
पवन पवन आनल अनल नभ नभ भू भू संग ॥
जल जल के संग मिलि रहियो तनु पिय के सरबंग ॥४६॥

चौपई ॥

पिय हित देह तवन त्रिय दई ॥
देव लोक भीतर लै गई ॥
अरधासन बासव तिह दीनो ॥
भाति भाति सौ आदरु कीनो ॥४७॥

दोहरा ॥

देव बधून अपछरन लयो बिवान चड़ाइ ॥
जै जैकार अपार हुअ हरखे सुनि सुर राइ ॥४८॥
मछरी औ बिरहीन के बध को कहा उपाइ ॥
जल पिय ते बिछुराइ यहि तनिक बिखै मरि जाइ ॥४९॥
पाप नरक ते न डरी करी सवति की कानि ॥
अति चित कोप बढाइ कै पिय लगवायो बान ॥५०॥

चौपई ॥

सवति साल अति ही चित धारियो ॥
निजु पति सो सायक सौ मारियो ॥
या सुहाग ते राडै रहि हौ ॥
प्रभ को नाम निति उठि कहि हौ ॥५१॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ आठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥108॥2025॥अफजूं॥*

चौपई ॥

यह चलि खबर जात भी तहा ॥
बैठी सभा धरमु की जहा ॥
सवति साल तिन त्रियहि निहारियो ॥
निजु पति बान साथ हनि डारियो ॥१॥
धरमराइ बाच ॥

दोहरा ॥

जा दुख ते जिन इसत्रियहि निजु पति हनियो रिसाइ ॥
ता दुख ते तिह मारियै करियै वहै उपाइ ॥२॥

चौपई ॥

उरबसि प्रात हुती सु नगर मै ॥
नाचत हुती काल के घर मै ॥
तिह बीरो तिह सभा उचायो ॥
सकल पुरख को भेख बणायो ॥३॥
उरबसी बाच ॥
मुसकिल हनन तवन को गुनियै ॥
जा को अधिक सील जगु सुनियै ॥
जा को चित चंचल पहिचानहु ॥
ता को लई हाथ मै मानहु ॥४॥
यौ कहि निकसि मोल हय लयो ॥
जा पै लाख टका दस दयो ॥
चमकि चलै जब तुरे बिराजै ॥
जा को निरखि इंद्र हय लाजै ॥५॥
आप अनूप बसत्र तन धारै ॥
भूखन सकल जराइ सु धारै ॥
लाबे केस काध पर छोरे ॥
जनुक फुलेलहि जात निचोरे ॥६॥
अंजन आंजि आखियन दयो ॥
जनु करि लूटि सिंगारहि लयो ॥
जुलफ जंजीर जालमै सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥७॥
राजत भ्रिकुटि धनुक सी भारी ॥
मोहत लोक चौदहनि प्यारी ॥
जा की नैक द्रिसटि मै परै ॥
ता की सकल बुधि परहरे ॥८॥

दोहरा ॥

खटमुख मुख खट पंच सिव बिधि कीने मुख चारि ॥
उरबसि केरे रूप को तऊ न पायो पार ॥९॥

चौपई ॥

आयुध सकल अंग करे ॥
सोहत सभ साजन सौ जरे ॥
हीरन की मुकता जग सोहै ॥
ससि को मनो तारिका मोहै ॥१०॥
सवैया ॥
आयुध धारि अनूपम सुंदरि भूखन अंग अजाइब धारे ॥
लाल को हार लसै उर भीतरि भान ते जानु बडे छबियारे ॥
मोतिन की लरकै मुख पै म्रिगनैनि फबे म्रिग से कजरारे ॥
मोहत है सभ ही के चितै निज हाथ मनो ब्रिजनाथ सुधारे ॥११॥
छोरि दए कच काधन ऊपर सुंदर पाग सौ सीस सुहावै ॥
भूखन चारु लसै सभ अंगन भाग भरियो सभ ही कह भावै ॥
बाल लखै कहि लाल तिसै लटकावत अंगन मै जब आवै ॥
रीझत कोटि सुरी असुरी सुधि हेरि छुटै सत हू छुट जावै ॥१२॥
भूखन धारि चड़ियो रथ ऊपरि बाधि क्रिपान निखंग बनायो ॥
खात तंबोल बिराजत सुंदर देव अदेवन को बिरमायो ॥
बास व नैन सहंस्रन सौ छबि हेरि रहियो कछु पार न पायो ॥
आपु बनाइ अनूपम को बिधि ऐचि रहियो दुति अंत न पायो ॥१३॥
पान चबाइ भली बिधि साथ जराइ जरै हथियार बनाए ॥
अंजन आंजि अनूपम सुंदरि देव अदेव सभै बिरमाए ॥
कंठ सिरीमनि कंकन कुंडल हार सु नारि हीए पहिराए ॥
किंनर जछ भुजंग दिसा बिदिसान कै लोक बिलोकिन आए ॥१४॥
इंद्र सहंस्र बिलोचन सौ अविलोक रहियो छबि अंतु न आयो ॥
सेख असेखन ही मुख सौ गुन भाखि रहो परु पार न पायो ॥
रुद्र पियारी की सारी की कोर निहारन कौ मुख पंच बनायो ॥
पूत किये खट चारि बिधै चतुरानन याही ते नामु कहायो ॥१५॥
कंचन कीर कलानिधि केहर कोक कपोत करी कुरराने ॥
कलपद्रुमका अनुजा कमनी बिनु दारिम दामनि देखि बिकाने ॥
रीझत देव अदेव सभै नर देव भए छबि हेरि दिवाने ॥
राज कुमार सो जानि परै तिह बाल के अंग न जात पछाने ॥१६॥

दोहरा ॥

दस सीसन रावन ररे लिखत बीस भुज जाइ ॥
तरुनी के तिल की तऊ सक्यो न छबि को पाइ ॥१७॥
सवैया ॥
लालन को सरपेच बध्यो सिर मोतिन की उर माल बिराजै ॥
भूखन चारु दिपै अति ही दुति देखि मनोजव को मनु लाजै ॥
मोद बढै निरखे चित मै तनिकेक बिखै तन को दुख भाजै ॥
जोबन जोति जगै सु मनो सुरराज सुरान के भीतर राजै ॥१८॥
छोरै है बंद अनूपम सुंदरि पान चबाइ सिंगार बनायो ॥
अंजन आंजि दुहूं अखियान सु भाल मै केसरि लाल लगायो ॥
झूमक देत झुकै झुमके कबि राम सु भाव भलो लखि पायो ॥
मानहु सौतिन के मन को इक बारहि बाधि कै जेल चलायो ॥१९॥
हार सिंगार करे सभ ही तिन केस छुटे सिर स्याम सुहावै ॥
जोबन जोति जगै अति ही मुनि हेरि डिगै तप ते पछुतावै ॥
किंनर जछ भुजंग दिसा बिदिसान की बाल बिलोकन आवै ॥
गंध्रब देव अदेवन की त्रिय हेरि प्रभा सभ ही बल जावै ॥२०॥

दोहरा ॥

ऐसो भेख बनाइ कै तह ते करियो पियान ॥

पलक एक बीती नही तहा पहूंची आनि ॥२१॥

चौपई ॥

एती कथा सु या पै भई ॥
अब कथ चलि तिह त्रिय पै गई ॥
निजु पति मारि राज जिन लयो ॥
लै सु छत्रु निजु सुत सिर दयो ॥२२॥
मुखु फीको करि सभन दिखावै ॥
चित अपने मै मोद बढावै ॥
सो पुंनू निजु सिर ते टारो ॥
राज कमैहै पुत्र हमारो ॥२३॥

दोहरा ॥

सवति साल ते मै जरी निजु पति दयो संघार ॥
बिधवा ही ह्वै जीवि हौ जौ राखे करतार ॥२४॥

चौपई ॥

सवति साल सिर पै तहि सहियै ॥
बिधवा ही ह्वै कै जग रहियै ॥
धन को टोटि कछू मुहि नाही ॥
ऐसे कहै अबला मन माही ॥२५॥

दोहरा ॥

मन भावत को भोग मुहि करनि न देतो राइ ॥
अबि चित मै जिह चाहि हो लैहो निकटि बुलाइ ॥२६॥

चौपई ॥

बैठि झरोखे मुजरा लेवै ॥
जिह भावै ता को धनु देवै ॥
राज काज कछु बाल न पावै ॥
खेल बिखै दिनु रैनि गवावै ॥२७॥
एक दिवस तिन त्रिय यौ कीयो ॥
बैठि झरोखे मुजरा लीयो ॥
सभ सूरन को बोलि पठायो ॥
यह सुनि भेव उरबसी पायो ॥२८॥
भूखन वहै अंग तिन धरे ॥
निजु आलै तै निकसनि करे ॥
मुसकी ताजी चड़ी बिराजै ॥
निस को मनो चंद्रमा लाजै ॥२९॥
सवैया ॥
स्याम छुटे कच काधन ऊपरि सोभित है अति ही घुंघरारे ॥
हार सिंगार दिपै अति चारु सु मो पहि ते नहि जात उचारे ॥
रीझत देव अदेव सभै सु कहा बपुरे नर देव बिचारे ॥
बाल कौ रोक सभै तजि सोक त्रिलोक को लोक बिलोकित सारे ॥३०॥
हार सिंगार बनाइ कै सुंदरि अंजन आखिन आंजि दीयो ॥
अति ही तन बसत्र अनूप धरे जन कंद्रप को बिनु द्रप कीयो ॥
कलगी गजगाह बनी घुंघरार चड़ी हय कै हुलसात हीयो ॥
बिनु दामन ही इह कामनि यौ सभ भामिनि को मन मोल लीयो ॥३१॥

सीस फबै कलगी तुररो सुभ लालन को सरपेच सुहायो ॥
हार अपार धरे उर मै मनु देखि मनोजव को बिरमायो ॥
बीरी चबात कछू मुसकात बंधे गजगाह तुरंग नचायो ॥
स्याम भनै महि लोक की मानहु माननि को मनु मोहनु आयो ॥३२॥

दोहरा ॥

प्रभावती रानी तबै ता को रूप निहारि ॥
रीझि अधिक चित मै रही हर अरि सर गयो मारि ॥३३॥

कबितु ॥

कैधो काहू रिखि इंद्र आसन ते टारि दयो कैधो इह सूरज सरूप धरि आयो है ॥
कैधो चंद्र चंद्रलोक छोरि कै सिपाही बन मेरे जान तीरथ अन्नहैबै को सिधायो है ॥
कैधो है अनंग अरुधंगक के अंतक ते मानुख को रूप कै कै आपु कौ छपायो है ॥
कैधो यह ससिया के रसिया नै कोप कै कै मोरे छलबे कौ कछू छल सो बनायो है ॥३४॥

चौपई ॥

जब लौ बैन कहन नहि पाई ॥
तब लौ निकट गयो वहु आई ॥
रूप निहारि मत ह्वै झूली ॥
ग्रिह की सकल ताहि सुधि भूली ॥३५॥
सोरठा ॥
पठए दूत अनेक अमित दरबु तिन कौ दयो ॥
कहियो महूरत एक क्रिपा करो इह ग्रिह बसो ॥३६॥

कबितु ॥

कैधौ अलिकेस हो कि ससि हो दिनेस हो कि रूप हूं कि भेस हो जहान मै सुहाए हो ॥
सेस हो सुरेस हो गनेस हो महेस हो जी कैधौ जगतेस तुम बेदन बताए हो ॥
कालिंद्री के एस हो कि तुम ही जलेस हो बतावौ कौन देस के नरेसुर के जाए हो ॥
कहो मेरे एस किह काज निजु देस छोरि चाकरी को भेस कै हमारे देस आए हो ॥३७॥
हौ न अलिकेस हौ न ससि हौ दिनेस हौ न रूप हू के भेस कै जहान मै सुहायो हौं ॥
सेस न सुरेस हौ गनेस हौ महेस नही हौ न जगतेस हौ जु बेदन बतायो हौ ॥
कालिंद्री के एस अथितेस मै जलेस नही दछिन के देस के नरेसुर को जायो हौ ॥
मोहन है नाम आगे जैहो ससुरारे धाम सोभा सुनि तुमरी तमासे काज आयो हौ ॥३८॥
सवैया ॥
तेरी सोभा सुनि कै सुनि सुंदरि आयो ईहा चलि कोस हजारौ ॥
आजु महूरत है तित को कछु साथ मिलै नही त्रास बिचारौ ॥
रीत है धाम इहै हमरे निजु नारि बिना नही और निहारौ ॥
खेलो हसौ सुख सो तुम हूं मुहि देहु बिदा ससुरारि सिधारौ ॥३९॥
बात बिदा की सुनी जब ही बिनु चैन भई न सुहावत जी की ॥
लाल गुलाल सी बाल हुती ततकाल भई मुख की छबि फीकी ॥
हाथ उचाइ हनी छतिया उर पै लसै सौ मुंदरी अंगुरी की ॥
देखन को पिय कौ तिय की प्रगटी अखिया जुग जानुक ही की ॥४०॥

दोहरा ॥

मनु तरफत तव मिलन को तनु भेटत नहि जाइ ॥
जीभ जरो तिन नारि की दै तुहि बिदा बुलाइ ॥४१॥

कबितु ॥

कोऊ दिन रहो हसि बोलो आछी बातै कहो कहा ससुरारि की अनोखी प्रीति पागी है ॥
यहै राज लीजै या को राजा ह्वै कै राज कीजै हाथु चाइ दीजै मोहि यहै जिय जागी है ॥
तुम को निहारि किय मार नै सु मार मो कौ ता ते बिसंभार भई नींद भूखि भागी है ॥
तहा कौ न जैये मेरी सेज को सुहैयै आनि लगन निगौडी नाथ तेरे साथ लागी है ॥४२॥
एक पाइ सेवा करौ चेरी ह्वै कै नीर भरौ तुहीं कौ बरौ मोरी इछा पूरी कीजियै ॥
यहै राज लेहु हाथ उठाइ मो कौ टूक देहु हम सौ बढाव नेहु जा ते लाल जीजियै ॥
जौ कहौ बिकैहौ जहा भाखो तहा चली जैहौ ऐसो हाल हेरि नाथ कबहूं प्रसीजियै ॥
याही ठौर रहो हसि बोलो आछी बातै कहो जान ससुरारि को न नामु फेर लीजियै ॥४३॥
सवैया ॥
क्यो निजु त्रिय तजि के सुनि सुंदरि तोहि भजे ध्रम जात हमारो ॥
राज करौ अपने तुम ही सुख सो इन धामन बीच बिहारो ॥
मै प्रगटियो जब ते तब ते तजि कानि त्रिया नहि आन निहारो ॥
क्या तुम ख्याल परो हमरे मन धीर धरो रघुनाथ उचारो ॥४४॥
क्रोरि उपाइ करो ललना तुम केल करे बिनु मै न टरोंगी ॥
भाजि रहोब कहा हम ते तुम भाति भली तुहि आज बरोंगी ॥
जौ न मिलो तुम आजु हमै अब ही तब मै बिख खाइ मरोंगी ॥
प्रीतम के दरसे परसे बिनु पावक मैन प्रवेस करोंगी ॥४५॥
मोहन बाच ॥

चौपई ॥

रीति यहै कुल परी हमारे ॥
सु मै कहत हो तीर तिहारे ॥
चल किसहूं के धाम न जाही ॥
चलि आवै छोरै तिह नाही ॥४६॥
जब यह बात त्रियहि सुनि पाई ॥
निजु मति बीच यहै ठहराई ॥
हौं चलि धाम मीत के जैहौ ॥
मन भावत के भोग कमैहौ ॥४७॥
सवैया ॥
आजु पयान करोगी तहा सखी भूखन बसत्र अनूप बनाऊ ॥
मीत के धाम बद्यो मिलिबो निस होत नही अब ही मिल आऊ ॥
सावन मो मन भावन के लीए सात समुंद्रन के तरि जाऊ ॥
क्रोरि उपाउ करौ सजनी पिय को तन कै तन भेटन पाऊ ॥४८॥

चौपई ॥

जब ते मै भव मो भव लीयो ॥
आनि त्रिया सौ भोग न कीयो ॥
जौ ऐसो चित रिझियो तिहारो ॥
तौ कहा बसि चलत हमारो ॥४९॥
न पियान धाम तव करो ॥
नरक परन ते अति चित डरो ॥
तुम ही धाम हमारे ऐयहु ॥
मन भावत को भोग कमैयहु ॥५०॥
बाते करत निसा परि गई ॥
त्रिय कौ काम करा अति भई ॥
अधिक अनूपम भेस बनायो ॥
ता कौ तिह ग्रिह ओर पठायो ॥५१॥
तब मोहन निजु ग्रिह चलि आयो ॥
अधिक अनूपम भेस बनायो ॥

टकियन की चपटी उरबसी ॥
मोम मारि आसन सौ कसी ॥५२॥
बिखि को लेप तवन मौ कीयो ॥
सिवहि रिझाइ माग करि लीयो ॥
जा के अंग तवन सौ लागै ॥
ता कै लै प्रानन जम भागै ॥५३॥
तब लौ नारि गई वहु आई ॥
कामातुर ह्वै कै लपटाई ॥
ता को भेद कछू नहि जान्यो ॥
उरबसि कौ करि पुरख पछान्यो ॥५४॥
ता सो भोग अधिक जब कीनो ॥
मन मै मानि अधिक सुख लीनो ॥
बिखु के चड़े मत तब भई ॥
जम के धाम बिखै चलि गई ॥५५॥
उरबसि जब ता को बध कीयो ॥
सुर पुर को मारग तब लीयो ॥
जहा काल सुभ सभा बनाई ॥
उरबसि यौ चलि कै तह आई ॥५६॥
ता कौ अमित दरबु तिन दीयो ॥
मेरो बडो काम तुम कीयो ॥
निजु पति कौ जिन त्रियहि संघारियो ॥
ता को तै इह भाति प्रहारियो ॥५७॥

दोहरा ॥

जा दुख ते जिनि इसत्रियहि निजु पति हन्यो रिसाइ ॥
तिसी दोख मारियो तिसै धंन्य धंन्य जम राइ ॥५८॥

CHARITAR १०९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ नौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥109॥2083॥अफजूं॥*

सवैया ॥
पूरब देस को एस रूपेस्वर राजत है अलकेस्वर जैसो ॥
रूप अपार करियो करतार किधौ असुरारि सुरेसन तैसो ॥
भार भरे भट भूधर की सम भीर परे रन एकल जैसो ॥
जंग जगे अरधंग करे अरि सुंदर है मकरध्वज कैसो ॥१॥

चौपई ॥

ता के पूत होत ग्रिहि नाही ॥
चिंत यहै प्रजा मन माही ॥
तब तिह मात अधिक अकुलाई ॥
एक त्रिया तिह निकट बुलाई ॥२॥
कंन्या एक राव की लही ॥
सो न्रिप को बरबे कह कही ॥
राइ पुरा के भीतर आनी ॥
रोपेस्वर के मन नहि मानी ॥३॥
जन कहि रहे ब्याह न कीयो ॥
ताहि बिसारि चित ते दीयो ॥
तवन नारि हठनि हठि गही ॥

ता के द्वार बरिस बहुत रही ॥४॥

सवैया ॥

राव रुपेस्वर कुअरि थो न्रिप सो कुपि कै तिह ऊपर आयो ॥
भेद सुन्यो इन हूं लरबै कह सैन जितो जु हुते सु बुलायो ॥
दुंदभि भेर बजाइ रिसाइ चड़ियो दल जोरि तुरंग नचायो ॥
ब्रहम कुमार कै धार हजार मनो जल रासि कै भेटन धायो ॥५॥

चौपई ॥

उमडे अमित सूरमा दुहि दिसि ॥
छाडत बान तानि धनु करि रिसि ॥
धुकि धुकि परे बीर रन भारे ॥
कटि कटि गए क्रिपानन मारे ॥६॥
नाचत भूत प्रेत रन माही ॥
जंबुक गीध मासु लै जाही ॥
कटि कटि मरे बिकट भट लरि कै ॥
सुर पुर बसे बरंगनिन बरि कै ॥७॥

दोहरा ॥

बज्र बान बरछिन भए लरत सूर समुहाइ ॥
झटपट कटि छित पर गिरे बसै देव पुर जाइ ॥८॥

सवैया ॥

दारुन लोह परियो रन भीतर कौन बियो जु तहा ठहरावै ॥
बाजी पदात रथी रथ बारुन जूझे अनेक ते कौन गनावै ॥
भीर क्रिपानन सैथिन सूलन चक्रन कौ चित भीतरि ल्यावै ॥
कोप करे कटि खेत मरे भट सो भव भीतर भूलि न आवै ॥९॥
ढाल गदा प्रघ पटिस दारुण हाथ त्रिसूलन को गहि कै ॥
बरछी जमधार छुरी तरवारि निकारि हजार चले खहि कै ॥
जग को जियबो दिन चारि कु है कहि बाजी नचाइ परे कहि कै ॥
न टरे भट रोस भरे मन मै तन मै ब्रिण बैरिन के सहि कै ॥१०॥
बीर दुहूं दिस के कबि स्याम मुख ऊपर ढालन को धरि जूटे ॥
बान कमान धरे मठसान अप्रमान जुआनन के रन छूटे ॥
राज मरे कहूं ताज गिरे कहूं जूझे अनेक रथी रथ टूटे ॥
पौन समान बहे बलवान सभै दल बादल से चलि फूटे ॥११॥
बाधि कतारिन कौ उमडे भट चक्रन चोट तुफंगन की स्रयों ॥
तीरन सौ बर बीरन के उर चीर पटीर मनो बरमा त्यों ॥
मूंडन ते पग ते कटि ते कटि कोटि गिरे करि साइल से इयों ॥
जोरि बडो दलु तोरि महा खल जीति लए अरि भीतन की ज्यों ॥१२॥

चौपई ॥

ऐसी बिधि जीतत रन भयो ॥
बहुरि धाम को मारगु लयो ॥
तउनै नारि भेद सुनै पायो ॥
रन कौ जीति रुपेस्वर आयो ॥१३॥
आछे अरुन बसत्र तन धारे ॥
दुहूं हाथ नरिएर उछारे ॥
हुतो दरब सो सकल लुटायो ॥
आपु सती कौ भेख बनायो ॥१४॥
जिह मारग राज ह्वै आयो ॥
तही आनि त्रिय चितहि बनायो ॥

तब लौ राइ आइ ही गयो ॥
हेरत तवन सती कौ भयो ॥१५॥
राइ बिहसि तिह ओर निहारियो ॥
निकट बोलि भ्रित बचन उचारियो ॥
जा को सोध लेहु तुम जाई ॥
कौन सती ह्वैबै कह आई ॥१६॥

दोहरा ॥

सुनत राव को दूत बच तहा पहूच्यो जाइ ॥
सकल सती को भेद लै न्रिप पति कहियो सुनाइ ॥१७॥

चौपई ॥

यौ सुन बचन रीझि न्रिप रहियो ॥
धंनि धंनि मुख ते तिह कहियो ॥
हम या सो कछु प्रीति न जागी ॥
मेरे हेत देन जिय लागी ॥१८॥
ध्रिग मो को मै भेद न चीनो ॥
अब लौ ब्याह न या सो कीनो ॥
जिन नारिन सौ प्रीति लगाई ॥
सो इह समै काम नहि आई ॥१९॥
ता ते मै इह अबै बियाहूं ॥
तन लगि या सो नेह निबाहूं ॥
बरति अगनि ते ताहि उबारो ॥
मो सो जरी न तन को जारो ॥२०॥
चिता अगनि जो सती जगाई ॥
बिरहानल सोई ठहिराई ॥
ता के तीर भावरै दीनी ॥
राक हुती रानी बिधि कीनी ॥२१॥
एही चरित्र न्रिपति को पायो ॥
सभ रानिन चित ते बिसरायो ॥
अपनी आग्या के बसि कीनो ॥
जानुक दास मोल को लीनो ॥२२॥

दोहरा ॥

ता दिन तै ता सो घनी प्रीति बढी सुख पाइ ॥
सभ रनियन को राव के चित ते दियो भुलाइ ॥२३॥

CHARITAR ११० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ दस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥110॥2106॥अफजूं॥*

चौपई ॥

दुरजन सिंघ राव इक भारी ॥
दिसा चारि जिह करत जुहारी ॥
ता को रूप हेरि बलि जावहि ॥
प्रजा अधिक मन मै सुखु पावहि ॥१॥

दोहरा ॥

ताहि देस आवत जु जन ता को रूप निहारि ॥
ह्वै चेरे तिह पुर बसै सभ धन धाम बिसारि ॥२॥

चौपई ॥

जब वहु न्रिपति अखेटक आवै ॥
स्वानन ते बहुत म्रिगन गहावै ॥
बाजन साथ आबियन लेहीं ॥
अमित दरबु हुसनाकन देही ॥३॥
नितिप्रति अधिक म्रिगन कौ मारै ॥
सदा सु बन के बीच बिहारै ॥
दुहू हाथ सौ तीर चलावै ॥
ता ते कहा जान पसु पावै ॥४॥
एक दिवस न्रिप अखिट सिधायो ॥
कारो हरिन हेरि ललचायो ॥
सींगन ते जीयत गहि लैहौ ॥
या कौ घाइ न लागन दैहौ ॥५॥
हेरि हरिन कह तुरै धवायो ॥
पाछो चलियो तवन को आयो ॥
जब परदेस गयो चलि सोई ॥
चाकर तहा न पहूंच्यो कोई ॥६॥
राज प्रभा इक राज दुलारी ॥
राजा को प्रानन ते प्यारी ॥
धौलर ऊच तवन कौ राजै ॥
मनो चंद्रमा कोल बिराजै ॥७॥
तपती नदी तीर तिह बहै ॥
सूरज सुता ताहि जग कहै ॥
पंछी तहा चुगत अति सोहै ॥
हेरनिहारन को मनु मोहै ॥८॥
सुंदर ताहि झरोखे जहा ॥
काढ्यो आनि राइ म्रिग तहा ॥
तुरै धवाइ स्रमित तिह कीनो ॥
स्रिंगन ते स्रिंगी गहि लीनो ॥९॥
यह कौतक न्रिप सुता निहारियो ॥
यहै आपने ह्रिदै बिचारियो ॥
मै अब ही इह न्रिप कौ बरौ ॥
नातर मारि कटारी मरौ ॥१०॥
ऐसी प्रीति राइ सौ जोरी ॥
काहू पास जात नहि तोरी ॥
नैन सैन दै ताहि बलायो ॥
मैन भोग तहि साथ कमायो ॥११॥
ऐसी फबत दुहूंन की जोरी ॥
जनुक क्रिसन ब्रिखभान किसोरी ॥
दुहूं हाथ तिह कुचन मरोरै ॥
जनु खोयो निधनी धनु टोरै ॥१२॥
बार बार तिह गरे लगावै ॥
जनु कंद्रप को द्रपु मिटावै ॥
भोगत ताहि जंघ लै काधे ॥
जनु द्वै मैन तरकसन बाधे ॥१३॥
भाति भाति सौ चुंबन कीने ॥

भाति भाति आसन त्रिय दीने ॥
गहि गहि ता सो गरे लगाई ॥
मानहु रंक नवौ निधि पाई ॥१४॥
सवैया ॥
मीत अलिंगन आसन चुंबन कीने अनेक ते कौन गनै ॥
मुसकात लजात कछू ललता सु बिलास लसै पिय साथ तनै ॥
झमकै जर जेब जराइन की दमकै मनो दामनि बीच घनै ॥
लखि नैकु प्रभा सजनी सभ ही इह भाति रहीअति रीसि मनै ॥१५॥
कंचन से तन है रमनीय द्रिगंचल चंचल है अनियारे ॥
खंजन से मन रंजन राजत कंजन से अति ही कजरारे ॥
रीझत देव अदेव लखे छबि मैन मनो दोऊ साचन ढारे ॥
जोबन जेब जगे अति ही सुभ बाल बने द्रिग लाल तिहारे ॥१६॥

दोहरा ॥

प्रीत दुहान की अति बढी त्रीय पिया के माहि ॥
पट छूटचो निरपट भए रहियो कपट कछु नाहि ॥१७॥
भाति भाति आसन करै तरुन तरुनि लपटाइ ॥
मोद दुहन को अति बढचो गनना गनी न जाइ ॥१८॥

चौपई ॥

चिमटि चिमटि न्रिप केल कमावै ॥
लपटि लपटि तरुनी सुखु पावै ॥
बहसि बहसि आलिंगन करही ॥
भाति भाति सौ बचन उचरी ॥१९॥

दोहरा ॥

भाति भाति आसन करै भाति भाति सुख पाइ ॥
लपटि लपटि सुंदर रमै चिमटि चिमटि त्रिय जाइ ॥२०॥

चौपई ॥

भाति भाति के अमल मंगाए ॥
बिबिध बिधन पकवान पकाए ॥
दारू पोसत और धतूरो ॥
पान डराइ कसुंभड़ो रूरो ॥२१॥

दोहरा ॥

अमित आफूआ की बरी खाइ चड़ाई भंग ॥
चतुर पहर भोगियो त्रियहि तउ न मुचियो अनंग ॥२२॥
तरुन तरुन तरुनी तरुनि तरुन चंद्र की जौन ॥
केल करै बिहसै दोऊ हारि हटै सो कौन ॥२३॥
चतुर पुरख चतुरा चतुर तरुन तरुनि कौ पाइ ॥
बिहस बिहस लावै गरे छिनकि न छोरियो जाइ ॥२४॥

चौपई ॥

जो चतुरा चतुरा कौ पावै ॥
कबहूं न छिन चित ते बिसरावै ॥
जड़ कुरूप कौ चितहि न धरै ॥

मन क्रम बच ताही तौ बरै ॥२५॥

दोहरा ॥

चंदन की चौकी भली कासट द्रुम किह काज ॥
चतुरा को नीको चित्रयो कहा मूड़ को राज ॥२६॥
सोरठा ॥
तरुनि पतरिया नीक चपल चीति भीतर चुभियो ॥
अधिक पियरवा मीत कबहूं न बिसरत ह्रिदै ते ॥२७॥
सवैया ॥
रीझ रही अबला अति ही पिय रूप अनूप लखे मन माही ॥
सोच बिचार तज्यो सभ सुंदरि नैन सो नैन मिले मुसकाही ॥
लाल के लालची लोचन लोल अमोलन की निरखे परछाही ॥
मत भई मन मानो पियो मद मोहि रही मुख भाखत नाही ॥२८॥
सोभत सुध सुधारे से सुंदर जोबन जोति जगे जरबीले ॥
खंजन से मनोरंजन राजत भारी प्रताप भरे गरबीले ॥
बानन से म्रिग बारन से तरवारन से चमके चटकीले ॥
रीझि रही सखि हौहूं लखे छबि लाल के नैन बिसाल रसीले ॥२९॥
भाति भली बिन संग अली जब ते मन भावन भेटि गई हौ ॥
ता दिन ते न सुहात कछू सु मनो बिनु दामन मोल लई हौ ॥
भौह कमान को तानि भले द्रिग साइक के जनु घाइ घई हौ ॥
मारि सु मारि करी सजनी सुनि लाल को नामु गुलाम भई हौ ॥३०॥
बारिज नैन जिती बनिता सु बिलौक कै बान बिना बध ह्वै है ॥
बीरी चबात न बैठि सकै बिसंभार भई बहुधा बररै है ॥
बात कहै बिगसै न बबा की सौ लेत बलाइ सभै बलि जै है ॥
बालम हेत बियोम की बाम सु बार अनेक बजार बकै है ॥३१॥

चौपई ॥

एक सखी छबि हेरि रिसाई ॥
ता के कहियो पिता प्रती जाई ॥
बचन सुनत न्रिप अधिक रिसायो ॥
दुहिता के मंदिर चलि आयो ॥३२॥
राज सुता ऐसे सुनि पायो ॥
मो पितु अधिक कोप करि आयो ॥
तब तिन ह्रिदै कहियो का करो ॥
उर महि मारि कटारी मरो ॥३३॥

दोहरा ॥

बिमन चंचला चित लखी मीत कहियो मुसकाइ ॥
तै चित क्यो ब्रयाकुलि भई मुहि कहि भेद सुनाइ ॥३४॥

चौपई ॥

राज सुता कहि ताहि सुनायो ॥
या ते मोर ह्रिदै डर पायो ॥
राजा सो किनहूं कहि दीनो ॥
ता ते राव कोप अति कीनो ॥३५॥
ता ते राव क्रोध उपजायो ॥
दुहूंअन के मारनि हित आयो ॥
अपने संग मोहि करि लीजै ॥

बहुरि उपाइ भजन को कीजै ॥३६॥
बचन सुनत राजा हसि परियो ॥
ता को सोक निवारन करियो ॥
हमरो कछू सोक नहि करियै ॥
तुमरी जानि जान ते डरियै ॥३७॥

दोहरा ॥

ध्रिग अबला ते जगत मै पिय बध नैन निहारि ॥
पलक एक जीयत रहै मरहि न जमधर मारि ॥३८॥
सवैया ॥
कंठसिरी मनि कंकन कुंडर भूखन छोरि भभूत धरौंगी ॥
हार बिसारि हजारन सुंदर पावक बीच प्रवेस करौंगी ॥
जूझि मरौ कि गरौ हिम माझ टरो न तऊ हठि तोहि बरौंगी ॥
राज समाज न काज किसू सखि पीय मरियो लखि हौहू मरौंगी ॥३९॥

चौपई ॥

बिहसि कुअर यौ बचन उचारो ॥
सोक करो नहि बाल हमारो ॥
हौ अब एक उपायहि करिहो ॥
जा ते तुमरो सोक निवरिहो ॥४०॥
हमरो कछू सोक नहि कीजै ॥
तीर कमान आनि मुहि दीजै ॥
मुहकम कै दरवाजो द्रयावहु ॥
या आंगन महि सेज बिछावहु ॥४१॥
वहै काम अबला तिन कियो ॥
तीर कमानि आनि तिह दियो ॥
भली भाति सौ सेज बिछाई ॥
ता पर मीत लयो बैठाई ॥४२॥

दोहरा ॥

तब अबला चिंता करी जिय ते भई निरास ॥
जीयो त पिय के सहित ही मरौ त पति के पास ॥४३॥

चौपई ॥

पलका पर मीतहि बैठायो ॥
भाति भाति सौ केल कमायो ॥
भाति भाति के भोगन भरही ॥
जिय अपने को त्रास न करही ॥४४॥
तब लौ चक्रवाक दो आए ॥
राज कुमार द्रिगन लखि पाए ॥
एक धनु तानि बान सौ मारियो ॥
दुतिया हाथ सर दुतिय प्रहारियो ॥४५॥
दुहूं सरन दुहूंअन बध कीनो ॥
दुहूंअन भूंनि छिनिक महि लीनो ॥
तिन दुहूंअन दुहूंअन को खायो ॥
संक छोरि पुन केल कमायो ॥४६॥

दोहरा ॥

तिन को भछ्नन करि दुहन लीनो चरम उतारि ॥
पहिरि दुहुन सिर पै लयो पैठे नदी मझारि ॥४७॥

चौपई ॥

चक्रवार सभ को तिन जानै ॥
मानुख कै न कोऊ पहिचानै ॥
पैरत बहु कोसन लगि गए ॥
लागत एक किनारे भए ॥४८॥
दो है दोऊ अरूड़ित भए ॥
चलि करि देस आपने गए ॥
ता कौ लै पटरानी कीनो ॥
चित को सोक दूरि करि दीनो ॥४९॥

दोहरा ॥

पंछियन को पोसत धरे पितु की द्रिसटि बचाइ ॥
पंखी ही सभ को लखै मानुख लख्यो न जाइ ॥५०॥
देस आनि अपने बसे तिय को सदन बनाइ ॥
भाति भाति ता सो रमै निसु दिन मोद बढाइ ॥५१॥

CHARITAR १११ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ गिआरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥111॥2157॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सूर सैन राजा हुतो समरकंद के माहि ॥
ता के तुलि नरेस को और जगत मै नाहि ॥१॥
चित्रकला रानी हुती बडभागनि तिह ठौर ॥
रूप सील लजा गुनन ता के तुलि न और ॥२॥

चौपई ॥

ता की न्रिप आग्या महि रहई ॥
सोई करै जु वह हस कहई ॥
आग्या देस सकल तिह मानै ॥
रानी को राजा पहिचानै ॥३॥

दोहरा ॥

अमित रूप ता कौ निरखि मन क्रम बसि भयो पीय ॥
निसु दिन ग्रिह ता के रहै और न हेरत त्रीय ॥४॥

चौपई ॥

तवन न्रिपति इक त्रियहि निहारियो ॥
भोग करौ तिह साथ बिचारियो ॥
रैनि भई जब ही लखि पायो ॥
पठै दूत ग्रिह ताहि बुलायो ॥५॥
ता सौ बोलि अधिक रति मानी ॥
पर त्रिय करि अपनी पहिचानी ॥

ता कौ चहत सदन मै ल्यावै ॥
निजु नारी ते अति डर पावै ॥६॥
यहै बात चित मै मथि राखी ॥
केल समै ता सौ यौ भाखी ॥
ता कौ कहियो बकत्र ते बरिहो ॥
राकहु ते रानी लै करिहो ॥७॥
जब यौ बचन त्रियहि सुनि पायो ॥
राज हेत हियरो हुलसायो ॥
अब हौ ह्वै त्रिय रही तिहारे ॥
बरियौ चहो तब बरो पियारे ॥८॥
एक बात मै तुमै बखानो ॥
मेरो बचन साच जौ मानो ॥
जौ जीयत लौ नेह निबाहो ॥
तो तुम आजु न्रिपति मुहि ब्रयाहो ॥९॥
जा सो नेहु नैकहूं कीजै ॥
ता कौ पीठि जियत नहि दीजै ॥
ता की बाह बिहसि करि गहियै ॥
प्रान जात लौ प्रीति निबहियै ॥१०॥
यह रानी जो धाम तिहारै ॥
ता कौ डर है हियै हमारे ॥
तुमहूं अति ता के बसि प्यारे ॥
जंत्र मंत्र तंत्रन के मारे ॥११॥
हौ अब एक चरित्र बनाऊ ॥
जा ते तुम से न्रिप को पाऊ ॥
सकल सती को साज सवरिहौ ॥
अरुन बसत्र अंगन मै करिहौ ॥१२॥
तुम तह इह रानी संग लै कै ॥
ऐयहु आपु चिंडोल चड़ै कै ॥
तुमहूं आपु मोहि समझैयहु ॥
रानी कौ मम तीर पठैयहु ॥१३॥
कहबे हुती सकल तिन भाखी ॥
सो सभ राइ चित मै राखी ॥
निसुपति छपियो दिनिसि चड़ि आयो ॥
बाम सती को भेस बनायो ॥१४॥
दिन भे चली सती हठ कै कै ॥
ऊच नीच सभहिन संग लै कै ॥
त्रिय सहित राज हूं आयो ॥
आनि सती को सीस झुकायो ॥१५॥
न्रिप तिह कहियो सती नहि हूजै ॥
मो तै अमित दरबु क्यो न लीजै ॥
हे रानी तुमहूं समझावो ॥
जरत अगन ते याहि बचावो ॥१६॥
न्रिप रानी ता कौ समझायो ॥
बिहसि सती यौ बचन सुनायो ॥
यह धन है किह काज हमारे ॥
सुनो राव प्रति कहौ तिहारे ॥१७॥

दोहरा ॥

सुनु रानी तो सौ कहौ बात सुनो महाराज ॥
पिय कारन जिय मै तजौ यह धन है किह काज ॥१८॥

पर धन गनौ पखान सो पर पति पिता समान ॥
पिय कारन जिय मै तजौ सुरपुर करौ पयान ॥१९॥

चौपई ॥

पुनि राजै इह भाति उचारी ॥
एते हठि जिनि करो पियारी ॥
प्रान पतन आपन जिनि कीजै ॥
आधो राज हमारो लीजै ॥२०॥
कौन काज न्रिप राज हमारै ॥
सदा रहो इह धाम तिहारै ॥
मै जुग चारि लगै नहि थीहौ ॥
पिय के मरे बहुरि मै जीहौ ॥२१॥
तब रानी न्रिप बहुरि पठाई ॥
या को कहो बहुरि तुम जाई ॥
ज्यो त्रयो या ते याहि निवरियहु ॥
जो वह कहै वहै तुम करियहु ॥२२॥
तब रानी ता पै चलि गई ॥
बात करत बहुतै बिधि भई ॥
कहियो सती सोऊ बच मै कहूं ॥
इन ते होइ न सो हठ गहूं ॥२३॥
रनियहि कहियो सती पति दै हौ ॥
मोरे अग्र दासिनी ह्वै हौ ॥
तव देखत तेरो न्रिप राऊ ॥
तव घट दै सिर नीर भराऊ ॥२४॥
रानी कहियो पतिहि तुहि दै हौ ॥
तोरे अग्र दासिनी ह्वै हौ ॥
द्रिग देखत निरप तुहि रमवाऊ ॥
गगरी बारि सीस धरि ल्याऊ ॥२५॥
पावक बीच सती जिनि जरो ॥
कछू बकत्र ते हमै उचरो ॥
जौ तू कहै त तो कौ बरि हौ ॥
राकहु ते रानी तुहि करि हौ ॥२६॥
यौ कहि पकरि बाह ते लयो ॥
डोरी बीच डारि करि दयो ॥
तुम त्रिय जिनि पावक मो जरो ॥
मोहू को भरता लै करो ॥२७॥

दोहरा ॥

सभहिन के देखत तिसै लयो बिवान चड़ाइ ॥
इह चरित्र ता को बरियो रानी कियो बनाइ ॥२८॥

CHARITAR ११२ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बारहा चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥112॥2185॥अफजूं॥

दोहरा ॥

बिसन सिंघ राजा बडो बंगस मै बडभाग ॥
ऊच नीच ता कै प्रजा रही चरन सौ लाग ॥१॥

चौपई ॥

क्रिसन कुअरि ता के पटरानी ॥
जानुक तीर सिंध मथिआनी ॥
नैन दिपै नीके कजरारे ॥
लखे होत ललना मतवारे ॥२॥

दोहरा ॥

रूप दिपै ता को अमित सोभा मिलत अपार ॥
हेरि राइ को चित बध्यौ सकत न बहुरि उबार ॥३॥

चौपई ॥

ता सौ नेह राव को भारी ॥
न्रिपहूं को अति चाहत प्यारी ॥
दुहूंअन परम प्रीत भी ऐसी ॥
सीता सो रघुनाथन वैसी ॥४॥
एक हेरि त्रिय राव लुभानो ॥
निजु त्रिय संग नेह घट मानो ॥
जब इह क्रिसन कुअरि सुनि पाई ॥
राजा पै चित ते खुनसाई ॥५॥
क्रिसन कुअरि चित अधिक रिसाई ॥
मन मै घात यहै ठहराई ॥
दुहकरि करि मै आजु सु करिहो ॥
न्रिपह संघारि आपु पुनि मरिहो ॥६॥

दोहरा ॥

तब रानी चित ते जरी मन मै अधिक रिसाइ ॥
ज्यों सीसो सर के लगे तूटि तरक दै जाइ ॥७॥
पठै दूत राजै तुरत लीनी तरुनि बुलाइ ॥
गरब प्रहरि झख केतु को सोइ रहै सुखु पाइ ॥८॥

चौपई ॥

जब ऐसे रानी सुनि पाई ॥
जमधर लए हाथ मो आई ॥
बिसन सिंघ पति प्रथम संघारियो ॥
ता पाछे तिह त्रिय को मारियो ॥९॥

दोहरा ॥

मारि मास त्रिय तवन को राधि लयो तिह काल ॥
सदन एक उमराव के भेज दयो ततकाल ॥१०॥
मास जानि ता को तुरत चाबि गए सभ सोइ ॥
भलो भलो सभ को कहै भेद न पावै कोइ ॥११॥
हाथ पाव न्रिप के सकल संग मुतहरी तोरि ॥
सीड़न पर ते आनि कै दयो धरनि कह छोरि ॥१२॥
मदरा के मद सो छक्यो उर जमधर की खाइ ॥
सीड़िन ते खिसकत न्रिपत परियो धरनि पर आइ ॥१३॥
स्रोनत सो भीजत भई सकल धरनि सरबंग ॥
आनि तरे राजा परियो लगे कटारी अंग ॥१४॥

चौपई ॥

जब न्रिप मरियो त्रियहि लखि पायो ॥
भाति भाति ह्वै दुखित सुनायो ॥
कौन काल गति करी हमारी ॥
राजा जू चुभि मरे कटारी ॥१५॥
जब रानी ह्वै दीन उघायो ॥
बैठे सभ लोगन सुनि पायो ॥
ता को सभ पूछनि मिलि आए ॥
कोनै दुसट राव जू घाए ॥१६॥
तब रानी अति दुखित बखान्यो ॥
ता को भेद कछू न पछान्यो ॥
प्रथम राव जू मासु मंगायो ॥
आपु भखयो कछु म्रितन पठायो ॥१७॥
पुनि राजा जू अमल मंगायो ॥
आपु पियो कछु हमै पियायो ॥
पीए कैफ कै अति मति भए ॥
सुधि मै हुते बिसुधि ह्वै गए ॥१८॥
मद सौ न्रिपति भए मतवारे ॥
खेल काजि ग्रिह ओर पधारे ॥
बसि ह्वै अधिक काम के गयो ॥
मेरो हाथ हाथ गहि लयो ॥१९॥
पाव खिसत पौरिन ते भयो ॥
अधिक मत मैथो गिरि गयो ॥
उर ते उगरि कटारी लागी ॥
ता ते देह राव जू त्यागी ॥२०॥

दोहरा ॥

सीड़िन ते राजा गिरियो परियो धरनि पर आनि ॥
चुबी कटारी पेट मै ता ते तजियो प्रान ॥२१॥

चौपई ॥

सभन सुनत यौ कथा उचारी ॥
जमधर वहै बहुरि उरि मारी ॥
न्रिप त्रिय मारि प्रान निजु दीनो ॥
चरित चंचला ऐसो कीनो ॥२२॥

CHARITAR ११३ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥113॥2207॥अफजूं॥*

सवैया ॥
एक महा बन बीच बसै मुनि स्रिंग धरे रिख स्रिंग कहायो ॥
कौनहूं ख्याल बिभाडव जू म्रिगिया हूं की कोखिहूं ते उपजायो ॥
होत भयो तपसी तब ते जब ते बुधि लै सुधि को ठहरायो ॥
रैनि दिना रघुनाथ भजै कबहूं पुर भीतर भूल न आयो ॥१॥
बीच करै तपस्या बन के मुनि राम को नामु जपै सुखु पावै ॥
न्रहान करै नित ध्यान धरै मुख बेद ररै हरि की लिव लावै ॥
रीति चलै खट सासत्रन की तन कसट सहै मन को न डुलावै ॥

भूखि पिआस लगै जब ही तब कानन ते चुनि कै फल खावै ॥२॥
काल बितीत भयो इह रीति परियो दुरभिछ तहा सुनि पायो ॥
बीज रहियो नहि एक तहा सभ लोक कनेकन कौ तरसायो ॥
जेते पड़े बहु बिप्र हुते तिन कौ तब ही न्रिप बोलि पठायो ॥
कौन कुकाज कियो कहो मै जिह ते भ्रित लोकन जीव न पायो ॥३॥
राज कही जब यौ तिन कौ तब बिप्र सभै इह भाति उचारे ॥
रीत चलौ रजनीतन की तुम कोऊ न देखियो पाप तिहारे ॥
सिंम्रित मै खट सासत्र मै सभ हूं मिल क्रोरि बिचार बिचारे ॥
स्रिंगी रिखीसन आए तवालय याही चुभै चित बात हमारे ॥४॥
जौ चित बीच रुचै महाराज बुलाइ कै मानस सोई पठैयै ॥
कौने उपाइ बिभाडव को सुत या पुर बीथन मै बहिरैयै ॥
देस बसै फिरि काल नसै चित भीतर साच इहै ठहिरैयै ॥
जौ नहि आवै तो पूत भिजाइ कि आपन जाइ उताइल ल्यैयै ॥५॥
सोरठा ॥
भ्रित मित पूत पठाइ राजा अति हायल भयो ॥
आपनहूं लपटाइ चरन रहियो आयो न मुनि ॥६॥
सवैया ॥
बैठि बिचार कीयो सभ लोगन कौन उपाइ कहो अब कीजै ॥
आपहि जाइ थकियो हमरो न्रिप सो रिखि तौ अजहूं नहि भीजै ॥
जो तिह ल्याइ बुलाइ यहा तिह कौ यह देस दुधा करि दीजै ॥
या ते लजाइ सबो ग्रिह आइ मुनी सुख पाइ सभै तपु छीजै ॥७॥
पात्र सरूप हुती तिह ठौर सोऊ चलि कै न्रिप के ग्रिह आई ॥
भेद अभेद की बात सभै कहि कै मुख ते सभ ही समुझाई ॥
पान चबाइ चली तित को मन देव अदेवन को बिरमाई ॥
अनंद लोक भए तजि सोक सु सोक की बात सभै बिसराई ॥८॥
का बपुरो मुनि है सुनि हे न्रिप नैक जो नैन निहारन पैहौ ॥
रूप दिखाइ तिसै उरझाइ सु बातन सौ अपने बसि कैहौ ॥
पाग बंधाइ जटान मुंडाइ सु ता न्रिप जाइ तवालय ल्यैहौ ॥
केतिक बात सुनो इह नाथ तवानन ते टुक आइसु पैहौ ॥९॥
केतिक बात सुनो मुहि हे न्रिप तारन तोरि अकास ते ल्यैहौ ॥
देव अदेव कहा नर है बर देवन को छिन मै बसि कैहौ ॥
द्योस के बीच चड़ै हौ निसाकर रैनि समै रवि को प्रगटै हौ ॥
ग्यारह रुद्रन को हरि कौ बिधि की बुधि कौ बिधि सौ बिसरैहौ ॥१०॥

दोहरा ॥

ऐसे बचन उचारि त्रिय तह ते कियो पयान ॥
पलक एक बीती नही तहा पहूंची आनि ॥११॥
सवैया ॥
देखि तपोधन कौ बन माननि मोहि रही मन मै सुखु पायो ॥
खात बिभाडव जू फल थो तिन डारिन सो पकवान लगायो ॥
भूख लगी जब ही मुनि कौ तब ही तह ठौर छुधातर आयो ॥
ते फल खाइ रहियो बिसमाइ महा मन भीतर मोद बढायो ॥१२॥
सोच बिचार कीयो चित मो मुनि ए फल दैव कहा उपजायो ॥
कानन मै निरखे नहि नेत्रन आजु लगे कबहूं न चबायो ॥
कै मघवा बलु कै छलु कै हमरे तप को अविलोकन आयो ॥
कै जगदीस क्रिपा करि मो पर मोरे रिझावन काज बनायो ॥१३॥
आनंद यौ उपज्यो मन मै मुनि चौक रहियो बन के फल खै कै ॥
कारन है सु कछू इन मै कहि ऐसे रहियो चहूं ओर चितै कै ॥
हार सिंगार धरे इक सुंदरि ठाढी तहा मन मोद बढै कै ॥
सोभित है महि भूखन पै महिभूखन कौ मनो भूखित कै कै ॥१४॥

जोबन जेब जगे अति ही इक माननि कानन बीच बिराजै ॥
नील निचोल से नैन लसै दुति देखि मनोजव को मनु लाजै ॥
कोक कपोत कलानिधि केहरि कीर कुरंग कहीं किह काजै ॥
सोक मिटै निरखे सभ ही छबि आनंद कौ हिय मै उपराजै ॥१५॥
चित बिचार कियो अपने मन को मुनि है यह ताहि निहारौ ॥
देव अदेव कि जछ भुजंग किधौ नर देव रु देव बिचारौ ॥
राज कुमारि बिराजत है कोऊ ता पर आज सभै तन वारौ ॥
याही को तीर रहौ दिन रैनि करौ तपस्या बन बीच बिहारौ ॥१६॥
जाइ प्रनाम कियो तिह को सुनि बात कहो हम सौ तुम को है ॥
देव अदेवन की दुहित किधौ राम की बाम हुती बन सोहै ॥
राजसिरी किधौ राज कुमारि तू जछ भुजंगन के मन मोहै ॥
साच उचारु सची कि सिवा कि तुही रति है पति को मगु जोहै ॥१७॥
नाथ सची रति हौ न सिवा नहि हौगी न राज कुमार की जाई ॥
राजसिरी नहि जछ भुजंगनि देव अदेव नही उपजाई ॥
राम की बाम न हो अथितीस रिखीस उदालक की त्रिय जाई ॥
एकु जुगीस सुने तुमहूं तिह ते तुमरे बरबे कह आई ॥१८॥
चंचल नैन कि चंचलताई सो टामन सौ तिह को करि दीनो ॥
हाव सु भाव दिखाइ घने छिनकेक बिखै मुनि जू बसि कीनो ॥
पाग बंधाइ जटान मुंडाइ सु भूखन अंग बनाइ नवीनो ॥
जीति गुलाम कियो अपनौ तिह तापस ते ग्रिसती करि लीनो ॥१९॥
तापसताई को त्याग तपीस्वर ता त्रिय पै चित कै उरझायो ॥
पाइ ब्रतोतम कौ तरुनी तन सोक निवारि असोकुपजायो ॥
भाति अनेक बिहारत सुंदर सात सुता खट पूतुपजायो ॥
त्याग दये बन को बसिबो पुर भीतर को बसियो मन भायो ॥२०॥
एक महा बन है सुनि हो मुनि आजु चलै तह जाइ बिहारै ॥
फूल घने फल राजत सुंदर फूलि रहे जमुना के किनारै ॥
त्याग बिलंब चलो तित को तुम कानन सो रमनीय निहारै ॥
केल करै मिलि आपस मै दोऊ कंद्रप कौ सभ द्रप निवारै ॥२१॥
कानन जेतिक थे तिह देस सभै अथितेस को बाल दिखाए ॥
काख ते कंकन कुंडल काढि जरावकि जेब जरे पहिराए ॥
मोहि रहियो तिह कौ लखि कै मुनि जोग कै न्यास सभै बिसराए ॥
काहूं प्रबोध कियो नहि ता कह आपन ही ग्रिह मै मुनि आए ॥२२॥

दोहरा ॥

सात सुता आगे करी तीनु त्रियहि सुत लीन ॥
इक काधे इक काख मै खसटम मुनि सिर दीन ॥२३॥

तोटक छंद ॥

पुर मै रिखि आइ सुने जब ही ॥
जन पूजन ताहि चले सभ ही ॥
चित भातहि भाति अनंदित ह्वै ॥
ब्रिध बाल न ज्वान रहियो घर क्वै ॥२४॥
सभ ही कर कुंकम फूल लीए ॥
मुनि ऊपर वारि कै डारि दीए ॥
लखि कै तिन कौ रिखि यौ हरखियो ॥
तब ही घन सावन ज्यो बरखियो ॥२५॥

दोहरा ॥

बरखियो तहा असेख जल हरखे लोक अपार ॥

भयो सुकाल दुकाल ते ऐसे चरित निहारि ॥२६॥

तोटक छंद ॥

घन ज्यो बरखियो सु घनो तह आई ॥
पुनि लोकन के उपजी दुचिताई ॥
जब लौ ग्रिह ते रिखि राज न जै है ॥
तब लौ गिरि गाव बराबरि ह्वै है ॥२७॥
तब ही तिह पात्रहि बोलि लियो ॥
निजु आधिक देस बटाइ दियो ॥
पुनि ताहि कहियो रिखि कौ तुम टारो ॥
पुर बासिन को सभ सोक निवारो ॥२८॥
सवैया ॥
बैस बिती बसि बामहु के बिसुनाथ कहूं हिय मै न सरियो ॥
बिसंभार भयो बररात कहा बिनु बेद के बादि बिबादि बरियो ॥
बहि कै बलु कै बिझु कै उझ कै तुहि काल को ख्याल कहा बिसरियो ॥
बनि कै तनि कै बिहरौ पुर मै जड़ लाजहि लाज कुकाज करियो ॥२९॥

दोहरा ॥

बचन सुनत ऐसो मुनिज मन मै कियो बिचार ॥
तुरत बनहि पुरि छोरि कै उठि भाजियो बिसंभार ॥३०॥
प्रिथम आनि काढियो रिखहि मेघ लयो बरखाइ ॥
अरध राज तिह न्रिपति को लीनौ आपु बटाइ ॥३१॥
सत टारियो तिह मुनिज को अरध देस कौ पाइ ॥
भाति भाति के सुख करे ह्रिदै हरख उपजाइ ॥३२॥

CHARITAR ११४ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौदस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥114॥2239॥अफजूं॥

दोहरा ॥

रिखी गौतम बन मै बसै ताहि अहिल्या त्रीय ॥
मनसा बाचा करमना बसि करि राखियो पीय ॥१॥
सुरी आसुरी किंन्रनी ता सम और न कोइ ॥
रूपवती त्रै लोक मै ता सी अउर न होइ ॥२॥
सिवा सची सीता सती ता को रूप निहारि ॥
रहत नारि निहुराइ करि निज घटि रूप बिचारि ॥३॥
गौतम रिखि के देव सभ गए कौनहूं काज ॥
रूप अहिल्या को निरखि रीझि रहियो सुर राज ॥४॥
अड़िल ॥
बासव की छबि हेरि तिया हू बसि भई ॥
बिरह समुंद के बीच बूडि सभ ही गई ॥
तीन लोक को नाथ जु भेटन पाइयै ॥
हो जोबन जड़ मुनि तीर न ब्रिथा गवाइयै ॥५॥

दोहरा ॥

तब अबला सुर राज के मोही रूप निहारि ॥
हर अरि सर ता कौ हन्यौ घायलि भई सुमार ॥६॥

चौपई ॥

कौन उपाइ सुरेसहि पैयै ॥
पठै सहचरी ताहि बुलैयै ॥
एक रैनि जौ भेटन पाऊ ॥
ता पर सुनो सखी बलि जाऊ ॥७॥

दोहरा ॥

जोगनेसुरी सहचरी सो तिन लई बुलाइ ॥
सकल भेद समुझाइ कै हरि प्रति दई पठाइ ॥८॥
जाइ कहियो सुर राज सो भेद सखी समझाइ ॥
सुनत अहिल्या की ब्रिथा रीझि रहियो सुर राइ ॥९॥
सवैया ॥
बालि गिरी बिसंभार सुनो हरि भाल बिखै बिंदियो न दियो है ॥
टामन सो केहूं ताहि करियो जिन आजु लगे न सिंगार कियौ है ॥
बीरी चबाइ सकै न सखी पर पाइ रही नहि पानि पियो है ॥
बेगि चलो बनि बैठे कहा मन माननि को मनो मोहि लियो है ॥१०॥
क्रोरि कलाप करै कमलाछणि द्योस निसा कबहूं नहि सोवै ॥
सापिन ज्यो ससकै छित ऊपर लोक की लाज सभै हठि खोवै ॥
हार सिंगार धरै नहि सुंदरि आंस्वन सौ ससि आनन धोवै ॥
बेगि चलो बनि बैठे कहा तव मारगि को मुनि मानिन जोवै ॥११॥
बात तपीस्वरनि की सुनि बासव बेगि चलियो जहा बाल बिहारै ॥
बीरी चबाइ सु बेख बनाइ सु बारहि बार सिंगार सवारै ॥
घात पछानि चलियो तित कौ मुनि स्राप के ताप झुकै झिझकारै ॥
जाइ सकै हटिहूं न रहै मतवारे की भाति डिगै डग डारै ॥१२॥
बेगि मिलो मन भावित भावनि प्यारे जू आजु तिहारे भए हैं ॥
भेटन कौ महिराज समै मुनि राज धियान मौ आजु गए हैं ॥
मीत अलिंगन चुंबन आसन भाति अनेकन आनि लए हैं ॥
मोद बढियो मन भामनि के मुनि जा चित ते बिसराइ दए हैं ॥१३॥

दोहरा ॥

बन्यो ठन्नयो सुंदर घनो तीनि लोक को राइ ॥
बासव सो पति पाइ त्रिय मुनिहि दयो बिसराइ ॥१४॥
सवैया ॥
स्रोनन मो खरको सुनि कै तब ही मुनि नायक चौकि परियो है ॥
धियान दियो तजि के सभ ही तब ही रिस के तन साथ जरियो है ॥
धाम की ओर चलियो उठि कै सुर राज लखियो तर खाट दुरियो है ॥
चौकि रहियो चित माझ कहियो यह काहूं निलाज कुकाज करियो है ॥१५॥

दोहरा ॥

रिखि गोतम रिसि कै कहियो को आयो इह धाम ॥
तब तिह अस उतर दियो रिखहि बिहसि करि बाम ॥१६॥

चौपई ॥

माजार इह ठा इक आयो ॥
तमु कौ हेरि अधिक डर पायो ॥
चित अति त्रसत खाट तर दुरियो ॥
मै मुनि जू तुहि साचु उचरियो ॥१७॥

तोटक छंद ॥

मुनि राज कछु नहि भेद लहियो ॥
त्रिय जो किय सो पति साथ कहियो ॥
माजार दुरियो इह खाट तरै ॥
जनु बासव की सभ सोभ धरै ॥१८॥
इह आजि मुनी जिनि कोप करो ॥
ग्रिहती जुत जानि रहियो तुमरो ॥
तुम जाइ तिही ग्रिह होम करो ॥
रघुबीर कि नामहि को उचरो ॥१९॥
सुनि बैन तही मुनि जात भयो ॥
रिखि नारि सुरेस निकारि दयो ॥
कई द्योस बिते तिह भेद सुन्यो ॥
अति ही रिसि कै निजु सीसु धुन्यो ॥२०॥
तब ही रिसि कै रिखि स्राप दियो ॥
सुर नायक कौ भगवान कियो ॥
भग ताहि सहंस्र भए तन मै ॥
त्रिदसेस लजाइ रहियो मन मै ॥२१॥

दोहरा ॥

स्राप दियै त्रिय कौ बहुरि जो तै कियो चरित्र ॥
तै पाहन की चारि जुग होहि सिला अपवित्र ॥२२॥

CHARITAR ११५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पंद्रहवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥115॥2261॥अफजूं॥*

भुजंग प्रयात छंद ॥

बढै सुंद अपसुंद द्वै दैत भारी ॥
करै तीनहूं लोक जिन कौ जुहारी ॥
महा कै तपस्या सिवै सो रिझायो ॥
मरै नाहि मारै यहै दान पायो ॥१॥

चौपई ॥

रीझि रुद्र यौ बचन उचारे ॥
तुम नहि मरो किसू ते मारे ॥
जौ आपस मै रारि बढैहो ॥
तौ जम के घर को दोऊ जैहो ॥२॥
महा रुद्र ते जब बरु पायो ॥
सभ लोकन चित ते बिसरायो ॥
जो कोऊ देव द्रिसटि मै आवै ॥
जिय लै के फिर जान न पावै ॥३॥
ऐसी भाति बहुत दुख दए ॥
देव सभै ब्रहमा पै गए ॥
बिसुकरमहि बिधि बोलि पठायो ॥
इहै मंत्र को सार पकायो ॥४॥
बिसुकरमा प्रति बिधहि उचारो ॥
एक त्रियहि तुम आजु सवारो ॥

रूपवती जा सम नहि कोई ॥
ऐसी करो सुंदरी सोई ॥५॥

दोहरा ॥

बिसुकरमा इह बचन सुनि धाम गयो तिह काल ॥
तुरत बनाइ तिलोतमहि आनियो तहा उताल ॥६॥
बिसुकरमा अबला करी अमितु रूप निधि सोइ ॥
जो हेरै रीझै वहै जती न कहियत कोइ ॥७॥
अमित रूप ता को निरखि सभ अबला रिसि खाहि ॥
जिनि हमरे पति हेरि इह याही के ह्वै जाहि ॥८॥
ऐसो भेख सु धारि त्रिय तह ते कीओ पयान ॥
सहिर थनेसर के बिखै तुरत पहूंची आन ॥९॥
जहा बाग तिन को हुतो तहा पहूंची आइ ॥
देव दैत ता कौ निरखि रूप रहे उरझाइ ॥१०॥

चौपई ॥

बाल बिहरती बाग निहारी ॥
सभा छोरि दोऊ उठे हंकारी ॥
तीर तिलोतम के चलि आए ॥
ब्याहन को दोऊ ललचाए ॥११॥
सुंद कहियो या कौ मै बरि हौ ॥
कहियो अपसुंद याहि मै करि हौ ॥
रारि परी दुहूंअन मै भारी ॥
बिचरे सूरबीर हंकारी ॥१२॥

भुजंग छंद ॥

परियो लोह गाड़ो महा बीर माडे ॥
झुके आनि चारो दिसा काढि खाडे ॥
छके छोभ छत्री महा घाइ मेलै ॥
किते ढालि तिरसूल खगान खेलै ॥१३॥
सोरठा ॥
बाजन बजे अनेक सुभट सभै हरखत भए ॥
जीवत बचियो न एक काल बीर चाबे सकल ॥१४॥

दोहरा ॥

जुझै जुझऊआ के बजे सूरबीर समुहाइ ॥
गजे सुंद अपसुंद तब ढोल म्रिदंग बजाइ ॥१५॥

चौपई ॥

प्रथम मारि बानन की परी ॥
दुतिय मारि सैथिन सौ धरी ॥
त्रितिय जुध तरवारिन परियो ॥
चौथो भेर कटारिन करियो ॥१६॥

दोहरा ॥

मुसट जुध पंचम भयो बरखियो लोह अपार ॥
ऊच नीच कातर सुभट सभ कीने इक सार ॥१७॥

बज्र बान बरछा बिछूआ बरखे बिसिख अनेक ॥
ऊच नीच कातर सुभट जियत न उबरियो एक ॥१८॥

सवैया ॥

गाड़ परी इह भाति तहा इत सुंद उते अपसुंद हकारो ॥
पटिसि लोहहथी परसे अमितायुध लै कर कोप प्रहारे ॥
राज परे कहूं ताज हिरे तरफै कहूं बीर क्रिपानन मारे ॥
आपस मै लरि बीर दोऊ बसि काल भए करतार संघारे ॥१९॥

चौपई ॥

आपस बीच बीर लरि मरे ॥
बज्र बान बिछूअन ब्रिन करे ॥
फूल अनेक मेघ ज्यो बरखे ॥
देवराज देवन जुत हरखे ॥२०॥

दोहरा ॥

दुहूं भ्रात बधि कै त्रिया गई ब्रहम पुर धाइ ॥
जै जैकार अपार हूअ हरखे मन सुर राइ ॥२१॥

CHARITAR ११६ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सोहलवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥116॥2282॥अफजूं॥*

चौपई ॥

दैतन तुमल जुधु जब कीनो ॥
देवराज ग्रिह को मगु लीनो ॥
कमल नालि भीतर छपि रहियो ॥
सचियहि आदि किसू नहि लहियो ॥१॥
बासव कौ खोजन सभ लागे ॥
सची समेत असंख नुरागे ॥
ढूंढि फिरे काहूं नहि पायो ॥
देवन अमित सोक उपजायो ॥२॥

दोहरा ॥

ब्रहसपति कौ बोलियो तबै सभहिन कियो बिचार ॥
खोजि थके पायो नही कह गयो अदित कुमार ॥३॥

चौपई ॥

कैधौ जूझि खेत मै मरियो ॥
कैधौ त्रसत दरी महि दुरियो ॥
भजियो जुध ते अधिक लजायो ॥
अतिथ गयो ह्वै धाम न आयो ॥४॥
सुक्राचारज बाच ॥

दोहरा ॥

सुक्राचारज यौ कहियो कीजै यहै बिचार ॥
राज जुजातहि दीजियै यहै मंत्र को सार ॥५॥

चौपई ॥

त्रिदस इकत्र सकल ह्वै गए ॥
इंद्रतु देत जुजतहि भए ॥
जब तिन राज इंद्र मो पायो ॥
रूप निहार सची ललचायो ॥६॥
कहियो ताहि सुनि सची पिआरी ॥
अब होवहु तुम त्रिया हमारी ॥
खोजत इंद्र हाथ नहि ऐहै ॥
ता कह खोजि कहूं का कैहै ॥७॥
रोइ सची यौ बचन उचारो ॥
गयो एस परदेस हमारो ॥
जे हमरे सत कौ तूं टरि हैं ॥
महा नरक के भीतर परि हैं ॥८॥
यह पापी तजि है मुहि नाही ॥
बहु चिंता हमरो मन माही ॥
ता ते कछू चरित्र बिचरियै ॥
या कौ दूरि राज ते करियै ॥९॥

दोहरा ॥

एक प्रतग्रया मै करी जौ तुम करौ बनाइ ॥
तौ हम कौ ब्रयाहो अबै लै घर जाहु सुहाइ ॥१०॥

चौपई ॥

स्वारी आपु पालकी कीजै ॥
रिखियन कौ ता के तर दीजै ॥
अधिक धवावत तिन ह्यां ऐयै ॥
तब मुहि हाथ आजु ही पैयै ॥११॥
तबै पालकी ताहि मंगायो ॥
मुनियन को ता के तर लायो ॥
ज्यो ह्वै स्रमत असित मन धरही ॥
त्रयो त्रयो कठिन कोररे परही ॥१२॥

दोहरा ॥

एक उदालक रिखि हुतो दियो स्राप रिसि ठानि ॥
तब ते गिरियो इंद्रतु ते परियो प्रिथी पर आन ॥१३॥

चौपई ॥

इसी चरित्र तौन को टारियो ॥
बहुरि इंद्र को जाइ निहारियो ॥
तह ते आनि राजु तिह दयो ॥
सुर पुर बहुर बधावो भयो ॥१४॥

CHARITAR ११७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥117॥2296॥अफजूं॥*

चौपई ॥

पछिम देव राव बडभागी ॥
मंत्र कला रानी सौ पागी ॥
जो त्रिय कहै वहै जड़ करई ॥
बिनु पूछै कछु तिह न नुसरई ॥१॥
ता पर रहत राव उरझायो ॥
दोइ पुत्र ता ते उपजायो ॥
काल पाइ राजा मरि गयो ॥
राज पुत्र ता के को भयो ॥२॥

दोहरा ॥

एक पुरख आयो तहा अमित रूप की खानि ॥
लखि रानी तिह बसि भई बधी बिरह कै बान ॥३॥
सोरठा ॥
ता कौ लयो बुलाइ पठै सहचरी एक तिह ॥
कहियो बिराजहु आइ संक त्याग हम कौ अबै ॥४॥

चौपई ॥

तब सुंदर तिन ह्रिदै बिचारियो ॥
रानी के प्रति प्रगट उचारियो ॥
एक बात तुम करो ता कहऊ ॥
नातर धाम न तुमरे रहऊ ॥५॥
सु हौ कहौ जो यह नहि करै ॥
मोर मिलन को ख्याल न परै ॥
दुहकर करम जु यह त्रिय करि है ॥
तब यह आजु सु हम को बरि है ॥६॥

दोहरा ॥

ए जू पूत जुग तुम जने तिन दुहूअन को मारि ॥
गोद डारि सिर दुहूं के मागहु भीख बजार ॥७॥

चौपई ॥

तब तिह त्रिया काज सोऊ कियो ॥
निकट बोलि तिन दुहूंअन लियो ॥
मदरा प्रयाइ कीए मतवारे ॥
खड़ग काढि दोऊ पूत संघारे ॥८॥

दोहरा ॥

दुहूं सुतन के काट सिर लए गोद मै डारि ॥
अतिथ भेख को धारि करि मागी भीख बजार ॥९॥

चौपई ॥

भीख मागि मितवा पहि गई ॥
पूतन मुंड दिखावत भई ॥
तोरे लीए दोऊ मै मारे ॥
अब भोगहु मुहि आनि पियारे ॥१०॥
दुहकर करम जारि लखि लयो ॥
पहर एक मिरतक सौ भयो ॥

दुतिय पहर आनि जब लागियो ॥
चित्रयो छोरि मूरछना जागियो ॥११॥
सवैया ॥
तजिहूं न सकै रमिहूं न सकै इह भाति की आनि बनी दुचिताई ॥
बैठ सकै उठिहूं न सकै कहिहूं न सकै कछु बात बनाई ॥
त्यागि सकै गर लागि सकै रस पागि सकै न इहै ठहराई ॥
झूलि गिरियो छित भुल गई सुधि का गति मोरे बिस्वास बनाई ॥१२॥

चौपई ॥

पहर एक बीते पुन जागियो ॥
त्रसत त्रिया के गर सो लागियो ॥
जो त्रिय कहियो वहै तिन कीनो ॥
बहुरि नाहि को नामु न लीनो ॥१३॥

CHARITAR ११८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥118॥2309॥अफजूं॥*

चौपई ॥

तिरहुत मै तिरहुत पुर भारो ॥
तिहूं लोक भीतर उजियारो ॥
जंत्र कला रानी इक ता के ॥
रुद्र कला दुहिता ग्रिह वा के ॥१॥
लरिकापन ता को जब गयो ॥
जोबन आइ दमामो दयो ॥
इक न्रिप सुत सुंदर तिह लहियो ॥
हर अरि सर ता को तन दहियो ॥२॥

दोहरा ॥

न्रिप सुत अति सुंदर घनो संबरात्रि तिह नाम ॥
तंत्र कला ता कौ सदा जपत आठहूं जाम ॥३॥
अड़िल ॥
भेजि सहचरी ताहि बुलायो निजु सदन ॥
काम भोग तिह संग करियो त्रिय छोरि मन ॥
भाति भाति कै आसन लए सुधारि कै ॥
हो चुंबन लिंगन किय मत कोक बिचारि कै ॥४॥

दोहरा ॥

जंत्र कला तिह बाल की मात गई तब आइ ॥
तंत्र कला ता ते त्रसत मीतहि लयो दुराइ ॥५॥

चौपई ॥

केसातक तिन तुरत मंगायो ॥
लीपि समस ता की सो लायो ॥
तब सभ केस दूर ह्वै गए ॥
राज कुमार त्रिया से भए ॥६॥

दोहरा ॥

सकल बसत्र त्रिय के धरे पहिरि सु भूखन अंग ॥
निरखत छबि स्री रुद्र के जरियो जगत अनंग ॥७॥

चौपई ॥

नारि भेखि ता को पहिराई ॥
आपन टरि माता पहि आई ॥
धरम भगनि न्रिप सुत ठहरायो ॥
जाइ सभन सौ भेद जतायो ॥८॥

दोहरा ॥

धरम भगनि माता सुनौ मोरि पहूंची आइ ॥
दरबु बिदा दै कीजियै ताहि न्रिपहि दरसाइ ॥९॥
सुणि माता बिहसि बचन ताहि निहारियो आइ ॥
गहि बहियो तह लै गई जहा हुते नर राइ ॥१०॥
रानी बाच ॥
सुनो राव तव धरमजा इहि ह्यां पहुची आइ ॥
बिदा अमित धन दै करो या कौ अधिक रिझाइ ॥११॥

चौपई ॥

जब इह बात न्रिपति सुनि पाई ॥
जान्यो मोरि धरमजा आई ॥
छोरि भंडार अमित धन दियो ॥
दुहिता हेत बिदा तिह कियो ॥१२॥
मंत्र कला पितु तीर उचारी ॥
धरम बहिन मो कौ अति प्यारी ॥
मै यह अजु संग लै जैहौ ॥
बन उपबन के चरित्र दिखैहौ ॥१३॥
यौ कहि पलटि धाम निजु आई ॥
पिय सौ कही बात मुसकाई ॥
धरम भगनि मुहि तू अति प्यारी ॥
इसी पालकी चर्हहो हमारी ॥१४॥
बात कहत दोऊ हम जैहै ॥
चित कै सोक दूरि करि दैहै ॥
ताहि पालकी लयो चर्हहाई ॥
बन उपबन बिहरन कौ आई ॥१५॥
बीच बजार पालकी गई ॥
परदन पाति छोरि कै दई ॥
ते काहू कौ द्रिसटि न आवै ॥
केल कमात चले दोऊ जावै ॥१६॥
मन भावत को भोग कमाए ॥
दिन बजार महि किनूं न पाए ॥
असट कहारन के कंध ऊपर ॥
जाघै लई मीत भुज दूपर ॥१७॥
ज्यों ज्यों चली पालकी जावै ॥
त्यों प्रीतम चटके चटकावै ॥
लहैं कहार पालकी चरि कै ॥
त्यों त्यों गहै कंध द्रिड़ करि कै ॥१८॥

बन मै जाइ पालकी धरी ॥
भाति भाति सेती रति करी ॥
अमित दरबु चाहियो सो लयो ॥
त्रिय करि ताहि देस लै गयो ॥१९॥
लिखि पतिया डोरी महि धरी ॥
मात पिता तन इहै उचरी ॥
नर सुंदर मो कह यह भायो ॥
ता ते मै यह चरित बनायो ॥२०॥
वह भ्रमजा नहि होइ तिहारी ॥
जो मै पकरि पालकी डारी ॥
कच अरि लए दूरि कच कए ॥
भूखन बसत्र बाल के दए ॥२१॥
जो धन चहियो सोऊ सभ लीनो ॥
तात मात को दरसन कीनो ॥
तुम ते जब लै बिदा सिधाई ॥
या के संग तबै उठि आई ॥२२॥

दोहरा ॥

देस सुखी तुमरो बसो सुखी रहहु तुम तात ॥
सुखी दोऊ हमहूं बसै चिर जीवो तुम मात ॥२३॥

CHARITAR ११९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥119॥2332॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

एक दिवस स्री इंद्र जू हर घर कियो पियान ॥
महा रुद्र कउ रुद्र लखि चिंत बढी अप्रमान ॥१॥

चौपई ॥

देवतेस जब रुद्र निहारियो ॥
महा कोप करि बज्र प्रहारियो ॥
ता ते अमित कोप तब तयो ॥
छाडत ज्वाल बकत्र ते भयो ॥२॥
पसरि ज्वाल सभ जग महि गई ॥
दाहत तीनि भवन कह भई ॥
देव दैत सभ ही डर पाए ॥
मिलि करि महा रुद्र पहि आए ॥३॥
महा रुद्र तब कोप निवारियो ॥
बारिध मै पावक को डारियो ॥
सकल तेज इकठो ह्वै गयो ॥
ता ते दैत जलंधर भयो ॥४॥
ब्रिंदा नाम त्रिया तिन कीनी ॥
अति पतिब्रता जगत मै चीनी ॥
तिह प्रसादि पति राज कमावै ॥
ता कौ दुसट न देखन पावै ॥५॥
देव अदेव जीति तिन लए ॥
लोक चतुरदस बसि महि भए ॥

सेस अलिकेस सभै बिलखाए ॥
बिसन आदि पुर जीति बताए ॥६॥

दोहरा ॥

सेस जलेस सुरेस सभ पुरी बसाए आनि ॥
महा रुद्र की बाल लखि रीझियो असुर निदान ॥७॥

चौपई ॥

त्रिय को रूप निरखि ललचायो ॥
चतुर दूत तिह तीर पठायो ॥
मो कह रुद्र पारबती दीजै ॥
नातर मीच मूंड पर लीजै ॥८॥
महा रुद्र बाच ॥

दोहरा ॥

दुहिता भगनी दीजियत बेद बिधान बनाइ ॥
अब लौ किसूं न त्रिय दई सुनु असुरन के राइ ॥९॥

चौपई ॥

कोप्रयो असुरेसर हंकारी ॥
सैना जोरि दानवन भारी ॥
सुंभ निसुंभ बुलाए तब ही ॥
रकत बीज ज्वालाछन सभ ही ॥१०॥

भुजंग छंद ॥

महा कोप कै कै हठी दैत गाजै ॥
उठे बाधि बानान बाके बिराजै ॥
लए सूल सैथीन आछे सुहावै ॥
बियो कौन जोधा जो ता को दबावै ॥११॥
इतै रुद्र कोपियो सु डौरू बजायो ॥
उतै बाध गाड़ी अनी इंदर आयो ॥
लए सूर साथी घनी चंद्र आछे ॥
सभै सूल सैथी लए काछ काछे ॥१२॥
हठी कोप कै कै महा दैत ढूके ॥
चले भाति ऐसी सु मानो भभूके ॥
ग्रुजै हाथ लीने ग्रजे बीर भारे ॥
टरै नाहि टारे नहीं जात मारे ॥१३॥
हठे देव बाकी अनी साथ लै कै ॥
महा रुद्र को जुध कै अग्र कै कै ॥
लए बिसन जोधा सु ऐस बिराजै ॥
लखे देव कंन्यान को दरपु भाजै ॥१४॥
इतै दैत बाके उते देव सोहैं ॥
दित्रयादित जू जान को मान मोहैं ॥
बजै सार गाड़ो नही भाज जावै ॥
दुहूं ओर ते खिंग खत्री नचावै ॥१५॥
परियो लोह गाड़ो तहा भाति ऐसी ॥
मनो क्वार के मेघ की ब्रिसटि जैसी ॥
हठियो हाथ मै सूल को सूल लै कै ॥

तिसी छेत्र छत्रीन को छिप्र छै कै ॥१६ ॥
बजियो राग मारू तिसी खेत भारो ॥
किसी काज जो थो न सोऊ पधारो ॥
लरे बाल औ ब्रिध जू आ रिसै कै ॥
गए पाक साहीद याकीन ह्वै कै ॥१७ ॥

चौपई ॥

डिमि डिमि डिमि डामरू डमकहिां ॥
असि अनेक हाथन महिं दमकहिां ॥
कटि कटि मरे बिकट भट रन मै ॥
रिझि रिझि बरै बरंगनन मन मै ॥१८ ॥
लह लह कोटि धुजा फहरावै ॥
सूरज चंद्र न देखे जावै ॥
कहक कहक तह करै मसाना ॥
नाचे बाजे जुझऊआ ज्वाना ॥१९ ॥

दोहरा ॥

परस पास असि बज्र भे बरिसे बिसिख बिसेख ॥
घायल सभु सूरा भए जूझत भए असेख ॥२० ॥

भुजंग छंद ॥

महा जुध कै कै सभै देव हारे ॥
त्रिया पतिब्रता ते न जावै संघारे ॥
गए जूझ जोधा महा ऐठियारे ॥
रहे ते चहूं ओर ऐ कै हकारे ॥२१ ॥
कहा जात देवेस जाने न दै है ॥
इसी छेत्र मै मारि कै तोहि लै है ॥
मंडे बीर बानान बाजान लै कै ॥
महा कोप की चित को ओप दै कै ॥२२ ॥
तबै बिसन जू मंत्र ऐसे बिचारियो ॥
सभै दानवानेस को भेस धारियो ॥
जिसी बाग मै नार ब्रिंदा बिराजै ॥
लखे जाहि कंद्रप को दरपु भाजै ॥२३ ॥

दोहरा ॥

जालंधर के भेस धरि तहा पहूंच्यो जाइ ॥
पति को रूप पछानि कै रीझत भई सु भाइ ॥२४ ॥

चौपई ॥

भाति भाति तिह साथ बिहारियो ॥
सभ कंद्रप को दरपु निवारियो ॥
उतै जुध जो भयो सुनाऊ ॥
ता ते तुमरे ह्रिदै सिराऊ ॥२५ ॥

भुजंग छंद ॥

उतै दैत बाकै इतै देव आछे ॥
लए सूल सैथी सभै काछ काछे ॥

महा नाद मारू तिसी खेत बाजे ॥
दित्रयादित गाड़े दुहूं ओर गाजे ॥२६॥
महा कोप कै कै कहूं बीर जूझे ॥
परे भाति ऐसी नही जात बूझे ॥
कहूं राज बाजी जिरह बीर भारी ॥
कहूं तेग औ तीर काती कटारी ॥२७॥
कहूं टोप टूटे कहूं राग भारी ॥
कहूं ज्वान जेबे सु काती कटारी ॥
कहूं सूल सैथी गिरी भूमि ऐसी ॥
दिपै चार सोभा महा ज्वाल जैसी ॥२८॥

चौपई ॥

ब्रिंदा को प्रथमै सत टारियो ॥
ता पाछै जालंधर मारियो ॥
बहुरो राज आपनो लियो ॥
सुर पुर माझ बधावो कियो ॥२९॥

दोहरा ॥

इह चरित्र सौ बिसन जू ब्रिंदा को सत टारि ॥
आनि राज अपनो लयो जालंधर कह मारि ॥३०॥१॥

CHARITAR १२० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥120॥2362॥अफजूं॥*

चौपई ॥

जहागीर जब तखत सुहावै ॥
बुरका पहिरि नारि इक आवै ॥
खीसे काटि बहुन के लेई ॥
निज मुख किसू न देखन देई ॥१॥
ता को भेद एक नर पायो ॥
और न काहूं तीर जतायो ॥
प्रात भए आई त्रिय जानी ॥
चित के बिखै इहै मति ठानी ॥२॥
पनही हाथ आपने लई ॥
अधिक मारि ता त्रिय कौ दई ॥
सतर छोरि आई क्योन चारी ॥
जूतिन सौ कमरी करि डारी ॥३॥

दोहरा ॥

कमरी कै जूतिन दई भूखन लए उतारि ॥
किह निमित आई इहा ऐसे बचन उचारि ॥४॥

चौपई ॥

सभहूं इहै चित मै जानी ॥
ता की नारि त्रिया पहिचानी ॥
बिनु पूछे पति के क्योन आई ॥

जा ते आजु मारि तैं खाई ॥५ ॥
जब लौ ताहि त्रियहि सुधि आई ॥
तब लौ गयो वह पुरख लुकाई ॥
ता ते त्रसत न तह पुनि गई ॥
चोरी करत हुती तजि दई ॥६ ॥

CHARITAR १२१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥121॥2368॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अभै साड राजा इक भारो ॥
कहलूर के देस उजियारो ॥
खान ततार खेत तिन मारियो ॥
नाकन को कूआ भर डारियो ॥१ ॥
ता पै चड़े खान रिसि भारे ॥
भाति भाति तिन न्रिपति संघारे ॥
हारे सभै उपाइ बनायो ॥
छजूअहि गजूअहि खान बुलायो ॥२ ॥
काख बिखै कबूतर इक राखियो ॥
तिन सौ बचन बकत्र ते भाखियो ॥
या न्रिप को जु बुरा कोऊ करि है ॥
ता को पाप मूड इह परि है ॥३ ॥
यह सुनि बचन मानि ते गए ॥
भेद अभेद न चीनत भए ॥
जाइ राव प्रति यहै उचारो ॥
तव देखन कौ हियो हमारो ॥४ ॥
यौ सुनि बचन राव तिह आयो ॥
चारि चारि भीतरि बैठायो ॥
तिन आयुध देखन कौ लए ॥
हाथो हाथ काढि कै दए ॥५ ॥
आयुधु काढि ऐस बिधि दए ॥
जोरे एक बनावत भए ॥
जा की बाह सीवि दोऊ लीनी ॥
बिनु बाधो मुसकै जन दीनी ॥६ ॥
एक भाट कौ भेद बतायो ॥
राजा के मुख पै कहायो ॥
जो सभ ससत्र दै मुझ डारे ॥
तौ दाता तू जान हमारै ॥७ ॥
यह सुनि न्रिपति ससत्र दै डारे ॥
होर रहे मंत्रीन निवारे ॥
जान्यो न्रिपति निरायुध भयो ॥
बागो आनि ताहि पहिरयो ॥८ ॥

दोहरा ॥

सो बागो पहिरियो न्रिपति बाह कढी नहि जाहि ॥
तीर खान ठाढो हुतो मुसकै लई चराइ ॥९ ॥

चौपई ॥

सुंदर राज पुत्र तह भारो ॥
तुरत तेग कह ताहि संभारो ॥
तमकि वार ता तुरकहि कियो ॥
बाहन दुहूं दुधा करि दियो ॥१०॥

दोहरा ॥

एक राव अगनित तुरक कह लगि लरै रसाइ ॥
सुंदर कौ राजा भए मारत भए बजाइ ॥११॥

चौपई ॥

जल के अस्व अस्व इक जायो ॥
सो बागा राजे के आयो ॥
चरवेदार ताहि लै गयो ॥
भेद रानियन कौ लै दयो ॥१२॥

दोहरा ॥

कुंकम दे घनसार दे यौ स्रवनन सुनि पाइ ॥
मतो बैठि दुहूंअन कियो जूझि मरन के भाइ ॥१३॥
जौ हमरे पति लरि मरे समुह बदन ब्रिण खाइ ॥
तौ हम हूं सभ लरि मरै नर को भेख बनाइ ॥१४॥

चौपई ॥

यहै मंत्र सभहूंन बिचारियो ॥
सभ हूं भेख पुरख को धारियो ॥
एक दिसा कुंकम दे गई ॥
दे घनसार दूज दिसि भई ॥१५॥

दोहरा ॥

कुंकम दे घनसार दे दोऊ अनी बनाइ ॥
दुहूं ओर ठाढी भई जुध करन के भाइ ॥१६॥

चौपई ॥

दुहूं ओर ते ससत्र चलाए ॥
दुहूं ओर बादित्र बजाए ॥
ऐसी मारि क्रिपानन डारी ॥
एक न उबरी जीवत नारी ॥१७॥

दोहरा ॥

बज्र बान बिछूआ बिसिख बरखियो लोह अपार ॥
सभ अबला जूझत भई एक न उबरी नारि ॥१८॥

चौपई ॥

बरछी दुहूं दोफली लीनी ॥
दुहूंअन वहै उदर मै दीन ॥
तिह को झागि कटारिन लरी ॥

दोऊ जूझि खेत मै परी ॥१९॥

दोहरा ॥

सत्रुन सौ बाला लरी प्रीति पिया की मानि ॥
निजु पति को पावत भई सुरपुर कियो पयान ॥२०॥
प्रीति पिया की जे लरी धंनि धंनि ते नारि ॥
पूरि रहियो जसु जगत मै सुर पुर बसी सुधारि ॥२१॥
जूझि मरी पिय पीर त्रिय तनिक न मोरियो अंग ॥
सु कबि स्याम पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥२२॥

CHARITAR १२२ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बाईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥122॥2390॥अफजूं॥*

चौपई ॥

देव अदेव मिलत सभ भए ॥
छीर समुंद मथबे कह गए ॥
चौदह रतन निकारे जब ही ॥
दानो उठे कोप करि तब ही ॥१॥
हम ही रतन चौदहूं लै है ॥
नातर जियन न देवन दै है ॥
उमडी अमित अनिन को दलि है ॥
लहु भैयन ते भाजि न चलि है ॥२॥

दोहरा ॥

राज काज अर साज सभ आवत कछु जु बनाइ ॥
जेसट भ्रात को दीजियत लहुरे लई न जाइ ॥३॥

भुजंग छंद ॥

चड़े रोस कै कै तहीं दैत भारे ॥
घुरे घोर बाजे सु मारू नगारे ॥
उतै कोप कै कै हठी देव ढूके ॥
उठे भाति ऐसी सु मानौ भभूकै ॥४॥
मंडे कोप कै कै महा रोस बाढै ॥
इते देव बाके उतै दैत गाढै ॥
छके छोभ छत्री महा ऐठ ऐठे ॥
चड़े जुध कै काज ह्वै कै इकैठे ॥५॥
कहूं टीक टाकै कहूं टोप टूके ॥
किये टीपो टापै कई कोटि ढूके ॥
कहूं टाक टूकै भए बीर भारे ॥
करेरे कटीले करी कोटि मारे ॥६॥
किते डोब डूबै किते घाम घूमै ॥
किते आनि जोधा परे झूमि झूमै ॥
किते पानि मागे किते मारि कूकै ॥
किते बाढवारीन को काढ ढूकै ॥७॥
किते चोट ओटै किते कोटि पैठै ॥
किते राग मारू सुने आनि ऐठै ॥

किते भीर भाजे किते सूर कूटे ॥
किते बाज मारे रथी क्रोरि लूटे ॥८॥
कहूं ज्वान जेबे कहूं बाज मारे ॥
कहूं भूमि झूमे दित्रयादित भारे ॥
किते बीर घायन घाए पधारे ॥
किते खेत सोहे महाबीर डारे ॥९॥
इतै सूर कोपियो उतै चंद्र धायो ॥
इतै जोरि गाड़ी अनी इंद्र आयो ॥
उतै बुधि बाधी धुजा बीर बाको ॥
इतो काल कोपियो जितै कौन ता को ॥१०॥
इतै कोपि कै ऐस बाचे सिधायो ॥
दुतिय ओर ते चारज सुक्रा रिसायो ॥
कोऊ तीर छोरै कोऊ मंत्र डारै ॥
लिखै जंत्र केऊ केऊ तंत्र सारै ॥११॥
किते तेग सूते किते बान मारै ॥
किते गोफनै गुरज गोले उभारै ॥
किते मुगद्र ठावैं किते तीर छोरै ॥
किते बीर बीरान को मूंड फोरै ॥१२॥
कहूं छत्र जूझे कहूं छत्र टूटे ॥
कहूं बाज ताजी जिरह राज लूटै ॥
किते पास पासे किते झोक झोरे ॥
किते छिप्र छेके किते छैल छोरे ॥१३॥
किते सूर स्रोनान के रंग रंगे ॥
बचे बीर बाकान बाजी उमंगे ॥
महा भेर भारी महा नाद बाजे ॥
इतै देव बाके उतै दैत गाजे ॥१४॥
उठियो राग मारू महा नाद भारो ॥
इतै सुंभ नैसुंभ दानो संभारो ॥
बिड़ालाछ ज्वालाछ धूम्राछ जोधे ॥
हटे न हठीले किसू के प्रबोधे ॥१५॥
परियो लोह गाड़ो महा खेत भारी ॥
इतै देव कोपे उतै वै हकारी ॥
जुरे आनि दोऊ भैया कौन भाजै ॥
चले भाजि ता की सु मातान लाजै ॥१६॥
जुरे आनि भाई भैया कौन हारै ॥
मरै साचु पै पाव पाछे न डारै ॥
भरे छोभ छत्री महा रुद्र नाचियो ॥
परियो लोह गाड़ो महा लोह माचियो ॥१७॥
हठे ऐठियारे हठी ऐंठि कै कै ॥
महा जुध सौडी महा ही रिसै कै ॥
महा सूल सैथीन के वार छंडे ॥
इते दैत बाके उते देव मंडे ॥१८॥
इतै देव रोहे उते दैत कोपे ॥
भजै नाहि गाड़े प्रिथी पाइ रोपे ॥
तबै बिसन जू मंत्र ऐसे बिचारियो ॥
महा सुंदरी एस को भेस धारियो ॥१९॥
महा मोहनी भेस धारियो कन्नहाई ॥
जिनै नैक हेरियो रहियो सो लुभाई ॥
इतै दैत बाके उतै देव सोहै ॥
दुहू छोरि दीनो महा जुध मोहै ॥२०॥

दोहरा ॥

कालकूट अरु चंद्रमा सिव के दए बनाइ ॥
ऐरावति तरु उचस्रवि हरहि दए सुख पाइ ॥२१॥
कौसतक मनि अरु लछिमी आपुन लई मंगाइ ॥
देव अंम्रित असुरन सुरा बाटत पए बनाइ ॥२२॥

चौपई ॥

रंभा और धनंतर लियो ॥
सभ जग के सुख कारन दियो ॥
तीनि रतन दिय औरु निकारे ॥
तुमहूं तिनो लखत हो प्यारे ॥२३॥
सवैया ॥
रीझि रहे छबि हेरि सुरासर सोक निवार असोकुपजायो ॥
छोरि बिवाद कौ दीन दोऊ सुभ भाग भरियो सबहूं हरि भायो ॥
कुंजर कीर कलानिधि केहरि मान मनोजव हेरि हिरायो ॥
जो तिन दीन सु लीन सभो हसि काहूं न हाथ हथिआर उचायो ॥२४॥

भुजंग छंद ॥

इनै अंम्रित बाट्रयो उनै मद्रय दीनो ॥
छले छिप्र छैली छली भेस कीनो ॥
महा बसत्र धारे इतै आपु सोहै ॥
सभै दैत देवान के चित मोहै ॥२५॥

दोहरा ॥

धरियो रूप त्रिय को तहा आपुन तुरति मुरारि ॥
छली छिनिक मो छलि गयो जिते हुते असुरारि ॥२६॥

CHARITAR १२३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥123॥2416॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

नारनौल के देस मै बिजै सिंघ इक नाथ ॥
रैनि दिवस डारियो रहै फूल मती के साथ ॥१॥
बिजै सिंघ जा को सदा जपत आठहूं जाम ॥
फूलन के संग तोलियै फूल मती जिह नाम ॥२॥
बिजै सिंघ इक दिन गए आखेटक के काज ॥
भ्रमर कला को रूप लखि रीझ रहे महाराज ॥३॥

चौपई ॥

तह ही ब्याह धाम त्रिय आनी ॥
राव हेरि सोऊ ललचानी ॥
फूल मती सुनि अधिक रिसाई ॥
आदर सो ता को ग्रिह ल्याई ॥४॥
ता सौ अधिक नेह उपजायो ॥
धरम भगनि करि ताहि बुलायो ॥

चित मै अधिक कोप त्रिय धरियो ॥
ता की नास घात अटकरियो ॥५॥
जा की त्रिया उपासिक जानी ॥
वहै घात चीनत भी रानी ॥
रुद्र देहरो एक बनायो ॥
जा पर अगनित दरब लगायो ॥६॥
दोऊ सवति तहा चलि जावै ॥
पूजि रुद्र कौ पुनि घर आवै ॥
मट आछो ऊचो धुज सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥७॥

दोहरा ॥

पुर बासनि सुंदरि सभै तिह ठा करै पयान ॥
महा रुद्र कौ पूजि कै बहुर बसै ग्रिह आनि ॥८॥
अड़िल ॥
एक दिवस रानी लै ता कौ तह गई ॥
निजु करि असि गहि वाहि मूंड काटत भई ॥
सीस काटि सिव ऊपर दयो चराइ कै ॥
हो रोवत न्रिप प्रति आपु उचारियो आइ कै ॥९॥

दोहरा ॥

धरम भगनि मुहि संग लै रुद्र देहरे जाइ ॥
मूंड काटि निजु कर असहि हर पर दियो चराइ ॥१०॥

चौपई ॥

यौ सुनि बात तहा न्रिप आयो ॥
जह त्रिय तौन नारि कौ घायो ॥
ताहि निहारि चक्रित चित रहियो ॥
त्रिय को कछुक बैन न कहियो ॥११॥

दोहरा ॥

मूंड काटि जिन निजु करन हर पर दियो चराइ ॥
धंन्यो त्रिया धंनि देस तिह धंन्य पिता धंनि माइ ॥१२॥
दाह दियो तिह नारि कौ चित अति सोक बढाइ ॥
फूल मती के भवन मै बहुरि बसत भयो आइ ॥१३॥
सवति मारि निजु करन सौ और न्रिपहि दिखराइ ॥
राजा कौ निजु बस कियो ऐसो चरित बनाइ ॥१४॥
ब्रहम बिसन सर असुर सभ रैनाधिप दिनराइ ॥
बेद ब्यास अरु बेद त्रिय भेद सके नहि पाइ ॥१५॥

CHARITAR १२४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौबीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥124॥2431॥अफजूं॥*

सवैया ॥
लंक मै बंक निसाचर थो रघुनंदन को सुनि एक कहानी ॥
रावन पुत्र कलत्र समेत हने इह खेत महा बलिधानी ॥
रोस भरियो ततकाल गदा गहि कौचक से मद मत क्रिपानी ॥

कोट कौ कूदि समुंद्र कौ फाधि फिरंग मौ आनि परियो अभिमानी ॥१॥
आठिक द्योस अंधेर रहियो पुनि सूर चड़ियो जग धुंध मिटाई ॥
दानव कौ लखि लोकन कै अति ही चित मै उपजी दुचिताई ॥
बाधि अनी भट भूरि चड़े रिपु जीतन की जिय ब्योत बनाई ॥
बान कमान गदा बरछीन की आनि करी तिह साथ लराई ॥२॥
एक परे भभरात भटुतम एक लगे भट घायल घूंमै ॥
एक चलै भजि कै रन ते इक आनि परे मरि कै गिरि भूंमै ॥
एक मरे लरि कै हय ऊपर हाथिन पै इक स्यंदन हूं मै ॥
मानो त्रिबेनी के तीरथ पै मुनि नायक धूम अधो मुख धूंमै ॥३॥
कौच किपान कसे कटनी कटि अंग उतंग सुरंग निखंगी ॥
चौपि चले चहूं ओरन ते घन सावन की घट जान उमंगी ॥
जंग निसंग परियो संग सूरन नाचियो है आपु तहा अरधंगी ॥
रोस भरे न फिरे त्रसि कै रन रंग पचे रवि रंग फिरंगी ॥४॥

चौपई ॥

भेर परियो भारथ ते भारी ॥
नाचे सूरबीर हंकारी ॥
बहु ब्रिण कीए न इक तिह लागियो ॥
अधिक कोप दानव को जागियो ॥५॥
एक हाथ तिन गदा संभारी ॥
दूजो कर तरवारि निकारी ॥
जा कौ दौरि दैत ब्रिण मारे ॥
एकै चोट चौथ ही डारै ॥६॥
जो कोऊ ता कह घाव लगावै ॥
टूटि क्रिपान हाथ रहि जावै ॥
दानव कोप अधिक तब करै ॥
प्रान फिरंगनि बहु के हरै ॥७॥

भुंजग छंद ॥

महा नादि कै कै जबै दैत धावै ॥
घनी सैन को मारि कै कै सु जावै ॥
बियो कौन जोधा लरै रोस कै कै ॥
चले बाज हेरै महा ताप तै कै ॥८॥
लखे दैत भारी सभै भूप भागै ॥
महा त्रास के ताप सौ अनुरागै ॥
चले भाजि कै कै हठी नारि न्याए ॥
करी बाज राजे पियादे पराए ॥९॥

चौपई ॥

सैन भजत लखि भटि रिसि भरे ॥
पलटि कोप कै कै फिरि परै ॥
जेते लखे दैत फिरि आए ॥
घाइ घाइ जम लोक पठाए ॥१०॥
बीस हजार करी तिन घायो ॥
तीस हजार सु बाज खपायो ॥
चालिस सहस तहा रथ काटे ॥
अभ्रन ज्यो जोधा चलि फाटे ॥११॥

दोहरा ॥

बहुरि गदा गहि हाथ मै प्रतिना पतन अपार ॥
भाति भाति संग्रत भयो कछू न संक बिचार ॥१२॥

चौपई ॥

ता सौ जुध सभै करि हारे ॥
तिन ते गए न असुर संघारे ॥
उगियो चंद्र सूर असताए ॥
सभ ही सुभट ग्रिहन हटि आए ॥१३॥
भयो प्रात जब तम मिटि गयो ॥
कोप बहुरि सूरन को भयो ॥
फौजै जोरि तहा चलि आए ॥
जिह ठा दैत घने भट घाए ॥१४॥
डारि पाखरै तुरे नचावै ॥
केते चंद्रहास चमकावै ॥
तनि तनि केतिक बानन मारै ॥
अमित घाव दानव पर डारै ॥१५॥

भुजंग छंद ॥

हठ्यो आपु दानव गदा हाथ लै कै ॥
लई काढि काती महा कोप कै कै ॥
जिते आनि ढूके तिते खेत मारे ॥
गिरे भाति ऐसी न जावै बिचारे ॥१६॥
किते हाक मारै किते घूंम घूंमै ॥
किते जुध जोधा परे आनि भूमै ॥
किते पानि मागै किते हूह छोरैं ॥
किते जुध सौडीन के सीस तोरै ॥१७॥
कहूं बाज जूझै कहूं राज मारे ॥
कहूं छेत्र छत्री करी ताज डारे ॥
चले भाजि जोधा सभै हारि मानी ॥
कछू लाज की बात कै नाहि जानी ॥१८॥
हठी जे फिरंगी महा कोप वारै ॥
लरे आनि ता सो न नैकै पधारे ॥
छकै छोभ छत्री महा कोप ढूके ॥
चहूं ओर ते मार ही मारि कूके ॥१९॥
जिते आनि जूझे सभै खेत घाए ॥
बचे जीति ते छाडि खेतै पराए ॥
हठे जे हठीले हठी खग कूटे ॥
महाराज बाजीन के मूंड फूटे ॥२०॥

चौपई ॥

बीस हजार करी कुपि मारे ॥
तीस हजार अस्व हनि डारै ॥
चालिस सहस रथिन रथ टूटै ॥
साठि सहस्र रथी हूं कूटे ॥२१॥

दोहरा ॥

एती सैन संघारि कै पैदल हन्यो अपार ॥
जनु करि जए न काखि ते आए नहि संसार ॥२२॥

चौपई ॥

सभ ही बीर जुध करि हारे ॥
तिन ते गए न दानौ मारै ॥
खेत छोरि सभ ही घर गए ॥
मतो करत ऐसी बिधि भए ॥२३॥
सवैया ॥
कैसे हूं मारियो मरै न निसाचर जुध सभै करि कै भट हारे ॥
बान क्रिपान गदा बरछीन के भाति अनेकन घाइ प्रहारे ॥
सो नहि भाजत गाजत है रन होत निवरतन क्यो हूं निवारे ॥
देस तजै कहूं जाइ बसै कह आवत है मन मंत्र तिहारे ॥२४॥

चौपई ॥

इंद्रमती बेस्वा तह रहई ॥
अधिक रूप ता कौ जग कहई ॥
सूरज चंद्र जोति जो धारी ॥
जनु याही ते लै उजियारी ॥२५॥

दोहरा ॥

तिन बीरा तह ते लयो चली तहा कह धाइ ॥
बसत्र पहिरि तित कौ चली जित असुरन को राइ ॥२६॥

चौपई ॥

मेवा और मिठाई लई ॥
माटन मो धर पर भरि दई ॥
जह फल खात असुर को राई ॥
तिन लै बन सौ सकल लगाई ॥२७॥
जब दानो कौ भूखि संतायो ॥
तब बन के भछन फल आयो ॥
माट फोरि पकवान चबाइस ॥
मदरा पियत अधिक मन भाइस ॥२८॥
पी मदरा भयो मत अभिमानी ॥
यह जब बात बेसुवन जानी ॥
भाति भाति बादित्र बजाए ॥
गीति अनेक तान कै गाए ॥२९॥
ज्यों ज्यों पात्र नाचती आवै ॥
त्यों त्यों दानो सीस ढुरावै ॥
कोप कथा जिय ते जब गई ॥
कर की गदा बखसि कर दई ॥३०॥
आई निकट लखी जब प्यारी ॥
हुती क्रिपान सोऊ दै डारी ॥
आयुध बखसि निरायुध भयो ॥
यह सभ भेद तिनै लखि लयो ॥३१॥
नाचत निकट दैंत के आई ॥
साकर कर सों गई छुआई ॥
ता सो जंत्र मंत्र इह कीयो ॥
भेटयो तनिक कैद करि लीयो ॥३२॥

दोहरा ॥

तनिक छुअत ता के तुरत बाधि गयो ततकाल ॥
दानव को बाधत भई इह चरित्र करि बाल ॥३३॥

भुजंग छंद ॥

छलियो छैल दानो इसी छलै बाला ॥
लीयो बस्त्रय कै कै महा रूप आला ॥
बंध्रयो बीर मंत्रान के जोर आयो ॥
सभै ग्राम बासीन कौ लै दिखायो ॥३४॥
प्रथम ग्राम बासीन कौ लै दिखारियो ॥
पुनिर खोदि भूमै तिसै गाडि डारियो ॥
जिनै लै गदा को घनो बीर मारे ॥
भए तेज मंत्रान केते बिचारे ॥३५॥

दोहरा ॥

जिन खेचर कर खग लै खत्री हने अपार ॥
ते छैली इह छल छलियो ऐसो चरित्र बिचार ॥३६॥

CHARITAR १२५ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥125॥2467॥अफजूं॥

दोहरा ॥

देस तपीसा के बिखै गड़ी सिनसिनी एक ॥
जीति न कोऊ तिह सकियो भिरि भिरि गए अनेक ॥१॥

चौपई ॥

अबदुल नबी तहा कह धायो ॥
चारि द्योस लगि जुध मचायो ॥
अधिक मारि गोलिन की भई ॥
भ्रितन बिसर सकल सुधि गई ॥२॥
आखर गड़ी तवन कौ तोरियो ॥
या कौ किनी न मुहरो मोरियो ॥
अटकत एक अटारी भई ॥
अधिक मारि गोलिन की दई ॥३॥
भरि भरि तुपक तवन त्रिय ल्यावै ॥
लै लै कर मै पुरख चलावै ॥
तकि तकि तन जा के मै मारै ॥
है गै रथ बीरान बिदारै ॥४॥
भरि बंदूक त्रिय सिसत बनाई ॥
खान नबी के ह्रिदै लगाई ॥
लागत घाइ हाहि नहि भाखियो ॥
मारि पालकी भीतरि राखियो ॥५॥

दोहरा ॥

नबी तुपक के संग हन्यो उतै जुध अति होइ ॥
इति भ्रित पति लै घर गए उतै न जानत कोइ ॥६॥
एक तोपची तुपक लै बाधी सिसत बनाइ ॥

ता के पति के उर बिखै गोली हनी रिसाइ ॥७॥

चौपई ॥

लगे तुपक के ब्रिण भट जूझियो ॥
ठाढी निकट तवन त्रिय बूझियो ॥
चकमक झारि कढी चिनगारी ॥
तिन छपरन मो छिप्र प्रजारी ॥८॥
मुगल सेख सैयद तह आए ॥
ता त्रिय को यौ बचन सुनाए ॥
अब तूं इसत्री होहि हमारी ॥
निकट लागि इह भाति उचारी ॥९॥

दोहरा ॥

सुत बालक भरता मरियो इन को प्रथम जराइ ॥
बहुरि तिहारो धाम मै आजु बसौगी आइ ॥१०॥

चौपई ॥

प्रथम चिता मै सुत कौ डारियो ॥
म्रितक खसम कौ बहुरि प्रजारियो ॥
बहुरौ काखि मुगल को भरी ॥
आपन लै पावक मो परी ॥११॥

दोहरा ॥

सुत जराइ पति जारि कै बहुरि मुगल गहि लीन ॥
ता पाछे आपन जरी त्रिय चरित्र यौ कीन ॥१२॥

CHARITAR १२६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छबीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥126॥2479॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बीर दत चंडालिक रहै ॥
अति तसकर ता कौ जग कहै ॥
खान खवीन तहा जो आवै ॥
ता कौ लूटि कूटि लै जावे ॥१॥
जो आवत कोऊ राह निहारै ॥
जाइ तवन कौ तुरत हकारै ॥
जो तनि धनु रिपु तीर चलावै ॥
छुरा भए तिह काटि गिरावै ॥२॥

दोहरा ॥

लहै निसा इक जब भयो तब वह करत प्रहार ॥
जीवत किसू न छोरई डारत ही संघार ॥३॥

चौपई ॥

रतन सिंघ तिह मग ह्वै आयो ॥

सो लखि तवन चोर नै पायो ॥
ता कहु कहियो बसत्र तुम डारो ॥
नातर तीर कमान संभारो ॥४॥
रतन सिंघ जो तीर चलावै ॥
सोऊ छुरा ते काटि गिरावै ॥
उनसठि तीर छोरि तिन कहियो ॥
एक तीर तरकस मम रहियो ॥५॥

दोहरा ॥

सुनु तसकर मै बिसिख को जा कौ कीयो प्रहार ॥
आजु लगे चूकियो नहीं सुनि लै बचन हमार ॥६॥

चौपई ॥

मै जेते तुहि तीर चलाए ॥
सो सभ ही तै काटि गिराए ॥
अब चेरौ चित भयो हमारो ॥
कहो सु करिहौ काजि तिहारो ॥७॥

दोहरा ॥

एक हौस मन महि रही सो तुहि कहौ सुनाइ ॥
जिह भाखै मारौ तिसै दीजै कछू बताइ ॥८॥

चौपई ॥

यौ सुनि चोर अधिक सुख पायो ॥
एक पत्र करि साथ बतायो ॥
जब ता की तिन द्रिसटि चुराई ॥
तनि गासी तिह मरम लगाई ॥९॥

दोहरा ॥

रतन सिंघ इह छल भए खल की द्रिसटि बचाइ ॥
मरम सथल मारियो बिसिख दीनो ताहि गिराइ ॥१०॥

CHARITAR १२७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सातईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥127॥2489॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

मारवार के देस मै उग्र दत इक राव ॥
कोप जगे पावक मनो सीतल सलिल सुभाव ॥१॥

चौपई ॥

धरवारन ता को धन मारियो ॥
पुरी आइ पालकन पुकारियो ॥
अगनत ढोल नगारे बाजे ॥
कौच पहिरि सूरमा बिराजे ॥२॥

दोहरा ॥

बजियो जूझऊआ दुहूं दिसि सूरा भयो सुरंग ॥
पखरारे नाचत भए कातर भए कुरंग ॥३॥

भुजंग छंद ॥

महाबीर गाजे महा कोप कै कै ॥
तिसी छेत्र छत्रीन को छिप्र छै कै ॥
ब्रछी बान बज्रान के वार कीने ॥
किते खेत मारे किते छाडि दीने ॥४॥
किते खिंग खंगे किते खेत मारे ॥
घुरे घोर बाजंत्र मारू नगारे ॥
बचियो बीर एकै न बाजंत्र बाजी ॥
महा त्रास कै कै महा सैन भाजी ॥५॥

चौपई ॥

जब ही भाजि सैन सभ गयो ॥
कोप तबै राजा को भयो ॥
सामुहि ह्वै कै जुध मचायो ॥
देखन इंद्र देव रन आयो ॥६॥
बिसनु दत अति ही सुभ कारी ॥
उहि दिसि को राजा हंकारी ॥
सो आपन लरबे को धायो ॥
उत ते उग्र दत न्रिप आयो ॥७॥
दोऊ सैन राव दोऊ लै कै ॥
रन कौ चले कोप अति कै कै ॥
खड़ग सूल सैथी चमकावत ॥
मारू राग सिधारे गावत ॥८॥
सवैया ॥
ताज परे कहूं साज जिरे कहूं बाज मरे गजराज संघारे ॥
गावत बीर बिताल फिरै कहूं नाचत भूत भयानक भारे ॥
भीत भजे लखि भीर परी अति त्रास भरे सुनि नाद नगारे ॥
कापत है इह भाति मनौ गन गोरन के जनु ओरन मारे ॥९॥
एक महा भट भीर परी लखि भीत भए सु चले भजि कै ॥
इक आनि परे न टरे रन ते करवार कटारिन कौ सजि कै ॥
इक पानिहि पानि रटै मुख ते इक मारहि मारि कहै ग्रजि कै ॥
इक जूझि मरै इक स्वासि भरै इक आनि अरै रजिया रजि कै ॥१०॥

दोहरा ॥

तरफराहि सूरा धरनि बरखियो सार अपार ॥
जे अब्रिणी ठाढे हुते ब्रिणी करे करतार ॥११॥

चौपई ॥

ऐसो बीर खेत तह परियो ॥
एक बीर साबत न उबरियो ॥
राजा जू खेत गिरि गए ॥
जीवत रहे म्रितक नहि भए ॥१२॥

दोहरा ॥

खेत परे न्रिप कौ निरखि भाजे सुभट अनेक ॥
स्याम भनै रन भूमि मै रहियो न सूरा एक ॥१३॥

कबितु ॥

भारे भारे सूरमा पुकारै कै कै महा नाद रानी हम मारे राजा जियते संघार है ॥
केते रथ टूटे केते सूरन के सीस फूटे केते हय छूटे केते हयहूं प्रहारे है ॥
केते करी मारे केते करहि बिदारे केते जुध ते निवारे केते पैदल लतारे है ॥
लोह के करारे केते अस्व हूं उतारे केते खंडे जिनि खंड ते अखंड खंड डारे है ॥१४॥
सवैया ॥
जोरि सभा सुभ बोलि बडे भट और उपाइ कहौ सु करै ॥
उन सूरन ते नहि एक बचियो दुख है छतिया किह भाति भरै ॥
क्यो न देहु बनाइ बडे दल कौ संग जाइ तही फिरि जूझि मरै ॥
फिरि है किधौ जीति अयोधन को नहि राइ मरे तही जाइ मरै ॥१५॥

दोहरा ॥

भाति भाति मारू मंडे कंत जुझियो रन माहि ॥
साजि सैन चतुरंगनी चलहु तहा कह जाइ ॥१६॥
सवैया ॥
मारि परे बिसंभार धरा पर सूर सभे सुख सुध अनीके ॥
ता पर कंत सुनियो जु जुझियो दिन रैनि बसै जोऊ अंतर जीके ॥
ता बिनु हार सिंगार अपार सभै सजनी मुहि लागत फीके ॥
कै रिपु मारि मिलो मै पिया संग नातर पयान करो संग पी के ॥१७॥
जोरि महा दल कोरि कई भट भूखन अंग सुरंग सुहाए ॥
बाधि क्रिपान प्रचंड चड़ही रथ देव अदेव सभै बिरमाए ॥
बीरी चबात कछू मुसकात सु मोतिन हार हिये उरझाए ॥
अंग दुकूल फबै सिर फूल बिलोकि प्रभा दिव नाथ लजाए ॥१८॥

दोहरा ॥

जोरि अनी गाड़े सुभट तह ते कियो पयान ॥
पलक एक लागी नही तहा पहूचै आनि ॥१९॥
सवैया ॥
आवत ही अति जुध करियो तिन बाज करी रथ क्रोरिन कूटे ॥
पासन पासि लए अरि केतिक सूरन के सिर केतिक टूटे ॥
हेरि टरे कोऊ आनि अरे इक जूझि परे रन प्रान निखूटे ॥
पौन समान छुटे त्रिय बान सभै दल बादल से चलि फूटे ॥२०॥

चौपई ॥

मानवती जिह ओर सिधारे ॥
एक तीर इक स्वार संघारे ॥
पखरे केते पदुम बिदारे ॥
कोटिक करी खेत मै मारे ॥२१॥

दोहरा ॥

सभ सखिया हरखति भई कातर भई न कोइ ॥
जुध काज सभ ही चली काल करै सो होइ ॥२२॥
सवैया ॥
चाबुक मारि तुरंग धसी रन काढि क्रिपान बडे भट घाए ॥

पासन पासि लए अरि केतिक जीवत ही गहि जेल चलाए ॥
चूरन कीन गदा गहि कै इक बानन सौ जम लोक पठाए ॥
जीति लए अरि एक अनेक निहारि रहे रन छाडि पराए ॥२३॥
पासन पासि लए अरि केतिक काढि क्रिपान कई रिपु मारे ॥
केते हने गुरजान भए भट केसन ते गहि एक पछारे ॥
सूलन सागन सैथिन के संग बानन सौ कई कोटि बिदारे ॥
एक टरे इक जूझि मरे सुर लोक बरंगनि साथ बिहारे ॥२४॥

चौपई ॥

ऐसे जब अबला रन कीनो ॥
ठाढे इंद्र दत सभ चीनो ॥
पुनि सैना को आयसु दयो ॥
ता कौ घेरि दसो दिसि लयो ॥२५॥

दोहरा ॥

चहूं ओर घेरत भए सभ सूरा रिसि खाइ ॥
भाति भाति जूझत भए अधिक ह्रिदै करि चाइ ॥२६॥

चौपई ॥

मारि मारि कहि बान चलाए ॥
मानवती के सामुहि धाए ॥
तब अबला सभ ससत्र संभारे ॥
बीर अनेक मार ही डारे ॥२७॥
लगे देह ते बान निकारे ॥
तनि तनि वहै बैरियन मारे ॥
जा के अंग घाइ द्रिड़ लागे ॥
गिरि परे बहुरि नहि जागे ॥२८॥
भाति भाति सभ सुभट संघारे ॥
जियत बचे रन त्याग पधारे ॥
इंद्र दत को प्रिथम संघारियो ॥
उग्र दत को बहुरि निहारियो ॥२९॥

दोहरा ॥

उग्र दत को जीति रन जियत बिलोकियो जाइ ॥
अति रानी हरखति भई राजा लियो उठाइ ॥३०॥
अड़िल ॥
रानी लयो उठाइ न्रिपति सुख पाइ कै ॥
अमित दए तिन दान सदन मै आइ कै ॥
घने घरन कौ घाइ सत्रु पति घाइयो ॥
हो राज कियो पुनि आनि हरख उपजाइयो ॥३१॥
राजा बाच ॥

दोहरा ॥

धंनि रानी तै जीति रन हम को लयो उबारि ॥
आज लगे चौदह भवन होइ न तो सी नारि ॥३२॥
धंन रानी तै मारि अरि मारि सत्रु पति लीन ॥
रन ते लयो उचाइ मुहि नयो जनम जनु दीन ॥३३॥

चौपई ॥

सुनु रानी तै मोहि जियारो ॥
अब चेरो मै भयो तिहारो ॥
अब यौ बसी मोर मन माही ॥
तो सम और त्रिया कहूं नाही ॥३८॥

CHARITAR १२८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठाईसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥128॥2523॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

रावी नदि ऊपर बसै नारि साहिबा नाम ॥
मिरजा के संग दोसती करत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

ता को दूलह ब्याहन आयो ॥
यह मिरजा चित चिंत बढायो ॥
या को जतन कौन सो कीजै ॥
या ते यह अबला हरि लीजै ॥२॥
त्रिय हूं के जिय मै यो आई ॥
प्यारो मित्र न छोरियो जाई ॥
या कौ ब्याहि कहा मै करिहौ ॥
याही सो जीहौ कै मरिहौ ॥३॥
मीत भोग तुमरे मै रसी ॥
पति त्रिय भाव जानि ग्रिह बसी ॥
मेरो चित चोरि तै लीनो ॥
ता ते जात ब्याह नहि कीनो ॥४॥

दोहरा ॥

साच कहत जिय की तुमै सुनिहौ मीत बनाइ ॥
मुख मागे बरु देत नहि घोल घुमाई माइ ॥५॥

चौपई ॥

अब मुहि मीत कहो का करौं ॥
तोहि छाडि वा कौ नहि बरौं ॥
मो कहु बाज प्रिसटि पर डारो ॥
आपन लै करि संग सिधारो ॥६॥

दोहरा ॥

जब लौ हमरे धाम नहि गए बराती आइ ॥
तब लौ मुहि तै बाज पै डारि लिजाइ तु जाइ ॥७॥
सवैया ॥
तेरे ही संग बिराज हो मीत मै और करौगी कहा पति कै कै ॥
तोहू कौ आजु बरौ न टरौ मरिहौ नहि हाल हलाहल खै कै ॥
नेहु बढाइ सु केल कमाइ सु देत तिनै अपनी त्रिय कै कै ॥
वै दिन भूलि गए तुम को जिय हो कैसो लालन लाज लजै कै ॥८॥

पीरी ह्वै जात घनी पछुतात बियाह की जो कोऊ बात सुनावै ॥
पान सो पान मरोरत मानिनि दातन सो अंगुरीन चबावै ॥
नारि निवाइ खनै पुहमी नख रेख लखै मन मै पछुतावै ॥
प्यारी को पीय रुचै मिरजा परु ब्रयाहु किधो मन मै न सुहावै ॥९॥

दोहरा ॥

रुचिर रमन तुमरै रची और सुहात न मोहि ॥
ब्याहि बराती जाइ है लाज न ऐहै तोहि ॥१०॥
सवैया ॥
नैसकि मोरि गए अनतै नहि जानत प्रीतम जीत रहैगो ॥
प्यारी ही प्यारी पुकारत आरति बीथन मै बहु बार कहैगो ॥
तो हमरै इन के दुहूं बीच कहौ किह भाति सनेह रहैगो ॥
कौन ही काज सु जीबो सखी जब प्रीति बध्यो निजु मीत दहैगो ॥११॥

चौपई ॥

यहै माननी मंत्र बिचारियो ॥
बोलि सखी प्रति बचन उचारियो ॥
मिरजा साथ जाइ तुम कहियहु ॥
आजु आनि साहिबा कौ गहियहु ॥१२॥
जब वह आइ ब्याहि करि लै है ॥
तुमरे डारि फूल सिर जै है ॥
मोरे गए कहो का करिहो ॥
उर मै मारि कटारी मरिहो ॥१३॥

दोहरा ॥

जौ हम सै लागी कछू तुमरी लगनि बनाइ ॥
तौ मो को लै जाइयो आज निसा कौ आइ ॥१४॥
अड़िल ॥
रंगवती इह भाति जबै सुनि पाइयो ॥
सकल पुरख कौ भेस तब आपु बनाइयो ॥
ह्वै कै बाज अरूड़ि तबै तह कौ चली ॥
हो लीनै सकल सुबेस सखी बीसक भली ॥१५॥

चौपई ॥

चली सखी आवत तह भई ॥
जह कछु सुधि मिरजा की लई ॥
सखी सहित चलि सीस झुकायो ॥
तोहि साहिबा बेग बुलायो ॥१६॥
मिरजा सुनत बात चड़ि धायो ॥
पलक न भई गाव तह आयो ॥
यह सुधि जबै साहिबा पाई ॥
तुरतु एक तह सखी पठाई ॥१७॥

दोहरा ॥

सुनो मित्र बिनु निसि भई ह्यां न पहूचहु आइ ॥
जिन कोऊ सोधि पछानि कै तिन प्रति कहै न जाइ ॥१८॥

चौपई ॥

बहुरि सखी तिह आनि जतायो ॥
बैठि बाग मै दिवस बितायो ॥
सूरज छपियो रैनि जब भई ॥
बाट गाव ता के की लई ॥१९ ॥
रैनि भई ता के तब गयो ॥
डारत बाज प्रिसटि तिह भयो ॥
हरि ता को देसौर सिधारियो ॥
जो पहुचियो ता को सर मारियो ॥२० ॥
रैनि सकल ता को लै गयो ॥
उतरत चड़े दिवस के भयो ॥
थो सु कुमार अधिक तन हारियो ॥
और साहिबा साथ बिहारियो ॥२१ ॥
स्रमत भयो तह कछु स्वै रहियो ॥
तब लौ सभ समधिन सुनि लयो ॥
चड़े तुरै सभ सूर रिसाए ॥
बाधे गोल तहा कह धाए ॥२२ ॥
तब साहिबा द्रिग छोरि निहारा ॥
हेरै चहूं ओर असवारा ॥
संग भाई दोऊ ताहि निहारे ॥
करुणा बहे नैन कजरारे ॥२३ ॥
जौ हमरे पति इने निहरि है ॥
दुहूं बान दुहूअनं कह हरि है ॥
ता ते कछू जतन अब कीजै ॥
जा ते राखि भाइयन लीजै ॥२४ ॥
सोवत हुतो मीत न जगायो ॥
जाड भए तरकस अटकायो ॥
और ससत्र लै कहूं दुराए ॥
खोजे हुते जात नहि पाए ॥२५ ॥
तब लौ आइ सूर सभ गए ॥
मारो मार पुकारत भए ॥
तब मिरजा जू नैन उघारे ॥
कहा गए हथियार हमारे ॥२६ ॥
भौडी राड कहियो क्या करियो ॥
तरकस टागि जाड पै धरियो ॥
पहुचे आनि पखरिया भारे ॥
कहा धरे ते ससत्र हमारे ॥२७ ॥
ससत्रन बिना कहो किह मारो ॥
कहु नारी क्या मंत्र बिचारो ॥
साथी कोऊ संग मै नाही ॥
चिंता अधिक इहै चित माही ॥२८ ॥
हेर रहियो आयुध नहि पाए ॥
तब लग घेर दुबहिया आए ॥
त्रिय को बाज प्रिसटि पर डारियो ॥
नगर आपने ओर सिधारियो ॥२९ ॥
बिनु आयुध भजि चलियो निहारियो ॥
निरभै ह्वै सभहूंन बिचारियो ॥
इन दुहूंअन कौ जान न दैहौ ॥
या कौ मारि आजु ही लैहै ॥३० ॥
कोऊ पकरि सैहथी धायो ॥
किनूं काढि कर खड़ग नचायो ॥

किनूं मारि बानन की करी ॥
पाग उतरि मिरजा की परी ॥३१॥
पाग उतरि ता की जब गई ॥
मूंडी होति नाग तिह भई ॥
सुंदर अधिक केस तिह छूटे ॥
जब ही सूर जुध कह जूटे ॥३२॥
किनी बिसिख कसि ताहि प्रहारियो ॥
किनहूं खड़ग काढि तिह मारियो ॥
किनहूं वारि गुरज को कीनो ॥
खेत मारि मिरजा कौ लीनो ॥३३॥
प्रिथम नास मिरजा कौ करियो ॥
बहुरौ जाइ साहिबहि धरियो ॥
बैठे तिसी बिरछ तर आई ॥
जह तिन दुहूंअन रैनि बिताई ॥३४॥

दोहरा ॥

कमर भरात के की तुरतु जमधर लई निकारि ॥
कियो पयानौ मीत पहि उदर कटारी मार ॥३५॥

चौपई ॥

प्रथम मीत तह ते निकरायो ॥
बहुरि बिरछ तर आनि सुवायो ॥
भ्रातन मोह बहुरि लखि कियो ॥
ससत्रन टागि जाड पर दियो ॥३६॥
प्रथमै रूप हेरि तिह बिगसी ॥
निजु पति कै ता कौ लै निकसी ॥
भ्रातिन हेरि मोह मन आयो ॥
निजु प्रीतम को नास करायो ॥३७॥
वह त्रिय पीर पिया के बरी ॥
आपहु मारि कटारी मरी ॥
जो त्रिय चरित चहै सु बनावै ॥
देव अदेव भेव नहि पावै ॥३८॥

दोहरा ॥

प्रथम तहा ते काढि कै पुनि निजु मीत हनाइ ॥
पुनि जमधर उर हनि मरी भ्रात मोह के भाइ ॥३९॥
भूत भविख भवान मै सुनियत सदा बनाइ ॥
चतुरि चरित्रन कौ सदा भेव न पायो जाइ ॥४०॥

CHARITAR १२९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥129॥2563॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुमति कुअरि रानी इक सुनी ॥
बेद पुरान बिखै अति गुनी ॥
सिव की अधिक उपासक रहै ॥

हर हर सदा बकत्र ते कहै ॥१॥
बिसन सिख्य राजा जू रहई ॥
हरि हरि सदा बकत्र ते कहई ॥
सिव कौ नैक न मन मै ल्यावै ॥
सदा क्रिसन दे गीतन गावै ॥२॥
रानी सो इह भाति उचारै ॥
तै सिव सिव काहे कौ बिचारै ॥
चमतकार या मै कछु नाही ॥
यौ आवत मोरे मन माही ॥३॥
चमतकार सिव तुमै बताऊां ॥
तो तुम को इह मारग ल्याऊं ॥
तै सिव को कछु चरित न जानो ॥
धन प्रसाद ते भयो दिवानो ॥४॥

छपै छंद ॥

प्रथम त्रिपुर कौ घाइ रुद्र त्रिपुरारि कहायो ॥
गंग जटन मै धारि गंगधर नाम सुहायो ॥
जटा जूट कौ धारि जटी नामा सद सोहै ॥
खग म्रिग जछ भुजंग असुर सुर नर मुनि मोहै ॥
करी पारबती नारि पारबतीस्वर सभ जानै ॥
कहा मूड़ तै राव भेद ता कौ पहिचाने ॥५॥

दोहरा ॥

चमतकार तो कौ तुरतु प्रथमै देऊ दिखाइ ॥
बहुरि सिख्य सिव को करौ या मारग मै ल्याइ ॥६॥

चौपई ॥

सोइ गयो तब पतिहि निहारियो ॥
तुरत खाट ते पकरि पछारियो ॥
सिव सिव सिव आपन तब कीनो ॥
कछू राव यह भेद न चीनो ॥७॥
किन धै कै मो कौ पटकायो ॥
रानी मै यह कछू न पायो ॥
सकल ब्रिथा तुम हमै सुनावो ॥
हमरे चित को ताप मिटावो ॥८॥
कछू रुद्र तुम बचन उचारे ॥
तब ऊपर सिव कुपियो तिहारे ॥
चमतकार यह तुमै दिखायो ॥
पटकि खाट ते भूमि गिरायो ॥९॥
सुनत बचन मूरख अति डरियो ॥
ता त्रिय को पाइन उठि परियो ॥
बिसन जाप अब ते मै त्यागियो ॥
सिव जू के पाइन सौ लागियो ॥१०॥
चमतकार सिव मोहि दिखारियो ॥
ता ते चरन आपने डारियो ॥
अब चेरो ता को मै भयो ॥
बिसन जाप तब ते तजि दयो ॥११॥

दोहरा ॥

पलका पर ते रानियहि सोत न्रिपति को डारि ॥
सिख्य तुरतु सिव को कियो ऐसो चरित सुधारि ॥१२॥

CHARITAR १३० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥130॥2575॥अफजूं॥*

चौपई ॥

परबतेस राजा इक भारो ॥
चंद्र बंस चंद्रोतुजियारो ॥
भागमती ता की बर नारी ॥
चंद्र लई जा ते उजियारी ॥१॥

दोहरा ॥

सुना धाम ता को बडो धुजा रही फहराइ ॥
साच स्वरग सो जानियो धौलर लख्यो न जाइ ॥२॥

चौपई ॥

देबिदत रानियहि निहारियो ॥
जनुक रूप की रासि बिचारियो ॥
पठै सहचरी बोलि सु लीनो ॥
काम केल ता सौ अति कीनो ॥३॥
बीरदेव राजा सुनि पावा ॥
कोऊ जार हमारे आवा ॥
अधिक कोप न्रिप खड़ग उचायो ॥
पलक न बीती तह चलि आयो ॥४॥
भागवती जब न्रिप लखि लीनो ॥
ताहि चड़ाइ महल पर दीनो ॥
टरि आगे निजु पति कौ लियो ॥
बहुत प्रकार समागम कियो ॥५॥

दोहरा ॥

रूंई सौ सारो सदन एक तुरतु भरि लीन ॥
आज चोर इक मै गहियो यौ न्रिप सौ कहि दीन ॥६॥

चौपई ॥

कहु तु तुम ता कौ गहि ल्याऊ ॥
आनि राव जू तुमै दिखाऊ ॥
जो मुहि कहो ताहि सोऊ कीजै ॥
डारि महल ऊपर ते दीजै ॥७॥
प्रथम न्रिपहि इह भाति जताई ॥
बहुरो बाधि जार कौ ल्याई ॥
आपु भोग जिह साथ कमायो ॥
बहुरि राव कौ आन दिखायो ॥८॥
रानी हेरि ताहि रिसि भरी ॥
सखियन कौ आग्या यौ करी ॥
धौलर ते या कौ तुम डारो ॥

आइसु राजा को न निहारो ॥९ ॥
वै सखिआं ता कौ लै गई ॥
चीनत सदन सु आगे भई ॥
सकल राव को सोक निवारियो ॥
रूंई पै ता कौ गहि डारियो ॥१० ॥
राजै लखी दुसट इह घायो ॥
तिन तनि तनिक खेद नहि पायो ॥
उठि तह ते निजु धाम सिधायो ॥
इह चरित्र निजु जार लंघायो ॥११ ॥
पुनि राजे इह भाति उचारियो ॥
इह जो चोर धाम ते डारियो ॥
मोहि आन वहु म्रितक दिखैयै ॥
आग्या मोहि मानि यह लैयै ॥१२ ॥
जो नर ह्यां ते मिलै बगाई ॥
टूक टूक ह्वै कै सो जाई ॥
तिल तिल भयो द्रिसटि नहि आवै ॥
ता कौ कौन खोज कर ल्यावै ॥१३ ॥
तिल तिल पाइ अंग तिह भए ॥
गीध काक आमिख भखि गए ॥
ता को अंग द्रिसटि नहि आवै ॥
कौन बियो ता कौ लै आवै ॥१४ ॥

भुजंग छंद ॥

दियो डारि जा को महाराज ऐसे ॥
लहियो जाइ ता कौ कछू अंग कैसे ॥
कई टूक ह्वै कै परियो कहूं जाई ॥
गए गीध औ काक ता कौ चबाई ॥१५ ॥

चौपई ॥

यौ सुनि मोनि न्रिपति मुख धरी ॥
द्रिसटि राज कारज पर करी ॥
रानी अपनो मीत बचायो ॥
वा पसु कौ यौ चरित्र दिखायो ॥१६ ॥

CHARITAR १३१ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकतीह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥131॥2591॥अफजूं॥*

चौपई ॥

एक पलाऊ देस सुनीजै ॥
मंगल देव सु राव भनीजै ॥
सुघरि कुअरि ता की बर नारी ॥
जनुक जगत की जोति सवारी ॥१ ॥
गरबी राइ कुअरि तिह लहियो ॥
ता की मैन देह कौ दहियो ॥
अमित रूप ता को लखि अटकी ॥
बिसरि गई सभ ही सुधि घट की ॥२ ॥
सोरठा ॥

पठै सहचरी ताहि लीनो सदन बुलाइ कै ॥
अधिक ह्रिदै हरखाइ काम केल ता सौ कियो ॥३॥

दोहरा ॥

भाति भाति आसन करे चुंबन करे बनाइ ॥
चिमटि चिमटि ता सौ रमै छिनिक न छोरियो जाइ ॥४॥

चौपई ॥

मीत अधिक चित भीतर भायो ॥
राजा कौ मन ते बिसरायो ॥
मन बच क्रम ताहीं की भई ॥
पर त्रिय ते निजु त्रिय ह्वै गई ॥५॥
निसु दिन रहत धाम तिह परी ॥
जनु तिह जीति सुयंबर बरी ॥
राजा के त्रिय निकट न आवै ॥
ता के संग अति केल कमावै ॥६॥
चुंबन और अलिंगन देई ॥
भाति भाति कै आसन लेई ॥
हरख ठानि त्रिय केल कमावै ॥
काम रीति की प्रीति जतावै ॥७॥
किनी राव सो भेद जतावा ॥
कोऊ जार तिहारे आवा ॥
राजा तव त्रिय दयो भुलाई ॥
जार साथ अति प्रीति लगाई ॥८॥

दोहरा ॥

तैं मंत्रन के बसि भए छोरी सकल सियान ॥
उत रानी इक जार सौ रमत रहै रुचि मान ॥९॥

चौपई ॥

सकल कथा स्रवनन न्रिप करी ॥
काढि क्रिपान हाथ मै धरी ॥
राजा ग्रिह रानी के आए ॥
रखवारे चहूं ओर बैठाए ॥१०॥
सखी एक लखि भेद सु पायो ॥
सुघरि कुअरि सौ जाइ जतायो ॥
पौढी कहा मीत सौ प्यारी ॥
तो पर करी राव रखवारी ॥११॥
ता ते जतन अबै कछु कीजै ॥
प्रान राखि प्रीतम को लीजै ॥
जौ यह हाथ राव के ऐहै ॥
तोहि सहित जम धाम पठैहै ॥१२॥

दोहरा ॥

बहुत देग अरु देगचे रानी लए मंगाइ ॥
दुगध डारि पावक बिखै सभ ही दए चड़ाइ ॥१३॥

चौपई ॥

एक देग मै तिह बैठारियो ॥
ता पर एक तवा कौ डारियो ॥
मखनी लै घेइया तिह करियो ॥
तपत मिटाइ तवन पर धरियो ॥१४॥

दोहरा ॥

तवा सु जरि कै तासु पै घेइया धरियो बनाइ ॥
लीपि म्रितका सौ लियो दीनी आगि जराइ ॥१५॥
खीर भरी जह देग थी तही धरी लै सोइ ॥
दुगध फेन सो जानियै जार न चीनै कोइ ॥१६॥

चौपई ॥

टरि आवत राज गै लीनो ॥
भाति भाति सो आदरु कीनो ॥
नए महल जे हमै सवारे ॥
ते तुम राइ द्रिसटि नहि डारे ॥१७॥

दोहरा ॥

टरि आगे पति कौ लियो रही चरन सौ लागि ॥
बहुत दिनन आए न्रिपति धंन्य हमारे भाग ॥१८॥

चौपई ॥

जो चित चिंत राव जू आयो ॥
सो आगे त्रिय भाखि सुनायो ॥
मै सभ सदन द्रिसटि मै कै हौ ॥
जारि पकरि जम धाम पठै हौ ॥१९॥
सकल सदन फिरि न्रिपहि दिखाए ॥
रहियो बिलोकि चोर नहि पाए ॥
जहा देग मै जारहि डारियो ॥
तही आनि पति कौ बैठारियो ॥२०॥
जब राजा आवत सुनि पाए ॥
मोद भयो मन सोक मिटाए ॥
यह सभ खान पक्वाए तब ही ॥
भेटत सुने पियारे जब ही ॥२१॥
तवन देग को ढापनुतारियो ॥
प्रथम दूध प्यारे को प्रयारियो ॥
बहुरि बाटि लोगन कौ दीनो ॥
मूरख राव भेद नहि चीनो ॥२२॥
एक देग अतिथान पठाई ॥
दूजी बैरागिन के द्रयाई ॥
तीजी देग संन्यासन दई ॥
चौथी ब्रहमचारियन लई ॥२३॥
पंचई देग चाकरन दीनी ॥
छटई देग पियादन लीनी ॥
देग सपतई ताहि डरायो ॥
सखी संग दै घरु पहचायो ॥२४॥
देखत न्रिप के जार निकारियो ॥
मूड़ राव कछु सो न बिचारियो ॥

अधिक चित रानी मै दीनौ ॥
मोरै हितन बधावौ कीनौ ॥२५॥

दोहरा ॥

मुखु दिसि जड़ देखत रहियो त्रिय सो नेहुपजाइ ॥
देग डारि रानी तुरत जारहि दयो लंघाइ ॥२६॥

चौपई ॥

मूरख राव बाइ मुख रहियो ॥
देखत रहियो जार नहिं गहियो ॥
पाहरून जो खीर पठाई ॥
खान लगे ग्रीवा निहुराई ॥२७॥
जियत जार त्रिय घर पहुचायो ॥
पाहरू न राजा लख पायो ॥
तिह पहुचाइ सखी जब आई ॥
तब रानी अति ही हरखाई ॥२८॥
बहुरि राव रानी रति कीनी ॥
चित की बात ताहि कहि दीनी ॥
किनहूं भ्रम मोरे चित पायो ॥
ता ते मै देखनि ग्रिह आयो ॥२९॥
पुनि रानी यह भाति उचारो ॥
सुनो न्रिपति तुम बचन हमारो ॥
जिन तुहि कहियो सु मुहि कहि दीजै ॥
नातर आस न हमरी कीजै ॥३०॥
जब रानी इह भाति सुनाई ॥
तब राजे सो सखी बताई ॥
जो तुम कहियो साची पहुचावो ॥
नातर धाम म्रितु के जावो ॥३१॥
रानिन को कोऊ दोस लगावै ॥
जिन कौ जगत सीस निहुरावै ॥
झूठी सखी जानि बध कीनो ॥
मूरख राव भेद नहि चीनो ॥३२॥

दोहरा ॥

राजा कौ करि बसि लियो दीनो जार निकारि ॥
सखियन मै साची भई तौनै सखी संघारि ॥३३॥

CHARITAR १३२ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥132॥2624॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

हुगली बंदर को हुतो हिंमत सिंघ न्रिप एक ॥
तहा जहाज जहान के लागहि आनि अनेक ॥१॥

चौपई ॥

सुजनि कुअरि ता की बर नारी ॥

जनुक चंद्र मौ चीरि निकारी ॥
जोबन जेब अधिक तिह सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥२॥
परम सिंघ राजा अति भारो ॥
परम पुरख जग महि उजियारो ॥
ता की देह रूप अति झमकै ॥
मानहु दिपत दामनी दमकै ॥३॥

दोहरा ॥

सुजनि कुअरि ता को महा रीझी रूप निहारि ॥
गिरी मूरछना ह्वै धरनि मार करी बिसंभारि ॥४॥
अड़िल ॥
पठे सहचरी लीनौ ताहि बुलाइ कै ॥
रति मानी तिह संग सु मोद बढाइ कै ॥
बहुरि बिदा करि दियो अधिक सुख पाइयो ॥
हो काल क्रिपा करि धाम हमारे आइयो ॥५॥
भोग मानि न्रिप गयो प्रात पुनि आइयो ॥
काम केल त्रिय साथ बहुरि उपजायो ॥
पुनि रानी जू बचन मीत सो यौ कियो ॥
हो हमरै चित चुराइ लला जू तुम लियो ॥६॥
जा ते तुम को मीत सु पति करि पाइयै ॥
ता ते सोऊ आजु चरित्र बनाइयै ॥
जौ मै कहो सु करियहु साजन आइ कै ॥
हो मो कह हर लै जैयहु हरख बढाइ कै ॥७॥
एक बास सो कुपिया कसी सुधारि कै ॥
गाड़ी रेती माझ सु सभन दिखारि कै ॥
आखै दोऊ बंधाइ निसा को आइ कै ॥
हो मारै या को बान तुरंग धवाइ कै ॥८॥

चौपई ॥

प्रथम जु नर दोऊ आखि मुंदावै ॥
राति अंधेरी तुरै धवावै ॥
बादगसतिया इह सर मारै ॥
सो रानी कै साथ बिहारै ॥९॥
यह सुनि बात सभन हूं पायो ॥
बिसिख चलात तुरंग धवायो ॥
रात्रि अधेरी आखि मुंदावै ॥
चोट चलात कहूं कहूं जावै ॥१०॥
देस देस एस्वर चलि आवै ॥
आखि मूंद दोऊ तीर चलावै ॥
अरध रात्रि कछु द्रिसटि न आवै ॥
छोरै चोट कहूं कहूं जावै ॥११॥

दोहरा ॥

अरध रात्रि मूंदे द्रिगन सभ कोऊ तीर चलाइ ॥
जीति न रानी कौ सकै निजु रानिन दै जाइ ॥१२॥

चौपई ॥

राजा जू हरखित अति भयो ॥
रानी भलो भेद कहि दयो ॥
सुजनि कुअरि जू को को पै है ॥
निजु रानिन मो कौ दै जै है ॥१३॥
तब लौ परम सिंघ जू आए ॥
जिह रानी सौ केल कमाए ॥
भली भाति डेरा तिह दीनो ॥
भाति भाति सौ आदरु कीनो ॥१४॥
रैनि भई रानीयहि बुलायो ॥
बहुरि तवन सौ केल कमायो ॥
अंधकार भए बास उतारियो ॥
कुपिया कौ भू पर धरि पारियो ॥१५॥

दोहरा ॥

कुपियहि बान प्रहार करि वैसहि धरी बनाइ ॥
बिदा कियो रति मानि कै ऐसो मंत्र सिखाइ ॥१६॥

चौपई ॥

तुम अब ही राजा पै जैयो ॥
ऐसे बचन उचारत ह्वैयो ॥
होहूं बिसिख बगावन आयो ॥
चाहत तुमै चरित्र दिखायो ॥१७॥
राजा को मन भयो अनंदं ॥
बोलत बचन कहा मति मंदं ॥
आखि मूंदि दोऊ बान चलैहौ ॥
या की दोऊ त्रिया गहि लै हो ॥१८॥
ता की आंखि बाधि दोऊ लई ॥
तीर कमान हाथ मै दई ॥
चाबुक है हनि बिसिख बगायो ॥
उहा ठाढि त्रिय ताल बजायो ॥१९॥
सभन तराक सबद सुनि पायो ॥
जानुकि इन तिह तीर लगायो ॥
बास उतारि बिलोकहि कहा ॥
बाको बान बिराजत उहा ॥२०॥

भुजंग छंद ॥

भयो फूक राजा त्रियो पिंड हारी ॥
मनौ आनि कै लात सैतान मारी ॥
रहियो मूंड कौ न्याइ बैने न बोलै ॥
गिरियो झूंमि कै भूंमि आखैं न खोलै ॥२१॥
घरी चारि बीते प्रभा नैक पाई ॥
गिरियो फेरि भूमै कहूं राव जाई ॥
कहूं पाग छूटी कहूं हार टूटे ॥
गिरै बीर ज्यो घूंमि प्रानै निखूटे ॥२२॥
सभै लोक धाए लयोठाइ ता कौ ॥
घनौ सींचि कै बारि गुलाब वा कौ ॥
घरी पाच पाछै न्रिपति सुधि पाई ॥
करी भाति भ्रितं अनेकै बढाई ॥२३॥
डरे काज काहे महाराज मेरे ॥

लए सूर ठाढे सभै ससत्र तेरे ॥
कहो मारि डारै कहो बाधि ल्यावै ॥
कहो काटि के नाक लीकै लगावै ॥२४॥
सवैया ॥
हिंमत सिंघ कही हसि कै चित मै अति रोस को मारि मरूरो ॥
एक धनी नव जोबन दूसर तीसरे हो पुरसोतम पूरो ॥
आखिन मूंदि हन्यो कुपिया कह या पर कोप कियो सभ कूरो ॥
कैसे कै आजु हनो इह को जु है राव बडो अरु सुंदर सूरो ॥२५॥

चौपई ॥

कहि ऐसी न्रिप सीस ढुरायो ॥
ता सुंदरि पर कछु न बसायो ॥
ग्रिह ते काढि त्रियहि पुनि दीनी ॥
इह चरित्र सेती हरि लीनी ॥२६॥

दोहरा ॥

तिह रानी पावत भई ऐसो चरित्र बनाइ ॥
लै ता को ग्रिह को गयो अधिक ह्रिदै सुख पाइ ॥२७॥
सोरठा ॥
सकियो न भेद पछानि इह छल सो छैली छल्यो ॥
रहियो मोनि मुखि ठानि नार रहियो निहुराइ कै ॥२८॥

CHARITAR १३३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥133॥2652॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सबक सिंघ राजा इक भारी ॥
बाज मती ता की बर नारी ॥
काहू सो नहि राव लजावै ॥
सभ इसत्रिन सो केल कमावै ॥१॥
जो इसत्री तिह कहे न आवै ॥
ता की खाट उठाइ मंगावै ॥
अधिक भोग ता सो न्रिप करई ॥
रानी ते जिय नैक न डरई ॥२॥
बाज मती जिय अधिक रिसावै ॥
सबक सिंघ पर कछु न बसावै ॥
तब त्रिय एक चरित्र बिचारियो ॥
राजा को दुरमति ते टारियो ॥३॥
रूपवती जो त्रिय लखि पावै ॥
सबक सिंघ सो जाइ सुनावै ॥
तुम राजा तिह त्रिया बुलावो ॥
काम केल तिह साथ कमावो ॥४॥
जब यौ बचन राव सुनि पावै ॥
तौन त्रिया को बोलि पठावै ॥
जा की रानी प्रभा उचारै ॥
ता के राजा संग बिहारै ॥५॥
या मै कहो कहा घट गई ॥

जानुक होहूं भिटोअनि भई ॥
जा ते मोर राव सुख पावै ॥
वहै बात हमरे जिय भावै ॥६॥
बली एक सुंदर लखि पायो ॥
प्रथम तवन की त्रियहि भिटायो ॥
जब वहु पुरख अधिक रिसि भरियो ॥
तब ता सो यौ बचन उचरियो ॥७॥

दोहरा ॥

काम केल ता सौ करियो रानी अति सुख पाइ ॥
बहुरि बचन तिह पुरख सो ऐसो कहियो सुनाइ ॥८॥

चौपई ॥

तुमरी प्रभा कहो का रही ॥
निज नारी राजै जो चही ॥
जा की त्रिय सो और बिहारै ॥
ध्रिग ता को सभ जगत उचारै ॥९॥

दोहरा ॥

प्रथम भोग मन भावतो रानी कियो बनाइ ॥
बहुरि बचन ता सौ कहियो ऐसे रिस उपजाइ ॥१०॥

चौपई ॥

तुमरी त्रिय कौ राव बुलावै ॥
काम भोग तिह साथ कमावै ॥
तू नहि मरियो लाज को मरई ॥
पावक बिखै जाइ नहि जरई ॥११॥

दोहरा ॥

कै यह मूरख राव ते बदलो लेहि बनाइ ॥
नातर बद्रिकास्रम बिखै गरौ हिमाचल जाइ ॥१२॥

चौपई ॥

जो त्रिय कहो मोहि सो करौ ॥
सबक सिंघ ते नैक न डरौ ॥
इन कीनो ग्रिह ख्वार हमारो ॥
मैहूं तिह त्रिय संग बिहारो ॥१३॥
रोमातक तुम प्रथम लगावो ॥
सकल त्रिया कौ भेस छकावो ॥
जब तुम कौ राजा लखि पै है ॥
तुरतु मदन के बसि ह्वै जै है ॥१४॥
जार केस सभ दूरि कराए ॥
भूखन अंग अनूप सुहाए ॥
जाइ दरस राजा को दियो ॥
न्रिप को मोहि आतमा लियो ॥१५॥
जब राजै ता को लखि पायो ॥
दौरि सदन रानी के आयो ॥

हे सुंदरि मै त्रियिक निहारी ॥
जानुक महा रुद्र की प्यारी ॥१६॥
जो मुहि तिह तू आज मिलावैं ॥
जो मागै मुख ते सो पावैं ॥
रानी फूलि बचन सुनि गई ॥
जो मै चाहत थी सोऊ भई ॥१७॥
सुनत बचन रानी ग्रिह आई ॥
तौन जार को दयो भिटाई ॥
जब ता को न्रिप हाथ चलायो ॥
पकरि राव को तरे दबायो ॥१८॥
न्रिप को पकरि भुजन ते लियो ॥
गुदा भोग ता को द्रिड़ कियो ॥
तोरि तारि तन रुधिर चलायो ॥
अधिक राव मन माझ लजायो ॥१९॥

दोहरा ॥

गुदा भोग भे ते न्रिपति मन महि रहियो लजाइ ॥
ता दिन ते काहूं त्रियहि लयो न निकटि बुलाइ ॥२०॥

CHARITAR १३४ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥134॥2672॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

दुहिता साहु फिरंग की जा को रूप अपार ॥
तीनि भवन भीतर कहूं ता सम और न नारि ॥१॥

चौपई ॥

अबदुल नाम मुलाना भारो ॥
सहिर जहानाबादि उजियारो ॥
हाजराति जब बैठि मंगावै ॥
देव भूत जिनान बुलावै ॥२॥

दोहरा ॥

देव भूत जिनात कह लेवै निकट बुलाइ ॥
जौन बात चित मै रुचै तिन ते लेत मंगाइ ॥३॥

चौपई ॥

ता पै परी बहुत चलि आवै ॥
कोऊ नाचि उठ कोऊ गावै ॥
भाति भाति के भाव दिखावहि ॥
देखनहार सभे बलि जावहि ॥४॥
लाल परी इक बचन उचारो ॥
साह परी सुनु बैन हमारो ॥
सुंदरि कला कुअरि इक भारी ॥
जनुक रूप की रासि सवारी ॥५॥

दोहरा ॥

ताही ते बिधि रूप लै कीने रूप अनेक ॥
रीझि रही मै निरखि छबि मन क्रम सहित बिबेक ॥६॥

चौपई ॥

ता की प्रभा जात नहि कही ॥
जानुक फूलि मालिती रही ॥
कवन सु कबि तिह प्रभा उचारै ॥
कोटि सूर जनु चड़े सवारे ॥७॥
मुला बात स्रवन यह सुनी ॥
बिरह बिकल ह्वै मूंडी धुनी ॥
एक देव भेजा तह जाई ॥
ता की खाट उठाइ मंगाई ॥८॥
वा सुंदरि को कछु न बसायो ॥
मुला के संग भोग कमायो ॥
बीती रैनि भोर जब भयो ॥
तिह पहुचाइ तही तिन दयो ॥९॥
ऐसी बिधि तिह रोज बुलावै ॥
होत उदोत फिरंग पठावै ॥
मन मानत के केलन करै ॥
भाति भाति के भोगन भरै ॥१०॥

दोहरा ॥

देव देखि काजी निरखि सुंदरि अधिक डराइ ॥
नाक चड़ाए रति करै ता पै कछु न बसाइ ॥११॥

चौपई ॥

तब तिन एक उपाइ बिचारियो ॥
कर मै एक पत्र लिखि डारियो ॥
काजी साथ बात यौ कही ॥
मेरे हौस चित इक रही ॥१२॥

दोहरा ॥

अब लौ सदन दिलीस के द्रिगन बिलोके नाहि ॥
यहै हौस मन मै चुभी सुनु काजिन के नाहि ॥१३॥
देव साथ काजी कहियो या को भवन दिखाइ ॥
बहुरो खाट उठाइ कै दीजहु ह्यां पहुचाइ ॥१४॥

चौपई ॥

ता कौ देव तहा लै गयो ॥
सभ ही धाम दिखावत भयो ॥
साह साह को पूत दिखारियो ॥
हर अरि सर ता त्रिय कौ मारियो ॥१५॥
चित्र देव को हेरत भई ॥
पतिया डारि हाथ ते दई ॥
आपु बहुरि काजी कै आई ॥
उति पतिया तिन छोरि बचाई ॥१६॥

दोहरा ॥

फिरंग राव की मै सुता ल्यावत देव उठाइ ॥
मो सो काजी मानि रति देह तहा पहुचाइ ॥१७॥
मै तुम पर अटकति भई ता ते लिखियो बनाइ ॥
निजु नारी मुहि कीजीयै देव काजियहि घाइ ॥१८॥

चौपई ॥

तब तिन जंत्र मंत्र बहु करे ॥
जा ते देव राज जू जरे ॥
बहुरि काजियहि पकरि मंगायो ॥
मुसक बाधि दरियाइ डुबायो ॥१९॥
बहुरो तौन त्रिया कौ बरियो ॥
भाति भाति के भोगन करियो ॥
देवराज मंत्रन सो जारियो ॥
ता पाछे काजी कौ मारियो ॥२०॥
जो चतुरा चित चरित बनायो ॥
मन मो चहियो वहै पति पायो ॥
देव राज कौ आदि जराइस ॥
ता पाछै काजी कह घाइस ॥२१॥

दोहरा ॥

न्रिप सुत को भरता कियो चतुरा चरित सु धारि ॥
मन मानत को बरु बरियो देव काजियहि मारि ॥२२॥

CHARITAR १३५ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥135॥2694॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

धरम छेत्र कुरछेत्र को रथ बचित्र न्रिप एक ॥
बाज राज संपति सहित जीते जुध अनेक ॥१॥

चौपई ॥

भ्रमर मती ता की बर नारी ॥
जनुक चंद्र कौ चीरि निकारी ॥
जोबन जेब अधिक तिह सोहै ॥
सुर नर नागि भुजंगन मोहै ॥२॥
भद्र भवानी इक संन्यासी ॥
जानुक आपु गड़ियो अबिनासी ॥
रानी लखियो जबै अभिमानी ॥
निरखि रूप ह्वै गई दिवानी ॥३॥

दोहरा ॥

भद्र भवानी के भवन दीनी सखी पठाइ ॥
भवन बुलायो भद्र कर भ्रमर कला सुख पाइ ॥४॥
अड़िल ॥

सुनत भवानी भद्र बचन तह आइयो ॥
भ्रमर कला को रूप निरखि सुख पाइयो ॥
नाथ भली बिधि रहौ सदा सुख मंगही ॥
हो आजु सभै दुख बिसरे निरखत अंग ही ॥५॥

दोहरा ॥

भ्रमर कला ता को निरखि बिसरे सोक अपार ॥
मोद बढियो तन मै घनो सुखी करे करतार ॥६॥
डारे सारी नील की ओट अचूक चुकैन ॥
लगे अटिक ठाढै रहै बडे बिरहिया नैन ॥७॥

छंद ॥

प्रथम बिरह हम बरे मूंड अपनौ मूंडायो ॥
बहुरि बिरहि के बरे जटन को सीस रखायो ॥
धूरि सीस मै डारि अधिक जोगीस कहाए ॥
जब ते बन कौ गए बहुरि पुर माझ न आए ॥८॥
प्रथम अत्र रिखि भए बरी अनसूआ जिनहूं ॥
बहुरि राम जू भए करी सीता त्रिय तिनहूं ॥
क्रिसन बिसन अवतार करी सोलह सै नारी ॥
त्रिया पुरख की रीति जगत जगतेस बिथारी ॥९॥
सुनत चतुरि को बचन चतुर रीझियो संन्यासी ॥
हाव भाव करि बहुत बिहसि इक गाथ प्रकासी ॥
सुनु सुंदरि तव रूप अधिक बिधि आपु बनायो ॥
हो ता ते हमरो चित तुमै लखि अधिक लुभायो ॥१०॥

दोहरा ॥

भ्रमर कला ए बचन कहि ता के सतहि टराइ ॥
बहुरि भोगि ता सो करियो अधिक ह्रिदै सुख पाइ ॥११॥
भाति भाति चुंबन करे आसन करे अनेक ॥
रति मानी रुचि मानि कै सोकि न रहियो एक ॥१२॥
रथ बचित्र राजा तहा तुरत पहूंच्यो आइ ॥
भेद सुनत रानी डरी चित मै अधिक लजाइ ॥१३॥

चौपई ॥

देग बिखै ता को बैठारियो ॥
सभ ही मूंदि रौजनहि डारियो ॥
पैठन पवन न ता मै पावै ॥
बूंद बारि तिह बीच न जावै ॥१४॥
जिवरन सो तिह द्रिड़ गहि लयो ॥
बहुरो राखि नदी मै दयो ॥
बाधि तूंबरी ता पर लीनी ॥
जा ते जाइ देग सो चीनी ॥१५॥
तब लौ राव तहा गयो आई ॥
उठि रानी अति करी बडाई ॥
जौ तुम भूप अचूक कहावो ॥
या तुमरी कह बिसिख लगावो ॥१६॥
तब राजा तिह तीर लगायो ॥
भदर भवानी अति डर पायो ॥

मो कह आजु राव यह लैहि है ॥
जानो कहा कोप करि कहिहै ॥१७॥

दोहरा ॥

तब राजा हरखत भयो तुमरी तीर लगाइ ॥
धंन्य धंन्य रानी कहियो मुख ते मोद बढाइ ॥१८॥
तब राजा ग्रिह को गयो सकियो भेद नहि चीन ॥
इह छलै सो छैली छल्यो रानी अधिक प्रबीन ॥१९॥
प्रथम भोग ता सो करियो बहुरि देग मै डारि ॥
पुनि बचित्र रथ को छरियो ऐसो चरित सु धारि ॥२०॥

चौपई ॥

प्रथम तीर तुमरहि लगवायो ॥
बहुरि भवानी भद्र डराइयो ॥
बहुरि देग ते काढि मंगायो ॥
पुनि त्रिय ता सौ केल कमायो ॥२१॥

दोहरा ॥

इह छल सौ छलि राव को ता सो केल कमाइ ॥
बहुरि भवानी भद्र कौ दीनो धाम पठाइ ॥२२॥

CHARITAR १३६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥136॥2716॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

मछ्ली बंदर को रहे द्रुपद देव बडभाग ॥
सूरबीर जा के सदा रहै चरन सो लाग ॥१॥

चौपई ॥

तिनिक जग्य को ब्योत बनायो ॥
सभ बिप्रन कौ धाम बुलायो ॥
खान पान तिन को बहु दीनो ॥
तिन के मोहि चित को लीनो ॥२॥

दोहरा ॥

तौन अनल की आंच ते निकसी सुता अपार ॥
नाम द्रोपती तवन को बिप्रन धरियो बिचार ॥३॥
ता पाछे बिधनै दयो ध्रिसटदुमन सुत एक ॥
द्रोणचारज के छै निमित जीतन जुध अनेक ॥४॥

चौपई ॥

जोबन जबै द्रोपती भयो ॥
निज जिय मै अस ठाट ठटयो ॥
ऐसो कछू सुयंबर करौ ॥
जा ते सूरबीर पति बरौ ॥५॥

अड़िल ॥
एक मछ को ऊपर बध्यो बनाइ कै ॥
तेल डारि तर दियो कराह चड़ाइ कै ॥
छाह हेर जो इह चख दछिन मारि है ॥
हो सो नर हमरे साथ सु आइ बिहारि है ॥६॥
देस देस के एसन लयो बुलाइ कै ॥
मछ अछ सर मारो धनुख चड़ाइ कै ॥
डीम डाम करि ता को बिसिख बगावही ॥
हो लगै न ता को चोट बहुरि फिरि आवही ॥७॥

भुजंग छंद ॥

करै डीम डामै बडे सूर धावै ॥
लगै बान ता कौ न राजा लजावै ॥
चलै नीच नारीन कै भाति ऐसी ॥
मनो सीलवंती सु नारी न वैसी ॥८॥

दोहरा ॥

ऐंडे बैंडे ह्वै न्रिपति चोट चलावै जाइ ॥
ताहि बिसिख लागे नही सीस रहै निहुराइ ॥९॥
बिसिख बगावै कोप करि ताहि न लागे घाइ ॥
खिसलि कराहा ते परै जरे तेल मै जाइ ॥१०॥

भुजंग छंद ॥

परे तेल मै भूजि कै भाति ऐसी ॥
बरे ज्यों पकावै महा नारि जैसी ॥
कोऊ बान ता को नही बीर मारै ॥
मरे लाज ते राज धामै सिधारै ॥११॥

दोहरा ॥

अधिक लजत भूपति भए ता कौ बान चलाइ ॥
चोट न काहूं की लगी सीस रहे निहुराइ ॥१२॥
परी न प्यारी हाथ मै मछहि लगियो न बान ॥
लजतन ग्रिह अपने गए बन को कियो पयान ॥१३॥

चौपई ॥

ऐसी भाति कथा तह भई ॥
उतै कथा पंड्वन पर गई ॥
जहा दुखित वै बनहि बिहारै ॥
कंद मूल भछै म्रिग मारै ॥१४॥

दोहरा ॥

कुंती पुत्र बिलोकि कै ऐसे कहियो सुनाइ ॥
मतस देस मै बन घनो तही बिहारै जाइ ॥१५॥

चौपई ॥

पाडव बचन सुनत जब भए ॥
मतस देस की ओर सिधए ॥

जहा सुयंबर द्रुपद रचायो ॥
सभ भूपन को बोलि पठायो ॥१६॥

दोहरा ॥

जहा सुयंबर द्रोपदी रचियो कराह तपाइ ॥
तही जाइ ठाढो भयो धनी धनंजै राइ ॥१७॥
दोऊ पाव कराह पर राखत भयो बनाइ ॥
बहुरि मछ की छाह कह हेरियो धनुख चड़ाइ ॥१८॥
सवैया ॥
कोपि कुवंड चड़ाइ कै पारथ मछ कौ दछिन पछ निहारियो ॥
कान प्रमान प्रतंचहि आन महा करि कै अभिमान हकारियो ॥
खंडन कै रन मंडन जे बलवंडन को सभ पौरख हारियो ॥
यौ कहि बान तज्यो तजि कानि घनी रिसि ठानि तकियो तिह मारियो ॥१९॥

दोहरा ॥

पारथ धनु करखत भए बरखे फूल अनेक ॥
देव सभै हरखत भए हरखियो हठी न एक ॥२०॥

चौपई ॥

यह गति देखि बीर रिस भरे ॥
लै लै हथि हथियारन परे ॥
या जुगियहि जम लोक पठैहैं ॥
ऐंचि द्रोपदी निजु त्रिय कैहैं ॥२१॥

दोहरा ॥

तब पारथ केते कटक काटे कोप बढाइ ॥
केते कटि डारे कटिन काटे करी बनाइ ॥२२॥

भुजंग छंद ॥

किते छत्रि छेके किते छैल छोरे ॥
किते छत्र धारीन के छत्र तोरे ॥
किते हाकि मारे किते मारि डारै ॥
चहूं ओर बाजे सु मारू नगारे ॥२३॥

दोहरा ॥

अन वरत्रयन निरवरत कै अबला लई उठाइ ॥
डारि कापि ध्वज रथ लई बहु बीरन को घाइ ॥२४॥

भुजंग छंद ॥

किती बाह काटे किते पाव तोरे ॥
महा जुध सोडीन के छत्र छोरे ॥
किते पेट फाटे किते ठौर मारे ॥
गिरे भाति ऐसी सु मानो मुनारे ॥२५॥

चौपई ॥

दस हजार हैवर हनि डारियो ॥

बीस हजार हाथयहि मारियो ॥
एक लछ राजा रथ घायो ॥
बहु पैदल जम धाम पठायो ॥२६॥

दोहरा ॥

द्रोणज द्रोण क्रिपा करन भूरस्रवा कुरराइ ॥
अमित संग सैना लए सभै पहूंचै आइ ॥२७॥
सवैया ॥
या द्रुपदा तुम ते सुनु रे सठ जीति सुयंबर मै हम लैहै ॥
सागन सूलन सैथिन सों हनि कै तुहि को जम धाम पठैहै ॥
डारि रथोतम मै त्रिय को कत भाजत है जड़ जान न दैहै ॥
एक निदान करै रन मै किधो पारथ ही कि द्रुजोधन ह्वैहै ॥२८॥

चौपई ॥

तो कह जीति जान नहि दैहै ॥
स्रोन सुहाने बागन ह्वैहै ॥
एक निदान करै रन माही ॥
कै पाडव कै कैरव नाही ॥२९॥
अड़िल ॥
प्रथम पारथ भानुज कौ बिसिख प्रहारियो ॥
ता पाछे कुरराबि क्वाड भे मारियो ॥
भीम भीखमहि साइक हने रिसाइ कै ॥
हो द्रोण द्रोणजानुज के घोरन घाइ कै ॥३०॥
भूरस्रवा कौ बहुरि बाण सो बसि कियो ॥
क्रिपाचारजहि बहुरि मूरछना करि लियो ॥
हठी करण तब धायो कोप बढाइ कै ॥
हो तुमल जुध रण कियो सनंमुख आइ कै ॥३१॥
एक बिसिख अरजुन के उर मै मारियो ॥
गिरियो मूरछना धरनि न नैक संभारियो ॥
तबै द्रोपती साइक धनुख संभारि कै ॥
हो बहु बीरन कौ दियो छिनिक मौ मारि कै ॥३२॥
एक बिसिख भानुज के उर मै मारियो ॥
दुतिय बान सो दुरजोधनहि प्रहारियो ॥
भीखम भूरस्रवाहि द्रोण घाइल करियो ॥
हो द्रोणज क्रिपा दुसासन को स्यंदन हरियो ॥३३॥

दोहरा ॥

सभै सूर हरखत भए कायर भयो न एक ॥
माचियो प्रबल प्रचंड रण नाचे सुभट अनेक ॥३४॥
अड़िल ॥
राज बाज ताजियन सु दयो गिराइ कै ॥
साज बाज साजियन सु गैन फिराइ कै ॥
है पाखरे संघारे ससत्र संभारि कै ॥
हो पैदल रथी बिदारे बान प्रहारि कै ॥३५॥

चौपई ॥

पहर एक राखे अटकाई ॥
भाति भाति सो करी लराई ॥

गहि धनु पान धनंजै गाजियो ॥
तब ही सैन कैरवन भाजियो ॥३६॥

दोहरा ॥

त्रिय कौ जुध बिलौकि कै पारथ भयो प्रसंन्य ॥
कहियो आजु तै द्रोपती धरनी तल मै धंन्य ॥३७॥

चौपई ॥

मै अब बिकि दामन बिनु गयो ॥
जनु तै दास मोल को लयो ॥
जो कछु कहौ कारज तव करिहो ॥
प्रान जान ते नैकु न डरिहो ॥३८॥

दोहरा ॥

तरुन बिधातै तव करियो तरनी कीनो मोहि ॥
केल करे बिनु जात लै लाज न लागत तोहि ॥३९॥

चौपई ॥

बानावली धनंजै धारी ॥
मुरछित सकल सैन करि डारी ॥
द्रुपती साथ बिहारियो सोऊ ॥
ता को देखत भयो न कोऊ ॥४०॥

दोहरा ॥

चुंबन आसन लै घने रति मानी द्रुपतीस ॥
ता पर कोऊ न पर सके ठटकि रहे अवनीस ॥४१॥
जीति कैरवन के दलहि द्रुपतिह लयो छिनाइ ॥
न्रिप मारे हारे गए धंन्य धनंजै राइ ॥४२॥

चौपई ॥

प्रथम सूरमा सकल निवारे ॥
बचे भाजे भिरे ते मारे ॥
जीति द्रोपती अति सुख पायो ॥
तब पारथ ग्रिह ओर सिधायो ॥४३॥

CHARITAR १३७ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सैतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥137॥2759॥अफजूं॥

चौपई ॥

आभावती ओडछे रानी ॥
सुंदरी भवन चौदहूं जानी ॥
ता कौ अति ही रूप बिराजै ॥
सुरी आसुरिनि कौ मनु लाजै ॥१॥
रूपमान तिह नैन निहारियो ॥
ता को चीति मीत करि डारियो ॥

वा के धाम बुलावन कीनो ॥
भाति भाति सो आसन दीनो ॥२॥
ताहि केसअरि बकत्र लगायो ॥
सभ केसन कौ दूरि करायो ॥
पुरखहु ते इसत्री करि डारी ॥
मित पति लै तीरथन सिधारी ॥३॥
पति को कही बात समुझाई ॥
मोरी हिया बहिन इक आई ॥
ताहि संग लै तीरथ लैहो ॥
सभ ही पाप बिदा कर दैहो ॥४॥
अड़िल ॥
पति मित लै के संग सिधाई तीरथन ॥
ऐस सहेट बनाई अपने यार तन ॥
जब पिय लै गंगा महि नैहो जाइ कै ॥
हो भगनी मुख ते भाखि मिलौगी आइ कै ॥५॥

दोहरा ॥

मीत नाथ कौ संग लै तह को कियो पयान ॥
केतिक दिनन बिताइ कै गंग कियो इसनान ॥६॥

चौपई ॥

पति को संग गंग लै न्रहाई ॥
भाखि बहिनि ता सो लपटाई ॥
मन मानत तिन केल कमायो ॥
मूरख कंत भेव नहि पायो ॥७॥
चिमटि चिमटि ता सो लपटाई ॥
मन मानत त्रिय केल कमाई ॥
दिन देखत त्रिय केल कमायो ॥
मूरख कंत भेव नहि पायो ॥८॥

दोहरा ॥

मन मानत को मानि रति दीनो जार उठाइ ॥
मुख बाए मूरख रहियो भेद न सकियो पाइ ॥९॥

CHARITAR १३८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठतीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥138॥2769॥अफज्रं॥*

अड़िल ॥
मानणेसुरी रानी अतिहि सु सोहनी ॥
सिंघ गरूर न्रिपति के चित की मोहनी ॥
बैरम सिंघ बिलोकियो जब तिन जाइ कै ॥
हो मदन बस्रय ह्वै गिरी भूमि मुरछाइ कै ॥१॥

चौपई ॥

उठत प्रीति प्रिय अधिक लगाई ॥
काम केल तिह साथ कमाई ॥
बहुरि जार इह भाति उचारो ॥

सुनो त्रिया तुम बचन हमारो ॥२॥
तौ लखि हौ मै तुमै प्यारो ॥
पति देखत मुहि साथ बिहारो ॥
तब तैसी त्रिय घात बनाई ॥
सो मै तुम सौ कहत सुनाई ॥३॥

दोहरा ॥

तिन घर भीतर पीर को राखियो थान बनाइ ॥
माननेस्वरी घात लखि दीनो ताहि गिराइ ॥४॥

चौपई ॥

ढाहि थान निजु पतिहि दिखायो ॥
पीर नाम लै अति डर पायो ॥
रोस अबै सुरतान बढैहै ॥
तो कौ डारि खाट ते दैहै ॥५॥
प्रथम डारि तह ते तुहि दै है ॥
बहुरि खाट के तरे दबै है ॥
मो कह पकरि तहा ही डरि है ॥
दुहूंअनि कौ गोडन सौ मरि है ॥६॥
रसरन साथ बंध करि लै है ॥
ता पाछे तो कौ उलटै है ॥
औध खाट तव उपरि डरि है ॥
बहुरि तुमै जानन सौ मरि है ॥७॥
प्रथम कथा ता सो यौ कही ॥
खाट डारि पति सौ स्वै रही ॥
जब सोयो ता कौ लखि पायो ॥
द्रिड़ रसरन के साथ बंधायो ॥८॥
जिवरन साथ बाधि तिह गई ॥
सोइ रहियो जड़ सुधि न लई ॥
खाट तरे इह भाति करो है ॥
जानुक म्रितक सिर्रही पै सोहै ॥९॥

दोहरा ॥

खाट साथ द्रिड़ बाधि कै औध दियो उलटाइ ॥
चड़ि बैठी ता पर तुरतु जार संगि लपटाइ ॥१०॥
अड़िल ॥
भाति भाति तिह त्रिय कौ जार बजाइ कै ॥
भाति भाति के आसन लए बनाइ कै ॥
चुंबन आलिंगन लीने रुचि मानि कै ॥
हो तर डारियो जड़ रहियो मोन मुखि ठानि कै ॥११॥

चौपई ॥

हाहि हाइ तर परियो उचारै ॥
कहा करियो तै पीर हमारै ॥
तुमै त्याग मै अनत न धायो ॥
जैसो कियो तैसो फल पायो ॥१२॥
अड़िल ॥
अब मोरो अपराध छिमापन कीजियै ॥

कछू चूक जो भई छिमा करि लीजियै ॥
तोहि त्यागि करि अनत न कितहूं जाइहौ ॥
हो पीर तुहारे साल साल मै आइहौ ॥१३॥

चौपई ॥

जार भोग द्रिड़ जब करि लयो ॥
न्रिप कौ छोरि तरे ते दयो ॥
प्रथम मीत निजु त्रिय नै टारियो ॥
बहुरि आनि कै राव उठारियो ॥१४॥
मूरख कछू भेव नहि पायो ॥
जानियो मोहि पीर पटकायो ॥
बंधन छूटे सु थान सवारियो ॥
त्रिय कौ चरित न जिय मै धारियो ॥१५॥

CHARITAR १३९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥139॥2783॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

हिजली बंदर को रहै बानी राइ नरेस ॥
मेघमती रानी तहा रति के रहत सुबेस ॥१॥
मजलिसि राइ बिलोकि कै रीझि रही त्रिय सोइ ॥
बोलि भोग ता सौ कियो रघुपति करै सु होइ ॥२॥

चौपई ॥

बानी राइ जब यौ सुनि पायो ॥
कोऊ जार हमारे आयो ॥
दोऊ बाधि भुजा इह लैहौ ॥
गहरी नदी बीच बुरवैहौ ॥३॥
रानी बात जबै सुन पाई ॥
एक गोह कौ लयो मंगाई ॥
बाधि रसन ता सो इक लियो ॥
ताहि चराइ दिवारहि दियो ॥४॥

दोहरा ॥

ता सो रसन बन्नहाइ कै जारहि दयो लंघाइ ॥
मूड़ राव चक्रित रहियो सकियो चरित्र न पाइ ॥५॥

CHARITAR १४० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥140॥2788॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

भसमागद दानो बडो भीम पुरी के माहि ॥
ताहि बराबरि भासकरि जुध समै मो नाहि ॥१॥

चौपई ॥

तिन बहु बैठि तपस्या कियो ॥
यौ बरदान रुद्र ते लियो ॥
जा के सिर पर हाथ लगावै ॥
जरि बरि भसम सु नर हो जावै ॥२॥
तिन गौरी को रूप निहारियो ॥
यहै आपने ह्रिदै बिचारियो ॥
सिव के सीस हाथ मै धरिहो ॥
छिन मै याहि भसम करि डरिहो ॥३॥
चित मै इहै चिंत करि धायो ॥
महा रुद्र के बध हित आयो ॥
महा रुद्र जब नैन निहारियो ॥
निजु त्रिय को लै संग सिधारियो ॥४॥
रुद्र भजत दानो हूं धायो ॥
दछिन पूरब सिवहि भ्रमायो ॥
पुनि पछिम को हर जू धयो ॥
पाछे लगियो ताहि सो गयो ॥५॥

दोहरा ॥

तीनि दिसन मै भ्रमि रहियो ठौर न पायो कोइ ॥
उतर दिसि को पुनि भजियो हरि जू करै सु होइ ॥६॥

चौपई ॥

जब उतर को रुद्र सिधायो ॥
भसमागद पाछे तिह धायो ॥
या को भसम अबै करि दैहो ॥
छीनि पारबती को त्रिय कैहो ॥७॥
पारबती बाच ॥

दोहरा ॥

या बौरा ते मूड़ तै का बरु लियो बनाइ ॥
सभ झूठा सो जानियै लीन अबै पतियाइ ॥८॥

चौपई ॥

प्रथम हाथ निजु सिर पर धरो ॥
लहिहो एक केस जब जरो ॥
तब सिर कर सिव जू के धरियो ॥
मो को निजु नारी लै करियो ॥९॥
यौ बच दैत स्रवन जब करियो ॥
हाथ अपने सिर पर धरियो ॥
छिनक बिखै मूरख जरि गयो ॥
सिव को सोक दूरि कर दयो ॥१०॥

दोहरा ॥

अस चरित्र करि पारबती दीनो असुर जराइ ॥
फटकाचल सिव के सहित बहुरि बिराजी जाइ ॥११॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥141॥2799॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहिर बेसहर के बिखै बाणासुर नरेस ॥
देस देस एस्वर झुके जनुक दुतिय अलिकेस ॥१॥

चौपई ॥

जोग मती ता की पटरानी ॥
सुंदर भवन तीन हूं जानी ॥
जोबन जेब अधिक तिस सोहै ॥
सुर नर जछ भुजंगन मोहै ॥२॥

दोहरा ॥

ऊखा नामा कंनिका उपजत भई अपार ॥
लाज सील सुभ सकुच ब्रत निजु करि किय करतार ॥३॥
अड़िल ॥
ता को रूप अनूप सरूप बिराजई ॥
सुर नर जछ भुजंगन को मनु लाजई ॥
ता को कोर कटाछ बिलोकन पाइयै ॥
हो बिन दीनो ही दामन सदा बिकाइयै ॥४॥
नैन हरन से स्याम बिसिख जानुक बढियारे ॥
सुभ सुहाग तन भरे चारु सोभित कजरारे ॥
कमल हेरि छबि लजै दिपत दामन कुररावै ॥
हो बन बन भरमै बिहंग आजु लगि अंत न पावै ॥५॥
जनुक पखरिआ तुरै जनुक जमधर सी सोहै ॥
खड़ग बाढि जनु धरे पुहप नरगिसि तट को है ॥
जनुक रैनि के जगे हेरि हर निज छबि हारे ॥
हो बालि तिहारे नैन जनुक दोऊ मतवारे ॥६॥
चुंचरीट छबि हेरि भए अब लगे दिवाने ॥
म्रिग अब लौ बन बसत बहुरि ग्रिह कौ न सिधाने ॥
तपीसन दुति कौ हेरि जटन को जूट छकायो ॥
हो भ्रमत पंखेरू गगन प्रभा को पार न पायो ॥७॥
ता कौ रूप अनूप बिधातै जो रचियो ॥
रूप चतुरदस लोगन कौ या मै गचियो ॥
जो कोऊ देव अदेव बिलोकै जाइ कै ॥
हो गिरै मूरछना खाइ धरनि पर आइ कै ॥८॥

दोहरा ॥

सहस्रबाहु ता को पिता जा को बीरज अपार ॥
बाहु सहस आयुध धरे जनु दूजो करतार ॥९॥
छित के जिते छितेस सभ बडे छत्रियन घाइ ॥
बिप्रन कौ दछिना दई भूरि गाइ सै दाइ ॥१०॥

चौपई ॥

जा कौ खंड डंड निति भरै ॥

ते सिव की पूजा निति करै ॥
एक दिवस पसुराट रिझायो ॥
तुमल जुध माग्यो मुख पायो ॥११॥
सिव बाच ॥

दोहरा ॥

जब तेरे ग्रिह ते धरनि धुजा परैगी आन ॥
तुमल जुध तब ही भयो लीजौ समझि सुजानि ॥१२॥

चौपई ॥

सोवत सुता सुपन यौं पायो ॥
जानुक मैन रूप धरि आयो ॥
ताहि छोरि ता को सुत बरियो ॥
नगर द्वारिका चितवन करियो ॥१३॥

दोहरा ॥

चमक परी अबला तबै प्रीति पिया के संग ॥
पुलिक पसीजत तन भयो बिरह बिकल भयो अंग ॥१४॥

चौपई ॥

पिय पिय उठ अबलाहि उचरी ॥
छित गिरि गई दातनी परी ॥
तब सखियन तिह लयो उचाई ॥
रेखा चित्र कथा सुनि पाई ॥१५॥
सवैया ॥
घूमत नैन खुमारी सी मानहु गूड़ अगूड़न भेद बतावै ॥
ताप चड़ी तिह को तन कौ सखी हार सिंगार कियो न सुहावै ॥
बेगि चलो सुनि बैन बलाइ लिउ तेरी दसा कहि मुहि न आवै ॥
पीय की पीर कि पीर कछू निरखो पल मै कि मरियो बचि आवै ॥१६॥
बोलत हो मतवारे ज्यो माननि डारत आंखनि ते जल जैहै ॥
घोरि हलाहल आजु पियै नहि कासी बिखै करवत्रहि लैहै ॥
जानत हो ग्रिह छाडि सखी सभ ही पट फारि अतीतनि ह्वैहै ॥
लेहु बिलोकि पियारी को आनन ऊख कला मरिगे दुखु पैहै ॥१७॥

दोहरा ॥

चित्र रेखा सुणि ए बचन हितू हेत दुख पाइ ॥
पवन डारि पाछे चली तहा पहूंची जाइ ॥१८॥
अड़िल ॥
ता को रूप बिलोकियो जब ही जाइ कै ॥
हितू हेतु गिरि परी धरनि दुखु पाइ कै ॥
याहि सखी जिहि बिधि सौ पियहि मिलाइयै ॥
हौ जौन सुपनियै लहियो वहै लै आइयै ॥१९॥

चौपई ॥

चित्रकला धौलहर उसारिस ॥
चौदह भवन तहा लिखि डारिस ॥
देव दैत तिह ठौर बनाए ॥

गंध्रब जछ भुजंग सुहाए ॥२०॥

दोहरा ॥

देस देस के एस जे तह सभ लिखे बनाइ ॥
रोहणेह प्रदुमन सुत हरि आदिक जदुराइ ॥२१॥
चौदह पुरी बनाइ कै ताहि कहियो समझाहि ॥
तुमरो जियब उपाइ मै कीयो बिलोकहु आइ ॥२२॥

चौपई ॥

देव दिखाइ दैत दिखराए ॥
गंध्रब जछ भुजंग हिराए ॥
पुनि कैरव के कुलहि दिखायो ॥
तिनहि बिलौकिन त्रिय सुखु पायो ॥२३॥

दोहरा ॥

चौदहि पुरी बिलोक करि तहा पहूंची आइ ॥
जह सभ जदु कुल के सहित सोभित स्री जदुराइ ॥२४॥
प्रथम लागिली कौ निरखि पुनि निरखे जदुराइ ॥
ह्वै प्रसंन्य पाइन परी जगत गुरू ठहराइ ॥२५॥

चौपई ॥

बहुरि प्रदुमन निहारियो जाई ॥
लजत नारि नारीं निहुराई ॥
ता को पूत बिलोकियो जब ही ॥
मिटि गयो सोक देह को सभ ही ॥२६॥

दोहरा ॥

धंन्य धंन्य मुख कहि उठी सखियहि सीस झुकाइ ॥
जो सुपने भीतर लहियो सोई दयो दिखाइ ॥२७॥
चौदह पुरी बनाइ कै पिय को दरस दिखाइ ॥
चित्र बिखै जिह बिधि लिखियो सो मै देहु मिलाइ ॥२८॥

चौपई ॥

चित्र रेख जब यौ सुनि पाई ॥
पवन रूप ह्वै कै तित धाई ॥
द्वारकावती बिलोकियो जब ही ॥
चित कौ सोक दूरि भयो सभ ही ॥२९॥

दोहरा ॥

चित्र कला तह जाइ कै कहे कुअर सो बैन ॥
गिरि बासिन बिरहनि भई निरखि तिहारे नैन ॥३०॥

चौपई ॥

लाल करो तिह ठौर पयानो ॥
जौन देस मै तुमै बखानो ॥
चड़ि बिवान मै तहा सिधरियै ॥

धाम पवित्र हमारो करियै ॥३१॥

दोहरा ॥

अनरुध सुनि ऐसे बचन तह ते कियो पयान ॥
बहर बेसहर के बिखै तहा पहूंचियो आनि ॥३२॥
जो प्यारो चित मै बस्यो ताहि मिलावै कोइ ॥
ता की सेवा कीजियै दासन दासी होइ ॥३३॥
अड़िल ॥
कहौ त दासी होइ नीर गगरी भरि ल्याऊ ॥
कहो ता बीच बजार दाम बिनु देह बिकाऊ ॥
भ्रितन भ्रितनी होइ कहौ कारज सोऊ कैहौ ॥
हो तवप्रसादि मै सखी आजु साजन कह पैहौ ॥३४॥
तवप्रसादि मै सखी आजु साजन को पायो ॥
तवप्रसादि सुनि हितू सोक सभ ही बिसरायो ॥
तवप्रसादि सुनि मित्र भोग भावत मन करिहौ ॥
हो पुरी चौदहूं माझ चीनि सुंदर पति बरिहौ ॥३५॥

दोहरा ॥

ऐसे बचन उचारि करि मितवहि लियो बुलाइ ॥
भाति भाति के भोग किय मन भावत लपटाइ ॥३६॥

चौपई ॥

आसन चौरासी हूं लए ॥
चुंबन भाति भाति सो दए ॥
अति रति करत रैनि बीताई ॥
ऊखा काल पहूंचियो आई ॥३७॥
भोर भई घर मीतहि राखियो ॥
बाणासुर सो प्रगटि न भाखियो ॥
तब लौ धुजा बधी गिरि गई ॥
ता को चित चिंता अति भई ॥३८॥

दोहरा ॥

भाति भाति के ससत्र लै सूरा सभै बुलाइ ॥
सिव को बचन संभारि कै तहा पहूचियो आइ ॥३९॥

चौपई ॥

जोर अनी राजा इति आयो ॥
उत इन मिलि कै केल मचायो ॥
चौरासिन आसन कह लेही ॥
हसि हसि दोऊ अलिंगन देही ॥४०॥
केल करत दुहिता लखि पाई ॥
जाग्यो क्रोध न्रिपन के राई ॥
अब ही इन दुहूंअन गहि लैहैं ॥
मारि कूटि जम लोक पठैहैं ॥४१॥

दोहरा ॥

ऊखा निजु पितु के निरखि नैन रही निहुराइ ॥

करियै कछू उपाइ अब लीजै मीत बचाइ ॥४२॥
उठि अनरुध ठाढो भयो धनुख बान लै हाथ ॥
प्रगट सुभट झटपट कटे अमित बिकट बल साथ ॥४३॥

भुजंद छंद ॥

परियो लोह गाड़ो महा जुध मचियो ॥
लए पारबती पारबती नाथ नचियो ॥
गहे सूल सैथी सभै सूर धाए ॥
महाकोप कै तुंद बाजी नचाए ॥४४॥

चौपई ॥

केते प्रबल निबल तह कीने ॥
जीति जीति केते रिपु लीने ॥
केते बिनु प्रानन भट भए ॥
रहि रहि ससत्र साथ ही गए ॥४५॥

भुजंग छंद ॥

करी क्रोरि मारे रथी कोटि कूटे ॥
किते स्वार घाए फिरै बाज छूटे ॥
किते छत्र छेके किते छत्र तोरे ॥
किते बाधि लीने किते छैल छोरे ॥४६॥
किते भीरु भाजे किते कोपि ढूके ॥
चहूं ओर ते मार ही मारि कूके ॥
लए बाहु साहंस्र सो ससत्र भारे ॥
चलियो कोपि कै राज बाजे नगारे ॥४७॥

दोहरा ॥

जुध भये कह लौ गनो इती न आवत सुधि ॥
घाइन कै घाइल भए बाधि लयो अनरुध ॥४८॥

चौपई ॥

जब ऊखा ऐसे सुनि पाई ॥
लीने मोर बाधि सुखदाई ॥
तब रेखा कह बोलि पठाइस ॥
नगर द्वारिका बहुरि पठाइस ॥४९॥
चली चली जैयहु तुम तहा ॥
बैठे क्रिसन स्याम घन जहा ॥
दै पतिया पाइन परि रहियहु ॥
हमरी कथा छोरि ते कहियहु ॥५०॥
अड़िल ॥
दीना नाथ हमारी रछा कीजियै ॥
या संकट को काटि आइ करि दीजियै ॥
परियो बंद ते पौत्रहि अबै छुराइयै ॥
हो तब आपन कह दीनु धरन कहाइयै ॥५१॥
प्रथम बकी को मारि बहुरि बगुलासुर मारियो ॥
सकटासुर केसियहि केस गहि कंस पछारियो ॥
आघासुर त्रिणवरत मुसट चंडूर बिदारे ॥
हो लीजै हमै बचाइ सकल हम सरनि तिहारे ॥५२॥

मधु कौ प्रथम संघारि बहुरि मुर मरदन कीनो ॥
दावानल ते राखि सकल गोपन को लीनो ॥
महा कोपि करि इंद्र जबै बरखा बरखाई ॥
हो तिसी ठौर तुम आन भए ब्रिजनाथ सहाई ॥५३॥

दोहरा ॥

जह साधन संकट बनै तह तह लए बचाइ ॥
अब हमहो संकट बनियो कीजै आनि सहाइ ॥54॥

अड़िल ॥
चित्र कला इह भाति दीन ह्वै जब कही ॥
ता की ब्रिथा समसत चित जदुपति लई ॥
ह्वै कै गरुड़ अरूड़ पहुंचै आइ कै ॥
हो बिकट सुभट चटपट कटि दए रिसाइ कै ॥५५॥

चौपई ॥

भीरि परे भाजे भट भारे ॥
जाइ राव पै बहुरि पुकारे ॥
बैठियो कहा दैव के घाए ॥
चड़्हे गरुड़ गरुड़ध्वज आए ॥५६॥

दोहरा ॥

यौ सुनि कै राजा तबै रन चड़ि चलियो रिसात ॥
बाधि बढारी उमगियो कौच न पहिर्यो गात ॥५७॥

चौपई ॥

जोरे सैन जात भयो तहा ॥
गाजत क्रिसन सिंघ जू जहा ॥
असत्र ससत्र करि कोप चलाए ॥
काटि स्याम सभ भूमि गिराए ॥५८॥

नराज छंद ॥

सहस्र ही भुजान मै सहस्र असत्र ससत्र लै ॥
हठियो रिसाइ कै हठी कमान बान पान लै ॥
बधे रथी महारथी अप्रमान बान मारि कै ॥
दए पठाइ स्वरग सूर कोप कौ सभारि कै ॥५९॥

चौपई ॥

बहु साइक जदुपति कौ मारे ॥
बहु बानन सो गरुड़ प्रहारे ॥
बहु सूलन सो रथी परोए ॥
लगे सुभट सैहथियन सोए ॥६०॥
तब स्री कोप क्रिसन करि दीनो ॥
खंड खंड सत्रासत्र कीनो ॥
बाणासुरहि बान बहु मारे ॥
बेधि बरम धनु चरम सिधारे ॥६१॥
अड़िल ॥
बहुरि क्रिसन जी बान चलाए कोप करि ॥

बाणासुर के चरम बरम सरबासत्र हरि ॥
सूत मारि है चारो दए गिराइ कै ॥
हो रथी महारथ अति रथियन को घाइ कै ॥६२॥
चमकि ठाढ भूअ भयो अयुधन धारि कै ॥
गरुड़ गरुड़ नायक को बिसिख प्रहारि कै ॥
सात सातकहि आठ अरुजनहि मारि करि ॥
हो कोटि करी कुरराइ हने रिसि धारि करि ॥६३॥
कोप क्रिसन के जग्यो धुजा काटत भयो ॥
छिप्रछटा कर छत्र छितहि डारत भयो ॥
चरम बरम रिपु चरम कोप करि काटियो ॥
हो रथ रथियन रन भीतर तिल तिल बाटियो ॥६४॥
बडे दुबहिया मारे क्रिसन रिसाइ कै ॥
तिल तिल पाइ प्रहारे रथियन घाइ कै ॥
छैल चिकनिया काटे भुजा सहस्र हरि ॥
हो तव सिव पहुचे आइ सु भगत बिचारि करि ॥६५॥
बीस बान बिसुइस कह ब्रिजपति मारियो ॥
बहुरि बान बतीस सु वाहि प्रहारियो ॥
निरखि जुध को जछ रहै चित लाइ कै ॥
हो देव अदेवन देव रहे उरझाइ कै ॥६६॥
रुद्र क्रुध अति भयो तपत तप छोरियो ॥
सीत ताप तजि क्रिसन बकत्र तिह मोरियो ॥
ऐस गौरि सौ गाह गगन सर लाइ कै ॥
हो तुमल जुध करि लीनो खेत छिनाइ कै ॥६७॥

दोहरा ॥

जीति सत्रु निजु पौत्र की कीनी बंदि खलास ॥
भाति भाति बाजन बजे हरखे सुनि सुरि ब्यास ॥६८॥
अड़िल ॥
आनरुध कौ ऊखा दई बिवाहि कै ॥
गाड़े गड़वारन गड़ गजियन गाहि कै ॥
हठे हठीलन जीति चले सुख पाइ कै ॥
हो दंत बकत्र के संग बन्यो रन आइ कै ॥६९॥

भुजंग छंद ॥

उतै दंत बकत्रा इते क्रिसन सूरो ॥
हटै न हठीलो महा जुध पूरो ॥
लए सूल सैथी महाबीर राजै ॥
लखे दित्रय अदित्रय को द्रपु भाजै ॥७०॥
तबै छाडि कै चक्र दीनो कन्नहाई ॥
बही दैत की नारि मै धारि जाई ॥
गिरियो झूमि कै भूमि मै कोपि कूटियो ॥
मनो मेरु को सातवो स्रिंग टूटियो ॥७१॥

चौपई ॥

हनि अरि द्वारावती सिधारे ॥
भाति भाति के बजे नगारे ॥
पठे तरुनि पखरिया हरखे ॥
सुर सभ पुहप गगन ते बरखे ॥७२॥

दोहरा ॥

बाहू छै बानास्र करि दंत बकत्रहि घाइ ॥
हरी क्रिसोदरि जीति सिव धंन्य धंन्य जदुराइ ॥७३॥

CHARITAR १४२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बिआलीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥142॥2872॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

राज मती रानी रहै उतर देस अपार ॥
गड़ि बिधनै ता सी बधू और न सकियो सवारि ॥१॥
बिभ्रम देव बडो बली ता को रहै नरेस ॥
ता को त्रास समुंद्र लग मनियत चारो देस ॥२॥
क्रिपा नाथ जोगी तहा जा सम रूप न और ॥
लखि अबला भू पर गिरै भई मूरछना ठौर ॥३॥

चौपई ॥

बोलि लयो रानी जोगिस बर ॥
कामकेल ता सो बहु बिधि करि ॥
पुनि ताही आसन पहुचायो ॥
रैनि भई तब बहुरि मंगायो ॥४॥

दोहरा ॥

भूधर सिंघ तहा हुतो अति सुंदरि इक राज ॥
साज बाज भीतर किधौ बिसकरमा ते बाज ॥५॥
राज निरखि सुंदर घनो रानी लियो बुलाइ ॥
प्रथम भोग ता सौ करियो पुनि यौ कहियो बनाइ ॥६॥
अड़िल ॥
सुनिहो प्रीतम राज काज मुर कीजियै ॥
कछु धन छोरि भंडार हमारो लीजियै ॥
खोदि भूमि तर मंडप एक बनाइयै ॥
हो मंडप लखियो न जाइ भूमि लहि जाइयै ॥७॥
तब तिन छोरि भंडार अमित धन को लियो ॥
खोदि भूमि के तरे बनावत मट भयो ॥
कै सोई स्यानो लखै न देवल पाइयै ॥
हो और भूमि सी सो भूअ चित मै ल्याइयै ॥८॥

चौपई ॥

राजहि रानी रोज बुलावै ॥
भाति भाति के केल कमावै ॥
अति सनेह ता सौ उपजायो ॥
जनुक सात फेरन को पायो ॥९॥
केल कमाइ राज जब जावै ॥
तब रानी जोगियहि बुलावै ॥
चिमटि चिमटि ता सौ रति मानै ॥
मूरख राव भेद नहि जानै ॥१०॥
काम अधिक दिन राज संतायो ॥

बिनु बोले रानी के आयो ॥
केल करत सो त्रिय लखि पाई ॥
ता के कोप जग्यो जिय आई ॥११॥
अड़िल ॥
केल करत रानी तिह लखियो बनाइ कै ॥
बाधि रसरियन लियो सु दियो जराइ कै ॥
क्रिपा नाथ के साथ कहियो यौ जाइ करि ॥
हो जो मै कहो चरित्र सु करियै नाथ बर ॥१२॥

चौपई ॥

खान पान आगे तव धरिहौ ॥
मुंद्रित मठ को द्वारनि करिहौ ॥
खोदि भूमि इक चरित्र दिखैहौ ॥
तव चरनन तर राव झुकैहौ ॥१३॥
यौ कहि मूंदि दुआरन लियो ॥
आगे ढेर भसम तिह कियो ॥
आपु राव सौ जाइ जतायो ॥
सोवत समै सुपन मै पायो ॥१४॥
इक जोगी सुपने मै लहियो ॥
तिह मो सो ऐसे जनु कहियो ॥
खोदि भूमि तुम मोहि निकारो ॥
ह्वै बडो प्रताप तिहारो ॥१५॥
भूधर राज खोदबो लायो ॥
मै तुम सो यौ आनि सुनायो ॥
तुमहूं चले संग ह्वै तहा ॥
कहा चरित्र ह्वै है धौ उहा ॥१६॥
यौ कहि न्रिपति संग लै आई ॥
भूअ खोदन त्रिय दयो लगाई ॥
मंडप तहा एक जब लहियो ॥
धंन्य धंन्य पति त्रिय सो कहियो ॥१७॥
जोगी निरखि सखी भजि आई ॥
दौरि न्रिपति चरनन लपटाई ॥
कहियो सु जब खोलत द्रिग भयो ॥
तब ही राज भसम ह्वै गयो ॥१८॥
तब रानी यौ बचन उचारे ॥
सुनहो राव प्रान ते प्यारे ॥
मो को जान प्रथम तह दीजै ॥
बहुरो आपु पयानो कीजै ॥१९॥
यौ कहि कै अबला तह गई ॥
ता सो केल कमावत भई ॥
ता पाछे न्रिप को तह ल्याई ॥
जोगी की झाई दिखराई ॥२०॥
तब जोगी यौ बचन उचारे ॥
बहत जान्रहवी अबि लगि थारे ॥
ता को हम को नीर दिखरियै ॥
हम को सोक निवारन करियै ॥२१॥
जब राजै ऐसे सुनि पायो ॥
भरि गागरि गंगा जल ल्यायो ॥
आइ सु नीर बिलोकियो जब ही ॥
ऐसे बचन उचारे तब ही ॥२२॥

निजु तूंबा ते दूध दिखायो ॥
गंगोदक तहि को ठहरायो ॥
कहियो जान्रहवी को का भयो ॥
तब पै थो अब जल ह्वै गयो ॥२३॥

दोहरा ॥

सतिजुग के जुग मै हमो या मै कियो निवास ॥
अब बरतत जुग कौन सो सो तुम कहहु प्रकास ॥२४॥

चौपई ॥

सतिजुग बीते त्रेता भयो ॥
ता पाछे द्वापर बरतयो ॥
तब ते सुनु कलजुग अब आयो ॥
सु तुहि कह हम प्रगट सुनायो ॥२५॥
कलजुग नाम जबै सुनि लयो ॥
हाहा सबद उचारत भयो ॥
तिहि मुहि बात लगन नहि दीजै ॥
बहुरो मूंदि दुआरन लीजै ॥२६॥
रानी बाच ॥
मै सेवा तुमरी प्रभु करिहो ॥
एक पाइ ठाढी जल भरिहो ॥
मूंदिन द्वारन को क्योन लीजै ॥
हम पर नाथ अनुग्रहु कीजै ॥२७॥
पुनि राजै यौ बचन उचारो ॥
क्रिपा करहु मै दास तिहारो ॥
यह रानी सेवा कह लीजै ॥
मो पर नाथ अनुग्रहु कीजै ॥२८॥

दोहरा ॥

सेवा कह रानी दई यौ राजै सुख पाइ ॥
द्वारन मूंदिन न दयो रहियो चरन लपटाइ ॥२९॥
मूड़ राव प्रफुलित भयो सकियो न छल कछु पाइ ॥
सेवा को रानी दई ताहि सिध ठहराइ ॥३०॥
राज मारि राजा छलियो रति जोगी सो कीन ॥
अतभुत चरित्र त्रियान कौ सकत न कोऊ चीन ॥३१॥

CHARITAR १४३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तैतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥143॥2903॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बीकानेर राव इक भारो ॥
तीन भवन भीतर उजियारो ॥
वती सिंगार राव की रानी ॥
सुंदरि भवन चौदहूं जानी ॥१॥
अड़िल ॥
तहा राइ महताब सुदागर आइयो ॥

लखि रानी को रूप हियो ललचाइयो ॥
भेजि सहचरी तिह ग्रिह लयो बुलाइ कै ॥
हो मन मानत रति करी अधिक सुख पाइ कै ॥२॥

चौपई ॥

नितप्रति रानी ताहि बुलावै ॥
भाति भाति सो भोग कमावै ॥
जानत रैनि अंत जब आई ॥
ताहि देत निजु धाम पठाई ॥३॥
अड़िल ॥
चुनि चुनि भली मताह सुदागर ल्यावई ॥
रानी ता कौ पाइ घनो सुख पावई ॥
अति धन छोरि भंडार देत तहि नित्य प्रति ॥
हो बस्यो रहत अबला के प्रीतम नित्य चित ॥४॥

चौपई ॥

मूरख राव जबै सुनि पाई ॥
भाति भाति रानी डर पाई ॥
या त्रिय को अब ही हनि दैहौ ॥
खोदि भूमि के बिखै गडैहौ ॥५॥
जब रानी ऐसे सुनि पायो ॥
तौन जार को बोलि पठायो ॥
ता के कहियो संग मुहि लीजै ॥
अपने देस पयानो कीजै ॥६॥
मंदिर एक उजारि बनायो ॥
दो द्वारन ता मै रखवायो ॥
हम खोजत इह मग जौ ऐहै ॥
दूजे द्वार निकसि हम जैहै ॥७॥
अड़िल ॥
एक साढनी न्रिप की लई मंगाइ कै ॥
ता पर भए स्वार दोऊ सुख पाइ कै ॥
तौन महल के भीतर पहुचे आइ करि ॥
हौ भाति भाति के केल करे सुख पाइ करि ॥८॥
सुनि राजा त्रिय भजी चड़ियो रिसि खाइ कै ॥
साथी लीनो संग न कोऊ बुलाइ कै ॥
लै पाइन के खोज पहूचियो आइ करि ॥
हो वा मंदिर के माझ धस्रयो कुरराइ करि ॥९॥

दोहरा ॥

थकि साढिन तिन की गई तहा जु पहुचे जाइ ॥
अथक ऊांटनी राव चड़ि तहा पहूंचियो आइ ॥१०॥
उतर साढि ते राव तब तहा चड़ियो रिसि खाइ ॥
इन दुहूंअन गहि जम सदन दैहौ अबै पठाइ ॥११॥

चौपई ॥

इह मारग जब न्रिप चड़ि गए ॥
दुतिय मारगु उतरत ते भए ॥
अथक साढनी पर चड़ि बैठै ॥

रानी सहित सु जार इकैठै ॥१२॥

अड़िल ॥

अथक साढि चड़ि बैठै दई धवाइ कै ॥
पवन बेगि ज्यो चली मिलै को जाइ कै ॥
उतरि राव का देखै दिसटि पसारि कै ॥
हो उतिम साढिन हरी मत महि मारि कै ॥१३॥

चौपई ॥

तब राजा प्रयादो रहि गयो ॥
पहुचत तिनै न क्योहूं भयो ॥
छल बल सभ अपने करि हारियो ॥
लै रानी ग्रिह जार पधारियो ॥१४॥

अड़िल ॥

दुहूं हाथ निजु मूंड छार डारत भयो ॥
जनुक राह मै लूटि किनू ता कौ लयो ॥
गिरियो झूमि कै भूमि अधिक मुरझाइ कै ॥
हो डूबि नदी महि मरियो अधिक बिख खाइ कै ॥१५॥
लै रानी को जार जबै ग्रिह आइयो ॥
भाति भाति सो दरबु दिजानु लुटाइयो ॥
जौ ऐसी अबला कौ छल सौ पाइयै ॥
हो बिनु दामन तिह दए हाथ बिकि जाइयै ॥१६॥
छल अबला छैलन को कछू न जानियै ॥
लहियो न जा कौ जाइ सु कैस बखाइनै ॥
जु कछु छिद्र इन के छल कौ लखि पाइयै ॥
हो समुझि चित चुप रहो न किसू बताइयै ॥१७॥

CHARITAR १४४ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥144॥2920॥अफजूं॥

दोहरा ॥

सहिर सिपाहा कै बिखै भगवती त्रिय एक ॥
ता के पति के धाम मै घोरी रहै अनेक ॥१॥

चौपई ॥

घोरी एक नदी तट गई ॥
दरिआई है लागत भई ॥
ता ते एक बछेरो भयो ॥
जनु अवतार इंद्र है लयो ॥२॥
सक्र बरन अति ताहि बिराजै ॥
ता कौ निरखि चंद्रमा लाजै ॥
चमकि चलियो इह भाति सुहावै ॥
जनु घन प्रभा दामनी पावै ॥३॥
ता कौ लै बेचन त्रिय गई ॥
सहिर साह के आवत भई ॥
आपुन भेस पुरख को धारे ॥
कोटि सूर जन चड़े सवारे ॥४॥
जबै साह दीवान लगायो ॥

त्रिया तुरै लै ताहि दिखायो ॥
निरखि रीझि राजा तिह रहियो ॥
लीजै मोल तिसै चित चहियो ॥५॥
प्रथम हुकम करि तुरै फिरायो ॥
बहुरि भेजि भ्रित मोल करायो ॥
टका लाख दस कीमति परी ॥
मिलि गिलि मोल दलालन करी ॥६॥
अड़िल ॥
तब अबला तिन बचन उचारे बिहसि करि ॥
लीजै हमरो बैन साह तू स्रोन धरि ॥
पाच हजार मुहर मुहि ह्यां दै जाइयै ॥
हो लै कै बहुरि तबेलेम तुरै बंधाइयै ॥७॥
साह असरफी पाच हजार मंगाइ कै ॥
चरे तुरंग तिह दीनी कर पकराइ कै ॥
कहियो मुहर पहुचाइ बहुर मै आइ हौ ॥
हो ता पाछे घुरसारहि घोर बंधाइ हौ ॥८॥
यौ कहि तिन सौ बचन धवायो तुरै त्रिय ॥
पठै पखरिया पहुचे करि कै कोप हिय ॥
कोस डेढ सै लगे हटे सभ हारि कै ॥
हो हाथ न आई बाल रहे सिर मारि कै ॥९॥
मुहरै ग्रिह पहुचाइ सु आई बाल तह ॥
बैठो चारु बनाइ साह जू सभा जह ॥
तुरतु तुरै ते उतर सलामै तीनि कर ॥
हो लीजै अपनो तुरै लयो मै मोल भरि ॥१०॥

दोहरा ॥

मुहरै घर पहुचाइ कै तिन कौ चरित दिखाइ ॥
आनि तुरो न्रिप को दियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥११॥

CHARITAR १४५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥145॥2931॥अफजूं॥

दोहरा ॥

प्रमुद कुमारि रानी रहै जा को रूप अपार ॥
बिजै राज राजा निरखि कियो आपना यार ॥१॥
अड़िल ॥
बिजै राज को लीनो धाम बुलाइ कै ॥
लपटि लपटि रति करी हरख उपजाइ कै ॥
पुनि ता सो यौ बचन उचारे प्रीति करि ॥
हो सुनि राजा मुरि बैन लीजिअहि ह्रिदै धरि ॥२॥
जब मुर कियो सुयंबर पिता बनाइ करि ॥
हौ लखि कै तुमरो रूप रही उरझाइ कर ॥
अवर राव मुहि लै गयो जुध मचाइ कै ॥
हो मोर न बस कछु चलियो मरो बिख खाइ कै ॥३॥
लगन अनोखी लगै न तोरी जात है ॥
निरखि तिहारो रूप न हियो सिरात है ॥
कीजै सोऊ चरित जु तुम कह पाइयै ॥

हो निजु नारी मुहि कीजै सु बिधि बताइयै ॥४॥
महा रुद्र के भवन जुगिन ह्वै आइहौ ॥
कछुक मनुख लै संग तहा चलि जाइहौ ॥
महाराज जू तुम तह दलु लै आइयो ॥
हो दुसटन प्रथम संघारि हमै लै जाइयो ॥५॥
बदि ता सो संकेत बहुरि सुख पाइ कै ॥
निजु मुख ते कहि लोगन दई सुनाइ कै ॥
महा रुद्र के भवन कालि मै जाइहौ ॥
हो एक रैनि जगि बहुरि सदन उठि आइहौ ॥६॥
कछुक मनुछ लै संगि जाति तित को भई ॥
महा रुद्र के भवन जगत रजनी गई ॥
प्यारी को आगम राजै सुनि पाइयो ॥
हो भोर होन नहि दई जोरि दलु आइयो ॥७॥
जो जन त्रिय के संग प्रथम तिन घाइयो ॥
जीयत बचे जो जोधा तिनै भजाइयो ॥
ता पाछे रानी को लयो उचाइ कै ॥
हो ग्रिह अपने को गयो हरख उपजाइ कै ॥८॥
रानी को लीनो सुखपाल चड़ाइ कै ॥
आलिंगन चुंबन कीने सुख पाइ कै ॥
सुनत लोग के त्रिय बहु कूक पुकार की ॥
हो चित आपने के बीच दुआए देत भी ॥९॥

CHARITAR १४६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छयालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥146॥2940॥अफजूं॥*

चौपई ॥

खैरी नाम बलोचनि रहै ॥
दुतिय सवति संमी जग कहै ॥

फतह खान ता को पति भारो ॥

तिहूं भवन भीतर उजियारो ॥१॥
रोस कियो ता पै हजरति अति ॥
मुहिंम सैद खा करी बिकट मति ॥
ताहि मिलाइ बहुरि गहि लीनो ॥
मुलतान ओर पयानो कीनो ॥२॥
बंध्रयो राव बालन सुनि पायो ॥
सकल पुरख को भेख बनायो ॥
बालोची सैना सभ जोरी ॥
भाति भाति अरि प्रतिना तोरी ॥३॥

दोहरा ॥

घेरि सैद खा कौ त्रियन ऐसे कहियो सुनाइ ॥
कै हमरो पति छोरियै कै लरियै समुहाइ ॥४॥
अड़िल ॥
सैद खान ऐसे बचनन सुनि पाइ कै ॥
चड़ियो जोरि दलु प्रबल सु कोप बढाइ कै ॥
है गै पैदल बहु बिधि दए संघारि कै ॥
हो सूरबीर बाकन कौ बान प्रहारि कै ॥५॥

भुजंग छंद ॥

बजी भेर भारी महा सूर गाजे ॥
बंधे बीर बानान बाके बिराजे ॥
किते सूल सैथीन के घाइ घाए ॥
मरे जूझि जाहान मानो न आए ॥६॥
गजै राज जूझै किते बाज मारे ॥
कहूं राज घूमै कहूं ताज डारे ॥
किते पाक साहीद मैदान हूए ॥
बसे स्वरग मो जाइ मानो न मूए ॥७॥

चौपई ॥

खैरी जाहि खग गहि मारै ॥
गिरै भूमि न रतीक संभारै ॥
संमी निरखि जाहि सर छोरै ॥
एकै बान मूंड अरि तोरै ॥८॥
सवैया ॥
खग परे कहूं खोल झरे कहूं टूक गिरे छित ताजन के ॥
अरु बान कहूं बरछी कतहूं कहूं अंग कटे बर बाजन के ॥
कहूं बीर परै कहूं चीर दिपै कहूं सूंड गिरे गजराजन के ॥
अति मारि परी न संभारि रही सभ भाजि चले सुत राजन के ॥९॥

चौपई ॥

केते बिकट सुभट कटि डारे ॥
केते करी हने मतवारे ॥
दल पैदल केते रन घाए ॥
जियत बचे लै प्रान पराए ॥१०॥
खैरी संमी जात भई तहा ॥
ठाढो सैद खान थो जहा ॥
निजु हथियहि जंजीरहि डारे ॥
तही जाइ झारी तरवारै ॥११॥
खुनसि खग खत्रियहि प्रहारियो ॥
प्रथम करी कर कौ कटि डारियो ॥
बहुरि खान कौ तेग चलाई ॥
ग्रीवा बची नाक पर आई ॥१२॥

दोहरा ॥

अटिक नाक मै असि रहियो गयो हाथ ते छूटि ॥
भुजा अंबारी सौ बजी रही बंगुरियै टूटि ॥१३॥

चौपई ॥

तब संमी सैहथी संभारी ॥
महा सत्रु के उर मै मारी ॥
बरछा भए परोए उतारियो ॥
सभन दिखाइ भूम पर मारियो ॥१४॥
बंगु निहार त्रिया पहिचानी ॥
धंन धंन सैद खा बखानी ॥
इन के पेट पुत्र जो ह्वै है ॥

बातन जीति लंक गड़ लैहै ॥१५॥

दोहरा ॥

चीर फौज गज फाधि कै आनि कियो मुहि घाइ ॥
इन कौ इहै इनामु है भरता देहु मिलाइ ॥१६॥
ऐस खग सिर झारि कै बडे पखरियन घाइ ॥
सैन सकल अवगाहि कै निजु पति लयौ छनाइ ॥१७॥

चौपई ॥

सूरबीर बहु भाति संघारे ॥
खेदि खेत ते खान निकारे ॥
निजु भरतहि छुरवाहइ ल्याई ॥
भाति भाति सो बजी बधाई ॥१८॥

CHARITAR १४७ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सैतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥147॥2958॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सहिर कनौज कंचनी रहै ॥
अधिक रूप ता कौ जग कहै ॥
दुरग दत राजा बसि भयो ॥
रानिन डारि ह्रिदै ते दयो ॥१॥
रानिन बैठ मंत्रि यौ कयो ॥
राजा कर हमरे ते गयो ॥
सोऊ जतन आजु मिलि करियै ॥
जा ते या बेस्वा कौ मरियै ॥२॥
अड़िल ॥
बिसन सिंघ कौ राणी लयो बुलाइ कै ॥
काम केल ता सौ किय प्रीतुपजाइ कै ॥
पुनि ता सौ यौ बैन कहे हित मानि कै ॥
हो मोर कारजहि करो हितू मुहि जानि कै ॥३॥
प्रथम बहुत धन या बेस्वा कौ दीजियै ॥
बहुरि राव देखत हित या सौ कीजियै ॥
जब राजा सौ या कौ नेहु तुराइयै ॥
हो बहुरि आपने धाम बोलि इह घाइयै ॥४॥
प्रथम दरबु बेस्वा कह दयो बनाइ कै ॥
पुनि ता सौ रति मानी प्रीतुपजाइ कै ॥
जब ता को न्रिप लीनो सदन बुलाइ कै ॥
हो तौन सभा मै बैठियो सोऊ आइ कै ॥५॥
बिसन सिंघ तिह कहियो कछू मुसकाइ कै ॥
बहुरि सारतै करी न्रिपहि दिखराइ कै ॥
या मूरख न्रिप कौ नहि देसी दीजियै ॥
हो या सौ नेहु बढाइ न या को कीजियै ॥६॥

चौपई ॥

तब रानी न्रिप चलि आई ॥

सकल भेद तिह दियो बताई ॥
तुहि देखत देसी उहि दई ॥
तोरी प्रीति कहा इह भई ॥७॥

दोहरा ॥

तुहि देखत इन उहि दई देसी सुनु महाराज ॥
ता ते तुमरो या भए हित कीनो किह काज ॥८॥
बेस्वा तुम कौ भावई त्याग करियो तै मोहि ॥
और पुरखु ता कौ रुचै लाज न लागत तोहि ॥९॥

चौपई ॥

जौ इन के राखे पति पैयै ॥
तौ बरागिनिन क्यो ग्रिह ल्यैयै ॥
टटूअहि चड़ि जीते संग्रामा ॥
को खरचै ताजी पै दामा ॥१०॥

दोहरा ॥

इन बेस्वनि कौ लाज नहि नहि जानत रस रीति ॥
राव छोरि रंकहि भजहि पैसन की परतीत ॥११॥
अड़िल ॥
तुम सेती बाहर को नेह जतावई ॥
निजु हित वा के संग टका जो ल्यावई ॥
और सदन मौ जात जु याहि बताइयै ॥
हो तब राजा जू इह कह लीक लगाइयै ॥१२॥

दोहरा ॥

इत रानी राजा भए ऐस कहियो समुझाइ ॥
मनुछ पठै उत जार को बेस्वा लई बुलाइ ॥१३॥

चौपई ॥

जब बेस्वा ता के घर गई ॥
रनियहि आनि सखी सुधि दई ॥
निजु पति कौ लै चरिति दिखाइयो ॥
न्रिप ध्रिग चित आपन ठहरायो ॥१४॥

दोहरा ॥

मै जा कौ धनु अमित दै करी आपनी यार ॥
तिन पैसन हित त्याग मुहि अनतै कियो पार ॥१५॥
अड़िल ॥
बेस्वा बाहर आई केल कमाइ कै ॥
राव लरिकवा दए बहुत चिमटाइ कै ॥
केल करत मरि गई तवन दुख पाइयो ॥
हो कैसु पेसनी रानी चरित बनाइयो ॥१६॥

CHARITAR १४८ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठतालीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥148॥2974॥अफजूं॥

चौपई ॥

परबत सिंघ पोसती रहै ॥
पाचिसत्री जा के जग कहै ॥
पोसत पियत कबहूं न अघावै ॥
ता कौ कवन मोल लै प्रयावै ॥१॥
इक दिन टूटि अमल तिह गयो ॥
अधिक दुखी तब ही सो भयो ॥
तब पाचो इसत्रिन सुनि पयो ॥
खोजि रही ग्रिह कछू न लहियो ॥२॥
तब पाचो मिलि मतो बिचारियो ॥
ऊपर खाट दुखित सो डारियो ॥
इन गाडन लै चलै उचारियो ॥
निजु मन यहे त्रियान बिचारियो ॥३॥
अड़िल ॥
डंडकार के बीच जबै त्रिय वै गई ॥
मारग महि गडहा गहिरो निरखत भई ॥
आवत लखे बटऊआ धन लीने घनो ॥
हो कहियो हमारो सौदो अब आछे बनो ॥४॥
सुनहो बीर बटाऊ बात बलोच सभ ॥
पिय गाडन के हेत इहा आई हम सभ अब ॥
या सौ आनि जनाजो अबै सवारियै ॥
हो हमरे गुन औगुन न ह्रिदै बिचारियै ॥५॥
उसटन ते सभ उतरि बलोच तहा गए ॥
नीत खैर की फातया देत ऊहा भए ॥
ता को परे सुमार म्रितक की ज्यों निरख ॥
हो निकट इसथितह भए गड़ा को गोर लखि ॥६॥
लीनी खाट उठाइ म्रितक तिह जानि कै ॥
सकियो न भेद अभेद कछू पहिचानि कै ॥
जब ता पै सभ ही इसथित भे आइ कै ॥
हो डारि फासियन गडहे दए गिराइ कै ॥७॥
एक गाव ते दौरि आफू ल्यावति भई ॥
एक पुकारत ऊच चली कोसक गई ॥
बहु लोगन कौ ल्याइ सु उन कौ घाइ कै ॥
हो कहि फासिन पति हने दए दिखराइ कै ॥८॥

चौपई ॥

पंच इसत्री तिन जुत आई ॥
धनवंती अति ठगन तकाई ॥
पंचन के फासी गहि डारी ॥
हम पाचो रहि गई बिचारी ॥९॥

दोहरा ॥

पति मारे फासिन ठगन साथी रहियो न कोइ ॥
हम बन मै एकल त्रिया दैव कहा गति होइ ॥१०॥

चौपई ॥

काजी कोटवार तह आए ॥

रनसिंगे रन नाद बजाए ॥
कोप ठान यौ बचन उचारे ॥
हम साथी इह ठाउ तिहारे ॥११॥

दोहरा ॥

चारि ऊट मुहरन भरे आठ रुपैयन साथ ॥
पति मूए एऊ गए तौ हम भई अनाथ ॥१२॥

चौपई ॥

तब काजी इह भाति उचारो ॥
त्रिया कछू जिनि सोक बिचारो ॥
हम कौ फारखती लिख दीजै ॥
द्वादस ऊट आपने लीजै ॥१३॥

दोहरा ॥

दीनन की रछ्या करी कौडी गनी कुपाइ ॥
सभ ही दयो बहोरि धन धंन काजिन के राइ ॥१४॥
दुसट अरिसट निवारि कै लीनो पतह बचाइ ॥
भाति भाति सेवा करी हीए हरख उपजाइ ॥१५॥

CHARITAR १४९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनविंजवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥149॥2989॥अफजूं॥*

चौपई ॥

रानी एक नगौरे रहै ॥
गरभवती ता कौ जग कहै ॥
पूत राव के ग्रिह कोऊ नाही ॥
चिंता इहे ताहि मन माही ॥१॥
गरभवती आपहि ठहिरायो ॥
पूत आन को आन जिवायो ॥
सभ कोऊ पूत राव को मानै ॥
ता कौ भेद न कोऊ जानै ॥२॥
अड़िल ॥
दोइ पुत्र जब ताहि बिधातै पुन दए ॥
रूपवंत सुभ सील जत ब्रत होत भे ॥
तब उन दुहूं पालकन लै कै बिखु दई ॥
हो निजु पूतन कह राज पकावत तह भई ॥३॥
भाति भाति सौ रोदन कियो पुकारि कै ॥
निरखा तिन की ओर सिरोकचुपारि कै ॥
प्राननाथ ऊ आए कहियो न सोक करि ॥
हो अकथ कथा की कथा जानि जिय धीर धरि ॥४॥

दोहरा ॥

जियत तिहारे पूत दो सदा रहै जग माहि ॥
उन को सोक न कीजियै जियत अजौ तव नाह ॥५॥

चौपई ॥

जो कोऊ त्रिया तहा चलि आवै ॥
यहै आहि परबोध जतावै ॥
जियौ चारि जुग पूत तिहारे ॥
दोऊअन को नहि सोक बिचारे ॥६॥

CHARITAR १५० — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पंजाह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥150॥2995॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

कुपित सिंघ राजा रहै राजौरी के माहि ॥
सदा सील सु ताहि अति रोह तवन मै नाहि ॥१॥

चौपई ॥

त्रिया गुमान मती तिह जनियत ॥
अति सुंदरि तिहु लोक बखनियत ॥
पति के संग नेह तिह भारो ॥
वा को रहत प्रान ते प्यारो ॥२॥
जब राजा रन काज सिधारै ॥
तब रानी इह भाति उचारै ॥
हौ नहि तुमै छोरि ग्रिह रहिहो ॥
प्राननाथ के चरनन गहिहों ॥३॥
जब न्रिप को रन बनि कहूं आवै ॥
त्रिय आगै ह्वै खड़ग बजावै ॥
बैरिन जीति बहुरि घर आवै ॥
भाति भाति के भोग कमावै ॥४॥
इक दिन जुध न्रिपहि बनि आयो ॥
चड़ि गै पै त्रिय सहित सिधायो ॥
जातहि परियो भेर रन भारी ॥
नाचे सूरबीर हंकारी ॥५॥
अड़िल ॥
भाति भाति रन सुभट संघारे कोप करि ॥
भाति भाति रथ बाज बिदारे सर प्रहरि ॥
निरखि जुध को सूर परे अरराइ कै ॥
हो मंदल तूर म्रिदंग मुचंग बजाइ कै ॥६॥
पठे पखरियन कोप अधिक जिय मै जग्यो ॥
सजे संजोअन सैन दुहूं दिसि उमग्रयो ॥
बजे जुझऊआ नाद परे अरराइ कै ॥
हो टूक टूक ह्वै जुझे सुभट समुहाइ कै ॥७॥
चटपट सुभट बिकटि कटि कटि के भू परै ॥
खंडि खंडि किते अखंडियन खहि खगन मरै ॥
टूक टूक ह्वै गिरे न मोरै नैक मन ॥
हो प्रलै काल सो कियो बिधातै बहुरि जनु ॥८॥
जब रानी कै सहित राव जू रिसि भरै ॥
दोऊ कै बर कठिन कमानन कर धरै ॥
दछिन बिसिख दिखाइ बाम अरि मारही ॥
हो एक घाइ कै संग चूर करि डारही ॥९॥

जनुक जेठ के मास अदित अध दिन चड़ियो ॥
जनुक करारन छोरि नीर नायक हड़ियो ॥
बज्र बिसिख असि हन्यो सु सैन उचाइयो ॥
हो जबै बिसुन लछमी के सहत रिसाइयो ॥१०॥
रानी जा तन बिसिख प्रहारै कोप करि ॥
तछिन म्रितक ह्वै परई सूर सु भूमि पर ॥
फूल दए बरखाइ गगन ते देवतन ॥
हो रानी कौ रन हेर उचारै धंन्य धंनि ॥११॥
त्रिया सहित न्रिप लरियो अधिक रिस खाइ कै ॥
तब ही लगी तुफंग ह्रिदै मै आइ कै ॥
गिरियो अंबारी मध्य मूरछना होइ करि ॥
हो तब त्रिय लियो उचाइ नाथ दुहूं भुजनि भरि ॥१२॥
तवन अंबारी संग न्रिपहि बाधत भई ॥
निजु कर करहि उचाइ इसारति दल दई ॥
जियत न्रिपति लखि सुभट सभे धावत भए ॥
हो चित्र बचित्र अयोधन तिह ठा करत भे ॥१३॥
पीसि पीसि करि दात सूरमा रिसि भरे ॥
टूक टूक ह्वै परे तऊ पगु न टरे ॥
तौन सैन संग राजा लीने घाइ कै ॥
हो जीत नगारे बजे अधिक हरिखाइ कै ॥१४॥
तब रानी निजु करन बैरियहि मारि कै ॥
निजु सुत दीनो राज सु घरी बिचारि कै ॥
करि कै बडो अडंबर आपु जरन चली ॥
हो तबै गगन ते बानी ताहि भई भली ॥१५॥
क्रिपा सिंधु जू क्रिपा अधिक तुम पर करी ॥
निजु नायक के हेतु बहुत बिधि तै लरी ॥
ता ते अपनौ भरता लेहु जियाइ कै ॥
हो बहुरि राज कौ करो हरख उपजाइ कै ॥१६॥

दोहरा ॥

सत्रु नाथ हनि जुध करि लीनो पतिहि जियाइ ॥
बहुरि राज अपनौ करियो नाथ सहित सुख पाइ ॥१७॥

CHARITAR १५१ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकयावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥151॥3012॥अफजूं॥*

चित्र सिंघ बाच ॥

दोहरा ॥

जैसो त्रिय इन रन कियो तोसो करै न कोइ ॥
पाछे भयो न अब सुन्यो आगे कबहूं न होइ ॥१॥

चौपई ॥

तब मंत्री इह भाति उचारी ॥
सुनो राज तुम बात हमारी ॥
बिसुन साथ जंभासुर लरियो ॥
ता कौ प्रान लछिमी हरियो ॥२॥
ता ते होत इंद्र भै भीत्रयो ॥

चौदह भवन नरह तनि जीत्यो ॥
सोऊ असुर इह पर चड़ि आयो ॥
तुमल जुध हरि साथ मचायो ॥३॥
अड़िल ॥
भाति भाति ता सो रन इंद्र मचाइयो ॥
सूर चंद्र थकि रहे न कछू बसाइयो ॥
देव दैत ह्वै म्रितक बिराजे ताहि रन ॥
हो जनु अलिकिस के बाग बिराजै मालि जन ॥४॥

भुजंग छंद ॥

लए बीर धीरे महा कोपि ढूके ॥
चहूं ओर गाजे हठी इंद्र जू के ॥
उते दैत बाके इतै देव रूरे ॥
हटे न हठीले महा रोस पूरे ॥५॥
दुहूं ओर बाजंत्र आनेक बाजे ॥
बधे बीर बाने दुहूं ओर गाजे ॥
मचियो जुध गाड़ो परी मार भारी ॥
बहै तीर तरवारि काती कटारी ॥६॥
महा कोप कै कै बली दैत धाए ॥
हठिन कोप कै ससत्र असत्रै चलाए ॥
बधे कौच काती जबै जंभ गजियो ॥
तबै छाडि कै खेत देवेस भजियो ॥७॥

चौपई ॥

भाजत इंद्र जात भयो तहा ॥
लए लछमी हरि थिर जहा ॥
भाति भाति ह्वै दुखित पुकारे ॥
तुमरे जियत नाथ हम हारे ॥८॥
जगपति सूल कोप तब आयो ॥
लछिमी कुअरि लै संग सिधायो ॥
बाधि सनधि बिराजियो तहा ॥
गाजत बीर जंभ बहु जहा ॥९॥
अड़िल ॥
बीस बान बिसुनाथ चलाए कोप करि ॥
लगे जंभ के देह गए उहि घानि करि ॥
भए स्रोन बिसिखोतम अधिक बिराजही ॥
हो जिन की प्रभा बिलोकि तछजा लाजही ॥१०॥

दोहरा ॥

लछिम कुमारि ऐसो कहियो सुनहु बिसन जू बैन ॥
या कौ हौहूं जीति कै पठऊ जम कै ऐन ॥११॥
अड़िल ॥
बिसन ठाढि कै लछमि कुअरि कर धनुख लिय ॥
चित्र बचित्र अयोधन ता सो ऐस किय ॥
अमित रूप दिखराइ मोहि अरि कौ लियो ॥
हो बहु घाइन के संग ताहि घायल कियो ॥१२॥
मिसही कहियो न हनु रे हरि इह मार है ॥
बहुत जुध करि या सौ बहुरि संघारि है ॥
जब पाछे की ओर सु सत्रु निहारियो ॥

हो दयो सुदरसन छाड मूंडि कट डारियो ॥१३॥

दोहरा ॥

लछमि कुअरि जब जंभ सो ऐसो कियो चरित्र ॥
मारि सुदरसन सो लयो सुखित कीए हरि मित्र ॥१४॥

CHARITAR १५२ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥152॥3026॥अफजूं॥*

चौपई ॥

नाज मती अबला जग कहै ॥
अटकी एक न्रिपत पर रहै ॥
बाहू सिंघ जिह जगत बखानै ॥
चौदह लोक आनि कौ माने ॥१॥
न्रिप की प्रभा हेरि छकि रही ॥
केल करै मो सौ चित चही ॥
भाति भाति उपचार बनाए ॥
कै सिहु राव हाथ नहि आए ॥२॥
जब त्रिय सोइ सदन मै जावै ॥
न्रिप की प्रभा चित मै आवै ॥
चकि चकि उठै नींद नहि परै ॥
मीत मिलन की चिंता करै ॥३॥

दोहरा ॥

वै सम्रथ असम्रथ मै वै सनाथ मै अनाथ ॥
जतन कवन सो कीजियै आवै जा ते हाथ ॥४॥

चौपई ॥

कासी बिखै करवतहि लैहो ॥
पिय कारन अपनो जिय दैहो ॥
मन भावत प्रीतम जौ पाऊ ॥
बार अनेक बजार बिकाऊ ॥५॥

दोहरा ॥

कहा करों कैसे बचों लगी बिरह की भाह ॥
रुचि उन की हम को घनी हमरी उनै न चाह ॥६॥
नाज मती तब आपनी लीनी सखी बुलाइ ॥
बाहू सिंघ राजा भए कहो संदेसो जाइ ॥७॥
बचन सुनत ता कउ सखी तहा पहूंची आइ ॥
नाज मती जैसे कहियो त्यों तिन कहियो सुनाइ ॥८॥
अड़िल ॥
मै छबि तुमरी निरख नाथ अटकत भई ॥
बिरह समुंद के बीच बूडि सिर लौ गई ॥
एक बार करि क्रिपा हमारे आइयै ॥
हो मन भावत को हम सो भोग कमाइयै ॥९॥

चौपई ॥

जब चेरी अस जाइ उचारी ॥
तब राजै यौ हियै बिचारी ॥
सोऊ बात इह त्रियहि कहिजै ॥
जा ते आप धरम जुत रहिजै ॥१०॥

अड़िल ॥

दोइ सत्रु हमरिन ते एक संघारियै ॥
बिना घाइ के किये दूसरो मारियै ॥
तब मै तुम को अपने सदन बुलाइ हों ॥
हो मन भावत के तुम सो भोग कमाइ हों ॥११॥
जाइ सहचरी कहियो त्रिया सुनि पाइ कै ॥
प्रीत राव की बधी उठी मरराइ कै ॥
ह्वै कै बाज अरूड़ भेख नर धारि कै ॥
हो न्रिप के अरि पै गई चरित्र बिचारि कै ॥१२॥
सुनो राव जू मो को चाकर राखियै ॥
तह को करो मुहिंम जहा को भाखियै ॥
प्रान लेत लौ लरों न रन ते हारिहों ॥
हौ बिनु अरि मारै खेत न बाजी टारिहो ॥१३॥
ता को सूर निहारि न्रिपति चाकर कियो ॥
ग्रिह ते काढि खजानो ता को बहु दियो ॥
दूजो राव बुलाइ सु बीर बुलाइ कै ॥
हो बाहू सिंघ पै चड़ियो महा रिसि खाइ कै ॥१४॥

चौपई ॥

नाज मती इह भाति उचारी ॥
सुनो राव तुम बात हमारी ॥
सभ बीरन को बोलि पठैयै ॥
सभ के सर पर नाम डरैयै ॥१५॥

दोहरा ॥

जब गाड़ो रन परैगो बहै तीर तरवारि ॥
बिना नाम सर पै लिखै सकि है कवन बिचारि ॥१६॥

चौपई ॥

नाज मती जब ऐस बखान्यो ॥
सत्य सत्य राजे करि मान्यो ॥
सकल सूरमा बोलि पठाए ॥
सभन सरन पर नाम लिखाए ॥१७॥

दोहरा ॥

सर पर नाम लिखाइ कै रन कह चड़े रिसाइ ॥
जा को सर जिह लागि है सो भट चीनो जाइ ॥१८॥
जुध जबै गाड़ो परियो घात बाल तिन पाइ ॥
उहि राजा को बान लै इह न्रिप हन्यो रिसाइ ॥१९॥

चौपई ॥

लागत बान राव रिसि भयो ॥

सर पर नाम लिखियो लखि लयो ॥
मुहि इन हन्यो न्रिपति सोऊ मारियो ॥
बहुरि आपहूं स्वरग सिधारियो ॥२०॥

दोहरा ॥

नाज मती इह चरित्र सो दुहूं न्रिपन कौ घाइ ॥
बहुर रैबारी राव सों आनि दई सुख पाइ ॥२१॥

चौपई ॥

न्रिप मै तुमरे काज सवारे ॥
दोनो सत्रु तिहारे मारे ॥
अब मो को तुम धाम बुलावो ॥
काम भोग मुहि साथ कमावो ॥२२॥

दोहरा ॥

तब राजै ता कौ तुरत लीनो सदन बुलाइ ॥
काम भोग ता सो कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥२३॥
एक न्रिपति निजु कर हन्यो ता ते दुतिय हनाइ ॥
रति मानी इह न्रिप भए नाज मती सुख पाइ ॥२४॥

चौपई ॥

नाज मती न्रिप लै घर राखी ॥
त्रिय कीनी रवि ससि करि साखी ॥
राक हुती रानी करि डारियो ॥
त्रिया चरित्र न जात बिचारियो ॥२५॥

CHARITAR १५३ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ त्रिपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥153॥3051॥अफजूं॥

दोहरा ॥

स्यालकोट के देस मै दरप कला इक बाम ॥
तरुन देह ता कौ रहै अधिक सतावत काम ॥१॥
दानी राइ तहा हुतो एक साह के पूत ॥
सूरति सीरति के बिखै बिधनै कियो सपूत ॥२॥
दरप कला इह साह की दुहित रहै अपार ॥
हियै बिचारियो साह के सुत सौ रमौ सुधार ॥३॥

चौपई ॥

बोलि साहु को पूत मंगायो ॥
काम केल तिह संग कमायो ॥
दिवस भए ग्रिह देत पठाई ॥
रैनि भए पुनि लेत बुलाई ॥४॥
ऐसी प्रीति दुहनि मै भई ॥
लोक लाज सभ ही तजि दई ॥
जानुक कहूं ब्याह करि आनी ॥

तिन पर नारि ऐस पहिचानी ॥५॥
अड़िल ॥
इसक मुसक खासी अरु खुरक बखानियै ॥
खून खैर मदपान सु बहुरि प्रमानियै ॥
कस कोऊ करई सात छपाए छपत नहि ॥
हो होवत प्रगट निदान सु सारी स्रिसटि महि ॥६॥

दोहरा ॥

दरप कला सुत साहु के ऊपर रही बिकाइ ॥
रैनि दिवस ता सौ रमै सभहिन सुनी बनाइ ॥७॥
दरप कला जब साहु कौ लीनो पूत बुलाइ ॥
आन पियादन गहि लियो रहियो न कछू उपाइ ॥८॥

चौपई ॥

दरप कला इह भात उचारी ॥
सुनो मीत तुम बात हमारी ॥
सोना बोवत मुहि तुम कहियहु ॥
यौ कहि नैन नीच करि रहियहु ॥९॥
न्रिप पहि बाध ताहि लै गए ॥
ते वै बैन बखानत भए ॥
एक बात मै तुमै दिखाऊ ॥
तुम ते कहो कहा तब पाऊां ॥१०॥
जा पै बैठे मुहि गहि आनो ॥
उन मो सो इह भाति बखानो ॥
जौ मै कंचन बीजि दिखाऊ ॥
तब मै कहो कहा बर पाऊ ॥११॥
जद यौ बचन राव सुनि पायो ॥
दरप कला कौ बोलि पठायो ॥
ता को एक धाम मै राखियो ॥
कंचन के बीजन कह भाखियो ॥१२॥
मोहि इह एक सदन मै राखो ॥
भली बुरी कछु बात न भाखो ॥
जब मै मास इकादस लहिहौ ॥
तुम सौ आइ आप ही कहिहौ ॥१३॥
जब वै दोऊ एक ग्रिह राखै ॥
तब त्रिय यौ ता सौ बच भाखै ॥
मो सौ भोग मीत अब करियै ॥
या चिंत ते नैकु न डरियै ॥१४॥

दोहरा ॥

पकरि मीत को आपने ऊपर लये चराइ ॥
ता सौ रति मानत भई लपटि लपटि सुख पाइ ॥१५॥
कालि किनी जान्यो नही आजु रमौ तव संग ॥
लाज न काहू की करो मो तन बढियो अनंग ॥१६॥
अड़िल ॥
दस मासन रति करी हरख उपजाइ कै ॥
आसन चुंबन अनिक किये लपटाइ कै ॥
जब गियारवो मास पहूच्यौ आइ करि ॥
हो दरप कला कहियो न्रिपति सौ जाइ करि ॥१७॥

कंचन बोवन समै पहूच्यो आइ कै ॥
सभ रानी जुत न्रिप कौ लियो बुलाइ कै ॥
पुर बासी जन सभे तमासा कौ गए ॥
हो जह असथित वह त्रिया तहा ही जात भे ॥१८॥
जो त्रिय पुरख न बिनसियो ताहि बुलाइयै ॥
वा कै कर दै ह्यां कलधौत बिजाइयै ॥
जो बिनसियो नर त्रिय इह हाथ छुवाइ है ॥
हो उगै न कंचन नैक दोस मुहि आइ है ॥१९॥
तब राजै सभहिन यौ कहियो सुनाइ कै ॥
जो बिनसियो नहि होइ सु बीजहु जाइ कै ॥
सुनत बचन त्रिय नर सभ ही चक्रित भए ॥
हो सोनो बीजन काज न तित कौ जात भे ॥२०॥

चौपई ॥

दरप कला इह भाति उचारी ॥
जो राजा सभ त्रिया तुहारी ॥
तिन सभहिन इह ठौर बुलावहु ॥
कंचन दे करि हाथ बिजावहु ॥२१॥

दोहरा ॥

सभ रानी जेतक हुती ठटकि रही मन माहि ॥
कछु चरित्र इह ठानि रखि कंचन बोयो नाहि ॥२२॥

चौपई ॥

दरप कला पुन ऐस उचारी ॥
जो तुम रावहु न बिभचारी ॥
तौ तुम आइ कंचनहि बोवहु ॥
हमरो सकल असुख कह खोवहु ॥२३॥
अड़िल ॥
त्रिया पुरख सुनि बैन मूंदि मुख रहत भे ॥
कंचन बोवन काज न टरि तित कौ गए ॥
दरप कला तब बचन कहे मुसकाइ कै ॥
हो सुनो राव जू बचन हमारो आइ कै ॥२४॥
पुरख इसत्रिन कौ जो न्रिप प्रथम संघारियै ॥
तौ कर लै के खड़ग दुहुन हुम मारियै ॥
बिनसे बिना न रहियो कोऊ जगत मै ॥
हो छमा करो अपराधु जु कीनो आजु मै ॥२५॥

दोहरा ॥

जब रितु राज समै बिखै बेग पवन को होइ ॥
ऊच नीच कापे बिना रहियो बिरछ न कोइ ॥२६॥
सुनि राजा ऐसो बचन कीनो तिनै निहाल ॥
साहु सुता सुत साहु को देत भयो ततकाल ॥२७॥
अड़िल ॥
इह छल सौ त्रिय छैल सभन कौ छलि गई ॥
केल न्रिपति के धाम मास दस करत भी ॥
बहुर सभन को ऐसो चरित्र दिखाइ करि ॥
हो मन भावत को मीत बरियो सुख पाइ करि ॥२८॥

CHARITAR १५४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौवनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥154॥3079॥अफजूं॥

चौपई ॥

साहिजहा की एक बर नारी ॥
प्रानमती तिह नाम उचारी ॥
तिनिक साहु को पूत बिलोकियो ॥
तब ही आनि कामु तिह रोकियो ॥१॥
अड़िल ॥
पठै सहिचरी ता को लियो बुलाइ कै ॥
लपटि लपटि रति करी हरख उपजाइ कै ॥
केल करत दोहूं बचन कहे मुसकाइ कै ॥
हो चौरासी आसन लीने सुख पाइ कै ॥२॥

दोहरा ॥

बहुत दिवस ता सो रमी पुनि यौ कहियो बनाइ ॥
याहि मारि करि डारियै जिनि कोऊ लखि जाइ ॥३॥

चौपई ॥

प्रानमती आग्या तिह दई ॥
मारन सखी ताहि लै गई ॥
आपु भोग तिह साथ कमायो ॥
पुनि ता सो इह भाति सुनायो ॥४॥
मो सो भोग भलो तै दियो ॥
मोहि चित हमरो कौ लियो ॥
तो पर चोट मै नही डारो ॥
एक चरित तन तुमै निकारो ॥५॥
अड़िल ॥
अरध सूर जब चड़्यो सु द्रिगन निहारिहौ ॥
तब तोरो गहि हाथ नदी मै डारि हौ ॥
तबै हाथ अर पाव अधिक तुम मारियो ॥
हो डूबत डूबत कहि कै ऊच पुकारियो ॥६॥
तब सरता के बिखे ताहि गहि डारियो ॥
हाथ पाव बहु मारि सु जार पुकारियो ॥
डूबत तिह लखि लोग पहूचै आइ कै ॥
हो हाथो हाथ उबारियो लयो बचाइ कै ॥७॥

CHARITAR १५५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥155॥3086॥अफजूं॥

चौपई ॥

मद्र देस चौधरी भणिजै ॥
रोसन सिंघ तिह नाम कहिजै ॥
कंद्रप कला बाल तिह सोहै ॥

खग म्रिग जछ भुजंगन मोहै ॥१॥
ता के धाम अंनु धनु भारी ॥
निति उठि करै नाथ रखवारी ॥
जौ अतिथ मागन कह आवै ॥
मुख मागत बरु लै घरु जावै ॥२॥
अड़िल ॥
तिह ठा इक अतिथ पहूंच्यो आइ कै ॥
लखि तिह छबि झख केतु रहै उरझाइ कै ॥
अप्रमान अप्रतिम सरूप बिधनै दयो ॥
हो भूत भविख भवान न को ऐसौ भयो ॥३॥
कंद्रप कला हेरि ता की छब बसि भई ॥
बिरह नदी के बीच डूबि सिगरी गई ॥
पठै सहचरी तिह ग्रिह लियो बुलाइ कै ॥
हो भाति भाति रति करी हरख उपजाइ कै ॥४॥
पाच चौतरो छोरि चौधरी आइयो ॥
कुठिआ मो चौध्रनी ताहि छपाइयो ॥
बहुरि उचारे बैन मूड़ सौ कोपि कै ॥
हो ता को सिर कै बिखै पनहिया सौ कु दै ॥५॥
तुमरे राज न धरै सुयंबर अंग मै ॥
आछो सदन सवारो दयो न दरब तै ॥
कछु न कीनो भोग जगत मै आइ कै ॥
बिप्रन दियो सु कछु न दान बुलाइ कै ॥६॥

चौपई ॥

तब मूरख ऐसी बिधि भाखियो ॥
मै तुम ते कछु दरबु न राखियो ॥
जा कौ रुचै तिसी को दीजै ॥
मोरी कछू कानि नहि कीजै ॥७॥
अड़िल ॥
ताम्र दान ते दुगन रुकम कौ जानीयै ॥
रुकम दान तै चौगुन स्वरनहिं मानीयै ॥
बडो धान को धन तै दान प्रमानही ॥
हो चारि सु खट दस आठ पुरान बखानही ॥८॥

दोहरा ॥

इह जो कोठी अंन जुत दीजै दिजन बुलाइ ॥
इहै कहियो मुरि मानियै सुनु चौध्रिन के राइ ॥९॥
वहै भिटौअन बामनी लीनी निकट बुलाइ ॥
जार सहित तिह नाज की कुठिया दई उठाइ ॥१०॥

चौपई ॥

मूरख बात न कछु लखि लई ॥
किह बिधि नारि ताहि छलि गई ॥
जान्यो दान आजु त्रिय कीनो ॥
ता कौ कछू चरित्र न चीनो ॥११॥
दान भिटौअन को जब दियो ॥
कछु जड़ भेद समझि नहि लियो ॥
तह ते काढि अंन तिन खायो ॥
तवन जार को घर पहुचायो ॥१२॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥156॥3098॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

बिद्रभ देस भीतर रहै भीमसैन न्रिप एक ॥
है गै रथ हीरन जरे झूलहि द्वार अनेक ॥१॥
दमवंती ता की सुता जा को रूप अपार ॥
देव अदेव गिरै धरनि तिस की प्रभा निहारि ॥२॥
अड़िल ॥
काम देव तिह चहै सु क्योहूं पाइयै ॥
इंद्र चंद्र कहै ताहि ब्याहि लै आइयै ॥
कारतकेअ तिह ब्याहन कियो निहारि करि ॥
हो महा रुद्र बन बसे न आए पलटि घरि ॥३॥
नैन हरन के हरे बैन पिक के हरि लीने ॥
हरि दामनि की दिपति दसन दारिम बस कीने ॥
कीर नासिका हरी कदलि जंघन ते हारे ॥
हो छपे जलज जल माहि आंखि लखि लजत तिहारे ॥४॥

दोहरा ॥

ता की प्रभा जहान मै प्रचुर भई चहूं देस ॥
सभ ब्याहन ता कौ चहै सेस सुरेस लुकेस ॥५॥
सुनि पछिन के बकत्र ते तिय की सुंदर हाल ॥
मान सरोवर छोडि तिह आवत भए मराल ॥६॥

चौपई ॥

दमवंती ते हंस निहारे ॥
रूप मान चित माझ बिचारे ॥
सखियन सहित आप उठ धाई ॥
एक हंस तिन ते गहि ल्याई ॥७॥
हंस बाच ॥
सुनु रानी इक कथा प्रकासौ ॥
तुमरे जिय को भरम बिनासौ ॥
नल राजा दछिन इक रहई ॥
अति सुंदर ता को जग कहई ॥८॥

दोहरा ॥

तेजमान सुंदर धनी ताहि उचारत लोग ॥
ता को बोलि बिवाहियै वहु बर तुमरो जोग ॥९॥

चौपई ॥

हम है मान सरोवर बासी ॥
हंस जोनि दीनी अबिनासी ॥
देस देस के चरित बिचारै ॥
राव रंक की प्रभा निहारै ॥१०॥
अड़िल ॥

धनद धनी हम लहियो तपी इक रुद्र निहारियो ॥
इंद्र राज इक लहियो सूर बिसुइसहि बिचारियो ॥
लोक चत्रदस बिखै तुही सुंदरी निहारी ॥
हो रूपमान नल राज ताहि तुम बरो प्यारी ॥११॥

दोहरा ॥

दमवंती ए बचन सुनि हंसहि दयो उडाइ ॥
लिखि पतिया कर मै दई कहियहु नल प्रति जाइ ॥१२॥
अड़िल ॥
बोलि पिता कौ कालि सुयंब्र बनाइ हौ ॥
बडे बडे राजन को बोलि पठाइ हौ ॥
पतिया के बाचत तुम ह्यां उठि आइयै ॥
हो निजु नारी करि मोहि संग लै जाइयै ॥१३॥
हंस उहा ते उडियो तहा आवत भयो ॥
दमवंत्रयहि संदेस न्रिपति नल कौ दयो ॥
नल पतिया कौ रहियो ह्रिदै सो लाइ कै ॥
हो जोरि सैन तित चलियो म्रिदंग बजाइ कै ॥१४॥

दोहरा ॥

दूत पहूच्यो मीत को पतिया लीने संग ॥
आखै अति निरमल भई निरखत वा के अंग ॥१५॥
सुनि राजा बच हंस के मन मै मोद बढाइ ॥
बिद्रभ देस कौ उठि चलियो ढोल म्रिदंग बजाइ ॥१६॥
अड़िल ॥
देवऊ पहुचे आइ दैत आवत भए ॥
गंध्रब जच्छ भुजंग सभै चलि तह गए ॥
इंद्र चंद्र अर सूरज पहुचे आइ करि ॥
हो धनधिईस जलि राव बदित्र बजाइ करि ॥१७॥
नल ही को धरि रूप सकल चलि तह गए ॥
नल को करि हरि दूत पठावत तह भए ॥
सुनि न्रिप बर ए बचन चलियो तह धाइ करि ॥
हो किनी न हटकियो ताहि पहूच्यो जाइ करि ॥१८॥
दमवंती छबि निरखि अधिक रीझत भई ॥
जु कछु हंस कहियो सु सभ साची भई ॥
जा दिन मै या को पति करि करि पाइ हौ ॥
हो तदिन घरी के सखी सहित बलि जाइ हौ ॥१९॥
मन मै इहै दमवंती मंत्र बिचारियो ॥
सभहिन के बैठे इह भाति उचारियो ॥
सुनो सकल जन इहै भीमजा प्रन करियो ॥
हो जो तुम मै नल राव वहै करि पति बरियो ॥२०॥
फूक बदन ह्वै न्रिपत सकल घर कौ गए ॥
कलिजुगादि जे हुते दुखित चित मै भए ॥
नलहि भीमजा बरी अधिक सुख पाइ कै ॥
हो भाति भाति बादित्र अनेक बजाइ कै ॥२१॥
धरि पुहकरि को रूप तहा कलिजुग गयो ॥
जब ता कौ नल ब्याहि सदन ल्यावत भयो ॥
खेलि जूप बहु भातिन ताहि हराइयो ॥
हो राज पाट नल बन कौ जीति पठाइयो ॥२२॥
राज पाट नल जब इह भाति हराइयो ॥

बन मै अति दुखु पाइ अजुधिआ आइयो ॥
बिछुरे पति के भीमसुता बिरहिन भई ॥
जो जिह मारग गे नाथ तिसी मारग गई ॥२३॥
भीम सुता बिन नाथ अधिक दुख पाइयो ॥
कह लगि करौ बख्यान न जात बताइयो ॥
नल राज के बिरहि बाल बिरहिनि भई ॥
हो सहरि चंदेरी माझ वहै आवत भई ॥२४॥
भीमसैन तिन हित जन बहु पठवत भए ॥
दमवंती कह खोजि बहुरि ग्रिह लै गए ॥
वहै जु इह लै गयो दिज बहुरि पठाइयो ॥
हो खोजत खोजत देस अजुध्या आइयो ॥२५॥
हेरि हेरि बहु लोग सु याहि निहारियो ॥
दमवंती को मुख ते नाम उचारियो ॥
कुसल ताहि इह पूछियो नैनन नीर भरि ॥
हो तब दिज गयो पछानि इहै नल न्रिपति बर ॥२६॥
जाइ तिनै सुधि दई न्रिपति नल पाइयो ॥
तब दमवंती बहुरि सुयंब्र बनाइयो ॥
सुनि राजा ए बैन सकल चलि तह गए ॥
हो रथ पै चड़ि नल राज तहा आवत भए ॥२७॥

दोहरा ॥

न्रिप नल कौ रथ पै चड़े सभ जन गए पछानि ॥
दमवंती पुनि तिह बरियो इह चरित्र कह ठानि ॥२८॥

चौपई ॥

लै ता को राजा घर आए ॥
खेलि जूप पुनि सत्रु हराए ॥
जीति राज आपनौ पुनि लीनो ॥
भाति भाति दुहूंअन सुख कीनो ॥२९॥

दोहरा ॥

मै जु कथा संछेपते या की कही बनाइ ॥
या ते किय बिसथार नहि मति पुसतक बढ जाइ ॥३०॥
दमवंती इह चरित सो पुनि पति बरियो बनाइ ॥
सभ ते जग जूआ बुरो कोऊ न खेलहु राइ ॥३१॥

CHARITAR १५७ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥157॥3129॥अफजूं॥

चौपई ॥

चौड़ भरथ संन्यासी रहै ॥
रंडीगिर दुतियै जग कहै ॥
बालक राम एक बैरागी ॥
तिन सौ रहै सपरधा लागी ॥१॥
एक दिवस तिन परी लराई ॥
कुतकन सेती मारि मचाई ॥

कंठी कहूं जटन के जूटे ॥
खपर सौ खपर बहु फूटे ॥२॥
गिरि गिरि कहूं टोपियै परी ॥
ढेर जटन ह्वै गए उपरी ॥
लात मुसट के करै प्रहारा ॥
जन करि चोट परै घरियारा ॥३॥

दोहरा ॥

सभ कापै कुतका बजै पनही बहै अनेक ॥
सभ ही के फूटे बदन साबत रहियो न एक ॥४॥

चौपई ॥

कंठन की कंठी बहु टूटी ॥
मारी जटा लाठियन छूटी ॥
किसी नखन के घाइ बिराजैं ॥
जनु करि चड़े चंद्रमा राजैं ॥५॥
केस अकेस होत कही भए ॥
किते हने नसि किन मर गए ॥
काटि काटि दातन कोऊ खाही ॥
ऐसो कहूं जुध भयो नाही ॥६॥
ऐसी मारि जूतियन परी ॥
जटा न किसहूं सीस उबरी ॥
किसू कंठ कंठी नहि रही ॥
बालक राम पन्नही तब गही ॥७॥
एक संन्यासी के सिर झारी ॥
दूजे के मुख ऊपर मारी ॥
स्रौनत बहियो बदन जब फूटियो ॥
सावन जान पनारो छूटियो ॥८॥
तब सभ ही संन्यासी धाए ॥
गहि गहि हाथ जूतियै आए ॥
चौड़ भरथ रंडीगिर दौरे ॥
लै लै ढोव चेलका औरे ॥९॥
बालक राम घेरि कै लियो ॥
जूतन साथ दिवानो कियो ॥
घूमि भूमि के ऊपर छरियो ॥
जनु करि बीजु मुनारा परियो ॥१०॥

दोहरा ॥

सभ मुंडिया क्रुधित भए भाजत भयो न एक ॥
चौड़ भरथ गिर राड पै कुतका हने अनेक ॥११॥
संन्यासी कोपित भए लगे मुतहरी घाइ ॥
लात मुसट जूतिन भए मुंडिया दए गिराइ ॥१२॥
अड़िल ॥
पकरि मुतहरी पुनि सकोप मुंडिया भए ॥
फरूआ लाठी सभे लए उदित भए ॥
काटि काटि कै अंग संन्यासिन खावही ॥
हो दस नामन को लै लै नाम गिरावही ॥१३॥
तब संन्यासी धाइ धाइ तिन काटही ॥
तोरि तोरि कंठिन ते कंठी साटही ॥

ऐच ऐच टागन ते गह गह डारही ॥
दो दुहूं हाथ भे खैंचि मुतहरी मारही ॥१४॥
मुंडिया ताब्र कला पै आए ॥
हम सभ संन्यासीन दुखाए ॥
जब रानी ऐसे सुन लई ॥
दतात्रैन बुलावत भई ॥१५॥
संन्यासी दतात्रै मानै ॥
रामानंद बैराग प्रमानै ॥
ते तुम कहै वहै चित धरियहु ॥
मेरी कही चित मै करियहु ॥१६॥
एक दिवस हमे ग्रिह सोवहु ॥
सगरी निसा जागतहि खोवहु ॥
जो तुम कहै लरौ तौ लरियहु ॥
नातर बैर भाव नहि करियहु ॥१७॥
जुदा जुदा घर दोऊ सुवाए ॥
अरध रात्रि भे बैन सुनाए ॥
दत रामानंद कहै सु करियहु ॥
बहुरो कोप ठानि नहि लरियहु ॥१८॥

दोहरा ॥

छलि छैली इह बिधि गई ऐसो चरित सवारि ॥
सिमरि गुरन के बचन द्वै बहुरि न कीनी रारि ॥१९॥

CHARITAR १५८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥158॥3148॥अफजूं॥*

चौपई ॥

राज सिंघ राजा इक रहई ॥
बीर कला रानी जग कहई ॥
ता सौ नेह न्रिपति को भारो ॥
जानत भेद देस इह सारो ॥१॥
अड़िल ॥
और रानियन कबहूं न न्रिपति बुलावई ॥
भूलि न कबहूं तिन कौ सदन सुहावई ॥
इह चिंता चित माझ चंचला सभ धरै ॥
हो जंत्र मंत्र अरु तंत्र राव सौ सभ करै ॥२॥

चौपई ॥

जंत्र मंत्र सभ ही करि हारे ॥
कैसे हूं परे हाथ नहि प्यारे ॥
एक सखी इह भात उचारो ॥
सुनु रानी तै बचन हमारो ॥३॥
जौ उन सौ मै प्रीति तुराऊ ॥
तौ तुम ते कहु मै का पाऊ ॥
बीर कलहि न्रिप मुख न दिखावै ॥
तुमरे पासि रैनि दिन आवै ॥४॥
यौ कहि जात तहा ते भई ॥

न्रिप बर के मंदिर महि गई ॥
पति त्रिय के कानन महि परी ॥
मुख ते कछू न बात उचरी ॥५॥
न्रिप त्रिय कहियो तोहि का कहियो ॥
सुनि पति बचन मोन ह्वै रहियो ॥
पति पूछ्यो तुहि इह का कही ॥
सुन त्रिय बचन मोन ह्वै रही ॥६॥
पति जान्यो त्रिय बात दुराई ॥
त्रिय जान्यो कछु न्रिपति चुराई ॥
कोप करा दुहूंअन कै पई ॥
प्रीति रीत सभ ही छुटि गई ॥७॥
वा रानी सो नेह बढायो ॥
जिन चरित्र इह भाति बनायो ॥
वा सो प्रीति रीति उपजाई ॥
बीर कला चित ते बिसराई ॥८॥

CHARITAR १५९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥159॥3156॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बलवंड सिंघ तिरहुति को न्रिप बर ॥
जनु बिधि करियो दूसरो तम हर ॥
अमित रूप ता को अति सोहै ॥
खग म्रिग जछ भुजंगन मोहै ॥१॥
रानी साठि सदन तिह माही ॥
रूपवती तिन सम कहूं नाही ॥
सभहिन सौ पति नेह बढावत ॥
बारी बारी केल कमावत ॥२॥
रुकम कला रानी रस भरी ॥
जोबन जेब सभन तिन हरी ॥
आन मैन जब ताहि संतावै ॥
पठै सहचरी न्रिपति बुलावै ॥३॥

दोहरा ॥

क्रिसन कला इक सहचरी पठै दई न्रिप तीर ॥
सो या पर अटकत भई हरिअरि करी अधीर ॥४॥

चौपई ॥

सुनो न्रिपति जू बात हमारी ॥
मै रीझी लखि प्रभा तिहारी ॥
मै तव हेरि दिवानी भई ॥
मो कह बिसर सकल सुधि गई ॥५॥

दोहरा ॥

सुधि भूली मोरी सभै बिरह बिकल भयो अंग ॥
काम केल मो सौ करौ गहि गहि रे सरबंग ॥६॥

चौपई ॥

जब राजै ऐसे सुनि पायो ॥
ता को भोग हेत ललचायो ॥
लपटि लपटि ता सौ रति करी ॥
चिमटि चिमटि आसन तन धरी ॥७॥
चिमिट चिमिट ता सौ रति मानी ॥
कामातुर ह्वै त्रिय लपटानी ॥
न्रिप बर छिनिक न छोरियो भावै ॥
गहि गहि ताहि गरे सौ लावै ॥८॥

दोहरा ॥

भाति भाति आसन लए चुंबन करे बनाइ ॥
चिमटि चिमटि भोगत भयो गनना गनी न जाइ ॥९॥
सवैया ॥
खाइ बंधेजन की बरियै न्रिप भाग चबाइ अफीम चड़ाई ॥
पीत सराब बिराजत सुंदर काम की रीति सौ प्रीत मचाई ॥
आसन और अलिंगन चुंबन भाति अनेक लीए सुखदाई ॥
यौ तिह तोरि कुचान मरोरि सु भोर लगे झकझोरि बजाई ॥१०॥
अड़िल ॥
रति मानी तिह संग न्रिपति हरखाइ कै ॥
कामातुर ह्वै जात त्रिया लपटाइ कै ॥
भाति भाति के आसन लए बनाइ करि ॥
हो भोर होत लौ भजी हिये सुख पाइ करि ॥११॥

चौपई ॥

बितई रैन भोर जब भई ॥
चेरी न्रिपति बिदा कर दई ॥
बिहबल भई बिसरि सभ गयो ॥
ता का ओडि उपरना लयो ॥१२॥

दोहरा ॥

क्रिसन कला रति मानि कै तहा पहूची जाइ ॥
रुकम कला पूछित भई ता कह निकटि बुलाइ ॥१३॥
प्रति उतर ॥
सवैया ॥
काहे कौ लेत है आतुर स्वास गई ही उताइल दौरी इहा ते ॥
काहे कौ केस खुले लट छूटिये पाइ परी तव नेह के नाते ॥
ओठन की अरुनाई कहा भई तेरी बडाई करी बहु भाते ॥
कौन कौ अंबर ओढियो अली परतीति कौ लाई हौ लेहु उहा ते ॥१४॥

दोहरा ॥

सुनि बच रानी चुप रही जा के रूप अपार ॥
छल को छिद्र न किछु लखियो इम छलगी बर नारि ॥१५॥

CHARITAR १६० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥160॥3171॥अफज्रूं॥*

दोहरा ॥

नरवर को राजा बडो बीर सैन तिह नाम ॥
देस देस के एस जिह जपत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

स्वरनमती ता की बर नारी ॥
जन समुंद्र मथि सात निकारी ॥
रूप प्रभा ता की अति सो है ॥
जा सम रूपवती नहि को है ॥२॥
सुनियो जोतकिन ग्रहन लगायो ॥
कुरूछेत्र नावन न्रिप आयो ॥
रानी सकल संग कर लीनी ॥
बहु दछिना बिप्रन कह दीनी ॥३॥

दोहरा ॥

स्वरनमती गरभित हुती सोऊ संग करि लीन ॥
छोरि भंडार दिजान को अमित दछिना दीन ॥४॥
नवकोटी मरवार को सूर सैन थो नाथ ॥
सोऊ तहा आवत भयो सभ रनियन लै साथ ॥५॥

चौपई ॥

बीर कला ता की बर नारी ॥
दुहूं पछ भीतर उजिआरी ॥
ता की प्रभा जात नहि कही ॥
मानहु फूलि चंबेली रही ॥६॥
राजा दोऊ अनंदित भए ॥
अंक भुजन दोऊ भेटत भए ॥
रनियन दुहू मिलावै भयो ॥
चित को सोक बिदा करि दयो ॥७॥
अड़िल ॥
निज देसन की कथा बखानत सभ भई ॥
दुहूं आपु मै कुसल कथा की सुधि लई ॥
गरभ दुहूंन के दुहूंअन सुने बनाइ कै ॥
हो तब रनियन बच उचरे कछु मुसकाइ कै ॥८॥
जौ दुहूंअन हरि दैहै पूतुपजाइ कै ॥
तब हम तुम मिलि हैं ह्यां बहुरौ आइ कै ॥
पूत एक के सुता बिधाता देइ जौ ॥
हो आपस बीच सगाई तिन की करैं तौ ॥९॥

दोहरा ॥

यौ कहि कै त्रिय ग्रिह गई द्वैकन बीते जाम ॥
सुता एक के ग्रिह भई पूत एक के धाम ॥१०॥

चौपई ॥

संमस नाम सुता को धरियो ॥
ढोला नाम पूत उचरियो ॥

खारिन बीच डारि दोऊ ब्रयाहे ॥
भाति भाति सौ भए उमाहे ॥११॥

दोहरा ॥

कुरूछेत्र को न्रहान करि तह ते कियो पयान ॥
अपने अपने देस के राज करत भे आनि ॥१२॥

चौपई ॥

ऐसी भातिन बरख बितए ॥
बालक हुते तरुन दोऊ भए ॥
जब अपनो तिन राज संभारियो ॥
पूरब करियो बिवाह चितारियो ॥१३॥
लरिकापनो दूरि जब भयो ॥
ठौरहि ठौर और ह्वै गयो ॥
बालाई कि तगीरी आई ॥
अंग अंग फिरी अनंग दुहाई ॥१४॥
सवैया ॥
एक दिना म्रिग मारि कै ढौलन यौ अपने मन बीच बीचारियो ॥
बैस बिती बसि बामन के अबिबेक बिबेक कछू न बिचारियो ॥
ब्याह कियो लरिकापन मै हम जो तिह को कबहू न संभारियो ॥
आवत भयो निजु धाम नही तिह मारग ही ससुरारि सिधारियो ॥१५॥
कंबर बाधि अडंबर कै करि बोलि सु बीर बरात बनाई ॥
भूखन चारु दिपै सभ अंगन आनंद आजु हिये न समाई ॥
रूप अनूप बिराजत सुंदर नैनन की कहि क्राति न जाई ॥
चारु छके छबि हेरि चराचर देव अदेव रहै उरझाई ॥१६॥

चौपई ॥

सूर सैन राजै सुनि पायो ॥
बेटा बीर सैन को आयो ॥
लोक अगमनै अधिक पठाए ॥
आदर सौ ग्रिह मै तिह ल्याए ॥१७॥
तब रानी संमस सुनि पायो ॥
ढोला देस हमारे आयो ॥
फूलत अधिक ह्रिदै महि भई ॥
दुरबल हुती पुसट ह्वै गई ॥१८॥
भेटत पीय पियवहि भई ॥
चित मै अति प्रफुलत ह्वै गई ॥
ऐचि ऐचि पिय गरे लगावै ॥
छैलहि छैल न छोरियो जावै ॥१९॥

दोहरा ॥

पिय पातर पतरी त्रिया परम प्रीति उपजाइ ॥
गहि गहि परै प्रजंक पर पल पल बलि बलि जाइ ॥२०॥

चौपई ॥

संमस संग न कसि रति करै ॥
चित मै इहै बिचार बिचरै ॥
ऐचि हाथ ता को न चलावै ॥

जिनि कटि टूटि प्रिया की जावै ॥२१॥

दोहरा ॥

तब संमस ऐसे कहियो सुनिहो ढोलन मीत ॥
रति कसि कसि मो सौ करौ ह्वै कै ह्रिदै निचीत ॥२२॥
ढोला नरवर कोट को बसौ नेह के गाव ॥
ता ते सभ त्रिय पियन को ढोला उचरत नाव ॥२३॥
निडर होइ तुम मुहि भजो संका करौ न एक ॥
ज्यों रेसम टूटे नही कसिसै करो अनेक ॥२४॥
अड़िल ॥
सुनत पियरवा बैन ताहि भोगत भयो ॥
चौरासी आसन संमस के कसि लयो ॥
चुंबन लए अनेक अंग लपटाइ कै ॥
हो चिमटि चिमटि तिह भजियो हरख उपजाइ कै ॥२५॥
चतुरु चतुरिया चिमटि चिमटि रति मानही ॥
बिहसि बिहसि बहु भातिन बचन बखानही ॥
त्रिया तिहारो आसन तजियो न जावई ॥
हो कहि कहि ऐसी भाति गले लपटावई ॥२६॥
भाति भाति अबला के आसन लेत भयो ॥
लपटि लपटि करि गरे ताहि सुख देत भयो ॥
चिमटि चिमटि रति करै दोऊ मुसकाइ कै ॥
हौ सकल कोक को मत कौ कहै बनाइ कै ॥२७॥

चौपई ॥

लै मुकलावो अति सुख पायो ॥
नरवर गड़ की ओर सिधायो ॥
ब्याहित दूत त्रिया को धायो ॥
सकल जाइ तिह भेद जतायो ॥२८॥

दोहरा ॥

तब ब्याहित अगली त्रियहि भेद सकल सुनि पाइ ॥
कोपि अधिक चित मै कीयो सुनि संमस को नाइ ॥२९॥
स्वरनमती ब्याहित अगलि चित अति कोप बढाइ ॥
बीर सैन पति पितु भए ऐस कहत भी जाइ ॥३०॥
कहों बचन चित दै सुनो बैन एस के एस ॥
भजि ढोला तुम ते गयो लेन तिहारो देस ॥३१॥

चौपई ॥

जो तू जिय ते ताहि न मरि है ॥
तौ तेरो सोऊ बध करि है ॥
कै राजा जिय ते तिह मारो ॥
नातर अब ही देस निकारो ॥३२॥
जब इह भाति राव सुनि पाई ॥
चित के बिखै सति ठहराई ॥
जौ त्रिय ल्यावन काज सिधावत ॥
मेरे कहे बिना नहि जावत ॥३३॥
पुत्र बधू मुहि साचु उचारो ॥
लियो चहत सुत राज हमारो ॥

या कौ कहौं न मुख दिखरावै ॥
द्वादस बरख बनहि बसि आवै ॥३४॥

दोहरा ॥

पलटि खरावन कौ धरियो पठै मनुछ इक दीन ॥
मोहि मिले बिनु बन बसै राव बचन इह कीन ॥३५॥
सुनत भ्रित न्रिप के बचन ताहि कहियो समझाइ ॥
देस निकारो तुहि दियो मिलहु न मो को आइ ॥३६॥
तब ढोलन अति दुखित ह्वै ऐसे कहियो पुकारि ॥
जीवहिगे तौ मिलहिगे नरवर कोट जुहार ॥३७॥
तब सुंदरि संगि उठि चली सुनि करि ऐसो बैन ॥
हियो फटत अंतर घटत बारि चुआवत नैन ॥३८॥
अड़िल ॥
सुनि ढोलन ए बैन नरवरहि तजि गयो ॥
द्वादस बरख प्रमान बसत बन मै भयो ॥
बन उपबन मै भ्रमत फलन को खाइ कै ॥
हो त्रिया सहित तह बस्यो म्रिगन कह घाइ कै ॥३९॥
बरख त्रिदसए बीर सैन तन तजि दयो ॥
म्रितु लोक कह छोरि स्वरगबासी भयो ॥
तब ढोलन फिरि आनि राज अपनो लियौ ॥
हो रानी संमस साथ बरख बहु सुख कियौ ॥४०॥

CHARITAR १६१ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥161॥3211॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

देस तपीसा के रहै आठ चोरटी नारि ॥
रैनि दिवस चोरी करै सकै न कऊ बिचारि ॥१॥
चित्रमती तसकर कुअरि द्वै तिन की सिरदार ॥
मारग मै इसथित रहै घावहि लोग हजार ॥२॥
नाराइन दामोद्र भनि बिंद्राबनहि उचारि ॥
सुनि सारत ऐसे त्रिया सभ ही जाहि बिचारि ॥३॥
नाराइन नर आइयौ दामोदर दामंग ॥
बिंद्राबन लै जाइ बन मारहु याहि निसंग ॥४॥

चौपई ॥

जब अबला ऐसे सुनि पावै ॥
ता नर कौ बन मै लै जावै ॥
फासी डारि प्रथम तिह घावै ॥
ता पाछै तिह दरबु चुरावै ॥५॥
आवत एक नार तह भई ॥
फासी डारि तिसू कौ लई ॥
तब अबला तिन बचन उचारे ॥
सु मै कहत हौ तीर तिहारे ॥६॥
अड़िल ॥
कहि निमिति मुहि मारो अति धन देत हौ ॥
तुमरो कछू न दरबु चुराए लेत हौ ॥

सरखत अब ही हम ते लेहु लिखाइ कै ॥
हो सदन सहित सभ लेहु खजानो जाइ कै ॥੭॥
जौ तुम फासी डारि अबै मुहि घाइ हो ॥
जो धन हमरे पास वहै तुम पाइ हो ॥
सरखत क्यो न लिखाइ मंगाइन लीजियै ॥
हो धाम सहित सभ जाइ खजानो लीजियै ॥੮॥

दोहरा ॥

चिंत करी इसत्रिन जु हम लैहै इह धन घाइ ॥
ह्यां को दरबु कर आइ है हुआं को लयो न जाइ ॥੯॥
ता ते अबै मंगाइ कै सरखत लेहु लिखाइ ॥
धाम सहित या कौ दरब लेहि सहिर मै जाइ ॥੧੦॥
अड़िल ॥
सरखत लियो लिखाइ सु तुरतु मंगाइ कै ॥
इहै त्रिया तिन ता मै लिखियौ रिसाइ कै ॥
मोहि एकलो जानि फास गर डारि करि ॥
हो सरखत लियो लिखाइ बसत्र धन मोहि हरि ॥੧੧॥

चौपई ॥

ता कौ छोरि फास ते दियो ॥
आपु नगर को मारग लियो ॥
जब सरखत काजियहि निहारियो ॥
तिन कौ चौक चादनी मारियो ॥੧੨॥

दोहरा ॥

तुंद कला तब बन बिखै ऐसो चतिर बनाइ ॥
प्रान राखि धन राखियो उन इसत्रिनि को घाइ ॥੧੩॥

CHARITAR ੧੬੨ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बासठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥162॥3224॥अफजूं॥

दोहरा ॥

ग्वारिएर गड़ मो रहै भद्र सैन न्रिप नाम ॥
जा को जीव जगत्र के जपत आठहू जाम ॥੧॥

चौपई ॥

बिजै कुअरि ता की बर नारी ॥
निजु हाथन बिधि जनुक सवारी ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
जा कौ निरखि चंद्रमा लाजै ॥੨॥

दोहरा ॥

भद्र सैन न्रिप एक दिन खेलन चड़ियो सिकार ॥
जान बैरियन घात तिह ता कौ दियो संघार ॥੩॥

चौपई ॥

चली खबरि रानी पहि आई ॥
राजा हने बैरियन जाई ॥
तब रानी मन मंत्र बिचारियो ॥
सु मै चौपई मो कहि डारियो ॥४॥
सुत बालक हमरो बिधि कीनो ॥
नाथ मारग सुर पुर को लीनो ॥
ता ते इहै चरित्र बिचारो ॥
छल करि तिन बैरिन को मारो ॥५॥
लिख पत्री तिन तीर पठाई ॥
न्रिप जो करी तैसियै पाई ॥
सूरज कला दुहिता कौ लीजै ॥
हम सभ की प्रतिपारा कीजै ॥६॥
पत्री बाचि फूलि जड़ गए ॥
जोरि बरातहि आवत भए ॥
जब ही भद्र सैन पुर आए ॥
तब रानी यौ बचन सुनाए ॥७॥
एक एक साऊ ह्यां आवहि ॥
हम ते पाव पुजावत जावहि ॥
ता पाछे आपुन न्रिप आवै ॥
सूरज कला को लै घर जावै ॥८॥
हमरे धाम रीति इह परी ॥
ता ते जात दूरि नहि करी ॥
एक एक जोधा प्रथमावहि ॥
ता पाछै राजा कौ ल्यावहि ॥९॥
एक एक साऊ तह आयो ॥
डारि डारि फासी त्रिय घायो ॥
एक संघारि डारि करि दीजै ॥
दूसर कौ यौ ही बध कीजै ॥१०॥
सभ सूरन को प्रथम संघारियो ॥
मारि भोहरन भीतरि डारियो ॥
ता पाछे न्रिप बोल पठायो ॥
रानी डारि फास गर घायो ॥११॥

दोहरा ॥

सभ सूरा प्रथमै हने बहुरि न्रिपति कौ कूटि ॥
जो लसकर बाकी बचियो सो सभ लीनो लूटि ॥१२॥
सभ बैरिन कौ घाइ कै सुत कौ राज बैठाइ ॥
पुनि पति के फैंटा भए जरी म्रिदंग बजाइ ॥१३॥

CHARITAR १६३ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ त्रिसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥163॥3237॥अफजूं॥

चौपई ॥

उदै पुरी खुररम की नारी ॥
हजरति कौ प्रानन ते प्यारी ॥
मुख सूखत जी जी तिह करते ॥
अनत न लखे तवन के डरते ॥१॥

बेगम बाग एक दिन चली ॥
सोरह सत लीनो संग अली ॥
सुंदर नर इक पेखत भई ॥
त्रिय कौ भूलि सकल सुधि गई ॥२॥

दोहरा ॥

जोबन कुअरि सखी हुती लीनी निकट बुलाइ ॥
उदै पुरी ता सौ सकल भेद कहियो समझाइ ॥३॥
सवैया ॥
कानि करौ नहि साहिजहान की धाम जितो धन है सु लुटाऊं ॥
अंबर फारि दिगंबर ह्वै करि चंदनुतारि बिभूति चड़ाऊं ॥
का सौ कहौ नहि तू हमरो कोऊ जी की ब्रिथा कहि ताहि सुनाऊं ॥
पंख दए बिधि तू लखि मो कह प्रीतम कौ उडि कै मिलि आऊं ॥४॥
प्रीति करी तिह सौ किह काज सु मीत के काज जु मीत न आवै ॥
पीर कहै अपने चित मै उहि पीर कौ पीर के नीर बुझावै ॥
हौ अटकी मन भावन सौ मुहि कैसियै बात कोऊ कहि जावै ॥
हौ होऊ दासन दासि सखी मुहि जो कोऊ प्रीतम आनि मिलावै ॥५॥
जो सखी काज करै हमरो तिह भूखन की कछु भूख न ह्वै है ॥
बसत्र अपार भरे घर बार सु एकहि बार हजारन लै है ॥
मोरी दसा अवलोकि कै सुंदरि जानत ही हियो मै पछुतै है ॥
कीजै उपाइ दीजै बिखु आइ कि मीत मिलाइ कि मोहू न पै है ॥६॥
ऐसे उदै पुरी के मुख ते बच जोबन कुअरि जबै सुनि पायो ॥
ताहि पछान भली बिधि सौ मन बीच बिचार इहै ठहरायो ॥
देग मै डारि चली तित को बगवानन भाखि पक्वान लखायो ॥
साइत एक बिहानी न बाग मै आनि पिआरी कौ मीत मिलायो ॥७॥

दोहरा ॥

उदै पुरी पिय पाइ तिह चरन रही लपटाइ ॥
ता को जो दारिद हुते छिन मै दयो मिटाइ ॥८॥
अड़िल ॥
गहि गहि ता को बाल गरे चिमटत भई ॥
लपटि लपटि ता के आसन के तर गई ॥
चौरासी आसन सभ लिये बनाइ कै ॥
हो आठ जाम रति करी हरख उपजाइ कै ॥९॥

दोहरा ॥

तरुन पुरख तरुनै त्रिया त्रितिय चंद्र की जौनि ॥
लपटि लपटि करि रति करै तिन ते हारै कौन ॥१०॥
अड़िल ॥
कोकसार के मुख ते मतन उचारही ॥
भाति भाति उपबन की प्रभा निहारही ॥
चौरासी आसन सभ करे बनाइ करि ॥
हो भाति भाति रति करी गरे लपटाइ करि ॥११॥

दोहरा ॥

चौरासी आसन लए भाति भाति लपटाइ ॥
चतुर चतुरियहि भावई छिनक न छोरियो जाइ ॥१२॥

चौपई ॥

ता की त्रिया भेद सुनि पायो ॥
उदै पुरी मो पतिहि बुलायो ॥
भाति भाति ता सौ रति करी ॥
मो ते जात बात नहि जरी ॥१३॥
साहिजहा पै अबै पुकारौ ॥
छिन मै तुमै ख्वार करि डारौ ॥
यौ कहि बैन जात भी तहा ॥
हजरति रंग महल महि जहा ॥१४॥
उदैपुरी तिह संग ल्याई ॥
तब लौ नारि पुकारि सुनाई ॥
साहिजहा तब बचन उचारे ॥
कवन करत इह सोर दुआरे ॥१५॥

दोहरा ॥

उदै पुरी तब यौ कहियो समुझि चित कै माहि ॥
सती भयो चाहत त्रिया होन देत इह नाहि ॥१६॥

चौपई ॥

तब हजरति इह भाति उचारो ॥
या कौ मनै करो जिनि जारो ॥
त्रिय जन संग अमित करि दए ॥
ता कह पकरि जरावत भए ॥१७॥

दोहरा ॥

अति रति ता सो मानि कै संग पियरवहि ल्याइ ॥
हजरत को इह छल छलियो सवतिहि दियो जराइ ॥१८॥

CHARITAR १६४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥164॥3255॥अफजूं॥

दोहरा ॥

हिंगुलाज जग मात के रहै देहरो एक ॥
जाहि जगत के जीव सभ बंदत आनि अनेक ॥१॥

चौपई ॥

सिंघ बचित्र तहा को न्रिप बर ॥
भाति भाति को धनु ता के घर ॥
भान कला तिह त्रिया भणिजै ॥
ता के को त्रिय तुलि कहिजै ॥२॥
दिजबर सिंघ एक दिज ता के ॥
भिसत कला अबला ग्रिह वा के ॥
सात पूत सुंदर तिह घर मै ॥
कोबिद सभ ही रहत हुनर मै ॥३॥

दोहरा ॥

तहा भवानी को भवन जाहिर सकल जहान ॥
देस देस के एस जिह सीस झुकावत आनि ॥४॥
अड़िल ॥
अति सुंदर मठ ऊची धुजा बिराजही ॥
निरखि दिपतता ताहि सु दामनि लाजही ॥
देस देस के एस तहा चलि आवही ॥
हो जानि सिवा को भवन सदा सिर न्यावही ॥५॥

दोहरा ॥

जो इछा कोऊ करै सो सभ पूरन होइ ॥
प्रगट बात सभ जगत इह जानत है सभ कोइ ॥६॥

चौपई ॥

एक दिवस ऐसो तह भयो ॥
अभ्रयो सूर चंद्र प्रगटयो ॥
अकसमात्र बानी तिह भई ॥
सो दिजबर स्रवनन सुनि लई ॥७॥
प्रात भए राजा इह मरि है ॥
कोटि उपाव किसै न उबरि है ॥
जो कोऊ सात पूत ह्यां मारै ॥
तौ अपनौ यह राव उबारे ॥८॥
दिजबर सुनि बचनन ग्रिह आयो ॥
निजु नारी तन भेद जतायो ॥
तब त्रिय सात पूत संग लीने ॥
सरब मंगला की बलि दीने ॥९॥
सात पूत पित हने निहारे ॥
असि लै कंठ आपने मारे ॥
सुर पुर बाट जबै तिन लई ॥
ठाढी नारि निहारत भई ॥१०॥
वहै हाथ अपने असि लीनो ॥
निजु प्रानन को त्रास न कीनो ॥
राव बचै कहि ताहि संभारियो ॥
गहि करि कंठ आपने मारियो ॥११॥
सात पूत हनि पतहि संघारियो ॥
बहुरि मूंड अपनो कटि डारियो ॥
राव चक्रयो कौतक जब लहियो ॥
सोई खड़ग हाथ मै गहियो ॥१२॥
सात पूत हमरे हित मारे ॥
बहुरि आपुने नाथ संघारे ॥
पुनि इन देह नेह मम दियो ॥
ध्रिग इह राज हमारो कियो ॥१३॥
सोई खड़ग कंठी पर धरियो ॥
मारन अपनो आपु बिचरियो ॥
क्रिपा करी तब ताहि भवानी ॥
ऐसी भाति बखानी बानी ॥१४॥
अड़िल ॥
इन कौ लेहु जियाइ न निजु बध कीजियै ॥

राज बरिस बहु करौ बहुत दिन जीजीयै ॥
तब दुरगा तै सभ ही दए जियाइ कै ॥
हो निरखि न्रिपति की प्रीति हरख उपजाइ कै ॥१५॥

चौपई ॥

ऐसो ढीठ तवन त्रिय करियो ॥
पति पूतन के प्रानन हरियो ॥
बहुरो बध अपनो कहूं कीनो ॥
प्रान बचाइ न्रिपति को लीनो ॥१६॥

दोहरा ॥

निरखि सतता सभन की जग जननी हरखाइ ॥
सात पूत पति के सहित तिह जुत दए जियाइ ॥१७॥
त्रिय चरित्र दुहकरि करियो जैसो करै न कोइ ॥
पुरी चत्रदस के बिखै धंन्य धंन्य तिह होइ ॥१८॥

चौपई ॥

सात पूत मूए जियराए ॥
अपनी देह सहित पति पाए ॥
न्रिप की बडी आरबल होई ॥
ऐसो करत चरित्र न कोई ॥१९॥

CHARITAR १६५ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥165॥3274॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सुक्रित सिंघ सूरो बडो सूरति को नरपाल ॥
जुबन कला रानी रहै जा के नैन बिसाल ॥१॥

चौपई ॥

ता के एक पूत ग्रिह भयो ॥
सवतिन डारि सिंधु मै दयो ॥
कहियो कि इह भिरटी लै गई ॥
इहै खबरि राजा कह भई ॥२॥
रानी अधिक सोक तब कीनो ॥
माथो फोरि भूंमि तन दीनो ॥
तब राजा ता के ग्रिह आयो ॥
भाति भाति तिह ताप मिटायो ॥३॥
रीति काल की किनूं न जानी ॥
ऊच नीच के सीस बिहानी ॥
एकै बचत काल से सोऊ ॥
राव रंक अरु बचत न कोऊ ॥४॥

दोहरा ॥

जो उपजियो सो बिनसियो जियत न रहसी कोइ ॥

ऊच नीच राजा प्रजा सुर सुरपति कोऊ होइ ॥५॥

चौपई ॥

तुम सुंदरि सभ सोक निवारहु ॥
स्री जदुपति कह हियै संभारहु ॥
वा सुत को कछु सोक न कीजै ॥
और मागि प्रभु ते सुत लीजै ॥६॥

दोहरा ॥

अवर तुमारे धाम मै ह्वै है पूत अपार ॥
वा को सोक न कीजियै सुन सुंदरि सुकुमारि ॥७॥

चौपई ॥

जब राजै यौ तिह समझायो ॥
तब रानी सुत सोक मिटायो ॥
अवर पूत की आसा भए ॥
चौबिस बरिस बीति करि गए ॥८॥
अड़िल ॥
सुंदर नर इक पेखत तब अबला भई ॥
ग्रिह की सभ सुधि बिसरि ताहि तब ही गई ॥
पठै सहचरी ता कौ लियो मंगाइ कै ॥
हो काम केल तिह संग करियो सुख पाइ कै ॥९॥

चौपई ॥

तब रानी यौ ह्रिदै बिचारी ॥
बोलि जार प्रति सकल सिखारी ॥
लरिका हुतो जोग्रयह हरियो ॥
सुंदर जानि न मो बधि करियो ॥१०॥

दोहरा ॥

थो बालक जोगी हरियो ह्वै भिरटी के भेस ॥
मै जानत नहि कवन सुत बसत कवन से देस ॥११॥

चौपई ॥

जार संग इह भाति सिखाई ॥
आप राव सो जाइ जताई ॥
जो बालक मै पूत गवायो ॥
सो मै आजु खोज ते पायो ॥१२॥
सुनि न्रिप बचन अनंदित भयो ॥
ता को बोलि निकटि तब लयो ॥
तब रानी इह भाति उचारो ॥
सुनो पूत तुम बचन हमारो ॥१३॥
सकल ब्रिथा अपनी तुम कहो ॥
हमरे सभ सोकन कह दहो ॥
राजा सों कहि प्रगट सुनायो ॥
राजपूत ह्वै राज कमायो ॥१४॥
सुनु रानी मै कहा बखानो ॥

बालक हुतो कछू नहि जानो ॥
जोगी कहियो सु तुम तन कहिहौ ॥
सोक संताप तिहारो दहिहौ ॥१५॥
इक दिन यौ जौगीस उचारियो ॥
सूरति सहिर बडो उजियारियो ॥
ह्वै भिरटी मै तहा सिधायो ॥
बालक सुत राजा को पायो ॥१६॥
ह्वै भिरटी जब ही मै धयो ॥
भाजि लोग आगे ते गयो ॥
तोहि डारि बगली महि लीनो ॥
औरै देस पयानो कीनो ॥१७॥
चेला अवर भछ तब ल्याए ॥
ताहि खवाइ करि नाथ रिझाए ॥
भछन काजि और कोऊ धरियो ॥
राव पूत लखि मोहि उबरियो ॥१८॥

दोहरा ॥

सुनु रानी ऐसे बचन नैनन नीरु बहाइ ॥
न्रिप देखत सुत जार कहि लयो गरे सो लाइ ॥१९॥

चौपई ॥

बालक हुतो पूत तब हरियो ॥
मोरे भाग सु जियत उबरियो ॥
कौनहूं काज देस इह आयो ॥
सो हम आजु खोज ते पायो ॥२०॥
गहि गहि ता को गरे लगावै ॥
देखत राव चूंबि मुख जावै ॥
अपने धाम सेज डसवाई ॥
ता सौ रैनि बिराजत जाई ॥२१॥
आठो जाम धाम तिह राखै ॥
पूत पूत मुख ते तिह भाखै ॥
काम केल निसि भई कमावै ॥
मूरख राव भेद नहि पावै ॥२२॥

CHARITAR १६६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छिआसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥166॥3296॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

बास बरेली के बिखै बीर बडो धन राव ॥
साह परी ता की त्रिया राखत सभ को भाव ॥१॥

चौपई ॥

एक पात्र राजा के आई ॥
भूखन बसत्र अनूप सुहाई ॥
न्रिप बर अटिक तवन पर गयो ॥
रानिन डारि ह्रिदै ते दयो ॥२॥

दोहरा ॥

एक भ्रात न्रिप को हुतो जा को रूप अपार ॥
साह परी ता सौ बिधी राजा को डर डारि ॥३॥

चौपई ॥

नितप्रति रानी ताहि बुलावै ॥
काम भोग तिह संग कमावै ॥
राजा कौ हिय ते बिसरायो ॥
ता कौ राज देउ ठहरायो ॥४॥
अब मै राज देत हौ तो कौ ॥
निजु नारी करियहु तुम मो कौ ॥
जो मै तुमै कहौं सो करियहु ॥
या राजा ते नैक न डरियहु ॥५॥
मन बीसक इक बिसहि मंगैयै ॥
सभ भोजन के बीच डरैयै ॥
राजा सहित आन सभ खै है ॥
छिनकिक बिखै म्रितक ह्वै जैहै ॥६॥

दोहरा ॥

तिन कौ प्रथम संघारि कै लीजै राजु छिनाइ ॥
आप देस पति हूजियै मोहि सहित सुख पाइ ॥७॥

चौपई ॥

तब तिन जार काज सोऊ कियो ॥
सैन सहित निवतो न्रिप दियो ॥
सभ भोजन भीतर बिसु डारी ॥
सभहिन बेस्वा सहित खवारी ॥८॥
सैन सहित भछत न्रिप भए ॥
घरिकिक बिखै मौत मरि गए ॥
जियत बचे तो तिन गहि घाए ॥
तिन ते एक जान नहि पाए ॥९॥
तिन कौ मारि राज तिन लियो ॥
ता कौ निजु नारी लै कियो ॥
हाथ ठाढ कीनो तिह घायो ॥
पाइ परियो तिह आनि मिलायो ॥१०॥
ऐसो चरित चंचला कीनो ॥
निजु नायक कौ बध करि दीनो ॥
और सूरमन कौ बध कियो ॥
राज जार अपनै को दियो ॥११॥

दोहरा ॥

इह चरित्र सौ चंचला निजु नायक को मारि ॥
राज जार कौ लै दियो ऐसे खेलि खिलारि ॥१२॥

CHARITAR १६७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥167॥3308॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

पछिम को राजा रहै रन मंडन सिंघ नाम ॥
देस देस के एस जिह पूजत आठो जाम ॥१॥
वा राजा की बलिभा जोति मती सुभ कारि ॥
तीन भवन भीतर नही जा सम राज कुमारि ॥२॥

चौपई ॥

एक पात्र राजा पहि आई ॥
निजु हाथन बिधि जानु बनाई ॥
ता पर अटक राव की भई ॥
रानी बिसरि ह्रिदै तै गई ॥३॥

दोहरा ॥

तब रानी चित के बिखै रही अधिक ही खीझि ॥
वा बेस्वा परि राव की सुनि स्रवनन अति रीझि ॥४॥

चौपई ॥

देस देस खबरै दै गई ॥
बेस्वन रीझि राव की भई ॥
अबला देस देस ते आई ॥
आनि राव की पुरी सुहाई ॥५॥

दोहरा ॥

तब रानी क्रुधित भई धारि बदन मै मौन ॥
न्रिप अटके बेस्वन भए हमै संभरि है कौन ॥६॥

चौपई ॥

ऐसो जतन कछू अब करियै ॥
जा ते इन बेस्वन कौ मरियै ॥
लखत राव के प्रीति जनाऊ ॥
छलि सो बडो कलेस मिटाऊ ॥७॥
अधिक प्रीत बेस्वन सौ कीनी ॥
लछमी बहुत सभन कह दीनी ॥
प्रीति करत जिह न्रिपति हमारो ॥
सो हम कौ प्रानन ते प्यारो ॥८॥
इह सुनि बैन फूल न्रिप गयो ॥
भेद अभेद न पावत भयो ॥
या सौ करत प्रीति मै भारी ॥
रानी करत ताहि रखवारी ॥९॥

दोहरा ॥

सभ रानी बेस्वन सहित लीनी निकटि बुलाइ ॥
भाति भाति के सुख किये तिन ते गीत गवाइ ॥१०॥

चौपई ॥

ऐसो चरित नित न्रिप करई ॥
कछु रानिन ते संक न धरई ॥
सभ बेस्वन ते धाम लुटावै ॥
जोति मती जिय मै पछुतावै ॥११॥
तब रानी न्रिप तीर उचारो ॥
सुनो न्रिपति जू बचन हमारो ॥
बेरी एक बैठि सुख कीजै ॥
दूजी नाव बेसवन दीजै ॥१२॥
हम तुम बैठि नाव सुख कैहै ॥
इन बेस्वन ते गीति गवैहै ॥
जो सुंदरि इन ते लखि लिजियहु ॥
ता सौ भोग राव तुम किजियहु ॥१३॥
सो सुनि राव अनंदित भयो ॥
त्रियन सहित बेस्वन लै गयो ॥
आमूं जहा बहित नद भारो ॥
जनु बिधि असटम सिंधु सवारो ॥१४॥
नीकी नाव रानियन लई ॥
बेरी बुरी बेस्वन दई ॥
अपने राव तीर बैठारियो ॥
मूरख भेद न कछू बिचारियो ॥१५॥
तब रानी तिन अति धनु दीनो ॥
बेरियार अपने बसि कीनो ॥
जहा बहत आमूं नद भारो ॥
बेस्वन तही बोरि तुम डारो ॥१६॥
अरध नदी नवका जब गई ॥
तब ही फोरि मलाहन दई ॥
सभ बेस्वा डूबन तब लागी ॥
भरूवनि दसो दिसन कह भागी ॥१७॥
बेस्वा सकल गुचकियन खाही ॥
ठौर न रही भाजि जित जाही ॥
हाइ हाइ रानी तब करई ॥
इन मूए राजा इह मरई ॥१८॥
राव सुनत इन कहै निकारहु ॥
सखियन कहियो बोर गहि डारहु ॥
अमित म्रिदंग बहत कहूं जाही ॥
बेस्वा कही गुचकियन खाही ॥१९॥
मुरली मुरज तंबूरा बहै ॥
भरूआ बहे जाति नहि कहे ॥
भरूअनि कहूं पुकारत जाही ॥
बेस्वन रही कछू सुधि नाही ॥२०॥
डूबि डूबि भरूआ कहूं मरे ॥
भरूअनि उदर नीर सो भरे ॥
बेस्वा एक जियत नहि बाची ॥
ऐसी मार किरीचक माची ॥२१॥
गुचकि खात बेस्वा जे गई ॥
टंगरनि पकरि बोरि सोऊ दई ॥
हाइ हाइ न्रिप ठाढ पुकारै ॥
को पहुचै तिन खैंचि निकारै ॥२२॥
जो बेस्वा काढन कह गयो ॥
डूबत वहू नदी महि भयो ॥

धार धार भरुअनि इक करही ॥
डूबि डूबि सरिता मो मरही ॥२३॥
कूकि कूकि बेस्वा सभ हारी ॥
किनही पुरख न ऐंचि निकारी ॥
भरूआ मरि भरूअनि जुत रहे ॥
इक सो साठि ताइफे बहे ॥२४॥

दोहरा ॥

दस दस मन तिलकै भई खट मन भई इजार ॥
डूबि मरी बेस्वा सकल कोऊ न सकियो निकारि ॥२५॥

चौपई ॥

तब रानी न्रिप पै चलि गई ॥
भाति भाति समुझावत भई ॥
पति तुम कछू सोक न बिचारहु ॥
इन रनियन के संग बिहारहु ॥२६॥
और बेस्वा बोलि पठैयहु ॥
काम केल तिन संग कमैयहु ॥
जौ तुम कौ राखियो करतारा ॥
होइ सुंदरी कई हजारा ॥२७॥

दोहरा ॥

मूड़ राव चुप ह्वै रहियो सकियो न चरित बिचारि ॥
प्रगट अखारे साठि सत रानी दए संघारि ॥२८॥

CHARITAR १६८ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठसठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥168॥3336॥अफजूं॥

चौपई ॥

ब्रिज महि एक अहीरनि रहै ॥
साह परी ता कौ जग कहै ॥
अति उतम तिह अंग बिराजै ॥
जा कौ निरखि चंद्रमा लाजै ॥१॥
रंगी राम अहीरिक तहा ॥
लागी लगन त्रिया की उहा ॥
जब सोयो अपनो पति जानै ॥
काम केल तिह संग प्रमानै ॥२॥
एक दिवस ता सो पति सोयो ॥
काम केल करि अति दुख खोयो ॥
रंगी राम तहा चलि आयो ॥
फिरि घर चलियो दाव नहि पायो ॥३॥
जागत हुती त्रिया लखि लीनो ॥
नैनन सैन मित्र कह दीनो ॥
खारी हुती सु ऐंचि मंगाई ॥
निजु पलघा के निकटि बिछाई ॥४॥
पिय के अंग अलिंगन करियो ॥

आसन तिह खारी पर धरियो ॥
मन मानत को भोग कमायो ॥
मूरख नाह भेद नहि पायो ॥५॥
अड़िल ॥
चिमटि चिमटि करि भोग अधिक ता सौ कियो ॥
अधर पान करि कै करि जारि बिदा दियो ॥
सोत रहियो मूरख कछु भेद न पाइयो ॥
हो धर खारी पर कस इन करम कमाइयो ॥६॥

दोहरा ॥

उर चिमटयो पिय सो रहियो केल जार तन कीन ॥
खारी दई उठाइ पुनि जार बिदा करि दीन ॥७॥

CHARITAR १६९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥169॥3343॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

पलवल को राजा रहै सरब सिंघ तिह नाम ॥
देस देस के एस जिह भजत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

कला सु बीर ताहि बर नारी ॥
मथि समुंद्र जनु सात निकारी ॥
जोबन जोति अधिक तिह सोहै ॥
देव अदेवन को मन मोहै ॥२॥
रावत सिंघ बिलौकत भई ॥
हरि अरि बसि रानी ह्वै गई ॥
सहचरि पठै बुलायो जबै ॥
काम केल ता सौ किय तबै ॥३॥
ऐसी भाति जार निति आवै ॥
वा रानी सौ भोग कमावै ॥
दासी एक तहा चलि आई ॥
निरखि मीत तिह रह्यो लुभाई ॥४॥
केल कमाइ जार जब आयो ॥
चेरी को लखि रूप लुभायो ॥
रनियहि डारि ह्रिदै ते दयो ॥
ता की सेज सुहावत भयो ॥५॥
केल बिना रानी अकुलाई ॥
ता कौ पैंड बिलोकन आई ॥
कहा रहे प्रीतम नहि आए ॥
काहू बैरिनि सौ उरझाए ॥६॥
सुधि भूली किधो किनूं भुलायो ॥
खोजत रहियो पैंड नहि पायो ॥
त्रास दियो किनहूं तिह आई ॥
भेट भई कोऊ भामिनि भाई ॥७॥
आवत है कि आइ कर गए ॥
आवहिगे कि रूठ के गए ॥

मिलि है यार आइ सुखदाई ॥
बडी बार लगि बार लगाई ॥८॥
यौ चित चिंत तहा पगु धारियो ॥
मीत चेरियहि रमत निहारियो ॥
सिर पग लगे कोप तब भई ॥
जाहि खबरि राज तन दई ॥९॥

दोहरा ॥

घर खोए बैठियो कहा परी धाम तव धार ॥
खड़ग हाथ गहि देख चल आंखै दोऊ पसारि ॥१०॥
तब राजा चेरी भए ता कौ रमत निहारि ॥
दुहूंअन कौ मारत भयो सकियो न मूड़ बिचारि ॥११॥
इह चरित्र कै चंचला राजा सौ छल कीन ॥
जार तवन चेरी सहित पठै धाम जम दीन ॥१२॥

CHARITAR १७० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥170॥3355॥अफज्हूं॥*

दोहरा ॥

रंघरारी रंघरो बसै कंचन सिंघ सु नाम ॥
साहिब देई त्रिय रहै जाहि सतावै काम ॥१॥

चौपई ॥

ताहि जारनी नाथ बिचारियो ॥
एक दिवस इह भाति उचारियो ॥
देस छोरि परदेस सिधैहौ ॥
अधिक कमाइ तुमै धन ल्यैहौ ॥२॥
जात भयो ऐसो बच कहियो ॥
लागि धाम कोने सौ रहियो ॥
साहिब दे तब जार बुलायो ॥
काम भोग तिह साथ कमायो ॥३॥
ग्रिह कोना सौ पतिह निहारियो ॥
इहै चंचला चरित बिचारियो ॥
लपटि लपटि आसन सौ जावै ॥
कूकि कूकि इह भाति सुनावै ॥४॥
जो पति होत आजु घर माही ॥
क्यो हेरत तै मम परछाही ॥
प्रीतम नही आजु ह्यां मेरो ॥
अब ही सीस फोरतो तेरो ॥५॥

दोहरा ॥

अति रति ता सो मानि कै दीनो जार उठाइ ॥
आपु अधिक पीटत भई ह्रिदै सोक उपजाइ ॥६॥

चौपई ॥

मेरो आजु धरमु इन खोयो ॥

प्राननाथ ग्रिह माझ न होयो ॥
अब हौ टूटि महल ते परिहौ ॥
नातर मारि कटारी मरिहौ ॥७॥
कैधो अंग अगनि मै जारो ॥
कैधो पिय पै जाइ पुकारो ॥
जोरावरी जार भज गयो ॥
मोरो धरम लोप सभ भयो ॥८॥

दोहरा ॥

यौ कहि कै मुख ते बचन जमधर लई उठाइ ॥
उदर बिखै मारन लगी निजु पति को दिखराइ ॥९॥

चौपई ॥

ऐसे निरखि तवन पति धयो ॥
जमधर छीन हाथ ते लयो ॥
प्रथम घाइ तुम हमै प्रहारो ॥
ता पाछे अपने उर मारो ॥१०॥
तेरौ धरम लोप नहिं भयो ॥
जोरावरी जार भजि गयो ॥
दससिर बल सौ सिय हरि लीनी ॥
स्री रघुनाथ त्याग नहि दीनी ॥११॥

दोहरा ॥

सुनु अबला मै आपने करत न हिय मै रोसु ॥
जार जोर भजि भज गयो तेरो कछू न दोस ॥१२॥

CHARITAR १७१ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकहतरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥171॥3367॥अफजूं॥

चौपई ॥

ऐंडे राइक भाट भणिजै ॥
गीत कला तिह त्रिया कहिजै ॥
बीरम दे तिन बीर निहारियो ॥
तबै चित ते भाट बिसारियो ॥१॥
जार बाच ॥

दोहरा ॥

बाधि खाटु तर निजु पतिहि हम सौ भोग कमाइ ॥
तौ मै जानौ साचु तू हितू हमारी आइ ॥२॥

चौपई ॥

ऐंडे राइ एक दिन आयो ॥
दुखित नारि ह्वै बचन सुनायो ॥
तुम कौ रोग नाथ इक भारो ॥
ता ते खीझत चित हमारो ॥३॥

दोहरा ॥

एक बैद मै तव निमित राख्यो धाम बुलाइ ॥
ता ते तुरत कराइयै अपन इलाज बनाइ ॥४॥

चौपई ॥

ऐंडे राइ तबै यौ कयो ॥
बीरम देव बोलि करि लयो ॥
या गद कौ गदहा क्या करियै ॥
जा ते रोग बडो परहरियै ॥५॥
बैद तबै यौ बचन उचारे ॥
बडो रोग इह भयो तिहारे ॥
या कौ जंत्र मंत्र नहि कोई ॥
एक तंत्र होवै तौ होई ॥६॥
मदरा अधिक आपु लै पीजै ॥
और आपनी तिय कह दीजै ॥
खाट तरे बाध तुम रहो ॥
मुख ते परे कबितन कहो ॥७॥
एक बीर इक ठौर बुलैहौ ॥
इसी खाट ऊपर बठैहौ ॥
मल जुध तव त्रिय तन करिहै ॥
तो तव रोग बडो परहरि है ॥८॥
मूड़ बात इह कछू न जानी ॥
देह अरोग सरोग पछानी ॥
आपु मंगाइ मद्रय तब पियो ॥
जार सहित अबला को दियो ॥९॥
निजु कर मै तिय जार पिवायो ॥
बपु औधो तर खाट बंधायो ॥
आखै दोऊ मूंदि कर लई ॥
जार त्रिया आरूड़ित भई ॥१०॥
भाट परियो तर कबित उचारै ॥
भेद अभेद कछू न बिचारै ॥
वहै तंत्र जौ बैद बनायो ॥
ता ते देव हमारै आयो ॥११॥
भोगु जार अबला सौ कियो ॥
भाति भाति ता को सुख दियो ॥
उछल उछल रति अधिक कमाई ॥
मूरख भाट बात नहि पाई ॥१२॥

दोहरा ॥

उतरि खाटि ते खोलि द्रिग दिये न कीनो सोगु ॥
भाट पछान्यो साचु जिय अब मै भयो अरोग ॥१३॥
बाधि खाट तर भाट कौ ता कर ते मद पीय ॥
रति मानी त्रिय जार सौ भेद न पायो पीय ॥१४॥

CHARITAR १७२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बहतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥172॥3381॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

राइ निरंजन चोपरो जा की त्रिया अनूप ॥
लोक सकल निरखै तिसै रति कौ जानि सरूप ॥१॥
सहिर बसै बहलोल पुर जा को रूप अमोल ॥
सूरा सकल सराहही नाम खान बहलोल ॥२॥
जब संगीत कला त्रियहि गयो बहलोल निहारि ॥
तब ही सभ ही चित ते दई पठानी डारि ॥३॥
बनिज कला बाला हुती लीनी निकट बुलाइ ॥
अमित दरबु ता कौ दियो वा प्रति दई पठाइ ॥४॥

चौपई ॥

बनिज कला चलि कै तित आई ॥
जहा कला संगीत सुहाई ॥
जबै खान की उपमा करी ॥
ए सुनि बात नारि वह ढरी ॥५॥
इन बातन अबला उरझाई ॥
इहै बात पिय सुनत सुहाई ॥
मै इक बाग बनायो भलो ॥
मुहि लै संग तहा तुम चलो ॥६॥
अब लौ मै कतहूं नहि गई ॥
पैंड अपैंड न पावत भई ॥
रवि ससि कौ मुख मै न दिखायो ॥
पिय बिनु कछू न मो कह भायो ॥७॥
पति तिह कहियो तहा तुम जैयहु ॥
या कौ बाग देखि फिरि ऐयहु ॥
बीती रैनि प्रात जब भई ॥
तिसी खान के घर मै गई ॥८॥
ता ही बाग निरंजन गयो ॥
पावत तहा नारि नहि भयो ॥
खोजत अधिक तहा त्रिय पाई ॥
जहा हवेली खान बनाई ॥९॥

दोहरा ॥

त्रिय निकसी तिह खान सौ अति ही भोग कमाइ ॥
बदन लागि पति ही गयो संकि रही मुख न्याइ ॥१०॥

चौपई ॥

जब ही द्रिसटि निरंजन धरी ॥
बनिज कला की निंद्या करी ॥
मुहि कहि संग न मोरे भई ॥
पैंड चूकि पर घर मै गई ॥११॥
मो कौ पकरि पठानन लीनो ॥
काम केल बहु मो सौ कीनो ॥
तब बल चलै तौ या कौ मारो ॥
नहि काजी पै जाइ पुकारो ॥१२॥
या मै चूक न तेरी भई ॥
पैडि चूकि पर घर मै गई ॥
पैठानन तो कौ गहि लीनो ॥

काम भोग तोरे संग कीनो ॥१३॥
भलो भयो तू घरि फिरि अई ॥
पकरि तुरकनी करि नहि लई ॥
जौ कोऊ धाम मलेछन आवै ॥
धरम सहित फिरि जान न पावै ॥१४॥
तुम पति माथ न अपनो धुनो ॥
मेरी सकल ब्रिथा कह सुनो ॥
सकल कथा मै तुमै सुनाऊ ॥
ता ते तुमरो भ्रमहि मिटाऊ ॥१५॥
जब मै भूल धाम तिह गई ॥
तबहि पकरि तुरकन मुहि लई ॥
तब मै तिन सो ऐस उचारो ॥
तुमै न सूझत नाथ हमारो ॥१६॥
ऐसे कहहि होहि तू तुरकनि ॥
मो कौ लगे लोग मिलि घुरकनि ॥
कै तू होहि हमारी नारी ॥
नातर देति ठौरि तुहि मारी ॥१७॥
अड़िल ॥
तब मै ता सौ चरित भांति ऐसो कियो ॥
निजु भग ते नख साथि काढि स्रोनत दयो ॥
प्रथम अलिंगन खान साथ हसि मै करियो ॥
हो बहुरौ मुख ते बचन ताहि मै उचरियो ॥१८॥
रितु आई है मोहि सु मै ग्रिह जात हो ॥
तुमै साथ बहलोल न भोग कमात हो ॥
संग मनुछ दै मोहि तहा पहुचाइयै ॥
हो दिवस तीसरे मो कौ बहुरि बुलाइयै ॥१९॥
सुनि ऐसे बच मोहि खान तब तजि दियो ॥
काम भोग तह संग न मै ऐसो कियो ॥
तब तुम कौ मै मिली तहा ते आइ कै ॥
हो अब तुम क्रयोहू मो कौ लेहु बचाइ कै ॥२०॥

दोहरा ॥

सुनि ऐसो बच मूड़ तब फूलि गयो मुसकाइ ॥
भेद न जान्यो बाल को आई भगहि फुराइ ॥२१॥

CHARITAR १७३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिहतरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥173॥3402॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मोकल गड़ मोकल न्रिप भारो ॥
पितर मात पछ्म उजियारो ॥
सुरता दे तिह सुता भणिजै ॥
जा सम रूप कवन त्रिय दिजै ॥१॥
अपनो तवन सुयंबर बनायो ॥
सभ भूपन को बोलि पठायो ॥
कासट तुरै जो ह्यां चड़ि आवै ॥
सोई राज सुता कह पावै ॥२॥

अड़िल ॥
सत गाड़न को बल जो नर कर मै धरै ॥
कासट तुरै ह्वै स्वार तुरत इह मगु परै ॥
लीक बडी लहु बिनु कर छूए जो करै ॥
हो सोई न्रिप बर आजु आन हम कौ बरै ॥३॥
जह पेरो साह हुतो तहीं खबरै गई ॥
अचरज कथा सुनि मोन सभा सभ ही भई ॥
तब हजरत त्रिय ऐसे बचन सुनाइयो ॥
हो हजरत को भ्रमु सभ ही तबै मिटाइयो ॥४॥
द्रभु जर लई मंगाइ बरौ ता को सु किय ॥
नहरि खोदि बेरिआ को बोलि तुरंग लिय ॥
लहु दीरघ तट लीकै काढि बनाइ कै ॥
हो जीति आपु लै दई हजरतहि जाइ कै ॥५॥

CHARITAR १७४ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौहतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥174॥3407॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

गजन देव राजा बडो गजनी को नरपाल ॥
कमल कुरंग सारस लजै लखि तिह नैन बिसाल ॥१॥
तहा दुरग दुरगम बडो तह पहुचै कह कौन ॥
जोनि चंद्र की न परै चीटी करै न गौन ॥२॥

चौपई ॥

चपल कला इक राज दुलारी ॥
सूरज लखी चंद्र न निहारी ॥
जोबन जेब अधिक तिह सोहै ॥
खग म्रिग जछ भुजंगन मोहै ॥३॥

दोहरा ॥

जोबन खा तिह दुरग कौ घेरा कियो बनाइ ॥
क्योहूं न सो टूटत भयो सभ करि रहे उपाइ ॥४॥

चौपई ॥

जोबन खा तह बीर बुलाए ॥
बैठि बैठि करि मंत्र पकाए ॥
कवन उपाइ आजु ह्यां कीजै ॥
जा ते दुरग तोरि करि दीजै ॥५॥
बलवंड खान सैन संग लियो ॥
तवन दुरग पर हला कियो ॥
गड़ के लोग तीर ते जाई ॥
मारि मारि करि कूकि सुनाई ॥६॥
गोली अधिक दुरग ते छूटी ॥
बहुत सूरमनि मूंडी फूटी ॥
गिरि गिरि गए बीर रन माही ॥
तन मै रही नैक सुधि नाही ॥७॥

भुजंग छंद ॥

कहूं बाज जूझे कहूं राज मारे ॥
कहूं ताज बाजीन के साज डारे ॥
किते छोर छेके किते छैल मोरे ॥
किते छत्र धारीन के छत्र तोरे ॥८॥
लगे ज्वान गोलीन के खेत जूझे ॥
चले भाजि केते नही जात बूझे ॥
भरे लाज केते हठी कोपि ढूके ॥
चहूं ओर ते मार ही मार कूके ॥९॥
चहूं ओर गाड़े गड़ै घेरि आए ॥
हठी खान कोपे लीए सैन घाए ॥
इते सूर सोहै उतै वै बिराजै ॥
मंडे क्रोध कै कै नही पैग भाजे ॥१०॥

दोहरा ॥

छोरि खेत पग न टरे भिरे सूरमा चाइ ॥
दसो दिसन गाडे गड़हि घेरि लियो भट आइ ॥११॥

भुजंग छंद ॥

किते गोलि गोला महा बान छोरे ॥
किते गरब धारीन के गरब तोरे ॥
परी मारि भारी कहा लौ बखानो ॥
उडी जान माखीरु की माखि मानो ॥१२॥

दोहरा ॥

बज्र बान बिछूअन भए बीर लरे रन मंड ॥
लगी तुपक की उर बिखै जूझे खा बलवंड ॥१३॥

चौपई ॥

बलवंड खा जब ही रन जूझे ॥
औ भट मुए जात नहि बूझे ॥
भजे सुभट आवत भए तहा ॥
जोबन खान खेत मै जहा ॥१४॥

दोहरा ॥

बलवंड खा को सुनि मुए संकि रहे सभ सूर ॥
बिन खयारे सीतल भए खाए जनक कपूर ॥१५॥
अड़िल ॥
चपल कला जोबन खा जबै निहारियो ॥
गिरी धरनि मुरछाइ काम सर मारियो ॥
पत्री लिखी बनाइ बिसिख सौ बाधि करि ॥
हो दीनो धनुज चलाइ धनुख द्रिड़ साधि करि ॥१६॥
सुनु कुअर जू अब जौ तुम मो कौ बरौ ॥
तौ मै देऊ बताइ राज गड़ को करौ ॥
प्रथम ब्याहि मो सौ करिबो ठहराइयै ॥
हो तैसहि पतिया सर सो बाधि चलाइयै ॥१७॥
ब्याह कुअर ता सौ करिबो ठहराइयो ॥

वैसहि पतिया सर सौ बाधि बगाइयो ॥
गड़ गाड़े के माझ परियो सर जाइ करि ॥
हो निरखि अंक तिह नारि लियो उर लाइ करि ॥१८॥

दोहरा ॥

बिसिख पहूच्यो मीत को पतिया लीने संग ॥
आंखे अति निरमल भई निरखत वा को अंग ॥१९॥
चपल कला सो जब कुअर ब्याह बद्यो सुख पाइ ॥
वैसहि सर सौ बहुरि लिखि पतिया दई चलाइ ॥२०॥

चौपई ॥

पतिया बिखै इहै लिखि डारो ॥
सुनो कुअर जू बचन हमारो ॥
प्रथमै बारि बंद इह कीजै ॥
ता पाछे या गड़ कौ लीजै ॥२१॥
अड़िल ॥
दसो दिसन घेरो या गड़ कौ डारियै ॥
ह्यां ते जो नर निकसै ताहि संघारियै ॥
आवै जो जन पास बंद तिह कीजियै ॥
हो बहुरो दुरग छुराइ छिनक मौ लीजियै ॥२२॥
दसो दिसन तिह गड़ कौ घेरा डारियो ॥
जो जन तह ते निकसै ताहि संघारियो ॥
खान पान सभ बंद प्रथम ता को कियो ॥
हो बहुरौ दुरग छिनाइ छिनक भीतर लियो ॥२३॥
लीनो दुरग छिनाइ गजनि सह घाइ कै ॥
लयो कुअरि कह जीति परम सुख पाइ कै ॥
भाति भाति रति करी प्रेम उपजाइ करि ॥
हो लपटि लपटि त्रिय गई सु कीने भोग भरि ॥२४॥

चौपई ॥

ऐसी प्रीत दुहन के भई ॥
अबला और बिसरि सभ गई ॥
एक नारि हसि बचनि उचारो ॥
बडो मूरख इह राव हमारो ॥२५॥
जिन त्रिय प्रिथम पिता कह घायो ॥
बहुरि आपनो राज गवायो ॥
ता सौ मूड़ प्रीति उपजाई ॥
न्रिप की निकट म्रितु जन आई ॥२६॥
पिता हनत जिह लगी न बारा ॥
तिह आगे क्या नाथ बिचारा ॥
जिन त्रिय अपनो राजु गवायो ॥
ता सौ मूरख नेह लगायो ॥२७॥

दोहरा ॥

जोबन खा सुनि ए बचन मन मै रोस बढाइ ॥
बडो मुनार उसारि त्रिय ता मै दई चिनाइ ॥२८॥

CHARITAR १७५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचहतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥175॥3435॥अफजूं॥

अड़िल ॥

जगबंदन इक साहु बडो सु बखानियै ॥
अप्रमान धनु जा के धाम प्रमानियै ॥
मती सु बीर त्रिया सुभ ताहि भनिजियै ॥
हो ससि कौ जा की प्रभा बदन की दिजियै ॥१॥

चौपई ॥

ता को नाथ विलाइत गयो ॥
आवत मद्र देस नहि भयो ॥
लिखि पतिया अबला बहु हारी ॥
निजु पति की नहि प्रभा निहारी ॥२॥
तिन त्रिय अधिक उपाइ बनाए ॥
तह ही रहे नाथ नहि आए ॥
लाल मिले बिनु बाल कुलाई ॥
सभ धन लै संग तही सिधाई ॥३॥
चंद्रभान जाटू बटिहायो ॥
लूटन माल बाल को आयो ॥
जो कर चड़ियो छीनि सभ लीनो ॥
रंच कंच तिह रहन न दीनो ॥४॥

भुजंग छंद ॥

जबै माल को लूटि कै कै सिधाए ॥
तबै कूकि कै नारि बैनयो सुनाए ॥
सुनो बैन भाई इहै काज कीजो ॥
रहो ह्यां नही दूरि को पैंड लीजो ॥५॥

चौपई ॥

जौ इह बात नाथ सुनि लैहै ॥
तुम ते जान एक नहि दैहै ॥
लैहै छीनि तरे के घोरा ॥
तुमरो रहियो जियब जग थोरा ॥६॥
इन इह बात चित नहि आनी ॥
मूड़ त्रिया बररात पछानी ॥
या को नाथ हमर का करि है ॥
सहस स्वार को एक संघारि है ॥७॥
लूटि सकल धनु जबै सिधाए ॥
तब अबला नर बसत्र बनाए ॥
कटि सो कसि क्रिपान तिय लीनी ॥
कसिस कमान करैरी कीनी ॥८॥
अरुन तुरंग अरूड़ित भई ॥
पवन गवन ते सीघ्र सिधई ॥
जाइ स्वार त्रिय सहंस्र हंकारो ॥
कै धनु देहु कि ससत्र संभारो ॥९॥
सभहिन कोप बैन सुनि कीनो ॥
ता कौ अधिक गारियन दीनो ॥
तो ते मूड़ कहा हम डरि है ॥

सहस स्वार एकल ते टरि है ॥१०॥
गहि धनु हाथ कोप त्रिय भरी ॥
तुरै धवाइ उठवनी करी ॥
एक बिसिख करि कोप चलयो ॥
बीस ज्वान बिचि ह्वै करि गयो ॥११॥
बहुरि तान धनु बान चलायो ॥
तब ही बीस घोरयन घायो ॥
एकहि बार प्रान बिनु भए ॥
गिरि गिरि मनो मुनारा गए ॥१२॥
तीजी बहुरि उठवनी करी ॥
छोडियो बान नैकु नहि डरी ॥
तीस बीर इक बार बिदारे ॥
मानो पवन पत्र से झरे ॥१३॥
एक बान जब बाल प्रहारै ॥
बीस तीस छित पै भट डारै ॥
चपल तुरै त्रिय चतुरि धवावै ॥
एक घाइ तन लगन न पावै ॥१४॥
जल मौ जनुक गंगेरी झमकै ॥
घन मै मनो दामिनी दमकै ॥
एकै बान बीस भट गिरै ॥
बखतर रहे न जेबा जिरे ॥१५॥
अड़िल ॥
बहुरि क्रोध करि बाल इक बान प्रहारियो ॥
बीस बाज बिच करि ह्वै बान पधारियो ॥
तरफराइ छित माझ सुभट बिनु सुध भए ॥
हो आए जगत न माझ न निजु जननी जए ॥१६॥
सहस सूरमा जब त्रिय दीए संघारि कै ॥
चंद्र भान रिसि भरियो सु तिनै निहारि कै ॥
चाबुक मारि तुरंग तुरंत धवाइयो ॥
हो त्रिय तिह हन्यो न बान तुरंगहि घाइयो ॥१७॥
जीति जीति करि बाल सूरमा बसि कए ॥
सभ सूरन के सीस सकल बुकचा दए ॥
जह ते धनु लै गए तजे तह आइ कै ॥
हो तुमल जुध करि नारि चरित्र दिखाइ कै ॥१८॥
एक सदन ते छोरि तुरै ता कौ दियो ॥
चंद्र भान जाटू कौ करि अपनो लियो ॥
चोर ब्रिति को तुरत तबै तिन त्यागियो ॥
स्री जदुपति के जाप बिखै अनुरागियो ॥१९॥

दोहरा ॥

चंद्र भान कौ जीति करि तह ते कियो पयान ॥
जहा आपनो पति हुतो तहा गई रुचि मान ॥२०॥

चौपई ॥

दुहकरि करम नारि तिन कीनो ॥
सभ ही जीति बैरियनु लीनो ॥
बहुरो मिली नाथ सौ जाई ॥
पिय कौ मद्र देस लै आई ॥२१॥

CHARITAR १७६ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छिहतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥176॥3456॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मैन लता अबला इक सुनी ॥
बेद पुरान सासत्र बहु गुनी ॥
बडे साहु की सुता भणिजै ॥
ता के को पटतर कहि दिजै ॥१॥
अड़िल ॥
मैन लता इक बडो जहाज मंगाइयो ॥
खान पान बहु दिन को बीच डराइयो ॥
छोरि नाथ को धाम आपु तित कौ चली ॥
हो लीने अपुने संग पचासिक सुभ अली ॥२॥
जब समुंद्र मै गई तबै तिन यौ कियो ॥
साठि हाथि को बासि मंगाइ तबै लियो ॥
ता सौ बैरक बाधी बडी बनाइ कै ॥
हो वा अंचर के संग दई आगि जराइ कै ॥३॥
हेरि आगि कह जियन अचंभव अति भयो ॥
जनुक समुंद्र के बीच दूसरो ससि वयो ॥
ज्यों ज्यों ताकह बैठि मलाह चलावहीं ॥
हो मछ कछ संगि हेरि चले तह आवही ॥४॥
चालिस कोस प्रमान जहाज जबाइयो ॥
मछ कछ सभ अधिक ह्रिदै सुख पाइयो ॥
या फल कौ हम अब ही पकरि चबाइ है ॥
हो बहुरि आपुने धाम सकल चलि जाइ है ॥५॥
मछ कछ अरु जीव बहुत मिलि जो धए ॥
तिन के बलु सौ अधिक रतन आवत भए ॥
मैन लता तब दीनी आगि बुझाइ कै ॥
हो मछ कछ चकि रहे अनिक दुख पाइ कै ॥६॥
तिन के ठटकत बारि तहा ते चलि गयो ॥
जीवत ही सभ रहे अधिक दुखित भयो ॥
मनि मानिक तब लीने बाल उठाइ कै ॥
हो जल जीवन कह ऐसे चरित्र दिखाइ कै ॥७॥

दोहरा ॥

कोट द्वारि करि मतस द्रिग बंध्रयो अपनो गाउ ॥
ता दिन तो ता कौ परियो मछली बंदर नाउ ॥८॥
खोजि खोजि तिह भूंमि ते काढे रतन अनेक ॥
रंक सभै राजा भए रहियो न दुरबल एक ॥९॥

CHARITAR १७७ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतहतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥177॥3465॥अफजूं॥*

चौपई ॥

एक सुमेर देवि बर नारी ॥

अति सुंदर प्रभु आपु सवारी ॥
जोति मती दुहिता तिह सोहै ॥
देव अदेवन को मनु मोहै ॥१॥
कोरि कुअरि तिह सवति सुनिजै ॥
बैर भाव तिन माझ भनिजै ॥
सो रानी कोऊ घात न पावै ॥
जिह छल सो तिह स्वरग पठावै ॥२॥
दुहिता बोलि निकट तिह लई ॥
सिछा इहै सिखावत भई ॥
जरिया खेलि कूक जब दीजौ ॥
नाम सवति हमरी कौ लीजौ ॥३॥
बोलि सवारी सुता खिलाई ॥
कोरि कुअरि पर कूक दिराई ॥
रानी अधिक कोप तब भई ॥
चड़ि झंपान मारन तिन गई ॥४॥
सवतिन खबरि ऐस सुनि पाई ॥
चड़ि रानी हमरे पर आई ॥
निजु कर ग्रिहन आगि लै दीनी ॥
जरि बरि बाट स्वरग की लीनी ॥५॥

दोहरा ॥

इह चरित्र इन रानियहि सवतनि दई संघारि ॥
राज पाट अपनो कियो दुसट अरिसट निवारि ॥६॥

CHARITAR १७८ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठतरवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥178॥3471॥अफजूं॥

चौपई ॥

साह बधू पछिम इक रहै ॥
कामवती ता कौ जग कहै ॥
ता कौ पति परदेस सिधारो ॥
बरख बीत गे ग्रिह न संभारो ॥१॥
सुधि पति की अबला तजि दीनी ॥
सामाननि की तिन गति लीनी ॥
ऊच नीच नहि ठौर बिचारै ॥
जो चाहै तिह साथ बिहारै ॥२॥
तब लौ नाथ तवन को आयो ॥
एक दूतियहि बोलि पठायो ॥
कोऊ मिलाइ मोहि त्रिय दीजै ॥
जो चाहै चित मै सोऊ लीजै ॥३॥
वा की नारि दूतियहि भाई ॥
आनि साहु को तुरत मिलाई ॥
साहु जबै तिन बाल पछानियो ॥
इह बचन ततकाल बखानियो ॥४॥
क्यो नहि चलित धाम पति मोरे ॥
बिछुरे बिते बरख बहु तोरे ॥
अब ही हमरे धाम सिधारो ॥

सभ ही सोक हमारो टारो ॥५॥
जब अबला यौ बचन उचारियो ॥
मूरख साहु कछू न बिचारियो ॥
भेद अभेद की बात न पाई ॥
निजु पति को लै धाम सिधाई ॥६॥

दोहरा ॥

काज कवन आई हुती कह चरित्र इन कीन ॥
भेद अभेद कछु न लखियो चलि घर गयो मतिहीन ॥७॥

CHARITAR १७९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥179॥3478॥अफजूं॥*

चौपई ॥

नैनोतमा नारि इक सुनी ॥
बेद पुरान सासत्र बहु गुनी ॥
जान्यो जब प्रीतम ढिग आयो ॥
भेद सहित त्रिय बचन सुनायो ॥१॥
सवैया ॥
पिय कियो परदेस पयान गए कतहूं उठि बंधव दोऊ ॥
हौ बिललात अनाथ भई इत अंतर की गति जानत सोऊ ॥
पूत रहे सिस मात पित कबहूं नहि आवत ह्यां घर खोऊ ॥
बैद उपाइ करो हमरो कछु आंधरी सासु निवास न कोऊ ॥२॥
भेस मलीन रहौ तब तै सिर केस जटान के जूट भए है ॥
ब्रयोगनि सी बिरहो घर ही घर हार सिंगार बिसार दए है ॥
प्राची दिसा प्रगटियो ससि दारुन सूरज पसचम असत भए है ॥
बैद उपाइ करो कछु आइ ममेस कहूं परदेस गए है ॥३॥
प्रास सो प्रात पटा से पटंबर पियरी परी परसे प्रतिपारे ॥
पास सी प्रीत कुप्रयोग सी प्राक्रित प्रेत से पानि परोसनिहारे ॥
पास परोसन पारध सी पकवान पिसाच सो पीर से प्यारे ॥
पाप सौ पौन प्रवेस करै जब ते गए पीय प्रदेस पियारे ॥४॥
प्रीतम पीय चले परदेस प्रिया प्रति मंत्र रही जकि कै ॥
पलकै न लगै पलका पै परै पछुतात उतै पति कौ तकि कै ॥
प्रति प्रात पखारि सभै तनु पाक पकावन काज चली थकि कै ॥
पति प्रेम प्रवेस कियो तन मै बिनु पावक पाक गयो पकि कै ॥५॥

चौपई ॥

जब इह भाति जारि सुन पायो ॥
इहै ह्रिदै भीतर ठहरायो ॥
मोहि बुलावत है बडभागी ॥
या की लगनि मोहि पर लागी ॥६॥
ता के पास तुरत चलि गयो ॥
बहु बिधि भोग कमावत भयो ॥
केल कमाइ पलटि ग्रिह आयो ॥
ता को भेद न काहू पायो ॥७॥

CHARITAR १८० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ असीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥180॥3485॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

निसिस प्रभा रानी रहै ता कौ रूप अपार ॥
स्वरग सिंघ सुंदर भए ता की रहै जुहार ॥१॥
अड़िल ॥
रानी ता के सदन मदन जुत आवई ॥
काम कलोल अमोल सु बोल कमावई ॥
ता सो भेव न कोऊ सके पछानि कै ॥
हो निजु राजा के तीर बखानै आनि कै ॥२॥
सवति तवन की हुती भेद तिन पाइयो ॥
निजु राजा पहि तब ही जाइ जताइयो ॥
सुनत राव ए बचन अधिक क्रुधित भयो ॥
हो अस तीखन गहि पान जात तित को भयो ॥३॥
सुन रानी बच न्रिप कह टरि आगै लियो ॥
बिहसि बिहस पति कै ऐसे उतर दियो ॥
मुख बोलै भईआ के जौ मै घर गई ॥
हो कहौ कहा घट तीया मै तुमरी भई ॥४॥
धरम भ्रात जा कौ कहि जु त्रिय बखानि है ॥
ता सौ काम कलोल न कबहूं ठानि है ॥
कही सवति की सवति न ऊपर मानियै ॥
हो इन महि रहत सिपरधा हिये पछानियै ॥५॥
केल करत जिह गहो सु जार उचारियै ॥
साधि खनत गहि चोर चोर करि मारियै ॥
बिनु नैनन के लहे कोप नहि ठानियै ॥
हो अरि की अरि पर कही न उर मो आनियै ॥६॥

चौपई ॥

या मै कहो कहा ह्वै गई ॥
मुख बोलै भईआ के गई ॥
तोर सवित मै कछु न बिगारियो ॥
क्यो न्रिप सो तै झूठ उचारियो ॥७॥
अड़िल ॥
कहा भयो जौ राव क्रिपा करि आइयो ॥
मै न सेज तुमरी ते पकरि मंगाइयो ॥
इतो कोप सुनि सवति न चित मौ धारियै ॥
हो बैर कैसोई होइ न ब्रिथा उचारियै ॥८॥

चौपई ॥

मूरख राव भेद का जानै ॥
रिपु की कही रिपु करि मानै ॥
साच राव के मुख पर कहियो ॥
मूरख नाह नाहि कछु लहियो ॥९॥
कह भयो मै इह साथ बिहारियो ॥
तेरो कछू न काज बिगारियो ॥
कै तहकीक त्रिया सिर कीजै ॥
नातर मीच मूंड पर लीजै ॥१०॥

सुनु राजा इह कछू न कहियै ॥
साच झूठ मेरो ही लहियै ॥
लहि साची मुहि साथ बिहारियो ॥
झूठी जानि चोर करि मारियो ॥११॥
तब राजै इह भाति बखानी ॥
रानी तू साची मै जानी ॥
तो पर झूठ सवति इन कहियो ॥
सो मै आजु साचु करि लहियो ॥१२॥

दोहरा ॥

सुनि रानी स्यानी बचन सीस रही निहुराइ ॥
सुघर होइ सो जानई जड़ को कहा उपाइ ॥१३॥
अड़िल ॥
जो चतरो नर होइ सु भेव पछानई ॥
मूरख भेद अभेद कहा जिय जानई ॥
ता तै हौहूं कछू चरित्र बनाइ हो ॥
हो या रानी के सहित न्रिपहि को घाइ हो ॥१४॥

चौपई ॥

मूरख कछू भेद नहि पायो ॥
साची को झूठी ठहरायो ॥
झूठी को साची करि मान्यो ॥
भेद अभेद कछू नहि जान्यो ॥१५॥

CHARITAR १८१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥181॥3500॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

वहै सवति ता की हुती जा को रूप अपार ॥
सुरपति से निरखत सदा मुख छबि भान कुमारि ॥१॥
अड़िल ॥
भान कला ऐसे बहु बरख बिताइ कै ॥
निसिस प्रभा की बात गई जिय आइ कै ॥
सोत राव तिह संग बिलोक्यो जाइ कै ॥
हो फिरि आई घर माझ दुहुन को घाइ कै ॥२॥

चौपई ॥

अधिक कोप करि खड़ग प्रहारियो ॥
दुहूअन चारि टूक करि डारियो ॥
मै इह जड़ सो भेद बतायो ॥
इह मोहु झूठी ठहरायो ॥३॥
सवति सहित राजा कौ घाई ॥
पौछि खड़ग बहुरो घर आई ॥
सोइ रही मन मै सुख पायो ॥
भए प्रात यौ कूकि सुनायो ॥४॥
रोइ प्रात भे बचन उचारे ॥

बैठे कहा राव जू मारे ॥
हमरे सुख सभ ही बिधि खोए ॥
यौ सुनि बैन सकल भ्रित रोए ॥५॥
म्रितक राव त्रिय सहित निहारियो ॥
तब रानी इह भाति उचारियो ॥
मो कह साथ राव के जारहु ॥
मोरे छत्र पुत्र सिर ढारहु ॥६॥
तब ता पै मंत्री सभ आए ॥
रोइ रोइ यौ बचन सुनाए ॥
छत्र पुत्र के सिर पर ढारो ॥
आज उचित नहि जरन तिहारो ॥७॥

दोहरा ॥

न्रिपति मरियो सिसु सुत रहियो तै जरि है दुख पाइ ॥
जिनि ऐसो हठ कीजियै राज बंस ते जाइ ॥८॥

चौपई ॥

सभन सुनत इह भाति उचारी ॥
जरन निमिति उठि तबै सिधारी ॥
तब मंत्रिन रानी गहि लई ॥
राज समग्री तिह सुत दई ॥९॥

दोहरा ॥

चरित चंचला ऐस करि त्रिय जुत न्रिपति संघारि ॥
मंत्रिन की राखी रही छत्र पुत्र सिर ढार ॥१०॥

CHARITAR १८२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बिआसीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥182॥3510॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहिर बटाला मौ बसै मैगल खान पठान ॥
मद पीवत निसु दिन रहै सदा रहत अग्यान ॥१॥

चौपई ॥

तब ही दिवस तीज को आयो ॥
सभ अबलनि आनंदु बढायो ॥
झूलति गीति मधुर धुनि गावहि ॥
सुनत नाद कोकिला लजावहि ॥२॥
उत घनघोर घटा घुहरावै ॥
इति मिलि गीत चंचला गावै ॥
उत ते दिपत दामिनी दमकै ॥
इत इन दसन कामनिन झमकै ॥३॥
रितु राज प्रभा इक राज दुलारनि ॥
जाहि प्रभा सम राज कुमारि न ॥
अप्रमान ता की छबि सोहै ॥
खग म्रिग राज भुजंगन मोहै ॥४॥

सो झूलत तिन खान निहारी ॥
गिरियो भूमि जनु लगी कटारी ॥
कुटनी एक बुलाइ मंगाई ॥
सकल ब्रिथा तिह भाख सुनाई ॥५॥

कबितु ॥

आई हुती बनि एक बाला राग माला सम मेरे ग्रिह माझ दीपमाला जनु वै गई ॥
बिछूआ की बिझक सो बिछू सो डसाइ मानो चेटक चलाइ निजु चेरो मोहि कै गई ॥
दसन की दिपत दिवाने देव दानौ कीने नैनन की कोर सौ मरोरि मनु लै गई ॥
कंचन से गात रवि थोरिक चिलचिलात दामनी सी कामनी दिखाई आनि दै गई ॥६॥

चौपई ॥

जौ मुहि तिह तू आनि मिलावै ॥
अपुने मुख मागे सौ पावै ॥
रुतिस प्रभा तनि कै रति करौं ॥
नातर मारि कटारी मरौं ॥७॥

दोहरा ॥

रुतिस प्रभा की अति प्रभा जब ते लखी बनाइ ॥
चुभि चित के भीतर रही मुख ते कही न जाइ ॥८॥
मो तो छबि न कही परै स्री रितु राज कुमारि ॥
जीभि मधुर ह्वै जात है बरनत प्रभा अपार ॥९॥

कबितु ॥

आंखि रस गिरियो ता ते आंब प्रगटत भए जिहवा रस हू ते जरदालू लहियतु है ॥
मुख रस हू कौ मधु पान कै बखानियत जा के नैक चाखे सदा जीयत रहियतु है ॥
नाक कौ निरखि निसिराट निसि राजा भयो जा की सभ जगत कौ जौन चहियतु है ॥
दातन ते भयो दाख दारिम बखानियत अधर ते भयो ताहि ऊख कहियतु है ॥१०॥

चौपई ॥

कुटनी बचन सुनत ए धाई ॥
ताहि झुलावन के मिसु ल्याई ॥
तब तिह आन खान गहि लीनो ॥
चकिचित चरित चंचला कीनो ॥११॥
तुमरे इही निमित मै आई ॥
अब फूलन मुहि दई दिखाई ॥
अब मुहि जान धाम कौ दीजै ॥
परसौं बोलि कलोल करीजै ॥१२॥
अति मद पान खान तुम कीजहु ॥
लपटि लपटि मो कहु सुख दीजहु ॥
परसौं अरध रात्रि मै ऐहौ ॥
तुमरी दुहिता के ढिग स्वैहौ ॥१३॥
यौ करि बोल खान तजि दीनी ॥
परसौ की चिंता चित कीनी ॥
तब रितु राज प्रभा चलि आई ॥
वा दुहिता ढिग सेज बिछाई ॥१४॥
सोए लोग धाम उठि गई ॥
सिमरत खान घरी सो भई ॥

निसु सिगरी तिह कह जगवायो ॥
खोजत ताहि सुता ढिग आयो ॥१५॥
रुतिस प्रभा दुहिता लखि धरी ॥
द्रिड़ गहि जाघ दोऊ रति करी ॥
हाइ हाइ करि रही पठानी ॥
मद पीए जड़ कछू न जानी ॥१६॥

दोहरा ॥

लपटि लपटि ता सौ रमियो रुतिस प्रभा तिह जानि ॥
मद उतरे तिह तजि दियो अपनी सुता पछानि ॥१७॥
धंन्य छत्रि जा को धरम स्री रितु राजि कुमारि ॥
संग सुता के कै मुझै गी पतिब्रता उबारि ॥१८॥
एक मदी दूजै तरुनि तीजे अति धन धाम ॥
पाप करे बिन क्योन बचै बचै बचावै राम ॥१९॥

CHARITAR १८३ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिरासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥183॥3529॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

पाडव के पाचौ सुत सूरे ॥
अरजुन भीम जुधिसटर रूरे ॥
नकुल अवर सहदेव भनिजै ॥
जा सम उपजियो कौन कहिजै ॥१॥
बारह बरख बनबास बितायो ॥
सोई बरख त्रैदसो आयो ॥
देस बिराट राज के गए ॥
सोऊ बरख बितावत भए ॥२॥

दोहरा ॥

जबै क्रीचकहि द्रुपदजा देखी नैन पसारि ॥
गिरियो मूरछना ह्वै धरनि मारि करियो बिसंभार ॥३॥

चौपई ॥

प्रगट भगनि तनु भेद जतायो ॥
मिलन द्रुपदजा को ठहरायो ॥
रानी पठै सदेसन दई ॥
कर ते पकरि करीचक लई ॥४॥

दोहरा ॥

करि कै करि को अधिक बलु अंचर गई छुराइ ॥
जनु करि हेरे स्वान कौ भजत म्रिगी अकुलाइ ॥५॥

चौपई ॥

तब अति कोप करीचक कयो ॥
राजा हुतो जहा तह अयो ॥

पाद प्रहार द्रुपद यहि कियो ॥
पाचो निरखि पंड जन लियो ॥६॥
अति ही कोप भीम तब भरियो ॥
राजै मने नैन सौ करियो ॥
बोल द्रुपदजा निकट सिखाई ॥
सौ क्रीचक सौ कहो बनाई ॥७॥

दोहरा ॥

चतुरि द्रुपदजा अति हुती अरु पति कहियो बनाइ ॥
एक बचन भाखियो हुतो बीसक कही सुनाइ ॥८॥

चौपई ॥

द्रुपदी यौ क्रीचक सौ कही ॥
तुम पै अनिक रीझि मै रही ॥
सूंनिसाल निसि कौ तुम ऐयहु ॥
काम भोग मुहि साथ कमैयहु ॥९॥
सूंनिसाल भीमहि बैठायो ॥
क्रीचक अरध रात्रि गै आयो ॥
तब ही पकरि टाग ते लियो ॥
टूक अनेक ताहि करि दियो ॥१०॥
प्रात समै क्रीचक रिसि भरे ॥
केस द्रोपती के द्रिड़ धरे ॥
याहि अगनि के बीच जरै है ॥
भ्रात गयो तह तोहि पठै है ॥११॥
गहि के केस ताहि लै चले ॥
क्रीचक बीर सूरमा भले ॥
तब ही कोप भीम अति भरियो ॥
गहि कै तार ब्रिछ करि धरियो ॥१२॥
जा कौ कोपि ब्रिछ की मारै ॥
ता को मूंड चौथि ही डारै ॥
काहूं पकरि टाग ते आवै ॥
किसू केस ते ऐंचि बिगावै ॥१३॥
कनिया बिखै क्रीचकन धारै ॥
बरत चिता भीतर लै डारै ॥
सहस पाच क्रीचक संग मारियो ॥
निजु नारी को प्रान उबारियो ॥१४॥

CHARITAR १८४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौरासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥184॥3543॥अफजूं॥

दोहरा ॥

एक बनिक की भारजा अकबरबाद मंझार ॥
देव दैत रीझै निरखि स्री रन रंग कुमारि ॥१॥

चौपई ॥

स्री अकबर आखेट सिधायो ॥

ता को रूप निरखि बिरमायो ॥
सखी एक तिह तीर पठाई ॥
ताहि आनि मुहि देहि मिलाई ॥२॥
तब चल सखी भवन तिह गई ॥
वा कौ भेद जतावत भई ॥
सो हजरति के धाम न आई ॥
हजरति जू ग्रिह लए बुलाई ॥३॥
हजरति जबै भवन तिह आयो ॥
ता अबला की सेज सुहायो ॥
तब रानी तिन बचन उचारे ॥
सुनहु साह प्रानन ते प्यारे ॥४॥
कहौ तो अबै डारि लघु आऊ ॥
बहुरि तिहारी सेज सुहाऊ ॥
यौ कहि जात तहा ते भई ॥
ग्रिह की ऐंचि किवरिया दई ॥५॥
पति कह जाइ सकल सुधि दई ॥
संग करि नाथे ल्यावत भई ॥
अति तब कोप बनिक को भयो ॥
छित्र उतारि हाथ मै लयो ॥६॥
हजरति को पनही सिर झारै ॥
लजत साह नहि बचन उचारै ॥
जूतनि मारि भोहरे दियो ॥
वैसहि दै दरवाजो लियो ॥७॥

दोहरा ॥

प्रात भए कुटवार के भई पुकारू जाइ ॥
काजी मुफती संग लै तहा पहूची आइ ॥८॥
चोर जार कै साध कउ साहु किधो पातिसाह ॥
आपन ही चलि देखियै ए काजिन को नाह ॥९॥

चौपई ॥

पति त्रिय बचन भाखि भजि गए ॥
हेरत ते अकबर कह भए ॥
हजरति लजत बचन नहि बोलै ॥
न्याइ रहियो सिर आंखि न खोलै ॥१०॥
जे कोई धाम किसी के जावै ॥
क्यो नहि ऐस तुरत फलु पावै ॥
जे कोऊ पर नारी सो पागै ॥
पनही इहा नरक तिह आगै ॥११॥
जब इह भाति हजरतिहि भयो ॥
बहुरि किसू के धाम न गयो ॥
जैसा किय तैसा फल पायो ॥
दुराचार चित ते बिसरायो ॥१२॥

CHARITAR १८५ — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥185॥3555॥अफजूं॥

दोहरा ॥

मद्र देस इक छत्रजा अचल कला तिह नाउ ॥
अधिक दरब ता के रहै बसत दयाल पुर गाउ ॥१॥

चौपई ॥

रवि जब ही असताचल गए ॥
प्राची दिसा चंद्र प्रगटए ॥
जारि दीवटै तसकर धाए ॥
ता के ताकि भवन कह आए ॥२॥

दोहरा ॥

ठाढि भए तिह बाल के सिर पर खड़ग निकारि ॥
कै धन देहि बताइ कै नह तुहि देहि संघारि ॥३॥

चौपई ॥

जब अबला ऐसे सुनि पायो ॥
कछूक धाम को दरबु दिखायो ॥
बहुरि कहियो मै दरबु दिखाऊं ॥
जौ मै दान जीव को पाऊं ॥४॥
सवैया ॥
काहे कौ आजु संघारत मो कह संग चलो बहु माल बताऊ ॥
राखि महाबति खान गए सभ ही इक बार सु ते हरि लयाऊ ॥
पूतन प्रोतन लौ सभ को छिन भीतरि आजु दरद्रि बहाऊ ॥
लीजहु लूटि सभै तुम ता कह मै अपनो नहि पान छुआऊ ॥५॥

चौपई ॥

सुनत बचन तसकर ते भए ॥
त्रिय कौ संग तहा लै गए ॥
जह कोठा दारू को भरियो ॥
तही जाइ तसकरन उचरियो ॥६॥

दोहरा ॥

अगनि बान सो बाधि त्रिय तह कौ दई चलाइ ॥
काल सभन तिन को हुतो परियो तही सर जाइ ॥७॥

चौपई ॥

तसकर जारि मसालै परे ॥
दारू बिखै अंगारे झरे ॥
सभ तसकर तब ही उड गए ॥
भूचर ते खेचर सो भए ॥८॥
दारू उडत चोरि उडि गए ॥
सभ ही फिरत गगन मौ भए ॥
दस दस कोस जाइ कर परे ॥
हाड गोड नहि मूंड उबरे ॥९॥
एकै बार चोर उड गए ॥
जीवत एक न बाचत भए ॥

इह चरित्र अबला तिह मारियो ॥
छल के अपनो धाम उबारियो ॥१०॥
इह छल सभ चोरन कह घाई ॥
बहुरै धाम आपनो आई ॥
इंद्र बिसन ब्रहमा सिव होई ॥
त्रिय चरित्र ते बचत न कोई ॥११॥

CHARITAR १८६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छिआसीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥186॥3566॥अफजूं॥*

चौपई ॥

काम कला कामनि इक सुनी ॥
बेद सासत्र भीतरि अति गुनी ॥
ता को पुत्र न आग्या मानै ॥
या ते मात कोप चित ठानै ॥१॥
कुबुधि बिखै दिनु रैनि गवावै ॥
मात पिता को दरबु लुटावै ॥
गुंडन साथ करै गुजराना ॥
करत कुबिरति पियत मद पाना ॥२॥
ता को भ्रात दुतिय सुभ कारी ॥
जूप रहित न कछू दुरचारी ॥
ता सौ नेह मात को रहै ॥
या कौ बेगि संघारो चहै ॥३॥
एक दिवस जब सो घर आयो ॥
सोत छापरी माझ तकायो ॥
टटिआ द्वार आगि दै दई ॥
सुत को मात जरावत भई ॥४॥
मात पूत कौ प्रथम जरायो ॥
रोइ रोइ सभ जगत सुनायो ॥
आगि लगाइ पानि कौ धाई ॥
मूरख बात न किनहूं पाई ॥५॥

CHARITAR १८७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥187॥3571॥अफजूं॥*

चौपई ॥

कंचन प्रभा जाटजा रहै ॥
अति दुतिवान ताहि जग कहै ॥
भरता एक प्रथम तिन कियो ॥
रुचियो न डारि फास हनि दियो ॥१॥
केतिक दिनन और पति करियो ॥
सोऊ न रुचियो कटारी मरियो ॥
मास बिखै औरै पति पायो ॥
सोऊ दै कै बिखु त्रिय घायो ॥२॥
चौथे नाथ नाइका कीनो ॥
ता कह हनि पंचम कह लीनो ॥

छठवे मारि सपतमो घायो ॥
असटम कै संग नेह लगायो ॥३॥
करम काल सोऊ नहि भायो ॥
जमधर भए ताहि तिन घायो ॥
ध्रिग ध्रिग जानि जगत तिह करियो ॥
हाहाकार सभन उचरियो ॥४॥
जब इह भाति सुनति त्रिय भई ॥
जानुक बिन मारे मर गई ॥
अब हौ जरो नाथ तन जाई ॥
इन सभहूंन चरित्र दिखाई ॥५॥
अरुन बसत्र धर पान चबाए ॥
लोग सभन को कूक सुनाए ॥
यौ कहि हाथि सिधौरे गहियो ॥
जरिबो साथ नाथ कै चहियो ॥६॥

दोहरा ॥

सपत नाथ निज करन हनि कियो सती को भेस ॥
ऊच नीच देखत तरनि पावक कियो प्रवेस ॥७॥
सपत नाथ निजु हाथ हनि असटम कौ गर लाइ ॥
सभ लोगन देखत जरी ढोल म्रिदंग बजाइ ॥८॥

CHARITAR १८८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठासीवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥188॥3579॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

भूप कला नामा रहै सुता साह की एक ॥
अधिक दरब ता के रहै दासी रहै अनेक ॥१॥

चौपई ॥

मिसरी को हीरा तिन लियो ॥
डबिया बिखै डारि करि दियो ॥
साहजहा जह सभा बनाई ॥
बहल बैठि तिह ओर सिधाई ॥२॥
अरध बजार बिखै जब गई ॥
सुंदर नरिक बिलोकत भई ॥
अधिक दरबु दै निकटि बुलायो ॥
निज गाडी के साथ लगायो ॥३॥
चलित चलित रजनी परि गई ॥
सूरज छप्यो चंद्र दुति भई ॥
बहल बिखै गहि बाह चड़ायो ॥
काम केल तिह संग उपजायो ॥४॥
ज्यो ज्यो बहल हिलोरे खावै ॥
उछरे बिना काज ह्वै जावै ॥
लखै लोग गाडी कर मारै ॥
भेद अभेद न कोऊ बिचारै ॥५॥
भाखि बैन ते बहल धवाई ॥
काम रीति करि प्रीति उपजाई ॥

भरि करि भोग बाम सौ कीनो ॥
बीच बजारन किनहूं चीनो ॥६॥

दोहरा ॥

केल करत इह चंचला तहा पहूची आइ ॥
साहजहा बैठे जहा नीकी सभा बनाइ ॥७॥

चौपई ॥

मिसरी के हीरा कर लियो ॥
लै हजरति के हाजर कियो ॥
साहजहा तिह कछू न चीनो ॥
तीस हजार रुपैया दीनो ॥८॥
इह छल सौ साहहि छलि गई ॥
उठी सभा आवत सोऊ भई ॥
पंद्रह सहस्र आपु त्रिय लीनो ॥
पंद्रह सहस्र मीत को दीनो ॥९॥

दोहरा ॥

साहजहा छलि मीत सौ काम कलोल कमाइ ॥
धाम आनि पहुचत भई सकियो न कोऊ पाइ ॥१०॥

CHARITAR १८९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥189॥3589॥अफजूं॥

चौपई ॥

इक दिन बाग चंचला गई ॥
हसि हसि बचन बखानत भई ॥
स्री निसि राज प्रभा त्रिय तहा ॥
ऐसी भाति उचारियो उहा ॥१॥
जौ राजे ते बारि भिराऊ ॥
अपनी झाटै सभै मुंडाऊ ॥
तब त्रिय होड सकल तुम हारहु ॥
निजु नैनन इह चरित निहारहु ॥२॥
यौ कहि कै सुभ भेस बनायो ॥
देव अदेवन को बिरमायो ॥
चरित्र सिंघ राजा जब आयो ॥
सुनि इह बचन चंचला पायो ॥३॥
बैठ झरोखा दई दिखाई ॥
राजा रहे रूप उरझाई ॥
एक बार इह कौ जौ पाऊ ॥
जनम सहस्र लगे बलि जाऊ ॥४॥
पठै सहचरी लई बुलाई ॥
प्रीति सहित रस रीतुपजाई ॥
अबला तब मुरछित ह्वै गई ॥
पानि पानि उचरत मुख भई ॥५॥
उठ करि आपु राव तब गयो ॥

ता कह पानि पयावत भयो ॥
पानि पिए बहुरे सुधि भई ॥
राजै फिरि चुंबन तिह लई ॥६॥
जब सुधि मै अबला कछु आई ॥
बहुरि काम की केल मचाई ॥
दोऊ तरन न कोऊ हारै ॥
यौ राजा तिह साथ बिहारै ॥७॥
बहुरि बाल इह भाति उचारी ॥
सुनो राव तुम बात हमारी ॥
त्रिय की झाटि न मूंडी जाई ॥
बेद पुरानन मै सुनि पाई ॥८॥
हसि करि राव बचन यौ ठान्यो ॥
मै अपुने जिय साच न जान्यो ॥
तै त्रिय हम सो झूठ उचारी ॥
हम मूंडैगे झाटि तिहारी ॥९॥
तेज असतुरा एक मंगायो ॥
निज कर गहि कै राव चलायो ॥
ता की मूंडि झाटि सभ डारी ॥
दै कै हसी चंचला तारी ॥१०॥

दोहरा ॥

पानि भरायो राव ते निजु कर झाटि मुंडाइ ॥
होड जीत लेती भई तिन अबलान दिखाइ ॥११॥

CHARITAR १९० — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ नबवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥190॥3600॥अफजूं॥*

चौपई ॥

एक लहौर छत्रिजा रहै ॥
राइ प्रबीन ताहि जग कहै ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
देव जननि को लखि मनु लाजै ॥१॥

दोहरा ॥

एक मुगल तिह न्रहात कै रीझ्यो अंग निहारि ॥
गिरियो मूरछना ह्वै धरनि बिरहा तन गयो मारि ॥२॥

चौपई ॥

धाम आन इक सखी बुलाई ॥
बात सभै तिह तीर जताई ॥
जौ मो कौ तू ताहि मिलावै ॥
अपुने मुख मागै सो पावै ॥३॥
तब सो सखी धाम तिह गई ॥
ऐसो बचन बखानत भई ॥
माता तोरि बुलावत तो कौ ॥
ता ते पठै दयो ह्यां मो कौ ॥४॥

यौ जब बचन ताहि तिह कहियो ॥
मिलब सुता माता सौ चहियो ॥
डोरी बिखै ताहि बैठारियो ॥
दर परदन द्रिड़ ऐचि सवारियो ॥५॥
ता कौ द्रिसटि कछू नहि आवै ॥
कुटनी चहै जहा लै जावै ॥
मात नाम लै ताहि सिधाई ॥
लै कै धाम मुगल के आई ॥६॥
परदा तही उघारा जाई ॥
तास बेग जह सेज सुहाई ॥
बहिया आनि मुगल तब गही ॥
चित मै चक्रित चंचला रही ॥७॥
मेरे धरम लोप अब भयो ॥
तुरक अंग सौ अंग भिटयो ॥
ता ते कछू चरित्र बनाऊ ॥
जा ते छूटि मुगल ते जाऊ ॥८॥
अब आइसु तुमरो जौ पाऊ ॥
सभ सुंदर सिंगार बनाऊ ॥
बहुरि आइ तुम साथ बिहारो ॥
तुमरो चित को सोक निवारो ॥९॥

दोहरा ॥

हार सिंगार बनाइ कै केल करौ तव संग ॥
बहुरि तिहारे ग्रिह बसौ ह्वै तुम त्रिय अरधंग ॥१०॥

चौपई ॥

यौ कहि बचन तहा ते गई ॥
ग्रिह कौ आगि लगावत भई ॥
कुटनी सहित मुगल कौ जारियो ॥
बाल आपनो धरम उबारियो ॥११॥

CHARITAR १९१ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकयानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥191॥3611॥अफजूं॥

दोहरा ॥

तेज सिंघ राजा बडो अप्रमान जिह रूप ॥
गान कला ता की सखी रति के रहै सरूप ॥१॥

चौपई ॥

राजा को ता सौ हित भारो ॥
दासी ते रानी करि डारो ॥
जैसे करै रसाइन कोई ॥
ताबै सौ सोना सो होई ॥२॥
अड़िल ॥
रैनि दिना तिह धाम राव जू आवई ॥
काम केल निस दिन तिस संग कमावई ॥

दास एक पर सो दासी अटकति भई ॥
हो पति की प्रीति बिसारि तबै चित ते दई ॥३॥
तिल चुगना पर गान कला अटकत भई ॥
न्रिप की प्रीति बिसारि तुरत चित ते दई ॥
जो दासी सौ प्रेम पुरखु कोऊ ठानई ॥
हो ध्रिग ध्रिग ता कौ सभ ही लोक बखानई ॥४॥
संग दासी के दास कहियो मुसकाइ कै ॥
संग हमारे चलो प्रीति उपजाइ कै ॥
काम केल करि जीहैं कछू न लीजियै ॥
हो गान कला जू बचन हमारो कीजियै ॥५॥
उठ दासी संग चली प्रीति उपजाइ कै ॥
न्रिप की ओर निहारि न रही लजाइ कै ॥
जो दासी सौ प्रेम पुरख उपजावई ॥
हो अंत स्वान की म्रितु मरै पछुतावई ॥६॥
चारि पहर मै चारि कोस मारग चलियो ॥
जो कंद्रप को द्रप हुतो सभु ही दलियो ॥
चहूं ओर भ्रमि भ्रमि ते ही पुर आवही ॥
हो गान कला तिल चुगन न पैडो पावही ॥७॥
अधिक स्रमित ते भए हारि गिरि कै परै ॥
जनुक घाव बिनु कीए आप ही ते मरै ॥
अधिक छुधा जब लगी दुहुनि कौ आइ कै ॥
हो तब दासी सौ दास कहियो दुख पाइ कै ॥८॥
गान कला तुम परो सु बुरि अपुनी करो ॥
खरि को टुकरा हाथ हमारे पै धरो ॥
दास जबे खैबे कौ कछू न पाइयो ॥
हो अधिक कोप तब चित के बिखै बढाइयो ॥९॥
मार कूटि दासी को दयो बहाइ कै ॥
आपन गयो फल चुगन महा बन जाइ कै ॥
बेर भखत ता कौ हरि जछ निहारियो ॥
हो तिल चुगना को पकर भछ करि डारियो ॥१०॥
बहत बहत दासी सरिता महि तहि गई ॥
जहा आइ स्वारी न्रिप की निकसत भई ॥
निरखि प्रिया राजा तिह लियो निकारि कै ॥
हो भेद अभेद न मूरख सकियो बिचारि कै ॥११॥

चौपई ॥

दासी काढ नदी ते लियो ॥
बैठ तीर ऐसे बच कियो ॥
किह निमित कै ह्यां तै आई ॥
सो कहियै मुहि प्रगट जताई ॥१२॥
जब तुम अखेटकहि सिधाए ॥
बहु चिर भयो ग्रिह कौ नहि आए ॥
तुम बिनु मै अतिहि अकुलाई ॥
ता ते बन गहिरे मो आई ॥१३॥
जब मै अधिक त्रिखातुर भई ॥
पानि पिवन सरिता ढिग गई ॥
फिसलियो पाव नदी मौ परी ॥
अधिक क्रिपा कर तुमहि निकरी ॥१४॥

दोहरा ॥

नीच संग कीजै नही सुनहो मीत कुमार ॥
भेड पूछि भादौ नदी को गहि उतरियो पार ॥१५॥
पानी उदर ता कौ भरियो दास नदी गयो डारि ॥
बिनु प्रानन अबला भई सकियो न न्रिप बीचारि ॥१६॥
फल भछत जछन गहियो दास नास को कीन ॥
दासनि कै संग दोसती मति करियहु मतिहीन ॥१७॥

CHARITAR १९२ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥192॥3628॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

तिरदसि कला एक बर नारी ॥
चोरन की अति ही हितकारी ॥
जहा किसू का दरबु तकावै ॥
हींग लगाइ तहा उठि आवै ॥१॥
हींग बास तसकर जह पावै ॥
तिसी ठौर कह साधि लगावै ॥
तिह ठा रहै साहु इक भारी ॥
त्रिदसि कला ताहू सो बिहारी ॥२॥
हींग लगाइ त्रिय चोर लगाए ॥
करते केल साहु चित आए ॥
ता सौ तुरत खबरि त्रिय करी ॥
मीत तिहारी मात्रा हरी ॥३॥
चोर चोर तब साहु पुकारियो ॥
अरध आपनो दरबु उचारियो ॥
दुहूंअन ताहि हितू करि मान्यो ॥
मूरख भेद न काहू जान्यो ॥४॥
अरध बाटि चोरन तिह दीनो ॥
आधो दरबु साहु ते लीनो ॥
दुहूंअन ताहि लखियो हितकारी ॥
मूरख किनूं न बात बिचारी ॥५॥
चोर लाइ पाहरू जगाए ॥
इह चरित्र ते दोऊ भुलाए ॥
तसकर कहै हमारी नारी ॥
साहु लख्यो मोरी हितकारी ॥६॥

दोहरा ॥

चंचलान के चरित कौ सकत न कोऊ पाइ ॥
वह चरित्र ता कौ लखै जा के स्याम सहाइ ॥७॥

CHARITAR १९३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥193॥3635॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

देवरान हंडूर को राजा एक रहै ॥

नारा को होछा घनो सभ जग ताहि कहै ॥१॥
एक दिसारिन सौ रहै ता की प्रीति अपार ॥
तिन न बुलायो धाम को आपु गयो बिसंभार ॥२॥
अड़िल ॥
जब आयो न्रिप धाम दिसारिनि जानियो ॥
निजु पति सौ सभ ही तिन भेद बखानियो ॥
खात बिखै राजा को गहि तिन डारियो ॥
हो पकरि पानही हाथ बहुत बिधि मारियो ॥३॥
प्रथम केल करि न्रिप कौ धाम बुलाइयो ॥
बनी न ता सौ पति सो भेद जताइयो ॥
पनिन मारि खत डार उपर काटा दए ॥
हो चित मौ त्रास बिचारि पुरखु त्रिय भजि गए ॥४॥

चौपई ॥

प्रात सभै खोजन न्रिप लागे ॥
रानिन सहित सोक अनुरागे ॥
खतिया परे राव जू पाए ॥
तह ते काढि धाम लै आए ॥५॥

CHARITAR १९४ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चुरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥194॥3640॥अफजूं॥

दोहरा ॥

नौकोटी मरवार के जसवंत सिंघ नरेस ॥
जा की मानत आनि सभ रघुबंसीस्वर देस ॥१॥

चौपई ॥

मानमती तिह की बर नारी ॥
जनुक चीर चंद्रमा निकारी ॥
बितन प्रभा दूजी तिह रानी ॥
जा सम लखी न किनूं बखानी ॥२॥
काबल दरो बंद जब भयो ॥
लिखि ऐसे खा मीर पठयो ॥
अवरंग बोलि जसवंतहि लीनो ॥
तवनै ठौर भेजि कै दीनो ॥३॥
अड़िल ॥
छोरि जहानाबाद तहा जसवंत गयो ॥
जो कोऊ याकी भयो संघारत तिह भयो ॥
आइ मिलियो ता कौ सो लियो उबारि कै ॥
हो डंडिया बंगसतान पठान संघारि कै ॥४॥
जीव अनमनो कितक दिनन ता को भयो ॥
ता ते जसवंत सिंघ न्रिपति सुर पुर गयो ॥
द्रुमति दहन अधतम प्रभा तह आइ कै ॥
हो तरुनि इत्रयादिक त्रिय सभ जरी बनाइ कै ॥५॥
डीक अगनि की उठी रानियन यौ कियो ॥
नमसकार करि सपत प्रदछिन कौ दियो ॥
कूदि कूदि करि परी नरेर नचाइ कै ॥

हो जनुक गंग के माझ अपछरा आइ कै ॥६ ॥

दोहरा ॥

बितन कला दुतिमान मति चली जरन के काज ॥
दुरग दास सुनि गति तिसै राखियो कोटि इलाज ॥७ ॥
मेड़तेस थारे उदर सुनि रानी मम बैन ॥
मै न मिलौ हजरति तनै जासा अपने ऐन ॥८ ॥

चौपई ॥

तब हाडी पति सौ नहि जरी ॥
लरिकन की आसा जिय धरी ॥
छोरि पिसौर दिली कौ आए ॥
सहिर लहौर पूत दो जाए ॥९ ॥
जब रानी दिली मौ गई ॥
हजरति कौ ऐसी सुधि भई ॥
सोऊअन कहियो इनै मुहि दीजै ॥
तुम मनसब जसवंत को लीजै ॥१० ॥
रनियन को सऊअन नहि दयो ॥
हजरति सैन पठावत भयो ॥
रनछोरै इह भाति उचारो ॥
नर को भेस सभै तुम धारो ॥११ ॥
खान पुलाद जबै चड़ि आए ॥
तब रनियन यौ बचन सुनाए ॥
हमै नगज सैना मौ दीजै ॥
हिंदू धरम राखि करि लीजै ॥१२ ॥
नावन कौ सुभ वारो दियो ॥
बालन सहित देस मगु लियो ॥
रजपूतन रूमाल फिराए ॥
हम मिलने हजरति कौ आए ॥१३ ॥
तिन कौ किनी न चोटि चलाई ॥
इह रानी हजरति पह आई ॥
तुपक तलो तै जबै उबरे ॥
तब ही काढि क्रिपानै परे ॥१४ ॥
जौनै सूर सरोही बहै ॥
जैबो टिकै न बखतर रहै ॥
एकै तीर एक असवारा ॥
एकै घाइ एक गज भारा ॥१५ ॥
जा पर परै खड़ग की धारा ॥
जनुक बहे बिरछ पर आरा ॥
कटि कटि सुभट धरनि पर परही ॥
चटपट आनि अपछरा बरही ॥१६ ॥

दोहरा ॥

रनछोरै रघुनाथ सिंघ कीनो कोप अपार ॥
साह झरोखा के तरे बाहत भे हथियार ॥१७ ॥

भुजंग छंद ॥

कहूं धोप बाके कहूं बान छूटै ॥

कहूं बीर बानीन के बकत्र टूटै ॥
कहूं बाज मारे गजाराज जूझै ॥
कटे कोटि जोधा नहीं जात बूझे ॥१८॥
अड़िल ॥
खाइ टाकि आफूऐ राज सभ रिसि भरे ॥
पोसत भाग सराब पान करि अति लरे ॥
साह झरोखा तरै चरित्र दिखाइ कै ॥
हो रनछोरा सुर लोक गए सुख पाइ कै ॥१९॥
रनछोरहि रघुनाथ निरखि करि रिसि भरियो ॥
ता ते तुरै धवाइ जाइ दल मै परियो ॥
जा कौ बहै सरोही रहै न बाज पर ॥
हो गिरै मूरछना खाइ तुरत सो भूमि पर ॥२०॥
धनि धनि औरंगसाह तिनै भाखत भयो ॥
घेरहु इन कौ जाइ दलहि आइस दयो ॥
जो ऐसे दो चार और भट धावही ॥
हो बंक लंक गड़ जीति छिनिक मो ल्यावही ॥२१॥
हाकि हाकि करि महा बीर सूरा धए ॥
ठिला ठिली बरछिन सौ करत तहा भए ॥
कड़ाकड़ी मैदान मचायो आइ कर ॥
हो भाति भाति बादित्र अनेक बजाइ कर ॥२२॥

चौपई ॥

तुमल जुध मचत तह भयो ॥
लै रघुनाथ सैन समुहयो ॥
भाति भाति सो बजे नगारे ॥
खेति मंडि सूरमा हकारे ॥२३॥
गहि गहि ससत्र सूरमा धाए ॥
देव अदेव बिलोकन आए ॥
जा पर दोइ करंधर धरै ॥
एक सुभट ते दो दो करै ॥२४॥
जा कै अंग सरोही बही ॥
ता की ग्रीव संग नहि रही ॥
जा कै लगियो कुहकतो बाना ॥
पलक एक मै तजै पराना ॥२५॥
जा कै घाइ गुरज को लागियो ॥
ता को प्रान देह तजि भागियो ॥
हाहाकार पखरिया करही ॥
राठौरन के पाले परही ॥२६॥
सवैया ॥
आनि परे रिसि ठानि रठौर चहूं दिस ते कर आयुध लीने ॥
बीर करोरिन के सिर तोरि सु हाथन को हलकाहिन दीने ॥
रुंड परे कहूं तुंड न्रिपान के झुंड हयान के जात न चीने ॥
कंबर के बहु टंबर अंबर अंबर छीनि दिगंबर कीनै ॥२७॥

चौपई ॥

ऐसी भाति सु भट बहु मारे ॥
रघुनाथो सुर लोक सिधारे ॥
स्वामि काज के प्रनहि निबाहियो ॥
हडियहि पुरे जोध पहुचायो ॥२८॥

दोहरा ॥

अति बरि कै भारी जुझयो तनक न मोरियो अंग ॥
सु कबि काल पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥२९॥

CHARITAR १९५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सत ॥195॥3669॥अफजूं॥*

चौपई ॥

चंद्रपुरी नगरी इक सुनी ॥
अप्रतिम कला रानी बहु गुनी ॥
अंजन राइ बिलोक्यो जब ही ॥
हरअरि सर मारियो तिह तब ही ॥१॥
ता कौ धाम बोलि करि लियो ॥
काम केल ता सौ द्रिड़ कियो ॥
बहुरि जार इह भाति उचारो ॥
जिनि मति लखि पति हनै तुमारे ॥२॥
त्रियो वाच ॥
तुम चित मै नहि त्रास बढावो ॥
हम सौ द्रिड़ करि केल कमावो ॥
मै तुहि एक चरित्र दिखैहौ ॥
ता ते तुमरो सोक मिटैहौ ॥३॥

दोहरा ॥

पति देखत तो सौ रमौ ग्रिह को दरबु लुटाइ ॥
न्रिप को सीस झुकाइ हौ पगन तिहारे लाइ ॥४॥

चौपई ॥

तुम सभ जोग भेस कौ करो ॥
मोरी कही कान मै धरो ॥
मूक मंत्र कछु याहि सिखावहु ॥
जा ते या को गुरू कहावहु ॥५॥
तब तिन काम जार सोऊ कियो ॥
मूक मंत्र राजा को दियो ॥
आपन ता कौ गुरू कहायो ॥
भेद अभेद राव नहि पायो ॥६॥
जब राजा अंतहपुर आए ॥
तब रानी यौ बचन सुनाए ॥
गुर जु भ्रमावै राइ न भ्रमियै ॥
भली बुरी गुर करे सु छमियै ॥७॥
जो गुर ग्रिह को दरबु चुरावै ॥
सौक त्रिया तन केल कमावै ॥
जो कुपि करै खड़ग को वारा ॥
जो सिख भ्रमत लहै सो मारा ॥८॥
जिन नै मंत्र कछू जिह दयो ॥
तिन गुर मोल सिख को लयो ॥
भगनि मात जौ रमत निहरीयै ॥

सीस झुकाइ रोस नहि करीयै ॥९ ॥

दोहरा ॥

सभा परब भीतर सुनी जम की कथा रसाल ॥
ब्रयासासिन सुक बकत्र ते सो तुहि कहौ उताल ॥१० ॥
जम राजा रिखि एक को घर मै कियो पयान ॥
मात भगनि रिखि बाल सौ रति मानी रुचि मान ॥११ ॥

चौपई ॥

जब रिखि चलि अपुने ग्रिह आयो ॥
त्रिय सौ रमत पुरख लखि पायो ॥
धरम बिचार न तिह कछु कहियो ॥
तिह पग माथ छूआवन चहियो ॥१२ ॥
सिर मौ चरन छुअत धर रहियो ॥
धंन्य धंन्य ता कौ जम कहियो ॥
मै हौ काल जगत जिह घायो ॥
तेरो धरम बिलोकन आयो ॥१३ ॥
सुनत हुतौ तैसो तुहि देखियो ॥
धरम सकल तुमरौ अवरेखियो ॥
तोरे बिखै कपट कछु नाही ॥
यौ मै लहियो साचु मन माही ॥१४ ॥

दोहरा ॥

निरख सतता बिप्र की मन मै मोद बढाइ ॥
जियन मुकति ता कौ दियो काल दान बर दाइ ॥१५ ॥
न्रिप कौ प्रथम प्रबोध करि जारहि लयो बुलाइ ॥
प्रगटि खाट डसवाइ कै भोग कियो सुख पाइ ॥१६ ॥

चौपई ॥

तब लौ आप राव जू आयो ॥
त्रिय सौ रमत जार लखि पायो ॥
कथा संभारि वहै चुप रहियो ॥
तिन कौ कोप बचन नहि कहियो ॥१७ ॥
चरन छुअन ता के चित चहियो ॥
वैसहि जार भजत त्रिय रहियो ॥
तब यौ जारि काढि करि दियो ॥
मूरख सीस न्याइ करि गयो ॥१८ ॥
जड़ जान्यो मुहि गुरू भ्रमायो ॥
भेद अभेद कछू नहि पायो ॥
इह चरित्र अबला छलि गई ॥
रति करि माथ टिकावत भई ॥१९ ॥

दोहरा ॥

पति देखत रति मानि कै न्रिप को माथ टिकाइ ॥
धन दीनो सभ प्रीतमहि ऐसे चरित दिखाइ ॥२० ॥

CHARITAR १९६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छिआनवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥196॥3689॥अफ्जूं॥*

चौपई ॥

त्रिय रनरंग मती इक कहियै ॥
ता सम अवर न रानी लहियै ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
जा को निरख चंद्रमा लाजै ॥१॥
एक दुरग तिन बडौ तकायो ॥
यहै रानियहि मंत्रि उपजायो ॥
डोरा पाच सहंस्र सवारे ॥
ता मै पुरख पाच सै डारै ॥२॥
कछू आप कौ त्रास जतायो ॥
एक दूत द्रुग साहि पठायो ॥
ठउर कबीलन कौ ह्यां पाऊ ॥
मै तुरकन सौ खड़ग बजाऊ ॥३॥
ते सुनि बैन भूलि ए गए ॥
गड़ मै पैठन डोरा दए ॥
कोट द्वार के जबै उतरे ॥
तब ही काढि क्रिपानै परे ॥४॥
समुह भयो तिन सै सो मारियो ॥
भाजि चलियो सो खेदि निकारियो ॥
इह चरित्र दुरगति द्रुग लियो ॥
तह ठा हुकम सु आपनो कियो ॥५॥

CHARITAR १९७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥197॥3694॥अफ्जूं॥*

चौपई ॥

संख कुअर सुंदरिक भनिजै ॥
एक राव के साथ रहिजै ॥
एक बोलि तब सखी पठाई ॥
सोत नाथ सो जात जगाई ॥१॥
ताहि जगात नाथ तिह जागियो ॥
पूछन तवन दूतियहि लागियो ॥
याहि जात लै कहा जगाई ॥
तब तिन यौ तिह साथ जताई ॥२॥
मोरे नाथ जनाने गए ॥
चौकी हितहि बुलावत भए ॥
ता ते मै लैने इह आई ॥
सो तुम सौ मै भाखि सुनाई ॥३॥

दोहरा ॥

सोत जगायो नाथ तिह भुज ता की गहि लीन ॥
आनि मिलायो न्रिपत सौ सकियो न जड़ कछु चीन ॥४॥

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥198॥3698॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

रतन सैन राना रहै गड़ि चितौर के माहि ॥
रूप सील सुचि ब्रतन मै जा सम कह जग नाहि ॥१॥

चौपई ॥

अधिक सूआ तिन एक पड़ायो ॥
ताहि सिंगलादीप पठायो ॥
तह ते एक पदमिनी आनी ॥
जा की प्रभा न जात बखानी ॥२॥
जब वह सुंदरि पान चबावै ॥
देखी पीक कंठ मै जावै ॥
ऊपर भवर भ्रमहि मतवारे ॥
नैन जान दोऊ बने कटारे ॥३॥
ता पर राव असकति अति भयो ॥
राज काज सभ ही तजि दयो ॥
ता की निरखि प्रभा कौ जीवै ॥
बिनु हेरे तिह पान न पीवै ॥४॥

दोहरा ॥

राघौ चेतनि दो हुते मंत्री ताहि अपार ॥
निरखि राव तिह बसि भयो ऐसो कियो बिचार ॥५॥

चौपई ॥

ता की प्रतिमा प्रथम बनाई ॥
जा सम देव अदेव न जाई ॥
जंघहु ते तिल तिह लिखि डरियो ॥
अतिभुत करम मंत्रियन करियो ॥६॥
जब बचित्र न्रिप चित्र निहारै ॥
बैठि सभा कछु काज सवारै ॥
ता के तिलहि बिलोकियो जब ही ॥
भरम बढियो राजा कै तब ही ॥७॥
तब न्रिप तिन मंत्रिन गहि मारियो ॥
इन रानी सौ काज बिगारियो ॥
दिब्रय द्रिसटि इन के कत होई ॥
केल करे बिनु लखै न कोई ॥८॥
जब मंत्री दोऊ न्रिप मारियो ॥
साह तनै तिन पूत पुकारियो ॥
एक चितउर पदुमिनि नारी ॥
जा सम कान सुनी न निहारी ॥९॥
अड़िल ॥
तनिक भनक पदुमिनि जब सह कानन परी ॥
अमित सैन लै संग चड़त तित कौ करी ॥
गड़हि गिरद करि जुध बहुत भातिन करियो ॥
हो जैन लावदी तबै चित मै रिसि भरियो ॥१०॥

चौपई ॥

निजु करि लाइ आंब तिन खाए ॥
गड़ चितौर हाथ नहि आए ॥
तब तिन साह दगा यौ कियो ॥
लिखि कै लिखो पठै इक दियो ॥११॥
सुनु राना जी मै अति हारो ॥
अब छोडत हौ दुरग तिहारो ॥
एक स्वार सौ मै ह्यां आऊ ॥
गड़िहि निहारि घरहि उठि जाऊ ॥१२॥
राना बात तबै यह मानी ॥
भेद अभेद की रीति न जानी ॥
एक स्वार संग लै तह गयो ॥
ता कौ संग अपने करि लयो ॥१३॥
जो जो द्वार उतरत गड़ आवै ॥
तही तही सिरपाउ बधावै ॥
सपत द्वार उतरत जब भयो ॥
तब ही पकरि नराधिप लयो ॥१४॥
ऐसी भाति साहि छल कीनो ॥
मूरख भेद अभेद न चीनो ॥
जब लंघि सभ द्रुग द्वारन आयो ॥
तब ही बाधि तवन कौ ल्यायो ॥१५॥

दोहरा ॥

जब राना छल सौ गहियो कहियो हनत है तोहि ॥
नातर अपनी पदुमिनी आनि दीजियै मोहि ॥१६॥

चौपई ॥

तब पदुमिनि इह चरित बनायो ॥
गौरा बादिल निकट बुलायो ॥
तिन प्रति कहियो कहियो मुरि कीजै ॥
हजरति साथ ज्वाब यौ दीजै ॥१७॥
असट सहस पालकी सवारो ॥
असट असट ता मै भट डारो ॥
गड़ लगि लिआइ सभन तिन धरो ॥
तुम हजरति सौ ऐस उचरो ॥१८॥
एक बसत्र हमरो तुम लीजै ॥
प्रथम पालकी मै धरि दीजै ॥
ता पर भवर गुंजारत जै है ॥
भेद अभेद लोक नहि पै है ॥१९॥
तब गोरै बादिल सोई कियो ॥
जिह बिधि मंत्र पदुमिनी दियो ॥
गड़ के लहत डोरिका धरी ॥
पदुमिनि अग्र पालकी करी ॥२०॥

दोहरा ॥

पदमिनि के पट पर घने भवर करै गुंजार ॥
लोक सभै पदुमिनि लखै बसत्र न सकै बिचारि ॥२१॥

चौपई ॥

ता मै डारि लुहारिक लयौ ॥
ता कौ बसत्र तवन पर दयौ ॥
छैनी और हथौरा लए ॥
वा बढई के कर मो दए ॥२२॥
दूत दिलीसहि बचन उचारे ॥
ग्रिह आवत पदुमिनि तिहारे ॥
राना साथ प्रथम मिलि आऊ ॥
बहुरि तिहारी सेज सुहाऊ ॥२३॥
यौ कहि बढी तहा चलि गयो ॥
ता की कटत बेरियै भयो ॥
तिह पालकी प्रथम बैठायो ॥
इह ते ओहि डोरी पहुचायो ॥२४॥
इक ते निकरि अवर मो गयो ॥
अनत तहा ते निकसत भयो ॥
इह छल तहा पहूंच्यो जाई ॥
तबै दुरग मै बजी बधाई ॥२५॥
गड़ पर जबै बधाई भई ॥
सऊअन काढि क्रिपानै लई ॥
जा पर पहुचि खड़ग कह झारियो ॥
एकै घाइ मार ही डारियो ॥२६॥
धुकि धुकि परे धरनि भट भारे ॥
जनुक करवतन बिरछ बिदारे ॥
जुझि जुझि मरै अधिक रिसि भरे ॥
बहुरि न दिखयत ताजियन चरे ॥२७॥

दोहरा ॥

जैन लावदी साह कौ तब ही दयो भजाइ ॥
रतन सैन राना गए गड़ इह चरित दिखाइ ॥२८॥
गोरा बादिल कौ दियो अति धन छोरि भंडार ॥
ता दिन तै पदुमिनि भए बाढी प्रीति अपार ॥२९॥

CHARITAR १९९ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ निंनानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥199॥3727॥अफजूं॥

दोहरा ॥

त्रिगति देस एस्वर बडो द्रुगति सिंघ इक भूप ॥
देग तेग पूरो पुरख सुंदर काम सरूप ॥१॥

तोटक छंद ॥

उडगिंद्र प्रभा इक ता की त्रिया ॥
दिन रैनि भजै मुख जासु पिया ॥
बिसुनाथ प्रभा त्रिय और रहै ॥
अति सुंदर ता कह जगत कहै ॥२॥
बिसुनाथ प्रभा तन प्रीति रहै ॥
उडगिंद्र प्रभा इक बैन चहै ॥

दिन रैनि बितीत करै इह के ॥
कबहूं ग्रिह जात नही तिह के ॥३॥

चौपई ॥

ता पर सत्रु तवन को धायो ॥
द्रुगति सिंघ दलु लै समुहायो ॥
मचियो जुध अति बजे नगारे ॥
देव अदेव बिलोकत सारे ॥४॥
उमडे सूर सिंघ जिमि गाजहि ॥
दोऊ दिसन जुझऊआ बाजहि ॥
गोमुख संख निसान अपारा ॥
ढोल म्रिदंग मुचंग नगारा ॥५॥
तुरही नाद नफीरी बाजहि ॥
मंदल तूर उतंग बिराजहि ॥
मुरली झाझ भेर रन भारी ॥
सुनत नाद धुनि हठे हकारी ॥६॥
जुगनि दैत अधिक हरखाने ॥
गीध सिवा फिकरहि अभिमानै ॥
भूत प्रेत नाचहि अरु गावहि ॥
कहूं रुद्र डमरू डमकावहि ॥७॥
अचि अचि रुधर डाकनी डहकहि ॥
भखि भखि अमिख काक कहूं कहकहि ॥
जंबुक गीध मासु लै जाही ॥
कछु कछु सबद बिताल सुनाही ॥८॥
झमकै कहूं असिन की धारा ॥
भभकहि रुंड मुंड बिकरारा ॥
धुकि धुकि परे धरनि भट भारे ॥
झुकि झुकि बडे पखरिया मारे ॥९॥
ठिला ठिली बरछनि सौ माची ॥
कढा कढी करवारिन राची ॥
कटा कटी कहूं भई कटारी ॥
धरनी अरुन भेस भई सारी ॥१०॥
काढे दैत दात कहूं फिरैं ॥
बरि बरि कहूं बरंगन बरैं ॥
भीखन भए नाद कहूं भारे ॥
भैरवादि छबि लखन सिधारे ॥११॥

दोहरा ॥

भकभकाहि घायल कहूं कहकै अमित मसान ॥
बिकटि सुभट चटपट कटे तन ब्रिन बहै क्रिपान ॥१२॥

चौपई ॥

भैरव कहूं अधिक भवकारै ॥
कहूं मसान किलकटी मारै ॥
भा भा बजे भेर कहूं भीखन ॥
तनि धनु तजहि सुभट सर तीखन ॥१३॥
अड़िल ॥
चाबि चाबि करि ओसठ दुबहिया धावही ॥
बज्र बान बिछूअन के ब्रिनन लगावही ॥

टूक टूक ह्वै गिरै न मोरै नेक मन ॥
हो तनिक तनिक लगि गए असिन की धार तन ॥१४॥
मोरि बाग बाजन की नैक न भाजही ॥
खरे खेत के माझ सिंघ ज्यों गाजही ॥
खंड खंड ह्वै गिरे खंडिसन खंड करि ॥
हो खंडे खड़ग की धार गए भविसिंध तरि ॥१५॥

दोहरा ॥

भकभकाहि घायल कहूं रुंड मुंड बिकरार ॥
तरफराहि लागे कहूं छत्री छत्रन धारि ॥१६॥

चौपई ॥

हाकि हाकि भट तरै धवावहि ॥
गहि गहि असिन अरिन ब्रिण लावहि ॥
चटपट सुभट बिकट कटि मरै ॥
चुनि चुनि ऐन अपछरा बरे ॥१७॥
अड़िल ॥
द्रुगति सिंघ के सूर सकल भाजत भए ॥
न्रिप जूझे रन माहि संदेसा अस दए ॥
सुनि बिसुनाथ प्रभा चित भीतरि चकि गई ॥
हो स्री उडगिंद्र प्रभा जरबे कह उदित भई ॥१८॥
जो धनु ता को हुतो सु दियो लुटाइ कै ॥
चली जरन के हेत म्रिदंग बजाइ कै ॥
प्रान नाथ जित गए तही मै जाइ हौ ॥
हो जियत न आवत धाम मरे ते पाइ हौ ॥१९॥
स्री बिसुनाथ प्रभा जरबे ते डरि गई ॥
मरियो न्रिपति सुनि कान अधिक पीटत भई ॥
तब लौ अरिन बिदारि गयो न्रिप आइ कै ॥
हो हेरि सती की मीचि रहियो बिसमाइ कै ॥२०॥
जब उडगिंद्र प्रभा की सुधि कानन परी ॥
बिरह तिहारे बाल अगनि मो जरि मरी ॥
तब पिय तब ही तहा पहूच्यो आइ कै ॥
हो तरल तुरंगन माझ तुरंग धवाइ कै ॥२१॥

दोहरा ॥

न्रिप आवत लौ मूरखन दीनी चिता जराइ ॥
जियत मरे पति की कछू सुधि नहि लई बनाइ ॥२२॥
अड़िल ॥
त्रिय को लै लै नामु न्रिपति पीटत भयो ॥
मुहि कारन इह बाल अगनि महि जिय दयो ॥
बरत बाल कौ अब ही ऐंचि निकारि हौ ॥
हो नातर जरि याही संग स्वरग सिधारि हौ ॥२३॥

चौपई ॥

अब ही तुरंग अगनि मै डारौ ॥
जरत प्रिया कहु ऐचि निकारो ॥
कै हमहूं याही चित जरि है ॥
सुर पुर दोऊ पयानो करि है ॥२४॥

दोहरा ॥

खड़ग काढ कर मै लयो मोहि न पकरियो कोइ ॥
कै काढौं इह कै जरौं करता करै सो होइ ॥२५॥

अड़िल ॥

खड़ग काढि कर माझ धवावत है भयो ॥
जरत जहा त्रिय हुती चिता मै पति गयो ॥
पकर भुजा ते ऐंचि तरुन तरुनी लियो ॥
हो राज सिंघासन पाव बहुरि अपनो दियो ॥२६॥

दोहरा ॥

निरख राव तन कहि उठे धंन्य धंन्य सभ सूर ॥
मरै स्वरग बासा तिनै जीवत बाचा पूर ॥२७॥

चौपई ॥

सभ रानिन ऐसे सुनि पायो ॥
ताहि जरत न्रिप आपु बचायो ॥
मरत हुती जीवत सो भई ॥
जीवत हुती म्रितक ह्वै गई ॥२८॥
अब हम कौ न्रिप चित न लयै है ॥
वाही के ह्वै कै बसि जै है ॥
अब कछु ऐस उपाइ बनाऊ ॥
या सौ पति की प्रीत मिटाऊ ॥२९॥
देखहु इह रावहि क्या कहियै ॥
मन मै समुझि मौनि ह्वै रहियै ॥
जो लै मूरति जार की जरी ॥
ता के हेत इती इन करी ॥३०॥
यह लै मूरति जार की जरी ॥
ह्वै है अरध जरी हूं परी ॥
जौ ता कौ इह राव निहारै ॥
अब ही या कौ जियते मारै ॥३१॥
यौ जब बैन राव सुनि पायो ॥
हेरन तवन चिता कह आयो ॥
अरध जरी प्रतिमा लहि लीनी ॥
प्रीति जु बढी हुती तजि दीनी ॥३२॥
तब बानी नभ ते इह होई ॥
उडग प्रभा महि दोसु न कोई ॥
बिसुसि प्रभा यहि चरित बनायो ॥
ता ते चित तुमरो डहिकायो ॥३३॥
जिह त्रिय तुम तन जरियो न गयो ॥
तवनि बाल असि चरित बनयो ॥
जिनि न्रिप की या सौ रुचि बाढै ॥
जीयत हमै छोरि करि छाडै ॥३४॥
तब राजे ऐसे सुनि पाई ॥
साची ही साची ठहराई ॥
उडगि प्रभा तन अति हित कीनो ॥
वा सौ त्यागि नेह सभ दीनो ॥३५॥

दोहरा ॥

स्री उडगिंद्र प्रभा भए राज करियो सुख मान ॥
बिसुसि प्रभा संग दोसती दीनी त्याग निदान ॥३६॥

CHARITAR २०० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥200॥3763॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

रूम सहिर के साह की सुता जलीखा नाम ॥
किधौ काम की कामनी किधौ आप ही काम ॥१॥
अति जोबन ता कै दिपै सभ अंगन के साथ ॥
दिन आसिक दिनपति रहै निसु आसिक निसनाथ ॥२॥
सहसानन सोभा भनै लिखत सहस भुज जाहि ॥
तदपि जलीखा की प्रभा बरनि न आवत ताहि ॥३॥

चौपई ॥

मिसर साह को पूत भणिजै ॥
यूसफ खा तिह नाम कहिजै ॥
जो अबला तिह नैकु निहारै ॥
चट दै लाज बसत्र कौ फारै ॥४॥

दोहरा ॥

ता के तन मै अति प्रभा आपि करी करतार ॥
पैगंबर अंबर तिसै कहत सु बुधि बिचारि ॥५॥

चौपई ॥

ता के भ्रात सकल रिसि धारै ॥
हम क्योन हूं यूसफ कौ मारै ॥
हमरो रूप करियो घट करता ॥
या को रूप दुखन को हरता ॥६॥
ता को लै अखेट कहि गए ॥
बहु बिधि म्रिगन संघारत भए ॥
अधिक प्यास जब ताहि सतायो ॥
एक कूप भ्रातान तकायो ॥७॥
तह हम जाइ पानि सभ पीयै ॥
सोक निवारि सुखी ह्वै जीयै ॥
यूसफ बात न पावत भयो ॥
जह वह कूप हुतो तह गयो ॥८॥
चलि बन मै जब कूप निहारियो ॥
गहि भइयन ता मै तिह डारियो ॥
घर यौ आनि संदेसो दयो ॥
यूसफ आजु सिंघ भखि लयो ॥९॥
खोजि सकल यूसफ को हारे ॥
असुख भए सुख सभै बिसारे ॥
तहा एक सौदागर आयो ॥
कूप बिखै ते ता कह पायो ॥१०॥
ता कह संग अपुने करि लयो ॥

बेचन साह रूम के गयो ॥
अधिक मोल कोऊ नहि लेवै ॥
ग्रिह को काढि सकल धनु देवै ॥११॥

दोहरा ॥

जबै जलीखा यूसफहि रूप बिलोक्यो जाइ ॥
बसु असु दै ता को तुरत लियो सु मोल बनाइ ॥१२॥

चौपई ॥

मुख माग्यो ता को धनु दियो ॥
यूसफ मोल अमोलक लियो ॥
भाति भाति सेती तिह पारियो ॥
बडो भयो इह भाति उचारियो ॥१३॥
चित्रसाल ता कौ लै गई ॥
नाना चित्र दिखावत भई ॥
अधिक यूसफहि जबै रिझायो ॥
तब ता सो यौ बचन सुनायो ॥१४॥
हम तुम आजु करै रति दोऊ ॥
है न इहा ठाढो जन कोऊ ॥
कवन लखे का सो कोऊ कहि है ॥
ह्यां को आनि रमत हम गहि है ॥१५॥

दोहरा ॥

मै तरुनी तुम हूं तरुन दुहूंअन रूप अपार ॥
संक त्यागि रति कीजियै कत जकि रहे कुमार ॥१६॥

चौपई ॥

तै जु कहत नहि कोऊ निहारै ॥
आंधर ज्यों तै बचन उचारै ॥
साखी सात संग के लहि है ॥
अब ही जाइ धरम तन कहि है ॥१७॥
अड़िल ॥
धरमराइ की सभा जबै दोऊ जाइ हैं ॥
कहा बदन लै ता सौ उत्र दियाइ है ॥
इन बातन कौ तै त्रिय कहा बिचारई ॥
हो महा नरक के बीच न मो कौ डारई ॥१८॥
सालग्राम परमेस्र इही गति ते भए ॥
दस रावन के सीस इही बातन गए ॥
सहस भगन बासव याही ते पाइयो ॥
हो इन बातन ते मदन अनंग कहाइयो ॥१९॥
इन बातन ते चंद्र कलंकति तन भए ॥
सुंभ असुंभ असुरिंद्र सदन जम के गए ॥
इही काज क्रीचक क्रीचकन खपायो ॥
हो धरमराट दासी सुत बिदुर कहाइयो ॥२०॥
सुनि सुंदरि तव संग भोग मो ते नहि होई ॥
सिव सनकादिक कोटि कहै मिलि कै सभ कोई ॥
यौ कहि कै भजि चल्यो बाल ठाढी लहियो ॥
हो गहि कै करि सो ऐंच ताहि दामन गहियो ॥२१॥

दोहरा ॥

कर दामन पकरियो रहियो गयो सु यूसफ भाजि ॥
काम केल ता सौ न भयो रही चंचला लाजि ॥२२॥
अड़िल ॥
अवर कथा जो भई कहा लौ भाखियै ॥
बात बढन की करि चित ही मै राखियै ॥
तरुन भयो यूसफ अबला ब्रिधित भई ॥
हो ता को चित ते रीति प्रीति की नहि गई ॥२३॥
मारि म्रिगन यूसफ तह इक दिन आइयो ॥
पूछन के मिसु ता को हाथ लगाइयो ॥
बाज ताज जुत बसत्र बिरह बाला जरियो ॥
हो सो अंतर बसि रहियो जु या ते उबरियो ॥२४॥
हेरि बाल को रूप चक्रित यूसफ भयो ॥
जो तिह मनोरथ हुतो वहे ता को दयो ॥
बसत्र बाज को जारि जलीखा तिह छरियो ॥
हो मित्र पुत्र ज्यों पाइ तबै ता को बरियो ॥२५॥

दोहरा ॥

जिह पाछे बाला परै बचन न ता को कोइ ॥
सभ छल सो ता को छलै सिव सुरपति कोऊ होइ ॥२६॥

CHARITAR २०१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इक चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥201॥3789॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

उग्र सिंघ राजा बडो कासिकार को नाथ ॥
अमित दरबु ता को सदन अधिक चड़त दल साथ ॥१॥
चपल कला ता की सुता सभ सुंदर तिह अंग ॥
कै अनंग की आतमजा कै आपै आनंग ॥२॥
सुंदर ऐठी सिंघ लखि तब ही लयो बुलाइ ॥
काम केल चिर लौ कियौ ह्रिदै हरख उपजाइ ॥३॥

चौपई ॥

नित प्रति ता सो केल कमावै ॥
छैलिहि छैल न छोरियो भावै ॥
एकै सदन माझ तिह राख्यो ॥
काहू साथ भेद नहि भाख्यो ॥४॥
केतिक दिनन ब्याहि तिह भयो ॥
ता को नाथ लैन तिह आयो ॥
काम केल ता सो उपजायो ॥
सोइ रहियो अति ही सुख पायो ॥५॥
त्रिय कौ त्रिपति न ता ते भई ॥
छोरि संदूक जार पै गई ॥
अधिक मित्र तब ताहि रिझायो ॥
काम केल चिर लगे कमायो ॥६॥

दोहरा ॥

कहा भयो बलवंत भयो भोग न चिर लौ कीन ॥
आप न कछु सुख पाइयो कछु न तरुनि सुख दीन ॥७॥

चौपई ॥

सो तरुनी को पुरख रिझावै ॥
बहुत चिर लगै भोग कमावै ॥
ता को ऐंचि आपु सुखु लेवै ॥
अपनो सुख अबला को देवै ॥८॥
ऐसे बली कैस कोऊ होई ॥
ता पर त्रिया न रीझत कोई ॥
जो चिर चिमटि कलोल कमावै ॥
वहै तरुनि को चित चुरावै ॥९॥

दोहरा ॥

चिमटि चिमटि तिह मीत सौ गरे गई लपटाइ ॥
स्रवन चटाको नाथ सुनि जाग्यो नींद गवाइ ॥१०॥
लपटि लपटि अति रति करी जैसी करै न कोइ ॥
स्रमित भए तरुनी तरुन रहे तहा ही सोइ ॥११॥

चौपई ॥

जब त्रिय जार सहित स्वै गई ॥
परे परे तिह नाथ तकई ॥
पकरे केस छुटे लहलहे ॥
जानुक सरप गाररू गहे ॥१२॥

दोहरा ॥

अंगरेजी गहि कै छुरी ता की ग्रीव तकाइ ॥
तानिक दबाई इह दिसा उहि दिसि निकसी जाइ ॥१३॥

चौपई ॥

छुरकी भए जार कौ घायो ॥
निजु नारी तन कछु न जतायो ॥
ता को तपत रुधिर जब लागियो ॥
तब ही कोपि नारि को जागियो ॥१४॥
छुरकी वहै हाथ मै लई ॥
पति के पकरि कंठ मो दई ॥
अज ज्यो ताहि जबै करि डारियो ॥
बार दुहन इह भाति पुकारियो ॥१५॥

दोहरा ॥

मोरे नाथ बिरकत ह्वै बन को कियो पयान ॥
बारि सकल घर उठि गए संका छाडि निदान ॥१६॥

चौपई ॥

ता ते कछू उपाइ बनैयै ॥

खोजि नाथ बन ते ग्रिह लयैयै ॥
ता को हेरि पानि मै पीवौ ॥
बिनु देखै नैना दोऊ सीवौ ॥१७॥
अड़िल ॥
खोजि खोजि बन लोग सभै आवत भए ॥
कहै त्रिया तव नाथ न हाथ कहूं अए ॥
आइ निकटि ता कौ सभ ही समुझावही ॥
हो भूले लोक अजान मरम नहि पावही ॥१८॥

CHARITAR २०२ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ दो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥202॥3807॥अफजूं॥

दोहरा ॥

नराकसुर राजा बडो गूआहटी को राइ ॥
जीति जीति राजान की दुहिता लेत छिनाइ ॥१॥

चौपई ॥

तिन इक बिवत जग्य को कीनो ॥
एक लछ राजा गहि लीनो ॥
जौ इक और बंद न्रिप परै ॥
तिन न्रिप मेध जग्य करि बरै ॥२॥
प्रथम कोट लोहा को राजै ॥
दुतिय ताब्र के दुरग बिराजै ॥
तीजो असट धाम गड़ सोहै ॥
चौथ सिका को किलो करोहै ॥३॥
बहुरि फटक को कोट बनायो ॥
जिह लखि रुद्राचल सिर न्यायो ॥
खसटम दुरग रुकम को सोहै ॥
जा के तीर ब्रहमपुर कोहै ॥४॥
सपतम गड़ सोना को राजै ॥
जा को लंक बंक लखि लाजै ॥
ता के मध्य आपु न्रिप रहै ॥
आनि न मानै जो तिह गहै ॥५॥
जौ न्रिप और हाथ तिह आवै ॥
तब वहु सभ राजा कह घावै ॥
सोरह सहस रानियन बरै ॥
नरामेध न्रिप पूरन करै ॥६॥
इक रानी यौ बचन उचारा ॥
द्वारावति उग्रेसुजिआरा ॥
जौ तू ताहि जीति कै ल्यावै ॥
तब यह होम जग्य न्रिप पावै ॥७॥

दोहरा ॥

यौ कहि कै राजा भए पतिया लिखी बनाइ ॥
जहा क्रिसन बैठे हुते दीनी तहा पठाइ ॥८॥

चौपई ॥

बैठे कहा क्रिसन बडभागी ॥
तुम सौ डीठि हमारी लागी ॥
इह न्रिप घाइ न्रिपान छुरैयै ॥
हम सभहिनि बरि घर लै जैयै ॥९॥
जौ जब बैन क्रिसन सुनि पायो ॥
गरुड़ चड़े गरुड़ाध्वज आयो ॥
प्रथम कोट लोहा के तोरियो ॥
समुहि भए ता को सिर फोरियो ॥१०॥
बहुरौ दुरग ताब्र को लीनो ॥
असट धाति पुनि गड़ बसि कीनो ॥
बहुरि सिका को कोट छिनायो ॥
बहुरि फटक को किलो गिरायो ॥११॥
जब ही रुकम कोट कौ लागियो ॥
तब न्रिप सकल ससत्र गहि जागियो ॥
सकल सैन लीने संग आयो ॥
महा कोप करि नादि बजायो ॥१२॥
अड़िल ॥
काढि काढि करि खड़ग पखरिया धावही ॥
महा खेत मै खत्री खिंग नचावई ॥
खंड खंड ह्वै गिरे खगिस के सर लगे ॥
हो चले खेत को छाडि क्रोध अति ही जगे ॥१३॥

भुजंग छंद ॥

मंडे आनि मानी महा कोप ह्वै कै ॥
किते बाढवारीन कौ बाधि कै कै ॥
किते पानि मागै किते मारि कूकै ॥
किते चारि ओरान ते आन ढूकै ॥१४॥
किते ससत्र असत्रान लै कै पधारै ॥
किते बाढवारी किते बान मारै ॥
किते हाक कूकै किते रूह छोरै ॥
किते छिप्र छत्रीन के छत्र तोरै ॥१५॥
भए नाद भारे महा कोप कै कै ॥
किते बाढवारीन को बाढ दै कै ॥
हन्यो क्रिसन क्रोधी भटं ब्रिणत घायो ॥
भजै सूरमा रुकम कोटै गिरायो ॥१६॥

दोहरा ॥

रुकम कोट कौ जीति कै तहा पहूचियो जाइ ॥
जहा दुरग कलधोत कौ राख्यो द्रुगत बनाइ ॥१७॥

भुजंग छंद ॥

तहीं जाइ लागो मचियो लोह गाढो ॥
महा छत्र धारीन कौ छोभ बाढो ॥
किते फास फासे किते मारि छोरे ॥
फिरै मत दंती कहूं छूछ घोरे ॥१८॥

चौपई ॥

जुझि जुझि सुभट सामुहे मरै ॥

चुनि चुनि किते बरंगनिन बरै ॥
बरत बरंगनिन जु नर निहारै ॥
लरि लरि मरै न सदन सिधारै ॥१९॥

दोहरा ॥

क्रिसन जीति सभ सूरमा राजा दए छुराइ ॥
नरकासुर कौ घाइयो अबला लई छिनाइ ॥२०॥
इह चरित्र तन चंचला राजा दए छुराइ ॥
क्रिसन नाथ सभ हू करे नरकासुरहि हनाइ ॥२१॥

चौपई ॥

सोरह सपत क्रिसन तिय बरी ॥
भाति भाति के भोगन भरी ॥
कंचन को सभ कोट गिरायो ॥
आनि द्वारिका दुरग बनायो ॥२२॥
सवैया ॥
ग्रिह काहू के चौपरि मंडत है त्रिय काहू सो फाग मचावत है ॥
कहूं गावत गीत बजावत ताल सु बाल कहूं दुलरावत है ॥
गनिकान के ख्याल सुनै कतहूं कहूं बसत्र अनूप बनावत है ॥
सुभ चित्रन चित सु बित हरे कोऊ ता कौ चरित्र न पावत है ॥२३॥

CHARITAR २०३ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तिंन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥203॥3830॥अफजूं॥

दोहरा ॥

इक कैलास मती रहै रानी रूप अपार ॥
जा ते जगत नरेस बिधि सीखी जुध मझार ॥१॥

चौपई ॥

सिंघ सु बीर नाथ इक ता को ॥
रूप बेस भाखत जग वा को ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
निसिसि दिनिसि निरखत मनु लाजै ॥२॥
रैनि दिवस बैरियन बिदारै ॥
साह के रोज परगने मारै ॥
एक जहाज जान नहि देवै ॥
लूटि लूटि सभहिन को लेवै ॥३॥
अड़िल ॥
लूटि फिरंगी लए सकल इकठे भए ॥
साहजहा जू जहा तही सभ ही गए ॥
सभै लगे दीवानि पुकारे आइ कै ॥
हो हमरो न्याइ करो इह हनो रिसाइ कै ॥४॥
साह बाच ॥
कहो लूटि किन लए तिसी को मारियै ॥
ताही कौ इह ठौर सु नाइ उचारियै ॥
ता पै अब ही अपनी फौज पठाइ है ॥

हो ता ते तुमरो सभ ही माल दिलाइ है ॥५ ॥
फिरंगी वाच ॥

दोहरा ॥

जहा कमछ्रया को भवन तिसी ठौर के राइ ॥
अधिक फिरंगी मारि कै लीनो माल छिनाइ ॥६ ॥

चौपई ॥

ऐसे जब हजरति सुनि पाई ॥
फौजै अति ही तहा पठाई ॥
उमडि अनी चलि आवै तहा ॥
राजत भवन कमछ्रया जहा ॥७ ॥
अड़िल ॥
तब लौ सिंघ सु बीर लोक दिव के गयो ॥
रानी दयो जराइ न लोगन भाखियो ॥
कहियो अनमनो राव कछुक दिन द्वै रहियो ॥
हो राज साज लै हाथ आपु असि कौ गहियो ॥८ ॥
जब लगि राजा नाइ तब लगे जाइ हौ ॥
इन बैरिन के सिर पर खड़ग मचाइ हौ ॥
सकल बैरियन घाइ पलटि घर आइ कै ॥
हो करि हौ जाइ प्रनाम पतिहि मुसकाइ कै ॥९ ॥
सुनि ऐसे बच सूर सभे हरखत भए ॥
भाति भाति के ससत्र सभन हाथन लए ॥
कछु भट दलहि दिखाइ ल्याए लाइ कै ॥
हो बडी फौज महि आनि दए सभ घाइ कै ॥१० ॥
दस सहस्र निसि को लिय बैल मंगाइ कै ॥
द्वै द्वै सींगन बधी मसाल जराइ कै ॥
इह दिसि दलहि दिखाइ आइ ओहि दिसि परी ॥
हो बडे बडे न्रिप घाइ मार क्रीचक करी ॥११ ॥
अड़िल ॥
जब ही दूजो दिवस पहूच्यो आइ कै ॥
भरि गोनै पनियन की दई चलाइ कै ॥
लोग खजानौ जानि टूटि ता पै परे ॥
हो उहि दिसि ते उन बाल न्रिपति धन जुत हरे ॥१२ ॥
दिन दूजो गयो दिवस तीसरो आइयो ॥
तब रानी दुंदभि इक ठौर बजाइयो ॥
लोग दरबु लै भजै जु तिह मगु आइयो ॥
हो लूटि धनी सभ लीए न जानिक पाइयो ॥१३ ॥
दिवस चत्रथे दीनी आगि लगाइ कै ॥
आपु एक ठा थिर भई दलहि दुराइ कै ॥
सभ राजन के लोग बुझावन लागए ॥
हो जो पाए न्रिप रहे मारि अबला दए ॥१४ ॥
दिवस पाचवे अपनी अनी सुधारि कै ॥
मधि सैन के परी मसाले जारि कै ॥
मारि कूटि न्रिप सैन निकसि आपुन गई ॥
हो पिता पूत सिर तेग पूत पितु के दई ॥१५ ॥

दोहरा ॥

रैन समे तिन ही बिखै माचियो लोह अपार ॥

भट जूझे पितु पूत हनि पूत पिता को मार ॥१६ ॥
रैन समै तवनै कटक लोह परियो बिकरार ॥
ऊच नीच राजा प्रजा घायल भए सुमार ॥१७ ॥

चौपई ॥

पितु लै खड़गु पूत को मारियो ॥
पूत पिता के सिर पर झारियो ॥
ऐसे लोह परियो बिकरारा ॥
सभ घायल भे भूप समारा ॥१८ ॥
अड़िल ॥
दिवस खसटमो जबै पहूच्यो आइ कै ॥
दो दो मरद लौ खाई गई खुदाइ कै ॥
गडि सूरी जल ऊपर दए बहाइ कै ॥
हो बद्यो खलन सो जुध खिंग खुनसाइ कै ॥१९ ॥
परा बंधि करि फौज दोऊ ठाढी भई ॥
तीर तुपक तरवारि मारि चिर लौ दई ॥
भाजि चली त्रिय पाछे कटक लगाइ कै ॥
हो पछे पखरिया परै तुरंग नचाइ कै ॥२० ॥

दोहरा ॥

एक बार सोरह सहस स्वार जुझे बरबीर ॥
बहुरि आनि अबला परी हने तुपक कै तीर ॥२१ ॥
अड़िल ॥
जबै सपतवौ दिवस पहूचियो आइ करि ॥
सभ पकवानन मौ दई जहर डराइ करि ॥
खलन खंड कछु चिर लौ लोह बजाइ कै ॥
हो और ठौर चलि गई निसानु दिवाइ कै ॥२२ ॥
मारि परनि ते रही सिपाहिन यौ कियो ॥
सरकि सरकि कर सकति निकर तिह को लियो ॥
झूमि परे चहूं ओर दुरग के दुआर पर ॥
हो लई मिठाई छीनि गठरियै बाधि करि ॥२३ ॥

दोहरा ॥

बैठि बैठि सो सो पुरख जो जो मिठाई खाहि ॥
मद बिखु के तिन तन चरै तुरतु तरफि मरि जाहि ॥२४ ॥
चारि पाच घटिका बिते बाल परी असि धार ॥
जो बिखु ते घूमत हुते सभ ही दए संघारि ॥२५ ॥
अड़िल ॥
बहुरि मिलन त्रिय बद्यो सु दूत पठाइ कै ॥
चली आपनी आछी अनी बनाइ कै ॥
तुपक चोट को जबै सैन लाघत भई ॥
हो परी तुरंग धवाइ क्रिपानै कढि लई ॥२६ ॥

दोहरा ॥

सभ राजन कौ मारि कै सैना दई खपाइ ॥
जीति जुध ग्रिह को गई जै दुंदभी बजाइ ॥२७ ॥
ताही ते जगतेस न्रिप सीखे चरित अनेक ॥
साहिजहा के बीर सभ चुनि चुनि मारे एक ॥२८ ॥

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चार चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥204॥3858॥अफजूं॥*

चौपई ॥

भूप बडी गुजरात बखनियत ॥
बिजै कुअरि ता की त्रिय जनियत ॥
छत्री एक तहा बडभागी ॥
ता तन द्रिसटि कुअरि की लागी ॥१॥
अड़िल ॥
रैनि परी ता को त्रिय लयो बुलाइ कै ॥
रति मानी चिर लौ अति रुच उपजाइ कै ॥
लपटि लपटि उर जाइ न छोरियो भावई ॥
हो भाति भाति के आसन करत सुहावई ॥२॥

दोहरा ॥

रानी मीतहि संग लै बागहि गई लवाइ ॥
काम भोग ता सो करियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥३॥
जहा बाग मो जार सौ रानी रमत बनाइ ॥
ता को न्रिप कौतक नमिति तह ही निकसियो आइ ॥४॥

चौपई ॥

लखि राजा रानी डर पानी ॥
मित्र पए इह भाति बखानी ॥
मेरी कही चित मै धरियहु ॥
मूड़ राव ते नैकु न डरियहु ॥५॥
अड़िल ॥
इक गडहा मै दयो जार को डारि कै ॥
तखता पर बाघंबर डारि सुधारि कै ॥
आपु जोग को भेस बहिठी तहा धर ॥
हो राव चलियो दिय जान न आन्रयो द्रिसटि तर ॥६॥
राइ निरखि तिह रूप चक्रित चित मै भयो ॥
कवन देस को एस भयो जोगी कहियो ॥
या के दोनो पाइन परियै जाइ कै ॥
हो आइसु कौ लईऐ चित बिरमाइ कै ॥७॥

चौपई ॥

जब राजा ता के ढिग आयो ॥
जोगी उठियो न बैन सुनाइयो ॥
इह दिसि ते उहि दिसि प्रभ गयो ॥
तब राजै सु जोर कर लयो ॥८॥
नमसकार जब तिह न्रिप कियो ॥
तब जोगी मुख फेरि सु लियो ॥
जिह जिह दिसि राजा चलि आवै ॥
तह तह ते त्रिय आखि चुरावै ॥९॥
यह गति देखि न्रिपति चकि रहियो ॥
धंनि धंनि मन मै तिह कहियो ॥

यह मोरी परवाहि न राखै ॥
ता ते मोहि न मुख ते भाखे ॥१०॥
अनिक जतन राजा करि हारियो ॥
क्योहूं नहि रानीयहि निहारियो ॥
करत करत इक बचन बखानो ॥
मूरख राव न बोलि पछानो ॥११॥
बातै सौ न्रिप सो कोऊ करै ॥
जो इछा धंन की मन धरै ॥
राव रंक हम कछू न जानै ॥
एकै हरि को नाम पछानै ॥१२॥
बातै करत निसा परि गई ॥
न्रिप सभ सैन बिदा कर दई ॥
ह्वै एकल रहियो तह सोई ॥
चिंता करत अरध निसि खोई ॥१३॥
अड़िल ॥
सोइ न्रिपति लहि गयो त्रिय मीतहि उचरियो ॥
कर भे टूंबि जगाइ भोग बहु बिधि करियो ॥
जात तहा ते भए यहै लिखि खात पर ॥
हो स्वरग देखि भूअ देखि सु गए पतार तर ॥१४॥

चौपई ॥

भई प्रात राजा सुधि लयो ॥
तिनै न तहा बिलोकत भयो ॥
गडहा पर को लिख्यो निहारियो ॥
मंत्रिन जुति इह भाति बिचारियो ॥१५॥

दोहरा ॥

या जोगीस्वर लोक लखि बहुरि लख्यो यह लोक ॥
अब पतार देखन गयो ह्वै कै ह्रिदै निसोक ॥१६॥

चौपई ॥

सिध्रय सिध्रय सभ ताहि उचारै ॥
भेद अभेद न मूड़ बिचारै ॥
इह चरित्र त्रिय जार बचायो ॥
राजा ते गडहा पूजायो ॥१७॥
गडहा की पूजा न्रिप करै ॥
ता की बात न चित मै धरै ॥
स्वरग छोरि जो पयार सिधारो ॥
नमसकार है ताहि हमारो ॥१८॥

CHARITAR २०५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पाच चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥205॥3876॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुघरावती नगर इक सुना ॥
सिंघ बिसेस्वर राव बहु गुना ॥

इसक मती ता की बर नारी ॥
खोजि लोक चौदहूं निकारी ॥१॥

दोहरा ॥

अप्रमान ता की प्रभा जल थल रही समाइ ॥
सुरी आसुरी किंन्रनी हेरि रहत सिर न्याइ ॥२॥
अड़िल ॥
नौजोबन राइक सुत साहु निहारियो ॥
रमौ तवन के संगि इह भाति बिचारियो ॥
पठे अली इक लीनो भवन बुलाइ कै ॥
हो रीति प्रीति की करी हरख उपजाइ कै ॥३॥
भाति भाति मितवा को गरे लगाइयो ॥
लपटि लपटि करि काम केल उपजाइयो ॥
आसन चुंबन बहु बिधि करे बनाइ कै ॥
हो निजु प्रीतम के चित को लयो लुभाइ कै ॥४॥
हाव भाव बहुत भाति दिखाए मीत को ॥
छिन भीतरि बसि कियो तवन के चीत को ॥
लपटि लपटि ललता उर गई बनाइ कै ॥
हो स्री नवजोबन राइ लयो ललचाइ कै ॥५॥

दोहरा ॥

रावत जोबनि रैनि दिन इसक मती के संग ॥
रति मानत रुचि मानि कै ह्वै प्रमुदित सरबंग ॥६॥
सवैया ॥
पौढि त्रिया के प्रजंक लला को लै सुंदरि गीत सुहावत गावै ॥
चुंबन और अलिंगन आसन भाति अनेक रमै लपटावै ॥
जो त्रिय जोबनवंत जुबा दोऊ काम की रीति सो प्रीतुपजावै ॥
छाडि कै सोक त्रिलोकी के लोक बिलोकि प्रभा सभ ही बलि जावै ॥७॥
कोक की रीति सो प्रीति करै सुभ काम कलोल अमोल कमावै ॥
बारहि बार रमै रुचि सो दोऊ हेरि प्रभा तन की बलि जावै ॥
बीरी चबाइ सिंगार बनाइ सु नैन नचाइ मिलै मुसकावै ॥
मानहु बीर जुटे रन मै सित तानि कमानन बान चलावै ॥८॥

चौपई ॥

ऐसी प्रीति दुहुन मै भई ॥
बिसरि लोक की लजा गई ॥
नोखो नेह निगोडो लागो ॥
जा ते नींद भूखि दोऊ भागो ॥९॥
एक दिवस त्रिय मीत बुलायो ॥
सोत संगि सवतनिन तकायो ॥
भेव रछपालन को दीनो ॥
तिन को कोप आतमा कीनो ॥१०॥
रछपाल क्रुधित अति भए ॥
रानी हुती तही ते गए ॥
जार सहित ता को लहि लीनो ॥
बिवत हनन दुहूंअन कौ कीनो ॥११॥
तब रानी इह भाति उचारी ॥
सुनो रछको बात हमारी ॥
मीत मरे न्रिप त्रिय मरि जै है ॥

त्रिया मरै राजा को छै है ॥१२॥
दो कुकट कुकटी मंगवाई ॥
सखियहि बोल तिनै बिखु ख्वाई ॥
निकट आपनै दुहुअन आनो ॥
मूड़ रछकन चरित न जानो ॥१३॥
प्रथम मारि कुकट को दयो ॥
कुकटी को बिनु बध बध भयो ॥
बहुरि नास कुकटी को भयो ॥
पलक बिखै कुकटो मरि गयो ॥१४॥
रानी बाच ॥
सनहु लोग मै तुमै सुनाऊ ॥
मित्र मरे मै प्रान गवाऊ ॥
मोहि मरे राजा मरि जै है ॥
तुमरे कहो हाथ का ऐ है ॥१५॥
हो राजा जौ जियत उबरि है ॥
तुमरी सदा पालना करि है ॥
जो न्रिप त्रिय जुत स्वरग सिधै है ॥
तुम धन ते वै जियते जै है ॥१६॥
ता ते क्योन न दरबु अति लीजै ॥
तिहूं जियन की रछ्या कीजै ॥
जड़न कुकट को चरित निहारियो ॥
जार सहित रानीयहि न मारियो ॥१७॥

दोहरा ॥

इसकमती इह छल भए कुकट कुकटियहि घाइ ॥
प्रान उबारियो प्रिय सहित न्रिप डर जड़न दिखाइ ॥१८॥

चौपई ॥

तिन इह भाति बिचार बिचारे ॥
रानी मरत मीत के मारे ॥
रानी मरै राजा मरि जै है ॥
हमरे कहा हाथ धनु ऐ है ॥१९॥
अति ही लोभ रछकन कियो ॥
राजा संग भेद नहि दियो ॥
सहित जार रानियहि न मारियो ॥
धन के लोभ बात को टारियो ॥२०॥

CHARITAR २०६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥206॥3896॥अफजूं॥

दोहरा ॥

राजा कौच बिहार को बीर दत तिह नाम ॥
अमित दरबु ता के रहै बसतु इंद्र पुर ग्राम ॥१॥

चौपई ॥

मुसक मती ता की बर नारी ॥

जनु रति पति के भई कुमारी ॥
काम कला दुहिता तिह सोहै ॥
देव अदेवन को मन मोहै ॥२॥
जो पुर चहै तिसी कौ मारै ॥
अकबर की कछु कानि न धारै ॥
देस तलटी बसन नहि देवहि ॥
लूटि कूटि सौदाग्रन लेवहि ॥३॥
अकबर साहि कोप अति आयो ॥
तिन पै बैरिन ओघ पठायो ॥
जोरि सैनि सूरा सभ धाए ॥
पहिरि कौच दुंदभी बजाए ॥४॥

दोहरा ॥

जब ही कौच बिहार के निकट पहूंचे आइ ॥
लिखि पतिया ऐसे पठी रण दुंदभी बजाइ ॥५॥
कै हम कौ मिलु आइ कै पतीआ लिखी सुधारि ॥
कै पगु परु कै अनत टरु कै लरु ससत्र संभारि ॥६॥

चौपई ॥

जब न्रिप के स्रवनन सौ परियो ॥
भाजि चलत भयो धीर न धरियो ॥
मुसक मती जब ही सुनि पाई ॥
बाधि न्रिपहि दुंदभी बजाई ॥७॥
भाति भाति ते सैनि संभारी ॥
मारे सूरबीर हंकारी ॥
राजा किते बाधि करि लीने ॥
जाइ भवानी के बलि दीने ॥८॥

दोहरा ॥

दलदल एक तकाइ कै दयो दमामो जाइ ॥
सुनत नाद सूरा सभै तही परे अरराइ ॥९॥

चौपई ॥

जौ धाए फसि फसि ते गए ॥
गहि गहि तरुनि तुरत ते लए ॥
सकल कालिका की बलि दीने ॥
बाज ताज सभहिन के छीने ॥१०॥
अड़िल ॥
एक भ्रित तिह भीतर पठियो बनाइ कै ॥
ता सौ चित की बात कही समुझाइ कै ॥
महा गहिर बन भीतर तिन तुम लयाइयो ॥
हो धसे निरखि परबत मो मोहि जताइयो ॥११॥
सुनत मनुख इह बात तहा ते तह गयो ॥
तुमै बतावत राह भाखि ल्यावत भयो ॥
सकल सूर चित माझ अधिक हरखत भए ॥
हो भेद अभेद न लहियो सकल बन मै गए ॥१२॥
धसियो कटक बन माझ दूत लखि पाइ कै ॥
भेद दयो रानी कह तब तिन आइ कै ॥

बंद द्वार परबत के करि दोऊ लए ॥
हो काटि काटि कै नाक जान ग्रिह कौ दए ॥१३॥
बिमन भए बहु बीर भाजि रन ते चले ॥
सैयद मुगल पठान सेख सूरा भले ॥
डारि डारि हथियार भेख त्रिय धारही ॥
हो लीजै प्रान उबारि इह भाति उचारही ॥१४॥
भजे बीर तह ते इक ठा उतरत भए ॥
मुसक मती रानियहि निरखि सभ ही लए ॥
काटि नदी तिह ऊपर दई चलाइ कै ॥
हो बाज ताज राजन जुत दए बहाइ कै ॥१५॥
मारि फौज इक दीनो दूत पठाइ कै ॥
जैन खान जू बरो सुता को आइ कै ॥
हम हजरति के संग न रन कीनो बनै ॥
हो सभ मंत्रिन अर मोर रुचित यौ ही मनै ॥१६॥
जैन खान मूरख सुनि ए बच फूलि गयो ॥
सूरबीर लै संग भले तित जात भयो ॥
ता की दुहिता ब्याहि अबै घर आइ हौ ॥
हो इनै बाह अपनी हजरतहि मिलाइ हौ ॥१७॥

चौपई ॥

तब रानी दारू बहु लियो ॥
तरै बिछाइ भूमि के दियो ॥
ऊपर तनिक बारूअहि डारियो ॥
सो जरि जात न नैकु निहारियो ॥१८॥
एक लौडिया बोलि पठाई ॥
खारन पर कहि सुता बिठाई ॥
पठ्यो मनुख खान अब आवै ॥
याहि ब्याहि धाम लै जावै ॥१९॥
सैन सहित मूरख तह गयो ॥
भेद अभेद न पावत भयो ॥
जब रानी जान्यो जड़ आयो ॥
दारूअहि तुरत पलीता द्रयायो ॥२०॥

दोहरा ॥

लगे पलीता सूर सभ भ्रमे गगन के माहि ॥
उडि उडि परै समुंद्र मै बच्यो एकऊ नाहि ॥२१॥
इह चरित्र इन चंचला लीनो देस बचाइ ॥
जैन खान सूरन सहित इह बिधि दयो उडाइ ॥२२॥

CHARITAR २०७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सात चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥207॥3918॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

एक राव की पुत्रिका अटपल देवी नाम ॥
ब्याही एक नरेस कौ जा ते पूत न धाम ॥१॥

चौपई ॥

राजा जतन करत बहु भयो ॥
पूत न धाम बिधातै दयो ॥
तरुन अवसथहि सकल बितायो ॥
बिरधापनो अंत गति आयो ॥२॥
तब तरुनी रानी सो भई ॥
जब ज्वानी राजा की गई ॥
ता सौ भोग राव नहि करई ॥
या ते अति अबला जिय जरई ॥३॥

दोहरा ॥

एक पुरख सौ दोसती रानी करी बनाइ ॥
काम भोग ता सौ करै नितिप्रति धाम बुलाइ ॥४॥

चौपई ॥

ता कौ धरम भ्रात ठहरायो ॥
सभ जग महि इह भाति उडायो ॥
भाइ भाइ कहि रोज बुलावै ॥
काम केल रुचि मान कमावै ॥५॥
जौ या ते मो कौ सुत होई ॥
न्रिप को पूत लखै सभ कोई ॥
देस बसै सभ लोग रहै सुख ॥
हमरो मिटै चित को सभ दुख ॥६॥
अड़िल ॥
भाति भाति के भोग करत ता सो भई ॥
न्रिप की बात बिसारि सभै चित ते दई ॥
लपटि लपटि गई नैनन नैन मिलाइ कै ॥
हो फसत हिरन ज्यो हिरनि बिलोकि बनाइ कै ॥७॥
इतक दिनन राजा जू दिव के लोक गे ॥
नसट राज लखि लोग अति आकुल होत भे ॥
तब रानी मितवा कौ लयो बुलाइ कै ॥
हो दयो राज को साजु जु छत्रु फिराइ कै ॥८॥

चौपई ॥

पूत न धाम हमारे भए ॥
राजा देव लोक कौ गए ॥
राज इह भ्रात हमारो करो ॥
या के सीस छत्र सुभ ढरो ॥९॥
मेरो भ्रात राज इह करो ॥
अत्र पत्र या के सिर ढरो ॥
सूरबीर आग्या सभ कै है ॥
जहा पठैयै तह ते जै है ॥१०॥

दोहरा ॥

रानी ऐसो बचन कहि दयो जार कौ राज ॥
मितवा कौ राजा किया फेरि छत्र दै साज ॥११॥

चौपई ॥

सूरबीर सभ पाइ लगाए ॥

गाउ गाउ चौधरी बुलाए ॥
दै सिरपाउ बिदा करि दीने ॥
आपन भोग जार सौ कीनै ॥१२॥
मेरो राज सुफल सभ भयो ॥
सभ धन राज मित्र कौ दयो ॥
मित्र अरु मो मै भेद न होई ॥
बाल ब्रिध जानत सभ कोई ॥१३॥
सकल प्रजा इह भाति उचारै ॥
बैठि सदन मै मंत्र बिचारै ॥
नसट राज रानी लखि लयो ॥
ता ते राज भ्रात को दयो ॥१४॥

दोहरा ॥

केल करत रीझी अधिक हेरि तरनि तरुनंग ॥
राज साज ता ते दयो इह चरित्र के संग ॥१५॥
नसट होत त्रिय राजि लखि कियो भ्रात कौ दान ॥
लोग मूड़ ऐसे कहै सकै न भेद पछान ॥१६॥

CHARITAR २०८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ आठवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥208॥3934॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

धारा नगरी को रहै भरथरि राव सुजान ॥
दो द्वादस बिद्या निपुन सूरबीर बलवान ॥१॥

चौपई ॥

भान मती ता के बर नारी ॥
पिंगुल देइ प्रानिनि ते प्यारी ॥
अप्रमान भा रानी सोहै ॥
देव अदेव सुता ढिग को है ॥२॥

दोहरा ॥

भान मती की अधिक छबि जल थल रही समाइ ॥
देव दिवाने लखि भए दानव गए बिकाइ ॥३॥
और पिंगुला मती की सोभा लखी अपार ॥
गड़ि चतुरानन तवन सम और न सकियो सुधार ॥४॥

चौपई ॥

एक दिवस न्रिप गयो सिकारा ॥
चित भीतर इह भाति बिचारा ॥
बसत्र बोरि स्रोनतहि पठाए ॥
कहियो सिंघ भरथर हरि घाए ॥५॥
बसत्र भ्रित लै सदन सिधारियो ॥
उचरियो आजु सिंघ न्रिप मारियो ॥
रानी उदित जरन कौ भई ॥
हाइ उचरि पिंगल मरि गई ॥६॥

दोहरा ॥

त्रिया न तवन सराहीयहि करत अगनि मै पयान ॥
धंन्य धंन्य अबला तेई बधत बिरह के बान ॥७॥
अड़िल ॥
खेलि अखेटक जब भरथरि घरि आइयो ॥
हाइ करत पिंगुला मरी सुनि पाइयो ॥
डारि डारि सिर धूरि हाइ राजा कहै ॥
हो पठै बसत्र जिह समै समो सौ न लहै ॥८॥

चौपई ॥

कै मै आजु कटारी मारौ ॥
ह्वै जोगी सभ ही घर जारौ ॥
ध्रिग मेरो जियबो जग माही ॥
जा के नारि पिंगुला नाही ॥९॥

दोहरा ॥

जो भूखन बहु मोल के अंगन अधिक सुहाहि ॥
ते अब नागनि से भए काटि काटि तन खाहि ॥१०॥
सवैया ॥
बाक सी बीन सिंगार अंगार से ताल म्रिदंग क्रिपान कटारे ॥
ज्वाल सी जौनि जुडाई सी जेब सखी घनसार किसार के आरे ॥
रोग सो राग बिराग सो बोल बबारिद बूंदन बान बिसारे ॥
बान से बैन भाला जैसे भूखन हारन होहि भुजंगन कारे ॥११॥
बाक से बैन ब्रिलाप से बारन ब्रयाध सी बास बियार बही री ॥
काक सी कोकिल कूक कराल म्रिनाल कि ब्रयाल घरी कि छुरी री ॥
भार सी भौन भयानक भूखन जौन की ज्वाल सौ जात जरी री ॥
बान सी बीन बिना उहि बाल बसंत को अंतकि अंत सखी री ॥१२॥
बैरी सी ब्रयार ब्रिलाप सौ बोल बबान सी बीन बजंत बिथारे ॥
जंग से जंग मुचंग दुखंग अनंग कि अंकसु आक किआरे ॥
चादनी चंद चिता चहूं ओर सु कोकिला कूक कि हूक सी मारे ॥
भार से भौन भयानक भूखन फूले न फूल फनी फनियारे ॥१३॥

चौपई ॥

हो हठि हाथ सिंधौरा धरि हौ ॥
पिंगुल हेत अगनि महि जरि हौ ॥
जौ इह आजु चंचला जीयै ॥
तब भरथरी पानि कौ पीयै ॥१४॥
अड़िल ॥
तब तह गोरखनाथ पहूंच्यो आइ कै ॥
न्रिप प्रति कहियो अदेसु सु नाद बजाइ कै ॥
रानी दई जिवाइ सरूप अनेक धरि ॥
हो सुनहो भरथरि राव लेहु गहि एक करु ॥१५॥
भरथरि बाच ॥

दोहरा ॥

काह गहौ कौने तजौ चित मै करै बिबेक ॥
सभै पिंगुला की प्रभा रानी भई अनेक ॥१६॥

अड़िल ॥
यौ कहि गोरख नाथ तहा ते जात भयो ॥
भान मती को चित चंडार इक हर लियो ॥
ता दिन ते राजा कौ दियो भुलाइ कै ॥
हो रानी नीच के रूप रही उरझाइ कै ॥१७॥

दोहरा ॥

दूतमती दासी हुती तब ही लई बुलाइ ॥
पठै देत भी नीच सौ परम प्रीति उपजाइ ॥१८॥

चौपई ॥

जब दूती तह ते फिरि आई ॥
यौ पूछौ रानी तिह जाई ॥
कहु अलि मीत कबै ह्यां ऐ है ॥
हमरे चित को ताप मिटै है ॥१९॥
अड़िल ॥
कहु न सहचरी साचु सजनु कब आइ है ॥
जोर नैन सौ नैन कबै मुसकाइ है ॥
लपटि लपटि करि जाउ लला सौ तौन छिन ॥
हो कहो सखी मुहि मीत कबैहै कवन दिन ॥२०॥
बार बार गज मुतियन गुहौ बनाइ कै ॥
अपने लला को छिन मै लेउ रिझाइ कै ॥
टूक टूक तन होइ न मेरो नैक मन ॥
हो कासी करवत लियो प्रिया की प्रीत तन ॥२१॥
बिहसि बिहसि कब गरे हमारे लागि है ॥
तब ही सभ ही सोक हमारे भागि है ॥
चटक चटक दै बातै मटकि बताइ है ॥
हो ता दिन सखी सहित हम बलि बलि जाइ है ॥२२॥
जौ ऐसे झरि मिलै सजन सखि आइ कै ॥
मो मन कौ लै तब ही जाइ चुराइ कै ॥
भाति भाति रति करौ न छोरो एक छिन ॥
हो बीतै मास पचासन जानौ एक दिन ॥२३॥
मचकि मचकि कब कहि है बचन बनाइ कै ॥
लचकि लचकि उर साथ चिमटि है आइ कै ॥
लपटि लपटि मै जाउ प्रिय कै अंग तन ॥
हो मेल मेल करि राखो भीतर ताहि मन ॥२४॥
सवैया ॥
खंजन हूं न बद्यो कछु कै करि कंजु कुरंग कहा करि डारे ॥
चारु चकोर न आने ह्रिदै पर झुंड झखीनहु को झझकारे ॥
मैन रहियो मुरछाइ प्रभा लखि सारस भे सभ दास बिचारे ॥
अंतक सोचन धीरज मोचन लालची लोचन लाल तिहारे ॥२५॥
अड़िल ॥
सुनत सहचरी बचन तहा ते तह गई ॥
चातुरता बहु भाति सिखावत इह भई ॥
बसत्र मलीन उतारि भले पहिराइ कै ॥
हो तह ल्यावत तिह भई सु भेस बनाइ कै ॥२६॥
मन भावत जब मीत तरुनि तिन पाइयो ॥
भाति भाति ता कौ गहि गरे लगाइयो ॥
आसन चुंबन करे हरख उपजाइ कै ॥

हो तवन सखी को दारिद सकल मिटाइ कै ॥२७॥
दिजिक द्रुगा की पूजा करी रिझाइयो ॥
ता कै कर ते एक अमर फल पाइयो ॥
तिनि लै कै भरथरि राजा जू को दियो ॥
हो जब लौ प्रिथी अकास न्रिपत तब लौ जियो ॥२८॥
दुरग दत फल अमर जबै न्रिप कर परियो ॥
भान मती को देउ इहै चित मै करियो ॥
त्रिय किय मनहि बिचार कि मित्रहि दीजीयै ॥
हो सदा तरुन सो रहै केल अति कीजीयै ॥२९॥
मन भावंत मीत जदिन सखि पाईयै ॥
तन मन धन सभ वारि बहुरु बलि जाईयै ॥
मो मन लयो चुराइ प्रीतमहि आजु सभ ॥
हो रहै तरुन चिरु जियै दियौ फल ताहि लभ ॥३०॥

चौपई ॥

न्रिप को चित रानी हर लयो ॥
अबला मनु ता कै कर दयो ॥
वहु अटकत बेस्वा पर भयो ॥
फल लै कै ता के कर दयो ॥३१॥
अड़िल ॥
रही तरुनि सो रीझि अंग न्रिप के निरखि ॥
चारु कीए चख रहै सरूप अमोल लखि ॥
फल सोई लै हाथ रुचित रुचि सौ दियो ॥
हो जब लौ प्रिथी अकास न्रिपति तब लौ जियो ॥३२॥
लै बेस्वा फल दियो न्रिपति कौ आनि कै ॥
रूप हेरि बसि भई प्रीति अति ठानि कै ॥
लै राजै तिह हाथ चिंत चित मै कियो ॥
हो यह सोई द्रुम जाहि जु मै त्रिय कौ दियो ॥३३॥
भाति भाति तिह लीनो सोध बनाइ कै ॥
तिह बेस्वा को पूछ्यो निकटि बुलाइ कै ॥
साच कहो मुहि यह फल तै कह ते लहियो ॥
हो हाथ जोरि तिन बचन न्रिपति सौ यौ कहियो ॥३४॥
तुम अपने चित जिह रानी के कर दियो ॥
ता कौ एक चंडार मोहि करि मनु लियो ॥
तवन नीच मुहि ऊपर रहियो बिकाइ कै ॥
तव त्रिय तिह दिय तिन मुहि दयो बनाइ कै ॥३५॥
मै लखि तुमरौ रूप रही उरझाइ कै ॥
हरअरि सर तन बधी सु गई बिकाइ कै ॥
सदा तरनि ता को फलु हम ते लीजियै ॥
हो काम केल मुहि साथ हरख सो कीजियै ॥३६॥
तुम तिह त्रिय जो दयो फल अति रुचि मानि कै ॥
तिन लै दियो चंडारहि अति हितु ठानि कै ॥
उन मुहि मै तुहि दियो सु बिरहा की दही ॥
हो निरखि तिहारी प्रभा दिवानी ह्वै रही ॥३७॥
हौ तव प्रभा बिलोकि रही उरझाइ कै ॥
ग्रिह सिगरे की संग्रया दई भुलाइ कै ॥
अमर अजर फल तुम कौ दीनो आनि करि ॥
हो ता ते मदन संताप न्रिपति हमरो प्रहरि ॥३८॥
धंन्य धंन्य ता कौ तब न्रिपति उचारियो ॥
भाति भाति सौ ता के संग बिहारियो ॥

लपटि लपटि बेस्वा हूं गई बनाइ कै ॥
हो अप्रमान दुति हेरि रही उरझाइ कै ॥३९॥
मन भावंतो मीत जवन दिन पाईयै ॥
तवन घरी के पल पल बलि बलि जाईयै ॥
लपटि लपटि करि ता सौ अधिक बिहारीयै ॥
हो ततखिन द्रप कंद्रप को सकल निवारीयै ॥४०॥
सवैया ॥
बाल को रूप बिलोकि कै लाल कछू हसि कै अस बैन उचारे ॥
तै अटकी सुनि सुंदरि मो पर ऐसे न सुंदर अंग हमारे ॥
जीबो घनो सिगरो जग चाहत सो न रुचियो चित माझि तिहारे ॥
आनि जरारि दयो हम कौ फलु दास भए हम आजु तिहारे ॥४१॥
बेस्वा वाच ॥
नैन लगे जब ते तुम सौ तब ते तव हेरि प्रभा बलि जाऊां ॥
भौन भंडार सुहात न मो कह सोवत हूं बिझ कै बरराऊां ॥
जैतिक आपनी आरबला सभ मीत के ऊपर वारि बहाऊां ॥
केतिक बात जरारि सुनो फल प्रान दै मोल पिया कह ल्याऊं ॥४२॥
तै जु दियो तीय को फल थो दिज ते करि कोटिकुपाइ लीयो ॥
सोऊ लै कर जार कौ देत भई तिन रीझि कै मो पर मोहि दीयो ॥
न्रिप हौ अटकी तव हेरि प्रभा तन को तनि कै नहि ताप कीयो ॥
तिह खाहु हमै सुख देह दियो न्रिप राज करो जुग चार जीयो ॥४३॥
भरथरि बाच ॥
अड़िल ॥
ध्रिग मुहि कौ मै जु फलु त्रियहि दै डारियौ ॥
ध्रिग तिह दियो चंडार जु भ्रम न बिचारियौ ॥
ध्रिग ता को तिन त्रिय रानी सी पाइ कै ॥
हो दयो बेस्वहि परम प्रीति उपजाइ कै ॥४४॥
सवैया ॥
आधिक आपु भख्यो न्रिप लै फल आधिक रूपमती कह दीनो ॥
यार कै टूक हजार करे गहि नारि भिट्यार तिनै बधि कीनो ॥
भौन भंडार बिसार सभै कछु राम को नामु ह्रिदै द्रिड़ चीनो ॥
जाइ बस्यो तब ही बन मै न्रिप भेस को त्याग जुगेस को लीनो ॥४५॥

दोहरा ॥

बन भीतर भेटा भई गोरख संग सु धार ॥
राज त्याग अंम्रित लयो भरथिर राज कुमार ॥४६॥
सवैया ॥
रोवत है सु कहूं पुर के जन बौरे से डोलत ज्यो मतवारे ॥
फारत चीर सु बीर गिरे कहूं जूझै है खेत मनो जुझियारे ॥
रोवत नार अपार कहूं बिसंभारि भई करि नैनन तारे ॥
त्याग कै राज समाज सभै महाराज सखी बन आजु पधारे ॥४७॥
निजु नारि निहारि कै भरथ कुमारि बिसारि संभारि छकी मन मै ॥
कहूं हार गिरै कहूं बार लसै कछु नैकु प्रभा न रही तन मै ॥
झख केतुक बानन पीड़त भी मन जाइ रहियो मन मोहन मै ॥
मनो दीपक भेद सुनो सुर नाद म्रिगी गन जानु बिधी मन मै ॥४८॥

दोहरा ॥

अनिक जतन करि करि त्रिया हारत भई अनेक ॥
बन ही कौ न्रिप जात भयो मानियो बचन न एक ॥४९॥
जब राजा बन मै गए गोरख गुरू बुलाइ ॥

बहुरि भाति सिछ्या दई ताहि सिख्य ठहराइ ॥५०॥

भरथरी बाच ॥

कवन मरै मारै कवन कहत सुनत कह कोइ ॥
को रोवै कवनै हसै कवन जरा जित होइ ॥५१॥

चौपई ॥

हसि गोरख इमि बचन उचारे ॥
सुनहु भरथ हरि राज हमारे ॥
सति झूठ मूओ हंकारा ॥
कबहू मरत न बोलनहारा ॥५२॥

दोहरा ॥

काल मरै काया मरै कालै करत उचार ॥
जीभै गुन बख्यान ही स्रवनन सुनत सुधार ॥५३॥

चौपई ॥

काल नैन ह्वै सभन निहरई ॥
काल बकत्र ह्वै बाक उचरई ॥
काल मरत काल ही मारै ॥
भूला लोग भरम बीचारै ॥५४॥

दोहरा ॥

काल हसत कालै रोवत करत जरा जित होइ ॥
काल पाइ उपजत सभै काल पाइ बध होइ ॥५५॥

चौपई ॥

कालै मरत काल ही मारै ॥
भ्रमि भ्रमि पिंड अवारा पारै ॥
काम क्रोध मूओ हंकारा ॥
एक न मरियो सु बोलणहारा ॥५६॥
आसा करत सकल जग मरई ॥
कौन पुरखु आसा परहरई ॥
जो नर कोऊ आस कौ त्यागै ॥
सो हरि के पाइन सौ लागै ॥५७॥

दोहरा ॥

आसा की आसा पुरख जो कोऊ तजत बनाइ ॥
पाप पुंन्य सर तरि तुरत परम पुरी कह जाइ ॥५८॥
ज्यो समुंदहि गंगा मिलत सहंस धार कै साज ॥
त्यों गोरख रिखिराज सियों आजु मिल्यो न्रिप राज ॥५९॥

चौपई ॥

याते मै बिसथार न करौ ॥
ग्रंथ बढन ते अति चित डरौ ॥
ता ते कथा न अधिक बढाई ॥
भूल परी तह लेहु बनाई ॥६०॥
गोरख सो गोसटि जब भई ॥

राजा की दुरमति सभ गई ॥
सीखत ग्यान भली बिधि भयो ॥
जल ह्वै ज्यों जल मै मिलि गयो ॥६१॥
अड़िल ॥
एक मूंड भरथरि भ्रित चुअत निहारियो ॥
हसि हसि ता सो बचन इह भाति उचारियो ॥
जिन को लगे कटाछ राज ते खोवही ॥
हो तुहि कर लागे तै क्यो मूढ न रोवही ॥६२॥

चौपई ॥

बीतत बरख बहुत जब भए ॥
भरथरि देस आपने गए ॥
चीनत एक चंचला भई ॥
निकट रानियन के चलि गई ॥६३॥

दोहरा ॥

सुनि रानियन ऐसो बचन राजा लियो बुलाइ ॥
भाति भाति रोदन करत रही चरन लपटाइ ॥६४॥
सोरठा ॥
मासा रहियो न मास रकत रंच तन न रहियो ॥
स्वास न उडचो उसास आस तिहारै मिलन की ॥६५॥

चौपई ॥

जोग कीयो पूरन भयो न्रिप बर ॥
अब तुम राज करो सुख सौ घर ॥
जौ सभहिन हम प्रथम संघारो ॥
ता पाछे बन ओर सिधारो ॥६६॥
भरथरि बाच ॥

दोहरा ॥

जे रानी जोबन भरी अधिक तबै गरबाहि ॥
ते अब रूप रहित भई रहियो गरब कछु नाहि ॥६७॥

चौपई ॥

अबला हुती तरुनि ते भई ॥
तरुनि जु हुती ब्रिध ह्वै गई ॥
बिरधनि ते कोऊ लहीं न जावै ॥
चित कौ इहै असचरज आवै ॥६८॥
जे रानी जोबन की भरी ॥
ते अब भई जरा की धरी ॥
जे अबला सुंदर गरबाही ॥
तिन को रहियो गरब कछु नाही ॥६९॥

दोहरा ॥

जे मन मै गरबत तबै अधिक चंचला नारि ॥
ते अब जीति जरा लई सकत न देह संभारि ॥७०॥

चौपई ॥

जे जे त्रिया तबै गरबाही ॥
तिन के रहियो गरब कछु नाही ॥
तरुनी हुती बिरध ते भई ॥
ठौरै ठौर और ह्वै गई ॥७१॥
केसन प्रभा जात नहि कही ॥
जानुक जटन जानवी बही ॥
कैधो सकल दुगध सौ धोए ॥
ता ते सेत बरन कच होए ॥७२॥

दोहरा ॥

मुकतन हीरन के बहुत इन पर कीए सिंगार ॥
ता ते तिन की छबि भए तरुनि तिहारे बार ॥७३॥
जो तब अति सोभित हुते तरुनि तिहारे केस ॥
नील मनी की छबि हुते भए रुकम के भेस ॥७४॥

चौपई ॥

कैधो सकल पुहप गुहि डारे ॥
ता ते कच सित भए तिहारे ॥
ससि की जौनि अधिकधौ परी ॥
ता ते सकल स्यामता हरी ॥७५॥
अड़िल ॥
इक रानी तब कहियो न्रिपहि समझाइ कै ॥
मुहि गोरख कहि गए सुपन मै आइ कै ॥
जब लौ त्रिय ए जियत राज तब लौ करौ ॥
हो जब ए सभ मरि जै है तब पग मग धरो ॥७६॥
सुनि रनियन के बचन न्रिपहि करुणा भई ॥
तिन कै भीतर बुध कछुक अपुनी दई ॥
जो कछु पिंगुल कहियो मान सोई लियो ॥
हो राज जोग घर बैठ दोऊ अपने कियो ॥७७॥

दोहरा ॥

मानि रानियन को बचन राज करियो सुख मानि ॥
बहुरि पिंगुल के मरे बन कौ कियो पयान ॥७८॥

CHARITAR २०९ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ नौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥209॥4012॥अफजूं॥

दोहरा ॥

मगध देस को राव इक सरस सिंघ बडभागि ॥
जा कै त्रासै सूर सभ रहै चरन सौ लागि ॥१॥

चौपई ॥

चंचल कुअरि तवन की नारी ॥
आप हाथ जगदीस सवारी ॥

अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
जनु रति पति की प्रिया सु राजै ॥२॥
अड़िल ॥
एक राव को भ्रित अधिक सुंदर हुतो ॥
इक दिन ताहि बिलोक गई रानी सुतो ॥
ता दिन ते सु कुमार रही उरझाइ कै ॥
हो क्रोरि जतन करि ता कौ लियो बुलाइ कै ॥३॥
जबै कुअरि तिन लख्यो सजन घर आइयो ॥
चंचल कुअरि बचन इह भाति सुनाइयो ॥
काम भोग मुहि साथ करो तुम आइ करि ॥
हो चित को सभ ही दीजै सोक मिटाइ कर ॥४॥

चौपई ॥

तवन पुरख इह भाति बिचारी ॥
रमियो चहत मो सो न्रिप नारी ॥
काम भोग या सौ मै करिहौ ॥
कुंभी नरक बीच तब परिहौ ॥५॥
नाहि नाहि तिन पुरख बखानी ॥
तो सो रमत मै नही रानी ॥
ऐसे ख्याल बाल नहि परियै ॥
बेगि बिदा ह्यां ते मुहि करियै ॥६॥
नहीं नहीं पियरवा ज्यों करै ॥
त्यों त्यों चरन चंचला परै ॥
मै तुमरी लखि प्रभा बिकानी ॥
मदन ताप ते भई दिवानी ॥७॥

दोहरा ॥

मै रानी तुहि रंक के चरन रही लपटाइ ॥
काम केल मो सो तरुन क्यो नहि करत बनाइ ॥८॥
अड़िल ॥
अधिक मोल को रतनु जो क्योहूं पाइयै ॥
अनिक जतन भे राखि न ब्रिथा गवाइयै ॥
ताहि गरे सो लाइ भली बिधि लीजियै ॥
हो ग्रिह आवत निध नवौ किवार न दीजियै ॥९॥
तुमरी प्रभा बिलोक दिवानी मै भई ॥
तब ते सकल बिसारि सदन की सुधि दई ॥
जोरि हाथ सिर न्याइ रही तव पाइ पर ॥
हो काम केल मुहि साथ करो लपटाइ करि ॥१०॥

चौपई ॥

मूरख कछू बात नहि जानी ॥
पाइन सो रानी लपटानी ॥
मान हेत बच मानि न लयो ॥
अधिक कोप अबला के भयो ॥११॥
अड़िल ॥
सुनु मूरख मै तो को प्रथम संघारहों ॥
ता पाछे निज पेट कटारी मारिहों ॥
यहै कूप तव काल जानि जिय लीजियै ॥
हो नातर हम सौ आनि अबै रति कीजियै ॥१२॥

चौपई ॥

ता की कही न मूरख मानी ॥
तब रानी अति ह्रिदै रिसानी ॥
फास डारि ता कौ बध कियो ॥
बहुरो डारि कूप महि दियो ॥१३॥
हाइ हाइ करि राव बुलायो ॥
परियो कूप तिह ताहि दिखायो ॥
तबै न्रिपति अस बचन उचारे ॥
सो मै कहत हौ सुनहु प्यारे ॥१४॥

दोहरा ॥

या की इतनी आरबला बिधना लिखी बनाइ ॥
ता ते परि कूए मरियो क्या कोऊ करै उपाइ ॥१५॥

CHARITAR २१० — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ दस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥210॥4027॥अफजूं॥

दोहरा ॥

नैपाली के देस मै रुद्र सिंघ न्रिप राज ॥
सूरबीर जा के घने सदन भरे सभ साज ॥१॥

चौपई ॥

तिह अरिकुतुम प्रभा त्रिय रहै ॥
अति सुंदरि ता कौ जग कहै ॥
स्री तड़िताक्रित प्रभा दुहिता तिह ॥
जीति लई ससि अंस सकल जिह ॥२॥
लरिकापन ता को जब गयो ॥
अंग अंग जोबन झमक्यो ॥
आनि मैन तिह जबै संतावै ॥
मीत मिलन को समो न पावै ॥३॥
अड़िल ॥
कंजमती इक सहचरि लई बुलाइ कै ॥
ता सौ चित की बात कही समुझाइ कै ॥
छैल कुअरि कौ तै मुहि आनि मिलाइ दै ॥
हो जवन बात तुहि रुचै सु मो सौ आइ लै ॥४॥

दोहरा ॥

कुंजमती तिह कुअरि के अति आतुर सुनि बैन ॥
छैल कुअर के ग्रिह गई त्याग तुरतु निज ऐन ॥५॥
अड़िल ॥
छैल कुअर कौ दियो तुरत तिह आनि कै ॥
रमी कुअरि तिह साथ अधिक रुचि मानि कै ॥
छैल छैलनी छके न छोरहि एक छिन ॥
हो जनुक नवौ निधि राक सु पाई आजु इन ॥६॥
गहि गहि ता के गरे गई लपटाइ कै ॥

आसन चुंबन बहु बिधि कीए बनाइ कै ॥
टूटि खाट बहु गई न छोरियो मीत कौ ॥
हो तिह कर दियो उठाइ सु अपने चीत कौ ॥७॥

चौपई ॥

केल करत तरुनी अति रसी ॥
जनु करि प्रेम फास ज्यों फसी ॥
मन मै कहियो इसी के बरिहौं ॥
नातर मारि कटारी मरिहौं ॥८॥
अड़िल ॥
अधिक भोग प्रीतम कर दियो उठाइ कै ॥
आपु सोइ आंगन रही खाट डसाइ कै ॥
चमकि ठाढि उठ भी पितु आयो जानि करि ॥
हो अधिक रोइ गिरि परी तौन हीं खाट तरि ॥९॥
राजा बाच ॥

चौपई ॥

ताहि तबै पूछियो न्रिप आई ॥
क्यो रोवत दुहिता सुखदाई ॥
जो आग्या मुहि देहु सु करिहौं ॥
तै कोपी जिह पर तिह हरिहौं ॥१०॥
सुता बाच ॥
सोवत हुती सुपन मुहि भयो ॥
जानक राव राक कौ दयो ॥
हौ नहि जोग्रय हुती पितु ता के ॥
तै ग्रिह दयो सुपन मै जा के ॥११॥

दोहरा ॥

जानुक आगि जराइ कै लई भावरै सात ॥
बाह पकरि पितु तिहु दई सुता दान करि मात ॥१२॥
सोरठा ॥
मै तिह हुती न जोग जा कौ मुहि राजै दियो ॥
ता ते भई सु सोग रोवत हौ भरि जल चखन ॥१३॥

चौपई ॥

अब मोरे परमेसर ओहू ॥
भला बुरा भाखौ जन कोऊ ॥
प्रानन लगत तवन कौ बरि हौ ॥
नातरि मारि कटारी मरि हौ ॥१४॥

दोहरा ॥

सुपन बिखै माता पिता जिह मुहि दियो सुधारि ॥
मन बच क्रम करि कै भई मै ताही की नारि ॥१५॥
अड़िल ॥
कै मरि हौ बिख खाइ कि वाही कौ बरौ ॥
बिनु देखे मुख नाथ कटारी हनि मरौ ॥
कै मो कउ वह दीजै अबै बुलाइ कै ॥
हो नातर हमरी आसा तजहु बनाइ कै ॥१६॥

कहि कहि ऐसे बचन मूरछना ह्वै गिरी ॥
जनु प्रहार जमधर के कीए बिना मरी ॥
आनि पिता तिह लियो गरे सौ लाइ कै ॥
हो कुअरि कुअरि कहि धाइ पई दुख पाइ कै ॥१७॥
जो सुपने तै बरियो सु हमै बताइयै ॥
करियै वहै उपाइ मनै सुखु पाइयै ॥
बहु चिर द्रिगन पसारि पिता की ओरि चहि ॥
कछु कहबे कौ भई गई न ताहि कहि ॥१८॥
करत करत बहु चिर लौ बचन सुनाइयो ॥
छैलु कुअर को सभहिन नाम सुनाइयो ॥
सुपन बिखै पितु मात सु मुहि जा कौ दियो ॥
हो वहै आपनो नाथ मानि कै मै लियो ॥१९॥

चौपई ॥

धंन्य धंन्य तब राव उचारियो ॥
इह पतिब्रता सुता बीचारियो ॥
जो इह चहै वहै इह दीजै ॥
तिह करि राव राक ते लीजै ॥२०॥
न्रिप बर बोल तवन कहि लियो ॥
छोरि भंडार अमित धन दियो ॥
रंक हुतो राजा ह्वै गयो ॥
लेत सुता राजा की भयो ॥२१॥
अड़िल ॥
छैल कुअर कौ न्रिप बर लियो बुलाइ कै ॥
बेद बिधन सौ दुहिता दई बनाइ कै ॥
छैल छैलनी इह छल छलियो सुधारि करि ॥
हो भेद न किनहूं मूरख समझियो चित धरि ॥२२॥

दोहरा ॥

इह छल सौ तिह छैलनी छैल बरियो सुख पाइ ॥
मुख बाए सभ को रहियो लहियो न भेद बनाइ ॥२३॥

CHARITAR २११ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ गिआरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥211॥4050॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

सहिर बुखारा मै रहै एक राव मुचकंद ॥
सूरत के भीतर गड़्यो जनु दूजो बिधि चंद ॥१॥
हुसन जहा ता की त्रिया जा को रूप अपार ॥
स्री सुकुमार मती रहै दुहिता तिह सुभ कार ॥२॥
एक पूत ता ते भयो स्री सुभ करन सुजानु ॥
सूरबीर सुंदर सरस जानत सकल जहान ॥३॥
चलन चातुरी के बिखै चंचल चार प्रबीन ॥
जनुक चित्र की पुत्रका गड़ि बिधि और न कीन ॥४॥

चौपई ॥

तरुन भ्रात भगनी भे दोऊ ॥
राज करत न्रिप मरि गयो सोऊ ॥
हुसन जहा बिधवा रहि गई ॥
पति बिनु अधिक दुखातुर भई ॥५॥
मिलि साऊअन इह भाति उचारो ॥
राज करो सुत तरुन तिहारो ॥
मन को सोक निवारन कीजै ॥
हेरि हेरि सुत की छबि जीजै ॥६॥
केतिक दिवस बीति जब गए ॥
राज करत सुख सौ ते भए ॥
सुत सुंदर माता लखि पायो ॥
राजा को चित ते बिसरायो ॥७॥

दोहरा ॥

नरी गंध्रबी नागनी प्रभा बिलोकित आइ ॥
सुरी आसुरी किंन्रनी हेरि रहत उरझाइ ॥८॥
हेरि कुअर की छबि सभै धंनि धंनि कहै पुकारि ॥
मनि मोती कुंडल कनक देत तवन पर वारि ॥९॥
अड़िल ॥
ऐसो कुअर एक दिन जौ सखि पाइयै ॥
जनम जनम इह ऊपर बलि बलि जाइयै ॥
उर भए लेहि लगाइ न न्यारो कीजियै ॥
हो निरखि निरखि छबि अमित सजन की जीजियै ॥१०॥
जि को तरुनि पुरि नारि कुअर की छबि लहै ॥
उड लपटों इह संग यहे चित मै कहै ॥
एक बार इह छैल चिकनियहि पाइयै ॥
हो जनम जनम जुग क्रोरि सु बलि बलि जाइयै ॥११॥
अधिक कुअर की प्रभा बिलोकहि आइ कै ॥
जोरि जोरि द्रिग रहै कछू मुसकाइ कै ॥
परम प्रीति तन बिधी दिवानी ते भई ॥
हो लोक लाज की बात बिसरि चित ते गई ॥१२॥
नरी सुरी किन माहि आसुरी गंध्रबी ॥
कहा किंन्रनी कूर जछनी नागनी ॥
लछमि आदि दुति हेरि रहै उरझाइ कै ॥
हो बिनु दामन कै दीए सु जात बिकाइ कै ॥१३॥
रही चंचला रीझयति प्रभा निहारि कै ॥
प्रानन लौ धन धाम देत सभ वारि कै ॥
हसि हसि कहै कुअर जौ इक दिन पाइयै ॥
हो बहुर न न्यारो करियै हियै लगाइयै ॥१४॥

दोहरा ॥

स्री सुकुमार मती बहनि ता की राज कुमारि ॥
अप्रमान छबि भ्रात की रीझत भई निहारि ॥१५॥

चौपई ॥

निसु दिन यौ मन माहि बिचारै ॥
किह बिधि मौ सौ कुअर बिहारै ॥
भ्रात लाज मन महि जब धरै ॥
लोक लाज की चिंता करै ॥१६॥

लाज करै अरु चित चलावै ॥
क्यो हूं कुअर हाथ नहि आवै ॥
इक चरित्र तब बचित्र बिचारियो ॥
जा ते धरम कुअर को टारियो ॥१७॥
बेस्वा रूप आपनो करियो ॥
बार बार गज मोतिन जरियो ॥
हार सिंगार चारु तन धारे ॥
जन ससि तीर बिराजत तारे ॥१८॥
पान चबात सभा मै आई ॥
सभ लोगन कौ लयो लुभाई ॥
न्रिप कह अधिक कटाछ दिखाए ॥
जानुक बिना साइकन घाए ॥१९॥
हेरत न्रिपत रीझि छबि गयो ॥
घाइल बिना साइकन भयो ॥
आजु निसा इह बोल पठैहो ॥
काम भोग रुचि मानि कमैहो ॥२०॥
बीतयो दिवस निसा जब भई ॥
निकटि बुलाइ कुअर वहु लई ॥
काम भोग तिह साथ कमायो ॥
भेद अभेद कछू नहि पायो ॥२१॥

दोहरा ॥

लपटि लपटि ता सो कुअरि रति मानी रुचि मानि ॥
भ्रात भगनि के भेद को सकत न भयो पछान ॥२२॥
सोरठा ॥
रमत भयो रुचि मानि भेद अभेद पायो न कछु ॥
छैली छल्यो निदान छैल चिकनिया राव को ॥२३॥

चौपई ॥

बेस्वा के भूखन जब धरै ॥
निस दिन कुअर कलोलै करै ॥
जब भगनी के भूखन धरई ॥
लहै न को राजा को करई ॥२४॥

CHARITAR २१२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥212॥4074॥अफजूं॥

दोहरा ॥

राजा खंड बुदेल कौ रुद्र केतु तिह नाम ॥
सेव रुद्र की रैनि दिन करत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

स्री क्रितु क्रित मती त्रिय ता की ॥
और न बाल रूप सम वा की ॥
ता सो नेह न्रिपति कौ भारो ॥
निजु मन कर ता के दै डारो ॥२॥

दोहरा ॥

स्री म्रिग नेत्र सरूप अति दुहित ता की एक ॥
लहि न गई राजा बडे चहि चहि रहे अनेक ॥३॥
इंद्र केतु छत्री हुतो चछु मती लहि लीन ॥
अपनो तुरत निकारि मनु बेचि तवन कर दीन ॥४॥

चौपई ॥

रैनि दिवस तिह रूप निहारै ॥
चित मै इहै बिचारु बिचारै ॥
ऐसो छैल कैसहूं पैयै ॥
काम भोग करि गरे लगैयै ॥५॥
एक सखी कह निकट बुलायो ॥
मन भावन के सदन पठायो ॥
सहिचरि ताहि तुरत लै आई ॥
आनि कुअरि कह दयो मिलाई ॥६॥
अड़िल ॥
मन भावंत मीत कुअरि जब पाइयो ॥
द्रिड़ गहि गहि कर ता कौ गरे लगाइयो ॥
अधरन को करि पान सु आसन बहु कीए ॥
हो जनम जनम के सोक बिसारि सभै दीए ॥७॥
सिव मंदिर मै जाइ भोग ता सौ करै ॥
महा रुद्र की कानि न कछु चित मै धरै ॥
ज्यों ज्यों जुरकै खाट सु घंट बजावही ॥
हो पूरि तवन धुनि रहै न जड़ कछु पावही ॥८॥
एक दिवस पूजत सिव न्रिप गयो आइ कै ॥
सुता सहचरी पितु प्रति दई उठाइ कै ॥
जाइ राव के तीर सखी तुम यौ कहौ ॥
हो हम पूजा ह्यां करत घरी द्वै तुम रहौ ॥९॥

दोहरा ॥

स्री सिव की पूजा करत हमरी सुता बनाइ ॥
घरी द्वै कु हम बैठि ह्यां बहुरि पूज है जाइ ॥१०॥

चौपई ॥

उतै मीत तिन लियो बुलाई ॥
काम रीति करि प्रीतुपजाई ॥
करि करि कुवति सेज चरकावै ॥
एक हाथ तन घंट बजावै ॥११॥
भाति भाति ता कौ रति कीनी ॥
न्रिप जड़ धुनि घंटा की चीनी ॥
भेद अभेद कछू नहि पायो ॥
इह दुहिता कस करम कमायो ॥१२॥
ता सौ भोग बहुत बिधि कीनो ॥
लपटि लपटि आसन कह दीनो ॥
चुंबन आलिंगन कीने तिन ॥
भेद न लहियो मूड़ राजै इन ॥१३॥
काम केल ता सौ बहु कियो ॥
बहुरो छोर द्वार कह दियो ॥

पठै सहचरी पिता बुलाइयो ॥
मन मै अधिक जार दुख पायो ॥१४॥
या कौ पिता मोहि गहि लैहै ॥
बहुरि हमै जमपुरी पठैहै ॥
चिंतातुर थरहरि कंपावै ॥
ज्यों कदली कह बात डुलावै ॥१५॥
जार बाच ॥

चौपई ॥

मोरे प्रान राखि अब लीजै ॥
नाहक मुहि न अजाए कीजै ॥
मोरो मूंडि काट न्रिप दैहै ॥
कापरदी के कंठ चड़ैहै ॥१६॥
सुता बाच ॥

चौपई ॥

तिन कहियो तरुन न चिंता करो ॥
धीरज चित आपने धरो ॥
तेरो अब मै प्रान उबरिहौ ॥
पित हेरत तो कौ पति करिहौ ॥१७॥
आप पिता तन जाइ उचरी ॥
मो पर क्रिपा अधिक सिव करी ॥
निजु कर पकरि मोहि पति दीनो ॥
हम पर अधिक अनुग्रह कीनो ॥१८॥
चलहु पिता तह ताहि दिखाऊ ॥
ता सौ बहुरि सु ब्याह कराऊ ॥
बाहि पकरि राजा कौ ल्याई ॥
आनि जार सौ दियो दिखाई ॥१९॥
धंन्य धंन्य ता कौ पितु कहियो ॥
कर सौ करि दुहिता कौ गहियो ॥
क्रिपा कटाछ अधिक सिव कीनो ॥
ता ते बर उतम तुहि दीनो ॥२०॥
तुम पर क्रिपा जु सिव जू कीनी ॥
हमहूं आजु ताहि तुहि दीनी ॥
बोलि दिजन कह ब्याह करायो ॥
भेद अभेद मूड़ नहि पायो ॥२१॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तह चंचला ब्याह जार सो कीन ॥
पितु हूं लै ता को दई सक्यो न छल जड़ चीन ॥२२॥

CHARITAR २१३ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तेरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥213॥4096॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

चादा सहिर बसत जह भारो ॥

धरनी तल महि अति उजियारो ॥
बिसुन केतु राजा तह रहई ॥
करम धरम सुचि ब्रत खग कहई ॥१॥
स्री बुंदेल मती ता की त्रिय ॥
जा महि बसत सदा न्रिप को जिय ॥
स्री गुलजार मती दुहिता तिह ॥
कहूं न तरुनि जगत मै सम जिह ॥२॥

दोहरा ॥

तिन इक तरुन बिलोकियो अमित रूप की खानि ॥
लीनो सदन बुलाइ कै रमत भई रुचि मानि ॥३॥

चौपई ॥

ता सौ लपटि करत रस भई ॥
ग्रिह की सुधि सभहूं तजि दई ॥
निस दिन ता सौ भोग कमावै ॥
लपटि लपटि ता के उर जावै ॥४॥

दोहरा ॥

तरुन पुरख तरुनी तरुन बाढी प्रीति अपार ॥
लपटि लपटि आसन करै हेरि हेरि मुख यार ॥५॥

चौपई ॥

रैनि दिवस ता सौ रति करै ॥
मात पिता तै चित मै डरै ॥
पिय मुहि कहियो संगि कर लीजै ॥
अवरै देस पयानो कीजै ॥६॥
द्वै बाजन आरूड़ित ह्वैहैं ॥
पितु को सकल खजान लैहैं ॥
मन भावत तो सौ रति करि हौ ॥
सकल द्रप कंद्रप के हरि हौ ॥७॥
भली भली तब ताहि बखान्यो ॥
ता को बचन सत्य करि मान्यो ॥
पितु को लेत खजाना भई ॥
चादा छोरि दछिनहि गई ॥८॥
लेखत इहै भवन मै भई ॥
हौ तीरथ न्रहैबे को गई ॥
मिलिहों तुमै जियत जौ आई ॥
जौ मरि गई त राम सहाई ॥९॥
ग्रिह को सकल दरबु संग लै कै ॥
उधरि चली ता सौ हित कै कै ॥
लपटि लपटि ता सौ रति करै ॥
द्रप कंद्रप को सभ ही हरै ॥१०॥
बीतत बरख बहुत जब भए ॥
सभ ही खाइ खजानो गए ॥
भूखी मरन तरुनि जब लागी ॥
तब ही छोरि प्रीतमहि भागी ॥११॥
अड़िल ॥

बहुरि सहिर चादा मै पहुची आइ कै ॥
मात पिता के पगन रही लपटाइ कै ॥
मै जु तीरथन धरम करियो सो लीजियै ॥
हो अरध पुंन्य दै मोहि असीसा दीजियै ॥१२॥
सुनि सुनि ऐसे बचन रीझि राजा रहियो ॥
धंन्य धंन्य दुहिता को नारि सहित कहियो ॥
तीरथ सकल अन्नहाइ मिली मुहि आइ कै ॥
हो जनम जनम के पापन दयो मिटाइ कै ॥१३॥

दोहरा ॥

भोग प्रथम करि जार तज तही पहूची आइ ॥
भेद मूड़ न्रिप न लहियो लई गरे सौ लाइ ॥१४॥

CHARITAR २१४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौदस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥214॥4110॥अफजूं॥

दोहरा ॥

दछिन को राजा बडो संभा नाम सु बीर ॥
औरंग साह जा सो सदा लरत रहत रनधीर ॥१॥

चौपई ॥

संभा पुर सु नगर इक तहा ॥
राज करत संभा जू जहा ॥
इक कवि कलस रहत ग्रिह वा के ॥
परी समान सुता ग्रिह ता कै ॥२॥
जब संभा तिह रूप निहारियो ॥
इहै आपने चित बिचारियो ॥
या कौ भली भाति गहि तोरो ॥
ब्राहमनी हम न कछु छोरो ॥३॥
एक सहिचरी तहा पठाई ॥
तरुनि कुअरि तन बात जताई ॥
आजु न्रिपति के सदन सिधारो ॥
लपटि लपटि तिह संग बिहारो ॥४॥
तरुनि कुअरि मन मै यौ कही ॥
हमरी बात धरम की रही ॥
हा भाखौ तौ धरम गवाऊं ॥
नाहि करे बाधी घर जाऊं ॥५॥
ता ते जतन ऐस कछु करियै ॥
धरम राखि मूरख कह मरियै ॥
नाहि नाम पापी सुनि लैहै ॥
खाटि उठाइ मंगाइ पठैहै ॥६॥
तब तिन कहियो बचन सहचरि सुनि ॥
पूजन कालि जाऊगी मै मुनि ॥
तह ही आप न्रिपति तुम ऐयहु ॥
काम भोग मुहि साथ कमैयहु ॥७॥
भोर भयो पूजन सिव गई ॥
न्रिपहूं तहा बुलावत भई ॥

उतै दुसमनन दूत पठायो ॥
संभहि म्रितु स्वान की घायो ॥८॥
जब ही फौज सत्रु की धई ॥
अबला सहित न्रिपति गहि लई ॥
निरखि रूप ता को ललचायो ॥
भोग करन ता सौ चित भायो ॥९॥

दोहरा ॥

तरुन कला तरुनी तबै अधिक कटाछ दिखाइ ॥
मूड़ मुगल कौ आतमा छिन मै लयो चुराइ ॥१०॥

चौपई ॥

अधिक कैफ तब ताहि पिवाई ॥
बहु बिधि ताहि गरे लपटाई ॥
दोऊ एक खाट पर सोए ॥
मन के मुगल सगल दुख खोए ॥११॥

दोहरा ॥

निरखि मुगल सोयो परियो काढि लई करवारि ॥
काटि कंठ ता को गई अपनो धरम उबारि ॥१२॥
चंचलान के चरित्र को चीनि सकत नहि कोइ ॥
ब्रहम बिसन रुद्रादि सभ सुर सुरपति कोऊ होइ ॥१३॥

CHARITAR २१५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पंदरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥215॥4123॥अफजूं॥*

चौपई ॥

जोगी इक गहबर बन रहई ॥
चेटक नाथ ताहि जग कहई ॥
एक पुरख पुर ते निति खावै ॥
ता ते त्रास सभन चित आवै ॥१॥
तहा कटाछि कुअरि इक रानी ॥
जा की प्रभा न जात बखानी ॥
सुंदरि सकल जगत ते रहई ॥
बेद सासत्र सिंम्रित सभ कहई ॥२॥
ता को नाथ अधिक डरु पावै ॥
एक पुरख तिह नित खवावै ॥
चित के बिखै त्रास अति धरै ॥
मेरो भछ जुगिस मति करै ॥३॥
तब रानी हसि बचन उचारे ॥
सुनु राजा प्रानन ते प्यारे ॥
ऐसो जतन क्योन नही करीयै ॥
प्रजा उबारि जोगियहि मरीयै ॥४॥
राजा तन इह भाति उचारियो ॥
अभरन सकल अंग मै धारियो ॥
बलि की बहुत समग्री लई ॥

अरध रात्री जोगी पहि गई ॥५॥
भछ भोज तिह प्रथम खवायो ॥
अधिक मद्रय लै बहुरि पिवायो ॥
बहुरि आपु हसि बचन उचारे ॥
हौ आई हित भजन तिहारे ॥६॥

दोहरा ॥

जिह बिधि तुम भछत पुरख सो मुहि प्रथम बताइ ॥
बहुरि अधिक रुचि मानि करि भोग करो लपटाइ ॥७॥
जब जोगी ऐसे सुनियो फूल गयो मन माहि ॥
आज बराबर सुख कहूं प्रिथवी तल मै नाहि ॥८॥

चौपई ॥

भरभराइ ठाढा उठ भयो ॥
रानियहि संग आपुने लयो ॥
गहि बहिया मन मै हरखायो ॥
भेद अभेद कछू नहि पायो ॥९॥
बडो कराह बिलोकत भयो ॥
सात भावरनि ता पर लयो ॥
रानी पकरि ताहि तह डारियो ॥
जीवत हुतो भूंजि करि मारियो ॥१०॥

दोहरा ॥

आपनो आपु बचाइ कै भूंनि जोगियहि दीन ॥
लीनी प्रजा उबारि कै चरित चंचला कीन ॥११॥

CHARITAR २१६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सोलह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥216॥4134॥अफजूं॥

दोहरा ॥

फैलकूस पातिसाह के सूर सिकंदर पूत ॥
संबरारि लाजत निरखि सीरति सूरति सपूत ॥१॥

चौपई ॥

राज साज जब ही तिन धरियो ॥
प्रथम जंग जंगिर सौ करियो ॥
ता को देस छीनि करि लीनो ॥
नामु सिकंदर साह को कीनो ॥२॥
बहुरि साह दारा कौ मारियो ॥
हिंदुसता कौ बहुरि पधारियो ॥
कनकबजा एस्वर कौ जिनियो ॥
सामुहि भयो ताहि तिह झिनियो ॥३॥

दोहरा ॥

प्रथम सुता रूमीन की कीयो ब्याह बनाइ ॥

बहुरि कनौजिस की सुता बरी म्रिदंग बजाइ ॥४॥
अड़िल ॥
बहुरि देस नैपाल पयानो तिन कियो ॥
कसतूरी के म्रिगन बहुत बिधि गहि लियो ॥
बहुरि बंगाला की दिसि आपु पधारियो ॥
हो आनि मिल्यो सो बच्यो अर्यो तिह मारियो ॥५॥
जीत बंगाला छाज करन पर धाइयो ॥
तिनो जीति नागर पर अधिक रिसाइयो ॥
एकपाद बहु हनै सूर सावत बने ॥
हो जीति पूरबहि कियो पयानो दछिने ॥६॥

छपै छंद ॥

झारि खंडियन झारि चमकि चादियन संघारियो ॥
बिद्रभ देसियन बारि खंड बुंदेल बिदारियो ॥
खड़ग पान गहि खेत खुनिस खंडिसन बिहंडियो ॥
पुनि मारासट्र तिलंग द्रौड़ तिल तिल करि खंडियो ॥
न्रिप सूरबीर सुंदर सरस मही दई महि इसन गहि ॥
दछनहि जीति पटन उपटि सु किय पयान पुनि पसचमहि ॥७॥
अड़िल ॥
बरबरीन कौ जीति बाहु सालीन बिहंडियो ॥
गरब अरब को दाहि सरब दरबिन को दंडियो ॥
अरब खरब रिपु चरबि जरबि छिन इक मै मारे ॥
हो हिंगुलाज हबसी हरेव हलबी हनि डारे ॥८॥
मगरबीन को जीति सरब गरबिन को मारियो ॥
सरब चरबियन चरबि गरबि गजनी को गारियो ॥
मालनेर मुलतान मालवा बसि कियो ॥
हो दुंदभि जीत प्रतीची दिसि जै को दियो ॥९॥

दोहरा ॥

तीनि दिसा को जीति कै उतर कियो पयान ॥
सभ देसी राजान लै दै कै जीत निसान ॥१०॥
देस देस के एस सभ अपनी अपनी सैन ॥
जोरि सिकंदरि से चड़े सूर सरस सभ ऐन ॥११॥

भुजंग छंद ॥

चड़े उतरा पंथ के बीर भारे ॥
बजे घोर बादित्र भेरी नगारे ॥
प्रिथी चाल कीनो दसो नाग भागे ॥
भयो सोर भारो महा रुद्र जागे ॥१२॥

चौपई ॥

प्रथमहि जाइ बलख कौ मारियो ॥
सहिर बुखारा बहुरि उजारियो ॥
तिबित जाइ तलब कौ दीनो ॥
जीति देस अपने बसि कीनो ॥१३॥
अड़िल ॥
कासमीर कसिकार कबुज काबल कौ कीनो ॥
कसटवार कुलू कलूर कैठल कह लीनो ॥

काबोज किलमाक कठिन पल मै कटि डारे ॥
हो कोटि चीन के कटक हने करि कोप करारे ॥१४॥

दोहरा ॥

बहुरि चीन माचीन की दिसि कौ कियो पयान ॥
लै लौंडी राजा मिलियो साह सिकंदरहि आनि ॥१५॥
जीति चीन माचीन कौ बसि कीनी दिसि चारि ॥
बहुरि समुंद मापन निमित मन मै कीयो बीचारि ॥१६॥
अड़िल ॥
वुलंदेजियन जीति अंगरेजियन कौ मारियो ॥
मछली बंदर मारि बहुरि हुगलियहि उजारियो ॥
कोक बंदर कौ जीति गूआ बंदर हूं लीनो ॥
हो हिजली बंदर जाइ बिजै दुंदभि कह दीनो ॥१७॥
सात समुंद्रन मापि प्रिथी तल कौ गयो ॥
जीति रसातल सात स्वरग को मग लियो ॥
इंद्र साथ हूं लरियो अधिक रिसि ठानि कै ॥
हो बहुरि प्रिथी तल माझ प्रगटियो आनि कै ॥१८॥

दोहरा ॥

लोक चौदहूं बसि कीए जीति प्रिथी सभ लीन ॥
बहुरि रूस के देस की ओर पयानो कीन ॥१९॥

चौपई ॥

बीरज सैन रूस को राजा ॥
जा ते महा रुद्र सो भाजा ॥
जब तिन सुन्यो सिकंदर आयो ॥
आनि अगमनै जुध मचायो ॥२०॥
तहा युध गाड़ो अति माचियो ॥
बिनु ब्रिण एक सुभट नहि बाचियो ॥
हारि परे इक जतन बनायो ॥
दैत हुतो इक ताहि बुलायो ॥२१॥

दोहरा ॥

कुहन पोसती तन धरे आवत भयो बजंग ॥
जनुक लहिर दरियाव ते निकसियो बडो निहंग ॥२२॥

चौपई ॥

जो कबहूं कर को बल करै ॥
हाथ भए हीरा मलि डरै ॥
जहा कूदि करि कोप दिखावै ॥
तौनै ठौर कूप परि जावै ॥२३॥

दोहरा ॥

एक गदा कर मै धरै औरन फासी प्रास ॥
पाच सहस्र स्वार ते मारत ता कौ त्रासु ॥२४॥

चौपई ॥

जा कौ ऐंच गदा की मारै ॥
ता को मूंड फोर ही डारै ॥
रिस भरि पवन बेगि ज्यों धावै ॥
पत्रन ज्यों छत्रियन भजावै ॥२५॥
भाति भाति तिन बीर खपाए ॥
मो पहि ते नहि जात गनाए ॥
जौ तिन के नामन ह्यां धरियै ॥
एक ग्रंथ इनही को भरियै ॥२६॥
मत करी ता के पर डारियो ॥
सो तिन ऐंच गदा सो मारियो ॥
जो कोऊ सुभट तवन पर धावै ॥
एक चोट जम लोक पठावै ॥२७॥
रन ते एक पैग नहि भाजै ॥
ठाढो बीर खेत मै गाजै ॥
अधिक राव राजन कौ मारियो ॥
कापि सिकंदर मंत्र बिचारियो ॥२८॥

दोहरा ॥

स्री दिननाथ मती तरुनि साह चीन के दीन ॥
सो ता पर धावत भई भेस पुरख को कीन ॥२९॥

चौपई ॥

पहिले तीर तवन कौ मारै ॥
बरछा बहुरि कोप तन झारै ॥
तमकि तेग को घाइ प्रहारियो ॥
गिरियो भूमि जानु हनि डारियो ॥३०॥
भू पर गिरियो ठाढि उठि भयो ॥
ता कौ पकरि कंठ ते लयो ॥
सुंदर बदन अधिक तिह चीनो ॥
मारि न दई राखि तिह लीनो ॥३१॥
ता कह पकरि रूसियन दयो ॥
आपु उदित रन को पुनि भयो ॥
भाति भाति अरि अमित संघारै ॥
जनु द्रुम पवन प्रचंड उखारै ॥३२॥
सवैया ॥
काती क्रिपान कसे कटि मै भट भारी भुजान कौ भार भरे है ॥
भूत भविख्य भवान सदा कबहूं रन मंडल ते न टरे है ॥
भीर परे नहि भीर भे भूपति लै लै भला भली भाति अरे है ॥
ते इन बीर महा रनधीर सु हाकि हजार अनेक हरे है ॥३३॥

चौपई ॥

तब ही साह सकंदर डरियो ॥
बोलि अरसतू मंत्र बिचरियो ॥
बली नास को बोलि पठायो ॥
चित मै अधिक त्रास उपजायो ॥३४॥
अड़िल ॥
जो तुम हम कौ कहो तो ह्यां तै भाजियै ॥
रूस सहिर के भीतरि जाइ बिराजियै ॥
गोल ब्रयाबानी सभ ही कौ मारि है ॥

हो काटि काटि मूंडन के कोट उसारि है ॥३५ ॥

दोहरा ॥

बली नास जोतक बिखै अधिक हुतो परबीन ॥
धीरज दीया सकंदरहि बिजै आपनी चीन ॥३६ ॥

चौपई ॥

बली नास हजरतिहि उचारो ॥
तुमहूं आपु कमंदहि डारो ॥
तुमरे बिना जीति नहि होई ॥
अमिति सुभट धावहिां मिलि कोई ॥३७ ॥

दोहरा ॥

सुनत सिकंदर ए बचन करियो तैसोई काम ॥
कमंद डारि ता को गरे बाध लिआइयो धाम ॥३८ ॥
अड़िल ॥
भोजन साहि भली बिधि ताहि खवाइयो ॥
बंधन ता के काटि भले बैठाइयो ॥
छूटत बंधन भज्यो तहा हीं को गयो ॥
हो आनि लौंडियहि बहुरि सिकंदर कौ दयो ॥३९ ॥

दोहरा ॥

ता को रूप बिलोकि कै हजरति रहियो लुभाइ ॥
लै आपुनी इसत्री करी ढोल म्रिदंग बजाइ ॥४० ॥
बहुरि जहा अंम्रित सुन्यो गयो तवन की ओर ॥
करि इसत्री चेरी लई और बेगमन छोरि ॥४१ ॥

चौपई ॥

जु त्रिय रैनि कौ सेज सुहावै ॥
दिवस बैरियन खड़ग बजावै ॥
ऐसी तरुनि करन जौ परई ॥
तिह तजि और कवन चित करई ॥४२ ॥
भाति भाति ता सो रति ठानी ॥
चेरी ते बेगम करि जानी ॥
ता कौ संग आपुने लयो ॥
आबहयात सुन्यो तह गयो ॥४३ ॥

दोहरा ॥

जह ता कौ चसमा हुतो तही पहूचो जाइ ॥
मकर कुंट जह डारियै मछ्ली होइ बनाइ ॥४४ ॥

चौपई ॥

इंद्र देव तब मंत्र बतायो ॥
अंम्रित साह सिकंदर पायो ॥
अजर अमर मनुख्य जो ह्वै है ॥
जीति सु लोक चौदहूं लै है ॥४५ ॥

दोहरा ॥

ता ते या को कीजियै कछु उपचार बनाइ ॥
जित्यो जरा तन जड़ रहै अंम्रित पियौ न जाइ ॥४६॥
अड़िल ॥
रंभा नाम अपछरा दई पठाइ कै ॥
बिरध रूप खग को धरि बैठी आइ कै ॥
एक पंख तन रहियो न ता कौ जानियै ॥
हो जा तन लहियो न जाइ घ्रिणा जिय ठानियै ॥४७॥

दोहरा ॥

जबै सिकंदर अंम्रित को पीवन लग्यो बनाइ ॥
गलत अंग पंछी तबै निरखि उठियो मुसकाइ ॥४८॥

चौपई ॥

पूछियो ताहि पंछियहि जाई ॥
क्योन तै हस्यो हेरि मुहि भाई ॥
सकल ब्रिथा वहु मोहि बतैयै ॥
हमरे चित को ताप मिटैयै ॥४९॥
पंछी बाच ॥

दोहरा ॥

पछ एक तन न रहियो रकत न रहियो सरीर ॥
तन न छुटत दुख सौ जियत जब ते पियो कुनीर ॥५०॥

चौपई ॥

भला भयो अंम्रित यह पीहै ॥
हमरी भाति बहुत दिन जीहै ॥
सुनि ए बचन सिकंदर डरियो ॥
पियत हुतो मधु पान न करियो ॥५१॥

दोहरा ॥

अछल छैल छैली छल्यो इह चरित्र के संग ॥
सु कबि काल तब ही भयो पूरन कथा प्रसंग ॥५२॥

CHARITAR २१७ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥217॥4186॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

मसहद को राजा बडो चंद्र केतु रणधीर ॥
द्वार परे जा के रहै देस देस के बीर ॥१॥
अड़िल ॥
ससि धुज अरु रवि केतु पूत ता के भए ॥
जिन सम सुंदर सूर न लोक तिहूं ठए ॥
रही प्रभा तिन अधिक जगत मै छाइ कै ॥
हो ह्वै ता के ससि सूर रहे मिडराइ कै ॥२॥

दोहरा ॥

स्री दिन केतु मती रहै न्रिप की बाल अपार ॥
अधिक तेज ता के रहै कोऊ न सकति निहारि ॥३॥
स्री रसरंग मती हुती ता की और कुमारि ॥
बसि राजा ता को भयो निजु त्रिय दई बिसारि ॥४॥

चौपई ॥

अधिक रोख रानी तब भई ॥
जरि बरि आठ टूक ह्वै गई ॥
इह न्रिप को छल सो गहि लीजै ॥
राज्रय पूत आपुने को दीजै ॥५॥
सोवत निरखि राव गहि लयो ॥
गहि करि एक धाम मै दयो ॥
स्री रसरंग मती जिय मारी ॥
सभहिन लहत राव कहि जारी ॥६॥
भयो सूर राजा जू मरियो ॥
हम को नाथ नाथ बिनु करियो ॥
या को प्रथम दाह दै लीजै ॥
चंद्र केतु को राजा कीजै ॥७॥
राजा मरियो प्रजा सभ जान्यो ॥
भेद अभेद किनूं न पछान्यो ॥
भलो बुरो कबहूं न बिचारियो ॥
आतपत्र ससिधुज पर ढारियो ॥८॥

चौपई ॥

इह चरित्र अबला पिय गहियो ॥
दूजे कान भेद नहि लहियो ॥
राजा कहि कर सवति जराई ॥
निजु सुत को दीनी ठकुराई ॥९॥

CHARITAR २१८ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥218॥4195॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

पीर एक मुलतान मै सरफ दीन तिह नाउ ॥
खूंटागड़ के तट बसै बाद रहीमहि गाउ ॥१॥
अड़िल ॥
एक सिख्य की दुहिता पीर मंगाइ कै ॥
आनी अपने धाम अधिक सुख पाइ कै ॥
स्री चपलाग मती जिह जगत बखानई ॥
हो ताहि रूप की रासि सभे पहिचानई ॥२॥

दोहरा ॥

कितक दिनन भीतर तवन त्यागे पीर परान ॥
स्री चपलाग मती बची पाछे जियत जवान ॥३॥

राइ खुसाल भए करी तिन त्रिय प्रीति बनाइ ॥
भाति भाति ता सौ रमी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥४॥
नित प्रति राइ खुसाल तिह निजु ग्रिह लेत बुलाइ ॥
लपटि लपटि ता सौ रमे भाग अफीम चड़ाइ ॥५॥
रमत रमत त्रिय तवन कौ रहि गयो उदर अधान ॥
लोगन सभहन सुनत ही ऐसे कहियो सुजान ॥६॥
अड़िल ॥
रैनि समै ग्रिहि पीर हमारे आवई ॥
रीति प्रीति की मो सौ अधिकुपजावई ॥
एक पूत मै मागि तबै ता ते लियो ॥
हो नाथ क्रिपा करि मो पर सुत मो कौ दियो ॥७॥
केतिक दिनन प्रसूत पूत ता के भयो ॥
सति पीर को बचन मानि सभहूं लयो ॥
धंन्य धंन्य अबलाहि खादिमनुचारियो ॥
हो भेद अभेद न किनहूं मूरख बिचारियो ॥८॥

CHARITAR २१९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥219॥4203॥अफजूं॥

दोहरा ॥

आसफ खा उमराव के रहत आठ सै त्रीय ॥
नितिप्रति रुचि माने घने अधिक मान सुख जीय ॥१॥

चौपई ॥

रोसन जहा तवन की नारी ॥
आपु हाथ जनुकीस सवारी ॥
आसफ खा ता सौ हित करै ॥
वहु त्रिय रस ता के नहि ढरै ॥२॥
मोती लाल साहु को इकु सुत ॥
ता को रूप दियो बिधना अति ॥
इह त्रिय ताहि बिलोक्यो जब ही ॥
लागी लगन नेह की तब ही ॥३॥
सखी एक तिन तीर बुलाई ॥
जानि हेत की कै समुझाई ॥
मेरी कही मीत सौ कहियहु ॥
हमरी ओर निहारत रहियहु ॥४॥
सवैया ॥
सीसे सराब कि फूल गुलाब कि मत किधौ मदराकि से प्यारे ॥
बानन से म्रिग बारन से तरवारन से कि बिखी बिखियारे ॥
नारिन को कजरारन के दुख टारन है किधौ नींद निंदारे ॥
नेह जगे कि रंगे रंग काहू के मीत के नैन सखी रसियारे ॥५॥
अड़िल ॥
चंद चादनी राति सजन सौ पाईयै ॥
गहि गहि ता के अंग गरे लपटाइयै ॥
पल पल बलि बलि जाउ न छोरो एक छिन ॥
हो बीतहिं बरस पचास न जानो एक दिन ॥६॥
पल पल बलि बलि जाउ पिया को पाइ कै ॥

निरखि निरखि दोऊ नैन रहो उरझाइ कै ॥
करि अधरन को पान अजर ह्वै जग रहो ॥
हो अपने चित की बात न काहू सौ कहो ॥७॥
मरि कै होइ चुरैल लला को लागिहो ॥
टूक कोटि तन होइ न तिह तजि भागिहो ॥
बिरह सजन के बधी दिवानी ह्वै मरो ॥
हो पिय पिय परी कबर को बीच सदा करो ॥८॥
काजी जहा अलह ह्वै न्याइ चुकाइ है ॥
सभ रूहन को अपुन निकट बुलाइ है ॥
तहा ठाढी ह्वै ज्वाब निडर ह्वै मै करों ॥
हो इसक तिहारे पगी न कानि कछू धरो ॥९॥
निरखि लला को रूप दिवाने हम भए ॥
बिन दामन के दए सखी बिकि कै गए ॥
करियो वहै उपाइ जो मिलियै जाइ कै ॥
हो सभ सखि तेरो दारिद देउं बहाइ कै ॥१०॥

दोहरा ॥

लखि आतुर ता को सखी चली तहा ते धाइ ॥
मन भावंता माननी दीनो मीत मिलाइ ॥११॥
अड़िल ॥
मन भावंता मीत कुअरि जब पाइयो ॥
सकल चित को सुंदरि सोक मिटाइयो ॥
ता को भोगन भरी तरुनि ता की भई ॥
हो आसफ खान बिसारि ह्रिदै ते देत भी ॥१२॥
किय बिचार चित किह बिधि पिय कउ पाइयै ॥
असफ खा के घर ते किह बिधि जाइयै ॥
भाखि भेद ता कौ ग्रिह दयो पठाइ कै ॥
हो सूर सूर कहि भूमि गिरी मुरछाइ कै ॥१३॥
सूर सूर करि गिरी जनुक मरि के गई ॥
डारि संदूकिक माझ गाडि भूअ मै दई ॥
काढि सजन लै गयो तहा ते आनि कै ॥
हो लै अपुनी त्रिय करी अधिक रुचि मानि कै ॥१४॥

दोहरा ॥

भेद अभेद न मूड़ कछु ता को सक्यो पछानि ॥
जान्यो प्रानन छाडि कै कियो सु भिसत पयान ॥१५॥

CHARITAR २२० — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥220॥4218॥अफजूं॥

दोहरा ॥

ईसफ जैयन मौर है संमन खान पठान ॥
तुमन पठानन के तिसै सीस झुकावत आनि ॥१॥

चौपई ॥

स्री म्रिगराज मती ता की त्रिय ॥

बसी रहै राजा के निति जिय ॥
परम रूप तन ताहि बिराजै ॥
पसुपति रिपु निरखत दुति लाजै ॥२॥

दोहरा ॥

सादी खान तहा हुतो इक पठान को पूत ॥
अधिक प्रभा ता की दिपै निरखि रहित पुरहूत ॥३॥
अड़िल ॥
तिह रानी ता को ग्रिह लियो बुलाइ कै ॥
लपटि लपटि तिह साथ रमी सुख पाइ कै ॥
तब ही लोकहि कहियो न्रिपति सौ जाइ करि ॥
हो खड़ग हाथ गहि राव पहूच्यो आइ करि ॥४॥
न्रिप करि खड़ग बिलोक अधिक अबला डरी ॥
चित अपनै के बीच इहै चिंता करी ॥
गहि क्रिपान ततकाल मीत को मारि कै ॥
हो टूक टूक करि दियो देग मै डारि कै ॥५॥
डारि देग तर आग दई औटाइ कै ॥
बहुरि सगल तिह भखि गई मासु बनाइ कै ॥
सगरो सदन निहारि चक्रित राजा रहियो ॥
हो भेद दाइकह हन्यो झूठ इन मुहि कहियो ॥६॥

दोहरा ॥

प्रथम भोग करि भखि गई भेद दाइकह घाइ ॥
राजा ते साची रही इह छल छिद्र बनाइ ॥७॥

CHARITAR २२१ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥221॥4225॥अफजूं॥

दोहरा ॥

काबल मै अकबर गए एक बिलोक्यो बाग ॥
हरी भई आंखै निरखि रोसन भयो दिमाग ॥१॥
भोग मती इक भामनी अकबर के ग्रिह माहि ॥
ता की सम तिहुं लोक मै रूपवती कहूं नाहि ॥२॥
अड़िल ॥
एक साह को पूत गुल मिहर भाखीयै ॥
ता की प्रभा समान कहो किह राखीऐ ॥
अप्रमान तिह प्रभा जगत मै जानियै ॥
हो असुरेस दिन नाथ कि ससि करि मानियै ॥३॥

चौपई ॥

भोग मती निरखत तिह भई ॥
मन बच क्रम बसि ह्वै गई ॥
चित के बिखै बिचारि बिचारियो ॥
एकहि दूतन प्रगट उचारियो ॥४॥

दोहरा ॥

सुनहु सखी गुल मिहर कौ दीजै मोहि मिलाइ ॥
जनम जनम दारिद्र तव दैहो सकल मिटाइ ॥५॥

चौपई ॥

ऐसे बचन सुनत सखी भई ॥
ततछिन दौरि तहा ही गई ॥
भाति भाति ता कौ समुझायो ॥
आन हितू कह मीत मिलायो ॥६॥

दोहरा ॥

मन भावंता मीत सुभ तरुनि तरुन कौ पाइ ॥
रस ता के रसती भई अकबर दयो भुलाइ ॥७॥
त्रिय चिंता चित मै करी रहौं मीत के साथ ॥
अकबर घर ते निकसियै कछु चरित्र के साथ ॥८॥
अड़िल ॥
कहियो मीत सौ नारि तवनि समझाइ करि ॥
प्रगट कहियो पिय साथ चरित्र दिखाइ करि ॥
आपुन मै स्वै इक द्रुम माझ गडाइहौ ॥
हो तह ते निकसि सजन तुमरे ग्रिह आइहौ ॥९॥

चौपई ॥

मीत बिहसि यौ बचन उचारे ॥
तुम ऐहो किह भाति हमारे ॥
तनिक भनक अकबर सुनि लै है ॥
मुहि तुहि को जम लोक पठै है ॥१०॥
अड़िल ॥
अकबर बपुरो कहा छलहि छलि डारिहों ॥
भेद पाइ निकसौगी तुमै बिहारिहों ॥
या मूरख के सीस जूतियन झारि कै ॥
हो मिलिहौ तुहि पिय आइ चरित्र दिखारि कै ॥११॥
जानिक बडे चिनार तरे सोवत भई ॥
लखि अकबर सौ जागि न टरि आगे गई ॥
या द्रुम की मुहि छाहि अधिक नीकी लगी ॥
हो पौढि रही सुख पाइ न तजि निंद्रा जगी ॥१२॥

दोहरा ॥

आपे अकबर बाह गहि जो मुहि आइ जगाइ ॥
हौ इह ही सोई रहौ पन्रहहिन ताहि लगाइ ॥१३॥

चौपई ॥

ऐसी बात साह सुनि पाई ॥
लै पनही तिह ओर चलाई ॥
जूती वहै हाथ तिन लई ॥
बीसक झारि अकबरहि गई ॥१४॥
हजरति कोप अधिक तब भरियो ॥
वहै ब्रिछ महि गडहा करियो ॥
ता मै ऐंचि तरुन वह डारी ॥
मूरख बात न कछू बिचारी ॥१५॥

अड़िल ॥
ताहि ब्रिछ महि डारि आपु दिली गयो ॥
आनि उकरि द्रुम मीत काढ ता कौ लयो ॥
मिली तरुनि पिय साथ चरित्र बनाइ बरि ॥
हो अकबर के सिर माझ जूतियन झारि करि ॥१६॥

CHARITAR २२२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बाईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥222॥4241॥अफजूं॥

चौपई ॥

राधावती नगर इक भारो ॥
आपु हाथ जनुकीस सवारो ॥
क्रूर केतु राजा तह रहई ॥
छत्र मती रानी जग कहई ॥१॥
ता को अधिक रूप उजियारो ॥
आपु ब्रहम जनु करन सवारो ॥
ता सम तीनि भवन त्रिय नाही ॥
देव अदेव कहै मन माही ॥२॥

दोहरा ॥

हीरा मनि इक साह को पूत हुतो तिह ठौर ॥
तीनि भवन भीतर बिखे ता सम हुतो न और ॥३॥
छत्र मती तिह लखि छकी छैल छरहरो ज्वान ॥
रूप बिखै सम तवन की तीनि भवन नहि आन ॥४॥
सोरठा ॥
ता को लियो बुलाइ रानी सखी पठाइ कै ॥
कहियो मीत मुसकाइ संक त्यागि मो कौ भजहु ॥५॥
अड़िल ॥
जो रानी तिह कहियो न तिन बच मानियो ॥
पाइ रही पर मूड़ न किछु करि जानियो ॥
हाइ भाइ बहु भाति रही दिखराइ करि ॥
हो रमियो न ता सो मूरख हरखुपजाइ करि ॥६॥
करम काल जो लाख मुहर कहूं पाइयै ॥
लीजै हाथ उचाइ त्यागि नह पाइयै ॥
जो रानी सो नेह भयो लहि लीजियै ॥
हो जो वहु कहै सु करियै संक न कीजियै ॥७॥
भजु रानी तिह कहियो न तिह ता कौ भज्यो ॥
काम केल हित मान न तिह ता सो सज्यो ॥
नाहि नाहि सो करत नासितकी तह भयो ॥
हो तब अबला कै कोप अधिक चित मै छयो ॥८॥

चौपई ॥

तरुनी तबै अधिक रिसि भरी ॥
कठिन क्रिपान हाथ मै धरी ॥
ता को तमकि तेग सौ मारियो ॥
काटि मूंड छित ऊपर डारियो ॥९॥
टूक अनेक तवन कौ कीनो ॥

डारि देग के भीतर दीनो ॥
निजु पति बोलि धाम मै लयो ॥
भछ भाखि आगे धरि दयो ॥१०॥

दोहरा ॥

मदरा माझ चुआइ तिह मद करि प्रयायो पीय ॥
लहि बारुनि मूरखि पियो भेद न समझ्यो जीय ॥११॥
हाडी तुचा गिलोल कै दीनी डारि चलाइ ॥
रहत मासु दाना भए अस्वन दयो खवाइ ॥१२॥

चौपई ॥

ता सो रति जिन जानि न करी ॥
ता पर अधिक कोप त्रिय भरी ॥
है न्रिप को तिह मास खवायो ॥
मूरख नाहि नाहि कछु पायो ॥१३॥

CHARITAR २२३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तेईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥223॥4254॥अफज़ूं॥*

दोहरा ॥

बिसन केतु राजा बडो जूनागड़ को ईस ॥
इंद्र चंद्र सौ राज धौ अलकिस कै जगदीस ॥१॥

चौपई ॥

स्री त्रिपरारि कला ता की त्रिय ॥
मन क्रम बसि राख्यो जिन करि पिय ॥
अधिक तरुनि को रूप बिराजै ॥
स्री त्रिपुरारि निरखि दुति लाजै ॥२॥

दोहरा ॥

नवल कुअर इक साहु को पूत रहै सुकुमार ॥
रीझ रही त्रिपुरारि कला ता को रूप निहारि ॥३॥
अड़िल ॥
नवल कुअरहि बिलोकि हियो ललचाइयो ॥
पठै सहचरी निजु ग्रिह बोल पठाइयो ॥
अधिक मानि रुचि रमी हरख उपजाइ कै ॥
हो काम रीति जुत प्रीतम अधिक मचाइ कै ॥४॥
छैल छैलनी छकै अधिक सुख पावही ॥
जोर जोर चखु चार दोऊ मुसकावही ॥
लपट लपट करि जाहि न छिन इक छोरही ॥
हो करि अधरन को पान कुचान मरोरही ॥५॥
चौरासियन आसनन करत बनाइ कै ॥
काम कलोल मचाइ अधिक सुख पाइ कै ॥
कोकसार के भेद उचरै बनाइ कर ॥
हो निरखि प्रभा बलि जाहि दोऊ मुसकाइ करि ॥६॥

चौपई ॥

एक दिवस इमि जार उचारो ॥
सुनु रानी तै कहियो हमारो ॥
जिनि तव नाथ बिलोकै आई ॥
दुहूंअन हने कोप उपजाई ॥७॥
त्रियो बाच ॥
प्रथम राव तन भेद जताऊ ॥
बहुरि ढढोरे नगर दिवाऊ ॥
दै दुंदभि पुनि तोहि बुलैहौ ॥
काम भोग रुचि मानि मचैहौ ॥८॥
अड़िल ॥
अधिक भोग करि मीतहि दयो उठाइ कै ॥
आपु न्रिपति सौ कही बात समुझाइ कै ॥
सिव मो कौ इह भाति कहियो हौ आइ करि ॥
हो सो हउ तुमरे तीर कहौ अब आइ करि ॥९॥

चौपई ॥

जब दिन एक सभागा ह्वै है ॥
महादेव मेरे ग्रिह ऐ है ॥
निजु हाथन दुंदभी बजावै ॥
कूकि अधिक सभ पुरहि सुनावै ॥१०॥
जब तुम ऐस सबद सुनि लैयहु ॥
तब उठ धाम हमारे ऐयहु ॥
भेद किसू औरहि नहि कहियहु ॥
भोग समौ त्रिय को भयो लहियहु ॥११॥

दोहरा ॥

तुरत आनि मो को भजहु सुनु राजा सुखधाम ॥
पत्र्यो परोसो होइ सुत मोहन रखियहु नाम ॥१२॥
यौ कहि कै न्रिप सो बचन ग्रिह ते दियो उठाइ ॥
पठै सहचरी जार कौ लीनो निकट बुलाइ ॥१३॥

चौपई ॥

काम भोग प्रीतम सो कियो ॥
द्रिड़ करि बहुत दमामो दियो ॥
कूकि कूकि पुर सकल सुनाइसि ॥
भोग समै रानी को आइसि ॥१४॥
बचन सुनत राजा उठि धयो ॥
भोग समो रानी को भयो ॥
जो सिव बचन कहियो सो ह्वै है ॥
परियो परोसो सुत ग्रिह दै है ॥१५॥
आवत न्रिपति जार डरपानो ॥
रानी सो यौ बचन बखानो ॥
निराप्राध मो कौ तै मारियो ॥
मै त्रिय कछु न तोरि बिगारियो ॥१६॥
सिव बच सिमरि तहा न्रिप गयो ॥
भोग करत निजु त्रिय से भयो ॥
पीठि फेरि ग्रिह को जब धायो ॥

तब त्रिय आपनो जार बुलायो ॥१७॥

दोहरा ॥

कहा जात राजा कहियो सिव सुत दीनो धाम ॥
पलो पलोसो लीजियै मोहनि रखियै नाम ॥१८॥

चौपई ॥

प्रथम जार को बोलि पठायो ॥
दै दुंदभि पुनि राव बुलायो ॥
बहुरि कूकि कै पुरहि सुनाइसि ॥
मितवा को सुत कै ठहराइसि ॥१९॥

दोहरा ॥

निसु दिन राखत जार को सुत सुत कहि कहि धाम ॥
सिव बच लहि न्रिप चुप रहियो इह छल छल्यो सु बाम ॥२०॥

CHARITAR २२४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौबीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥224॥4274॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बाराणसी नगरिक बिराजै ॥
जा के लखे पाप सभ भाजै ॥
बिमल सैन राजा तह रहई ॥
सभ दुरजन के दल को दहई ॥१॥
सुनत कुअर न्रिप को इक सुत बर ॥
अमित दरबु ता के भीतर घर ॥
जो अबला तिह रूप निहारै ॥
सभ ही दरबु आपनो वारै ॥२॥

दोहरा ॥

स्री चखुचारु मती रहै न्रिप की सुता अपार ॥
कै रति पति की पुत्रका कै रति को अवतार ॥३॥
अड़िल ॥
जब चखुचारु मती तिह रूप निहारियो ॥
यहै आपने चित के बिखै बिचारियो ॥
क्यो हूं ऐसो छैल जु इक छिन पाइयै ॥
हो करो न न्यारो नैक सदा बलि जाइयै ॥४॥

दोहरा ॥

सहचरि एक बुलाइ कै ता के दई पठाइ ॥
मो कौ मीत मिलाइयै करि कै कोटि उपाइ ॥५॥
अड़िल ॥
दीजै सखी मिलाइ सजन मुहि चाहियै ॥
जा के बिरह बिसेख भए हिय दाहियै ॥
जिय आवत उड मिलौं संक को छोरि कै ॥

हो लोक लाज कुल कानि करोरिक ओरि कै ॥६ ॥
स्यानी सखी बिसेख भेद तिह पाइ कै ॥
आनि प्रिया कह प्रीतम दयो मिलाइ कै ॥
निरखि कुअरि तिह अंग दिवानी सी भई ॥
हो बिरह समुंद के माझ मगन ह्वै कै गई ॥७ ॥

चौपई ॥

प्रीतम स्रयों यौ प्रिया सुनायो ॥
तै मेरो मन आजु चुरायो ॥
हौ हूं ऐस जतन कछु करिहौ ॥
सभहिन छोरि तोहि कौ बरिहौ ॥८ ॥
जो तुहि कहौ मित्र सो करियहु ॥
मोर पिता ते नैक न डरियहु ॥
सूरज नाम आपनो धरियहु ॥
मोहि बियाहि लै धाम सिधरियहु ॥९ ॥
तब अबला निजु पिता बुलायो ॥
पकरि बाह ते मित्र दिखायो ॥
सुनु राजा सूरज इह आही ॥
चाहत है तव सुता बियाही ॥१० ॥

दोहरा ॥

प्रथम प्रतिग्रया लीजियै या की अबै बनाइ ॥
पुनि मो कौ इह दीजियै सुनु राजन के राइ ॥११ ॥
जब लौ इह इह घर रहै चड़ै न सूरज अकास ॥
जब इह जाइ तहा चड़े जग मै होइ प्रकास ॥१२ ॥

चौपई ॥

सत्य बात राजै इह जानी ॥
भेद न लखियो कछू अग्यानी ॥
राज कुमारि मंत्र इक पड़ियो ॥
द्वै दिन लगे सूरज नहि चड़ियो ॥१३ ॥

दोहरा ॥

मंत्रन सो अभिमंत्र करि बरिया दई उडाइ ॥
निसु नाइक सो जानियै गगन रहियो थहराइ ॥१४ ॥

चौपई ॥

जब राजे इह भाति निहारियो ॥
सत्य सूरज करि ताहि बिचारियो ॥
तुरत ब्याहि दुहिता तिह दीनी ॥
भेद अभेद की बात न चीनी ॥१५ ॥

CHARITAR २२५ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥225॥4289॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

मालनेर के देस मै मालकौस पुर गाउ ॥
मान साह इक चौधरी बसत सु तवनै ठाउ ॥१॥
रुसतम देई तवन की रहत सुंदरी नारि ॥
रूप सील सुचि क्रिआ सुभ पति की अति हितकार ॥२॥
ता को पति उमराव की करत चाकरी निति ॥
साहजहा के धाम को राखै दरबु अमिति ॥३॥
भाग पियत बहु चौधरी और अफीम चड़ाइ ॥
आठ पहर घूमत रहै लोग हसै बहु आइ ॥४॥

चौपई ॥

लोक सकल मिलि ताहि बखानै ॥
मूरख साह कछू नहि जानै ॥
जो नर भाग अफीम चड़ावै ॥
ता कह सुधि कहो कब आवै ॥५॥
अड़िल ॥
साह करी चित माझ सु चिंत बिचारि कै ॥
सभ धन इन को हरौ चरित्र दिखारि कै ॥
हजरति हूं को दरबु सदन हरि ल्याइहौ ॥
हो सभ सोफिन को मूंड मूंड कै खाइहौ ॥६॥
हजरति जू को प्रथम खजाना सभ लयो ॥
पुनि सोफिन को दरबु धरोहरि धरत भयो ॥
बहुरि अतिथ को भेस त्रियहि पहिराइ कै ॥
हो बनी कचहिरी भीतर दई पठाइ कै ॥७॥

दोहरा ॥

हजरति को लोगन सहित लीनो दरबु चुराइ ॥
भरि थैली ठिकरी धरी मुहरै करी बनाइ ॥८॥
अड़िल ॥
मानि साह बहु भाग अफीम चड़ाइ कै ॥
घुमत घूमत तहा पहूंच्यो जाइ कै ॥
तब लौ कहियो अतिथ इक ठिकरी दीजियै ॥
हो काजु हमारो आजु चौधरी कीजियै ॥९॥
दयो एक घट फोरि बहुत ठिकरी भई ॥
तिन ते एक उठाइ अतिथ कै कर दई ॥
लै के जबै अतीत निरख ता को लयो ॥
हो एक कचहिरी माझ स्राप तरुनी दयो ॥१०॥
ठीक्रन ही को दरबु सकल ह्वै जाइ है ॥
हजरति लोगन सहित न कछु धन पाइ है ॥
काजि क्रोरि कुटुवार खजानो तब लहियो ॥
हो सति स्राप भयो कहियो अतिथ जैसो दयो ॥११॥
सभ सोफिन को मूंडि मूंडि अमली गयो ॥
मुहरे लई निकारि ठीकरी दै भयो ॥
आजु लगे ओहि देस अतिथ को मानियै ॥
हो मसला इह मसहूर जगत मै जानियै ॥१२॥

दोहरा ॥

वा के खाना नै लिख्यो हजरति जू को बनाइ ॥
स्राप दयो इक अतिथ नै सभ धन गयो गवाइ ॥१३॥

CHARITAR २२६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छबीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥226॥4302॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

देस मालवा के बिखै मदन सैन इक राइ ॥
गड़ ता सौ राजा बिधिहि और न सकियो बनाइ ॥१॥
नाम रहै तिह तरुनि को स्री मनिमाल मतीय ॥
मनसा बाचा करमना बसि करि राखियो पीय ॥२॥
पूत तहा इक साहु को नामु राइ महबूब ॥
रूप सील सुचि ब्रतन मै गड़ियो बिधातै खूब ॥३॥

चौपई ॥

अमित तरुनि को रूप बिराजै ॥
जिह मुख निरख चंद्रमा लाजै ॥
सुंदर सम ता की कोऊ नाही ॥
रूपवंत प्रगटियो जग माही ॥४॥
जब रानी वह कुअर निहारियो ॥
इहै आपने ह्रिदै बिचारियो ॥
कै इह आजु बोलि रति करियै ॥
कै उर मारि कटारी मरियै ॥५॥
लहि सहचरि इक हितू बुलाई ॥
चित की ब्रिथा ताहि समझाई ॥
मेरी कही मीत सौ कहियहु ॥
जो मुरि आस जियन की चहियहु ॥६॥

दोहरा ॥

सुनि आतुर बच कुअरि के सखी गई तह धाइ ॥
ताहि भले समुझाइ कै इह उहि दयो मिलाइ ॥७॥
अड़िल ॥
मन भावंता मीतु कुअरि जब पाइयो ॥
लखि छबि लोल अमोल गरे सो लाइयो ॥
लपटि लपटि दोऊ जाहि तरुन मुसकाइ कै ॥
हो काम केल की रीति प्रीति उपजाइ कै ॥८॥
तब लौ राजा ग्रिह रानी के आइयो ॥
आदर अधिक कुअरि करि मदरा प्रयाइयो ॥
गिरियो मत ह्वै न्रिपति खाट पर जाइ कै ॥
हो तब ही तुरतहि लिय त्रिय जार बुलाइ कै ॥९॥
न्रिप की छतिया ऊपर अपनी पीठि धरि ॥
काम केल द्रिड़ किय निजु मीतु बुलाइ करि ॥
मदरा के मद छके न कछु राजे लहियो ॥
हो लेत पस्वारे भयो न कछु मुख ते कहियो ॥१०॥
काम भोग करि त्रिय पिय दयो उठाइ कै ॥
मूड़ राव कछु भेद न सकियो पाइ कै ॥
इह छल छैली छैल सु छलि पति कौ गई ॥
हो सु कबि स्याम इह कथा तबै पूरन भई ॥११॥

CHARITAR २२७ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सताईवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥227॥4313॥अफजूं॥

चौपई ॥

उतर देस न्रिपति इक रहई ॥
बीरज सैन जा को जग कहई ॥
बीरज मती तवन बर नारी ॥
जानक रामचंद्र की प्यारी ॥१॥
अधिक कुअर को रूप बिराजै ॥
रति पति की रति की छबि लाजै ॥
जो अबला ता को लखि जाई ॥
लाज साज तजि रहत बिकाई ॥२॥

दोहरा ॥

एक साह की पुत्रिका जा को रूप अपार ॥
निरखि मदन जा को रहै न्याइ चलत सिर झारि ॥३॥
अड़िल ॥
एक दिवस वहु राइ अखेट सिधाइयो ॥
ऊच धौलहर ठाढि कुअरि लखि पाइयो ॥
तरुनि साहु की सुता रही उरझाइ कै ॥
हो हेरि न्रिपति की प्रभा सु गई बिकाइ कै ॥४॥

चौपई ॥

तही ठाढि इक चरित बनाइसि ॥
डोरि बडी की गुडी चड़ाइसि ॥
ता मै इहै संदेस पठावा ॥
भेत चित कौ न्रिपहि जतावा ॥५॥

कबितु ॥

ताजी कूं तुराइ कै असाड़ी ओड़ि राह पौणा जालिम जवाल दुहा नैना नूं नचावणा ॥
अंजन दिवाइ बाड़ बिसिख चड़ाइ कै खुसाली नूं बड़ाइ नाले कैफा नूं चड़ावणा ॥
बदन दिखाणा सानूं छाती नाल लाणा अते नैणा नालि नैण जोड़ि वेहा नेहु लावणा ॥
बाचे पत्र आणा मैही मिले ब्यां न जाणा साई यारो जी असाडे पास आवणा ही आवणा ॥६॥

दोहरा ॥

गुडीया बिखै संदेस लिखि दीनो कुअरि पठाइ ॥
तनिक बार लागी नही न्रिपहि पहूंची जाइ ॥७॥

चौपई ॥

पतीया छोरि लखी प्रिय कहा ॥
इह पठियो तरुनी लिखि उहा ॥
या गुडीया पर बैठहु धाई ॥
चिंत न करहु चित मै राई ॥८॥
कै गुडीया उपर चड़ि आवहु ॥
नातर टाग तरे करि जावहु ॥
जो तुहि गिरन धरन पर देऊ ॥
स्वरग साच करि बास न लेऊ ॥९॥

दोहरा ॥

मात्र पछ सत सपत पितु परै नरक कुल सोइ ॥
जौ गुडीया ते भूमि परि पतन तिहारो होइ ॥१०॥

चौपई ॥

तुम या कौ पिय डोरि न जानहु ॥
सगूआ कै या कौ पहिचानहु ॥
तुमरो बाल बिघन नहि ह्वै है ॥
या मै देखि पाव धरि लै है ॥११॥

दोहरा ॥

मंत्र सकति ते मै किया सगूआ याहि बनाइ ॥
संक त्यागि करि आईयै सुनु राजन के राइ ॥१२॥

चौपई ॥

जब राजै ऐसी सुनि पाई ॥
चित की संक सगल बिसराई ॥
हय ते उतरि डोरि पर चढियो ॥
आनंद अधिक चित मै बढियो ॥१३॥
अड़िल ॥
कुअर कुअरि के तीर पहूच्यो आइ कै ॥
काम भोग कौ कीयो हरख उपजाइ कै ॥
साह तब लगे द्वार पहूच्यो आइ करि ॥
हो तबै तरुनि सौ बात कही पिय नैन भरि ॥१४॥
अब त्रिय तुमरो साह मै गहि मारि है ॥
इही धौलहर ऊपर ते मुहि डारि है ॥
टूक टूक ह्वै सभै पसुरिया जाइ है ॥
हो तुहि भेटे हम आजु इहै फल पाइ है ॥१५॥
न्रिप चिंता चित भीतर कछू न कीजियै ॥
निरखि हमारो चरित अबै ही लीजियै ॥
बार तिहारो एक न बाकन पाइ है ॥
हो हम सो भोग कमाइ हसत ग्रिह जाइ है ॥१६॥
मंत्र सकति हुंडीआ तिह कियो बनाइ कै ॥
पकरि कान ते पति को दियो दिखाइ कै ॥
बहुरि मेख भे बाध्रयो न्रिपहि बनाइ करि ॥
हो बहुरि तवन को कियो सुदेस उठाइ करि ॥१७॥
साह निरख ते गुडिया दई चड़ाइ कै ॥
करि कै संग स्वार दयो न्रिपुडाइ कै ॥
पियहि निरखिते मीत दयो पहुंचाइ घर ॥
हो भेद अभेद न कछु जड़ सक्यो बिचार करि ॥१८॥

दोहरा ॥

साहु सुता निरखिति पतिह गुडिया दई चड़ाइ ॥
ता पर बधे बजंत्र थे बाजत भए बनाइ ॥१९॥
बिहसि नारि निज नाथ सो कहियो पियहि पहुचाइ ॥
मित्र हमारो साह इह दए दमामो जाइ ॥२०॥

चौपई ॥

इह छल मीत सदन पहुचायो ॥
ता को बार न बाकन पायो ॥
निजु पति भेद अभेद न चीनो ॥
कबि प्रसंग पूरन तब कीनो ॥२१॥

CHARITAR २२८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठाईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥228॥4334॥अफजूं॥*

चौपई ॥

पलवल देस छत्रिनी रहै ॥
बुधि मती जा को जग कहै ॥
जब तन ताहि बिरधता आइस ॥
तब तिन एक चरित्र बनाइस ॥१॥
द्वै संदूक जूतियन भरे ॥
मुहरन के कुलि सुनत उचरे ॥
पुत्र पउत्र ता दिन ते ता के ॥
उदित भए सेवा कह वा के ॥२॥

दोहरा ॥

जु कछु कहै प्रिय मानही सेवा करहि बनाइ ॥
आइसु मै सभ ही चलै दरबु हेत ललचाइ ॥३॥

चौपई ॥

जो आग्या त्रिय करै सु मानै ॥
जूतिन को मुहरै पहिचानै ॥
आजु कालि बुढिया मरि जै है ॥
सभ ही दरबु हमारो ह्वै है ॥४॥
जब तिह निकटि कुटंब सभावै ॥
तह बुढिया यौ बचन सुनावै ॥
जियत लगे इह दरब हमारो ॥
बहुरि लीजियहु पूत तिहारो ॥५॥
जब वहु त्रिया रोगनी भई ॥
काजी कुटवारहि कहि गई ॥
करम धरम जो प्रथम करैहै ॥
सो सुत बहुरि खजानो लैहै ॥६॥

दोहरा ॥

करम धरम सुत जब लगे करै न प्रथम बनाइ ॥
तब लौ सुतन न दीजियहु हमरो दरबु बुलाइ ॥७॥

चौपई ॥

कितिक दिनन बुढिया मरि गई ॥
तिन के ह्रिदन खुसाली भई ॥
करम धरम जो प्रथम करैहै ॥

पुनि इह बाटि खजानो लैहै ॥८॥

दोहरा ॥

करम धरम ता के करे अति धनु सुतन लगाइ ॥
बहुरि संदूक पत्रहीन के छोरत भे मिलि आइ ॥९॥

चौपई ॥

इह चरित्र त्रिय सेव कराई ॥
सुतन दरबु कौ लोभ दिखाई ॥
तिन के अंत न कछु कर आयो ॥
छल बल अपनो मूंड मुंडायो ॥१०॥

◄ इति स्री चरित्र पखयाने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥229॥4344॥अफजूं॥

दोहरा ॥

मालनेर के देस मै मरगज पुर इक गाउं ॥
साह एक तिह ठा बसत मदन साह तिह नाउ ॥१॥
मदन मती ता की त्रिया जा को रूप अपार ॥
आपु मदन ठठके रहै तिह रति रूप बिचार ॥२॥
चेला राम तहा हुतो एक साह को पूत ॥
सगल गुनन भीतर चतुर सुंदर मदन सरूप ॥३॥

चौपई ॥

चेला राम जबै त्रिय लहियो ॥
ता को तबै मदन तन गहियो ॥
तरुनि तदिन ते रहत लुभाई ॥
निरखि सजन छबि रहीं बिकाई ॥४॥
अड़िल ॥
दूती पठै ताहि ग्रिह बोलि पठाइयो ॥
काम भोग ता सौ बहु भाति कमाइयो ॥
सोइ साह जब जाइ ते ताहि बुलावई ॥
हो ताहि भए रस रीति प्रीति उपजावई ॥५॥

चौपई ॥

तरुनी उठत साह हू जागियो ॥
पूछन ताहि आपु यौ लागियो ॥
जात हुती कह तरुनि बतावहु ॥
हमरो चित को भरमु मिटावहु ॥६॥
सुनहु साह मै बचन उचारों ॥
तुमरे चित को भरम उतारों ॥
मोहू टूटि कैफ जब गई ॥
लेत तबै पसवारन भई ॥७॥

दोहरा ॥

ऐस निसा करि साह की दीनो बहुरि सवाइ ॥
तुरत मीत पै चलि गई यार भजी लपटाइ ॥८॥

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तीसवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥230॥4352॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

देस बावनी के रहै मालव नाम गवार ॥
मैन कला ता की तरुनि जा को रूप अपार ॥१॥
दीरघ देह ता को रहै पुसट अंग सभ ठौर ॥
दिरघ पुसट ता सम तरुनि दुतिय न जग मै और ॥२॥
अड़िल ॥
फौजदार इक गाउ तवन के आइयो ॥
प्यास घाम ते अधिक तवन दुख पाइयो ॥
पानि चहियो जटिया तिन दयो उठाइ कै ॥
हो निरख तवनि को रूप रहियो उरझाइ कै ॥३॥
चित मै किया बिचार जु या को पाइयै ॥
एक पुत्र या तै भजि कै उपजाइयै ॥
अधिक बली सो ह्वै है सभ जग जानियै ॥
हो ता के डील समान न और बखानियै ॥४॥

दोहरा ॥

फौजदार इक सहिचरी ता के दई पठाइ ॥
निसा करी धनु दे घनो भेद सकल समुझाइ ॥५॥
अड़िल ॥
सुनत सहचरी बचन तहा कौ जात भी ॥
भाति भाति सो ताहि तरुनि समुझात भी ॥
पलटि पियहि इह भात कहियो समझाइ कै ॥
हो मिलि है तुम सौ आजु सु राती आइ कै ॥६॥
फौजदार पर नारि वहै अटकत भई ॥
अरध रात्रि तिह तीर मिलन के हित गई ॥
फूल पान मद पान सेज सुभ कौ रचियो ॥
हो भजी सिगर निसु त्रिया सुरति ऐसी मचियो ॥७॥
निसु सिगरी को केल तरुनि द्रिड़ पाइ कै ॥
बिनु दामन के दए रही उरझाइ कै ॥
कहियो बिहसि पिय मै इक चरित दिखाइ हौ ॥
हो निजु नाइक कौ मारि तिहारे आइ हौ ॥८॥
दुहूं हाथ द्रिड़ बदन धरत भी जाइ कै ॥
बाइ भई मुररायौ दई उडाइ कै ॥
मूंदि मूंदि मुख रखत कहाऊं करत है ॥
हो देखहु लोग सभाइ पिया मुर मरत है ॥९॥

चौपई ॥

ज्यों उह चहत कि हाइ पुकारै ॥
मोरि आनि कोऊ प्रान उबारै ॥
त्यों त्रिय मूंदि मूंदि मुख लेई ॥
निकस न स्वासन बाहर देई ॥१०॥
अड़िल ॥
स्वासाकुल ह्वै भूमि मुरछना ह्वै गिरियो ॥
ग्राम बासियन आनि धरियो आंखिन हिरियो ॥

जियत कछू त्रिय जानि गई लपटाइ कै ॥
हो मलि दल चूत्रन सौ पिय दयो खपाइ कै ॥११॥
अरध दुपहरी जिन कर पियहि संघारियो ॥
ग्राम बासियन ठाढे चरित निहारियो ॥
मूंदि मूंदि मुख नाक हहा कहि कै रही ॥
हो बात रोग पति मरे न बैद मिल्यो दई ॥१२॥

चौपई ॥

सभहिन देखत पति को मारियो ॥
ग्राम बासियन कछू न बिचारियो ॥
पति के ब्रयोग सदन तजि गई ॥
ता के रहत जाइ ग्रिह भई ॥१३॥

CHARITAR २३१ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥231॥4365॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

इक राजा मुलतान को बिरध छत्र तिह नाम ॥
बिरध देह ता को रहै जानत सिगरो ग्राम ॥१॥

चौपई ॥

ता के धाम पुत्र नहि भयो ॥
राजा अधिक बिरध ह्वै गयो ॥
एक नारि तब और ब्याही ॥
अधिक रूप जा के तन आही ॥२॥
स्री बडड़याछ मती जग कहै ॥
जिह लखि मदन थकित ह्वै रहै ॥
सो रानी तरुनी जब भई ॥
मदन कुमार निरखि कर लई ॥३॥
ता दिन ते हर अरि बस भई ॥
ग्रिह की भूलि सकल सुधि गई ॥
पठै सहचरी ताहि बुलायो ॥
काम भोग रुचि मानि कमायो ॥४॥
अड़िल ॥
तरुन पुरख कौ तरुनि जदिन त्रिय पावई ॥
तनिक न छोरियो चहत गरे लपटावई ॥
निरखि मगन ह्वै रहत सजन के रूप मै ॥
हो जनु धनु चलियो हराइ जुआरी जूप मै ॥५॥
बिरध छत्र तब लगे पहूच्यो आनि करि ॥
रानी लयो दुराइ मित्र हित मानि करि ॥
तरे खाट के बाधि ताहि द्रिड़ राखियो ॥
हो टरि आगे निजु पति को इह बिधि भाखियो ॥६॥

चौपई ॥

जनियत राव बिरध तुम भए ॥
खिलत अखेट हुते रहि गए ॥

तुम कौ आन जरा गहि लीनो ॥
ता ते तुम सभ कछु तजि दीनो ॥७॥
सुनि त्रिय मै न बिरध ह्वै गयो ॥
जरा न आनि ब्यापक भयो ॥
कहै तु अब ही जाउ सिकारा ॥
मारौ रोझ रीछ झंखारा ॥८॥
यौ कहि बचन अखेटक गयो ॥
रानी टार जार को दयो ॥
निसु भे खेलि अखेटक आयो ॥
भेद अभेद जड़ कछू न पायो ॥९॥

CHARITAR २३२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥232॥4374॥अफज़ूं॥

दोहरा ॥

सहिर बिचछ्न पुर बिखै सिंघ बिचछ्न राइ ॥
मती बिचछ्न भारजा जाहि बिचछ्न काइ ॥१॥

चौपई ॥

सरवर कूप जहा फुलवारी ॥
बाइ बिलास भली हितकारी ॥
सरिता निकटि नरबदा बहै ॥
लखि छबि इंद्र थकित ह्वै रहै ॥२॥
सवैया ॥
बाल हुती ब्रिखभान कला इक रूप लसै जिह को जग भारी ॥
खेल अखेटक आवत हूं इन राइ कहूं वहु नारि निहारी ॥
ऐचि बरियो गहि कै बहीया तिन बात सुनी इन राज दुलारी ॥
कोप भरी बिनु आगि जरी मुख न्याइ रही न उचावत नारी ॥३॥

चौपई ॥

ता सौ ब्रयाहु न्रिपति जब कीयो ॥
भाति भाति ता को रसु लीयो ॥
रैनि दिवस त्रिय धाम बिहारै ॥
और रानियन कौ न निहारै ॥४॥

दोहरा ॥

तब रानी बिचछ्न मती कोप भरी मन माहि ॥
पीत बरन तन को भयो पान चबावत नाहि ॥५॥

चौपई ॥

राजा सहित आजु हनि डरिहो ॥
नाथ जानि जिय नैक न टरिहो ॥
इन दुहूं मारि पूत न्रिप कैहौ ॥
पानी पान तबै मुख दैहौ ॥६॥
अड़िल ॥
दाबि खाट तर गई गुडान बनाइ कै ॥

निजु नाथहि भोजन मै मकरी ख्वाइ कै ॥
रीझि रीझि वह मरियो तबै त्रिय यौ कियो ॥
हो जारि बारि करि नाथ सवत कह गहि लियो ॥७॥
इन राजा के गुडियन कीया बनाइ कै ॥
ता ते मुर पति मरियो अधिक दुख पाइ कै ॥
या कुतीया की अब ही क्रिआ उघारियौ ॥
हो प्रथम मूंडि कै मूंड बहुरि इह मारिहौ ॥८॥
लए प्रजा सभ संग तही आवत भई ॥
जहा खाट तट गाडि दोऊ गुडियन गई ॥
सभन लहित खन भूमि लए ते काढि कै ॥
हो मूंडि सवति को मूंड नाक पुनि बाढि कै ॥९॥
मूंडि मूंडि कटि नाक बहुरि तिह मारियो ॥
उहि बिधि पति हनि इह छल या कह टारियो ॥
चंचलान के भेद नाहि किनहूं लहियो ॥
हो सासत्र सिंम्रित रु बेद पुरानन मै कहियो ॥१०॥

CHARITAR २३३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तेतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥233॥4384॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहिर टंक टोडा बिखै न्रिपति कला इक बाल ॥
कटि जा की म्रिगराज सी म्रिग से नैन बिसाल ॥१॥

चौपई ॥

न्रिपबर सैन तहा को न्रिप बर ॥
अधिक दरबु सुनियत जा के घर ॥
भाति भाति के भोग कमावै ॥
निरखि प्रभा देवेस लजावै ॥२॥
ऐंडो राइ भाट को सुत तह ॥
ता कै रूप न सम कोऊ महि मह ॥
अधिक तरुन को रूप सुहावै ॥
निरखि काइ कंचन सिर न्यावै ॥३॥
जब त्रिय तिन तरुनी नर लहा ॥
मन क्रम बच मन मै यौ कहा ॥
पठै सहचरी याहि बुलाऊं ॥
काम भोग तिह साथ कमाऊं ॥४॥
अड़िल ॥
परम पाट की झूलनि एक सवारि कै ॥
ता पर झूलति भई बिचार बिचार कै ॥
याही चड़ि पीरी पर पियहि बुलाइ हौ ॥
हो अरध रात्रि गे घर कौ ताहि बहाइ हौ ॥५॥
या पीरी कह दैहौ तरे बहाइ कै ॥
रेसम की द्रिड़ डोरै चार लगाइ कै ॥
सो जा को न्रिप हूं कबहूं लहि जाइ है ॥
हो जानि पींघ चुपि रहि है कहा रिसाइ है ॥६॥
अरध रात्रि पीरी ग्रिह तरे बहाइ कै ॥
डोरहि खैंचि प्रीतमहि लेत चड़ाइ कै ॥

रानी संग तिह आनि मिलावा देत करि ॥
हो जानि केल की समै सखी सभ जाहि टरि ॥७॥
तवन भाट कौ नित प्रति लेत बुलाइ कै ॥
एक दिवस ग्रिह रहन न देहि बहाइ कै ॥
ऐचि ऐचि तिह लेत न छोरत एक छिन ॥
हो आनि त्रिया के धाम सोयो न्रिप एक दिन ॥८॥
राव न लहियो चेरियन भाट बुलाइयो ॥
बिन रानी के कहे सु जार मंगाइयो ॥
निरखि राइ तिह कहि तसकर जागत भयो ॥
हो याहि न दै हौ जानि काढि असि कर लयो ॥९॥
न्रिप जागत सभ जगे पकरि ता को लियो ॥
आनि राव के तीर बाधि ठाढो कियो ॥
सुनत सोर त्रिय उठी नींद ते जागि कै ॥
हो राजा ते डर पाइ मित्र हित त्यागि कै ॥१०॥
रानी बाच ॥

दोहरा ॥

सुनु राजा आयो हुतो तोहि हनन इह चोर ॥
अब ही या कौ मारियै होन न दीजे भोर ॥११॥

चौपई ॥

त्रिय को बचन चोर सुन पाइयो ॥
न्रिपति भए कहि साच सुनायो ॥
यह रानी मोरे संग रहई ॥
अब मो कौ तसकर करि कहई ॥१२॥
अड़िल ॥
जार चोर को बचन न साचु पछानियै ॥
प्रान लोभ ते बकत सभन पर जानियै ॥
इन के कहे न कोप किसू पर कीजियै ॥
हो राव बचन यह साचु जानि जिय लीजियै ॥१३॥
साचु साचु सुनि राव बचन भाखत भयो ॥
प्रान लोभ ते नाम त्रिया को इन लयो ॥
ता ते या तसकर कह अब ही मारियै ॥
हो इही भोहरा भीतर गहि कै डारियै ॥१४॥
प्रथमहि त्रिया सु ता सौ भोग कमाइयो ॥
भूल जबै वहु धाम न्रिपति के आइयो ॥
जिय लजा के त्रास चोर तिह भाखियो ॥
हो प्रीति पछानी चित न मारि तिह राखियो ॥१५॥

CHARITAR २३४ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥234॥4399॥अफजूं॥

दोहरा ॥

करम सिंघ राजा हुतो कसटवार कै देस ॥
अछल मती ता की तरुनि सुंदरि जा के केस ॥१॥
बज्र केतु इक साहु को पूत हुतो सुकुमार ॥
नवौ ब्याकरन सासत्र खट जिन द्रिड़ पड़े सुधार ॥२॥

एक दिवस सु तवन को निरखियो अछल कुमारि ॥
अब ही रति या सौ करौ यौ कहि भई सु मारि ॥३॥
अड़िल ॥
एक सखी तह चतुरि पहूची आइ कै ॥
अछल मती को लयो गरे सो लाइ कै ॥
सीचि सीचि कै बारि जगावत जब भई ॥
हो सकल चित की बात कुअरि की लहि गई ॥४॥
कुअरि चित की बात सकल मुहि भाखियै ॥
पीर पिया की गूड़ न मन मै राखियै ॥
जो तुमरे जिय रुचै सु मोहि कहीजियै ॥
हो बिरह बिकल ह्वै प्रान हितू जिनि दीजियै ॥५॥
कहा कहो सखि तोहि कहन नहि आवई ॥
हेरि मीत को रूप हीया ललचावई ॥
कै वा को अब ही मुहि आनि मिलाइयै ॥
हो नातर मोर जियन की आस चुकाइयै ॥६॥
जो कछु कहो सखि मोहि वहै कारज करो ॥
प्रान लेत तव हेत न हिय मे मै डरो ॥
जो तुमरे चित चुभै सु हमै बताइयै ॥
हो रोइ रोइ करि नीर न ब्रिथा गवाइयै ॥७॥
सुनहु मित्रनी आज ੁ जुगनि मै होइ हौ ॥
हेत सजन के प्रान आपने खोइ हौ ॥
पिय दरसन की भीखि मागि करि ल्याइ हौ ॥
हो निरखि लाल को रूप सखी बलि जाइ हौ ॥८॥
बसत्र भगौहे आजु सुभंगन मै करौ ॥
आखिन की चिपीया अपने कर मै धरौ ॥
बिरह मुद्रिका कानन दुहूं सुहाइ हो ॥
हो पिय दरसन की भिछ्या माग अघाइ हो ॥९॥
सुनत सहचरी बचन चक्रित मन मै भई ॥
अधिक कुअरि की नेह जानि करि कै गई ॥
चलत तहा ते भई तवन पहि आइ कै ॥
हो कहियो कुअरि सो ताहि कहियो समझाइ कै ॥१०॥

दोहरा ॥

ताहि भेद समझाइ कै लै गई तहा लिवाइ ॥
जहा कुअरि ठाढी हुती भूखन बसत्र बनाइ ॥११॥
अड़िल ॥
छैल कुअर कौ जबै कुअरि पावत भई ॥
जनुक नवौ निधि महा निधन के घर गई ॥
निरख तरुनि को रही तरुनि उरझाइ कै ॥
हो भाति भाति तिह साथ रमी लपटाइ कै ॥१२॥
एक कुअरि तब जाइ न्रिपति सौ यौ कही ॥
लपटि तिहारी नारि एक नर सो रही ॥
करम सिंघ करि कोप तहा चलि आइयो ॥
हो अछल मती यह भेद सकल सुनि पाइयो ॥१३॥
पकरि न्रिपति की पगिया दई चलाइ कै ॥
कहियो सखी बवरी भई गई वह धाइ कै ॥
लरिकन की सी खेल करत तिह ठा भई ॥
हो दुतिय सखी लै पाग चलाइ बहुरि दई ॥१४॥
जब वुहि दिसि न्रिप जाइ तौ वुहि दिसि डारही ॥
लरिकन के गिंदूआ जिमि पाग उछारही ॥

धूरि आपने सीस नाथ के डारि कै ॥
हो लहि हाइल तिन मित्रहि दयो निकारि कै ॥१५॥
जब लगि पगिया लेन राइ चलि आइयो ॥
तब लगि रानी मित्र सदन पहुचाइयो ॥
मतवारी उन भाखि अधिक मारत भई ॥
न्रिप की चिंता टारि सकल चित की दई ॥१६॥
तब राजै गहि कै त्रिय को कर राखियो ॥
आपु बचन ता को ऐसी बिधि भाखियो ॥
मतवारे मूरख सिसि को नहि मारियै ॥
हो होनहार मुहि भी इन कछु न उचारियै ॥१७॥

दोहरा ॥

न्रिप की पाग उतारि कै दीनी प्रथम चलाइ ॥
जार उबारियो जड़ छलियो चेरी लई बचाइ ॥१८॥

CHARITAR २३५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पैतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥235॥4417॥अफजूं॥*

चौपई ॥

तिबत को इक राइ सुलछन ॥

कबित काबि के बिखे बिचछन ॥

स्री न्रिपराज कला तिह नारी ॥
जानुक स्री बिसन की प्यारी ॥१॥

दोहरा ॥

मती बिचछन पात्र तह तवन सहिर के माहि ॥
रूप बिखै ता सी तरुनि तीनि लोक मै नाहि ॥२॥

चौपई ॥

मुजरा कौ बेस्वा जब आवै ॥
हेरि रूप न्रिप को ललचावै ॥
मन मै अधिक मसत ह्वै झूलै ॥
निजु तन की ता कौ सुधि भूलै ॥३॥
चित मै चिंत रैनि दिन करै ॥
न्रिप की आस सदा मन धरै ॥
किह बिधि मो संग भोग कमावै ॥
सो दिन मोहि कहो कब आवै ॥४॥

दोहरा ॥

राव न ता को हेरई त्रिय मन मै ललचाइ ॥
जतन का करौ जो मुझै न्रिप मन भजै बनाइ ॥५॥

चौपई ॥

जब राजा दीवान लगावै ॥

तवन समै तरुनी सुनि पावै ॥
हाथ जोरि ठाढी ह्वै रहई ॥
प्रेम आसकी ज्यों निरबहई ॥६॥

दोहरा ॥

न्रिप जान्यो आसिक भई मो पर तरुनि बनाइ ॥
कवन प्रभा या कौ लगी चित बिचारियो राइ ॥७॥

चौपई ॥

कहा भयो आसिक त्रिय भई ॥
मुहि लखि बिरह बिकल ह्वै गई ॥
मै या कौ कबहूं न बिहारो ॥
लोकन औ परलोक बिचारो ॥८॥
अधिक जतन तरुनी करि हारी ॥
राजा सो क्योहूं न बिहारी ॥
और जतन तब ही इक कियो ॥
सात गुलन देही पर दियो ॥९॥
सात गुलन दे मास जलायो ॥
अधिक कुगंध न्रिपहि जब आयो ॥
हाइ हाइ करि गहि तिह लियो ॥
जो भाख्यो सोई तिन कियो ॥१०॥

दोहरा ॥

जो तुम कहौ सो मै करो निजु तन गुलन न खाहु ॥
भाति भाति के भामिनी मो सौ भोग कमाहु ॥११॥

चौपई ॥

गुल खाए राजा ढुरि आयो ॥
भाति भाति तिह त्रियहि बजायो ॥
लपटि लपटि ता सो रति कीनी ॥
बेस्वा की सुधि बुधि हरि लीनी ॥१२॥
बेस्वा हूं राजा बसि कीनो ॥
भाति भाति के आसन दीनो ॥
राइ सकल रानियै बिसारी ॥
ता ही को राखियो करि नारी ॥१३॥

दोहरा ॥

सभ रनियन को राइ के चित ते दयो बिसारि ॥
गुल खाए राजा बरियो ऐसो चरित सु धारि ॥१४॥

CHARITAR २३६ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥236॥4431॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

प्रगट कमाऊ के बिखै बाज बहादुर राइ ॥

सूरन की सेवा करै सत्रन दैंत खपाइ ॥१॥
अड़िल ॥
बाज बहादुर जू यौ ह्रिदै संभारियो ॥
बोलि बडे सुभटन को प्रगट उचारियो ॥
करियै कवन उपाइ नगर स्री मारियै ॥
हो ता ते सभ ही बैठि बिचार बिचारियै ॥२॥

दोहरा ॥

पात्र तहा नाचत हुती भोग मती छबि मान ॥
प्रथम राइ सौ रति करी बहुरि कही यौ आनि ॥३॥
अड़िल ॥
जो तुम कहो मुहि जाइ ताहि बिरमाइहो ॥
सिरी नगर ते ऐचि दौन मो ल्याइहो ॥
जोरि कठिन तुम कटक तहा चड़ि आइयो ॥
हो लूटि कूटि के सहिर सकल लै जाइयो ॥४॥
यौ कहि बेस्वा बचन न्रिपहि तह को गई ॥
सिरी नगर के सहर बिखै आवत भई ॥
हाव भाव बहु भाति दिखाए आनि कै ॥
हो भज्यो मेदनी साह अधिक रुचि मानि कै ॥५॥
न्रिपति मेदनी साह आपने बसि कियौ ॥
ता को लै कर साथ दौन को मगु लियो ॥
बाज बहादुर जोरि कटक आवत भयो ॥
हो लूटि कूटि करि नगर सिरी को लै गयो ॥६॥
मत परियो न्रिप रहियो न कछु जानत भयो ॥
सिरी नगर कौ लूटि कूटि कै कौ गयो ॥
उतरि गयो मद जब कछु सुधि आवत भई ॥
हो पीस दाति चुप रहियो बात कर ते गई ॥७॥

दोहरा ॥

इह छल से राजा छल्यो करी मित्र की जीत ॥
देव अदेव न लहि सकति यह इसत्रियन की रीत ॥८॥

CHARITAR २३७ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सैतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥237॥4439॥अफजूं॥

चौपई ॥

बीरज केतु राजा इक नागर ॥
सगल जगत के बिखै उजागर ॥
स्री छट छैल कुअरि ता की त्रिय ॥
मन बच क्रम बसि करि राख्यो पिय ॥१॥
एक दिवस न्रिप चड़ियो अखिट बर ॥
संग लई सहचरी अमित करि ॥
जब बन गहिर बिखै प्रभ आयो ॥
स्वानन ते बहु म्रिगन गहायो ॥२॥
कहियो कि जिह आगै म्रिग आवै ॥
वहै आपनो तुरै धवावै ॥
पहुचि सु तन तिह के ब्रिण करही ॥

गिरन परन ते कछू न डरही ॥३॥

अड़िल ॥

न्रिप त्रिय आगे म्रिगिक निकसियो आइ कै ॥
रानी पाछे परी तुरंग धवाइ कै ॥
भजत भजत हरिनी पति बहु कोसन गयो ॥
हो एक न्रिपति सुत लहि ता कौ धावत भयो ॥४॥
ताजिहि ताजन मारि पहूंच्या जाइ कै ॥
एक बिसिख ही मारियो म्रिगहि बनाइ कै ॥
निरखि तरुनि इह चरित रही उरझाइ करि ॥
हो बिरह बान तन बिधी गिरत भई भूमि पर ॥५॥
बहुरि सुभट जिमि चेति तरुनि उठ ठाढि भई ॥
घूमत घाइल न्याइ सजन तट चलि गई ॥
उतरि हयन ते तह दोऊ रमे बनाइ कै ॥
हो तब लौ तिह ठा सिंघ निकसियो आइ कै ॥६॥
निरखि सिंघ कौ रूप तरुनि त्रासित भई ॥
लपटि लला के कंठ भए अबला गई ॥
ढीठ कुअर धनु तन्यो न तनिक आसन डिग्यो ॥
हो हन्यो सिंघ तिह ठौर बिसिख बाको लग्यो ॥७॥
मारि सिंघ राखियो तिह भज्यो बनाइ कै ॥
आसन चुंबन करे त्रियहि लपटाइ कै ॥
भाति भाति तिह रमियो तरुनि सुख पाइ कर ॥
हो बिनु दामन अबलाहूं रहीं बिकाइ करि ॥८॥
चित चिंता त्रिय करही इसी संग जाइ हौ ॥
निजु नाइक कौ दरसु न बहुर दिखाइ हौ ॥
ता ते कछु चरित्र सो ऐसे कीजियै ॥
हो जा ते जसऊ रहै अपजस न सुनीजियै ॥९॥
एक सखी प्रति कहियो भेद समझाइ कै ॥
हरिन हेतु त्रिय डूबी कहियहु जाइ कै ॥
बैन सुनत सहचरी जाति तिह कौ भई ॥
हो जु कछु कुअरि तिह कहियो खबरि सो न्रिप दई ॥१०॥
आपु कुअर के साथ गई सुख पाइ कै ॥
न्रिप सुनि डूबी नारि रहियो सिरु न्याइ कै ॥
चंचलान को चरित न नर कोऊ लहै ॥
हो सासत्र सिंम्रिति अरु बेद भेद ऐसे कहै ॥११॥

चौपई ॥

ता कौ तरुन संग लै गयो ॥
भाति भाति कै भोगत भयो ॥
इन जड़ कछु न बात लहि लई ॥
जानी डूबि चंचला गई ॥१२॥

CHARITAR २३८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥238॥4451॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहिर सिरौज बिखै हुतो राजा सुभ्र सरूप ॥
काम केल मै अति चतुर नर सिंघ रूप अनूप ॥१॥

चौपई ॥

ता के चारि पुत्र सुभ कारी ॥
सूरबीर बाको हंकारी ॥
रानी और ब्याहि जो आनी ॥
सोऊ गरभवती ह्वै ब्रयानी ॥२॥
एक पुत्र ताहू को भयो ॥
रानी बीर मती तिह जयो ॥
ब्रयाघ्र केतु तिह नाम धरत भे ॥
दिजन दरिद्र खोइ कै कै दे ॥३॥
चारो पुत्र राज अधिकारी ॥
इहै सोक अबला के भारी ॥
जो कोऊ उन चारों को घावै ॥
तब सुत राज पाचवौ पावै ॥४॥
जेसट पुत्र तन मनुख पठायो ॥
यौ कहियहु तुहि राइ बुलायो ॥
राज कुअर आवत जब भयो ॥
तब ही मारि कोठरी दयो ॥५॥
इही भाति ते दुतिय बुलायो ॥
वही खड़ग भे ता कह घायो ॥
इही भाति तिन दुहूं बुलै कै ॥
डारत भई भोहरे घै कै ॥६॥

दोहरा ॥

चारि पुत्र प्रथमै हने पुनि पति लयो बुलाइ ॥
इह बिधि सौ बिनती करी नैनन नीरु बहाइ ॥७॥
सुन राजा तव पुत्र दो लरे राज के हेतु ॥
जूझि मरै छित पर परे तब मै भई अचेतु ॥८॥
असिन भए अति जुध करि जब जूझै दोऊ बीर ॥
बसत्र फारि द्वै पुत्र तव तब ही भए फकीर ॥९॥

चौपई ॥

तब न्रिप पूत पूत कहि रोयो ॥
सुधि सभ छाडि भूमि पर सोयो ॥
पचए कह टीका करि परियो ॥
भेद अभेद जड़ कछु न बिचरियो ॥१०॥

CHARITAR २३९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥239॥4461॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

देस कलिंजर के निकट सैन बिचछ्रन राइ ॥
स्री रुचि राज कुअरि तरुन जा की अति सुभ काइ ॥१॥

चौपई ॥

सपत और रानी तिह रहई ॥
तिनहूं सौ हित न्रिप निरबहई ॥

बारी बारी तिनै बुलावै ॥
लपटि लपटि करि भोग कमावै ॥२॥
स्री रुचि राज कुअरि जो रानी ॥
सो मन भीतर अधिक रिसानी ॥
मन महि कहियो जतन किया करियै ॥
जा ते इन रनियन कौ मरियै ॥३॥
अड़िल ॥
प्रथम रानियन सौ अति नेह बढाइयो ॥
ऐसी करी परीति जु पति सुनि पाइयो ॥
धंन्य धंन्य रुचि राज कुअरि कह भाखियो ॥
हो जिन कलि मै सवतिन सौ अति हित राखियो ॥४॥
नदी तीर इक रचियो त्रिनालै जाइ कै ॥
आप कहियो सवतिन सौ बचन बनाइ कै ॥
सुनहु सखी हम तहा सकल मिल जाइ है ॥
हो हम तुम मन भावत तह भोग कमाइ है ॥५॥
लै सवतिन कौ संग त्रिनालै मौ गई ॥
राजा पै इक पठै सहचरी देत भी ॥
नाथ क्रिपा करि अधिक तही तुम आइयो ॥
हो मन भावत रानिन सो भोग कमाइयो ॥६॥
सवति सखिन के सहित तहा सभ ल्याइ कै ॥
रोकि द्वारि पावक कौ दयो लगाइ कै ॥
किसू काज के हेत गई त्रिय आपु टरि ॥
हो इह छल सभ रानिन कौ दिया जराइ करि ॥७॥

चौपई ॥

दौरत आपु न्रिपति पह आई ॥
रोइ रोइ बहु ब्रिथा जताई ॥
बैठो कहा दैव के हरे ॥
तोरे हरम आजु सभ जरे ॥८॥
तुम अब तहा आपु पगु धारहु ॥
जरत अगनि ते त्रियन उबारहु ॥
बैठन सौ कछु हेतु न कीजै ॥
मोरी कही कान धरि लीजै ॥९॥
वै उत जरत तिहारी नारी ॥
तुम हो बैठ गरब करि भारी ॥
राइ उठहु तिन ऐंच निकारहु ॥
साच झूठ मुर बच न बिचारहु ॥१०॥
बैन सुनत मूरख उठि धयो ॥
भेद अभेद न पावत भयो ॥
तजि बिलंब अबिलंब सिधारियो ॥
भसम रानियन जाइ निहारियो ॥११॥

दोहरा ॥

सखिन सहित सवतै जरी जियत न उबरी काइ ॥
या कौ भेद अभेद जो न्रिपति जतावै काइ ॥१२॥

CHARITAR २४० *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥240॥4473॥अफजूं॥*

चौपई ॥

किलमाखन इक देस न्रिपति बर ॥
बिरह मंजरी नारि तवन घर ॥
अधिक तरुनि को रूप बिराजै ॥
सुरी आसुरिन को मन लाजै ॥१॥
सुभट केतु इक सुभट बिचछन ॥
जा के बने बती सौ लछन ॥
रूप तवन को लगत अपारा ॥
रविन लयो जनु कोटि उजियारा ॥२॥
अड़िल ॥
बिरह मंजरी जब वहु पुरख निहारियो ॥
बिरह बान कसि अंग तवन के मारियो ॥
बिरह बिकल ह्वै बाल गिरत भी भूमि पर ॥
हो जनुक सुभट रन माहि प्रहारियो बान करि ॥३॥
पाचिक बीती घरी बहुरि जाग्रत भई ॥
नैनन सैन बुलाइ सहचरी ढिग लई ॥
ता कह चित की बात कही समुझाइ कै ॥
हो त्यागहु हमरी आस कि मीत मिलाइ दै ॥४॥
जु कछू कुअरि तिह कहियो सकल सखि जानियो ॥
तिह ते किया पयान तहा पगु ठानियो ॥
बैठियो जहा पियरवा सेज डसाइ कै ॥
हो इसक मंजरी तही पहूंची जाइ कै ॥५॥
बैठियो कहा कुअर सु अबै पगु धारियै ॥
लूटि तरुनि मन लीनो कहा निहारियै ॥
काम तपत ता की चलि सकल मिटाइयै ॥
हौ कहियो मानि जिनि जोबन ब्रिथा बिताइयै ॥६॥
बेगि चलो उठि तहा न रहो लजाइ कै ॥
बिरह तपत ता की कह देहु बुझाइ कै ॥
रूप भयो तौ कहा ऐठ न प्रमानियै ॥
हो धन जोबन दिन चारि पाहुनो जानियै ॥७॥
या जोबन कौ पाइ अधिक अबलन कौ भजियै ॥
या जोबन कौ पाइ जगत के सुखन न तजियै ॥
जब पिय ह्वै हौ बिरध कहा तुम लेहुगे ॥
हो बिरह उसासन साथ सजन जिय देहुगे ॥८॥
या जोबन कौ पाइ जगत सुख मानियै ॥
या जोबन कह पाइ परम रस ठानियै ॥
या जोबन कह पाइ नेह जग कीजियै ॥
हो नाहक जग के माझ न जियरा दीजियै ॥९॥
नेह बिना न्रिप ह्वै है गए बखानियै ॥
खड़ग दान बिन कीए न जग मै जानियै ॥
नेह क्रिसन जू कियो आजु लौ गाइयै ॥
हो निरखि जगत के नाथ नारि निहुराइयै ॥१०॥

दोहरा ॥

मधुरी मूरति मित की बसी चित मै चीन ॥
बहुरि निकासे जाइ नहि नैना भए रंगीन ॥११॥
मन भावन के नैन दोऊ चुभे चित के माहि ॥
सेलन ज्यों सरकै परे नाहि निकारे जाहि ॥१२॥

नैन पिया के पारधी मन मै किया निवास ॥
काढि करेजा लेहि जनु या ते अधिक बिस्वास ॥१३॥
नैन पिया के पालने करि राखे करतार ॥
जिन महि जनु झूलहि घने हम से बैठि हजार ॥१४॥
नैन रसीले रस भरे झलक रसन की देहि ॥
चंचलान के चित कौ चमकि चुराइ लेहि ॥१५॥
सोरठा ॥
भयो सकल तन पीर रही संभारि न चीर की ॥
बहियो रकत ह्वै नीर प्रेम पिया की पीर ते ॥१६॥
अड़िल ॥
परदेसिन सौ प्रीति कही काहूं नहि करनी ॥
परदेसिन के साथ कही नहि बात उचरनी ॥
परदेसिन त्रिय साथ कहो क्या नेह लगैयै ॥
हो टूटि तरक दै जात बहुरि आपन पछुतैयै ॥१७॥
परदेसी सौ प्रीति करी एकै पल नीकी ॥
परदेसी सौ बैन भली भाखी हसि ही की ॥
परदेसी के साथ भलो पिय नेह लगायो ॥
हो परम प्रीति उपजाइ ब्रिथा जोबन न बितायो ॥१८॥
हम साहुन के पूत देस परदेस बिहारै ॥
ऊच नीच कोऊ होइ सकल अखियनन निहारै ॥
कहो कुअरि हम साथ नेह करि कै कस करि हौ ॥
हो हम जैहैं उठि कही बिरह बाधी तुम जरि हौ ॥१९॥
रानी बाच ॥
हम न तजैं पिय तुमै कोटि जतनन जौ करि हौ ॥
हसि हसि बात अनेक कछू की कछू उचरि हौ ॥
हम राची तव रूप रीझि मन मै रही ॥
हो इसक तिहारे जरी जुगिनि ह्वै है कही ॥२०॥
कसि करि रहे गुमान बेगि उठि कै चलो ॥
हार सिंगार बनाइ भेख सजि है भलो ॥
जानत है सखी आजु जु पियहि न पाइ है ॥
हो बीस बिस्वै वहु तरुनि तरफि मरि जाइ है ॥२१॥
सुनत तरुनि को बचन कुअर मोहित भयो ॥
सखी जितै लै गई चल्यो तित कौ गयो ॥
बिरह मंजरी जह थी साज सुधारि कै ॥
हो निजु हाथन सेजिया फूलन कह डारि कै ॥२२॥
लए गुरज कह हाथ कुअर आवत भयो ॥
भाति भाति रानी सौ भोग कमात भयो ॥
चौरासी आसन द्रिड़ करे बनाइ करि ॥
हो काम कला की रीत सु प्रीत रचाइ कर ॥२३॥
तब लग ता कौ न्रिपत निकसियो आइ कर ॥
करियो गदा को घाइ सु कुअर रिसाइ करि ॥
एक चोट भे मारि जबै राजा लियो ॥
हो तब अबला तिन चरित कहौ जिह बिध कियो ॥२४॥
गिरे महल के तरे न्रिपत कह डारि कै ॥
उठी ऊच सुर भए कूक कह मारि कै ॥
कर कर रोदन अधिक धरन गिर गिर परी ॥
हो मरियो हमारो राज दैव गति का करी ॥२५॥
मरियो न्रिपति सुनि लोग पहूच्यो आइ कै ॥
खोदि महल ते देखै कहा उचाइ कै ॥
टूट टाट सिर गयो न इक असतु उबरियो ॥

देखहु नारि चरित्र कहा इह ठा करियो ॥२६॥
धाम तरे दबि मरियो सभन न्रिप जानियो ॥
भेद अभेद न किनहूं मूड़ पछानियो ॥
परजा पटुकन बाधि सिरन पर आइ कै ॥
हो रानी नितप्रति भज्यो मित्र सुख पाइ कै ॥२७॥

CHARITAR २४१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥241॥4500॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुभटावती नगर इक दछिन ॥
छत्र केतु न्रिप राज बिचछन ॥
रूप मंजरी ता की रानी ॥
सुंदरि सकल भवन मै जानी ॥१॥
अड़िल ॥
अधिक न्रिपति कौ रूप जगत मै जानियै ॥
इंद्र चंद्र सूरज कै मदन पछानियै ॥
जो तरुनी ता कह भरि नैन निहारई ॥
हो लोग लाज कुल कानि सु सकल बिसारई ॥२॥
इक छबि मान मंजरी दुहिता साहु की ॥
जानुक जग के माझ प्रगटि छबि माह की ॥
छत्र केतु राजा जब तवनि निहारियो ॥
हो जानुक तानि कमान मदन सर मारियो ॥३॥
निरखि न्रिपति को रूप मदन के बसि भई ॥
लोक लाज कुल कानि बिसरि सभ ही गई ॥
बधी बिरह के बान रही बिसमाइ कै ॥
हो जनुक फूल पर भवर रहियो उरझाइ कै ॥४॥
प्रथम न्रिपति को हेरि पान बहुरो करै ॥
रहै चखन करि चारि न इत उत कौ टरै ॥
आसिक की ज्यो ठाढि बहुत ह्वै चिर रहै ॥
हो मोह भजे न्रिप राज चित मै यौ कहै ॥५॥
एक दिवस न्रिप राज तवनि त्रिय को लहियो ॥
मुहि उपर अटकी त्रिय यौ चित मै कहियो ॥
जो इछा इह करै सु पूरन कीजियै ॥
हो जौ मागै रति दान तौ सोई दीजियै ॥६॥

चौपई ॥

इह सभ बात न्रिपति पहिचानी ॥
वा त्रिय सौ नहि प्रगट बखानी ॥
भूपति बिनु अबला अकुलाई ॥
एक सहचरी तहा पठाई ॥७॥
हम बेधे तव बिरह न्रिपति बर ॥
मोरि बिनति सुनि लेहु स्रवनि धरि ॥
लपटि लपटि मो सौ रति करियै ॥
काम तपति पिय मोर निवरियै ॥८॥
जब इह भाति न्रिपति सुनि पाई ॥
पत्री त्रिय प्रति बहुरि पठाई ॥

जौ तू प्रथम नाथ कह मारै ॥
तिह पाछे मुहि साथ बिहारै ॥९॥
जु कछु कहियो तिह न्रिप समझाई ॥
सु कछु कुअरि सौ सखी जताई ॥
जौ तू प्रथम साहु कह मारै ॥
तौ राजा के साथ बिहारै ॥१०॥

दोहरा ॥

यौ न्रिप बर मो सो कहियो प्रथम नाथ कौ घाइ ॥
बहुरि हमारी नारि ह्वै धाम बसहु तुम आइ ॥११॥

चौपई ॥

जब इह भाति तरुनि सुनि पाई ॥
चित कै बिखै इहै ठहराई ॥
मै इह प्रथम साह को मारौ ॥
न्रिप त्रिय ह्वै न्रिप साथ बिहारौ ॥१२॥
वा राजा कौ धाम बुलाइसि ॥
अधिक मानि हित भोग कमाइसि ॥
गहि द्रिड़ दुहूं जाघ महि धरै ॥
लपटि लपटि ता सौ रति करै ॥१३॥
अड़िल ॥
रमत न्रिपति को देखि साहु क्रुधित भयो ॥
गहि करि पान क्रिपान समुहि धावत भयो ॥
नागरि कुअर अधिक मन कोप बिचारियो ॥
हो गहिर नदी के माहि पकरि तिह डारियो ॥१४॥

चौपई ॥

इह बिधि नारि साहु कह मारियो ॥
आपु रोइ सुर ऊच पुकारियो ॥
दै दै मूंड भूम पर मारियो ॥
लोगन सौ यौ प्रगट उचारियो ॥१५॥
फिसलयो पाव नदी पति परे ॥
हा हा दैव न किनहूं धरे ॥
तरिया हुते न मरते बूडि करि ॥
कह गति कीन बिलोकहु मुर हरि ॥१६॥
हौ किसहूं फिरि मुख न दिखै हौ ॥
बैठि इकात तपस्या कै हौ ॥
यौ कहि जात सदन इक भई ॥
रैनि परे न्रिप के ग्रिह गई ॥१७॥

दोहरा ॥

इह बिधि न्रिप के घर गई भवन किवार चड़ाइ ॥
लोग लहै तपसा करै सदन न बदन दिखाइ ॥१८॥
अड़िल ॥
निज नाइक कह मारि न्रिप के घर गई ॥
लोग लखै ग्रिह माझ तरुनि इसथित भई ॥
किसू नाथ के सोक न बदन दिखावई ॥
हो बैठी ग्रिह के माझ गुबिंद गुन गावई ॥१९॥

CHARITAR २४२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ ब्यालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥242॥4519॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुघरावती नगर इक सोहै ॥
सुघर सैन राजा तह को है ॥
चित्र मंजरी ता की रानी ॥
जानुक छीर सिंधु मथि आनी ॥१॥

दोहरा ॥

चारि सवति ता की रहै ससि की सोभ समान ॥
इंद्र केतु तिन को तनुज रवि के रूप प्रमान ॥२॥
चित्र मंजरी बाम के पुत्र एक ग्रिह नाहि ॥
ताहि चितै चौगुन चपै सोचि पचै मन माहि ॥३॥
सोतनीन कौ सुत सहित अति प्रताप लखि नैन ॥
बुडी सोच सर मै रहै प्रगट न भाखै बैन ॥४॥

चौपई ॥

जा सौ प्रीति न्रिपति की जानी ॥
पुत्र रहत सोऊ पहिचानी ॥
ता सौ अधिक प्रीति उपजाई ॥
हितू जानि करि करी बडाई ॥५॥
जब वहु राज कुअर ग्रिह आवै ॥
बिखि भोजन लै ताहि खवावै ॥
जिय तै खोइ तवन कौ डारियो ॥
आपु न्रिपति सौ जाइ उचारियो ॥६॥

दोहरा ॥

गाड़ो अमली न हुतो गाड़ रहै हठवान ॥
सोफी थो त्रिय कहत लौ पल मै तजै परान ॥७॥

चौपई ॥

त्रिय चित अधिक सोक करि भारो ॥
उठत गिरत पति भए उचारो ॥
थरथर करत कहै नहि आवै ॥
तऊ बचन तुतरात सुनावै ॥८॥
कहो तु न्रिप इक बैन सुनाऊं ॥
राज नसट ते अधिक डराऊं ॥
भान छटा तव सुत बिखि द्रयाई ॥
ता ते मै धावत ह्यां आई ॥९॥
मेरो नामु न तिह कहि दीजै ॥
निजु सुत की रछाऊ कीजै ॥
जौ सुनि भान छटा इह जावै ॥
चित कौ हित हम सौ बिसरावै ॥१०॥
सुनत बचन उठि न्रिपति सिधारा ॥
म्रितक पूत छित परियो निहारा ॥

रोवै लाग अधिक दुख पाइसि ॥
दै दै पाग धरनि पटकाइसि ॥११॥

दोहरा ॥

सूर न थो कैफी न थो जियत रहै ऐठाइ ॥
भखत सूम सोफी मरियो बिखहि न सकियो पचाइ ॥१२॥
तब राजा गहि केस ते रानी लई मंगाइ ॥
साचु झूठ समझियो न कछु जम पुर दई पठाइ ॥१३॥
सुत मारियो सवतिह सहित न्रिप सौ किया पिआर ॥
ब्रहम बिसन लहि न सकै त्रिया चरित्र अपार ॥१४॥
रानी बाच ॥
राज नसट ते मै डरी सुनु मेरे पुरहूत ॥
कहा भयो जौ सवति को तऊ तिहारो पूत ॥१५॥

चौपई ॥

जब इह भाति राव सुनि पावा ॥
ता कौ सतिवंती ठहिरावा ॥
ता सौ अधिक प्रीति उपजाइसि ॥
और त्रियहि सभ कौ बिसराइसि ॥१६॥

CHARITAR २४३ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तेतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥243॥4535॥अफजूं॥

चौपई ॥

पदम सिंघ राजा इक सुभ मति ॥
दुरनजात दुख हरन बिकट अति ॥
बिक्रम कुअरि तवन की नारी ॥
बिधि सुनार साचे जनु ढारी ॥१॥
सुंभ करन ता कौ सुत अति बल ॥
अरि अनेक जीते जिह दलि मलि ॥
अप्रमान तिह रूप कहत जग ॥
निरखि नारि ह्वै रहत थकित मग ॥२॥
जात जितै रितु पति जिमि भयो ॥
ह्वै उजारि पाछे बन गयो ॥
पुर जन चलहि संगि उठि सब ही ॥
जानुक बसे नाहि पुर कब ही ॥३॥
जित जित जात कुअर मग भयो ॥
जानुक बरखि क्रिपाबुद गयो ॥
लोगन नैन लगे तिह बाटै ॥
जानुक बिसिख अंम्रित कहि चाटै ॥४॥

दोहरा ॥

जिह जिह मारग के बिखै जात कुअर चलि सोइ ॥
नैन रंगीलो सभन के भूम छबीली होइ ॥५॥

चौपई ॥

ब्रिख धुज नगर साह इक ता के ॥
नागरि कुअरि नारि ग्रिह जा के ॥
नागरि मती सुता तिह सोहै ॥
नगरनि के नागरन कह मोहै ॥६॥
तिन वहु कुअर द्रिगन लहि पावा ॥
छोरि लाज कहु नेहु लगावा ॥
मन मै अधिक मत ह्वै झूली ॥
मात पिता की सभ सुधि भूली ॥७॥
जवन मारग न्रिप सुत चलि आवै ॥
तही कुअरि सखियन जुत गावै ॥
चारु चारु करि नैन निहारै ॥
नैन सैन दै हसै हकारै ॥८॥

दोहरा ॥

इसक मुसक खासी खुरक छिपत छपाए नाहि ॥
अंत प्रगट ह्वै जग रहहि स्रिसटि सकल के माहि ॥९॥

चौपई ॥

प्रचुर बात इह भई नगर मै ॥
चलत चलत सु गई तिह घर मै ॥
तह ते हटकि मात पितु राखी ॥
कटु कटु बात बदन ते भाखी ॥१०॥
राखहि हटकि जानि नहि देही ॥
भाति भाति सौ रछ्छ करेही ॥
ता ते तरुनि अधिक दुख पावै ॥
रोवत ही दिन रैनि गवावै ॥११॥
सोरठा ॥
अरी बरी यह प्रीति निसु दिन होत खरी खरी ॥
जल सफरी की रीति पीय पानि बिछुरे मरत ॥१२॥

दोहरा ॥

जे बनिता बिरहिन भई पंथ बिरह को लेहि ॥
पलक बिखै पिय के निमित प्रान चटक दै देहि ॥१३॥

भुजंग छंद ॥

लिखी प्रेम पत्री सखी बोलि आछी ॥
लगी प्रीति लाला भए राम साछी ॥
कहियो आजु जो मै न तो कौ निहारौ ॥
घरी एक मै वारि प्रानानि डारौ ॥१४॥
करो बाल बेलंब न आजु ऐयै ॥
इहा ते मुझै काढि लै संग जैयै ॥
कबै मानु मानी कहा मान कीजै ॥
महाराज प्रानान को दान दीजै ॥१५॥
रची बाल लाला सभै रूप तेरे ॥
मिलौ आजु मो कौ सुनो प्रान मेरे ॥
कहा मान माते फिरौ ऐंठ ऐंठे ॥
लयो चोरि मेरो कहा चित बैठे ॥१६॥
करो हार सिंगार बागौ बनावौ ॥

कीए चित मै चौपि बीरी चबावौ ॥
उठो बेगि बैठे कहा प्रान मेरे ॥
चलो कुंज मेरे लगै नैन तेरे ॥१७॥

दोहरा ॥

बचन बिकाने कुअरि के कहै कुअर के संग ॥
एक न मानी मंद मति रस के उमगि तरंग ॥१८॥

चौपई ॥

नाहि नाहि मति मंद उचारी ॥
भली बुरी जड़ कछु न बिचारी ॥
बचन मानि ग्रिह ताहि न गयो ॥
साहु सुता कहु भजत न भयो ॥१९॥
कबियो बाच ॥
अड़िल ॥
कामातुर ह्वै जु त्रिय पुरख प्रति आवई ॥
घोर नरक महि परै जु ताहि न रावई ॥
जो पर त्रिय पर सेज भजत है जाइ करि ॥
हो पाप कुंड के माहि परत सो धाइ करि ॥२०॥
नाहि नाहि पुनि कुअर ऐस उचरत भयो ॥
बनि तनि सजिन सिंगार तरुनि के ग्रिह गयो ॥
बाल अधिक रिस भरी चरित्र बिचारियो ॥
हो मात पिता को सहित मित्र हनि डारियो ॥२१॥
कबियो बाच ॥

दोहरा ॥

कामातुर ह्वै जो तरुनि मुहि भजि कहै बनाइ ॥
ताहि भजै जो नाहि जन नरक परै पुनि जाइ ॥२२॥
अड़िल ॥
कुअरि कटारी काढि सु कर भीतर लई ॥
पितु के उर हनि कढि मात के उर दई ॥
खंड खंड निज पान पिता के कोटि करि ॥
हो भीति कुअर के तीर जात भी गाड करि ॥२३॥
पहिर भगौहे बसत्र जात न्रिप पै भई ॥
सुत की इह बिधि भाख बात तिह तितु दई ॥
राइ पूत तव मोरि निरखि छबि लुभधियो ॥
हो ता ते मेरो तात बाधि करि बधि कियो ॥२४॥
खंड खंड करि गाडि भीति तर राखियो ॥
बचन अचानक इह बिधि न्रिप सौ भाखियो ॥
राइ न्याइ करि चलि कै आपि निहारियै ॥
हो निकसे हनियै याहि न मोहि संघारियै ॥२५॥

दोहरा ॥

पति मारे की जब सुनी मोरि मात धुनि कान ॥
मारि मरी जमधर तवै सुरपुर कीअसि पयान ॥२६॥
सुनि राजा ऐसो बचन ब्याकुल उठियो रिसाइ ॥
भीत तरे ते साहु को म्रितक निकासियो जाइ ॥२७॥

चौपई ॥

टूक बिलोकि चक्रित ह्वै रहियो ॥
साचु भयो जो मुहि इन कहियो ॥
भेद अभेद न कछू बिचारियो ॥
सुत को पकरि काटि सिर डारियो ॥२८॥
अड़िल ॥
प्रथम मात पितु मारि बहुरि निजु मीत संघारियो ॥
छलियो मूड़ मति राइ जवन नहि न्याइ बिचारियो ॥
सुनी न ऐसी कान कहूं आगे नहि होई ॥
हो त्रिय चरित्र की बात जगत जानत नहि कोई ॥२९॥

CHARITAR २४४ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौआलीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥244॥4564॥अफजूं॥*

चौपई ॥

प्राची दिसा प्रगट इक नगरी ॥
खंभावति सभ जगत उजगरी ॥
रूप सैन राजा तह केरा ॥
जा कै दुसट न बाचा नेरा ॥१॥
मदन मंजरी नारि तवन की ॥
ससि की सी छबि लगति जवन की ॥
म्रिग के नैन दोऊ हरि लीने ॥
सुक नासा कोकिल बच दीने ॥२॥
राजा पियत अमल सभ भारी ॥
भाति भाति सौ भोगत नारी ॥
पोसत भाग अफीम चड़ावै ॥
प्याले पी पचासइक जावै ॥३॥
अड़िल ॥
भाति भाति रनयनि सौ भोग कमावई ॥
आसन चुंबन करत न गनना आवई ॥
चारि पहर रति करै अधिक सुख पाइ कै ॥
हो जो रानी तिह रमै रहै उरझाइ कै ॥४॥
स्री रस तिलक मंजरी त्रियिक बखानियै ॥
अधिक जगत के माझ धनवंती जानियै ॥
जावित्री जाइफर न साहु चबावई ॥
हो सोफी सूम न भूलि भाग कौ खावई ॥५॥
साहु आपु कौ स्यानो अधिक कहावई ॥
भूल भाग सुपने हूं न घोटि चड़ावई ॥
पियै जु रानी भाग अधिक ता सौ लरै ॥
हो कौडी कर ते दान न सोकातुर करै ॥६॥

चौपई ॥

पियत भाग काहू जो हेरै ॥
ठाढे होत न ता के नेरै ॥
भयो सदन तिह कहै उजारा ॥
जा कै कूंडा बजै दुआरा ॥७॥
ता को होत उजार कहै घर ॥

भाग अफीम भखत है जो नर ॥
सोफी सकल बुधि बल रहै ॥
अमलिन को कछू कै नहि कहै ॥८॥
यह रस तिलक मंजरी सुनी ॥
गई पास हसि मूंडी धुनी ॥
कहा बकत है परियो मंद मति ॥
बाहन सोफि सीतला की गति ॥९॥

छंद ॥

अमल पियहि न्रिप राज अधिक इसत्रीयन बिहारै ॥
अमल सूरमा पियहि दुजन सिर खड़ग प्रहारै ॥
अमल भखहि जोगीस ध्यान जदुपति को धरही ॥
चाखि तवन को स्वाद सूम सोफी क्या करही ॥१०॥
साहु बाच ॥
अमल पियत जे पुरख परे दिन रैनि उघावत ॥
अमल जु घरी न पियहि ताप तिन कह चड़ि आवत ॥
अमल पुरखु जो पीयै किसू कारज के नाहीं ॥
अमल खाइ जड़्ह रहै म्रितक ह्वै कै घर माही ॥११॥
त्रियो बाच ॥
स्याने सोचित रहै राज कैफियै कमावै ॥
सूम संचि धन रहे सूर दिन एक लुटावै ॥
अमल पीए जसु होइ दान खाडे नहि हीनो ॥
अंत गुदा के पैड सूम सोफी जिय दीनो ॥१२॥
भाग पुरख वै पियहि भगत हरि की जे करही ॥
भाग भखत वै पुरख किसू की आस न धरही ॥
अमल पियत ते बीर बरत जिन त्रिन मसतक पर ॥
ते क्या पीवहि भाग रहै जिन के तकरी कर ॥१३॥
अड़िल ॥
सदा सरोही ऊपर कर जिन को रहै ॥
सिर मो खाइ क्रिपान जु तिह कटु बच कहै ॥
निंबूआ टिक कहि रहै मूंछि ऐसे कीए ॥
हो ते नर पीवहि भाग कहा पसु तैं पीए ॥१४॥
अगंजान जो गंजत सदा अगंज नर ॥
त्रसत ताप तुटि जाइ निरखि जिह खड़ग कर ॥
ते पीवत है भाग अधिक जिन जस लए ॥
हो दान खाड कै प्रथम बहुरि जग ते गए ॥१५॥

दोहरा ॥

ते नर कैफन को पियत तै क्या पियहि अजान ॥
कर तकरी पकरत रहियो कसी न कमर क्रिपान ॥१६॥

चौपई ॥

यौ सुनि बैन साहु रिसि भरियो ॥
निजु त्रिय कह कटु बचन उचरियो ॥
लात मुसट भे कीए प्रहारा ॥
तै क्योन ऐसी भाति उचारा ॥१७॥
त्रियो बाच ॥
कहो साहु तौ साच उचरऊं ॥
तुम ते तऊ अधिक जिय डरऊं ॥

जो कुल रीति बडन चलि आई ॥
सो मै तुहि प्रति कहत सुनाई ॥१८॥

छपै छंद ॥

दिजन दान दीबो द्रुजान सिर खड़ग बजैबो ॥
महा दुसट कह दंडि दारिद दीनान गवैबो ॥
निजु नारिन के साथ केल चिर लौ मचि मंडब ॥
खंड खंड रन खेत खलन खंडन सौ खंडब ॥
अमल न पी एती करै क्यो आयो महि लोक महि ॥
सुर असुर जछ गंध्रब सभै तिह नर कौ हसि हसि कहहि ॥१९॥

छंद ॥

सो नर पियत न भाग रहै कौडी महि जिह चित ॥
सो नर अमल न पियै दान भे नहि जा को हित ॥
स्यानो अधिक कहाइ काक की उपमा पावहि ॥
अंत स्वान ज्यों मरै दीन दुनिया पछुतावहि ॥२०॥

दोहरा ॥

अंत काक की म्रितु मरै मन भीतर पछुताहि ॥
खंडा गहियो न जस लियो कछू जगत के माहि ॥२१॥
साह बाच ॥

चौपई ॥

सुन साहुनि तै कछु न जानत ॥
सोफिन सौ अमलिन कह ठानत ॥
सोफी रंक दरबु उपजावै ॥
अमली न्रिपहूं धाम लुटावै ॥२२॥
त्रियो बाच ॥

छंद ॥

जे अमलन कह खाइ खता कबहूं नहि खावै ॥
मूंडि अवरनहि जाहि आपु कबहूं न मुंडावै ॥
चंचलान को चित चोर छिन इक महि लेही ॥
भाति भाति भामिननि भोग भावत मन देही ॥२३॥
अड़िल ॥
भजहि बाम कैफियै केल जुग जाम मचावहि ॥
हरिणा जिमि उछलहि नारि नागरिन रिझावहि ॥
सौफी चड़तहि कापि धरनि ऊपरि परै ॥
हो बीरज खलत ह्वै जाहि कहा जड़ रति करै ॥२४॥
बीरज भूमि गिर परै तके मुख बाइ कै ॥
निरखि नार की ओर रहै सिरु न्याइ कै ॥
सरमनाक ह्वै ह्रिदै बचन हसि हसि कहै ॥
हो काम केल की समै न पसु कौडी लहै ॥२५॥
तमकि साग संग्रहहि तुरै पर दलहि नचावै ॥
टूक टूक ह्वै गिरहि तऊ सामुहि हथि धावै ॥
असि धारन लग जाहि न चितहि डुलावही ॥
हे ते नर बरत बरंगनि सुरपुर पावही ॥२६॥
सुक्रित सुघर जिनि आइ जगत मै जस कौ पायो ॥

बहुरि खलन कह खंडि खेत जै सबद कहायो ॥
अमल पान सुभ अंग धनुख सर जिन लयो ॥
हो सो नर जीवत मुकति जगत भीतर भयो ॥२७॥
कबहूं न खाए पान अमल कबहूं नहि पीयो ॥
कबहूं न खेल अखेटन सुख निरधन कह दीयो ॥
कबहूं न सौंधा लाइ राग मन भाइयो ॥
हो करियो न भामिन भोग जगत क्योन आइयो ॥२८॥
नाद गंध सुभ इसत्रन जिन नर रस लीए ॥
अमल पान आखेट दुजन दुखित कीए ॥
साधु सेवि सुभ संग भजत हरि जू भए ॥
हो ते दै जस दुंदभी जगत या ते गए ॥२९॥
चतुरि नारि बहु भाति रही समुझाइ करि ॥
मूरख नाह न समुझियो उठियो रिसाइ करि ॥
गहि कै तरुनि तुरंत तरल ताजन मरियो ॥
हो तब त्रिय ठाढ चरित तही इह बिधि करियो ॥३०॥
छित पर खाइ पछार परी मुरछाइ करि ॥
हाइ हाइ करि साहु लई उर लाइ करि ॥
लाख लहे तुम बचे कहो क्या कीजियै ॥
हो कहियो न्रिप सहित भोजन सभ कह दीजियै ॥३१॥

दोहरा ॥

साहु तबै भोजन करा नाना बिधन बनाइ ॥
ऊच नीच राजा प्रजा सभ ही लए बुलाइ ॥३२॥

चौपई ॥

पाति पाति लोगन बैठायो ॥
भाति भाति भोजनहि खवायो ॥
इतै न्रिपति सौ नेह लगाइसि ॥
बातन सौ ता कौ उरझाइसि ॥३३॥

दोहरा ॥

भोजन तिनै खवाइयो भाग भोज मै पाइ ॥
राजा को पति के सहित छल सौ गई सुवाइ ॥३४॥
भागि खाइ राजा जगियो सोफी भयो अचेत ॥
मित्र भए तिह नारि को तब ही बनियो संकेत ॥३५॥

चौपई ॥

लोग जिवाइ बचन इमि भाखा ॥
सिगरो दिवस राइ हम राखा ॥
साझ परे राजा घर ऐहै ॥
तुमहूं तबै बुलाइ पठैहै ॥३६॥

भुजंग छंद ॥

मिलियो जान प्यारा लगे नैन ऐसे ॥
मनो फाधि फाधै म्रिगी राट जैसे ॥
लयो मोहि राजा मनो मोल लीनो ॥
तही भावतो भामनी भोग कीनो ॥३७॥
रहियो साहु डारियो कछू न बिचारियो ॥

मनो लात के साथ सैतान मारियो ॥
पसूहा न भाखै उठै न उघावै ॥
इतै नारि कौ राज बाको बजावै ॥३८॥

दोहरा ॥

साहु पालकी कै तरे बाधि डारि कर दीन ॥
जु कछु धाम महि धन हुतो घालि तिसी महि लीन ॥३९॥
अड़िल ॥
आपु दौरि ताही पर चड़ी बनाइ कै ॥
रमी न्रिपति के साथ अधिक सुख पाइ कै ॥
लै नारी कह राइ अपने घर गयो ॥
हो सूम सोफियहि बाधि पालकी तर लयो ॥४०॥
जब पहुचे दोऊ जाइ सुखी ग्रिह नारि नर ॥
कहियो कि देहु पठाइ पालकी साहु घर ॥
बधे साहु तिह तरे तही आवत भए ॥
हो जह राजा धन सहित बाल हरि लै गए ॥४१॥

चौपई ॥

बीती रैयनि भयो उजिआरा ॥
तबै साहु दुहूं द्रिगन उघारा ॥
मोहि पालकी तर किह राखा ॥
बचन लजाइ ऐस बिधि भाखा ॥४२॥
मै जु कुबोल नारि कह कहे ॥
ते बच बसि वा के जिय रहे ॥
लछमी सकल नारि जुत हरी ॥
मोरी बिधि ऐसी गति करी ॥४३॥
कबियो बाच ॥

दोहरा ॥

फलत भाग ही सरबदा करो कैसियै कोइ ॥
जो बिधना मसतक लिखा अंत तैसियै होइ ॥४४॥
अड़िल ॥
सुधि पाई जब साहु न्याइ मसतक रहियो ॥
दूजे मनुखन पास न भेद मुख तै कहियो ॥
भेद अभेद की बात चीनि पसु ना लई ॥
हो लखियो दरबु लै न्रहान तीरथन कौ गई ॥४५॥

CHARITAR २४५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पैतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥245॥4609॥अफजूं॥

चौपई ॥

पूरब दिसि इक तिलक न्रिपत बर ॥
भान मंजरी नारि तवन घर ॥
चित्र बरन इक सुत ग्रिह वा के ॥
इंद्र चंद्र छबि तुल न ता के ॥१॥
अड़िल ॥

जे तरुनी न्रिप सुत की प्रभा निहारई ॥
लोक लाज तजि तन मन धन कह वारई ॥
बिरह बान तन बिधी मुगध ह्वै झूलहीं ॥
हो मात पिता पति सुत की सभ सुध भूलहीं ॥२॥

दोहरा ॥

छेम करन इक साहु की सुता रहै सुकुमारि ॥
उरझि रही मन मै घनी निरखत राज दुलारि ॥३॥
अड़िल ॥
स्वरनि मंजरी अटकी कुअर निहारि करि ॥
रुकम मंजरी सहचरि लई हकारि करि ॥
निजु मन को तिह भेद सकल समझाइ कै ॥
हो चित्र बरन न्रिप सुत पहि दई पठाइ कै ॥४॥
निज नारी मुहि करियो कुअर करु आइ करि ॥
भाति भाति सौ भजो परम सुख पाइ करि ॥
भूप तिलक की कानि न चित महि कीजियै ॥
हो मनसा पूरन मोरि सजन करि दीजियै ॥५॥
कुअर बाच ॥

चौपई ॥

इक ठा सुने अनूपम हय है ॥
सेर साहि लीने द्वै है है ॥
राहु सुराहु नाम है तिन के ॥
अंग सुरंग बने है जिन के ॥६॥
जौ ता ते द्वै है हरि ल्यावै ॥
बहुरि आहि मुरि नारि कहावै ॥
तब हम संक त्याग तुहि बरही ॥
भूप तिलक की कानि न करही ॥७॥
साहु सुता जब यौ सुनि पावा ॥
चंडारिनि को भेस बनावा ॥
कर मो धरत बुहारी भई ॥
सेर साहि के महलन गई ॥८॥

दोहरा ॥

हजरति के घर मो धसी ऐसो भेस बनाइ ॥
राहु सुराहु जहा हुते तही पहूची जाइ ॥९॥
अड़िल ॥
बंधे हुते जह द्वै है झरोखा के तरै ॥
जहा न चीटी पहुचै पवन न संचरै ॥
तही तरुनि इह भेस पहूची जाइ करि ॥
हो अरध रात्रि भे छोरा बाज बनाइ करि ॥१०॥

चौपई ॥

छोरि अगारि पछारि उतारी ॥
आनन बिखै लगामी डारी ॥
ह्वै असवार चाबुकिक मारिसि ॥
साहु झरोखा भए निकारिसि ॥११॥

दोहरा ॥

साह झोरोखा के भए परी तुरंग कुदाइ ॥
संका करी न जान की परी नदी मो जाइ ॥१२॥

चौपई ॥

झरना महि ते बाजि निकारिसि ॥
गहिरी नदी बिखै लै डारिसि ॥
जिय अपने का लोभ न करा ॥
इह छल राहु अस्व कह हरा ॥१३॥
जब बाजी हजरति को गयो ॥
सभहिन को बिसमै जिय भयो ॥
जहा न सकत प्रवेस पवन करि ॥
तह ते लयो तुरंगम किन हरि ॥१४॥
प्रात बचन हजरति इम कियो ॥
अभै दान चोरहि मै दियो ॥
जो वह मो कह बदन दिखावै ॥
बीस सहस्र असरफी पावै ॥१५॥
अभै दान ता कौ मै द्रयायो ॥
खाई सपत कुरान उचायो ॥
तब त्रिय भेस पुरख को धरा ॥
सेर साह कह सिजदा करा ॥१६॥

दोहरा ॥

पुरख भेख कह पहिर त्रिय भूखन सजे सुरंग ॥
सेर साह सौ इमि कहा मै तव हरा तुरंग ॥१७॥

चौपई ॥

जब हजरति ता कौ लखि लयो ॥
हरखत भयो कोप मिटि गयो ॥
निरखि प्रभा उपमा बहु कीनी ॥
बीस सहस्र असरफी दीनी ॥१८॥

दोहरा ॥

हसि हजरति ऐसे कहा सुनु तसकर सुंद्रंग ॥
सो बिधि कहो बनाइ मुहि किह बिधि हरा तुरंग ॥१९॥

चौपई ॥

जब अबला आइसु इमि पावा ॥
मुहर राखि मेखन लै आवा ॥
सरिता मो त्रिण गूल बहाइसि ॥
रछपाल ता पर डहकाइसि ॥२०॥

दोहरा ॥

बहुरि नदी भीतर परी जात भई तरि पारि ॥
साहि झरोखा के तरे लागत भई सुधारि ॥२१॥

चौपई ॥

जब घरियारी घरी बजावै ॥
तब वह मेखिक तहा लगावै ॥
बीता दिवस रजनि बडि गई ॥
तब त्रिय तहा पहूचत भई ॥२२॥
अड़िल ॥
तैसहि छोरि तुरंग झरोखा बीच करि ॥
जल मो परी कुदाइ जात भी पार तरि ॥
सभ लोकन कौ कौतक अधिक दिखाइ कै ॥
हो सेर साह सौ बचन कहे मुसकाइ कै ॥२३॥
इही भाति सो प्रथम बाज मुरि कर परियो ॥
दुतिय अस्व तव निरखित इह छल सौ हरियो ॥
सेर साहि तब कहियो कहा बुधि को भयो ॥
हो राहा थो जहा तही सुराहा हूं गयो ॥२४॥
साह सहित सभ लोग चरित्र बिलोकि बर ॥
दात दात सो काटि कहै है दयो कर ॥
कहै हमारी मतिहि कवन कारन भयो ॥
हो राहा तसकर हरियो सुराहा हम दयो ॥२५॥

दोहरा ॥

स्वरन मंजरी बाज हरि मित्रहि दए बनाइ ॥
चित्र बरन सुत न्रिप बरा ह्रिदै हरख उपजाइ ॥२६॥
भाति भाति ता को भजै ह्रिदै हरख उपजाइ ॥
सेर साहि दिलीस कह त्रिया चरित्र दिखाइ ॥२७॥

CHARITAR २४६ _— SAMAPAT_

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छयालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥246॥4636॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बीर तिलक इक न्रिपति बिचछन ॥
पुहप मंजरी नारि सुलछन ॥
तिन की हम ते कहि न परत छबि ॥
रति तिह रहत निरखि रति पति दबि ॥१॥
स्री सुरतान सिंघ तिह पूता ॥
जनु बिधि गड़ा दुतिय पुरहूता ॥
जब वहु तरुन भयो लखि पायो ॥
तब पित ता को ब्याह रखायो ॥२॥
कासमीर इक न्रिपति रहत बल ॥
रूपमान धनमान रणाचल ॥
ता के धाम सुता इक सुनी ॥
सकल गुनन के भीतर गुनी ॥३॥
बोलि दिजंबरन घरी सुधाई ॥
न्रिप सुत के संग करी सगाई ॥
अधिक सु दरबु पठै दिय ता कौ ॥
ब्याह बिचारि बुलायो वा कौ ॥४॥
सुता को ब्याह जबै तिन दियाइसि ॥
हाट पाट बसत्रन सभ छाइसि ॥
घर घर गीत चंचला गावत ॥

भाति भाति बाद्रित बजावत ॥५ ॥
सकल ब्याह की रीति करहि ते ॥
अधिक दिजन कह दान करहि वे ॥
जाचक सभै भूप ह्वै गए ॥
जाचत बहुरि न काहू भए ॥६ ॥

दोहरा ॥

सकल रीति करि ब्याह की चड़े जनेत बनाइ ॥
भाति भाति सो कुअर बनि प्रभा न बरनी जाइ ॥७ ॥

चौपई ॥

कासमीर भीतर पहुचे जब ॥
बाजन लगे बदित्र अमित तब ॥
नाचत पात्र अपार अनूपा ॥
कंचनि हुरकुनि रूप सरूपा ॥८ ॥
हाट पाट सभ बसत्रन छाए ॥
अगर चंदन भे मगु छिरकाए ॥
सभ घर बाधी बंधनवारै ॥
गावत गीत सुहावत नारै ॥९ ॥
अगूआ लेन अगाऊ आए ॥
आदर सौ कुअरहि ग्रिह ल्याए ॥
भाति भाति ते करै बडाई ॥
जानुक राकनि धनि निधि पाई ॥१० ॥
अड़िल ॥
तब जस तिलक मंजरी लई बुलाइ कै ॥
ब्याह दई न्रिप सुत के साथ बनाइ कै ॥
दाज अमित धन दीयो बिदा करि कै दए ॥
हो बिरजवती नगरी प्रति ते आवत भए ॥११ ॥

चौपई ॥

एक साह के सदन उतारे ॥
ग्रिह जै है लखि है जब तारे ॥
कुअरि साह को पूत निहारा ॥
तिह तन तानि मदन सर मारा ॥१२ ॥

दोहरा ॥

निरखित रही लुभाइ छबि मन मै किया बिचार ॥
न्रिप सुत संग न जाइ हौ इहै हमारो यार ॥१३ ॥

चौपई ॥

बोलि लिया ता को अपुने घर ॥
रति मानी ता सौ हसि हसि करि ॥
आलिंगन चुंबन बहु लए ॥
बिबिध बिधन सौ आसन दए ॥१४ ॥
अड़िल ॥
बिहसि बिहसि दोऊ कुअर कलोलन कौ करै ॥
बिबिध बिधन कोकन के मत कौ उचरै ॥
भाति भाति के आसन करहि बनाइ कै ॥

हो लपटि लपटि दोऊ जाहि परम सुख पाइ कै ॥१५॥
केल करत स्वै जाहि बहुरि उठि रति करै ॥
भाति भाति चातुरता मुख ते उचरै ॥
तरुन तरुनि जब मिलै न कोऊ हारही ॥
हो बेद सासत्र सिंम्रिति इह भाति उचारही ॥१६॥
त्रिया बाच ॥

चौपई ॥

मै न न्रिप सुत के संग जै हौ ॥
बिन दामन इह हाथ बिकै हौ ॥
धाइ सुता तब कुअरि हकारी ॥
तवन पालकी भीतर डारी ॥१७॥
दिवसराज असताचल गयो ॥
प्राची दिसि ते ससि प्रगटयो ॥
न्रिप सुत भेद पछान्यो नाही ॥
तारन की समझी परछाही ॥१८॥
अनत त्रिया कौ लै ग्रिह गयो ॥
भेद न पसु पावत कछु भयो ॥
धाइ भेद सुनिअति हरखानी ॥
मोरी सुता करी बिधि रानी ॥१९॥

दोहरा ॥

राज कुअरि सुत साह के सदन रही सुख पाइ ॥
घाल पालकी धाइ की दुहिता दई पठाइ ॥२०॥

CHARITAR २४७ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सैतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥247॥4656॥अफजूं॥

दोहरा ॥

नदी नरबदा को रहै न्रिपति चित्ररथ नाम ॥
देस देस के एस जिह जपत आठहूं जाम ॥१॥

चौपई ॥

चित्र मंजरी ता की त्रिय बर ॥
जानुक प्रभा दिपति किरणाधर ॥
चारि पुत्र ता के सुंदर अति ॥
सूरबीर बलवान बिकट मति ॥२॥

दोहरा ॥

चित्र केतु बचित्र धुज ससि धुज रवि धुज सूर ॥
जिन के धनुख टंकोर धुनि रहत जगत मै पूर ॥३॥

चौपई ॥

नवल साह इक रहत नगर तिह ॥
ससि आभा वति दुहिता घर जिह ॥

अमित प्रभा जानियत जा की जग ॥
सुर आसुर थकि रहत निरख मग ॥४॥

दोहरा ॥

चारि पुत जे न्रिपति के ता की प्रभा निहारि ॥
रीझि रहत भे चित बिखै मन क्रम बच निरधार ॥५॥

चौपई ॥

न्रिप सुत दूतिक तहा पठाइसि ॥
भाति भाति तिह त्रियहि भुलाइसि ॥
इही भाति चारौ उठि धाए ॥
चारो चलि ता के ग्रिह आए ॥६॥

दोहरा ॥

साह सुता अति पतिब्रता अधिक चतुर मतिवान ॥
चारहु पठियो संदेस लिखि चित चरित्र इक आन ॥७॥

चौपई ॥

जुदो जुदो लिखि चहूंन पठायो ॥
किस को भेद न किसू जतायो ॥
सखी भए इह भाति सिखाइसि ॥
राज कुमारन बोलि पठाइसि ॥८॥
साहु सुता बाच सखी सो ॥

दोहरा ॥

जिमि जिमि न्रिप सुत आइ है उतम भेख सु धारि ॥
तिमि तिमि पगन खराक तै किजियो मेरे द्वार ॥९॥
प्रथम पुत्र जब न्रिपति को आयो भेख सु धारि ॥
पाइन को खटको कियो आनि सखी तिह द्वार ॥१०॥

चौपई ॥

हा हा पद तब तरुनि उचारो ॥
हाथन कौ छतिया पर मारो ॥
कोऊ आहि द्वार मुहि ठाढा ॥
ता ते अधिक त्रास मुहि बाढा ॥११॥
न्रिप सुत कहियो जतन इक करो ॥
चारि संदूक हैं इक मै परो ॥
एक संदूक माझ रहियो दुरि ॥
जै है लोक बिलोक बिमुख घर ॥१२॥
इमि संदूक भीतर तिह डारो ॥
दुतिय न्रिपति को पुत्र हकारो ॥
पग खटको सहचरि तब कीनो ॥
दुतिय संदूक डारि तिह दीनो ॥१३॥

दोहरा ॥

इह छल न्रिप के चारि सुत चहूं संदूकन डारि ॥
तिन पितु ग्रिह पयानो कियो उतिम भेख सु धारि ॥१४॥

चौपई ॥

चारि संदूक संग लीने कर ॥
पहुचत भई न्रिपति कै दर पर ॥
जब राजा को रूप निहारियो ॥
ता पर वार नदी तिन डारियो ॥१५॥

दोहरा ॥

वारि संदूक न्रिपाल पर दए नदी मै डारि ॥
सभ छत्रिन छिन मो छला कोऊ न सका बिचार ॥१६॥

चौपई ॥

धंन्य धंन्य सभ लोक बखानै ॥
भेद अभेद न मूरख जानै ॥
भूप भगति तिह अधिक बिचारियो ॥
न्रिप पर दरबु इतो जिन वारियो ॥१७॥
तब राजे इह भाति उचारियो ॥
साह सुता जेतो धन वारियो ॥
छोरि भंडार तितो तिह दीजै ॥
मंत्रन कहा बिलंब न कीजै ॥१८॥
चारि संदूक असरफी दीनी ॥
साहु सुता सभ ही सो लीनी ॥
न्रिप के चारौ पूत डुबाई ॥
लै धनु अमित बहुरि घर आई ॥१९॥

दोहरा ॥

इह छल सो सुति न्रिपति के चारौ दए डुबाइ ॥
आनि धाम बहुरो बसी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥२०॥

CHARITAR २४८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥248॥4676॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बतिसु लछन नगर इक सोहै ॥
जा के तट अमरावति को है ॥
सैन सुलछन न्रिप तह सुभ मति ॥
सूरबीर बलवान बिकट मति ॥१॥
मंज्रि बिचछनि नारि तवनि बर ॥
पड़ी ब्याकरन सासत्र कोक सर ॥
सोभा अधिक तवन की सोहत ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहत ॥२॥
अड़िल ॥
एक साह को पूत तहा सुंदर घनो ॥
जनु औतार मदन को या जग मो बनो ॥
बितन केतु तिह नाम कुअर कै जानियै ॥
हो जा सम सुंदर अवर न कतहु बखानियै ॥३॥

नैन हरिन के हरे बैन पिक के हरे ॥
जनुक सानि पर बिसिख दोऊ बाढिन धरे ॥
बिना प्रहारे लगत न काढे जात है ॥
हो खटकत हिय के माझ सदा पियरात है ॥४॥
निरखि तवन को रूप तरिनि मोहित भई ॥
लोक लाज कुल कानि त्यागि तब ही दई ॥
आसिक की त्रिय भाति रही उरझाइ कै ॥
हो सकियो न धीरज बाधि सु लियो बुलाइ कै ॥५॥

चौपई ॥

भेदि पाइ त्रिय ताहि बुलाइसि ॥
भाति भाति भोजनहि खवाइसि ॥
केल करन ता सौ चित चहा ॥
लाजि बिसारि प्रगट तिह कहा ॥६॥
बितन केतु जब यौ सुनि पायो ॥
भोग न कियो नाक ऐंठायो ॥
सुनि अबला मै तोहि न भजिहौ ॥
नारि आपनी कौ नहि तजिहौ ॥७॥

दोहरा ॥

जौ उपाइ कोटिक करहु लछिक करहु इलाज ॥
धरम आपनौ छाडि तुहि तऊ न भजहौ आज ॥८॥

चौपई ॥

रानी जतन कोटि करि रही ॥
एकै नाहि मूड़ तिह गही ॥
कोप भयो त्रिय को जिय भारो ॥
ता कौ बाधि भोहरे डारो ॥९॥
ता कौ बाधि भोहरा डारा ॥
मूआ साहु सुत जगत उचारा ॥
सौदा काज कहियो कहूं गयो ॥
चोरन मारि लूटि धन लयो ॥१०॥
भेस अनूप तरुनि तिन धरा ॥
अभरन अंग अंग मै करा ॥
बितन केतु के ढिग चल गई ॥
भाति अनेक निहोरत भई ॥११॥
अड़िल ॥
ग्रीव अंचरा डारि रही सिर न्याइ कै ॥
पकरि कुअर के पाइ रही लपटाइ कै ॥
एक बार डर डारि आनि पिय रति करो ॥
हो सकल काम को ताप हमारो अब हरो ॥१२॥

चौपई ॥

मरि मरि जनम कोटि तुम धरो ॥
बार हजार पाइ कि न परो ॥
तो को तऊ न भजो निलज तब ॥
कहि दै हो तव पति प्रति बिधि सब ॥१३॥
अधिक जतन रानी करि हारी ॥

पाइ परी लातन जड़ मारी ॥
चलु कूकरी निलज मूड़ मति ॥
काम भोग चाहत मो सो कत ॥१४॥
कुबच सुने त्रिय भई बिमन मन ॥
अमित कोप जागा ता के तन ॥
जिह पति को मुहि त्रास दिखारै ॥
तौ मै जौ सोई तुहि मारै ॥१५॥
यौ कहि कै तिह पकरि निकारियो ॥
पठै सहचरी नाथ हकारियो ॥
भूत भाखि तिह दियो दिखाई ॥
न्रिप के अति चित चिंत उपजाई ॥१६॥

दोहरा ॥

सुन राजा जो तसकरन हन्यो साह को पूत ॥
सो मेरे ग्रिह प्रगटियो हेरहु ह्वै करि भूत ॥१७॥

चौपई ॥

न्रिप तब कही गाडि इह डारो ॥
याहि न राखो तुरत संघारो ॥
पावक भए पलीता जरियहि ॥
साहु पुत्र के सिर पर डरियहि ॥१८॥
हा हा सबद बहुत करि रहियो ॥
भेद अभेद न्रिप मूड़ न लहियो ॥
निरखहु का त्रिय चरित सुधारियो ॥
साह पूत करि भूत संघारियो ॥१९॥
तरुनिन कर हियरो नहि दीजै ॥
तिन को चोरि सदा चित लीजै ॥
त्रिय को कछु बिस्वास न करियै ॥
त्रिय चरित्र ते जिय अति डरियै ॥२०॥

CHARITAR २४९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनचास चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥249॥4696॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अजितावती नगर इक सोहै ॥
अजित सिंघ राजा तह को है ॥
अजित मंजरी ग्रिह जा के त्रिय ॥
मन क्रम बच जिन बसि कीना पिय ॥१॥
भुजंग मती ता की दुहिता इक ॥
पड़ी कोक ब्याकरन सासत्रनिक ॥
भागवान सुंदरि अति गुनी ॥
जा सम लखी न कानन सुनी ॥२॥
साह पुत्र ब्रिखभ धुजि इक तहि ॥
रूप सील सुचि ब्रतता जा महि ॥
तेजमान बलवान बिकट मति ॥
अलख करम लखि ताहि रिस्रयो रति ॥३॥
वहै कुअर न्रिप सुता निहारा ॥

सूरबीर बलवान बिचारा ॥
हितू सहचरि इक निकटि बुलाइसि ॥
भेद भाखि तिह तीर पठाइसि ॥४॥
अड़िल ॥
पवन भेस करि सखी तहा तुम जाइयहु ॥
भाति भाति करि बिनती ताहि रिझाइयहु ॥
कै अब ही तै हमरी आस न कीजियै ॥
हो नातर मोहि मिलाइ सजन कौ दीजियै ॥५॥
पवन भेस ह्वै सखी तहा ते तह गई ॥
भाति अनेक प्रबोध करत ता कौ भई ॥
उतिम भेस सु धार ल्याई तिह तहा ॥
हो भुजंग मती न्रिप सुता बहिठी थी जहा ॥६॥
उठि सु कुअरि तिन लीन गरे सौ लाइ करि ॥
अलिंगन करि चुंबन हरख उपजाइ करि ॥
भाति भाति तिह भजा परम रुचि मानि कै ॥
हो प्रानन ते प्यारो सजन पहिचानि कै ॥७॥

दोहरा ॥

भाति भाति तरुनी तरन भरियो परम सुख पाइ ॥
इही बिखै ता को पिता तही निकसियो आइ ॥८॥

चौपई ॥

पितु आवत अंचर मुख डरा ॥
लागि गरे रोदन बहु करा ॥
कहियो दरसु बहु दिन मो पायो ॥
ता ते मोर उमगि हिय आयो ॥९॥
जब ते मै ससुरार सिधाई ॥
तह ते जाइ बहुरि घर आई ॥
तब ते अब मै तात निहारा ॥
ता ते उपजा मोह अपारा ॥१०॥
अजित सिंघ जब यौ सुनि लयो ॥
रोदन करत गरे मिलि भयो ॥
तब तिह घात भली कर आई ॥
सखी दयो ग्रिह मीत पठाई ॥११॥

दोहरा ॥

पितु के अंचर डारि सिर आंखै लई दुराइ ॥
मोहित भयो रोवत रहियो मीत दिया पहुचाइ ॥१२॥

CHARITAR २५० *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचास चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥250॥4708॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बिकट करन इक हुतो न्रिपति बर ॥
जनुक प्रिथी तल दुतिय दिवाकर ॥
स्री मकराछ कुअरि बनिता तिह ॥

प्रगट चंद्र सी प्रभा लगत जिह ॥१॥

दोहरा ॥

स्री जलजाछ सुता तवनि जा को रूप अपार ॥
गड़ि ता सी तरुनी बहुरि गड़ि न सका करतार ॥२॥

चौपई ॥

कलप ब्रिछ धुज तह इक न्रिप बर ॥
प्रगट भयो जनु दुतिय किरनधर ॥
अधिक रूप जनियत जा को जग ॥
थकित रहत जिह निरख तरुनि मग ॥३॥
अड़िल ॥
राज कुअरि निरखन उपबन इक दिन चली ॥
लीनो बीस पचास सहचरी संग भली ॥
उठत कनूका धूरि उठाए पाइ तन ॥
हो जनुक चले ह्वै संग प्रजा के सकल मन ॥४॥

दोहरा ॥

कलप ब्रिछ धुज कुअर कौ निरखि गई ललचाइ ॥
ठग नाइक से नैन द्वै ठग जिउ रही लगाइ ॥५॥
अड़िल ॥
राज सुता तिह रूप अलोक बिलोक बर ॥
अंग अनंग तब ही गयो बिसिख प्रहार करि ॥
काटि काटि कर खाइ बसाइ न कछू तिह ॥
हो पंखनि बिधना दए मिलै उडि जाइ जिह ॥६॥
यौ लिखि एक संदेसा ताहि पठाइयो ॥
भाति भाति कहि भेद तिसै ललचाइयो ॥
डारि लयो डोरा महि किनूं न किछु लहियो ॥
हो परी लै गई ताहि सु तहि पित त्रिय कहयो ॥७॥

चौपई ॥

रोइ पीटि ता को पितु हारा ॥
किनूं न ता को सोध उचारा ॥
ता की बधू न्रिपति पहि गई ॥
परी हरत पति मुहि कह भई ॥८॥
न्रिप भाखी तिह सोध करीजै ॥
साह पूत कह जान न दीजै ॥
खोजि थके नर नगर नदी मै ॥
दुहिता भेद न जाना जी मै ॥९॥
एक बरख राखा ता कौ घर ॥
दुतिय कान किनहूं न सुना नर ॥
भाति भाति के भोगन भरी ॥
बिबिध बिधन तन क्रीड़ा करी ॥१०॥
अड़िल ॥
नट आसन करि प्रथम बहुरि ललितासन लेई ॥
बहुरि रीति बिपरीति करै बहु बिधि सुख देई ॥
ललितासन कौ करत मदन को मद हरहि ॥
हो रमियो करत दिन रैनि त्रास न रंच करहि ॥११॥

दोहरा ॥

भाति अनिक भामा भजत पायो अधिक अरामु ॥
छिन छिन छतिया सौ लगै तजत न आठो जाम ॥१२॥
अड़िल ॥
बिकट करन इक दिवस तहा चलि आइयो ॥
गहि बहियो तिह पीय पितहि दिखराइयो ॥
जोरि हाथ सिरु नियाइ कहियो मुसकाइ करि ॥
हो परी डारि इह गई हमारे आजु घर ॥१३॥

चौपई ॥

सति सति तिह तात उचारा ॥
स्रोन सुना सो नैन निहारा ॥
मनुख संग दै ग्रिह पहुचायो ॥
भेद अभेद न कछु जड़ पायो ॥१४॥

CHARITAR २५१ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इक्यावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥251॥4722॥अफजूं॥*

चौपई ॥

हंस धुजा राजा इक अति बल ॥
अरि अनेक जीते जिन दलि मलि ॥
सुखद मती ता की रानी इक ॥
जा की प्रभा कहत बनितानिक ॥१॥
ता की सुता सुख मती सुनी ॥
जा सम और न अबला गुनी ॥
जोबन अधिक तवन को राजत ॥
जिह मुखि निरखि चंद्रमा लाजत ॥२॥
नागर कुअर नगर को राजा ॥
जा सम दुतिय न बिधना साजा ॥
करत सिकार कैसहूं आयो ॥
न्रिप दुहिता ग्रिह तर ह्वै धायो ॥३॥
राज कुअरि निरखति ता की छबि ॥
मद करि मत रही छबि तर दबि ॥
पान पीक ता के पर डारी ॥
मो सौ करै कैसहूं यारी ॥४॥
नागर कुअर पलटि तिह लहा ॥
ताहि बिलोक उरझि करि रहा ॥
नैनन नैन मिले दुहूंअन के ॥
सोक संताप मिटे सभ मन के ॥५॥
रेसम रसी डारि तर दीनी ॥
पीरी बाधि तवन सौ लीनी ॥
ऐंचि ताहि निज धाम चड़ायो ॥
मन बाछत प्रीतम कह पायो ॥६॥

तोटक छंद ॥

पिय धाम चड़ाइ लयो जब ही ॥

मन भावत भोग किया तब ही ॥
दुति रीझि रही अवलोकति यो ॥
त्रिय जोरि रहीं ठग की ठग ज्यो ॥७॥
पुनि पौढि रहैं उठि केल करैं ॥
बहु भाति अनंग के ताप हरैं ॥
उर लाइ रही पिय कौ त्रिय यो ॥
जनु हाथ लगे निधनी धन ज्यो ॥८॥
मदनोदित आसन कौ करि कै ॥
सभ ताप अनंगहि को हरि कै ॥
ललितासन बार अनेक धरै ॥
दोऊ कोक की रीति सौ प्रीति करै ॥९॥

दोहरा ॥

भाति भाति आसन करै चुंबन करत अपार ॥
छैल छैलनी रस पगे रही न कछू संभार ॥१०॥

चौपई ॥

हसि हसि केल दोऊ मिल करै ॥
पलटि पलटि प्रिय कौ त्रिय धरै ॥
हेरि रूप ता को बलि जाई ॥
छैलनि छैल न तज्यो सुहाई ॥११॥
तब तह ताहि पितावत भयो ॥
राज सुता जिय मै दुख पयो ॥
चित मै कही कवन बिधि कीजै ॥
जा तै पति पितु ते इह लीजै ॥१२॥
आपि पिता के आगू गई ॥
इह बिधि बचन बखानत भई ॥
बिजिया एक न्रिपति बहु खई ॥
ता ते बुधि ता की सभ गई ॥१३॥

दोहरा ॥

बिजिया खाए ते तिसै रही न कछू संभार ॥
आनि हमारे ग्रिह धसा अपनो धाम बिचारि ॥१४॥

चौपई ॥

तब मै हेरि तिसै गहि लीना ॥
कछु भोजन खैबे कह दीना ॥
अब सो करो तुम जु मुहि उचारो ॥
जियत तजो कै जिय ते मारो ॥१५॥
जो चलि ग्रिह दुसमन हू आवै ॥
जो ता को ग्रहि कै न्रिप घावै ॥
नरक बिखै ता कौ जम डारै ॥
भला न ता कह जगत उचारै ॥१६॥

दोहरा ॥

जो आवै निजु धाम चलि धरम भ्रात तिह जानि ॥
जो कछु कहै सु कीजियै भूलि न करियै हानि ॥१७॥

चौपई ॥

तब न्रिप ता कौ बोलि पठायो ॥
निकटि आपने तिह बैठायो ॥
दुहिता वहै तवन कह दीनी ॥
जा सौ रति आगे जिन कीनी ॥१८॥

दोहरा ॥

लै दुहिता ता कौ दई चित मौ भयो असोग ॥
दुहिता को कछु न लहा गूड़ अगूड़ प्रयोग ॥१९॥

चौपई ॥

मन भावत पावत पति भई ॥
इह छल सो पितु कह छलि गई ॥
भेद अभेद किनहूं नहि पायो ॥
लै नागर त्रिय धाम सिधायो ॥२०॥

CHARITAR २५२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥252॥4742॥अफजूं॥*

चौपई ॥

छत्रानी इसतरी इक रहै ॥
जीयो नाम ताहि जग कहै ॥
मानिक चंद तवन कह बरा ॥
भाति भाति के भोगन भरा ॥१॥
वह जड़ एक जाटनी सौ रति ॥
कछू न जानत मूड़ महा मति ॥
लंबोदरु पसु को अवतारा ॥
गरधभ जोनि डरा करतारा ॥२॥
लोगन ते अति तवन लजावै ॥
ता ते धाम न ता कौ ल्यावै ॥
ता ते और गाव त्रिय राखी ॥
ससि सूरज ता के सभ साखी ॥३॥
बाज अरूड़ि तहा ह्वै जावै ॥
काहू की लाजै न लजावै ॥
जीयो जिय भीतर अति जरै ॥
बाढी एक साथ रति करै ॥४॥

दोहरा ॥

जब वहु अस्व अरूड़ ह्वै गाव तवन मो जात ॥
जीयो मती तिह बाढीअहि अपने धाम बुलात ॥५॥

चौपई ॥

तिह त्रिय होड ननद सौ पारी ॥
बिहसित इह भातिन उचारी ॥
सु मै कहत हौ तीर तिहारे ॥

सुनहु स्रवन धरि कथा प्यारे ॥६ ॥
पति देखत कहियो भोग कमै हौ ॥
ब्रहम भोज ता ते करवै हौ ॥
जीयो मती तबहूं तुम जनियहु ॥
मोरी साच कही तब मनियहु ॥७ ॥
यौ कहि बचनन बहुरि उचारा ॥
पति गयो जब ही अनत निहारा ॥
तब बाढी तिह बोलि पठायो ॥
काम भोग तिह संग कमायो ॥८ ॥
जाटिनि भोग जबै जड़ आयो ॥
आन रमत लखि त्रियहि रिसायो ॥
काढि क्रिपान महा पसु धयो ॥
कर ते पकरि सहचरी लयो ॥९ ॥
जार एक उठि लात प्रहारी ॥
गिरत भयो पसु प्रिथी मंझारी ॥
देहि छीन तै उठि न सकत भयो ॥
जार पतरि भाजि जात भयो ॥१० ॥
उठत भयो मूरख बहु काला ॥
पाइन आइ लगी तब बाला ॥
जौ पिय मुर अपराध बिचारो ॥
काढि क्रिपान मार ही डारो ॥११ ॥
जिन निरभै तुहि लात प्रहारी ॥
वहि आगै मै कवन बिचारी ॥
तुम भूअ गिरे जवन के मारे ॥
खाइ लोटनी कछु न संभारे ॥१२ ॥

दोहरा ॥

जो नर तुम ते न डरा लातन किया प्रहार ॥
ता के आगे हेरु मै कहा बिचारी नारि ॥१३ ॥

चौपई ॥

जब मेरो तिन रूप निहारा ॥
सर अनंग तब ही तिह मारा ॥
जोरावरी मोहि गहि लीना ॥
बल सौ दाबि रान तर दीना ॥१४ ॥
मोर धरम प्रभु आप बचायो ॥
जा ते दरसु तिहारो पयो ॥
जौ तूं अब इह ठौर न आतो ॥
जोरावरी जार भजि जातो ॥१५ ॥
अब मुरि एक परीछा लीजै ॥
जा ते दूरि चित भ्रमु कीजै ॥
मूत्र जरत जौ दिया निहारो ॥
तब हसि हसि मुहि साथ बिहारो ॥१६ ॥
पात्र एक तट मूत्रियो जाई ॥
जा मै राख तेल को आई ॥
पिय मुर चित तो सौ अति डरा ॥
ता ते लघु अति ही मै करा ॥१७ ॥
लघ को करै पात्र सभ भरा ॥
बाकी बचत मूत्र भूअ परा ॥

तुमरो त्रास अधिक बलवाना ॥
जा ते डरत हमारे प्राना ॥१८॥
वहीं तेल भे दीप जगायो ॥
पति देखत जिह लघु ठहरायो ॥
भेद अभेद जड़ कछू न जाना ॥
सीलवती इसत्री कर माना ॥१९॥
रीझि बचन इह भाति उचारो ॥
मै तेरो सत साचु निहारो ॥
अब चेरा मै भयो तिहारा ॥
कहो सु करौ काज बहु हारा ॥२०॥
मूत्र भए तै दीप जगायो ॥
चमतकार इह हमै दिखायो ॥
पटुका डारि ग्रीव पग परा ॥
घरी चारि लगि नाक रगरा ॥२१॥

दोहरा ॥

एक रिसालू निरखयो आंखिन ऐस चरित्र ॥
कै हम आजु बिलोकियो साच कहत त्रिय मित्र ॥२२॥

चौपई ॥

अब तू कहै जु मुहि सोई करौ ॥
ह्वै कर दास नीर तव भरौ ॥
हसि हसि त्रिय कौ गरे लगावै ॥
भेद कछू मूरख नहि पावै ॥२३॥
बिहसि नारि इह भाति उचारा ॥
ब्रहम भोज करु नाथ स भारा ॥
भली भाति दिज प्रिथम जिवावो ॥
बहुरो सेज हमारी आवो ॥२४॥
कछू न लखा दैव के मारे ॥
ब्रहम भोज कह किया सवारे ॥
भली भाति दिज प्रथम जिवाए ॥
बहुरि नारि की सेज सिधाए ॥२५॥
जो त्रिय कही वहै गति कीनी ॥
जीति होड ननदि ते लीनी ॥
तेल मूत्र कहि दीप जगायो ॥
ब्रहम दंड पति ते करवायो ॥२६॥
अधिक हरीफ कहावत हुतो ॥
भूलि न भागहि पीवत सुतो ॥
इह चरित्र करि द्रिगन दिखायो ॥
इह छल सौ वहि त्रिय डहकायो ॥२७॥
प्रथम भोग पिय लखत कमायो ॥
जारि मूत्र भे दीप दखायो ॥
ब्रहम भोज उलटो ता पर करि ॥
पति जानी पतिब्रता त्रिया घर ॥२८॥

CHARITAR २५३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तिरपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥253॥4770॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बेस्वा एक ठौर इक सुनी ॥
पात्र कला नामा बहु गुनी ॥
अधिक तरुनि की दिपति बिराजै ॥
रंभा को निरखत मन लाजै ॥१॥
बिसन केतु इक राइ तहा को ॥
पातिसाह जानियत जहा को ॥
बिसन मती रानी ता के घर ॥
प्रगट कला जनु भई निसा कर ॥२॥

दोहरा ॥

बिसन केतु बेस्वा भए निस दिन भोग कमाइ ॥
बिसन मती त्रिय के सदन भूलि न कबहूं जाइ ॥३॥

चौपई ॥

रानी सखी पठी बेस्वा पहि ॥
दै धनु अधिक भाति ऐसी कहि ॥
बिसन केतु कौ जौ तू मारै ॥
बिसन मती दारदि तव टारै ॥४॥
सहचरि जब ऐसी बिधि कही ॥
बेस्वा बैन सुनत चुप रही ॥
धन सराफ के घर मै राखो ॥
काम भए दीजै मुहि भाखो ॥५॥
सूरज छपा रैनि ह्वै आई ॥
तब बेस्वा न्रिप बोलि पठाई ॥
बसत्र अनूप पहिरि तह गई ॥
बहु बिधि ताहि रिझावत भई ॥६॥
अड़िल ॥
भाति अनिक न्रिप संग सु केल कमाइ कै ॥
सोइ रही तिह साथ तरुनि लपटाइ कै ॥
अरध रात्रि जब गई उठी तब जागि करि ॥
हो प्रीति रीति राजा की चित ते त्यागि करि ॥७॥
लै जमधर ताही को ताहि प्रहारि कै ॥
उठि रुदिन किय आपि किलकटी मारि कै ॥
निरखहु सभ जन आइ कहा कारन भयो ॥
हो तसकर कोऊ संघारि अबै न्रिप को गयो ॥८॥
धूम नगर मौ परी सकल उठि जन धए ॥
म्रितक न्रिपति कह आनि सकल निरखत भए ॥
हाइ हाइ करि गिरह धरनि मुरछाइ करि ॥
हो धूरि डारि सिर गिरहि धरनि दुख पाइ करि ॥९॥
बिसन मती हूं तहा तबै आवत भई ॥
निरखि राइ कह म्रितक दुखाकुलि अधिक भी ॥
लूटि धाम बेस्वा को लिया सुधारि कै ॥
हो तिसी कटारी साथ उदर तिह फारि कै ॥१०॥

दोहरा ॥

बहुरि कटारी काढि सो हनन लगी उर माहि ॥
सहचरी गहि लई लगन दई तिह नाहि ॥११॥

चौपई ॥

प्रथम मारि पति पुनि तिह मारा ॥
भेद अभेद किनूं न बिचारा ॥
राज पुत्र अपने कौ दीना ॥
ऐसो चरित चंचला कीना ॥१२॥१॥

CHARITAR २५४ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौअन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥254॥4782॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

दौला की गुजराति मै बसत सु लोक अपार ॥
चारि बरन तिह ठा रहै ऊच नीच सरदार ॥१॥

चौपई ॥

मती लहौर तहा त्रिय सुनी ॥
छत्रानी बुधि बहु बिधि गुनी ॥
एक पुरख तब ताहि बरत भयो ॥
अनिक भात के भोग करत भयो ॥२॥
तिह वहु छाडि पिता ग्रिह आयो ॥
और ठौर कह आप सिधायो ॥
मलक नाम तिह के घर रहा ॥
केल करन ता सौ त्रिय चहा ॥३॥
अड़िल ॥
भाति भाति ता सौ त्रिय भोगु कमाइयो ॥
लपटि लपटि तिह साथ अधिक सुख पाइयो ॥
जब तिह रहा अधान तबै त्रिय यौ कियो ॥
हो जहा हुतो तिह नाथ तही को मगु लियो ॥४॥

चौपई ॥

बिनु पिय मै अति ही दुख पायो ॥
ता ते मुर तन अधिक अकुलायो ॥
बिनु पूछे ता ते मै आई ॥
तुम बिनु मो ते रहियो न जाई ॥५॥
त्रिय आए पति अति सुख पायो ॥
भाति भाति ता सौ लपटायो ॥
तब ता सौ ऐसे तिन कहा ॥
तुहि ते गरभ नाथ मुहि रहा ॥६॥
तुमरे पीय प्रेम पै पागी ॥
इसक तिहारे सौ अनुरागी ॥
तिह ठा मो ते रहा न गयो ॥
ता ते तोर मिलन पथ लयो ॥७॥
अब जो कहो करौं मै सोई ॥
महाराज कह जिय सुख होई ॥
काढि क्रिपान चहौ तौ मारो ॥
आपन ते मुहि जुदा न डारो ॥८॥
यह जड़ बचन सुनत हरखयो ॥

भेद अभेद न पावत भयो ॥
या कह हम ते रहा अधाना ॥
मन महि ऐसे किया प्रमाना ॥९॥

दोहरा ॥

नव मासन बीते सुता जनत भई त्रिय सोइ ॥
जड़ अपनी दुहिता लखी भेद न पायो कोइ ॥१०॥१॥

CHARITAR २५५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥255॥4792॥अफजूं॥

चौपई ॥

भनियत एक न्रिपति की दारा ॥
चित्र मंजरी रूप अपारा ॥
कान न सुनी न आंखिन हेरी ॥
जैसी प्रभा कुअरि तिह केरी ॥१॥
अघट सिंघ तिह ठा को राजा ॥
जा सम और न बिधना साजा ॥
वा की प्रभा वही कह सोही ॥
लखि दुति सुरी आसुरी मोही ॥२॥

दोहरा ॥

नरी नागनी किंन्रनी सुरी आसुरी बारि ॥
अधिक रूप तिह राइ को अटकत भई निहार ॥३॥

चौपई ॥

आखेटक सौ ता को अति हित ॥
राज साज महि राखत नहि चित ॥
जात हुतो बन म्रिग उठि धावा ॥
ता पाछे तिन तुरै धवावा ॥४॥
जात जात जोजन बहु गयो ॥
पाछा तजत न म्रिग न्रिप भयो ॥
महा गहिर बन तह इक लहा ॥
घोर भयानक जात न कहा ॥५॥
साल तमाल जहा द्रुम भारे ॥
निंबू कदम सु बट जटियारे ॥
नारंजी मीठा बहु लगे ॥
बिबिध प्रकार रसन सौ पगे ॥६॥
पीपर तार खजूरैं जहा ॥
स्रीफल साल सिरारी तहा ॥
जुगल जामनूं जहा बिराजैं ॥
नरियर नार नारंगी राजैं ॥७॥

दोहरा ॥

नरगिस और गुलाब के फूल फुले जिह ठौर ॥
नंदन बन सौ निरखियै जा सम कहूं न और ॥८॥

चौपई ॥

सरिता बहुत बहत जिह बन मै ॥
झरना चलत लगत सुख मन मै ॥
सोभा अधिक न बरनी जावै ॥
निरखे ही आभा बनि आवै ॥९ ॥
तह ही जात भया सो राई ॥
जा की प्रभा न बरनी जाई ॥
मरत भयो म्रिगहि लै तहा ॥
देव दैंत जा निरखत जहा ॥१० ॥

दोहरा ॥

देव दानवन की सुता जिह बन सेवत नित्य ॥
सदा बसायो राख ही ताहि चित ज्यो मित्रय ॥११ ॥

चौपई ॥

जछ गंध्रबी अति उनमदा ॥
सेवत हैं तिह बन कौ सदा ॥
नरी नागनी कौ चित ल्यावै ॥
नटी न्रितका कौन गनावै ॥१२ ॥

दोहरा ॥

तिन की दुति तिन ही बनी को कबि सकत बताइ ॥
लखे लगन लागी रहै पलक न जोरी जाइ ॥१३ ॥

चौपई ॥

राज कुअर तिन कौ जब लहा ॥
मन महि अतिहि बिसम ह्वै रहा ॥
चित भरि चौप डीठ इमि जोरी ॥
जनुक चंद्र के साथ चकोरी ॥१४ ॥

दोहरा ॥

या राजा को रूप लखि अटकि रही वै बाल ॥
ललना के लोइन निरखि सभ ही भई गुलाल ॥१५ ॥

चौपई ॥

अटकत भई लाल लखि बाला ॥
जैसे मनि लालन की माला ॥
कहियो चहत कछु तऊ लजावै ॥
चलि चलि तीर कुअर के आवै ॥१६ ॥
कै कुरबान लला मन डारै ॥
भूखन चीर पटंबर वारै ॥
फूल पान कोऊ लै आवै ॥
भाति भाति सौ गीतन गावै ॥१७ ॥

दोहरा ॥

निरखि न्रिपत की अति प्रभा रीझ रही सभ नारि ॥

भूखन चीर पटंब्र सभ देइ छिनिक महि वार ॥१८॥
जनु कुरंगनि नाद धुनि रीझि रही सुनि कान ॥
त्यों अबला बेधी सकल बधी बिरह के बान ॥१९॥
सभ रीझी लखि राइ छबि दितियादिति कुमारि ॥
किंन्रनि जछ भुजंगजा मोहि रही सभ नारि ॥२०॥

चौपई ॥

सभ अबला इह भाति बिचारै ॥
जोर डीठ न्रिप ओर निहारै ॥
कै हम आजु इही कर बरिहै ॥
नातर इहीं छेत्र पर मरिहै ॥२१॥
कहत दैतजा हम ही बरि हैं ॥
देव सुता भाखै हम करि हैं ॥
जछ किंन्रजा कहि हम लै हैं ॥
नातर पिय कारन जिय दै हैं ॥२२॥

दोहरा ॥

जछ गंध्रबी किंन्रनी लखि छबि गई बिकाइ ॥
सुरी आसुरी नागनी नैनन रही लगाइ ॥२३॥

चौपई ॥

इक त्रिय रूप बिसन को धरा ॥
एकन रूप ब्रहमा को करा ॥
इक त्रिय भेस रुद्र को धारियो ॥
इकन धरम को रूप सुधारियो ॥२४॥
एकै भेस इंद्र को किया ॥
एकन रूप सूरज को लिया ॥
एकन भेस चंद्र कौ धारियो ॥
मनहु मदन कौ मान उतारियो ॥२५॥
अड़िल ॥
सात कुमारी चली भेस इह धारि कै ॥
वा राजा कह दरसन दीया सुधारि कै ॥
सात सुता राजा हमरी ए बरु अबै ॥
हो राज पाट पुनि करहु जीति खल दल सभै ॥२६॥

चौपई ॥

जब राजै उन रूप निहरा ॥
सटपटाइ पाइन पर परा ॥
धक धक अधिक ह्रिदै तिह भई ॥
चटपट सकल बिसर सुधि गई ॥२७॥
धीरज धरा जबै सुधि आई ॥
पुनि पाइन लपटाना धाई ॥
धंनि धंनि भाग हमारे भए ॥
सभ देवन दरसन मुहि दए ॥२८॥

दोहरा ॥

पापी ते धरमी भयो चरन तिहारे लाग ॥
रंक हुतो राजा भयो धंन्य हमारे भाग ॥२९॥

चौपई ॥

मै सुई करौ जु तुम मुहि भाखौ ॥
चरनन ध्यान तिहारे राखौ ॥
नाथ सनाथ अनाथहि किया ॥
क्रिपा करी दरसन मुहि दिया ॥३०॥
यौ बच सुनि लोपित ते भई ॥
ह्वै कर सात कुमारी गई ॥
चलि करि तीर न्रिपति के आई ॥
कहियो आजु मुहि बरो इहाई ॥३१॥

दोहरा ॥

यौ जब तिन उचरे बचन कछु न लहा अग्यान ॥
तिह कह तुरत बरत भयो बच करि सुरन प्रमान ॥३२॥

चौपई ॥

तब तिह ठौर बधाई बाजी ॥
सुरी आसुरी जहा बिराजी ॥
जछ किंन्रजा जहा सुहावै ॥
उरगि गंध्रबी गीतन गावै ॥३३॥

दोहरा ॥

इह छल सौ राजा छला सपत कुअरि तिह ठौर ॥
यह प्रसंग पूरन भयो चली कथा तब और ॥३४॥
भाति भाति तिह सुंदरी न्रिप कह भज्यो सुधार ॥
भाति भाति क्रीड़त भई कोक बिचार बिचार ॥३५॥

CHARITAR २५६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥256॥4827॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

नील केतु राजा इक भारो ॥
पुहपवती जिह नगरुजियारो ॥
मंञ्रि बचित्र तवन की दारा ॥
रति पति की त्रिय को अवतारा ॥१॥
स्री अलिगुंज मती दुहिता तिह ॥
छबि जीती ससि पुंजन की जिह ॥
तेज अपार कहा नहि जाई ॥
आपु हाथ जगदीस बनाई ॥२॥
स्री मनि तिलकु कुअर इक राजा ॥
राज पाट वाही कह छाजा ॥
अप्रमान दुति कही न जाई ॥
लखि छबि भान रहत उरझाई ॥३॥

बिजै छंद ॥

स्री अलिगुंज मती सखि पुंज लीए इक कुंज बिहारन आई ॥

रूप अलोक बिलोकि महीप को सोक निवारि रही उरझाई ॥
देखि प्रभा सकुचै जिय मै तऊ जोरि रही द्रिग बाधि ढिठाई ॥
धाम गई मन हुआं ही रहियो जनु जूप हराइ जुआरी की न्रयाई ॥४॥
धामन जाइ सखी इक सुंदरी नैन की सैनन तीर बुलाई ॥
काढ दयो अति ही धन वा कह भाति अनेकन सौ समुझाई ॥
पाइ परी मनुहारि करी भुज हाथ धरी बहुतै घिघिआई ॥
मीत मिलाइ कि मोहु न पाइ है जिय जु हुती कहि तोहि सुनाई ॥५॥
जोगिन है बसिहौ बन मै सखि भूखन छोरि बिभूति चड़ै हौ ॥
अंगन मै सजिहौ भगवे पट हाथ बिखै गड़ूआ गहि लैहौ ॥
नैनन की पुतरीन के पत्रन बाकी बिलोकनि मागि अघैहौ ॥
देहि छुटो क्योन न आयु घटो पिय ऐसी घटान मै जान न दै हौ ॥६॥
एकतु बोलत मोर करोरिन दूसरे कोकिल काकु हकारैं ॥
दादर दाहत है हिय कौ अरु पानी परै छित मेघ फुहारै ॥
झिंग्र करै झरना उर माझ क्रिपान कि बिदलता चमकारै ॥
प्रान बचे इह कारन ते पिय आस लगै नहि आज पधारै ॥७॥
अड़िल ॥
अति ब्याकुल जब कुअरि सुघरि सहचरि लही ॥
कान लागि को बात बिहसि ऐसे कही ॥
चतुरि दूतिका तह इक अबै पठाइयै ॥
हो स्री मनि तिलक कुअर कौ भेद मंगाइयै ॥८॥
सुनत मनोहर बात अधिक मीठी लगी ॥
बिरहि अगनि की ज्वाल कुअरि के जिय जगी ॥
चतुरि सखी इक बोलि पठाई मीत तन ॥
हो जिय जानी मुहि राखि जानि पिय प्रान धन ॥९॥

दोहरा ॥

सुनत बचन सहचरि चतुरि तहा पहूची जाइ ॥
जह मनि तिलक न्रिपति चड़ा आखेटकहि बनाइ ॥१०॥

चौपई ॥

सहचरि तहा पहूंचित भई ॥
न्रिप आगमन जहा सुनि लई ॥
अंग अंग सुभ सजे सिंगारा ॥
जनु निसपति सौभित जुत तारा ॥११॥
सीस फूल सिर पर त्रिय झारा ॥
करन फूल दुहूं करन सु धारा ॥
मोतिन की माला को धरा ॥
मोतिन ही सो मागहि भरा ॥१२॥
सभ भूखन मोतिन के धारे ॥
जिन महि बज्र लाल गुहि डारे ॥
नील हरित मनि प्रोई भली ॥
जनु ते हसि उडगन कह चली ॥१३॥
जब राजै वा त्रिय को लहा ॥
मन महि अधिक चक्रित ह्वै रहा ॥
देव अदेव जछ गंध्रबजा ॥
नरी नागनी सुरी परीजा ॥१४॥

दोहरा ॥

न्रिप चित्रयो इह पूछीयै क्यो आई इह देस ॥

सूर सुता कै चंद्रजा कै दुहिता अलिकेस ॥१५॥

चौपई ॥

चलियो चलियो ता के तट गयो ॥
लखि दुति तिह अति रीझत भयो ॥
रूप निरखि रहियो उरझाई ॥
कवन देव दानो इह जाई ॥१६॥
मोतिन माल बाल तिन लई ॥
जिह भीतरि पतिया गुहि गई ॥
कहियो कि जैसी मुझहि निहारहु ॥
तैसियै तिह न्रिप सहस बिचारहु ॥१७॥

दोहरा ॥

न्रिप बर बाल बिलोकि छबि मोहि रहा सरबंग ॥
सुधि ग्रिह की बिसरी सभै चलत भयो तिह संग ॥१८॥

चौपई ॥

लाल माल कौ बहुरि निकारा ॥
पतिया छोरि बाचि सिर झारा ॥
जो सरूप दीयो बिधि या के ॥
तैसी सुनी सात सत वा के ॥१९॥
किह बिधि वा को रूप निहारौ ॥
सफल जनम करि तदिन बिचारौ ॥
जो ऐसी भेटन कह पाऊ ॥
इन रानिन फिरि मुख न दिखाऊ ॥२०॥
वही बाट ते उही सिधायो ॥
तवनि तरुनि कह रथहि चड़ायो ॥
चलत चलत आवत भयो तहा ॥
अबला मगहि निहारत जहा ॥२१॥

दोहरा ॥

राज साज सभ त्यागि करि भेख अतिथ बनाइ ॥
तवनि झरोखा के तरे बैठियो धूंआ लाइ ॥२२॥

चौपई ॥

राज सुता भिछा लै आवै ॥
ता कह अपने हाथ जिवावै ॥
निसि कह लोग जबै स्वै जाही ॥
लपटि लपटि दोऊ भोग कमाही ॥२३॥
इह बिधि कुअरि अधिक सुख लीए ॥
सभ ही लोग बिस्वासित कीए ॥
अतिथ लोग कहि ताहि बखानै ॥
राजा करि कोऊ न पछानै ॥२४॥
इक दिन कुअरि पिता पहि गई ॥
बचन कठोर बखानत भई ॥
कोप बहुत राजा तब भयो ॥
बन बासा दुहिता कह दयो ॥२५॥
सुन बनबास प्रगटि अति रोवै ॥

चित के बिखै सकल दुख खोवै ॥
सिधि काज मोरा प्रभु कीना ॥
तात हमै बन बासा दीना ॥२६॥
सिवकन संग इमि राज उचारो ॥
एह कंन्या कह बेगि निकारो ॥
जह बन होइ घोर बिकराला ॥
तिह इह छड आवहु ततकाला ॥२७॥
लै सेवक तित संग सिधाए ॥
ता को बन भीतर तजि आए ॥
वह राजा आवत तह भयो ॥
तही तवनि ते आसन लयो ॥२८॥
द्रिड़ रति प्रथम तवन सौ करी ॥
भाति भाति कै भोगन भरी ॥
है आरूड़त पुनि तिह कीना ॥
नगर अपन को मारग लीना ॥२९॥

CHARITAR २५७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥257॥4856॥अफजूं॥*

चौपई ॥

हंसा धुज राजा इक सुनियत ॥
बल प्रताप जिह अति जग गुनियत ॥
केसोतमा धाम तिह नारी ॥
जा सम सुनी न नैन निहारी ॥१॥
हंस मती तिह ग्रिह दुहिता इक ॥
पड़ी ब्याकरन कोक सासत्रनिक ॥
ता सम अवर न कोऊ जग मै ॥
थकित रहित निरखत रवि मग मै ॥२॥
अड़िल ॥
अति सुंदरि वह बाल जगत महि जानियै ॥
जिह सम अवर सुंदरी कहूं न बखानियै ॥
जोबन जेब अधिक ता के तन राजई ॥
हो निरखि चंद्र अरु सूर मदन छबि लाजई ॥३॥
रूप कुअर सुकुमार जबै अबला लहा ॥
जा सम निरखा कहूं न कहूं किनहूं कहा ॥
जब वह राज सभा महि बैठत आइ कै ॥
हो सभ इसत्रिन के चित कह लेत चुराइ कै ॥४॥

चौपई ॥

राज सुता इक सखी बुलाई ॥
सिखै कुअर के पास पठाई ॥
कोटि जतन करि तिह ह्यां ल्यावहु ॥
मुख मागहु जोई सोई पावहो ॥५॥
अड़िल ॥
ब्याकुल राज कुअरि जबै सहचरी निहारी ॥
मति न कुअरि मरि जाइ इहै जिय माहि बिचारी ॥
चली सकल डर डारि पहूची जाइ तह ॥

हो बैठो सेज सवारि तवन को मित्र जह ॥६॥

चौपई ॥

ज्यों त्यों कर ता कौ तह ल्याई ॥
बात मिलन की तिह न जताई ॥
तब वहु धाम कुअरि के आयो ॥
राज सुता निरखत सुख पायो ॥७॥
ता कौ कही आनि मो कौ भजु ॥
लाज साज सभ ही अब ही तजु ॥
मिथन भेद जब मीत पछाना ॥
धरम छूटन ते अधिक डराना ॥८॥

दोहरा ॥

सुंदरि अधिक कहाइ जग जनम राज ग्रिह पाइ ॥
ढीठ रमियो मो सो चहै अजहूं न निलज लजाइ ॥९॥

चौपई ॥

जब तुहि मै निरखत छबि भई ॥
लोक लाज तब ही तज दई ॥
धरम करम मै कछू न जाना ॥
तव दुति लखि मुर जीय बिकाना ॥१०॥
सुन तरनी मै तोहि न भजौ ॥
धरम आपनो कबहूं न तजौ ॥
जब ते क्रिपानंद मुहि जायो ॥
इहै मिस्र उपदेस बतायो ॥११॥

दोहरा ॥

पर नारी की सेज पर भूलि न दीजहु पाइ ॥
काम भोग नहि कीजियहु ता सो रुचि उपजाइ ॥१२॥

चौपई ॥

अब तुमरे मै करम निहारे ॥
कहि हौ राजा पास सवारे ॥
तोहि सदन ते पकरि मंगै हौ ॥
अनिक भाति सासना दिवैहौ ॥१३॥

दोहरा ॥

परदा तुमरो फारिहौ तुमरे पिता हजूरि ॥
तो कह देस निकारि हौ कूक्रिन की ज्यों कूर ॥१४॥

चौपई ॥

जरि बरि गई नामु कुतिया सुनि ॥
कोप किया अति ही माथो धुनि ॥
प्रथम इसी कह अबै संघारो ॥
बहुरि मिस्र या के कहु मारो ॥१५॥
जिन तहि यह उपदेस द्रिड़ायो ॥
ता ते मो सौ न भोग कमायो ॥

कै जड़ आनि अबै मुहि भजो ॥
नातर आस प्रान की तजो ॥१६॥
मूरख तिह रति दान न दीया ॥
ग्रिह अपने का मारग लीया ॥
अनिक भाति तिन कीया धिकारा ॥
पाइन परी लात सौ मारा ॥१७॥
राज सुता क्रुधित अति भई ॥
इह जड़ मुहि रति दान न दई ॥
प्रथम पकरि करि याहि संघारो ॥
बहुरि मिस्र या कै कह मारो ॥१८॥
अड़िल ॥
तमकि तेग को तब तिह घाइ प्रहारियो ॥
ताहि पुरख कह मारि ठौर हीं डारियो ॥
ऐच तवन की लोथि दई तर डारि कै ॥
हो ता पर रही बैठि करि आसन मारि कै ॥१९॥

दोहरा ॥

जपमाला कर महि गही बैठी आसन मारि ॥
पठै सहचरी पिता प्रति लीना निकट हकारि ॥२०॥

चौपई ॥

हंस केतु तब ताहि सिधाना ॥
निरखि सुता तर मित्रक डराना ॥
कहसि कुअरि इह कसि तुहि करा ॥
बिनुपराध या को जिय हरा ॥२१॥
चिंतामनि मुहि मंत्र सिखायो ॥
बहु बिधि मिस्र उपदेस द्रिड़ायो ॥
जौ इह रूप कुअर तै मरि है ॥
तब सभ काज तिहारौ सरि है ॥२२॥
ता ते मै या को गहि मारा ॥
सुनहु पिता तुम बचन हमारा ॥
साधो मंत्र बैठ या पर मै ॥
जो जानिहि सो करहु अबै तै ॥२३॥
हंस केतु न्रिप कोप भरा तब ॥
बचन सुता कौ स्रवन सुना जब ॥
ह्यां ल्यावहुां तिह मिस्र पकरि कै ॥
जो ऐसे गयो मंत्र सिखरि कै ॥२४॥
सुनि भ्रित बचन उताइल धाए ॥
तिह मिस्रहि न्रिप पहि गहि ल्याए ॥
ता कह अधिक जातना दिया ॥
करम चंडार बिप्र है किया ॥२५॥
सुनि बच मिस्र अचंभै रहा ॥
त्राहि त्राहि राजा तन कहा ॥
मै प्रभु करम न ऐसा किया ॥
तव दुहिता कह मंत्र न दिया ॥२६॥
तब लगि राज कुअरि तह आई ॥
दिजबर के पाइन लपटाई ॥
तुम सु मंत्र जो हमहि सिखायो ॥
ताही बिधि मै जाप कमायो ॥२७॥

अड़िल ॥
तव आइसु हम मानि मनुछ कह मारियो ॥
ता पाछे चिंतामनि मंत्र उचारियो ॥
चारि पहर निसि जपा सु सिधि न कछु भयो ॥
हो ता ते हम रिसि ठानि सु कहि न्रिप प्रति दयो ॥२८॥

चौपई ॥

अब किह काज मुकरि तै गयो ॥
तब चिंतामन हमहि द्रिड़यो ॥
अब क्यो न कहत न्रिपति के तीरा ॥
साच कहत कस लागत पीरा ॥२९॥
मिस्र चक्रित चहूं ओर निहारै ॥
कहा भयो जगदीस संभारै ॥
करि उपदेस बहुत बिधि हारा ॥
भेद अभेद न्रिप कछु न बिचारा ॥३०॥

दोहरा ॥

फासी तिह मिस्रहि दिया हंस केतु रिसि मानि ॥
हंस मती कह जिह सिख्यो ऐसो मंत्र बिधान ॥३१॥
जिह न भजी तिह घै हना इह छल मिस्रहि मारि ॥
इह बिधि न्रिप क्रुधित कीया हंस मती बर नारि ॥३२॥

CHARITAR २५८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥258॥4888॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

रुद्र केतु राजा हुतो रासट्र देस को नाहि ॥
जा सम और नरेस नहि दुतिय प्रिथी तल माहि ॥१॥

चौपई ॥

स्री म्रिगराज कला ता की त्रिय ॥
बसत न्रिपति के जिह अंतर जिय ॥
जा के रूप तुलि नहि कोऊ ॥
एकै घड़ी बिधाता सोऊ ॥२॥

दोहरा ॥

दोइ पुत्र ता ते भए अति रूप की रासि ॥
तीनि भवन महि जानियत जा को तेज रु त्रास ॥३॥
अड़िल ॥
ब्रिखभ केतु सुभ नामु प्रथम को जानियै ॥
ब्रयाघ्र केतु दूसर को नाम प्रमानियै ॥
रूपवान बलवान बिदित जग मै भए ॥
हो जनुक सूर ससि प्रगट दुतिय तिह पुर वए ॥४॥

चौपई ॥

जब जोबन झमका तिन के तन ॥
जात भयो जब ही लरिकापन ॥
अरि अनेक बहु बिधन संघारे ॥
चाकर प्रजा अपने पारे ॥५॥

दोहरा ॥

भाति भाति के देस लै बहु जीते अरि राज ॥
सभहिन सिर सोभित भए दिनमनि ज्यो नर राज ॥६॥
रूप कुअर घटि प्रथम मै दूसर रूप अपार ॥
देस देस ते आनि त्रिय सेवत जाहि हजार ॥७॥
सोरठा ॥
ऐसो किसी न देस जैसो लहु सुंदर कुअर ॥
कै दूसरो दिनेस कै निसेस अलिकेस यहि ॥८॥

चौपई ॥

ता की मात पुत्र की लखि छबि ॥
जात भई सुधि सात तवन सब ॥
रम्यो चहत लहु सुत के संगा ॥
रानी ब्यापी अधिक अनंगा ॥९॥
तिह तब चहा नाथ कह मरियै ॥
पुनि टीका को पुत्र संघरियै ॥
कवन चरित्र कह कहा बिचारो ॥
लहु सिर पुत्र छत्र कह ढारो ॥१०॥
एक दिवस सिव धुजहि बुलायो ॥
मदरा सो करि मत सुवायो ॥
पुनि टीका को पूत हकारा ॥
अधिक मत ताहू कह प्यारा ॥११॥

दोहरा ॥

पति सुत प्रथम सुवाइ करि काढि लिया असि हाथ ॥
पूत हेत मारा तिनै हाथ आपने साथ ॥१२॥

चौपई ॥

मारि पूत पति रोइ पुकारा ॥
पति सुत सुत पति मारि संघारा ॥
मद के महा मत ए भए ॥
आपुस मै कोपित तन तए ॥१३॥
उदित दोऊ आहव कह भए ॥
काढि क्रिपान कोप तन तए ॥
असि लै पितु सुत के सिर झारा ॥
पूत काढि पितु सीस प्रहारा ॥१४॥
मै ठाढी इह चरित निहारा ॥
फूटि न गए नैन करतारा ॥
दाव बचाइ न इन ते अयो ॥
ता ते काल दुहूंन के भयो ॥१५॥
अब हौ दैव कहौ का करौं ॥
उर महि मारि कटारी मरौं ॥
बान प्रसथ ह्वै बनहि सिधै हौं ॥

लहु सुत के सिर छत्र ढुरै हौं ॥१६॥

प्रथम पूत पति को बध कीना ॥

बहुरि राज लहु सुत कह दीना ॥

बहुरौ भेख अतिथ को धारी ॥

पंथ उतरा ओर सिधारी ॥१७॥

दोहरा ॥

तहा जाइ तपसा करी सिव की बिबिध प्रकार ॥

भूत राट रीझत भए निरखि निठुरता नारि ॥१८॥

चौपई ॥

बरंब्रयूह पुत्री है कहा ॥

जो तव ब्यापि ह्रिदै महि रहा ॥

देहु त पिता इहै बर पाऊ ॥

बिरधा ते तरुनी ह्वै जाऊ ॥१९॥

दोहरा ॥

बिरधा ते तरुनी भई बरु दीना त्रिपरारि ॥

तुचा पुरातन छाडि करि ज्यो अहि कुंचुर डारि ॥२०॥

चौपई ॥

बिरधा ते तरुनी जब भई ॥

तब चलि तिसी नगर कह गई ॥

जह खेलत सुत चड़ा सिकारा ॥

मारे रीछ रोझ झंखारा ॥२१॥

एक म्रिगी का भेस धरा तब ॥

तन के बसत्र छोड सुंदर सब ॥

खेलत हुतो अखिट सुत जहा ॥

हरनी ह्वै निकसत भी तहा ॥२२॥

ता पाछे तिह सुत है डारा ॥

संगी किसू न ओर निहारा ॥

एकल जात दूरि भयो तहा ॥

थो बन घोर भयानक जहा ॥२३॥

साल तमाल जहा द्रुम भारे ॥

निंबू कदम सु बट जटियारे ॥

सीबर तार खजूरे भारी ॥

निज हाथन जनु ईस सुधारी ॥२४॥

म्रिगी जाइ तह गई भुलाई ॥

उतमागना भेस बनाई ॥

आनि अपन तिह रूप दिखारा ॥

राज कुअर मोहित करि डारा ॥२५॥

अड़िल ॥

सुरी आसुरी किंन्रनि कवन बिचारियै ॥

नरी नागनी नगनी को जिय धारियै ॥

गंधरबी अपसरा कवन इह जानियै ॥

हो रवी ससी बासवी पारबती मानियै ॥२६॥

राज कुमार निरख तह रहा लुभाइ कै ॥

पूछत भयो चलि ताहि तीर तिह जाइ कै ॥

नरी नागनी नगनी इन ते कवनि तुय ॥
हो कवन साचु कहि कहियो सु ता तै एस भुअ ॥२७॥

दोहरा ॥

मन बच क्रम मै तोरि छबि निरखत गयो लुभाइ ॥
अब ही ह्वै अपनी बसहु धाम हमारे आइ ॥२८॥
अड़िल ॥
एक आध बिर नाहि नाहि तिन भाखियो ॥
लगी निगोडी लगन जात नहि आखियो ॥
अंत कुअर जो कहा मानि सोई लियो ॥
हो पति सुत प्रथम संघारि लहु सुत छलि पिय कियो ॥२९॥

CHARITAR २५९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनासठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥259॥4917॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

मसत करन इक न्रिपति जगिस्वी ॥
तेज भान बलवान तपस्वी ॥
स्री कजराछ मती तिह दारा ॥
पारबती को जनु अवतारा ॥१॥
अड़िल ॥
मसत करन न्रिप सिव पूजा नितप्रति करै ॥
भाति अनिक के ध्यान जानि गुर पगु परै ॥
रैनि दिवस तपसा के बिखै बितावई ॥
हो रानी के ग्रिह भूलि न कब ही आवई ॥२॥
रानी एक पुरख सौ अति हित ठानि कै ॥
रमत भई तिह संग अधिक रुचि मानि कै ॥
सोत हुती सुपना महि सिव दरसन दियो ॥
हो बचन आपने मुख ते हसि मुहि यौ कियो ॥३॥
सिव बाच ॥
इक गहिरे बन बिच तुम एकल आइये ॥
करि कै पूजा मोरी मोहि रिझाइयो ॥
जोति आपने सौ तव जोति मिलाइ हो ॥
हो तुहि कह जीवत मुकति सु जगति दिखाइ हौ ॥४॥
ता ते तव आग्या लै पति तहि जाइ हौ ॥
करि कै सिव की पूजा अधिक रिझाइ हौ ॥
मो कह जीवत मुकति सदा सिव करहिंगे ॥
हो सपत मात्र कुल सपत पितर कुल तरहिंगे ॥५॥

दोहरा ॥

भे न्रिप की आग्या गई लै सिव जू को नाम ॥
जियत मुकति भी पति लहा बसी जार दे धाम ॥६॥

CHARITAR २६० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ साठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥260॥4923॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

अहि धुज एक रहै राजा बर ॥
जनुक दुतिय जग वयो प्रभाकर ॥
स्री मासूक मती तिह रानी ॥
रवी चंद्रवी कै इंद्रानी ॥१॥
ता के पुत्र होत ग्रिह नाही ॥
इह चिंता त्रिय के जिय माही ॥
राजा ते जिय महि डर पावै ॥
बहु पुरखन संग केल कमावै ॥२॥
अड़िल ॥
एक दिवस सुंदरी झरोखा बैठि बर ॥
महिखन को पालक तह निकसियो आइ करि ॥
मेहीवाल सोहनी मुख ते गावतो ॥
हो सभ नारिन के चित कौ चला चुरावतो ॥३॥

दोहरा ॥

सुनि रानी स्रुत नाद धुनि मार करी बिसंभार ॥
रमो महिख पालक भए इह बिध किया बिचार ॥४॥

चौपई ॥

महिख चरावत थो वहु जहा ॥
रानी गई रात्रि कह तहा ॥
द्वैक घरी पाछे पति जागा ॥
असि गहि कर पाछे त्रिय लागा ॥५॥
सखी हुती इक तहा स्यानी ॥
तिन इह बात सकल जिय जानी ॥
जौ ता कौ पति ऐस लहै है ॥
तौ ग्रिह जम के दुहूं पठै है ॥६॥
आगू आपि तहा उठि गई ॥
रानी जहा मिलत तिह भई ॥
ऐचि अंग तिह तबै जगाया ॥
सभ ब्रितात कहि ताहि सुनाया ॥७॥
अड़िल ॥
त्रास समुंद के बिखै बूडि तरुनी गई ॥
गरे पगरिया डारि तिसै मारत भई ॥
एक बडे द्रुम संग दयो लटकाइ कै ॥
हो बसत्र उतारि तर न्रहात भई तह जाइ कै ॥८॥

चौपई ॥

अहि धुज राज तहा तब आयो ॥
न्रहात म्रितक तर त्रिय लखि पायो ॥
पूछत पकरि तबै तिह भयो ॥
जरि बरि आठ टूक ह्वै गयो ॥९॥

दोहरा ॥

निजु धामन कह छोरि कै क्यो आई इह ठौर ॥
साचु कहै तौ छाडि हौ हनो कहै कछु और ॥१०॥

चौपई ॥

तब त्रिय जोरि दुहूं कर लिआ ॥
पति पाइनि तर मसतकि दिया ॥
प्रथम सुनहु पिय बैन हमारे ॥
बहुरि करहु जो ह्रिदै तिहारे ॥११॥
मोरे बढी अधिक चिंता चित ॥
ध्रयान धरो स्रीपति कौ नितिप्रति ॥
पूत देहु प्रभु धाम हमारे ॥
पल पल बलि बलि जाउ तिहारे ॥१२॥
अड़िल ॥
पुत्र हेत मै ह्यां तसकर तर आइ कै ॥
मजन कीया बनाइ अधिक सुख पाइ कै ॥
साच कहा पिय तोहि जान जिय लीजियै ॥
हो अवरु न या ते बात जु जान सु कीजीयै ॥१३॥

दोहरा ॥

सुनि राजा ऐसो बचन जिय महि भयो प्रसंन्य ॥
जो त्रिय ह्वै अस हठ किया धरनी तल महि धंन्य ॥१४॥

चौपई ॥

जो त्रिय मो पै कहा बिचारी ॥
साच वहै मै नैन निहारी ॥
अस चरित्र सुत हित जिन किया ॥
धंनि धंनि कुअरि तिहारो हिया ॥१५॥

दोहरा ॥

निरसंदेह तुमरे सदन ह्वै है पूत अपार ॥
हठी जपी तपसी सती सूरबीर सु कुमार ॥१६॥
अड़िल ॥
ताहि भोगि फासी सौ बहुरि संघारियो ॥
करि कै न्रिपहि चरित्र इह भाति दिखारियो ॥
मूड़ प्रफुलित भयो न कछु ता कौ कहा ॥
हो धंनि धंनि कहि नारि मगन ह्वै मन रहा ॥१७॥

CHARITAR २६१ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥261॥4940॥अफजूं॥

अड़िल ॥
किलमाकन के देस इंद्र धुज न्रिपति बर ॥
स्री किलमाक मती रानी जिह बसत घर ॥
पुन मासूक मती दुहिता ता कै भई ॥
हो जनुक चंद्र की कला दुतिय जग मै वई ॥१॥
सौदा हित सौदागर तह इक आइयो ॥
जनु ससि को अवितार मदन उपजाइयो ॥
अधिक जुबन की जेब बिधातै दई तिह ॥
हो सुख पावत सुर असुर निहारे क्राति जिह ॥२॥
एक दिवस न्रिप सुता झरोखे आइ कै ॥

बैठत भी चित लगे सु बैस बनाइ कै ॥
साहु पुत्र तह आइ दिखाई दै गयो ॥
हो या माननि को मनहि मनो हरि लै गयो ॥३॥
राज कुअरि लखि रूप रही उरझाइ करि ॥
पठै सहचरी तहा बहुत धन द्रयाइ करि ॥
साहु सुतहि क्योहूं बिधि जो ह्यां ल्याइ है ॥
हो जो मागे मुहि तू सो अब ही पाइ है ॥४॥
सुनत कुअरि को बचन सखी तह जाइ कै ॥
मन भावत पिय या कह दिया मिलाइ कै ॥
चौरासी आसन सु बिबिध बिधि कै लीए ॥
हो चित के सोक संताप बिदा सभ कर दीए ॥५॥
छैल छैलनी छके न छोरत एक छिन ॥
जनुक नवौ निधि राक सु पाई आजु तिन ॥
चिंतातुर चित भई बिचार बिचारि कै ॥
हो सदा बसौ सुख साथ पियरवा यारि कै ॥६॥
भेख पुरख सहचरि करि दई पठाइ कै ॥
ता के पितु के पास यौ कहियहु जाइ कै ॥
बूडि मरा तव सुत हम आंखिन सौ लहा ॥
हो बहत नदी महि गयो न कर किनहूं गहा ॥७॥
साहु सुनत इह भाति उठा अकुलाइ कै ॥
सरिता तीर पुकारत आतुर जाइ कै ॥
लोटत लोटत भू पर इत ते उत गयो ॥
हो माल मताह लुटाइ अथित ह्वै जात भयो ॥८॥
वही सखी या पहि इह भाति उचारियो ॥
तव पितु ह्वै करि अतिथ सु बनहि पधारियो ॥
माल मताहि लुटाइ जात बन कौ भयो ॥
हो राज कुअरि के धाम सौपि तुम कह गयो ॥९॥
पितु ते भयो निरास रहत तिह ग्रिह भयो ॥
देस माल सुख पाइ बिसरि सभ ही गयो ॥
काज करत सोई भयो कुअरि जो तिह कहियो ॥
हो इह छल सेती छला सदा ता के रहियो ॥१०॥
अपनो धाम बिसारि कुअरि चित ते दयो ॥
बहुत काल सुख पाइ रहत तिह ग्रिह भयो ॥
भेद न दूजे कान किनूं नर जानियो ॥
हो साहु पुत्र सौ अधिक कुअरि रस ठानियो ॥११॥

CHARITAR २६२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बासठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥262॥4951॥अफजूं॥

चौपई ॥

अजैचंद पूरब की दिसि न्रिप ॥
अनिक भाति जीते जिन बहु रिप ॥
नागरमती नारी ता के घर ॥
रूपवान दुतिमान छटा बर ॥१॥
जुधकरन राजा को भ्राता ॥
कुंट चारहूं बिच बिख्याता ॥
अति ही रूप तवन को राजत ॥
जानु दिवाकरि दुतिय बिराजत ॥२॥

दोहरा ॥

अबला ता को रूप लखि अटिक रही मन माहि ॥
पति करि दिया बिसारि करि कछू रही सुधि नाहि ॥३॥

चौपई ॥

सखी हुती इक तहा स्यानी ॥
तिन यह बात सकल पहिचानी ॥
रनियहि भाखि तहा चलि गई ॥
सभ तिह बात बतावत भई ॥४॥
जुधकरन इह बात न मानी ॥
नागमती तब भई खिसानी ॥
जा महि मै अपना मन दिया ॥
उह जड़ हम मै चित न किया ॥५॥

दोहरा ॥

जौ इह हमरी सभ ब्रिथा कहि है काहू पास ॥
अजैचंद राजा अबै हम ते होइ उदास ॥६॥

चौपई ॥

तब पति और त्रियन हित कै है ॥
भूल न धाम हमारे ऐ है ॥
तब हौ काज कहौ का करि हौ ॥
बिरहा की पावक महि बरि हौ ॥७॥

दोहरा ॥

ता ते करो चरित्र कछु हनियै या कहु आज ॥
साम डारि या के इसै हनौ न जानहि राज ॥८॥

चौपई ॥

एक सखी कह कहि समझायो ॥
अधिक दरबु दै तहा पठायो ॥
जब आवत न्रिप कह लखि लीजौ ॥
तब मद पी गारी तिह दीजौ ॥९॥
अजैचंद तिह ठा जब आयो ॥
अपहि त्रिय बौरी ठहरायो ॥
भाति अनिक गारिन तिह दीयो ॥
कोपमान राजा कह कीयो ॥१०॥
न्रिप इह कहा अबै गहि लेहु ॥
डारि इसी धौलर ते देहु ॥
तब सखि भाज जात भी तहा ॥
जुधकरन को ग्रिह थो जहा ॥११॥
अधिक कोप रानी तब भई ॥
सैना को आग्या इम दई ॥
जिन न्रिप चोर डारि ग्रिह राखी ॥
ता को हनो आज यौ भाखी ॥१२॥

दोहरा ॥

यौ न्रिप हूं आग्या दई अति चित कोप बढाइ ॥
सखी सहित वहि मूड़ कौ अब ही देहु उडाइ ॥१३॥

चौपई ॥

आइसु दिया तोपखाना कौ ॥
इह घर पर छाडहु बाना कौ ॥
अब ही या कह देहु उडाई ॥
पुनि मुख हमहि दिखावहु आई ॥१४॥

दोहरा ॥

सुनि न्रिप के चाकर बचन तहा पहूंचे जाइ ॥
त्रिया चरित्र न बूझियो भ्राता दियो उडाइ ॥१५॥

चौपई ॥

त्रिया चरित्र किनहूं नहि जाना ॥
बिधना सिरजि बहुरि पछुताना ॥
सिव घर तजि काननहि सिधायो ॥
तऊ तरुनि को अंतु न पायो ॥१६॥

दोहरा ॥

इह छल सौ राजा छला जुधकरन कौ घाइ ॥
त्रिय चरित्र को मूड़ कछु भेव सका नहि पाइ ॥१७॥

CHARITAR २६३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तिरसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥263॥4968॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

न्रिपति बिचछ्न सैन के मती सुलछनि नारि ॥
दछनि को राजा रहै धन करि भरे भंडार ॥१॥

चौपई ॥

बिरह कुअरि ता के दुहिता इक ॥
पड़ी ब्याकरन कोक सासत्रनिक ॥
नाना बिधि की बिद्या धरै ॥
बहु पंडित उसतित जिह करै ॥२॥

दोहरा ॥

अधिक रूप तिह कुअरि को ब्रहम बनायो आपु ॥
ता सम सुंदरि थापि करि सका न दूसरि थापु ॥३॥
परी पदमनी पंनगी ता सम और न कोइ ॥
नरी न्रितकारी नटी दुतिय न वैसी होइ ॥४॥
हिंदुनि तुरकानी जिती सुरी आसुरी बारि ॥
खोजत जगत न पाइयत दूसर वैसी नारि ॥५॥
इंद्र लोक की अपछ्रा ताहि बिलोकनि जात ॥

निरखत रूप अघात नहि पलक न भूलि लगात ॥६ ॥

चौपई ॥

हेरि अपछरा तिह मुसकानी ॥
सखिन माझ इह भाति बखानी ॥
जैसी यह सुंदर जगि माही ॥
ऐसी अवर कुअरि कहूं नाही ॥७ ॥
साह परी वाच ॥
अड़िल ॥
जैसी यह सुंदरी न सुंदरि कहूं जग ॥
थकति रहत जिह रूप चराचर हेरि मग ॥
या सम रूप कुअर जो कतहूं पाईऐ ॥
हो करि कै क्रोरि उपाइ सु याहि रिझाइऐ ॥८ ॥

दोहरा ॥

परी सुनत ऐसे बचन सभन कहा सिर न्याइ ॥
या सम सुंदर पुरख इह दै है खोजि मिलाइ ॥९ ॥
अड़िल ॥
परी राज की परी सभाग्रया पाइ कै ॥
चलत भई सखि सहस सिंगार बनाइ कै ॥
खोजि फिरी सभ देस न सुंदर पाइयो ॥
हो एक हुतो रिखि तह तिन भेद बताइयो ॥१० ॥

चौपई ॥

इक रिखि थो कानन इक भीतर ॥
ता सम तपी न थो अवनी पर ॥
तिनिक अपछरा तहा निहारी ॥
क्रिपा जानि इह भाति उचारी ॥११ ॥

दोहरा ॥

को है री तू कह चली क्योन आई इह देस ॥
कै तू इसत्री इंद्र की कै अबला अलिकेस ॥१२ ॥

चौपई ॥

किह कारन ते तै ह्यां आई ॥
कहु कवनै किह काज पठाई ॥
साच कहे बिनु जान न दै हौ ॥
नातर स्राप अबै तुहि कै हौ ॥१३ ॥
अड़िल ॥
एक दिवस मुनि चली अपछरा धाइ कै ॥
निरखि कुअरि को रूप रही उरझाइ कै ॥
चित महि किया बिचार कुअर हूं पाइयै ॥
हो ऐसो सुंदर खोजि सु याहि मिलाइयै ॥१४ ॥

चौपई ॥

हम सी सखी सहस्रन सुंदरि ॥
पठै दई दसहूं दिसि मुनि बर ॥

खोजि थकी प्रीतम नहि पायो ॥
देस देस सभ हेरि गवायो ॥१५॥

दोहरा ॥

खोजि देस ब्याकुल भई आई तुमरे पास ॥
दीजै सुघर बताइ कहूं कारज आवहि रास ॥१६॥

चौपई ॥

ब्रहमा एक पुरख उपजायो ॥
न्रिप के धाम जनम तिन पायो ॥
सात समुंद्रन पार बसत सो ॥
को पहुचै तिह ल्याइ सकत सो ॥१७॥

दोहरा ॥

रिखि के इह बिधि बचन सुनि चलत भई सु कुमारि ॥
सपत सिंध के छिनिक महि जात भई उहि पार ॥१८॥

चौपई ॥

सुंदर सदन हुतो जह न्रिप बर ॥
जात भई सुंदरि ताहि घर ॥
जह न्रिप सुत आस्रम सुनि लीया ॥
गई तहा तिन बिलम न कीया ॥१९॥
लोकंजन डारत चख भई ॥
परगट हुती लोप ह्वै गई ॥
यह सभ ही को रूप निहारै ॥
या कौ कोऊ न पुरख बिचारै ॥२०॥
अड़िल ॥
सिंघ दिलीस धारि बसत्र बैठे जहा ॥
लोकंजन द्रिग डारि जात भी त्रिय तहा ॥
हेरि तवन की प्रभा रही उरझाइ करि ॥
हो सुधि या की गी भूलि रही ललचाइ करि ॥२१॥

चौपई ॥

यह सुधि ताहि बिसरि करि गई ॥
तिह पुर बसत बरख बहु भई ॥
कितक दिनन वा की सुधि आई ॥
मन महि तरुनी अधिक लजाई ॥२२॥
जौ यह बात परी सुनि पै है ॥
मो कह काढि स्वरग ते दै है ॥
ता ते या कौ करौ उपाई ॥
जा ते इह उहि देउ मिलाई ॥२३॥
आलय हुतो कुअर को जहा ॥
वा को चित्र लिखत भई तहा ॥
चित्र जबै तिन कुअर निहारा ॥
राज पाट सभ ही तजि डारा ॥२४॥
अड़िल ॥
मन मै भयो उदास राज को त्यागि कै ॥
रैनि दिवस तह बैठि रहत अनुरागि कै ॥

रोइ रोइ द्रिग नैनन रुहर बहावई ॥
हो कोटिन करै बिचार न ता कौ पावई ॥२५॥
नटी नाटकी न्रिपनी न्रितणि बखानियै ॥
नरी नागनी नगनी निजु त्रिय जानियै ॥
सिवी बासवी ससी कि रवि तन जई ॥
हो चेटक चित्र दिखाइ चतुरि चित लै गई ॥२६॥
लिख्यो चित्र इह ठौर बहुरि तिह ठा गई ॥
चित्र चतुरि के भवन बिखै लिखती भई ॥
प्रात कुअरि को जब तिन चित्र निहारियो ॥
हो राज पाट सभ साज तबै तजि डारियो ॥२७॥
निरखि कुअर को चित्र कुअरि अटकत भई ॥
राज पाट धन की सुधि सभ जिय ते गई ॥
बढी प्रेम की पीर बतावै कहो किह ॥
हो जो तिह सोक निवारि मिलावै आनि तिह ॥२८॥
मतवारे की भाति कुअरि बवरी भई ॥
खान पान की सुधि तब ही तजि करि दई ॥
हसि हसि कबहूं उठै कबै गुन गावई ॥
हो कबहूं रोवत दिन अरु रैनि बितावई ॥२९॥
दिन दिन पियरी होत कुअरि तन जावई ॥
अंतर पिय की पीर न प्रगट जतावई ॥
सात समुंदर पार पिया ता को रहै ॥
हो आनि मिलावै ताहि इतो दुख किह कहै ॥३०॥
अब कहो ब्रिथा कुअर की कछु सुनि लीजियै ॥
सुनहु सुघर चित लाइ स्रवन इत दीजियै ॥
रोत रोत निसु दिन सभ सजन बितावई ॥
हो परै न ता को हाथ चित्र उर लावई ॥३१॥

दोहरा ॥

इतै चाह उन की लगी उन कौ इन की चाह ॥
कहु कौने छल पाइयै करता करै निबाह ॥३२॥
अड़िल ॥
अतिथ भेस धरि परी कुअरि के ढिग गई ॥
राज सुता की बात बतावत तिह भई ॥
तुम कौ उन की चाह उनै तुमरी लगी ॥
हो निसु दिनु जपत बिहंग ज्यो प्रीति तैसी जगी ॥३३॥
सात समुंद्रन पार कुअरि वह जानियै ॥
नेह लग्यो तुम सो तिह अधिक प्रमानियै ॥
करि करि कौन उपाइ कहो तिह ल्याइयै ॥
हो राज कुअर सुकुमारि सु किह बिधि पाइयै ॥३४॥
मुहि सरदार परी की सुरिद बखानियै ॥
रवि ससि की सम जा को रूप प्रमानियै ॥
जब वहु राज कुअरि की चित निरखत भई ॥
हो तब हौ तुमरे तीर पठाइ तुरित दई ॥३५॥

दोहरा ॥

तीनि भवन मै भ्रमि फिरी ता सम कहूं न नारि ॥
ता के बरबे जोग हौ तुम ही राज कुमार ॥३६॥
अड़िल ॥
हौ सरदार परी पहि अब उठ जाइ हो ॥

कुअरि जोग बर लहि तुहि ताहि बताइ हो ॥
जब तुम ता कह जाइ सजन बरि लेहुगे ॥
हो कहा बतावहु मोहि तबै जसु देहुगे ॥३७॥

चौपई ॥

यौ कहि ता कौ परी उडानी ॥
सिवी बासवी रवी पछानी ॥
चलि सरदार परी पहि आई ॥
सकल ब्रिथा कहि ताहि सुनाई ॥३८॥

दोहरा ॥

तीनि लोक मै खोजि करि सुघर लखा इक ठौर ॥
चलि करि आपु निहारियै जा सम सुंद्र न और ॥३९॥

चौपई ॥

सुनत बचन सभ परी उडानी ॥
सात समुंद्र पार निजकानी ॥
जब दिलीप सिंघ नैन निहारा ॥
चित को सोक दूर करि डारा ॥४०॥

दोहरा ॥

अप्रमान दुति कुअर की अटकी परी निहारि ॥
यहि सुंदरि हम ही बरै डारी कुअरि बिसारि ॥४१॥

चौपई ॥

हाइ हाइ वहु परी उचारै ॥
दै दै मूंडि धरनि सौ मारै ॥
जिह निमित हम अस स्रम कीया ॥
सो बिधि ताहि न भेटन दीया ॥४२॥

दोहरा ॥

अब सरदार परी कहै हौ ही बरिहो जाहि ॥
पीर कुअरि की न करै लाज न आवत ताहि ॥४३॥
सुनु सरदार परी जु हम जिह हित अति स्रम कीन ॥
अब तै याहि बरियो चहत मिलन न ता कह दीन ॥४४॥

चौपई ॥

सखि सरदार परी क्या करै ॥
बिरह ताप तन छतिया जरै ॥
जब मै या को रूप निहारियो ॥
स्वरग बिखै को बास बिसारियो ॥४५॥

दोहरा ॥

कहा करो मै जाउ कत लगै निगोडे नैन ॥
बिनु हेरे कल न परै निरखत लागत चैन ॥४६॥
बिन देखे महबूब के पलक लगत है जाम ॥

तब सरदार परी हुती अब इह भई गुलाम ॥४७॥
कहा करौ का सौ कहौ कहे न आवत बैन ॥
बिनु देखे महबूब के भए जहमती नैन ॥४८॥
अड़िल ॥
पलक न इत उत जाइ नैन ऐसे लगे ॥
पिय देखन के प्रेम दोऊ इह बिधि पगे ॥
लगन लागि मुरि गई निगोडि न छूटई ॥
हो नैकु निहारे बिनु सखि प्रान निखूटई ॥४९॥
छुटत छुटाए नाहि निगोडे जह लगे ॥
पलक न इत उत होइ प्रेम पिय के पगे ॥
जहा लगे ए नैन तही कै ह्वै रहे ॥
हो फिरि आवन के नाहि कबिन ऐसे कहे ॥५०॥

दोहरा ॥

थरहराइ थिर न रहहि पलक नही ठहराहि ॥
जह लागे ए लोइना फिरि आवन के नाहि ॥५१॥
निरखि नैन महबूब के नैन गडे तिन माहि ॥
उडै अघाने बाज ज्यो फिर आवन के नाहि ॥५२॥
जहा लगे ए लोइना तह ही के सु भए ॥
बहरी ज्यों कहरी दोऊ गए सु गए गए ॥५३॥
अड़िल ॥
जित लागे ए नैन सु तितही के भए ॥
करि हारी हौ जतन न भूलि इतै अए ॥
छुटी बात मुरि कर ते कहो हौ क्या करौ ॥
हो मदन ताप तन तई सदा जिय मै जरौ ॥५४॥

चौपई ॥

कोटि जतन करि रही सखी सब ॥
लगन निगौडी लागि गई जब ॥
तब तिन परी उपाइ बिचारो ॥
राज पुत्र सौ जाइ उचारो ॥५५॥
राज कुअर तै जिह बर लाइक ॥
जा की परी लगहि सभ पाइक ॥
अब तुहि बरियो चहत हमरी पति ॥
कहा तिहारे आवत है मति ॥५६॥
राज कुअर इह भाति सुना जब ॥
बचन परी सो कहे बिहसि तब ॥
मै सरदार परिहि नहि बरि हौं ॥
लागि बिरह सु कुअरि के मरि हौं ॥५७॥

दोहरा ॥

लाग कुअरि के बिरह तन बरि हौ दिन अरु रैनि ॥
कहा भयो इह जौ परी नैक न लगि है नैन ॥५८॥

चौपई ॥

कहा परी इक मोर कहा करु ॥
राज कुअर तै राज परी बरु ॥
राज कुअरि कहु बरि कस करि है ॥

पदमिनि छाडि हसतिनी बरि है ॥५९॥

दोहरा ॥

जा सौ मेरो हित लगा वहै हमारी नारि ॥
सुरी आसुरी पदमिनी परी न बरौ हजार ॥६०॥

चौपई ॥

परी जतन करि करि बहु हारी ॥
एक बात तब और बिचारी ॥
जौ इह कहत वहै हौ करौ ॥
बहुरो छलि याही कह बरौ ॥६१॥
प्रथम परी जो तहा पठाई ॥
वहै आपने तीर बुलाई ॥
ताहि कहा जु कहा मुर करि है ॥
तब तव दैव धाम धन भरि है ॥६२॥
याहि कुअर मुहि देहु मिलाई ॥
हौ या पर जिय ते उरझाई ॥
कहा हमारा करै प्यारी ॥
तू साहिब मै दास तिहारी ॥६३॥
अड़िल ॥
सुनत बचन इह परी फूलि मन मै गई ॥
सुघर कुअर के पास जात तब ही भई ॥
पर पाइन कर जोर कहा मुसकाइ कै ॥
हौ करौ बिनति जौ कहौ कछू सकुचाइ कै ॥६४॥
प्रथम परी सौ कुअर तुमैस उचारियहु ॥
गहि बहिया सिहजा पर तिह बैठारियहु ॥
रमियो चहै तुम सौ तब तुम यौ भाखियहु ॥
हो घरी चारि पाचक लगि द्रिड़ चित राखियहु ॥६५॥
प्रथम ब्याह ता सौ जौ मोर कराइहो ॥
बरियो चहहु जौ मोहि तु तब ही पाइहो ॥
ताहि बरे बिन मै न तोहि क्योहूं बरो ॥
हो नातर मारि कटारी उर अब ही मरो ॥६६॥
इह बिधि भेद कुअर दै ता के ढिग गई ॥
जिह तिह सहचरि जानि पठै इह पै दई ॥
मै करि जतन अनेक कुअरहि रिझाइयो ॥
हो तुम सो करन कलोल कबूल कराइयो ॥६७॥

चौपई ॥

साह परी कह लै तह आई ॥
जहा कुअर की सेज सुहाई ॥
तहा कपूर अरगजा महिकै ॥
बाधी धुजा धाम पर लहिकै ॥६८॥
इह बिधि दीना कुअर मिलाई ॥
बैठे दोऊ सेज पर जाई ॥
तह ते जबै सखी टरि गई ॥
काम करा ता के तन भई ॥६९॥
काम परी कह जबै संतायो ॥
हाथ कुअर की ओर चलायो ॥
बिहसि कुअर इह भाति उचारी ॥

कहों बात तुहि सुनहु प्यारी ॥७०॥
प्रथम मोहि तुम ताहि मिलावहु ॥
बहुरि भोग मुरि संग कमावहु ॥
पहिले बरो वहै बर नारी ॥
वह इसत्री तै यार हमारी ॥७१॥
अड़िल ॥
करि हारी बहु जतन न तिह रति वहि दई ॥
जु कछु बखानी कुअर वहै मानत भई ॥
पछ्न पर बैठाइ ताहि लैगी तहा ॥
हो पिय पिय रटत बिहंग ज्यों कुअरि परी जहा ॥७२॥
चित्र जवन को हेरि मुहबति लगत भी ॥
ता को दरस प्रतछि जबै पावत भई ॥
कुअरि चहत जो हुती बिधातै सो करी ॥
हो बन बसंत की भाति सु झरि झरि भी हरी ॥७३॥

चौपई ॥

जब दरसन त्रिय का पिय करा ॥
खान पान आगे लै धरा ॥
बिबिध बिधन के अमल मंगाए ॥
बैठि कुअरि के तीर चड़ाए ॥७४॥
ताहू को बहु कैफ पिवाई ॥
बहुरो लयो गरे सो लाई ॥
आसन चुंबन बहु बिधि कीए ॥
चित के ताप बिदा करि दीए ॥७५॥

दोहरा ॥

कुअरि सजन सो रति करत रीझ रही मन माहि ॥
वहि दिन पूजा रुद्र की भूलि करी तिन नाहि ॥७६॥

चौपई ॥

कुअरि कुअर कै संग सिधाई ॥
एक बिवत मन माहि पकाई ॥
इक दुरबल त्रिय निकट बलाइसि ॥
कान लागि तिह मंत्र सिखाइसि ॥७७॥
अपनी ठौर ताहि बैठायो ॥
ताहि भली बिधि चरित सिखायो ॥
सभ सखियन जब ताहि निहारा ॥
तिन त्रिय तब इह भाति उचारा ॥७८॥
मै सिव पूजन कालि न गई ॥
ता ते स्राप रुद्र मुहि दई ॥
या ते अवर बरन ह्वै गयो ॥
गोर बरन ते सावर भयो ॥७९॥
सभ सखियन इह भाति सुना जब ॥
मिलि राजा पहि जात भई सब ॥
सभ ब्रितात कहि ताहि सुनायो ॥
दुहितहि तात बिलोकन आयो ॥८०॥
अनत बरन राजै जब लहा ॥
इह बिधि सो रानी तन कहा ॥
कहा भयो इह राज दुलारी ॥

गोरी हुती ह्वै गई कारी ॥८१॥

दोहरा ॥

बिरध तरुनि ते ह्वै गई भई गोरि ते स्याम ॥
सति स्राप सिव ऐसई जपो सकल सभ जाम ॥८२॥

चौपई ॥

मूरख राज बात नहि जानी ॥
और नारि दुहिता पहिचानी ॥
बिरह मती मितवा संग गई ॥
बहु बिधि भोग कमावत भई ॥८३॥
अड़िल ॥
इक दिन धाम परी के देत पठाइ कै ॥
इक दिन आपु कलोल करत सुख पाइ कै ॥
अरधारध बजावै ता सौ रैनि दिन ॥
हो मूरख बात न पाई राजै कछू इन ॥८४॥

CHARITAR २६४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥264॥5052॥अफजूं॥

चौपई ॥

पूरब दिसि रथ चित्र नराधिप ॥
सकल प्रिथी तल हुतो न्रिपाधिप ॥
प्रक्रित मती ता की पटरानी ॥
नरी सुरी जिह निरखि लजानी ॥१॥

दोहरा ॥

चित्र कौच इक न्रिप हुतो ढाका सहिर मंझार ॥
जा सम सुंद्र न होइगो भयो न राज कुमार ॥२॥
जात्रा तीरथन की निमित गयो तह राज कुमार ॥
जानुक चला सिंगार यह नौ सत साज सिंगार ॥३॥
अड़िल ॥
जहा झरोखा राखा न्रिपति सुधारि कै ॥
तिह मग निकसा न्रिप सौ सत सिंगारि कै ॥
निरखि प्रभा तिह तरुनि अधिक बौरी भई ॥
हो घर बाहर की सुधि छुटि करि सिगरी गई ॥४॥
निकसि ठाढि भी नौ सत कुअरि सिंगार करि ॥
जोरि रही चखु चारि सु लाज बिसारि करि ॥
निरखि न्रिपति चकि रहा तरुनि केते जतन ॥
हो नरी नागनी नगी बिचारी कौन मन ॥५॥
चारु चित्रनी चित्र की प्रतिमा जानियै ॥
परी पदमिनी प्रक्रिति पारबती मानियै ॥
एक बार जौ ऐसी भेटन पाइयै ॥
हो आठ जनम लगि पल पल बलि बलि जाइयै ॥६॥

चौपई ॥

उतै कुअरि कह चाहि भई इह ॥
इह कौ बाछ्हा भई अधिक तिह ॥
प्रगट ठाढ ह्वै हेरत दोऊ ॥
इत उत पल न टरत भयो कोऊ ॥७॥

दोहरा ॥

इत उत ठाढे हेर द्वै प्रेमातुर ह्वै तौन ॥
जनु सनमुख रन भट भए भाजि चले कहु कौन ॥८॥

चौपई ॥

लागति प्रीति दुहुन की भई ॥
अथियो सूर रैनि ह्वै गई ॥
रानी दूतिक तहा पठायो ॥
अधिक सजन सौ नेह जतायो ॥९॥
तिह रानी सौ पति को अति हित ॥
निसि कह ताहि न छाडत इत उत ॥
सोत सदा तिह गरे लगाए ॥
भाति अनिक सौ हरख बढाए ॥१०॥
रानी घात कोऊ नहि पावै ॥
जिह छल ता सौ भोग कमावै ॥
राजा सदा सोत संग ता के ॥
किह बिधि संग मिलै इह वा के ॥११॥
बिना मिले तिह कल नहि परई ॥
राजा सोत संग ते डरई ॥
जब स्वै गयो पतिहि लखि पायो ॥
वहै घात लखि ताहि बुलायो ॥१२॥
पठै सहचरी लयो बुलाई ॥
बहु बिधि ताहि कहा समुझाई ॥
रानी कहा राव सो सोई ॥
यौ भजियहु ज्यों जगै न कोई ॥१३॥
चित्र कौच तिह ठा तब आयो ॥
राजा रानी जानि न पायो ॥
राजा की जाघै गहि लीनी ॥
बल सो ऐंचि आपु तर कीनी ॥१४॥
तब न्रिप जगा कोप करि भारा ॥
चोर चोर कहि खड़ग संभारा ॥
रानी जगी हाथ गहि लीना ॥
यौ जड़ कौ प्रति उतर दीना ॥१५॥

दोहरा ॥

तीरथ निमित आयो हुतो यह ढाका को राइ ॥
कहा प्रथम न्रिप पद परसि बहुरि अनैहो जाइ ॥१६॥

चौपई ॥

तुमरे पग परसन के काजा ॥
इह कारन आयो इह राजा ॥
तिह न हनो इह बहु धन दीजै ॥
चरन लगा पति बिदा करीजै ॥१७॥

दोहरा ॥

बिदा किया न्रिप दरब दै ता को चरन लगाइ ॥
इह छल सौ मूरख छला सका न छल को पाइ ॥१८॥

CHARITAR २६५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पैसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥265॥5070॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सुमति सैन इक न्रिपति सुना बर ॥
दुतिय दिवाकर किधौ किरनिधर ॥
समर मती रानी ग्रिह ता के ॥
सुरी आसुरी सम नहि जा के ॥१॥
स्री रनखंभ कला दुहिता तिह ॥
जीति लई ससि अंस कला जिह ॥
निरखि भान जिह प्रभा रहत दबि ॥
सुरी आसुरिन की नहि सम छबि ॥२॥

दोहरा ॥

तरुनि भई तरुनी जबै अधिक सुखन के संग ॥
लरिकापन मिटि जात भयो दुंदभि दियो अनंग ॥३॥

चौपई ॥

चारि भ्रात ता के बलवाना ॥
सूरबीर सभ ससत्र निधाना ॥
तेजवान दुतिमान अतुल बल ॥
अरि अनेक जीते जिह दलि मलि ॥४॥
सारदूल धुज नाहर धुज भन ॥
सिंघ केतु हरि केतु महा मन ॥
चारौ सूरबीर बलवाना ॥
मानत सत्रु सकल जिह आना ॥५॥
चारौ कुअरि पड़न के काजा ॥
दिज इक बोलि पठायो राजा ॥
भाखयादिक ब्याकरन पड़े जिन ॥
औगाहन सभ किय पुरान तिन ॥६॥
अधिक दरब न्रिप बर तिह दीया ॥
बिबिध बिधन करि आदर कीया ॥
सुता सहित सौपे सुत तिह घर ॥
कछु बिद्या दिजि देहु क्रिपा करि ॥७॥
जब ते तह पड़बे कह आवै ॥
अपनो बिप कह सीस झुकावै ॥
जो सिख्या दिज देत सु लेहीं ॥
अमित दरब पंडित कह देही ॥८॥
इक दिन कुअरि अगमनो गई ॥
दिज कह सीस झुकावत भई ॥
सालिग्राम पूजत था दिजबर ॥
भाति भाति तिह सीस न्याइ करि ॥९॥

ता कौ निरखि कुअरि मुसकानी ॥
सो प्रतिमा पाहन पहिचानी ॥
ताहि कहा पूजत किह नमितिह ॥
सिर नावत कर जोरि काज जिह ॥१०॥
दिज बाच ॥
सालग्राम ठाकुर ए बाला ॥
पूजत जिनै बडे नरपाला ॥
तै अग्यान इह कहा पछानै ॥
परमेस्वर कह पाहन जानै ॥११॥
राजा सुत बाच ॥
सवैया ॥
ताहि पछानत है न महा जड़ जा को प्रताप तिहूं पुर माही ॥
पूजत है प्रभु कै तिस कौ जिन के परसे परलोक पराही ॥
पाप करो परमारथ कै जिह पापन ते अति पाप डराही ॥
पाइ परो परमेस्वर के पसु पाहन मै परमेस्वर नाही ॥१२॥

बिजै छंद ॥

जीवन मै जल मै थल मै सभ रूपन मै सभ भूपन माही ॥
सूरज मै ससि मै नभ मै जह हेरौ तहा चित लाइ तहा ही ॥
पावक मै अरु पौन हूं मै प्रिथवी तल मै सु कहा नहि जाही ॥
ब्यापक है सभ ही के बिखै कछु पाहन मै परमेस्ववर नाही ॥१३॥
कागज दीप सभै करि कै अरु सात समुंद्रन की मसु कैयै ॥
काटि बनासपती सिगरी लिखबे हूं कौ लेखनि काज बनैयै ॥
सारस्वती बकता करि कै सभ जीवन ते जुग साठि लिखैयै ॥
जो प्रभु पायुत है नहि कैसे हूं सो जड़ पाहन मौ ठहरैयै ॥१४॥

चौपई ॥

ए जन भेव न हरि को पावै ॥
पाहन मै हरि कौ ठहरावै ॥
जिह किह बिधि लोगन भरमाही ॥
ग्रिह को दरबु लूटि लै जाही ॥१५॥

दोहरा ॥

जग मै आपु कहावई पंडित सुघर सुचेत ॥
पाहन की पूजा करै या ते लगत अचेत ॥१६॥

चौपई ॥

चित भीतर आसा धन धारैं ॥
सिव सिव सिव मुख ते उचारैं ॥
अधिक डिंभ करि जगि दिखावैं ॥
द्वार द्वार मागत न लजावैं ॥१७॥
अड़िल ॥
नाक मूंदि करि चारि घरी ठाढे रहै ॥
सिव सिव सिव ह्वै एक चरन इसथित कहै ॥
जो कोऊ पैसा एक देत करि आइ कै ॥
हो दातन लेत उठाइ सिवहि बिसराइ कै ॥१८॥

कबितु ॥

औरनुपदेस करै आपु ध्यान कौ न धरै लोगन कौ सदा त्याग धन को द्रिड़ात है ॥
तेही धन लोभ ऊच नीचन के द्वार द्वार लाज कौ त्याग जेही तेही पै घिघात है ॥
कहत पवित्र हम रहत अपवित्र खरे चाकरी मलेछन की कै कै टूक खात है ॥
बडे असंतोखी हैं कहावत संतोखी महा एक द्वार छाडि मागि द्वारे द्वार जात है ॥१९॥
माटी के सिव बनाए पूजि कै बहाइ आए आइ कै बनाए फेरि माटी के सुधारि कै ॥
ता के पाइ परियो माथो घरी द्वै रगरियो ऐ रे ता मै कहा है रे दै है तोहि कौ बिचारि कै ॥
लिंग की तू पूजा करै संभु जानि पाइ परै सोई अंत दै है तेरे कर मै निकारि कै ॥
दुहिता कौ दै है की तू आपन खबै है ता कौ यौ ही तोहि मारि है रे सदा सिव ख्वारि कै ॥२०॥

बिजै छंद ॥

पाहन कौ सिव तू जो कहै पसु या ते कछू तुहि हाथ न ऐ है ॥
त्रैयक जोनि जु आपु परा हसि कै तुहि को कहु का बरु दै है ॥
आपन सो करि है कबहूं तुहि पाहन की पदवी तब पै है ॥
जानु रे जानु अजान महा फिरि जान गई कछु जानि न जै है ॥२१॥
बैस गई लरिकापन मो तरुनापन मै नहि नाम लयो रे ॥
औरन दान करात रहा कर आप उठाइ न दान दयो रे ॥
पाहन को सिर न्रयातन तै परमेस्वर कौ सिर न्यात भयो रे ॥
कामहि काम फसा घर के जड़ कालहि काल कै काल गयो रे ॥२२॥
द्वैक पुरानन कौ पड़ि कै तुम फूलि गए दिज जू जिय माही ॥
सो न पुरान पड़ा जिह के इह ठौर पड़े सभ पाप पराही ॥
डिंभ दिखाइ करो तपसा दिन रैनि बसै जियरा धन माही ॥
मूरख लोग प्रमान करै इन बातन कौ हम मानत नाही ॥२३॥
काहे को काज करो इतनी तुम पाहन को किह काज पुजावो ॥
काहे को डिंभ करो जग मै इह लोक गयो परलोक गवावो ॥
झूठे न मंत्र उपदेस करो जोऊ चाहत हो धन लौ हरखावो ॥
राज कुमारन मंत्र दियो सु दियो बहुरौ हम कौ न सिखावो ॥२४॥
दिज बाच ॥

चौपई ॥

कहा बिप्र सुनु राज दुलारी ॥
तै सिव की महिमा न बिचारी ॥
ब्रहमा बिसन रुद्र जू देवा ॥
इन की सदा कीजियै सेवा ॥२५॥
तै या के भेवहि न पछानै ॥
महा मूड़ इह भाति बखानै ॥
इन को परम पुरातन जानहु ॥
परम पुरख मन महि पहिचानहु ॥२६॥
हम है कुअरि बिप्र ब्रत धारी ॥
ऊच नीच सभ के हितकारी ॥
जिसी किसी कह मंत्र सिखावै ॥
महा क्रिपन ते दान करावै ॥२७॥
कुअरि बाच ॥
मंत्र देत सिख अपन करत हित ॥
ज्यों त्यों भेट लैत ता ते बित ॥
सति बात ता कह न सिखावहु ॥
ताहि लोक परलोक गवावहु ॥२८॥
सुनहु बिप तुम मंत्र देत जिह ॥
लूटि लेत तिह घर बिधि जिह किह ॥
ता कह कछू ग्यान नहि आवै ॥

मूरख अपना मूंड मुंडावै ॥२९॥
तिह तुम कहु मंत्र सिधि ह्वै है ॥
महादेव तो कौ बरु दै है ॥
जब ता ते नहि होत मंत्र सिधि ॥
तब तुम बचन कहत हौ इह बिधि ॥३०॥
कछू कुक्रिया तुम ते भयो ॥
ता ते दरस न सिव जू दयो ॥
अब तै पुंन्य दान दिज कर रे ॥
पुनि सिव के मंत्रहि अनुसरु रे ॥३१॥
उलटो डंड तिसी ते लेही ॥
पुनि तिह मंत्र रुद्र को देही ॥
भाति भाति ता कौ भटकावै ॥
अंत बार इमि भाख सुनावै ॥३२॥
तो ते कछु अछ्र रहि गयो ॥
तै कछु भंग क्रिया ते भयो ॥
ता ते तुहि बरु रुद्र न दीना ॥
पुंन्य दान चहियत पुनि कीना ॥३३॥
इह बिधि मंत्र सिखावत ता को ॥
लूटा चाहत बिप्र घर जा को ॥
जब वहु दरब रहत ह्वै जाई ॥
और धाम तब चलत तकाई ॥३४॥

दोहरा ॥

मंत्र जंत्र अरु तंत्र सिधि जौ इनि महि कछु होइ ॥
हजरति ह्वै आपहि रहहि मागत फिरत न कोइ ॥३५॥
दिज बाज ॥

चौपई ॥

सुनि ए बचन मिसर रिसि भरा ॥
धिक धिक ता कहि बचन उचरा ॥
तांै हमरी बात कह जानै ॥
भाग खाइ कै बैन प्रमानै ॥३६॥
कुअरि बाच ॥
सुनो मिसर तुम बात न जानत ॥
अहंकार कै बचन प्रमानत ॥
भाग पीए बुधि जात न हरी ॥
बिनु पीए तव बुधि कह परी ॥३७॥
तुम आपन स्याने कहलावत ॥
कब ही भूलि न भाग चड़ावत ॥
जब पुन जाहु काज भिछा के ॥
करहो ख्वार रहत ग्रिह जा के ॥३८॥
जिह धन को तुम त्याग दिखावत ॥
दर दर तिह मागन कस जावत ॥
महा मूड़ राजन के पासन ॥
लेत फिरत हो मिस्र जू कन कन ॥३९॥
तुम जग महि त्यागी कहलावत ॥
सभ लोकन कह त्याग द्रिड़ावत ॥
जा कह मन बच क्रम तजि दीजै ॥
ता कह हाथ उठाइ कस लीजै ॥४०॥

काहू धन त्याग द्रिड़ावहि ॥
काहू को कोऊ ग्रहि लावहि ॥
मन महि दरब ठगन की आसा ॥
द्वार द्वार डोलत इह प्यासा ॥४१॥
अड़िल ॥
बेद ब्याकरन सासत्र सिंम्रित इम उचरै ॥
जिनि किसहू ते एक टका मो कौ झरै ॥
जे तिन को कछु देत उसतति ता की करै ॥
हो जो धन देत न तिनै निंद ता की ररै ॥४२॥

दोहरा ॥

निंदिआ अरु उसतति दोऊ जीवत ही जग माहि ॥
जब माटी माटी मिली निंदुसतति कछु नाहि ॥४३॥
अड़िल ॥
देनहार दाइकहि मुकति नहि करि दियो ॥
अनदाइक तिह पुत्र न पित को बध कियो ॥
जा ते धन कर परै सु जस ता को करै ॥
हो जा ते कछु न लहै निंद तिह उचरै ॥४४॥

चौपई ॥

दुहूंअन सम जोऊ करि जानै ॥
निंद्या उसतति सम करि मानै ॥
हम ताही कह ब्रहम पछानहि ॥
वाही कहि दिज कै अनुमानहि ॥४५॥
अड़िल ॥
ए दिज जा ते जतन पाइ धन लेवही ॥
ता नर कह बहु भाति बडाई देवही ॥
मिथया उपमा बकि करि तहि प्रसंन करै ॥
हो घोर नरक के बीच अंत दोऊ परै ॥४६॥

चौपई ॥

धन के काज करत सभ काजा ॥
ऊच नीच राना अरु राजा ॥
ख्याल काल को किनूं न पायो ॥
जिन इह चौदह लोक बनायो ॥४७॥
अड़िल ॥
इही दरब के लोभ बेद ब्याकरन पड़त नर ॥
इही दरब के लोभ मंत्र जंत्रन उपदिस कर ॥
इहीं दरब के लोभ देस परदेस सिधाए ॥
हो परे दूरि कह जाइ बहुरि निजु देसन आए ॥४८॥

कबितु ॥

एही धन लोभ ते पड़त ब्याकरन सभै एही धन लोभ ते पुरान हाथ धरे हैं ॥
धन ही के लोभ देस छाडि परदेस बसे तात अरु मात के दरस हू न करे हैं ॥
ऊचे द्रुम साल तहा लाबे बट ताल जहा तिन मै सिधात है न जी मै नैकु डरे हैं ॥
धन कै नुरागी हैं कहावत तिआगी आपु कासी बीच जए ते कमाऊ जाइ मरे हैं ॥४९॥

बिजै छंद ॥

लालच एक लगै धन के सिर मधि जटान के जूट सवारैं ॥
काठ की कंठिन कौ धरि कै इक कानन मै बिनु कानि पधारैं ॥
मोचन कौ गहि कै इक हाथन सीस हू के सभ केस उपारैं ॥
डिंभु करै जग डंडन कौ इह लोक गयो परलोक बिगारैं ॥५०॥
माटी के लिंग बनाइ कै पूजत ता मै कहो इन का सिधि पाई ॥
जो निरजोति भयो जग जानत ताहि के आगे लै जोति जगाई ॥
पाइ परे परमेस्वर जानि अजान बडै करि कै हठताई ॥
चेत अचेत सुचेतन को चित की तजि कै चट दै दुचिताई ॥५१॥
कासी के बीच पड़ै बहु काल भुटंत मै अंत मरै पुनि जाई ॥
तात रहा अरु मात कहूं बनिता सुत पुत्र कलत्रन भाई ॥
देस बिदेस फिरै तजि कै घर थोरी सी सीखि कै चातुरताई ॥
लोभ की लीक न लाघी किसू नर लोभ रहा सभ लोग लुभाई ॥५२॥

कबितु ॥

एकन को मूंडि माडि एकन सौ लेहि डाड एकन कै कंठी काठ कंठ मै डरत हैं ॥
एकन द्रिड़ावै मंत्र एकन लिखावै जंत्र एकन कौ तंत्रन प्रबोध्रयो ई करत हैं ॥
एकन कौ बिद्या को बिवादन बतावै डिंभ जग को दिखाइ ज्यों क्योन मात्रा कौ हरत है ॥
मैया कौ न मानै महा कालै न मनावै मूड़ माटी कौ मानत ता ते मागत मरत है ॥५३॥
सवैया ॥
चेत अचेतु कीए जिन चेतन ताहि अचेत न को ठहरावैं ॥
ताहि कहै परमेस्वर कै मन माहि कहे घटि मोल बिकावैं ॥
जानत है न अजान बडै सु इते पर पंडित आपु कहावैं ॥
लाज के मारे मरै न महा लट ऐंठहि ऐंठ अमैठि गवावैं ॥५४॥

बिजै छंद ॥

गतमान कहावत गात सभै कछू जानै न बात गतागत है ॥
दुतिमान घने बलवान बडे हम जानत जोग मधे जत है ॥
पाहन कै कहै बीच सही सिव जानै न मूड़ महा मत है ॥
तुमहूं न बिचारि सु जान कहो इन मै कहा पारबती पति है ॥५५॥
माटी कौ सीस निवावत है जड़ या ते कहो तुहि का सिधि ऐ है ॥
जौन रिझाइ लयो जग कौ तव चावर डारत रीझि न जै है ॥
धूप जगाइ कै संख बजाइ सु फूलन की बरखा बरखै है ॥
अंत उपाइ कै हारि हैं रे पसु पाहन मै परमेस्वर न पै है ॥५६॥
एकन जंत्र सिखावत है दिज एकन मंत्र प्रयोग बतावै ॥
जो न भिजै इन बातन ते तिह गीति कबित सलोक सुनावै ॥
द्योस हिरै धन लोगन के ग्रिह चोरु चकै ठग देखि लजावै ॥
कानि करै नहि काजी कुटवार की मूंडि कै मूंडि मुरीदन खावै ॥५७॥

दोहरा ॥

पाहन की पूजा करैं जो है अधिक अचेत ॥
भाग न एते पर भखै जानत आप सुचेत ॥५८॥

तोटक छंद ॥

धन के लगि लोभ गए अनतै ॥
तजि मात पिता सुत बाल कितै ॥
बसि कै बहु मास तहा ही मरै ॥
फिरि कै ग्रिहि के नहि पंथ परै ॥५९॥

दोहरा ॥

धनी लोग है पुहप सम गुनि जन भौर बिचार ॥
गूंज रहत तिह पर सदा सभ धन धाम बिसार ॥६०॥

चौपई ॥

सभ कोऊ अंत काल बसि भया ॥
धन की आस निकरि तजि गया ॥
आसा करत गया संसारा ॥
इह आसा को वार न पारा ॥६१॥
एक निरास वहै करतारा ॥
जिन कीना इह सकल पसारा ॥
आसा रहित और कोऊ नाही ॥
जानु लेहु दिजबर मन माही ॥६२॥
लोभ लगे धन के ए दिजबर ॥
मागत फिरत सभन के घर घर ॥
या जग महि कर डिंभ दिखावत ॥
ते ठगि ठगि सभ कह धन खावत ॥६३॥

दोहरा ॥

आसा की आसा लगे सभ ही गया जहान ॥
आसा जग जीवत बची लीजै समझि सुजान ॥६४॥

चौपई ॥

आसा करत सगल जग जया ॥
आसहि उपज्या आसहि भया ॥
आसा करत तरुन ब्रिध हूआ ॥
आसा करत लोग सभ मूआ ॥६५॥
आसा करत लोग सभ भए ॥
बालक हुतो ब्रिध ह्वै गए ॥
जिति कित धन आसा करि डोलहि ॥
देस बिदेस धनास कलोलहि ॥६६॥
पाहन कहु धनास सिर न्यावै ॥
चेत अचेतन कौ ठहरावै ॥
करत प्रपंच पेट के काजा ॥
ऊच नीच राना अरु राजा ॥६७॥
काहू को सिछा सु द्रिड़ावै ॥
काहूं कौ लै मूंड मुंडावै ॥
काहूं पठै तीरथन देही ॥
ग्रिह को दरबु माग सभ लेही ॥६८॥
जिह नर को धनवान तकावै ॥
जोनि सिला महि ताहि फसावै ॥
बहुरि डंड तिह मूंडि चुकाही ॥
काढि देत ता के पुनि माही ॥६९॥
इन लोगन धन ही की आसा ॥
स्री हरि जी की नाहि प्यासा ॥
डिंभि जगत कह करि परचावै ॥
लछिमी हर ज्यों त्यों लै आवै ॥७०॥
दिज बाच ॥

सुनु पुत्री तै बात न जानै ॥
सिव कह करि पाहन पहिचानै ॥
बिप्रन कौ सभ ही सिर न्यावै ॥
चरनोदक लै माथ चड़ावै ॥७१॥
पूजा करत सगल जग इन की ॥
निंद्या करत मूड़ तै जिन की ॥
ए है परम पुरातन दिजबर ॥
सदा सराहत जिन कह न्रिप बर ॥७२॥
कुअरि बाच ॥
सुन मूरख दिज तै नहि जानी ॥
परम जोति पाहन पहिचानी ॥
इन महि परम पुरख तै जाना ॥
तजि स्यानप ह्वै गयो अयाना ॥७३॥
अड़िल ॥
लैनौ होइ सु लै दिज मुहि न झुठाइयै ॥
पाहन मै परमेस्वर न भाखि सुनाइयै ॥
इन लोगन पाहन महि सिव ठहराइ कै ॥
हो मूड़न लीजहु लूट हरख उपजाइ कै ॥७४॥
काहू कह पाहन महि ब्रहम बतात है ॥
जल डूबन हित किसहूं तीरथ पठात है ॥
ज्यों त्यों धन हर लेत जतन अनगनित कर ॥
हो टका गाठि महि लए न देही जान घर ॥७५॥
धनी पुरख कह लखि दिज दोख लगावही ॥
होम जग्य ता ते बहु भात करावही ॥
धनियहि करि निरधनी जात धन खाइ कै ॥
हो बहुरि न ता कौ बदन दिखावत आइ कै ॥७६॥

चौपई ॥

काहू लौ तीरथन सिधावै ॥
काहू अफल प्रयोग बतावै ॥
काकन ज्यों मंडरात धनू पर ॥
ज्यों किलकिला मछरीयै दू पर ॥७७॥
ज्यो द्वै स्वान एक हडिया पर ॥
भूसत मनो बादि बिद्रयाधर ॥
बाहर करत बेद की चरचा ॥
तन अरु मन धन ही की अरचा ॥७८॥

दोहरा ॥

धन की आसा मन रहे बाहर पूजत देव ॥
न हरि मिला न धन भयो ब्रिथा भई सभ सेव ॥७९॥
अड़िल ॥
ए बिद्या बल करहि जोग की बात न जानै ॥
ए सुचेत करि रहहि हमनि आचेत प्रमानै ॥
कहा भयौ जौ भाग भूलि भौंदू नहि खाई ॥
हो निजु तन ते बिसंभार रहत सभ लखत लुकाई ॥८०॥
भाग खाइ भट भिड़हि गजन के दात उपारहि ॥
सिमटि साग संग्रहहि सार सनमुख ह्वै झारहि ॥
तै मूजी पी भाग कहो का काज सवरि हैं ॥
हो ह्वै कै म्रितक समान जाइ औधे मुख परि हैं ॥८१॥

भुजंग छंद ॥

सुनो मिस्र सिछा इनी को सु दीजै ॥
महा झूठ ते राखि कै मोहि लीजै ॥
इतो झूठ कै और नीको द्रिड़ावौ ॥
कहा चाम के दाम कै कै चलावौ ॥८२॥
महा घोर ई नरक के बीच जै हौ ॥
कि चंडाल की जोनि मै औतरै हौ ॥
कि टागे मरोगे बधे म्रितसाला ॥
सनै बंधु पुत्रा कलत्रान बाला ॥८३॥
कहो मिस्र आगे कहा ज्वाब दैहो ॥
जबै काल के जाल मै फासि जैहो ॥
कहो कौन सो पाठ कैहो तहा ही ॥
तऊ लिंग पूजा करौगे उहा ही ॥८४॥
तहा रुद्र ऐ है कि स्री क्रिसन ऐ है ॥
जहा बाधि स्री काल तो कौ चले है ॥
किधौ आनि कै राम ह्वै है सहाई ॥
जहा पुत्र माता न ताता न भाई ॥८५॥
महा काल जू को सदा सीस न्रयैयै ॥
पुरी चौदहूं त्रास जा को त्रसैयै ॥
सदा आनि जा की सभै जीव मानै ॥
सभै लोक ख्रयाता बिधाता पछानै ॥८६॥
नही जानि जाई कछू रूप रेखा ॥
कहा बास ता को फिरै कौन भेखा ॥
कहा नाम ता को कहा कै कहावै ॥
कहा कै बखानो कहे मो न आवै ॥८७॥
न ता को कोऊ तात माता न भाई ॥
न पुत्रा न पोत्रा न दाया न दाई ॥
कछू संग सैना न ता को सुहावै ॥
कहै सति सोई करै सो बन्यावै ॥८८॥
कईऊ सवारै कईऊ खपावै ॥
उसारे गड़े फेरि मेटै बनावै ॥
घनी बार लौ पंथ चारो भ्रमाना ॥
महा काल ही को गुरू कै पछाना ॥८९॥
मुरीद है उसी की वहै पीर मेरो ॥
उसी का किया आपना जीव चेरो ॥
तिसी का कीआ बालका मै कहावौ ॥
उही मोहि राखा उसी को धिआवौ ॥९०॥

चौपई ॥

दिज हम महा काल को मानै ॥
पाहन मै मन को नहि आनै ॥
पाहन को पाहन करि जानत ॥
ता ते बुरो लोग ए मानत ॥९१॥
झूठा कह झूठा हम कै है ॥
जो सभ लोग मनै कुररै है ॥
हम काहू की कानि न राखै ॥
सति बचन मुख ऊपर भाखै ॥९२॥
सुनु दिज तुम धन के लब लागे ॥
मागत फिरत सभन के आगे ॥

आपने मन भीतरि न लजावहु ॥
इक टक ह्वै हरि ध्यान न लावहु ॥९३॥
दिज बाच ॥
तब दिज बोला तै क्या मानै ॥
संभू को पाहन करि मानै ॥
जो इन को करि आन बखानै ॥
ता को ब्रहम पातकी जानै ॥९४॥
जो इन कह कटु बचन उचारै ॥
ता कौ महा नरक बिधि डारै ॥
इन की सदा कीजियै सेवा ॥
ए है परम पुरातन देवा ॥९५॥
कुअरि बाच ॥
एकै महा काल हम मानै ॥
महा रुद्र कह कछू न जानै ॥
ब्रहम बिसन की सेव न करही ॥
तिन ते हम कबहूं नही डरही ॥९६॥
ब्रहम बिसन जिन पुरख उचारियो ॥
ता कौ म्रितु जानियै मारियो ॥
जिन नर काल पुरख को ध्यायो ॥
ता के निकट काल नहि आयो ॥९७॥
जे नर काल पुरख को ध्यावै ॥
ते नर काल फास नहि जावै ॥
तिन के रिध सिध सभ घर मौ ॥
कोबिद सभ ही रहत हुनर मौ ॥९८॥
काल पुरख इकदा जिन कहा ॥
ता के रिधि सिधि ह्वै रहा ॥
भाति भाति धन भरे भंडारू ॥
जिन का आवत वार न पारू ॥९९॥
जिन नर काल पुरख कह ध्यायो ॥
सो नर कलि मो कबहू न आयो ॥
या जग मै ते अति सुख पावै ॥
भोग करै बैरनि कह घावै ॥१००॥
जब तो को दिज काल सतै है ॥
तब तू को पुसतक कर लै है ॥
भागवत पड़ो कि गीता कहि हो ॥
रामहि पकरि कि सिव कह गहि हो ॥१०१॥
जे तुम परम पुरख ठहराए ॥
ते सभ डंड काल के घाए ॥
काल डंड बिन बचा न कोई ॥
सिव बिरंच बिसनिंद्र न सोई ॥१०२॥
जैसि जूनि इक दैत बखनियत ॥
त्रयो इक जूनि देवता जनियत ॥
जैसे हिंदूआनो तुरकाना ॥
सभहिन सीस काल जरवाना ॥१०३॥
कबहूं दैत देवतन मारैं ॥
कबहूं दैतन देव संघारैं ॥
देव दैत जिन दोऊ संघारा ॥
वहै पुरख प्रतिपाल हमारा ॥१०४॥
अड़िल ॥
इंद्र उपिंद्र दिनिंद्रहि जौन संघारियो ॥

चंद्र कुबेर जलिंद्र अहिंद्रहि मारियो ॥
पुरी चौदहूं चक्र जवन सुनि लीजियै ॥
हो नमसकार ताही को गुर करि कीजियै ॥१०५॥
दिज बाच ॥

चौपई ॥

बहु बिधि बिप्रहि को समझायो ॥
पुनि मिस्रहि अस भाखि सुनायो ॥
जे पाहन की पूजा करि है ॥
ता के पाप सकल सिव हरि है ॥१०६॥
जे नर सालिग्राम कह धयैहै ॥
ता के सकल पाप को छैहै ॥
जो इह छाडि अवर कह धयै है ॥
ते नर महा नरक महि जै है ॥१०७॥
जे नर कछु धन बिप्रहि दै है ॥
आगे माग दस गुनो लैहै ॥
जो बिप्रन बिनु अनतै देही ॥
ता कौ कछु सु फलै नहि सेई ॥१०८॥
अड़िल ॥
तबै कुअरि प्रतिमा सिव की कर मै लई ॥
हसि हसि करि दिज के मुख कसि कसि कै दई ॥
सालिग्राम भे दाति फोरि सभ ही दीए ॥
हो छीनि छानि करि बसत्र मिस्र के सभ लीए ॥१०९॥
कहो मिस्र अब रुद्र तिहारो कह गयो ॥
जिह सेवत थो सदा दाति छै तिन कियो ॥
जिह लिंगहि कौ जपते काल बताइयो ॥
हो अंत काल सो तुमरे मुख महि आइयो ॥११०॥

चौपई ॥

ता को दरबु छीनि जो लियो ॥
जो सभ दान दिजन करि दियो ॥
कहियो मिस्र कछु चिंत न करहूं ॥
दान दस गुनो आगै फरहूं ॥१११॥

कबितु ॥

औरन को कहत लुटावो तुम खाहु धन आपु पहिती मै डारि खात न बिसार हैं ॥
बडे ही प्रपंची परपचंन को लीए फिरै दिन ही मै लोगन को लूटत बजार हैं ॥
हाथ ते न कौडी देत कौडी कौडी माग लेत पुत्री कहत ता सो करै बिभचार हैं ॥
लोभता के जए हैं कि ममता के भए हैं ए सूमता के पुत्र कैधौ दरिद्रावतार हैं ॥११२॥

चौपई ॥

पहती बिखै बिसार न डारहि ॥
औरन पास गाल को मारहि ॥
जनियत किसी देस के राजा ॥
कौडी के आवत नहि काजा ॥११३॥
जौ इन मंत्र जंत्र सिधि होई ॥
दर दर भीखि न मागै कोई ॥
एकै मुख ते मंत्र उचारै ॥

धन सौ सकल धाम भरि डारै ॥११४ ॥
राम क्रिसन ए जिनै बखानै ॥
सिव ब्रहमा ए जाहि प्रमानै ॥
ते सभ ही स्री काल संघारे ॥
काल पाइ कै बहुरि सवारे ॥११५ ॥
केते रामचंद अरु क्रिसना ॥
केते चतुरानन सिव बिसना ॥
चंद सूरज ए कवन बिचारे ॥
पानी भरत काल के द्वारे ॥११६ ॥
काल पाइ सभ ही ए भए ॥
कालो पाइ काल ह्वै गए ॥
कालहि पाइ बहुरि अवतरि है ॥
कालहि काल पाइ संघरि है ॥११७ ॥

दोहरा ॥

स्राप राछसी के दए जो भयो पाहन जाइ ॥
ताहि कहत परमेस्र तै मन महि नही लजाइ ॥११८ ॥
दिज बाच ॥

चौपई ॥

तब दिज अधिक कोप ह्वै गयो ॥
भरभराइ ठाढा उठि भयो ॥
अब मै इह राजा पै जैहौ ॥
तही बाधि करि तोहि मंगै हौ ॥११९ ॥
कुअरि बाच ॥
तब तिन कुअरि दिजहि गहि लिआ ॥
डार नदी के भीतर दिया ॥
गोता पकरि आठ सै दीना ॥
ताहि पवित्र भली बिधि कीना ॥१२० ॥
कही कुअरि पितु पहि मै जै हौं ॥
तै मुहि डारा हाथ बतै हौं ॥
तेरे दोनो हाथ कटाऊं ॥
तौ राजा की सुता कहाऊं ॥१२१ ॥
दिज वाच ॥
इह सुनि बात मिस्र डर पयो ॥
लागत पाइ कुअरि के भयो ॥
सोऊ करो जु मोहि उचारो ॥
तुम निजु जिय ते कोप निवारो ॥१२२ ॥
कुअरि बाच ॥
तुम कहियहु मै प्रथम अनायो ॥
धन निमिति मै दरबु लुटायो ॥
पाहन की पूजा नहि करियै ॥
महा काल के पाइन परियै ॥१२३ ॥
कबियो बाच ॥
तब दिज महा काल को ध्यायो ॥
सरिता महि पाहनन बहायो ॥
दूजे कान न किनहूं जाना ॥
कहा मिस्र पर हाल बिहाना ॥१२४ ॥

दोहरा ॥

इह छल सौ मिसरहि छला पाहन दए बहाइ ॥
महा काल को सिख्य करि मदरा भाग पिवाइ ॥१२५॥

CHARITAR २६६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छिआसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥266॥5195॥अफज्रूं॥*

चौपई ॥

रूप सैन इक न्रिपति सुलछन ॥
तेजवान बलवान बिचछन ॥
सकल मती ता के घर दारा ॥
जा सम कहूं न राज कुमारा ॥१॥
तहि इक बसै तुरकनी नारी ॥
तिह सम रूप न मैन दुलारी ॥
तिन राजा की छबि निरखी जब ॥
मोहि रही तरुनी ता पर तब ॥२॥
रूप सैन पहि सखी पठाई ॥
लगी लगन तुहि साथ जताई ॥
इक दिन मुरि कहियो सेज सुहैयै ॥
नाथ सनाथ अनाथहि कैयै ॥३॥
इमि दूती प्रति न्रिपति उचारा ॥
त्रिय आगे पति जियत तिहारा ॥
जौ तौ प्रथम काजियहि मारै ॥
तिह पाछे मुहि संगि बिहारै ॥४॥
सुनि सहचरि तिह जाइ जताई ॥
न्रिप हम को इमि भाख सुनाई ॥
जौ तै प्रथम काजियहि घावै ॥
तिह उपरात बहुरि मुहि पावै ॥५॥
सुनि त्रिय बात चित महि राखी ॥
और न किसी औरतहि भाखी ॥
रैनि समै काजी जब आयो ॥
काढि क्रिपान सोवतहि घायो ॥६॥
ता को काटि मूंड करि लियो ॥
लै राजा के हाजर कियो ॥
तव निमित काजी मै घायो ॥
अब मुहि संग करो मन भायो ॥७॥
जब सिर निरखि न्रिपति तिह लयो ॥
मन के बिखै अधिक डर पयो ॥
पति मारत जिह लगी न बारा ॥
का उपपति तिह अग्र बिचारा ॥८॥
धिक धिक बच तिह त्रियह उचारा ॥
भोग करब मै तजा तिहारा ॥
त्रिय पापनि तै भरता घायो ॥
ता ते मोहि अधिक डर आयो ॥९॥
अब तै जाहि पापनी तही ॥
निज कर नाथ संघारा जही ॥
अब तेरो सभ ही भ्रिग साजा ॥

अब ही लगि जीवत निरलाजा ॥१०॥

दोहरा ॥

हित मेरे जिन पति हना कीना बडा कुकाज ॥
जमधर मारि न मरत है अब लौ जियत निलाज ॥११॥

चौपई ॥

सुनत बचन ए नारि रिसाई ॥
लजित भई घर को फिरी आई ॥
पति को मूंड तिसी घर डारा ॥
आइ धाम इस भाति पुकारा ॥१२॥
प्रात भए सभ लोग बुलाए ॥
सभहिन काजी म्रितक दिखाए ॥
स्रोनत धार परत जिह गई ॥
सो मगु ह्वै करि खोजत भई ॥१३॥
जह जह जाइ स्रोन की धारा ॥
तिह हेरत जन चले अपारा ॥
तह सभहूं लै ठाढो कीना ॥
जह निजु हाथ डारि सिर दीना ॥१४॥
मूंड कटयो सभहिन लखि पायो ॥
इह काजी याहीं न्रिप घायो ॥
ता कह बाधि लै गए तहा ॥
जहागीर बैठा थो जहा ॥१५॥
सभ ब्रितात कहि प्रथम सुनायो ॥
इह काजी राजै इन घायो ॥
हजरति बाधि त्रियहि कह दीना ॥
भेद कछू जिय माझ न चीना ॥१६॥
मारन कौ लै ताहि सिधाई ॥
आंखिन ही महि न्रिपहि जताई ॥
मुर जिय राखु कहै सौ करि हौ ॥
लै घट सीस पानि कौ भरि हौ ॥१७॥
तब सुंदरि इह भाति बिचारो ॥
अब माना न्रिप कहा हमारो ॥
ता कौ छाडि हाथ ते दीना ॥
खून बखस्यो मै इह कीना ॥१८॥
प्रथमहि छाडि मित्र कह दीना ॥
पुन इह भाति उचारन कीना ॥
अब मै सैर मका के जै हौ ॥
मरी त गई जियत फिरि ऐ हौ ॥१९॥
लोगन सैर भवारो दियो ॥
आपु पैंड तिह ग्रिह कौ लियो ॥
ताहि निरखि राजा डरपाना ॥
काम भोग तिह संग कमाना ॥२०॥
लोग कहै मका कह गई ॥
हुआं की सुधि किनहूं नहि लई ॥
कहा बाल इन चरित दिखायो ॥
किह छल सौ काजी कह घायो ॥२१॥
इह छल साथ काजियहि मारा ॥
बहुरि मित्र कह चरित दिखारा ॥

इन की अगम अगाधि कहानी ॥
दानव देव न किनहूं जानी ॥२२॥

CHARITAR २६७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥267॥5217॥अफजूं॥*

चौपई ॥

चंपावती नगर दिसि दछिन ॥
चंपत राइ न्रिपति सुभ लछन ॥
चंपावती धाम तिह दारा ॥
जा सम कहूं न राज दुलारा ॥१॥
चंपकला दुहिता ता के ग्रिह ॥
रूपमान दुतिमान अधिक वह ॥
जब तिह अंग मैनता वई ॥
लरिकापन की सुधि बुधि गई ॥२॥
हुतो बाग इक तहा अपारा ॥
जिह सर नंदन कहा बिचारा ॥
तहा गई वहु कुअरि मुदित मन ॥
लए सुंदरी संग करि अनगन ॥३॥
तह निरखा इक साह सरूपा ॥
सूरति सीरति माझि अनूपा ॥
रीझी कुअरि अटकि गी तब ही ॥
सुंदर सुघर निहारियो जब ही ॥४॥
सभ सुधि भूलि सदन की गई ॥
आठ टूक तिह उपर भई ॥
ग्रिह ऐबे की बुधि न आई ॥
तही उधरि तिह संग सिधाई ॥५॥
सहचरि भेद चरित इक जाना ॥
इह बिधि साथ चरित्र प्रमाना ॥
रोइ रोइ धुनि ऊच पुकारै ॥
दै दै मूंड धरनि सौ मारै ॥६॥
चंपकला राजा की जाई ॥
राछस गही आनि दुखदाई ॥
ताहि छुरैयै जान न दीजै ॥
बेगहि बध दानव को कीजै ॥७॥
ए सुनि बैन लोग सभ धाए ॥
काढे खड़ग बाग मै आए ॥
दैत वैत तह कछु न निहारा ॥
चक्रित भे जिय माझ बिचारा ॥८॥
हरि दानव तिह गयो अकासा ॥
राज कुअरि ते भए निरासा ॥
रोइ पीट दुहिता कह हारे ॥
राजा भए अधिक दुखियारे ॥९॥
केतिक दिनन सकल धन खायो ॥
देस बिदेस फिरत दुख पायो ॥
राज कुअरि मित्रहि कौ त्यागी ॥
आधी रति देस कौ भागी ॥१०॥
लिखि पत्री पित पास पठाई ॥

दानव ते मै देव छुराई ॥
पठै मनुछ अब बोलि पठावहु ॥
मोहि मिलाइ अधिक सुख पावहु ॥११॥
पड़ि पत्री पित कंठ लगाई ॥
अधिक पालकी तहा पठाई ॥
चंपकला कह ग्रिह लै आयो ॥
मूरख भेद अभेद न पायो ॥१२॥

CHARITAR २६८ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठसठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥268॥5229॥अफजूं॥

चौपई ॥

गूआ बंदर इक रहत न्रिपाला ॥
जा को डंड भरत भूआला ॥
अप्रमान ता के घर मै धन ॥
चंद्र सूर कै इंद्र दुतिय जनु ॥१॥
मित्र मती ता की अरधंगा ॥
पुंन्रयमान दूसर जनु गंगा ॥
मीन केतु राजा तह राजै ॥
जा को निरखि मीन धुज लाजै ॥२॥
अड़िल ॥
स्री झखकेतु मती दुहिता तिह जानियै ॥
अप्रमान अबला की प्रभा प्रमानियै ॥
जा सम सुंदरि कहूं न जग महि जानियत ॥
हो रूपमान उहि की सी वही बखानियत ॥३॥

चौपई ॥

प्रात भए न्रिप सभा लगाई ॥
ऊच नीच सभ लिया बुलाई ॥
तह इक पुत्र साहु को आयो ॥
जिह सम दिति आदिति न जायो ॥४॥
अड़िल ॥
राज कुअरि रही थकित सु ताहि निहारि करि ॥
चकित चित महि रही चरित्र बिचारि करि ॥
सखी पठी तिह धाम मिलन की आस कै ॥
हो चाह रही जस मेघ पपिहरा प्यास कै ॥५॥

दोहरा ॥

अति प्रसंन्य चित महि भई मन भावन कह पाइ ॥
सहचरि को जु दरद्रि थो ततछिन दिया मिटाइ ॥६॥

चौपई ॥

जब ही तरुनि तरुन कौ पायो ॥
भाति भाति तिन गरे लगायो ॥
रैनि सगरि रति करत बिहानी ॥
चारि पहर पल चार पछानी ॥७॥

पिछली पहर रात्रि जब रही ॥
राज कुअरि ऐसे तिह कही ॥
हम तुम आव निकसि दोऊ जावै ॥
और देस दोऊ कहूं सुहावै ॥८॥
तुहि मुहि कह धन की थुर नाही ॥
तुमरी चहत कुसल मन माही ॥
यौ कहि दुहूं अधिक धनु लीना ॥
औरै देस पयाना कीना ॥९॥
चतुरि भेद सहचरि इक पाई ॥
तिह ग्रिह को दई आगि लगाई ॥
रनियनि रानी जरी सुनाई ॥
रोवत आपु न्रिपहि पहि धाई ॥१०॥
रानी कहा न्रिपहि जरि मरी ॥
तुम ता की कछु सुधि न करी ॥
अब तिन के चलि असति उठावौ ॥
मानुख दै गंगा पहुचावौ ॥११॥
न्रिप सुनि बचन उताइल धायो ॥
जह ग्रिह जरत हुतो तह आयो ॥
हहा करत रानीयहि निकारहु ॥
जरति अगनि ते याहि उबारहु ॥१२॥
जानी जरी अगनि महि रानी ॥
उधलि गई मन बिखै न आनी ॥
अधिक सोक मन माहि बढायो ॥
प्रजा सहित कछु भेद न पायो ॥१३॥
धनि धनि इह रानी को धरमा ॥
जिन असि कीना दुहकरि करमा ॥
लजा निमित प्रान दै डारा ॥
जरि करि मरी न रौरन पारा ॥१४॥

CHARITAR २६९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥269॥5243॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मोरंग दिसि इक रहत न्रिपाला ॥
जा के दिपत तेज की ज्वाला ॥
पूरब दे तिह नारि भणिजै ॥
को अबला पटतर तिह दिजै ॥१॥
पूरब सैन न्रिपति को नामा ॥
जिन जीते अनगन संग्रामा ॥
जा के चड़त अमित दल संगा ॥
है गै रथ पैदल चतुरंगा ॥२॥
तह इक आयो साह अपारा ॥
जा के संग इक पुत्र प्यारा ॥
जा को रूप कहै नही आवै ॥
ऊख लिखत लेखन ह्वै जावै ॥३॥
पूरब दे तिह ऊपर अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुधि घटि की ॥
लगियो कुअर सो नेह अपारा ॥

जिह बिनु रुचै न भोजन बारा ॥४ ॥
एक दिवस तिह बोलि पठायो ॥
काम केल रुचि मानि कमायो ॥
दुहूंअन ऐसे बधा सनेहा ॥
जिन को भाखि न आवत नेहा ॥५ ॥
साहु पुत्र तब साहु बिसारियो ॥
ता के सदा रहित जिय धारियो ॥
पिता संग कछु कलह बढायो ॥
चड़ि घोरा परदेस सिधायो ॥६ ॥
अड़िल ॥
त्रिय निमित निजु पितु सौ कलह बढाइ कै ॥
चड़ि बाजी पर चला देस कह धाइ कै ॥
पितु जान्यो सुत मेरो देस अपने गयो ॥
हौ अरध रात्रि गे ग्रिह रानी आवत भयो ॥७ ॥

चौपई ॥

तह ते साहु जबै उठि गयो ॥
तब रानी अस चरित बनयो ॥
ताहि निपुंसक करि ठहरायो ॥
राजा सौ इस भाति जतायो ॥८ ॥
मै इक मोल निपुंसक आना ॥
जा को रूप न जात बखाना ॥
ता ते अपने काज करै हौ ॥
मन भावत के भोग कमै हौ ॥९ ॥

दोहरा ॥

भली भली राजा कही भेद न सका बिचार ॥
पुरख निपुंसक भाखि त्रिय राखा धाम सुधारि ॥१० ॥
रम्यो करत रानी भए तवन पुरख दिन रैनि ॥
न्रिपति निपुंसक तिह लखै कछू न भाखै बैन ॥११ ॥

CHARITAR २७० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥270॥5254॥अफजूं॥*

चौपई ॥

तेलंगा जह देस अपारा ॥
समर सैन तह को सरदारा ॥
ताहि बिलास देइ घर रानी ॥
जा की जात न प्रभा बखानी ॥१ ॥
तिह इक छैल पुरी संन्यासी ॥
तिह पुर मद्र देस कौ बासी ॥
रानी निरखि लगनि तिह लागी ॥
जा ते नींद भूख सभ भागी ॥२ ॥
रानी की ताहू सौ लागी ॥
छूटै कहा अनोखी जागी ॥
इक दिन तिह सौ भोग कमायो ॥
भोग किया तिम द्रिड़ त्रिय भायो ॥३ ॥

बहु दिन भोग तवन संगि किया ॥
ऐसुपदेस तवन कह दिया ॥
जौ मै कहौ मित्र सो कीजहु ॥
मेरो कहियो मानि करि लीजहु ॥४॥
कहूं जु म्रितक परियो लखि पैयौ ॥
ता को काटि लिंग लै ऐयौ ॥
ताहि कुपीन बिखै द्रिड़ रखियहु ॥
भेद दूसरे नरहि न भखियहु ॥५॥
अड़िल ॥
जब मै देहो तुमै उराभे लाइ कै ॥
तब तुम हम पर उठियहु अधिक रिसाइ कै ॥
काढि कुपीन ते हम पर लिंग चलाइयो ॥
हो ऊच नीच राजा कह चरित दिखाइयो ॥६॥

चौपई ॥

सोई काम मित्र तिह कीना ॥
जिह बिधि सौ तवनै सिख दीना ॥
रानी प्रात पतिहि दिखराई ॥
संन्यासी पहि सखी पठाई ॥७॥
संन्यासी जुत सखी गहाई ॥
राजा देखत निकट बुलाई ॥
छैल गिरहि बहुत भाति दुखायो ॥
तै चेरी संग भोग कमायो ॥८॥
यौ सुनि बचन तेज मन तयो ॥
कर महि काढि छुरा कह लयो ॥
कटियो लिंग बसत्र ते निकारा ॥
राज तरुनि के मुख पर मारा ॥९॥
हाइ हाइ रानी कहि भागी ॥
ता के उठि चरनन संग लागी ॥
हमि रिखि तुमरो चरित न जाना ॥
बिनु समुझे तुहि झूठ बखाना ॥१०॥
तब राजे इह भाति बिचारी ॥
इंद्री काटि संन्यासी डारी ॥
ध्रिग ध्रिग कुपि रानियहि उचारा ॥
तै त्रिय किया दोख यह भारा ॥११॥
अब इह राखु आपने धामा ॥
सेवा करहु सकल मिलि बामा ॥
जब लगि जियै जान नहि दीजै ॥
सदा जती की पूजा कीजै ॥१२॥
रानी बचन न्रिपति को माना ॥
बहु बिधि साथ ताहि ग्रिह आना ॥
भोग करै बहु हरख बढाई ॥
मूरख बात न राजै पाई ॥१३॥

दोहरा ॥

इह बिधि चरित बनाइ कै ताहि भजा रुचि मान ॥
जीवत लगि राखा सदन सका न न्रिपति पछान ॥१४॥

CHARITAR २७१ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥271॥5267॥अफजूं॥

चौपई ॥

एक सुगंध सैन न्रिप नामा ॥
गंधागिर परबत जिह धामा ॥
सुगंध मती ता की चंचला ॥
हीन करी ससि कीं जिन कला ॥१॥
बीर करन इक साहु बिख्याता ॥
जिह सम दुतिय न रचा बिधाता ॥
धन करि सकल भरे जिह धामा ॥
रीझि रहत दुति लखि सभ बामा ॥२॥
सौदा नमिति तहा वह आयो ॥
जा कह निरखि रूप सिर न्यायो ॥
जा सम सुंदर सुना न सूरा ॥
देग तेग साचो भरपूरा ॥३॥

दोहरा ॥

रानी ता को रूप लखि मन महि रही लुभाइ ॥
मिलिबे के जतनन करै मिल्यो न ता सो जाइ ॥४॥

चौपई ॥

रानी बहु उपचार बनाए ॥
बहुत मनुख तिह ठौर पठाए ॥
बहु करि जतन एक दिन आना ॥
काम भोग तिह संग कमाना ॥५॥
बहुत दरब ता कह तिन दीना ॥
ता के मोहि चित कह लीना ॥
इह बिधि सौ तिह भेव द्रिड़ायो ॥
ब्राहमन को तिह भेस धरायो ॥६॥
आप न्रिपति संग कीया गिआना ॥
किय उपदेस पतिहि बिधि नाना ॥
जैसो पुरख दान जग द्यावै ॥
तैसो ही आगे बरु पावै ॥७॥
मै तुहि बार दान बहु कीना ॥
ता ते पति तो सो न्रिप लीना ॥
तुमहौ पुंनि बार बहु कीनी ॥
तब मो सी सुंदरि तिय लीनी ॥८॥
अब जौ पुंन्य बहुरि मुहि करि हो ॥
मो सी त्रिय आगे पुनि बरि हो ॥
धरम करत कछु ढील न कीजै ॥
दिज कौ दै जग मौ जसु लीजै ॥९॥
इह सुनियौ न्रिप के मन आई ॥
पुंन्य करन इसत्री ठहराई ॥
जो रानी के मन महि भायो ॥
वहै जानि दिज बोलि पठायो ॥१०॥
ता कह नारि दान करि दीनी ॥
मूड़ भेद की क्रिया न चीनी ॥

सो लै जात तरुनि कह भयो ॥
मूंडि मूंडि मूरख को गयो ॥११॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्यानो त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥272॥5279॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुक्रित सैन इक सुना नरेसा ॥
जिह को डंड भरत सभ देसा ॥
सुक्रित मंजरी तिह की दारा ॥
जा सम देव न देव कुमारा ॥१॥
अतिभुत सैन साहु सुत इक तह ॥
जा सम दुतिय न उपज्यो महि मह ॥
जगमगात तिह रूप अपारा ॥
जिह सम इंद्र न चंद्र कुमारा ॥२॥
रानी अटकि तवन पर गई ॥
तिह ग्रिह जाति आपि चलि भई ॥
ता सो प्रीति कपट तजि लागी ॥
छूटो कहा अनोखी जागी ॥३॥
बहु बिधि तिन संग भोग कमाना ॥
केल करत बहु काल बिहाना ॥
सुंदर और तहा इक आयो ॥
वहै पुरख रानी कहलायो ॥४॥
वहै पुरख रानी कह भाइसि ॥
काम केल ग्रिह बोलि कमाइसि ॥
प्रथम मित्र तिह ठा तब आयो ॥
रमत निरखि रानी कुररायो ॥५॥
अधिक कोप करि खड़गु निकारियो ॥
रानी राखि जार कह मारियो ॥
आपु भाज पुनि तह ते गयो ॥
तेज भए त्रिय को तन तयो ॥६॥
लिखि पतिया असि ताहि पठाई ॥
तोहि मित्र मुहि तजा न जाई ॥
छिमा करहु इह भूलि हमारी ॥
अब दासी मै भई तिहारी ॥७॥
जौ आगे फिरि ऐस निहरियहु ॥
मोहू सहित मारि तिह डरियहु ॥
भला किया तुम ताहि संघारा ॥
आगे राह मित्र मुहि डारा ॥८॥

दोहरा ॥

पतिया बाचत मूड़ मति फूल गयो मन माहि ॥
बहुरि तहा आवत भयो भेद पछानियो नाहि ॥९॥

चौपई ॥

प्रथम मित्र तिह ठा जब आयो ॥
दुतिय मित्र सौ बाधि जरायो ॥
जिन मेरे मितवा कह मारियो ॥

वहै चाहियत पकरि संघारियो ॥१०॥
अस त्रिय प्रथम भजत भी जा को ॥
इह चरित्र पुनि मारियो ता को ॥
इन अबलन की रीति अपारा ॥
जिन को आवत वार न पारा ॥११॥

CHARITAR २७३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तिहतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥273॥5290॥अफजूं॥*

चौपई ॥

इक अंबसट के देस न्रिपाला ॥
पदुमिनि दे जा के ग्रिह बाला ॥
अप्रमान तिह प्रभा भनिजै ॥
जिह को को पतटर त्रिय दिजै ॥१॥
ता के एक दास घर माही ॥
जिह सम स्याम बरन कहूं नाही ॥
नामाफिक संख्या तिह रहै ॥
मानुख जोनि कवन तिह कहै ॥२॥
चेरी एक हुती ता सौ रति ॥
जा के हुती न कछु घट महि मति ॥
नामाफिक तिन नारि बुलायो ॥
काम भोग मन खोलि मचायो ॥३॥
तब लगि आइ न्रिपति गयो तहा ॥
चेरी रमत दासि संग जहा ॥
लटपटाइ दासी तब गई ॥
चटपट जात सकल सुधि भई ॥४॥
जतन अवर कछु हाथ न आयो ॥
मारि दास उलटो लटकायो ॥
हरे हरे तर आगि जराई ॥
काढत है जनु करि मिमियाई ॥५॥
न्रिपति म्रितक जब दास निहारा ॥
अदभुद ह्वै इह भाति उचारा ॥
क्यो इह हनि तै दिय लटकाई ॥
किह कारन तर आगि जराई ॥६॥
चेरी बाच ॥
मिल्यो बैद मुहि एक न्रिपारा ॥
क्रिया दई तिन मोहि सुधारा ॥
मै इह करी चकितसा ता ते ॥
लीजै सकल ब्रिथा सुनि या ते ॥७॥
खई रोग इह कहियो राज महि ॥
ता ते मारि दास तू इह कहि ॥
करि मिमियाई न्रिपहि खवावै ॥
तब तिह दोख दूर ह्वै जावै ॥८॥
तिह निमित या को मै घायो ॥
मिमियाई को बिवत बनायो ॥
जौ तुम भछन करहु ते कीजै ॥
नातर छाडि आजु ही दीजै ॥९॥
जब इह भाति न्रिपति सुनि पायो ॥

ताहि बैदनी करि ठहरायो ॥
मन महि कहियो भली बिधि कीनी ॥
घर महि नारि रोगिहा दीनी ॥१०॥
धंनि धंनि कहि ताहि बखाना ॥
तेरो गुन हम आजु पछाना ॥
पछम दिसि हम सुनी बनैयत ॥
हमरे देस न ढूंडी पैयत ॥११॥
तुहि जानत मुहि कहत बताई ॥
मिमिआई इह देस बनाई ॥
कहा भयो इक दास संघारा ॥
हमरो रोग बडो तै टारा ॥१२॥

CHARITAR २७४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौहतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥274॥5302॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

बंदर बस तह बासी जहा ॥
हबसी राइ नराधिप तहा ॥
हबस मती ता कै घर रानी ॥
जनु पुर खोजि चौदहूं आनी ॥१॥
हासिम खान पठान इक तहा ॥
जा सम सुंदर कोऊ न कहा ॥
रानी ताहि निरखि उरझानी ॥
बिरह बिकल ह्वै गई दिवानी ॥२॥
रानी जतन अनेक बनाए ॥
छल बल सौ ग्रिह मित्र बुलाए ॥
काम भोग तिह संग कमाना ॥
आसन चुंबन कीए प्रमाना ॥३॥

दोहरा ॥

अनिक भाति भजि मित्र कह गरे रही लपटाइ ॥
जानु निरधनी पाइ धन रहियो हीय सौ लाइ ॥४॥

चौपई ॥

तब राजा ता के ग्रिह आयो ॥
निरखि सेज पर ताहि रिसायो ॥
असि गहि धयो हाथ गहि नारी ॥
इह बिधि सौ हसि बात उचारी ॥५॥
तै राजा इह भेद न जाना ॥
बिनु बूझे असि कोप प्रमाना ॥
प्रथमहि बात जानियै या की ॥
बहुरौ सुधि लीजै कछु ता की ॥६॥
इह है मित्र मछिंदर राजा ॥
आयो न्याइ लहन तव काजा ॥
तपस्या बल आयो इह ठौरा ॥
है सभ तपसिन का सिरमौरा ॥७॥
या संग मित्राचार करीजै ॥

भुगति जुगति बहु बिधि तिह दीजै ॥
भली भली तुहि क्रिया सिखैहै ॥
राज जोग बैठो ग्रिह पैहै ॥८॥
न्रिप ए बचन सुनत पग परा ॥
मित्राचार तवन संग करा ॥
ताहि मछिंद्रा नाथ पछान्यो ॥
मूरख भेव अभेव न जान्यो ॥९॥
बहु बिधि तन पूजा तिह करै ॥
बारंबार पाइ पसु परै ॥
ताहि सही रिखिराज पछाना ॥
सति बचन त्रिय कौ करि जाना ॥१०॥
ताहि मछिंदर करि ठहरायो ॥
त्रिय कह सौपि ताहि उठि आयो ॥
वह ता सौ निति भोग कमावै ॥
मूरख बात न राजा पावै ॥११॥
इह छल साथ जार भजि गयो ॥
अति बिसमै राजा कौ भयो ॥
तब रानी राजा ढिग आई ॥
जोरि हाथ अस बिनै सुनाई ॥१२॥
जिन न्रिप राज आपना त्यागा ॥
जोग करन के रस अनुरागा ॥
सो तेरी परवाहि न राखै ॥
इमि रानी राजा तन भाखै ॥१३॥
सति सति तब राज बखाना ॥
ता को दरस सफल करि माना ॥
भेद अभेद जड़ कछू न पायो ॥
त्रिय संग चौगुन नेह बढायो ॥१४॥१॥

CHARITAR २७५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥275॥5316॥अफजूं॥*

चौपई ॥

संक्रावती नगर इक राजत ॥
जनु संकर के लोक बिराजत ॥
संकर सैन तहा को राजा ॥
जा सम दुतिय न बिधना साजा ॥१॥
संकर दे ता की बर नारी ॥
जनुक आपु जगदीस सवारी ॥
रुद्र मती दुहिता तिह सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥२॥
तहा छबील दास थो छत्री ॥
रूपवान छबि मान अति अत्री ॥
ता पर अटक कुअरि की भई ॥
आठ टूक वा पर ह्वै गई ॥३॥

दोहरा ॥

लगन निगोडी लगि गई छुटित छुटाई नाहि ॥

मत भई मनु मद पीआ मोहि रही मन माहि ॥४॥

चौपई ॥

एक सहचरी तहा पठाई ॥
चित जु हुती कहि ताहि सुनाई ॥
सो चलि सखी सजन पहि गई ॥
बहु बिधि ताहि प्रबोधत भई ॥५॥
अड़िल ॥
तबै छबीलो छैल तहा चलि आइयो ॥
रमियो तरुन बहु भाति कुअरि सुख पाइयो ॥
लपटि लपटि तर जाइ पियरवहि भुजन भरि ॥
हो द्रिड़ आसन दै रहियो न इत उत जाति टरि ॥६॥

दोहरा ॥

एक सुघर दूजे तरुनि त्रितीए सुंदर मीत ॥
बसियो रहत निस दिन सदा पल पल चित जिमि चीति ॥७॥

चौपई ॥

इक दिन मिति इमि बचन बखाना ॥
तव पित के हौ त्रास त्रसाना ॥
जौ तुहि भजत न्रिपति मुहि पावै ॥
पकरि काल के धाम पठावै ॥८॥
बिहसि कुअरि अस ताहि बखाना ॥
तै इसत्रिन के चरित न जाना ॥
पुरख भेख तुहि सेज बुलाऊ ॥
तौ मै तुमरी यार कहाऊ ॥९॥
रोमनासनी ताहि लगाई ॥
सकल समस तिह दूरि कराई ॥
कर महि ताहि तंबूरा दीया ॥
गाइन भेस सजन को कीया ॥१०॥
पिति बैठे तिह बोलि पठायो ॥
भले भले गीतान गवायो ॥
सुनि सुनि नाद रीझि न्रिप रहियो ॥
भली भली गाइन इह कहियो ॥११॥
संकर दे इह भाति उचारी ॥
सुन गाइन तै बात हमारी ॥
पुरख भेस धरि तुम निति ऐयहु ॥
इह ठा गीति मधुरि धुनि गैयहु ॥१२॥
यौ सुनि पुरख भेस तिन धरा ॥
प्राची दिसा चाद जन चरा ॥
सकल लोग इसत्री तिह जानै ॥
त्रिया चरित्र न मूड़ पछानै ॥१३॥
अड़िल ॥
मित्र पुरख कौ भेस धरे नित आवई ॥
आन कुअरि सौ काम कलोल कमावई ॥
कोऊ न ता कह रोकत गाइन जानि कै ॥
हो त्रिय चरित्र कह मूड़ न सकहि पछानि कै ॥१४॥

दोहरा ॥

इह छल सौ ता सौ सदा निसु दिन करत बिहार ॥
दिन देखत सभ को छलै कोऊ न सकै बिचार ॥१५ ॥

चौपई ॥

संकर देव न ताहि पछानै ॥
दुहिता की गाइन तिह मानै ॥
अति स्यानप ते कैफन खावै ॥
महा मूड़ निति मूंड मुंडावै ॥१६ ॥
कहा भयो जो चतुर कहाइसि ॥
भूलि भाग भौदू न चड़ाइसि ॥
अमली भलो खता जु न खावै ॥
मूंड मूंड सोफिन को जावै ॥१७ ॥
संकर सैन न्रिपहि अस छला ॥
कह किय चरित संकरा कला ॥
तिह गाइन की दुहिता गनियो ॥
मूरख भेद अभेद न जनियो ॥१८ ॥

CHARITAR २७६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छिहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥276॥5334॥अफजूं॥*

अड़िल ॥
सहिर मुरादाबाद मुगल की चंचला ॥
हीन करी जिह रूप चंद्रमा की कला ॥
रूप मती ता के सम सोई जानियै ॥
हो तिह समान तिहु लोक न और प्रमानियै ॥१ ॥

चौपई ॥

दूसरि एक तिसी की नारी ॥
तिह सम होत न ताहि पियारी ॥
तिन इह जानि रोस जिय ठानो ॥
और पुरख संग कीया यरानो ॥२ ॥

दोहरा ॥

जैसे वा त्रिय की हुती सवतिन की अनुहारि ॥
तैसो ई तिन खोजि नर तिह संग कीया पा॥ ॥३ ॥

चौपई ॥

त्रिय इक दिन तिह धाम बुलाइसि ॥
काम केल तिह संग कमाइसि ॥
सवतिह फासि डारि गर मारियो ॥
जाइ मुगल तन ऐस उचारियो ॥४ ॥
अदभुत बात नाथ इक भई ॥
तुमरी नार पुरखु ह्वै गई ॥
ऐसी बात सुनी नहि हेरी ॥
जो गति भई नारि की तेरी ॥५ ॥
सुनि ए बचन चक्रित जड़ भयो ॥
उठि तिह आपु बिलोकन गयो ॥

ता के लिंग छोरि जौ लहा ॥
कहियो भयो जो मुहि त्रिय कहा ॥६॥
अति चिंतातुर चित महि भयो ॥
बूडि सोक सागर महि गयो ॥
ऐ इलाह तैं इह कस कीना ॥
इसत्री कौ मानस कर दीना ॥७॥
यह मो को थी अधिक पियारी ॥
अब इह दैव पुरख करि डारी ॥
दूसर नारि इसै दे डारूं ॥
भेद न दूसर पास उचारूं ॥८॥
निसचै बात इहै ठहरई ॥
पहिली नारि तिसै लै दई ॥
भेद अभेद जड़ कछू न पायो ॥
इह छल अपनो मूंड मुंडायो ॥९॥

दोहरा ॥

पुरख भई निजु नारि लहि ताहि दई निजु नारि ॥
भेद अभेद की बात कौ सका न मूड़ बिचारि ॥१०॥

चौपई ॥

इसत्री पुरख भई ठहिराई ॥
इसत्री ता कह दई बनाई ॥
दुतिय न पुरखहि भेद जतायो ॥
इह छल अपनो मूंड मुंडायो ॥११॥

CHARITAR २७७ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥277॥5345॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सहर जहानाबाद बसत जह ॥
साहिजहा जू राज करत तह ॥
दुहित राइ रौसना ता के ॥
और नारि सम रूप न वा के ॥१॥
साहिजहा जब ही मरि गए ॥
औरंग साह पातिसाह भए ॥
सैफदीन संग या को प्यारा ॥
पीर अपन करि ताहि बिचारा ॥२॥
ता के संग रोसना राई ॥
बिबिध बिधन तन प्रीतुपजाई ॥
काम भोग तिह संग कमायो ॥
ताहि पीर अपनो ठहिरायो ॥३॥
औरंग साह भेद नहि जानै ॥
वहै मुरीद भई तिह मानै ॥
पीय समुझि तिह भोग कमावै ॥
पीर भाखि सभहूंन सुनावै ॥४॥
इक दिन पीर गयो अपने घर ॥
ताहि बिना तिह परत न छिन कर ॥

रोगनि तन अपने ठहराई ॥
वा पहि बैठि साढनी आई ॥५॥
ता के रहत बहुत दिन भई ॥
बहुरौ सहिर दिली महि गई ॥
भई अरोगनि भाखि अनाई ॥
बात भेद की किनूं न पाई ॥६॥
भ्रात भए इह भाति उचारी ॥
रोग बडा प्रभु हरी हमारी ॥
बैदन अधिक इनाम दिलायो ॥
भेद अभेद न औरंग पायो ॥७॥

CHARITAR २७८ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥278॥5352॥अफजूं॥

चौपई ॥

प्रेमावती नगर इक राजत ॥
प्रेम सैन जह न्रिपति बिराजत ॥
प्रेम मंजरी तिह ग्रिह दारा ॥
जा सम दिति न अदिति कुमारा ॥१॥
तहा साहु के पूत सुघर अति ॥
जा सम राज कुअर न कहूं कत ॥
जा की प्रभा कहन नहि आवै ॥
हेरै पलक न जोरी जावै ॥२॥
जब रानी तिह की दुति लही ॥
ऐसी भाति चित महि कही ॥
कै इह के संग भोग कमाऊ ॥
नातर ह्वै जोगनि बन जाऊ ॥३॥
एक सहचरी तहा पठाई ॥
ताहि प्रबोधि तहा लै आई ॥
बनि ठनि बैठ चंचला जहा ॥
लै आई सहचरि तिह जहा ॥४॥
आतुर कुअरि ताहि लपटाई ॥
बहु बिधि भज्यो मित्र सुखदाई ॥
चतुर पहर रजनी रति मानी ॥
करत काम की केल कहानी ॥५॥
अटकि गई अबला तिह संगा ॥
रंगित भई उही के रंगा ॥
ता कह ऐस प्रबोध द्रिड़ायो ॥
आपु न्रिपहि चलि सीस झुकायो ॥६॥
जो मुहि भयो सुपन सुनु राई ॥
सोवत रुद्र जगाइ पठाई ॥
आठ बरसि हम सौ तुम सोवौ ॥
रैनि दिवस मोरे ग्रिह खोवौ ॥७॥
पटी बाधि द्रिगन दुहूं सोवौ ॥
आठ बरसि लगि जगहि न जोवौ ॥
उपजो पूत धाम बिन सासा ॥
सकल खलन को ह्वै है नासा ॥८॥
किलबिख एक न तव तन रहै ॥

मुहि सिव सुपन बिखै इमि कहै ॥
अप्रमान धन भरे भंडारा ॥
सकल काज सभ होइ तिहारा ॥९॥
राजै सति इही द्रिड़ कीनी ॥
पटी बाधि दुहूं द्रिग लीनी ॥
आठ बरस रानी संग सोयो ॥
चित जु हुतो सकल दुखु खोयो ॥१०॥
आखै बाधि तहा न्रिप सोवै ॥
आवत जात न काहू जोवै ॥
उत रानी कह जो नर भावै ॥
ताहि तुरत ग्रिह बोलि पठावै ॥११॥
बहु बिधि करै केल संग ता के ॥
जो नर रुचै चित त्रिय वा के ॥
बात करत पति सो इत जावै ॥
उतै जार तर परी ढुकावै ॥१२॥
जो त्रिय चहै वहै तह आवै ॥
खैचि तरुनि तरु ऐंचि बजावै ॥
बहु नर जा सौ भोग कमाही ॥
एको पूत होइ ग्रिह नाही ॥१३॥
कितक दिनन महि सुत इक जायो ॥
न्रिप को साच हिये महि आयो ॥
आगै जो त्रिय कहै सु मानै ॥
भेद अभेद न मूड़ पछानै ॥१४॥

CHARITAR २७९ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥279॥5366॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बिसन चंद इक न्रिपत फिरंगा ॥
जा के दिपत अधिक छबि अंगा ॥
स्री जुगराज मंजरी रानी ॥
सुंदरि भवन चतुरदस जानी ॥१॥
सुक्रित नाथ जोगी इक तहा ॥
स्री जुगराज मती त्रिय जहा ॥
जोगी द्रिसटि जबै तिह आयो ॥
सदन चंचलै बोलि पठायो ॥२॥

दोहरा ॥

काम भोग ता सो कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥
पकरि भुजन आसन तरे जात भई लपटाइ ॥३॥

चौपई ॥

बहु बिधि भोग ताहि तिन कीया ॥
मोहि ह्रिदै रानी को लीया ॥
त्रिय ता सौ अति हित उपजायो ॥
राजा कह चित ते बिसरायो ॥४॥
त्रिय ऐसी बिधि चितहि बिचारा ॥

इह राजा कह चहियत मारा ॥
लै तिह राज जोगियहि दीजै ॥
कछू चरित्र ऐसि बिधि कीजै ॥५॥
सोवत समै न्रिपति कह मारियो ॥
गाडि ताहि इह भाति उचारियो ॥
राजै राज जोगियहि दीना ॥
आपन भेस जोग को लीना ॥६॥
जोग भेस धारत न्रिप भए ॥
दै इह राज बनहि उठ गए ॥
हमहूं राज जोगियहि दै है ॥
नाथ गए जित तही सिधै है ॥७॥
सति सति सभ प्रजा बखानियो ॥
जो न्रिप कहियो वहै हम मानियो ॥
सभहिन राज जोगयहि दीना ॥
भेद अभेद मूड़ नहि चीना ॥८॥

दोहरा ॥

मारि न्रिपति कह चंचलै कियो आपने काज ॥
सकल प्रजा डारी पगन दै जोगी कह राज ॥९॥

चौपई ॥

इह बिधि राज जोगियहि दीया ॥
इह छल सौ पति को बध कीया ॥
मूरख अब लग भेद न पावै ॥
अब तक आइ सु राज कमावै ॥१०॥

CHARITAR २८० *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ असी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥280॥5376॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बिजै नगर इक राइ बखनियत ॥
जा को त्रास देस सभ मनियत ॥
बिजै सैन जिह नाम न्रिपति बर ॥
बिजै मती रानी जिह के घर ॥१॥
अजै मती दूसरि तिह रानी ॥
जा के कर न्रिप देहि बिकानी ॥
बिजै मती के सुत इक धामा ॥
स्री सुलतान सैन तिह नामा ॥२॥
बिजै मती को रूप अपारा ॥
जा संग नही न्रिपति को प्यारा ॥
अजै मती की सुंदरि काया ॥
जिन राजा को चित लुभाया ॥३॥
ता के रहत रैनि दिन परा ॥
जैसी भाति गोर महि मरा ॥
दुतिय नारि के धाम न जावै ॥
ता ते तरुनि अधिक कुररावै ॥४॥
आग्या चलत तवन की देसा ॥

रानी भई न्रिपति के भेसा ॥
यहि रिसि नारि दुतिय जिय राखी ॥
बोलिक बैद प्रगट असि भाखी ॥५॥
या राजा कह जु तै खपावैं ॥
मुख मागै मो ते सो पावैं ॥
तब चलि बैद न्रिपति पहि गयो ॥
रोगी बपु तिह को ठहरयो ॥६॥
जो तुम कहो तु करो उपाई ॥
ज्यों त्यों कहि तिह बरी खवाई ॥
रोगी भयो अरोगी तन सौ ॥
भेद अभेद न पावत जड़ सौ ॥७॥
भछत बरी पेट तिह छूटा ॥
सावन जान पनारा फूटा ॥
दूसरि बरी थंभ के काजै ॥
जोरावरी खवाई राजै ॥८॥
ता ते अधिक पेट छुटि गयो ॥
जा ते बहु बिहबल न्रिप भयो ॥
संन भयो इह बैद उचारा ॥
इह बिध किय उपचार बिचारा ॥९॥
दस तोले अहिफेन मंगाई ॥
बहु बिखि वा के संग मिलाई ॥
धूरा कीया तवन के अंगा ॥
चाम गयो ता के तिह संगा ॥१०॥
हाइ हाइ राजा जब करै ॥
तिमि तिमि बैद इह भाति उचरै ॥
या कहु अधिक न बोलन देहू ॥
मूंदि बदन राजा को लेहू ॥११॥
जिमि जिमि धूरो तिह तन परै ॥
हाइ हाइ तिम न्रिपति उचरै ॥
भेद अभेद न किनहूं चीनो ॥
इह छल प्रान तवन को लीनो ॥१२॥
इह छल साथ न्रिपति कह मारा ॥
अपने छत्र पुत्र सिर ढारा ॥
सभ सौअन कह देत निकारियो ॥
भेद अभेद न किनू बिचारियो ॥१३॥

CHARITAR २८१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इकासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥281॥5389॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अमी करन इक सुना न्रिपाला ॥
अमर कला जा के ग्रिह बाला ॥
गड़ सिराज को राज कमावै ॥
सीराजी जग नाम कहावै ॥१॥
असुर कला दूसरि ता की त्रिय ॥
निसि दिन रहत न्रिपति जा मै जिय ॥
अमर कला जिय माझ रिसावै ॥
असुर कलहि पिय रोज बुलावै ॥२॥

एक बनिक कौ लयो बुलाई ॥
मदन क्रीड़ तिह साथ कमाई ॥
अनद कुअर तिह नर को नामा ॥
जा कौ भजा न्रिपति की बामा ॥३॥
असुर कला कौ निजु कर घायो ॥
मरी नारि तब पतिहि सुनायो ॥
तर तखता के मित्रहि धरा ॥
ता पर बडो अडंबर करा ॥४॥
तर तखता के मित्र दुरायो ॥
ता पर सवति लोथ कहि पायो ॥
भेद अभेद न किनूं बिचारा ॥
इह छल अपनो यार निकारा ॥५॥

दोहरा ॥

सवति संघारी पति छला म्रितहि लयो उबारि ॥
भेद किसू पायो नही धंन सु अमर कुमारि ॥६॥

CHARITAR २८२ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बिआसी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥282॥5395॥अफजूं॥

चौपई ॥

सहिर पलाऊ एक न्रिपारा ॥
जिह धनि भरे सकल भंडारा ॥
किंन्र मती तिह राज दुलारी ॥
जानुक चंद्र लई उजियारी ॥१॥
बिक्रम सिंघ साहु सुत इक तह ॥
जा सम सुंदर दुतिय न महि मह ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
सुर नर असुर निरखि मन लाजै ॥२॥
किंन्र मती वा सौ हित कियौ ॥
ताहि बोलि ग्रिह अपने लियो ॥
काम भोग ता सौ द्रिड़ किया ॥
चित को सोक दूरि कर दिया ॥३॥
रानी भोग मित्र को रसि कै ॥
इह बिधि बचन बखान्यो हसि कै ॥
तुम हम कह लै संग सिधावहु ॥
पिय चरित्र कछु ऐस बनावहु ॥४॥
मित्र कहियो मै कहौ सु करियहु ॥
भेद पुरख दूसर न उचरियहु ॥
रुद्र भवन पूजन तुम जै हौ ॥
तब ही हितू हितू कह पै हौ ॥५॥
पति तन भाखि देहरे गई ॥
तह ते जात मित्र संग भई ॥
किनहूं पुरख भेद नहि जाना ॥
अस राजा तन बचन बखाना ॥६॥
रानी रुद्र भवन जब गई ॥
सिव जू बिखै लीन सो भई ॥

तिन साजुज मुकति कह पायो ॥
जनम मरन को ताप मिटायो ॥७॥
न्रिप सुनि रुद्र भगति अनुरागा ॥
धनि धनि त्रियहि बखानन लागा ॥
दुहकर करम कीआ जिन दारा ॥
पलि पलि प्रति ता के बलिहारा ॥८॥

CHARITAR २८३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तरासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥283॥5403॥अफजूं॥*

चौपई ॥

दछनि सैन दछनी राजा ॥
दछनि दे रानी सिरताजा ॥
जा सम और न दूजी रानी ॥
दछिन वती बसत रजधानी ॥१॥
दछिनी राइ एक तह चाकर ॥
रूपमान जनु दुतिय दिवाकर ॥
ता की जात प्रभा नहि कही ॥
जानुक फूलि चंबेली रही ॥२॥
रूप तवन को दिपत अपारा ॥
तिह आगे क्या सूर बिचारा ॥
सोभा कही न हम ते जाई ॥
सकल त्रिया लखि रहत बिकाई ॥३॥
रानी दरस तवन को पायो ॥
पठै सहचरी धाम बुलायो ॥
काम केल ता सौ हसि मानी ॥
रमत रमत सभ निसा बिहानी ॥४॥
जैसे हुतो न्रिपति के रूपा ॥
तैसो ता को हुतो सरूपा ॥
जा सौ अटक कुअरि की भई ॥
न्रिप की बात बिसरि करि गई ॥५॥
ता सौ हित रानी को भयो ॥
राजा साथ हेतु तजि दयो ॥
मदरा अधिक न्रिपति कह प्रयायो ॥
राज सिंघासन जार बैठायो ॥६॥
मत भए न्रिप सो धन पायो ॥
बाधि म्रित के धाम पठायो ॥
ता को प्रजा न्रिपति करि माना ॥
राजा कह चाकर पहिचाना ॥७॥
दुहूंअन की एकै अनुहारा ॥
राव रंक नहि जात बिचारा ॥
ता कौ लोग न्रिपति करि मानै ॥
लजत बचन न न्रिपति बखानै ॥८॥

दोहरा ॥

रंक राज ऐसे करा दिया रंक कौ राज ॥
ह्वै अतीत पति बन गयो तजि गयो सकल समाज ॥९॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौरासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥284॥5412॥अफजूं॥*

भुजंग प्रयात छंद ॥

हुतो एक राजा प्रजा सैन नामा ॥
प्रजा पालनी धाम ता के सु बामा ॥
प्रजा लोग जा की सभै आनि मानै ॥
तिसै दूसरो जान राजा प्रमानै ॥१॥
सुधा सैन नामा रहै भ्रित ता के ॥
रहै रीझि बाला लखै नैन वा के ॥
न ह्वैहै न है न बिधाता बनायो ॥
नरी नागनी गंध्रबी को न जायो ॥२॥

चौपई ॥

बनिक एक धनवान रहत तह ॥
प्रजा सैन न्रिप राज करत जह ॥
सुमति मती ता की इक कंन्या ॥
धरनी तल के भीतर धंन्रया ॥३॥
सुधा सैन तिन जबै निहारा ॥
हरि अरि सर ता के तन मारा ॥
पठै सहचरी ताहि बुलायो ॥
सो नर धाम न वा के आयो ॥४॥
नाहि नाहि जिमि जिमि वह कहै ॥
तिमि तिमि हठि इसत्री कर गहै ॥
अधिक दूतका तहा पठावै ॥
क्योहूं धाम मित्र नहि आवै ॥५॥
ज्यों ज्यों मित्र न आवै धामा ॥
त्यों त्यों अति ब्याकुल ह्वै बामा ॥
बहु दूतिन ते धाम लुटावै ॥
पल पल प्रति तिह धाम पठावै ॥६॥
साह सुता बहु बिधि करि हारी ॥
सुधा सैन सौ भई न यारी ॥
तब अबला इह मंत्र पकायो ॥
इक दूती कह तहा पठायो ॥७॥
चली चली सहचरि तह गई ॥
जिह ग्रिह सुधि मितवा की भई ॥
पकरि भुजा ते सोत जगायो ॥
चलहु अबै न्रिप त्रियहि बुलायो ॥८॥
मूरख कछू बात नहि पाई ॥
सहचरि तहा संग करि ल्याई ॥
बैठी सुता साहु की जहा ॥
लै आई मितवा कह तहा ॥९॥
वहि मूरख ऐसे जिय जाना ॥
साहु सुता को छल न पछाना ॥
रानी अटकि सु मुहि पर गई ॥
ता ते हमै बुलावत भई ॥१०॥
ता के साथ भोग मै करि हौ ॥
भाति भाति के आसन धरि हौ ॥

न्रिप नारी कहि अधिक रिझै हौ ॥
जो मुखि मंगि हौ सोई पै हौ ॥११॥
साह सुता सो कीना संगा ॥
लखत भयो न्रिप की अरधंगा ॥
मूरख भेद अभेद न पायो ॥
इह छल अपुनो मूंड मुडायो ॥१२॥

दोहरा ॥

साहु सुता कौ न्रिप त्रिया जानत भयो मन माहि ॥
हरख मान ता कौ भजा भेव पछाना नाहि ॥१३॥

CHARITAR २८५ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥285॥5425॥अफजूं॥*

भुजंग प्रयात छंद ॥

दिसा बारुणी मै रहै एक राजा ॥
सु वा तुलि दूजो बिधातै न साजा ॥
बिख्या नाम ता की सुता एक सोहै ॥
सुरी आसुरी नागिनी तुलि को है ॥१॥
प्रभा सैन नामा रहै ताहि ताता ॥
तिहूं लोक मै बीर बाको बिख्याता ॥
तहा एक आयो बडो छत्रधारी ॥
सभै ससत्र बेता सु बिद्रयाधिकारी ॥२॥
प्रभा सैन आयो जहा बाग नीको ॥
प्रभा हेरि जा की बढयो नंद जी को ॥
तहा बोलि सूरहि रथहि ठाढ कीनो ॥
पियादे भये पैंड ता को सु लीनो ॥३॥
जबै बाग नीको सु तौनो निहारियो ॥
इहै आपने चित माही बिचारियो ॥
कछू काल ईहा अबै सैन कीजै ॥
घरी द्वैक कौ ग्राम को पंथ लीजै ॥४॥
खरे बाज कीने घरी द्वैक सोयो ॥
सभै आपने चित को सोक खोयो ॥
तहा राज कंन्या बिख्या नाम आई ॥
बिलोक्यो तिसै सुधि तौने न पाई ॥५॥
तबै राज कंन्या ह्रिदै यौ बिचारियो ॥
प्रभा सैन कौ सोवते जौ निहारियो ॥
त्रिया मै इसी की इहै नाथ मेरो ॥
बरौगी इसै मै भई आजु चेरो ॥६॥
न्रिसंसै इहै चित मै बाल आनी ॥
इसी कौ बरौ कै तजौ राजधानी ॥
तहा एक पत्री सु डारी निहारी ॥
इहै चंचला चित माही बिचारी ॥७॥
चहियो पत्रका कौ सु बाचौ उघारौ ॥
डरौ बेद की सासना कौ बिचारौ ॥
परी पत्रिका कौ जो कोऊ उघारै ॥
बिधाता उसै नरक कै माझ डारै ॥८॥

रही संकि लीनी तऊ हाथ पाती ॥
लई लाइ कै मित्र की जानि छाती ॥
कबै हाथ माही छिपावै उघारै ॥
मनो निरधनी द्रब पायो निहारै ॥९॥
तबै चंचला चित मै यौ बिचारी ॥
तिसै जानि कै नाथ पाती उघारी ॥
जोऊ नाथ की जानि पाती उघारै ॥
न ता कौ बिधाता महा नरक डारै ॥१०॥
हुतो एक राजा तहा छत्रधारी ॥
प्रभा सैन के प्रान को हंतकारी ॥
तिनिछिआ इहै चित के माझ कीनी ॥
सोई लिख्य कै पत्र के मधि दीनी ॥११॥
बिख्या नाम जा की सुपुत्री अपारा ॥
तिसी ओर लिखि पत्रिकै माझ डारा ॥
प्रभा सैन आयो जबै जानि लीजो ॥
बिखै लै तिसी काल मै तासु दीजो ॥१२॥
रही पत्रि को बाच कै चौकि चितै ॥
कियो मंत्र इक मित्र की रछ हितै ॥
लियो आंजि कै अंजनै हाथ प्यारी ॥
बिख्या बिखि कै दैन ता कौ सु डारी ॥१३॥
रही जात बाला तबै राज जागे ॥
वहै पत्रिका हाथ लै कै नुरागे ॥
पिता तौन के हाथ लै के सु दीनी ॥
सुन्यो मित्र को नामु लै भूप चीनी ॥१४॥
जबै पत्रिका छोरि कै भूप बाची ॥
इहै बात राजै लिखी मित्र साची ॥
बिख्या बाचि पत्री उसी काल दीजो ॥
घरी एक बेलंब राजा न कीजो ॥१५॥
बिख्या राज कंन्या महाराज दीनी ॥
कहा चंचला चेसटा चार कीनी ॥
कछू भेद ता को सु राजै न पायो ॥
प्रभा सैन राजा तिसै ब्याहि ल्यायो ॥१६॥

CHARITAR २८६ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छिआसी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥286॥5441॥अफजूं॥

दोहरा ॥

घाटम पुर कुररे बिखै एक मुगल की बाल ॥
भ्राता साथ चरित्र तिन कियो सु सुनहु न्रिपाल ॥१॥

चौपई ॥

सौदा निमित भ्रात तिह गयो ॥
खाटि कमाइ अधिक धन लयो ॥
निसि कह धाम भगनि को आयो ॥
कंठ लागि तिन मोह जतायो ॥२॥
अपनी सकल ब्रिथा तिन भाखी ॥
जो जो बितई सो सो आखी ॥

जु धन हुतो संग खाटि कमायो ॥
सो भगनी कह सकल दिखायो ॥३॥
मरियम बेगम ता को नामा ॥
भाई कौ मारा जिन बामा ॥
सभ ही दरब छीनि करि लीना ॥
आपु चरित्र सु ऐसे कीना ॥४॥

दोहरा ॥

भगनी दरब बिलोकि कै लोभ सिंध के माहि ॥
नख सिख लौ बूडत भई सुधि न रही जिय माहि ॥५॥

चौपई ॥

भ्रात वात भगनी न बिचारा ॥
फासी डारि कंठि महि मारा ॥
लीना लूटि सकल तिह धन कौ ॥
करियो अमोह आपने मन कौ ॥६॥
प्रात भए रोवन तब लागी ॥
जब सभ प्रजा गाव की जागी ॥
म्रितक बंधु तब सभन दिखायो ॥
मरियो आजु इह साप चबायो ॥७॥
भली भात तन ताहि गडायो ॥
यौ काजी तन आपु जतायो ॥
साज बाजि इक या को घोरो ॥
और जु कछु या कौ धनु थोरो ॥८॥
सो इह त्रियहि पठावन कीजै ॥
फारखती हम कौ लिखि दीजै ॥
कबुज लिखा काजी ते लई ॥
कछु धन म्रितक त्रिया कह दई ॥९॥

दोहरा ॥

इह छल अपनो भ्रात हति लीनी कबुजि लिखाइ ॥
निसा करी तिह नारि की सभ धन गई पचाइ ॥१०॥

CHARITAR २८७ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ सतासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥287॥5451॥अफजूं॥

चौपई ॥

यूना सहिर रूम महि जहा ॥
देव छत्र राजा इक तहा ॥
छैल देइ दुहिता ता के इक ॥
पड़ी ब्याकरन कोक सासत्रनिक ॥१॥
अजित सैन तिह ठा इक छत्री ॥
तेजवान बलवान धरत्री ॥
रूपवान बलवान अपारा ॥
पूरो पुरख जगत उजियारा ॥२॥
तेजवान दुतिवान अतुल बल ॥

अरि अनेक जीते जिन दलि मलि ॥
आवत ताहि बिलोक्यो रानी ॥
दुहिता सो इह भाति बखानी ॥३॥
जौ इह धाम न्रिपति के होतो ॥
तौ तुमरे लाइक बर को थो ॥
अब मै अस कह करौ उपाऊ ॥
ऐसो बर तुहि आन मिलाऊ ॥४॥
अड़िल ॥
तनिक कुअरि के धुनि जब असि कानन परी ॥
देखि रही तहि ओर मैन अरु मद भरी ॥
मोहि रही मन माहि न प्रगट जताइयो ॥
हो पल पल बलि बलि जाती दिवस गवाइयो ॥५॥

चौपई ॥

रैनि भए सहचरी बुलाई ॥
चित ब्रिथा तिह सकल सुनाई ॥
जौ तिह दै मिलाइ मुहि प्यारी ॥
तौ जानौ तू हितू हमारी ॥६॥
कहियो कुअरि सहचरि सौ जाना ॥
भेद न दूसर कान बखाना ॥
ततछिन दौर तवन पहि गई ॥
बहु बिधि ताहि प्रबोधत भई ॥७॥
बहु बिधि ताहि प्रबोध जताई ॥
ज्यों त्यों ताहि तहा लै आई ॥
मारग कुअरि बिलोक जहा ॥
लै पहुची मितवा कह तहा ॥८॥
लखि तिह कुअरि प्रफुलित भई ॥
जनुक राक नवो निधि पई ॥
बिहसि बिहसि तिह कंठ लगायो ॥
मन मानत को भोग कमायो ॥९॥
ता को दूर दरिद्र दिया करि ॥
सीस रही धर सखी पगन पर ॥
तवप्रसाद मै मित्रहि लहियो ॥
कहा कहो तुहि जात न कहियो ॥१०॥
अब कछु ऐस चरित्र बनैये ॥
जा ते सदा मित्र कह पैये ॥
सोवौ सदा संग लै ता कौ ॥
चीनि सकै कोऊ नहि वा कौ ॥११॥
त्रिय चरित्र अस चित बिचारे ॥
सु मै कहत हो सुनहु प्यारे ॥
ताहि छपाइ सदन महि राखा ॥
रानी सौ ऐसी बिधि भाखा ॥१२॥
रानी जो तुम पुरख सराहा ॥
ता कह स्री बिसुनाथन चाहा ॥
वा को कालि काल ह्वै गयो ॥
या सखि के मुख ते सुनि लयो ॥१३॥
हम सभहिन जो ताहि सराहा ॥
ता ते तिसु बिसुनाथन चाहा ॥
जनियत द्रिसटि त्रियन की लागी ॥
ता ते ताहि म्रितु लै भागी ॥१४॥

रानी सोक तवन को कियो ॥
ता दिन अंन न पानी पियो ॥
साच मरियो जान्यो जिय ता कौ ॥
भेद अभेद न पायो या कौ ॥१५॥
जस तुम सुंदर याहि निहारियो ॥
भयौ न है ह्वैहै न बिचारियो ॥
या की बहिनि एक तिह घर मै ॥
छाडि अयो जिह भ्रात नगर मै ॥१६॥
मुहि तुम कहो तु तह मै जाऊ ॥
वा की खोजि बहिनि मै लयाऊ ॥
सो अति चतुरि सभन गुन आगरि ॥
आणि दिखाऊ तुहि न्रिप नागरि ॥१७॥
भली भली सभ त्रिय बखानी ॥
भेद अभेद गति किनूं न जानी ॥
खरची अधिक तवन कह दई ॥
ततछिन करि कै बिदा पठई ॥१८॥

दोहरा ॥

बिदा भई बहु दरब लै गई कुअर के धाम ॥
आठ मास दुरि तह रही लखी न दूसर बाम ॥१९॥

चौपई ॥

नवमो मास चड़त जब भयो ॥
ता कह भेस नारि को कयो ॥
लै रानी कह ताहि दिखायो ॥
सभहिन हेरि हियो हुलसायो ॥२०॥
जो मै कहो सुनहु न्रिप नारी ॥
इह सौपहु तुम अपनि दुलारी ॥
राजा साथ न भेद बखानो ॥
मेरो बचन सति कर मानो ॥२१॥
जो इस कौ राजा लहि लै है ॥
भूलि तिहारो धाम न ऐ है ॥
लै या कौ करि है निजु नारी ॥
मुख बाए रहि हो तुम प्यारी ॥२२॥
भली कही तुहि ताहि बखानी ॥
त्रिय चरित्र गति किनूं न जानी ॥
तिह को भवन सुता के राखा ॥
भेद न मूल न्रिपति तन भाखा ॥२३॥
चहत हुती न्रिप सुता सु भई ॥
इह छल सो सहचरि छलि गई ॥
ता कह प्रगट धाम महि राखा ॥
न्रिपहि भेद कोऊ त्रियहि न भाखा ॥२४॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तिह चंचला लहियो आपनो यार ॥
सभ त्रिय मुख बाए रही सका न कोऊ बिचार ॥२५॥
सुर मुनि नाग भुजंग सभ नर बपुरे किन माहि ॥
देव अदेव त्रियान के भेद पछानत नाहि ॥२६॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ अठासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥288॥5477॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सुना सहिर बगदाद के दछिन सैन नरेस ॥
दछिन दे ता के तरुनि रहत सु रति के भेस ॥१॥

चौपई ॥

कमल केतु इक साहु बसत तह ॥
जा सम दूसर भयो न महि मह ॥
तेजवान बलवान धरत्री ॥
जाहिर चहूं ओर महि छत्री ॥२॥

दोहरा ॥

जब रानी तिह कुअर को रूप बिलोका नैन ॥
रही मगन ह्वै मैन मद बिसर गई सुधि ऐन ॥३॥

चौपई ॥

चतुर सहचरी कुअरि हकारी ॥
आनि कुअरि तन कीअस जुहारी ॥
चित को भेद सकल तिह दीयो ॥
वा के तीर पठावन कीयो ॥४॥
बार न लगी सखी तह आई ॥
आन कुअर तन ब्रिथा जताई ॥
तो पर अटकत न्रिप त्रिय भई ॥
छूटहु कसब लगन लगि गई ॥५॥
अब वह धाम क्रितारथ कीजै ॥
ह्यां ते चलि वहि ग्रिह पगु दीजै ॥
उठहु कुअर जू बिलम न लैयै ॥
राज तरुनि के सेज सुहैयै ॥६॥
जिह तिह बिध ता को मन लीना ॥
आनि मिलाइ कुअरि कह दीना ॥
भाति भाति तिह ताहि रिझायो ॥
चारि पहर निसि भोग कमायो ॥७॥
केल करत निसि सकल बिहानी ॥
करत काम की कोटि कहानी ॥
भाति भाति के आसन करि कै ॥
काम तपत सभ ही कहि हरि कै ॥८॥
भोर भयो रजनी जब गई ॥
भाति भाति चिरई चुहचई ॥
स्रमित भए दोऊ केल कमाते ॥
एकहि सेज सोए रस माते ॥९॥
सोवत त्याग नीदि जब जगे ॥
मिलि करि केल करन तब लगे ॥
आसन करत अनेक प्रकारा ॥
कोकहुं ते दस गुन बिसतारा ॥१०॥
केल कमात अधिक रस मातै ॥

भूलि गई घर की सुधि सातै ॥
चित अपनो अस कीया बिचारा ॥
प्रगट मित्र के साथ उचारा ॥११॥
सुनहु बात प्यारे तुम मेरी ॥
दासी भई आज मै तेरी ॥
मेरे तोट दरब की नाही ॥
हम तुम आवहु कहूं सिधाही ॥१२॥
ऐसो जतन मित्र कछु करियै ॥
अपने लै मुहि संग सिधरियै ॥
अतिथ भेस दोऊ धरि लैहैं ॥
इक ठा बैठ खजाना खैहैं ॥१३॥
जार कहियो अबला सौ ऐसे ॥
तुहि निकसे लै करि संगि कैसे ॥
ठाढे ईहा अनिक रखवारे ॥
नभ के जात पखेरू मारै ॥१४॥
जौ तुहि मुहि कौ न्रिपति निहारै ॥
दुहूंअन ठौर मारि कर डारै ॥
ता ते तुम अस करहु उपावै ॥
मुर तुर भेद न दूसर पावै ॥१५॥
सूर सूर करि गिरी तरुनि धरि ॥
जानुक गई साचु दैकै मरि ॥
हाइ हाइ कह नाथ उचाई ॥
बैद लए सभ निकटि बुलाई ॥१६॥
सभ बैदन सौ न्रिपति उचारा ॥
या को करहु कछू उपचारा ॥
जा ते रानी मरै न पावै ॥
बहुरि हमारी सेज सुहावै ॥१७॥
बोलत भी इक सखी सियानी ॥
जिन त्रिय की रति क्रिया पछानी ॥
एक नारि बैदनी हमारे ॥
जिह आगे क्या बैद बिचारे ॥१८॥
जौ राजा तुम ताहि बुलावो ॥
ताही ते उपचार करावो ॥
रानी बचै बिलंब न लावै ॥
बहुरि तिहारी सेज सुहावै ॥१९॥
सोई बात राजै जब मानी ॥
बोल पठाई वहै सियानी ॥
जो तिन पुरख नारि करि भाखा ॥
ताही कह बैदनि करि राखा ॥२०॥
सखी तबै राजा पहि गई ॥
ताहि तरुनि करि ल्यावत भई ॥
जब तिन त्रिय की नारि निहारी ॥
राजा सो इह भाति उचारी ॥२१॥
राज रोग रानी कह धरियो ॥
जाति सिताबी दूरि न करियो ॥
आठ बरिस लगि रहै जु कोई ॥
या को दूरि दूख तब होई ॥२२॥
सोई सति न्रिपति करि मानी ॥
जिह बिधि ता सौ जार बखानी ॥
ता के धाम बैदनी राखी ॥

जो नर ते इसत्री करि भाखी ॥२३॥
रैनि दिवस ता के सो रहै ॥
भोग करै तरुनी जब चहै ॥
मूरख राव भेद नहि पायो ॥
आठ बरिस लगि मूंड मुंडायो ॥२४॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तिन चंचला न्रिप कह छला सुधारि ॥
आठि बरसि मित्रहि भजियो सकियो न मूड़ बिचारि ॥२५॥

CHARITAR २८९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ उनानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥289॥5502॥अफजूं॥*

चौपई ॥

पूरब देस एक न्रिप रहै ॥
पूरब सैन नाम जग कहै ॥
पूरब दे ता के घर नारी ॥
जा सम लगत न देव कुमारी ॥१॥
रूप सैन छत्री इक तहा ॥
ता सम सुंदर कहूं न कहा ॥
अप्रमान तिह तेज बिराजै ॥
नरी नागनिन को मनु लाजै ॥२॥
राज तरुनि जब ताहि निहारा ॥
मन बच क्रम इह भाति बिचारा ॥
कैसे केल सु या संग करौ ॥
नातर मारि कटारी मरौ ॥३॥
मित्र जानि इक हितू हकारी ॥
ता प्रति चित की बात उचारी ॥
कै इह मुहि तै देहि मिलाई ॥
नातर मुहि न निरखि है आई ॥४॥

दोहरा ॥

कै सजनी मुहि मित्र कह अब ही देहु मिलाइ ॥
नातर रानी म्रित कौ बहुरि निरखियहु आइ ॥५॥

चौपई ॥

जब इह भाति उचारो रानी ॥
जानि गई तब सखी सियानी ॥
या की लगन मित्र सौ लागी ॥
ता ते नींद भूख सभ भागी ॥६॥
अड़िल ॥
तनिक न लगी अवार सजन कै घर गई ॥
बहु बिधि ताहि प्रबोधत तह ल्यावत भई ॥
जह आगे त्रिय बैठी सेज डसाइ कै ॥
हो तही तवन कह हितू निकासियो ल्याइ कै ॥७॥

चौपई ॥

उठि करि कुअरि अलिंगन कियो ॥
भाति भाति चुंबन तिह लियो ॥
काम केल रुचि मान कमायो ॥
भागि अफीम सराब चड़ायो ॥८॥
जब मद करि मतवारा कियो ॥
भुज ते पकरि सेज पर दियो ॥
अधिक मानि रुचि गरे लगायो ॥
उछरि उछरि करि भोग कमायो ॥९॥
एक तरुन दूसर मद मातो ॥
तीसर भोग तरुनि के रातो ॥
दुहूंअन मध हार को मानै ॥
चारहु बेद भेद इह जानै ॥१०॥
जब त्रिय तरुनि तरुन कह पावै ॥
छिन छतिया ते छोरि न भावै ॥
गहि गहि ता कह गरे लगावै ॥
चारि पहिर निसि भोग कमावै ॥११॥
भोग करत तरुनी बसि भई ॥
पर की ते वा की ह्वै गई ॥
छिन इक छैल न छोरियो जावै ॥
छैलियहि यार छबीलो भावै ॥१२॥
कोकसार के मतन उचारै ॥
अमल पान करि द्रिड़ रति धारै ॥
आन पुरख की कानि न करही ॥
भाति भाति के भोगन भरही ॥१३॥
पोसत भाग अफीम मंगावै ॥
एक खाट पर बैठि चड़ावै ॥
हसि हसि करि दोऊ जाघन लेही ॥
राज तरुनि कौ बहु सुख देही ॥१४॥
भोग करत निसि सकल बितावै ॥
सोइ रहै उठि केलि कमावै ॥
फिरि फिरि त्रिय आसन कह लै कै ॥
भाति भाति कै चुंबन कै कै ॥१५॥
भोग करत तरुनियहि रिझायो ॥
भाति अनिक तिन केल मचायो ॥
इह बिधि हौ हसि ताहि उचारो ॥
कहौ जु तुम सौ सुनहो प्यारो ॥१६॥
जब तरुनी संग द्रिड़ रति करी ॥
भाति भाति के भोगन भरी ॥
रीझि तरुनि इह भाति उचारी ॥
मित्र भई मै दास तिहारी ॥१७॥
अब जौ कहो नीर भरि ल्याऊ ॥
बार अनेक बजार बिकाऊ ॥
जे तुम कहो वहै मै करिहौ ॥
और किसू ते नैकु न डरिहो ॥१८॥
मित्र बिहसि इह भाति उचारा ॥
अब मै भयो गुलाम तिहारा ॥
तो सी तरुनि भोग कह पाई ॥
पूरन भई मोरि भगताई ॥१९॥
अब इह बात चित मै मेरे ॥

सो मै कहत यार संग तेरे ॥
अब कछु ऐस उपाव बनैयै ॥
जा ते तो कह सदा हंढैयै ॥२०॥
अब तुम ऐस चरित्र बनावहु ॥
जा ते मोहि सदा तुम पावहु ॥
भेद दूसरो पुरख न पावै ॥
लहै न स्वान न भूसन आवै ॥२१॥
रानी सुनी बात ऐसी जब ॥
बचन कहा हसि करि पिय सो तब ॥
रोम नास तुम बदन लगावहु ॥
सकल नारि को भेस बनावहु ॥२२॥
रोमातक रानियहि मंगायो ॥
ता के बदन साथ लै लायो ॥
सभ ही केस दूरि जब भए ॥
ता कह बसत्र नारि के दए ॥२३॥
बीना दई कंध ता कै पर ॥
सुनन नमिति राखियो ता कौ घर ॥
जब राजा ता के ग्रिह आवै ॥
तब तंत्री सौ बैठि बजावै ॥२४॥
राज बीन सुनि त्रिय तिह मानै ॥
पुरख वाहि इसत्री पहिचानै ॥
ता को हेरि रूप ललचाना ॥
घर बाहर तजि भयो दिवाना ॥२५॥
इक दूती तब राइ बुलाइसि ॥
अधिक दरब दै तहा पठाइसि ॥
जब रानी ऐसे सुनि पाई ॥
बचन कहा ता सो मुसकाई ॥२६॥
जिनि तो को राजा यह बरै ॥
हम सो नेहु सकल तजि डरै ॥
मै अपने संग लै तुहि स्वैहो ॥
चित के सकल सोक कह ख्वैहो ॥२७॥
जो ता पहि न्रिप सखी पठावै ॥
सो चलि तीर तवन कै आवै ॥
रानी के संग सोत निहारै ॥
इह बिधि न्रिप सो जाइ उचारै ॥२८॥
रानी न्रिपति भेद लख गई ॥
ता ते वहि छोरत नहि भई ॥
अपने संग ताहि लै सोई ॥
हमरो दाव न लागत कोई ॥२९॥
जब इह भाति न्रिपति सुनि पावै ॥
तह तिह आपु बिलोकन आवै ॥
त्रिय सो सोत जार को हेरै ॥
निहफल जाइ तिनै नाहि छेरै ॥३०॥
माथो धुन्रयो न्रिपति सौ कहियो ॥
हमरो भेद रानियहि लहियो ॥
ता ते याहि संग लै सोई ॥
मेरी घात न लागत कोई ॥३१॥
उन रानी ऐसो तब कीयो ॥
भेद भाखि सखयिन सभ दीयो ॥
जो इह सोत अनत न्रिप पावै ॥

पकरि भोगबे काज मंगावै ॥३२॥
मै सोवत ता ते इह संगा ॥
अपने जोर अंग सो अंगा ॥
भली भली इसत्रिन सभ भाखी ॥
ज्यों त्यों नारि नाह ते राखी ॥३३॥
दिन देखत रानी तिह संगा ॥
सोवत जोर अंग सो अंगा ॥
मूरख राव भेद नहि पावै ॥
कोरो अपनो मूंड मुडावै ॥३४॥

CHARITAR २९० — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ नबे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥290॥5536॥अफजूं॥

चौपई ॥

पछिमावती नगर इक सोहै ॥
पसचिम सैन न्रिपति तह को है ॥
पसचिम दे रानी ता के घर ॥
रहत पंडिता सकल लोभि करि ॥१॥
अधिक रूप रानी को रहै ॥
जग तिह दुतिय चंद्रमा कहै ॥
ता पर रीझि न्रिपति की भारी ॥
जानत ऊच नीचि पनिहारी ॥२॥
तह हुतो राइ दिलवाली ॥
जानक दूसरासु है माली ॥
सो पहि जात न प्रभा बखानी ॥
उरझि रही दुति हेरत रानी ॥३॥
ता सौ अधिक सनेह बढायो ॥
एक दिवस ग्रिह बोलि पठायो ॥
सो तब ही सुनि बच पह गयो ॥
भेटत राज कुअरि कह भयो ॥४॥
पोसत भाग अफीम मंगाई ॥
एक सेज पर बैठि चड़ाई ॥
जब मद सो मतवारे भए ॥
तब ही सोक बिसरि सभ गए ॥५॥
एक सेज पर बैठि कलोलहि ॥
रस की कथा रसिक मिलि बोलहि ॥
चुंबन और अलिंगन करही ॥
भाति भाति के भोगन भरही ॥६॥
रानी रमत अधिक उरझाई ॥
भोग गए दिलवाली राई ॥
चित अपनै इह भाति बिचारो ॥
मै याही के संग सिधारो ॥७॥
राज पाट मेरे किह काजा ॥
मो कह नही सुहावत राजा ॥
मै साजन के साथ सिधैहौ ॥
भली बुरी सिर माझ सहैहौ ॥८॥
जहा सिंघ मारत बन माही ॥
सुना दोहरा एक तहा ही ॥

चड़ि झंपान तिह ठौर सिधाई ॥
मित्रहि तही सहेट बताई ॥९॥
महा गहिर बन मै जब गई ॥
लघु इछा कह उतरत भई ॥
तह ते गई मित्र के संगा ॥
छित मै डारि स्रोण के रंगा ॥१०॥
जब त्रिय साथ सजन के गई ॥
तब अस सखी पुकारत भई ॥
लए सिंघ रानी कह जाई ॥
कोऊ आनि लेहु छुटकाई ॥११॥
सूरन सिंघ नाम सुनि पायो ॥
त्रसत भए अस करन उचायो ॥
जाइ भेद राजा तन दयो ॥
लै करि सिंघ रानियहि गयो ॥१२॥
न्रिप धुनि सीस बाइ मुख रहा ॥
होनहार भयो होत सु कहा ॥
भेद अभेद कछू नहि पायो ॥
लै रानी कह जार सिधायो ॥१३॥

CHARITAR २९१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ इक्रयानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥291॥5549॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उतर सिंघ न्रिपति इक भारो ॥
उतर दिसि को रहत न्रिपारो ॥
उतर मती धाम तिह नारी ॥
जा सम कान सुनी न निहारी ॥१॥
तहा लहौरी राइक आयो ॥
रूपवान सभ गुनन सवायो ॥
जब अबला तिह हेरत भई ॥
ततछिन सभ सुधि बुधि तजि दई ॥२॥
उर अंचरा अंगिया न संभारै ॥
कहब कछू ह्वै कछू उचारै ॥
पिय पिय रटत सदा मुख रहै ॥
निस दिन जल अखिया ते बहै ॥३॥
पूछन ताहि राइ जब आवै ॥
मुहौ न भाखि उतरहि द्रयावै ॥
झूम झूमि झट दै छित झरै ॥
बार बार पिय सबद उचरै ॥४॥
अदभुत हेरि राइ ह्वै रहै ॥
सखियन सौ ऐसी बिधि कहै ॥
या अबला कौ कस ह्वै गयो ॥
जा ते हाल ऐस इह भयो ॥५॥
या कौ कौन जतन तब करै ॥
जा ते यह रानी नहि मरै ॥
जो वह मागै सो मै दै हौ ॥
रानी निमिति करवतहि लै हौ ॥६॥
सिर करि तिह आगै जल भरौ ॥

बार बार ता के पग परौ ॥
जो रानी का रोग मिटावै ॥
रानी सहित राज कह पावै ॥७॥
जो रानी का रोगु मिटावै ॥
सो नर हम कह बहुरि जियावै ॥
अरध राज रानी जुत लेई ॥
एक रात्रि हम कह त्रिय देई ॥८॥
एक दिवस वहु राज करावै ॥
रानी के संग भोग कमावै ॥
दूसर दिन हम राज कमावहि ॥
लै अपनी इसत्रियहि बजावहि ॥९॥
जब बहु बिधि न्रिप ऐस उचरा ॥
सहचरि एक जोर दोऊ करा ॥
यौ राजा सौ बचन उचारे ॥
सु मै कहत हौ सुनहो प्यारे ॥१०॥
एक बैद तुम ताहि बुलावौ ॥
ता ते इह उपचार करावो ॥
सो छिन मै या को दुख हरि है ॥
रोगनि ते सु अरोगिनि करि है ॥११॥
जब राजे ऐसे सुनि पावा ॥
ततछिन ता कह बोलि पठावा ॥
रानी की नाटिका दिखाई ॥
बोला बैद देखि सुखदाई ॥१२॥
दुख जौने इह तरुनि दुखाई ॥
सो दुख तुम सो कहियो न जाई ॥
जान माफ हमरी जो कीजै ॥
पाछे बात सकल सुनि लीजै ॥१३॥
या रानी कह काम संतायो ॥
तुम नहि इह संग भोग कमायो ॥
ता ते यहि रोग गहि लीना ॥
हम ते जात उपा न कीना ॥१४॥
यह मद मत मैन त्रिय भरी ॥
तुम क्रीड़ा इह साथ न करी ॥
अब यह अधिक भोग जब पावै ॥
या को रोग दूर ह्वै जावै ॥१५॥
इह तुम तब उपचार करावो ॥
बचन हाथ मोरे पर द्र्यावो ॥
जब इह दुख मै दूर कराऊ ॥
अरध राज रानी जुत पाऊ ॥१६॥
भली भली राजै तब भाखी ॥
हमहूं इह हिरदै मथि राखी ॥
प्रथम रोग तुम याहि मिटावो ॥
अरध राज रानी जुत पावो ॥१७॥
प्रथमहि बचन न्रिपति ते लिया ॥
पुनि उपचार तरुनि को किया ॥
भोग कियो त्रिय रोग मिटायो ॥
अरध राज रानी जुत पायो ॥१८॥
अरध राज इह छल तिह दियो ॥
रानी भोग मित्र संग कियो ॥
मूरख नाह नाहि छल पायो ॥

प्रगट आपनो मूंड मुंडायो ॥१९॥

दोहरा ॥

इह छल रानी न्रिप छला रमी मित्र के साथ ॥
अरध राज ता को दिया भेद न पायो नाथ ॥२०॥

चौपई ॥

इह बिधि अरध राज तिह दीयो ॥
मूरख पति कह असि छलि लीयो ॥
इक दिन रनियहि जार बजावै ॥
अरध राज तिह आप कमावै ॥२१॥
इक दिन आवै न्रिप कै धामा ॥
इक दिन भजै जार कौ बामा ॥
इक दिन राजा राज कमावै ॥
जार छत्र दिन दुतिय ढरावै ॥२२॥

CHARITAR २९२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ बानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥292॥5571॥अफज्रूं॥

चौपई ॥

राजपुरी नगरी है जहा ॥
राज सैन राजा इक तहा ॥
राज देई ता के ग्रिह नारी ॥
चंद्र लई जा ते उजियारी ॥१॥
न्रिप सौ अति त्रिय को हित रहै ॥
सोई करत जु रानी कहै ॥
और नारि के धाम न जावै ॥
अधिक नार के त्रास त्रसावै ॥२॥
रानी की आग्या सभ मानै ॥
राजा को करि कछू न जानै ॥
मारियो चहत नारि तिह मारै ॥
जिह जानै तिह प्रान उबारै ॥३॥
बेस्वा एक ठौर तिह आई ॥
तिह पर रहे न्रिपति उरझाई ॥
चहत चित महि ताहि बुलावै ॥
निजु नारी कै त्रास त्रसावै ॥४॥
जब रानी ऐसे सुनि पाई ॥
इहै चित अपने ठहराई ॥
जो मै धाम जार के जाऊ ॥
न्रिपन कहै कछु माफ कराऊ ॥५॥
रैनि समै जब तह न्रिप आए ॥
इह बिधि रानी बचन सुनाए ॥
मो ते ताहि सुंदरि तिह जानौ ॥
जा सो प्रीति राइ तुम ठानौ ॥६॥
ता ते अधिक रोख मुहि भयो ॥
बेस्वा के राजा ग्रिह गयो ॥
इह अपनी भगनियहि न भजो ॥

मो सो प्रीति नतर तुम तजो ॥७॥
जौ तुम बेस्वा के ग्रिह जैहो ॥
काम भोग तिह साथ कमै हो ॥
तब मै धाम जार के जैहो ॥
तेरे फूलि डारि सिर ऐ हो ॥८॥
प्रथम बात मुहि यह लिखि द्रयावहु ॥
जिह जानहु तिह बहुरि बुलावहु ॥
जिह चाहौ तिह हौहूं बुलावौ ॥
काम केल तिह साथ कमावौ ॥९॥
जब इह भाति सुने न्रिप बैना ॥
जोरि रहा नैनन सो नैना ॥
चुप ह्वै रहा कछू नहि कहियो ॥
तवन भेद इसत्री इन लहियो ॥१०॥
मोरी लगन उतै लगि गई ॥
तब रानी असि बात ठटई ॥
ता को करियै कवन उपाई ॥
मुहि ते तजी न बेस्वा जाई ॥११॥
अब यह बात रानियहि गही ॥
मोरि प्रीति बेस्वा संग लही ॥
वा बिनु मो सौ रहियो न जाई ॥
ताहि भजे कर ते त्रिय जाई ॥१२॥
जब न्रिप फिरि रानी के आयो ॥
तब रानी इह भाति सुनायो ॥
तुहि बेस्वा के गयो सुनि पैहौ ॥
तब मै भोग जार सौ कैहौ ॥१३॥
अब तुम ह्वै न्रिधात पिय गए ॥
ता ते सुत ग्रिह होत न भए ॥
जब भजि है जु लोग इह बामा ॥
ह्वै है पूत तिहारो धामा ॥१४॥
तब राजै यौ ह्रिदै बिचारी ॥
भली बात रानियहि उचारी ॥
ता कौ भोग माफ लिखि दीयो ॥
आप गवन बेस्वा के कीयो ॥१५॥
जब राजा बेस्वा के जावै ॥
जिह चाहै तिह नारि बुलावै ॥
काम भोग तो सौ द्रिड़ करई ॥
ह्रिदै न्रिपति की संक न धरई ॥१६॥
रानी बेस्वहि आपु बुलायो ॥
इह छल राजा ते लिखिवायो ॥
जिह चाहै तिह बोलि पठावै ॥
काम भोगि रुचि मानि कमावै ॥१७॥
मूरख भेद न राजै पायो ॥
इह छल अपनो मूंड मुडायो ॥
अबला ऐसो चरित बनयो ॥
पति ते भोग माफ करि लयो ॥१८॥

CHARITAR २९३ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ तरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥293॥5589॥अफजूं॥

अनदावती नगर इक सुना ॥
आनद सैन न्रिपति बहु गुना ॥
अनदावती सदन तिह बाला ॥
जगत भयो ता ते उजियाला ॥१॥
अधिक रूप बिधिना तिह कीना ॥
जा सम रूप न दूसर दीना ॥
आयो पुरख एक तब बनो ॥
रानी ते सुंदरि थो घनो ॥२॥
जब अबला तिह रूप निहारा ॥
मदन बान ता के तन मारा ॥
रीझि रही सुंदरि मन माही ॥
घर बाहर की कछु सुधि नाही ॥३॥
पठै हितू इक ताहि बुलावा ॥
काम भोग तिह साथ कमावा ॥
मन मानत आसन तिह दए ॥
चुंबन और अलिंगन लए ॥४॥
अधिक मित्र रानी कह भायो ॥
इह बिधि ताहि प्रबोध जनायो ॥
कहा उजारि जहा बड अही ॥
आसन लाइ बैठियो तही ॥५॥
सभ ही अंग बिभूति चड़ैयहु ॥
द्रुम तर बैठे ध्यान लगैयहु ॥
राजा सहित तहा हम ऐहैं ॥
तुमै धाम ज्यों त्यों लै जैहैं ॥६॥
मानि जार सोई बच लयो ॥
भेख अतिथ को धारत भयो ॥
आसन एक ब्रिछ तर मारा ॥
यौ राजा सौ नारि उचारा ॥७॥
सोवत हुती सुपन मै पायो ॥
महा रुद्र मेरे ग्रिह आयो ॥
पाव साथ तिन मोहि जगायो ॥
अधिक क्रिपा करि बचन सुनायो ॥८॥
तुम राजा जू साथ उचरियहु ॥
एक बात चित भीतरि धरियहु ॥
एक रखीसुर बन महि सुना ॥
ता सम भयो न है कहूं मुना ॥९॥
राजा सहित जाइ तिह ल्यैयहु ॥
द्वादस बरख संग लै स्वैयहु ॥
निहसंसै घर मै सुत होई ॥
या मै बात न दूजी कोई ॥१०॥
महा जती तिह मुनि को जानहु ॥
कहूं न बिनसा ताहि पछानहु ॥
रंभादिक इसत्री पचि हारी ॥
ब्रत ते टरा न रिखि ब्रत धारी ॥११॥
हम तुम साथ तहा दोऊ जावैं ॥
ज्यों त्यों मुनहि पाइ पर ल्यावैं ॥
बारह बरिस मोरि संग स्वावहु ॥
निहसंसै घर मै सुत पावहु ॥१२॥

सुनि बच न्रिप उठि ठाढो भयो ॥
रानी सहित तवन बन गयो ॥
जह छ्वै ब्रिछ गगन तन रहे ॥
घोर भयानक जात न कहे ॥१३॥
रानी सहित राव तह गयो ॥
हेरत तवन मुनीसहि भयो ॥
नारि सहित पाइन तिह परियो ॥
चित मै इहै बिचार बिचारियो ॥१४॥
जो सिव सुपन समै कहि गयो ॥
सो हम साचु द्रिगन लहि लयो ॥
ज्यों त्यों करि इह ग्रिह लै जाऊं ॥
लै रानी के साथ सुवाऊं ॥१५॥
ज्यों ज्यों न्रिप पाइन पर परै ॥
त्यों त्यों मुनि आंखै न उघरै ॥
त्यों राजा सीसहि निहुरावै ॥
ता कह महा मुनी ठहरावै ॥१६॥
जब न्रिप अनिक बार पग परा ॥
तब आंखै मुनि दुहूं उघरा ॥
ता सौ कहा किह नमिति आयो ॥
किह कारन इसत्री संग ल्यायो ॥१७॥
हम है मुनि कानन के बासी ॥
एक नाम जानत अबिनासी ॥
राजा प्रजा बसत किह ठौरा ॥
हम प्रभ के राचे रस बौरा ॥१८॥
यह संपति हमरे किह काजा ॥
जो लै हमै दिखावत राजा ॥
हम नहि धाम किसू के जाही ॥
बन ही महि हरि ध्यान लगाही ॥१९॥
क्रिपा करहु न्रिप धाम पधारो ॥
हमरे बडे अघन कह टारो ॥
बारह बरिस क्रिपा करि रहियै ॥
बहुरो मग बन ही को गहियै ॥२०॥
जब न्रिप अधिक निहोरा कियो ॥
तब इह बिधि उतरि रिखि दियो ॥
हमरो कहा धाम तव काजा ॥
बार बार पकरत पग राजा ॥२१॥
हम कह सिव तुहि आपु बतायो ॥
सोवत इहा जगाइ पठायो ॥
ता ते मानि संभु को कहो ॥
बारह बरख हमारो रहो ॥२२॥
सिव की सुनत भयो जब बानी ॥
तब मुनि साथ चलन की मानी ॥
राजा के ह्वै संग सिधारा ॥
रानी सहित सदन पग धारा ॥२३॥
खान पान आगै न्रिप धरा ॥
ताहि निरखि रिखि ऐस उचरा ॥
इह भोजन हमरे किह काजा ॥
ए है इन ग्रिहसतन के साजा ॥२४॥
हम इसत्रिन तन नैन न लावहि ॥
इन रस कसन भूल नहि खावहि ॥

बिन हरि नाम काम नहि आवै ॥
बेद कतेब यौ भेद बतावै ॥२५॥
तब न्रिप ताहि सही मुनि माना ॥
भेद अभेद न मूड़ पछाना ॥
निजु रानी तन ताहि सुवायो ॥
मूरख अपनो मूंड मुडायो ॥२६॥
निजु कर मूरख सेज बिछावै ॥
ताहि त्रिया के साथ सुवावै ॥
अधिक जती ता कह पहिचानै ॥
भेद अभेद न मूरख जानै ॥२७॥
जब पति नहि हेरत त्रिय जानै ॥
काम भोग ता सो द्रिड़ ठानै ॥
भाग अफीम अधिक तिह ख्वारी ॥
चारि पहर रति करी प्यारी ॥२८॥
भोग करत इक क्रिया बिचारी ॥
ऊपर एक तुलाई डारी ॥
न्रिप बैठो मूकियै लगावै ॥
सो अंतर रानियहि बजावै ॥२९॥
इह छल सौ मित्रहि तिन पावा ॥
मूरख भूप न भेव जतावा ॥
पावद बैठि मूकियन मारै ॥
उत रानी संग जार बिहारै ॥३०॥
इह छल सौ रानी पति छरियो ॥
जार गवन त्रियि देखत करियो ॥
मूरखि भेद अभेद न पायो ॥
सो इसत्री ते मूंड मुडायो ॥३१॥

CHARITAR २९४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ चौरानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥294॥5620॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

चंचल सैन न्रिपति इक नरवर ॥
अवर न्रिपति ता की नहि सरबर ॥
चंचल दे ता के घर दारा ॥
ता सम देव न देव कुमारा ॥१॥
सुंदरिता इह कही न आवै ॥
जा को मदन हेरि ललचावै ॥
जोबन जेब अधिक तिह धरी ॥
मैन सु नार भरत जनु भरी ॥२॥
ता के एक धाम सुत भयो ॥
बीस बरिस को ह्वै मरि गयो ॥
रनियहि बाढा सोक अपारा ॥
जा ते सभ बिसरा घर बारा ॥३॥
तह इक पूत साह को आयो ॥
तेजवान दुति को जनु जायो ॥
जैसो तिह सुत को थो रूपा ॥
तैसो ई तिह लगत सरूपा ॥४॥
जब रानी सो पुरख निहारा ॥

लाज साज तज ह्रिदै बिचारा ॥
या सौ काम भोग अब करियै ॥
नातर मार छुरकिआ मरियै ॥५॥
जब वहु कुअर राह तिह आवै ॥
चंचल देखन कौ तिह जावै ॥
इक दिन ता के नाथ निहारी ॥
इह बिधि सौ तिह बात उचारी ॥६॥
किह निमिति इह ठा तू आई ॥
हेरि रही किह कह द्रिग लाई ॥
तब रानी इह भाति उचारो ॥
सुनहु न्रिपति तुम बचन हमारो ॥७॥
जस तव सुत सुर लोक सिधायो ॥
सो धरि रूप दुतिय जनु आयो ॥
तिह तुम मुरि ढिग सेज सुवावो ॥
हमरे चित को ताप मिटावो ॥८॥
मूरख भेद अभेद न पायो ॥
ताहि बुलाइ आपु लै आयो ॥
न्रिप पुनि तिह भरुआपन करियो ॥
भलो बुरो न बिचारि बिचरियो ॥९॥
भरूआ की क्रिआ कह करियो ॥
चारि बिचार कछू न बिचरियो ॥
दूती पठवन ते त्रिय बची ॥
भूपति की दूती करि रची ॥१०॥
ताहि सेज के निकट सुवावै ॥
भलो भलो भोजन तिह खुवावै ॥
कहै सु सुत मुर की अनुहारा ॥
ता ते या संग हमरो प्यारा ॥११॥
जो त्रिय ता कौ भोज खुवारै ॥
रानी झझकि ताहि त्रिय डारै ॥
इह मोरे सुत की अनुहारा ॥
भलो भलो चहियत तिह ख्वारा ॥१२॥
निकटि आपने ताहि सुवावै ॥
तिह ढिग अपनी सेज बिछावै ॥
जब ता संग न्रिपति स्वै जावै ॥
तब त्रिय ता संग भोग कमावै ॥१३॥
कसि कसि रमै जार के संगा ॥
दलि मलि ताहि करै सरबंगा ॥
भाति भाति तन भोग कमाई ॥
सोइ रहै त्यों ही लपटाई ॥१४॥
इक दिन गई जार पहि रानी ॥
सोवत जगा न्रिपति अभिमानी ॥
मुख चुंबन तिह ताहि निहारा ॥
ध्रिग ध्रिग बच ह्वै कोप उचारा ॥१५॥

दोहरा ॥

मै इह बोली पूत कहि या संग अति मुर पार ॥
ता ते मुख चुंबत हुती सुत की जनु अनुसार ॥१६॥

चौपई ॥

ন্রিপ के साच इहै जिय आई ॥
पूत जानि चुंबन मुख धाई ॥
कोप जु बढा हुता तजि दीना ॥
भेद अभेद कछू नहि चीना ॥१७॥

दोहरा ॥

इह छल बंगस राइ कह राखा अपने धाम ॥
दिन कह पूत उचारई निसि कह भोगै बाम ॥१८॥

CHARITAR २९५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ पचानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥295॥5638॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बंगस सैन बंगसी राजा ॥
सदनु भरे जा के सभ साजा ॥
बंगस दे ता को घर रानी ॥
जिह लखि नारि त्रिलोक रिसानी ॥१॥
तहा बसत इक साह दुलारी ॥
रूपमान गतिमान उजियारी ॥
ताहि मंगला देई नामा ॥
जा सम नही काम की कामा ॥२॥
तह इक आइ गयो बनिजारा ॥
मोतिन लादे उसट हजारा ॥
और दरबु की तोटि न कोई ॥
लखै सु हरत रीझि करि सोई ॥३॥
अड़िल ॥
जबै मंगला देवि सु साहु निहारियो ॥
इहै आपने चित महि चतुरि बिचारियो ॥
करत भई मिजमानी सदन बुलाइ कै ॥
हो भ्रात तवन के आयो दियो उडाइ कै ॥४॥
भाति भाति के भोजन करे बनाइ कै ॥
तरह तरह के आने अमल छिनाइ कै ॥
आनि तवन ढिग राखे कंचन थार भरि ॥
हो सात बार मदियन ते मदहि चुआइ करि ॥५॥
प्रथम करियो तिन भोजन बिजिया पान करि ॥
बहुरि पियो मद बडे बडे प्रयालान भरि ॥
जब रस मस भे तरुनि तबै ऐसो कीयो ॥
हो पकरि भुजा ते साहु सेज ऊपरि लीयो ॥६॥
ता सौ कहा कि आउ काम क्रीड़ा करै ॥
भाति भाति तन ताप मदन को हम हरै ॥
मै तरुनी तैं तरुन कहा चकिचित रहियो ॥
हो हम तुम रमहि सु आजु चंचला अस कहियो ॥७॥

चौपई ॥

साहु तवन की बात न मानी ॥
अधिक मंगला भई खिसानी ॥
अधिक कोप करि हेतु बिसारा ॥

अरधा अरध चीर तिह डारा ॥८॥
लूटि लयो ता को सभ ही धन ॥
घोर अप्राध कियो पापी इन ॥
या कह चीरि मत गज डारा ॥
किनहूं पुरख न करी निवारा ॥९॥
वारस भई आपु ता की तिय ॥
मात्रा लई मारि ता को जिय ॥
भेद अभेद न किनूं बिचारा ॥
भोग न किया तिसै कौ मारा ॥१०॥

दोहरा ॥

इह छल मारा ताहि कौ जौ न रमा तिह संग ॥
सु कबि स्याम पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥११॥

CHARITAR २९६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दोइ सौ छ्यानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥296॥5649॥अफजूं॥

चौपई ॥

बिजै सूर खत्री इक रहै ॥
सिध पाल ता कह जग कहै ॥
समसदीन दिलीस दिवाना ॥
जानत सकल राव अरु राना ॥१॥
लछिमन सैन धाम सुत सुभ मति ॥
बज्र सैन दूसरो बिकट मति ॥
सकुच मती दुहिता इक ता के ॥
नरी नागनी सम नहि जा के ॥२॥
समसदीन दिलीस जुवाना ॥
मानत आनि देस जिह नाना ॥
एक दिवस वहु गयो सिकारा ॥
जा दिस हुती केहरी बारा ॥३॥
तही दिलीस आपु चलि गयो ॥
जहा सिंघनी चितवत भयो ॥
सिध पाल लीए अपने संगा ॥
और लीए अनगन चतुरंगा ॥४॥
ता पर करी झुकावत भयो ॥
केहरि समै जनम तब लयो ॥
अरध रहातन मात कुखूतर ॥
अरधह नाकर गज मसतक पर ॥५॥
तह इक भाट कौतक अस लहा ॥
हजरति सुनत दोहरा कहा ॥
सु मै कहत हो सुनहु प्यारे ॥
जो तिन साह न चित ते टारे ॥६॥

दोहरा ॥

सिंघ सापुरस पदमिनी इन का इहै सुभाउ ॥
ज्यों ज्यों दुख गाड़ो परै त्यों त्यों आगे पाउ ॥७॥

चौपई ॥

भाट जबै इह भाति उचारा ॥
हजरति बचन स्रवन इह धारा ॥
जब अपने महलन महि आयो ॥
सिध पाल कह बोल पठायो ॥८॥
ता सो इह बिधि नाथ बखाना ॥
तै हैं मोर वजीर स्याना ॥
अब कछु अस तुम करहु उपाई ॥
जा ते मिलै पदुमिनि आई ॥९॥
सिध पाल इह भाति उचारा ॥
सुन हजरति जू बचन हमारा ॥
सभ अपनी तुम सैन बुलावो ॥
मोहि सिंगलादीप पठावो ॥१०॥
जौ तुमरी आग्या कह पाऊ ॥
अमित सैन लै तहा सिधाऊ ॥
खड़ग सिंगलादीप मचैहो ॥
ज्यों त्यों कै पदुमिनि लै ऐहो ॥११॥
यौ कहि गयो धाम जब राजा ॥
बाजत भात अनेकन बाजा ॥
बैरी हुतो तहा इक ता को ॥
भेद कहा हजरति पै वा को ॥१२॥
एक धाम दुहिता है या के ॥
परी पदमिनि तुलि न ता के ॥
पठै मनुछ तिह हेरि मंगावहु ॥
तिह पाछे पदुमिनि खुजावहु ॥१३॥
हजरति सुनत जबै से भयो ॥
ततछिन दूती तहा पठयो ॥
चतुरि चितेरी रूप उजियारी ॥
बिसुकरमा की जान कुमारी ॥१४॥
इक चतुरा अरु दुतिय चितेरी ॥
प्रतिमा दुतिय मदन जन केरी ॥
गोर बरन अरु खाए पाना ॥
जानुक चड़ा चंद असमाना ॥१५॥
ता के धाम चितेरनि गई ॥
लिखि ल्यावत प्रतिमा तिह भई ॥
जब लै करि कर साह निहारी ॥
जानुक तानि कटारी मारी ॥१६॥
सभ सुधि गई मत ह्वै झूंमा ॥
घाइ लगे घायल जनु घूंमा ॥
तन की रही न तनिक संभारा ॥
जनु डसि गयो नाग कौडियारा ॥१७॥
इक दिन करी साह मिजमानी ॥
सभ पुर नारि धाम महि आनी ॥
सिध पाल की सुता जबाई ॥
सकल दीप ज्यों सभा सुहाई ॥१८॥
छिद्र बीच करि ताहि निहारा ॥
हजरति भयो तबै मतवारा ॥
मन तरुनी के रूप बिकान्रयो ॥
म्रितक सो तनु रहियो पछान्यो ॥१९॥

हजरति सकल पठान बुलाए ॥
सिध पाल कै धाम पठाए ॥
कै अपनी दुहिता मुहि दीजै ॥
नातर मीच मूंड पर लीजै ॥२०॥
सकल पठान तवन के गए ॥
हजरति कही सु भाखत भए ॥
सिध पाल धंन भाग तिहारे ॥
ग्रिह आवहिगे साह सवारे ॥२१॥
सिध पाल ऐसो जब सुना ॥
अधिक दुखित ह्वै मसतक धुना ॥
दैव कवन गति करी हमारी ॥
ग्रिह असि उपजी सुता दुखारी ॥२२॥
जौ नहि देत तु बिगरत काजा ॥
जात दए छत्रिन की लाजा ॥
मुगल पठान तुरक घर माही ॥
अब लगि गी छत्रानी नाही ॥२३॥
छत्रिन के अब लगे न भई ॥
दुहिता काढि तुरक कह दई ॥
रजपूतन के होतह आई ॥
पुत्री धाम मलेछ पठाई ॥२४॥
हाडन एक दूसरन खत्री ॥
तुरकन कह इन दई न पुत्री ॥
जो छत्री अस करम कमावै ॥
कुंभी नरक देह जुत जावै ॥२५॥
जो नर तुरकहि देत दुलारी ॥
ध्रिग ध्रिग जग तिह करत उचारी ॥
लोक प्रलोक ताहि को जैहै ॥
छत्री सुता तुरक कह दैहै ॥२६॥
हाडियन सुता तुरकि नहि दई ॥
छत्रानी तुरकनी न भई ॥
कछ रजपूतन लाज गवाई ॥
रानी ते बेगमा कहाई ॥२७॥
अब मै धरै इहौ निजु बुधा ॥
मंडौ बीर खेत महि क्रुधा ॥
पहिरि कौच करि खड़ग संभारौं ॥
चुनि चुनि आजु पखरिया मारौं ॥२८॥
तब कंन्या निजु पिता हकारा ॥
इह बिधि ता सौ मंत्र उचारा ॥
तात तनिक चिंता नहि करीयै ॥
सनमुख पातिसाह सौ लरीयै ॥२९॥
अड़िल ॥
बोल सदा थिर रहै दिवसरे जाइ है ॥
करे करम छत्रिन के चारण गाइ है ॥
तात न मो को दीजै आहव कीजियै ॥
हो दान क्रिपान दुहूं जग मै जस लीजियै ॥३०॥
खड़ग हाथ जिनि तजहु खड़गधारा सहो ॥
भाजि न चलियहु तात मंडि रन कौ रहो ॥
पठे पखरिया हनियहु बिसिख प्रहार करि ॥
हो मारि अरिन कौ मरियहु हमहि संघारि करि ॥३१॥

चौपई ॥

सुनहु पिता इक करहु उपाई ॥
समसदीन कह लेहु बुलाई ॥
जब आवे तब पकरि संघरियहु ॥
बहुरौ निकसि जुध कौ करियहु ॥३२॥
सिध पाल तब ऐस बिचारी ॥
भली बात इन सुता उचारी ॥
अंतहपुर ते बाहिर आयो ॥
बोलि पठानन ऐस जतायो ॥३३॥
ए है प्रभु के बडे बनाए ॥
हम तुम से इन के पग लाए ॥
जो इन कहा वहै मन माना ॥
सिर पर हुकम साह को आना ॥३४॥
तब मिलि खान साह के गए ॥
अति ही ह्रिदै अनंदित भए ॥
तुरकहि छत्रिन सुता न दई ॥
हसि है इनै भली इह भई ॥३५॥
दुहिता इतै पितहि समुझावै ॥
छत्री जनमु फेरि नहि आवै ॥
अब लौ ऐसी बात न पई ॥
तुरकन के छत्रानी गई ॥३६॥
ता ते मोहि न दीजै ताता ॥
मंडहु जुध होत ही प्राता ॥
चलि है कथा सदा जग माही ॥
प्रात पठान कि छत्री नाही ॥३७॥
पहिरहु कौच बजाइ नगारे ॥
पी पी अमल होहु मतवारे ॥
प्रात मचत है जुध अपारा ॥
ह्वै है अंध धुंध बिकरारा ॥३८॥
पातिसाह संग है संग्रामा ॥
सभ ही करहु केसरी जामा ॥
टाकि आफूऐ तुरै नचावौ ॥
साग झलकती हाथ फिरावौ ॥३९॥
प्रथम त्यागि प्रानन की आसा ॥
बाहहु खड़ग सकल तजि त्रासा ॥
पोसत भाग अफीम चड़ावो ॥
रेती माझ चरित्र दिखावो ॥४०॥
हजरति जोरि तहा दल आयो ॥
सकल ब्याह को साज बनायो ॥
सिध पाल के जब घरि आए ॥
पुनि कंन्या अस बचन सुनाए ॥४१॥
अड़िल ॥
ग्रिह आवै जो सत्रु न ताहि संघारियै ॥
धाम गए इहु मारहु मंत्र बिचारियै ॥
लछिमन पुत्रहि डारि डोरि दिय त्रिय उचरि ॥
हो संग सत सै खतिरेटा गयो त्रिय भेस धरि ॥४२॥

चौपई ॥

जब ते जात धाम ते भए ॥

तब ता के मंदर मो अए ॥
लुबधमान ह्वै हाथ चलायो ॥
लछिमन काढि कटारी घायो ॥४३॥
ताकह ऐस कटारी मारा ॥
बहुरि न हजरति बैन उचारा ॥
ताकह मारि भेस नर धारो ॥
लोगन महि इह भाति उचारो ॥४४॥
मोहि अमल के काज पठावा ॥
तुम तन इह बिधि आपु कहावा ॥
धाम आवने कोई न पावै ॥
जो आवै सो जान गवावै ॥४५॥
इह छल लाघि डिवढीयन आयो ॥
चोबदार नहि किनी हटायो ॥
जब ही कुमक आपनी गयो ॥
तब ही अमित कुलाहल भयो ॥४६॥
बाजै लगे तहा सदियाने ॥
बाजत तिहूं भवन महि जाने ॥
ढोल म्रिदंग मुचंग नगारे ॥
मंदल तूर उपंग अपारे ॥४७॥

दोहरा ॥

बजै दमामा जब लगे सुनि मारू धुनि कान ॥
खान खवीन जिते हुते टूटि परे तह आनि ॥४८॥

चौपई ॥

ऐसो कवन द्वैखनी जायो ॥
जिनै जुझऊआ इहा बजायो ॥
ऐसा भयो कवन मतवाला ॥
जह मूरख नहि सूझत चाला ॥४९॥
इह बिधि भाखि खान सभ धाए ॥
बाधे चुंग चौप तन आए ॥
समसदीन लछिमन जह घायो ॥
तिह ठा सकल सैन मिलि आयो ॥५०॥
लोदी सूर नयाजी चले ॥
लीने संग सूरमा भले ॥
दाओजई रुहेले आए ॥
आफरीदियन तुरै नचाए ॥५१॥

दोहरा ॥

बावन खेल पठान तह सभै परे अरिराइ ॥
भाति भाति बाना बधे गनना गनी न जाइ ॥५२॥

चौपई ॥

पखरियारे द्वारन नहि मावै ॥
जहा तहा भट तुरंग नचावै ॥
बानन की आंधी तह आई ॥
हाथ पसारा लखा न जाई ॥५३॥
इह बिधि सोर नगर मै पयो ॥

जनु रवि उलटि पलट ह्वै गयो ॥
जैसे जलधि बारि परहरै ॥
उछरि उछरि मछरी ज्यों मरै ॥५४॥
जिह बिधि नाव नदी की धारा ॥
बही जात कोऊ नहि रखवारा ॥
तैसी दसा नगर की भई ॥
जनु बिनु सक्र सची ह्वै गई ॥५५॥

दोहरा ॥

इहि दिसि सभ छत्री चड़े उहि दिसि चड़े पठान ॥
सुनहु संत चित दै सभै जिह बिधि भयो निदान ॥५६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जबै जोरि बाना अनी खान आए ॥
इतै छोभि छत्री सभै बीर धाए ॥
चले बान ऐसे दुहूं ओर भारे ॥
लगै अंग जा के न जाही निकारे ॥५७॥
तबै लछिमन कुमार जू कोप कै कै ॥
हने खान बानी सभै ससत्र लै कै ॥
किते खेत मारे परे बीर ऐसे ॥
बिराजै कटे इंद्र के केतु जैसे ॥५८॥
पीए जानु भंगै मलंगै परे है ॥
कहूं कोटि सौडीन सीसै झरे है ॥
कहूं उसट मारे सु लै भूमि तोपै ॥
कहूं खेत खाडे लसै नगन धोपै ॥५९॥
कहूं बान काटे परे भूमि ऐसे ॥
बुयो को क्रिसानै कढे ईख जैसे ॥
कहूं लहिलहै पेट मै यौ कटारी ॥
मनो मछ सोहै बधे बीच जारी ॥६०॥
कितै पेट पाटे परे खेत बाजी ॥
कहूं मत दंती फिरै छूछ ताजी ॥
कहूं मूंड माली पुऐ मुंड माला ॥
कहूं भूत औ प्रेत नाचै बिताला ॥६१॥
कहूं दैत काढो फिरै दात भारे ॥
बमै स्रौन केते परे खेत मारे ॥
कहूं ताजि डारे जिरह खोल ऐसे ॥
बगे ब्योत भारे समै सीत जैसे ॥६२॥
तहा बाज हाथीन की स्रोन धारै ॥
परै ज्यों फुहारानहूं की फुहारै ॥
प्रलै काल सो जान दूजो भयो है ॥
जहा कोटि सूरान सूरा खयो है ॥६३॥
तहा कोटि सौडीन के सुंड काटे ॥
कहूं बीर मारे गिरे केतु फाटे ॥
कहूं खेत नाचै पठे पखरियारे ॥
कहूं मारू बाजै उठै नाद भारे ॥६४॥
कहूं संख भेरी तहा नाद बाजै ॥
हसै गरजि ठोकै भुजा भूप गाजै ॥
नगारे नफीरी बजै झाझ भारी ॥
हठे रोस कै कै तहा छत्रधारी ॥६५॥

कहूं भीम भेरी बजै राग मारू ॥
नफीरी कहूं नाइ नादै नगारू ॥
कहूं बेनु औ बीन बाजै सुरंगा ॥
रुचंगा म्रिदंगा उपंगा मुचंगा ॥६६॥
झरोखा तरे जो मची मारि ऐसी ॥
भई देव दानवान की है न तैसी ॥
न स्री राम औ रावनै जुध ऐसो ॥
कियो भी महाभारथै मै सु न तैसो ॥६७॥
तहा बीर केते खरे गाल्रह मारै ॥
किते बान छोडै किते ससत्र धारै ॥
किते नार के भेस कौ साज लै कै ॥
चलै छोरि बाजी हठी भाज कै कै ॥६८॥
किते खान खेदे किते खेत मारे ॥
किते खेत मै खिंग खत्री लतारे ॥
जहा बीर बाके हठी पूत धाए ॥
तही गोल बाधे चले सिध आए ॥६९॥
जबै सिध पालै पठानौ निहारा ॥
किनी हाथ लै न हथ्यारै संभारा ॥
किते भाजि चाले किते खेत मारे ॥
पुराने पलासी मनो बाइ डारे ॥७०॥
हठे जे जुझे से सभै खेत मारे ॥
किते खेदि कै कोट के मधि डारे ॥
किते बाधि लै कै किते छोरि दीने ॥
किते जान मारे किते राखि लीने ॥७१॥
तिसी कौ हना खग जौने उचायो ॥
सोई जीव बाचा जुई भाजि आयो ॥
कहा लौ गनाऊ भयो जुध भारी ॥
लखे लोह माचा कुपे छत्र धारी ॥७२॥
किते नाद नादै किते नाद पूरै ॥
किते ज्वान जूझै बरै हेरि सूरै ॥
किते आनि कै कै क्रिपानै चलावै ॥
किते आनि गाजै किते भाजि जावै ॥७३॥
जबै सिध पालै सभै खान मारे ॥
लए छीन कै ताज बाजी नगारे ॥
हुते दूरि बासी किते खान धाए ॥
घिरियो सिध पालै करी मत न्याए ॥७४॥
जिते खान भाजे तिते फेरि ढूके ॥
चहूं ओर गाजै हठी सिध जू के ॥
कहा जाइगो छत्रि जाने न दै है ॥
इही छेत्र मै छिप्र तुहि आजु छै है ॥७५॥
सुने बैन ऐसे भरियो कोप सूरो ॥
सभे ससत्र सौडी महा लोह पूरो ॥
दयो सैन कौ आइसै आपु ही यो ॥
कपी बाहनी कौ कहियो राम जी यो ॥७६॥
सुने बैन सैना चली कोप कै कै ॥
सभे ससत्र असत्रान कौ हाथ लै कै ॥
जिते खान आए तिते खेत मारे ॥
किते खेदि कै कोटि की ओट डारे ॥७७॥
किते बीर बानैत बाजी पलटै ॥
किते बीर बानीन सो आनि जुटै ॥

कितै खग लै खिंग खत्री उमंगै ॥
जहा जंग जोधा जगे जोर जंगै ॥७८॥
घुरै घोर बादित्र मारू नगारे ॥
मचे आनि कै कै महा भूप भारे ॥
खुले खग खत्री उठे भाति ऐसी ॥
मनो बहनि ज्वाला प्रलै काल जैसी ॥७९॥
कहूं टीक काटे गिरे टोप टूटे ॥
कहूं ताज धारी परे बरम छूटे ॥
कहूं चरम काटे परे खेत ऐसे ॥
कहूं चौर सोहै मनो हंस जैसे ॥८०॥
कहूं केतु काटे लसे भूम ऐसे ॥
मनो बाय तोरे महा ब्रिछ जैसे ॥
कहूं अरध काटे तुरंगै झरे है ॥
कहूं टूक टूक ह्वै मतंगे परे है ॥८१॥
किते डोब डूबे गिरे घूंम घूंमै ॥
गजै राज बाजी हने भूमि झूंमै ॥
किते ऊठि भाजे दुरे बूट माही ॥
लगै घाव पीठै कढे मूंड नाही ॥८२॥
कित्रयो केसु फासे द्रुमो जात जोरै ॥
हहा मोहि छाडै कहै सत्रु भोरै ॥
निकारै क्रिपानै न पाछै निहारै ॥
भजे जाहि काजी न बाजी संभारै ॥८३॥
किते खान तोरे न घोरे संभारे ॥
किते छोरि जोरे त्रिया भेस धारै ॥
कितै दै अकोरै निहोरै तिसी कौ ॥
लए हाथ मै तेग देखै जिसी कौ ॥८४॥
किते जीव लै के सिपाही सिधाए ॥
किते चुंग बाधै चलै खेत आए ॥
कित्रयो प्रान होमे रनहि ज्वाल माही ॥
मरै टूक टूक ह्वै भजै पै गुनाही ॥८५॥
तहा लै अपछ्रान केते बरे है ॥
जिते सामुहे जुध कै कै मरे है ॥
किते नरक बासी तिसी काल हूए ॥
जिते सूम सोफी भजे जात मूए ॥८६॥
किते भीर जोधा मरे बाज मारे ॥
गिरे त्रास कै कै बिना बान डारे ॥
कित्रयो अगमनै आनि कै प्रान दीने ॥
कित्रयो देव के लोक को पंथ लीने ॥८७॥
जिते सूम सोफी भजे जात मारे ॥
तिते भूमि भोगै नही बंनि जारे ॥
भई भीर गाढी मचियो जुध भारी ॥
लखे बीर ठाढे कपै देह सारी ॥८८॥
जहा सिध पालै घने सत्र कूटे ॥
तहा देखि जोधान तै कोटि छूटे ॥
चले भाजि कै न हथ्यारै संभारियो ॥
लखै समसदीनै परियो भूंमि मारियो ॥८९॥
तहा भाट ढाढी खरे गीत गावैं ॥
सुनावै प्रभै बैर ब्रिंदै त्रसावैं ॥
कहूं नाद बाजै नफीरी नगारे ॥
हसै गरजि ठोकै भुजा भूप भारे ॥९०॥

जबै खान जूझै सभै खेत माही ॥
बडे ऐंठियारे बचियो एक नाही ॥
लई छीनि दिली दिलीसै संघारियो ॥
तबै आपने सीस पै छत्र ढारियो ॥९१॥
जबै सिध पालै घनी सैन कूटी ॥
बचै प्रान लै कै चहूं ओर फूटी ॥
लई पातिसाही सिरै छत्र ढारियो ॥
परियो पासु बाच्यो अरियो सो संघारियो ॥९२॥
लई पातसाही ह्रिदै यौ बिचारा ॥
करियो काज नीको न साहै संघारा ॥
जग्यो रैनि सारी धरियो ध्यान ता को ॥
दियो पातिसाही मिलै प्रात वा को ॥९३॥
कसाईन कौ दास तह एक आयो ॥
नदी डारबे ओझरी लै सिधायो ॥
गहियो जाहि ता को दई पातिसाही ॥
धरियो जैन आलावदी नाम ताही ॥९४॥

चौपई ॥

जब ही राज तवन कह दयो ॥
सुता सहित बन मारग लयो ॥
बद्रकासि महि किया प्रवेसा ॥
दुहिता सहित अतिथ के भेसा ॥९५॥

दोहरा ॥

जब बहु तह तपसा करी प्रगट भई जग माइ ॥
बरंब्रूह ता सौ कहियो जो तुहि सुता सुहाइ ॥९६॥

चौपई ॥

मैया इहै दानु मुहि दीजै ॥
रछा आपु हमारी कीजै ॥
छत्रानी ग्रिहि तुरक न जाइ ॥
मुहि बर देहु इहे जग माइ ॥९७॥
चरनन रहै तिहारै चिता ॥
ग्रिह महि होइ अनगनत बिता ॥
सत्रु न जीति हमै कोई जाइ ॥
तुम महि रहै मोर मन माइ ॥९८॥
जग मातै ऐसे बरु दीयो ॥
तिन कह राज असाम को कीयो ॥
अब लगि राज तहा तै करै ॥
दिलीपति की कानि न धरै ॥९९॥
जिन कह राज भवानी दीयो ॥
तिन ते छीनि न किनहूं लीयो ॥
अब लौ करत तहा को राजा ॥
रिधि सिधि सभ ही घर साजा ॥१००॥
प्रथम दिलिस सौ पिता जुझायो ॥
पुनि देबी ते अस बर पायो ॥
अंग देस के भए न्रिपारा ॥
इह छल अबला धरम उबारा ॥१०१॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दो सौ सतानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥297॥5750॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनियत एक साह की दारा ॥
रूपवान गुनवान अपारा ॥
झिलमिल दे तिह नाम भनिजै ॥
को दूसर पटतर तिह दिजै ॥१॥
रूप केतु राजा इक तहा ॥
रूपमान अरु सूरा महा ॥
थरहर कंपै सत्रु जा के डर ॥
प्रगट भयो जनु दुतिय निसाकर ॥२॥
एक सपूत पूत तिन जयो ॥
जा सौ और न जग महि भयो ॥
झिलमिल दे ता कौ लखि गई ॥
तब ही ते बवरी सी भई ॥३॥
वा सौ बाधा अधिक सनेहा ॥
द्वै ते करी एक जनु देहा ॥
और उपाउ न चलियो चलायो ॥
तब अबला नर भेस बनायो ॥४॥

दोहरा ॥

धरि करि भेस करौल कौ गई तवन के धाम ॥
सभ को नर जाने तिसै कोई न जानै बाम ॥५॥

चौपई ॥

कुअरहि रोज सिकार खिलावै ॥
भाति भाति तन म्रिगहि हनावै ॥
इकली फिरै सजन के संगा ॥
पहिरे पुरख भेस कह अंगा ॥६॥
इक दिन सदन न जात सु भई ॥
पित तन कही सुता मरि गई ॥
अपनी ठवर बकरियहि जारा ॥
दूसर पुरख न भेद बिचारा ॥७॥
साह लहियो दुहिता मर गई ॥
यौ नही लखियो करौलन भई ॥
संग नित लै न्रिप सुत कौ जावै ॥
बन उपबन भीतर भ्रमि आवै ॥८॥
बहुत काल इह भाति बितायो ॥
राज कुअर कह बहु बिरमायो ॥
सो ता कह नहि नारि पछानै ॥
भलो करौल ताहि करि मानै ॥९॥
इक दिन गए गहिर बन दोऊ ॥
साथी दुतिय न पहुचा कोऊ ॥
अथयो दिवस रजनी ह्वै आई ॥
एक ब्रिछ तर बसे बनाई ॥१०॥
तह इक आयो सिंघ अपारा ॥

काढे दात बडे बिकरारा ॥
ताहि निरखि न्रिप सुत डर पायो ॥
साह सुता तिह धीर बंधायो ॥११॥
तब तिह ताकि तुपक सौ मारियो ॥
न्रिप सुत देखत सिंघ प्रहारियो ॥
राज कुअर अस बचन उचारे ॥
मागहु जो जिय रुचत तिहारे ॥१२॥
तब तिन ता सौ ब्रिथा उचारी ॥
राज कुअर मै साह दुलारी ॥
तो सौ मोरि लगनि लग गई ॥
ता ते भेस धरत इह भई ॥१३॥
अब तुम हमरे साथ बिहारो ॥
इसत्री करि ग्रिह महि मुहि बारो ॥
जस मुरि लगन तुमू पर लागी ॥
तस तुम होहु मोर अनुरागी ॥१४॥
आनंद भयो कुअर के चीता ॥
जनु करि मिली राम कह सीता ॥
भोजन जानु छुधातरु पाई ॥
जनु नल मिली दमावति आई ॥१५॥
उही ब्रिछ तर ता कौ भजा ॥
भाति भाति आसन कह सजा ॥
ताहि सिंघ को चरम निकारी ॥
भोग करे ता पर नर नारी ॥१६॥
ता को नाम अपछरा धरा ॥
कही कि रीझि मोहि इह बरा ॥
इह छल ताहि नारि करि ल्यायो ॥
रूप केतु पितु भेद न पायो ॥१७॥

दोहरा ॥

इह छल ता कौ ब्याहि कै लै आयो निजु धाम ॥
लोक अपछरा तिह लखै कोऊ न जानै बाम ॥१८॥
न्रिप सुत बरा करौल ह्वै भई अनाथ सनाथ ॥
सभहूं सिर रानी भई इह बिधि छल के साथ ॥१९॥

CHARITAR २९८ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दो सौ अठानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥298॥5769॥अफजूं॥

चौपई ॥

चंद्र चूड़ इक रहत भूपाला ॥
अमित प्रभा जा के ग्रिह बाला ॥
ता सी दूसरि जग महि नाही ॥
नरी नागनी निरखि लजाही ॥१॥
साहिक हुतो अधिक धनवाना ॥
जा सौ धनी न जग मै आना ॥
अछ्छल देइ दुहिता ता के घर ॥
रहत पंडिता सभ मति हरि करि ॥२॥
चंद्र चूड़ को हुतो पुत्र इक ॥

पड़ा ब्याकरन अरु सासत्र निक ॥
ता को नाम न कहबे आवै ॥
लिखत ऊख लिखनी ह्वै जावै ॥३॥
इक दिन कुअर अखेटक गयो ॥
साहु सुता को निरखत भयो ॥
वा की लगी लगन इह संगा ॥
मगन भई तरुनी सरबंगा ॥४॥
चतुरि दूति इक तहा पठाई ॥
कहियहु ऐस कुअर कह जाई ॥
एक दिवस मोरे घर आवहु ॥
साथ हमारे भोग मचावहु ॥५॥
तब वहु सखी कुअर पहि आई ॥
कही कुअरि सो ताहि सुनाई ॥
बिहसि साजन इह भाति उचारी ॥
कहियहु जाइ ऐस तुम प्यारी ॥६॥
इक अवधूत सु छत्र त्रिपारा ॥
सुनियत बसत समुद के पारा ॥
है अवधूत मती दुहिता तिह ॥
अवर न घड़ी बिधाता सम जिह ॥७॥
प्रथम तू तिसै मोहि मिलावै ॥
ता पाछे मो सौ पति पावै ॥
यौ जो कोटि उपाव बनै है ॥
तौ मो सो नहि भोगन पै है ॥८॥
यौ ही सखी जाइ तिह कही ॥
मन बच कुअरि चक्रित ह्वै रही ॥
चित मौ अनिक चटपटी लागी ॥
ता ते नींद भूख सभ भागी ॥९॥
समुंदर पार जायो नहि जावै ॥
तऊ कुअरि को साति न आवै ॥
साज तहा चलिबे को करा ॥
तीरथ जात हौ पितहि उचरा ॥१०॥
साज बाज सभ कीआ त्यारा ॥
तह ह्वै चली बाज असवारा ॥
सेतबंध रामेस्वर गई ॥
इह बिधि ह्रिदै बिचारत भई ॥११॥
ता ते ह्वै जहाज असवारा ॥
गई सिंगलादीप मझारा ॥
जह तिह सुना राज को धामा ॥
जात भई तह हीं कौ बामा ॥१२॥
तह गी पुरख भेस को करि कै ॥
भाति भाति के भूखन धरि कै ॥
जब अवधूत मती तिह हेरा ॥
राज कुअर जान्यो कहूं केरा ॥१३॥
निरखत कुअरि मदन बसि भई ॥
अंग अंग बिहबल ह्वै गई ॥
चित महि कहा इसी कह बरि हौ ॥
नातर घाइ कटारी मरि हौ ॥१४॥
देखै लगी सीस निहुराई ॥
तिह त्रिय घात इहै कर आई ॥
तुरंग धवाइ जात तह भई ॥

सिंघनि जानु म्रिगी गहि लई ॥१५॥
झटकि झरोखा ते गहि लई ॥
बाधत साथ प्रिसट के भई ॥
हाहा भाखि लोग पचि हारे ॥
राखि न सके ताहि रखवारे ॥१६॥
बाधि प्रिसटि तिह तुरंग धवायो ॥
एकै बान मिला सो घायो ॥
ता कह जीति धाम लै आई ॥
सखी कुअर के धाम पठाई ॥१७॥
जो तुम कहा काज मै किया ॥
अपनो बोल निबाहहु पिया ॥
प्रथम ब्याहि मो कौ लै जावौ ॥
ता पाछे या कह तुम पावौ ॥१८॥
राज कुअर तब ही तह आयो ॥
ता सौ प्रथमै ब्याह करायो ॥
बहुरौ ब्याहि ताहि लै गयो ॥
असि चरित्र चंचला दिखयो ॥१९॥
प्रथमहि पार समुंद कै गई ॥
राज सुतहि हरि ल्यावत भई ॥
बहुरौ मन भावत पति करियो ॥
त्रिया चरित्र न जात बिचरियो ॥२०॥

CHARITAR २९९ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे दो सौ नंन्यानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥299॥5789॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सीससार केतु इक राजा ॥
जा सो बिधि दूसर न साजा ॥
सीसै सार देइ तिह रानी ॥
जा सम दूसर ह्वै न बखानी ॥१॥
ता सौ अधिक न्रिपति की प्रीता ॥
निस दिन रहै तरुनि मै चीता ॥
कितक दिनन रानी मरि गई ॥
राजा की उदास मति भई ॥२॥
अवर नारि की ओर न हेरै ॥
भूल न जात किसी के डेरै ॥
नारी और अधिक दुख पावै ॥
नाथ मिले बिनु मैन संतावै ॥३॥
मिलि बैठी इक दिन सभ रानी ॥
आपु बिखै मिलि करत कहानी ॥
इह जड़ पति मति किन हरि लई ॥
कहा भयो रानी मरि गई ॥४॥
एतो सोक कियो जा को इह ॥
मति हरि लई कहा या की तिह ॥
ह्वै है त्रिया न्रिपन के घनी ॥
सदा सलामति चहियत धनी ॥५॥
सखी एक स्यानी तह अही ॥
तिह इह भाति बिहसि करि कही ॥

मै न्रिप ते त्रिय सोक मिटैहौ ॥
बहुरि तिहारे साथ मिलैहौ ॥६॥
जारिक पकरि कोठरी राखा ॥
न्रिप के सुनत ऐस बिधि भाखा ॥
ध्रिग इह मूड़ न्रिप को जीआ ॥
जिह अबिबेक बिबेक न कीआ ॥७॥
जु त्रिया और सौ भोग कमावै ॥
बातन साथ पतिहि उरझावै ॥
न्रिप जु कोठरी छोरि निहारै ॥
साच झूठ तब आपु बिचारै ॥८॥
न्रिप के स्रवनन धुनि इह परी ॥
तुरतु कुठरीया जाइ उघरी ॥
हेरा जब वहु मनुछ बनाई ॥
तब ऐसे तिह कहा रिसाई ॥९॥
इतो सोक हम कीयो निकाजा ॥
इह न लहत थो ऐस निलाजा ॥
अब मै रनियन अवर बिहारौ ॥
रानी मरी न फेरि चितारौ ॥१०॥
और त्रियन के साथ बिहारा ॥
वा रानी कह न्रिपति बिसारा ॥
इह छल त्रियन नरिंद्रहि छरा ॥
त्रिय चरित्र अतिभुत इह करा ॥११॥

CHARITAR ३०० *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥300॥5800॥अफजूं॥*

चौपई ॥

इछावती नगर इक सुना ॥
इछ सैन राजा बहु गुना ॥
इसट मती ता के घर नारी ॥
इसट देवका रहत दुलारी ॥१॥
अजै सैन खतरेटा तहा ॥
आवत भयो धाम त्रिय जहा ॥
राणी ता को रूप निहारा ॥
गिरी धरनि जनु लगियो कटारा ॥२॥
उड़दा बेग निपुंसक बने ॥
पठै दए रानी तह घने ॥
गहि करि ताहि लै गए तहा ॥
तरनी पंथ बिलोकत जहा ॥३॥
काम भोग ता सौ रानी करि ॥
पौढे दोऊ जाइ पलघा पर ॥
तब लगि आइ न्रिपति तह गए ॥
सोवत दुहूं बिलोकत भए ॥४॥
भरभराइ त्रिय जगी दुखातुर ॥
डारि दयो दुपटा पति मुख पर ॥
जब लौ करत दूरि न्रिप भयो ॥
तब लौ जारि भाजि करि गयो ॥५॥
दुपटा दूरि करा न्रिप जबै ॥

पकर लियो रानी कह तबै ॥
कहा गयो वहु जु मै निहारा ॥
बिनु न कहै भ्रम मिटै हमारा ॥६॥
प्रथमै जान माफ मुर कीजै ॥
बहुरौ बात साच सुनि लीजै ॥
बचनु देहु मेरे जौ हाथा ॥
बहुरि लेहु बिनती सुनि नाथा ॥७॥
भैंगे नेत्र तोरि बिधि करे ॥
इक तै जात दोइ लख परे ॥
तुम कह कछू झावरो आयो ॥
मुहि को दिखि लखि करि द्वै पायो ॥८॥
न्रिप सुनि बचन चकित ह्वै रहा ॥
त्रिय सौ बहुरि बचन नहि कहा ॥
मुख मूंदे घर कौ फिरि आयो ॥
करम रेख कह दोस लगायो ॥९॥

CHARITAR ३०१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इक चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥301॥5809॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सोरठ सैन एक भूपाला ॥
तेजवान बलवान छिताला ॥
सोरठ दे ता कै घर रानी ॥
सुंदर सकल भवन महि जानी ॥१॥
छत्रि सैन तह साह भनिजै ॥
छत्र देइ इक सुता कहिजै ॥
भूत भवान भविख्य मझारी ॥
भई न है ह्वै है न कुमारी ॥२॥
जब वहु तरुनि चंचला भई ॥
लरिकापन की सुधि बुधि गई ॥
छतिया कुचन तबै उठि आए ॥
मदन भरतिया भरत भराए ॥३॥
अभरन सैन कुअर तिन लहा ॥
तेजवान कछु जात न कहा ॥
लागी लगन छूटि नहि गई ॥
सुक नलनी की सी गति भई ॥४॥
ता सौ लगी लगन बहु भाता ॥
किह बिधि बरन सुनाऊ बाता ॥
नितिप्रति ता कह बोलि पठावै ॥
काम भोग रुचि मान कमावै ॥५॥
ता के लए नाथ कह मारा ॥
तन मै राड भेस को धारा ॥
जब ग्रिह अपने जार बुलायो ॥
सभ प्रसंग कहि ताहि सुनायो ॥६॥
सुनि कै जार बचन अस डरा ॥
ध्रिग ध्रिग बच तिह त्रियहि उचरा ॥
जिन अपनो पति आपु संघरियो ॥
मुहि कस चहत भलाई करियो ॥७॥

पति मारियो जा के हित गयो ॥
सो भी अंत न ता को भयो ॥
ऐसो मित्र कछू नही करियो ॥
इह राखे ते भलो संघरियो ॥८॥
कर महि काढि भगौती लई ॥
दुहूं हाथ ता को सिर दई ॥
हाइ हाइ जिमि भूप पुकारै ॥
त्रयो त्रयो नारि क्रिपानन मारै ॥९॥
द्वै दिन भए न पति के मरै ॥
ऐसी लगे अबै ए करै ॥
ध्रिग जियबो पिय बिनु जग माही ॥
जार चोर जिह हाथ चलाही ॥१०॥
मरियो निरखि तिह सभन उचारा ॥
भला करा तै जार संघारा ॥
चादर की लजा तै राखी ॥
धंन्य धंन्य पुत्री तू भाखी ॥११॥

CHARITAR ३०२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ दो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥302॥5820॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अभरन सिंघ सुना इक न्रिप बर ॥
लजत होत जिह निरखि दिवाकर ॥
अभरन देइ सदन महि नारी ॥
मथि अभरन जणु सकल निकारी ॥१॥
रानी हुती मित्र सेती रति ॥
भोगत हुती तवन कह नितिप्रति ॥
इक दिन भेद राव लखि पायो ॥
त्रिय के धाम बिलोकन आयो ॥२॥
तह ते लयो पकरि इक जारा ॥
तौने ठौरि मारि करि डारा ॥
इसत्री जानि न इसत्री मारी ॥
चित अपने ते दई बिसारी ॥३॥
बीतत बरख अधिक जब भए ॥
रानी बहु उपचार बनए ॥
राजा ता के धाम न आयो ॥
तब इक औरुपचार बनायो ॥४॥
रानी भेस संन्यासिनि को धरि ॥
जात भई तजि धाम निकरि करि ॥
खेलत न्रिपति अखिट जब आयो ॥
एक हरिन लखि तुरंग धवायो ॥५॥
जोजन कितक नगर ते गयो ॥
पहुचत जह न मनुछ इक भयो ॥
उतरियो बिकल बाग मै जाई ॥
रानी इकल पहूची आई ॥६॥
संन्यासिनि को भेस बनाए ॥
सीस जटन को जूट छकाए ॥
जो नरु ता को रूप निहारै ॥

उरझि रहै नहि संक बिचारै ॥७॥
उतरत बाग तिही त्रिय भई ॥
उहि राजा तन भेट हुई ॥
निरखत रूप उरझि न्रिप रहियो ॥
नरी नागनी को इह कहियो ॥८॥
कवन रूप रानी तुम हो जू ॥
किधो अपछरा साच कहो जू ॥
कै तुम हो रति पति की नारी ॥
कै निसि पति की अहहु कुमारी ॥९॥
भाति भाति तन चरचा करी ॥
बेद ब्याकरन कोक उचरी ॥
ज्यों त्यों चित ता को हरि लीना ॥
बिना घाइ घायल पति कीना ॥१०॥
मगन भयो चित भीतर भूपा ॥
निरखि नारि को रूप अनूपा ॥
एक बार कह जौ इह पाऊां ॥
जनम अनेक लगे बलि जाऊां ॥११॥
न्रिपहु नारि कह अधिक रिझायो ॥
भाति अनिक सेती उरझायो ॥
भजौ याहि मन माहि बिचारियो ॥
इह बिधि ता सौ बचन उचारियो ॥१२॥
हम तुम आउ रमै मिलि दोऊ ॥
और न लखत हमै ह्यां कोऊ ॥
क्यो तरुनापन ब्रिथा गवावत ॥
रानी ह्वै क्यो न सेज सुहावत ॥१३॥
अस तन सुंदरि धूरि न लावहु ॥
जोबन जाल न ब्रिथा गवावहु ॥
बिरधापनो आइ जब जै है ॥
इह ज्वानी कह तब पछतै है ॥१४॥
इह जोबन के कहा गुमाना ॥
जो काहू पर थिर न रहाना ॥
आउ करै दोऊ भोग बिलासा ॥
कहा करत या को भरवासा ॥१५॥
अड़िल ॥
धन जोबन को कहा गुमान न कीजियै ॥
सुख हम कौ दै तरुनि आपि सुखु लीजियै ॥
बिरधापनु ऐ है तरनापन जाइ है ॥
हो तब इह समै संभारि अधिक पछुताइ है ॥१६॥

चौपई ॥

प्रथम कही मेरी जो करै ॥
तिह पाछै मुहि साथ बिहरै ॥
बचन दीजिऐ मेरो हाथा ॥
तौ मै मानौ बच तौ नाथा ॥१७॥
अड़िल ॥
प्रिथम त्रिया को दोख छिमापन कीजियै ॥
तिह पाछे मोरा मन न्रिप बर लीजियै ॥
दोख छिमापन कीन बचन त्रिय को तबै ॥
हो सुने संन्यासिनि बैन स्रवन भीतर जबै ॥१८॥

चौपई ॥

एक दिवस त्रिय के ग्रिह आवै ॥
दुतिय दिवस ता के घर जावै ॥
रानी भेस संन्यासिनि धरै ॥
काम भोग राजा तन करै ॥१९॥
तिह न्रिप दुतिय नारि करि जानै ॥
भेद अभेद न मूड़्ह पछानै ॥
इसत्री चरित्र नहीं लखि पावै ॥
नितप्रति अपनो मूंड मुंडावै ॥२०॥

CHARITAR ३०३ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तीन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥303॥5840॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

बिधी सैन राजा इक सूरो ॥
तेग देग दुहूंअनि करि पूरो ॥
तेजवान दुतिवान अतुल बल ॥
अरि अनेक जीते जिन दलि मलि ॥१॥
बिभ्रय मती दुहिता इक ता के ॥
नरी नागनी सम नहि जा के ॥
अप्रमान तिह सेज सुहावै ॥
रवि ससि रोज बिलोकन आवै ॥२॥
ता को लगियो एक संग नेहा ॥
ज्यों सावन को बरिसत मेहा ॥
चतुर कुअर तिह नाम भनिजै ॥
कवन पुरख पटतर तिह दिजै ॥३॥
बिध्या देई इक दिन रसि कै ॥
बोलि लिया प्रीतम कह कसि कै ॥
काम भोग तिह साथ कमायो ॥
तरुनी तरुन अधिक सुख पायो ॥४॥
बिधी सैन सौ किनहि जताई ॥
तोरि सुता ग्रिह जार बुलाई ॥
काम भोग तिह साथ करत है ॥
तो ते न्रिप नहि नैकु डरत है ॥५॥
तब न्रिप साथ तिसी को लै कै ॥
जात भयो तह अधिक रिसै कै ॥
बिध्या मती जबै सुनि पाई ॥
मीत सहित जिय मै डर पाई ॥६॥
खोदि छात द्वै छेद सवारे ॥
जिह आवत वै राह बिचारे ॥
तिह मग ह्वै बिसटा दुहूं करा ॥
दूत सहित न्रिप के सिर परा ॥७॥
अंध गए ह्वै सूझ न आयो ॥
तिसी पैड ग्रिहि जार पठायो ॥
राजा भेद अभेद न लहा ॥
दुहिता काम कै गई कहा ॥८॥
बिसटा रही दुहूं के लगि कै ॥

सु घर गयो तिह के सिर हगि कै ॥
घरीक लगी धोवते बदनन ॥
बहुरि गए दुहिता कै सदनन ॥९॥
तहा जाइ जौ न्रिपति निहरा ॥
जार वार कछु दिसटि न परा ॥
तब न्रिप उलटि तिसी को मरियो ॥
बिसटा प्रथम जाहि सिर परियो ॥१०॥
इह छल सौ त्रिय पियहि उबारियो ॥
तिन के मुख बिसटा कौ डारियो ॥
भला बुरा भूपति न बिचारा ॥
भेद दाइकहि पकरि पछारा ॥११॥

CHARITAR ३०४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चार चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥304॥5851॥अफजूं॥*

चौपई ॥

त्रिपुरा सहर बसत है जहा ॥
त्रिपुर पाल राजा थो तहा ॥
त्रिपुर मती ता की बर नारी ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारी ॥१॥
फूल मती दूसरि तिह सवतिनि ॥
जनु तिह हुता आखि मैं सौ कनि ॥
ता सौ ताहि सिपरधा रहै ॥
चित भीतर मुख ते नहि कहै ॥२॥
त्रिपुरा मती एक दिज ऊपर ॥
अटकी रहै अधिक ही चित करि ॥
रैनि दिवस ग्रिह ताहि बुलावे ॥
काम केल रुचि मान मचावै ॥३॥
एक नारि तिन बोलि पठाई ॥
अधिक दरब दै ऐसि सिखाई ॥
जब ही जाइ प्रजा सभ सोई ॥
ऊच सबद उठियहु तब रोई ॥४॥
यौ कहि जाइ न्रिपति तन सोई ॥
आधी राति अंधेरी होई ॥
अधिक दुखित ह्वै नारि पुकारी ॥
न्रिप के परी कान धुनि भारी ॥५॥
राणी लई संग अपने करि ॥
हाथ बिखै अपने अस कौ धरि ॥
दोऊ चलि तीर तवन के गए ॥
इह बिधि सौ पूछत तिह भए ॥६॥

दोहरा ॥

को है री तू रोत क्यो कहा लगियो दुख तोहि ॥
मारत हौ नहि ठौर तुहि साच बतावहु मोहि ॥७॥

चौपई ॥

मुहि अरबला न्रिपति की जानहु ॥

भूपति भोर काल पहिचानहु ॥
ता ते मै रोवत दुखियारी ॥
सभै बिछुरि हैं निसुपति प्यारी ॥८॥
किह बिधि बचै न्रिपति के प्राना ॥
प्रात कीजियै सोई बिधाना ॥
तह त्रिय कहियो क्रिया इक करै ॥
तब मरबे ते न्रिपति उबरै ॥९॥
त्रिपुर मती दिजबर कह देहू ॥
डोरी निजु काधे करि लेहू ॥
दरब सहित तिह ग्रिहि पहुचावै ॥
तब न्रिप निकट काल नहि आवै ॥१०॥
फूलि देइ जु दुतिय त्रिय घर मै ॥
तिह देवै चंडारहि कर मै ॥
त्रिपुर मती कह ग्रिह न बुलावै ॥
ता कौ फेरि न बदन दिखावै ॥११॥

दोहरा ॥

प्रात आइ अपने सदन वहै क्रिया न्रिप कीन ॥
इक रानी दिजबर दई दुतिय चंडारहि दीन ॥१२॥
भेद अभेद त्रियान के मूढ न सकियो बिचारि ॥
दई दोऊ त्रिय पुंन्य करि जिय को त्रास निवार ॥१३॥

CHARITAR ३०५ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पाच चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥305॥5864॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बहड़ाइचि को देस बसत जह ॥
धुंध पाल न्रिप बसत होत तह ॥
दुंदभ दे ता के घर रानी ॥
जा की सम सुंदर न सक्रानी ॥१॥
तहिक सुलछन राइ बखनियत ॥
छत्री को तिह पूत प्रमनियत ॥
ता के तन सुंदरता घनी ॥
मोर बदन ते जाति न भनी ॥२॥
ता सौ बधी कुअरि की प्रीता ॥
जैसी भाति राम सो सीता ॥
रैनि दिवस तिह बोलि पठावै ॥
संक त्याग त्रिय भोग मचावै ॥३॥
इक दिन खबरि न्रिपति कह भई ॥
भेदी किनहि ब्रिथा कहि दई ॥
अधिक कोप करि गयो न्रिपति तह ॥
भोगत हुती जार कह त्रिय जह ॥४॥
रानी भेद पाइ अस कीया ॥
बाधि औध सिहजा तर लीया ॥
राव सहित ऊपरहि बहिठी ॥
भाति भाति तन होइ इकठी ॥५॥
रति मानी न्रिप साथ बनाई ॥

मूरख कंत बात नहि पाई ॥
रीझि रहा अबला कह भजि कै ॥
भाति भाति के आसन सजि कै ॥६॥
भोग कमात अधिक थकि गयो ॥
सोवत सेज तिसी पर भयो ॥
जौ न्रिचेसट त्रिय पिय लखि पायो ॥
जारि काढि करि धाम पठायो ॥७॥

दोहरा ॥

जागि खोजि न्रिप घर थका जार न लहियो निकारि ॥
भेद दियो जिह जान तिह झूठो हन्यो गवार ॥८॥

CHARITAR ३०६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥306॥5872॥अफजूं॥

चौपई ॥

भैरो पाल सुना इक राजा ॥
राज पाट ता ही कह छाजा ॥
चपला वती सुनी तिह त्रिय बर ॥
हुती पंडिता सकल हुनर करि ॥१॥
अद्रपाल इक न्रिपति परोसा ॥
देग तेग को जाहि भरोसा ॥
सुघना वती सुता इक ता की ॥
रोसन भयो जोति ससि वा की ॥२॥
इक दिन निकसा न्रिपति सिकारा ॥
लए स्वान सीचान हजारा ॥
चीता और जारियन लीने ॥
स्रयाह गोस नहि जाहि सु चीने ॥३॥
लगर झगर जुररा अरु बाजा ॥
बहरी कुही सिचान समाजा ॥
बासे और बसीनै घनी ॥
चिपक धूतियै जाहि न गनी ॥४॥
भाति भाति तन खेल सिकारा ॥
अधिक म्रिगन कह खेदि पछारा ॥
तब लगि द्रिसटि बराहिक आयो ॥
तिह पाछे तिह तुरंग धवायो ॥५॥
जात भयो ताही के देसा ॥
हाकि तुरंग पवन के भेसा ॥
सुघना वती लखा जब ता कौ ॥
लयो बुलाइ तहीं ते वा कौ ॥६॥
धौलर तर कमंद लरकाई ॥
लयो तिसौ तिह पैड चड़ाई ॥
काम भोग अति रुच करि माना ॥
भेद दूसरे मनुख न जाना ॥७॥
तब तिह पित यौ ह्रिदै बिचारा ॥
निजु रानी के साथ उचारा ॥
हम तुम आउ सुता के जाहीं ॥

दुहिता होइ खुसी मन माही ॥८॥
तब वै दोऊ सुता के गए ॥
ता के प्रापति द्वार पर भए ॥
सुघना वती तिह लखि दुख पायो ॥
अधिक असरफी काढि मंगायो ॥९॥
और अधिक तिन अतिथ बुलाए ॥
एक एक दै मुहर पठाए ॥
तिन के माहि न्रिपति कर मंगना ॥
दै सत मुहर निकारियो अंगना ॥१०॥
मुर परवार लख्यो इन राजा ॥
एतो दयो दरब बिनु काजा ॥
ता ते दुगुन तवन कह दयो ॥
भेद अभेद न जानत भयो ॥११॥

दोहरा ॥

राज सुता पिय मित्र कौ इह छल अतिथ बनाइ ॥
दै असरफी निकारियो भेद न जाना राइ ॥१२॥
मन मानत को भोग करि पित अरु मात दिखाइ ॥
इह छल सौ काढा तिसै किनहूं न गहियो बनाइ ॥१३॥

CHARITAR ३०७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सात चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥307॥5885॥अफजूं॥*

चौपई ॥

कोच बिहार सहिर जह बसै ॥
अमरावती पुरी कह हसै ॥
ब्रिध केतु तिह भूप भनिजै ॥
को राजा पटतर तिह दिजै ॥१॥
स्री फुट बेसरि दे तह दारा ॥
जिह सम देव न देव कुमारा ॥
ता को जात न रूप उचारा ॥
दिवस भयो ता ते उजियारा ॥२॥
हाजी राइ तहा खतिरेटा ॥
इसक मुसक के साथ लपेटा ॥
ता की जात न प्रभा उचारी ॥
फूलि रही जानुक फुलवारी ॥३॥
स्री फुट बेसरि दे तिह लहा ॥
इह बिधि चित अपने महि कहा ॥
कै अब मरौ कटारी हनि कै ॥
कै इह भजौ आजु बनि ठनि कै ॥४॥

दोहरा ॥

मसि भीजत तिह बदन पर अति सुंदर सरबंग ॥
कनक अवटि साचे ढरियो लूटी प्रभा अनंग ॥५॥

चौपई ॥

सुघरि सहचरी तहा पठाई ॥
छल सौ ताहि तहा लै आई ॥
जब तिह हाथ चलायो रानी ॥
हाजी राइ बात नहि मानी ॥६॥
अबला कोटि जतन करि हारी ॥
क्योहूं न भजी ताहि न्रिप नारी ॥
हाइ हाइ गिरि भूम उचारा ॥
मुर करेज डाइनी निहारा ॥७॥
तिह त्रिय बसत्र हुते पहिराए ॥
डाइन सुनत लोग उठि धाए ॥
जब गहि ताहि बहुत बिधि मारा ॥
तब तिन मना जु त्रिया उचारा ॥८॥
तब लगि तहा न्रिपति हूं आयो ॥
सुनि करेज त्रिय हरियो रिसायो ॥
इह डाइनि कह कहा संघारो ॥
कै अब ही रानीयहि जियारो ॥९॥
तब तिन दूरि ठाढ न्रिप कीए ॥
रानी के चुंबन तिन लीए ॥
राजा लखै करेजो डारै ॥
भेद अभेद नहि मूड़ बिचारै ॥१०॥
सभ तब ही लोगान हटायो ॥
अधिक नारि सौ भोग मचायो ॥
राखै जो मुरि कहि प्रिय प्राना ॥
तुम सौ रमौ सदा बिधि नाना ॥११॥
अधिक भोग ता सौ त्रिय करि कै ॥
धाइ भेस दै दयो निकरि कै ॥
भाखत जाइ पतिहि अस भई ॥
देइ करिजवा डाइनि गई ॥१२॥
दित मुहि प्रथम करिजवा भई ॥
पुनि वह अंत्रध्यान ह्वै गई ॥
न्रिप बर द्रिसटि न हमरी आई ॥
क्या जनियै किह देस सिधाई ॥१३॥
सति सति तब न्रिपति उचारा ॥
भेद अभेद न मूड़ बिचारा ॥
निरखत थो त्रिय जार बजाई ॥
इह चरित्र गयो आंखि चुराई ॥१४॥
प्रथम मित्र त्रिय बोलि पठायो ॥
कहियो न किय त्रिय त्रास दिखायो ॥
बहुरि भजा इह चरित लखाया ॥
ठाढ न्रिपति जड़ मूंड मुंडाया ॥१५॥

CHARITAR ३०८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ आठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥308॥5900॥अफजूं॥*

चौपई ॥

करनाटक को देस बसत जह ॥
स्री करनाटक सैन न्रिपति तह ॥
करनाटक देई ग्रिह नारी ॥

जा ते लिय रवि ससि उजियारी ॥१॥
तह इक साह बसत थो नीको ॥
जाहि निरखि सुख उपजत जी को ॥
ता के सुता हुती इक धामा ॥
थकित रहत निरखत जिह बामा ॥२॥
सुता अपूरब दे तिह नामा ॥
जिह सी कहूं कोऊ नहि बामा ॥
एक साह के सुत कह ब्याही ॥
बीरज केतु नाम तिह आही ॥३॥
जब वहु ब्याहि ताहि लै गयो ॥
निजु सदनन लै प्रापति भयो ॥
एक पुरख तिन नारि निहारा ॥
जा की सम नहि राज कुमारा ॥४॥
निरखत ताहि लगन तिह लगी ॥
नीद भूखि तब ही ते भगी ॥
पठै सहचरी ताहि बुलावै ॥
काम भोग रुचि मान कमावै ॥५॥
संग ता के बहु बधा सनेहा ॥
राझन और हीर को जेहा ॥
बीरज केत कह यादि न ल्यावै ॥
धरम भ्रात कहि ताहि बुलावै ॥६॥
भेद ससुर के लोग न जानै ॥
धरम भ्रात तिह त्रिय पहिचानै ॥
भेद अभेद न मूरख लहही ॥
भ्राता जान कछू नहि कहही ॥७॥
इक दिन त्रिय इह भाति उचारा ॥
निजु पति कौ दै कै बिखु मारा ॥
भाति भाति सौ रोदन करै ॥
लोग लखत सिर केस उपरै ॥८॥
अब मै धाम कवन के रहो ॥
मै पिय सबद कवन सौ कहो ॥
न्याइ नहीं हरि के घरि भीतरि ॥
इह गति करी मोरि अवनी तर ॥९॥
ग्रिह को दरब संग करि लीना ॥
मित्रहि संग पयाना कीना ॥
धरम भाइ जा कौ करि भाखा ॥
इह छल नाथ धाम करि राखा ॥१०॥
लोग सभै इह भाति उचारा ॥
आपु बिखै मिलि करत बिचारा ॥
कहा करै इह नारि बिचारी ॥
जा की दैव ऐस गति धारी ॥११॥
ता ते लै सभ ही धन धामा ॥
अपुने गई भाइ के बामा ॥
भेद अभेद न सकत बिचरि कै ॥
गई जार के नाथ संघरि कै ॥१२॥

CHARITAR ३०९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ नौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥309॥5912॥अफजूं॥

चौपई ॥

पुनि मंत्री इह भाति उचारा ॥
सुनहु न्रिपति जू बचन हमारा ॥
गारव देस बसत है जहा ॥
गौर सैन राजा थो तहा ॥१॥
स्री रस तिलक देइ तिह दारा ॥
चंद्र लियो जा ते उजियारा ॥
सामुंद्रक लछन ता मै सबि ॥
छबि उचार तिह सकै कवन कबि ॥२॥
तह इक हुतो साह को पूता ॥
भूतल को जानुक पुरहूता ॥
अधिक तरुन को तेज बिराजै ॥
नरी नागनी को मन लाजै ॥३॥
जब रानी तिह प्रभा निहारी ॥
तब ते भई अधिक मतवारी ॥
निरखि मित्र के नैन बिकानी ॥
तब ही ते ह्वै गई दिवानी ॥४॥
तब तिह बोलि लीयो अपने घर ॥
काम केल कीना अति रुचि करि ॥
भाति भाति तिह गरे लगायो ॥
अबला अधिक ह्रिदै सुखु पायो ॥५॥
तब लग आइ न्रिपति तह गयो ॥
ततछिन डारि महल ते दयो ॥
मरि गयो न्रिपति न भेद बिचारा ॥
जो जन अरध उरध ते पारा ॥६॥
आप रोत इह भाति उचारा ॥
देव पकरि करि न्रिपति पछारा ॥
मोरे साथ कियो थो संगा ॥
ता ते भयो अपवित्र स्रबंगा ॥७॥

दोहरा ॥

इह छल जार निकारियो निजु नाइकहि संघारि ॥
भेद अभेद मूरख किछू सका न नैक बिचारि ॥८॥
निजु नाइक कौ महल ते तिह हित दियो गिराइ ॥
यार बचायो आपनो नैक न रही लजाइ ॥९॥

CHARITAR ३१० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ दस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥310॥5921॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बिरह सैन इक न्रिपति सुजाना ॥
मानत आनि देस जिह नाना ॥
बिरह मंजरी ता की रानी ॥
सुंदरि भवन चत्रदस जानी ॥१॥
ता कै धाम एक सुत भयो ॥
जानक रवि दुतियो प्रगटयो ॥
सुंदरिता तिह कही न आवै ॥

निरखत पलक न जोरी जावै ॥२॥
तह इक तरनि साह की जाई ॥
जा की छबि नहि जात बताई ॥
कै ससि ते रोहनि इह जई ॥
आगे ह्वै है न पाछे भई ॥३॥
राज कुअर जब तवन निहारियो ॥
मदन बान तन ताहि प्रहारियो ॥
लगी अटकि सुधि बुधि छुट गई ॥
तबहि तरुनि मतवारी भई ॥४॥
भाति भाति तन दरबु लुटाई ॥
अधिक सखिन कह रही पठाई ॥
राज कुअर क्योहूं नहि आए ॥
ता सौ करे न मन के भाए ॥५॥
करि करि जतन कुअरि बहु हारी ॥
कैसहूं भजी मित्र नहि प्यारी ॥
घायल फिरै कुअरि मतवारी ॥
जानुक म्रिगी बिसिख तन मारी ॥६॥
रोवत कुअरि कबूं उठि गावै ॥
नाचत कबहूं बचन सुनावै ॥
मित्र मिलाइ देइ मुहि कोई ॥
जो मुख मागै दयो तिह सोई ॥७॥
एक सखी इह भाति उचारो ॥
सुनहु मित्रनीथ बचन हमारो ॥
जो तुहि कौ तव मित्र मिलाऊां ॥
तउ कहा तुम ते बर पाऊां ॥८॥
साह सुता जब यौ सुनि पावा ॥
जनुक बहुरि बपु मै जिय आवा ॥
निधनी अधिक मनहु धन पायो ॥
जनु कर अंमित म्रित के आयो ॥९॥
जा सौ लगन कुअर की हुती ॥
ता सौ भेस धारि कै सुती ॥
राज ग्रिहन मै किया पियाना ॥
भाखत भई बचन बिधि नाना ॥१०॥
न्रिप सुत त्रिय जु तिहारे भई ॥
मै तिन तुमरे धाम पठई ॥
तुम तिह त्रिय को चित चुरायो ॥
अब चलि कुअर करो मन भायो ॥११॥
जब न्रिप सुत ऐसे सुनि पाई ॥
चलियो न पनही पाइ चड़ाई ॥
भेद अभेद जड़ कछु न बिचारा ॥
आयो साह सुता कै द्वारा ॥१२॥
दिया बुझाइ दयो आगे त्रिय ॥
आवत भयो अंधेरे घर पिय ॥
चित अटका जा सौ सो जानी ॥
काम क्रिया ता सौ कसि ठानी ॥१३॥
काम भोग करि धाम सिधारियो ॥
मूरख कछु न बिचार बिचारियो ॥
दिया बुझाइ त्रिय रोज बुलावै ॥
काम केल करि कुवति कमावै ॥१४॥
देन कहा सू दूतियहि दीना ॥

काम भोग न्रिप सुत तन कीना ॥
तिन जड़ भेद अभेद न पायो ॥
इह छल अपनो मूंड मुंडायो ॥१५॥

CHARITAR ३११ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ ग्यारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥311॥5936॥अफजूं॥

चौपई ॥

जोग सैन राजा इक अति बल ॥
अरि अनेक जीते जिन दल मलि ॥
स्री संन्यास मती दारा घर ॥
अधिक चतुरि त्रिय हुती गुनन करि ॥१॥
केतिक दिनन जनत सुत भई ॥
सिख्या राइ बिरागी दई ॥
बढत बढत सो भयो तरुन जब ॥
अत ही सुंदरि होत भयो तब ॥२॥
तह इक हुती जाट की दारा ॥
अटकि रही लखि राज कुमारा ॥
निसु दिन सदन तवन के जावै ॥
न्रिप सुत ताहि चित नहि ल्यावै ॥३॥
ता ते तरुनि दुखित अति भई ॥
चित मै चरित बिचारे कई ॥
तब तन इहै बिचार बिचारा ॥
निजु तन भेस जोग को धारा ॥४॥
जोग भेस धरि तिह ग्रिह गई ॥
जंत्र मंत्र सिखवत बहु भई ॥
ता को लयो चोर करि चिता ॥
और हरा ग्रिहि को सभ बिता ॥५॥
इक दिन यौ तिह साथ उचारो ॥
जानत जोगी सवहि उठारो ॥
इक दिन इकल जु मो सौ चलै ॥
कौतक लखहु सकल तुम भलै ॥६॥

दोहरा ॥

अब लगि जगत मसान को नाहि निहारा नैन ॥
अब जुगिया के हेत ते दिखिहैं भाखे बैन ॥७॥

चौपई ॥

जब निसु भई अरध अंध्यारी ॥
तब न्रिप सुत इह भाति बिचारी ॥
इकलो जोगी साथ सिधै है ॥
उठत मसान निरखि घर ऐ है ॥८॥
चलत भयो जोगी के संगा ॥
त्रिय चरित्र को लख्यो न ढंगा ॥
ह्वै एकलो गयो तिह साथा ॥
ससत्र असत्र गहि लयो न हाथा ॥९॥
जब दोऊ गए गहर बन माही ॥

जह कोऊ मनुख तीसरो नाही ॥
तब अबला इह भाति उचारा ॥
सुनहु कुअर जू बचन हमारा ॥१०॥
त्रिय बाच ॥
कै जड़ प्रानन की आसा तजु ॥
कै रुचि मानि आउ मुहि कौ भजु ॥
कै तुहि काटि करै सत खंडा ॥
कै दै मोरि भग बिखै लंडा ॥११॥
राज कुअर अत ही तब डरा ॥
काम भोग तिह त्रिय संग करा ॥
इह छल सै वा को छलि गई ॥
राइ बिरागियहि भोगत भई ॥१२॥
अंत त्रियन के किनूं न पायो ॥
बिधना सिरजि बहुरि पछुतायो ॥
जिन इह कियौ सकल संसारो ॥
वहै पछानि भेद त्रिय हारो ॥१३॥

CHARITAR ३१२ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥312॥5949॥अफजूं॥

चौपई ॥

स्वरन सैन इक सुना न्रिपाला ॥
जा के सदन आठ सै बाला ॥
बिस्वमती ता के इक नारी ॥
जात न जिह की प्रभा उचारी ॥१॥
नाइनेक तिन न्रिपति निहारी ॥
रूपमान गुनमान बिचारी ॥
ता कह पकरि सदन लै आयो ॥
काम भोग तिह साथ कमायो ॥२॥
ता को लै इसत्री न्रिप करो ॥
भाति भाति तिह साथ बिहरो ॥
ता त्रिय की कुटेव नहि जाई ॥
अवरन साथ रमै लपटाई ॥३॥
इक दिन अरध निसा जब भई ॥
जार धाम नाइन वह गई ॥
चौकीदारन गहि ता कौ लिय ॥
नाक काटि कर बहुरि छाडि दिय ॥४॥
नाइनि कटी नाक लै कै कर ॥
फिरि आई न्रिप के भीतर घर ॥
तब न्रिप रोम मूंडबे काजा ॥
माग्यो तुरतु उसतरा राजा ॥५॥
तब तिन वहै उसतरा दीयो ॥
जा पर बाढि न कबहूं कीयो ॥
निरखि न्रिपति तिह अधिक रिसायो ॥
गहि ता त्रिय की ओर चलायो ॥६॥
तब त्रिय हाइ हाइ कहि उठी ॥
काटि नाक राजा जू सुटी ॥
तब राजा हेरन तिह धायो ॥

स्रोन पुलत लखि मुख बिसमायो ॥७॥
हाहा पद तब न्रिपति उचारा ॥
मै नहि ऐसे भेद बिचारा ॥
निरखहु ता त्रिय की चतुरई ॥
राजा मूंड बुराई दई ॥८॥

दोहरा ॥

भेद अभेद कौ तिन न्रिपति किया न ह्रिदै बिचार ॥
ताहि बुराई सिर दई नाक कटाई नारि ॥९॥

CHARITAR ३१३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तेरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥313॥5958॥अफजूं॥*

चौपई ॥

दछिन सैन सु दछिन न्रिप इक ॥
सासत्र सिम्रित जानत थो निक ॥
सदन सु दछिन दे तिह दारा ॥
जनु ससि चड़ियो गगन मंझारा ॥१॥
अप्रमान रानी की थी छबि ॥
निरखि प्रभा जिह रहत भान दबि ॥
राजा अधिक आसकत ता परि ॥
जिह बिधि अलि पंखुरी कमल करि ॥२॥
तहा साह की हुती दुलारी ॥
तिन राजा की प्रभा निहारी ॥
स्री सु कुमार देइ तिह नामा ॥
जिह सी भई न महि महि बामा ॥३॥
चित महि साह सुता यौ कहियो ॥
जब तिह हेरि अटक मन रहियो ॥
कौन जतन जा ते न्रिप पाऊ ॥
चित ते त्रिय पहिली बिसराऊ ॥४॥
बसत्रति उतम सकल उतारे ॥
मेखलादि तन मो पट धारे ॥
ता के धूम द्वार पर डारियो ॥
इसत्री पुरख न किनूं बिचारियो ॥५॥
केतिक दिवस बीत जब गए ॥
लखन नगर निकसत प्रभ भए ॥
भाखा सुनन सभन की काजा ॥
अतिथ भेस धरि निकसियो राजा ॥६॥
तिन त्रिय भेस अतिथ को धरि कै ॥
बचन उचारियो न्रिपहि निहरि कै ॥
कह भयो राजा मूरख मति कौ ॥
भली बुरी जानत नहि गति कौ ॥७॥
दुराचार रानी जु कमावै ॥
ता के धाम नित्य न्रिप जावै ॥
जड़ इह लखत मोरि हितकारनि ॥
सो नित सोत संग लै यारनि ॥८॥
न्रिप यह धुनि स्रवनन सुनि पाई ॥

पूछत भयो तिसी कह जाई ॥
अथित न्रिपति ह्यां दो क्या करै ॥
जो तुम कहहु सो बिधि परहरै ॥९॥
इह न्रिप जोग न ऐसी नारी ॥
चहियत हनी कि तुरत निकारी ॥
भलो न गवन करो ता के छिन ॥
दुराचार त्रिय करत जु निस दिन ॥१०॥
इन के जोग एक त्रिय अही ॥
एक साह के जाई कही ॥
ज्यों इह न्रिप पुरखन को राजा ॥
त्रयो वहु नारि त्रियन सिरताजा ॥११॥
जौ वा कौ राजा ग्रिह ल्यावै ॥
राज पाट तब सकल सुहावै ॥
ताहि लखे त्रिय सभ दुरि जाही ॥
जिमि उडगन रवि की परछाही ॥१२॥
जब राजै इह बिधि सुन पायो ॥
इहै मतो जिय माझ पकायो ॥
दुराचारि इसत्री परहरौ ॥
निजु त्रिय साह सुता लै करौ ॥१३॥
प्रातै काल धाम जब आयो ॥
नेगी महतन बोलि पठायो ॥
साह सुता जिह तिह बिधि लई ॥
रानी डारि ह्रिदै ते दई ॥१४॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तह चंचला ता को चरित दिखाइ ॥
निजु त्रिय साथ तुराइ तिह आपन भज्यो बनाइ ॥१५॥

CHARITAR ३१४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौदह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥314॥5973॥अफज्रूं॥*

चौपई ॥

सहिर इटावा गंग तीर जह ॥
पाल सु पछिम हुते न्रिपति तह ॥
नारि सु पछिम दे ता के घर ॥
सुरी नागनी नरी न सरबर ॥१॥
बाढी एक रानियहि हेरा ॥
मदन देह तब ही तिह घेरा ॥
अधिक नेह तिह साथ बढायो ॥
राजा को चित ते बिसरायो ॥२॥
ऐसी रसिगी ता सौ नारी ॥
जा ते पति तन प्रीति बिसारी ॥
गेरू घोरि पान करि लीयो ॥
मुख ते डारि लखत न्रिप दीयो ॥३॥
जाना स्रोण बदन ते बमा ॥
न्रिप मन मै इह सूल न छमा ॥
अति आतुर ह्वै बैद बुलाए ॥

चिहन रोग तिह नारि सुनाए ॥४॥
तब तिन पी गेरू पुनि डारा ॥
स्रोण बमा सभहून बिचारा ॥
तब पति सो इम नारि उचारो ॥
अब रानी कह मरी बिचारो ॥५॥
रानी कहत न्रिपति सो करियहु ॥
मेरो बहुरि न बदन निहरियहु ॥
और सखी काहू न दिखैयो ॥
रानी जाइ जार घरि ऐयो ॥६॥
साच बचन जड़ सुनत उचरि कै ॥
दम कह रोकि गई जनु मरि कै ॥
आंसु पुलित अखीआं पति भई ॥
तब ही जार साथ उठि गई ॥७॥
आंखि पूंछि न्रिप हेरै कहा ॥
ऊहा न अंग तवन को रहा ॥
तब सखियन इह भाति उचारियो ॥
भेद अभेद पसु न्रिप न बिचारियो ॥८॥
रानी गई सदेह स्वरग कह ॥
छोरि गई हम कौ कत महि मह ॥
मूरख साचु इहै लहि लई ॥
देह सहित सुरपुर त्रिय गई ॥९॥
जे जे पुंन्नयवान है लोगा ॥
ते ते है इह गति के जोगा ॥
जिन इक चित ह्वै कै हरि ध्यायो ॥
ता के काल निकट नहि आयो ॥१०॥
इक चित जो ध्यावत हरि भए ॥
देह सहत सुरपुर ते गए ॥
भेद अभेद की क्रिया न पाई ॥
मूरख सति इहै ठहराई ॥११॥

CHARITAR ३१५ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पंद्रह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥315॥5984॥अफजूं॥

चौपई ॥

सहिर सुनार गाव सुनियत जह ॥
राइ बंगाली सैन बसत तह ॥
स्री बंगाल मती तिह रानी ॥
सुंदर भवन चत्रदस जानी ॥१॥
बंग देइ दुहिता इक ता के ॥
और सुंदरी सम नहि जा के ॥
तिन इक पुरख निहारो जब ही ॥
काम देव के बसि भी तब ही ॥२॥
सूर सूर कहि भू पर परी ॥
जनु गज बेल बाव की हरी ॥
सु छबि राइ सुधि पाइ बुलाइसि ॥
काम भोग रुचि मान मचाइसि ॥३॥
बधि गी कुअरि सजन के नेहा ॥
जिमि लागत सावन को मेहा ॥

सूर सूर कहि गिरी प्रिथी पर ॥
तात मात आई सखि सभ घर ॥४॥
मात परी दुहिता कह जनियहु ॥
ता तन जीए कुअरि प्रमनियहु ॥
जो मै कहत तुमै सो करियहु ॥
छोरि कफन मुखि नहिन निहरियहु ॥५॥
तुम कौ तात मात दुख ह्वै है ॥
तुमरी सुता अधोगत जै है ॥
हमरो कछू न सोकहि धरियहु ॥
छमापराध हमारो करियहु ॥६॥
रवि ससि कौ मै मुख न दिखारा ॥
अब हेरै कस अंगन हमारा ॥
सास घूटि जनु करि मरि गई ॥
सखियन लपिटि बसत्र महि लई ॥७॥
बकरी बाधि सिरंही मधि दीनी ॥
छोर बसत्र पितु मात न चीनी ॥
दुहूं सुता को बचन संभारा ॥
सल के माझ बकरियहि जारा ॥८॥
गई जार संग राज कुमारी ॥
भेद अभेद किनी न बिचारी ॥
दुहिता मरी जारि जनु दीनी ॥
त्रिय चरित्र की क्रिया न चीनी ॥९॥

CHARITAR ३१६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सोलह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥316॥5993॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मंत्री कथा उचारी औरै ॥
राजा देस बंगला गौरै ॥
समन प्रभा ता की पटरानी ॥
जिह सम सुनी न किनी बखानी ॥१॥
पुहप प्रभा इक राज दुलारी ॥
बहुरि बिधाता तसि न सवारी ॥
ता की आभा जात न कही ॥
जनु करि फूलि अबासी रही ॥२॥
भूमि गिरी ता की सुंद्राई ॥
ता ते अबासी लई ललाई ॥
गाल्रहन ते जो रस चुइ परा ॥
भयो गुलाब तिसी ते हरा ॥३॥
जोबन जब आयो अंग ता के ॥
साह एक आयौ तब वा के ॥
एक पुत्र सुंदरि तिह संगा ॥
जन मनसा द्वै जए अनंगा ॥४॥
गाजी राइ नाम तिह नर को ॥
कंकन जान काम के कर को ॥
भूखन को भूखन तिह मानो ॥
दूखन को दूखन पहिचानो ॥५॥
पुहप प्रभा ता को जब लहा ॥

मन बच क्रम ऐसे कर कहा ॥
ऐसि करौ मै कवन उपाई ॥
मोरि इहीं संग होइ सगाई ॥६॥
प्रातहि काल सुयंबर किया ॥
कुंकम डारि तिसी पर दिया ॥
अरु पुहपन तै डारिसि हारा ॥
हेरि रहे मुख भूप अपारा ॥७॥
तिह न्रिप सुत सभहूं करि जाना ॥
साह पुत्र किनहूं न पछाना ॥
मात पिता नहि भेद बिचरा ॥
इह छल कुअरि सभन कह छरा ॥८॥

CHARITAR ३१७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सत्रह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥317॥6001॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

मरगज सैन हुतो इक न्रिप बर ॥
मरगज देइ नारि जा के घर ॥
रूपवान धनवान बिसाला ॥
भिछ्छक कलपतरु द्रुजनन काला ॥१॥
मूंगी पटना देस तवन को ॥
जीति कवन रिपु सकत जवन को ॥
अप्रमान तिह प्रभा बिराजै ॥
सुर नर नाग असुर मन लाजै ॥२॥
एक पुरख रानी लखि पायो ॥
तेजमान गुनमान सवायो ॥
पुहप राज जनु मधि पुहपन के ॥
चोरि लेति जनु चित इसत्रिन के ॥३॥
सोरठा ॥
रानी लयो बुलाइ तवन पुरख अपने सदन ॥
अति रुचि अधिक बढाइ ता सौ रति मानत भई ॥४॥

चौपई ॥

तब लगि नाथ धाम तिह आयो ॥
मनहातर त्रिय जार छपायो ॥
बहु बुगचा आगे दै डारे ॥
ता के जात न अंग निहारे ॥५॥
बहु चिर तह बैठा न्रिप रहा ॥
भला बुरा कछु भेद न लहा ॥
जब ही उठि अपनो घर आयो ॥
तब ही त्रिय घर मीत पठायो ॥६॥

CHARITAR ३१८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥318॥6007॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सुनो न्रिपति मै भाखत कथा ॥
जह मिलि देव समुद कह मथा ॥
तहा सुब्रत नामा मुनि रहै ॥
अधिक ब्रती जा कह जग कहै ॥१॥
त्रिय मुनि राज मती तिह रहै ॥
रूप अधिक जा को सभ कहै ॥
असि सुंदरि नहि और उतरी ॥
है ह्वैहै न बिधाता करी ॥२॥
सागर मथन देव जब लागे ॥
मथ्यो न जाइ सगल दुख पागे ॥
तब तिन त्रिय इह भाति उचारो ॥
सुनो देवतियो बचन हमारो ॥३॥
जो बिधि धरै सीस पर झारी ॥
पानि भरै जल रासि मंझारी ॥
मेरो धूरि पगन की धोवै ॥
तब यह सफल मनोरथ होवै ॥४॥
ब्रहम अति आतुर कछु न बिचरा ॥
झारी राखि सीस जल भरा ॥
देखहु इह इसत्रिन के चरिता ॥
इह बिधि चरित दिखायो करता ॥५॥

CHARITAR ३१९ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥319॥6012॥अफजूं॥*

चौपई ॥

भूमि भार ते अति दुख पायो ॥
ब्रहमा पै दुख रोइ सुनायो ॥
ब्रहमा करी बिसन की सेवा ॥
ता ते भए क्रिसन जग देवा ॥१॥
मुर दानव को कंस वतारा ॥
करत पूरब लौ द्रोह संभारा ॥
वा के करत हनन के दावै ॥
नितप्रति आसुरन तहा पठावै ॥२॥
प्रथम पूतना क्रिसन संघारी ॥
पुनि सकटासुर देह उधारी ॥
बहुरि बकासुर असुर संघारियो ॥
ब्रिखभासुर के ब्रिखन उपारियो ॥३॥
आघासुर को अघ निवरत करि ॥
पुनि केसी मारियो चरनन धरि ॥
बहुरि ब्रहम कह चरित दिखायो ॥
धरि करि पर गिर इंद्र हरायो ॥४॥
नंदहि छीन बरन ते ल्यायो ॥
संदीपन के सुतहि मिलायो ॥
दावानल ते गोप उबारे ॥
गोपन सौ ब्रिज करे अखारे ॥५॥
कुवलया गज को दात लयो हरि ॥
चाडूरहि मुसटकहि प्रहरि करि ॥
पकरि केस ते कंस पछारा ॥

उग्रसैन सिर छत्रहि ढारा ॥६॥
जरासिंधु की चमूं संघारी ॥
संख लयो संखासुर मारी ॥
नगर द्वारिका कीया प्रवेसा ॥
देस देस के जीति नरेसा ॥७॥
दंतबक्र नरकासुर घायो ॥
सोरह सहस बधू बरि ल्यायो ॥
पारजात सुर पुर ते ल्याया ॥
बिंद्राबन महि खेल दिखाया ॥८॥
पंड्वन की जिन करी जितारी ॥
द्रुपद सुता की लाज उबारी ॥
सभ कौरव के दलहि खपाई ॥
संतहि आंच न लागन पाई ॥९॥
सभ सूचनता जौ करि जैयै ॥
ग्रंथ बढन ते अधिक डरैयै ॥
ता ते थोरी कथा उचारी ॥
चूक होइ कबि लेहु सुधारी ॥१०॥
अब मै कहत कथा रुकमनी ॥
जिह छल बरियो क्रिसन सो धनी ॥
लिखि पतिया दिज हाथ पठाई ॥
कहियहु महाराज तन जाई ॥११॥
सवैया ॥
ब्याह बद्यो सिसपाल भए सुई जोरि बरात बियाहन आए ॥
हौ अटकी मधसूदन सौ जिन की छबि हाटक हेरि हिराए ॥
चात्रिक की जिमि प्यास घटे न बिना घन से घन स्याम सुहाए ॥
हारी गिरीं न हिरियो हिय को दुख हेरि रहीं न हहा हरि आए ॥१२॥

चौपई ॥

पतिया बाचि चड़े हरि रथै ॥
मानहु लूट लयो मनमथै ॥
उत सिसुपाल जोरि दल आयो ॥
कुंदन पुरी नगर नियरायो ॥१३॥
भेद कहा रुकमिनी बिप्र स्रयों ॥
प्रान नाथ सेती कहियहु यौ ॥
जब मै गौरि पूजबै ऐहौं ॥
तब तव दरस चंद्र सो पैहौं ॥१४॥

दोहरा ॥

तब तुम हम कौ भुजा भरि लीजहु रथहि चड़ाइ ॥
निजु नारी लै कीजियहु दुसट सभन को घाइ ॥१५॥

चौपई ॥

रुकम ब्याह की सौज बनाई ॥
भाति भाति पकवान मिठाई ॥
फूलियो फिरत त्रियन के गन मै ॥
मूंड मुंडे की खबरि न मन मै ॥१६॥
गौरि पूजने बहिनि पठाई ॥
तह ते हरी क्रिसन सुखदाई ॥
दुसट लोग मुख बाइ रहत भे ॥

हाइ हाइ इह भाति कहत भे ॥१७॥

भुजंग छंद ॥

चलियो क्रिसन ता कौ रथै डारि लै कै ॥
तबै बीर धाए सभै कोप ह्वै कै ॥
जरासिंधु ते आदि लै बीर जेते ॥
हथै लै पटैलै चले डारि तेते ॥१८॥
किते पाखरै डारि कै बाजियो पै ॥
किते चार जामे चड़े ताजियो पै ॥
मघेले धधेले बुंदेले चंदेले ॥
कछ्वहे रठौरे बघेले खंडेले ॥१९॥
तबै रुकम रुकमी सभै भाइ लै कै ॥
चलियो सैन बाकी हठी गोल कै कै ॥
तहा बान तीखे छुटे ओर चारू ॥
मंडे आनि जोधा बज्यो राग मारू ॥२०॥
कही भीम भेरी बजै संख भारे ॥
कहूं नाद नाफीरियै औ नगारे ॥
परी मारि बानान की भाति ऐसी ॥
उठी अगनि ज्वाला प्रलै काल जैसी ॥२१॥
चलै सीघ्रता सौ खहै बान बाने ॥
उठै अगन ज्वाला लसै ज्यो टनाने ॥
कहूं चरम बरमै परे मरम भेदे ॥
कहूं मास के गीध लै गे लबेदे ॥२२॥
कहूं अंगुलित्राण काटे परे है ॥
कहूं अंगुली काटि रतनै झरे है ॥
रही हाथ ही मै क्रिपानै कटारे ॥
गिरै जूझि कै कै परे भूम मारे ॥२३॥
तबै कोप कै कै चंदेले सिधाए ॥
बधे चुंग चुंगी चले खेत आए ॥
चहूं ओर घेरियो हरी किसन कौ यौ ॥
गड़ेदार मानो करी मत की ज्यो ॥२४॥
तबै कोप कै क्रिसन मारे चंदेले ॥
मघेले धधेले बघेले बुंदेले ॥
चंदेरीस हूं कौ तबै बान मारा ॥
गिरियो भूमि पै न हथ्यारै संभारा ॥२५॥

चौपई ॥

जरासिंध कहि पुनि सर मारा ॥
भागि चलियो न हथ्यार संभारा ॥
भिरे सु मरे बचे ते हारे ॥
चंदेरियहि चंदेल सिधारे ॥२६॥
तब रुकमी पहुचत भयो जाई ॥
अधिक क्रिसन सौ करी लराई ॥
भाति भाति तन बिसिख प्रहारे ॥
हारियो वहै क्रिसन नहि हारे ॥२७॥
चित मै अधिक ठानि कै क्रुधा ॥
माडत भयो क्रिसन सौ जुधा ॥
एक बान तब स्याम प्रहारा ॥
गिरियो प्रिथी पर जानु संघारा ॥२८॥

सर सौ मूंडि प्रथम तिह सीसा ॥
बाधि लयो रथ सौ जदुईसा ॥
भ्रात जानि रुकमिनी छडायो ॥
लजत धाम सिसपाल सिधायो ॥२९॥
किनूं चंदेलन के सिर तूटे ॥
कईक गए मूंड घर टूटे ॥
सकल चंदेले लाज लजाए ॥
नारि गवाइ चंदेरी आए ॥३०॥

दोहरा ॥

गए चंदेल चंदेरियहि कर ते नारि गवाइ ॥
इह चरित्र तन रुकमनी बरत भई जदुराइ ॥३१॥

CHARITAR ३२० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥320॥6043॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुक्राचारज दान्वन को गुर ॥
सुक्रावती बसत जा को पुर ॥
मारि देव जा कौ रन जावै ॥
पड़ि संजीवनि ताहि जियावै ॥१॥
देवजानि इक सुता तवन की ॥
अप्रमान छबि हुती जवन की ॥
कच नामा देवन को दिजबर ॥
आवत भयो सुक्र के तब घर ॥२॥
देवजानि संगि किया अधिक हित ॥
हरि लीनो ज्यों त्यों त्रिय को चित ॥
मंत्रहि लेन संजीवन काजा ॥
इह छल पठियो देवतन राजा ॥३॥
दैत भेद पावत जब भए ॥
ता को डारि नदी हनि गए ॥
बिलम लगी वह धाम न आयो ॥
देवजानि अति ही दुख पायो ॥४॥
भाखि पिता तन बहुरि जियायो ॥
दैतन देख अधिक दुख पायो ॥
नितिप्रति मारि ताहि उठि जावै ॥
पुनि पुनि ता कौ सुक्र जियावै ॥५॥
तब तिह मारि मद्रय महि डारियो ॥
बचत भूंजि निजु गुरहि खवारियो ॥
देवजानि जब ताहि न लहा ॥
अधिक दुखित ह्वै पित प्रति कहा ॥६॥
अब लौ कच जु धाम नहि आयो ॥
जनियत किनहूं असुर चबायो ॥
ता ते पितु तिह बहुरि जियावो ॥
हमरे मन को सोक मिटावो ॥७॥
तब ही सुक्र ध्यान महि गए ॥
तिह निजु पेट बिलोकत भए ॥

मंत्र सजीवन कौ किह दै करि ॥
काढत भयो उदर अपनो फरि ॥८॥
काढत ताहि सुक्र मरि गयो ॥
बहुरि मंत्र बल कचहि जिययो ॥
स्राप दयो मदा को तिह तह ॥
ता ते पियत न याकह कोऊ कह ॥९॥
देविजान पुनि ऐस बिचारा ॥
यौ कच तन तजि लाज उचारा ॥
काम भोग मो सौ तै करु रे ॥
हमरे मदन ताप कह हरु रे ॥१०॥
तिन रति करी न ता ते संगा ॥
ब्यापि रहियो तिह जदिप अनंगा ॥
देवजानि तब अधिक रिसाई ॥
मोहि न भज्यो याहि दुखदाई ॥११॥
इह बिधि स्राप देत तिह भई ॥
कथा चउपई सु मै बनई ॥
पापी फुरै मंत्र तव नाही ॥
तो ते सुर न जिवाए जाही ॥१२॥
प्रथम जियायो ताहि कसट करि ॥
रम्यो न सो स्राप्रयो तब रिसि भरि ॥
पिता भए इह भाति सुनायो ॥
देवराज इह कचहि पठायो ॥१३॥
तात बात कहो मै सो करो ॥
मंत्र सजीवन इह ननुसरो ॥
जब इह सीखि मंत्र कह जै है ॥
देवराज फिरि हाथ न ऐ है ॥१४॥
मंत्र न फुरै स्राप इह दीजै ॥
मेरो बचन मानि पितु लीजै ॥
भेद अभेद कछु सुक्र न पायो ॥
मंत्र निफल को स्रापु दिवायो ॥१५॥
ताहि मरे बहु बार जियायो ॥
तब स्राप्रयो जब भोग न पायो ॥
त्रिय चरित्र गति किनूं न पाई ॥
जिनि बिधनै इह नारि बनाई ॥१६॥

CHARITAR ३२१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥321॥6059॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु प्रभु और बखानो कथा ॥
ऐहै चित हमारे जथा ॥
छजकरनन को देस बसत जह ॥
सुछबि केतु इक हुतो न्रिपति तह ॥१॥
अचरज दे ता के इक नारी ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारी ॥
स्री मकराछ मती दुहिता तिह ॥
छीनि करी ससि अंस सकल जिह ॥२॥
जब बर जोग भई वहु दारा ॥

साहु पूत तन किया प्यारा ॥
काम केल तिह साथ कमावै ॥
भाति अनिक तन ताहि रिझावै ॥३॥
न्रिप तन भेद किसू नर भाखा ॥
तब ते ताहि धाम असि राखा ॥
जहा न पंछी करै प्रवेसा ॥
जाइ न जहा पवन को वेसा ॥४॥
कुअरि मित्र बिनु बहु दुखु पायो ॥
बीर हाकि इक निकट बुलायो ॥
ता सौ कहा तहा तुम जाई ॥
ल्याहु सजन की खाटि उचाई ॥५॥
सुनत बचन तह बीर सिधयो ॥
खाट उचाइ ल्यावत भयो ॥
काम भोग करि कुअरि कुअर संग ॥
पहुचायो ग्रिह ताहि तिसी ढंग ॥६॥

दोहरा ॥

एक दिवस ता कौ पिता गयो सुता के ग्रेह ॥
सेज देखि करि दलमली चित महि बढा संदेह ॥७॥

चौपई ॥

चिंतातुर घर को फिरि आयो ॥
सहिर ढंढोरा ऐस दिलायो ॥
जे कोई पुहप खरीदन आवै ॥
मुहि निरखे बिनु लेन न पावै ॥८॥
पुहपन समै बिकन जब भयो ॥
तब तह न्रिपति बिलोकन अयो ॥
जोगी एक तहा तब आयो ॥
पुहप पाच मन मोल चुकायो ॥९॥
आइ सु फूल मोल लै गयो ॥
पाछो गहत न्रिपति तिह भयो ॥
जात जात दोऊ गए गहिर बन ॥
जह लखि जात तीसरो मनुख न ॥१०॥
तब जोगी सर जटा उघारी ॥
तिन भीतर ते नारि निकारी ॥
भाति भाति ता सौ रति करि कै ॥
सोयो ताप मदन कौ हरि कै ॥११॥
जब ही सोइ संन्यासी गयो ॥
जूत जटन तिह नारि छुरयो ॥
तह ते पुरख एक तिह काढा ॥
काम भोग ता सौ करि गाढा ॥१२॥
न्रिप ठाढो तिह चरित निहारा ॥
जोरि हाथ जोगियहि उचारा ॥
मो ग्रिह काल क्रिपा करि ऐयो ॥
जथा सकति भोजन करि जैयो ॥१३॥
प्रात गयो संन्यासी तिह घर ॥
भगवा भेस सकल तन मै धरि ॥
भाति भाति तन प्रभा बनाई ॥
महा धरम सो जनियो जाई ॥१४॥

संन्यासी कह न्रिप आगे धरि ॥
दुहिता के राजा आयो घर ॥
तीन थाल भोजन के भरि कै ॥
आगे राखे बचन उचरि कै ॥१५॥
इह बिधि बचन कहे संन्यासी ॥
कहा करत है मुहि तन हासी ॥
एक मनुछ हौ इतनौ भोजन ॥
खायो जाइ कवन बिधि मो तन ॥१६॥
एक थार भोजन तुम करो ॥
दुतिय जटन मै तिह अनसरो ॥
जिह तिह भाति जटा छुरवाइ ॥
तह ते नारि निकासी राइ ॥१७॥
त्रितिय थार आगे तिह राखा ॥
बिहसि बचन ता सौ न्रिप भाखा ॥
केस फास ते पुरख निकारहु ॥
यह भोजन तुम ता कह ख्वारहु ॥१८॥
जिह तिह बिधि ता को सु निकारियो ॥
बहुरि सुता सौ बचन उचारियो ॥
तीन थार अगे तिह राखे ॥
तीनो भखहु याहि बिधि भाखे ॥१९॥
दुहकर करम लखियो पित को जब ॥
चक्रित भई चित माझ कुअरि तब ॥
जार सहित वह बीर बुलायो ॥
आपन सहित भोज वह खायो ॥२०॥
त्रास चित मै अधिक बिचारा ॥
इन राजै सभ चरित निहारा ॥
कवन उपाइ आजु ह्यां करियै ॥
कछुक खेलि करि चरित निकरियै ॥२१॥
बीर हाकि अस मंत्र उचारा ॥
पित जुत अंध तिनै करि डारा ॥
गई मित्र के साथ निकरि करि ॥
भेद सका नहि किनूं बिचरि करि ॥२२॥
अंध भए ते लोग सभै जब ॥
इह बिधि बचन बखाना न्रिप तब ॥
आछि बैद कोऊ लेहु बुलाइ ॥
जो आखिन को करे उपाइ ॥२३॥
दुहिता बैद भेस तह धरि कै ॥
रोग न्रिपति अखिअन कौ हरि कै ॥
मागि लयो पित ते सोई पति ॥
खचित हुती जा के भीतर मति ॥२४॥
इह छल बरियो बाल पति तौने ॥
मन महि चुभियो चतुरि कै जौने ॥
इन इसत्रिन के चरित अपारा ॥
सजि पछुतान्रयो इन करतारा ॥२५॥

CHARITAR ३२२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बाईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥322॥6084॥अफजूं॥*

चौपई ॥

भद्र सैन राजा इक अति बल ॥
अरि अनेक जीते जिन दलमलि ॥
सहिर भेहरा मै असथाना ॥
जिन कौ भरत दंड न्रिप नाना ॥१॥
कुमदनि दे ता के घर नारी ॥
आपु जनकु जगदीस सवारी ॥
ता की जात न प्रभा उचारी ॥
फूल रही जनु करि फुलवारी ॥२॥
प्रमुद सैन सुत ग्रिह अवतरियो ॥
मदन रूप दूसर जनु धरियो ॥
जा की जात न प्रभा बखानी ॥
अटिक रहत लखि रंक रु रानी ॥३॥
जब वह तरुन कुअर अति भयो ॥
ठौरहि ठौर अवर ह्वै गये ॥
बालपने कि तगीरी आई ॥
अंग अंग फिरी अनंग दुहाई ॥४॥
तह इक सुता साह की अही ॥
कुअर बिलोक थकित ह्वै रही ॥
हौस मिलन की ह्रिदै बढाई ॥
एक सहचरी तहा पठाई ॥५॥
सखी कुअर तन ब्रिथा जनाई ॥
साह सुता तव हेरि लुभाई ॥
करहु सजन तिह धाम पयाना ॥
भोग करो वा सौ बिधि नाना ॥६॥
द्वै हैगे इह नगर खुदाई ॥
तिन दुहूंअन मौ रारि बढाई ॥
जौ तू दुहूं जियन तै मारै ॥
बहुरि हमारो साथ बिहारै ॥७॥
सुनि बच भेस तुरक त्रिय धरा ॥
बाना वहै आपनो करा ॥
गहि क्रिपान तिह कियो पयाना ॥
जहा निमाजी पड़त दुगाना ॥८॥
जब ही पड़ी निमाज तिनो सब ॥
सिजदा बिखै सु गए तुरक जब ॥
तब इह घात भली करि पाई ॥
काटि मूंड दुहूंअन के आई ॥९॥
इह बिधि दोऊ खुदाई मारे ॥
रमी आनि करि साथ प्यारे ॥
भेद अभेद न किनी बिचारा ॥
किनही दुसट कहियो इन मारा ॥१०॥

दोहरा ॥

मारि खुदाइन दुहूं कह बरियो आनि कर मित ॥
देव अदेव न पावही अबलान के चरित ॥११॥

CHARITAR ३२३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तेईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥323॥6095॥अफजूं॥*

चौपई ॥

मंत्री कथा उचारन लागा ॥
जा के रस राजा अनुरागा ॥
सूरति सैन न्रिपति इक सूरति ॥
जानुक दुतिय मैन की मूरति ॥१॥
अछ्रा देइ सदन तिह नारी ॥
कनक अवटि साचै जन ढारी ॥
अपसर मती सुता तिह सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥२॥
सुरिद सैन इक साह पुत्र तह ॥
जिह सम दूसर भयो न महि मह ॥
राज सुता तिह ऊपर अटकी ॥
बिसरि गई सभ ही सुधि घट की ॥३॥
चतुरि सहचरी तहा पठाई ॥
नारि भेस करि तिह लै आई ॥
जब वहु तरुन तरुनियहि पायो ॥
भाति भाति भजि गरे लगायो ॥४॥
भाति भाति के आसन लै कै ॥
भाति भाति तन चुंबन कै कै ॥
तिह तिह बिधि ता को बिरमायो ॥
ग्रिह जैबो तिनहूं सु भुलायो ॥५॥
सखी भेस कह धारे रहै ॥
सोई करै जु अबला कहै ॥
रोज भजै आसन तिह लै कै ॥
भाति भाति ता कहु सुख दै कै ॥६॥
पित तिह निरखै भेद न जानै ॥
दुहिता की तिह सखी प्रमानै ॥
भेद अभेद जड़ कोइ न लहही ॥
वा की ताहि खवासिनि करही ॥७॥
इक दिन दुहिता पिता निहारत ॥
भई खेल के बीच महा रत ॥
तवन पुरख कह पुरख उचरि कै ॥
भरता करा सुयंबर करि कै ॥८॥
बैठी बहुरि सोक मन धरि कै ॥
सुनत मात पित बचन उचरि कै ॥
कह इह करी लखहु हमरी गति ॥
मुहि इन दीन सहचरी करि पति ॥९॥
अब मुहि भई इहै सहचरि पति ॥
खेलत दई लरिकवन सुभ मति ॥
अब जौ है मोरै सत माही ॥
तौ इह नारि पुरख ह्वै जाही ॥१०॥
त्रिय ते इहै पुरख ह्वै जाही ॥
जौ कछु सत मेरे महि आही ॥
यह अब जूनि पुरख की पावै ॥
मदन भोग मुरि संग कमावै ॥११॥
चक्रित भयो राजा इन बचनन ॥
रानी सहित बिचार कियो मन ॥
दुहिता कहा कहत बैनन कह ॥

अचरज सो आवत है जिय मह ॥१२॥
जब तिह बसत्र छोरि न्रिप लहा ॥
न्रिकस्रयो वहै जु दुहिता कहा ॥
अधिक सती ता कहि करि जाना ॥
भला बुरा नहि मूड़ पछाना ॥१३॥

CHARITAR ३२४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौबीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥324॥6108॥अफजूं॥*

चौपई ॥

स्री सुलतान सैन इक राजा ॥
जा सम दुतिय न बिधना साजा ॥
स्री सुलतान देइ तिह नारी ॥
रूपवान गुनवान उजियारी ॥१॥
ता के भवन भई इक बाला ॥
जानुक सिथर अगनि की ज्वाला ॥
स्री सुलतान कुअरि उजियारी ॥
कनक अवटि साचे जन ढारी ॥२॥
जोबनंग ता के जब भयो ॥
बालापन तब ही सभ गयो ॥
अंग अंग दयो अनंग दमामा ॥
जाहिर भई जगत महि बामा ॥३॥
सुनि सुनि प्रभा कुअर तह आवै ॥
द्वारै भीर बार नहि पावै ॥
एक तरुन तरुनी कौ भायो ॥
जानुक मदन रूप धरि आयो ॥४॥
सोइ कुअर तरुनी कौ भायो ॥
पठै सहचरी बोलि पठायो ॥
क्रीड़ा करी बहुत बिधि वा सो ॥
कीनो प्रात सुयंबर ता सो ॥५॥
जब ही ब्याह तवन सौ कीयो ॥
बहुतिक बरिस न जाने दीयो ॥
क्रीड़ा करै भाति भातिन तन ॥
हरख बढाइ बढाइ अधिक मन ॥६॥
भोग बहुत दिन ता संग कयो ॥
ता को बल सभ ही हरि लयो ॥
जबै न्रिधात कुअर वह भयो ॥
तब ही डारि ह्रिदै ते दयो ॥७॥
औरन साथ करै तब प्रीता ॥
निसु दिन करै काम की रीता ॥
पतिहि तोरि खोजा करि डारा ॥
आपु अवर सो केल मचारा ॥८॥
बिरह राइ ता को थो यारा ॥
जा सो बधियो कुअरि के प्यारा ॥
ता पर रही होइ सो लटकन ॥
तिह हित मरत प्यास अरु भूखन ॥९॥
इक दिन भाग मित्र तिह लई ॥
पोसत सहित अफीम चड़ई ॥

बहु रति करी न बीरज गिराई ॥
आठ पहिर लगि कुअरि बजाई ॥१०॥
सभ निसि नारि भोग जब पायो ॥
बहु आसन करि हरख बढायो ॥
ता पर तरुनि चित ते अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुधि घट की ॥११॥
द्वै घटिका जो भोग करत नर ॥
ता पर रीझत नारि बहुत करि ॥
चारि पहर जो केल कमावै ॥
सो क्योन न त्रिय कौ चित चुरावै ॥१२॥
रैनि सकल तिन तरुनि बजाई ॥
भाति भाति के साथ हंढाई ॥
आसन करे तरुनि बहु बारा ॥
चुंबनादि नख घात अपारा ॥१३॥
भाति भाति के चतुरासन करि ॥
भज्यो ताहि तर दाबि भुजन भरि ॥
चुंबन आसन करत बिचछन ॥
कोक कला कोबिद सभ लछन ॥१४॥

दोहरा ॥

पोसत स्राब अफीम बहु घोटि चड़ावत भंग ॥
चारि पहर भामहि भजा तऊ न मुचा अनंग ॥१५॥

चौपई ॥

भोग करत सभ रैनि बितावत ॥
दलिमलि सेज मिलिन ह्वै जावत ॥
होत दिवाकर की अनुराई ॥
छैल सेज मिलि बहुरि बिछाई ॥१६॥
पौढि प्रजंक अंक भरि सोऊ ॥
भाग अफीम पियत मिलि दोऊ ॥
बहुरि काम की केल मचावै ॥
कोक सार मत प्रगट दिखावै ॥१७॥
कैफन साथ रस मसे ह्वै करि ॥
प्रोढि प्रजंक रहत दोऊ स्वै करि ॥
बहुरि जगै रस रीति मचावै ॥
कवित उचारहि धुरपद गावै ॥१८॥
तब लगि बिरह नटा ता को पति ॥
निकसियो आइ तहा मूरख मति ॥
तब त्रिय चतुर चरित्र बिचरि कै ॥
हन्यो ताहि फासी गर डरि कै ॥१९॥
एक कोठरी मित्र छपायो ॥
पतिहि मारि सुर ऊच उघायो ॥
राजा प्रजा सबद सुनि धाए ॥
दुहिता के मंदरि चलि आए ॥२०॥
म्रितक परियो ता कौ भरतारा ॥
राव रंक सभहूंन निहारा ॥
पूछत भयो तिसी कह राजन ॥
कहा भई या की गति कामनि ॥२१॥
सुनहु पिता मै कछू न जानो ॥

रोग याहि जो तुमै बखानो ॥
अकसमात्र या कह कछु भयो ॥
जींवत हुतो म्रितक ह्वै गयो ॥२२॥
अरु जौ अब मो मै कछु सत है ॥
अरु जौ सत्य बेद कौ मत है ॥
अब मै रुद्र तपस्या करि हौ ॥
याहि जियाऊ कै जरि मरि हौ ॥२३॥
तुमहूं बैठ याहि अंगना अब ॥
पूजा करहु सदा सिव की सब ॥
मै या कौ इह घर लै जै है ॥
पूजि सदा सिव बहुरि जिवै हौ ॥२४॥
मात पिता अंगना बैठाए ॥
नैबी महता सगल बुलाए ॥
लै संग गई म्रितक कह तिह घर ॥
राखियो थो जहा जार छपा करि ॥२५॥
तिह घर जाइ पाट द्रिड़ दै करि ॥
रमी जार के साथ बिहसि करि ॥
न्रिप जुत बैठ लोग द्वारा परि ॥
भेद अभेद न सकत बिचरि करि ॥२६॥
ते सभ ही जिय मै अस जानै ॥
सुता सिवहि पूजत अनुमानै ॥
या की आजु सतता लहि है ॥
भली बुरी बतिया तब कहि है ॥२७॥
जो यह कुअरि रुद्र सो रत है ॥
जौ यह तिह चरनन मै मत है ॥
तौ पति जीवत बार न लगि है ॥
सिव सिव भाखि म्रितक पुनि जगि है ॥२८॥
इत ते द्वार बिचार बिचारत ॥
उत त्रिय संग भी जार महा रत ॥
ज्यों ज्यों लपटि चोट चटकावै ॥
ते जाने वह गाल्रह बजावै ॥२९॥
तहा खोदि भू ता को गाडा ॥
बाहर हाड गोड नहि छाडा ॥
अपने साथ जार कह धरि कै ॥
लै आई इह भाति उचरि कै ॥३०॥
जब मै ध्यान रुद्र को धरियो ॥
तब सिव अस मुर साथ उचरियो ॥
बरंब्रूह पुत्री मन भावत ॥
जो इह समै ह्रिदै महि आवत ॥३१॥
तब मै कहियो जियाइ देहु पति ॥
जो तुमरे चरनन महि मुर मति ॥
तब इह भाति बखानियो सिव बच ॥
सो तुम समझि लेहु भूपति सचु ॥३२॥

दोहरा ॥

ता ते अति सुंदर करो वा ते बैस किसोर ॥
नाथ जींयो स्री संभु की क्रिपा द्रिसटि की कोर ॥३३॥

चौपई ॥

सभहिन बचन सत करि जाना ॥
सिव को सत बचन अनुमाना ॥
तब ते तजि सुंदर जिय त्रासा ॥
नित प्रति ता सौ करत बिलासा ॥३४॥

CHARITAR ३२५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पचीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥325॥6142॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

गहरवार राजा इक अति बल ॥
कबै न चलिया पीर हलाचल ॥
गूड़्ह मती नारी ता के घर ॥
कही न परत प्रभा ता की बर ॥१॥
तह इक हुतो साह बडभागी ॥
रूपवान गुनवान नुरागी ॥
सुकच मती दुहिता ता के घर ॥
प्रगट भई जनु कला किरणिधर ॥२॥
एक तहा बैपारी आयो ॥
अमित दरब नहि जात गनायो ॥
जवित्र जाइफर उसटै भरे ॥
लौंग लायची कवन उचरे ॥३॥
उतरत धाम तवन के भयो ॥
मिलबो काज साह संग गयो ॥
दुहित घात तवन की पाई ॥
सकल दरबु तिह लियो चुराई ॥४॥
मात्रा ग्रिह की सकल निकारि ॥
दई बहुरि तह आगि प्रजार ॥
रोवत सुता पिता पहि आई ॥
जरियो धाम कहि ताहि सुनाई ॥५॥
सुन त्रिय बचन साह द्वै धाए ॥
घर को माल निकासन आए ॥
आगे आइ निहारै कहा ॥
निरखा ढेर भसम का तहा ॥६॥
बहुरि सुता इमि बचन उचारे ॥
यहै पिता दुख ह्रिदै हमारे ॥
आपनि गए का सोक न आवा ॥
या को लगत हमै पछतावा ॥७॥
पुनि सुता कौ अस साह उचारे ॥
सोई भयो जु लिखियो हमारे ॥
तुम या को कछु सोक करहु जिन ॥
दै हो दरबु जरियो जितनो इन ॥८॥
भेद अभेव न कछु जड़ पायो ॥
मूंड मुंडाइ बहुरि घर आयो ॥
करम रेख अपनी पहिचानी ॥
त्रिय चरित्र की रीति न जानी ॥९॥
साहु सुता इह छल धन हरा ॥
भेद न ता के पितै बिचरा ॥
स्याना हुतो भेद नहि पायो ॥

बिनु लागे जल मूंड मुंडायो ॥१०॥

CHARITAR ३२६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छबीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥326॥6152॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

अचलावती नगर इक सोहै ॥
अचल सैन राजा तह कोहै ॥
अचल देइ ता के घर रानी ॥
सुंदरि भवन चत्रदस जानी ॥१॥
अचल मती दूसर तिह दारा ॥
ता ते सुंदरि हुती अपारा ॥
ता सौ न्रिप को नेह अपारा ॥
जानत ऊच नीच तिह प्यारा ॥२॥
दुतिय नारि अस चरित बिचारियो ॥
एक नारि के साथ सिखारियो ॥
ता को भरियो दरब सौ धामा ॥
जानत अवर न दूजी बामा ॥३॥
जब सभ अरध रात्रि स्वै जाहि ॥
जागत रहै एक जन नाहि ॥
दीप जरियो धौलर जब लहियहु ॥
तब तुम अस राजा सौ कहियहु ॥४॥
माया गडी मोहि न्रिप जानो ॥
एक बात मै तुमै बखानो ॥
अछला दे त्रिय कौ बलि दै कै ॥
ग्रिह लै जाहि काढि मुहि लै कै ॥५॥
अछला दे जब ही सुनि पायो ॥
उलटि भेद तिह त्रियहि सिखायो ॥
एक बात मागे मुहि देहु ॥
न्रिप पहि नाम तिसी का लेहु ॥६॥
प्रथमै अधिक दरबु तिह दिया ॥
दुगनो दरब देन तिह किया ॥
तिन सहेट उत दीप जगायो ॥
इति इसत्री इमि भाखि सुनायो ॥७॥
हे न्रिप मुहि माया तुम जानो ॥
बिकट केतु की गडी पछानो ॥
अपनी इसत्री कह बलि दै कै ॥
या ते भखहु काढि धन लै कै ॥८॥
रानी साथ जहा न्रिप सोयो ॥
अरधिक रात्रि बचन तह होयो ॥
मुहि माया कौ घर ही राखहु ॥
इसत्री दै अपनी बलि भाखहु ॥९॥
जिन इसत्री इह चरित बनायो ॥
ता ही को न्रिप नाम सुनायो ॥
राजा लोभ दरब के मारे ॥
तिसी नारि कह बलि दै डारे ॥१०॥
जिनहु नारि कौ मतो सिखायो ॥
पलटि काम ताही के आयो ॥

उन त्रिय दरब ताहि बहु द्रयाइ ॥
नारि तिसी कौ हन्यौ बनाइ ॥११॥
बुरी बात जो कोई बनावै ॥
उलटि काम ताही के आवै ॥
जैसा कियो तैस फल पायो ॥
ताहि हनत थी आपु हनायो ॥१२॥

CHARITAR ३२७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सताईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥327॥6164॥अफजूं॥*

चौपई ॥

थंभकरन इक थंभ्र देस न्रिप ॥
सिख्य साधु को दुसटन को रिपु ॥
ता के स्वान एक थो आछा ॥
सुंदर घनो सिंघ सो काछा ॥१॥
इक दिन धाम न्रिपति के आयो ॥
पाहन हनि तिह ताहि हटायो ॥
त्रिय की हुती स्वान सौ प्रीता ॥
पाहन लगे भयो दुख चीता ॥२॥
पाहन लगे स्वान मरि गयो ॥
रानी दोस न्रिपति कह दयो ॥
मरियो स्वान भयो कहा उचारा ॥
ऐसे हमरे परै हजारा ॥३॥
अब तै या कौ पीर पछाना ॥
ता को भाति पूजि है नाना ॥
कहियो सही तब याहि पुजाऊ ॥
भले भले ते नीर भराऊ ॥४॥
कुतब साह राखा तिह नामा ॥
तही खोदि भूअ गाडियो बामा ॥
ता की गोर बणाई ऐसी ॥
किसी पीर की होइ न जैसी ॥५॥
इक दिन आपु तहा त्रिय गई ॥
सिरनी कछू चड़ावत भई ॥
मंनति मोरि कही बर आई ॥
सुपना दियो पीर सुखदाई ॥६॥
मोहि सोवते पीर जगायो ॥
आपु आपनी कबुर बतायो ॥
ता ते मै इह ठौर पछानी ॥
जब हमरी मनसा बर आनी ॥७॥
इह बिधि जब पुर मै सुनि पायो ॥
ज्रयारति सकल लोग मिलि आयो ॥
भाति भाति सीरनी चड़ावै ॥
चूंबि कबुर कूकर की जावै ॥८॥
काजी सेख सैयद तह आवै ॥
पड़ि फातया सीरनी बटावै ॥
धूरि समस झारूअन उडाही ॥
चूंमि कबुर कूकर की जाही ॥९॥

दोहरा ॥

इह छल अपनै स्वान को चरित दिखायो बाम ॥
अब लगि कह ज्रयारति करै साहु कुतब दी नाम ॥१०॥

CHARITAR ३२८ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठाईस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥328॥6174॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बिजियावती नगर इक सोहै ॥
ब्रिभ्रम सैन न्रिपति तह कोहै ॥
ब्रयाघ्र मती ता के घर दारा ॥
चंद्र लयो ता ते उजियारा ॥१॥
तिह ठा हुती एक पनिहारी ॥
न्रिप के बार भरत थी द्वारी ॥
तिह कंचन के भूखन लहि कै ॥
डारि दए घट मौ कर गहि कै ॥२॥
ऊपर जल ता के तर भूखन ॥
किनूं न नर समझ्यो तिह दूखन ॥
बहु पुरखन ता को जल पीआ ॥
किनहूं जानि भेद नहि लीआ ॥३॥
रानीहूं तिह घटहि निहारा ॥
द्रिसटि न्रिपति की तर सु निकारा ॥
काहूं बात लखी नहि गई ॥
भूखन जात नारि हरि भई ॥४॥

CHARITAR ३२९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥329॥6178॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बिरहावती नगर इक दछिन ॥
बिरह सैन तिह न्रिपति बिचछन ॥
बिरहा देइ सदन महि बाला ॥
जनु करि सिखर अगनि की ज्वाला ॥१॥
इसका दे तिह सुता भनिजै ॥
चंद सूर जिह सम छबि दिजै ॥
अवर नारि तिह सम नहि कोई ॥
त्रिय की उपमा कह त्रिय सोई ॥२॥
सुंदरता ता के तन ऐसी ॥
सची पारबती होइ न तैसी ॥
मालुम सकल जगत उजियारी ॥
जछ गाध्रबी भीतर प्यारी ॥३॥
कंचन सैन दैत तह भारो ॥
बीरजमान दुतिमान करारो ॥
निहकंटक असुरान करियो जिन ॥
समुहि भयो सो बली हन्यो तिन ॥४॥

तिह पुर अरधि राति वह आवै ॥
एक पुरख नितप्रति भखि जावै ॥
सभहिन सोच बढियो जिय मै अति ॥
बैठि बिचार करत भे सुभ मति ॥५॥
इह राछस अति ही बलवाना ॥
मानुख भखत रैनि दिन नाना ॥
त्रास करत काहू नहि जन कौ ॥
निरभै फिरत होत करि मन कौ ॥६॥
बेस्वा हुती एक पुर तवनै ॥
दानव खात मनुख भूअ जवनै ॥
सो अबला राजा पह आई ॥
निरख राव की प्रभा लुभाई ॥७॥
इह बिधि कहियो न्रिपति तन बैना ॥
जौ तुम मुहि राखहु निजु ऐना ॥
तौ हौ मारि असुर कह आवौ ॥
या पुर को सभ सोक मिटावौ ॥८॥
तब मै बरौ तोहि कौ धामा ॥
जब तै हन असुर कह बामा ॥
देस सभै अरु लोग बसै सुख ॥
मिटै प्रजा के चित को सभ दुख ॥९॥
बली आठ सै महिख मंगायो ॥
भछ भोज पकवान पकायो ॥
मदरा अधिक तहा लै धरा ॥
सात बार जु चुआइनि करा ॥१०॥
भली भाति सभ अंन बनाए ॥
भाति भाति बिखु साथ मिलाए ॥
गरधभान बहु दई अफीमै ॥
बाधे आनि असुर की सीमै ॥११॥
आधी राति दैत तह आयो ॥
गरधभान महिखान चबायो ॥
भछ भोज बहुते तब खाए ॥
भरि भरि प्याले मदहि चड़ाए ॥१२॥
मद की पीए बिसुध ह्वै रहा ॥
आनि अफीम गरौ तिह गहा ॥
सोइ रहा सुधि कछू न पाई ॥
नारि पछान घात कह धाई ॥१३॥
अठ हज़ार मन सिका लयो ॥
ता पर अवटि ढारि करि दयो ॥
भसमी भूत दैत वहु कियो ॥
बिरहवती पुर कौ सुख दियो ॥१४॥

दोहरा ॥

इह छल अबला असुर हनि न्रिपहि बरियो सुख पाइ ॥
सकल प्रजा सुख सौ बसी ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१५॥

CHARITAR ३३० — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥330॥6193॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

वलंदेज को एक न्रिपाला ॥
वलंदेज देई घर बाला ॥
ता पुर कुप्रयो फिरंग राइ मन ॥
सैन चड़ा लै करि संग अनगन ॥१॥
नामु फिरंगी राइ न्रिपति तिह ॥
अंगरेजन पर चड़त करी जिह ॥
अनगन लए चमूं चतुरंगा ॥
जनु करि उमडि चलियो जल गंगा ॥२॥
वलंदेज देई के नाथहि ॥
प्रान तजे डर ही के साथहि ॥
रानी भेद न काहू दयो ॥
त्रास त्रसत राजा मरि गयो ॥३॥
म्रितक नाथ तिह समै निहारा ॥
और संग बहु सैन बिचारा ॥
इहै घात जिय माहि बिचारी ॥
कासट पुत्रिका लछ सवारी ॥४॥
लछ ही हाथ बंदूक सवारी ॥
दारू गोलिन भरी सुधारी ॥
डिवढा चुनत भई तुपखाना ॥
तीर बंदूक कमान अरु बाना ॥५॥
जब अरि सैन निकट तिह आई ॥
सभहिन गई पलीता लाई ॥
बीस हजार तुपक इक बार ॥
छुटगी कछु न रही संभारा ॥६॥
जिमि मखीर की उडत सु माखी ॥
तिमि ही चली बंदूकै बाखी ॥
जा के लगे अंग मौ बाना ॥
ततछिन तिन भट तजे पराना ॥७॥
तरफराहि गौरिन के मारे ॥
पछु सुत ओरन जनुक बिदारे ॥
रथी सु नागपती अरु बाजा ॥
जम पुर गए सहित निजु राजा ॥८॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तन चंचला कूटो कटक हजार ॥
अरि मारे राजा सहित गए ग्रिहन कौ हारि ॥९॥

CHARITAR ३३१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥331॥6202॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सहिर भेहरे एक न्रिपति बर ॥
काम सैन तिह नाम कहत नर ॥
कामावती तवन की नारी ॥
रूपवान दुतिवान उजियारी ॥१॥
ता के बहुत रहै ग्रिह बाजिन ॥

जयो करत ताजी अरु ताजिन ॥
तह भव एक बछेरा लयो ॥
भूत भविख्य न वैसे भयो ॥२॥
तह इक होत साह बडभागी ॥
रूप कुअर नामा अनुरागी ॥
प्रीति कला तिह सुता भनिजै ॥
को दूसर पटतर तिह दिजै ॥३॥
सौ त्रिय एक चौधरी सुत पर ॥
अटकि गई तरुनी अति रुचि करि ॥
मिजमानी छल ताहि बुलायो ॥
भाति भाति भोजनहि भुजायो ॥४॥
कीना कैफ रसमसो जब ही ॥
तरुनी इह बिधि उचरी तब ही ॥
अब तै गवन आइ मेरो करि ॥
काम तपत अब ही हमरो हरि ॥५॥
तब इह बिधि तिन पुरख उचारी ॥
यौ न भजौ तुहि सुनहु प्यारी ॥
जो राजा के उपज्यो बाजी ॥
सो दै प्रथम आनि मुहि ताजी ॥६॥
तब तिन त्रिय बिचार अस कियो ॥
किह बिधि जाइ तुरंगम लियो ॥
ऐसे करियै कवनुपचारा ॥
जा ते परै हाथ मो प्यारा ॥७॥
अरध रात्रि बीतत भी जबै ॥
स्वान भेख धारा त्रिय तबै ॥
कर महि गहि क्रिपान इक लई ॥
बाजी हुतो जहा तह गई ॥८॥
सात कोट तह कूदि पहूंची ॥
दान क्रिपान मान की सूची ॥
जिह जागत पहरूअरि निहारै ॥
ता को मूंड काटि करि डारै ॥९॥
अड़िल ॥
एक पहरूअहि मारि दुतिय कह मारियो ॥
त्रितिय मारि चतरथ को सीस उतारियो ॥
पंचम खसटम मारि सपतवौ हति कियो ॥
हो असटम पुरख संघारि छोरि बाजी लियो ॥१०॥
परी नगर मै रौरि जबै त्रिय है हरियो ॥
पठै पखरिया कछ्छि कछ्छि कहै कहा परियो ॥
बाट घाट सभ रोकि गहो इह चोरि कौ ॥
हो धर लीजै इह होन न दीजै भोर कौ ॥११॥
जित जित धावहि लोग हरियो है कहै किस ॥
कढै क्रिपानै दिखियत धावत दसौ दिसि ॥
अस कारज जिह किय न जान तिह दीजियै ॥
हो ज्यों त्यों जीति तुरंग न्रिपति को लीजियै ॥१२॥
बहुत पहूंचे निकटि तरुनि के जाइ कै ॥
फिरि मारे तिन वहै तुरंग नचाइ कै ॥
करि करि जाहि चलाकी बाही बेग तन ॥
हो तिन की हौस न राखी राखे एक ब्रन ॥१३॥

चौपई ॥

कूद कीआ जा के पर वारा ॥
इक ते ताहि दोइ करि डारा ॥
चुनि चुनि हने पखरिया मन तै ॥
द्वै द्वै गे ह्वै इक इक तन तै ॥१४॥
बहु बिधि बीर पखरिया मारै ॥
इक इक ते करि द्वै द्वै डारे ॥
घोरा सहित घाइ जो घए ॥
द्वै ते चारि टूक ते भए ॥१५॥

दोहरा ॥

इह बिधि बीर बिदार बहु नदी तुरंग तराइ ॥
जहा मित्र को ग्रिह हुतो तही निकास्यो आइ ॥१६॥

चौपई ॥

जब तिह आनि तुरंगम दीयो ॥
काम भोग ता सै द्रिड़ कीयो ॥
जौ पाछे तिन फौज निहारी ॥
इह बिधि सौ तिह त्रियहि उचारी ॥१७॥
अड़िल ॥
बुरो करम हम करियो तुरंग न्रिप को हरियो ॥
आपु आपुने पगन कुहारा कौ मरियो ॥
अब ए तुरंग समेत पकरि लै जाइ है ॥
हो फासी दैहै दुहूं कि सूरी द्रयाइ है ॥१८॥

चौपई ॥

त्रिय भाख्यो पिय सोक न करो ॥
बाज सहित दोऊ बचे बिचरो ॥
ऐसो चरित अबै मै करि हो ॥
दुसटन डारि सिर छारि उबरि हो ॥१९॥
तहा पुरख को भेस बनाइ ॥
दल कह मिली अगमने जाइ ॥
कही हमारो सतर उबारो ॥
और गाव ते सकल निहारो ॥२०॥
मिलि दल धाम अगमने जाइ ॥
बाज पाइ झाझर पहिराइ ॥
सकल गाव तिन कह दिखराई ॥
फिरि तिह ठौरि तिनै लै आई ॥२१॥
परदा लेत तानि आगे तिन ॥
देखहु जाइ जनाना कहि जिन ॥
आगे करि सभहिन के बाजा ॥
इह छल बाम निकारियो राजा ॥२२॥
सो आंगन लै तिनै दिखावै ॥
आगे बहुरि कनात तनावै ॥
आगे करि करि बाज निकारै ॥
नेवर के बाजत झनकारै ॥२३॥
बहू बधू तिन की वहु जानै ॥
बाजी कह मूरख न पछानै ॥
नेवर कै बाजत झनकारा ॥
भेद अभेद न जात बिचारा ॥२४॥

दुहिता बहू तिनै करि जानै ॥
सुनि सुनि धुनि नेवर की कानै ॥
भेद अभेद कछू न बिचारी ॥
इह छल छलै पुरख सभ नारी ॥२५॥
जवन रुचा ज्यों त्यों तिह भजा ॥
जिय जु न भायो तिह कौ तजा ॥
इन इसत्रीन के चरित अपारा ॥
जिनै न बिधना सकत बिचारा ॥२६॥

CHARITAR ३३२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥332॥6228॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनहो राज कुअरि इक बाता ॥
त्रिय चरित्र जो किय बिख्याता ॥
पसचिम दिसा हुती इक नगरी ॥
हंस मालनी नाम उजगरी ॥१॥
हंस सैन जिह राज बिराजै ॥
हंस प्रभा जा की त्रिय राजै ॥
रूपवान गुनवानुजियारी ॥
जाहिर लोक चौदहूं प्यारी ॥२॥
तह इक साहु सुता दुतिमाना ॥
बहुरि जियत जिह निरखि ससाना ॥
जोबन भयो अधिक तिह जब ही ॥
बहुतन साथ बिहारत तब ही ॥३॥
इक दिन भेस पुरख को धारि ॥
निजु पति साथ करी बहु रारि ॥
लात मुसट के करत प्रहार ॥
सो तिह नारि न सकै बिचारि ॥४॥
ता सौ लरि काजी पहि गई ॥
लै इलाम प्रयादन संग अई ॥
ऐच पतिहि लै तहा सिधाई ॥
कोतवार काजी जिह ठाई ॥५॥
प्रयादन साथ द्वार पति थिर करि ॥
दिन कह गई मित्र अपने घर ॥
ता संग करि क्रीड़ा की गाथा ॥
लै आई साहिद कहि साथा ॥६॥
अड़िल ॥
जार प्रयादन पति जुति द्वारे ठाढि कर ॥
दुतिय मित्र के गई दिवस कह नारि घर ॥
काम भोग तिह साथि कीया रुचि मानि करि ॥
हो साहिद कै ल्याई अपने तिह साथ धरि ॥७॥

चौपई ॥

कहा लगे मै कहो उचरि करि ॥
इह बिधि गई बहुतन के घर ॥
संग साहिद सभ ही करि लीने ॥

सकल रुजू काजी के कीने ॥८॥
तिह अपनी अपनी ते मानै ॥
एक एक को भेद न जानै ॥
जु त्रिय कहत सो पुरख बखानत ॥
आपु आपु की बात न जानत ॥९॥
सभ साहिद जब नजरि गुजरे ॥
एक बचन वह त्रिया उचरे ॥
तब काजी साची इह कीनो ॥
दरब बटाइ अरध तिह दीनो ॥१०॥
किनूं न ता को भेद बिचारा ॥
कस चरित्र इह नारि दिखारा ॥
औरन की कोऊ कहा बखानै ॥
आपु आप महि तेऊ न जानै ॥११॥

दोहरा ॥

कहा लखा त्रिय करम करि कैसे करम कमाइ ॥
भेद अभेद सभ आपु महि सका न कोऊ पाइ ॥१२॥

CHARITAR ३३३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तेतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥333॥6240॥अफज्राूं॥*

चौपई ॥

राज सैन इक राजा दछिन ॥
त्रिय तिह राज मती सुभ लछन ॥
अमित दरब तन भरे भंडारा ॥
जिन को आवत वार न पारा ॥१॥
पिंगल दे तह साह दुलारी ॥
जा की सम नहि दुतिय कुमारी ॥
निरखि न्रिपति त्रिय भई दिवानी ॥
तब ते रुचत खान नहि पानी ॥२॥
ता की लगनि न्रिपति तन लागी ॥
छूटै कहा अनोखी जागी ॥
सखी चीनि इक हितू स्यानी ॥
पठै दई न्रिप की रजधानी ॥३॥
जिमि तिमि बदा मिलन तिह संगा ॥
तिह तन ब्यापियो अधिक अनंगा ॥
तिह भेटन कौ चित ललचावै ॥
घात न निकसन की त्रिय पावै ॥४॥
कहियो साहु इक भूप बुलावत ॥
सभ अंनन को निरख लिखावत ॥
बचन सुनत तह साहु सिधारा ॥
भलो बुरो नहि मूड़ बिचारा ॥५॥
निकसत भई घात त्रिय पाइ ॥
भोग कीआ राजा सो जाइ ॥
रहियो मूड़ पर द्वार बहिठो ॥
भला बुरा कछु लगियो न डिठो ॥६॥
त्रिय करि केल भूप सौ आई ॥

लयो साहु घर बहुरि बुलाई ॥
कहियो प्रात हम तुम दोऊ जै है ॥
राजा कहत वहै करि ऐहै ॥७॥

दोहरा ॥

इह छल मूरख तिह छला सकियो न भेद बिचार ॥
कहा चरित इन त्रिय किया न्रिप संग रमी सुधारि ॥८॥

CHARITAR ३३४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥334॥6248॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

सहिर सरोही के बिखै बिक्रत करन इक राइ ॥
बीर बडो बाको रथी राखत सभ को भाइ ॥१॥

चौपई ॥

अबला दे रानी ता के घर ॥
अधिक पंडिता सकल हुनर करि ॥
बीरम देव पुत्र तिह जायो ॥
तेजवान बलवान सुहायो ॥२॥
ता की जात न प्रभा बखानी ॥
रूप अनंग धरियो है जानी ॥
कह लगि प्रभा करै कवनै कबि ॥
निरखि सूर ससि रहत इंद्र दबि ॥३॥
छैल छबीलो कुअर अपारा ॥
आपु घड़ा जानुक करतारा ॥
कनक अवटि साचे जन ढारियो ॥
रीझि रहत जिन ब्रहम सवारियो ॥४॥
नैन फबत म्रिग से कजरारे ॥
केस जाल जनु फास सवारे ॥
जा के परे गरै सोई जानै ॥
बिनु बूझै कोई कहा पछानै ॥५॥
जेतिक देत प्रभा सभ ही कबि ॥
तेतिक हुती तवन भीतरि छबि ॥
पुरख नारि चितवह जो ताहि ॥
कछु न संभार रहत तब वाहि ॥६॥
चंचरीट दुति देखि बिकाने ॥
भवर आजु लगि फिरति दिवाने ॥
महादेव ते नैक निहारे ॥
अब लगि बन मै बसत उघारे ॥७॥
अड़िल ॥
चतुरानन मुख चतुर लखि याही ते करै ॥
सिखि बाहन खट बदन सु याही ते धरै ॥
पंचानन या ते सिव भए बचारि करि ॥
हो सहसानन नहु सका प्रभा को सिंधु तरि ॥८॥

चौपई ॥

जे अबला तिह रूप निहारत ॥
लाज साज धन धाम बिसारत ॥
मन मै रहत मगन ह्वै नारी ॥
जानु बिसिख तन म्रिगी प्रहारी ॥९ ॥
साह जैन अलावदीन जह ॥
आयो कुअर रहन चाकर तह ॥
फूलमती हजरति की नारी ॥
ता के ग्रिह इक भई कुमारी ॥१० ॥
स्री दिमाग रोसन वह बारी ॥
जनु रति पति ते भई कुमारी ॥
जनुक चीरि चंद्रमा बनाई ॥
ताही ते ता मै अतिताई ॥११ ॥
बीरम दे मुजरा कह आयो ॥
साहु सुता को ह्रिदै चुरायो ॥
अनिक जतन अबला करि हारी ॥
कै सिहु मिला न प्रीतम प्यारी ॥१२ ॥
कामातुर भी अधिक बिगम जब ॥
पिता पास तजि लाज कही तब ॥
कै बाबुल ग्रिह गोरि खुदाओ ॥
कै बीरम दे मुहि बर द्रयाओ ॥१३ ॥
भली भली तब साह उचारी ॥
मुसलमान बीरम कर प्यारी ॥
बहुरि ताहि तुम करौ निकाहा ॥
जिह सौ तुमरी लगी निगाहा ॥१४ ॥
बीरम तीर वजीर पठायो ॥
साह कहियो तिह ताहि सुनायो ॥
हमरे दीन प्रथम तुम आवहु ॥
बहुरि दिलिस की सुता बियावहु ॥१५ ॥
बीरम देव कहा नहि माना ॥
करियो आपने देस पयाना ॥
प्राते खबरि दिलिस जब पाई ॥
अमिति सैन अरि गहन पठाई ॥१६ ॥
बीरम देव खबरि जब पाई ॥
पलट करी तिन साथ लराई ॥
भाति भाति भारी भट घाए ॥
तहा न टिके तवन के पाए ॥१७ ॥
काधल वत राजा थो जहा ॥
बीरम देव जात भयो तहा ॥
काधल दे आगे जहा रानी ॥
रूपवान गुनवान स्यानी ॥१८ ॥
अड़िल ॥
काधल दे रानी तिह रूप निहारि कै ॥
गिरी धरनि के भीतर हिये बिचारि कै ॥
ऐसो इक पल कुअर जु भेटन पाईयै ॥
हो जनम पचासिक लौ सखी बलि बलि जाईयै ॥१९ ॥

चौपई ॥

जाइ सखी बीरम दे पासा ॥
इह बिधि साथ करी अरदासा ॥
कै तुम काधल दे को भजो ॥

कै इह देस हमारो तजो ॥२०॥
पाछे लगी फौज तिन मानी ॥
दुतिय रहन की ठौर न जानी ॥
ता को देस तरुनि नहि तजो ॥
काधल दे रानी कह भजो ॥२१॥
रानी रमी मित्र के भोगा ॥
चित के दए त्यागि सभ सोगा ॥
तब लगि लिखो साह को आयो ॥
बाचि मंत्रियन भाखि सुनायो ॥२२॥
लिखि सु लिखा महि यहै पठाई ॥
और बात दूजी न जनाई ॥
कै बीरम कह बाधि पठावहु ॥
कै मेरे संग जुध मचावहु ॥२३॥
रानी बाधि न बीरम दयो ॥
पहिर कौच दुंदभी बजयो ॥
निरभै चली जुध के काजा ॥
है गै रथ साजत सर साजा ॥२४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

बज्यो राग मारू मंडे छत्रधारी ॥
बहै तीर तरवार काती कटारी ॥
कहूं केतु फाटे गिरे छत्र टूटे ॥
कहूं मत दंती फिरै बाज छूटै ॥२५॥
कहूं बाज जूझे परे है मतंगै ॥
कहूं नाग मारे बिराजै उतंगै ॥
कहूं बीर डारे परे बरम फाटे ॥
कहूं खेत खाडे लसै चरम काटे ॥२६॥
गिरे बीर मारे का लौ गनाऊ ॥
कहौ जो सभै एक ग्रंथै बनाऊ ॥
जथा सकति कै अलप ता ते उचारो ॥
सुनो कान दै कै सभे ही पिआरो ॥२७॥
इतै खान ढूके उतै राज नीके ॥
हठी रोस बाढे सु गाढे अनीके ॥
लरे कोप कै कै सु एकै न भाज्यो ॥
घरी चारि लौ सार सौ सार बाज्यो ॥२८॥
तहा संख भेरी घने नाद बाजे ॥
म्रिदंगै मुचंगै उपंगै बिराजे ॥
कहूं नाइ नाफीरियैं औ नगारे ॥
कहूं झाझ बीना बजै घंट भारे ॥२९॥
कहूं टूक टूक है गिरै है सिपाही ॥
मरे स्वामि के काजहूं को निबाही ॥
तहा कौच धारे चड़े छत्र धारी ॥
मिलै मेल मानो मदारै मदारी ॥३०॥
किते भूमि लोटै सु हाथै उचाए ॥
डरै सेख जैसे समाई समाए ॥
जुझै ज्वान जोधा जगे जोर जंगै ॥
मनो पान कै भंग सोए मलंगै ॥३१॥
बहै आन ऐसे बचै बीर कौनै ॥
लरियो आनि जो पै गयो जूझि तौनै ॥
तहा जोजनं पाच भयो बीर खेतं ॥

बिदारे परे बीर ब्रिंदे बिचेतं ॥३२॥
कहूं बीर बैताल बीना बजावै ॥
कहूं जोगनीयैं खरीं गीत गावै ॥
कहूं लै बरंगनि बरैं वै तिसी को ॥
लहै सामुहे जुध जुझो जिसी को ॥३३॥

चौपई ॥

जब ही सैन जूझि सभ गई ॥
तब त्रिय सुतहि पठावत भई ॥
सोऊ जूझि जब स्वरग सिधायो ॥
दुतिय पुत्र तह और पठायो ॥३४॥
सोऊ गिरियो जूझि रन जब ही ॥
तीजे सुतहि पठायो तब ही ॥
सोऊ जूझि जब गयो दिवालै ॥
चौथे पूत पठायो बालै ॥३५॥
चारौ गिरे जूझि सुत जब ही ॥
अबला चली जुध कौ तब ही ॥
सूर बचे ते सकल बुलाइसि ॥
लरन चली दुंदभी बजाइसि ॥३६॥
ऐसा करा बाल तह जुधा ॥
रही न भट काहू महि सुधा ॥
मारे परे बीर बिकरारा ॥
गोमुख झाझर बसत नगारा ॥३७॥
जा पर सिमटि सरोही मारति ॥
ता को काटि भूम सिर डारति ॥
जा के हनै तरुनि तन बाना ॥
करै सुभट म्रित लोक पयाना ॥३८॥
चुनि चुनि ज्वान पखरिया मारे ॥
इक इक ते द्वै द्वै करि डारे ॥
उठी धूरि लागी असमाना ॥
असि चमकै बिजुरी परमाना ॥३९॥
काटे सुभट सरोहिन परे ॥
जनु मारुत बर बिरछ उपरे ॥
गज जूझे मारे बाजी रन ॥
जनु क्रीड़ा सिव को यह है बन ॥४०॥
रन ऐसो अबला तिन कीया ॥
पाछे भयो न आगे हूआ ॥
खंड खंड ह्वै गिरी धरनि पर ॥
रन जूझी भवसिंधु गई तरि ॥४१॥
खंड खंड बाजी पर भई ॥
तऊ न छोरि अयोधन गई ॥
भूत पिसाच गए भखि तामा ॥
बागि मोरि तऊ भजी न बामा ॥४२॥
प्रथम चारऊ पुत्र जुझाए ॥
बहुरि आपु बैरी बहु घाए ॥
प्रथम बाल कौ जबै संघारियो ॥
तिह पाछे बीरम दे मारियो ॥४३॥
ता को मारि काटि सिर लियो ॥
लै हाजिर हजरति के कियो ॥
तब पित पठै सुता पहि दीना ॥

अधिक दुखित ह्वै दहुता चीना ॥४४॥

दोहरा ॥

जब बेगम तिह स्वार कौ देखा सीस उघारि ॥
पलटि परा तब मूंड न्रिप तउ न कबूली नारि ॥४५॥

चौपई ॥

बेगम सोकमान तब ह्वै कै ॥
जमधर हना उदर कर लै कै ॥
प्रान मित्र के लीने दीना ॥
ध्रिग मो कौ जिन अस क्रम कीना ॥४६॥

दोहरा ॥

बीरम दे राजा निमित बेगम तजे परान ॥
सु कबि स्याम या कथा को तब ही भयो निदान ॥४७॥

CHARITAR ३३५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पैतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥335॥6295॥अफजूं॥*

चौपई ॥

राज सैन इक सुना न्रिपति बर ॥
राज देइ रानी ता के घर ॥
रंगझड़ दे दुहिता तह सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥१॥
बढत बढत अबला जब बढी ॥
मदन सु नार आपु जनु गढी ॥
मात पिता चरचा भई जोई ॥
प्रचुर भई जग भीतरि सोई ॥२॥
मातै कही सुता के संगा ॥
चंचलता जिन करु सुद्रंगा ॥
कहा बिसेस धुजहि तू बरि है ॥
ता को जीति दास लै करि है ॥३॥
सुनत बात ता कह लगि गई ॥
राखी गूड़ न भाखत भई ॥
जब अबला निसि कौ घर आई ॥
चली तहा नर भेस बनाई ॥४॥
चलत चलत बहु चिर तह गई ॥
जहा बिलासवती नगरई ॥
तवन नगर चलि जूप मचायो ॥
ऊच नीच सभ ही नहरायो ॥५॥
बडे बडे जूपी जब हारे ॥
मिलि राजा के तीर पुकारे ॥
इक ह्यां ऐस जुआरी आयो ॥
किसू पास नहि जात हरायो ॥६॥
इह बिधि सुने बचन जब राजा ॥
आपन सजियो जूप को साजा ॥

कहियो ताहि ह्यां लेहु बुलाइ ॥
जिन जूपी सभ लए हराइ ॥७॥
भ्रित सुनि बचन पहूंचे तहा ॥
जूपिन कुअरि हरावत जहा ॥
कहियो ताहि तुहि राइ बुलायो ॥
चाहत तुम सौ जूप मचायो ॥८॥
न्रिप के तीर तरुनि तब गई ॥
बहु बिधि जूप मचावत भई ॥
अधिक दरब तिन भूप हरायो ॥
ब्रहमा ते नहि जात गनायो ॥९॥
जब न्रिप दरब बहुत बिधि हारा ॥
सुत ऊपर पासा तब ढारा ॥
वहै हरायो देस लगायो ॥
जीता कुअर भज्यो मन भायो ॥१०॥

दोहरा ॥

जीति सकल धन तवन को दीना देस निकार ॥
कुअर जीति करि पति करा बसी धाम ह्वै नार ॥११॥
चंचलान के चरित को सकत न कोई बिचार ॥
ब्रहम बिसन सिव खट बदन जिन सिरजी करतार ॥१२॥

CHARITAR ३३६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥336॥6307॥अफजूं॥*

चौपई ॥

जमल सैन राजा बलवाना ॥
तीन लोक मानत जिह आना ॥
जमला टोडी को नरपाला ॥
सूरबीर अरु बुधि बिसाला ॥१॥
सोरठ दे रानी तिह सुनियत ॥
दान सील जा को जग गुनियत ॥
परज मती दुहिता इक ता की ॥
नरी नागनी सम नहि जा की ॥२॥
बिसहर को इक हुतो न्रिपाला ॥
आयो गड़ जमला किह काला ॥
छाछ कामनी की पूजा हित ॥
मन क्रम बचन इहै करि करि ब्रत ॥३॥
ठाढि परज दे नीक निवासन ॥
राज कुअर निरखा दुख नासन ॥
इहै चित मै कीअसि बिचारा ॥
बरौ याहि करि कवन प्रकारा ॥४॥
सखी भेजि तिह धाम बुलायो ॥
भाति भाति को भोग कमायो ॥
इह उपदेस तवन कह दयो ॥
गौरि पुजाइ बिदा कर गयो ॥५॥
बिदा कीआ तिह ऐस सिखाइ ॥
आपु न्रिपति सो कही जताइ ॥

मनीकरन तीरथ मै जै हौ ॥
नाइ धोइ जमला फिरि ऐ हौ ॥६॥
जात तीरथ जात्रा कह भई ॥
सहिर बेसहिर मो चलि गई ॥
होत तवन सौ भेद जतायो ॥
मन मानत के भोग कमायो ॥७॥
काम भोग करि कै घर राखी ॥
रछपालकन सो अस भाखी ॥
बेगि नगर ते इनै निकारहु ॥
हाथ उठावै तिह हनि मारहु ॥८॥
सो तरुनी तिह रस रसि गई ॥
काढि समिग्री सिगरी दई ॥
इह छल साथ लहा मन भावन ॥
सका चीन कोऊ पुरख उपावन ॥९॥
काढि दए सभ ही रखवारे ॥
लोह करा जिन ते हनि डारे ॥
जमलेस्वर न्रिप सौ यौ भाखी ॥
तुमरी छीनि सुता न्रिप राखी ॥१०॥
बेसहरा पर कछु न बसायो ॥
सुनत बात न्रिप मूंड ढुरायो ॥
इह छल बरा कुअरि वहु राजा ॥
बाइ रहा मुख सकल समाजा ॥११॥

CHARITAR ३३७ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सैतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥337॥6318॥अफजूं॥*

दोहरा ॥

नगर बिभासावती मै करन बिभास नरेस ॥
जा के तेज रु त्रास कौ जानत सगरो देस ॥१॥

चौपई ॥

मती बिवास तवन की रानी ॥
सुंदरि भवन चत्रदस जानी ॥
सात सवति ता की छबिमान ॥
जानुक सात रूप की खान ॥२॥
आयो तहा एक बैरागी ॥
रूपवान गुनवान तिआगी ॥
स्याम दास ता को भनि नामा ॥
निस दिन निरखि रहत तिह बामा ॥३॥
मती बिभास तवन रस राची ॥
काम भोग मितवा के माची ॥
गवन करौ ता सौ मन भावै ॥
सवतिन सोक ह्रिदै महि आवै ॥४॥
अहिधुज दे झखकेतु मती भनि ॥
पुहप मंजरी फूल मती गनि ॥
नागरि दे नागनि दे रानी ॥
न्रित मती सभ ही जग जानी ॥५॥

तिन दिन एक करी मिजमानी ॥
निवति पठी सभ ही घर रानी ॥
बिखु कौ भोजन सभन खवाइ ॥
सकल दई म्रित लोक पठाइ ॥६॥
बिखु कह खाइ मरी सवतै सब ॥
रोवत भई बिभास मती तब ॥
पाप करम कीना मै भारो ॥
धोखे लवन इनै बिखु ख्वारो ॥७॥
अब मै गरौ हिमाचल जाइ ॥
कै पावक महि बरौ बनाइ ॥
सहचरि सहस हटकि तिह रही ॥
मानत भई न तिन की कही ॥८॥
वहै संग बैरागी लीना ॥
जा सौ काम भोग कह कीना ॥
लोग लखै त्रिय गरबे गई ॥
किनहूं बात जानि नहि लई ॥९॥
मूरख राइ बाइ मुख रहा ॥
भला बुरा कछु ताहि न कहा ॥
नारि जारि के साथ सिधाई ॥
बात भेद की किनहु न पाई ॥१०॥
त्रिय को चरित न बिधना जानै ॥
महा रुद्र भी कछु न पछानै ॥
इन की बात एक ही पाई ॥
जिन इसत्री जगदीस बनाई ॥११॥

CHARITAR ३३८ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठतीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥338॥6329॥अफ्जूं॥

चौपई ॥

सुनियत इक नगरी उजियारी ॥
बिसुकरमा निजु हाथ सवारी ॥
नामु अलूरा ता को सोहै ॥
तीनो लोक रचित तिन मोहै ॥१॥
भूप भद्र तिह गड़ को राजा ॥
राज पाट ताही कह छाजा ॥
रतन मती तिह न्रिप की रानी ॥
अधिक कुरूप जगत महि जानी ॥२॥
ता के निकट न राजा जावै ॥
निरखि नारि को रूप डरावै ॥
अवर रानियन के घर रहै ॥
ता सौ बैन न बोला चहै ॥३॥
यह दुख अधिक नारि के मनै ॥
चाहत प्रीति न्रिपति सौ बनै ॥
एक जतन तब किया पिआरी ॥
सुनहु कहत हौ कथा बिचारी ॥४॥
पूजा करत लखियो जब राजा ॥
तब तन सजा सकल त्रिय साजा ॥
महा रुद्र को भेस बनाइ ॥

अपनै अंग बिभूति चड़ाइ ॥५ ॥
करत हुतो राजा जपु जहा ॥
सिव बनि आनि ठाढि भी तहा ॥
जब राजै तिह रूप निहरा ॥
मन क्रम ईस जानि पग परा ॥६ ॥
सुफल भयो अब जनम हमारा ॥
महादेव को दरस निहारा ॥
कहियो करी मै बडी कमाई ॥
जा ते दीनी रुद्र दिखाई ॥७ ॥
बरंब्रूह तिह कहा नारि तब ॥
जौ जड़ रुद्र लखियो जाना जब ॥
तै मुरि करी सेव भाखा अति ॥
तब तहि दरसु दियो मै सुभ मति ॥८ ॥
सुनि बच नारि राइ हरखाना ॥
भेद अभेद जड़ कछू न जाना ॥
त्रिय के चरन रहा लपटाई ॥
नारि चरित की बात न पाई ॥९ ॥
तब ऐसा त्रिय किया उचारा ॥
सुनहु बात तुम राज कुमारा ॥
रतन मती तुमरी जो रानी ॥
यह मुरि अति सेवकी प्रमानी ॥१० ॥
जौ या सौ तुम करहु प्यारा ॥
ह्वै है तुमरो तबै उधारा ॥
सत्र होइगो नास तिहारो ॥
तब जानौ तू भगत हमारो ॥११ ॥
यौ कहि लोकंजन द्रिग डारी ॥
भई लोप नहि जाइ निहारी ॥
मूड़ राव तिह रुद्र प्रमाना ॥
भेद अभेद कछु पसू न जाना ॥१२ ॥
तब ते ता सौ कीआ प्यारा ॥
तजि करि सकल सुंदरी नारा ॥
इह छल छला चंचला राजा ॥
आलूरे गड़ को सिरताजा ॥१३ ॥

CHARITAR ३३९ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥339॥6342॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

मथुरा नाम हमारे रहै ॥
जग तिह त्रियहि गुलाबे कहै ॥
राम दास नामा तह आयो ॥
निरखि नारि तिह मदन सतायो ॥१ ॥
बहुत बरिस ता सौ वहु रहा ॥
पुनि ऐसे तिह त्रिय सौ कहा ॥
आउ होहि हमरी तै नारी ॥
कसि दै है तुहि यह मुरदारी ॥२ ॥
भली भली अबला तिन भाखी ॥
चित महि राखि न काहू आखी ॥

जब मथुरा आयो तिह धामा ॥
तब असि बचन बखान्यो बामा ॥३॥
हरी चंद राजा जग भयो ॥
अंत काल सो भी मरि गयो ॥
मानधात प्रभ भूप बढायो ॥
अंत काल सोऊ काल खपायो ॥४॥
जो नर नारि भयो सो मरा ॥
या जग महि कोऊ न उबरा ॥
इह जग थिर एकै करतारा ॥
और म्रितक इह सगल संसारा ॥५॥

दोहरा ॥

या जग महि सोई जियत पुंन्य दान जिन कीन ॥
सिखियन की सेवा करी जो मागै सो दीन ॥६॥

चौपई ॥

यह उपदेस सुनत जड़ ढरियो ॥
बहुरि नारि सौ बचन उचरियो ॥
जो उपजै जिय भली तिहारै ॥
वहै काम मै करौ सवारै ॥७॥
त्रिय बाच ॥
फटा बसत्र जा का लखि लीजै ॥
बसत्र नवीन तुरत तिह दीजै ॥
जा कै घरि महि होइ न दारा ॥
ता कह दीजै अपनी नारा ॥८॥
राम दास तब ताहि निहारियो ॥
धन बिहीन बिनु नारि बिचारियो ॥
धन हूं दीया नारि हूं दीनी ॥
भली बुरी जड़ कछू न चीनी ॥९॥
इह छल गई जार के नारा ॥
बसत्र दरब लै साथ अपारा ॥
इह आपन अति साध पछाना ॥
भली बुरी का भेव न जाना ॥१०॥

CHARITAR ३४० — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥340॥6352॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुक्रितावती नगर इक सुना ॥
सुक्रित सैन राजा बहु गुना ॥
सुभ लछनि दे नारि बिराजै ॥
चंद्र सूर की लखि दुति लाजै ॥१॥
स्री अपछरा देइ सु बाला ॥
मानहु सकल राग की माला ॥
कही न जात तवन की सोभा ॥
इंद्र चंद्र जस रवि लखि लोभा ॥२॥
तह इक आइ गयो सौदागर ॥

पूत साथ तिह जानु प्रभाकर ॥
राज सुता तिह ऊपर अटकी ॥
चटपट लाज लोक की सटकी ॥३॥
चतुरि जानि तह सखी पठाई ॥
ज्यों त्यों तहा ताहि लै आई ॥
राज सुता ता सौ रति मानी ॥
केल करत सभ राति बिहानी ॥४॥
बाढा बिरह दुहन को ऐसा ॥
हम ते भाखि न जाई कैसा ॥
एक छोरि इक अनत न जावै ॥
पलक ओट जुग कोटि बिहावै ॥५॥
काम भोग करि बदा संकेता ॥
लागियो साह पुत्र सो हेता ॥
मुहि अपने लै संग सिधारो ॥
तब जानौ तै यार हमारो ॥६॥
ता सौ रति करि धाम सिधायो ॥
कीया जतन जो हितू सिखायो ॥
बसत्र बहुत बहु मोल पठाए ॥
प्रथम न्रिपति कह सकल दिखाए ॥७॥
पुनि रनिवासहि पठै बनाए ॥
राज सुतहि अस गयो जताए ॥
जो पसंद इन मै ते कीजै ॥
सो दे बसत्र मोलि मुरि लीजै ॥८॥
अड़िल ॥
रानी मालु दिखाइ बहुरि लै कुअरि दिखायो ॥
लपटि तरुनि तिह माहि आपनो अंग दुरायो ॥
गई मित्र के धाम न भूप बिचारियो ॥
हो इह छल तिह लै साथ हरीफ सिधारियो ॥९॥

दोहरा ॥

भाग न भौदू पियत थो राहत भयौ परबीन ॥
दुहिता हरी हरीफ यौ सका न जड़ छल चीन ॥१०॥

CHARITAR ३४१ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥341॥6362॥अफजूं॥*

चौपई ॥

उतर दिसा प्रगट इक नगरी ॥
स्री ब्रिजराजवती सु उजगरी ॥
स्री ब्रिजराज सैन तह राजा ॥
जा कह निरखि इंद्र अति लाजा ॥१॥
स्री ब्रिजराज मती तिह रानी ॥
सुंदरि भवन चतरदस जानी ॥
स्री बरंगना दे तिह बाला ॥
जनु निरधूम अगनि की ज्वाला ॥२॥
चतुरि सखी जब ताहि निहारै ॥
मधुर बचन मिलि ऐस उचारै ॥

जैसी इह है दुतिय न जई ॥
आगे होइ न पाछे भई ॥३॥
जब बरंगना देइ तरुनि भी ॥
लरिकापन की बात बिसरिगी ॥
राज कुअर तब ताहि निहारियो ॥
ता पर तरुनि प्रान कह वारियो ॥४॥
ता सौ काम भोग नित मानै ॥
द्वै तै एक देह करि जानै ॥
तब चतुरा इह चरित्र बिचारियो ॥
कहो न्रिपति सो प्रगट उचारियो ॥५॥
मो कौ स्राप सदा सिव दीना ॥
ता ते जनम तिहारे लीना ॥
स्राप अवधि पूरन ह्वै है जब ॥
पुनि जै हौ हरि लोक बिखै तब ॥६॥
इक दिन गई मित्र के संगा ॥
लिखि पत्रा पर अपने अंगा ॥
स्राप अवधि पूरन अब भई ॥
सुरपुर सुता तिहारी गई ॥७॥
अब जो धाम हमारे माला ॥
सो दीजै दिज कौ ततकाला ॥
यार अपने ब्रहमन ठहरायो ॥
सकल दरब इह छल तिह द्रयायो ॥८॥
इह चरित्र गी मित्रह साथा ॥
दै धन किया अनाथ सनाथा ॥
मात पिता सभ अस लखि लई ॥
स्राप मुचित भयो सुरपुर गई ॥९॥

CHARITAR ३४२ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥342॥6371॥अफ्जूं॥

चौपई ॥

सोरठ देस बसत है जहा ॥
दिजबर सैन नराधिप तहा ॥
मती सुमेर तवन की नारी ॥
दुतिय न जग मै ऐसि कुमारी ॥१॥
सोरठ देइ सुता इक ता के ॥
और नार सम तुलि न वा के ॥
दुतिय परज दे भई कुमारी ॥
जिह सी दुतिय न ब्रहम सवारी ॥२॥
दोऊ सुता तरुनि जब भई ॥
जन करि किरणि सूर ससि वई ॥
ऐसी प्रभा होत भी तिन की ॥
बाछा करत बिधाता जिन की ॥३॥
ओज सैन इक अनत न्रिपति बर ॥
जनु करि मैन प्रगटियो बपु धरि ॥
सो न्रिप खेलन चड़ा सिकारा ॥
रोझ रीछ मारे झंखारा ॥४॥
निकसियो तहा एक झंखारा ॥

द्वादस जा के सीग अपारा ॥
ल्रिप तिह निरखि तुरंग धवावा ॥
पाछे चला कोस बहु आवा ॥५॥
बहुत कोस तिह म्रिगहि दखेरा ॥
चाकर एक न पहुचा नेरा ॥
आयो देस सोरठी के महि ॥
न्रिप की सुता अनात हुती जहि ॥६॥
आनि तही झंखार निकारा ॥
अबला दुहूं निहारति मारा ॥
ऐसा बान तवन कह लागा ॥
ठौर रहा पग द्वैक न भागा ॥७॥
राज कुआरी दुहूं निहारो ॥
दुहूं ह्रिदै इह भाति बिचारो ॥
बिनु पूछे पितु इह हम बरि है ॥
नातर मारि कटारी मरि है ॥८॥
तब लगु भूप त्रिखातुर भयो ॥
म्रिग के सहित तहा चलि गयो ॥
सो म्रिग राज सु तन कह दीयो ॥
तिन को सीत बारि लै पीयो ॥९॥
बाधा बाज एक द्रुम के तर ॥
सोवत भयो ह्वै भूप स्रमातुर ॥
राज कुआरन घात पछाना ॥
सखियन सो अस किया बखाना ॥१०॥
मदरा बहु दुहूं कुअरि मंगायो ॥
सात बार जो हुतो चुआयो ॥
अपन सहित सखियन कौ प्रयाइ ॥
अधिक मत करि दई सुवाइ ॥११॥
जब जाना ते भई दिवानी ॥
सोए सकल पहरूआ जानी ॥
दुहूं सनाही लई मंगाइ ॥
पहिरि नदी मै धसी बनाइ ॥१२॥
तरत तरत आई ते तहा ॥
सोवत सुतो नराधिप जहा ॥
पकरि पाव तिह दिया जगाइ ॥
अजा चरम पर लिया चड़ाइ ॥१३॥
भूपति लिया चड़ाइ सनाई ॥
सरिता बीच परी पुनि जाई ॥
तरत तरत अपनो तजि देसा ॥
प्रापत भी तिह देस नरेसा ॥१४॥
जब कछु सुधि सखियन तिन पाई ॥
न्रिसंदेह यौ ही ठहराई ॥
मद सौ भई जानु मतवारी ॥
डूबि मुई दोऊ राज दुलारी ॥१५॥

दोहरा ॥

वै दोऊ न्रिप संग गई अनिक हिये हरखात ॥
अजा चरम पर भूप बर दुहूंअन चला बजात ॥१६॥

CHARITAR ३४३ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ त्रितालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥343॥6387॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

हरिद्वार इक सुन न्रिपाला ॥
तेजिमान दुतिमान छिताला ॥
स्री रसरंग मती तिह जाई ॥
जिह सम दूसरि बिधि न बनाई ॥१॥
जब वहु तरुनि तरुन अति भई ॥
भूप सैन न्रिप कहि पित दई ॥
सिरी नगर भीतर जब आई ॥
लखि चंडालिक अधिक लुभाई ॥२॥
पठै सहचरी लिया बुलाई ॥
न्रिप सौ भोग कथा बिसराई ॥
रैनि दिवस तिह लेत बुलाई ॥
रति अति नितप्रति करत बनाई ॥३॥
रसत रसत ऐसी रसि गई ॥
जनु कर नारि तवन की भई ॥
सभ ब्रितात कहि ताहि सिखायो ॥
सोवति समै भूप कह घायो ॥४॥
प्रात जरन के काज सिधाई ॥
आगे राखि लए निजु राई ॥
जबै चिता पर बैठी जाइ ॥
चहूं ओर दिय आगि लगाइ ॥५॥
चारो दिसा अगनि जब लागी ॥
तब ही उतरि चिता तै भागी ॥
लोगन चरित क्रिया नहि जानी ॥
दीनी तिसी चंडारहि रानी ॥६॥
यौ छलि छैल चिकनिसन गई ॥
किनूं न बात ताहि लखि लई ॥
नारि अधिक मन हरख बढायो ॥
चाहत हुती सोइ पति पायो ॥७॥
तब ते आजु लगे उह देसा ॥
मारत त्रिय कौ प्रथम नरेसा ॥
कठ तरे करि जाहि जरावत ॥
भाखि सकति नहि बात लजावत ॥८॥

दोहरा ॥

तिह रानी के पुत्र तब राज करा तिह ठाव ॥
आजु लगे चंडालियै भाखत तिन को नाव ॥९॥

CHARITAR ३४४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥344॥6396॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

दौला की गुजराति बसत जह ॥
अमर सिंघ इक हुता न्रिपति तह ॥

अंगना दे रानी तिह राजै ॥
निरखि दिवंगनन को मन लाजै ॥१॥
राजा अधिक पीर कह मानै ॥
भली बुरी जड़ बात न जानै ॥
तहा सुबरन सिंघ इक छत्री ॥
रूपवान धनवान धरत्री ॥२॥
सुंदर अधिक हुतो खतिरेटा ॥
जनुक रूप सौ सकल लपेटा ॥
जब ते निरखि नारि तिह गई ॥
सुधि बुधि छाडि दिवानी भई ॥३॥
ता संग नेह सजा रुचि मान ॥
जानि बूझि ह्वै गई अजान ॥
दई सहचरी तहिक पठाइ ॥
ज्यों त्यों तिह ग्रिह लिया मंगाइ ॥४॥
पोसत भाग अफीम मंगाई ॥
पानि डारि करि भाग घुटाई ॥
पान किया दुहूं बैठि प्रजंकहि ॥
रति मानी भरि भरि द्रिड़ अंकहि ॥५॥

दोहरा ॥

जबै टनाने कैफ के आए अखियन माहि ॥
करहि बिलास प्रजंक चड़ि हसि हसि नारि औ नाहि ॥६॥

चौपई ॥

भाति भाति के आसन लै कै ॥
अबला कह बहु भाति रिझै कै ॥
आपन पर घायल करि मारी ॥
मदन मोहनी राज दुलारी ॥७॥
अधिक बढाइ नारि सौ हेता ॥
इहि बिधि बाधत भए संकेता ॥
धूंई कालि पीर की ऐयहु ॥
डारि भाग हलवा महि जैयहु ॥८॥
सोफी जबै चूरमा खै है ॥
जीयत म्रितक सभै ह्वै जै है ॥
तही क्रिपा करि तुमहूं ऐयहु ॥
मुहि लै संग दरब जुत जैयहु ॥९॥
जब ही दिन धूंई को आयो ॥
भागि डारि चूरमा पकायो ॥
सकल मुरीदन गई खवाइ ॥
राखे मूड़ मत करि स्वाइ ॥१०॥
सोफी भए जबै मतवारे ॥
प्रिथम दरब हरि बसत्र उतारे ॥
दुहूंअन लिया देस को पंथा ॥
इह बिधि दै साजन कह संथा ॥११॥
भया प्रात सोफी सभ जागे ॥
पगरी बसत्र बिलोकन लागे ॥
सरवर कहै क्रोध किय भारा ॥
सभहिन कौ अस चरित दिखारा ॥१२॥
सभ जड़ रहो तहा मुख बाई ॥

लजा मान मूंड निहुराई ॥
भेद अभेद न किनूं पछाना ॥
सरवर किया सु सिर पर माना ॥१३॥

दोहरा ॥

भेद अभेद त्रियान को सकत न कोऊ पाइ ॥
सभन लखो कैसे छला कस करि गई उपाइ ॥१४॥

CHARITAR ३४५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पैतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥345॥6410॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

सुनु राजा इक कहौ कबित ॥
जिह बिधि अबला किया चरित ॥
सभहिन कौ दिन ही महि छला ॥
निरखहु या सुंदरि की कला ॥१॥
इसकावती नगर इक सोहै ॥
इसक सैन राजा तह को है ॥
स्री गजगाह मती तिह नारी ॥
जा सम कहूं न राज कुमारी ॥२॥
इक रणदूलह सैन न्रिपति तिह ॥
जा सम उपजा दुतिय न महि महि ॥
महा सूर अरु सुंदर घनो ॥
जनु अवतार मदन को बनो ॥३॥
सो न्रिप इक दिन चड़ा सिकारा ॥
मारत रीझ रोझ झंखारा ॥
इसकावती नगर तर निकसा ॥
प्रभा बिलोकि नगर की बिगसा ॥४॥
अस सुंदरि जिह न्रिप की नगरी ॥
कस ह्वै है तिह नारि उजगरी ॥
जिह किह बिधि तिह रूप निहरियै ॥
नातर अतिथ इही ह्वै मरियै ॥५॥
बसत्र उतारि मेखला डारी ॥
भूखन छोरि भिभूति सवारी ॥
सभ तन भेख अतिथ का धारा ॥
आसन आन द्वार तिह मारा ॥६॥
केतक बरस तहा बिताए ॥
राज तरुनि के दरस न पाए ॥
कितक दिनन प्रतिबिंबु निहारा ॥
चतुर भेद सभ गयो बिचारा ॥७॥
तरुनी खरी सदन आनंद भरि ॥
जल प्रतिबिंब परा तिह सुंदरि ॥
तही सुघर तिह ठाढ निहारा ॥
जानि गयो सभ भेद सुधारा ॥८॥
त्रियहु ताहि प्रतिबिंबु लखा जब ॥
इह बिधि कहा चित भीतर तब ॥
इहु जनियत कोई राज कुमारा ॥

पारबतीस अरि को अवतारा ॥९ ॥
रानी बोलि सुरंगिया लीना ॥
अति ही दरब गुपत तिह दीना ॥
निजु ग्रिह भीतरि सुरंगि दिवाई ॥
काढी तही न किनहूं पाई ॥१० ॥

दोहरा ॥

सखी तिसी मारग पठी तही पहूंची जाइ ॥
गहि जाघन ते लै गई चला न भूप उपाइ ॥११ ॥

चौपई ॥

गहि न्रिप को लै गई सखी तह ॥
रानी हुती बिलोकति मग जह ॥
दिया मिलाइ मित्र ता को इन ॥
मन मानत रति करी दुहू तिन ॥१२ ॥
भाति भाति चुंबन दुहूं लीनो ॥
अनिक अनिक आसन त्रिय दीने ॥
अस लुभधा राजा को चिता ॥
जस गुनि जन सुनि स्रवन कबिता ॥१३ ॥
रानी कहत बचन सुनु मीता ॥
तौ सौ बधा हमारा चीता ॥
जब ते तव प्रतिबिंबु निहारा ॥
तब ते मन हठ परियो हमारा ॥१४ ॥
नितिप्रति चहै तुमी संग जाऊ ॥
मात पिता की कानि न ल्याऊ ॥
अब किछु अस पिय चरित बनैयै ॥
लाज रहै तोहि पति पैयै ॥१५ ॥
छोरि कथा तिह भूप सुनाई ॥
निजु न्रिप ता की कथा जताई ॥
मै हौ रासट्र देस को राजा ॥
तव हित भेस अतिथ को साजा ॥१६ ॥
नेत्र लगे तुम सौ हमरे तब ॥
तव प्रतिबिंबु लखे जल महि जब ॥
तव मुरि जब प्रतिबिंबु निहारा ॥
गयो मारि तुहि मदन कटारा ॥१७ ॥
मुहि लखि धीरज न तुमरा रहा ॥
सुरंगि खोदि सखियन अस कहा ॥
सो गहि मुहि गी तीर तिहारी ॥
चहत जो थो सो भई पियारी ॥१८ ॥
दुहूं बैठ इक मंत्र बिचारा ॥
मै राजा लखि गयो रखवारा ॥
पिय पठाइ ग्रिह ऐस उचारी ॥
लोन लेत न्रिप नार तिहारी ॥१९ ॥
सुनत स्रवन सभ जन मिलि आए ॥
आनि तवन कह बचन सुनाए ॥
किह निमित छाडत है देही ॥
सुनि राजा की नारि सनेही ॥२० ॥
सुनु राजा इक दिज मारियो मुहि ॥
लोन लेऊगी साच कहूं तुहि ॥

जो धन हमरे धाम निहारहु ॥
सो सभ गाडि गोरि महि डारहु ॥२१॥
होरि रहे सभ एक न मानी ॥
परी भोहरा भीतर रानी ॥
आस पास लै लोन बिथारो ॥
जो धन हुतो गाडि सभ डारो ॥२२॥
सुरंगि सुरंगि रानी तह आई ॥
बैठे जहा मीत सुखदाई ॥
ता को संग लौ तही सिधारी ॥
मूड़ लोग कछु गति न बिचारी ॥२३॥

CHARITAR ३४६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छितालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥346॥6433॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

जह हम दिसा उतरा सुनी ॥
राजा तहिक बसत थो गुनी ॥
कलगी राइ जाहि जग भाखत ॥
नाना देस कानि तिह राखत ॥१॥
मीत मती तिह नारि बिराजै ॥
जाहि बिलोकि चंद्रमा लाजै ॥
ता की एक लछिमिनि दासी ॥
दुरबल देह घड़ी अबिनासी ॥२॥
ता सौ नारि हेतु अति मानै ॥
मूड़ न रानी क्रिआ पछानै ॥
गुपत लेत दासी सु छिमाही ॥
बुरी बुरी तिह देत उगाही ॥३॥
तिह रानी अपनी करि मानै ॥
मूरख ताहि जसूस न जानै ॥
परै बात ता कह जे स्रवनन ॥
लिखि पठवै ततछिन राजा तन ॥४॥
हुते दोइ दासी के भाई ॥
बिरध दंत कछु कहा न जाई ॥
स्याम बरन इक दुतिय कुरूपा ॥
आंखै जानु सुरन के कूपा ॥५॥
बगल गंधि तिन ते अति आवै ॥
बैठन निकट न कोई पावै ॥
चेरी भ्रात जानि हित मानै ॥
मूड़ नारि कछु क्रिया न जानै ॥६॥
तह इक हुती जाटि की नार ॥
मैन कहत तिह नाम उचार ॥
जउ तिह नाम चेरि सुनि पावे ॥
तह ते ताहि टूकरा जावे ॥७॥
तिन इसत्री इह भाति बिचारी ॥
दासी मूड़ ह्रिदै महि धारी ॥
भाइ खरचु कछु मागत तेरे ॥
गुहज पठैयै करि करि मेरे ॥८॥
तब चेरी ऐसो तन कियो ॥

डारि दरब भोजन महि दियो ॥
भाइ निमित खरची पठ दई ॥
सो लै नारि दरबु घर गई ॥९॥
आधो धन तिह भ्रातन दीना ॥
आधो काढि आपि त्रिय लीना ॥
मूरख चेरी भेद न पावै ॥
इह चरित्र तन मूंड मुंडावै ॥१०॥

CHARITAR ३४७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ संतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥347॥6443॥अफजूं॥*

चौपई ॥

गौरिपाल इक सुना नरेसा ॥
मानत आनि सकल तिह देसा ॥
गौरा देई नारि तिह सोहै ॥
गौरावती नगर तिह को है ॥१॥
ता की त्रिया नीच सेती रति ॥
भली बुरी जानत न मूड़ मति ॥
इक दिन भेद भूप लखि लयो ॥
त्रासित जारु तुरतु भजि गयो ॥२॥
गौरा दे इक चरित बनायो ॥
लिखा एक लिखि तहा पठायो ॥
इक राजा की जान सुरीता ॥
सो ता कौ ठहरायो मीता ॥३॥
तिसु मुख ते लिखि लिखा पठाई ॥
जहा हुते अपने सुखदाई ॥
को दिन रमत ईहा ते रहना ॥
दै करि पठिवहु हमरा लहना ॥४॥
सो पत्री न्रिप के कर आई ॥
जानी मोरि सुरीति पठाई ॥
जड़ निजु त्रिय को भेद न पायो ॥
नेह त्याग तिह साथ गवायो ॥५॥
सुघर हुतौ तौ भेव पछानत ॥
त्रिय की घात सति करि जानत ॥
मूड़ राव कछु क्रिया न जानी ॥
इह बिधि मूंड मूंडि गी रानी ॥६॥

CHARITAR ३४८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठतालीस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥348॥6449॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक कथा प्रकासौ ॥
तुमरे जिय का भरम बिनासौ ॥
उग्रदत इक सुनियत राजा ॥
उग्रावती नगर जिह छाजा ॥१॥
उग्र देइ तिह धाम दुलारी ॥

ब्रहमा बिसन सिव तिहूं सवारी ॥
अवरि न असि कोई नारि बनाई ॥
जैसी यह राजा की जाई ॥२॥
अजब राइ इक तह खतिरेटा ॥
इसक मुसक के साथ लपेटा ॥
राज सुता जब तिह लखि पायो ॥
पठै सहचरी पकरि मंगायो ॥३॥
काम भोग माना तिह संगा ॥
लपटि लपटि ता के तर अंगा ॥
इक छिन छैल न छोरा भावै ॥
मात पिता ते अधिक डरावै ॥४॥
इक दिन करी सभन मिजमानी ॥
संबल खार डारि करि स्यानी ॥
राजा रानी सहित बुलाए ॥
दे दोऊ बिखि स्वरग पठाए ॥५॥
आपु सभन प्रति ऐस उचारा ॥
बर दीना मुहि कह त्रिपुरारा ॥
रानी सहित नराधिप घाए ॥
मुर नर के सभ अंग बनाए ॥६॥
अधिक मया मो पर सिव कीनी ॥
राज समग्री सभ मुहि दीनी ॥
भेद अभेद न काहू पायो ॥
सीस सुता के छत्र फिरायो ॥७॥
कितक दिवस इह भाति बिताई ॥
रोम मित्र के दूर कराई ॥
त्रिय के बसत्र सगल दै वा कौ ॥
बर आन्रयो इसत्री करि ता कौ ॥८॥

दोहरा ॥

मात पिता हनि पुरख बन बरियो मित्र त्रिय सोइ ॥
राज करा इह छल भए भेद न पावत कोइ ॥९॥

CHARITAR ३४९ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनचास चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥349॥6458॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुजनावती नगर इक पूरब ॥
सभ सहिरन ते हुतो अपूरब ॥
सिंघ सुजान तहा को राजा ॥
जिह सम बिध नै और न साजा ॥१॥
स्री नवजोबन दे तिह नारी ॥
घड़ी न जिह सी ब्रहम कुमारी ॥
जो अबला तिह रूप निहारै ॥
मन क्रम बच इह भाति उचारै ॥२॥
इंद्र धाम है ऐस न नारी ॥
जैसी न्रिप की नारि निहारी ॥
अस सुंदर इक साह सपूता ॥

जिह लखि प्रभा लजत पुरहूता ॥३॥
यह धुनि परी तरुनि के कानन ॥
तब ते लगी चटपटी भामनि ॥
जतन कवन मै आजु सु धारूं ॥
उहि सुंदर कह नैन निहारूं ॥४॥
नगर ढंढोरा नारि फिरायो ॥
सभहिन कह इह भाति सुनायो ॥
ऊच नीच कोई रहै न पावै ॥
प्रातकाल भोजन सभ खावै ॥५॥
राजहि बात कछू नहि जानी ॥
निवता दियो लखियो त्रिय मानी ॥
भाति भाति पकवान पकाए ॥
ऊच नीच सभ निवति बुलाए ॥६॥
भोजन खान जनावहि बिगसहि ॥
त्रिय की द्रिसटि तरे ह्वै निकसहि ॥
ऐंठी राइ जबायो तहा ॥
बैठि झरोखे रानी जहा ॥७॥
रानी निरखि चीन तिह गई ॥
बहु बिधि ताहि सराहत भई ॥
धंनि धंनि मुख ते बहुरि उचारा ॥
जिन करतै इह कुअर सवारा ॥८॥
लीना सखी पठाइ तिसै घरि ॥
काम भोग किय लपटि लपटि करि ॥
एक तरुन अरु भाग चड़ाई ॥
चार पहरि निसि नारि बजाई ॥९॥
ऐंठी सौ बधि गयो सनेहा ॥
जो मुहि कहे न आवत नेहा ॥
भेद सिखै तिह धाम पठायो ॥
आधी रैनि नरेसहि घायो ॥१०॥
प्राति चली जरबे के काजा ॥
दरबु लुटावत नारि निलाजा ॥
द्रिसट बंधु सभ की असि करी ॥
सभहूं लखा अबला जरि मरी ॥११॥
निकसि जारि संग आपु सिधारी ॥
भेद न लखै पुरख अरु नारी ॥
द्रिसटि बंद करत अस भई ॥
मूंडि मूंडि सभहिन को गई ॥१२॥

CHARITAR ३५० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पचासवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥350॥6470॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनो भूप इक कहौ कहानी ॥
किनहूं सुनी न आगे जानी ॥
भूप सु बसत्र सैन इक सोहै ॥
ता के सम न नराधिप को है ॥१॥
धाम सु बसत्र मती तिह नारी ॥
बसत्रावती नगर उजियारी ॥

अवल चंद तिह ठा इक रावत ॥
रानी सुना एक दिन गावत ॥२॥
बधि गयो ता सौ ऐस सनेहा ॥
जस सावन को बरसत मेहा ॥
एक जतन तिन नारि बनायो ॥
पठै सखी तिह बोलि पठायो ॥३॥
काम भोग ता सौ द्रिड़ कीना ॥
भाति भाति पिय को रस लीना ॥
राज पाट सभ ही सु बिसारियो ॥
ता के हाथ बेचि जीय डारियो ॥४॥
सभ अतीत ग्रिहि निवति पठाए ॥
बसत्र भगौहै तिस पहिराए ॥
आपहु बसत्र भगौहे धरि कै ॥
जात भई तिह साथ निकरि कै ॥५॥
चोबदार किनहूं न हटाई ॥
सभहिन करि जोगी ठहराई ॥
जब वहु जात कोस बहु भई ॥
तब राजै पाछे सुध लई ॥६॥

CHARITAR ३५१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इक्रयावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥351॥6476॥अफजूं॥*

चौपई ॥

इसक तंबोल सहिर जह सोहै ॥
इसक तंबोल नरिस तह को है ॥
इसकपेच दे ता की रानी ॥
सुंदरि देस देस महि जानी ॥१॥
काजी बसत एक तह भारो ॥
आरफ दीन नाम उजियारो ॥
सुता जेबतुल निसा तवन की ॥
ससि की सी दुति लगत जवन की ॥२॥
तह गुलजार राइ इक नामा ॥
थकित रहत निरखत जिह बामा ॥
सो काजी की सुता निहारा ॥
मदन बान तह ताहि प्रहारा ॥३॥
हितू जानि इक सखी बुलाई ॥
ता कह कहा भेद समझाई ॥
जौ ता कह तै मोहि मिलावैं ॥
मुख मागै सोई बरु पावैं ॥४॥
सखी गई तब ही ता के प्रति ॥
आनि मिलाइ दयौ तिन सुभ मति ॥
भाति भाति दुहूं करे बिलासा ॥
तजि करि मात पिता को त्रासा ॥५॥
अस गी अटकि तवन पर तरुनी ॥
जोरि न सकत पलक सौ बरनी ॥
रैनि दिवस तिह प्रभा निहारै ॥
धंन्य जनम करि अपन बिचारै ॥६॥
धंनि धंनि तवन दिवस बडभागी ॥

जिह दिन लगन तुमारी लागी ॥
अब कछु ऐस उपाव बनैयै ॥
जिह छल पिय के संग सिधैयै ॥७॥
बोलि भेद सभ पियहि सिखायो ॥
रोमनास तिह बदन लगायो ॥
सभ ही केस दूर करि डारे ॥
पुरख नारि नहि जात बिचारे ॥८॥
सभ त्रिय भेस धरा प्रीतम जब ॥
ठाढा भयो अदालति मै तब ॥
कहि मुर चित काजी सुत लीना ॥
मै चाहत ता कौ पति कीना ॥९॥
काजी काढि किताब निहारी ॥
देखि देखि करि इहै उचारी ॥
जो आवै आपन ह्वै राजी ॥
ता कह कहि न सकत कछु काजी ॥१०॥
यह हमरे सुत की भी दारा ॥
हम या की करि है प्रतिपारा ॥
भेद अभेद जड़ कछू न चीनी ॥
निरखित साह मुहर करि दीनी ॥११॥
मुहर कराइ धाम वह गयो ॥
पुरस भेस धरि आवत भयो ॥
जब दिन दुतिय कचहिरी लागी ॥
पातसाह बैठे बडभागी ॥१२॥
काजी कोटवार थो जहा ॥
पुरख भेस धरि आयो तहा ॥
संग सुता काजी की आनी ॥
साह सुनत इह भाति बखानी ॥१३॥
निरखहु काजि सुता मुहि बरा ॥
आपहि रीझि मदनपति करा ॥
वहै मुहर हजरतिहि दिखाई ॥
जो इसत्री ह्वै आपु कराई ॥१४॥
निरखत मुहर सभा सभ हसी ॥
काजि सुता मितवा ग्रिह बसी ॥
काजी हूं चुप ह्वै करि रहा ॥
न्याइ किया तैसा फल लहा ॥१५॥

दोहरा ॥

इह छल सौ काजी छला बसी मित्र के धाम ॥
लखन चरित चतुरान को है न किसी को काम ॥१६॥

CHARITAR ३५२ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥352॥6492॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनहु राज इक कथा उचारो ॥
जिय तुमरे को भरम निवारो ॥
बिसनावती नगर इक दछिन ॥

बिसन चंद तह भूप बिचछन ॥१॥
उग्र सिंघ तह साहु भनिजै ॥
कवन भूप पटतर तिह दिजै ॥
स्री रनझूमक दे तिहा बाला ॥
चंद्र लयो जा ते उजियाला ॥२॥
सुंभ करन कह हुती बिवाही ॥
सो दिन एक निरख न्रिप चाही ॥
जतन थकियो करि हाथ न आई ॥
कोप बढा अति ही नर राई ॥३॥
देखहु इहु अबला का हीया ॥
जिह कारन हम अस छल कीया ॥
रंक छोरि करि राव न भायो ॥
बहु भ्रितन कह तहा पठायो ॥४॥
सुनत बचन चाकर तह गए ॥
घेर लेत ता को घर भए ॥
ता के पति कह हना रिसाई ॥
भाजि गई त्रिय हाथ न आई ॥५॥
म्रितक नाथ जब नारि निहारियो ॥
इहै चंचला चरित बिचारियो ॥
कवन जतन राजा कह मरियै ॥
अपने पति को बैर उतरियै ॥६॥
लिख पतिया पठई इक तहा ॥
बैठो हुतो नराधिप जहा ॥
जो मो कह रानी तुम करहु ॥
तो मुहि भूप आजु ही बरहु ॥७॥
सुनत बचन न्रिप बोलि पठाई ॥
पर की त्रिय रानी ठहराई ॥
जिह तिह बिधि ता को ग्रिहि आनो ॥
भेद अभेद जड़ कछु न पछानो ॥८॥
संग अपने ता कौ लै सोयो ॥
चित को भरमु सकल ही खोयो ॥
कामातुर ह्वै हाथ चलायो ॥
काढि क्रिपान नारि तिन घायो ॥९॥
न्रिप कह मारि वैसही डारी ॥
ता पर त्रयो ही बसत्र सवारी ॥
आपु जाइ निजु पति तन जली ॥
निरखहु चतुरि नारि की भली ॥१०॥

दोहरा ॥

बैर लिया निजु नाहि को न्रिप कह दिया संघारि ॥
बहुरि जरी निजु नाथ सौ लोगन चरित दिखारि ॥११॥

CHARITAR ३५३ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ त्रिपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥353॥6503॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

सुनहु भूप इक कथा नवीनी ॥

किनहूं लखी न आगे चीनी ॥
राधा नगर पूरब मै जहा ॥
रुकम सैन राजा इक तहा ॥१॥
स्री दलगाह मती त्रिय ता की ॥
नरी नागनी तुलि न वा की ॥
सुता सिंधुला देइ भनिजै ॥
परी पदमनी प्रक्रित कहिजै ॥२॥
तहिक भवानी भवन भनीजै ॥
को दूसर पटतर तिहि दीजै ॥
देस देस एस्वर तह आवत ॥
आनि गवरि कह सीस झुकावत ॥३॥
भुजबल सिंघ तहा न्रिप आयो ॥
भोज राज ते जनुक सवायो ॥
निरखि सिंधुला दे दुति ता की ॥
मन बच क्रम चेरी भी वा की ॥४॥
आगे हुती और सो परनी ॥
अब इह साथ जात नहि बरनी ॥
चित महि अधिक बिचार बिचारत ॥
सहचरि पठी तहा ह्वै आरति ॥५॥
सुनु राजा तै पर मै अटकी ॥
भूलि गई सभ ही सुधि घट की ॥
जौ मुहि अब तुम दरस दिखावो ॥
अम्रित डारि जनु म्रितक जियावो ॥६॥
सुनि सखी बचन कुअरि के आतुर ॥
जात भई राजा तहि सातिर ॥
जु कछु कहियो कहि ताहि सुनायो ॥
सुनि बच भूप अधिक ललचायो ॥७॥
चिंत करी किह बिधि तह जैयै ॥
किह छल सौ ता कौ हरि लयैयै ॥
सुनि बच भूखि भूप की भागी ॥
तब ते अधिक चटपटी लागी ॥८॥
भूप सखी तब तही पठाई ॥
इसथित हुती जहा सुखदाई ॥
कहा चरित कछु तुमहि बनावहु ॥
जिह छल सदन हमारे आवहु ॥९॥
एक ढोल त्रिय कोर मंगावा ॥
बैठि चरम सो बीच मड़ावा ॥
इसथित आपु तवन महि भई ॥
इह छल धाम मित्र के गई ॥१०॥
इह छल ढोल बजावत चली ॥
मात पिता सभ निरखत अली ॥
भेव अभेव न किनहूं पायो ॥
सभ ही इह बिधि मूंड मुंडायो ॥११॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तन चंचला गई मित्र के धाम ॥
ढोल ढमाको दै गई किनहूं लखा न बाम ॥१२॥

CHARITAR ३५४ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौवन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥354॥6515॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनु राजा इक कथा अपूरब ॥
जो छल किया सुता न्रिप पूरब ॥
भुजंग धुजा इक भूप कहावत ॥
अमित दरब बिपन पह द्रयावत ॥१॥
अजितावती नगर तिह राजत ॥
अमरावती निरखि जिह लाजत ॥
बिमल मती ता के ग्रिह रानी ॥
सुता बिलास देइ पहिचानी ॥२॥
मंत्र जंत्र तिन पड़े अपारा ॥
जिह सम पड़े न दूसरि नारा ॥
गंग समुद्रहि जहा मिलानी ॥
तही हुती तिन की राजधानी ॥३॥
निरखि प्रभा तिह जात न कही ॥
रजधानी ऐसी तिह अही ॥
ऊच धौलहर तहा सुधारे ॥
जिन पर बैठि पकरियत तारे ॥४॥
मजन हेत तहा न्रिप आवत ॥
नाइ पूरबले पाप गवावत ॥
तह इक न्रहान नराधिप चलो ॥
जोबनवान सिपाही भलो ॥५॥
सो बिलास दे नैन निहारा ॥
मन क्रम बच इह भाति बिचारा ॥
कै मै अब याही कह बरिहौ ॥
नातर बूडि गंग महि मरिहौ ॥६॥
एक सखी लखि हितू सियानी ॥
ता सौ चित की बात बखानी ॥
जो ता कौ तूं मुझै मिलावै ॥
मुख मागै जेतो धन पावै ॥७॥
तब सखि गई तवन के ग्रेहा ॥
पर पाइन असि दियो संदेहा ॥
राज सुता तुमरै पर अटकी ॥
भूलि गई ता कहि सुधि घट की ॥८॥
सुनि न्रिप बचन भयो बिसमै मन ॥
इह बिधि ताहि बखाने बैनन ॥
अस किछु करियै बचन स्यानी ॥
स्री बिलास दे ह्वै मुर रानी ॥९॥
तुम न्रिप भेस नारि को धारहु ॥
भूखन बसतर अंग सुधारहु ॥
भुजंग धुज कह दै दिखराई ॥
फुनि अंगना महि जाहु छपाई ॥१०॥
भूपति बसत्र नारि के धारे ॥
अंग अंग गहिना गुहि डारे ॥
भुजंग धुज कह दई दिखाई ॥
निजु अंगना महि गयो लुकाई ॥११॥
निरखि भूप तिह रहा लुभाइ ॥

वहै सखी तह देइ पठाइ ॥
प्रिथमे निरखि ताहि तुम आवहो ॥
बहुरि बियाह को ब्योत बनावहु ॥१२॥
सुनत बचन सहचरि तह गई ॥
टारि घरी द्वै आवत भई ॥
तिह मुख ते ह्वै बचन उचारे ॥
सुनहु स्रवन दै भूप हमारे ॥१३॥
प्रथम सुता अपनी तिह दीजै ॥
बहुरौ बहिनि तवन की लीजै ॥
सुनत बैन न्रिप फेर न कीनो ॥
दुहितहि काढि तवन कह दीनो ॥१४॥
सुता प्रथम दै ब्याह रचायो ॥
न्रिप कौ ब्याह नारि कर ल्यायो ॥
तब तिन बधि तिह जड़ को कियो ॥
दुहिता सहित राज हर लियो ॥१५॥
प्रथम सुता राजा की हरी ॥
बहुरि नास तिह तन की करी ॥
बहुरौ छीनि राज तिन लीना ॥
बरि बिलास देई कह कीना ॥१६॥

CHARITAR ३५५ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पचपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥355॥6531॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनु न्रिप कथा बखानै औरै ॥
जो भई एक राज की ठौरै ॥
सहिर सु नार गाव है जहा ॥
सबल सिंघ राजा इक तहा ॥१॥
दल थंभन देई तिह नारि ॥
जंत्र मंत्र जिह पड़े सुधारि ॥
जोगी इक सुंदर तह आयो ॥
जिह सम सुंदर बिध न बनायो ॥२॥
रानी निरखि रीझि तिह रही ॥
मन बच क्रम ऐसी बिधि कही ॥
जिह चरित्र जुगिया कह पैयै ॥
उसी चरित्र कौ आजु बनैयै ॥३॥
ब्रिसटि बिना बदरा गरजाए ॥
मंत्र सकति अंगरा बरखाए ॥
स्रोन असथि प्रिथमी पर परै ॥
निरखि लोग सभ ही जिय डरै ॥४॥
भूप मंत्रियन बोलि पठायो ॥
बोलि बिप्र पुसतकन दिखायो ॥
इन बिघनन को कह उपचारा ॥
तुम सभ ही मिलि करहु बिचारा ॥५॥
तब लगि बीर हाकि तिह रानी ॥
इह बिधि सौ कहवाई बानी ॥
एक काज उबरे जो करै ॥
नातर प्रजा सहित न्रिप मरै ॥६॥

सभहिन लखी गगन की बानी ॥
बीर बाक्रय किनहूं न पछानी ॥
बहुरि बीर तिन ऐस उचारो ॥
सु मै कहत हौ सुनहु प्यारो ॥७॥
जौ राजा अपनी लै नारी ॥
जुगियन दै धन सहित सुधारी ॥
तब इह प्रजा सहित नहि मरै ॥
अबिचल राज प्रिथी पर करै ॥८॥
प्रजा लोक सुनि बच अकुलाए ॥
ज्यों त्यों तहा न्रिपहि लै आए ॥
जुगियहि देहि दरबु जुत नारी ॥
भेद अभेद की गति न बिचारी ॥९॥

दोहरा ॥

प्रजा सहित राजा छला गई मित्र के नारि ॥
भेद अभेद भला बुरा सका न कोई बिचारि ॥१०॥

CHARITAR ३५६ *— SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छपन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥356॥6541॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनु राजा इक और प्रसंगा ॥
भाखि सुनावत तुमरे संगा ॥
अचलावती नगर इक राजत ॥
सूर सिंघ तह भूप बिराजत ॥१॥
अंजन देइ तवन की रानी ॥
खंजन दे दुहिता तिह जानी ॥
अधिक दुहूं की प्रभा बिराजै ॥
निरखि नरी नागिनि मन लाजै ॥२॥
तहा एक आयो सौदागर ॥
रूपवंतु जनु दुतिय निसाकर ॥
जो अबला तिह रूप निहारै ॥
राज पाट तजि साथ सिधारै ॥३॥
सो आयो न्रिप त्रिय के घर तर ॥
राज सुता निरखा तिह द्रिग भरि ॥
मन बच क्रम इह उपर भूली ॥
जनु मद पी मतवारी झूली ॥४॥
सिंघ प्रचंड नाम तिह नर को ॥
जनु करि मुकट काम के सिर को ॥
सखी एक तह कुअरि पठाई ॥
कहियहु ब्रिथा सजन सौ जाई ॥५॥
सखी तुरत तिन तह पहुचायो ॥
जस नावक को तीर चलायो ॥
सकल कुअरि तिन ब्रिथा सुनाई ॥
मन बच रीझि रहा सुखदाई ॥६॥
नदी बहत न्रिप ग्रिहि तर जहा ॥
ठाढ हूजियहु निसि कह तहा ॥

डारि देग मै कुअरि बहै हैं ॥
छिद्र मूंदि ता को सभ लै हैं ॥७॥
ऊपर बाधि तंबूरा दै हैं ॥
इह चरित्र मुहि ताहि मिलै हैं ॥
जब तुबरी लखियहु ढिग आई ॥
काढि भोग दीजहु सुखदाई ॥८॥
इह बिधि बदि ता सौ संकेता ॥
दूती गी न्रिप त्रियज निकेता ॥
डारि देग मै कुअरि बहाई ॥
बाधि तूंबरी तह पहुचाई ॥९॥
जब बहती तुबरी तह आई ॥
आवत कुअरि लखा सुखदाई ॥
ऐंचि तहा ते देग निकारी ॥
लै पलका ऊपर बैठारी ॥१०॥
पोसत भाग अफीम मंगाई ॥
दुहूं खाट पर बैठि चड़ाई ॥
चारि पहर ता सौ करि भोगा ॥
भेद न लखा दूसरे लोगा ॥११॥
इह बिधि ता सौ रोज बुलावै ॥
काम भोग करि ताहि पठावै ॥
भूप सहित कोई भेद न पावै ॥
नितप्रति अपनो मूंड मुंडावै ॥१२॥

CHARITAR ३५७ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सतावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥357॥6553॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु भूपति इक कथा नवीनी ॥
किनहूं लखी न आगे चीनी ॥
सुंद्रावती नगर इक सोहै ॥
सुंदर सिंघ राजा तह को है ॥१॥
सुंदर दे राजा की नारी ॥
आपु जनकु जगदीस सवारी ॥
ता की जात न प्रभा बखानी ॥
ऐसी हुती राइ की रानी ॥२॥
तहिक साह को पूत अपारा ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारा ॥
निरखि नाक जिह सूआ रिसानो ॥
कंज जानि द्रिग भवर भुलानो ॥३॥
कटि केहरि लखि अधिक रिसावत ॥
ता ते फिरत म्रिगन कह धावत ॥
सुनि बानी कोकिल कुकरई ॥
क्रोध जरत कारी ह्वै गई ॥४॥
नैन निरखि करि जलज लजाना ॥
ता ते जल महि किया पयाना ॥
अलक हेरि नागिनि रिसि भरी ॥
चित महि लजत पतारहि बरी ॥५॥
सो आयो राजा के पासा ॥

सौदा की जिय मै धरि आसा ॥
सुंदरि दे निरखत तिह भई ॥
सुधि बुधि तजि बौरी ह्वै गई ॥६॥
पठै सहचरी ताहि बुलावा ॥
काम भोग किय जस मन भावा ॥
तह इक हुती न्रिपति की चेरी ॥
हेरि गई जस हेरि अहेरी ॥७॥
पाव दाबि न्रिप जाइ जगायो ॥
धाम तोर तसकरि इक आयो ॥
रानी के संग करत बिलासा ॥
चलि देखहु तिह भूप तमासा ॥८॥
सुनत बचन न्रिप अधिक रिसायो ॥
खड़ग हाथ लै तहा सिधायो ॥
जब अबला पति की सुधि पाई ॥
अधिक धूंम तह दिया जगाई ॥९॥
सभ के नैन धूम्र सौ भरे ॥
असुआ टूटि बदन पर परे ॥
जब रानी इह घात पछानी ॥
मित्र लंघाइ हिये हरखानी ॥१०॥
आगे सौ करि काढा जारा ॥
धूम्र भरे द्रिग न्रिपन निहारा ॥
पौछ नेत्र जब ही गयो तहा ॥
कोऊ न पुरख निहारा उहा ॥११॥
उलटि तिसी चेरी कह घायो ॥
इह रानी कह दोस लगायो ॥
मूरख भूप न भेद बिचारा ॥
आगे करि त्रिय मित्र निकारा ॥१२॥

CHARITAR ३५८ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठावन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥358॥6565॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक और चरित्र ॥
जिह छल नारि निकारा मित्र ॥
पूरब देस अपूरब नगरी ॥
तिहूं भवन के बीच उजगरी ॥१॥
सिव प्रसाद राजा तह को है ॥
सदा सरबदा सिव रत सोहै ॥
भावन दे तिह नारि भणिजै ॥
मन मोहनि दे सुता कहिजै ॥२॥
साह मदार पीर तह जाहिर ॥
सेवत जाहि भूप नर नाहर ॥
एक दिवस न्रिप तहा सिधारा ॥
दुहिता सहित लए संग दारा ॥३॥
अड़िल ॥
एक पुरख न्रिप की दुहिता कहि भाइयो ॥
पठै सहचरी ता कह तही बुलाइयो ॥
तही काम के केल तरुनि ता सौ कियो ॥

हो हसि हसि करि आसन ता को कसि कसि लियो ॥४॥

पीर चूरमा हेत जु भूप बनाइयो ॥
अधिक भाग कौ ता महि तरुनि मिलाइयो ॥
सभ सोफी तिह खाइ दिवाने ह्वै परे ॥
हो जानु प्रहार बिना सगरे आपे मरे ॥५॥

चौपई ॥

सोफी भए सभे मतवारे ॥
जनु कर परे बीर रन मारे ॥
राज सुता इत घात पछाना ॥
उठ प्रीतम संग किया पयाना ॥६॥
सोफी किनूं न आंखि उघारी ॥
लात जानु सैतान प्रहारी ॥
भेद अभेद न किनहूं पायो ॥
राज कुअरि लै मीत सिधायो ॥७॥

CHARITAR ३५९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥359॥6572॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक और प्रसंगा ॥
जस किय सुता पिता के संगा ॥
प्रबल सिंघ राजा इक अति बल ॥
अरि कापत जा के डर जल थल ॥१॥
स्री झकझूमक दे तिह बारि ॥
घड़ी आपु जनु ब्रहम सु नार ॥
तह थो सुघर सैन खतिरेटा ॥
इसक मुसक के साथ लपेटा ॥२॥
जगंनाथ कह भूप सिधायो ॥
पुत्र कलत्र संग लै आयो ॥
जगंनाथ को निरख दिवाला ॥
बचन बखाना भूप उताला ॥३॥
हमरो पाप पुरातन गयो ॥
सफल जनम हमरो अब भयो ॥
जगंनाथ को पायो दरसन ॥
और करा हाथन पग परसन ॥४॥
तब लग भूप सुता तह आई ॥
पिता सुनत अस कहा सुनाई ॥
सुनि मै सैन आजु हिया करि हो ॥
जिह ए कहै तिसी कह बरि हो ॥५॥
प्रात उठी तह ते सोई जब ॥
बचन कहा पित संग इह बिधि तब ॥
सुघर सैन खत्री जो आही ॥
जगंनाथ दीनी मै ताही ॥६॥
राजै बचन सुना इह बिधि जब ॥
ऐस कहा दुहिता के संग तब ॥
जगंनाथ जा कह तू दीनी ॥

हम सौ जात न ता सौ लीनी ॥७॥
भेद अभेद न कछु जड़ पायो ॥
इह छल अपना मूंड मुंडायो ॥
जगंनाथ को बचन पछाना ॥
राज सुता लै मीत सिधाना ॥८॥

CHARITAR ३६० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ साठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥360॥6580॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक कथा पुरातन ॥
जिह बिधि पंडित कहत महा मुनि ॥
एक महेस्र सिंघ राजाना ॥
डंड देत जा को न्रिप नाना ॥१॥
नगर महेस्रावति तह राजत ॥
अमरावति जह दुतिय बिराजत ॥
ता की जात न उपमा कही ॥
अलका निरखि थकित तिह रही ॥२॥
गज गामिनि दे सुता भनिजै ॥
चंद्र सूर पटतर मुख दिजै ॥
ता की जात न प्रभा बखानी ॥
थकित रहत राजा अरु रानी ॥३॥
ता की लगन एक सो लागी ॥
नींद भूखि जा ते सभ भागी ॥
गाजी राइ तवन को नामा ॥
थकित रहत जा कौ लिख बामा ॥४॥
और घात जब हाथ न आई ॥
एक नाव तब निकट मंगाई ॥
राज कुअरि तिह राखा नामा ॥
जानत सकल पुरख अरु बामा ॥५॥
गाजी राइ बैठि तिह ऊपर ॥
निकसा आइ भूप महलन तर ॥
लैनी होइ नाव तौ लीजै ॥
नातरु मोहि उतर कछु दीजै ॥६॥
मै लै राज कुअरि कौ जाऊ ॥
बेचौ जाइ और ही गाऊ ॥
लैनी होइ नाव तब लीजै ॥
नातर हमै बिदा करि दीजै ॥७॥
मूरख भूप बात नहि पाई ॥
बीता दिन रजनी ह्वै आई ॥
राज सुता तब देग मंगाइ ॥
बैठी बीच तवन के जाइ ॥८॥
छिद्र मूंदि नौका तर बाधी ॥
छोरी तबै बही जब आंधी ॥
जब न्रिप प्रात दिवान लगायो ॥
तब तिन तह इक मनुख पठायो ॥९॥
जौ तुम नाव न मोल चुकावत ॥
राज कुअरि लै बनिक सिधावत ॥

जानि देहु जो मोल न बनी ॥
मेरे घर नवका है घनी ॥१०॥
हरी कुअरि राजा कौ कहि कै ॥
मूरख सका भेद नहि लहि कै ॥
प्रात सुता की जब सुधि पाई ॥
बैठि रहा मूंडी निहुराई ॥११॥

CHARITAR ३६१ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकसठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥361॥6591॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुनु भूपति इक कथा बचित्र ॥
जिह बिधि किय इक नारि चरित्र ॥
गुलो इक खत्रानी आही ॥
जेठ मल छत्री कह ब्याही ॥१॥
ता कौ और पुरख इक भायो ॥
निजु पति सेती हेतु भुलायो ॥
रैनि दिवस तिह धाम बुलावै ॥
काम भोग तिन साथ कमावै ॥२॥
इक दिन सुधि ता के पति पाई ॥
बहु बिधि ता संग करी लराई ॥
अनिक करी जूतिन की मारा ॥
तब तिन इह बिधि चरित बिचारा ॥३॥
ता दिन ते निजु पति कौ त्यागी ॥
साथ फकीरन के अनुरागी ॥
वाहि अतिथ करि कै संग लीना ॥
औरै देस पयाना कीना ॥४॥
जिह जिह देस आपु पगु धारै ॥
तहीं तहीं वहु संग सिधारै ॥
और पुरखु तिह अतिथ पछानै ॥
त्रिया चरित्र न कोई जानै ॥५॥

CHARITAR ३६२ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बासिठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥362॥6596॥अफजूं॥

चौपई ॥

सुन राजा इक कथा नवीन ॥
जस चरित्र किय नारि प्रबीन ॥
सिंघ महेस्र सुना इक राजा ॥
जिह सम और न बिधना साजा ॥१॥
नगर महेस्रावति तिह राजत ॥
देवपुरी जा कौ लखि लाजत ॥
बिमल मती रानी तिह ऐन ॥
जा सम सुनी न निरखी नैन ॥२॥
स्री पंजाब देइ तिह बेटी ॥
जा सम इंद्र चंद्र नहि भेटी ॥

अधिक तवन की प्रभा बिराजै ॥
जिह दुति निरखि चंद्रमा लाजै ॥३॥
जब जोबन ता के तन भयो ॥
अंग अंग मदन दमामो दयो ॥
भूप ब्याह को बिवत बनाइ ॥
सकल प्रोहितन लिया बुलाइ ॥४॥
सिंघ सुरेस्र भूप तब चीना ॥
जिह ससि जात न पटतर दीना ॥
करी तवन के साथ सगाई ॥
दै सनमान बरात बुलाई ॥५॥
जोरि सैन आयो राजा तह ॥
रचा ब्याह को बिवतारा जह ॥
तही बरात आइ करि निकसी ॥
रानी कंज कली जिमि बिगसी ॥६॥

दोहरा ॥

राज सुता सुंदर हुती तिह बर होत कुरूप ॥
बिमन भई अबला निरखि जनु जिय हारा जूप ॥७॥

चौपई ॥

एक साहु को पूत हुतो संग ॥
सुंदर हुते सकल जा के अंग ॥
राज सुता लख ताहि लुभाई ॥
गिरी धरनि जनु नाग चबाई ॥८॥
सुता गिरी मइया तह आई ॥
सीचि बारि बहु चिरै जगाई ॥
जब ता को बहुरौ सुधि आई ॥
उलटि गिरी जन लगी हवाई ॥९॥
पहरिक बिते बहुरि सुधि आई ॥
रोइ मात सौ बात जनाई ॥
अगनि जारि मुहि अबै जरावौ ॥
इहु कुरूप के धाम न द्रयावौ ॥१०॥
मातहि हुती सुता अति प्यारी ॥
चिंता करी चित महि भारी ॥
जिनि इह राज सुता मरि जाइ ॥
कहा करै ता की तब माइ ॥११॥
जब न्रिप सुता कछू सुधि पाई ॥
रोइ मात सौ बात सुनाई ॥
ध्रिग मुहि राज सुता क्यो भई ॥
किसी साह के धाम न गई ॥१२॥
मोरो भाग लोप ह्वै गयो ॥
ता ते जनम भूप को लयो ॥
अब ऐसे कुरूप के जै हौ ॥
रैनि दिवस सभ रोत बितै हौ ॥१३॥
ध्रिग मुहि नारि जोनि कस धरी ॥
क्योन भूपति के धामौतरी ॥
मागी देत न म्रितु बिधाता ॥
अब ही करौ देहि को घाता ॥१४॥

दोहरा ॥

मुख मागे जो पुरख को भलो बुरो कुछ होइ ॥
तौ दुखिया इह जगत मै जियत न उबरै कोइ ॥१५॥

चौपई ॥

अब मै मारि कटारी मरिहौ ॥
नातर बसत्र भगौहे धरिहौ ॥
बरौ त पूत साह को बरौ ॥
नातर आजु खाइ बिखु मरौ ॥१६॥
रानी को दुहिता थी प्यारी ॥
सोई करी जु ताहि उचारी ॥
चेरी काढि तवन कह दीनी ॥
भूप सुता करि तिन जड़ चीनी ॥१७॥
साह पुत्र कह दई कुमारी ॥
दुतिय पुरख नहि क्रिया बिचारी ॥
लै चेरी वहु भूप सिधायो ॥
जान्यो राज सुता बरि ल्यायो ॥१८॥

CHARITAR ३६३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ त्रैसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥363॥6614॥अफजूं॥*

चौपई ॥

गनपति सिंघ एक राजा बर ॥
गनपावती हुतो जा के घर ॥
स्री महताब प्रभा तिह रानी ॥
जाहि निरखि करि नारि लजानी ॥१॥
मुहकम सिंघ एक छत्री जह ॥
जिह सम उपजा दुतिय न महि मह ॥
रानी जब ता को लखि पायो ॥
काम भोग ग्रिह बोलि कमायो ॥२॥
तब लगि आइ गयो राजा तह ॥
जार हुतो भोगत ता कौ जह ॥
निरख नाथ त्रिय चरित्र बिचारा ॥
हार तोरि अंगना महि डारा ॥३॥
बिहसि बचन न्रिप संग उचारा ॥
खोजि हार तुम देहु हमारा ॥
आन पुरख जौ हाथ लगै है ॥
तौ हमरे पहिरन ते जै है ॥४॥
खोजत भयो जड़ हार अयानो ॥
नेत्र नीच करि भेद न जानो ॥
नारि आगे ह्वै मीत निकारा ॥
सिर नीचे पसु तिह न निहारा ॥५॥
पहरिक लगे खोजि जड़ हारो ॥
लै रानी कह दयो सुधारो ॥
अति पतिब्रता ताहि ठहरायो ॥
दुतिय पुरख जिन कर न छुआयो ॥६॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥364॥6620॥अफजूं॥*

चौपई ॥

निपबर सिंघ एक राजाना ॥
मानत आनि देस जिह नाना ॥
स्री किलकंचित दे तिह रानी ॥
जाहि निरखि पुर नारि रिसानी ॥१॥
निपबरवती नगर तिह राजत ॥
दुतिय प्रिथी जनु सुरग बिराजत ॥
नगर प्रभा नहि जात बखानी ॥
थकित रहत राजा अरु रानी ॥२॥
स्री चितचौप मती तिह कंन्या ॥
जिह सम नारि न उपजी अंन्रया ॥
ता की जात न उपमा करी ॥
रूप रास जोबन तन भरी ॥३॥
राज कुअर इक हुतो अपारा ॥
इक दिन निकसा निमिति सिकारा ॥
म्रिग हित धयो न पहुचा कोई ॥
आवत भयो नगर तिह सोई ॥४॥
राज सुता तिह रूप निहारो ॥
मन क्रम बच अस करा बिचारो ॥
ऐसो छैल एक दिन पैयै ॥
जनम जनम पल पल बलि जैयै ॥५॥
अटिक सिंघ लखि तेज सवाया ॥
थकित रही राजा की जाया ॥
पठै सहचरी लियो मगाइ ॥
काम भोग रुचि मानुपजाइ ॥६॥
चारि पहर निसु किया बिलासा ॥
तजि करि मात पिता को त्रासा ॥
पोसत भागि अफीम मंगावहि ॥
एक सेज दोऊ बैठ चड़ावहि ॥७॥
कैफहि होत रसमसे जब ही ॥
क्रीड़ा करत दोऊ मिल तब ही ॥
भाति भाति तन आसन लै कै ॥
चुंबन और अलिंगन कै कै ॥८॥
स्रमित भए अरु भे मतवारे ॥
सोइ रहै नहि नैन उघारे ॥
प्राति पिता ता कौ तह आयो ॥
जाइ सहचरी तिनै जगायो ॥९॥
वहै सखी तिह बहुरि पठाई ॥
यौ कहियहु राजा सौ जाई ॥
चौका परा भोज दिज कारन ॥
बिनु न्रहाए न्रिप तह न सिधारन ॥१०॥
बसत्रुतारि कर इही अनावहु ॥
बहुर सुता के धाम सिधावहु ॥
भूप बचन सुनि बसत्र उतारे ॥
चहबचा महि न्रहान सिधारे ॥११॥

जब डुबिआ कह भूपत लीना ॥
तब ही काढि मित्र कह दीना ॥
बसत्र पहिरि फिरि तहा सिधायो ॥
भेद अभेद न कछु जड़ पायो ॥१२॥

दोहरा ॥

स्यानो भूप कहात थो भाग न भूल चबाइ ॥
इह छल छलि अमली गयो पनही मूंड लगाइ ॥१३॥

CHARITAR ३६५ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पैसठि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥365॥6633॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक और प्रसंगा ॥
जस छल कीना नारि सुरंगा ॥
छितपति सिंघ इक भूपत बर ॥
अबला दे रानी जा के घर ॥१॥
नाभ मती दुहिता तिह सोहै ॥
सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥
पदुमावती नगर तिह राजत ॥
इंद्रावती निरखि तिह लाजत ॥२॥
बीर करन राजा इक औरै ॥
भद्रावती बसत थो ठौरै ॥
ऐंठी सिंघ पूत तिह जायो ॥
निरखि मदन जिह रूप बिकायो ॥३॥
न्रिप सुत खेलन चड़ा सिकारा ॥
आवत भयो तिह नगर मझारा ॥
न्रहावत हुती जहा न्रिप बारि ॥
थकति रहा तिह रूप निहारि ॥४॥
राज सुता तिह ऊपर अटकी ॥
बिसरि गई उत तिह सुधि घट की ॥
रीझ रहे दोनो मन माही ॥
कछू रही दुहूंअनि सुधि नाही ॥५॥
तरुनि गिरा जब चतुर निहरा ॥
ता की हाथ नाभि पर धरा ॥
अरु पद पंकज हाथ लगाई ॥
मुख न कहा कछु धाम सिधाई ॥६॥
द्वैक घरी तिन परे बिताई ॥
राज कुअर कह पुनि सुधि आई ॥
हाहा सबद रटत घर गयो ॥
खान पान तब ते तजि दयो ॥७॥
बिरही भए दोऊ नर नारी ॥
राज कुअर अरु राज कुमारी ॥
हाव परसपर दुहूअन भयो ॥
सो मै कबितन माझ कहियो ॥८॥
सवैया ॥
उन कुंकम टीको दयो न उतै इत तेहूं न सोंदुर माग सवारी ॥

त्यागि दयो सभ को डरवा सभ हूं की इतै तिह लाज बिसारी ॥
हार तजे तिन हेरब ते सजनी लखि कोटि हहा करि हारी ॥
पान तजे तुम ता हित प्रीतम प्रान तजे तुमरे हित प्यारी ॥९॥

चौपई ॥

उतै कुअरि कह कछू न भावै ॥
हहा सबद दिन कहत बितावै ॥
अंन न खात पियत नहि पानी ॥
मित्र हुतो तिह तिन पहिचानी ॥१०॥
कुअर ब्रिथा जिय की तिह दई ॥
इक त्रिय मोहि दरस दै गई ॥
नाभ पाव पर हाथ लगाइ ॥
फिरि न लखा कह गई सु काइ ॥११॥
ता की बात न ताहि पछानी ॥
कहा कुअर इन मुझै बखानी ॥
पूछि पूछि सभ ही तिह जावै ॥
ता को मरमु न कोई पावै ॥१२॥
ता को मित्र हुतो खतरेटा ॥
इसक मुसक के साथ लपेटा ॥
कुअर तवन पहि ब्रिथा सुनाई ॥
सुनत बात सभ ही तिन पाई ॥१३॥
नाभ मती तिह नाम पछाना ॥
जिह नाभी कह हाथ छुआना ॥
पदुमावती नगर ठहरायौ ॥
ता ते पद पंकज कर लायो ॥१४॥
दोऊ चले तह ते उठि सोऊ ॥
तीसर तहा न पहूचा कोऊ ॥
पदुमावती नगर था जहा ॥
नाभ मती सुंदरि थी तहा ॥१५॥
पूछत चले तिसी पुर आए ॥
पदुमावती नगर नियराए ॥
मालिनि हार गुहत थी जहा ॥
प्रापति भए कुअर जुत तहा ॥१६॥
एक मुहर मालनि कह दियो ॥
हार गुहन तिह न्रिप सुत लियो ॥
लिखि पत्री ता महि गुहि डारी ॥
जिस हाथन लै पड़े प्यारी ॥१७॥
तै जिह हाथ नाभि कह लायो ॥
और दुहूं पद हाथ छुहायो ॥
ते जन आजु नगर महि आए ॥
तुम सौ चाहत नैन मिलाए ॥१८॥
राज सुता पतिया जब चीनी ॥
छोरि लई कर किसू न दीनी ॥
बहु धन दै मालिनी बुलाई ॥
लिखि पत्री फिरि तिनै पठाई ॥१९॥
सिव कौ दिपत देहरो जहा ॥
मै ऐहो आधी निसि तहा ॥
कुअर तहा तुमहूं चलि ऐयहु ॥
मन भावत को भोग कमैयहु ॥२०॥
कुअर निसा आधी तह जाई ॥

राज सुता आगे तह आई ॥
काम भोग की जेतिक प्यासा ॥
पूरनि भई दुहूं की आसा ॥२१॥
मालिनि की दुहिता कहि बामा ॥
राज कुअर कह ल्याई धामा ॥
राति दिवस दोऊ करत बिलासा ॥
भूपति की तजि करि करि त्रासा ॥२२॥
कितक दिनन ता को पति आयो ॥
अति कुरूप नहि जात बतायो ॥
सूकर के से दाति बिराजै ॥
निरखत करी रदन द्वै भाजै ॥२३॥
राज कुअर त्रिय भेस सु धारे ॥
आवत भयो तिह निकट सवारे ॥
राज सुता पहि निरखि लुभायो ॥
भोग करन हित हाथ चलायो ॥२४॥
राज कुअर तब छुरी संभारी ॥
नाक काटि न्रिप सुत की डारी ॥
नाक कटै जड़ अधिक खिसायो ॥
सदन छाडि काननहि सिधायो ॥२५॥
नाक कटाइ जबै जड़ गयो ॥
इन पथ सिव देवल को लयो ॥
न्रिप सुत म्रिगिक हितू हनि ल्यायो ॥
दुहूंअन बैठि तिही ठा खायो ॥२६॥
तही बैठि दुहूं करे बिलासा ॥
त्रियहि न रही भोग की आसा ॥
लै ता के संग देस सिधायो ॥
इक सहचरि कह तहा पठायो ॥२७॥
डिवढी सात सखी तिन नाखी ॥
इमि बतीआ भूपति संग भाखी ॥
पति त्रिय गए दोऊ निसि कह तह ॥
आगे हुते सदा सिव जू जह ॥२८॥
दुहूं जाइ तह कीए प्रयोगा ॥
तीसर कोई न जानत लोगा ॥
उलटि परा सिव जू रिसि भरियौ ॥
भसमी भूत दुहूं कह करियौ ॥२९॥
वहै भसम लै तिनै दिखाई ॥
म्रिग भछन तिह तिनै जगाई ॥
भसम लहे सभ ही जिय जाना ॥
लै प्रीतम घर नारि सिधाना ॥३०॥

CHARITAR ३६६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छिआसठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥366॥6663॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अंधावती नगर इक सोहै ॥
सैन बिदाद भूप तिह को है ॥
मूरखि मति ता की बर नारी ॥
जिहसी मूड़ न कहूं निहारी ॥१॥

प्रजा लोग अति ही अकुलाए ॥
देस छोडि परदेस सिधाए ॥
और भूप पहि करी पुकारा ॥
न्याइ करत तैं नही हमारा ॥२॥
ता ते तुम कुछ करहु उपाइ ॥
जा ते देस बसै फिरि आइ ॥
चारि नारि तब कहियो पुकारि ॥
हम ऐहै जड़ न्रिपहि संघारि ॥३॥
द्वै त्रिय भेस पुरख के धारी ॥
पैठि गई तिह नगर मंझारी ॥
द्वै त्रिय भेस जोग्रय के धारो ॥
प्रापति भी तिह नगर मझारो ॥४॥
इक त्रिय चोरी करी बनाइ ॥
पकरि लई दूसरि त्रिय जाइ ॥
द्वै त्रिय जोग भेस कौ धरि कै ॥
गई भूप को चरित बिचरि कै ॥५॥
भूप कहा सूरी इह दीजै ॥
तीनो हुकम हमारे लीजै ॥
हनननात लै ताही सिधारे ॥
द्वै इसत्री ह्वै अतिथ पधारे ॥६॥
जोगिनि नारि कहा अस कीजै ॥
द्वै महि इक जोगी कह दीजै ॥
ऐहै इहा अरस की बाता ॥
जानत कोई न ता की घाता ॥७॥
दुतिय नार इमि बचन उचारे ॥
याहि न सूरी देहु कहारे ॥
सूरी एक अतिथ को दीजै ॥
तसकर दूर इहा ते कीजै ॥८॥
चली खबरि आवै इह कहा ॥
बैठि बिदाद नराधिप जहा ॥
अंध नगर के तीर लोग सभ ॥
अछर कछु न पड़ै तिन गरधभ ॥९॥
और कछू जानै नहि बाता ॥
महा पसू मूरख बिख्याता ॥
इह धुनि परी कान प्रभ के जब ॥
निरखन चला अतिथहि द्वै तब ॥१०॥
दरस किया तिन को जब जाई ॥
बचन किया भूपति मुसकाई ॥
तुम सूरी कारन किह लेहु ॥
सो मुहि भेद क्रिपा करि देहु ॥११॥
हो हम जनम जनम किय पाता ॥
या पर चड़त होहि सभ घाता ॥
या पर बात स्वरग की ऐहै ॥
आवा गवन तुरत मिटि जैहै ॥१२॥
जब राजै ऐसो सुनि पाई ॥
चित चड़बे की बिवत बनाई ॥
अवर लोग सभ दए हटाइ ॥
आपु चड़ा सूरी पर जाइ ॥१३॥
भूप चड़त जोगी भजि गए ॥
कहूं दुरे जनियत नहि भए ॥

धरि इसत्रिन के रूप अपारा ॥
मिलगे ता ही नगर मंझारा ॥१४॥
इह छल अन्नयाई न्रिप मारि ॥
देस बसायो बहुरि सुधारि ॥
अंध नगर कछु बात न पाई ॥
इह छल हना हमारा राई ॥१५॥

CHARITAR ३६७ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सतसठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥367॥6678॥अफजूं॥*

चौपई ॥

गड़ कनौज कौ जहा कहिजै ॥
अभै सिंघ तह भूप भनिजै ॥
स्री चखु चार मती तिह नारी ॥
जिह सम तुल न ब्रहम सवारी ॥१॥
ता को नेह एक सौ लागो ॥
जा ते लाज छाड तन भागो ॥
अघट सिंघ तिह नाम भनिजै ॥
को दूजा पटतर तिह दिजै ॥२॥
नितिप्रति तिह त्रिय बोलि पठावत ॥
काम भोग तिह साथ कमावत ॥
तब लौ तहा नराधिप आयो ॥
त्रिय चरित्र इह भाति बनायो ॥३॥
तुमरे केस भूप बिकरारा ॥
सहे न मो ते जात सुधारा ॥
प्रथमहि रोम मूंडि तुम आवहु ॥
बहुरि हमारी सेज सुहावहु ॥४॥
जब न्रिप गयो रोम मूंडिन हित ॥
रानी अधिक प्रसंन्य भई चित ॥
छिद्र ताकि निजु मीत लुकायो ॥
मूरख भूप भेद नहि पायो ॥५॥

CHARITAR ३६८ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठसठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥368॥6683॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक और कहानी ॥
जिह बिधि किया राव संग रानी ॥
गनपति सिंघ एक राजा बर ॥
सत्रु कंपत ता के डर घर घर ॥१॥
चंचल दे राजा की नारी ॥
जिसु सम दुतिय न कहूं हमारी ॥
अवर रानियन के घर आवै ॥
ता कौ कब ही मुख न दिखावै ॥२॥
रानी इन बातन ते जरी ॥
पति बध की इछा जिय धरी ॥

और नारि को धरि करि भेसा ॥
निजु पति के ग्रिह किया प्रवेसा ॥३॥
अपनी नारि न न्रिपतिह जाना ॥
अधिक रूप लखि ताहि लुभाना ॥
भई रैनि तब लई बुलाइ ॥
भोग कीया ता सौ लपटाइ ॥४॥
यौ बतिया तिह साथ उचारी ॥
है छिनार न्रिप नार तिहारी ॥
एक पुरख को धाम बुलावत ॥
मुहि निरखत ता सौ लपटावत ॥५॥
यौ न्रिप सो तिन कही बनाइ ॥
अति निजु पति कह रिसि उपजाइ ॥
लखिन चला भूपत तिह धाई ॥
धाम आपनागम त्रिय आई ॥६॥
निजु तनु भेस पुरख को धारी ॥
गई सवति के धाम सुधारी ॥
आगे प्रीति हुती संग जा के ॥
बैठी जाइ सेज चड़ि ता के ॥७॥
तबि लगि तहा नराधिप आयो ॥
पुरख भेस लखि नारि रिसायो ॥
जो बातैं मुहि यार उचारी ॥
सो अखियन हम आजु निहारी ॥८॥
काढि क्रिपान हननि तिह धयो ॥
रानी हाथ नाथ गहि लयो ॥
तव त्रिय भेस तहा नर धारा ॥
तै जड़ या कह जार बिचारा ॥९॥
जब तिह न्रिप निजु नारि बिचारियो ॥
उतरा कोप हियै थो धारियो ॥
तिन इसत्री इह भाति उचारी ॥
सुनु मूरख न्रिप बात हमारी ॥१०॥
बसत एक दिजबर इह गावै ॥
चंद्र चूड़ ओझा तिह नावै ॥
ब्रहम डंड तिह पूछि करावहु ॥
तब अपनो मुख हमै दिखावहु ॥११॥
जब राजा तिह ओर सिधायो ॥
तब दिज को त्रिय भेख बनायो ॥
चंद्र चूड़ धरि अपना नाम ॥
प्रापति भई न्रिपति के धाम ॥१२॥
तिह न्रिप नाम पूछ हरखाना ॥
चंद्र चूड़ तिह कौ पहिचाना ॥
जिह हित जात कहो परदेसा ॥
भली भई आयो वहु देसा ॥१३॥
जब पूछा राजै तिह जाई ॥
त्रिय दिज ह्वै इह बात बताई ॥
जो न्रिदोख कह दोख लगावै ॥
जमपुर अधिक जातना पावै ॥१४॥
तह तिह बाधि थंभ कै संग ॥
तपत तेल डारत तिह अंग ॥
छुरियन साथ मासु कटि डारै ॥
नरक कुंड के बीच पछारै ॥१५॥

गावा गोबर लेहु मगाइ ॥
ता की चिता बनावहु राइ ॥
ता मौ बैठि जरै जे कोऊ ॥
जम पुर बिखै न टंगियै सोऊ ॥१६॥

दोहरा ॥

सुनत बचन दिज नारि न्रिप गोबर लिया मंगाइ ॥
बैठि आपु ता महि जरा सका न त्रिय छल पाइ ॥१७॥

CHARITAR ३६९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनहतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥369॥6700॥अफजूं॥*

चौपई ॥

ब्रयाघ्र केतु सुनियत इक राजा ॥
जिह सम दुतिय न बिधना साजा ॥
ब्रयाघ्रवती नगर तिह सोहै ॥
इंद्रावती नगर को मोहै ॥१॥
स्री अबदाल मती त्रिय ता की ॥
नरी नागनी तुलि न वा की ॥
तह इक हुतो साहु सुत आछो ॥
जनु अलि पनच काछ तन काछो ॥२॥
अड़िल ॥
स्री जस तिलक सिंघ तिह नाम पछानियै ॥
रूपवान धनवान चतुर पहिचानियै ॥
जो इसत्री ता को छिन रूप निहारई ॥
हो लोक लाज कुलि कानि सभै तजि डारई ॥३॥

चौपई ॥

एक सखी ता कौ लखि पाई ॥
बैठि सखिन महि बात चलाई ॥
जस सुंदर इक इह पुर माही ॥
तैसौ चंद्र सूर भी नाही ॥४॥
सुनि बतिया रानी जिय राखी ॥
और नारि सौ प्रगट न भाखी ॥
जो सहचरि ता कौ लखि आई ॥
रैनि भई तब वहै बुलाई ॥५॥
अधिक दरबु ता कौ दै रानी ॥
पूछी ताहि दीन ह्वै बानी ॥
सु कहु कहा मुहि जु तै निहारा ॥
किया चाहत तिह दरस अपारा ॥६॥
तब चेरी इमि बचन उचारो ॥
सुनु रानी जू कहा हमारो ॥
स्री जस तिलक राइ तिह जानो ॥
साह पूत ता कह पहिचानो ॥७॥
जु तुम कहौ तिह तुमै मिलाऊ ॥
मदन ताप सभ तोर मिटाऊ ॥
सुनत बचन रानी पग परी ॥

पुनि ता सौ बिनती इमि करी ॥८॥
जे ता को तैं मुझै मिलावैं ॥
जो धन मुख मागै सो पावैं ॥
तह सखी गई बार नहि लागी ॥
आनि दियो ता कौ बडभागी ॥९॥

दोहरा ॥

रानी ता कौ पाइ तिह दारिद दिया मिटाइ ॥
न्रिप की आख बचाइ उहि लिये गरे सौ लाइ ॥१०॥

चौपई ॥

दोऊ धनी औ जोबनवंत ॥
करत काम क्रीड़ा बिगसंत ॥
इक कामी अरु कैफ चड़ाई ॥
रैनि सकल रति करत बिताई ॥११॥
लपटि लपटि आसन वे लेही ॥
आपु बीचि सुखु बहु बिधि देही ॥
चुंबन करत नखन के घाता ॥
रैनि बिती आयो ह्वै प्राता ॥१२॥
रानी गई प्रात पति पास ॥
लगी रही जा की जिय आस ॥
अथवत दिनन होत अंधयारो ॥
बहुरि भजै मुहि आनि प्यारो ॥१३॥
जौ रहि हौ राजा कै पास ॥
मोहि राखि है बिरध निरास ॥
संग कहा या के स्वै लैहौ ॥
मित्र भोग भोगन ते जैहौ ॥१४॥
किह छल सेज सजन की जाऊ ॥
नख घातन किह भाति छपाऊ ॥
बिरध भूप तन सोत न जैयै ॥
ऐसो कवन चरित्र दिखैयै ॥१५॥
जाइ कही न्रिप संग अस गाथा ॥
बात सुनहु हमरी तुम नाथा ॥
हियै बिलारि मोर नख लाए ॥
काढि भूप कौ प्रगट दिखाए ॥१६॥
अड़िल ॥
सुनु राजा मै आजु न तुम संग सोइ हौ ॥
निजु पलका पर परी सकल निसु खोइ हौ ॥
इहा बिलारि मोहि नख घात लगात है ॥
हो तुहि मूरख राजा ते कछु न बसात है ॥१७॥

चौपई ॥

इह छल तजि स्वैबो न्रिप पासा ॥
किया मित्र सौ काम बिलासा ॥
घात नखन की नाह दिखाई ॥
बिरध मूड़ न्रिप बात न पाई ॥१८॥

CHARITAR ३७० *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥370॥6718॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

अछल सैन इक भूप भनिजै ॥
चंद्र सूर पटतर तिह दिजै ॥
कंचन दे ता के घर नारी ॥
आपु हाथ लै ईस सवारी ॥१॥
कंचन पुर को राज कमावै ॥
सूरबीर बलवान कहावै ॥
अरि अनेक जीते बहु भाता ॥
तेज त्रसत जा के पुर साता ॥२॥
तहा प्रभाकर सैनिक साह ॥
निरख लजत जा को मुख माह ॥
जब रानी ता कह लखि पायो ॥
इहै चित भीतर ठहरायो ॥३॥
या कह जतन कवन करि पइयै ॥
कवन सहचरी पठै मंगइयै ॥
याहि भजै बिनु धाम न जैहौ ॥
जिह तिह भाति याहि बसि कैहौ ॥४॥
कनक पिंजरी परी हुती तह ॥
मरम केतु रानी के बसि मह ॥
बीर राधि तिह तही पठाई ॥
सेज उठाइ जाइ लै आई ॥५॥
काम भोग ता सौ जब माना ॥
द्वै प्रानन ते इक जिय जाना ॥
निजु नाइक सेती हित छोरो ॥
ता सौ चतुरि चौगुनो जोरो ॥६॥
जाइ राव सौ बात जनाई ॥
मोरो साह पूरबलो भाई ॥
हम को स्राप एक रिखि दिया ॥
ता ते जनम दुहूं ह्यां लिया ॥७॥
पुनि हम सौ रिखि ऐस उचारा ॥
ह्वै है बहुरि उधार तुहारा ॥
मात लोक बहु बरिस बितैहौ ॥
बहुरौ दोऊ स्वरग महि ऐहौ ॥८॥
हम तुमरो घर बस सुखु पायो ॥
अब रिखि स्राप अवधि ह्वै आयो ॥
ए बच भाखि न्रिपहि घर आई ॥
साह परी जुत लिया बुलाई ॥९॥

चौपई ॥

गई इह गई धुंनि तुम करियहु ॥
भूप सुनत नभ बिखै उचरियहु ॥
जब तिन बात भेद की जानी ॥
भला कहौगी परी बखानी ॥१०॥
साह सहित भूपति पहि जाइ ॥
कही जात है रानी राइ ॥
इह बिधि भाखि लोप ह्वै गई ॥

गई गई बानी नभ भई ॥११॥

अड़िल ॥

गई इह गई चिर लौ नभ बानी भई ॥
प्रजा सहित तिन भूप यहै जिय मै ठई ॥
रानी सुर पुर गई भ्रात को साथ लै ॥
हो मूरख भेद अभेद न सका बिचारि कै ॥१२॥

चौपई ॥

मिलि सभहिन इह भाति उचारी ॥
गई सुरग न्रिप नारि तुमारी ॥
तुम चिंता चित मै नहि करो ॥
सुंदर सुघर अवर त्रिय बरो ॥१३॥

CHARITAR ३७१ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥371॥6731॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सुनु राजा इक अवर प्रसंगा ॥
जिह बिधि किया नारि न्रिप संगा ॥
जलज सैन इक भूम भनिजै ॥
सुछबि मती तिह नारि कहिजै ॥१॥
सुछबिवती तिह नगर कहीजत ॥
अमर पुरी पटतर तिह दीजत ॥
राजा को त्रिय हुती न प्यारी ॥
या ते रानी रहत दुखारी ॥२॥
रानी रूप बैद को ठानि ॥
राजा के घर किया पयान ॥
कहा असाध भया है तोहि ॥
बोलि चकितसा कीजै मोहि ॥३॥
धावत तुमै पसीनो आवत ॥
रवि देखत द्रिग धुंध जनावत ॥
राजा बात सत्य करि मानी ॥
मूड़ भेद की क्रिया न जानी ॥४॥
मूरख भूप भेद नहि पायो ॥
त्रिय ते बोलि उपाइ करायो ॥
तिन बिख डारि औखधी बीचा ॥
छिन महि करी भूप की मीचा ॥५॥

CHARITAR ३७२ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बहतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥372॥6736॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सहिर दौलताबाद बसत जह ॥
बिकट सिंघ इक भूप हुतो तह ॥
भान मंजरी ता की दारा ॥

जिह सम करी न पुनि करतारा ॥१॥
भीम सैन इक तह थो साहा ॥
प्रगट भयो जनु दूसर माहा ॥
स्री अफताब देइ तिह नारी ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारी ॥२॥
तिन मन मै इह बात बखानी ॥
किह बिधि कै हूजियै भवानी ॥
सोइ रही सभ जगहि दिखाइ ॥
चमकि उठी सुपने कह पाइ ॥३॥
कहा दरस मुहि दिया भवानी ॥
सभहिन सौ भाखी इमि बानी ॥
जिह बरदान देउ तिह होई ॥
या महि परै फेरि नहि कोई ॥४॥
लोग बचन सुनि करि पग लागे ॥
बरु मागन ता ते अनुरागे ॥
ह्वै बैठी सभहिन की माई ॥
यह सुनि खबर नराधिप पाई ॥५॥
एक नारि इह नगर भनिजै ॥
नाम हिंगुला देइ कहिजै ॥
जगत मात कौ आपु कहावै ॥
ऊच नीच कह पाइ लगावै ॥६॥
काजी और मुलाने जेते ॥
जोगी मुंडिया अरु दिज केते ॥
सभ की घटि पूजा ह्वै गई ॥
परचा अधिक तवन की भई ॥७॥
सभ भेखी या ते रिसि भरे ॥
बहु धन चड़त निरखि तिह जरे ॥
गहि लै गए ताहि न्रिप पासा ॥
कहत भए इह बिधि उपहासा ॥८॥
करामात कछु हमहि दिखाइ ॥
कै न भवानी नामु कहाइ ॥
तब अबला अस मंत्र बिचारा ॥
सुनु राजा कहियो बचन हमारा ॥९॥
अड़िल ॥
मुसलमान मसजदिहि अलहि घर भाखही ॥
बिप्र लोग पाहन कौ हरि करि राखही ॥
करामात जौ तुहि ए प्रथम बताइ है ॥
हो तिह पाछे कछु हमहूं इनै दिखाइ है ॥१०॥

चौपई ॥

बचन सुनत राजा मुसकाए ॥
दिजबर मुला पकरि मंगाए ॥
मुंडिया और संन्यासी घने ॥
जोगी जंगम जात न गने ॥११॥
अड़िल ॥
भूप बचन मुख ते इह भाति उचारियो ॥
सभा बिखै सभहिन तिन सुनत पचारियो ॥
करामात अपु अपनी हमै दिखाइयै ॥
हो नातर अब ही धाम म्रितु के जाइयै ॥१२॥
सुनि राजा के बचन सभै ब्याकुल भए ॥

सोक समुंद के बीच बूडि सभ ही गए ॥
निरखि न्रिपति की ओर रहे सिर न्याइ कै ॥
हो करामात कोई सकै न ताहि दिखाइ कै ॥१३॥
करामात नहि लखी क्रोध राजा भरियो ॥
सात सात सै चाबुक तिन के तन झरियो ॥
करामात अपु अपुनी कछुक दिखाइयै ॥
हो नातर त्रिय के पाइन सीस झुकाइयै ॥१४॥
ग्रिह खुदाइ कै ते कछु हमहि दिखाइयै ॥
नातर इन सेखन को मूंड मुंडाइयै ॥
करामात बिनु लखे न मिस्रन छोरि हो ॥
हो नातर तुमरे ठाकुर नदि महि बोरि हो ॥१५॥
करामात कछु हमहि संन्यासी दीजियै ॥
नातर अपनी दूरि जटन को कीजियै ॥
चमतकार मुंडियो अब हमहि दिखाइयै ॥
हो नातर अपनी कंठी नदी बहाइयै ॥१६॥

दोहरा ॥

रोदन वै करते भए किसू न आई बात ॥
तब राजै तिह नारि कौ बचन कहा मुसकात ॥१७॥

चौपई ॥

करामात इन कछु न दिखाई ॥
अब चाहत है तुम ते पाई ॥
बचन हिंगुला देइ उचारे ॥
सुनो नराधिप बैन हमारे ॥१८॥
अड़िल ॥
करामाति इक असि मौ प्रथम पछानियै ॥
जा कौ तेजु अरु त्रास जगत मौ मानियै ॥
जीत हार अरु म्रितु धार जा की बसत ॥
हो मेरे मन परमेसुर ताही कौ कहत ॥१९॥
दुतिय काल मौ करामाति पहिचानियत ॥
जिन को चौदह लोक चक्र कर मानियत ॥
काल पाइ जग होत काल मिट जावई ॥
हो या ते मुर मन ताहि गुरू ठहरावई ॥२०॥
करामात राजा रसनाग्रज जानियत ॥
भलो बरो जा ते जग होत पछानियत ॥
करामाति चौथी धन भीतर जानियै ॥
हो होत रंक ते राव धरो तिह मानियै ॥२१॥

चौपई ॥

करामात इन महि नहि जानहु ॥
ए सभ धन उपाइ पहिचानहु ॥
चमतकार इन महि जौ होई ॥
दर दर भीख न मागै कोई ॥२२॥
जौ इन सभहूं प्रथम संघारो ॥
तिह पाछे कछु मोहि उचारो ॥
सति बात हम तुमहि सुनाई ॥
अब सु करौ जो तुमहि सुहाई ॥२३॥
बचन सुनत राजा हरखाना ॥

अधिक दियो तिह त्रिय के दाना ॥
जगत मात तिन त्रिय जु कहायो ॥
तिह प्रसादि निज प्रान बचायो ॥२८॥

CHARITAR ३७३ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तिहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥373॥6760॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

बीजा पुर जह सहिर भनिजै ॥
एदिल साह तह साह कहिजै ॥
स्री महताब मती तिह कंन्या ॥
जिह सम उपजी नारि न अंन्रया ॥१॥
जोबनवंत भई जब बाला ॥
महा सुंदरी नैन बिसाला ॥
जोबन जेब अधिक तिह बाढी ॥
जानुक चंद्र सूर मथि काढी ॥२॥
तह इक हुतो साहु को पूत ॥
सूरति सीरति बिखै सपूत ॥
धूम्र केतु तिह नाम भनिजै ॥
इंद्र चंद्र पटतर तिह दिजै ॥३॥
बेगम की ता सौ रुचि लागी ॥
जा ते नींद भूख सभ भागी ॥
देखि गई जब ते तिह धामा ॥
तब ते और सुहात न बामा ॥४॥
हितू जान सहचरी बुलाई ॥
भेद भाखि सभ तहा पठाई ॥
हमै साह सुत जु तै मिलै है ॥
जो धन मुख मंगि हैं सो पै हैं ॥५॥
सखी पवन के भेस सिधाई ॥
पलक न बिती साह के आई ॥
साह पूत कह किया प्रनामा ॥
बैठी जाइ सुघरि तिह धामा ॥६॥
तुमरो नाम कहा पहिचनियत ॥
कवन देस के बासी जनियत ॥
सकल ब्रिथा निज प्रथम सुनावहु ॥
बहुरि कुअरि की सेज सुहावहु ॥७॥
सुनी सखी मद्र देस हम रहही ॥
धूम्र केतु हम कौ जन कहही ॥
सौदा हित आए इह देसा ॥
देस देस को निरखि नरेसा ॥८॥
बतियन प्रथम ताहि बिरमाइ ॥
भाति भाति तिन लोभ दिखाइ ॥
ज्यों त्यों लै आई तिह तहा ॥
मारग कुअरि बिलोकत जहा ॥९॥
जो धन कहा सुंद्र तिह दीना ॥
कंठ लगाइ मित्र सो लीना ॥
भाति भाति की कैफ मंगाई ॥
एक खाट चड़ि दुहूं चड़ाई ॥१०॥

भाति भाति तन कैफ चड़ावहि ॥
मिलि मिलि गीत मधुर धुनि गावहि ॥
बिबिध बिधिन तन करत बिलासा ॥
नैकु न करै न्रिपति को त्रासा ॥११॥
छैलिहि छैल न छोरा जाई ॥
निसु दिन राखत कंठ लगाई ॥
जब कबहूं आखेट सिधावै ॥
एक अंबारी ताहि चड़ावै ॥१२॥
तही काम क्रीड़ा कह करै ॥
मात पिता ते नैकु न डरै ॥
इक दिन राजा चड़ा सिकारा ॥
संग लए मिहरियै अपारा ॥१३॥
बेगम सोऊ सिकार सिधाई ॥
एक अंबारी ताहि चड़ाई ॥
एक सखी तिह चड़त निहारा ॥
जाइ भूप सो भेद उचारा ॥१४॥
सुनि न्रिप बात चित मो राखी ॥
औरि नारि सो प्रगट न भाखी ॥
दुहिता को जब गज निकटायो ॥
तब ता को पितु निकट बुलायौ ॥१५॥
सुनत बैन बेगम डरपानी ॥
थरहर कंपा मित्र तिह मानी ॥
अब ही मुझै भूप गहि लै है ॥
इसी बन बिखै मारि चुकै है ॥१६॥
नारि कही पिय जिन जिय डरो ॥
कहौ चरित्र तुमै सो करो ॥
करी रूख के तरै निकारा ॥
लपटि रहा ता सौ तह यारा ॥१७॥
आपु पिता प्रति किया पयाना ॥
मारे रीछ रोझ म्रिग नाना ॥
ताहि बिलोकि पिता चुप रहा ॥
झूठ लखा तिह त्रिय मुहि कहा ॥१८॥
उसी सखी को पलटि प्रहारा ॥
झूठ बचन इन मुझै उचारा ॥
खेलि अखेट भूप ग्रिह आयो ॥
तिसी बिरछ तर करी लखायो ॥१९॥
अड़िल ॥
पकरि भुजा गज पर पिय लयो चड़ाइ कै ॥
भोग अंबारी बीच करे सुख पाइ कै ॥
लपटि लपटि दोऊ केल करत मुसकाइ करि ॥
हो हमरौ भूपति भेद न सकियो पाइ करि ॥२०॥

दोहरा ॥

पहिले रूख चड़ाइ तिह लै आई फिरि धाम ॥
उलटा तिह झूठा किया भेद दिया जिह बाम ॥२१॥

CHARITAR ३७४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चुहतर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥374॥6781॥अफजूं॥*

चौपई ॥

इसक तंबोल सहिर है जहा ॥
इसक तंबोल नराधिप तहा ॥
स्री सिंगार मती तिह दारा ॥
जा सी घड़ी न ब्रहमु सु नारा ॥१॥
अड़िल ॥
स्री जग जोबन दे तिह सुता बखानियै ॥
दुतिय रूप की रास जगत महि जानियै ॥
अधिक प्रभा जल थल महि जा की जानियत ॥
हो नरी नागनी नारि न वैसी मानियत ॥२॥

दोहरा ॥

तह इक पूत सराफ को ता को रूप अपार ॥
जोरि नैनि नारी रहै जानि न ग्रिह बिसंभार ॥३॥

चौपई ॥

राज सुता ता की छबि लही ॥
मन बच क्रम मन मै अस कही ॥
एक बार गहि याहि मंगाऊ ॥
काम भोग रुचि मान मचाऊ ॥४॥
पठै सहचरी दई तहा इक ॥
ताहि बात समुझाइ अनिक निक ॥
अमित दरब दै ताहि भुलाई ॥
जिह तिह भाति कुअरि कौ लिआई ॥५॥
भाति भाति के करत बिलासा ॥
मानत किसी न नर को त्रासा ॥
तब लग आइ पिता तह गयो ॥
अधिक बिमन ता को मन भयो ॥६॥
अवर घात तब हाथ न आई ॥
एक बात तब ताहि बनाई ॥
बीच सम्रयाना के तिह सीआ ॥
ऐचित नाव ठाढ कर दीआ ॥७॥
उपर अवर सम्रयाना डारा ॥
वा को जाइ न अंग निहारा ॥
आगे जाइ पिता चलि लीना ॥
जोरि प्रनाम दोऊ कर दीना ॥८॥
अड़िल ॥
तिस सम्रयाना के तर पितु बैठाइयो ॥
एक एक करि ता कौ पुहप दिखाइयो ॥
भूप बिदा ह्वै जबै आपुने ग्रिह अयो ॥
हो काढि तहा ते मित्र सेज ऊपर लयो ॥९॥

दोहरा ॥

इह छल सौ राजा छला सका भेद नहि पाइ ॥
दुहिता के ग्रिह जाइ सिर आयो कोर मुंडाइ ॥१०॥

CHARITAR ३७५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पंझतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥375॥6791॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

सुन राजा इक और कहानी ॥
किनहूं लखी न किनहूं जानी ॥
सहिर हैदराबाद बसत जह ॥
स्री हरिजछ केतु राजा तह ॥१॥
ग्रिह मदमत मती तिह नारी ॥
स्री प्रबीन दे धाम दुलारी ॥
अपमान दुति जात न कही ॥
जानुक फूल चंबेली रही ॥२॥
निहचल सिंघ तहा इक छत्री ॥
सूरबीर बलवान तिअत्री ॥
तिह प्रबीन दे नैन निहारा ॥
मदन क्रिपान घाइ जनु मारा ॥३॥
पठै सहचरी लिया बुलाइ ॥
भोग किया रुचि दुहूं बढाइ ॥
भाति भाति तन चुंबन करै ॥
बिबिध प्रकार आसनन धरै ॥४॥
तब तह आइ गयो पितु वा को ॥
भोगत हुतो जहा पिय ता को ॥
चमकि चरित्र चंचला कीना ॥
परदन बीच लपटि तिह लीना ॥५॥

दोहरा ॥

परदन बीच लपेटि तिह दिया धाम पहुचाइ ॥
मुख बाए राजा रहा सका चरित्र न पाइ ॥६॥

CHARITAR ३७६ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छिहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥376॥6797॥अफज़ूं॥

चौपई ॥

नवतन सुनहु नराधिप कथा ॥
किया चरित्र चंचला जथा ॥
त्रिंबक महा रुद्र है जहा ॥
त्रिंबक दत नराधप तहा ॥१॥
त्रिबंक पुर ता को बहु सोहै ॥
इंद्र चंद्र लोक कह मोहै ॥
स्री रसरीति मती तिह नारी ॥
कंचन अवटि साचे जनु ढारी ॥२॥
स्री सुहास दे ता की कंन्या ॥
जिह सम उपजी नारि न अंन्रया ॥
एक चतुरि अरु सुंदरि घनी ॥
जिह समान कोई नहि बनी ॥३॥
इक दिन कुअरि बाग को चली ॥
बीस पचास लए संग अली ॥

जात हुती मारग के माही ॥
सुंदर निरखा एक तहा ही ॥४॥
सेर सिंघ तिह नाम बिराजत ॥
जाहि निरखि रति को मन लाजत ॥
कह लगि तिह छबि भाखि सुनाऊ ॥
प्रभा केर सुभ ग्रंथ बनाऊ ॥५॥
अड़िल ॥
राज सुता जब ते तिह गई निहारि करि ॥
रही मत ह्वै मन इह बात बिचारि करि ॥
कोटि जतन करि करि करि याहि बुलाइयै ॥
हो काम केल करि या सौ हरख कमाइयै ॥६॥

चौपई ॥

सखी एक तह दई पठाइ ॥
जिह तिह बिधि तिह लयो बुलाइ ॥
पड़ि पड़ि दोहा छंद बिहारहि ॥
सकल मदन को ताप निवारहि ॥७॥
आवत नैन निरखि करि राजा ॥
इह बिधि चरित चंचला साजा ॥
रोम नास तिह बदन लगायो ॥
नारि भेस ता कह पहिरायो ॥८॥
झारू एक हाथ तिह लियो ॥
दूजे हाथ टोकरा दियो ॥
मुहरन और रुपैयन भरो ॥
ताहि चंडारी भाखिनि करो ॥९॥
न्रिप आगे करि ताहि निकारियो ॥
मूड़ भूप नहि भेद बिचारियो ॥
काढि खड़ग तिह हनत न भयो ॥
जानि चंडार ताहि न्रिप गयो ॥१०॥
जिन इह मोर अंग छुहि जाइ ॥
मुझै करै अपवित्र बनाइ ॥
ताहि पछानि पकरि नहि लयो ॥
लै मुहरै सुंदर घर गयो ॥११॥

CHARITAR ३७७ — *SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सततर चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥377॥6808॥अफजूं॥

चौपई ॥

भूप त्रिहाटक सैन भनिजै ॥
नगर तिहाड़ो जाहि कहिजै ॥
जाहि त्रिहाटक पुरी बखानै ॥
दानव देव जछ सभ जानै ॥१॥
स्री महबूब मती तिह नारी ॥
जिह सम सुंदरि कहूं न कुमारी ॥
दुतिय नारि म्रिदुहास मती तिह ॥
नहि ससि सम कहियत आनन जिह ॥२॥
स्री महबूब मती तन न्रिप रति ॥

दुतिय नारि पर नहि आनन मति ॥
अधिक भोग तिह साथ कमायो ॥
एक पुत्र ता ते उपजायो ॥३॥
दुतिय नारि ते साथ न प्रीता ॥
ताहि न बीच ल्यावत चीता ॥
सुतवंती इक पुनि पति प्रीत ॥
अवर त्रियहि ल्यावत नहि चीत ॥४॥
दुतिय नारि तब अधिक रिसाई ॥
एक घात की बात बनाई ॥
सिस की गुदा गोखरू दिया ॥
ता ते अधिक दुखित तिह किया ॥५॥
बालक अधिक दुखातुर भयो ॥
रोवत धाम मात के गयो ॥
निरखि तात माता दुख पायो ॥
भली भली धायान मंगायो ॥६॥
इह चरित्र बालहि दुख दियो ॥
आपन भेस धाइ को कियो ॥
किया सवति के धाम पयाना ॥
भेद नारि किनहूं न पछाना ॥७॥
औखध एक हाथ मै लई ॥
सिसु की प्रथम मात कौ दई ॥
बरी खात रानी मरि गई ॥
स्वच्छ सुघरि रानी फिरि अई ॥८॥
निजु ग्रिह आइ भेस न्रिप त्रिय धरि ॥
जाति भई अपनी सवितन घर ॥
सिसु को काढि गोखरू डारो ॥
ताहि सुघरि तिह सुत करि पारो ॥९॥
इह छल सो सवतिन कह मारा ॥
सिसहु जानि सुत लियो उबारा ॥
न्रिपह संग पुनि करि लिय प्यारा ॥
भेद अभेद न किनूं बिचारा ॥१०॥

CHARITAR ३७८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठहतरि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥378॥6818॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुन राजा इक और प्रसंगा ॥
जिह बिधि भयो नरेसुर संगा ॥
म्रिदुला दे तिह नारि भनिजै ॥
इंद्र चंद्र पटतर तिह दिजै ॥१॥
अड़िल ॥
स्री सुप्रभा दे ता की सुता बखानियै ॥
महा सुंदरी लोक चतुरदस जानियै ॥
जो सहचरि ता कौ भरि नैन निहारही ॥
हो परी पदुमनी प्रकित सु वाहि बिचारही ॥२॥

चौपई ॥

हाटकपुर तिन को दिसि दछिन ॥
राज करत ते तहा बिचछन ॥
तिह पुर एक साह को पुत्र ॥
जनु करि बिधना ठटा चरित्र ॥३॥
ब्रयाघ्र केतु तिह नाम कहिजै ॥
छत्र जाति रघुबंस भनिजै ॥
प्रगट जानु अवतार अनंगा ॥
ऐसो साह पुत्र को अंगा ॥४॥
लागी लगन तवन पर बाला ॥
सखी पठी इक तहा रिसाला ॥
सो चलि गई कुअर के धामा ॥
जिमि तिमि ताहि प्रबोध्रयो बामा ॥५॥
जात भई ता कह लै तहा ॥
मारग कुअरि बिलोकत जहा ॥
निरखत नैन गरे लपटाई ॥
सेजासन पर लियो चड़ाई ॥६॥
बहु बिधि करी तवन सौ क्रीड़ा ॥
कामनि काम निवारी पीड़ा ॥
निसु दिन धाम बाम तिह राखा ॥
मात पिता तन भेद न भाखा ॥७॥
तब लौ ब्याहि दयो तिह तातै ॥
भूलि गई वा कौ वै बातै ॥
निजु प्यारे बिन रहियो न गयो ॥
घालि संदूकहि साथ चलयो ॥८॥
निसु दिन ता सौ भोग कमावै ॥
सोवत रहै न भूपति पावै ॥
एक दिवस जब ही न्रिप जागा ॥
रनियहि छोरि जार उठि भागा ॥९॥
त्रिय सौ बचन कोप करि भाखियो ॥
तै लै जार धाम किमि राखियो ॥
कै अब ही मुहि बात बतावौ ॥
कै प्रानन की आस चुकावौ ॥१०॥
बात सत्य जानी जिय रानी ॥
मुझै न न्रिप छाडत अभिमानी ॥
भाग घोटना हाथ संभारा ॥
फोरि नराधिप के सिर डारा ॥११॥
बहुरि सभन इह भाति सुनाई ॥
प्रजा लोग जब लए बुलाई ॥
मद करि भूप भयो मतवारा ॥
पहिल पुत्र को नाम उचारा ॥१२॥
म्रितक पुत्र को नामहि लयो ॥
ता ते अधिक दुखातुर भयो ॥
सोक ताप को अधिक बिचारा ॥
मूंड फोरि भीतन सौ डारा ॥१३॥

दोहरा ॥

इह छल निजु नायक हना लीना मित्र बचाइ ॥
बहुरि भोग ता सौ करो को न सका छल पाइ ॥१४॥

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ उनासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥379॥6832॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

एक चरित्र सैन राजा बर ॥
नारि चरित्र मती ता के घर ॥
वती चरित्रा ता की नगरी ॥
तिहूं भवन के बीच उजगरी ॥१॥
गोपी राइ साह सुत इक तह ॥
जिह सम सुंदर दुतिय न जग मह ॥
तिह चरित्र दे नैन निहारियो ॥
अंग अंग तिह मदन प्रजारियो ॥२॥
जिह तिह बिधि तिह लयो बुलाइ ॥
उठत लयो छतिया सौ लाइ ॥
काम केल कीनो रुचि ठानी ॥
केल करत सभ रैनि बिहानी ॥३॥
पोसत भाग अफीम मंगाई ॥
एक सेज चड़ि दुहूं चड़ाई ॥
भाति अनिक तन किये बिलासा ॥
मात पिता को मन न त्रासा ॥४॥
तब लगि आइ गयो ता कौ पति ॥
डारि दयो सेजा तर उप पति ॥
दुपटा डारि दयो तिह मुख पर ॥
जान्यो जाइ न ता ते त्रिय नर ॥५॥
सोवत कवन सेज पर तोरी ॥
भाखी नाथ मात है मोरी ॥
हम पहि तो नहि जात जगाई ॥
तुमै कहत हौ बाधि ढिठाई ॥६॥
द्वैक घरी तुम अनत सिधावहु ॥
इह उठि गए बहुरि ह्यां आवहु ॥
जब जागै ते अधिक रिसैहै ॥
हम तुम लखि इकत्र चुप ह्वैहै ॥७॥
तिनि इह बात सत्य करि मानी ॥
जात भयो उठि क्रिया न जानी ॥
जब उठि मात गई लखि लैयहु ॥
तब हम कौ तुम बहुरि बुलैयहु ॥८॥
इमि कहि बात जात जड़ भयो ॥
ताहि चड़ाइ खाट पर लयो ॥
भाति अनिक तन करै बिलासा ॥
आवत भयो तिह पिता निवासा ॥९॥
तिसी भाति तन ताहि सुवायो ॥
तात भए इह भाति जतायो ॥
सुनहु पिता इह नारि तिहारी ॥
तुम से छपी लाज की मारी ॥१०॥
सुनत बचन न्रिप धाम सिधाना ॥
भेद अभेद कछू न पछाना ॥
ता कौ काढि सेज पर लीना ॥
ता की मात गवन तह कीना ॥११॥

वैसहि ता कह दिया सुवाइ ॥
कही मात सै बात बनाइ ॥
सुनहु मात जामात तिहारो ॥
मो को अधिक प्रान ते प्यारो ॥१२॥
या को नैन नीद दुख दियो ॥
ता ते सैन स्रमित ह्वै कियो ॥
मै या को नहि सकत जगाई ॥
अब ही सोइ गयो सुखदाई ॥१३॥
सुनि बच मात जात भी उठ घर ॥
लयो सेज पर त्रिय पिय भुज भर ॥
भाति भाति तन भोग कमाए ॥
बहुरि धाम कौ ताहि पठाए ॥१४॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तिह चंचलाम पियहि दयो पहुचाइ ॥
भेद अभेद त्रियान के सकियो न कोई पाइ ॥१५॥

CHARITAR ३८० — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ असी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥380॥6847॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनहु राव इक कथा स्रवन धरि ॥
जिह बिध किया चरित्र त्रिया बर ॥
पीर एक मुलतान भनिजै ॥
रूपवंत तिह अधिक कहिजै ॥१॥
रोसन कदर तवन को नामा ॥
थकित रहित जिह निरखत बामा ॥
जो निरखति तिय पतिहि निहारै ॥
ता कौ ऐंच जूतयन मारै ॥२॥
अड़िल ॥
एक नार तिह पति को रूप निहारि बर ॥
रही मुबतला ह्वै इमि चरित बिचारि करि ॥
इह निरखे बिनु चैन न मो कौ पल परै ॥
हो जौ निरखत हौ ताहि तु रारहि त्रिय करै ॥३॥

चौपई ॥

तिसी त्रिया के धाम सिधाई ॥
बहुतक भेट असरफी ल्याई ॥
जेवर दीने जरे जराइन ॥
जिन को सकत अंत कोई पाइन ॥४॥
सु सभ दई तिह साथि कहा इमि ॥
साथ खादिमा बानो के तिमि ॥
एकहि आस ह्यां मै आई ॥
सु मै कहत हौ तुमै सुनाई ॥५॥
ग्रिह अपने ही मदरो च्वाइ ॥
खाना अनिक भाति के ल्याइ ॥
निजु हाथन लै दुहूं पयाऊ ॥

भेट चड़ाइ घरहि उठि जाऊ ॥६॥
सोई मद लै तहा सिधाई ॥
सात बार बहु भाति चुआई ॥
निजु हाथन लै दुहूं पियायो ॥
अधिक मत करि सेज सुआयो ॥७॥
सोई लखी पीर त्रिय जब ही ॥
नैन सैन दै तिह प्रति तब ही ॥
ता के धरि छतिया परु चूत्रन ॥
काम भोग कीना तिह पति तन ॥८॥
सोवत रही चड़े मद नारी ॥
भेद अभेद की गति न बिचारी ॥
चीठी एक लिखी निज अंगा ॥
बाधि गई ता के सिर संगा ॥९॥
जो त्रिय ख्याल त्रियन के परि है ॥
ता की बिधि ऐसी गति करि है ॥
ता ते तुम त्रिय ऐस न कीजै ॥
बुरो सुभाइ सकल तजि दीजै ॥१०॥

दोहरा ॥

केस पास ते छोरि कै बाचत पतिया अंग ॥
ता दिन ते त्रिय तजि दिया बाद त्रियन के संग ॥११॥

CHARITAR ३८१ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इकआसी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥381॥6858॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बिसन धुजा इक भूप सुलछन ॥
बिसनपुरी जा की दिसि दछिन ॥
स्री मनि नील मती तिह रानी ॥
सुंदरि सकल भवन मौ जानी ॥१॥
अछली राइ एक तह छत्री ॥
सूरबीर बलवान निछत्री ॥
बदन प्रभा तिह जात न भाखी ॥
जनु मुख चीर चाद की राखी ॥२॥
त्रिय की प्रीति तवन सौ लागी ॥
जा ते नीद भूखि सभ भागी ॥
जिय ते न्रिप रोगी ठहरायो ॥
ऊच नीच सभहीन सुनायो ॥३॥
खींध एक राजा पर धरी ॥
उर पर राखि लोन की डरी ॥
अगनि साथ तिह अधिक तपाई ॥
जो कर साथ छुई नहि जाई ॥४॥
चारो ओर दाबि अस लिया ॥
मुख ते ताहि न बोलन दिया ॥
तब ही तजा गए जब प्राना ॥
भेद पुरख दूसरे न जाना ॥५॥

CHARITAR ३८२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बिआसी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥382॥6863॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुनहु चरित इक अवर नरेसा ॥
न्रिप इक झारखंड के देसा ॥
कोकिल सैन तवन को नामा ॥
मती कोकिला वा की बामा ॥१॥
बदली राम साह सुत इक तह ॥
जिह सम सुंदर कहूं न जग मह ॥
द्रिग भरि ताहि बिलोका जब ही ॥
रानी भई काम बसि तब ही ॥२॥
काम भोग तिह साथ कमावै ॥
मूड़ नारि नहि ह्रिदै लजावै ॥
जब राजै इह बात पछानी ॥
चित महि धरी न प्रगट बखानी ॥३॥
आधी रैनि होत भी जब ही ॥
राजा दुरा खाट तर तब ही ॥
रानी भेद न वा को पायो ॥
बोलि जार कौ निकट बुलायो ॥४॥
रुचि भरि भोग तवन सौ करा ॥
खाट तरे राजा लहि परा ॥
अधिक नारि मन महि डर पाई ॥
करौ दैव अब कवन उपाई ॥५॥
सुनु मूरख तै बात न पावै ॥
न्रिप नारी कह हाथ लगावै ॥
सुंदरि सुघरि जैसे मुर राजा ॥
तैसो दुतिय न बिधना साजा ॥६॥
अड़िल ॥
जो पर नर कह पिय बिनु नारि निहारई ॥
महा नरक महि ताहि बिधाता डारई ॥
निजु पति सुंदर छाडि न तुमहि निहारिहौ ॥
हो निजु कुल की तजि कानि न धरमहि टारिहौ ॥७॥

चौपई ॥

जैसो अति सुंदर मेरो बर ॥
तुहि वारौ वा के इक पग पर ॥
तिह तजि तुहि कैसे हूं न भजि हों ॥
लोक लाज कुल कानि न तजि हों ॥८॥
सुनत बचन मूरख हरखान्यो ॥
पतीब्रता नारी कह जान्यो ॥
सिर पर धरि पलका पर नचा ॥
इह बिधि जारि नारि जुत बचा ॥९॥

CHARITAR ३८३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तिरासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥383॥6872॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सदा सिंघ इक भूप महा मनि ॥
सदापुरी जा की पछिम भनि ॥
स्री सुलंक दे ता की नारी ॥
जनुक चंद्र ते चीरि निकारी ॥१॥
तह इक होत साह धनवाना ॥
निरधन करि डारियो भगवाना ॥
अधिक चतुरि ता की इक नारी ॥
तिन ता सौ इह भाति उचारी ॥२॥
करि हौ बहुरि तुमै धनवंता ॥
क्रिपा करै जो स्री भगवंता ॥
आपन भेस पुरख को धारो ॥
राज बाट पर हाट उसारो ॥३॥
एकन दरब उधारो दियो ॥
एकन ते राखन हित लियो ॥
अधिक आपनी पतिहि चलायो ॥
जह तह सकल धनिन सुनि पायो ॥४॥
सोफी सूम साह इक तहा ॥
जा के घर सुनियत धन महा ॥
सुत त्रिय को नहि करत बिस्वासा ॥
राखत दरब आपने पासा ॥५॥
साह सुई तिह नारि तकायो ॥
अधिक प्रीत करि ताहि बुलायो ॥
त्रिय सुत माल कहा तव खै है ॥
एक दाम फिरि तुमै न दै है ॥६॥
साह माल कहूं अनत रखाइ ॥
सरखत ता ते लेहु लिखाइ ॥
मात पूत कोई भेद न पावै ॥
तुम ही चहहु तबै धन आवै ॥७॥
बचन बहुरि तिन साह बखानो ॥
तुम ते और भलो नहि जानो ॥
मेरो सकल दरबु तै लेहि ॥
सरखत गुपत मुझै लिखि देहि ॥८॥
बीस लाख ता ते धन लिया ॥
सरखत एक ताहि लिखि दिया ॥
बाजू बंद बीच इह रखियहु ॥
अवर पुरख सौ भेव न भखियहु ॥९॥
दै धन साह जबै घर गयो ॥
भेख मजूरन को तिन लयो ॥
धाम तिसी के किया पयाना ॥
भेद अभेद तिन मूड़ न जाना ॥१०॥
कही कि एक टूक मुहि देहु ॥
पान भराइस गरदनि लेहु ॥
खरच जानि थोरो तिन करो ॥
भेद अभेद नहि नैकु बिचरो ॥११॥
जब ही घात नारि तिन पाई ॥
बाजू बंद लयो सरकाई ॥
अपनी कबज काढि करि लई ॥
सत की डारि तवन मै गई ॥१२॥

कितक दिनन कहि देह रुपइया ॥
पठै दयो इक ताहि मनइया ॥
एक हजार तहा तो ल्यावहु ॥
आनि बनिज को काज चलावहु ॥१३॥
तिनक हजार न ता कौ दिया ॥
जिय मै कोप साह तब किया ॥
बाधि लै गयो ता कह तहा ॥
काजी कोटवार थो जहा ॥१४॥
मो ते बीस लाख इन लिया ॥
अब इन मुझै हजार न दिया ॥
कही सभो सरखत तिह हेरो ॥
इन को अब ही न्याइ निबेरो ॥१५॥
छोरि सरखतहि सभन निहारो ॥
रुपया सौ इक तहा बिचारो ॥
साचा ते झूठा तिह किया ॥
सभ धनु हरो काढि तिह दिया ॥१६॥
बहुरि बचन तिन नारि उचारे ॥
मै न रहत हौ गाव तिहारे ॥
यौ कहि जात तहा ते भई ॥
सोफी यहि कूटि भंगेरी गई ॥१७॥

दोहरा ॥

निरधन ते धनवंत भी करि तिह धन की हानि ॥
सोफी कह अमलिन छरा देखत सकल जहान ॥१८॥

CHARITAR ३८४ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चउरासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥384॥6890॥अफजूं॥*

चौपई ॥

चित्र केतु राजा इक पूरब ॥
जिह बचित्र रथ पुत्र अपूरब ॥
चित्रापुर नगर तिह सोहै ॥
जिह ढिग देव दैत पुर को है ॥१॥
स्री कटि उतिम दे तिह नारी ॥
सूरज वत तिह धाम दुलारी ॥
जिह सम सुंदरि नारि न कोई ॥
आगे भई न पाछे होई ॥२॥
बानी राइ तहा इक साहा ॥
जिह मुखु सम सुंदरि नहि माहा ॥
स्री गुलजार राइ सुत ता के ॥
देव दैत कोइ तुलि न वा के ॥३॥
राज सुता ता को लखि रूपा ॥
मोहि रही मन माहि अनूपा ॥
एक सहचरी तहा पठाई ॥
जिह तिह भाति तहा लै आई ॥४॥
मिलत कुअरि ता सौ सुखु पायो ॥
भाति भाति मिलि भोग कमायो ॥

चुंबन भाति भाति के लीए ॥
भाति अनिक के आसन कीए ॥५॥
तब लगि मात पिता तह आयो ॥
निरखि सुता चित मै दुख पायो ॥
किह छल सौ इह दुहूं संघारो ॥
छत्र जार के सिर पर ढारो ॥६॥
दुहूंअन के फासी गरु डारी ॥
पिता सहित माता हनि डारी ॥
फास कंठ ते लई नकारी ॥
बोलि लोग सभ ऐस उचारी ॥७॥
इन दुहूं जोग साधना साधी ॥
न्रिप रानी जुत पवन अराधी ॥
बारह बरिस बीत है जब ही ॥
जगि है छाडि तारियहि तब ही ॥८॥
तब लगि तात दिया मुहि राजा ॥
राज साज का सकल समाजा ॥
तब लगि ता को राज कमै हो ॥
जब जग है ता कौ तब दै हो ॥९॥
इह छल तात मात कह घाई ॥
लोगन सौ इह भाति जनाई ॥
जब अपनो द्रिड़ राज पकायो ॥
छत्र मित्र के सीस फिरायो ॥१०॥

दोहरा ॥

तात मात इह भाति हनि दियो मित्र कौ राज ॥
सकत न कोई पछानि करि चंचलान के काज ॥११॥

CHARITAR ३८५ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पचासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥385॥6901॥अफजूं॥*

चौपई ॥

बीर केतु इक भूप भनिजै ॥
बीरपुरी तिह नगर कहिजै ॥
स्री दिन दीपक दे तिह रानी ॥
सुंदरि भवन चतुरदस जानी ॥१॥
राइ गुमानी तह इक छत्री ॥
सूरबीर बलवान धरत्री ॥
इक सुंदर अर चतुरा महा ॥
जिह सम उपजा कोई न कहा ॥२॥
राज तरुनि जब ताहि निहारियो ॥
इहै चंचला चित बिचारियो ॥
कहो चरित्र कवन सो कीजै ॥
जिह बिधि पिय सौ भोग करीजै ॥३॥
बीर मती इक सखी स्यानी ॥
कानि लागि भाख्यो तिह रानी ॥
राइ गुमानी कौ लै कै आइ ॥
जिह तिह बिधि मुहि देहु मिलाइ ॥४॥

सखी ब्रिथा सभ भाखि सुनाई ॥
ज्यों रानी कहि ताहि सुनाई ॥
जिह तिह बिधि ता कह उरझाई ॥
आनि कुअर कौ दयो मिलाई ॥५ ॥
भाति भाति तिह साथ बिहारी ॥
भोग करत बीती निसु सारी ॥
तब लगि आइ गयो तह राजा ॥
इह बिधि चरित चंचला साजा ॥६ ॥
तीछन खड्ग हाथ महि लयो ॥
लै मितहि के सिर महि दयो ॥
टूक टूक करि ता के अंगा ॥
बचन कहा राजा के संगा ॥७ ॥
चलो भूप इक चरित दिखाऊ ॥
गौस मरातिब तुमै लखाऊ ॥
राइ चरित कछहूं न बिचारियो ॥
म्रितक परा तिह मित्र निहारियो ॥८ ॥
ता कौ गौस कुतुब करि माना ॥
भेद अभेद न मूड़ पछाना ॥
त्रसत हाथ ता कौ न लगायो ॥
पीर पछानि जार फिर आयो ॥९ ॥

दोहरा ॥

प्रथम भोग ता सौ किया बहुरो दिया संघारि ॥
मूड़ भूप इह छल छला सका न भेद बिचार ॥१० ॥

CHARITAR ३८६ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छिआसी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥386॥6911॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

मारवार इक भूप भनिजै ॥
चंद्र सैन तिह नाम कहिजै ॥
स्री जग मोहन दे तिह नारि ॥
घड़ी आपु जनु ब्रहम सु नार ॥१ ॥
चंद्रवती इह पुरी बिराजै ॥
नाग लोक जा कौ लखि लाजै ॥
होड परी इक दिन तिन माह ॥
बचन कहा त्रिय सौ लर नाह ॥२ ॥
ऐसी कवन जगत मै नारी ॥
कान न सुनी न नैन निहारी ॥
पतिहि ढोल की ढमक सुनावै ॥
बहुरि जार सौ भोग कमावै ॥३ ॥
केतक दिन बीतत जब भए ॥
तिय कौ बच सिमरन ह्वै गए ॥
अस चरित्र करि पतिहि दिखाऊं ॥
भजौ जार अर ढोल बजाऊं ॥४ ॥
तब ते इहै टेव तिन डारी ॥
औरन त्रिय सौ प्रगट उचारी ॥

मै धरि सीस पानि को साजा ॥
भरि ल्यैहौ जल न्रिप के काजा ॥५॥
बचन सुनत राजा हरखानो ॥
ता कौ अति पतिब्रता जानो ॥
निजु सिर कै रानी घट ल्यावै ॥
आनि पानि पुनि मुझै पिलावै ॥६॥
इक दिन त्रिय पिय सोत जगाई ॥
लै घट कौ कर चली बनाई ॥
जब तुम ढोल ढमक सुनि लीजो ॥
तब इमि काज राज तुम कीजो ॥७॥
प्रथम सुन्यो सभ ढोल बजायो ॥
जनियहु रानी डोल धसायो ॥
दुतिय ढमाक सुनो जब गाढा ॥
जनियहु तरुनि कूप ते काढा ॥८॥
तहिक लहौरी राइ भनिजै ॥
जा संग त्रिय को हेतु कहिजै ॥
लयो तिसी को तुरत मंगाइ ॥
भोग किया अति रुचि उपजाइ ॥९॥
प्रथम जार जब धका लगायो ॥
तब रानी लै ढोल बजायो ॥
जब तिह लिंग सु भग ते काढा ॥
त्रिय दिय ढोल ढमाका गाढा ॥१०॥
तब राजै इह भाति बिचारी ॥
डोरि कूप ते नारि निकारी ॥
तिन त्रिय भोग जार सौ कीना ॥
राजा सुनत दमामो दीना ॥११॥
प्रथम जार सौ भोग कमायो ॥
बहुरो ढोल ढमाक सुनायो ॥
भूप क्रिया कबहूं न बिचारी ॥
कहा चरित्र किया इम नारी ॥१२॥

CHARITAR ३८७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सतासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥387॥6923॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सिंघ नरिंदर भूप इक न्रिप बर ॥
न्रिपबरवती नगर जा को घर ॥
स्री मद मोकल दे तिह नारी ॥
बिधि सु नार साचे जनु ढारी ॥१॥
देह कुरूप भूप कौ भारा ॥
निजु त्रिय साथ न राखत प्यारा ॥
रैनि दिवस जोगियन बुलावै ॥
जोग साधना चहै कि आवै ॥२॥
या ते नारि अधिक रिसि ठानी ॥
सुनत जोगियन की असि बानी ॥
ऐसा कछू उपाइ बनाऊ ॥
भूपति सहित अजु इन घाऊ ॥३॥
देउं आपनो मित्रहि राजा ॥

जोगी हनौ भूप जुत आजा ॥
सकल प्रजहि इन मारि दिखाऊं ॥
मित्र सीस पर छत्र फिराऊं ॥४॥
जब राजा निस कौ ग्रिह आयो ॥
बहुरि जोगियन बोलि पठायो ॥
तिमि तिमि नारि फास गर डारि ॥
भूप सहित सभ दए संघार ॥५॥
भूपति मारि खाट तर पायो ॥
दुहूं अतीतन तरे डसायो ॥
सिंघासन पर मित्रहि राखा ॥
बोलि प्रजा सभ सो इमि भाखा ॥६॥
जब राजा निसु कौ ग्रिह आयो ॥
दुहूं जोगियन निकट बुलायो ॥
अतभुत नागा तहा इक निकसा ॥
रावल हेरि तवन कौ बिगसा ॥७॥
सापहि मारि तबै तिन लियो ॥
फरूआ बीच डारि करि दियो ॥
घोटि भाग जिमि दुहूंअन पीयो ॥
अति असथूल देह कह कीयो ॥८॥
ता ते अधिक फूलि जब गए ॥
कुंजर सो धारत बपु भए ॥
द्वै घटिका बीती तब फूटे ॥
आवन जान जगत ते छूटे ॥९॥
बरख बारहन के ह्वै गए ॥
त्यागत देह पुरातन भए ॥
स्वरग लोक कह किया पयान ॥
त्यागि आपुनी देह पुरानि ॥१०॥
भूप निरखि चक्रित चित रहा ॥
मुहि सेती ऐसी बिधि कहा ॥
हम तुम आव साप दोऊ खाहि ॥
देह धरे सुरपुर को जाहि ॥११॥
यौ कहि कै न्रिप साप चबायो ॥
मै डरते नहि ताहि हटायो ॥
थोरा भख्यो उडा नहि गयो ॥
ता ते तन सुंदर इह भयो ॥१२॥
देह पुरातन त्यागन करी ॥
औखध बल नौतन तन धरी ॥
देह भूप की ठौर जरावहु ॥
या के सिर पर छत्र फिरावहु ॥१३॥
इह छल साथ जोगियन घायो ॥
भूपति को सुर लोक पठायो ॥
सकल प्रजा को लोथि दिखाई ॥
देस मित्र की फेरि दुहाई ॥१४॥
भेव प्रजा किनहूं न पछाना ॥
किह बिधि हना हमारा राना ॥
किह छल सो जुगियन को घायो ॥
मित्र सीस पर छत्र फिरायो ॥१५॥

दोहरा ॥

गरबी राइ सु मित्र को दिया आपना राज ॥

जोगन जुत राजा हना किया आपना काज ॥१६ ॥

CHARITAR ३८८ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठासी चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥388॥6939॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

भूप सुबाहु सैन इक सुना ॥
रूपवान सुंदरि बहु गुना ॥
स्री सुबाहपुर ता को सोहै ॥
जिह सम और नगर नहि को है ॥१॥
स्री मकरधुज दे तिह रानी ॥
सुंदरि देस देस मौ जानी ॥
तिह समान नारी नहि कोऊ ॥
पाछे भई न आगै होऊ ॥२॥
तिन देखा दिली को एसा ॥
इह बिधि ते लिखि पठियो संदेसा ॥
तुम इह ठौर आपु चड़ि आवहु ॥
भूपति जीति मुझै लै जावहु ॥३॥
अकबर सुनत बैन उठि धयो ॥
पवन हुते आगे बढि गयो ॥
साह सुना आयो न्रिपु जब ही ॥
पति सौ बचन बखाना तब ही ॥४॥
तुम ह्यां ते न्रिप भाजि न जैयहु ॥
रन सामुहि ह्वै जुध मचैयहु ॥
मै न तजौगी तुमरा साथा ॥
मरे जरोगी तुम सौ नाथा ॥५॥
इत भूपति कह धीर बंधायो ॥
उतै लिखा लिखि तहा पठायो ॥
आई सैन साह की जब ही ॥
रहा उपाइ कछू नहि तब ही ॥६॥
राजा जूझि मरत भयो जबै ॥
भाज चलत भी परजा तबै ॥
रानी बाधि तबै तिन लई ॥
इह छल धाम मित्र के गई ॥७॥

CHARITAR ३८९ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ निनानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥389॥6946॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

बाहुलीक सुनियत राजा जह ॥
जिह समान कोई भयो दुतिय नह ॥
धाम गौहरा राइ दुलारी ॥
जिह समान नहि देव कुमारी ॥१॥
तह इक हुता साह का बेटा ॥
जिह समान को भयो न भेटा ॥
एक सुघर अरु सुंदर घनो ॥

जनु अवतार मदन को बनो ॥२॥
भूप सुता तिह निरखि लुभाई ॥
गिरी भूमि जनु नाग चबाई ॥
सखी एक तिह तीर पठाई ॥
गाजि राइ कह लिया बुलाई ॥३॥
जब तिह लखा सजन घर आयो ॥
कंठ गौहरा राइ लगायो ॥
बहु बिधि करे तवन सौ भोगा ॥
दूरि करा जिय का सभ सोगा ॥४॥
भोग करत भायो अति प्यारो ॥
छिन न करत आपन ते न्यारो ॥
भाति भाति की कैफ पिलावै ॥
सुभ्र सेज चड़ि भोग कमावै ॥५॥
तब तह तात तवन का आयो ॥
त्रसत देग महि ताहि छपायो ॥
रौजन मूंदि हौज महि धरा ॥
एक बूंद जल बीच न परा ॥६॥
पितहि ताल ततकाल दिखायो ॥
बीच बेरीयन डारि फिरायो ॥
दीए जराइ बीच तिह डारे ॥
जनु करि चड़े रैनि के तारे ॥७॥
पितहि अचंभव ऐस दिखायो ॥
समाधान करि धाम पठायो ॥
मित्रहि काढ सेज पर लीना ॥
काम भोग बहु बिधि तन कीना ॥८॥

CHARITAR ३९० — *SAMAPAT*

◄ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ नबे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥390॥6954॥अफजूं॥

चौपई ॥

बरबरीन को देस बसत जह ॥
बरबर पुर इक नगर हुतो तह ॥
अफकन सेर तहा का राजा ॥
जिह समान बिधि दुतिय न साजा ॥१॥
पीर मुहंमद तह इक काजी ॥
देह कुरूप नाथ जिह साजी ॥
धाम खातिमा बानो नारी ॥
जिह समान नहि राज दुलारी ॥२॥
सोरठा ॥
सुंदर ता की नारि अति कुरूप काजी रहै ॥
तब तिन किया बिचारि किह बिधि बध या कौ करो ॥३॥

चौपई ॥

साह पुत्र तिह पुर इक आयो ॥
बाके राइ सरूप सवायो ॥
काजी की इसत्री तिह लहा ॥
बरौ इसी कह चित यौ कहा ॥४॥

मुसलमान बहु धाम बुलावत ॥
भाति भाति तन दरब लुटावत ॥
यौ कहि सभहूं सीस झुकावै ॥
यह काजी सुंदर ह्वै जावै ॥५॥
एक दिवस उप पतिहि बुलाई ॥
कान लागि सभ बात सिखाई ॥
बीच छपाइ सदन के राखा ॥
और नारि सौ भेव न भाखा ॥६॥
सभ मलेछ उठि फजिर बुलाए ॥
भाति भाति के साथ जिवाए ॥
कहियो सभै मिलि देहु दुआइ ॥
मम पति सुंदरि करै खुदाइ ॥७॥
सभहूं हाथ तसबियै लीनी ॥
बहु बिधि दुआइ तवन कह दीनी ॥
भाति भाति तन करी सुनाइ ॥
तव पति सुंदर करै खुदाइ ॥८॥
लै दुआइ त्रिय धाम सिधाई ॥
मारि काजियहि दियो दबाई ॥
करि काजी लैगी तिह तहा ॥
पड़त किताब मुलाने जहा ॥९॥
प्रजा निरखि ता कह हरखानी ॥
साचु किताब आपनी जानी ॥
हम जो या कह दई दुआइ ॥
या ते सुंदर करा खुदाइ ॥१०॥
इह बिधि प्रथम काजियहि घाई ॥
बरत भई अपना सुखदाई ॥
भेद अभेद न किनूं बिचारा ॥
इह छल बरा अपना प्यारा ॥११॥

दोहरा ॥

तुम सभ ही अति क्रिपा कर दीनी हमै दुआइ ॥
ता ते पति सुंदर भयो कीनी मया खुदाइ ॥१२॥

CHARITAR ३९१ — *SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ इक्यानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥391॥6966॥अफजूं॥*

चौपई ॥

भूप सु धरम सैन इक सुनियत ॥
जिह समान जग दुतिय न गुनियत ॥
चंदन दे तिह नारि भनिजै ॥
जिह मुख छबि निसकर कह दिजै ॥१॥
संदल दे दुहिता तिह सुहै ॥
खग म्रिग जछ भुजंगन मोहै ॥
अधिक प्रभा तन मो तिन धरी ॥
मदन सु नार भरत जनु भरी ॥२॥
न्रिप सुत एक सुघर तिन हेरियो ॥
मदन आनि ता का तन घेरियो ॥

सखी एक तह दई पठाई ॥
अनिक जतन करि कै तिह ल्याई ॥३॥
आनि सजन तिन दयो मिलाइ ॥
रमी कुअरि ता सौ लपटाइ ॥
अटक गयो जिय तजा न जाई ॥
इह बिधि तिन कीनी चतुराई ॥४॥
तोप बडी इक लई मंगाइ ॥
जिह महि बैठि मनुछ ते जाइ ॥
मंत्र सकति करि ता मो बरी ॥
मित्र भए इह भाति उचरी ॥५॥
मित्र बिदा करि सखी बुलाई ॥
इह बिधि ताहि कहा समुझाई ॥
तोप बिखै मुहि डारि चलैयहु ॥
इह न्रिप सुत के ग्रिह पहुचैयहु ॥६॥
जब सहचरि ऐसे सुनि लई ॥
दारू डारि आगि तिह दई ॥
गोरा जिमि लै कुअरि चलायो ॥
मंत्र सकति जम निकट न आयो ॥७॥
जाइ परी निजु प्रीतम के घर ॥
पाहन जैस हना गोफन करि ॥
निरखि मीत तिह लिया उठाई ॥
पोछि अंगि उर साथ लगाई ॥८॥

दोहरा ॥

मीत अधिक उपमा करी धंन्य कुअरि का नेह ॥
गोला ह्वै तोपहि उडी चिंता करी न देहि ॥९॥

चौपई ॥

इतै कुअरि मितवा के गई ॥
उतै सखिन भूपहि सुधि दई ॥
दारू डारि अनल हम दई ॥
तोप बिखै तरुनी उडि गई ॥१०॥
रानी भूपत सहित पुकारी ॥
कवन दैव गति करी हमारी ॥
खेलत अगि कुअरि इन दई ॥
तोप बिखै ता ते उडि गई ॥११॥

CHARITAR ३९२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ बानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥392॥6977॥अफजूं॥*

चौपई ॥

अछलापुर इक भूप भनिजै ॥
अछल सैन तिह नाम कहिजै ॥
तहिक सुधरमी राइ साह भनि ॥
जानुक सभ साहन की थो मनि ॥१॥
चंपा दे तिह सुता भनिजै ॥
रूपवान गुनवान कहिजै ॥

तिन राजा को पुत्र निहारियो ॥
सुछबि राइ जिह नाम बिचारियो ॥२॥
अड़िल ॥
हितू जानि इक सहचरि लई बुलाइ कै ॥
सुछबि राइ के दीनो ताहि पठाइ कै ॥
कहा क्रोरि करि जतन तिसै ह्यां ल्र्याइयो ॥
हो जितक चहौगी दरबु तितक लै जाइयो ॥३॥
सुनत सहचरी बचन सजन के ग्रिह गई ॥
जिमि तिमि ताहि प्रबोध तहा ल्यावत भई ॥
मिलत छैलनी छैल अधिक सुखु पाइयो ॥
हो भाति भाति की कैफन निकट मंगाइयो ॥४॥
किया कैफ कौ पान सु दुहूं प्रजंक पर ॥
भाति भाति तन रमे बिहसि करि नारि नर ॥
कोक सासत्र ते मत कौ बिहसि उचारि कै ॥
हो आपु बीच कंधन पर हाथन डारि कै ॥५॥
अधिक जोर तन दोऊ तहा क्रीड़ा करैं ॥
मन मै भए अनंद न काहूं ते डरैं ॥
लपटि लपटि कर जाहि सु छिनिक न छोरही ॥
हो सकल द्रप कंद्रप को तहा मरोरही ॥६॥

चौपई ॥

भोग करत तरुनी सुख पायो ॥
करत केल रजनियहि बितायो ॥
पहिली राति बीत जब गई ॥
पाछिल रैनि रहत सुधि लई ॥७॥
कहा कुअरि उठि राज कुअर संग ॥
कबहूं छाड हमारा तै अंग ॥
जो कोई पुरख हमै लहि जैहै ॥
जाइ राव तन भेद बतैहै ॥८॥
साहु सुता इह भाति उचारा ॥
बैन सुनो मम राज कुमारा ॥
सभन लखत तुहि कैफ पिलाऊं ॥
तबै साह की सुता कहाऊं ॥९॥
तह ही रमो तिहारे संगा ॥
अपने जोरि अंग सौ अंगा ॥
हमै तुमै सभ लोग निहारै ॥
भलो बुरो नहि भेद बिचारै ॥१०॥
यौ कहि कुअरि बिदा करि दीना ॥
प्रात भेस नर को धरि लीना ॥
कीअस कुअर के धाम पयाना ॥
भेद अभेद न किनी पछाना ॥११॥
चाकर राखि कुअर तिह लियो ॥
बीच मुसाहिब को तिह कियो ॥
खान पान सभ सोई पिलावै ॥
नर नारी कोई जानि न जावै ॥१२॥
इक दिन पिय लै गई सिकारा ॥
बीच सराही के मद डारा ॥
जल कै साथ भिगाइ उछारा ॥
चोवत जात जवन ते बारा ॥१३॥
सभ कोई लखै तवन कह पानी ॥

कोई न समुझि सकै मद ग्यानी ॥
जब कानन के गए मंझारा ॥
राज कुअर सौ बाल उचारा ॥१४॥
तुम को लगी त्रिखा अभिमानी ॥
सीतल लेहु पियहु इह पानी ॥
भरि प्याला लै ताहि पियारा ॥
सभहिन करि जल ताहि बिचारा ॥१५॥
पुनि त्रिय लिया कबाब हाथि करि ॥
कहियो कि खाहु राज सुत बन फर ॥
तुमरे निमिति तोरि इन आना ॥
भछन करहु स्वाद अब नाना ॥१६॥
जब मध्रयान समो भयो जान्यो ॥
सभ लोगन इह भाति बखान्यो ॥
तुम सभ चलो भूप के साथा ॥
हम सेवा करि है जगनाथा ॥१७॥
सभ जन पठै भूप के साथा ॥
दोई रहे नारि अर नाथा ॥
परदा ऐचि दसौ दिसि लिया ॥
काम भोग हसि हसि रसि किया ॥१८॥

दोहरा ॥

इह चरित्र दोई बिहसि रमत भए नर नारि ॥
प्रजा सहित राजा छला सका न भूप बिचारि ॥१९॥

CHARITAR ३९३ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ तिरानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥393॥6996॥अफजूं॥*

चौपई ॥

देव छत्र इक भूप बखनियति ॥
स्री सुरराजवती पुर जनियत ॥
तिहु संग चड़त अमिति चतुरंगा ॥
उमडि चलत जिह बिधि करि गंगा ॥१॥
अड़िल ॥
स्री अलकेस मती तिह सुता बखानियै ॥
परी पदुमनी प्रात कि प्रक्रिति प्रमानियै ॥
कै निसुपति सुर जाइ कि दिनकर जूझई ॥
हो जिह सम ह्वै है नारि न पाछै है भई ॥२॥
तह इक राइ जुलफ सु छत्री जानियै ॥
रूपवान गुनवान सुघर पहिचानियै ॥
जिह बिलोकि कंद्रप द्रप कह खोइ है ॥
हो जिह सम सुंदर भयो न आगे होइ है ॥३॥
राज सुता इक दिन तिह रूप निहारि कै ॥
रही मगन ह्वै मन महि क्रिया बिचारि कै ॥
अब कस करौ उपाइ जु याही कह बरौ ॥
हो बिनु साजन के मिले अगनि भीतर जरौ ॥४॥
हितू सहचरी समझिक लई बुलाइ कै ॥
कहि तिह भेद कुअर तन दई पठाइ कै ॥

जु मै तुमै कछु कहियो सु मीतहि आखियो ॥
हो चित महि रखियहु भेद न काहू भाखियो ॥५॥

चौपई ॥

सखी कुअर पहि दई पठाई ॥
जिह तिह भाति प्रबोधि ल्याई ॥
राज सुतहि तिन आन मिलायो ॥
साजन मिलत सजनि सुख पायो ॥६॥
भाति भाति सेती किय भोगा ॥
मिट गयो सकल दुहन को सोगा ॥
भाति भाति तन करै बिलासा ॥
निज पति को तजि करि कै त्रासा ॥७॥
चतुर चतुरिया दोई कलोलहि ॥
मिलि मिलि बैन मधुरि धुन बोलहि ॥
भाति अनिक की कैफ मंगावैं ॥
एक पलंघ बैठि पर चड़ावैं ॥८॥
आसन भाति भाति के लेहीं ॥
आलिंग चुंबन दोई देहीं ॥
रसि रसि कसि नर केल कमाइ ॥
लपटि लपटि तरुनी तर जाइ ॥९॥
दोइ तरुन बिजिया दुहूं खाई ॥
चारि टाक अहिफेन चड़ाई ॥
रसि रसि करि कसि कसि रति कियो ॥
चोरि चंचला को चित लियो ॥१०॥
रसिगे दोऊ न छोरा जाइ ॥
कही बात इह घात बनाइ ॥
एक मंत्र हम ते पिय लीजै ॥
जल के बिखै पियाना कीजै ॥११॥
जब लगु मंत्रुचार तै कर है ॥
तब लगि तै जल बीच न मर है ॥
तुमरे जल ऐ है न नेरे ॥
चारि ओर रहि है तुहि घेरे ॥१२॥
मंत्र मित्र ता ते तब लियो ॥
गंगा बीच पयाना कियो ॥
जल चहूं ओर तवन के रहा ॥
आनि पान ता के नहि गहा ॥१३॥
इह छल जल महि मीत पठायो ॥
मात पिता तन बचन सुनायो ॥
हो पित प्रात सुयंबर करि हौ ॥
परम पवित्र पुरख कोई बरि हौ ॥१४॥
कहे चलो तुम तात हमारे ॥
मथहु जानवी होत सवारे ॥
तह ते जु नर निकसि है कोई ॥
भरता होइ हमारो सोई ॥१५॥
बचन सुनत राजा हरखानो ॥
साचु झूठु जड़ कछु न पछानो ॥
जोरि प्रजा दै ढोल नगारे ॥
चले सुरसुरी मथन सकारे ॥१६॥
बडे द्रुमन की मथनि सुधारि ॥
मथत भए सुरसरि मो डारि ॥

तनिक बारि कह जबै डुलायो ॥
निकसि पुरख तह ते इक आयो ॥१७॥
निरखि सजन को रूप अपारा ॥
बरत भई तिह राज कुमारा ॥
भेद अभेद पसु कछु न बिचरियो ॥
इह छल नारि जार कह बरियो ॥१८॥

दोहरा ॥

जिह बिधि ते मथि नीरधहि लछमी बरी मुरारि ॥
तसहि मथि गंगा बरा या कह राज कुमारि ॥१९॥

CHARITAR ३९४ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ चौरानवे चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥394॥7015॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सरब सिंघ राजा इक सोहै ॥
सरब सिंधु पुर गड़ जिह को है ॥
स्री दल थंभु सुजान पुत्र तिह ॥
सुंदर अवर न भयो तुलि जिह ॥१॥
दुसट सिंघ ता कौ भ्राता भनि ॥
दुतिय चंद्र जाना सभ लोगन ॥
रूपवान गुनवान भनिजै ॥
कवन सुघर सम ताहि कहिजै ॥२॥
स्री सुजुलफ दे साह दुलारी ॥
जिह समान नहि देव कुमारी ॥
राज कुअरि निरखा तिह जब ही ॥
लगगी लगन निगौडी तब ही ॥३॥
हितू जानि सहचरी बुलाई ॥
भेद भाखि तिह ठौर पठाई ॥
राज कुअर तिह हाथ न आयो ॥
इह बिधि उहि इह आनि सुनायो ॥४॥
साहु सुता बहु जतन थकी करि ॥
गयो न मीत कैसेहूं तिह घर ॥
बीर हाकि इक तहा पठायो ॥
सोत सेज ते गहि पटकायो ॥५॥
टंगरी भूत कबै गहि लेई ॥
कबहूं डारि सेज पर देई ॥
अधिक त्रास दे ताहि पछारा ॥
उहि डरि जिय ते मारि न डारा ॥६॥
रैनि सिगर तिह सोन न दियो ॥
न्रिप सुत कह त्रासित बहु कियो ॥
चली खबरि राजा प्रति आई ॥
भूत नास कर लए बुलाई ॥७॥
भूत हता इक मंत्र उचारै ॥
बीस मंत्र पड़ि बीर पुकारै ॥
किसहूं पकरि चीरि करि देई ॥
काहूं पकरि रान तर लेई ॥८॥

जब सभ सकल मंत्र करि हारे ॥
तब इह बिधि तन बीर पुकारे ॥
जे गुर मोर इहा चलि आवै ॥
राज कुअर तब ही सुख पावै ॥९॥
सुनत बचन राजा पग परे ॥
बहु उसतति करि बचन उचरे ॥
कहा तोर गुर मोहि बतैयै ॥
जिह तिह भाति ताहि ह्यां ल्यैयै ॥१०॥
जवन पुरख का नाम बतायो ॥
नारि तिसी का भेस बनायो ॥
न्रिपहि ठौर भाखत भयो जहा ॥
बैठी जाहि चंचला तहा ॥११॥
बचन सुनत तह भूप सिधारियो ॥
तिही रूप तर पुरख निहारियो ॥
जिह तिह बिध ता कौ बिरमायो ॥
अपुने धाम ताहि लै आयो ॥१२॥
राज कुअर ता कह दरसायो ॥
बचन ताहि इह भाति सुनायो ॥
यौ इह त्रिय पतिब्रता बरै ॥
तऊ बचै यह यौ न उबरै ॥१३॥
करत करत बहु बचन बतायो ॥
साहु सुता के नामु जतायो ॥
सो पतिब्रता ताहि बिवावहु ॥
जौ न्रिप सुतहि जियायो चाहहु ॥१४॥
जौ यह ताहि ब्याहि ल्यावै ॥
रैनि दिवस ता सो लपटावै ॥
अवर नारि के निकट न जाइ ॥
तब यह जियै कुअर सुभ काइ ॥१५॥
यहै कार राजा तुम कीजै ॥
अब ही हमहि बिदा करि दीजै ॥
लै आग्या तिह आस्रम गई ॥
धारत भेस नारि का भई ॥१६॥
राज साज ब्याह कौ बनायो ॥
साह सुता हित पूत पठायो ॥
जब ही ब्याह तवन सौ भयो ॥
तब ही ताहि भूत तजि गयो ॥१७॥
राज कुअर इह छल सौ पायो ॥
भेद अभेद न किसी बतायो ॥
चंचलान के चरित अपारा ॥
चक्रित रहा करि करि करतारा ॥१८॥

CHARITAR ३९५ *— SAMAPAT*

◀ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ पचानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥395॥7033॥अफजूं॥

चौपई ॥

प्रिथी सिंघ इक भूप बखनियत ॥
पिरथी पुर तिह नगर प्रमनियत ॥
लाल मती रानी तिह सोहै ॥

सुर नर नारि भुजंगन मोहै ॥१॥
सिंघ मेदनी सुत का नामा ॥
थकित रहत जा कौ लखि बामा ॥
अधिक रूप ता को बिधि करियो ॥
जनु करि काम देव अवतरियो ॥२॥
चपला दे तह साह दुलारी ॥
कनक अवटि साचे जनु ढारी ॥
राज पुत्र जब ताहि निहारा ॥
निरखि तरुनि ह्वै गयो मतवारा ॥३॥
एक सहचरी निकटि बुलाई ॥
अमित दरब दै तहा पठाई ॥
जब तै चपल मती कौ ल्यै हैं ॥
मुखि मंग है जो कछु सो पै हैं ॥४॥
बचन सुनत सहचरि तह गई ॥
बहु बिधि ताहि प्रबोधत भई ॥
साह सुता जब हाथ न आई ॥
तब दूती इह घात बनाई ॥५॥
तव पिति धाम जु नए उसारे ॥
चलहु जाइ तिह लखौ सवारे ॥
यौ कहि डारि डोरियहि लियो ॥
परदन डारि चहूं दिसि दियो ॥६॥
इह छल साह सुता डहकाई ॥
संग लए न्रिप सुत घर आई ॥
तही आनि परदान उघार ॥
नारि लखा तह राज कुमारा ॥७॥
तात मात इह ठौर न भाई ॥
इन दूती हौ आनि फसाई ॥
राज कुअर जौ मुझै न पै है ॥
नाक कान कटि लीक लगै है ॥८॥
हाइ हाइ करि गिरी धरनि पर ॥
कटी कहा कर याहि बिछू बर ॥
ध्रिग बिधि को मो सौ कस कीया ॥
राज कुअर नहि भेटन दीया ॥९॥
अब मै निजु घर कौ फिरि जै हौ ॥
द्वै दिन कौ तुमरे फिरि ऐ हौ ॥
राज पुत्र लखि क्रिया न लई ॥
इह छल मूंड मूंड तिह गई ॥१०॥

CHARITAR ३९६ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ छिआनवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥396॥7043॥अफज़ूं॥*

चौपई ॥

सगर देस सुनियत है जहा ॥
सगर सैन राजा इक तहा ॥
सगर देइ तिह सुता भनिजै ॥
चंद सूर लखि ताहि जु लजै ॥१॥
गजनी राइ तवन जह लहियो ॥
मन क्रम बचन कुअरि अस कहियो ॥

ऐसो छैल एक दिन पैयै ॥
जनम जनम पल पल बलि जैयै ॥२॥
सखी एक तिह तीर पठाइ ॥
जिह तिह बिधि करि लिया बुलाइ ॥
अपन सेज पर तिह बैठारा ॥
काम भोग का रचा अखारा ॥३॥
बैठ सेज पर दोइ कलोलहि ॥
मधुर मधुर धुनि मुख ते बोलहि ॥
भाति भाति तन करत बिलासा ॥
तात मात को तजि कर त्रासा ॥४॥
पोसत भाग अफीम मंगावहि ॥
एक खाट पर बैठ चड़ावहि ॥
तरुन तरुनि उर सौ उरझाई ॥
रसि रसि कसि कसि भोग कमाई ॥५॥
रानी सहित पिता ता कौ बर ॥
आवत भयो दुहिताहूं के घर ॥
अवर घात तिह हाथ न आई ॥
तात मात हनि दए दबाई ॥६॥
निजु आलै कह आगि लगाइ ॥
रोइ उठी निजु पियहि दुराइ ॥
अनल लगत दारू कह भई ॥
रानी राव सहित उड गई ॥७॥
अवर पुरख कछु भेद न भायो ॥
कहा चंचला काज कमायो ॥
अपन राज देस का करा ॥
बहुरि सुयंबर सौ तिह बरा ॥८॥

CHARITAR ३९७ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ सतानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥397॥7051॥अफज्यूं॥*

चौपई ॥

पलवल देस हुता इक राजा ॥
जिह समान बिधि अवर न साजा ॥
तड़िता दे तिह नारि भनिजै ॥
चंद्र सूर जिह सम न कहिजै ॥१॥
अलिक्रित दे तिह सुता बखनियत ॥
अमित रूप वा के पहिचनियत ॥
तिह ठा इक सौदागर आयो ॥
जिह सम बिधि दूजो न बनायो ॥२॥
राज कुअरि ता के लखि अंगा ॥
मन क्रम बच रीझी सरबंगा ॥
पठै सहचरी लीअसि बुलाइ ॥
कहत भई बतिया मुसकाइ ॥३॥
अधिक भोग तिह साथ मचायो ॥
भात भाति रस केल कमायो ॥
चुंबन और अलिंगन लीनो ॥
भाति अनिक त्रिय को सुख दीनो ॥४॥
जब त्रिय चित तवनै हर लियो ॥

तब अस चरित चंचला कियो ॥
तात मात दोइ बोलि पठाए ॥
इह बिधि तिन सौ बचन सुनाए ॥५॥
मै अब लगि नहि तीरथ अन्हाई ॥
अब तीरथ करि हौ तह जाई ॥
जौ आइस तुम ते मै पाऊ ॥
तीरथ न्हाइ सकल फिरि आऊ ॥६॥
पति कुरूप हम कह तुम दियो ॥
ता ते मै उपाइ इमि कियो ॥
जौ मुर पति सभ तीरथ अन्हैहै ॥
सुंदर अधिक काइ ह्वै जैहै ॥७॥
लै आग्या पति सहित सिधाई ॥
भात भात तीरथन अन्हाई ॥
घात पाइ करि नाथ संघारा ॥
ता की ठौर मित्र बैठारा ॥८॥
अपने धाम बहुरि फिरि आई ॥
मात पितहि इह भाति जताई ॥
मुर पति अति तीरथन अन्हयो ॥
ता ते बपु सुंदर ह्वै गयो ॥९॥
भाति भाति हम तीरथ अन्हाए ॥
अनिक बिधव तन बिप्र जिवाए ॥
ता ते दैव आपु बर दियो ॥
मम पति को सुंदर बपु कियो ॥१०॥
यह काहू नर बात न पाई ॥
कहा करम करि कै त्रिय आई ॥
तीरथ महातम सभहूं जान्यो ॥
भेद अभेद न किनूं पछान्यो ॥११॥

CHARITAR ३९८ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ अठानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥398॥7062॥अफजूं॥*

चौपई ॥

घाटम पुर इक भूप भनिजै ॥
नारि अलंक्रित देइ कहिजै ॥
सुता सु भूखन दे घर ता के ॥
नरी नागरी तुलि न वा के ॥१॥
अति कुरूप तिह नाथ पछनियत ॥
अति सुंदरि जिह नारि बखनियत ॥
सुंदर अवर हुतो तह छत्री ॥
रूपवान गुनवान धरत्री ॥२॥
अड़िल ॥
जब मुलतानी राइ कुअरि लखि पाइयो ॥
निजु नाइक कह चित ते कुअरि भुलाइयो ॥
पठै सहचरी निजु ग्रिह लियो बुलाइ कै ॥
हो बचन कहे पुनि भागि अफीम चड़ाइ कै ॥३॥

चौपई ॥

अब लपटहु मुहि आनि प्यारे ॥
हम रीझी लखि नैन तिहारे ॥
नाहि नाहि तिन दुबिर बखानी ॥
आखर कुअरि कही सो मानी ॥४॥
अड़िल ॥
भाति भाति की कैफ दिवाने पी भए ॥
भाति भाति अबला के आसन लेत भे ॥
अमित भोग त्रिय पाइ रही उरझाइ कै ॥
हो निरखि सजन के नैनन गई बिकाइ कै ॥५॥

चौपई ॥

भाति भाति ता सौ रति पाइ ॥
आसन साथ गई लपटाइ ॥
रसि गयो मीत न छोरा जाई ॥
बात भाखि तिह घात बनाई ॥६॥
साजन आजु तुझै मै बरि हौ ॥
निजु पति को निजु कर बध करि हौ ॥
आपन साथ प्रगट तुहि लिऐहौ ॥
मात पिता तुहि लखत हंढैहौ ॥७॥
निजु पति लै सिव भवन सिधाई ॥
काटा मूंड तहा तिह जाई ॥
लोगन कहि सिव नाम सुनायो ॥
रूप हेतु पति सीस चड़ायो ॥८॥
पुनि सिव अधिक क्रिपा कह कियो ॥
सुंदर मोर पतिहि कर दियो ॥
कौतक लखा कहा तिन करा ॥
सिव प्रताप हम आजु बिचरा ॥९॥
देह म्रितक पति दई दबाई ॥
ता कौ नाथ भाखि ग्रिह ल्याई ॥
भेद अभेद न किनहूं पायो ॥
बिनु पानी ही मूंड मुंडायो ॥१०॥

CHARITAR ३९९ *— SAMAPAT*

◄ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीन सौ निन्नयानवो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥399॥7072॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सूरज किरनि इक भूप भनिजै ॥
चंद किरन पुर नगर कहिजै ॥
महा कुअरि तिह धाम दुलारी ॥
जिह समान बिधि कहूं न सवारी ॥१॥
तहिक साह को पूत सुजाना ॥
चंद्र सैन नामा बलवाना ॥
महा कुअरि वा की छबि लही ॥
मन क्रम बचन थकित ह्वै रही ॥२॥
पठै सहचरी लियो बुलाइ ॥
पोसत भाग अफीम मंगाइ ॥
भाति भाति तन ताहि पिवायो ॥

अधिक मत करि गरै लगायो ॥३॥
मत किया मद साथ प्यारो ॥
कबहूं करत न उर सौ न्यारो ॥
भाति भाति उर सौ लपटावै ॥
चूंबि कपोल दोऊ बलि जावै ॥४॥
रसि गयो मीत न छोरा जाइ ॥
भाति भाति भोगत लपटाइ ॥
चुंबन और अलिंगन लेई ॥
अनिक भाति तन आसन देई ॥५॥
रसि गई ता कौ तजा न जाइ ॥
भाति अनिक लपटत सुख पाइ ॥
या संग कहा कवन बिधि जाऊां ॥
अब अस कवन उपाइ बनाऊां ॥६॥
जानि बूझि इक दिज कह मारि ॥
भूप भए इमि कहा सुधारि ॥
अब मै जाइ करवतहि लै हौ ॥
पलटि देह सुरपुरहि सिधै हौ ॥७॥
होरि रहा पितु एक न मानी ॥
रानीहूं पाइन लपटानी ॥
मंत्र सकति करवति सिर धरा ॥
एक रोम तिह ताहि न हरा ॥८॥
सभन लहा करवति इह लियो ॥
द्रिसटि बंद ऐसा तिन कियो ॥
आपन गई मित्र के धामा ॥
भेद न लखा किसू किह बामा ॥९॥

दोहरा ॥

इह बिधि छलि पितु मात कह गई मित्र के संग ॥
कबि स्याम पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥१०॥

CHARITAR ४०० — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चार सौ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥400॥7082॥अफजूं॥*

चौपई ॥

पातिसाह कारूं इक सुनियत ॥
अमित तेज जा को जग गुनियत ॥
जिह धन भरे चिहल भंडारा ॥
आवत जिन का पार न वारा ॥१॥
तिह पुर साह सुता इक सुनियत ॥
जानुक चित्र पुत्रका गुनियत ॥
निरख भूप का रूप लुभाई ॥
एक सहचरी तहा पठाई ॥२॥
कुअरि बसंत तवनि का नामा ॥
जिह समान भी और न बामा ॥
सो कारूं की छबि लखि अटिकी ॥
बिसरि गई सभ ही सुधि घट की ॥३॥
अड़िल ॥

सखी सुभूखन दे तह दई पठाइ कै ॥
मोरी कही सजन सौ कहियहु जाइ कै ॥
प्रणति हमारी मीत कहा सुनि लीजियै ॥
हो जसि तव त्रिय ग्रिह एक दुतिय मुहि कीजियै ॥४॥

चौपई ॥

कुअरि कुअरि की बात बखानी ॥
राज कुअरि करि एक न मानी ॥
इमि सखि जाइ ताहि सुधि दई ॥
कुअरि बसंत रिसाकुल भई ॥५॥
ततछिन सुरंग धाम निजु दई ॥
न्रिप के सदन निकारत भई ॥
चालिस गंज दरब के जेते ॥
निजु आलै राखे लै तेते ॥६॥
मूड़ भूप कछु बात न पाई ॥
किह बिधि धन त्रिय लिया चुराई ॥
छोरि भंडार बिलोकै कहा ॥
पैसा एक न धन ग्रिह रहा ॥७॥
अड़िल ॥
अधिक दुखित ह्वै लोगन लिया बुलाइ कै ॥
भाति भाति तिन प्रति कह दूख बनाइ कै ॥
ऐसा कवन कुकरम कहो हम ते भयो ॥
हो जिह कारन ते ग्रिह चालिस का धन गयो ॥८॥

चौपई ॥

सभ लोगन इह भाति बिचारी ॥
प्रगट राव के साथ उचारी ॥
दान पुंन्य तै कछू न दयो ॥
तिह ते ग्रिह को सभ धन गयो ॥९॥
सुनि जुहाकु पायो इह बिधि जब ॥
धावत भलो अमित लै दल तब ॥
छीनि लई ता की सभ साही ॥
कुअरि बसंत नारि कर ब्याही ॥१०॥

दोहरा ॥

इह चरित्र तिन चंचला सकल दरब हरि लीन ॥
इह बिधि कै कारूं हना नाथ जुहाकहि कीन ॥११॥

चौपई ॥

लोग आजु लगि बात न जानत ॥
गड़ा गंज आजु लौ बखानत ॥
ऐसे चरित चंचला करा ॥
कारूं मार जुहाकहि बरा ॥१२॥

CHARITAR ४०१ — *SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चार सौ इक चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥401॥7094॥अफज़ूं॥*

चिंजी सहर बसत है जहा ॥
चिंगस सैन नराधिप तहा ॥
गैहर मती नारि तिह कहियत ॥
जिह सम सुर पुर नारि न लहियत ॥१॥
सहर सुरेस्वावती बिराजै ॥
जा कौ निरखि इंद्र पुर लाजै ॥
बलवंड सिंघ साह इक सुनियत ॥
जिह समान जग और न गुनियत ॥२॥
सदा कुअरि तिह सुता भनिजै ॥
चंद्र सूर लखि जाहि अरुझै ॥
अप्रमान दुति जात न कही ॥
जानुक फूलि चंबेली रही ॥३॥
सदा कुअरि निरखा जब राजा ॥
तब ही सील तवन का भाजा ॥
सखी एक न्रिप तीर पठाई ॥
यौ राजा तन कहु तै जाई ॥४॥
मै तव रूप निरखि उरझानी ॥
मदन ताप ते भई दिवानी ॥
एक बार तुम मुझै बुलावो ॥
काम तपत करि केल मिटावो ॥५॥
जौ आपन ग्रिह मुहि न बुलावहु ॥
एक बार मोरे ग्रिह आवहु ॥
मो संग करियै मैन बिलासा ॥
हम कह तोरि मिलन की आसा ॥६॥
भूप कुअरि वहु ग्रिह न बुलाई ॥
आपु जाइ तिह सेज सुहाई ॥
दीप दान तरुनी तिन कीना ॥
अरघ धूप राजा कह दीना ॥७॥
सुभर सेज ऊपर बैठायो ॥
भाग अफीम सराब मंगायो ॥
प्रथम कहा न्रिप सौ इन पीजै ॥
बहुरि मुझै मदनंकुस दीजै ॥८॥
सुनत बचन इह भूप न माना ॥
जम के डंड त्रास तरसाना ॥
कहियो न मै तौसौ रति करिहो ॥
घोर नरक मो भूलि न परिहौ ॥९॥
तिमि तिमि त्रिय अंचर गरि डारै ॥
जोरि जोरि द्रिग न्रिपहि निहारै ॥
हाइ हाइ मुहि भूपति भजियै ॥
काम क्रिया मोरे संग सजियै ॥१०॥
नहि नहि पुनि जिमि जिमि न्रिप करै ॥
तिमि तिमि चरन चंचला परै ॥
हहा न्रिपति मुहि करहु बिलासा ॥
काम भोग की पुरवहु आसा ॥११॥
कहा करौ कहु कहा पधारौ ॥
आप मरौ कै मुझै संघारौ ॥
हाइ हाइ मुहि भोग न करई ॥
ता ते जीअ हमारा जरई ॥१२॥

सवैया ॥

आसन और अलिंगन चुंबन आजु भले तुमरे कसि लैहौ ॥
रीझि हैं जौन उपाइ गुमानी तैं ताहि उपाइ सो तोहि रिझैहौ ॥
पोसत भाग अफीम सराब खवाइ तुमै तब आपु चड़ैहौ ॥
कोट उपाव करौ क्यो न मीत पै केल करे बिनु जान न दैहौ ॥१३॥
केतियै बात बनाइ कहौ किन केल करे बिनु मै न टरौगी ॥
आजु मिले तुमरे बिनु मै तव रूप चितारि चितारि जरौगी ॥
हार सिंगार सभै घर बार सु एकहि बार बिसारि धरौगी ॥
कै करि पिआर मिलो इक बार कि यार बिना उर फारि मरौगी ॥१४॥
सुंदर केल करो हमरे संग मै तुमरौ लखि रूप बिकानी ॥
ठाव नही जहा जाउ क्रिपानिधि आजु भई दुति देख दिवानी ॥
हौ अटकी तव हेरि प्रभा तुम बाधि रहै कसि मौन गुमानी ॥
जानत घात न मानत बात सु जात बिहात दुहूंन की ज्वानी ॥१५॥
जेतिक प्रीति की रीति की बात सु साह सुता न्रिप तीर बखानी ॥
चौक रहा चहूं ओर चितै करि बाधि रहा मुख मौन गुमानी ॥
हाहि रही कहि पाइ रही गहि गाइ थकी गुन एक न जानी ॥
बाधि रहा जड़ मोनि महा ओहि कोटि कही इह एक न मानी ॥१६॥

चौपई ॥

जब भूपति इक बात न मानी ॥
साह सुता तब अधिक रिसानी ॥
सखियन नैन सैन करि दई ॥
राजा की बहीया गहि लई ॥१७॥
पकरि राव की पाग उतारी ॥
पनही मूंड सात सै झारी ॥
दुतिय पुरख कोई तिह न निहारौ ॥
आनि राव कौ करै सहारौ ॥१८॥
भूप लजत नहि हाइ बखानै ॥
जिनि कोई नर मुझै पछानै ॥
साह सुता इत न्रिपहि न छोरै ॥
पनही वाहि मूंड पर तोरै ॥१९॥
राव लखा त्रिय मुझै संघारो ॥
कोई न पहुचा सिवक हमारो ॥
अब यह मुझै न जानै दै है ॥
पनी हनत म्रित लोक पठै है ॥२०॥
पनही जब सोरह सै परी ॥
तब राजा की आखि उघरी ॥
इह अबला गहि मोहि संघरि है ॥
कवन आनि ह्यां मुझै उबरि है ॥२१॥
पुनि राजा इह भाति बखानो ॥
मै त्रिय तोर चरित्र न जानो ॥
अब जूतिन सौ मुझै न मारो ॥
जौ चाहौ तौ आनि बिहारो ॥२२॥
साह सुता जब यौ सुनि पाई ॥
नैन सैन दै सखी हटाई ॥
आपु गई राजा पहि धाइ ॥
काम भोग कीना लपटाइ ॥२३॥
पोसत भाग अफीम मिलाइ ॥
आसन ता तर दियो बनाइ ॥
चुंबन राइ अलिंगन लए ॥

लिंग देत तिह भग मो भए ॥२४॥
भग मो लिंग दियो राजा जब ॥
रुचि उपजी तरनी के जिय तब ॥
लपटि लपटि आसन तर गई ॥
चुंबन करत भूप के भई ॥२५॥
गहि गहि तिह को गरे लगावा ॥
आसन सौ आसनहि छुहावा ॥
अधरन सौ दोऊ अधर लगाई ॥
दुहूं कुचन सौ कुचन मिलाई ॥२६॥
इह बिधि भोग किया राजा तन ॥
जिह बिधि रुचा चंचला के मन ॥
बहुरौ राव बिदा करि दियो ॥
अनत देस को मारग लियो ॥२७॥
रति करि राव बिदा करि दिया ॥
ऐसा चरित चंचला किया ॥
अवर पुरख सौ राव न भाखा ॥
जो त्रिय किय सो जिय मो राखा ॥२८॥

दोहरा ॥

कितक दिनन न्रिप चंचला पुनि वहु लई बुलाइ ॥
रानी करि राखी सदन सका न को छल पाइ ॥२९॥

CHARITAR ४०२ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चार सौ दोइ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥402॥7123॥अफजूं॥*

चौपई ॥

सुन न्रिप और चरित्र बखानो ॥
जिह बिधि किया चंचला जानो ॥
अनदावती नगर इक सोहै ॥
राइ सिंघ राजा तह को है ॥१॥
सिवदेई तिह नारि बिचछन ॥
रूपवान गुनवान सुलछन ॥
राजा आपु चरित्र बनावत ॥
लिखि लिखि पड़ि इसत्रियन सुनावत ॥२॥
सिवा मती इह बिधि जब सुनी ॥
अधिक बिहसि करि मूंडी धुनी ॥
अस करि इसै चरित्र दिखाऊ ॥
याह भजो याही ते लिखाऊ ॥३॥
जिह तिह बिधि भूपहि फुसलाइ ॥
मिलत भई दिन ही कह आइ ॥
आनि गरे ता के लपटाई ॥
भाति भाति तिन केल रचाई ॥४॥
भाति भाति जद पतिह भजा ॥
तऊ न त्रिय आसन तिह तजा ॥
भाति भाति उर सो उरझानी ॥
निरखि भूप का रूप बिकानी ॥५॥
भोग कमाइ गई डेरै जब ॥

सखियन साथ बखानो इम तब ॥
इह राजै मुहि आजु बुलायो ॥
दिन ही मो संग भोग कमायो ॥६॥
सासु ससुर जब ही सुन पाई ॥
और सुनत भी सगल लुगाई ॥
आजु राज या सो रति मानी ॥
बूझि गए सभ लोग कहानी ॥७॥
पुनि सिव दे इह भाति उचारो ॥
मै देखत थी हिया तिहारो ॥
बात कहे मुहि ए क्या करिहै ॥
चुप करि है कि कोप करि लरिहै ॥८॥
अड़िल ॥
दिन को ऐसो को त्रिय करम कमावई ॥
दिखत जार को धाम नारि किमि जावई ॥
ऐस काज करि कवन कहो किमि भाखि है ॥
हो अपने चित की बात चित मो राखि है ॥९॥

चौपई ॥

बैन सुनत सभहिन सचु आयो ॥
किनूं न तह इह कथहि चलायो ॥
जो कोई ऐस करम कौ करि है ॥
भूलि न काहू पास उचिर है ॥१०॥
लोगन कहि इह बिधि डहकाइ ॥
पिय तन पत्री लिखी बनाइ ॥
मो पर यार अनुग्रह कीजे ॥
इह भी चरित ग्रंथ लिखि लीजे ॥११॥

CHARITAR ४०३ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चार सौ तीन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥403॥7134॥अफजूं॥*

सबुधि बाच ॥

चौपई ॥

सति संधि इक भूप भनिजै ॥
प्रथमे सतिजुग बीच कहिजै ॥
जिह जस पुरी चौदहूं छायो ॥
नारद रिखि तब राइ मंगायो ॥१॥
सभ देवन को राजा भयो ॥
ब्रहमा तिलक आपु तिह दयो ॥
निहकंटक सुर कटक किया सब ॥
दानव मार निकार दए जब ॥२॥
इह बिधि राज बरख बहु किया ॥
दीरघ दाड़ दैत भव लिया ॥
दस सहस छूहनि दल लै कै ॥
चड़ि आयो तिह ऊपर तै कै ॥३॥
सभ देवन ऐसे सुनि पायो ॥
दीरघ दाड़ दैत चड़ि आयो ॥
बीस सहस छोहनि दल लियो ॥

वा सौ जाइ समागम कियो ॥४॥
सूरज कह सैनापति कीना ॥
दहिने ओर चंद्र कह दीना ॥
बाई ओर कारतिके धरा ॥
जिह पौरख किनहूं नहि हरा ॥५॥
इह दिस सकल देव चड़ि धाए ॥
उहि दिसि ते दानव मिलि आए ॥
बाजन भाति भाति तन बाजे ॥
दोऊ दिसिन सूरमा गाजे ॥६॥
दै दै ढोल बजाइ नगारे ॥
पी पी भए कैफ मतवारे ॥
तीस सहस छोहनि दल साथा ॥
रन दारुनु राचा जगनाथा ॥७॥
भाति भाति मारू जब बाजो ॥
दीरघ दाड़ दैत रन गाजो ॥
तीछन बान दोऊ दिसि बहही ॥
जाहि लगत तिह माझ न रहही ॥८॥
धावत भए देवता जब ही ॥
दानव भरे रोस तन तब ही ॥
भाति भाति बादित्र बजाइ ॥
खत्री उठे खिंग खुनसाइ ॥९॥
चले बान दुहूं ओर अपारा ॥
बिछूआ बरछी बज्र हजारा ॥
गदा गरिसट जवन पर झरही ॥
स्यंदन सहित चूरन तिह करही ॥१०॥
जा के लगे अंग मै बाना ॥
करा बीर तिह स्वरग पयाना ॥
मच्यो बीर खेत बिकराला ॥
नाचत भूत प्रेत बेताला ॥११॥
झूमि झूमि कही गिरे धरनि भट ॥
जुदे जुदे कही अंग परे कटि ॥
चली स्रोन की नदी बिराजै ॥
बैतरुनी जिन को लखि लाजै ॥१२॥
इह दिसि अधिक देवता कोपे ॥
उहि दिसि पाव दानवन रोपे ॥
कुपि कुपि अधिक ह्रिदन मो भिरे ॥
जूझि जूझि गे बहुरि न फिरे ॥१३॥
कोटिक कटक तहा कटि मरे ॥
जूझे गिरे बरंगनिन बरे ॥
दोऊ दिसि मरे काल के प्रेरे ॥
गिरे भूमि रन फिरे न फेरे ॥१४॥
सति संधि देविस इत धायो ॥
दीरघ दाड़ उह ओर रिसायो ॥
बज्र बाण बिछूआ कै कै ब्रण ॥
जूझि जूझि भट गिरत भए रण ॥१५॥
जोगिनि जछ कहूं हरखए ॥
भूत प्रेत नाचत कहूं भए ॥
कह कह कह कलि हास सुनावत ॥
भीखन सुनै सबद भै आवत ॥१६॥
फिरैं दैत कहूं दात निकारे ॥

बमत स्रोन केते रन मारे ॥
कहूं सिवा सामुहि फिकराही ॥
भूत पिसाच मास कहूं खाही ॥१७॥
सकटाब्रयूह रचा सुर पति तब ॥
क्रौचाब्रयूह कियो असुरिस जब ॥
मचियो तुमल जुध तह भारी ॥
गरजत भए बीर बल धारी ॥१८॥
जूझि गए जोधा कही भारे ॥
देव गिरे दानव कही मारे ॥
बीर खेत ऐसा तह परा ॥
दोऊ दिसि इक सुभट न उबरा ॥१९॥
जौ क्रम क्रम करि कथा सुनाऊां ॥
ग्रंथ बढन ते अधिक डराऊां ॥
तीस सहस छूहनि जह जोधा ॥
मंड्यो बीर खेत करि क्रोधा ॥२०॥
पतिअन सो पतीअन भिरि मरे ॥
स्वारन के स्वारन छै करे ॥
रथियन तह रथियन कौ घायो ॥
हाथिन दंती स्वरग पठायो ॥२१॥
दलपति सौ दलपति लरि मूआ ॥
इह बिधि नास कटक का हूआ ॥
बचे भूप ते कोप बडाई ॥
माडत भे हठ ठानि लराई ॥२२॥
रन माडत भे बिबिध प्रकारा ॥
दैत राट अरु देव न्रिपारा ॥
रसना इती न भाख सुनाऊां ॥
ग्रंथ बढन ते अति डरपाऊां ॥२३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

कहा लौ बखानौ महा लोह मचियो ॥
दुहूं ओर ते बीर एकै न बचियो ॥
तबै आनि जूटे दोऊ छत्रधारी ॥
परा लोह गाड़ो कंपी भूमि सारी ॥२४॥
जुटे राव दोऊ उठी धूरि ऐसी ॥
प्रलै काल की अगनि की धूम्र जैसी ॥
न हाथै पसारा तहा द्रिसटि आवै ॥
कछू भूमि आकास हेरो न जावै ॥२५॥
अड़िल ॥
तीस सहस छूहनि दल जब जूझत भयो ॥
दुहूं न्रिपन के कोप अधिक तब ही भयो ॥
पीसि पीसि रदनछद बिसिख प्रहारही ॥
हो जो जीय भीतर कोप सु प्रगट दिखारही ॥२६॥

चौपई ॥

बीस बरस निसु दिन रन करा ॥
दुहूं न्रिपन ते एक न टरा ॥
अंत काल तिन दुहूं खपायो ॥
उहि कौ इह इह कौ उहि घायो ॥२७॥

भुजंग छंद ॥

जबै छूहनी तीस साहस्र मारे ॥
दोऊ रावई राव जूझे करारे ॥
मचियो लोह गाढौ उठी अगनि ज्वाला ॥
भई तेज तौने हुते एक बाला ॥२८॥
तिसी कोप की अगनि ते बाल ह्वै कै ॥
हसी हाथ मै ससत्र औ असत्र लै कै ॥
महा रूप आनूप ता को बिराजै ॥
लखे तेज ता को ससी सूर लाजै ॥२९॥

चौपई ॥

चारहु दिसा फिरी जब बाला ॥
जानो नाग रूप की माला ॥
ऐस न कतहूं पुरख निहारा ॥
नाथ करै जिह आपु सुधारा ॥३०॥
फिर जिय मै इह भाति बिचारी ॥
बरौ जगत के पतिहि सुधारी ॥
ता ते करौ दीन ह्वै सेवा ॥
होइ प्रसंन कालिका देवा ॥३१॥
अधिक सुचित ह्वै कीए सुमंत्रा ॥
भाति भाति तन लिखि लिखि जंत्रा ॥
क्रिपा करी जग मात भवानी ॥
इह बिध बतिया ताहि बखानी ॥३२॥
करि जिनि सोक ह्रिदै तै पुत्री ॥
निरंकार बरि है तुहि अत्री ॥
ता का ध्यान आजु निसि धरियहु ॥
कहिहै जु कछु सोई तुम करियहु ॥३३॥
जब अस बर तिह दियो भवानी ॥
प्रफुलित भई जगत की रानी ॥
अति पवित्र निसि ह्वै छित सोई ॥
जिह ठा और न दूसर कोई ॥३४॥
अरध रात्रि बीतत भी जब ही ॥
आग्या भई नाथ की तब ही ॥
स्वास बीरज दानव जब मरि है ॥
तिह पाछे सुंदरि मुहि बरि है ॥३५॥
इह बिधि तिह आग्या जब भई ॥
दिनमनि चड़ियो रैनि मिटि गई ॥
साजे ससत्र चंचला तब ही ॥
रन कौ चली साथ लै सब ही ॥३६॥

दोहरा ॥

जहा सत्रु को पुर हुतो तित कह किया पयान ॥
बिकट असुर को बेड़ि गड़ दहदिस दियो निसान ॥३७॥

चौपई ॥

दुंदभि सुना स्रवन महि जब ही ॥
जागा असुर कोप करि तब ही ॥
ऐसा कवन जु हम पर आयो ॥

रकत बिंद मै रनहि हरायो ॥३८॥
इंद्र चंद्र सूरज हम जीता ॥
रावन जिता हरी जिन सीता ॥
एक दिवस मो सौ सिव लरा ॥
ताहि भजायो मै नहि टरा ॥३९॥
ससत्र साज दानव रन आवा ॥
अमित कोप करि संख बजावा ॥
कापी भूम गगन घहराना ॥
अतुल बीरज किह ओर रिसाना ॥४०॥
इति दिसि दूलह देई कुमारी ॥
ससत्र साजि रथि करी सवारी ॥
ससत्रन करि प्रनाम तिह काला ॥
छाडत भी रन बिसिख कराला ॥४१॥
लगे बिसिख जब अंग करारे ॥
दानव भरे कोप तब भारे ॥
मुख ते स्वास स्रमित ह्वै काढे ॥
तिन ते अमित असुर रन बाढे ॥४२॥
तिन का बाल बहुरि बध करा ॥
उन का स्रोन प्रिथी पर परा ॥
अगनित बढे तबै तह दानव ॥
भछत भए पकरि करि मानव ॥४३॥
जब अबला के सुभट चबाए ॥
दूलह दे तिह बिसिख लगाए ॥
बुंदका परत स्रोन भूअ भए ॥
उपजि असुर सामहि उठि धए ॥४४॥
पुनि अबला तिन बिसिख प्रहारे ॥
चले स्रोन के तहा पनारे ॥
असुर अनंत तहा ते जागे ॥
जूझत भए पैग नहि भागे ॥४५॥

भुजंग छंद ॥

जबै ओर चारौ उठे दैत बानी ॥
कए कोप गाड़ो लए धूलिधानी ॥
किते मूंड मुंडे किते अरध मुंडे ॥
किते केस धारी सिपाही प्रचंडे ॥४६॥
जिते दैत उठे तिते बाल मारे ॥
वुठे आनि बानानि बाके डरारे ॥
जिते स्वास छोरै उठै दैत भारे ॥
हठी मार ही मारि कै कै पधारे ॥४७॥
किते कोप कै बीर बाला संघारे ॥
जिते दैत ढूके महा बाहु भारे ॥
तित्रयो का गिरा आनि कै स्रोन भू पै ॥
उठे नेक जोधा महा भीम रूपे ॥४८॥

चौपई ॥

तिन की भूमि जु मेजा परही ॥
तिन ते अमित दैत बपु धरही ॥
स्रोन गिरै तिन को धर माही ॥
रथी गजी बाजी ह्वै जाही ॥४९॥

प्रान तजत स्वासा अरि तजै ॥
तिन ते अमित असुर ह्वै भजै ॥
कितक असुर डारत भूअ लारै ॥
तिन ते अनिक दैत तन धारै ॥५०॥
तिन ते तजत असुर जे स्वासा ॥
तिन ते दानव होहि प्रकासा ॥
कितक मरत कै तरुनि संघारे ॥
दसौ दिसिन महि असुर निहारे ॥५१॥
चित मो किया कालका ध्याना ॥
दरसन दिया आनि भगवाना ॥
करि प्रनाम चरनन उठि परी ॥
बिनती भाति अनिक तन करी ॥५२॥
सति काल मै दास तिहारी ॥
अपनी जानि करो प्रतिपारी ॥
गुन अवगुन मुर कछु न निहारहु ॥
बाहि गहे की लाज बिचारहु ॥५३॥
हम है सरनि तोर महाराजा ॥
तुम कह बाहि गहे की लाजा ॥
जौ तव भगत नैक दुख पै है ॥
दीन द्रयाल प्रभु बिरदु लजै है ॥५४॥
औ कह लग मै करौ पुकारा ॥
तै घट घट की जान निहारा ॥
कही एक करि सहस पछिनयहु ॥
आपु आपने बिरदहि जनियहु ॥५५॥
हड़ हड़ सुनत काल बच हसा ॥
भगत हेत कटि सौ असि कसा ॥
चिंत न करि मै असुर संघरि हौ ॥
सकल सोक भगतन को हरि हौ ॥५६॥
अमित असुर उपजे थे जहा ॥
प्रापति भयो काल चलि तहा ॥
चहूं करन करि ससत्र प्रहारे ॥
दैत अनेक मार ही डारे ॥५७॥
तिन ते परा स्रोन जे भू पर ॥
असुर अमित धावत भे उठि करि ॥
तिन ते चलत स्वास ते छूटे ॥
अमित दैत रन कह उठि जूटे ॥५८॥
ते सभ काल तनिक मो मारे ॥
चलत भए भूअ रुधिर पनारे ॥
उपजि असुर ता ते बहु ठाढे ॥
धावत भए रोस करि गाढे ॥५९॥
मारि मारि दिसि दसौ पुकारै ॥
तिन ते अमित असुर तन धारै ॥
बार चलत तिन ते जे दौरै ॥
तिन ते होत असुर प्रगटौरै ॥६०॥
लगे घाइ जे स्रोन बमाही ॥
तिह ते गज बाजी ह्वै जाही ॥
तिह ते चलित अमित जो स्वासा ॥
तिन ते असुर करत परगासा ॥६१॥
अनगन काल असुर तब मारे ॥
परे भूमि पर मनहु मुनारे ॥

मेधा ते गज बाज उठाही ॥
स्रोनत के दानव ह्वै जाही ॥६२॥
बानन की बरखा उठि करही ॥
मारि मारि करि कोप उचरही ॥
तिन ते असुरन किया पसारा ॥
दसे दिसन हूं कह भरि डारा ॥६३॥
वहै कालका असुर खपाए ॥
मारि दुबहिया धूरि मिलाए ॥
पुनि पुनि उठै प्रहारै बाना ॥
तिन ते धरत असुर तन नाना ॥६४॥
टूक टूक दानव जे भए ॥
तिन ते अनिक असुर ह्वै गए ॥
ताही ते दानव बहु ह्वै करि ॥
जुध करै आयुध ते लै करि ॥६५॥
बहुरि काल वै दैत संघारे ॥
तिल तिल पाइ टूक करि डारे ॥
जेतिक गिरै भूमि टुक ह्वै कै ॥
तित ही उठै आयुधन लै कै ॥६६॥
तिल तिल करि भट जितक उडाए ॥
तेतक तहा असुर बन आए ॥
तिन के टूक टूक जे कीए ॥
तिन ते बहु दानव भव लीए ॥६७॥
केतिक तहा सुभै दंती रन ॥
सीचहि सुंड बारि ते सभ तन ॥
दात दिखाइ तजै चिंघारा ॥
गिरि गिरि परै निरखि असवारा ॥६८॥
कहूं भेर भीखन भभकारहि ॥
कहूं बीर बाजी रन डारहि ॥
कितक सूर सैहथी फिरावत ॥
महा काल के सनमुख धावत ॥६९॥
केतिक बज्र बरछियन लै कै ॥
धावत असुर कोप तन तै कै ॥
कोपि काल पर करत प्रहारा ॥
जानुक सलभ दीप अनुहारा ॥७०॥
भरे गुमान बडे गरबीले ॥
धावत चौपि चड़े चटकीले ॥
पीसि पीसि रदनछद दोऊ ॥
धावत महा काल पर सोऊ ॥७१॥
बाजहि ढोलि म्रिदंग नगारा ॥
भीखन करत भेर भभकारा ॥
जंग मुचंग उपंग बजे रन ॥
झालरि ताल नफीरन के गन ॥७२॥
मुरली मुरज कही रन बाजत ॥
दानव भरे गुमानहि गाजत ॥
ढोलन पर दै दै ढमकारे ॥
गहि गहि धवत क्रिपान कटारे ॥७३॥
दीरघ दात काढि कई कोसा ॥
धावत असुर हीए करि जोसा ॥
मारन महा काल कह धावै ॥
मनो मारत वेई मरि जावै ॥७४॥

दानव महा कोप करि ढूके ॥
मारहि मारि दसो दिसि कूके ॥
दै दै ढोलि म्रिदंग नगारे ॥
काढि काढि अरि दाति डरारे ॥७५॥
चाहत महा काल कह मारो ॥
महा पुरख नहि करत बिचारो ॥
जिन सभ जग का करा पसारा ॥
ताहि चहत ते मूड़ संघारा ॥७६॥
ठोकि ठोकि भुज दंडन जोधा ॥
धावत महा काल पर क्रोधा ॥
बीस पदुम दानव तव भयो ॥
नास करन काली को धयो ॥७७॥
छूहनि सहस असुर की सैना ॥
धावत भई अरुन करि नैना ॥
धावत कोप अमित करि भए ॥
प्रिथवी के खट पट उडि गए ॥७८॥
एकै पुर प्रिथवी रहि गई ॥
खट पट हयन पगन उडि गई ॥
जनु बिधि एकै रचा पयारा ॥
गगन रचे दस तीनि सुधारा ॥७९॥
महादेव आसन ते टरा ॥
ब्रहमा त्रसत बूट महि दुरा ॥
निरखि बिसन रन अधिक डराना ॥
दुरा सिंध के बीच लजाना ॥८०॥
कड़ा कड़ी माचा घमसाना ॥
निरखत देव दैत जा नाना ॥
महा घोर आहव तह परा ॥
कापी भूमि गगन थरहरा ॥८१॥
निरखि जुध कापा कमलेसा ॥
ता ते धरा नारि का भेसा ॥
परबतीस लखि डरा लराई ॥
बासा बन बिखै अतिथ कहाई ॥८२॥
कारतिकेय ह्वै रहा बिहंडल ॥
ब्रहम छाडि ग्रिह गयो कमंडल ॥
पब पिसान पगन भे तब ही ॥
जाइ बसे उतर दिसि सब ही ॥८३॥
डगी धरनि अंबरि घहराना ॥
बाज खुरन ते पब पिसाना ॥
अंध गुबार भयो बानन तन ॥
हाथ बिलोक्यो जात न आपन ॥८४॥
बिछूआ बान बज्र रन बरखत ॥
रिसि रिसि सुभट धनुख कह करखत ॥
तकि तकि बान प्रकोप चलावै ॥
भेदि त्रान तन परै परावै ॥८५॥
जब ही भए अमित रण जोधा ॥
बाढचो महा काल कै क्रोधा ॥
महा कोप करि बिसिख प्रहारे ॥
अधिक सत्रु छिन माझ संघारे ॥८६॥
रकत संबूह धरनि तब परा ॥
ता ते बहु दान्वन बपु धरा ॥

एक एक सर सभहि चलाए ॥
तिन ते असुर अनिक ह्वै धाए ॥८७॥
आए जितक तितक तह मारे ॥
बहे धरनि पर रकत पनारे ॥
तिन ते अमित असुरन बपु धरा ॥
हम ते जात बिचार न करा ॥८८॥
डगमग लोक चतुरदस भए ॥
असुरन साथ सकल भरि गए ॥
ब्रहमा बिसन सभै डरपाने ॥
महा काल की सरनि सिधाने ॥८९॥
इह बिधि सभै पुकारत भए ॥
जनु कर लूटि बनिक से लए ॥
त्राहि त्राहि हम सरन तिहारी ॥
सभ भै ते हम लेहु उबारी ॥९०॥
तुम हो सकल लोक सिरताजा ॥
गरबन गंज गरीब निवाजा ॥
आदि अकाल अजोनि बिना भै ॥
निरबिकार निरलंब जगत मै ॥९१॥
निरबिकार निरजुर अबिनासी ॥
परम जोग के ततु प्रकासी ॥
निरंकार नव नित्य सुयंभव ॥
तात मात जह जात न बंधव ॥९२॥
सत्रु बिहंड सुरिदि सुखदाइक ॥
चंड मुंड दानव के घाइक ॥
सति संधि सतिता निवासा ॥
भूत भविख भवान निरासा ॥९३॥
आदि अनंत अरूप अभेसा ॥
घट घट भीतर कीया प्रवेसा ॥
अंतर बसत निरंतर रहई ॥
सनक सनंद सनातन कहई ॥९४॥
आदि जुगादि सदा प्रभु एकै ॥
धरि धरि मूरति फिरति अनेकै ॥
सभ जग कह इह बिधि भरमाया ॥
आपे एक अनेक दिखाया ॥९५॥
घट घट महि सोइ पुरख ब्यापक ॥
सकल जीव जंतन के थापक ॥
जा ते जोति करत आकरखन ॥
ता कह कहत म्रितक जग के जन ॥९६॥
तुम जग के कारन करतारा ॥
घटि घटि की मति जाननहारा ॥
निरंकार निरवैर निरालम ॥
सभ ही के मन की तुहि मालम ॥९७॥
तुम ही ब्रहमा बिसन बनायो ॥
महा रुद्र तुम ही उपजायो ॥
तुम ही रिखि कसपहि बनावा ॥
दित अदित जन बैर बढावा ॥९८॥
जग कारन करुनानिधि स्वामी ॥
कमल नैन अंतर के जामी ॥
दया सिंधु दीनन के दयाला ॥
हूजै क्रिपानिधान क्रिपाला ॥९९॥

चरन परे इह बिधि बिनती करि ॥
त्राहि त्राहि राखहु हम धुरधर ॥
कह कह हसा बचन सुन काला ॥
भगत जान कर भयो क्रिपाला ॥१००॥
रछ रछ करि सबद उचारो ॥
सभ देवन का सोक निवारो ॥
निजु भगतन कह लियो उबारा ॥
दुसटन के संग करियो अखारा ॥१०१॥
करि करि कोप काल स्री तब ही ॥
रथ पर चड़ा ससत्र लै सभ ही ॥
सकल सत्रुअन के छै कारन ॥
सभ संतन के प्रान उबारन ॥१०२॥
प्रान और पानिप धनु राजा ॥
राखन चड़ा सेवकन काजा ॥
जा की धुजा बिखै राजित असि ॥
निरखि सत्रु जिह होत बिमन बसि ॥१०३॥
असिधुज अधिक कोप करि धायो ॥
बैरि ब्रिंद दल प्रगट खपायो ॥
साधुन की रछा करि लीनी ॥
सत्रु सैन तिल तिल खै कीनी ॥१०४॥
तिल तिल एक एक करि डारा ॥
गजी रथी बाजियन बिदारा ॥
तिह ते अमित असुर उठि धए ॥
घेरत महाकाल कह भए ॥१०५॥
मचत भयो जब ही रन दारुन ॥
कटि कटि गए बाज अरु बारुन ॥
जंबक गीध मासु लै गए ॥
रन तजि सुभटन भाजत भए ॥१०६॥
ससत्र साज कोपा तब काला ॥
धारन भयो भेस बिकराला ॥
बान अनेक कोप करि छोरे ॥
सत्रु अनेकन के सिर फोरे ॥१०७॥
हकाहकी माचा संग्रामा ॥
पठै दए बहु अरि म्रितु धामा ॥
बाज खुरन भू आकुल भई ॥
खट पट भूमि गगन उडि गई ॥१०८॥
एकै रहि गयो जबै पयाला ॥
ऐसा मचा जुध बिकराला ॥
महा काल कै भयो प्रसेता ॥
डारा भूमि पौछि करि तेता ॥१०९॥
भटाचारज रूप तब धरा ॥
बदन प्रसेत धरनि जो परा ॥
ढाढि सैन ढाढी बपु लयो ॥
करखा बार उचारत भयो ॥११०॥
जिह अरि काल क्रिपान प्रहारै ॥
इक ते दोइ पुरख कै डारै ॥
द्वै मनुखन पर करत प्रहारा ॥
द्वै ते होत छिनिक मो चारा ॥१११॥
बहुरि काल कीना घमसाना ॥
मारत भयो दैत बिधि नाना ॥

अधिक प्रसेत धरनि पर परियो ॥
भूम सैन ता ते बपु धरियो ॥११२॥
काढि क्रिपान धसौ हुंकारा ॥
तिन ते अमित गनन तन धारा ॥
ढोल पटहि इक ताल बजावै ॥
जंग मुचंग उपंग सुनावै ॥११३॥
गोमुख झाझर तूर अपारा ॥
ढोल म्रिदंग मुचंग नगारा ॥
बाजत भेर भभाकहि भीखन ॥
कसि धनु तजत सुभट सर तीछन ॥११४॥
भरि गे कुंड तहा स्रोनत तन ॥
प्रगटे असुर तवन ते अनगन ॥
मारि मारि मिलि करत पुकारा ॥
तिन ते प्रगटत असुर हजारा ॥११५॥
तिनहि काल जब धरनि गिरावै ॥
स्रोन पुलित ह्वै भूमि सुहावै ॥
ता ते अमित असुर उठि भजहीं ॥
बान क्रिपान सैहथी सजही ॥११६॥
अधिक कोप करि समुहि सिधारे ॥
सभै काल छिन इक मो मारे ॥
तिन ते स्रोनत परा सबूहा ॥
साजत भए असुर तब बियूहा ॥११७॥
दारुन मचा जुध तब झट पट ॥
उडिगे बाज खूरन भू खट पट ॥
ह्वै गे तेरह गगन अपारा ॥
एकै रहि गयो तहा पतारा ॥११८॥
भटाचारज इतै जसु गावै ॥
ढाढि सैन करखाहु सुनावै ॥
तिमि तिमि कालहि बढै गुमाना ॥
चहि चहि हने दुबहिया नाना ॥११९॥
तिन ते मेद मास जो पर ही ॥
रथी गजी बाजी तन धर ही ॥
केतिक भए असुर बिकरारा ॥
तिन के बरनन करौ सिधारा ॥१२०॥
एकै चरन आखि एकै जिनि ॥
भुजा अमित सहस द्वै कै तिन ॥
पाच पाच सै भुज के घने ॥
ससत्र असत्र हाथन मै बने ॥१२१॥
एक चरन एकै कीं नासा ॥
एक एक भुज भ्रमत अकासा ॥
अरध मूंड मुंडित केते सिर ॥
केसन धरे कितक धाए फिरि ॥१२२॥
एक एक मद को सर पीयै ॥
मानव खाइ जगत के जीयै ॥
दस सहंस भाग के भरि घट ॥
पी पी भिरत असुर रन चट पट ॥१२३॥

दोहरा ॥

बज्र बान बिछूआ बिसिख बरखै ससत्र अपार ॥
ऊच नीच कातर सुभट सभ कीने इक सार ॥१२४॥

चौपई ॥

इह बिधि भयो घोर संग्रामा ॥
लै लै अमित जुध का सामा ॥
महा काल कोपत भयो जब ही ॥
असुर अनेक बिदारे तब ही ॥१२५॥
महा काल जब ही रिसि भरा ॥
घोर भयानक आहव करा ॥
मारत भयो असुर बिकराला ॥
सिंघ नाद कीना ततकाला ॥१२६॥
कहूं मसान किलकटी मारै ॥
भैरव कहूं ठाढ भुंकारै ॥
जोगनि दैत अधिक हरखाने ॥
भूत सिवा बोलै अभिमाने ॥१२७॥
झालरि झाझर ढोल म्रिदंगा ॥
पटह नगारे मुरज मुचंगा ॥
डवरू गुडगुडी कहूं उपंगा ॥
नाइ नफीरी बजत सुरंगा ॥१२८॥
मुरली कहूं बासुरी बाजत ॥
कहूं उपंग म्रिदंग बराजत ॥
दुंदभि ढोल कहूं सहनाई ॥
बाजत भे लखि परी लराई ॥१२९॥
मुरज मुचंग बजै तुरही रन ॥
भेरन के भभकार करत गन ॥
हाथी घोरन के दुंदभि रन ॥
उसटन के बाजे रन मूरधन ॥१३०॥
केतिक सुभट सरन के मारे ॥
गिरत भए रन डील डिलारे ॥
जदपि प्रान समुह ह्वै दए ॥
कर ते तजत क्रिपानन भए ॥१३१॥
चलत भई सरिता स्रोनत तह ॥
जुध भयो काली असुरन जह ॥
सीस केस जह भए सिवारा ॥
स्रोन प्रवाह बहत हहरारा ॥१३२॥
बाज ब्रिछ जह बहे अनेकै ॥
बिन ब्रिण बीर रहा नहि एकै ॥
स्रोन भरे पट अधिक सुहाए ॥
चाचरि खेलि मनौ घर आए ॥१३३॥
सूरन के जह मूंड पखाना ॥
सोभित रंग भूम महि नाना ॥
बहे जात जह ब्रिछ तुरंगा ॥
बडे सैल से लसत मतंगा ॥१३४॥
मछरी तनकि अंगुरियै सोहै ॥
भुजा भुजंगन सी मन मोहै ॥
कहूं ग्राह से खड़ग झमकहि ॥
भक भक कर कहूं घाइ भभकहि ॥१३५॥

भुजंग छंद ॥

जहा बीर बैरी बडे घेरि मारे ॥

तहा भूत औ प्रेत नाचे मतवारे ॥
कहूं डाकनी झाकनी हाक मारै ॥
उठै नाद भारे छुटे चीतकारै ॥१३६॥
कहूं अंगुलै त्राण काटा बिराजै ॥
कहूं अंगुला काटि के रतन राजै ॥
कहूं टीक टाके कटै टोप सोहै ॥
कहूं बीर मारे गिरे भूमि मोहै ॥१३७॥
जिते स्रोन के बूंद भू पै परे है ॥
तिते दानवो रूप बाके धरे है ॥
हठी ओर चारौ बिखै आनि ढूके ॥
महा कोप कै मार ही मारि कूकै ॥१३८॥
जिते दैत आए तिते काल मारे ॥
बहे स्रोन के भूम हूं पै पनारे ॥
उठ दैत बाके बली ससत्र लै कै ॥
दुहूं ओर ते मार ही मारि कै कै ॥१३९॥
हठी बधि गोपा गुलित्रान बाके ॥
हठीले कटीले रजीले निसाके ॥
गदा हाथ लै के किते बीर गाजे ॥
लरे आनि कै पैग द्वै कै न भाजे ॥१४०॥
कहूं बीर मारे बिदारे परे है ॥
कहूं खेत मै खिंग खत्री जरे है ॥
कहूं मत दंती कहूं उसट मारे ॥
बिराजै कहूं नगन खंडे कटारे ॥१४१॥
कहूं खोल खाडे गिरे भूमि सोहै ॥
कहूं बीर बानी परे भूमि मोहै ॥
कहूं स्वार मारे फिरै बाज छूटै ॥
किते छैल छोरे किते दुसट लूटै ॥१४२॥

चौपई ॥

इह बिधि तहा भयो संग्रामा ॥
निरखत देव दानवी बामा ॥
केतिक करी करन बिनु भए ॥
प्रापत दुसट निधन कह गए ॥१४३॥
मारहि मारि महा सूर कूकहि ॥
काढि काढि दातन कह ढूकहि ॥
बाजहि ढोल म्रिदंग नगारे ॥
जंग मचंग उपंग जुझारे ॥१४४॥
जिह तन काल बिसिख की मारै ॥
ता कह तही चूर करि डारै ॥
जा कर कोपि क्रिपान प्रहारत ॥
तिह का मूंड काटि ही डारत ॥१४५॥
इह बिधि भयो भयानक जुधा ॥
उपजा कछुक काल के क्रधा ॥
केसन ते गहि असुर पछारे ॥
काढि क्रिपान एक हनि डारे ॥१४६॥
मारे अधिक ताहि दानव रन ॥
टूक टूक ह्वैगे तिन के तन ॥
तऊ मार ही मारि पुकारत ॥
पाछे पाव एक नहि डारत ॥१४७॥
केतिक घूमि गिरत है घाइल ॥

परत भए भू तर ह्वै हाइल ॥
तऊ जुध को त्यागि न भजही ॥
जब लगि दुसट प्रान नहि तजही ॥१४८॥
गुरज गोफनै कितक संभारै ॥
केतिक कसि कसि बान प्रहारै ॥
किते तमकि रन तुरी नचावै ॥
चटपट सुभट जूझि रन जावै ॥१४९॥
कितक तमकि रन तुरी नचावत ॥
मारि मारि धुनि कितक उघावत ॥
मंडहि महा काल सौ जुधा ॥
ह्वै ह्वै अधिक चित महि क्रुधा ॥१५०॥
जेतिक सुभट कोपि करि आए ॥
महा काल तेते ई खपाए ॥
तिन को मेद मास भूअ परा ॥
बहु असुरन ता ते बपु धरा ॥१५१॥
महा काल ते दए खपाइ ॥
स्रोनत सो प्रिथवी रही छाइ ॥
तिह ते अमित असुर उठि ढूके ॥
मारहि मारि दसौ दिसि कूके ॥१५२॥
केतिक की बाहन कटि डारा ॥
करे रुंड बिनु मुंड हजारा ॥
केतिक चीर अधौ अध डारे ॥
नाचत भूत प्रेत मतवारे ॥१५३॥
जे तिन के सिरि बही क्रिपानै ॥
अरध अरध ह्वै जूझे ज्वानै ॥
गज बाजी लोटत कहूं भू पर ॥
सुंभन सबद सुना अवनी तर ॥१५४॥
गिरि गिरि परे कहूं घायल रन ॥
भाजि चले कई होइ बिमन मन ॥
झमकत कही असिन की धारा ॥
भभकत रुंड मुंड बिकरारा ॥१५५॥

भुजंग छंद ॥

तहा जुध माचा महा बीर खेतं ॥
बिदारे परे बीर ब्रिंदं बिचेतं ॥
कहूं डामरूं डह डहा सबद बाजै ॥
सुने दीह दानवान को द्रप भाजै ॥१५६॥
कहूं संख भेरी बजै ताल भारे ॥
कहूं बेन बीना पनो औ नगारे ॥
कहूं नाइ नाफीरियै नाद ऐसे ॥
बजै घोर बाजा प्रलै काल जैसे ॥१५७॥
कहूं छैन तूरै नगारै म्रिदंगै ॥
कहूं बासुरी बीन बाजै सुरंगै ॥
कहूं बगल तारंग बाजे बजावै ॥
कहूं बारता रंग नीके सुहावै ॥१५८॥
कहूं झाझ बाजै कहूं ताल ऐसे ॥
कहूं बेनु बीना प्रलै काल जैसे ॥
कहूं बासुरी नाइ नादै म्रिदंगै ॥
कहूं सारंगी औ मुचंगै उपंगै ॥१५९॥
कहूं गरजि कै कै भुजा भूप ठोकै ॥

कहूं बीर बीरान की राह रोकै ॥
किते असत्र औ ससत्र लै लै चलावै ॥
किते चरम लै चोट ता की बजावै ॥१६०॥
कहूं रुंड सोहै कहूं मुंड बाके ॥
कहूं बीर मारे बिदारे निसाके ॥
कहूं बाज मारे गजाराज जूझे ॥
कहूं उसट काटे नही जात बूझे ॥१६१॥
कहूं चरम बरमै गिरे भूमि ऐसे ॥
बगे ब्रयोति डारे समै सीत जैसे ॥
गए जूझि जोधा जगे जोर जंगै ॥
मनो पान कै भंग सोए मलंगै ॥१६२॥
किते डहडहा सबद डवरू बजावै ॥
किते राग मारू खरे खेत गावै ॥
हसै गरजि ठोकै भुजा पाट फाटै ॥
किते बीर बीरान के मूंड काटै ॥१६३॥
कहूं चंचला चारु चीरै बनै कै ॥
बरै ज्वानि जोधा जुझियो ज्वान धै कै ॥
कहूं बीर बीरान के पाव पेलैं ॥
महा जंग जोधा लगे सुध सेलैं ॥१६४॥
कहूं जछनी किंन्रनी आनि कै कै ॥
कहूं गंध्रबी देवनी मोद ह्वै कै ॥
कहूं अछरा पछरा गीत गावै ॥
कहूं चंचला अंचला को बनावै ॥१६५॥
कहूं देव कंन्या नचै ताल दै कै ॥
कहूं दैत पुत्री हसै मोद ह्वै कै ॥
कहूं चंचला अंचला को बनावै ॥
कहूं जछनी किंन्रनी गीत गावै ॥१६६॥
लरै आनि जोधा महा तेज तै कै ॥
गिरे पाक साहीद याकीन ह्वै कै ॥
कहूं बीर बाके नचावै तुरंगै ॥
कहूं जंग जोधा बिराजै उतंगै ॥१६७॥
कहूं बीर बानैत बीरे उठावैं ॥
कहूं खेत मै खिंग खत्री नचावैं ॥
कहूं कोप कै कै हठी दात चाबैं ॥
किते मूंछ ऐंठै किते पाग दाबैं ॥१६८॥
दुहूं ओर गाजे जबै छत्रधारी ॥
मचो लोह गाड़ो परी मारि भारी ॥
महा कोप कै बीर बाजी उचकै ॥
लगे देह मो घाइ गाड़े भभकै ॥१६९॥
कहूं कुंडलाकार मुंडै बिराजै ॥
लखे मुंड मालाहु के मुंड लाजै ॥
कहूं घूंम घूमै परे बीर भारी ॥
मनो सिध्रय बैठे लगे जोग तारी ॥१७०॥
तहा स्रोन की कूल धारी बिराजै ॥
लखै असट नद्रयान को द्रप भाजै ॥
तहा ब्रिंद बाजी बहे नक्र जैसे ॥
लसै मत दंती महा सैल कैसे ॥१७१॥
धुजा ब्रिछ ता मो बहे जात ऐसे ॥
लसै डंड पत्री बिना पत्र जैसे ॥
कहूं छत्र ता मो बहे जात काटे ॥

मनो फेन से बारि मै बसत्र फाटे ॥१७२॥
कहूं बाह काटी बहे जात ऐसे ॥
मनो पंच बक्रतान के नाग जैसे ॥
चड़े बीर बाजी बहे जात मारे ॥
सनाहीन के स्वार पारै पधारे ॥१७३॥
कहूं खोल खंडे बहे जात मारे ॥
मनो एकठे कछ मछ ह्वै पधारे ॥
तहा पाग छूटे बहे जात ऐसे ॥
मनो तीस ब्रयामान के नाग जैसे ॥१७४॥
झखी झुंड जा मै कटारी बिराजै ॥
लखे खिंग बाके बली नाग लाजै ॥
कहूं चरम काटे गिरे ससत्र असत्रै ॥
कहूं बीर बाजी बहे जात बसत्रै ॥१७५॥
हलाचाल कै कै हठी दैत ढूके ॥
चहूं ओर गाजे महा काल जू के ॥
किते कोप कै ससत्र असत्रै चलावै ॥
किते संख औ भीम भेरी बजावै ॥१७६॥
महा फूलि फीली नगारे बजै कै ॥
चले दुंदभी ताजियौ के सुनै कै ॥
मचे कोप कै सु उसटी दमामे ॥
मनो बाज टुटे लखे लाल तामे ॥१७७॥
किते बीर बाके धरे लाल बाने ॥
किते स्याम औ सेत कीने निसाने ॥
किते हरति यौ पीत बाने सुहाए ॥
हठी चुंग बाधे चले खेत आए ॥१७८॥
किते ढाल ढापै किते चोट ओटै ॥
सभै आनि जूझै भजै कोट कोटै ॥
किते सूल औ सैहथी खिंग खेलै ॥
किते पास औ परस लै पाव पेलै ॥१७९॥
किते पाखरै डारि कै ताजियौ पै ॥
चड़ै चारु जामै किते बाजियौ पै ॥
किते मद दंतीनियौ पै बिराजै ॥
मनो बारणेसे चड़े इंद्र लाजै ॥१८०॥
किते खचरारोह बैरी बिराजै ॥
किते गरधभै पै चड़े सूर गाजै ॥
किते दानवौ पै चड़े दैत भारे ॥
चहूं ओर गाजे सु दै कै नगारे ॥१८१॥
किते महिखी पै चड़े दैत ढूके ॥
किते सूकरा स्वार ह्वै आनि झूके ॥
किते दानवो पै चड़े दैत भारे ॥
चहूं ओर ते मार मारै पुकारै ॥१८२॥
किते सरप असवार है कै सिधाए ॥
किते स्वार बघ्रयार ह्वै दुसट आए ॥
किते चीतियौ पै चड़े कोप कै कै ॥
किते चीतरो पै चड़े तेज तै कै ॥१८३॥
किते चाकचुंध्र चड़े काक बाही ॥
अठूहान कौ स्वार केते सिपाही ॥
किते बीर बानी चड़े ब्रिध गिधै ॥
मनो ध्यान लागे लसै सुध सिधै ॥१८४॥
हठी बधि गोपा गुलित्रान बाके ॥

बरजीले कटीले हठीले निसाके ॥
महा जुध माली भरे कोप भारे ॥
चहूं ओर तै अभ्र ज्यो चीतकारे ॥१८५॥
बडे दात काढे चले कोपि भारे ॥
लहे हाथ मै पब पत्री उपारे ॥
किते सूल सैथी सूआ हाथ लीने ॥
मंडे आनि मारू महा रोस कीने ॥१८६॥
हठी हाक हाकै उठावै तुरंगै ॥
महा बीर बाके जगे जोर जंगै ॥
सूआ साग लीने अति अत्री धरत्री ॥
मचे आनि कै कै छके छोभ छत्री ॥१८७॥
कहूं बीर बीरै लरै ससत्रधारी ॥
मनो काछ काछे नचै न्रितकारी ॥
कहूं सूर सागै पुऐ भाति ऐसे ॥
चड़ै बास बाजीगरै ज्वान जैसे ॥१८८॥
कहूं अंग भंगै गिरे ससत्र असत्रै ॥
कहूं बीर बाजीन के बरम बसत्रै ॥
कहूं टोप टाके गिरे टोप टूटे ॥
कहूं बीर अभ्रान की भाति फूटे ॥१८९॥

चौपई ॥

इह बिधि बीर खेत बिकराला ॥
माचत भयो आनि तिह काला ॥
महा काल कछुहू तब कोपे ॥
पुहमी पाव गाड़ करि रोपे ॥१९०॥
मोहनासत्र केते मोहित करि ॥
बरुणासत्र भे प्रान कितन हरि ॥
पावकासत्र भे अधिक जराए ॥
अमित सुभट म्रित लोक पठाए ॥१९१॥
जा पर महा काल असि झारा ॥
एक सुभट ते द्वै करि डारा ॥
जौ द्वै नर पर टुक असि धरा ॥
चारि टूक तिन द्वै कै करा ॥१९२॥
केतिक परे सुभट बिललाही ॥
जंबुक गिध मासु लै जाही ॥
भैरव आनि दुहूं भभकारै ॥
कहूं मसान किलकटी मारै ॥१९३॥
केतिक सुभट आनि ही ढूकै ॥
मारहि मारि दसो दिसि कूकै ॥
महा काल पर जे ब्रिण करही ॥
कुंठत होइ धरनि गिर परही ॥१९४॥
बहुरि कोप करि असुर अपारा ॥
अ महा काल कह करत प्रहारा ॥
ते वै एक रूप ह्वै जाही ॥
महा काल के मध्य समाही ॥१९५॥
जिमि कोई बारि बारि पर मारै ॥
होत लीन तिह माझ सुधारै ॥
पुनि कोई ताहि न सकत पछानी ॥
आगिल आहि कि मोरा पानी ॥१९६॥
इह बिधि भए ससत्र जब लीना ॥

असुरन कोप अमित तब कीना ॥
कापत अधिक चित मो गए ॥
ससत्र असत्र लै आवत भए ॥१९७॥
ज्वाल तजी करि कोप निसाचर ॥
तिन ते भए पठान धनुख धर ॥
पुनि मुख ते उलका जे काढे ॥
ता ते मुगल उपजि भे ठाढे ॥१९८॥
पुनि रिसि तन तिन स्वास निकारे ॥
सैयद सेख भए रिस वारे ॥
धाए ससत्र असत्र कर लै कै ॥
तमकि तेज रन तुरी नचै कै ॥१९९॥
खान पठान ढुके रिसि कै कै ॥
कोपि क्रिपान नगन कर लै कै ॥
महा काल कौ करत प्रहारा ॥
एक न उपरत रोम उपारा ॥२००॥
अमित खान करि कोप सिधारे ॥
मद करि भए सकल मतवारे ॥
उमडे अमित मलेछन के गन ॥
तिन के नाम कहत तुम सौ भनि ॥२०१॥
नाहर खान झड़ाझड़ खाना ॥
खान निहंग भड़ंग जुआना ॥
और झड़ंग खान रन धायो ॥
अमित ससत्र कर लए सिधायो ॥२०२॥
बैरम खान बहादुर खाना ॥
बलवंड खान बडो सुर ग्याना ॥
रुसतम खान कोप करि चलो ॥
लीने अमित सैन संग भलो ॥२०३॥
हसन खान हुसैन खान भन ॥
खान मुहंमद लै मलेछ गन ॥
समस खान समसरो खाना ॥
चले पीस करि दात जुआना ॥२०४॥
आवत ही कीए बान प्रहारा ॥
महा काल कर चहत संघारा ॥
महा काल सर चलत निहारे ॥
टूक सहंस्र प्रिथी करि डारे ॥२०५॥
डारे सत सत टूक प्रिथी करि ॥
महा काल करि कोप अमित सर ॥
इक इक सर तन बहुरि प्रहारे ॥
गिरे पठान सु भूमि मंझारे ॥२०६॥
कटि निहंगक राखा द्वै धर ॥
मारे अमित झड़ाझड़ खा सर ॥
खान भड़ंग बहुरि रन मारे ॥
देखत चारण सिध हजारे ॥२०७॥
नाहर खा गैरत खा मारा ॥
बलवंड खा का सीस उतारा ॥
सेर खान कटि ते कटि डारियो ॥
बैरम खा गहि केस पछारियो ॥२०८॥
पुनि करि कोप बहादुर खाना ॥
छाडे तबै बिसिख रिसि नाना ॥
महा काल कुप बान प्रहारो ॥

गिरियो कहा लौ लरै बिचारो ॥२०९॥
इह बिधि हनी पठानी सैना ॥
मुगलन परा मधि कछु भै ना ॥
छिनकिक मो बहु सुभट गिराए ॥
जानु इंद्र परबत से घाए ॥२१०॥
बैरम बेग मुगल कौ मारा ॥
यूसफ खा कटि ते कटि डारा ॥
ताहिर बेग टिका संग्रामा ॥
अंत गिरियो भिरि कै द्वै जामा ॥२११॥
नूरम बेग बहुरि रिसि मारियो ॥
आदिल बेगहि बहुरि प्रजारियो ॥
त्रासित भई मलेछी सैना ॥
आयुध सका हाथ कोई लै ना ॥२१२॥
भजे पठान मुगल हूं भाजे ॥
सैयद आनि दसौ दिसि गाजे ॥
फिरे पठान बिमन जे भए ॥
बहुरि धनुख टंकोरत गए ॥२१३॥
आवत ही हुसैन खा जूझा ॥
हसन खान सनमुख ह्वै लूझा ॥
बहुरि मुहंमद खा लरि मरियो ॥
जानक सलभ दीप महि परियो ॥२१४॥
सैद हुसैन कोप करि गरजो ॥
जाफर सैद रहा नहि बरजो ॥
लोह प्रजंत बान तनि मारे ॥
भए लीन नहि बहुरि निहारे ॥२१५॥
बहुरो अमित कोप कह करि कै ॥
छाडे बिसिख धनुख कौ धरि कै ॥
छूटत भए सलभ की जिमि सर ॥
लीन भए नहि लखे द्रिगन करि ॥२१६॥
इह बिधि मारि सैयदी सैना ॥
सेख फौज भाजी बिनु चैना ॥
महा काल जब भजे निहारे ॥
बिसिख कोप नहि ताहि प्रहारे ॥२१७॥
बहुरौ भिरे सेख भरि लाजा ॥
लै लै ससत्र असत्र सभ साजा ॥
जिमि म्रिग बध म्रिगपति कौ तकही ॥
झखि झखि गिरत मारि नहि सकही ॥२१८॥
सेख फरीद हना ततकाला ॥
सेख उजैन हना बिकराला ॥
सेख अमानुलह पुनि मारियो ॥
सेख वली को सैन संघारियो ॥२१९॥
तिल तिल पाइ सुभट कहूं करे ॥
चरम बरम रन मो कहूं झरे ॥
भखि भखि उठै सुभट कहूं क्रुधा ॥
दारुण मचियो ऐस तह जुधा ॥२२०॥
कहूं कबंध फिरत सिर बिना ॥
कहूं सुभट गहि दातन त्रिना ॥
रछ रछ कहि ताहि पुकारै ॥
महा काल जिनि हमै संघारै ॥२२१॥
कहूं आनि डाकिनि डहकारै ॥

कहूं मसान किलकटी मारै ॥
भूत पिसाच नचे बैताला ॥
बरत फिरत बीरन कह बाला ॥२२२॥
एकै अछ एक ही बाहा ॥
एक चरन अरु अरध सनाहा ॥
इह बिधि सुभट बिकट हनि डारे ॥
पवन बली जनु रूख उखारे ॥२२३॥
जिह अरि काल क्रिपान बही सिर ॥
तिन के रही न जीव करा फिरि ॥
जा कह काल खड़ग छ्वै गया ॥
अरधै अरध छिनिक महि भया ॥२२४॥
बही जाहि सिर सरकि सरोही ॥
ता का रहा सीसु ह्वै दोही ॥
जा कौ बान काल का लागा ॥
ता के प्रान बान लै भागा ॥२२५॥
मारू बजत दोऊ दिसि ऐसो ॥
जानुक प्रलै काल के ऐसे ॥
गोमुख झाझर तूर अपारा ॥
ढोल म्रिदंग मुचंग हजारा ॥२२६॥
घोर आयुधन इह बिधि भयो ॥
जिह को पार न किनहूं लयो ॥
जेतिक असुर मलेछुपजाए ॥
महा काल छिन बीच खपाए ॥२२७॥
बहुरि असुर क्रुधत अति भयो ॥
अमित असुर उपराजि सु लयो ॥
धूली करन बिदित केसी भन ॥
घोर दाड़ अरु स्रोनत लोचन ॥२२८॥
गरधब केतु महिख धुज नामा ॥
अरुन नेत्र उपजा संग्रामा ॥
असिधुज निरखि असुर उपजे रन ॥
मारत भयो दानवन के गन ॥२२९॥
असिधुज कोप अधिक कह करा ॥
सैन दानवन को रन हरा ॥
भाति भाति तन ससत्र प्रहारे ॥
तिल तिल पाइ सुभट कटि डारे ॥२३०॥
इह बिधि हनी सैन असिधुज जब ॥
कापत भयो असुर जिय मो तब ॥
अमित असुर रन और प्रकासे ॥
तिन को कहत नाम बिनु सासे ॥२३१॥
गीध धुजा काक धुज राछस ॥
उलू केतु बीयो बड राछस ॥
असिधुज के रन समुहि सिधाए ॥
मारि मारि चहूं ओर उघाए ॥२३२॥
बिसिखन ब्रिसटि करी कोपहि करि ॥
जलधर ऐस बडे भूधर पर ॥
ससत्र असत्र करि कोप प्रहारे ॥
चटपट सुभट बिकटि कटि डारे ॥२३३॥
हुअं सबद असिधुजहि उचारा ॥
तिह ते आधि ब्रयाधि बपु धारा ॥
सीत ज्वर अर उसन ताप भने ॥

छई रोग अरु संन्रयपात गन ॥२३४॥
बाइ पित्रय कफ उपजत भए ॥
ता ते भेद अमित ह्वै गए ॥
नाम तिनै गन प्रगट सुनाऊ ॥
अयुर बेदियन सभन रिझाऊ ॥२३५॥
आम पात अर स्रोनत पात ॥
अरध सिरा अरु ह्रिदै संघात ॥
प्रान बाइ आपान बाइ भनि ॥
दंत रोग अरु दाड़ पीड़ गन ॥२३६॥
सूखा जर तेइया चौथाया ॥
असट दिवसयो अरु बीसाया ॥
डेढ मासिया पुनि तप भयो ॥
दात काढ दैतन पर धयो ॥२३७॥
फीलपाव पुनि जानू रोगा ॥
उपजा देन दुसट दल सोगा ॥
खई सु बादी भई मवेसी ॥
पाड रोग पीनस कटि देसी ॥२३८॥
चिनगि प्रमेव भगिंद्र दखूत्रा ॥
पथरी बाइ फिरंग अधनेत्रा ॥
गलत कुसट उपजा दुसटन तन ॥
सेत कुसट केतिन के भयो भन ॥२३९॥
केते सत्रु सूल ह्वै मरे ॥
केते आंत रोग ते टरे ॥
संग्रहनी संग्रह दुसट किय ॥
जीयन को पुनि नाम न तिन लिय ॥२४०॥
केते उपज सीतला मरे ॥
केते अगिनि बाव ते जरे ॥
भरम चित केते ह्वै मरे ॥
उदर रोग केते अरि टरे ॥२४१॥
जब असिधुज अस रोग प्रकासे ॥
अधिक सत्रु तापत ह्वै त्रासे ॥
जा के तन गन दई दिखाई ॥
तिनौ जीयत की आस चुकाई ॥२४२॥
केतिक दुसट ताप तन तपै ॥
केतिक उदर रोग ह्वै खपै ॥
कितकन आनि कापनी चढी ॥
केतिक बाइ पित तन बढी ॥२४३॥
उदर बिकार किते मरि गए ॥
तापति कितक ताप तन भए ॥
कितकन संन्रयपात ह्वै गयो ॥
केतिन बाइ पित कफ भयो ॥२४४॥
केतिक मरे मूंड की पीरा ॥
कितक बाइ ते भए अधीरा ॥
केतिक छई रोग छै कियो ॥
केतन नास बाइ ते थियो ॥२४५॥
दाड़ पीड़ केते मरि गए ॥
बाइ भए बवरे कई भए ॥
जिन कौ आनि रोग तन ग्रासा ॥
ता का प्रान देह तजि नासा ॥२४६॥

चौपई ॥

कहा लगे मै बरन सुनाऊ ॥
ग्रंथ बढन ते अति डरपाऊ ॥
इह बिधि भयो दानवन नासा ॥
खड़गकेतु असु किया तमासा ॥२४७॥
इह बिधि तन दानव जब मारे ॥
पुनि असिधुज अस मंत्र बिचारे ॥
जो इन को ह्वै है रन आसा ॥
मुझै दिखै है कवन तमासा ॥२४८॥
तिन कह दीन ऐस बरदाना ॥
तुमते होहि अवखधी नाना ॥
जिह के तन कौ रोग संतावै ॥
ताहि अवखधी बेग जियावै ॥२४९॥
इह बिधि दयो जबै बरदाना ॥
मिरतक हुते असुर जे नाना ॥
तिन ते अधिक अवखधी निकसी ॥
अपने सकल गुनन कह बिगसी ॥२५०॥
जा के देह पित्रय दुख देई ॥
सो भखि जरी बात की लेई ॥
जिह दानव कौ बाइ संतावै ॥
सो लै जरी पित्रय की खावै ॥२५१॥
जा की देहिह कफ दुख ल्यावै ॥
सो लै कफनासनी चबावै ॥
इह बिधि असुर भए बिनु रोगा ॥
माडत भए जुध तजि सोगा ॥२५२॥
अगनि असत्र छाडा तब दानव ॥
जा ते भए भसम बहु मानव ॥
बारुणासत्र तब काल चलायो ॥
सकल अगनि को तेज मिटायो ॥२५३॥
राछस पवन असत्र संधाना ॥
जा ते उडत भए गन नाना ॥
भूधरासत्र तब काल प्रहारा ॥
सभ सिवकन को प्रान उबारा ॥२५४॥
मेघ असत्र छोरा पुनि दानव ॥
भीज गए जिह ते सभ मानव ॥
बाइ असत्र लै काल चलायो ॥
सभ मेघन ततकाल उडायो ॥२५५॥
राछसासत्र राछसहि चलायो ॥
बहु असुरन ता ते उपजायो ॥
देवतासत्र छोरा तब काला ॥
असुर सैन कूटा दरहाला ॥२५६॥
जछ अतस्र तब असुर चलायो ॥
गंध्रबासत्र लै काल बगायो ॥
ते दोऊ आपु बीर लरि मरे ॥
टुक टुक ह्वै भू पर पुनि झरे ॥२५७॥
चारणासत्र जब असुर संधाना ॥
चारण उपज ठाढ भै नाना ॥
सिध असत्र असिधुज तब छोरा ॥
ता ते मुख सत्रन को तोरा ॥२५८॥

उरग असत्र लै असुर प्रहारा ॥
ता ते उपजे सरप अपारा ॥
खगपति असत्र तजा तब काला ॥
भछि गए नागन दरहाला ॥२५९॥
बिछू असत्र दानवहि चलायो ॥
बहु बिछूयन ता ते उपजायो ॥
लसिटका सत्र असिधुज तब छोरा ॥
सभ ही डाक अठूहन तोरा ॥२६०॥
ससत्र असत्र अस असुर चलाए ॥
खड़ग केतु पर कछु न बसाए ॥
असत्रन साथ असत्रु बहु छए ॥
जा कौ लगे लीन ते भए ॥२६१॥
लीन ह्वै गए असत्र निहारे ॥
हाइ हाइ करि असुर पुकारे ॥
महा मूढ फिरि कोप बढाई ॥
पुनि असिधुज तन करी लराई ॥२६२॥
इह बिधि भयो घोर संग्रामा ॥
निरखत देव दानवी बामा ॥
धंन्य धंन्य असिधुज कौ कहै ॥
दानव हेरि मोन ह्वै रहै ॥२६३॥

भुजंग छंद ॥

महा रोस कै कै हठी फेरि गाजे ॥
चहूं ओर ते घोर बादित्र बाजे ॥
प्रणो संख भेरी बजे ढोल ऐसे ॥
प्रलै काल के काल की रात्रि जैसे ॥२६४॥
बजे संख औ दानवी भेर ऐसी ॥
कहै आसुरी ब्रित की क्रित जैसी ॥
कहूं बीर बाजंत बाके बजावै ॥
मनो चित को कोप भाखे सुनावै ॥२६५॥
किते बीर बज्रान के साथ पेले ॥
भरे बसत्र लोहू मनो फाग खेले ॥
मूए खाइ कै दुसट केते मरूरे ॥
सोए जान मालंग खाए धतूरे ॥२६६॥
किते टूक टूके बली खेत होए ॥
मनो खाइ कै भंग मालंग सोए ॥
बिराजै कटे अंग बसत्रो लपेटे ॥
जुमे के मनो रोज मै गौंस लेटे ॥२६७॥
कहूं डाकनी झाकनी हाक मारै ॥
उठै नाद भारे छुटै चीतकारै ॥
कहूं घूमि भूमै परे खेत बाजी ॥
निवाजे झुकै है मनौ काबि काजी ॥२६८॥
हठी बधि गोपा गुलित्राण बाके ॥
चले कोप कै कै हठीले निसाके ॥
कहूं चरम बरमै गिरे मरम छेदे ॥
कहूं मास के गिध लै गे लबेदे ॥२६९॥
कहूं बीर बाजी बजंत्री झरे हैं ॥
कहूं खंड खंड ह्वै सिपाही मरे हैं ॥
कहूं मत दंती परे हैं प्रहारे ॥
गिरे भूमि पबै मनो बद्र मारे ॥२७०॥

सवैया ॥
काढि क्रिपान जबै गरजियो लखि देव अदेव सभे डरपाने ॥
आनि प्रलै दिन सो प्रगटचो सित साइक लै असिकेतु रिसाने ॥
फूक भए मुख सूखि गई थुकि जोरि हथियार करोरि पराने ॥
मानहु सावन के बदरा सुनि मारुति की घहरै भहराने ॥२७१॥
डाकि अचै कहूं स्रोन डकाडक प्रेत पिसाच कहूं किलकारैं ॥
बाजत है कहूं डौरू डमाडम भैरव भूत कहूं भभकारैं ॥
जंग म्रिदंग उपंग बजै कहूं भीखन सी रन भेरि भकारैं ॥
आनि अरै कहूं बीर चटापट कोपि कटाकट घाइ प्रहारैं ॥२७२॥
ऐसी बिलोकि कै मारि मची भट कोप भरे अरि ओर चहैं ॥
बरछे अरु बान कमान क्रिपान गदा बरछी तिरसूल गहैं ॥
अरि पै अरराइ कै घाइ करै न टरै बहु तीर सरीर सहैं ॥
पुरजे पुरजे तन ते रन मै दुख ते तन मै मुख ते न कहैं ॥२७३॥
अड़िल ॥
पीस पीस करि दात दुबहिया धावहीं ॥
बज्र बान बिछूअन के बिसिख लगावहीं ॥
टूक टूक है मरत न पगु पाछे टरैं ॥
हो चटपट आनि बरंगनि तिन पुरखन बरैं ॥२७४॥
चाबि चाबि करि ओठ दुबहिया रिसि भरे ॥
टूक टूक ह्वै गिरे न पगु पाछे परे ॥
जूझि जूझि रन गिरत सुभट समुहाइ कै ॥
हो बसे स्वरग मो जाइ परम सुख पाइ कै ॥२७५॥
सवैया ॥
कोप घना करि कै असुरारदन काढि क्रिपानन कौ रन धाए ॥
हाकि हथियारन लै उमडे रन कौ तजि कै पगु द्वै न पराए ॥
मार ही मारि पुकारि हठी घन ज्यों गरजे न कछू डर पाए ॥
मानहु सावन की रितु मै घन बूंदन ज्यों सर त्यों बरखाए ॥२७६॥
धूल जटायु ते अदिक सूर सभै उमडे कर आयुध लै कै ॥
कोप क्रिपान लए कर बान महा हठ ठानि बडी रिसि कै कै ॥
चौपि चड़े चहूं ओरन ते बरियार बडे दोऊ नैन तचै कै ॥
आनि अरे खड़गाधुज सौ न चले पगु द्वै बिमुखाहव ह्वै कै ॥२७७॥
भारी प्रताप भरे मन मै भट धाइ परे बिबिधायुध लीने ॥
कौच क्रिपान कसे सभ साजन ओठन चाबि बडी रिसि कीने ॥
आछे कुलान बिखै उपजे सभ कौनहूं बात बिखै नहि हीने ॥
जूझि गिरे खड़गाधुज सौ लरि स्रोनित सो सिगरे अंग भीने ॥२७८॥

चौपई ॥

इह बिधि कोप काल जब भरा ॥
दुसटन को छिन मै बधु करा ॥
आपु हाथ दै साध उबारे ॥
सत्रु अनेक छिनक मो टारे ॥२७९॥
असिधुज जू कोपा जब ही रन ॥
मारत भयो सत्रुगन चुनि चुनि ॥
सभ सिवकन कह लिओ उबारा ॥
दुसट गठन को करा प्रहारा ॥२८०॥
इह बिधि हने दुसट जब काला ॥
गिरि गिरि परे धरनि बिकराला ॥
निज हाथन दै संत उबारे ॥
सत्रु अनेक तनिक महि मारे ॥२८१॥
दानव अमित कोप करि ढूके ॥

मारहि मारि दसौ दिसि कूके ॥
बहुरि काल कुपि खड़ग संभारा ॥
सत्रु सैन पल बीच प्रहारा ॥२८२॥
बहुरि कोप करि दुसट अपारा ॥
महा काल कौ चहत संघारा ॥
जिमि गगनहि कोई बान चलावै ॥
ताहि न लगे तिसी पर आवै ॥२८३॥
भाति भाति बादित्र बजाइ ॥
दानव निकट पहूचे आइ ॥
महा काल तब बिरद संभारो ॥
संत उबारि दोखियन मारो ॥२८४॥
खंड खंड करि दानव मारे ॥
तिल तिल प्राइ सकल करि डारे ॥
पावकासत्र कलि बहुरि चलायो ॥
सैन असुर को सगल गिरायो ॥२८५॥
बरुणासत्र दानव तब छोरा ॥
जा ते पावकासत्र कह मोरा ॥
बास्वासत्र तब काल चलायो ॥
इंद्र प्रत्रछ ह्वै जुध मचायो ॥२८६॥
दानव निरखि ठाढ रन बासव ॥
पीवत भयो कूप द्वै आसव ॥
करि कै कोप अतुल अस गरजा ॥
भूंमि अकास सबद सुनि लरजा ॥२८७॥
अमित बासवहि बान प्रहारे ॥
बरम चरम सभ भेदि पधारे ॥
जनुक नाग बाबी धसि गए ॥
भूतल भेदि पतार सिधए ॥२८८॥
अमित रोस बासव तब किया ॥
धनुख बान कर भीतर लिया ॥
अमित कोप करि बिसिख प्रहारे ॥
फोरि दानवन पार पधारे ॥२८९॥
दानव अधिक रोस करि धाए ॥
देव पूज रन माझ भजाए ॥
भजत देव निरखे कलि जब ही ॥
ससत्र असत्र छोरे रन तब ही ॥२९०॥
बानन की बरखा कलि करी ॥
लागत सैन दानवी जरी ॥
सत्रु अनेक निधन कह गए ॥
बहुरि उपजि बहु ठाढे भए ॥२९१॥
बहुरि काल कुपि बान प्रहारे ॥
बेधि दानवन पार पधारे ॥
दानव तबै अधिक करि क्रुधा ॥
मंडा महा काल तन जुधा ॥२९२॥
महा काल तब बान प्रहारे ॥
दानव एक एक करि मारे ॥
तिन ते बहु उपजित रन भए ॥
महा काल के सामुहि सिधए ॥२९३॥
जेतिक धए तितक कलि मारे ॥
रथी गजी तिल तिल करि डारे ॥
तिनते उपजि ठाढ भे घने ॥

रथी गजी बाजी सुभ बने ॥२९४॥
बहुरि काल करि कोप प्रहारे ॥
दैत अनिक म्रितु लोक पधारे ॥
महा काल बहुरौ धनु धरा ॥
सौ सौ बान एक इक हरा ॥२९५॥
सौ सौ एक एक सर मारा ॥
सौ सौ गिरी स्रोन की धारा ॥
सत सत असुर उपजि भे ठाढे ॥
असी गजी कौची बल गाढे ॥२९६॥
रूप हजार हजार धारि कलि ॥
गरजत भयो अतुल करि कै बल ॥
कह कह हसा काल बिकराला ॥
काढे दात तजत मुख ज्वाला ॥२९७॥
एक एक रन बान चलायो ॥
सहस सहस दानव कह घायो ॥
केतिक सुभट दाड़ गहि चाबे ॥
केतिक सुभट पाव तर दाबे ॥२९८॥
केतक पकरि भछ करि लयो ॥
तिन ते एक न उपजत भयो ॥
कितकन द्रिसटाकरखन कीयो ॥
सभहिन को स्रोनित हरि लीयो ॥२९९॥
स्रोन रहित दानव जब भयो ॥
दैत उपराजन ते रहि गयो ॥
स्रमित अधिक ह्वै छाडत स्वासा ॥
ता ते करत दैत परगासा ॥३००॥
पवनाकरख करा तब काला ॥
घटे बढन ते अरि बिकराला ॥
इह बिधि जब आकरखन कीया ॥
सभ बल हरि असुरन का लीया ॥३०१॥
मारि मारि जो असुर पुकारत ॥
तिह ते अमित दैत तन धारत ॥
बाचाकरख काल तब कयो ॥
बोलन ते दानव रहि गयो ॥३०२॥
दानव जब बोलहि रहि गयो ॥
चिंता करत चित मो भयो ॥
ताही ते दानव बहु भए ॥
सनमुख महा काल के धए ॥३०३॥
ससत्र असत्र करि कोप प्रहारे ॥
महाबीर बरियार डरारे ॥
महा काल तब गुरज संभारी ॥
बहुतन की मेधा कढि डारी ॥३०४॥
तिन की भूअ मेजा जो परी ॥
ता ते सैन देह बहु धरी ॥
मारि मारि करि कोप अपारा ॥
जागत भए असुर बिकरारा ॥३०५॥
तिन के फोरि मूंडि कलि डरे ॥
ता ते मेधा जो भूअ परे ॥
मारि मारि कहि असुर जगे रन ॥
सूरबीर बरियार महामन ॥३०६॥
पुनि करि काल गदा रिसि धरी ॥

सत्रु खोपरी तिल तिल करी ॥
जेते टूक खोप्रियन परे ॥
तेतिक रूप दानवन धरे ॥३०७॥
केतिक गदा पान गहि धाए ॥
केतिक खड़ग हाथ लै आए ॥
मारि मारि कै कोपहि सरजे ॥
मानहु महाकाल घन गरजे ॥३०८॥
आनि काल कह करत प्रहारा ॥
इक इक सूर सहस हथियारा ॥
महा काल कह लगत न भए ॥
ता महि सभै लीन ह्वै गए ॥३०९॥
ससत्र लीन लखि असुर रिसाने ॥
ससत्र असत्र लै कोपि सिधाने ॥
अमित कोप करि ससत्र प्रहारत ॥
मारि मारि दिसि दसौ पुकारत ॥३१०॥
मारि मारि की सुनि धुनि काना ॥
कोपा काल ससत्र गहि नाना ॥
हाकि हाकि हथियार प्रहारे ॥
दसट अनिक पल बीच संघारे ॥३११॥
तिन ते मेद मास जो परो ॥
ता ते बहु असुरन तन धरो ॥
मारि मारि कहि समुहि सिधाए ॥
बाधे चुंग चौपि तन आए ॥३१२॥
इक इक टूक सहस करि डारे ॥
तिन ते भए असुर रन भारे ॥
तिन के टूक टूक करि लच्छन ॥
गीध पिसाच गए करि भच्छन ॥३१३॥
ते भी अमित रूप करि धाए ॥
जे तिल तिल करि सुभट गिराए ॥
तिन की करी नास सभ सैना ॥
महा काल कर रंचक भै ना ॥३१४॥
मारि मारि जोधा कहूं गाजहि ॥
जंबुक गीध मास लै भाजहि ॥
प्रेत पिसाच कहूं किलकारहि ॥
डाकनि झाकि किलकटी मारहि ॥३१५॥
कोकिल काक जहा किलकारहि ॥
स्रोनत के केसर घसि डारहि ॥
जानुक ढोल बडे डफ सोहै ॥
देव दैत दानव मन मोहै ॥३१६॥
बान जान कुंकमा प्रहारे ॥
मूठि गुलालन बरछा भारे ॥
ढाल मनो डफमाला बनी ॥
पिचकारियै तुफंगै घनी ॥३१७॥
इह बिधि भयो घोर संग्रामा ॥
कापा इंद्र चंद्र को धामा ॥
पसु पंछी अति ही अकुलाए ॥
छोडि धाम काननहि सिधाए ॥३१८॥
बाजी कहूं घाइल भभकावत ॥
उठि उठि सुभट समुह कह धावत ॥
कहकहाट कहूं काल सुनावै ॥

भीखन सुने नाम भै आवै ॥३१९॥
सूरन के लोमा भे खरे ॥
कातर निरखि धाम रन बरे ॥
सोफी सूम भए बहु ब्याकुल ॥
दसो दिसन भजि चले डराकुल ॥३२०॥
केतिक सुभट पाव ते रोपै ॥
लै लै खड़ग नगन करि धोपै ॥
महा काल कुपि ससत्र प्रहारै ॥
साध उबारि दुसट सभ मारे ॥३२१॥

भुजंग छंद ॥

मचे आनि मैदान मै बीर भारे ॥
दिखै कौन जीतै दिखै कौन हारे ॥
लए सूल औ सेल काती कटारी ॥
चहूं ओर गाजे हठी बीर भारी ॥३२२॥
बजे घोर संग्राम मो घोर बाजे ॥
चहूं ओर बाके रथी बीर गाजे ॥
लए सूल औ सेल काती कटारे ॥
मचे कोप कै कै हठीले रजयारे ॥३२३॥
कहूं धूलधानी छुटै फील नालै ॥
कहूं बाज नालै महा घोर ज्वालै ॥
कहूं संख भेरी प्रणो ढोल बाजै ॥
कहूं सूर ठोकै भुजा भूप गाजै ॥३२४॥
कहूं घोर बादित्र बाजै नगारे ॥
कहूं बीर बाजी गिरे खेत मारे ॥
कहूं खेत नाचै पठे पखरारे ॥
कहूं सूर संग्राम सोहै डरारे ॥३२५॥
कहू बाज मारे कहूं झूम हाथी ॥
कहूं फैट भाथी जुझे बाधि साथी ॥
कहूं गरजि ठोकै भुजा भूप भारे ॥
बमै स्रोन केते गिरे खेत मारे ॥३२६॥

चौपई ॥

इह बिधि असुर जबै चुनि मारे ॥
अमित रोस करि और सिधारे ॥
बाधे फैट बिराजै भाथी ॥
आगे चले अमित धरि हाथी ॥३२७॥
साथ लए अनगन पखरारे ॥
उमडि चले दै ढोल नगारे ॥
संख झाझ अरु ढोल बजाइ ॥
चमकि चले चौगुन करि चाइ ॥३२८॥
डवरू कहूं गुड़गुड़ी बाजै ॥
ठोकि भुजा रन मो भट गाजै ॥
मुरज उपंग मुरलियै घनी ॥
भेर झाज बाजै रुनझुनी ॥३२९॥
कही तूंबरे बजै अपारा ॥
बेन बासुरी कहूं हजारा ॥
सुतरी फील नगारे घने ॥
अमित कान्रहरे जात न गने ॥३३०॥

इह बिधि भयो जबै संग्रामा ॥
निकसी दिन दूलह ह्वै बामा ॥
सिंघ बाहनी धुजा बिराजै ॥
जाहि बिलोक दैत दल भाजै ॥३३१॥
आवत ही बहु असुर संघारे ॥
तिल तिल प्राइ रथी करि डारे ॥
काटि दई केतिन की धुजा ॥
जंघा पाव सीस अरु भुजा ॥३३२॥
भाति भाति तन सुभट प्रहारे ॥
टूक टूक करि प्रिथी पछारे ॥
केसन ते गहि कितन पछारा ॥
सत्रु सैन तिल तिल करि डारा ॥३३३॥
झमकत कही असिन की धारा ॥
भभकत रुंड मुंड बिकरारा ॥
केतिक गरजि ससत्र कटि सजही ॥
असत्र छोरि केते भट भजही ॥३३४॥
मारे परे प्रिथी पर केते ॥
महा बीर बिकरार बिचेते ॥
झिमि झिमि गिरै स्रोन जिमि झरना ॥
भयो घोर रन जात न बरना ॥३३५॥
अचि अचि रुधर डाकनी डहकै ॥
भखि भखि मास काक कहूं कहकै ॥
दारुन होत भयो तह जुधा ॥
हमरे बीच न आवत बुधा ॥३३६॥
मारे परे दैत कही भारे ॥
गिरे काढि करि दात डरारे ॥
स्रोनत बमत बदन ते एका ॥
बीर खेत बलवान अनेका ॥३३७॥
बडे बडे जिन के सिर सींगा ॥
चोंचै बडी भाति जिन ढींगा ॥
स्रोनत से सर नैन अपारा ॥
निरख जिनै उपजत भ्रम भारा ॥३३८॥
महा बीर त्रै लोक अतुल बल ॥
अरि अनेक जीते जिन जल थल ॥
महा बीर बलवान डरारे ॥
चुनि चुनि बाल बरछियन मारे ॥३३९॥
केतिक सुभट अबिकटे मारे ॥
केतिक करन केहरी फारे ॥
केतिक महा काल अरि कूटे ॥
बादल से सभ ही दल फूटे ॥३४०॥
केते बीर बरछियन मारे ॥
टूक टूक केतिक करि डारे ॥
केते हने खड़ग की धारा ॥
लोह कटीले सूर अपारा ॥३४१॥
केतिक सूल सैहथी हने ॥
सुंदर सुघर सिपाही बने ॥
इह बिधि परे सु बीर प्रहारे ॥
भूमि चाल मनो गिरे मुनारे ॥३४२॥
इह बिधि गिरे बीर रन भारे ॥
जनु नग इंद्र बज्र भे मारे ॥

टूक टूक जूझे ह्वै घने ॥
जानुक गौस कुतब से बने ॥३४३॥
स्रोन पुलित ह्वै किते पराए ॥
चाचरि खेलि मनो घर आए ॥
भाजत भए बिमन ह्वै ऐसे ॥
दरब हराइ जुआरी जैसे ॥३४४॥
जो जूझे सनमुख अस धारा ॥
तिन का पल मो भयो उधारा ॥
इह जग ते बिलखत नहि भए ॥
चड़ि बिवान सुरलोक सिधए ॥३४५॥
सोफी जेते भजत प्रहारे ॥
ते लै बडे नरक मो डारे ॥
सामुहि ह्वै जिनि दीने प्राना ॥
तिन नर बीर बरंगनि नाना ॥३४६॥
केतिक बिधे बज्र अरु बाना ॥
गिरि गिरि परे धरन पर नाना ॥
महारथी बानन कौ बाधे ॥
गिरि गिरि परे रहे पुनि साधे ॥३४७॥
सूर बडे रन मचे बिकट अति ॥
धाइ धाइ कर परे बिकट मति ॥
मारि मारि करि सकल पुकारा ॥
दुंदभि ढोल दमामो भारा ॥३४८॥
हाकि हाकि हथियार प्रहारे ॥
बीनि बीनि बानन तन मारे ॥
झुकि झुकि हने सैहथी घाइन ॥
जूझै अधिक दुबहिया चाइन ॥३४९॥
कही परे हाथिन के सुंडा ॥
बाजी रथी गजन के मुंडा ॥
झुंड परे कही जूझि जुझारे ॥
तीर तुफंड तुपन के मारे ॥३५०॥
बहु जूझे इह भाति सिपाही ॥
भाति भाति धुजनी रिपु गाही ॥
उत कीय सिंघ बाहनी कोपै ॥
इति असिधुज लै धायो धोपै ॥३५१॥
कहूं लसै रन खड़ग कटारी ॥
जानुक मछ्र बंधे मधि जारी ॥
सिंघ बाहनी सत्रु बिहंडे ॥
तिल तिल प्राइ असुर करि खंडे ॥३५२॥
कहूं पाखरै कटी बिराजै ॥
बखतर कहूं गिरे नर राजै ॥
कहूं चलत स्रोनत की धारा ॥
छुटत बाग मो जनकु फुहारा ॥३५३॥
कहूं डाकनी स्रोनत पीयै ॥
झाकनि कहूं मास भखि जीयै ॥
काकनि कहूं फिरै कहकाती ॥
प्रेत पिसाचन डोलत माती ॥३५४॥
हसत फिरत प्रेतन की दारा ॥
डाकनि कहूं बजावत तारा ॥
जोगिन फिरै कहूं मुसकाती ॥
भूतन की इसत्री मद माती ॥३५५॥

फिरत डकार कहूं रन डाकनि ॥
मास अहार करत कहूं झाकनि ॥
प्रेत पिसाच हसे किलकारै ॥
कहूं मसान किलकटी मारै ॥३५६ ॥
कढै दैत रन दात बिहारत ॥
भूत प्रेत ताली कह मारत ॥
उलका पात होत आकासा ॥
असुर सैन इह बिधि भयो नासा ॥३५७ ॥
बहत अमित रन पवन प्रचंडा ॥
दिखियत परे सुभट खंड खंडा ॥
काकनि कुहकि मानवति ताती ॥
फागुन जानु कोकिला माती ॥३५८ ॥
इह बिधि स्रोन कुंडि भरि गयो ॥
दूसर मानसरोवर भयो ॥
सेत छत्रु तह हंस बिराजै ॥
अनत साज जल जिय से राजै ॥३५९ ॥
टूक टूक दंती कहूं भए ॥
तिल तिल प्राइ सुभट ह्वै गए ॥
स्रोनत धारि बही इक बारा ॥
भई धूरि रन की सभ गारा ॥३६० ॥
नेजबाज बहु बीर संघारे ॥
प्रोए बरा सीख भटियारे ॥
टूक टूक भट रन ह्वै रहे ॥
जिन के घाव सरोहिन बहे ॥३६१ ॥
इह बिधि अमित कोप करि काला ॥
काढत भयो दात बिकराला ॥
छिप्र हने छिन माझ छत्राले ॥
सूरबीर बलवान मुछाले ॥३६२ ॥
दुहूं अधिक रन कियो अपारा ॥
दानव मरत भयो नहि मारा ॥
तब असिधुज अस मंत्र बिचारो ॥
जिह बिधि ते दानवहि संघारो ॥३६३ ॥
सरबाकरखन किय असिधुज जब ॥
उपजत ते रहि गए असुर तब ॥
आग्या बहुरि कालि कह दई ॥
सत्रु सैन भछन करि गई ॥३६४ ॥
एकै असुर तबै रहि गयो ॥
त्रासित अधिक चित महि भयो ॥
हाइ हाइ कस करौ उपावा ॥
अस कोई चलत ने मेरा दावा ॥३६५ ॥

दोहरा ॥

महा काल की सरनि जे परे सु लए बचाइ ॥
और न उपजा दूसर जग भछियो सभै बनाइ ॥३६६ ॥
जो पूजा असिकेतु की नित प्रति करै बनाइ ॥
तिन पर अपनो हाथ दै असिधुज लेत बचाइ ॥३६७ ॥

चौपई ॥

दुसट दैत कछु बात न जानी ॥

महा काल तन पुनि रिसि ठानी ॥
बल अपबल अपनो न बिचारा ॥
गरब ठानि जिय बहुरि हंकारा ॥३६८॥
रे रे काल फूलि जिनि जाहु ॥
बहुरि आनि संग्राम मचाहु ॥
एक निदान करो रन माहीं ॥
कै असिधुजि कै दानव नाहीं ॥३६९॥
एक पाव तजि जुध न भाजा ॥
महाराज दैतन का राजा ॥
आंतौ गीध गगन लै गए ॥
बाहत बिसिख तऊ हठ भए ॥३७०॥
असुर अमित रन बान चलाए ॥
निरखि खड़गधुज काटि गिराए ॥
बीस सहस्र असुर पर बाना ॥
स्री असिधुज छाडे बिधि नाना ॥३७१॥
महा काल पुनि जिय मै कोपा ॥
धनुख टंकोर बहुरि रन रोपा ॥
एक बान ते धुजहि गिरायो ॥
दुतिय सत्रु को सीस उडायो ॥३७२॥
दुहूं बिसिख करि द्वै रथ चक्र ॥
काटि दए छिन इक मै बक्र ॥
चारहि बान चार हूं बाजा ॥
मार दए सभ जग के राजा ॥३७३॥
बहुरि असुर का काटसि माथा ॥
स्री असिकेति जगत के नाथा ॥
दुतिय बान सौ दोऊ अरि कर ॥
काटि दयो असिधुज नर नाहर ॥३७४॥
पुनि राछस का काटा सीसा ॥
स्री असिकेतु जगत के ईसा ॥
पुहपन ब्रिसटि गगन ते भई ॥
सभहिन आनि बधाई दई ॥३७५॥
धंन्य धंन्य लोगन के राजा ॥
दुसटन दाह गरीब निवाजा ॥
अखल भवन के सिरजनहारे ॥
दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥३७६॥
कबियो बाच बेनती ॥

चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥
पूरन होइ चित की इच्छा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा ॥
अपना जान करो प्रतिपारा ॥३७७॥
हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥
आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परिवारा ॥
सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥३७८॥
मो रच्छा निज कर दै करियै ॥
सभ बैरन को आज संघरियै ॥
पूरन होइ हमारी आसा ॥
तोर भजन की रहै पिआसा ॥३७९॥

तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ॥
जो बर चहों सु तुम ते पाऊं ॥
सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥
चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥३८०॥
आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥
मरन काल का त्रास निवरियै ॥
हूजो सदा हमारे पच्छा ॥
स्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥३८१॥
राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥
साहिब संत सहाइ पियारे ॥
दीन बंधु दुसटन के हंता ॥
तुम हो पुरी चतुर दस कंता ॥३८२॥
काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥
काल पाइ सिवजू अवतरा ॥
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥
सकल काल का कीआ तमासा ॥३८३॥
जवन काल जोगी सिव कीओ ॥
बेद राज ब्रहमा जू थीओ ॥
जवन काल सभ लोक सवारा ॥
नमसकार है ताहि हमारा ॥३८४॥
जवन काल सभ जगत बनायो ॥
देव दैत जच्छन उपजायो ॥
आदि अंति एकै अवतारा ॥
सोई गुरू समझियहु हमारा ॥३८५॥
नमसकार तिस ही को हमारी ॥
सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥
सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ॥
सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥३८६॥
घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥
चीटी ते कुंचर असथूला ॥
सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ॥३८७॥
संतन दुख पाए ते दुखी ॥
सुख पाए साधुन के सुखी ॥
एक एक की पीर पछानैं ॥
घट घट के पट पट की जानैं ॥३८८॥
जब उदकरख करा करतारा ॥
प्रजा धरत तब देह अपारा ॥
जब आकरख करत हो कबहूं ॥
तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥३८९॥
जेते बदन स्रिसटि सभ धारै ॥
आपु आपनी बूझ उचारै ॥
तुम सभही ते रहत निरालम ॥
जानत बेद भेद अर आलम ॥३९०॥
निरंकार न्रिबिकार निरलंभ ॥
आदि अनील अनादि असंभ ॥
ता का मूढ़ उचारत भेदा ॥
जा को भेव न पावत बेदा ॥३९१॥
ता को करि पाहन अनुमानत ॥
महा मूढ़ कछु भेद न जानत ॥

महादेव को कहत सदा सिव ॥
निरंकार का चीनत नहि भिव ॥३९२॥
आपु आपनी बुधि है जेती ॥
बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ॥
तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥
किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥३९३॥
एकै रूप अनूप सरूपा ॥
रंक भयो राव कही भूपा ॥
अंडज जेरज सेतज कीनी ॥
उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ॥३९४॥
कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥
कहूं सिमटि भ्यिो संकर इकैठा ॥
सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव ॥
आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥३९५॥
अब रच्छा मेरी तुम करो ॥
सिक्ख उबारि असिक्ख संघरो ॥
दुशट जिते उठवत उतपाता ॥
सकल मलेछ करो रण घाता ॥३९६॥
जे असिधुज तव सरनी परे ॥
तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे ॥
पुरख जवन पग परे तिहारे ॥
तिन के तुम संकट सभ टारे ॥३९७॥
जो कलि को इक बार धिऐ है ॥
ता के काल निकटि नहि ऐहै ॥
रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥
दुसट अरिसट टरें ततकाला ॥३९८॥
क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो ॥
ताके ताप तनक मो हरिहो ॥
रिद्धि सिद्धि घर मो सभ होई ॥
दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ॥३९९॥
एक बार जिन तुमै संभारा ॥
काल फास ते ताहि उबारा ॥
जिन नर नाम तिहारो कहा ॥
दारिद दुसट दोख ते रहा ॥४००॥
खड़ग केत मै सरणि तिहारी ॥
आप हाथ दै लेहु उबारी ॥
सरब ठौर मो होहु सहाई ॥
दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥४०१॥
क्रिपा करी हम पर जगमाता ॥
ग्रंथ करा पूरन सुभराता ॥
किलबिख सकल देह को हरता ॥
दुसट दोखियन को छै करता ॥४०२॥
स्री असिधुज जब भए दयाला ॥
पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥
मन बाछत फल पावै सोई ॥
दूख न तिसै बिआपत कोई ॥४०३॥
अड़िल ॥
सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई ॥
सुनै मूड़ चित लाइ चतुरता आवई ॥
दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥

हो जो या की एक बार चौपई को कहै ॥४०४॥

चौपई ॥

संबत सत्रह सहस भणिजै ॥
अरध सहस फुनि तीनि कहिजै ॥
भाद्रव सुदी असटमी रवि वारा ॥
तीर सतुद्रव ग्रंथ सुधारा ॥४०५॥

CHARITAR ४०५ *— SAMAPAT*

◀ *इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चार सौ पांच चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥405॥7558॥ अफजं॥*

SECTION 19: ZAFARNAMA

Letter of Victory — Persian letter to Emperor Aurangzeb

ੴ हुकम सति ॥

वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

ज़फ़रनामह ॥

स्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

कमाले करामात कायम करीम ॥
रज़ा बक़शो राज़िक रिहाको रहीम ॥१॥
अमा बक़शो बक़शिंद ओ दसतगीर ॥
रज़ा बक़श रोज़ी दिहो दिल पज़ीर ॥२॥
शहिनशाहि क़ूबी दिहो रह नमूं ॥
कि बेगूंन बेचूंन चूं बेनमूं ॥३॥
न साज़ो न बाज़ो न फ़ौजो न फ़रश ॥
क़ुदावंद बक़शिंदए ऐशु अरश ॥४॥
जहा पाक ज़बरसत ज़ाहिर ज़हूर ॥
अता मे दिहद हम चु हाज़िर हज़ूर ॥५॥
अता बक़शओ पाक परवरदिगार ॥
रहीम असतो रोज़ी दिहो हर दियार ॥६॥
कि साहिब दिआर असतु आज़म अज़ीम ॥
कि हुसनुल जमाल असतु राज़क रहीम ॥७॥
कि साहिब शऊर असतु आजिज़ निवाज़ ॥
ग़रीबुल प्रसतो ग़नीमुल गुदाज़ ॥८॥
शरीअत प्रसतो फ़ज़ीलत मआब ॥
हकीकत शनासो नबीउल किताब ॥९॥
कि दानिश पियूहसतु साहिब शऊर ॥
हकीकत शनाससतु ज़ाहर ज़हूर ॥१०॥
शनासिंदए इलमि आलम क़ुदाइ ॥
कुशाइंदए कारि आलम कुशाइ ॥११॥
गुज़ारिंदए कारि आलम कबीर ॥
शनासिंदए इलमि आलम अमीर ॥१२॥
मरा एतबारे बरीं कसम नेसत ॥
कि एज़द गवाहसतु यज़दा यकेसत ॥१३॥
न कतरह मरा एतबारे बरोसत ॥
कि बक़शी व दीवा हमह किज़बगोशत ॥१४॥
कसे कउलि कुरआं कुनद एतबार ॥
हमा रोज़ि आक़िर शवद मरद क़्वार ॥१५॥
हुमा रा कसे सायह आयद बज़ेर ॥
बरो दसत दारद न ज़ाग़ो दलेर ॥१६॥
कसे पुशत उफ़तद पसे शेरि नर ॥
नगीरद बुज़ो मेशो आहू गुज़र ॥१७॥
कसम मुसहफ़े क़ुफ़ीयह गर ईं क़ुरम ॥
न फ़ौजे अज़ीं ज़ेर सुम अफ़कुनम ॥१८॥
गुरसनह चि कारे कुनद चिहल नर ॥
कि दह लख बरआयद बरो बेक़बर ॥१९॥
कि पैमा शिकन बेदरंग अमादंद ॥
मिया तेग़ तीरो तुफ़ंग आमदंद ॥२०॥
ब लाचारगी दर मिया आमदम ॥

ब तदबीरि तीरो तुफ़ंग आमदम ॥२१॥
चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलाल असतु बुरदन ब शमशेर दसत ॥२२॥
चि कसमे कुरा मन कुनम एतबार ॥
वगरनह तु गोई मन ईं रह चि कार ॥२३॥
न दानम कि ईं मरद रोबाह पेच ॥
वगर हरगिज़ीं रह नयारद बहेच ॥२४॥
हर आं कस कि कउले कुरा आयदश ॥
नज़ो बसतनो कुशतनी बायदश ॥२५॥
बरंगे मगस स्रयाहपोश आमदंद ॥
ब यक बारगी दर क़रोश आमदंद ॥२६॥
हर आं कस ज़ि दीवार आमद बिरूं ॥
बक़ुरदन यके तीर शुद ग़रकि क़ूं ॥२७॥
कि बेरूं नयामद कसे ज़ा दीवार ॥
न क़ुरदंद तीरो न गशतंद क़्वार ॥२८॥
चु दीदम कि नाहर बियामद ब जंग ॥
चशीदह यके तीरि मन बेदरंग ॥२९॥
हमाक़िर आक़र गुरेज़द बजाए मसाफ़ ॥
बसे क़ानह क़ुरदंद बेरूं गुज़ाफ़ ॥३०॥
कि अफ़गने दीगर बियामद बजंग ॥
चु सैले रवा हम चु तीरो तुफ़ंग ॥३१॥
बसे हमलह करदंद ब मरदानगी ॥
हम अज़ होशगी हम ज़ि देवानगी ॥३२॥
बसे हमलह करदह बसे ज़क़म क़ुरद ॥
दु कस रा बज़ा कुशतो हम जा सपुरद ॥३३॥
कि आं क़्वाजह मरदूद सायह दीवार ॥
न्रयामद ब मैदा ब मरदानह वार ॥३४॥
दरेगा अगर रूइ ओ दीदमे ॥
ब यक तीर लाचार बक़शीदमे ॥३५॥
हमाक़िर बसे ज़क़मि तीरो तुफ़ंग ॥
दु सूए बसे कुशतह शुद बेदरंग ॥३६॥
बसे बार बारीद तीरो तुफ़ंग ॥
ज़िमी गशत हम चूं गुले लालह रंग ॥३७॥
सरोपाइ अंबोह चंदा शुदह ॥
कि मैदा पुर अज़ गोइ चौगा शुदह ॥३८॥
तरंकारि तीरो तरंगि कमा ॥
बरआमद यके हा इ हू अज़ जहा ॥३९॥
दिग़र शोरशि कैबरि कीनह कोश ॥
ज़ि मरदानि मरदा बिरूं रफ़त होश ॥४०॥
हम आक़िर चि मरदी कुनद कारज़ार ॥
कि बर चिहल तन आयदश बेशुमार ॥४१॥
चराग़ि जहा चूं शुदह बुरकह पोश ॥
शहे शब बरामद हमह जलवह जोश ॥४२॥
हर आं कस ब कउले कुरा आयदश ॥
कि यज़दा बरो रहिनुमा आयदश ॥४३॥
न पेचीदह मूए न रंजीदह तन ॥
कि बेरूं क़ुद आवुरद दुशमन शिकन ॥४४॥
न दानम कि ईं मरदि पैमा शिकन ॥
कि दौलत परसत ओ ईमा फ़िकन ॥४५॥
न ईमा प्रसती न औज़ाइ दीं ॥

न साहिब शनासी न महंमद यकीं ॥४६॥
हर आं कस कि ईमा प्रसती कुनद ॥
न पैमा क़ुदश पेशो पसती कुनद ॥४७॥
कि ईं मरद रा ज़रह एतबार नेसत ॥
चि कसमे कुरानसतु यज़दा यकेसत ॥४८॥
चु कसमे कुरा सद कुनद इक़तियार ॥
मरा कतरह नायद अज़ो एतबार ॥४९॥
अगरचि तुरा एतबार आमदे ॥
कमर बसत ए पेशवा आमदे ॥५०॥
कि फ़रज़सतु बर सर तुरा ईं सुक़न ॥
कि कउले क़ुदा असतु कसमसतु मन ॥५१॥
अगर हज़रते क़ुद सितादह शवद ॥
ब जानो दिले कार वाज़िह शवद ॥५२॥
शुमा रा फ़रज़सतु कारे कुनीं ॥
बमूजब नविशतह शुमारे कुनीं ॥५३॥
नविशतह रसीदो बगुफ़तह ज़ुबा ॥
बिबायद कि ईं कार राहत रसा ॥५४॥
हमूं मरद बायद शवद सुक़नवर ॥
न शिकमे दिग़र दर दहानि दिगर ॥५५॥
कि काज़ी मरा गुफ़तह बेरूं नयम ॥
अगर रासती क़ुद बियारी कदम ॥५६॥
तुरा गर बबायद ब कउले कुरा ॥
बनिज़दे शुमा रा रसानम हुमा ॥५७॥
कि तशरीफ दर कसबह कागड़ कुनद ॥
वज़ा पस मुलाकात बाहम शवद ॥५८॥
न ज़रह दरीं राह क़तरह तुरासत ॥
हमह कौमि बैराड़ हुकमि मरासत ॥५९॥
बिया ता बमन क़ुद ज़ुबानी कुनेम ॥
बरूए शुमा मेहरबानी कुनेम ॥६०॥
यके असप शाइसतए यक हज़ार ॥
बिया ता बगीरी ब मन ईं दियार ॥६१॥
शहिनशाहि रा बंदहे चाकरेम ॥
अगर हुकम आयद ब जा हाज़रेम ॥६२॥
अगरचे बिआयद ब फ़ुरमान मन ॥
हज़ूर त बियायम हमह जान तन ॥६३॥
अगर तो बयज़दा प्रसती कुनी ॥
ब कारे मरा ईं न सुसती कुनी ॥६४॥
बिबायद कि यज़दा शनासी कुनी ॥
न गुफ़तह कसे कस क़राशी कुनी ॥६५॥
तु मसनद नशीं सरवरे काइनात ॥
कि अजब असतु इनसाफ़ ईं हम सफ़ात ॥६६॥
कि अजब असतु इनसाफ़ो ईं परवरी ॥
कि हैफ़ असतु सद हैफ़ ईं सरवरी ॥६७॥
कि अजब असत अजब असत तकवा शुमा ॥
बजुज़ रासती सुक़न गुफ़तन ज़या ॥६८॥
मज़न तेग़ बर ख़ूंन कस बेदरेग़ ॥
तुरा नीज़ ख़ूं असत बा चरक़ तेग़ ॥६९॥
तु गाफ़ल मसौ मरद यज़दा शनास ॥
कि ओ बेनिआज़ असतु ओ बे सुपास ॥७०॥
कि ऊ बे मुहाबसतु शाहानि शाह ॥

ज़िमीनो ज़मा सचए पातिशाह ॥७१॥
ख़ुदावंदि ईज़द ज़मीनो ज़मा ॥
कुनिंदहसत हर कस मकीनो मका ॥७२॥
हम अज़ पीर मोरह हम अज़ फ़ील तन ॥
कि आजज़ निवाज़ असतो ग़ाफ़ल शिकंन ॥७३॥
कि ऊ रा चु इसम असतु आजज़ निवाज़ ॥
कि ऊ बे सुपास असत ऊ बे नियाज़ ॥७४॥
कि ऊ बे नगूं असतु ऊ बे चगूं ॥
कि ऊ रहिनुमा असतु ऊ रहिनमूं ॥७५॥
कि बर सर तुरा फ़रज़ कसमि कुरा ॥
ब गुफ़तह शुमा कार ख़ूबी रसा ॥७६॥
बिबायद तु दानश प्रसती कुनी ॥
बकारे शुमा चेरह दसती कुनी ॥७७॥
चिहा शुद कि चूं बचगा कुशतह चार ॥
कि बाकी बिमादअसतु पेचीदह मार ॥७८॥
चि मरदी कि अख़गर ख़मोशा कुनी ॥
कि आतिश दमा रा फ़रोज़ा कुनी ॥७९॥
चि ख़ुश गुफ़त फ़िरदौसीए ख़ुश ज़ुबा ॥
शिताबी बवद कारि आहरमना ॥८०॥
कि मा बारगहि हज़रत आयद शुमा ॥
अज़ा रोज़ बाशेद शाहिद शुमा ॥८१॥
वगरनह तु ईं रा फ़रामोश कुनद ॥
तुरा हम फ़रामोश यज़दा कुनद ॥८२॥
अगर कारि ईं बर तू बसती कमर ॥
ख़ुदावंद बाशद तुरा बहरह वर ॥८३॥
कि ईं कार नेकअसतु दीं परवरी ॥
चु यज़दा शनासी बजा बरतरी ॥८४॥
तुरा मन न दानम कि यज़दा शनास ॥
बरामद ज़ि तू कारहा दिल ख़रास ॥८५॥
शनासद हमीं तू न यज़दा करीम ॥
न ख़्वाहद हमी तू बदौलत अज़ीम ॥८६॥
अगर सद कुरा रा बख़ुरदी कसम ॥
मरा एतबारे न ईं ज़रह दम ॥८७॥
हज़ूरी न आयम न ईं रह शवम ॥
अगर शह बख़्वाहद मन आं जा रवम ॥८८॥
ख़ुशश शाहि शाहान औरंगज़ेब ॥
कि चालाक दसतु असतु चाबुक रकेब ॥८९॥
चि हुसनल जमालसतु रौशन ज़मीर ॥
ख़ुदावंद मुलक असतु साहिब अमीर ॥९०॥
कि तरतीब दानश ब तदबीर तेग़ ॥
ख़ुदावंदि देग़ो ख़ुदावंदि तेग़ ॥९१॥
कि रौशन ज़मीर असतु हुसनुल जमाल ॥
ख़ुदावंद बख़शिंदहे मुलको माल ॥९२॥
कि बख़शिश कबीर असतु दर जंग कोह ॥
मलायक सिफ़त चूं सुरया शिकोह ॥९३॥
शहिनशाहि औरंगज़ेब आलमीं ॥
कि दाराइ दौर असतु दूर असत दीं ॥९४॥
मनम कुशतहअम कोहीआ बुतप्रसत ॥
कि आं बुत प्रसतंदो मन बुत शिकसत ॥९५॥
बबीं ग़रदशे बेवफ़ाए ज़मा ॥

पसे पुशत उफ़तद रसानद ज़िया ॥९६ ॥
बबीं कुदरते नेक यज़दानि पाक ॥
कि अज़ यक ब दह लक्ष रसानद हलाक ॥९७ ॥
कि दुशमन कुनद मिहरबा असतु दोसत ॥
कि बक़शिंदगी कार बक़शिंदह ओसत ॥९८ ॥
रिहाई दिहो रहिनुमाई दिहद ॥
ज़ुबा रा बसिफ़त आशनाई दिहद ॥९९ ॥
क़सम रा चु कोरऊ कुनद वकति कार ॥
यतीमा बिरूं मे बुरद बेअज़ार ॥१०० ॥
हरा कस कि ओ रासत बाज़ी कुनद ॥
रहीमे बरो रहम साज़ी कुनद ॥१०१ ॥
कसे क़िदमत आयद बसे दिलो जा ॥
क़ुदावंद बक़शीद बर वै अमा ॥१०२ ॥
चि दुशमन बरा हीलह साज़ी कुनद ॥
अगर रहनुमा बर वै राज़ी शवद ॥१०३ ॥
अगर यक बर आयद दहो दह हज़ार ॥
निगहबान ऊ रा शवद किरदगार ॥१०४ ॥
तुरा गर नज़र हसत लशकर व ज़र ॥
कि मारा निगह असतु यज़दा शुकर ॥१०५ ॥
कि ऊ रा ग़रूर असत बर मुलकु माल ॥
व मारा पनाह असतु यज़दा अकाल ॥१०६ ॥
तु ग़ाफ़ल मशौ ज़ीं सिपंजी सराइ ॥
कि आलम बगुज़रद सरे जा बजाइ ॥१०७ ॥
बबीं गरदशि बेवफ़ाए ज़मा ॥
कि बर हर बुग़ुज़रद मकीनो मका ॥१०८ ॥
तु गर ज़बर आजज़ क़राशी मकुन ॥
कसम रा ब तेशह तराशी मकुन ॥१०९ ॥
चु हक यार बाशद चि दुशमन कुनद ॥
अगर दुशमनी रा ब सद तन कुनद ॥११० ॥
क़सम दुशमनी गर हज़ार आवुरद ॥
न यक मूइ ऊ रा अज़ार आवुरद ॥१११ ॥१ ॥
हिकाइता ॥

SECTION 20: HIKAYATS

Persian tales / parables — Appended to Zafarnama

ੴवाहगुरू जी की फ़तह ॥

अगंजो अभंजो अरूपो अरेख ॥
अगाधो अबाधो अभरमो अलेख ॥१॥
अरागो अरूपो अरेखो अरंग ॥
अजनमो अबरनो अभूतो अभंग ॥२॥
अछेदो अभेदो अकरमो अकाम ॥
अखेदो अभेदो अभरमो अभाम ॥३॥
अरेखो अभेखो अलेखो अभंग ॥
क़ुदावंद बक़शिंदहे रंग रंग ॥४॥
हिकायत शुनीदेम राजहि दिलीप ॥
निशसतह बुदह निज़द मानो महीप ॥५॥
कि ओरा हमी बूद पिसरे चहार ॥
कि दर रज़म दर बज़म आमुक़तह कार ॥६॥
ब रज़म अंदरा हम चु अज़ शेर मसत ॥
कि चाबक रिकाबसतु गुसताक़ दसत ॥७॥
चहारो शहे पेश पिसरा बुख़ाद ॥
जुदा बर जुदा कुरसीए ज़र निशाद ॥८॥
बि पुरशीद दानाइ दउलत परसत ॥
अज़ी अंदरूं बादशाही कस असत ॥९॥
शुनीद आं चु दानाइ दानश निहाद ॥
ब तमकीन पासख़ अलम बर कुशाद ॥१०॥
ब ग़ुफ़तंद क़ुश दीन दानाइ नग़ज़ ॥
कि यज़दा शनास असतु आज़ाद मग़ज़ ॥११॥
मरा कुदरते नेसत ईं गुफ़त नीसत ॥
सुख़न गुफ़तनो बिकर जा सुफ़त नीसत ॥१२॥
अगर शहि बिगोयद बिगोयम जवाब ॥
नुमायम ब तो हाल ईं बा सवाब ॥१३॥
हरा कस कि यज़दान यारी दिहद ॥
ब कारे जहा कामगारी दिहद ॥१४॥
कि ईं रा ब अकल आज़माई कुनेम ॥
वज़ा पस ब कार आज़माई कुनेम ॥१५॥
यके रा दिहद फ़ील दहि हज़ार मसत ॥
हमह मसतीओ मसत ज़ंजीर बसत ॥१६॥
दिग़र रा दिहद असप पा सद हज़ार ॥
ज़ि ज़र साक़तह ज़ीन चूं नउ बहार ॥१७॥
सियम रा दिहद शुतर सि सद हज़ार ॥
हमह नुकरह बारो हमह ज़र निगार ॥१८॥
चुअम रा दिहद मुंग यक नुक़द नीम ॥
अज़ा मरद आज़ाद आकल अज़ीम ॥१९॥
बियावुरद पुर अकल क़ानह कज़ा ॥
दिग़ार नीम नुक़दश ब बसतन अज़ा ॥२०॥
हमी क़ाशत को तुक़म रेज़ी कुनद ॥
क़िरद आज़मायश बरेज़ी कुनद ॥२१॥
दफ़न करद हरदो ज़मीं अंदरा ॥
नज़र करद बर शुकर साहिब गिरा ॥२२॥
चु शश माहि गुशतंद दरा दफ़नवार ॥
पदीद आमदह सबज़हे नउ बहार ॥२३॥
बरेज़ीद दहि साल तुक़मे कज़ा ॥

ब परवरदह ओरा बुरीदन अज़ा ॥२४॥
बरेज़ी दहे बीसत बारश अज़ो ॥
बसे गशतह क़रवार दानह अज़ो ॥२५॥
चुना ज़ियादह शुद दउलते दिल करार ॥
कज़ो दानह शुद दानहाए अंबार ॥२६॥
क़रीदह अज़ा नकद दहि हज़ार फ़ील ॥
चु कोहे रवा हम चु दरीआइ नील ॥२७॥
बगीरद अज़ो असप पासद हज़ार ॥
हमह जर व ज़ीनो हमह नुकरहवार ॥२८॥
क़रीदंद से सद हज़ारो शुतर ॥
हमह ज़रह बारो हमह नुकरह पुर ॥२९॥
वज़ा दाल नउ शहिर आज़म बुबसत ॥
कि नामे अज़ा शहिर दिहली शुदसत ॥३०॥
दिग़र दानह रा बसत मूंगी पटन ॥
चु दोसता पसंदसतु दुशमन फ़िकन ॥३१॥
ब गुज़रीद दह दो बर ईं नमत साल ॥
बसे गशत जो दउलते बे ज़वाल ॥३२॥
चु बिनशसत बर तक़त मानो महीप ॥
ब पुरशस दरामद सहे हफ़त दीप ॥३३॥
बिगोयद ब पेशीन काग़ज़ बियार ॥
चि बक़शीदअम मन ब पिसरा चहार ॥३४॥
दबीरे कलम बर कलम जन गिरिफ़त ॥
जवाबे सुक़न रा अलमबर गरिफ़त ॥३५॥
बगुफ़ता चि बक़शीद एशा हज़ार ॥
ब काग़ज़ बुबीं ता ज़ुबानस बियार ॥३६॥
ब काग़ज़ बुबीं ता बिगोयद ज़ुबा ॥
चि बक़शीद शुद बक़श हरकस अज़ा ॥३७॥
चु बिशनीद सुक़न अज़ महीपान मान ॥
फ़रिशतह सिफ़त चूं मलायक मकान ॥३८॥
बयारी मरा पेश बक़शीदह मन ॥
चराग़ो जहा आफ़ताबे यमन ॥३९॥
बिगोयद कि मुरदंद बाजे मुहिंम ॥
कि मा हम बसा फ़ील बक़शीदहअम ॥४०॥
दिग़र रा बपुरशीद अपस च करद ॥
कि बाज़े बबक़शीदु बाज़े बिमुरद ॥४१॥
सिअम रा बपुरशीद शुतरा नुमा ॥
कुजा तो बबक़शीद ए जान मा ॥४२॥
बगुफ़ता कि बाज़े बकार आमदंद ॥
बबक़श अंदरूं बेशुमार आमदंद ॥४३॥
चुअम रा बपुरशीद कि ए नेक बक़त ॥
सज़ावार देहीम सायान तक़त ॥४४॥
कुजा गशत बक़शश तुमारा फ़हीम ॥
यके दानह मुंगो दिग़र नुक़द नीम ॥४५॥
शवद गर हुकम ता बियारेम पेश ॥
हमह फ़ीलु असपो अज़ो शुतर बेश ॥४६॥
नज़र करद फ़ीले दो दहि हज़ार मसत ॥
पुर अज़ ज़र बारो हमह नुकरह बसत ॥४७॥
हुमा असप पा सद हज़ार आवरीद ॥
हुमा ज़र ज़ीन बेशुमार आवरीद ॥४८॥
हमह क़ोद क़ुफ़तान बरगशतवा ॥

बसे तीरु शमशेर कीमत गिरा ॥४९॥
बसे शुतर बगदाद ज़र बफ़त बार ॥
ज़रो जामह नीम आसतीं बेशुमार ॥५०॥
कि दहि नीलु दहि पदम दीनार ज़रद ॥
कज़ो दीदह शुद दीदहे दोसत सरद ॥५१॥
कि यक मुंग यक शहिर ज़ो काम शुद ॥
कि मूंगी पटन शहिर ओ नाम शुद ॥५२॥
कि नीमि नुक़द रा दिग़र शहिर बसत ॥
कि नामे अज़ो शहिर दिहली शुद असत ॥५३॥
क़ुश आमद ब तदबीर मानो महीप ॥
क़िताबश बदो दाद राजह दलीप ॥५४॥
कि पैदा अज़ो मरद शाहन शही ॥
सज़ावार तक़त असतु ताजो मही ॥५५॥
बज़ेबद अज़ो मरद ताजो नग़ीं ॥
बर आं अकलु तदबीर हज़ार आफ़रीं ॥५६॥
सि ओ असत बेअकल आलूदह मग़ाज़ ॥
न रफ़तार क़ुशतर न ग़ुफ़तार नग़ाज़ ॥५७॥
हमी क़ासत कि ओरा बशाही दिहम ॥
ज़ि दौलत क़ुदशरा अगाही दिहम ॥५८॥
बज़ेबद कज़ो रंग शाहनशही ॥
कि साहिब शऊर असत व मालक मही ॥५९॥
क़िताबश कज़ो गशत राजह दलीप ॥
क़िलाफ़त बबक़शीद मानो महीप ॥६०॥
सि पिसरा दिग़र शाहि आज़ाद करद ॥
न दानश परसतो न आज़ाद मरद ॥६१॥
कि ओरा बरो ज़र सिंघासन निशाद ॥
कलीदे कुहन गंज रा बर कुशाद ॥६२॥
बदो दाद शाही क़ुद आज़ाद गशत ॥
बपोशीद दलकश रवा शुद बदशत ॥६३॥
बिदिह साकीया साग़रे सबज़ रंग ॥
कि मारा बकार असत दर वकत जंग ॥६४॥
ब मन दिह कि बक़त आज़माई कुनम ॥
ज़ि तेग़े क़ुदश कारवाई कुनम ॥६५॥२॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

ख़ुदावंद दानश दिहो दादगर ॥
रज़ा बख़श रोज़ी दिहो हर हुनर ॥१॥
अमा बख़श बख़शिंद ओ दसतगीर ॥
कुशायश कुनो रहि नुमायश पज़ीर ॥२॥
हिकायत शुनीदम यके नेक मरद ॥
कि अज़ दउर दुशमन बरावुरद गरद ॥३॥
क़सम अफ़कनो शाहि चीं दिल फ़राज़ ॥
ग़रीबुल निवाज़ो ग़नीमुल गुदाज़ ॥४॥
जि रज़मो ब बज़मो हमह बंदुबसत ॥
कि बिसयार तेग़ असत हुशयार दसत ॥५॥
निवालह पियालह जि रज़मो ब बज़म ॥
तु गुफ़ती कि दीगर यले शुद ब बज़म ॥६॥
ज़ि तीरो तुफ़ंग हम चु आमुख़तह शुद ॥
तु गोई कि दर शिकम अंदोख़तह शुद ॥७॥
चु मालश गिरानश मतायश अज़ीम ॥
कि मुलकश बसे असत बख़शश करीम ॥८॥
अज़ो बादशाही ब आख़र शुदसत ॥
निशसतंद वज़ीरान ओ पेश पसत ॥९॥
ज़ि तो पस किरा बादशाही दिहम ॥
किरा ताज इकबाल बर सर निहम ॥१०॥
किरा मरद अज़ ख़ानह बेरूं कुनद ॥
किरा बख़त इकबाल बर सर निहद ॥११॥
ब होश अंदर आमद कुशादो दु चशम ॥
बगुफ़ता सुख़न शाहि पेशीन रसम ॥१२॥
न पाओ न दसतो न चशमो ज़ुबा ॥
न होशो न हिंमत न हैबत कसा ॥१३॥
न हउलो न हिंमत न हीलह न होश ॥
न बीनी न बीनायगी हर दु गोश ॥१४॥
हरा कस कि हसत आज़मायश बवद ॥
वज़ा दउर दी बादशाहश बवद ॥१५॥
अजबमाद दानाइ दउर ईं जवाब ॥
सुख़नबाज़ दीगर कुनद बा सवाब ॥१६॥
बकिंगश दर आमद दिरंगश गिरिफ़त ॥
जवाबे सुख़न रा बरंगश गिरिफ़त ॥१७॥
चपोरासतश करद चरख़े ज़ुबा ॥
बरा वुरद सुख़ने चु कैबर कमा ॥१८॥
कि ए शाहि हुशियार आज़ाद मग़ज़ ॥
चिरामे तु गोई दरीं कार नग़ज़ ॥१९॥
कसे रा शवद कार ई दर ज़मा ॥
वज़ा हसत ऐबअसत ज़ाहर जहा ॥२०॥
कि ईं हसत ऐबो तु गोई हुनर ॥
कि ए शाह शाहान हमह बहर बर ॥२१॥
न दर जंग पुशतो न दुशनाम दाद ॥
न अंगुशतबर हरफ़ दुशमन निहाद ॥२२॥
न आराम दुशमन न आज़ार दोसत ॥
जवाबे गदारा अदूरा बपोसत ॥२३॥
नवीशिंदह रा जा न हरफ़ो निहद ॥

सुक़न रा बहक जाइ शरफ़ो दिहद ॥२४॥
न उसताद रा दाद जाए सुक़न ॥
फ़रामोशगी चूं बकारे कुहन ॥२५॥
ब बद मसलिहत कस न दादन दिगर ॥
बिहस नाम ओ चूं तु गोयद हुनर ॥२६॥
न बीनद दिग़र ज़न ब चशमो क़ुदश ॥
न बद कार कस करद नज़रे बदश ॥२७॥
नज़र करद कस बर न हरफ़े हराम ॥
निगह दाशत बर शुकर यज़दा मुदाम ॥२८॥
नज़र रा ब बदकार दीगर ब बसत ॥
शनासी तु तहकीक ओ कोर हसत ॥२९॥
कदम रा न दारद ब बदकार कार ॥
न दर जंग पसपाउ पुशते बरार ॥३०॥
न दरकार दुज़दी न दिल बिशकनी ॥
न क़ानह क़ुरम बाज़ नह रहज़नी ॥३१॥
बनाकस दुआए न गोयद सुक़न ॥
ब क़ाहश क़राशी न जोई सुक़न ॥३२॥
ब बदकार कस दर न दादंद पाइ ॥
कि ओ पाइ लंग असतु गोई बजाइ ॥३३॥
ब दुज़दी मतारा न आलूदह दसत ॥
ब क़ुरशे हरामो कुशायद न दसत ॥३४॥
ब क़ुद दसत क़ाहंद न गीरंद माल ॥
न रइयत क़राशी न आजज़ ज़वाल ॥३५॥
दिग़र ज़न न क़ुद दसत अंदाक़तन ॥
रईयत क़ुलासह न बर ताक़तन ॥३६॥
बक़ुद दसत रिशवत न आलूदह करद ॥
कि अज़ शाहि दुशमन बरावुरद गरद ॥३७॥
न जाए अदूरा दिहद वकत जंग ॥
बुबारश दिहद तेग़ तरकश क़तंग ॥३८॥
न रामश दिहद असप रा वकत कार ॥
न जायश अदूरा दिहद दर दियार ॥३९॥
कि बे दसत ओ हसत गो पुर हुनर ॥
ब आलूदगी दर न बसतन कमर ॥४०॥
न गोयद कसे बद सुक़न ज़ीं ज़ुबान ॥
कि ओ बे ज़ुबानसत ज़ाहर जहान ॥४१॥
शुनीदन न बद सुक़न कसरा बगोश ॥
कि ओ हसत बेगोश गोई बहोश ॥४२॥
कि पस परदह चुग़ली शुनीदन न कस ॥
वज़ा क़ुद शनासी कि गोई शहस ॥४३॥
कसे कार बदरा न गीरंद बोइ ॥
कि ओ हसत बे बीनिओ नेक क़ोइ ॥४४॥
न हउलो दिग़र हसत ज़ुज़बा क़ुदाइ ॥
कि हिंमत वरा रा दरारद ज़ि पाइ ॥४५॥
ब होश अंदर आमद हमह वकत जंग ॥
कि कोशश कुनद पाइ ब तीरो तुफ़ंग ॥४६॥
कि दरकार इनसाफ ओ हिंमत असत ॥
कि दर पेश गुरबाइ ओ आजज़ असत ॥४७॥
न हीलह कुनद वकत दर कार ज़ार ॥
न हैबत कुनद दुशमना बेशुमार ॥४८॥
हरा कस कि ज़ीं हसत गाज़ी बवद ॥

ब कारे जहा रज़म साज़ी कुनद ॥४९॥
कसे रा कि ईं कार आयद पसंद ॥
वज़ा शाहि बाशद जहा अरज़मंद ॥५०॥
शुनीद ईं सुक़न दउर दाना वज़ीर ॥
कि आकल शनास असत पोज़श पज़ीर ॥५१॥
कसे रा शनासद ब अकले बिही ॥
मरो रा बिदिह ताजु तक़तो मही ॥५२॥
ब बक़शीद ओ रा मही तक़त ताज ॥
गर ओ रा शनासी रईयत निवाज़ ॥५३॥
ब हैरत दर आमद बपिसरा चहार ॥
कसे गोइ गीरद हमह वकत कार ॥५४॥
हरा कस कि रा अकल यारी दिहद ॥
ब कारे जहा कामगारी कुनद ॥५५॥
बिदिह साकीया साग़रे सबज़ रंग ॥
कि मारा बकार असत दर वकत जंग ॥५६॥
बिदिह साकीया साग़रे नैन पान ॥
कुनद पीर सद सालह रा नउ जवान ॥५७॥३॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

कि रोज़ी दिहंद असतु राज़क रहीम ॥
रहाई दिहो रहिनुमाए करीम ॥१॥
दिल अफ़ज़ाइ दानश दिहो दादगर ॥
रज़ा बक़श रोज़ी दिहो हर हुनर ॥२॥
हिकायत शुनीदम यके नेक ज़न ॥
चु शमशाद कदे ब जोए चमन ॥३॥
कि ओ रा पदर राजहे उतर देश ॥
ब शीरीं ज़ुबा हम च इक़लास केश ॥४॥
कि आमद बराए हमह ग़ुसल गंग ॥
चु कैबर कमा हम चु तीरे तुफ़ंग ॥५॥
हमी क़ासत कि ओ रा स्वयंबर कुनम ॥
कसे ईं पसंद आयद ओ रा दिहम ॥६॥
बिगोयद सुक़न दुक़तरे नेक तन ॥
कसे तो पसंद आयद ओ रा बकुन ॥७॥
निशादंद बर काख ओ हफ़त खन ॥
चु माहे मही आफ़ताबे यमन ॥८॥
दहाने दुहद रा दहन बर कुशाद ॥
जवाबे सुक़न रा उज़र बर निहाद ॥९॥
कि ईं राजहे राजहा बेशुमार ॥
कि वकते तरदद बिआ मुक़तहकार ॥१०॥
कसे तो पसंद आयदत ईं ज़मा ॥
वज़ा पस ब दामादी आयद हुमा ॥११॥
नुमादंद ब ओ राजहा बेशुमार ॥
पसंदश नियामद कसे कार बार ॥१२॥
हम आक़र यके राजहे सुभट सिंघ ॥
पसंद आमदश हम चु गुररा निहंग ॥१३॥
हमह उमदहे राजहा पेश ख़ाद ॥
जुदा बर जुदा दउर मजलस निशाद ॥१४॥
ब पुरशीद कि ए दुक़तरे नेक क़ोइ ॥
तुरा कस पसंद आयद अज़ीहा बजोइ ॥१५॥
रवा करदु ज़ुनार दारान पेश ॥
बिगोयद कि ईं राजहे उतर देश ॥१६॥
कि ओ नाम बसतश बछतरा मती ॥
चु माहे फ़लक आफ़ताबे मही ॥१७॥
अज़ी राजहा कस नियामद नज़र ॥
वज़ा पस अज़ीं हा बुबीं पुर गुहर ॥१८॥
नज़र करद बर राजहा नाज़नीं ॥
पसंदश नियामद कसे दिल नशीं ॥१९॥
स्वयंबर वज़ा रोज़ मउक़ूफ़ गशत ॥
कि नाज़म बु बरक़ासत दरवाज़ह बसत ॥२०॥
कि रोज़े दिगर शाहि ज़ररीं सिपहर ॥
बर अउरंग बरामद चु रउशन गुहर ॥२१॥
दिगर रोज़ हे राजहा क़ासतंद ॥
दिगर गूनह बाज़ार आरासतंद ॥२२॥
नज़र कुन बरोए तु ए दिलरुबाइ ॥
किरा तो नज़र दर बियायद बजाइ ॥२३॥
ब पहिन अंदर आमद गुले अंजमन ॥

कि ज़र आब रंग असतु सीमाब तन ॥२४॥
रवा गशत दर राजहा बेशुमार ॥
गुले सुरक़ चूं गुंबज़े नउ बहार ॥२५॥
ब दुज़दीद दिल राजहा बेशुमार ॥
बिअफ़तद ज़िमी चूं यले कारज़ार ॥२६॥
बिज़द बाग बर वै कि क़ातून क़ेश ॥
कि ईं उमदहे राजहा उतर देश ॥२७॥
वज़ा दुक़तर हसत ईं बछतरा मती ॥
चु माहे फ़लक हम चु हूरो परी ॥२८॥
स्वयंबर दरामद चु माहे फ़लक ॥
फरिशतह सिफ़त ओ चु ज़ातश मलक ॥२९॥
किरा दौलत इकबाल यारी दिहद ॥
कि ईं माहरो कामग़ारी दिहद ॥३०॥
पसंद आमद ओ राजह सुभट सिंघ नाम ॥
कि रउशन तबीयत सलीक़त मुदाम ॥३१॥
रवा करद बर वै वकीलस गिरा ॥
कि ए शाह शाहान रउशन ज़मा ॥३२॥
कि ईं तरज़ लालाइ बरगे समन ॥
कि लाइक सुमान असत ईं रा बकुन ॥३३॥
बिगोयद यके क़ानह बानू मरासत ॥
कि चशमे अज़ो हरदु आहू तरासत ॥३४॥
कि हरगिज़ मन ईं रा न करदम कबूल ॥
कि कउले कुरा असत कसमे रसूल ॥३५॥
ब गोश अंदर आमद अज़ीं न सुक़न ॥
बजुंबश दरामद ज़ने नेक तन ॥३६॥
कसे फ़तह मारा कुनद वकत कार ॥
वज़ा शाहि मारा शवद ईं दियार ॥३७॥
ब कोशीद मैदान जोशीद जंग ॥
ब पोशीद क़फ़तान पोलाद रंग ॥३८॥
निशसतह बर आं रथ चु माहे मुनीर ॥
बुबसतंद शमशेर जुसतंद तीर ॥३९॥
ब मैदा दर आमद जु गुर्रीद शेर ॥
चु शेर असत शेर अफ़कनो दिल दलेर ॥४०॥
ब पोशीद क़ुफ़तान जोशीद जंग ॥
ब कोशीद मैदान तीरो तुफ़ंग ॥४१॥
चुना तीर बारा कुनद कारज़ार ॥
कि लशकर बकार आमदश बेशुमार ॥४२॥
चुना बान बारीद तीरो तुफ़ंग ॥
बसो मरदमा मुरदह शुद जाइ जंग ॥४३॥
सहे नाम गज सिंघ दरामद बजंग ॥
चु कैबर कमा हम चु तीरो तुफ़ंग ॥४४॥
बजुंबश दरामद चु अफ़रीत मसत ॥
यके गुरज़ अज़ फ़ील पैकर ब दसत ॥४५॥
यके तीर ज़द बानूए पाक मरद ॥
कि गज सिंघ अज़ असप आमद ब गरद ॥४६॥
दिग़र राजह रन सिंघ दरामद ब रोश ॥
कि परवानहे चूं दरामद बजोश ॥४७॥
चुना तेग़ ज़द बानूए शेर तन ॥
बिअफ़तद रन सिंघ चु सरवे चमन ॥४८॥
यके शहिर अंबेर दिग़र जोधपुर ॥

क़रामीदह बानो चु रक़सिंदह दुर ॥४९ ॥
बिज़द तेग़ बा ज़ोर बानो सिपर ॥
ब बरक़ेज़ शोलह बसे चूं गहुर ॥५० ॥
सियम राजह बूंदी दर आमद दलेर ॥
चु बर बचह आहू चु ग़ुररीद शेर ॥५१ ॥
चुना तीर ज़द हर दो अबरू सिकंज ॥
बिअफ़ताद अमर सिंघ चु शाखे तुरंज ॥५२ ॥
चुअम राजह जै सिंघ दर आमद मुसाफ़ ॥
बजोश अंदरीं शुद चु अज़ कोहकाफ़ ॥५३ ॥
हुमा क़ुरद शरबत कि यारे चुअम ॥
ज़ि जै सिंघ पसे यक निआमद कदम ॥५४ ॥
यको शहि फिरंगो पिलंदे दिगर ॥
ब मैदा दरामद चु शेरे बबर ॥५५ ॥
सियम शाहि अंगरेज़ चूं आफ़ताब ॥
चुअम शाहि हबशी चु मगरे दर आब ॥५६ ॥
यके रा बिज़द नेज़ह मुशते दिगर ॥
सियम रा ब पाओ चुअम रा सिपर ॥५७ ॥
चुना मे बिअफ़तद न बरक़ासत बाज़ ॥
सूए आसमा जान परवाज़ साज़ ॥५८ ॥
दिग़र कस नियामद तमंनाइ जंग ॥
कि पेशे नियामद दिलावर निहंग ॥५९ ॥
शबे शहि शबिसता चूं दर आमद बफ़उज ॥
सिपह क़ानह आमद हमह मउज मउज ॥६० ॥
ब रोज़े दिग़र रउशनीअत पनाह ॥
ब अउरंग दर आमद चु अउरंग शाह ॥६१ ॥
दु सूए यला हमह बसतंद कमर ॥
ब मैदान जुसतंद सिपर बर सिपर ॥६२ ॥
बगुररीद आमद दु अबरे मुसाफ़ ॥
यके गशतह बायल यके गशत ज़ाफ़ ॥६३ ॥
चकाचाक बरक़ासत तीरो तुफ़ंग ॥
क़ताक़त दरामद हमह रंग रंग ॥६४ ॥
ज़ि तीरो ज़ि तोपो ज़ि तेग़ो तबर ॥
ज़ि नेज़ह व नाचक़ व नावक सिपर ॥६५ ॥
यके देव आमद कि ज़ागो निशा ॥
चु ग़ुररीद शेर हम चु पीले दमा ॥६६ ॥
कुनद तीरो बारा चु बारान मेग़ ॥
बरक़श अंदरा अबर चूं बरक तेग़ ॥६७ ॥
ब जोश अंदर आमद दहाने दुहल ॥
चु पुर गशत बाज़ार जाए अज़ल ॥६८ ॥
हरा कस कि पररा शवद तीर शसत ॥
बसद पहिलूए पील मरदा गुज़शत ॥६९ ॥
हुमा कस बसे तीर ज़द बर कज़ा ॥
बिअफ़ताद देवे चु करखे गिरा ॥७० ॥
दिग़र देव बरगशत बियामद बजंग ॥
चु शेरे अज़ीमो हम चु बरा पिलंग ॥७१ ॥
चुना ज़क़म गोपाल अंदाक़त सक़त ॥
बिअफ़ताद दानो चु बेख अज़ दरक़त ॥७२ ॥
दिग़र कस नियामद अज़ो आरज़ो ॥
कि आयद बजंगे चुनीं माहरो ॥७३ ॥
शहे चीन सर ताज रंगी निहाद ॥

बलाए ग़ुबारश दहन बर कुशाद ॥७४॥
शब आमद यके फ़ौज रा साज़ करद ॥
ज़ि दीगर वजह बाज़ी आग़ाज़ करद ॥७५॥
कि अफ़सोस अफ़सोस है हात हात ॥
अज़ीं उमर वज़ीं ज़िंदगी ज़ी हयात ॥७६॥
ब रोज़े दिग़र रउशनीयत फ़िकर ॥
बर औरंग दरामद चु शाहे दिगर ॥७७॥
सिपहि सू दु बरक़ासत अज़ जोश जंग ॥
रवा शुद ब हर गोशह तीरो तुफ़ंग ॥७८॥
रवारव शुदह कैबरे कीनह कोश ॥
कि बाज़ूए मरदा बरावुरद जोश ॥७९॥
चु लशकर तमामी दरामद ब काम ॥
यके माद ओ रासत सुभट सिंघ नाम ॥८०॥
बिगोयद कि ए शाह रुसतम ज़मा ॥
तु मारा बिकुन या बिगीरी कमा ॥८१॥
बग़ज़ब अंदर आमद चु शेरे ज़िआं ॥
न पुशते दिहम बानूए हम चुना ॥८२॥
बपोशीद क़ुफ़तान जोशीद जंग ॥
बकोशीद चूं शेर मरदा निहंग ॥८३॥
ब जायश दरामद चु शेरे अज़ीम ॥
ब कैबर कमा करद बारश करीम ॥८४॥
चपो रासत ओ करद क़म करद रासत ॥
गरेवे कमा चरक़ चीनी बिक़ासत ॥८५॥
हरा कस कि नेज़ह बिअफ़ताद मुशत ॥
दुता गशत मुशते हमी चार गशत ॥८६॥
बियावेक़त बा दीगरे बाज़ पर ॥
चु सुरक़ अज़दहा बर हमी शेर नर ॥८७॥
चुना बान अफ़ताद तीरो तुफ़ंग ॥
ज़िमी कुशत गानश शुदह लालह रंग ॥८८॥
कुनद तीर बारान रोज़े तमाम ॥
कसे रा न गशतीद मकसूद काम ॥८९॥
अज़ो जंग ज़ो मादगी मादह गशत ॥
बिअफ़ताद हरदो दर आ पहिन दसत ॥९०॥
शहिनशाहि रूमी सिपर दाद रोइ ॥
दिग़र शाहि पैदा शुदह नेक क़ोइ ॥९१॥
न दर जंग आसूदह शुद यक ज़मा ॥
बिअफ़ताद हरदो चुनी कुशतगा ॥९२॥
दिग़र रोज़ बरक़ासत हरदो बजंग ॥
बिआवेक़त बा यक दिग़र चूं निहंग ॥९३॥
वज़ा हरदु तन कूज़हगाने शुदह ॥
कज़ा सीनह गाहीन अरवा शुदह ॥९४॥
ब रक़श अंदर आमद चु मुशकी निहंग ॥
बसे बंगसी बोज़ बंगो पिलंग ॥९५॥
कि अबलक सियाह अबलको बोज़ बोर ॥
ब रक़श अंदर आमद चु ताऊस मोर ॥९६॥
ज़िरह पारह शुद क़ोद व क़ुफ़ता बजंग ॥
ज़ि बकतर ज़ि बरग़शतवा बा क़ुदंग ॥९७॥
चुना तीर बारा शवद कारज़ार ॥
ज़ि बकतर ज़ि ज़िरहा बरारद शरार ॥९८॥
ब रक़श अंदर आमद चु शेरे निहंग ॥

ज़िमी गशत शुद हम चु पुशते पिलंग ॥९९ ॥
चुना ज़्रयादह शुद आतशे तीर बार ॥
कि अकल अज़ मग़ज़ रफ़त होश अज़ दियार ॥१०० ॥
चुना आवेक़त हरदो हुमा जाइ जंग ॥
कि तेग़ अज़ मिया गशत तरकश खतंग ॥१०१ ॥
चुना जंग करदंद सुबह ताब शाम ॥
बि अफ़ताद मुरछत न क़ुरदंद तआम ॥१०२ ॥
जि क़ुद मादह शुद हरदु दर जाइ जंग ॥
चु शेरो यीआनो चु बाज़ा पिलंग ॥१०३ ॥
चु हबशी बरुद दुज़द दीनार ज़रद ॥
जहा गशत चूं गुंबज़े दूद गरद ॥१०४ ॥
सियम रोज़ चौगा बिबुरद आफ़ताब ॥
जहा गशत चूं रउशनश माहिताब ॥१०५ ॥
बु बरक़ासत हरदो अज़ीं जाइ जंग ॥
रवा करद हर सूइ तीरो तुफ़ंग ॥१०६ ॥
चुना गरम शुद आतशे कारज़ार ॥
कि फ़ीले दु दह हज़ार आमद ब कार ॥१०७ ॥
ब कार आमदह असप हफ़त सद हज़ार ॥
हमह ज्वान शाइसतह नामदार ॥१०८ ॥
ज़ि सिंधी व अरबी व ऐराक राइ ॥
ब कार आमदह असप चूं बादु पाइ ॥१०९ ॥
बसे कुशतह सरहंग शाइसतह शेर ॥
बे वकते तरदद बकारे दलेर ॥११० ॥
ब गुररीदन आमद दु अबरे सियाह ॥
नमे क़ून माही लको तेग़ माह ॥१११ ॥
बजंग अंदरूं गउग़ाहे ग़ाज़ीया ॥
ज़िमीं तंग शुद अज़ सुमे ताज़ीया ॥११२ ॥
सुमे बाद पायान फ़ौलाद नाल ॥
ज़िमी ग़शत पुशते पिलंगी मिसाल ॥११३ ॥
चराग़े जहाने क़ुमह बादह क़ुरद ॥
सरे ताज दीगर बिरादर सपुरद ॥११४ ॥
बरोज़े चहारम तपीद आफ़ताब ॥
ब जिलवह दर आवेक़त जररीं तनाब ॥११५ ॥
दिग़र रवश मरदान बसतंद कमर ॥
यमानी कमर दासत बररो पिसर ॥११६ ॥
चु होश अंदर आमद ब जोशीद जंग ॥
ब रोस अंदर आमद चु कोशश पिलंग ॥११७ ॥
चुअम रोज़ कुशतंद दहि हज़ार फ़ील ॥
दु दहि हज़ार असपो चु दरयाइ नील ॥११८ ॥
ब कार आमदह पियादह सी सद हज़ार ॥
जवा मरद शेरान अज़मूदह कार ॥११९ ॥
कुनद ज़रहे रथ चहारो हज़ार ॥
ब शेर अफ़कनो जंग आमुक़तह कार ॥१२० ॥
कि अज़ चार तीर असप कुशतश चहार ॥
दिग़र तीर कुशतश सरे बहिलदार ॥१२१ ॥
सियम तीर ज़द हरदो अबरू शिकंज ॥
कि मारे ब पेचीद ज़ि सउदाइ गंज ॥१२२ ॥
चहारम बिज़द तीर क़बरश नियाफ़त ॥
कि भरमश ब बरक़ासत धरमश न ताफ़त ॥१२३ ॥
बिज़द चूं चुअम कैबरे नाज़नीं ॥

ब क़ुरदंद शहि रग बिअफ़तद ज़िमीं ॥१२४॥
बिदानिसत कि ईं मरद पय मुरदह ग़शत ॥
बिअफ़ताद बूम हम चुनीं शेर मसत ॥१२५॥
कि अज़ रथ बियामद बरामद ज़िमी ॥
क़रामीदह शुद पैकरे नाज़नी ॥१२६॥
ब यक दसत बरदाशत यक प्यालह आब ॥
बनिज़दे शहि आमद चु पररा उकाब ॥१२७॥
बिगोयद कि ए शाहि आज़ाद मरद ॥
चिरा क़ुफ़तह हसती तु दर क़ून गरद ॥१२८॥
हुमा जानजानी तुअम नौजवा ॥
बदीदन तुरा आमदम ईज़मा ॥१२९॥
बिगोयद कि ए बानूए नेक बक़त ॥
चिरा तो बियामद दरीं जाइ सक़त ॥१३०॥
अगर मुरदह बाशी दियारेम लास ॥
वग़र ज़िंदह हसती ब यज़दा सुपास ॥१३१॥
अज़ा गुफ़तनीहा क़ुश आमद सुक़न ॥
बिगोयद कि ए नाज़नी सीम तन ॥१३२॥
हरा कस कि क़ाही बिगो मन दिहम ॥
कि ए शेर दिल मन ग़ुलामे तुअम ॥१३३॥
क़ुदावंद बासी तु ए कार सक़त ॥
कि मारा ब यक बार कुन नेक बक़त ॥१३४॥
बिज़द पुशत पाओ कुशादश ब चशम ॥
हमह रवश शाहान पेशीन रशम ॥१३५॥
बिअफ़ताद बर रथ बिआवुरद जा ॥
बिज़द नउबतश शाहि शाहे ज़मा ॥१३६॥
बहोश अंदर आमद दु चशमश कुशाद ॥
बिगोयद किरा जाइ मारा निहाद ॥१३७॥
बिगोयद तुरा ज़फ़र जंग याफ़तम ॥
ब कारे शुमा कत क़ुदा याफ़तम ॥१३८॥
पशेमा शवद सुक़न गुफ़तन फ़ज़ूल ॥
हरा कस तु गोई कि बर मन कबूल ॥१३९॥
बिदिह साकीया जाम फेरोज़ह फ़ाम ॥
कि मा रा ब कार असत रोज़े तमाम ॥१४०॥
तु मारा बिदिह ता शवम ताज़ह दिल ॥
कि गौहर बिआरेम आलूदह गिल ॥१४१॥४॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

तुई रहिनुमाओ तुई दिल कुशाइ ॥
तुई दसतगीर अंदर हर दो सराइ ॥१॥
तुई राज़ रोज़ी दिहो दसतगीर ॥
करीमे क़ता बक़श दानश पज़ीर ॥२॥
हिकायत शुनीदम यके काज़ीअश ॥
कि बरतर न दीदम कज़ो दीगरश ॥३॥
यके क़ानह ओ बानूए नउजवा ॥
कि कुरबा शवद हरकसे नाज़दा ॥४॥
कि शोसन सरे रा फ़रो मेज़दह ॥
गुले लालह रा दाग़ बर दिल शुदह ॥५॥
कज़ा सूरते माहि रा बीम शुद ॥
रशक शोक़तह अज़ मिया नीम शुद ॥६॥
बकार अज़ सूए क़ानह बेरूं रवद ॥
ब दोशे ज़ुलफ़ शोर सुंबल शवद ॥७॥
गर आबे ब दरीया बशोयद रुक़श ॥
हमह क़ार माही शवद गुल रुक़श ॥८॥
बक़म ओ फ़ितादह हुमा सायह आब ॥
ज़ि मसती शुदह नाम नरग़स शराब ॥९॥
बजीदश यके राजहे नउजवा ॥
कि हुसनल जमाल असतु ज़ाहर जहा ॥१०॥
बगुफ़ता कि ए राजहे नेक बक़त ॥
तु मारा बिदिह जाइ नज़दीक तक़त ॥११॥
नक़ुशती सरे काज़ी आवर तु रासत ॥
वज़ा पस कि ईं क़ानह मा अज़ तुरासतु ॥१२॥
शुनीद ईं सुक़न रा दिल अंदर निहाद ॥
न राज़े दिग़र पेश अउरत कुशाद ॥१३॥
ब वकते शौहर रा चु क़ुश क़ुफ़तह दीद ॥
बिज़द तेग़ क़ुद दसत सर ओ बुरीद ॥१४॥
बुरीदह सर ओरा रवा जाइ गशत ॥
दरा जा सबल सिंघ कि बिनशसतह असत ॥१५॥
तु गुफ़ती मरा हम चुनी करदहअम ॥
बपेशे तु ईं सर मन आवुरदहअम ॥१६॥
अगर सर तु क़ाही सर तुमे दिहम ॥
ब जानो दिले बर तु आशक शुदम ॥१७॥
कि इम शब कुन आं अहिद तो बसतई ॥
ब गमज़हि चशम जान मन कुशतई ॥१८॥
चु दीदश सरे राजहे नउ जवा ॥
ब तरसीद गुफ़ताह कि ए बद निशा ॥१९॥
चुना बद तु करदी क़ुदवंद क़ेश ॥
कि मारा चियारी अज़ीं कार बेश ॥२०॥
ज़ि तो दोसती मन ब बाज़ आमदम ॥
ज़ि करदह तु मन दर नियाज़ आमदम ॥२१॥
चुनी बद तु करदी क़ुदावंद कार ॥
मरा करदह बाशी चुनी रोज़गार ॥२२॥
बिअंदाक़त सर रा दरा जा ज़ि दसत ॥
बरे सीनह ओ सर बिज़द हर दु दसत ॥२३॥
मरा पुशत दादी तुरा हक दिहद ॥

वज़ा रोज़ मउलाइ काज़ी शवद ॥२४॥
बिअंदाक़त सर क़ानह आमद बुबाज़ ॥
बआं लाश काज़ी बक़ुशपीद दराज़ ॥२५॥
बिअंदाक़त बर सर ज़ि क़ुद दसत क़ाक ॥
बिगुफ़ता कि क़ेज़ेद यारान पाक ॥२६॥
कि बदकार करद ईं कसे शोर बक़त ॥
कि काज़ी ब जा कुशत यक ज़क़म सक़त ॥२७॥
ब हर जा कि याबेद क़ूनश निशा ॥
हुमा राह गीरंद हमह मरदुमा ॥२८॥
ब आं जा जहा क़लक इसतादह करद ॥
बजाए कि सर काज़ी अफ़तादह करद ॥२९॥
बिदानिशत हमह औरतो मरदुमा ॥
कि ईं रा ब कुशत असत राजह हुमा ॥३०॥
गिरफ़तंद ओ रा बुबसतंद सक़त ॥
कि जाए जहागीर बिनशसतह तक़त ॥३१॥
बि गुफ़तंद कि ईं रा हवालह कुनद ॥
ब दिल हरचि दारद सज़ायश दिहद ॥३२॥
बि फ़रमूद जलाद रा शोर बक़त ॥
कि ईं सर जुदा कुन ब यक ज़क़म सक़त ॥३३॥
चु शमशेर रा दीद आं नौजवा ॥
ब लरज़ह दरामद चु सरवे गिरा ॥३४॥
बगुफ़ता कि मन कार बद करदहअम ॥
ब कारे शुमा तउर क़ुद करदहअम ॥३५॥
नमूदह इशारत बि चशमे बिआं ॥
कि ए बानूए सरवरे बानूआं ॥३६॥
बहुकमे शुमा मन क़ता करदहअम ॥
कि कार ईं बबे मसलहत करदहअम ॥३७॥
क़लासम बिदिह अहद करदम कबूल ॥
कि अहिदे क़ुदा असत कसमे रसूल ॥३८॥
गुनह बक़श तो मन क़ता करदहअम ॥
कि ए जिगर जा मन ग़ुलामे तुअम ॥३९॥
ब गुफ़ता गर ईं राजह पा सद कुशम ॥
न काज़ी मरा ज़िंदह दसत आमदम ॥४०॥
कि ओ कुशतह गशतह चरा ईं कुशम ॥
कि क़ूने अज़ीं बर सरे क़ुद कुनम ॥४१॥
चि क़ुशतर कि ईं रा क़लासी दिहम ॥
व मन हज़रते काबह अलह रवम ॥४२॥
बगुफ़त ईं सुखन राव करदश क़लास ॥
ब क़ानह क़ुद आमद जमै करद क़ास ॥४३॥
बुबसतंद बारो तयारी कुनद ॥
कि एज़द मरा कामगारी दिहद ॥४४॥
दरेग़ा अज़ कबायल जुदा मे शवम ॥
अगर ज़िंदह बाशम बबाज़ आमदम ॥४५॥
मताए नकद जिनस रा बार बसत ॥
रवानह सूए काबह तअलह शुद असत ॥४६॥
चु बेरूं बरामद दु से मंज़लश ॥
बयाद आमदह क़ानह ज़ा दोसतश ॥४७॥
बुबाज़ आमदह नीम शब क़ानह आं ॥
चि निआमत अज़ीमो चि दउलत गिरा ॥४८॥
बिदानिसत आलम कुज़ा जाइ गशत ॥

चि दानद कि कस हाल बर सर गुज़शत ॥४९॥
बिदिह साकीया प्यालह फ़ेरोज़ फ़ाम ॥
कि मारा बकार असत दर वकत तुआम ॥५०॥
बमन दिह कि क़ुशतर दिमाग़े कुनम ॥
कि रौशन तबै चूं चराग़े कुनम ॥५१॥५॥

੧ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

ख़ुदावंद बक़शिंदहे दिल कुशाइ ॥
रज़ा बक़श रोज़ी दिहो रहिनुमाइ ॥१॥
न फ़उजो न फ़रशो न फ़ररो न फ़ूर ॥
ख़ुदावंद बक़शिंदह ज़ाहर ज़हूर ॥२॥
हिकायत शुनीदेम दुक़तर वज़ीर ॥
कि हुसनल जमाल असत रौशन ज़मीर ॥३॥
वजा कैसरो शाहि रूमी कुलाह ॥
दरक़शिंदह शमशो चु रक़सिंदह माह ॥४॥
यके रोज़ रौशन बरामद शिकार ॥
हमह यूज़ अज़ बाज़ व बहरी हज़ार ॥५॥
ब पहिन अंदर आमद बनक़ज़ीर गाह ॥
बिज़द गेर आहू बसे शेर शाह ॥६॥
दिगर शाह मग़रब दरआमद दलेर ॥
चु रक़शिंदह माहो चु ग़ुररिंदह शेर ॥७॥
दु शाहे दरामद यके जाइ सक़त ॥
किरा तेग़ यारी दिहद नेक बक़त ॥८॥
किरा रोज़ इकबाल यारी दिहद ॥
कि यज़दा किरा कामगारी दिहद ॥९॥
बजुंबश दरामद दु शाहे दलेर ॥
कि बर आहूए यक बरामद दु शेर ॥१०॥
बगुररीदन आमद दु अबरे सियाह ॥
सनाने बियंदाक़त नेज़ह चु काह ॥११॥
चुना तीर बारान परश शुदह ॥
ज़िमीं आसमा पुर आं ज़िकरश शुदह ॥१२॥
चका चाक बरक़ासत नोके सिना ॥
यके रुसत क़ेज़ अज़ बरामद जहा ॥१३॥
चु सूरे सराफ़ील दम मेज़दह ॥
कि रोज़े कियामत बहम मेज़दह ॥१४॥
ग़ुरेज़श दरामद ब अरबी सिपाह ॥
ब ग़ालब दरामद हुमा गरब शाह ॥१५॥
कि तनहा बिमाद असत शाहे अरब ॥
ब वकते चु पेशीन शमश चूं गरब ॥१६॥
चु ताबश नुमनद शवद दसतगीर ॥
चु दुज़दे शवद वकत शब रा असीर ॥१७॥
बु बसतंद बुरदंद शहि निज़द शाह ॥
चु माह अफ़कनो हम चु बुरदंद माह ॥१८॥
ब क़ानह क़बर आमदह शाहि बसत ॥
हमह कार दुज़दी व मरदी गुज़शत ॥१९॥
निशसतंद ब मजलस ज़ि दानाइ दिल ॥
सुक़न राद पिनहा वज़ा शहि क़िज़ल ॥२०॥
चु बिसनीद ईं क़बर दुक़तर वज़ीर ॥
ब बसतंद शमशेर जुसतंद तीर ॥२१॥
ब पोशीद ज़र बफ़त रूमी कबाइ ॥
बज़ीं बर निशसतो बिआमद बजाइ ॥२२॥
रवा शुद सूए शाहि मग़रब चु बाद ॥
कमाने कियानी ब तरकश निहाद ॥२३॥
बपेशे शहे मग़रब आमद दलेर ॥

चु ग़ुररीदह बबरो चु दररिदह शेर ॥२४॥
दुआ करद कि ए शाहि आज़ाद बक़त ॥
सज़ावार देहीमु सायान तक़त ॥२५॥
मरा काहीया आमद अज़ बहर काह ॥
दो से सद सवारो यक अज़ शकल शाहि ॥२६॥
कि बिहतर हुमानसत आं रा बिदिह ॥
वगरनह क़ुदश मौत बर सर बिनिह ॥२७॥
शुनीदे ज़ि मन शाहि गर ईं सुक़न ॥
हुमाना तुरा बेक़ बरकंद बुन ॥२८॥
शुनीद ईं सुक़न शाहि फ़ौलाद तन ॥
ब लरज़ीद बर क़ुद चु बरग़े समन ॥२९॥
चुना जंग करदंद ईं काहीया ॥
न दानम मग़र शाहि बाशद जवा ॥३०॥
न दानम कसे शाहि हसतश जवा ॥
कि मारा बिगीरद जि मायंदरा ॥३१॥
ज़ि पेशीनहे शह वज़ीरा बुख़ाद ॥
सुक़न हाइ पोशीदह बा ओ बिराद ॥३२॥
तु दीदी चुना काहीया जंग करद ॥
कि अज़ मुलक यज़दा बरावुरद गरद ॥३३॥
मुबादा कुनद ताक़त बर मुलक सक़त ॥
दिहम काहीया रा अज़ा नेक बक़त ॥३४॥
हुमा शाहि महिबूशीया पेश ख़ाद ॥
हवालह नमूदश कि ओ रा निशाद ॥३५॥
तु आज़ाद गशती अज़ी सहिल चीज़ ॥
बिगीरए बिरादर तु अज़ ज़ा अज़ीज़ ॥३६॥
ज़ने पेच दसतार रा ताबदाद ॥
दिग़र दसत बर मुशत तेगश निहाद ॥३७॥
बिज़द ताज़ीयानह ब हर चार चार ॥
बगुफ़ता कि ए बे क़बर बे मुहार ॥३८॥
कि आमद दरीं जा वज़ा काह नेसत ॥
कि एज़द गवाह असत यज़दा यकेसत ॥३९॥
दरोगे मरा बर ग़फ़ूरे गुआहसत ॥
बिगोयद कि मारा पनाहे क़ुदासत ॥४०॥
रिहाई दिहंदह क़ुदावंद तक़त ॥
विदा गशत ज़ो मंज़लो जाइ सक़त ॥४१॥
बिदिह साकीया सागरे सबज़ पान ॥
कि साहिब शऊर असत ज़ाहर जहान ॥४२॥
बिदिह साकीया जाम फ़ीरोज़ रंग ॥
कि दर वकत शब चूं क़ुशे रोज़ जंग ॥४३॥६॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

ख़ुदावंद बक़शिंदहे बेशुमार ॥
कि ज़ाहर ज़हूर असत साहिब दियार ॥१॥
तबीअत बहालसत हुसनल जमाल ॥
चु हुसनल जमालो फ़ज़ीलत कमाल ॥२॥
कि इसफ़ंद यार अज़ जहा रक़त बुरद ॥
नसब नामहे ख़ुद ब बहिमन सपुरद ॥३॥
अज़ा दुक़तरे हम चु परदे हुमाइ ॥
चु हुसनल जमाल असत दउलत फ़िज़ाइ ॥४॥
चु बहमन शह अज़ ईं जहा बुरद रक़त ॥
ब दुक़तर सुपरदंद आं ताज तक़त ॥५॥
निशसतंद बर तक़त रूमी हुमाइ ॥
कि बुसता बहार असतु सूरत फ़िज़ाइ ॥६॥
चु बुग़ज़शत बर वै ज़ि दह साल चार ॥
कि पैदा शुदह सबज़हे नौबहार ॥७॥
बहारे जवानी ब नउबत रसीद ॥
चु बुसता गुले सुरक़ बेरूं कशीद ॥८॥
ब हुसन अमदश तूतीए नौबहार ॥
चु माहे कि बरख़ुद कुनद नौबहार ॥९॥
मिज़ाज़श ज़ि तिफ़ली बरूं दर रसीद ॥
जवानी ज़ि आग़ाज़ बरवै कशीद ॥१०॥
विदा शुद अज़ो हाल तिफ़ली मिज़ाज ॥
बहारे जवानी दरामद बुबाज़ ॥११॥
कि बिनशसत बर तक़त शाहन शही ॥
ब कलम अंदर आवेक़त काग़ज़ मही ॥१२॥
नज़र करद बर बचह गौहर निगार ॥
कि बुरद अंदरून शब वकते ग़ुबार ॥१३॥
बिआवेक़त बा ओ दु से चार माह ॥
कि शिकमश फ़रोमाद अज़ तुक़मि शाह ॥१४॥
चु नह माह गशतह ब आं बिसतनी ॥
ब कोशश दरामद रगे ख़ुशतनी ॥१५॥
तवलद शुदश कोदके शीर क़ार ॥
कि ख़ुद शहि व शाह अफ़कनो नामदार ॥१६॥
कि ज़ाहर न करदंद सिररे जहा ॥
ब संदूक ओ रा निगह दाशत आं ॥१७॥
ज़ि मुशको फ़ितर अंबर आवेक़तंद ॥
बरो ऊद अज़ ज़ाफ़रा रेक़तंद ॥१८॥
ब दसत अंदरूं दाशत ओ रा अकीक ॥
रवा करद संदूक दरया अमीक ॥१९॥
रवा करद ओ रा कुनद जामह चाक ॥
नज़र दाशत बरु शुकर यज़दान पाक ॥२०॥
निशसतंद बर रोद लबे गाज़रा ॥
नज़र करद संदूक दरीया रवा ॥२१॥
हमी क़ासत कि ओ रा बदसत आवरंद ॥
कि संदूक बसतह शिकसत आवरंद ॥२२॥
चु बाज़ू ब कोशश दरामद किरा ॥
ब दसत अंदर आमद मताए गिरा ॥२३॥
शिकसतंद मुहरश बराए मता ॥

पदीद आमदह ज़ा चु बक़शिंदह माह ॥२४ ॥
वज़ा गाजरा क़ानह कोदक चु नेसत ॥
क़ुदा मन पिसर दाद ईं हसब सेसत ॥२५ ॥
बियावुरद ओ रा गिरिफ़त आं अकीक ॥
शुकर करद यज़दान आज़म अमीक ॥२६ ॥
कुनद परवरिश रा चु पिसरे अज़ीम ॥
ब यादे क़ुदा कबिलह काबह करीम ॥२७ ॥
चु बुगज़शत बर वै दु से साल माह ॥
कज़ो दुक़तरे क़ानह आवुरद शाह ॥२८ ॥
नज़र करद बर वै हुमाए अज़ीम ॥
ब याद आमदश पिसर गाज़र करीम ॥२९ ॥
बपुरशीद ओ रा कि ए नेक ज़न ॥
कुजा याफ़ती पिसर क़ुश क़ोइ तन ॥३० ॥
बिदानेम क़ानेम शनासेम मन ॥
यके मन शनाशम न दीगर सुक़न ॥३१ ॥
दवीदंद मरदम बक़ादंम कज़ो ॥
कि अज़ क़ानहे गाज़रानश अज़ो ॥३२ ॥
बुक़ादंद ओ रा बुबसतंद सक़त ॥
ब पुरशीद ओ रा कि ए नेक बक़त ॥३३ ॥
बिगोयम तुरा हम चु ईं याफ़तम ॥
नुमायम ब तो हाल चूं साक़तम ॥३४ ॥
कि साले फ़ला माह दर वकत शाम ॥
कि ईं कार रा करदअम मन तमाम ॥३५ ॥
गिरिफ़तेम संदूक दरीया अमीक ॥
यके दसत ज़ो याफ़तम ईं अकीक ॥३६ ॥
बदीदंद गौहरि गिरफ़तंद अज़ा ॥
शनासद कि ईं पिसर हसत आं हुमा ॥३७ ॥
बरो ताज़ह शुद शीर पिसता अज़ो ॥
बिज़द सीनह क़ुद हरदो दसता अज़ो ॥३८ ॥
शनासद अज़ो हर दु लब बर कुशाद ॥
कि ज़ाहर न करदश दिल अंदर निहाद ॥३९ ॥
दिगर रोज़ रफ़तंद ज़उजह फला ॥
मरा क़ाब दादह बज़ुरगे हुमा ॥४० ॥
तुरा मन कि फ़रज़ंद बक़शीदहअम ॥
चरागे कयारा दरक़शीदहअम ॥४१ ॥
ज़ि गंजो ज़र श गौहरो तक़त दाद ॥
वज़ा पिसर रा क़ानहे क़ुद निहाद ॥४२ ॥
ब गुफ़तश कि ईं रा ज़ि दरीआफ़तम ॥
कि दाराब नामश अज़ो साक़तम ॥४३ ॥
कि शाही जहा रा बदो मे दिहंम ॥
वज़ा ताज इकबाल बर सर निहम ॥४४ ॥
मरा क़ुश तर आमद अज़ा सूरतश ॥
कि हुसनल जमाल असत क़ुश सूरतश ॥४५ ॥
कि अज़ शाहि ओ चूं क़बर याफ़तश ॥
कि दाराब नामे मुकररा शुदश ॥४६ ॥
अज़ा शेर शुद शाहि दाराइ दीं ॥
हकीकत शनास असतु ऐनुल यकीं ॥४७ ॥
बिदिह साकीया सागरे सुरक़ फ़ाम ॥
कि मारा ब कार असत वकते मुदाम ॥४८ ॥
बिदिह पियालह फ़ेरोज़ रंगीन रंग ॥

कि मारा क़ुश आमद बसे वकत जंग ॥४९॥७॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

ख़ुदावंद बख़शिंदहे दिल करार ॥
रज़ा बख़श रोज़ी दिहो नौबहार ॥१॥
कि मीर असत पीर असत हर दो जहा ॥
ख़ुदावंद बख़शिंदह हर यक अमा ॥२॥
हिकायत शुनीदेम शाहे अज़ीम ॥
कि हुसनल जमाल असतु साहिब करीम ॥३॥
कि सूरत जमाल असतु हुसनल तमाम ॥
हमह रोज़ आशायशे रोद जाम ॥४॥
कि सरहंग दानश जि फ़रज़ानगी ॥
कि अज़ मसलिहत मौज मरदानगी ॥५॥
वज़ा बानूए हम चु माहे जवा ॥
कि कुरबा शवद हर कसे नाज़दा ॥६॥
कि ख़ुश रंग ख़ुश ख़ोइ ओ ख़ुश जमाल ॥
ख़ुश आवाज़ ख़ुश ख़्वारगी ख़ुश ख़्याल ॥७॥
ब दीदन कि ख़ुश ख़ोइ ख़ूबी जहा ॥
ज़ि हरफ़ात करदन ख़ुशो ख़ुश ज़ुबा ॥८॥
दु पिसरश अज़ा बूद चूं शमश माह ॥
कि रौशन तबीयत हकीकत गवाह ॥९॥
कि गुसताख़ दसत असत चालाक जंग ॥
ब वकते तरदद चु शेरो निहंग ॥१०॥
दु पील अफ़कनो हम चु शेर अफ़कन असत ॥
ब वकते वगा शेर रोईं तन असत ॥११॥
यके ख़ूब रोइ ओ दिग़र तन चु सीम ॥
दु सूरत सज़ावार आज़म अज़ीम ॥१२॥
वज़ा मादरे बरकस आसुफ़तह गशत ॥
चु मरदसत गुल हम चुनी गुल प्रसत ॥१३॥
शबं गाह दर ख़ाबगाह आमदंद ॥
कि ज़ोरावरा दर निगाह आमदंद ॥१४॥
बुख़ादंद पस पेश ख़ुरदो कला ॥
मयो रोद रामश गिरा रा हुमा ॥१५॥
बिदानिसत कि अज़ मसतीयश मसत गशत ॥
बिज़द तेग़ ख़ुद दसत हर दो शिकसत ॥१६॥
बिज़द हर दो दसतश सरे ख़ेश ज़ोर ॥
ब ज़ुंबश दरामद ब करदंद शोर ॥१७॥
बिगोयद कि ए मुसलमानान पाक ॥
चिरा चूं कि ख़ुशती अज़ी जामह चाक ॥१८॥
बिख़ुरदंद मय हर दु आं मसत गशत ॥
गिरफ़तंद शमशेर पौलाद दसत ॥१९॥
कि ईं रा बिज़द आं बई आं जदंद ॥
ब दीदह मरा हर दु ईं कुशतह अंद ॥२०॥
दरेगा मरा जा ज़िमी हम न दाद ॥
न दहलीज़ दोज़ख़ मरा रह कुशाद ॥२१॥
दु चशमे मरा ईं चि गरदीद ईं ॥
कि ईं दीदहे ख़ून ईं दीद ईं ॥२२॥
बिहज़ मन तने तरक दुनीया कुनम ॥
फ़ख़ीरे शवम मुलक चीं मे रवम ॥२३॥
बि गुफत ईं सुख़न रा कुनद जामह चाक ॥

रवा शुद सूए दसतक़त चाक चाक ॥२४॥
कि ओ जा बदीदंद क़ुश क़ाबगाह ॥
निशसतह असतु बर गाउ बा ज़न चु माह ॥२५॥
ब पुरशीद ओ रा कि ए नेक ज़न ॥
हमायू दरक़ते चु सरवे चमन ॥२६॥
कि हूरो परी तो चु नूरे जहा ॥
कि माहे फ़लक आफ़ताबे यमा ॥२७॥
न हूरो परीअम न नूरे जहा ॥
मनम दुक़तरे शाहिजा बिलसिता ॥२८॥
ब पुरशश दरामद परसतश न मूद ॥
बनिज़दश ज़ुबा रा ब फ़ुरसत कसूद ॥२९॥
ब दीदन तुरा मन बस आज़ुरगदहअम ॥
बिगोई तु हर चीज़ बक़शीदहअम ॥३०॥
ब हंगाम पीरी जवा मे शवम ॥
ब मुलके हुमा यार मन मेरवम ॥३१॥
बदाशन तु दानी वगर ईं वफ़ा ॥
बयाद आमदश बदतर ईं बेवफ़ा ॥३२॥
वज़ा जा बिआमद बगिरदे चुचाह ॥
कज़ा जा अज़ो बूद नक़ज़ीर गाह ॥३३॥
बसैरे दिग़र रोज़ आमद शिकार ॥
चु मिन काल अज़ बाशहे नौ बहार ॥३४॥
कि बरक़ासत पेशश गवज़ने अज़ीम ॥
रवा करद असपश चु बादे नसीम ॥३५॥
बसे दूर गशतश न मादह दिगर ॥
न आबो न तोसह न अज़ क़ुद क़बर ॥३६॥
वज़ा ओ शवद बा तने नौजवा ॥
न हूरो परी आफ़ताबे जहा ॥३७॥
ब दीदन वज़ा शाहि आशुफ़तह गशत ॥
कि अज़ क़ुद क़बर रफ़त व अज़ होश दसत ॥३८॥
कि कसमे क़ुदा मन तुरा मे कुनम ॥
कि अज़ जान जानी तु बरतर कुनम ॥३९॥
उज़र करदउ चूं दु से चार बार ॥
हम आक़र बग़ुफ़तम वज़ा करद कार ॥४०॥
बुबीं गरदशे बेवफ़ाई ज़मा ॥
कि क़ूंने सितादश न मादश निशा ॥४१॥
कुजा शाहि कै क़ुसरवो ज़ाम ज़म ॥
कुजा शाहि आदम मुहंमद क़तंम ॥४२॥
फ़रेदूं कुजा शाहन इसफ़ंदयार ॥
न दाराब दारा दरामद शुमार ॥४३॥
कुजा शाहि असकंदरो शेर शाह ॥
कि यक हम न माद असत ज़िंदह ब जाह ॥४४॥
कुजा शाह तैमूर बाबर कुजासत ॥
हुमायूं कुजा शाहि अकबर कुजासत ॥४५॥
बिदिह साकीया सुरक़ रंगे फ़िरंग ॥
क़ुश आमद मरा वकत ज़द तेग़ जंग ॥४६॥
ब मन दिह कि क़ुद रा पयोरस कुनम ॥
ब तेग़ आज़माईश कोहस कुनम ॥४७॥८॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

कमालश करामात आज़म करीम ॥
रज़ा बक़श राज़क रहाको रहीम ॥१॥
ब जाकर दिहंद ई ज़मीनो ज़मान ॥
मलूको मलायक हमह आं जहान ॥२॥
हिकायत शुनीदेम शाहे फ़िरंग ॥
चु बा ज़नि निशसतंद पुशते पलंग ॥३॥
नज़र करद बर बचह गौहर निग़ार ॥
ब दीदन हुमायूं जवा उसतवार ॥४॥
ब वकते शब ओ रा बुक़ादंद पेश ॥
ब दीदन हुमायूं ब बालाइ बेश ॥५॥
बिआवेक़त बा ओ हमह यक दिगर ॥
कि ज़ाहर शवद होश हैबत हुनर ॥६॥
यके मूइ चीं रा बुक़ादंद पेश ॥
कि अज़ मूइ चीनी बरावुरद रेश ॥७॥
बरो हरकि बीनद न दानद सुक़न ॥
कि अज़ रोइ मरदे शुदह शकल ज़न ॥८॥
बिदानंद हरकस कि ईं हम ज़न असत ॥
कि दर पैकरे चूं परी रौशन असत ॥९॥
ब दीदंद ओ रा यके रोज़ शाह ॥
कि मकबूल सूरत चु रक़शिंदह माह ॥१०॥
बि पुरशीद ओ रा कि ए नेक बक़त ॥
सज़ावार शाह असतु शायान तक़त ॥११॥
कि ज़न तो कदामी किरा दुक़तरी ॥
कि मुलके किरा रो किरा क़्वाहरी ॥१२॥
ब नज़र अंदरूं बहरमंद आमदश ॥
ब दीदन शहे दिल पसंद आमदश ॥१३॥
कनीज़क यके रा बुक़ादंद पेश ॥
शबं गाहि बुरदश दरूं क़ानह क़ेश ॥१४॥
बिगुफ़ता कि ए सरव कद सीम तन ॥
चराग़ो फ़लक आफ़ताबे यमन ॥१५॥
वज़ा बहर मा रा ब तपशीद दिल ॥
कि माही बिअफ़ताद अज़ आब गिल ॥१६॥
बुरोए शबा पैक गुलज़ार मा ॥
कि दर पेश यारे वफ़ादार मा ॥१७॥
तु ग़र पेश ओ रा बियारी मरा ॥
कि बक़शेम सरबसतह गंजे तुरा ॥१८॥
रवा शुद कनीज़क शुनीद ईं सुक़न ॥
बिगोयद सुक़न रा ज़ि सर ताब बुन ॥१९॥
ज़ुबानी कनीज़क शुनीदीं सुक़न ॥
ब पेचीद बर क़ुद ज़ि पोशाक ज़न ॥२०॥
कि ज़ाहर कुनानीद असबाब क़ेश ॥
कि दीदन जहा रा ब किरदार क़ेश ॥२१॥
बक़ाहद मरा शाहि ए यार मा ॥
मरा मसलिहत दिह वफ़ादार मा ॥२२॥
तु गोई मनईं जा गुरेज़ा शवम ॥
कि इम रोज़ अज़ जाइ क़ेज़ा शवम ॥२३॥
न तरसी इलाजे तुरा मन कुनम ॥

ब दीदन वज़ा चार माहे निहम ॥२४ ॥
चु कुशपीद यक जाइ चूं बे क़बर ॥
क़बर गशत शुद शाह ओ शेर नर ॥२५ ॥
दहाने कनीज़क शुनीद ईं सुक़न ॥
बजुंबश बलरज़ीद सर ताब बुन ॥२६ ॥
बियामद कज़ो जाइ ओ कुफ़तह दीद ॥
ज़ि सरता कदम हम चु मिहरश तपीद ॥२७ ॥
बिदानद कि ईं रा क़बरदार शुद ॥
ब रोज़े अज़ा ईं क़बरदार शुद ॥२८ ॥
बिकुशपीद यक जा यके क़ाब गाह ॥
मरा दाव अफ़तद न यज़दा गवाह ॥२९ ॥
जुदागर बुबींनम अज़ ईं क़ाब गाह ॥
यके जुफ़त बाशम चु कुरशैद माह ॥३० ॥
वज़ा रोज़ गशतह बियामद दिगर ॥
हुमा कुफ़तह दीदं यके जा बबर ॥३१ ॥
दरेग़ा अज़ीं गर जुदा याफ़तम ॥
यके हमलह चूं शेर नर साक़तम ॥३२ ॥
दिग़र रोज़ रफ़तश सियम आमदश ॥
ब दीदंद यक जाइ बर ताफ़तश ॥३३ ॥
ब रोज़े चु आमद ब दीदंद जुफ़त ॥
ब हैरत फ़रो रफ़त बा दिल बिगुफ़त ॥३४ ॥
कि हैफ़ असत आं रा जुदा याफ़तम ॥
कि तीरे कमा अंदरूं साक़तम ॥३५ ॥
न दीदेम दुशमन न दोज़न बतीर ॥
न कुशतम अदूरा न करदम असीर ॥३६ ॥
शशम रोज़ आमद ब दीदह वज़ा ॥
ब पेचश दरावक़त गुफ़त अज़ ज़ुबा ॥३७ ॥
न दीदेम दुशमन कि रेज़ेम कूं ॥
दरेगा न कैबर कमा अंदरूं ॥३८ ॥
दरेग़ा ब दुशमन न आवेक़तम ॥
दरेगा ना बा यक दिग़र रेक़तम ॥३९ ॥
हकीकत शनाशद न हाले दिगर ॥
कि मायल बसे गशत ओ ताब सर ॥४० ॥
बुबीं बेक़बर रा चकारे कुनद ॥
कि कारे बदश इक़तयारे कुनद ॥४१ ॥
बुबीं बे क़बर बद क़राशी कुनद ॥
कि बेआब सर क़ुद तराशी कुनद ॥४२ ॥
बिदिह साकीया जाम सबज़े मरा ॥
कि सरबसतह मन गंज बक़शम तुरा ॥४३ ॥
बिदिह साकीया१ साग़रे सबज़ फ़ाम ॥
कि क़सम अफ़कनो वकतह सतश ब काम ॥४४ ॥९ ॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

ग़फ़ूरो ग़ुनह बक़श ग़ाफ़ल कुश असत ॥
जहा रा तुई बसतु ई बंदुबसत ॥१॥
न पिसरो न मादर बिरादर पिदर ॥
न दामादु दुशमन न यारे दिगर ॥२॥
शुनीदम सुक़न शाहि मायंदरा ॥
कि रौशन दिलो नाम रौशन ज़मा ॥३॥
कि नामश वज़ीरसत साहिब शऊर ॥
कि साहिब दिमाग़ असत ज़ाहर ज़हूर ॥४॥
कि पिसरे अज़ा बूद रौशन ज़मीर ॥
कि हुसनल जमाल असत साहिब अमीर ॥५॥
कि रौशन दिले शाहि ओ नाम बूद ॥
अदूरा ज़िमरदी बर आवुरद दूद ॥६॥
वज़ीर यके बूद ओ होशमंद ॥
रईयत निवाज़ असत दुशमन गज़ंद ॥७॥
वज़ा दुक़तरे हसत रौशन चराग़ ॥
कि नामे अज़ा बूद रौशन दिमाग़ ॥८॥
ब मकतब सपुरदंद हर दो तिफ़ल ॥
कि तिफ़लश बसे रोज़ गशतंद क़िज़ल ॥९॥
निशसतंद दानाइ मौलाइ रूम ॥
कि दिरमश बबक़शीद आं मरज़ बूम ॥१०॥
निशसतंद दर आं जाइ तिफ़ले बसे ॥
बुक़ादे सुक़न अज़ किताब हर कसे ॥११॥
ब बग़ल अंदर आरंद हर यक किताब ॥
ज़ि तउरेत अंजील वजहे अदाब ॥१२॥
दु मकतब कुनानीद हफ़त अज़ ज़ुबा ॥
यके मरद बुक़ादंद दीगर ज़ना ॥१३॥
कि तिफ़ला बुक़ादंद मुला क़ुशश ॥
ज़नारा बुक़ादंद ज़ने फ़ाज़लश ॥१४॥
वज़ा दरमिया बूद दीवार ज़ीं ॥
यके आं तरफ़ बूद यके तरफ़ ईं ॥१५॥
सबक बुरद हर दो ज़ि हर यक हुनर ॥
इलम कशमकश करद बा यक दिगर ॥१६॥
सुक़न हर यके राद हर यक किताब ॥
ज़ुबा फ़रश अरबी बिगोयद जवाब ॥१७॥
इलम रा सुखन राद बा यक दिगर ॥
ज़ि कामल ज़ि ज़ायल ज़ि नारद सियर ॥१८॥
कि शमशेर इलमो अलमबर कशीद ॥
बहारे जवानी ब हरदो रशीद ॥१९॥
बहारश दर आमद गुले दोसता ॥
बज़ुंबश दरामद सहे चीसता ॥२०॥
बरक़श अंदर आमद शहिनशाहि चीं ॥
बक़ूबी दरामद तने नाज़नीं ॥२१॥
ब क़ूबी दर आमद गुले बोसता ॥
ब ऐश अंदर आमद दिले दोसता ॥२२॥
ज़ि देवार जो अंदरू मूस हसत ॥
ज़ि देवार ओ हम चूं सूराख़ गशत ॥२३॥
ब दीदन अज़ा अंदरू हर दु तन ॥

चराग़ो जहा आफ़ताबे यमन ॥२४ ॥
चुना इशक आवेक़त हर दो निहा ॥
कि इलमश रवद दसत होश अज़ जहा ॥२५ ॥
चुना हर दु आवेक़त बाहम रग़ेब ॥
कि दसत अज़ इनारफ़त पा अज़ रकेब ॥२६ ॥
ब पुरशीद हर दो कि ए नेक क़ोइ ॥
कि ए आफ़ताबे जहा माह रोइ ॥२७ ॥
कि ईं हाल गुज़रद ब आं हर दो तन ॥
बि पुरशीद अक़वंद व अक़वंद ज़न ॥२८ ॥
चरागे फ़लक आफ़ताबे जहा ॥
चरा लागरी गशत वजहे नुमा ॥२९ ॥
चि आज़ार गशतह बुगो जान मा ॥
कि लाग़र चरा गशती ए जान मा ॥३० ॥
अज़ारश बुगो ता इलाजे कुनम ॥
कि मरज़े शुमा रा क़िराज़े कुनम ॥३१ ॥
शुनीद ईं सुक़न रा न दादश जवाब ॥
फ़रो बुरद हर दो तने इशक ताब ॥३२ ॥
चु गुज़रीद बरवै दु से चार रोज़ ॥
बरामद दु तन हर दो गेती फ़रोज़ ॥३३ ॥
बरो दूर गशतंद तिफ़ली ग़ुबार ॥
कि मुहरश बर आवुरद चूं नौबहार ॥३४ ॥
वज़ा फ़ाज़लश बूद दुक़तर यके ॥
कि सूरत जमाल असत दानश बशे ॥३५ ॥
शनासीद ओ रा ज़ि हालत वज़ा ॥
बग़ुफ़तश दरूं क़िलवतश क़ुश ज़ुबा ॥३६ ॥
कि ए सरव कद माह रो सीम तन ॥
चराग़ो फ़लक आफ़ताबे यमन ॥३७ ॥
जुदाई मरा अज़ तुरा कतरह नेसत ॥
ब दीदन दु कालब ब ग़ुफ़तम यकेसत ॥३८ ॥
ब मन हाल गो ता चि गुज़रद तुरा ॥
कि सोज़द हमह जान जिगरे मरा ॥३९ ॥
कि पिनहा सुक़न करद यारा क़तासत ॥
अगर रास गोई तु बर मन रवासत ॥४० ॥
कि दीगर बगोयम मरा रासत गो ॥
कि अज़ क़ून जिगरे मरा तो बिशो ॥४१ ॥
सुक़न दुज़दगी करद यारा क़तासत ॥
अमीरान दुज़दी वज़ीरा क़तासत ॥४२ ॥
सुक़न ग़ुफ़तने रासत ग़ुफ़तन क़ुश असत ॥
कि हक ग़ुफ़तनो हम चु साफ़ी दिल असत ॥४३ ॥
बसे बार ग़ुफ़तश जवाबो न दाद ॥
जवाबे ज़ुबा सुक़न शीरी कुशाद ॥४४ ॥
यके मजलिस आरासत बा रोद जाम ॥
कि हम मसत शुद मजलसे ओ तमाम ॥४५ ॥
ब कैफ़श हमह हम चु आवेक़तंद ॥
कि ज़क़मे जिगर बाज़ुबा रेक़तंद ॥४६ ॥
सुक़न बा ज़ुबा हम चु गोयद मुदाम ॥
न गोयद बजुज़ सुक़न महबूब नाम ॥४७ ॥
दिग़र मजलिस आरासत बा रोद चंग ॥
जवानान शाइसतहे क़ूब रंग ॥४८ ॥
हमह मसत क़ो शुद हमह क़ूब मसत ॥

इनाने फ़ज़ीलत बरूं शुद ज़ि दसत ॥४९॥
हरा कस कि अज़ इलम सुक़नश बिराद ॥
कि अज़ बेक़ुदी नाम हरदो बुखाद ॥५०॥
चु इलमो फ़ज़ीलत फरामोश गशत ॥
बुक़ादंद बा यक दिग़र नाम मसत ॥५१॥
हरा कस कि देरीनह रा हसत दोसत ॥
ज़ुबा क़ुद कुशायिंदह अज़ नाम ओसत ॥५२॥
शनाशिद कि ईं गुल सुक़न आशक असत ॥
ब गुफ़तन हुमायूं सुबक तन क़ुश असत ॥५३॥
कि अज़ इशक व अज़ मुशक अज़ क़मर क़ूं ॥
कि पिनहा न माद असत आमद बरूं ॥५४॥
ब शहर अंदरूं गशत शुहरत पज़ीर ॥
कि आज़ादहे शाहु व दुक़तर वज़ीर ॥५५॥
शुनीद ईं सुक़न शहि दु किशती बुखाद ॥
जुदा बर जुदा हर दु किशती निशाद ॥५६॥
रवा करद ओ रा ब दरीया अज़ीम ॥
दु किशती यके शुद हमह मौज बीम ॥५७॥
दु किशती यके गशत ब हुकमे अलाह ॥
ब यक जा दरामद हुमा शमश माह ॥५८॥
बुबीं क़ुदरते किरदगारे अलाह ॥
दु तन रा यके करद अज़ हुकम शाहि ॥५९॥
दु किशती दरामद ब यक जा दु तन ॥
चराग़े जहा आफ़ताबे यमन ॥६०॥
बि रफ़तंद किशती ब दरीयाइ गार ॥
ब मौज अंदर आमद चु बरगे बहार ॥६१॥
यके अज़दहा बूद आं जा निशसत ॥
ब क़ुरदन दरामद वज़ा करद जसत ॥६२॥
दिग़र पेश तर बूद कहरे बला ॥
दु दसतश सतूं करद बे सर नुमा ॥६३॥
मिया रफ़त शुद किशतीए हर दु दसत ॥
बनेस्वे दमानद अज़ो मार मसत ॥६४॥
गरिफ़तंद ओ रा बदसत अंदरूं ॥
ब बक़शीद ओ रा न क़ुरदंद क़ूं ॥६५॥
चुना जंग शुद अज़दहा बा बला ॥
कि बेरूं निआमद ब हुकमे क़ुदा ॥६६॥
चुना मौज क़ेज़द जि दरीया अज़ीम ॥
कि दीगर न दानिसत ज़ुज़ यक करीम ॥६७॥
रवा गशत किशती ब मौजे बला ॥
बराहे क़लासी ज़ि रहमत क़ुदा ॥६८॥
ब आक़र हम अज़ हुकम परवरदिगार ॥
कि किशती बर आमद ज़ि दरीया किनार ॥६९॥
कि बेरूं बरामद अज़ा हर दु तन ॥
निशसतह लबे आब दरीया यमन ॥७०॥
बरामद यके शेर दीदन शिताब ॥
ब क़ुरदन अज़ा हर दु तन रा कबाब ॥७१॥
ज़ि दरीया बर आमद ज़ि मगरे अज़ीम ॥
क़ुरम हर दु तन रा ब हुकमे करीम ॥७२॥
बजाइश दरामद ज़ि शेरे शिताब ॥
गज़ंदश हमी बुरद बर रोद आब ॥७३॥
ब पेचीद सर ओ क़ता गशत शेर ॥

ब दहने दिग़र दुशमन अफ़तद दलेर ॥७४ ॥
ब गीरद मगर दसत शेरो शिताब ॥
ब बुरदंद ओ रा कशीदह दर आब ॥७५ ॥
बुबीं कुदरते किरदगारे जहा ॥
कि ईं रा ब बक़शीद कुसतश अज़ा ॥७६ ॥
बि रफ़तंद हरदो ब हुकमे अमीर ॥
यके शाहज़ादह ब दुक़तर वज़ीर ॥७७ ॥
बि अफ़ताद हर दो ब दसते अज़ीम ॥
न शायद दिग़र दीद जुज़ यक करीम ॥७८ ॥
ब मुलके हबश आमद आं नेक क़ोइ ॥
यके शाहज़ादह दिग़र क़ूब रोइ ॥७९ ॥
दर आं जा बिआमद कि बिनशसतह शाह ॥
नशसतंद शब रंग ज़रीं कुलाह ॥८० ॥
ब दीदंद ओरा बुक़ादंद पेश ॥
ब गुफ़तंद कि ए शेर आज़ाद केश ॥८१ ॥
ज़ि मुलके कदामी तु ब मन बगो ॥
चि नामे किरा तो ब ईं तरफ़ जो ॥८२ ॥
वगरनह मरा तो न गोईं चु रासत ॥
कि मुरदन शिताब असत एज़द गवाहसत ॥८३ ॥
शहिनशाहि पिसरे ममायंदरा ॥
कि दुक़तर वज़ीर असत ईं नौजवा ॥८४ ॥
हकीकत ब गुफ़तश ज़ि पेशीनह हाल ॥
कि बरवै चु बुगज़शत चंदीं ज़वाल ॥८५ ॥
ब मिहरश दरामद बग़ुफ़त अज़ ज़ुबा ॥
मरा क़ानह जाए ज़ि क़ुद क़ानह दा ॥८६ ॥
वज़ारत क़ुदश रा तुरा मे दिहम ॥
कुलाहे मुमालक तु बर सर निहम ॥८७ ॥
ब गुफ़तंद ईं रा व करदंद वज़ीर ॥
कि नामे वजा बूद रौशन ज़मीर ॥८८ ॥
ब हर जा कि दुशमन शनासद अज़ीम ॥
दवीदंद बरवै ब हुकमे करीम ॥८९ ॥
कि क़ूनश बरेज़ीद करदंद ज़ेर ॥
दिग़र जा शुनीदे दवीदे दलेर ॥९० ॥
ब हर जा कि तरकश बरेज़ंद तीर ॥
ब कुशते अदूरा ब करदे असीर ॥९१ ॥
ब मुदत यके साल ता चार माह ॥
दरिक़शिंदह आमद चु रक़शिंदह माह ॥९२ ॥
बदोज़ंद दुशमन बसोज़ंद तन ॥
बयाद आमदश रोज़गारे कुहन ॥९३ ॥
ब गुफ़तश यके रोज़ दुक़तर वज़ीर ॥
कि ए शाह शाहान रौशन ज़मीर ॥९४ ॥
ब यक बार मुलकत फ़रामोश ग़शत ॥
कि अज़ मसत मसती हमह होश गशत ॥९५ ॥
तु आं मुलक पेशीनह रा याद कुन ॥
कि शहरे पदर रा तु आबाद कुन ॥९६ ॥
निगह दाशत अज़ फ़ौज लशकर तमाम ॥
बसे गंज बक़शीद बर वै मुदाम ॥९७ ॥
यके लशकर आरासत चूं नौबहार ॥
ज़ि क़ंजर व गुरजो व बकतर हज़ार ॥९८ ॥
ज़िरह क़ोद क़ुफ़तान बरगशतवान ॥

ज़ि शमशेर हिंदी गिरा ता गिरान ॥९९ ॥
ज़ि बंदूक मसहद व चीनी कमान ॥
ज़िरह रूम शमशेर हिंदोसतान ॥१०० ॥
चि अज़ ताज़ी असपान पोलाद नाल ॥
हमह जू बदह फ़ीलान अजिश बे मसाल ॥१०१ ॥
हमह शेर मरदा व ज़ोरावरा ॥
कि शेर अफ़कना रा बशफ़ अफ़कना ॥१०२ ॥
बरज़म अंदरूं हमचु पील अफ़कन असत ॥
बबज़म अंदरूं चरब चालाक दसत ॥१०३ ॥
निशा मे दिहद नेज़ह रा नोक कूं ॥
कशीदंद अज़ तेग़ ज़हिर आब गूं ॥१०४ ॥
यके फ़ौज आरासतह हम चु कोह ॥
जुवानान शाइसतहे यक गरोह ॥१०५ ॥
बपोशीद दसतार दुक़तर वज़ीर ॥
ब बसतंद शमशेर जुसतंद तीर ॥१०६ ॥
ब सरदारीए करद पेशीनह फ़ौज ॥
रवा करद लशकर चु दरीयाइ मौज ॥१०७ ॥
यके गोल बसतह चु अबरे सियाह ॥
ब लरज़ीद बूमो ब लरज़ीद माह ॥१०८ ॥
बियावुरद लशकर चु बर वै हदूद ॥
सलाहे दिग़र तीर तेग़ो नमूद ॥१०९ ॥
बिआरासत लशकर ब साज़े तमाम ॥
हमह क़ंजरो गुरज गोपाल नाम ॥११० ॥
ब बुरदंद अकलीम ता राज तक़त ॥
ब बुरदन शहे बाद पायान रक़त ॥१११ ॥
चुना जंग करदंद आं मुलक रा ॥
चु बरगे दरक़ता ज़ि बादे सबा ॥११२ ॥
ब कुशतन अदूरा कुशायद व पेश ॥
ब बेरूं ज़ि मुलकश हमह रूह रेश ॥११३ ॥
परी चिहरए हम चु शेरे नियाद ॥
ब कुशतन अदूरा कि क़ंजर कुशाद ॥११४ ॥
ब हर जा दवीदे ब कुशते अज़ा ॥
ब हर जा रशीदे ब बसते अज़ा ॥११५ ॥
शुनीद ईं अज़ा शाहि मायंदरा ॥
ब तुंदी दरामद बजाइश हुमा ॥११६ ॥
ब आरासतह फ़ौज चूं नौबहार ॥
ज़ि तोपे तुपक क़ंजरे आबदार ॥११७ ॥
बपेशे शफ़ आमद चु दरया अमीक ॥
ज़ि सरता कदम हम चु आहन ग़रीक ॥११८ ॥
ब आवाज़ तोपो तमाचह तुफ़ंग ॥
ज़िमी ग़शत हम चूं गुले लालह रंग ॥११९ ॥
बमैदा दरामद कि दुक़तर वज़ीर ॥
ब यक दसत चीनी कमा दसत तीर ॥१२० ॥
ब हरजा कि पररा शवद तीर दसत ॥
ब सद पहिलूए पील मरदा गुज़शत ॥१२१ ॥
चुना मौज़ क़ेज़द ज़ि दरीयाब संग ॥
बरक़श अंदर आमद चु तेग़ो निहंग ॥१२२ ॥
ब ताबश दरामद यके ताब नाक ॥
ब रक़श अंदर आमद यके क़ून क़ाक ॥१२३ ॥
ब तामश दरामद हमह हिंद तेग़ ॥

ब गुररीद लशकर चु दरीयाइ मेग़ ॥१२४ ॥
ब चरक़ अंदर आमद ब चीनी कमा ॥
ब ताब आमदश तेग़ हिंदोसता ॥१२५ ॥
गरेवह बबावुरद चंदी करोह ॥
ब लरज़ीद दरयाब दररीद कोह ॥१२६ ॥
ब रक़श अंदर आमद ज़िमीनो ज़मा ॥
ब ताबश दरामद चु तेगे यमा ॥१२७ ॥
ब तेज़ आमदो नेज़हे बासतीं ॥
ब जुंबश दरामद तने नाज़नीं ॥१२८ ॥
ब शोरश दरामद नफ़र हाइ कुहिर ॥
ज़ि तोपो व नेज़ह बपोशीद दहिर ॥१२९ ॥
ब जुंबश दरामद कमानो कमंद ॥
दरक़शा शुदह तेग़ सीमाब तुंद ॥१३० ॥
ब जोश आमदह क़ंजरे क़्वार क़ूं ॥
ज़ुबा नेज़ह मारश बरामद बरूं ॥१३१ ॥
ब ताबश दरामद लको ताब नाक ॥
यके सुरक़ गोगिरद शुद खूंन क़ाक ॥१३२ ॥
दिहा दिह दरामद ज़ि तीरो तुफ़ंग ॥
हयाहय दरामद निहंगो निहंग ॥१३३ ॥
चकाचाक बरक़ासत तीरो कमा ॥
बरामद यके रुसत क़ेज़ अज़ जहा ॥१३४ ॥
न पोयिंदर रा बर ज़िमी बूद जा ॥
न परिंदह रा दर हवा बूद राह ॥१३५ ॥
चुना तेग़ बारीद मियाने मुसाफ़ ॥
कि अज़ कुशतगा शुद ज़िमी कोहकाफ़ ॥१३६ ॥
कि पाओ सर अंबोह चंदा शुदह ॥
कि मैदा पुर अज़ गोइ चौगा शुदह ॥१३७ ॥
रवा रउ दरामद ब तीरो तुफ़ंग ॥
कि पारह शुदह क़ोद क़ुफ़तान जंग ॥१३८ ॥
चुना तेग़ ताबश त पीद आफ़ताब ॥
दरक़ता शुदह क़ुशक व दरयाइ आब ॥१३९ ॥
चुना तीर बारा शुदह हम चु बरकु ॥
बिअफ़ताद शुद फ़ील चूं फ़रक फ़रक ॥१४० ॥
ब हरब अंदर आमद वज़ीरे चु बाद ॥
यके तेग़ मायंदरानी कुशाद ॥१४१ ॥
दिग़र तरफ़ आमद ब दुक़तर अज़ा ॥
बरहिने यके तेग़ हिंदोसता ॥१४२ ॥
दरक़शा शुदह आं चुना तेग़ तेज़ ॥
अदूरा अज़ो दिल शवद रेज़ रेज़ ॥१४३ ॥
यके तेग़ ज़द बर सरे ओ समंद ॥
ज़िमीनश दरामद चु कोहे बिलंद ॥१४४ ॥
दिग़र तेग़ ओ रा बिज़द करद नीम ॥
बि अफ़ताद बूमस चु करखे अज़ीम ॥१४५ ॥
दिग़र मरद आमद चु प्ररा उकाब ॥
बिज़द तेग़ ओ रा ब करदश क़राब ॥१४६ ॥
चु कारे वज़ीरश बराहत रसीद ॥
दिग़र मिहनते सियम आमद पदीद ॥१४७ ॥
सियम देव आमद बगल तीद कूं ॥
ज़ि दहलीज़ दोज़क़ बरामद बरूं ॥१४८ ॥
ब कुशतंद ओ रा दु करदंद तन ॥

चु शेरे यिआं हम चु गोरे कुहन ॥१४९॥
चहारम दरामद चु शेरा बजंग ॥
चु बर बचहे गोर ग़ररा पिलंग ॥१५०॥
चुना तेग़ बर वै बिज़द नाज़नीं ॥
कि अज़ पुशत असपश दरामद ज़िमीं ॥१५१॥
कि पंचम दरामद चु देवे अज़ीम ॥
यके ज़क़म ज़द करद हुकमे करीम ॥१५२॥
चुना तेग़ बर वै ज़दा क़ूब रंग ॥
ज़ि सर ता कदम आमदह ज़ेर तंग ॥१५३॥
शशम देव आमद चु अफ़रीत मसत ॥
ज़ि तीरे कमा हम चु कबज़ह गुज़शत ॥१५४॥
बिज़द तेग़ ओ रा कि ओ नीम शुद ॥
कि दीगर यला रा अज़ो बीम शुद ॥१५५॥
चुनी ता बमिकदार हफ़ताद मरद ॥
ब तेग़ अंदर आवेक़त क़ास अज़ न बरद ॥१५६॥
दिग़र कस निआमद तमंनाइ जंग ॥
कि बेरूं नियामद दिलावर निहंग ॥१५७॥
ब हरब आमदश शाह मायंदरा ॥
ब ताबश तपीदन दिले मरदमा ॥१५८॥
चु अबरस ब अंदाक़त दउरे यला ॥
ब रक़श अंदर आमद ज़िहे आसमा ॥१५९॥
ब ताबश दरामद ज़िमीनो ज़मन ॥
दरक़शा शुदह तेग़ हिंदी यमन ॥१६०॥
चलाचल दरामद कमानो कमंद ॥
हयाहय दरामद ब गुरजो गज़ंद ॥१६१॥
चकाचाक बरक़ासत तीरो तुफ़ंग ॥
ज़िमी लाल शुद चूं गुले लालह रंग ॥१६२॥
हहाहू दरामद चुपह नंद रूं ॥
दिहा दिह शुदह क़ंजरे क़ार खूं ॥१६३॥
ब रक़श अंदर आमद यके ताब रंग ॥
ब रक़श अंदर आमद दु चालाक जंग ॥१६४॥
ब शोरश दरामद सराफ़ील सूर ॥
ब रक़श अंदर आमद तने क़ास हूर ॥१६५॥
ब शोरश दरामद ज़ि तन दर क़रोश ॥
ब बाज़ूइ मरदा बरावुरद जोश ॥१६६॥
यके फ़रश आरासत सुरक़ अतलसे ॥
बु क़ानद चु मकतब ज़ुबा पहिलूए ॥१६७॥
ब मरदम चुना कुशत शुद कारज़ार ॥
ज़ुबा दर गुज़ारम नियायद शुमार ॥१६८॥
गुरेज़ा शवद शाहि मायंदरा ॥
ब कुशतंद लशकर गिरा ता गिरा ॥१६९॥
कि पुशतश बिअफ़ताद दुक़तर वज़ीर ॥
बि बसतंद ओ रा कि करदंद असीर ॥१७०॥
ब निज़दे बियावुरद जो शाह क़ेश ॥
बि गुफ़तह कि ए शाह शाहान वेश ॥१७१॥
बिगोयद कि ईं शाह मायंदरा ॥
बि बसतह बियावुरद निज़दे शुमा ॥१७२॥
अग़र तो बिगोई ब ज़ा ईं बुरम ॥
वग़र तो बिगोई बज़िंदा दिहम ॥१७३॥
बज़िंदा सपुरदंद ओ रा अज़ीम ॥

सितानद अज़ो ताज शाही कलीम ॥१७४ ॥
शहिनशाहगी याफ़त हुकमो रज़ाक ॥
कसे दुशमना रा कुनद चाक चाक ॥१७५ ॥
चुना करद शुद कसद मिहनत कसे ॥
कि रहमत बबक्शीद जो रहमते ॥१७६ ॥
कि ओ शाह बानू शुदो मुलक शाह ॥
कि शाही हमी याफ़त हुकमे इलाह ॥१७७ ॥
बिदिह साकीया साग़रे सबज़ आब ॥
कि बेरूं बिअफ़ताद परदह नकाब ॥१७८ ॥
बिदिह साकीया सबज़ रंगे फ़िरंग ॥
कि वकते ब कार असत अज़ रोज़ जंग ॥१७९ ॥१० ॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

तु ईं दसतगीर असत दर मादगा ॥
तु ईं कार साज़ असत बेचारगा ॥१॥
शहिनशाहि बखशिंदए बे निआज़ ॥
ज़िमीनो ज़मा रा तुईं कारसाज़ ॥२॥
हिकायत शुनीदेम शाहे कलिजंर ॥
कुना नीद यक दर चु अज़ कोह मंजर ॥३॥
यके पिसर ओ बूद हुसनुल जमाल ॥
कि लायक जहा बूद अज़ मुलक माल ॥४॥
यके शाहि ओ जाव दुक़तर अज़ो ॥
कि दीगर न ज़न बूद समन बर कज़ो ॥५॥
वज़ा दुक़तरे शाह आं पिसर शाह ॥
शुद आशुफ़तह बर वै चु बर शमश माह ॥६॥
बिगोयद कि ए शाह मारा बिकुन ॥
कि दहिशत कसे मरद दीगर मकुन ॥७॥
शुनीदम कि दर शाहि हिंदोसता ॥
कि नामे वज़ा शेर शाहे वज़ा ॥८॥
चुना नशत दसतूर मुलके क़ुदा ॥
बयक दान बेगान रेज़द जुदा ॥९॥
बिग़ीरंद शाही बिअफ़ताद तुरग़ ॥
बपेशे गुरेज़द चु अज़ बाज़ मुरग़ ॥१०॥
बिगीरद अज़ो हरदु असपे कला ॥
कि मुलको अराकश बिआमद अज़ा ॥११॥
बि बक़शीद ओ रा बसे ज़र दु फ़ील ॥
कि बेरूं बिआवुरद दरीयाइ नील ॥१२॥
यके नाम राहो सुराहो दिगर ॥
चु आहू कला पाइ अज़ीमे दु नर ॥१३॥
अगर असप हर दो अज़ा मे दिहद ॥
वज़ा पस तुरा क़ानह बानूं कुनद ॥१४॥
शुनीद ईं सुक़न रा हमी शुद रवा ॥
बियामद ब शहर शाह हिंदोसता ॥१५॥
निशसतंद बर रोद जमना लब आब ॥
बि बुरदंद बादह क़ुरदंद कबाब ॥१६॥
पसे दो बरामद शबे चूं सियाह ॥
रवा करद आबस बसे पुशत काह ॥१७॥
ब दीदंद ओ रा बसे पासबा ॥
ब तुंदी दरामद बताबश हुमा ॥१८॥
बसे बर वै बंदूक बारा कुनद ॥
चु बा बरक अबरस बहारा कुनद ॥१९॥
हमी वज़ह करदंद दु से चार बार ॥
हम आक़र कुनद क़ाब क़ुफ़त इक़तीयार ॥२०॥
बिदानद कि क़ुफ़तह शवद पासबा ॥
ब पय मुरद शुद हम चु ज़क़मे यला ॥२१॥
रवा करद ओ जा बिआमद अज़ा ॥
कि बुन गाह अज़ शाह करखे गिरा ॥२२॥
घरी रा बिकोबद घरीया घरीयार ॥
वज़ा मेख कोबद ब पुशते दिवार ॥२३॥
चुना ता बरामद दिवारे अज़ीम ॥

दु असपश नज़र करद हुकमे करीम ॥२४ ॥
यके रा बिज़द ता अज़ो नीम करद ॥
दरे पासबाने बर अज़ नीम करद ॥२५ ॥
दिग़र रा बिज़द ता जुदा गशत सर ॥
सियम रा बिकुशतन शवद क़ून तर ॥२६ ॥
चुअम रा जुदा करद पंजम बकुशत ॥
शशम रा बकुशतंद जमदार मुशत ॥२७ ॥
शशम चौकीअस कुशत आमद अज़ा ॥
कि हफ़तश गिरा बुद चौकी गिरा ॥२८ ॥
कि हफ़तम हमी कुशत ज़क़मे अज़ीम ॥
कि दसतश कुनद रक़श हुकमे करीम ॥२९ ॥
चुना ताज़ीआनह बिज़द ताज़ीअश ॥
कि बाला बियामद ब ज़मन अंदरश ॥३० ॥
वगशतन दराबे ब बेरूं अज़ा ॥
कि हैरत बिमादंद शाहे जहा ॥३१ ॥
कि दंदा क़ुरद दसत अज़ शेर शाह ॥
ब हैरत हमी रफ़त आलम पनाह ॥३२ ॥
कि मरा कुज़ा बुरद असपे अज़ीम ॥
बि बक़शीद ओ हम चु कसमे करीम ॥३३ ॥
दरेग़ा अगर रूइ ओ दीदमे ॥
ब सद गंज सरबसत बक़शीदमे ॥३४ ॥
कि हैफ़सत गरो दीदए याफ़तम ॥
ब जाए दिग़र दिल नज़ो ताफ़तम ॥३५ ॥
कि दीदार बक़शंद अगर ओ मरा ॥
कि सद गंज सरबसत बक़शम वरा ॥३६ ॥
चु शुहरत कुनानीद शहर अंदरूं ॥
कि बक़शीद मम क़ून अज़ क़्वार कूं ॥३७ ॥
बि बसतंद दसतार अज़ जाम ज़र ॥
ब पेशे शह आमद चु ज़ररी सिपर ॥३८ ॥
बगोयद कि शेर अफ़कनो शेर शाह ॥
कि अज़ राह रा मन बिबुरदंद राह ॥३९ ॥
अजबमाद साहिब क़िरद ईं जवाब ॥
दिग़र बार गोयद कि बा वै सवाब ॥४० ॥
कि नकल स नुमा ईं मरा शेर तन ॥
ब वजहे चरा बुरदा असपे कुहन ॥४१ ॥
निशसतंद अज़ा वजहे बर रोद आब ॥
बि बुरदंद बादह बक़ुरदन कबाब ॥४२ ॥
रवा करद अवल बसे पुशत काह ॥
दग़ा मे दिहद पासबानान शाह ॥४३ ॥
वज़ा पस ब कोशश कुनानीद लक़त ॥
ब पैरश दरामद जि दरीयाइ सक़त ॥४४ ॥
वज़ा बिशकुनानीद ओ गिरद शुद ॥
ब दीदन अज़ो शाह पय मुरदह शुद ॥४५ ॥
घड़ी यक बिमादंद ग़रूब आफ़ताब ॥
वज़ा जा बियामद कुशायद तनाब ॥४६ ॥
लग़ामश बिदादंद स्वारे शुदसत ॥
बिज़द ताजीआंनह चु अफ़रीत मसत ॥४७ ॥
चुना असप क़ोज़ीद बरतर जि शाह ॥
ज़ि बाला बियामद ब दरीयाइ गाह ॥४८ ॥
ब पैरश दरामद जि दरीया अज़ीम ॥

कि पारस हमी गशत हुकमे करीम ॥४९॥
फ़रोद आमदश असप करदस सलाम ॥
बिगोयद सुक़न शाहि अरबी कलाम ॥५०॥
तु अकलश चरा गशत ए शाहि शाह ॥
कि मा राह बुरदन तु दादन सुराह ॥५१॥
कि गुफ़तश चुनी ता रवा करद रक़श ॥
ब याद आमदो एज़दे दाद बक़श ॥५२॥
बि अफ़ताद पुशत असपहा बेशुमार ॥
कि ओ रा न हम बर कुनद कस स्वार ॥५३॥
बिज़द मरद दासतारहा पेश शाह ॥
कि ए शाह शाहान आलम पनाह ॥५४॥
बिगीरद कसे हर दु आहू बुराक ॥
तु ओ रा बिबक़शीद क़ुद दसत ताक ॥५५॥
चरामे कुनद कारहा बेक़ुदी ॥
कि राहा अज़ो मन सुराहा तुई ॥५६॥
बिबुरदश अज़ो असप हर दो अज़ीम ॥
वज़ा रा बि बक़शीद हुकमों रहीम ॥५७॥
कि ओ रा दरावुरद क़ानह निकाह ॥
कि कौले कुनद मुसतकीम हुकम शाह ॥५८॥
बिदिह साकीया साग़रे कोकनार ॥
दरे वकत जंगश बियामद ब कार ॥५९॥
कि क़ूबसत दर वकत क़सम अफ़कनी ॥
कि यक कुरतयस फ़ील रा पैकनी ॥६०॥११॥

ੴ वाहगुरू जी की फ़तह ॥

रज़ा बक़श बक़शिंदए बेशुमार ॥
रिहाई दिहो पाक परवरदगार ॥१॥
रहीमो करीमो मकीनो मका ॥
अज़ीमो फ़हीमो ज़मीनो ज़मा ॥२॥
शुनीदम सुक़न कोह कैबर अज़ीम ॥
कि अफ़गा यके बूद ओ जा रहीम ॥३॥
यके बानूए बूद ओ हम चु माह ॥
कुनद दीदन शरिशत ग़रदन ज़ि शाह ॥४॥
दो अबरू चु अबरे बहारा कुनद ॥
बमियगा चु अज़ तीर बारा कुनद ॥५॥
रुक़े चूं क़लासी दिहद माहि रा ॥
बहारे गुलिसता दिहद शाहि रा ॥६॥
ब अबरू कमाने शुदा नाज़नीं ॥
ब चशमश ज़नद कैबरै कहरगीं ॥७॥
शुनीदम सुक़न कोह कैबर अज़ीम ॥
गुलिसता कुनद बूम शोरीद दसत ॥८॥
क़ुशे क़ुश जमालो कमालो हुसन ॥
ब सूरत जवानसत फ़िकरे कुहन ॥९॥
यके हसन क़ा बूद ओ जा फ़गा ॥
बदानश हमी बूद अकलश जवा ॥१०॥
कुनद दोसती बा हमह यक दिगर ॥
कि लैली व मजनूं क़िज़ल गशत सर ॥११॥
चु बा यक दिग़र हम चुनी गशत मसत ॥
चु पा अज़ रकाबो इना रफ़त दसत ॥१२॥
तलब करद ओ क़ानए क़िलवते ॥
मिया आमदश जो बदन शहवते ॥१३॥
हमीं जुफ़त क़ुरदंद दु से चार माह ॥
क़बर करद जो दुशमने निज़द शाह ॥१४॥
ब हैरत दरामद फ़गाने रहीम ॥
कशीदन यके तेग़ गररा अज़ीम ॥१५॥
चु क़बरश रसीदो कि आमद शौहर ॥
हुमा यार क़ुद रा बिज़द तेग़ सर ॥१६॥
हमहि गोशतो देग़ अंदर निहाद ॥
मसालय बिअंदाक़त आतश बिदाद ॥१७॥
शौहर रा क़ुरानीद बाकी बिमाद ॥
हमह नौकरा रा ज़िआफ़त कुनाद ॥१८॥
चु क़ुश गशत शौहर न दीदश चु नर ॥
बकुशता कसे रा कि दादश क़बर ॥१९॥
बिदिह साकीया साग़रे सबज़ गूं ॥
कि मारा बकारसत जंग अंदरूं ॥२०॥
लबालब बकुन दम बदम नोश कुन ॥
ग़मे हर दु आलम फ़रामोश कुन ॥२१॥१२॥

ੴस्री वाहिगुरू जी की फतह ॥

SECTION 21: ASTOTAR SRI BHAGAUTI JI KA

108 Names of Bhagauti — Closing hymn

छंद छका भगउती जू का

स्री मुखवाक पातशाही १० ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

छंद ॥

नमो उग्रदंती अनंती सैवया ॥
नमो जोग जोगेसवरी जोग मैया ॥
नमो केहरी बाहनी सत्रु हंती ॥
नमो सारदा ब्रहम विदिआ पढ़ंती ॥
नमो रिद्धि दा सिद्धि दा बिुध दैनी ॥
नमो काल के काल कउ काल छैनी ॥
नमो काल अजाल है हेर तेरो ॥
नमो तीन हू लोक कीनो अहेरो ॥
नमो जोति जवाला तुमै बेद गावैं ॥
सुरासुर रिखीसवर नहीं भेद पावैं ॥
तूंही जोग जोगतण तुही खड़ग धारे ॥
तुही जै करंती असुर गहि पछारे ॥
तुही जोगणी खपर भरणी अदोखं ॥
रकत बीज के प्राण को पकड़ सोखं ॥
तुही जल थले परबते गिरि निवासी ॥
तुही सभ घटन को निरालम प्रकासी ॥
तुही दुसट दाहिन तुही सरब पाली ॥
तुही ब्रिछ पुहिपा तुही आप माली ॥
तुही विसव भरणी तुही जग प्रकासी ॥
तुही अलख बरणी तुही भु अकासी ॥
नमो जालपा देवि दुरगे भवानी ॥
तिहू लोक नवखंड मैं तुम प्रधानी ॥
अटल छत्र धरणी तुही आदि देवं ॥
सकल मुनजना तोहि निस दिन सरेवं ॥
तुही काल अकाल की जोति छाजै ॥
सदा जै सदा जै सदा जै बिराजै ॥
यही दास मांगै क्रिपा सिंधु कीजै ॥
संवय ब्रहम की भगत सरबत्र दीजै ॥
तुही जागती जोति जावला सरूपं ॥
तुही जग सकल महि रमंती अनूपं ॥
महां मूड़ हऊं दासन तिहारा ॥
पकड़ बांह भउजल करहु बेग पारा ॥

फतहि डंक बाजै क्रिपा यौ करीजै ॥

यही बारता दास की नित सुणीजै ॥
करहु हुकम अपना सभै दुसट घाऊं ॥
तुरक हिंद का सकल झगरा मिटाऊं ॥

अगम सूरबीरे उठहि सिंघ जोधा ॥
पकड़ तुरक गन कउ करै वै निरोधा ॥
सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै ॥
जगै धरम हिंदुक तुरकन दुंद भाजै ॥
जपउं जाप एकै हरे हरि अकालं ॥
होवै तब दुनीआं सभ छिनक मैं निहालं ॥
सुणहु तुम भवानी हमन की पुकारे ॥
करहु दास पर मिहर अपरं अपारे ॥

दोहरा ॥

दवार तुमारे ठाढ हउं इक बर दीजै मोहि ॥
पंथ चलै तब जगत मै दुसट खपावहु तोहि ॥१॥
भगवती छंद दूजा ॥२॥
नमो कालका काल रूपी क्रिपानी ॥
नमो सुंभ निसुंभ नासनि भवानी ॥
नमो चंड अर मूंड संघार कारी ॥
नमो रकत बीजान के प्रान हारी ॥
नमो वेद विदिया नमो जगय रूपा ॥
नमो अंजनी पूरनी भूप भूपा ॥
नमो जै अनंती भद्रकाली अबाहं ॥
नमो भगवती तेजवंती अढाहं ॥
नमो सकति रूपण अगंमण अडोला ॥
नमो खड़ग धारन अछेदण अतोला ॥
नमो गरब गंजन सिरी जोग माया ॥
सभै थक रहे मरम किनहूं न पाया ॥
तुही जल अगनि पवन तूं हूर नूरा ॥
तुही जोति उडगन तुही चंद सूरा ॥
तुही खेचरा भूचरा जोध बीरे ॥
तुही रच्छनी स्रिसटि रूपन गहीरे ॥
तुही जगत जननी अनंती अकालं ॥
तुही अंन दैनी सभन को समालं ॥
तुही खंड ब्रहमंड भूमं सरूपी ॥
तुही बिसन सिव ब्रहम इंदरा अनूपी ॥
तुही सीतला तोतला बाक बानी ॥
नमो चंडका मंगला स्री भवानी ॥
नहीं तुम बिना कोइ रच्छक हमारा ॥
तुही आदि कुआर देवी अपारा ॥
तुही देवकी क्रिसन माता कहायं ॥
तुही नैणा देवी अलख जग सहायं ॥
तुही थंभ सिउं निकस नरसिंघ होई ॥
उदर हरनाखस का नखहु कर परोई ॥
तुही कच्छ हुइ दैत मधुकीट जारे ॥
तुही होइ बैराह हिरनाछ्य मारे ॥
तुही हुइ बावन महां छल दिखायो ॥
पकड़ राजे बल को पतालै पठायो ॥
तुही होइ परसराम जग महि प्रकासी ॥
सकल छत्रीअन कउ करै छै बिनासी ॥
तुही फिर भई रामचंद्र अपारा ॥
पकड़ लंक सउ दैत रावण पछारा ॥
तुहीं मुकति दाइणी सदा सुभ करंती ॥

तुही सूर बलबीर दुसटण दहंती ॥
तुही राधका रुकमणी तूं कुशिलआ ॥
तुही अंजनी रेनका तूं अहलिआ ॥
तुही भरण पोखण सभन पर क्रिपाली ॥
करहु मोहि मुकता कटहु भरम जाली ॥
नमो दुख हरंती अनंदत सरूपा ॥
अपन दास पर मिहर कीजै अनूपा ॥

दोहरा ॥

दास जान कर आपना किरपा कीजै मोहि ॥
इहै बेनती दास की सुणहु भवानी तोहि ॥२॥
भगवती छंद तीजा ॥३॥
तूही कलप ब्रिछण तुही कामधेना ॥
तुही असट सिद्धण तुही नूर नैना ॥
तुही सुरग पाताल बैकुंठ धरणी ॥
तुही पाप खंडण उदर जगत भरणी ॥
तुही ब्राहमणी बेद पाठण सवित्री ॥
तुही धरमणी करण कारण पवित्री ॥
तुही गौरजा पारबती जोग धरणं ॥
तुही लच्छमी अलख रूपी अवरणं ॥
तुही सभ जगत कउ उपावै छकावै ॥
तुही बहुड़ आपे छिनिक मउ खपावै ॥
तुही भगत करतार की सकति राणी ॥
तुही हरि सिमरि कर भई जोग धयाणी ॥
अगम खेल तुमरा कहा को बखानै ॥
तुही भेद अपना अपनु आप जानै ॥
सगल ढूंड थाके लखियो किछु न भेदा ॥
तुही ईसरी दुख बिनासन अछेदा ॥
करहु मेहर अपुनी चरन धूरि पावउं ॥
तुमन दुआर पर सीस अपना घसावउं ॥
यही दान मांगउ करहु जै हमारी ॥
सभै दुसट दैता खपै छिन मझारी ॥
तुही डाकणी साकणी सूरबीरे ॥
तुही रूप नाराइणी हरि सरीरे ॥
तुही अलख दुरगा जगत करनहारी ॥
सकल छोड कर ओट पकड़ी तिहारी ॥
तुही मच्छ होइ सिंधु भीतर खिलंती ॥
तुही दैंत संखासुरे कउ दलंती ॥
तुही क्रिसन होइ कंस केसी खपायो ॥
तुमन मल चंडूर गहि कर उडायो ॥
जगन नाथ हुइ दैत गयासुर बिडारे ॥
तुही निहकलंकी भई खड़ग धारे ॥
तुही दैंत किलाकासुरे कउ संघरणी ॥
तुही सभ जुगण बीच अवतार धरणी ॥
जुगो जुग सकल खेल तुम ही रचायो ॥
तुमन खेल का भेद किनहूं न पायो ॥
तुही अशट दुरगे भवानी अकालं ॥
तुही सकल ब्रहमंड ऊपर दयालं ॥
तुमन कुदरती खेल कीनो अपारा ॥
तुमन तेज सउ कोटि रवि ससि उजारा ॥

तुही निज वजीरन प्रभू दर सुहंती ॥
तुही निस दिना जाप हरि हरि जपंती ॥
निरंजन पुरख शाह शाहन अपारे ॥
तुही सकति है निकटवरती मुरारे ॥
सुणहु दास की बेनती हरि भवानी ॥
दइआ धार मुहि लाज राखहु निदानी ॥

दोहरा ॥

दानो मारे रोहिले देव बचाए तोहि ॥
सिंघ तुमारो रण गजे हाक न झालस कोइ ॥३॥
भगवती छंद चौथा ॥४॥
तुही जोत जवाला मुखी होइ दिखानी ॥
परबत फोड़ लाटां अगन जग मगानी ॥
तुही हरण भरणी तुही जगत माए ॥
तुही सरब ठौरन रही आप छाए ॥
तुही उतभुजा सेतजा सुख निधानी ॥
तुही अंडजा जेरजा चतर बानी ॥
तुही तीर तरवार काती कटारी ॥
तुही संख पदमण गदा चक्रधारी ॥
तुही तोप बंदूक गोला चलंती ॥
तुही कोट गढ़ कउ भमक सिउ उडंती ॥
तुही बड अजीतण सगल दोख हरणी ॥
तुही हरि अडोलण अगम खेल करणी ॥
तुही अति बलिसटण चतुर भुज भवानी ॥
तुमन सरब दुसटा कीए मार फानी ॥
तुही गुपति परगट सभन मो खिलंती ॥
तुही सुंभ महिखासुरै कउ दलंती ॥
तुही जगत मंडण दइआवंत भारी ॥
सकल सिद्ध मुनि जन लए तैं उबारी ॥
लखै नाहि कोऊ अजब खेल तेरा ॥
तुही धरण धर कै करहि फिर निबेरा ॥
तुही बिजल होइ चढ़ गगन झिलमिलानी ॥
तुमन चरन पर सुरत हमरी लगानी ॥
तुही अलख करतारणी सिव सरूपा ॥
तुही घट घटे देव दुरगे अनूपा ॥
तुही है सभन बीच सभ ते निराली ॥
तुही सभ जगत की करहि प्रतिपाली ॥
तुही खास भगतण हरे हरि जपंती ॥
तुही हर चरण पर अपुन सिर धरंती ॥
तुही हरि क्रिपा सिउ अगम रूप होई ॥
सभै पच मूए पार पावत न कोई ॥
तुही सूर बलवंतणी गुण गहीरे ॥
तुमन दवार घुर हैं अनहद नफीरे ॥
निरंजन सरूपा तुही आदि राणी ॥
तुही जोग बिदया तुही ब्रहम बाणी ॥
निरंजन प्रभू नाथ कादर मुरारे ॥
तहां तू खड़ी कुदरती रूप धारे ॥
तुही अंभके सकति दुरगे भवानी ॥
तुमन कुदरती जोत घटि घटि समानी ॥
धरन पवन आकास कुदरति सरूपा ॥

तुही कुदरती अलख देवी अनूपा ॥
नही भाख साकउ मै महिमा तुहारी ॥
लखया नाहि किनहूं तुमन अंत पारी ॥
यही दास तुमरा चरन धूरि पावै ॥
तुमन दुवार ठाढा सदा धुनि लगावै ॥

दोहरा ॥

मुख पसारै कालका दैत चबावै दांत ॥
पंथ चलावै जगत मै जुद्ध करहि तब सांति ॥
भगवती छंद पंजवां ॥५ ॥
नमो देविसा कुंभरी हिंगुलाजा ॥
तुही सभ जगत के करहि सिद्ध काजा ॥
तुही अलख जवाला कमछिआ प्रधानी ॥
तुमन जस सकल जगत कर है बखानी ॥
तुही हरि निरंकार ठाकुर जपंती ॥
तुही राछसन कउ पकड़ कर दहंती ॥
हमन बैरीअन कउ पकड़ घात कीजै ॥
तबै दास गोबिंद का मन पतीजै ॥
तुहीं आस पूरन जगत गुर भवानी ॥
छत्र छीन मुगलन करहु बेग फानी ॥
सकल हिंद सिउं तुरक दुसटा बिदारहु ॥
धरम की धुजा कउ जगत मै झुलारहु ॥
दुहूं पंथ मैं कपट विदया चलानी ॥
बहुड़ तीसरा पंथ कीजै परधानी ॥
जो उपजै मरै ताहि सिमरन न कीजै ॥
अटल पुरख अकाल का नाम लीजै ॥
मड़ी गोर देवल मसीतां गिरायं ॥
तुही एक अकाल हरि हरि जपायं ॥
मिटहि बेद सासत्र अठारहि पुराना ॥
मिटै बांग सलवात सुंनत कुराना ॥
सकल स्रिशट इक बरन होइ कर भुलानी ॥
धरम नेम की जुगत किनहूं न जानी ॥
कठिन दुंद वरतै जगत महि गुबारा ॥
दया धार कर मोहि लीजै उबारा ॥
तुही कुदरते सकति दुरगे भवानी ॥
तुही जगत माता सकल बिध निधानी ॥
तुही बिआस गोरख अगसतं कबीरे ॥
तुही रिख मुनीसर तुहीं गौंस पीरे ॥
निरंजन पुरख कउ सदा तूं धिआवैं ॥
प्रभू दवार ठाढी वजीरन कहावैं ॥
नहीं तुम बिनां कोई दूसर हजूरे ॥
तुहीं अलखणी होइ रही जगत पूरे ॥
अपुन जान कर मोहि लीजै बचाई ॥
असुर पापीअन मार देवहु उडाई ॥
सकल जगत कउ सुख बसावहु अनंदा ॥
तुही दरद मेटण स्री हरि मुकंदा ॥
यही देह आगिआ तुरकन गहि खपाऊं ॥
गऊ घात का दोख जग सिउं मिटाऊं ॥
छत्र तखत मुगलन करहूं मार दूरे ॥

घुरहि तब जगत महि फतह धरम तूरे ॥

तुमन दर खड़ा दास कर है पुकारा ॥
तुरकन मेट कीजै जगत महि उजारा ॥

तबहि गीत मंगल फतहि के सुनाऊं ॥

तुमन कउ सिमर दूख सगले मिटाऊं ॥

दोहरा ॥

किरपा कीजै दास पर कुंट निवाऊं चार ॥
नाम तिहारो जो जपै भए सिंध भव पार ॥

भगवती छंद छेवां ॥६ ॥

नमो कसट हरणी दुरगा सकति माए ॥
सभै दुसट दानो पकड़ तै खपाए ॥
तुमन भवन त्रै लोक महि बिराजै ॥
तहां नूर तुमरा अगम रूप छाजै ॥
तुही धौल गिर कोट कांगड़ बसंती ॥
तुही अछल अनाद देवन अनंती ॥
रटों निस दिना जाप तुमरा भवानी ॥
तुमन चरन मों प्रीति हमरी लगानी ॥
करहु हरि भवानी जगत की संभारे ॥
हमन दुशट दोखी सभन होहिं छारे ॥
सदा सरबदा चरण तुमरे धिआऊं ॥
तुमन मिहर सिउं दुसट सगले खपाऊं ॥
यही आस पूरन करहु तुम हमारी ॥
मिटै कसट गऊअन छुटै खेद भारी ॥

फतह सतिगुरू की जगत सिउं बुलाऊं ॥

सभन कउ सबद वाहि वाहि द्रिड़ाऊं ॥
करहु खालसा पंथ तीसर प्रवेसा ॥
जगहि सिंघ जोधे धरहि नील भेसा ॥
सकल राछसन कउ पकड़ वै खपावैं ॥

सभै जगत सिउं धुनि फतह की बुलावैं ॥

तुही सारदा बेद गायण सुरसती ॥
तुही देव दुरगे निरंजन परसती ॥
यही बेनती खास हमरी सुणीजै ॥
असुर मार कर रच्छ गऊअन करीजै ॥
तुही सिद्ध नव निध कउ भरणहारी ॥
तुही अंन दायण सकल जग भिखारी ॥
तुही रिखी बसिसटे तुही है दुरबासा ॥
तुही जमदगनि संत गोतम प्रकासा ॥
तुही काल के असुर संघार करणी ॥
तुही सेवकन पर सदा मिहर धरणी ॥
कहां लौ बखानौ तुमन गति अपारे ॥
तुही जालपा अलख रूपण मुरारे ॥
तुही हरि हरे हरि हरे हरि भवानी ॥
निरंजन पुरख पर भई तूं कुरबानी ॥
यही देहि बर मोहि सतिगुर धिआऊं ॥
असुर जीत कर धरम नउबत बजाऊं ॥
मिटहि सभ जग सिउं तुरकन दुंद सोरा ॥

बचहि संत सेवक खपहि दुसट चोरा ॥
सभै स्रिसट परजा सुखी हुइ बिराजै ॥
मिटै दूख संताप आनंद गाजै ॥
न छाडउं कहूं दुसट असुरन निसानी ॥
चलै सभ जगत महि धरम की कहानी ॥
छत्र धारीअन कउ करहु बेग नासा ॥
अपन दास का देखीअहु तब तमासा ॥

दोहरा ॥

तब खड़ग तमासा देखीऐ हर दुरगे अबिनास ॥
पकड़ तेग दुसमन हतूं करहूं धरम प्रकास ॥१॥
हर भगत भगौती तिसै की जो रणधीर धरेइ॥
तिह अंग संग तुम लाग रहु जो पाछे पग न धरेइ ॥२॥
चोपई ॥
खट छंद भगवती महां पुनीते ॥
तिस पठवत उपजत परतीते ॥
इउं निसबासर दुरगे गुन गायं ॥
तहि सहजे अटल अमर पद पायं ॥

◀ *यहि खसटक छंद संपूरन भयो ॥*

तिस उचरत सगला भरम गयो ॥
हरि अलख ईसरी भई क्रिपालं ॥
तिन दास आपना कीओ निहालं ॥
दूख रोग सोग भै मिटे कलेसा ॥
बहु सुख उपजै अनद प्रवेसा ॥
इत बिधि दुरगे किरपा धारी ॥
तिह आपन दास कउ लीआ उबारी ॥

◀ *स्री इति गोबिंद सिंघ विरचिते स्री भगवती छंद खसटमं समापतंम सत सुभम सत ॥6॥*

ੴसी वाहिगुरू जी की फतहि हैं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

असतोत्र स्री भगउती जी का

पातिशाही १० ॥

भुयंग प्रयात छंद

नमो स्री भगौती बढैली सरोही ॥
करे एक ते द्वै सुभट हाथ सोही ॥
नमो लोह पुत्री अछोहं रहंती ॥
नमो जीभ ज्वाला मुखी जिउ बोलंती ॥
महां मान की भान गंगा तरंगी ॥
भिरे सामुहे मोख दाती अभंगी ॥
नमो तेग तरवार स्री खग खंडा ॥
महां रुद्र रूपा बिरूपा प्रचंडा ॥
महां तेज खंडा दुखंडा दोधारा ॥
महां सत्र बन को महां भीम आरा ॥
महां काल की काल का काल क्रधं ॥
महां बिग्रही ब्रिध दा सिद्ध उधं ॥
महां पातणी तूं पलै काल कारी ॥
महां असत्र तूं ही तूं ही सत्रहारी ॥
महां काल की लाट बिक्राल भीमं ॥
बही तच्छ मुच्छं करे सत्र कीमं ॥
महां तेज की तेजता तेज वंती ॥
प्रजा खंडनी दंडनी सत्र हंती ॥
महां बीर बिदया महां भीम रूपं ॥
महां भीर मै धीर दाती अनूपं ॥
तुही सैफ पटा महां काल काती ॥
अनुगु आपणै को अभैदान दाती ॥
जबै मियान ते बीर तो को सड़कै ॥
परलै काल के सिंधु बकै कड़कै ॥
धसै खेत मै हाथ लै तुहि सूरे ॥
भिरे सामुहे सिद्ध सावंत पूरे ॥
करै हाथ द्वै काढ कै मियान मैं ते ॥

फतह पाइ है बीर मैदान मैं ते ॥

कटक शत्र के अग्र होइ फट बाहै ॥
बरै देव कंनिया तेऊ कंत चाहै ॥
महां समर मैं जो करै हाथ जेते ॥
सुरग बास मैं भोगवै बरख तेते ॥
समर सामुहे सीस तो पाहि चढावै ॥
महां भूप ह्वै अउतरै राज पावै ॥
महां भाव सो जो करे तोर पूजं ॥
समर जीत कै सूर ह्वै है अदूजं ॥
तुजै पूज है बीर बानैत छत्री ॥
महां खड़ग धारी महां तेज अत्री ॥

पड़ै प्रीत सो प्रांत असतोत्र यां को ॥
करे रुद्र काली नमसकार तां को ॥
रुध्र मंजनी बिंजनी है अगौती ॥
सदा जै सदा जै सदा जै भगौती ॥
सदा दाहने दास को दान दीजै ॥
गुरू शाह गोबिंद की रक्ख कीजै ॥

चौपई ॥

इह असतोरत गुर दसमेसैं ॥
लिखयो बीच निजु ग्रंथ बसेसैं ॥
अबिचल नगर सुपट ने पिखयो ॥
सत्रा सै बवंजा मैं लिखयो ॥

ੴस्री वाहिगुरू जी की फतहि हैं ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

असतोत्र स्री भगउती जी का

पातिशाही १० ॥

नमो स्री भगौती बढेली सरोही ॥
करें एक ते द्वै सुभट हाथ सोही ॥
नमो लोह की पुत्रिका झल झलंती ॥
नमो जीभ ज्वालामुखी जयो बलंती ॥
महां पान की बान गंगा तरंगी ॥
भिरे सामुहे मोख दाती अभंगी ॥
नमो तेग तरवार स्री खग खंडा ॥
महां रुद्र रूपा बिरूपा प्रचंडा ॥
महां तेज खंडा दुखंडा दुधारा ॥
सभे शत्र बन को महां भीम आरा ॥
महां कालिका काल को काल हंती ॥
महां असत्र तूही तूही शत्र हंती ॥
महां काल की लाट विकराल भीमं ॥
बही तच्छ मुच्छं करे सत्र कीमं ॥
महां तेज की तेजता तेज वंती ॥
प्रजा खंडनी दंडनी सत्र हंती ॥
महां वीर विदया महां भीम रूपं ॥
महां भीर मै धीर दाती सरूपं ॥
तुही सैफ पटा महां काल काती ॥
अनुग आपणे को अभै दान दाती ॥
जोउ़ मयान ते वीर तो को सड़कै ॥
परलै काल के सिंधु बकै कड़कै ॥
धसै खेत में हाथ लै तोहि सूरे ॥
भिरे सामुहे सिद्ध सावंत पूरे ॥
समर सामुहे सीस तो पै चढ़ावै ॥
महां भूप ह्वै औतरै राज पावै ॥
महां भाव सों जो करै तोर पूजं ॥
समर जीत कै सूर ह्वै है अदूजं ॥
तुमै पूजहैं बीर बानैत छत्री ॥
महां खड़गधारी महां तेज अत्री ॥
पढ़ै प्रीति सो प्रात असत्रोत या को ॥
करै रुद्र काली नमसकार ता को ॥
रुधर मजनी बिंजनी है सगौती ॥
सदा जै सदा जै सदा जै भगौती ॥
सदा दाहने दास के दान दीजै ॥
गुरू शाह गोबिंद की रक्ख कीजै ॥

Index — To be added